

## केन्द्रीय पुस्तकालय

(Central Library)

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनू (राज.)

दिनांक स्लीप

यह पुस्तक निम्न दिनांक तक या उसके पूर्व लौटानी है।

[illegible]

## दिल्लीनिवासी श्रीमान् लालाजी किशनचंदजी सां, जौहरीजी के वंश का संक्षिप्त जीवन

### परिचय

भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में श्री नेमीचंदजी चौरडिया का जन्म हुआ। आप बहुत होनहार व्यवसायी और धर्मप्रेमी थे। आप बत्तीसों शास्त्र के ज्ञाता थे। आप जैन एवं वैदिक साहित्यके भी ज्ञाता थे। आपके पास अनेक प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त धार्मिक साहित्य का विशाल भंडार था। अल्प वय में ही आप स्वर्गारोहण कर गये। आपके सब से छोटे पुत्र श्री कपूरचंदजी चौरडिया भी आप ही की भांति निर्भीक उत्साही कर्मशील एवं धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाले थे। बीमारी की अवस्था में भी आपने सामायिक जो कि आप का नित्य नियम था, कभी नहीं छोड़ा। मृत्यु के अंतिम दिन तक आपने सामायिक व्रत की आराधना की थी। लाला कपूरचंदजी ने अपने व्यापार को बहुत बढ़ाया था। दिल्ली के गणमान्य व्यक्तियों में आपका नाम था। अनेक वर्षों तक आप समाज के प्रेसीडेन्ट रहे। आपके नेतृत्व में दिल्ली श्री संघ ने बहुत उन्नति की।

आपके सुपुत्र श्री किशनचंदजी चौरडिया भी आप ही की भांति उद्योगी, निवेकज्ञान एवं श्रद्धालु श्रावक हैं। प्रतिदिन सामायिक, व हर सप्ताह आर्यबिल अथवा उपवास का तप करते हैं और अनेक प्रकार के धार्मिक नियम पालते हैं। धार्मिक प्रवृत्तियों में सदा दिलचस्पी से भाग लेते हैं। स्थानीय संघ की कार्यकारिणी के आप सदस्य हैं।

लाला किशनचंदजीकी धर्मपत्नी श्रीमती नगीनादेवी चौरडिया प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री, एवं अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं से संबंध रखनेवाली हैं और बड़ी श्राविका हैं, आपका धार्मिक ज्ञान बहुत गंभीर है। आप विचक्षण बुद्धिवाली एवं साहित्यप्रेमी हैं। आपके निजी पुस्तकालय में अनेक अमूल्य हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त लगभग पांच हजार पुस्तकों का संग्रह है। शास्त्रों का स्वाध्याय करना आपका दैनिक नियम है। अनेक महासतीजी महाराज भी आपके धार्मिक ज्ञान का लाभ उठाते हैं।

श्रीमती नगीना देवी के पिता लाला धनोमल सुजंती दिल्ली के प्रसिद्ध रईसों में से थे। किंतु धर्म के प्रति निष्ठा एवं समाज सेवाकी लगन आपमें कूट २





कर भरी हुई थी। अनेक दीक्षाएँ आपने कराईं। तन, मन, धन से साधु-सतियों की सेवा करने में आपको अपूर्व आनंद मिलता था। आपका स्वर्गवास जल्दी ही हो गया था।

स्व. लाला धनोमलजी की धर्मपत्नी एवं श्रीमती नगीनादेवीजी की माता श्री फूलमतीजी महाराज साहब को जैनदीक्षा अंगीकार किये हुए ३१ वर्ष हो गये हैं। आप वयोवृद्ध, सरलस्वभावी, घोरसंयमी (कठिन संयम पालने वाले) हैं, मानो चौथे आरे की बानगी ही हो। अनेक वर्षों से आप दिल्ली में स्थिर-वास किये हुए हैं। आपके सदुपदेश से दिल्ली के अनेक व्यक्ति अपनी शास्त्रोद्धारसमिति के सदस्य बने हैं।

श्रीमती नगीना देवीकी भांति उनकी पुत्री सुश्री विजयकुमारी बड़ी निर्भीक प्रयुत्पन्नमति, एवं धार्मिक रुचि वाली हैं। आपके सुपुत्र सरलस्वभाव विनयशील श्री महतावचंद भी बड़े धर्मनिष्ठ, समाजसेवी, विनयवान एवं सुशिक्षित नवयुवक हैं।

श्रीमती नगीनादेवीके दो पुत्रियाँ और भी हैं। एक-सुश्री विनयकुमारी, जिसका विवाह जोधपुरनिवासी श्रीमान् हुक्मचंदजी साहब जैन एडवोकेटके सुपुत्र श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन एडवोकेट से हुआ है। वि० अनिलकुमार जैन, जिनका चित्र इस पुस्तक में है-इन्हीं के सुपुत्र हैं। श्री अनिलकुमार अपनी समिति के सदस्य है। दूसरी पुत्री सुश्री विमलकुमारी का विवाह दिल्लीनिवासी प्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ता स्व० श्री मुकुन्दलालजी जौहरी “कोमीनारा” (यह उपनाम प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें दिया था) के सुपुत्र श्री हुक्मचंदजी जौहरीके साथ हुआ है। श्रीमती विमलकुमारी भी अपनी समितिकी सदस्या हैं।

परंपरा से ही चौरडिया परिवार धार्मिक प्रवृत्तियों में रुचि रखनेवाला रहा है और जुस्तस्थानकवासी हैं। तन मन व धन से समाज व धर्म की खूब सेवा करता आया है, यही सदा से इस परिवार का कर्तव्य रहा है।

॥ ॐ शान्तिः ॥

# ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र के दूसरा भाग की विषयानुक्रमणिका

| अनुक्रमांक           | विषय   | पृष्ठ   |
|----------------------|--|---------|
| <b>अध्ययन-५</b>      |  |         |
| १                    | पांचवे अध्ययन की अवतरणिका                                | १       |
| २                    | द्वारावति नगरी का वर्णन                                  | २-७     |
| ३                    | नंदनवन-उद्यानका वर्णन                                    | ७-८     |
| ४                    | कृष्णवासुदेवका वर्णन                                     | ९-१०    |
| ५                    | स्थापत्यापुत्र गायापतिका वर्णन                           | ११-१२   |
| ६                    | अरिष्टनेमीअर्हतप्रभुका समवसरण                            | १४-१६   |
| ७                    | समवसरणमें कृष्णका आगमन आदिका वर्णन                       | १७-२३   |
| ८                    | स्थापत्यापुत्र गायापतिके निष्क्रमणका वर्णन               | २४-५८   |
| ९                    | शैलकराजका वर्णन  | ५८-६२   |
| १०                   | सुदर्शनसेठका वर्णन                                       | ६३-१११  |
| ११                   | शुकपरिव्राजकके दीक्षाग्रहणका वर्णन                       | ११२-११५ |
| १२                   | स्थापत्यापुत्रके निर्वाणका निरूपण                        | ११६-११७ |
| १३                   | शैलकराजके चरित्रका वर्णन                                 | ११८-१६७ |
| <b>छठ्ठा अध्ययन</b>  |  |         |
| १४                   | महावीरस्वामीका समवसरण                                    | १६८-१६९ |
| १५                   | इन्द्रभूतिका जीवकेविषयमें प्रश्न                         | १७०-१७७ |
| <b>सातवां अध्ययन</b> |  |         |
| १६                   | धन्य सार्थवाहके चरित्रका वर्णन                           | १७८-२३४ |
| <b>अठवां अध्ययन</b>  |  |         |
| १७                   | आठवे अध्ययनका अवतरण                                      | २३५     |
| १८                   | बलराजके चरित्रका वर्णन                                   | २३६-२४० |
| १९                   | बलराजके दीक्षाग्रहणका वर्णन                              | २४०-२४२ |
| २०                   | महाबल आदिछह राजाओंके=चरित्रका वर्णन                      | २४३-२८२ |
| २१                   | प्रभावतीदेवीके दोहदका वर्णन                              | २८३-२८८ |
| २२                   | तीर्थकरके जन्मनिमित्त दिशाकुमारि आदिका उत्सवकरनेका वर्णन | २८९-२९२ |
| २३                   | मोहयुद्धके निर्माणका वर्णन                               | २९३-२९६ |

|   |         |
|---|---------|
| २४ मणिनिर्मितपुच्छलिकानिर्माण आदिका वर्णन               | २९७-३०० |
| २५ कोसलाधिपति के स्वरूपका वर्णन                         | ३००-३२० |
| २६ अङ्गराजके चरित्रका वर्णन                             | ३२१-३३४ |
| २७ अङ्गराज चरित्रमें तालपिशाचका वर्णन                   | ३३४-३५० |
| २८ अङ्गराजके चरित्रमें अरहृक्षक श्रावकके चरित्रका वर्णन | ३५०-३७२ |
| २९ अङ्गराजके चरित्रका वर्णन                             | ३७२-३८५ |
| ३० कुणालाधिपति स्वमी राजाकेचरित्रका वर्णन               | ३८५-३९६ |
| ३१ काशिराज " शंख " राजाकेचरित्रका वर्णन                 | ४९७-४१० |
| ३२ अदीनशत्रु राजके चरित्रका वर्णन                       | ४१०-४३६ |
| ३३ जितशत्रु राजाके चरित्रका वर्णन                       | ४३५-४५७ |
| ३४ छहराजाओंके युद्धका वर्णन                             | ४५७-४६५ |
| ३५ कुंभकराज केयुद्धका वर्णन                             | ४६६-४७१ |
| ३६ मिथिलानगरीके निरोधका वर्णन                           | ४७१-४८० |
| ३७ सुवर्ण निर्मितपुच्छलिका का वर्णन                     | ४८०-४९१ |
| ३८ छत्रों राजाओंके जातिस्मरणहोनाआदिका वर्णन             | ४९१-५०१ |
| ३९ मल्लीभगवानके दीक्षावसरका निरूपण                      | ५०२-५१५ |
| ४० मल्लीभगवान के दीक्षोत्सवका वर्णन                     | ५१५-५३९ |
| ४१ जितश्रु आदि छत्रों राजाओंके दीक्षाग्रहणआदिका वर्णन   | ५४०-५५२ |
| <b>नवर्षा अध्ययन</b>                                    |         |
| ४२ मार्कंदीदारकके चरित्रका वर्णन                        | ५५३-६५५ |
| <b>दशर्षा अध्ययन</b>                                    |         |
| ४३ जीवोंके वृद्धि और हानिकानिरूपण                       | ६५६-६६७ |
| <b>ग्यारहर्षा अध्ययन</b>                                |         |
| ४४ जीवोंके आराधक और विराधकत्वहोनेका कथन                 | ६६८-६७८ |
| <b>बारहर्षा अध्ययन</b>                                  |         |
| ४५ स्वातोदकके विषयमें सुबुद्धिका दृष्टांत               | ६७९-७२७ |
| <b>तेरहर्षा अध्ययन</b>                                  |         |
| ४६ तेरह अध्ययनके संबन्धका निरूपण                        | ७२८-७३० |
| ४७ नन्दमणिकारमवका निरूपण                                | ७३१-७४६ |

## आद्यमुखा श्री-



बीचमें बैठे हुए

लालाजी किशनलालजी सा. जौहरी  
खड़े हुए इनके सुपुत्र—

चि. महेतावचन्दजी सा. जैन  
छोटे-अनिलकुमार जैन (दोयत्ता)

## આધ્યમુરખીશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠશ્રી શામળભાઈ વેલજીભાઈ  
વીરાણી રાજકોટ.



શ્રી વિનોદકુમાર વીરાણી  
દીક્ષા લીધા પહેલા શાસ્ત્રઅભ્યાસ



શેઠશ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ  
અમદાવાદ.



શેઠશ્રી રામજીભાઈ શામળભાઈ વીરાણી  
રાજકોટ.



(સ્વ.) શેઠશ્રી ધારશીભાઈ જીવનલાલ

(સ્વ.) શેઠશ્રી જગનલાલ શામળદાસ લાવસાર  
આમદાવાદ.



## આચાર્યશ્રીઓ



શ્રી વૃમલાલ તુલસીલાલ પારેખ  
રાજકોટ.



કોઠારી હરગોવિંદભાઈ મેથ  
રાજકોટ.



શ્રી નિરીલાલ લાલચંદલ શા. હુલિયા  
તથા શ્રી જેવંતરાજ લાલચંદલ શા.



(સ્વ.) શ્રી હિમેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ  
અમદાવાદ.



સ્વ. શ્રીઆન્ શ્રીમી સુકેનચંદલ શા.  
બાલિયા પાલી મારવાડ.

## આલમુરખીશ્રીઓ



(સ્વ.) શ્રી હરખચંદ કાલીદાસ વારિઆ  
ભાણુવડ.



(સ્વ.) શ્રી રંગચંદ્ર મોહનલાલ શાહ  
અમદાવાદ.



- ૧ વચ્ચે મેડેલા મોદાલાલ શ્રીમાન મૂલચંદલ  
જવાહરલાલજી બરાડયા
- ૨ બાજુમાં મેડેલા લાઈ મિત્રીલાલજી બરાડયા
- ૩ ઉમેલા સોથી નાનાલાઈ પૂનમચંદ બરાડયા



શ્રી શ્રી કેસિંગલાઈ ધાયાલાલભાઈ  
અમદાવાદ.



સ્વ. શ્રી આનંદારામ માલુકલાલ  
અમદાવાદ.

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી  
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ.

ગરેડીયાફવા રોડ

રાજકોટ.

દાતાઓની નામાવલી

શરૂઆત તા. ૧૮-૧૦-૪૪થી તા. ૩૧-૧૦-૬૨ સુધીમાં

દાખલ થયેલ મેમ્બરોનાં મુબારક નામો.

લાઈફ મેમ્બરોનું ગામવાર ક્રમાંકવારી લિસ્ટ.

(નાની લેટની રકમો આપનારનું, તથા રૂ. ૨૫૦થી  
ઓછી રકમ ભરનારનું નામ આ યાદીમાં સામેલ કરેલ નથી)



## આધમુરખીશ્રીઓ—૨૩

( ઓછામાં ઓછી રૂા. ૫૦૦૦ ની રકમ આપનાર )

| નંબર | નામ  | ગામ     | રૂપિયા |
|------|--|---------|--------|
| ૧    | શેઠ શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ બાણીતા મીલમાલીક  | અમદાવાદ | ૧૫૦૦૦  |
| ૨    | શેઠ હરખચંદ કાળીદાસભાઈ વારીયા હા. શેઠ<br>લાલચંદભાઈ, નગીનભાઈ, વૃજલાલભાઈ<br>તથા વલ્લભદાસભાઈ                     | બાણુવડ  | ૬૦૦૦   |
| ૩    | કેઠારી બેચંદ અબરામર હા. હરગોવિંદભાઈ બેચંદભાઈ   | રાજકોટ  | ૫૨૫૧   |
| ૪    | શેઠ ખારશીભાઈ જીવણભાઈ   | ખારસી   | ૫૦૦૧   |
| ૫    | સ્વ. પિતાશ્રી જીનલાલ શામળદાસના સ્મરણાર્થે<br>હા. શ્રી લોગીલાલ જીનલાલભાઈ ભાવસાર                               | અમદાવાદ | ૫૨૫૧   |
| ૬    | સ્વ. શેઠ દિનેશભાઈના સ્મરણાર્થે<br>હા. શેઠ કાંતિલાલ મણીલાલ બેશીંગભાઈ  | અમદાવાદ | ૫૦૦૦   |
| ૭    | શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હ. શેઠ<br>ચીમનલાલભાઈ શાંતિલાલભાઈ તથા પ્રમુખભાઈ   | અમદાવાદ | ૬૦૦૧   |
| ૮    | શ્રી શામળ વેલજી વીરાણી અને શ્રી કંઠવીભાઈ વીરાણી રાજકોટ<br>સ્મારક ટ્રસ્ટ હા. શેઠ શામળ વેલજી વીરાણી            |         | ૫૦૦૦   |
| ૯    | શ્રી શામળ વેલજી વીરાણી અને શ્રી કંઠવીભાઈ વીરાણી<br>સ્મારક ટ્રસ્ટ હા. માતૃશ્રી કંઠવીભાઈ વીરાણી                | રાજકોટ  | ૫૦૦૦   |
| ૧૦   | શેઠ પોત્તાલાલ પીતાંબરદાસ   | અમદાવાદ | ૫૨૫૧   |
| ૧૧   | શાહ રંગજીભાઈ મોહનલાલ   | અમદાવાદ | ૫૦૦૧   |
| ૧૨   | શ્રી શામળ વેલજી વીરાણી અને શ્રી કંઠવીભાઈ વીરાણી<br>સ્મારક ટ્રસ્ટ હા. શેઠ દુર્લભજીભાઈ શામળજીભાઈ વીરાણી રાજકોટ |         | ૫૦૦૦   |
| ૧૩   | શામળ વેલજી વીરાણી અને શ્રી કંઠવીભાઈ વીરાણી<br>સ્મારક ટ્રસ્ટ હા. શ્રીમતિ મણીકુંવરબેન દુર્લભજી વીરાણી રાજકોટ   |         | ૫૦૦૦   |
| ૧૪   | શ્રી શામળ વેલજી વીરાણી અને શ્રી કંઠવીભાઈ વીરાણી<br>સ્મારક ટ્રસ્ટ હા. શ્રી છોટાલાલ શામળ વીરાણી રાજકોટ         |         | ૫૦૦૦   |
| ૧૫   | સ્વ. માતૃશ્રીના સ્મરણાર્થે હા. ભાવસાર લોગીલાલ<br>જીનલાલ અને કુટુંબીજનો                                       | અમદાવાદ | ૫૦૦૦   |

- ૧૬ શેઠ શ્રીશ્રીલાલજી જીવંતરાજજી હુણીયા ચંડાવલવાળા અમદાવાદ ૫૫૦૨
- ૧૭ શેઠ રામજીભાઈ શામજી વીરાણી અને સમરતબેન  
રામજી વીરાણી દ્રુષ્ટ રાજકોટ ૫૦૦૧
- ૧૮ એક જૈન ગૃહસ્થ અમદાવાદ ૫૪૨૫
- ૧૯ શેઠ મુળચંદજી જવાહીરલાલજી ગરડીયા અમદાવાદ ૫૦૦૧
- ૨૦ શેઠ મુકુંદચંદજી બાલીયાના સ્મરણાર્થે  
હા. શેઠ મોહનલાલજી બાલીયા ( પાલીવાળા ) અમદાવાદ ૫૦૦૧
- ૨૧ બા. ધ્ર. શ્રી વિનોદમુનિના સ્મરણાર્થે હા. શ્રી શામજી  
વ્રેલજી વીરાણી અને શ્રી કંઠવીભાઈ વીરાણી સ્મારક દ્રુષ્ટ રાજકોટ ૫૦૦૦
- ૨૨ શ્રી શામજી વલજી વીરાણી અને શ્રી કંઠવીભાઈ  
વીરાણી સ્મારક દ્રુષ્ટ હા. શ્રી કેશવલાલ વીરાણી રાજકોટ ૫૦૦૦
- ૨૩ શ્રીમતિ મણીભાઈ વૃજલાલ પારેખ ચેરીટેબલ  
દ્રુષ્ટ ફંડ હા. પારેખ વૃજલાલ ફંડલજી રાજકોટ ૫૨૫૧
- નોંધ:—ઘાટકોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ. મહેતા તરફથી અમદાવાદમાં  
પાલકી બસ રોન્ડ પાસે 'પ્લોટ નં. ૨૫૦' વાળી ૬૯૮ ચો. વાર  
જમીન સમિતિને ભેટ મળેલ છે. અને જેનું રજીસ્ટર તા. ૨૩-૩-૬૦  
ના રોજ થઈ ગયેલ છે.

## મુરબીશ્રીઓ-૨૮

( ઓછામાં ઓછી રૂા. ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર )

| નંબર | નામ   | ગામ     | રૂપિયા    |
|------|---|---------|-----------|
| ૧    | વકીલ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોઠારી હા. કહેનદાસભાઈ<br>તથા વેણીલાલભાઈ કોઠારી | જેતપુર  | ૩૬૦૫      |
| ૨    | દોશી પ્રભુદાસ મુળજીભાઈ  | રાજકોટ  | ૩૫૦૪      |
| ૩    | મહેતા ગુલામચંદ પાનાચંદ  | રાજકોટ  | ૩૨૮૬૧૧-૧૧ |
| ૪    | મહેતા માણેકલાલ અમુલજીરાય  | ઘાટકોપર | ૩૨૫૦      |
| ૫    | સંઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલામચંદ  | બમનગર   | ૩૧૦૧      |
| ૬    | લલ્લુભાઈ ગોરધનદાસ ચેરીટેબલ દ્રુષ્ટ<br>હા. શેઠ વાડીલાલ લલ્લુભાઈ        | અમદાવાદ | ૨૫૦૦      |
| ૭    | નામદાર કાકોર સાહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર                                 | ગોરખી   | ૨૦૦૦      |

|   |              |      |
|---|--------------|------|
| ૧૮ શેઠ લહેરચંદ કુંવરજી હા. શેઠ ન્યાલચંદ લહેરચંદ               | સિદ્ધપુર     | ૨૦૦૬ |
| ૧૯ શાહ છગનલાલ હેમચંદ વસા હા. મોહનભાઈ                          |              |      |
| તથા મોતીલાલભાઈ  | મુંબઈ        | ૨૦૦૦ |
| ૧૦ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ હા. શેઠ ચંદ્રકાન્ત વીક્રમચંદ મોરળી |              | ૧૯૬૩ |
| ૧૧ મહેતા સોમચંદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્ની                  |              |      |
| અ. સૌ. મણિગૌરી મગનલાલ   | રતલામ        | ૨૦૦૦ |
| ૧૨ મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ                                     | જામજોધપુર    | ૧૫૦૨ |
| ૧૩ દોશી કપુરચંદ અમરશી હા. દલપતરામભાઈ                          | જામજોધપુર    | ૧૦૦૨ |
| ૧૪ બગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી                                     | દામનગર       | ૧૦૦૨ |
| ૧૫ શેઠ માણેકલાલ ભાણુજીભાઈ                                     | પોરબંદર      | ૧૦૦૧ |
| ૧૬ શ્રીમાન ચંદ્રસિંહજી સાહેબ મહેતા ( રેલ્વે મેનેજર ) કલકત્તા  |              | ૧૦૦૧ |
| ૧૭ મહેતા સોમચંદ નેણસીભાઈ ( કરાચીવાળા )                        | મોરળી        | ૧૦૦૧ |
| ૧૮ શાહ હરીલાલ અનોપચંદ   | ખંભાત        | ૧૦૦૧ |
| ૧૯ મોદી કેશવલાલ હરિશંદ્ર                                      | અમદાવાદ      | ૧૦૦૧ |
| ૨૦ કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદ                                      | મુંબઈ        | ૧૦૦૧ |
| ૨૧ કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદ                                     | ભાવનગર       | ૧૦૦૦ |
| ૨૨ શાહ પ્રેમચંદ માણેકચંદ તથા અ. સૌ. સમરતળેન અમદાવાદ           |              | ૧૦૦૩ |
| ૨૩ શેઠ કરમશી જેઠાભાઈ સોમૈયા હા. અ. સૌ. સાકરજેન મુંબઈ          |              | ૧૦૦૦ |
| ૨૪ શેઠ પોપટલાલ ચત્રભુજ કોઠારી                                 | સુરેન્દ્રનગર | ૧૦૦૧ |
| ૨૫ શ્રી સ્થા. જૈન લીંબડી સંપ્રદાયના ક્ષમાગુણ નિધિ             |              |      |
| પૂજ્ય શ્રી લાધાજી સ્વામીના શિષ્ય પ્રખર પંડિત                  |              |      |
| રતન શ્રી ઉત્તમચંદજી મહારાજના સ્મરણાર્થે                       |              |      |
| પૂજ્ય લાધાજી સ્વામી પુસ્તકાલય તરફથી હા.                       |              |      |
| શેઠ જોશીગભાઈ પોઆલાલ   | અમદાવાદ      | ૧૦૦૦ |
| ૨૬ શ્રીમતિ આશાબેન હંસરાજ સુરાણા                               | મુંબઈ        | ૧૦૦૧ |
| ૨૭ શાહ શાંતિલાલ માણેકલાલ                                      | અમદાવાદ      | ૧૦૦૧ |
| ૨૮ શ્રીયુત વીક્રમાર C/o મહેતાખચંદ જૈન                         | દિલ્હી       | ૧૦૦૧ |

## સહાયક મેમ્બરો--૧૩૨

( જોછામાં જોછી રૂ. ૫૦૦ ની રકમ આપનાર )

| નંબર | નામ  | ગામ        | રૂપિયા |
|------|--|------------|--------|
| ૧    | શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. જીંઝાભાઈ વેલશીભાઈ                                 | વઢવાણ શહેર | ૭૫૦    |
| ૨    | શેઠ નરૌત્તમદાસ જોષ્ઠભાઈ  | જેરાવરનગર  | ૭૦૦    |
| ૩    | શેઠ રતનશી હીરજીભાઈ હા. ગોરધનભાઈ  | જામજોધપુર  | ૫૫૫    |
| ૪    | બાટવીયા ગીરધર પરમાણુદ હા. અમીચંદભાઈ                                      | ખાખીબળીયા  | ૫૨૭    |
| ૫    | મોરળીવાળા સંઘવી દેવચંદ નેણશીભાઈ તથા તેમનાં ધર્મપત્ની અ. સી. મણીભાઈ તરફથી |            |        |
|      | હા. મુળચંદ દેવચંદ સંઘવી  | મલાડ       | ૫૧૧    |
| ૬    | વોરા મણીલાલ પોપટલાલ  | અમદાવાદ    | ૫૦૨    |
| ૭    | ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા ચંપાબેન ગોસલીયા                                | "          | ૫૦૨    |
| ૮    | શાહ મનહરલાલ પ્રાણીવનદાસ  | મુંબઈ      | ૫૦૧    |
| ૯    | શેઠ ઇન્દ્રલાલ પુરુષોત્તમદાસ  | અમદાવાદ    | ૫૦૧    |
| ૧૦   | શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ   | "          | ૫૦૧    |
| ૧૧   | શેઠ શીવલાલ ઠમરભાઈ ( કરાંચીવાળા )   | લીંબડી     | ૫૦૧    |
| ૧૨   | કામદાર તારાચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા  | રાજકોટ     | ૫૦૧    |
| ૧૩   | મહેતા મોહનલાલ કપુરચંદ  | "          | ૫૦૦    |
| ૧૪   | શેઠ ગોવિંદજીભાઈ પોપટભાઈ  | રાજકોટ     | ૫૦૦    |
| ૧૫   | શેઠ રામજી શામજી વીરાણી   | રાજકોટ     | ૫૦૧    |
| ૧૬   | સ્વ. પિતાશ્રી નંદાજીના સ્મરણાર્થે હા. વેણીચંદ શાંતિલાલ                   |            |        |
|      | ( જાંજીઆવાળા ) મેઘનગર  |            | ૫૦૧    |
| ૧૭   | શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ ઠાકરશી કરશનજી                                 | થાનગઢ      | ૫૦૦    |
| ૧૮   | શેઠ તારાચંદ પુખરાજી  | ઔરંગાબાદ   | ૫૦૦    |
| ૧૯   | શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ   | "          | ૫૦૦    |
| ૨૦   | મહેતા મુળચંદ રાઘવજી હા. મગનલાલભાઈ તથા દુર્લભજીભાઈ પ્રાદા                 |            | ૭૫૦    |
| ૨૧   | શેઠ હરખચંદ પુરુષોત્તમ હા. ઇન્દુકુમાર                                     | ચોરવાડ     | ૫૦૦    |
| ૨૨   | શેઠ કેસરીમલજી વસ્તીમલજી ગુજલીયા  | મલાડ       | ૫૦૧    |
| ૨૩   | શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. બાટવીયા અમીચંદ ગીરધરભાઈ ખાખીબળીયા                 |            | ૫૦૧    |
| ૨૪   | શ્રી ખીમજીભાઈ બાવાભાઈ કુલચંદભાઈ શુભાભચંદભાઈ                              |            |        |
|      | નાગરદાસભાઈ જમનાદાસભાઈ મુંબઈ  |            | ૫૦૧    |

- ૨૫ શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા. મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ મુંબઈ ૫૦૧
- ૨૬ સ્વ. કાંતિલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ બાલચંદ્ર સાકરચંદ્ર ,, ૫૦૧
- ૨૭ કામદાર-રતીલાલ દુર્લભજી ( જેતપુરવાળા ) ,, ૫૦૧
- ૨૮ શાહ જયંતીલાલ અમૃતલાલ શીવ ૫૦૧
- ૨૯ વોરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ્ર ,, ૫૦૧
- ૩૦ શેઠ ગુલામચંદ્ર બુદરભાઈ તથા કસ્તુરબેન હા. ભાઈ અનોપચંદ્ર ખારડોડ ૫૦૧
- ૩૧ મહાન ત્યાગી બેન ધીરજકુંવર ચુનીલાલ મહેતા પ્રાક્ષા ૫૭૧
- ૩૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ પ્રાક્ષા ૫૦૧
- ૩૩ શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ રાજકોટ ૫૦૧
- ૩૪ શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા અ. સૌ. નંદકુંવરબેન જામનગર ૫૦૩
- ૩૫ શેઠ દેવચંદ્ર અમરશી ( બેન ધીરજકુંવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ ) ભાણુવડ ૫૦૧
- ૩૬ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ ( બેન ધીરજકુંવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ ) ભાણુવડ ૫૦૧
- ૩૭ વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ્ર શાહ વીરમગામ ૫૦૧
- ૩૮ મહેતા શાન્તિલાલ મણીલાલ હા. કમળાબેન મહેતા અમદાવાદ ૫૫૬
- ૩૯ શ્રીચુત લાલચંદ્રજી તથા અ. સૌ. ધીસાબેન ,, ૫૦૧
- ૪૦ શેઠ મોહનરાજજી ગુકુનચંદ્રજી બાલીયા ,, ૫૦૧
- ૪૧ સ્વ. શેઠ ઉકાભાઈ ત્રીલોચનદાસના સ્મરણાર્થે તેમનાં  
ધર્મપત્ની લક્ષ્મીબાઈ ગીરધર તરફથી હા. ત્રરવાબેન  
તથા મં.ગુબેન અમદાવાદ ૫૦૧
- ૪૨ પારખ જયંતીલાલ મનસુખલાલ રાજકોટવાળા હ. વિતુભાઈ ,, ૫૦૧
- ૪૩ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ વાંકાનેર ૫૦૧
- ૪૪ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ બેટાદ ૫૦૧
- ૪૫ શેઠ ગુલમસજી શેષમસજી બેવર ( બશર ) પીપળગાંવ ૫૦૧
- ૪૬ સ્વ. તુરખીયા લહેરચંદ્ર માણેકચંદના સ્મરણાર્થે તેમનાં  
ધર્મપત્ની જીવતીબાઈ તરફથી હા. ભાઈ જયંતીલાલ  
તથા પુનમચંદભાઈ વડોદરા ૫૦૧
- ૪૭ શાહ અચલદાસ શુકનરાજજી હા. શુકનરાજજી અમદાવાદ ૫૦૧
- ૪૮ ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઈ ધંધુકા ૫૦૧
- ૪૯ અ. સૌ. હીરાબેન માણેકલાલ મહેતા ઘાટકોપર ૫૦૧
- ૫૦ મહેતા શાંતિલાલ મગનલાલ તથા અ. સૌ. પદમાવતી  
શાંતિલાલ મહેતા અમદાવાદ ૫૦૦
- ૫૧ શેઠ હીરાચંદ્રજી વનેચંદ્રજી કટારીયા હુબલી ૫૦૧

- ૫૨ શેઠ છોટુભાઈ હરજોવિંદાસ કટોરીવાળા      સુબંધ ૫૦૧
- ૫૩ પારેખ રતિલાલ નાનચંદ મોરબીવાળા તરફથી તેમના  
પિતાશ્રી નાનચંદ જોવિંદાના સ્મરણાર્થે તથા તેમનાં  
ધર્મપત્ની અ. સૌ. વસંત બહેનના અદ્યાધતપ નિમિત્તે  
હા. ભુપતલાલ રતિલાલ      અમદાવાદ ૫૫૨
- ૫૪ સ્વ. શાહ ત્રિલોચનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની  
શીવકુંવરબાઈ તરફથી હા. રતિલાલ ત્રિલોચનદાસ શાહ અમદાવાદ ૫૧૧
- ૫૫ શ્રીમાન નાથાલાલ માણેકચંદ પારેખ      ( માટુંગા ) ૫૦૧
- ૫૬ શ્રી લીંબડી સંપ્રદાયના ગચ્છાધિપતિ પૂ. આચાર્ય  
મહારાજ શ્રી લાધાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા.  
શેઠ જેશીંગભાઈ પોચાલાલ ( મહારાજ શ્રી  
છોટાલાલજી સદાનંદીના ઉપદેશથી )      અમદાવાદ ૫૦૧
- ૫૭ સ્વ. શ્રી વિનયમુર્તિ શ્રી લક્ષ્મીચંદજી મહારાજના  
સ્મરણાર્થે હા. શેઠ જેશીંગભાઈ પોચાલાલ ( મહારાજશ્રી  
છોટાલાલજી સદાનંદીના ઉપદેશથી )      અમદાવાદ ૫૦૧
- ૫૮ બા. ઝ. પ્રભાવતીબેન કેશવલાલ ઉબબેનવાળા તરફથી  
તેમની દીકરા પ્રસન્ને.      વીરમગામ ૫૫૧
- ૫૯ શેઠ શ્રીચુત હરજીવનદાસ રાયચંદ હા. છબીલદાસ હરજીવન અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૦ શેઠ પોપટલાલ હંસરાજ તથા દિવાળીબેનના સ્મરણાર્થે  
હા. શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ      અમદાવાદ ૫૦૨
- ૬૧ અ. સૌ. લીલાવતીબેન ધર્મજીવાલ      અમદાવાદ ૫૦૨
- ૬૨ હેમાણી પ્રભુદાસ બાબુજી      કલકત્તા. ૫૫૧
- ૬૩ શેઠ લક્ષ્મણદાસ સેજરામ      અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૪ શ્રી સ્થા. જૈન મોટા સંઘ      રાજકોટ ૫૦૧
- ૬૫ શેઠ ચાંદમલ બીરધીચંદ      નાસિક સીટી ૫૦૧
- ૬૬ ઝવેરી માણેકચંદજી પન્નાલાલ છાજલાણી  
હા. ધનવંતીબેન તથા કિરણબેન      દિલ્હી ૫૦૧
- ૬૭ શેઠ હંસરાજજી પૂર્ણમલજી કાંકરીયા      ગોગેળાવ ૫૦૧
- ૬૮ શ્રી સ્વે. સ્થા. જૈન સભા      કલકત્તા ૫૦૧
- ૬૯ શેઠ તેજસિંહજી ફતેલાલજી જાબેડે      ઉદેપુર ૫૦૧
- ૭૦ શેઠ સતનંદ લક્ષ્મીચંદ      સુબંધ ૫૦૦

૬૧ શાહ ઉમરશી લીમશીલાઇ ( સ્વ. પિતાશ્રી લીમશીલાઇ

તથા માતૃશ્રી પાલાખાઇ તથા ધર્મપત્ની પાનખાઇના સ્મરણાર્થે ) મહાડ ૫૫૨

૭૨ શાહ શામલાલભાઇ અમરસીભાઇ અમદાવાદ ૫૦૨

૭૩ મહેતા ચન્દ્રકાન્ત નૌતમલાલ મુંબઈ ૫૦૧

૭૪ શેઠ લીખચંદ્ર લાલચંદ્ર પીપલગામ ૫૦૧

૭૫ ભેનં મોહનીબેન મહેતા મુંબઈ ૫૦૧

૭૬ શ્રીમતી મોંઘીબેન નવલચંદ શાહ લીમડી ( સૌરાષ્ટ્ર ) ૫૦૧

હા. મોતીબેન

૭૭ શ્રીમતી વિમલાલ સૂરજમલ મહેતા બેલગામ ૫૦૧

૭૮ ઉદાણી નિહાલચંદ્ર હાકેમચંદ્ર વકીલ

બી. એ. એલ. એલ. બી.

રાજકોટ ૫૦૧

૭૯ સ્વ કોઠારી મગનલાલજી કુન્દનમલજીના

સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્ની રાજકુવરબેન

સુતારા ૭૫૧

૮૦ શેઠ મોહનલાલજી મંછાલાલજી હા રમણીકલાલ

( પૂ. મુનિશ્રી કૃતેચંદ મ. ના શિષ્ય પં. મુનિશ્રી

કનૈયાલાલજી મ. ના ઉપદેશથી )

જયપુર ૫૦૧

૮૧ શેઠ કનૈયાલાલજી સોહનલાલજી કાવેડિયા

ધારડી ૫૦૧

૮૨ શેઠ પ્રતાપમલજી કપુરચંદજી સાંઢેરાવાળા ( પૂન્ય

કૃતેચંદજી મ. ના શિષ્ય મિશ્રીલાલજી મ. ના

શિષ્ય ચાંદમલજી મ. ના ઉપદેશથી )

અમદાવાદ ૫૦૧

૮૩ શ્રીમાન લાલાજી રોશનલાલજી સમન્દરલાલજી

બડોત ૫૦૧

૮૪ શ્રીમાન ભૂરમલજી દલીચંદજી સાંકરિયા ( પૂ. મ. શ્રી

સ્વામીદાસજીના સંપ્રદાય પૂ. મ. શ્રી કૃતેચંદજી મ. ના

શિષ્ય પં. મુનિશ્રી કનૈયાલાલજી મ. ના ઉપદેશથી

સાંઢેરાવ ૫૦૧

૮૫ સ્વ. ગૌરીશંકર કાળીદાસ દેસાઈના સ્મરણાર્થે

હા. ભૂપતલાલ ગૌરીશંકર

ઈંદોર ૫૦૧

૮૬ શેઠ શ્રી નરસેરામભાઈ હંસરાજભાઈ કમાણી

જમશેદપુર ૫૦૧

૮૭ સ્વ. મહાસતીજી શ્રી ધનદેવીજી મ. સા. ના સ્મરણાર્થે

સ્વ. જૂળચંદજી સંજેલાલનાં ધર્મપત્ની શ્રીમતી જયદેવી

તરફથી ( મહાસતીજી શ્રી મુદર્શનામતીજી તથા

કુલમતીજીના ઉપદેશથી )

દિલ્લી ૫૦૧

- ૮૮ શ્રીમાન લાલાલ કપુરચંદલના જોશીનાં ધર્મપત્ની  
શ્રીમતી વસંતદેવી હા. લાલા રાજમલલ હેમચંદલ  
તરફથી ( મહાસતી શ્રી મુદશનામતલ તથા ફૂલ-  
મતિલ મહાદેવીના ઉપદેશથી ) દિલ્હી ૫૦૧
- ૮૯ સ્વ. મહાસતીલ શ્રી દ્રૌપતાદેવીલ મ. સા. ના સ્મરણાર્થે  
શ્રી એસ. એચ. જૈન મહિલા સંઘ તરફથી ( અનેક ગુણાલંકૃત  
મહાસતીલ શ્રી મોહનદેવીલ મ. સા. ની પ્રેરણાથી ) દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૦ સ્વ. લક્ષ્મીચંદલના સ્મરણાર્થે નગિનાદેવી સુજાતીના તરફથી  
હા. સંઘવી હેમંતકુમાર જૈન દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૧ સ્વ. પિતાશ્રી લાલા ઝવેરી ઘત્નોમલલ સુજાતીના સ્મરણાર્થે  
હા. શ્રીમતી નગીનાદેવી દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૨ લાલાલ કસ્તુરચંદલ ગુણાલયંદલ સંચિતી હા. જ્ઞાનચંદ્રલ અંલંકાર ૫૦૧
- ૯૩ સ્વ પૂજ્ય પિતાશ્રી ફૂલંબલ સોમચંદ દંકેતરી  
હા. ગૌરીશંકર ફૂલંબલ દંકેતરી ગુંબાઈ ૫૦૦
- ૯૪ શેઠ સોમચંદ જેઠાલાલ ઘોલાણી  
હા. ગુનીલાલભાઈ જેઠીયાવાળા ગુંબાઈ ૫૦૬
- ૯૫ શેઠ ફાજલમલલ સુલતાનસિંહલ ગોરદીયા અમદાવાદ ૫૦૧
- ૯૬ શેઠ હગનલાલ ચામલ વીરાણી તથા  
શ્રીમતી વૃન્દકુંવરજેન હગનલાલ વીરાણી દ્રુટકંઠ  
તરફથી શેઠ હગનલાલભાઈના સ્મરણાર્થે રાજકોટ ૫૦૧
- ૯૭ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ  
હા. પ્રમુખ ખંસીલાલ કટારીયા હિંગલિંગાટ ૫૦૧
- ૯૮ લાલાલ રામલાલલ રોશનલાલલ ( અનેક ગુણાલંકૃત  
મહાસતીલ મોહનદેવીના ઉપદેશથી ) દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૯ સ્વ. મહેતા મંગળલ મણીલાલના સ્મરણાર્થે  
હા. તેમના ધર્મપત્ની ગુણવંતીજેન મહેતા પાંડેચેરી ૫૫૧
- ૧૦૦ ખાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ ( મહાવીર ટેક્સટાઇલ સ્ટોર ) જેંગલોર ૫૫૩
- ૧૦૧ શ્રીયુત તારાચંદ જેલડા દ્રુટ મદ્રાસ ૫૦૧
- ૧૦૨ શેઠ ગુલરાજલ પુનમચંદલ મહેતા કીસનગંઢ ૫૫૧
- ૧૦૩ શેઠ અગરમલલ ત્રીકમચંદલ ઈંદોર સીંદી ૫૫૧



- ૧૦૪ કાનુગા ધીંગડમલ્લુ મુલતાનમલ્લુ  
કંવાડ ગઢસીયાણાવાળા અમદાવાદ ૫૦૧
- ૧૦૫ લાલાલ નવરતનચંદલ ચોરડીયાનાં ધર્મપત્ની  
શ્રીમતી રાજકુમારીબેન દિલ્હી ૫૦૧
- ૧૦૬ શેઠ ચીમનલાલ રૂપભચંદ અમદાવાદ ૫૦૧
- ૧૦૭ શેઠ કાનલ બીમાણી દ્રુટ કલકત્તા ૫૦૧
- ૧૦૮ શેઠ ગીરધરલાલ હંસરાજ કામાણી ,, ૫૦૧
- ૧૦૯ અનેક ગુણાલંકૃત મહાસતી ચોહનદેવીજીના ઉપદેશથી  
સ્વધર્મી બંધુઓ તરફથી દિલ્હી, ૫૦૧
- ૧૧૦ સ્વ. વિનયંદલ પારેખના સ્મરણાથે લાલા  
પૂર્ણચંદલ રતનચંદલ પારેખની વતી હ.  
શ્રીમતી પ્રેમાદેવી ( શાંત સ્વભાવી મહાસતીજી  
કુલકુંવરબાઈના ઉપદેશથી ) દિલ્હી ૫૦૧
- ૧૧૧ શ્રીમતી બદામબાઈ મીશ્રીલાલલ લુણિયા ચંડાવલવાળા અમદાવાદ ૫૦૧
- ૧૧૨ શેઠ ભરતકુમાર મણીલાલ દલાલ ,, ૫૫૧
- ૧૧૩ શાહ હરખચંદ અમરચંદ ,, ૫૦૧
- ૧૧૪ શાહ જગલ્લવનદાસ વન્દ્રાવનદાસ ,, ૫૦૧
- ૧૧૫ શેઠ હંસરાજ લક્ષ્મીચંદ કામાણી જૈનભુવન કલકત્તા ૫૦૧
- ૧૧૬ પૂ. ઢાલાલ સ્વ. કપુરચંદલ તથા ઢાલીલ  
કેસરબેન ચોરડીયાના સ્મરણાથે હા. લાલા  
કુલચંદલ અને શ્રીમતી વીમલકુંવરી ગવેરીની  
વતી શ્રીમતી નગીનાદેવી ( મહાસતીજી  
કુલમતીજીના ઉપદેશથી ) દિલ્હી ૫૦૧
- ૧૧૭ શેઠ નગીનદાસ છોટાલાલ અમદાવાદ ૫૦૧
- ૧૧૮ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. શેઠ ગણેશમલ્લ ગુલાબચંદ બરોડા ૫૦૧
- ૧૧૯ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ ભદેસર ૫૦૧
- ૧૨૦ શ્રી સરાક જૈન વિદ્યાલય કુમારડી ૫૦૧
- ૧૨૧ ગાંધી ભુરાલાલ નાનચંદ મુંબઈ ૫૦૧
- ૧૨૨ શ્રીમાન હિંમતસિંહલ સાહેબ ગણ્ડીયા  
એડીસનલ કમિશ્નર અજમેર સીવીલનવાળાના  
ધર્મપત્ની અ. સી. માણેકકુંવરબેન તરફથી  
હા. પ્રશાદસિંહલ ગણ્ડીયા જયપર ૫૫૧

|  |               |
|--|---------------|
| ૧૨૩ શેઠ ક્રમરલાલજી સીરાયા                                    | ઉદિપુર ૫૦૧    |
| ૧૨૪ શેઠ મનસુખલાલ ત્રીલોવનદાસ                                 | કેહમ્બતુર ૫૦૧ |
| ૧૨૫ શ્રી દશા શ્રીમાળી સ્થા. નૈન સંઘ                          | જમશેદપુર ૫૦૧  |
| ૧૨૬ શ્રી નૈન રત્ન પુસ્તકાલય                                  | જોધપુર ૫૦૧    |
| ૧૨૭ શેઠ અણ્ણતમલ કનૈયાલાલ                                     | અમદાવાદ ૫૦૦   |
| ૧૨૮ શેઠ વસ્તીમલજી ભોરાવરમલજી ભુરટ                            | હુબલી ૫૦૧     |
| ૧૨૯ શેઠ ચાંદમલજી હરખચંદજી કેઠારી<br>હા. ખમાબેન મુળચંદજી      | અમદાવાદ ૫૦૧   |
| ૧૩૦ બાટવીયા શુભામચંદ લીલાધર                                  | ખાખીનળીયા ૫૦૨ |
| ૧૩૧ બેન લક્ષ્મીબાઈ પુર્વમલ મહેતા                             | પાલનપુર ૫૦૧   |
| ૧૩૨ શ્રીવીર વર્ધમાન પુસ્તકાલય<br>હા. શેઠ હીરાલાલજી ગણેશલાલજી | કુંવારીયા ૫૦૧ |

## ૫૮૨-લાઈફ મેમ્બરો

### અમદાવાદ તથા પરંચો

| નંબર | નામ  | રૂપિયા |
|------|--|--------|
| ૧    | શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ  | ૨૫૧    |
| ૨    | શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા. ફકીરચંદભાઈ  | ૨૫૧    |
| ૩    | શાહ કાંતિલાલ ત્રીલોવનદાસ   | ૨૫૧    |
| ૪    | શાહ પોપટલાલ મોહનલાલ  | ૨૫૧    |
| ૫    | શેઠ પ્રેમચંદ સાંકરચંદ  | ૨૫૦    |
| ૬    | શાહ રતીલાલ વાડીલાલ   | ૨૫૧    |
| ૭    | શેઠ લાલભાઈ મંગળદાસ   | ૨૫૧    |
| ૮    | સ્વ. અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે,<br>હા. કાનજીભાઈ અમૃતલાલ દેસાઈ                             | ૨૫૧    |
| ૯    | શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ  | ૨૫૧    |
| ૧૦   | શાહ નરસિંહદાસ ત્રીલોવનદાસ  | ૨૫૧    |
| ૧૧   | શાહ ખીપીનચંદ્ર તથા ઉમાકાંત ચુનીલાલ ગોપાણી  | ૩૦૧    |
| ૧૨   | શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આઠકોટી સ્થા. નૈન ઉપાશ્રય<br>હા. વહીવટ કર્તા શેઠ ઇન્દરલાલ પુરુષોત્તમદાસ | ૨૫૧    |

|  |     |
|--|-----|
| ૧૩. શ્રી. છીપાપોળ દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈન સંઘ   |     |
| હા. શેઠ ચંદુલાલ અચસ્તલાલ   | ૨૫૧ |
| ૧૪. શાહ ચીનુભાઈ બાલાભાઈ C/o શાહ બાલાભાઈ મહાસુખલાલ  | ૨૫૧ |
| ૧૫. શાહ ભાઈલાલ ઉજમશી   | ૨૫૧ |
| ૧૬ શ્રી સુખલાલ ડી. શેઠ હા. ડો. કુ. સરસ્વતીબેન શેઠ  | ૨૫૧ |
| ૧૭ શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ કાંતિલાલ જીવજીલાલ  | ૨૫૧ |
| ૧૮ મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ  | ૨૫૧ |
| ૧૯ શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ   | ૨૫૧ |
| ૨૦ શ્રી છકોટી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ પોચાલાલ પિતાંબરદાસ   | ૨૫૧ |
| ૨૧ દેસાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા. ભાઈલાલ અમૃતલાલ   | ૨૫૧ |
| ૨૨ શાહ નવનીતરાય અમુલખરાય   | ૨૫૧ |
| ૨૩ શાહ મણીલાલ આશારામ   | ૨૫૧ |
| ૨૪ શેઠ ચીનુભાઈ સાકરચંદ   | ૨૫૧ |
| ૨૫ શાહ વરજીવનદાસ ઉમેચંદ  | ૨૫૧ |
| ૨૬ શાહ રજનીકાન્ત કસ્તુરચંદ   | ૨૫૧ |
| ૨૭ સંઘવી જીવજીલાલ છગનલાલ   | ૨૫૧ |
| ૨૮ શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ ઝાંગધ્રાવાળા   | ૨૫૨ |
| ૨૯ અ. સૌ. બેન રતનબેન નાદેચા હા. શેઠ ધુલજી ચંપાલાલજી  | ૨૫૧ |
| ૩૦ શાહ હરિલાલ જોડાલાલ ભાડલાવાળા  | ૨૫૧ |
| ૩૧ શ્રી સરસપુર દરીયાપુરી આઠ કોટી સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય   |     |
| હા. ભાવસાર લોગીલાલ છગનલાલ  | ૨૫૧ |
| ૩૨ શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા સાહસીવાળા  | ૨૫૧ |
| ૩૩ સ્વ. પિતાશ્રી જવાહરલાલજી તથા પૂજ્ય આચાર્ય હંભરીમલજી<br>ખરડીયાના સ્મરણાર્થે હા. મુળચંદ જવાહરલાલજી ખરડીયા | ૨૫૧ |
| ૩૪ સ્વ. ભાવસાર બમાભાઈ ( મુંગળદાસ ) પાનાચંદના સ્મરણાર્થે<br>હા. તેમનાં ધર્મપત્ની પુરીબેન                    | ૨૫૧ |
| ૩૫ સ્વ. પિતાશ્રી સ્વજીભાઈ તથા સ્વ. માતૃશ્રી મુળીબાઈના સ્મરણાર્થે<br>હા. કકલભાઈ કોઠારી                      | ૩૦૧ |
| ૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ   | ૨૫૧ |
| ૩૭ શાહ કેશવલાલ નાનચંદ, બખડાવાળા હા. પ્રાવર્તીબેન   | ૨૫૧ |
| ૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા  | ૨૫૧ |

|  |     |
|--|-----|
| ૩૬ શ્રી સાબરમતી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ મણીલાલભાઈ              | ૨૫૬ |
| ૪૦ ભાવસાર ટોટાલાલ છગનલાલ                                     | ૨૫૭ |
| ૪૧ ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલ                                     | ૨૫૧ |
| ૪૨ અ. સૌ. જેન જીવીજેન રતિલાલ હા. ભાવસાર રતિલાલ હરગોવિંદદાસ   | ૨૫૧ |
| ૪૩ ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા                           | ૨૫૧ |
| ૪૪ સંઘવી બાલુભાઈ કમળશી તથા તેમનાં ધર્મપત્નીઓ અ. સૌ.          |     |
| અંપાજેન તરફથી તથા વસંતજેન તરફથી                              | ૨૫૧ |
| ૪૫ અ. સૌ. વિદ્યાજેન વનેચંદ્ર દેસાઈ વર્ષિતમ તથા અંદાઈ પ્રસંજે |     |
| હા. ભુપેન્દ્રકુમાર વનેચંદ્ર દેસાઈ                            | ૪૧૭ |
| ૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ                                       | ૨૫૧ |
| ૪૭ અ. સૌ. સરસ્વતીજેન મણીલાલ છગનલાલ                           | ૩૫૧ |
| ૪૮ અ. સૌ. કંકુજેન ( ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલનાં ધર્મપત્ની )     | ૩૦૬ |
| ૪૯ અ. સૌ. સવિતાજેન ( જયંતીલાલ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્ની )         | ૨૫૧ |
| ૫૦ અ. સૌ. સુનંદાજેન ( રમણલાલ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્ની )          | ૨૫૧ |
| ૫૧ શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા. વાગમલજી રૂગનાથજી     | ૩૦૧ |
| ૫૨ શેઠ મણીલાલ બોધાભાઈ  | ૨૫૧ |
| ૫૩ પટવા સુમેરમલજી અનોપચંદજી બેધપુરવાળા                       | ૩૦૧ |
| ૫૪ સ્વ. માણેકલાલ વનમણીદાસ શેઠના સ્મરણાર્થે                   |     |
| હા. રમણલાલ માણેકલાલ  | ૨૫૧ |
| ૫૫ સ્વ. શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે                    |     |
| હા. કનૈયાલાલ ધનરાજજી   | ૩૦૧ |
| ૫૬ શ્રી સારંગપુર હ. આ. કે. સ્થા. જૈન સંઘ                     |     |
| હા. શાહ રમણલાલ ભણુભાઈ  | ૨૫૧ |
| ૫૭ દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મીબાઈ લહેરચંદના            |     |
| સ્મરણાર્થે હા. દોશી મનહરલાલ કરશનદાસ સુળીવાળા                 | ૨૫૧ |
| ૫૮ શાહ પુનમચંદ્ર દેતેચંદ                                     | ૨૫૧ |
| ૫૯ શ્રીયુત અતુરભાઈ નંદલાલ                                    | ૫૨૧ |
| ૬૦ શ્રીયુત અમૃતલાલ ઇન્દરલાલ મહેતા                            | ૨૫૧ |
| ૬૧ શાહ બલવજી મોહનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમુલખલાલ                | ૨૫૧ |
| ૬૨ અ. સૌ. જેન લાલુજેન મગનલાલ                                 |     |
| હા. શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઈ વલ્લભજી શહેરવાળા                     | ૩૦૧ |

- ૬૩ અ. સૌ. બેન કાન્તાબેન ગોરધનદાસ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૬૪ કોશી કુલચંદ્ર સુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા. કોશી છળીલદાસ કુલચંદ્રભાઈ ૨૫૧
- ૬૫ લાલાલ રામકુંવરજી બેન ૨૫૧
- ૬૬ શેઠ છોટાલાલ સુલાખચંદ્ર પાલનપુરવાળા ૨૫૧
- ૬૭ શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ ૨૫૧
- ૬૮ સંઘવી સુચંકાન્ત ચુનીલાલના સ્મરણાર્થે  
હા. સંઘવી જીવણલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧
- ૬૯ ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય ૨૫૧
- ૭૦ મહેતા સુળચંદ્ર મગનલાલ ૨૫૧
- ૭૧ વૈદ નરસિંહદાસ સાકરચંદના ધર્મપત્ની દેવાબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા. હરીલાલ નરસિંહદાસ ૨૫૧
- ૭૨ શાહ કુલચંદ્રભાઈ સુલચંદ્ર હા. હંસસુખભાઈ કુલચંદ્રભાઈ ૨૫૧
- ૭૩ શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી બરડીયા ૨૫૧
- ૭૪ શાહ લલ્લુભાઈ મગનભાઈ ચુડાવાળા હ. જયવંતલાલ લલ્લુભાઈ ૩૦૧
- ૭૫ કુમારી પુષ્પાબેન હીરાલાલ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૭૬ શાહ મણીલાલ કાકરશી હ. કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા  
(ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૭૭ કુમારી નલીનીબેન જયંતીલાલ ૨૫૧
- ૭૮ સ્વ. ઉમેદશામ ત્રીભુવનદાસનાં ધર્મપત્ની કાશીબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા. શાંતિલાલ ઉમેદશામ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૭૯ સ્વ. ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલનાં ધર્મપત્ની દીવાળીબાઈનાં  
સ્મરણાર્થે હ. રતીલાલ માણેકલાલ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૮૦ મહેતા દેવીચંદ્રજી યુગચંદ્રજી ધોડા ગઢસીયાણાવાળાનાં  
સ્મરણાર્થે હ. મહેતા ચુનીલાલ હરમાનચંદ ૨૫૧
- ૮૧ ઘાસીલાલજી મોહનલાલજી કેઠારી કે. લક્ષ્મી પુસ્તક ભંડાર ૨૫૧
- ૮૨ સ્વ. શેઠ નાથલાલ રતનાભાઈ મારફતીયાનાં સ્મરણાર્થે પુનાબેન  
તરફથી હ. કરશનભાઈ (ચાંદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૮૩ શાહ મણીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
- ૮૪ ભાવસાર જયંતીલાલ લોગીલાલ ૨૫૧
- ૮૫ ભાવસાર રમણલાલ લોગીલાલ ૨૫૧

- ૮૬ ભાવસાર કંતુભાઈ સાકરચંદ્ર ૨૫૧
- ૮૭ શેઠ ભેદમલજી સાહેબ બેધપુરવાળા ૨૫૧
- ૮૮ સ્વ. બેનાણી વર્ધમાન રામજીભાઈ કુંદણીવાળાના સ્મરણાર્થે  
હ. શાંતિલાલ વર્ધમાન ૨૫૧
- ૮૯ સ્વ. કચરાભાઈ લહેરભાઈના સ્મરણાર્થે  
હ. શાંતિભાઈ કચરાભાઈ ૨૫૧
- ૯૦ એક સ્વધર્મી બન્ધુ હ. શાહ રીખલદાસજી બંધતીલાલજી ૨૫૧
- ૯૧ અ. સૌ. સરસ્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઈ શાહ  
( સદાનંદી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી ) ૨૫૧
- ૯૨ ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ ( હરીયાપુરી સંપ્રદાયના પૂ. તપસ્વી  
મહારાજશ્રી માણેકચંદ્રજીના શિષ્ય મુનિશ્રી મગનલાલજી  
મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે ) ૨૫૧
- ૯૩ બેન બેકુંવર મજલાલ પારેખ ૨૫૧
- ૯૪ શેઠ પુનમચંદ્રજી જવાહીરલાલજી બરડીયા ૨૫૧
- ૯૫ અ. સૌ. લીલાવતી ખીરજલાલ મહેતા  
કે. ઠે. ખીરજલાલ ત્રીકમલાલ મહેતા ૩૦૧
- ૯૬ શેઠ રાજમલજી ઘાસીલાલજી કોઠારી કૌશીયલવાળા ૨૫૧
- ૯૭ શેઠ મુનીલાલ ભગવાનજી કે. રતીલાલ મુનીલાલ ૨૫૧
- ૯૮ ભાગ્યવતી અરવીંદકુમાર કે અરવીંદકુમાર સકરાભાઈ ભાવસાર ૨૫૧
- ૯૯ અ. સૌ. ચંચળબેન મનસુખલાલ  
હા. મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા ૨૫૧
- ૧૦૦ સ્વ. આસીબાઈ તથા વસંતીમલજી લોમાજીના સ્મરણાર્થે  
હા. શેઠ મીશ્રીમલજી દેવચંદ્રજી જોસવાલ કેરવાળા ૨૫૨
- ૧૦૧ સ્વ. શેઠ કીશનમલજી માંડોતના સ્મરણાર્થે  
હા. શીરમલજી કીશનમલજી સોજતવાલા ૨૫૧
- ૧૦૨ સ્વ. શેઠ વક્રતારમલજીના સ્મરણાર્થે  
હા. શેઠ ઘીસાલાલજી મુકનરાજજી શીયારીયા ( બેધપુરવાલા ) ૨૫૧
- ૧૦૩ શાહ મહાસુખલાલ લાઈલાલ ( સદાનંદી પંડિત મુનિશ્રી  
છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી ) ૨૫૧
- ૧૦૪ અ. સૌ. કાન્તાબેન કાળીદાસ કે. કુમાર ભુકભાઈન્ડીજ વકસ ૨૫૧
- ૧૦૫ સ્વ. હિમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે  
તેમના સુપુત્રો મેસર્સ દ્વારકાદાસ એન્ડ બ્રધર્સ તરફથી ૩૫૧

૧૦૬ અ. સૌ. કાન્તાબેનના સ્મરણાથે

|   |     |
|---|-----|
| હા. ભાવસાર નામરદાસ હરજીવનદાસ  | ૨૫૧ |
| ૧૦૭ શ્રી ઉમેદચંદ કાકરશી ઠે. યુ. ડી. ગોપાણી એન્ડ સન્સ  | ૩૫૧ |
| ૧૦૮ પૂ. માતુશ્રીના સ્મરણાથે હા. ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ   | ૨૫૧ |
| ૧૦૯ શાહ શાંતીલાલ મોહનલાલ  | ૨૫૧ |
| ૧૧૦ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા. પ્રભુદાસ મહેતા   | ૨૫૧ |
| ૧૧૧ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા. શાહ જુરાલાલ કાળીદાસ  | ૨૫૧ |
| ૧૧૨ સ્વ. પિતાશ્રી મોતીલાલજીના સ્મરણાથે  |     |
| હા. મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા   | ૨૫૧ |
| ૧૧૩ શેઠ પરસોતમદાસ અમરસીનાં ધર્મપત્ની સ્વ. કુસુમબેનના સ્મરણાથે તથા અ. સૌ સવીતાબેનના માસખંમણના નિમિત્તે |     |
| હા. શેઠ સોમચંદ પરસોતમદાસ ( પોર્ટ ) સુદાનવાળા )  | ૩૦૧ |
| ૧૧૪ શ્રીમાન જોરાવરમલજી ધર્મચંદ્રજી ડુંગરવાલ   |     |
| રાજજી કાકેરડાવાળા ( મુનિશ્રી માંગીલાલજીના ઉપદેશથી )   | ૨૫૧ |
| ૧૧૫ ડા. ધનજીભાઈ પરસોતમદાસ   | ૨૫૧ |
| ૧૧૬ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર  | ૩૫૧ |
| ૧૧૭ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર  | ૩૫૧ |
| ૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર  | ૩૫૧ |
| ૧૧૯ શેઠ ગેરિલાલજી સુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા  | ૨૫૧ |
| ૧૨૦ શેઠ કનૈયાલાલજી સુરાણા પીપલોઢાવાળા   | ૨૫૨ |
| ૧૨૧ કામદાર વાહીલાલ રતીલાલ ( સાબરમતી )   | ૨૫૨ |
| ૧૨૨ કુમારી ચંપાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર   | ૨૮૦ |
| ૧૨૩ કુમારી ઉષાબેન જયંતીલાલ ભાવસાર   | ૨૫૧ |
| ૧૨૪ કુમારી ચંદ્રાબેન જયંતીલાલ ભાવસાર  | ૨૫૧ |
| ૧૨૫ કુમારી જયશ્રી રમણલાલ ભાવસાર   | ૨૫૧ |
| ૧૨૬ શાહ ડાહ્યાભાઈ અંબાલાલ   | ૩૫૧ |
| ૧૨૭ ખરડીયા ચાંદમલજી જવાહીરલાલજી   | ૨૫૧ |
| ૧૨૮ શ્રી બીજયદાન સુરેશ્વરજી જ્ઞાનમંદીર પૌષધશાળા   | ૩૫૧ |
| ૧૨૯ શેઠ પાનાચંદ ઝવેરચંદ સારંગપુર ઉપાશ્રય ટ્રસ્ટ   |     |
| હા. વકીલ બાબુભાઈ હંમિતલાલ   | ૩૫૧ |

## અમલોનેર

- ૧ શાહ નાગરદાસ વાણજીભાઈ ૨૫૧  
૨ શ્રી સ્થા. બેન સંવ હા. ગાંડાલાલ બીખાલાલ ૨૫૧

## અજમેર

- ૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ હુંગરવાલ ૨૫૧

## અણવર

- ૧ શ્રીમતી અંપાદેવી ઠે. બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી ૨૫૧  
૨ શેઠ ચાંદમલજી મહાવીરપ્રસાદ પાલાવત ૨૫૧  
૩ શ્રીયુત રૂપભદ્રુમાર સુમતિભદ્રુમાર બેન ૨૫૧

## આસનસોલ

- ૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની  
મણીબાઈ તરફથી હા. રસિકલાલ, અનિલકાંત, તથા વિનોદશય ૨૫૧

## આટકોટ

- ૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણજી ૩૦૧

## આણંદ

- ૧ શેઠ રમણીકલાલ એ. કપાસી હા. મનચુખલાલભાઈ ૨૫૧

## આકોલા

- ૧ શેઠ કંચનલાલ રાણવજી અજમેરા ઠે, એસસં અજમેરા બ્રાધસં એન્ડ  
કાં. ( પૂ. સકાનંદી સુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી ) ૨૫૧

## ઈગતપુરી

- ૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચંદ બેન ૨૫૧

## ઈન્દોર

૧. અ. સૌ બેન કયાબેન મોહનલાલ દેસાઈ જોતપુરવાળા  
( અ. સૌ. બેન વિદ્યાબેનનાવધીતપ નિમિત્તે )  
હા. અરવિંદકુમાર તથા જોતેન્દ્રકુમાર ૨૫૧.  
૨ શ્રીયુત ભાઈલાલ છગનલાલ તુરખીયા ૩૫૧

## ઉદયપુર

- ૧ શેઠ રણજીતલાલજી ચોતીલાલજી હિંગડે ૨૫૧  
૨ શ્રીમતી સોહિનીબાઈ ઠે રણજીતલાલજી ચોતીલાલજી હિંગડે ૨૫૧



- ક્ર અ. સૌ. એન અન્નાવતી તે શ્રીમાન ગહોતલાલ નાહરનાં  
ધર્મપત્ની હા. શેઠ રણુજીતલાલ શ્રીતીલાલ ડિંગડર ૨૫૧
- ૪ શેઠ છગનલાલ બાગેચા ૨૫૧
- ૫ શેઠ મગનલાલ બાગેચા ૨૫૧
- ૬ સ્વ. શેઠ કાળુલાલ લોહાના સ્મરણાર્થે  
હા. શેઠ દોલતસિંહ લોહા ૨૫૧
- ૭ સ્વ. શેઠ પ્રતાપમલ સાખલાના સ્મરણાર્થે  
હા. પ્રાણુલાલ હીરાલાલ સાખલા ૨૫૧
- ૮ શેઠ બીમરાજ યાવચંદ યાદવ ૨૫૧
- ૯ શ્રીચુત સાહેબલાલ મહેતા ૨૫૧
- ૧૦ શેઠ પન્નાલાલ ગણેશલાલ હીંગડ ૨૫૧
- ૧૧ શેઠ દીપચંદ પન્નાલાલ લોહા ૨૫૧
- ૧૨ શેઠ કસ્તુરચંદ નાડમલ ૨૫૧
- ૧૩ શ્રી. યુ. એલ. કોઠારી ૩૦૧
- ૧૪ બાબુ પરશુરામ છગનલાલ શેઠ ૨૫૦
- ૧૫ શેઠ કનૈયાલાલ કાડલાલ જૈન ૨૫૧
- ૧૬ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ આમડ ૩૫૧

### ઉપલેટા

- ૧ શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ ૨૫૧
- ૨ સ્વ. એન સંતોકેન કચરા હા. ઓતમચંદભાઈ, છોટાલાલભાઈ  
તથા અમૃતલાલભાઈ વાલજી ( કલ્યાણવાળા ) ૨૫૧
- ૩ શેઠ ખુશાલચંદ કાનજીભાઈ હા. પ્રતાપભાઈ ૨૫૧
- ૪ દેવેશી વીરુદલ હરખચંદ ૨૫૧
- ૫ સંઘાણી મુળશંકર હરજીવનભાઈના સ્મરણાર્થે હા. તેમના પુત્રો  
જયંતીલાલ તથા રમણીકલાલ ૨૫૧

### ઉમરગાંવ રોડ

- ૧ શ્રી હિ શાહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

૧૬૩

### એડન કેમ્પ

- ૧ મહેતા પ્રેમચંદ ભાણેકચંદના સ્મરણાર્થે  
હા. રામચંદભાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રસીકલાલભાઈ ૨૫૧

- ૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરસોતમદાસ ૨૫૧  
૩ શાહ ગોકળદાસ શામલ ઉદાણી ૨૫૧

## કલકત્તા

- ૧ શ્રી કલકત્તા જૈન મ્લે. સ્થા. (ગુજરાતી) સંઘ ૨૫૧

## કલોલ

- ૧ શેઠ મોહનલાલ બેઠાભાઈના સ્મરણાર્થે  
હા. શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧  
૨ ડા. મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા. ડા. રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧  
૩ સ્વ. નાથાલાલ ઉમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા. શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧  
૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે  
હા. મારક્ટીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧  
૫ સ્વ. શ્રીચુત વાડીલાલ પરસોતમદાસના સ્મરણાર્થે  
હા. બેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧  
૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧  
૭ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ ૨૫૧

## કરી

- ૧ શ્રી સ્થા. હરિયાપુરી જૈન સંઘ  
હા. ભાવચાર હામોદરદાસભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧  
૨ પાર્વતીબેન ઠે. બેસીંગભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧

## કરજણ

- ૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ ત્રિયાંગમ કરજણ ૨૫૧

## કઠોર

- ૧ સ્થા. જૈન સંઘ બેસીંગભાઈ પોચાલાલ તરફથી  
( માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી )  
હા. કાઠોરભાઈ રાયચંદ્ર ૨૫૧

## કત્રાસંગઢ

- ૧ શ્રી મ્લે. સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ દેવચંદ અસુલખલાલ ૨૫૧

## કલ્યાણ

- ૧ સંઘવી કાકરશીભાઈ સંઘજીના સ્મરણાર્થે  
હા. શાહ હીમતલાલ હરખચંદ ૨૫૧

૨૦

### કાનપુર

૧ શાહ રમણીલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

### કુંદણી-( આટકોટ )

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

### કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧

૨ પટેલ ખીમજી બેઠાભાઈ વાઘણી ( તેમના સ્વ. સુપુત્ર  
રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે ) ૩૦૨

### કમ્પાલા

૧ સ્વ. શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ પ્રાક્ષાવાળાના સ્મરણાર્થે  
હ. તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧

૨ શ્રીમતી હીરાબેન, રતીલાલ નાનચંદ શેઠ પ્રાક્ષાવાળા ૨૫૧

### કુશાળગઢ

૧ શેઠ ચંપાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

### કોલ્હાપુર

૧ વકીલ મણીલાલ ખેંગારભાઈ  
હા. હરીલાલભાઈ ૨૫૧

### ખારાધોડા

૧ સ્વ. પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા  
સ્વ. યા. સૌ. બેન જમકુભાઈ તથા લીલાબાઈના  
સ્મરણાર્થે હા. નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૨ સ્વ. શેઠ ગોવિંદલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હા. લાલચંદ ગોવિંદભાઈ ૨૫૧

### ખીચન

૧ શેઠ કીસનલાલ પૃથ્વીરાજ માલુ ૩૫૨

### ખુરદારોડ

૧ શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી ખેડપવાળા ૩૦૦

૨ શેઠ નરસિંહદાસ શાંતિલાલજી લોધવાળા  
( મુનિશ્રી ચાંદમલજીના ઉપદેશથી ) ૨૫૧

## ખંભાત

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| ૧ શેઠ માણિકલાલ ભગવાનદાસ   | ૨૫૧ |
| ૨ શેઠ ત્રીલોચનદાસ મંગળદાસ | ૨૫૧ |
| ૩ શ્રી સ્થા. જૈન સંગ      | ૨૫૧ |
| ૪ શાહ ચંદુલાલ હરીલાલ      | ૨૫૧ |
| ૫ શાહ સાંકળચંદ મોહનલાલ    | ૨૫૧ |
| ૬ શાહ શંકરાભાઈ દેવચંદ     | ૨૫૧ |
| ૭ શાહ સુખલાલ દોલતચંદ      | ૨૫૧ |
| ૮ ગાંધી બાપુલાલ મોહનલાલ   | ૨૫૧ |
| ૯ જૈન લલિતા માણિકલાલ      | ૨૫૧ |

## મોંધીધામ

|                                 |     |
|---------------------------------|-----|
| ૧ શાહ મોરારજી નાગજી જોન્ડ કંપની | ૨૫૧ |
|---------------------------------|-----|

## ગુંદલા

|                     |     |
|---------------------|-----|
| ૧ શાહ માલશી ચેલાભાઈ | ૨૫૧ |
|---------------------|-----|

## ગુલાબપુરા

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શ્રી સ્થા. જૈન વર્ધમાન સંઘ               |     |
| હ. માંગીલાલજી ઉકારમલજી ધનોપવાળા            | ૨૫૧ |
| ૨ શ્રી જોસવાલ પંચાયત હ. ગુલાબચંદજી ચોરડીયા | ૨૫૧ |

## ગોંડલ

|  |     |
|--|-----|
| ૧ કવ. ભાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસનાં ધર્મપતિ કમલભાઈ       |     |
| તરફથી હા. માણિકચંદભાઈ તથા કેપુરચંદભાઈ                | ૨૫૧ |
| ૨ પીપળીયા લીલાધર દામોદર તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ. સૌ. |     |
| લીલાવતી સાકરચંદ કોઠારીના બીજા વર્ષાતપની પ્રસાદીમાં   | ૩૦૧ |
| ૩ કામદાર ગુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણથી હા.                |     |
| હરીલાલ જુઠાલાલ કામદાર                                | ૩૦૧ |
| ૪ સ્વ. કોઠારી કૃપાશંકર માણિકચંદના સ્મરણથી            |     |
| હા. તેમનાં ધર્મપત્ની પ્રભાકુવરબેન                    | ૨૫૧ |
| ૫ કોઠારી ગુલાબચંદ રાયચંદ રંગુનવાળા                   | ૨૫૧ |

- ૬ જસાણી રૂગનાથભાઈ નાનલ હા. નીલાચુલભાઈ ૨૫૧  
૭ માસ્તર હકમીચંદ હીપચંદ શેઠ ૨૫૧

ગોંડીયા

- ૧ સ્થા. જૈન સંઘ હ. શાહ પ્રેમચંદ છોટાલાલ (શેઠ પોપટલાલભાઈ તરફથી) ૨૫૦

ગોધરા

- ૧ શાહ ત્રીલોવનદાસ છગનલાલ ૩૦૧  
૨ સ્થ. પ્રેમચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા. શાહ ચુનીલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૧

ઘટકણુ

- ૧ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ ૨૫૧

ધોલવડ (થાણા)

- ૧ મહેતા શુભાખચંદ ગંધીરમલલ ૩૦૦

ધોડનદી

- ૧ શેઠ ચંદ્રભાણુ શોભાચંદ ગાદીયા ૨૫૧

ચુડા

- ૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. રતીલાલ મગનલાલ ગાંધી ૨૫૧

ચોટીસા

- ૧ શાહ વનેચંદ બેઠાલાલ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘને લેટ ૩૦૧

ચારલુબરોડ

- ૧ શેઠ માંગીલાલલ હીરાચંદલ બાગેલ ૩૦૧

જમશેદપુર

- ૧ ઠોશી જવેરચંદ વલમલ ૨૫૧

જલેસર (ખાલાસોર)

- ૧ સંઘવી નાનચંદ પોપટભાઈ ચાનગઢવાળા ૨૫૧

જયપુર

- ૧ શ્રીમાન શેઠ શીરમલલ નવલખાનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. પ્રેમલતાદેવી ૨૫૧

જસવંતગઢ

- ૧ શ્રીમાન સુન્દરલાલલ નેમીચંદલેસર ૩૫૧

### જામખંભાળીયા

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શેઠ વસનભ નારણભ                                  | ૨૫૧ |
| ૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. મહેતા રણછોડદાસ પરમાણ્વંદ | ૨૫૧ |
| ૩ સંઘની પ્રાણલાલ લવણભાઈ                           | ૨૫૧ |

### જામનગર

|                         |     |
|-------------------------|-----|
| ૧ શાહ છોટાલાલ કેશવભ     | ૨૫૧ |
| ૨ વોરા ચીમનલાલ દેવભાઈ   | ૨૫૧ |
| ૩ ડા. સાહેબ પી. પી. શેઠ | ૨૫૦ |
| ૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ  | ૨૫૧ |

### જુનારદેવ.

|                          |     |
|--------------------------|-----|
| ૧ થેલાણી ત્રીકમભ લાધાભાઈ | ૨૫૧ |
|--------------------------|-----|

### જુનાગઢ

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઈ હા. હરીલાલભાઈ ( હાટીના ; માંજીયાવાળા ) | ૨૫૧ |
|---|-----|

### જામજોધપુર

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. મહેતા પોપટલાલ માવણભાઈ | ૩૮૭ |
| ૨ શાહ ત્રીલોચનદાસ લગંવાનભ પાનેલીવાળા           | ૨૫૧ |
| ૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન                           | ૨૫૧ |
| ૪ પટેલ લાલભ જુઠાભાઈ                            | ૨૫૧ |
| ૫ શેઠ ભાવનભ જેઠાભાઈ                            | ૨૫૧ |
| ૬ શેઠ વૃજલાલ ચુનીલાલ                           | ૨૫૧ |

### જેતપુર

|  |     |
|--|-----|
| ૧ ઠેઠારી ઠાલરકુમાર વેણીલાલ                         | ૨૫૧ |
| ૨. અ. સૌ. જૈન સુરજકુંવર વેણીલાલ ઠેઠારી             | ૨૫૧ |
| ૩ શેઠ અમૃતલાલ હીરભાઈ હા. નરસેરામભાઈ ( જસાપુરવાળા ) | ૨૫૧ |
| ૪ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ                              | ૨૫૧ |

### જેતલસર

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ  | ૨૫૧ |
| ૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની<br>જમકેન તરફથી હા. ચાંતિલાલભાઈ ગોંડલવાળા | ૨૫૧ |

## જોધપુર

|                                   |     |
|-----------------------------------|-----|
| ૧ શેઠ નવરતમલલ ધનવંતિસિંહજી        | ૨૫૭ |
| ૨ શેઠ હસ્તીમલજી મનરૂપમલજી સામસુખા | ૨૫૧ |
| ૩ શેઠ પુખરાજજી પદમારાજજી ભાંડારી  | ૨૫૧ |
| ૪ શેઠ વસ્તીમલજી આનંદમલજી સામસુખા  | ૨૫૧ |

## જેરાવરનગર

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ ચંપકલાલ ધનજીભાઈ | ૨૫૧ |
|--|-----|

## ઝરીયા

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ કનૈયાલાલ બી. મોદી | ૨૫૧ |
|--|-----|

## ડોંડાયચ્યા

|                      |     |
|----------------------|-----|
| ૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ | ૨૫૦ |
|----------------------|-----|

## ઢસાં

|   |     |
|---|-----|
| ૧ ઢસાગામ સ્થા. જૈન સંઘ હા. એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી                 | ૨૫૧ |
| ૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. બગડિયા નરસેરામ જેઠાલાલ ( ઢસા બંકશન ) | ૨૫૧ |

## તાસગાંવ

|   |     |
|---|-----|
| ૧ ૨૧. ચુનીલાલજી દુગડના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની<br>ઢોંડુભાઈ તરફથી હા. શેઠ રામચંદજી | ૩૫૧ |
|---|-----|

## થાનગઢ

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ કરશનજી                   | ૨૫૧ |
| ૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ                | ૨૫૧ |
| ૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હા. સુખલાલભાઈ   | ૨૫૧ |
| ૪ હંસાજેન અરવીંદ હા. ભાઈ રવીચંદ માણેકચંદ | ૩૦૧ |

## દહાણુરોડ

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓઘડ ખંધાર ( કરાંચીવાળા ) | ૨૫૧ |
|--|-----|

## દાહોદ

|                            |      |
|----------------------------|------|
| ૧ શેઠ માણેકલાલભાઈ ખેંગારજી | ૨૫૧. |
|----------------------------|------|

## દીલ્હી

|   |     |
|---|-----|
| ૧ લાલાજી પૂણ્યચંદજી જૈન ( સેન્ટ્રલ ખેંઠવાળા ) | ૩૫૧ |
|---|-----|

- ૨ શ્રીયુત કીશનચંદ્ર મહેતાખચંદ્ર ચોરડીયા  
હા. શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીયુત મહેતાખચંદ્ર જૈન ૨૫૧
- ૩ અ. સૌ. સબ્જનથેન ઈદરમલ્લ પારેખ ૨૫૧
- ૪ લાલાલ મીકનલાલ જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
- ૫ લાલાલ શુલશનલાલ જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧
- ૬ યેન વિજયાકુમારી જૈન ઠે. મહેતાખચંદ્ર જૈન  
( વયોવૃદ્ધ સરલ સ્વભાવી કુલમતીલ મહાસતીલની પ્રેરણાથી ) ૨૫૧
- ૭ શ્રીમાન લાલાલ રતનચંદ્ર જૈન ઠે. આઇ. સી. હોઝીયરી ૨૫૧
- ૮-૨૫. શ્રી લાલાશ્રીચંદ્ર કુંગરીયાના સ્મરણાર્થે સબસ્થાન ન્યાયાધિકારી.  
હુકમચંદ્ર જૈનના સુપુત્ર ભતેન્દ્રકુમાર વકીલના સુપુત્ર અનિલકુમાર  
તરફથી લેટ હા. વિનયકુમારી ૩૫૧
- ૯ ૨૫. લાલાલ ચંપાલાલ ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે લાભચંદ્ર  
તથા હીરાલાલ તરફથી હા. શાંતાદેવી ૩૫૧
- ૧૦ એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી હા. મહેતાખચંદ્ર જૈન ૩૦૧
- ૧૧ એક સ્વધર્મી બંધુ તરફથી હા. વિજયાકુમારીજૈન ૩૦૧
- ૧૨ બાબુ નિરંજનસિંહ જૈન ૨૫૧

### પ્રાંશ

- ૧ શેઠ મણીલાલ જ્યેષ્ઠભાઈ ૨૫૧

### ધાર

- ૧ શેઠ સાગરમલ્લ પનાલાલ ૨૫૧

### પ્રાંગધ્રા

- ૧ ભાવદીક્ષિત અ. સૌ. રૂપાળીજેન હિંમતલાલ સંઘવીની તપશ્ચર્યાએ  
સંઘવી ચીમનલાલ પુરસોતમદાસ સંઘવી તરફથી ૩૦૫
- ૨ સંઘવી નરસિંહદાસ વખતચંદ ૩૦૧
- ૩ શ્રી સ્થા. જૈન મોટા સંઘ હા. મંગળભાઈ ભવરાજ ૨૫૧
- ૪ કચ્છર નારણદાસ હરજોવિંદદાસ ૨૫૧
- ૫ કોઠારી કપુરચંદ મંગળભાઈ ૨૫૧

### ધોરાણ

- ૧ મહેતા પ્રભુદાસ સુળભાઈ ૩૫૧
- ૨ અ. સૌ. ભચીજેન બાબુભાઈ ૨૫૧



|  |     |
|--|-----|
| ૩ ધી નવસૌરાષ્ટ્ર ઝોપલ મીલ પ્રા. લીમીટેડ  | ૨૫૧ |
| ૪ સ્વ. રાયચંદ ધાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા. ચીમનલાલ રાયચંદ શાહ                            | ૩૧૧ |
| ૫ ગાંધી પોપટલાલ બેચંદભાઈ   | ૨૫૦ |
| ૬ દેસાઈ છગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાઠવાળાનાં ધર્મપત્ની દિવાળીબેન<br>તેરકથી હા. કુમારી હમ્મતલી | ૨૫૧ |
| ૭ એક સદ્ગૃહસ્થ હા. મહેતા પ્રભુદાસ મુળભાઈ   | ૨૫૧ |
| ૮ શેઠ હલપતરામ વસનભ મહેતા   | ૨૫૧ |
| ૯ સ્વ. પિતાશ્રી ભગવાન કચરાભાઈના તથા ચિ. હંસાના સ્મરણાર્થે<br>હા. પટેલ દંલીચંદ ભગવાનભ | ૩૦૧ |
| ૧૦ મહેતા હેમચંદ કાળીદાસ ભમખંભાળીયાવાળા   | ૨૫૧ |

## ધંધુકા

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઈ                                  | ૨૫૧ |
| ૨ સ્વ. શુભામચંદભાઈના સ્મરણાર્થે હા. વેરા પોપટલાલ નાનચંદ | ૨૫૧ |
| ૩ શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી                           | ૨૫૧ |

## ધુલીયા

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હા. શેઠ કનૈયાલાલ છાજેડ | ૨૫૧ |
|---|-----|

## નડીયાદ

|                       |     |
|-----------------------|-----|
| ૧ શાહ મોહનલાલ જુરાભાઈ | ૨૫૧ |
|-----------------------|-----|

## નારાયણ ગામ

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શેઠ મોતીલાલજી હીરાચંદજી ચોરડીયા બોરીવાળા | ૨૫૧ |
|--|-----|

## નંદુરબાર

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ | ૨૫૧ |
|--|-----|

## નાગોર

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શ્રીપાલભાઈ એન્ડ કું. સાગરમલજી હુકડે ડેરવાળા તરકથી | ૨૫૧ |
|---|-----|

## નાગપુર

|                                     |     |
|-------------------------------------|-----|
| ૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ | ૨૫૧ |
|-------------------------------------|-----|

## પાલનપુર

|  |     |
|--|-----|
| ૧ લોકાગચ્છ સ્થા. જૈન પુસ્તકાલય હા. કેશવલાલ જી. શાહ | ૨૫૧ |
|--|-----|

સુક

## પાણસણા

૧ સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ છોટાલાલ પુનભાઈ ૨૫૧

## પાલેજ

૧ સ્વ. મનસુખલાલ મોહનલાલ સંઘવીના સ્મરણાર્થે  
હા. ભાઈ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

## પ્રાંતીજ

૧ સ્થા. જૈન સંઘ હા. શ્રીચુત અંબાલાલ મહાસુખરામ ૨૫૦

## પૂના

૧ શેઠ ઉત્તમચંદળ કેવળચંદળ ધોડા ૨૫૧

## ફાલેના

૧ મહેતા પુષ્પરાજળ હસ્તીમલળ સાહસીવાલા ૩૦૧

૨ મહેતા કુંડનમલળ અમરચંદળ સાહસીવાલા ૨૫૧

## બગસરા

૧ શેઠ પોપટલાલ રાવળ રાયડીવાળા  
હા. માનસંઘ પ્રેમચંદ શાહ ૨૫૧

૨ સ્વ. માતુશ્રી જબકબાઈના સ્મરણાર્થે  
હા. દેસાઈ વૃજલાલ કાળીદાસ ૨૫૧

## ખરવાળા-ધેણશા

૧ સ્વ. મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે  
હા. તેમનાં ધર્મપત્ની સુરજબેન મોરારજી ૨૫૧

## બદનાવર

૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ હા. મિત્રીલાલ જૈન વક્રીદ ૨૫૧

## ખાલોતરા

૧ શાહ જેઠમલળ હસ્તીમલળ ભગવાનદાસળ ભણસારી ૨૫૧

## બીહડા

૧ શાહ કાનળ શામળભાઈ ૨૫૧

## બીકાનેર

૧. શેઠ લેફ્ટનન્ટ શેઠીયા ૨૫૪

## બેરાબ

- ૧ શેઠ ગાંગુલ કેશવલ ( જ્ઞાનભંડાર માટે ) ૨૫૧

## બેલારી

- ૧ શ્રી સ્થા. જીન સંઘ હ. શેઠ હબ્બરીમલ્લ હસ્તીમલ્લ શંકા , ૨૫૧

## બેરમો

૧. શ્રી બેરમો સ્થા. જીન સંઘ હ. મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ , ૨૫૧

## બેંગલોર

- ૧ શેઠ કીશનલાલલ કુલચંદલ સાહેબ ૨૫૧  
૨ અબમેરા છોટાલાલ માનસિંગ ૩૫૧

## બોટાદ

- ૧ સ્વ. વસાણી હરગોવિંદલાલ છગનલાલના સ્મરણાર્થે  
હા. તેમના ધર્મપત્ની છબલબેન ૨૫૧

## બોડેલી

- ૧ શાહ પ્રવીણચન્દ્ર નરસિંહલાલ સાલુંદવાળા ૨૫૧  
૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

## ભાણુવડ

- ૧ શેઠ જ્યેષ્ઠભાઈ માણેકચંદભાઈ ૩૫૨  
૨ સંઘવી માણેકચંદ માધવલ ૨૫૧  
૩ શેઠ લાલલ માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧  
૪ શેઠ રામલ જીણાભાઈ ૨૫૧  
૫ શેઠ. પદમશી ભીમલ ફેફરીયા ૨૫૧  
૬ ફેફરીયા ગાંડાલાલ કાનજીભાઈ હા. અ. સૌ. શાંતાબેન વસનલ ૨૫૧  
૭ સ્વ. મહેતા પૂનમચંદ ભવાનના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં  
ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર ( ગુંદાવાળા ) ૨૫૧

૩૬

## ભાવનગર

૧ સ્વ. કુંવરજી બાવાભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શાહ લહેરચંદ કુંવરજી ૩૦૧

## ભાદરણ

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. પટેલ ધુલાભાઈ ઝવેરભાઈ ૨૫૧

## ભીલવાડા

૧ શ્રી શાંતિ જૈન પુસ્તકાલય હા. ચાંદમલજી માનમલજી સંઘવી ૨૫૧

૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રીલાલજી ૩૦૧

## ભીમ

૧ ચંપકલાલજી જૈન પુસ્તકાલય હા. શેઠ છાગામલજી માંગીલાલજી ૨૫૧

## ભુસાવળ

૧ શેઠ રાજમલજી નંદલાલજી ચેરીટેબલટ્રસ્ટ ૨૫૧

## ભોખય

૧ જ્ઞાન મંદિરના સેક્રેટરી શાહ કુંવરજી ભવરાજ ૨૫૧

## મદ્રાસ

૧ શેઠ મેલરાજજી દેવીચંદજી મહેતા ૨૫૧

૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચંદ ૨૫૧

૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચંદ ૨૫૧

૪ મહેતા બાપાલાલ ભાઈચંદ ૨૫૧

## મનકંડા

૧ સ્થા. છકોટી સ્થા. જૈન સંઘ ૨૫૧

## મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચંદજી જશવંતમહવાળા  
હા. પૂનમચંદજી શેરમલજી જોશ્યા. ૨૫૧

## માનકુવા

૧ સ્વ. મહેતા કુંવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્ની  
કુંવરબાઈ હરખચંદ ( માનકુવા સ્થા. જૈન સંઘ માટે ) ૨૫૧

## માંડવી

૧ શ્રી સ્થા. છોકેટી જૈન સંઘ હા. મહેતા ચુનીલાલ તેલજી ૨૭૭

## માંડવા

૧ શ્રી માંડવા સ્થા. જૈન સંઘ  
હા. અ. સૌ. કંચનગૌરી રતીલાલ ગોસુલીયા ( ગઢડાવાળા ) ૨૫૧

## માલેગાંવ

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. ફતેલાલ માલુ જૈન ૨૫૧

## માંગરોલ

૧ શાહ ત્રીલોવનદાસ નાનજી ૨૫૦  
૨ દોશી ગીરધરલાલ બેઠાલાલ ૨૫૦

## સુખર્ષ તથા પરંચો

૧ શાહ શ્રી પિતાશ્રી કુંઠનમલજી મોતીલાલજી સુથાના સ્મરણાર્થે  
હા. શેઠ મોતીલાલજી જુબરમલજી ( અહમદનગરવાળા ) ૨૫૧

૨ સુધર્માન સ્થા. જૈન સંઘ હા. કામદાર રૂપચંદ શીવલાલ ( અધેરી ) ૨૫૧

૩ અ. સૌ. કમળાબેન કામદાર હા. કામદાર રૂપચંદ શીવલાલ ( અધેરી ) ૨૫૧

૪ સ્વ. માતુશ્રી કહવીબાઈના સ્મરણાર્થે હા. તેમના પૌત્ર  
હકમીચંદ તારાચંદ દોશી ( અધેરી ) ૨૫૧

૫ શાહ હરજીવન કેશવજી ૨૫૧

૬ શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ. સૌ. કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧

૭ સંઘવી હિંમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૮ વોરા પાનાચંદ સંઘજીના સ્મરણાર્થે  
હા. ત્રંબકલાલ પાનાચંદ જોન્ડ બ્રામસ ૨૫૧

૯ શાહ રામજી કરશનજી ચાનગઢવાળા ૨૫૧

૧૦ સ્વ. જટાશંકર દેવજીભાઈ દોશીના સ્મરણાર્થે  
હા. રણછોડદાસ ( બાબુલાલ ) જટાશંકર દોશી ૩૦૧

૧૧ ઘેલાણી વલ્લભજી નરસિંહરામ હા. નરસિંહદાસ વલ્લભજી ૨૫૧

૧૨ કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧

૧૩ ત્રીલોવનદાસ માનસિંગભાઈ દોલીવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા. શાહ હરખચંદ ત્રીલોવનદાસ ૨૫૧

૧૪ જેતાણી મણીલાલ કેશવજી ( વડિયાવાળા ) ઘાટકોપર ૨૫૧

|  |                 |
|--|-----------------|
| ૧૫ સ્વ. પિતાશ્રી શામળજી કલ્યાણજી ગોંડલવાળાના સ્મરણાર્થે        |                 |
| હા. વૃંજલાલ શામળજી ખાવીચી                                      | ૩૦૧             |
| ૧૬ શાહ રવિચંદ સુખલાલભાઈ ( દાદર )                               | ૩૫૧             |
| ૧૭ સ્વ. આશારામ ગીરધરલાલના સ્મરણાર્થે હા. શાંતિલાલ              |                 |
| આશારામ વતી જશવંતલાલ શાંતિલાલ                                   | ૨૫૧             |
| ૧૮ ગાંધી કાંતીલાલ માણેકચંદ                                     | ૨૫૧             |
| ૧૯ શાહ રવજીભાઈ તથા ભાઈલાલભાઈની કુા. ( કાંદીવલી )               | ૨૫૧             |
| ૨૦ અ. સૌ. લાહુબેન હા. રવજીભાઈ શામળ                             | ૨૫૧             |
| ૨૧ સ્વ. માતૃશ્રી માણેકભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ વલભદાસ નાનજી    | ૩૦૧             |
| ૨૨ એક સદ્ગુહસ્થ હા. શેઠ સુંદરલાલ માણેકલાલ                      | ૨૫૧             |
| ૨૩ શેઠ ખુશાલભાઈ ખેંગારભાઈ                                      | ૨૫૦             |
| ૨૪ શેઠ ચુનીલાલ નરસેરામ વેકરીવાળા                               | ૨૫૧             |
| ૨૫ સ્વ. માતૃશ્રી ગોમતીબાઈના સ્મરણાર્થે હા. શાહ પોપટલાલ પાનાચંદ | ૨૫૧             |
| ૨૬ કોટેચા જયંતીલાલ રણકેડકાસ સૌભાગ્યચંદ જીનાગઢવાળા              | ૨૫૧             |
| ૨૭ બેરા ઠાકરશી જસરાજ   | ૨૫૧             |
| ૨૮ કોઠારી સુખલાલજી પુનમચંદજી                                   | ( ખારશૈઠ ) ૨૫૧  |
| ૨૯ અ. સૌ. બેન કુંદનગૌરી મનહરલાલ સંઘવી                          | ” ૨૫૧           |
| ૩૦ કોઠારી રમણીકલાલ કસ્તુરચંદભાઈ                                | ૨૫૧             |
| ૩૧ દેસાઈ અમૃતલાલ વધ્ધમાનના સ્મરણાર્થે                          |                 |
| હા. દલીચંદ અમૃતલાલ દેસાઈ                                       | ૨૫૧             |
| ૩૨ સ્વ. ત્રીલોચનદાસ પ્રજ્યાળ વીછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે           |                 |
| હા. હરગોવિંદદાસ ત્રીલોચનદાસ અજમેરા                             | ૨૫૧             |
| ૩૩ તેજાણી કુમેરદાસ પાનાચંદ                                     | ૨૫૧             |
| ૩૪ શેઠ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાવેલીયા ( સાહડીવાલા )              |                 |
| ૩૫ શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ ખંભાતવાળા હા. ભાઈ બેઠાલાલ નેમચંદ       | ૨૫૧             |
| ૩૬ શાહ કોરશીભાઈ હીરજીભાઈ                                       | ૩૦૧             |
| ૩૭ દડિયા અમૃતલાલ ચોતીચંદ                                       | ( ઘાટકોપર ) ૨૫૧ |
| ૩૮ કોશી ચત્રભુજ સુંદરજી  | ” ૪૦૧           |
| ૩૯ કોશી જીગલકિશોર ચત્રભુજ                                      | ” ૪૦૧           |

|    |  |             |     |
|----|--|-------------|-----|
| ૪૦ | દોશી પ્રવિણચંદ્ર ચત્રભુજ                                       | ( ઘાટકોપર ) | ૩૮૧ |
| ૪૧ | શેઠ મનુભાઈ માણેકચંદ હા. આટકીયા નરસેરામ મોરારજી                 | "           | ૨૫૧ |
| ૪૨ | શાહ કાંતીલાલ મગનલાલ  | "           | ૨૫૧ |
| ૪૩ | શેઠ મણીલાલ ગુલાબચંદ  | ઘાટકોપર     | ૨૫૧ |
| ૪૪ | શેઠ હગનલાલ નાનભાઈ  |             | ૨૫૧ |
| ૪૫ | શાહ શીવજી માણેકભાઈ   |             | ૨૫૧ |
| ૪૬ | મેસર્સ સવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કું. હા. શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ        |             | ૨૫૧ |
| ૪૭ | શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી ( વેરાવળવાળા )                            |             | ૨૫૧ |
| ૪૮ | મહેતા રતીલાલ ભાઈચંદ  |             | ૨૫૧ |
| ૪૯ | શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા   |             | ૨૫૧ |
| ૫૦ | મિન કેશરભાઈ ચંદુલાલ જેર્સીંગભાઈ શાહ                            |             | ૨૫૧ |
| ૫૧ | પારેખ ચીમનલાલ લાલચંદ સાયલાવાળાના ધર્મપત્ની અ. સૌ.              |             |     |
|    | અચળભાઈના સ્મરણાર્થે હા. સારાભાઈ ચીમનલાલ                        |             | ૨૫૧ |
| ૫૨ | ધી મરીના મોડેન હાઈસ્કૂલ ટ્રસ્ટ કુંદ હા. શાહ મણીલાલ ઠાકરશી      |             | ૨૫૧ |
| ૫૩ | મહેતા મોટર સ્ટોર્સ હા. અનોપચંદ ડી. મહેતા                       |             | ૨૫૧ |
| ૫૪ | શેઠ રસીકલાલ પ્રભાશંકર મોરળીવાળા તરફથી તેમનાં                   |             |     |
|    | માતૃશ્રી મણીબેનના સ્મરણાર્થે                                   |             | ૩૦૧ |
| ૫૫ | શ્રીચુત જસવંતલાલ ગુનીલાલ વોરા                                  |             | ૨૫૦ |
| ૫૬ | શાહ કુંવરજી હંસરાજ   |             | ૨૫૧ |
| ૫૭ | દીયા જેર્સીંગલાલ ત્રીકમજી                                      |             | ૨૫૧ |
| ૫૮ | મોઢી અલેચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા. ડોસાલાલ અલેચંદ               |             | ૨૫૧ |
| ૫૯ | શાહ જેઠાલાલ ઠામરશી પ્રાંતપ્રાવાળા હા. શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ      |             | ૨૫૦ |
| ૬૦ | સ્વ. પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જસાણીના સ્મરણાર્થે               |             |     |
|    | હા. લક્ષ્મીચંદભાઈ તથા કેશવલાલભાઈ                               |             | ૩૫૧ |
| ૬૧ | સ્વ. પિતાશ્રી શાહ અંબાલાલ પુરુષોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે           |             |     |
|    | હા. શાહ બાપાલાલ અંબાલાલ  |             | ૨૫૧ |
| ૬૨ | સ્વ. કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્ની હવેરબેન |             |     |
|    | મગનલાલ વતી જયંતીલાલ કસ્તુરચંદ મરકરીયા ( ગુડાવાળા )             |             | ૨૫૧ |
| ૬૩ | શેઠ કુંગરશી હંસરાજ વીસરીયા                                     |             | ૨૫૧ |
| ૬૪ | શાહ રતનશી મોણશીની કું.   |             | ૨૫૧ |
| ૬૫ | શેઠ શીવલાલ ગુલાબચંદ મેવાવાળા                                   |             | ૨૫૧ |
| ૬૬ | શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ  |             | ૨૫૧ |

- ૬૭ સ્વ. પિતાશ્રી વીરચંદ જેસીંગ, શેઠ લખતરવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા. કેશવલાલ વીરચંદ ૨૫૧
- ૬૮ ચંદુલાલ કાનજી મહેતા ૨૫૧
- ૬૯ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન સંઘ  
હા. કેશરીમલજી અનોપચંદજી ગુગલીયા (મલાહ) ૨૫૧
- ૭૦ સ્વ. પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઈના સ્મરણાર્થે  
હા. શાહ કાનજી પતુભાઈ ૨૫૧
- ૭૧ અ. સૌ. પાનખાઈ હા. શેઠ પદમશી નરસિંહભાઈ ૨૫૧
- ૭૨ સ્વ. નાગશીભાઈ સેજપાલના સ્મરણાર્થે રામજી નાગશી ૩૦૧
- ૭૩ સ્વ. ગોડા વજારશી ત્રિલોચનદાસ સરસઈવાળાના સ્મરણાર્થે  
હા. જગજીવન વજારશી ગોડા ૨૫૧
- ૭૪ સ્વ. કાનજી સુળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતૃશ્રી દિવાળીભાઈના  
૧૬ ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા. જયંતિલાલ કાનજી ૨૫૧
- ૭૫ શાહ પ્રેમજી માલશી ગંગર ૨૫૧
- ૭૬ શાહ વેલશી જેસીંગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમનાં ધર્મપત્ની  
સ્વ. નાનખાઈના સ્મરણાર્થે ૩૦૧
- ૭૭ સ્વ. પિતાશ્રી રાજશી વેલશીના સ્મરણાર્થે  
હા. શાહ કામજી રાયશીભાઈ ૩૦૧
- ૭૮ શાહ વરભંગભાઈ શીવજીભાઈ ૨૫૧
- ૭૯ શાહ ખીમજી સુળજી પુંજ ૨૫૧
- ૮૦ અ. સૌ. સમતાળેન શાંતિલાલ હ. શાંતિલાલ ઉજમશી શાહ ૨૫૧
- ૮૧ સ્વ. કેશવલાલ વજરાજ કોઠારીના સ્મરણાર્થે સુરજબેન તરફથી  
હા. તનસુખલાલભાઈ ૨૫૧
- ૮૨ સ્વ. પિતાશ્રી હંસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે  
હા. દેવશી હંસરાજ કચ્છ ખીદડાવાળા ૨૫૧
- ૮૩ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજી (ગોરીવલી) ૨૫૨
- ૮૪ શેઠ ત્રંબકલાલ કસ્તુરચંદ લીમડી અજરામર શાસ્ત્રભંડારને ભેટ (માટુંગા) ૨૫૧
- ૮૫ અ. સૌ. બેન રંજનગૌરી કે. શાહ ચંદુલાલ લક્ષ્મીચંદ ૨૫૧
- ૮૬ શાહ નટવરલાલ હીપચંદ તરફથી તેમનાં ધર્મપત્ની  
અ. સૌ. સુશીલાબેનના વર્ષોત્પત્તિ ખુશાલીમાં ૨૫૧
- ૮૭ દોશી લીખાલાલ વૃજલાલ પાળીયાદવાળા ૨૫૧
- ૮૮ શાહ ગોપાળજી માનસંગ ૨૫૧



|   |               |
|---|---------------|
| ૮૬ દોશી કુલચંદ માણેકચંદ                                   | માહુંગા ૨૫૦   |
| ૬૦ શેઠ ચંપકલાલ ચુનીલાલ દાદભાવાળા                          | ,, ૨૫૧        |
| ૬૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ                      |               |
| હ. શાહ રવિચંદ સુખલાલ                                      | (ઠાકર) ૨૫૧    |
| ૬૨ શાંતીલાલ કુંગરશી અદાણી                                 | ,, ૨૫૧        |
| ૬૩ શાહ કરશન લધુભાઈ  | ,, ૨૫૧        |
| ૬૪ કીસનલાલ સી. મહેતા                                      | (શીવ) ૨૫૧     |
| ૬૫ માતુશ્રી જીવીબાઈના સ્મરણાર્થે                          |               |
| હ. શામજી શીવજી કચ્છ શુઢાળાવાળા                            | (ગોરગાંવ) ૨૫૧ |
| ૬૬ સ્વ. શાહ રાયશી કચરાભાઈના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની   |               |
| નેણુબાઈની વતી હ. જેઠાલાલ રાયશી                            | સુખઈ ૨૫૧      |
| ૬૭ સુશીલાબેન શકરાભાઈ ઠે. નવીનચંદ્ર વસંતલાલ શાહ (વીલેપાલે) | ૨૫૧           |
| ૬૮ જૈન ચંદનબેન અમૃતલાલ વારિયા                             | ૨૫૧           |
| ૬૯ સ્વ. કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે                  |               |
| હ. સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા)                           | ૩૦૧           |
| ૧૦૦ શાહ ત્રીભોવન ગોપાળજી તથા અ. સૌ. જૈન કસ્ટુબા           |               |
| ત્રીભોવન (થાનગઢવાળા)                                      | (શીવ) ૨૫૧     |
| ૧૦૧ અ. સૌ. શાંતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલના ધર્મપત્ની)         | (ઠાકર) ૨૫૧    |
| ૧૦૨ ભાવસાર દીનુભાઈ ભોગીલાલ                                | ,, ૨૫૧        |

### મુળી

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શેઠ ઉજ્જમશી વીરપાળ હ. શેઠ કેશવલાલ ઉજ્જમશી | ૩૦૧ |
|---|-----|

### મોરબી

|                         |     |
|-------------------------|-----|
| ૧ દોશી માણેકચંદ સુંદરજી | ૩૫૧ |
|-------------------------|-----|

### મોઝાસા

|                             |     |
|-----------------------------|-----|
| ૧ શ્રીચુત નાથાલાલ હી. મહેતા | ૨૫૧ |
| ૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ         | ૨૫૦ |

### મહેસાણા

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શાહ પદ્મશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હ. શીવલાલ પદ્મશી | ૨૫૧ |
|---|-----|

## આદમીરી

૧ શેઠ બાદરમલલ સુરજમલલ-બેંકર્સ ૨૫૬

## રતલામ

૧ અનેક ભક્તજનો તરફથી હ. શ્રીમાન કેશરીમલલ હંક  
( શ્રી કેવળચંદ્ર ઝુનિશ્રીના ઉપદેશથી ) ૨૫૧

## રાણપુર

૧ શ્રીમતી માતુશ્રી સમરતબાઈના સ્મરણથી  
હ. ડો. નરોત્તમદાસ યુનીલાલ કાપડીયા ૨૫૧  
૨ સ્વ. પિતાશ્રી લહેરાભાઈ ખીમજીના સ્મરણથી  
હ. શેઠ કાળીદાસ લહેરાભાઈ વસાણી ૭૦૧

## રાણાવાસ

૧ શેઠ જવાનમલલ નેમીચંદલ હા. બાણુ રીખભચંદલ ૩૦૧

## રાયચુર

૧ સ્વ. માતુશ્રી મોંઘીબાઈના સ્મરણથી  
હ. શાહ શીવલાલ ગુલાબચંદ વઢવાણવાળા ૨૫૧  
૨ કાશુરામજી ચાંદમલલ સંચેતી ૨૫૧

## રાજકોટ

૧ વાહીલાલ કાઈંગ એન્ડ પ્રિન્ટીંગ વર્ક્સ ૪૦૦  
૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ ચીતલીયા ૨૫૧  
૩ શેઠ મનુભાઈ મુળચંદ ( એન્જનીયર સાહેબ ) ૨૫૧  
૪ શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચંદ તેમનાં ધર્મપત્નીના વર્ષાતપ-પ્રસંગે ૨૫૧  
૫ શેઠ પ્રભરામ વીઠ્ઠલજી ૨૫૧  
૬ બેન સચુબાળા નૌતમલાલ જસાણી ( વર્ષાતપની પ્રુચાલી ) ૨૫૧  
૭ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ ૨૫૧  
૮ બઢાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમનાં ધર્મપત્ની અ. સી.  
સમરતબેનના વર્ષાતપ નિમિત્તે ૨૫૧  
૯ કોરી મોતીચંદ ધારશીભાઈ ૨૫૧

- ૧૦ કામઠાર ચંદ્રલાલ જીવરાજ ( પ્રાંગમ્પાવાળા ) ૨૫૦  
 ૧૧ હેમાણી થેલાભાઈ સવચંદ ૨૫૧  
 ૧૨ હફતરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૧  
 ૧૩ સ્વ. મહેતા દેવચંદ પુરુષોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની  
 હેમકુંવરબાઈ તરફથી હ. જયંતીલાલ દેવચંદ મહેતા ૨૫૧  
 ૧૪ પારેખ શીવલાલ જીજાભાઈ મોઝાસાવાળા હ. અ. સૌ. કંચનબેન ૨૫૨

## રાપર

- ૧ પૂજ્ય વાલજીભાઈ ન્યાલચંદલાઈ ૨૫૧

## રામપુરા

- ૧ શેઠ તેજમલજી મનોહરલાલજી બેંકર ૩૫૧

## રાવટી

- ૧ શેઠ ત્રીયાચંદજી બુહારમલજી કટારિયા ૩૫૧

## લખતર

- ૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હ. શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ ૨૫૧  
 ૨ ભાવસાર હરજીવનદાસના સ્મરણાર્થે ૨૫૧  
 હ. ત્રીલોચનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧  
 ૩ શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે  
 હ. ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧  
 ૪ શાહ ચુનીલાલ માણેચંદ ૨૫૧  
 ૫ શાહ બદવજી ઝોલકભાઈના સ્મરણાર્થે હ. શાંતિલાલ બદવજી ૨૫૧  
 ૬ દોશી ઠાકરશી શુભાભયંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની  
 સમરતબેન તરફથી હ. જયંતીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

૦૪૪

## લાલપુર

- ૧ નેમચંદ સવજી ચોટી હ. ભાઈ મગનલાલ ૨૫૧  
 ૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ તથા જેસીંગભાઈ ૨૫૧

## લાકડીયા

- ૧ શ્રી. લાકડીયા સ્થા. જૈન સંઘ હ. શાહ રતનચી કરમજી ૨૫૧

## લીંબડી ( સૌરાષ્ટ્ર )

- ૧ શાહ ચક્રભાઈ શુભાભયંદ ૨૫૧

## લીંબડી (પંચમહાલ)

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શાહ કુંવરજી ગુલાબચંદ                        | ૨૫૧ |
| ૨ છાજેડ ઘાસીરામ ગુલાબચંદ                      | ૨૫૧ |
| ૩ શેઠ વીરચંદ પન્નાલાલજી કરણાવટ                | ૨૫૧ |
| ૪ શ્રી સ્થા. જીન સંઘ હ. શાહ શાંતિલાલ ગુલાબચંદ | ૩૫૧ |

## લોનાવાલા

|                             |     |
|-----------------------------|-----|
| ૧ શેઠ ધનરાજજી સુલચંદજી ગુથા | ૨૫૧ |
|-----------------------------|-----|

## લુધીયાના

|                                      |     |
|--------------------------------------|-----|
| ૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર જીન હીલ્હીવાળા | ૨૫૧ |
|--------------------------------------|-----|

## વઢવાણ રાહેર

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શેઠ હીલીપકુમાર સવાઈલાલ ઠે. શાહ સવાઈલાલ ત્રંબકલાલ | ૨૫૧ |
| ૨ કામદાર મગનલાલ ગોકલદાસ હ. રતીલાલ મગનલાલ           | ૨૫૧ |
| ૩ સંઘવી મુળચંદ બેચરભાઈ હ. જીવણલાલ ગફલદાસ           | ૨૫૧ |
| ૪ શેઠ કાંતિલાલ નાગરદાસ                             | ૨૫૧ |
| ૫ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ                              | ૨૫૧ |
| ૬ સંઘવી શીવલાલ હીમજીભાઈ                            | ૨૫૧ |
| ૭ શાહ દેવશીભાઈ દેવકરજી                             | ૨૫૧ |
| ૮ વોરા ડોસાભાઈ લાલચંદ સ્થા. જીન સંઘ                | ૨૫૧ |
| હ. વોરા નાનચંદ શીવલાલ                              | ૨૫૧ |
| ૯ વોરા ધનજીભાઈ લાલચંદ સ્થા. જીન સંઘ                | ૨૫૧ |
| હા. વોરા પાનાચંદ ગોખરદાસ                           | ૨૫૧ |
| ૧૦ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હા. દોશી નાનચંદ ઉજમશી        | ૨૫૧ |
| ૧૧ સ્વ. વોરા મણીલાલ મગનલાલ હ. વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ  | ૨૫૧ |
| ૧૨ શાહ વાહીલાલ દેવજીભાઈ                            | ૨૫૧ |
| ૧૩ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલનાં ધર્મપત્ની             |     |
| અ. સૌ. કમળાબેન રંચુનવાલા                           | ૨૫૧ |
| ૧૪ શ્રી વૃજલાલ સુખલાલ                              | ૨૫૧ |

## વડોદરા

|                                   |     |
|-----------------------------------|-----|
| ૧ કામદાર કેશવલાલ હિમતરામ ગ્રોકેસર | ૨૫૧ |
|-----------------------------------|-----|

## કુટુંબ

- ૨ વક્રીલ મણીલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧  
૩ સ્વ. પિતાશ્રી ફકીરચંદ પુજારાઈના સ્મરણાર્થે  
હા. શાહ રમણલાલ ફકીરચંદ ૨૫૧

## વડિયા

- ૧ શ્રીકે ભવાનભાઈ કાળાભાઈ પંચમીયા ૨૫૧

## વલસાડ

- ૧ શાહ ખીમચંદ મુલ્લભાઈ ૨૫૧

## વણી

- ૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલનાં ધર્મપત્ની સ્વ. ચંચળબેન  
તથા પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા. મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા ૨૫૧

## વટામણ

- ૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. પટેલ ડાહ્યાભાઈ હલ્લુભાઈ ૨૫૧

## વડગાંવ

- ૧ શ્રીકે માણેકચંદલ રાજમલ્લ બાફણા ૨૫૧

## વાંકાનેર

- ૧ ખંડેરીયા કાંતીલાલ ત્રંબકલાલ ૨૫૧  
૨ હફતરી ચુનીલાલ પોપટલાલ મોરબીવાળા  
હા. પ્રાણલાલ ચુનીલાલ હફતરી ૨૫૧

## વીંછીયા

- ૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. અજમેરા રાયચંદ મજપાળ ૨૫૧

## વીરમગામ

- ૧ માસ્તર વીંકલભાઈ મોદી ૨૫૧  
૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ ૨૫૧  
૩ શાહ મણીલાલ જીવણલાલ શાહપુરવાળા ૨૫૧  
૪ શાહ અમુલબ નાગરદાસનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. બેન લીલાવતીના  
વર્ષિતપ નિમિત્તે હા. શાહ કાંતિલાલ નાગરદાસ ૩૦૦  
૫ સ્વ. શ્રીકે ઉજ્જમશી નાનચંદના સ્મરણાર્થે  
હા. ચુનીલાલ નાનચંદ ૨૫૧

|  |     |
|--|-----|
| ૬ સ્વ. શેઠ મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ ખારાઘોડાવાળાના સ્મરણાર્થે   |     |
| તેમનાં પુત્રો તરફથી હ. ખીમચંદભાઈ                         | ૨૫૧ |
| ૭ સ્વ. શેઠ હરિલાલ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે હા. અનુભાઈ       | ૨૫૧ |
| ૮ સંઘવી જ્યેષ્ઠભાઈ નારણદાસ                               | ૨૫૧ |
| ૯ સ્વ. શાહ વેલશીલાઈ સાકરચંદ કત્રાસગઢવાળાના સ્મરણાર્થે    |     |
| હ. ચીમનલાલભાઈ  | ૨૫૧ |
| ૧૦ પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાતીવાળા ( મોડીબેનના સ્મરણાર્થે ) | ૨૫૧ |
| ૧૧ શાહ નારણદાસ નાનજીભાઈના પુત્ર વાડીલાલભાઈનાં ધર્મપત્ની  |     |
| અ. સૌ. નારંગીબેનના વર્ષિતપ નિમિત્તે હ. શાંતિલાલ નારણદાસ  | ૨૫૧ |
| ૧૨ સ્વ. છબીલદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્ની    |     |
| કમળાબેન તરફથી હ. મંજુલાકુમારી                            | ૨૫૧ |
| ૧૩ શ્રી સ્થા. જૈન શ્રાવિકા સંઘ હ. રંભાબેન વાડીલાલ        | ૨૫૧ |
| હ. ડા. હિમતલાલ સુખલાલ                                    | ૨૫૧ |
| ૧૫ શાહ મુળચંદ કાનજીભાઈ હ. શાહ નાગરદાસ ઝોઘડભાઈ            | ૨૫૧ |
| ૧૬ શેઠ મોહનલાલ પિતાંબરદાસ હ. ભાઈ કેશવલાલ તથા મનસુખલાલ    | ૨૫૧ |
| ૧૭ શ્રીમતી હીરાબેન નથુભાઈના વર્ષિતપ નિમિત્તે             |     |
| હ. નથુભાઈ નાનચંદ શાહ                                     | ૩૦૧ |
| ૧૮ શેઠ મણીલાલ શીવલાલ                                     | ૨૫૧ |
| ૧૯ સ્વ. મણીયાર પરસોતમદાસ સુંદરજીના સ્મરણાર્થે            |     |
| હ. સાકરચંદ પરસોતમદાસ શાહ                                 | ૨૫૧ |
| ૨૦ સ્વ. મોહનદાસ ધુલાભાઈના સ્મરણાર્થે હ. તેમનાં ધર્મપત્ની |     |
| નાથીબાઈ તરફથી હ. ચંકરલાલ તથા શાંતિલાલ                    | ૨૫૧ |

### વિજયનગર

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શ્રી વર્ધમાન સ્વે સ્થા. જૈન શ્રાવક સંઘ |     |
| હ. છોટુમલ અજીતસિંહ                       | ૨૫૧ |

### વેરાવળ

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શાહ કેશવલાલ જ્યેષ્ઠભાઈ                                 | ૨૫૧ |
| ૨ શાહ ખીમચંદ સૌભાગ્યચંદ                                  | ૨૫૧ |
| ૩ સ્વ. શેઠ મહંમદ જ્યેષ્ઠભાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની |     |
| લાડકુંવરબાઈ તરફથી હ. ધીરજલાલ મહંમદ                       | ૨૫૧ |

|  |     |
|--|-----|
| ૪ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હ. શાહ શેલિયંદ કરશનજી | ૨૫૧ |
| ૫ શાહ હરકિશનદાસ કુલચંદ કાનપુરવાળા          | ૨૫૧ |

## સરા

|   |     |
|---|-----|
| ૧ શ્રી સરા સ્થા. જૈન સંઘ હ. દોશી પાનાચંદ સોમચંદ | ૨૫૧ |
|---|-----|

## સાણુંદ

|  |     |
|--|-----|
| ૧ શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હ. શાહ ચીમનલાલ હીરાચંદ  | ૩૦૧ |
| ૨ અ. સૌ. ચંપાબેન હા. દોશી જીવરાજ લાલચંદ  | ૨૫૧ |
| ૩ પટેલ મહાસુખલાલ ડોસભાઈ  | ૨૫૧ |
| ૪ શાહ સાકરચંદ કાનજીભાઈ   | ૨૫૧ |
| ૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી સંઘવી લીંબડીવાળાના સ્મરણાર્થે<br>હા. વાડીલાલ મોહનલાલ કેઠારી | ૨૫૧ |
| ૬ પારેખ નેમચંદ મોતીચંદ ગુણીવાળાના સ્મરણાર્થે<br>હા. પારેખ લીખાલાલ નેમચંદ               | ૨૫૧ |

|   |     |
|---|-----|
| ૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણાર્થે હા. જયંતીલાલ નારણદાસ                                       | ૨૫૧ |
| ૮ શાહ કરતુરચંદ હ. હરજીવનદાસ   | ૨૫૧ |
| ૯ શેઠ મોહનલાલ માણેકચંદ ગાંધી ચુડાવાળા તરફથી<br>તેમનાં ધર્મપત્ની મંગાબેન લલ્લુભાઈના સ્મરણાર્થે | ૩૦૧ |
| ૧૦ સંઘવી કાન્તીલાલ હરખચંદ   | ૩૦૧ |
| ૧૧ શાહ લીખાલાલ નાગરદાસ  | ૨૫૧ |

## સાલખની

|                     |     |
|---------------------|-----|
| ૧ દોશી ચુનીલાલ લચંદ | ૨૫૦ |
|---------------------|-----|

## સાદડી

|                                |     |
|--------------------------------|-----|
| ૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પુનમીયા | ૨૫૧ |
|--------------------------------|-----|

## સાસવડ

|   |     |
|---|-----|
| ૧ ચંદનમલજી મુથાનાં ધર્મપત્ની અ. સૌ. રંગુભાઈ મુથા તરફથી<br>હા. અમરચંદજી મુથા | ૨૫૧ |
|---|-----|

## ૪૧ સિંગાપુર

૧ દોશી વનેચંદ વછરાજ

સુરત

- |   |     |
|---|-----|
| ૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ રતિલાલ લલ્લુભાઈ          | ૨૫૧ |
| ૨ શ્રી કલ્યાણચંદ માણેકચંદ હંઠાલાવાળા                  | ૨૫૧ |
| ૩ શ્રી હરીપુરા-છકોટી સ્થા. જૈન સંઘ હા. બાણુલાલ છોટલાલ | ૨૫૧ |

મુરેન્દ્રનગર

- |   |     |
|---|-----|
| ૧ શેઠ ચાંપશીભાઈ મુખલાલ  | ૨૫૧ |
| ૨ ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ   | ૨૫૧ |
| ૩ સ્વ. કેશવલાલ મુળજીભાઈનાં ધર્મપત્ની અમરતભાઈના સ્મરણાર્થે<br>હા. ભાઈલાલ કેશવલાલ શાહ | ૨૫૧ |
| ૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ   | ૨૫૧ |
| ૫ શાહ ધાડીલાલ હરખચંદ  | ૨૫૧ |
| ૬ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ  | ૩૦૧ |

સુવર્ધ

- ૧ સાવળા શામળ હીરજી તરફથી સદાનંદી જૈન મુનિશ્રી છોટલાલજી  
મહારાજના ઉપદેશથી સુવર્ધ સ્થા. જૈન સંઘ જ્ઞાન ભંડારને ભેટ ૨૫૧

સેવાલીયા

- ૧ આસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઈ  
હા. જોન્નીનીયર સાહેબ અમૃતલાલ જેઠાલાલ ૨૫૧

સંજેલી

- |  |     |
|--|-----|
| ૧ શાહ હુણાજી શુભાવચંદભાઈ                     | ૨૫૧ |
| ૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ | ૨૫૧ |

સોજત

- ૧ અ. સૌ. ધીસાબેન, લાલચંદ મહેતા ( દત્તેહનગર સંઘને ભેટ ) ૨૫૧

હારીજ

- |   |     |
|---|-----|
| ૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા. પ્રકાશચંદ અમુલખભાઈ               | ૩૦૧ |
| ૨ સ્વ. જૈન ચંદ્રકાંતાના સ્મરણાર્થે હા. શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ | ૩૦૧ |



## હાટીના માળીવા

|  |     |
|--|-----|
| ૧. શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ                       | ૨૩૦ |
| ૨. શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના કુમરજી        |     |
| હા. તેમનાં નાનાબેન અ. સૌ. મંજુલાબેન ભગવાનદાસ | ૨૫૧ |

✽

તા. ૧૫-૩-૬૩ થી તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીનાં જાણીતાં મેળાં

## આઘ મુરખીશ્રી

|                              |        |
|------------------------------|--------|
| ક્રા. ૫૦૦૧ શેઠ મહેતાભયંદ જેન | દિલ્હી |
|------------------------------|--------|

## મુરખીશ્રી

|                                      |        |
|--------------------------------------|--------|
| ક્રા. ૬૦૦૧ શેઠ ત્રીલોચનદાસ જગજીવનદાસ | મુંબઈ  |
| ક્રા. ૧૦૦૧ શેઠ મહેતાભયંદ ચોરડીયા તથા |        |
| વિજયાકુમારી બહેન                     | દિલ્હી |

તા. ૧૫-૩-૬૩ સુધીના મેળાંની સંખ્યા

|       |                        |
|-------|------------------------|
| ૨૪    | આઘ મુરખીશ્રી           |
| ૩૦    | મુરખીશ્રી              |
| ૧૩૨   | સહાયક મેળાં            |
| ૫૮૪   | લાઈફ મેળાં             |
| ૫૧    | ખીલા કલાસના જુના મેળાં |
| <hr/> |                        |
| ૮૨૧   |                        |

સમિતી વતી સૌ હાતાઓનો આભાર માનું છું.

લી. સેવક,  
સાકરચંદ બાઈચંદ શેઠ  
મંત્રી.

સાકરચંદ તા. ૧૫-૩-૬૩

# શ્રી અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતી

## રાજકોટ.

### શાસ્ત્રોની ટૂંકી માહિતી.

ગયા સત્તરમા વાર્ષિક રિપોર્ટમાં બતાવેલ ૨૧ શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થયાં પછી નીચે સુજ્ઞ વધુ કામકાજ થયેલ છે.

૧. હોલમાં ભગવતી ભાગ બીજો, સમવાયંગ સૂત્ર તથા મુક્તિ વ્યાકરણ એમ ત્રણ સૂત્રો પ્રસિદ્ધ થયાં છે.
૨. ભગવતી ભાગ ૩ નો બહાર પડવાની તૈયારીમાં છે.
૩. ભગવતી ભાગ ૪ થી તથા ૫ માં હોલમાં છપાય છે.
૪. જ્ઞાતા સૂત્ર ભાગ ૧ લો, ૨ નો તથા ૩ નો છપાય છે.
૫. કુલ્લે લગભગ ૩૦ સૂત્રો પૂર્ણ શુરુદેવે લખીને પૂરાં કરેલાં છે. તેમાંનાં છપાયાં વગરનાં બે સૂત્રો બાકી છે તેનું અનુવાદનું તેમજ સંશોધનનું કેટલુંક કામ ચાલુ છે. અને કેટલુંક બાકી છે.
૬. નિશીય સૂત્ર, સૂર્ય પન્નતી તથા ચંદ્ર પન્નતી સૂત્ર એ બાકી રહેલાં ત્રણ સૂત્રો લખવાનું કામ અત્યારે ચાલે છે.  
આવા આગમ શાસ્ત્રોના મહદ્ કાર્યમાં જ્ઞાનદાનના શોખીનો, જ્ઞાનવીરો બનતી મહત્ત્વ મોકલાવે હોમ વિનંતિ કરવામાં આવે છે.

સમિતિને મદદ કરવા તથા મેમ્બર થવાના

## નિયમો

૪૫

૧. રૂા. ૫૦૦૧૫ પાંચ હજાર એક ભરનાર સદ્ગૃહસ્થ આદ્યમુરખીશ્રી તરીકે દાખલ થઈ શકે છે. તેમના નામથી એક સૂત્ર પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવે છે. તેમ જ તેઓશ્રીનું જીવનચરિત્ર અને ફોટો શાસ્ત્રમાં છપાય છે. તેમને બળે કોપી દરેક શાસ્ત્રની મળે છે.

૨. રૂા. ૧૦૦૧૫ એક હજાર એક ભરનાર વ્યક્તિ મુરખી તરીકે ગણાય છે. અત્યાદે ફક્ત ૮૦ આવા મેમ્બરો દાખલ કરવાનો ગઈ કમીટીએ-કરાવ કરેલ છે, પાછળથી મેમ્બરો દાખલ કરી શકાય તેમ નથી. રૂા. ૧૦૦૧૫ ભરનારને રૂા. ૧૨૦૦૫ ની કિંમત ઉપરના શાસ્ત્રો ભેટ મળે છે. માટે જેમને દાખલ થવું હોય તેમણે ઢીલ ન કરવી.

૩. ૨૫૧૫ વાળા તથા ૫૦૧૫ વાળા મેમ્બરો હવે લેવાનું બંધ છે.

૪. દાખલ થયેલા મેમ્બરોની ક્ષીમાંથી, શાસ્ત્રો ભેટ આપતાં સમિતિને જે નુકશાની વેઠવી પડે છે તે ખાધ પૂરી કરવા માટે મેમ્બરો પાસેથી તેમજ અન્ય વ્યક્તિ તરફથી પાંચ વર્ષ સુધી ભેટની રકમ મેળવવામાં આવે છે. જે રકમ ઓછામાં ઓછી રૂા. ૨૫૫ ની હોવી જોઈએ, અને તે રકમ પાંચ વર્ષ સુધી દર વર્ષે હુસાથી મોકલી શકાય છે.

શ્રીવીતરાગાય નમઃ  
જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકર-પૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલ-વ્રતિ-વિરચિતયા  
અનગારધર્મામૃતવર્ષિગ્યાલ્યયા વ્યાલ્યયા સમલકૃતં

## શ્રી-જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞસૂત્રમ્

( દ્વિતીયો ભાગઃ )

॥ અથ શૈલકાલ્યં પચ્ચમાધ્યયનમ્ ॥

અમિહિંતં કૂર્મકાલ્યં ચતુર્થમધ્યયનં તત્રાશુપ્તેન્દ્રિયસ્ય નરકાદિપ્રાપ્તિઃ શુપ્તેન્દ્રિયસ્ય તુ નિર્વાણાદિ પ્રાપ્તિર્ભવતીત્યુક્તમ્ । इह पञ्चमाध्ययने तु-पूर्वमप्रतिसंली-नेन्द्रियोऽपि यः पश्चात् संलीनेन्द्रियो भवति स आराधको भवतीत्युच्यते, इत्येवं पूर्वेण सहास्य सम्बन्धः । जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिने पृच्छति-‘जइ णં મંતે !’ ૬૦

પાંચમા અધ્યયન પ્રારમ્ભ ।

કૂર્મક ( કચ્છપ ) નામકા ચતુર્થ અધ્યયન કહ દિયા ગયા હૈ । ઉસ મેં અશુપ્તેન્દ્રિયવાલે સાધુ સાધ્વી આદિ કે નરકાદિ કી પ્રાપ્તિ તથા શુપ્તેન્દ્રિયવાલે સાધુ સાધ્વી આદિ કે લિયે નિર્વાણ આદિ કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ यह कहा गया है । अब इस पंचम अध्ययन में यह कहा जायगा की जो पहिले अप्रतिसंलीन इन्द्रियवाला ( अशुप्तइन्द्रिय ) होता है और बाद में फिर नही संलीनइन्द्रियवाला ( शुप्तइन्द्रियवाला ) बन जाता है तो वह आराधक होता है इस तरह पूर्व अध्ययन के साथ इसका संबन्ध है । जंबू स्वामी सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि—

—પાંચમું અધ્યયન—પ્રારંભ.—

કૂર્મક ( કાચ્છપા ) નામે ચોથું અધ્યયન પુરું થઈ ગયું છે, તે અધ્યયનમાં અશુપ્તેન્દ્રિયવાળા સાધુ સાધ્વી વગેરે ને નરક વગેરેની પ્રાપ્તિ તેમજ શુપ્તેન્દ્રિય વાળા સાધુ સાધ્વીઓને નિર્વાણ વગેરેની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ વ ત કહેવામાં આવી છે. પાંચમા અધ્યયન માં એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવશે કે જે પહેલાં અપ્રતિ સંલીન ઇન્દ્રિયવાળો ( અશુપ્તેન્દ્રિય ) હોય છે, અને ત્યારબાદ તે સંલીન ઇન્દ્રિય વાળો ( શુપ્તેન્દ્રિયવાળો ) થઈ જાય છે ત્યારે તે આરાધક હોય છે, આ રીતે ચોથા અધ્યયનનો સંબંધ છે. જંબૂ સ્વામી, સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે—‘જયાણં મંતે !’ ઇત્યાદિ ॥

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं च-  
उत्थस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते  
णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ सू० १ ॥

टीका—‘जइ णं’ इत्यादि । यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महा-  
वीरेण चतुर्थस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयम्—उत्तरूपः, अर्थः प्रज्ञप्तः, पञ्चमस्य खलु  
भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः इति । सर्वं सुगमम् ॥ १ ॥

श्री सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामिनमाह—

मूलम्—एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समयेणं बारवई  
नामं नयरी होत्था, पाईणपडीणायया उद्दीणदाहिणवित्थिन्ना  
नवजोयणवित्थिन्ना दुवालसजोयणायामा धणवइमइनिम्मिया  
चामीयरपवरपागारणाणामणिपंचवन्नकविसीसगसोहिया अलया-  
पुरिसंकासा पमुइयपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोयभूया ॥सू०२॥

टीका—‘एवं खलु’ इत्यादि । ‘एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन्

‘जइणं भंते !’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइणं भंते ! ) हे भदन्त ! यदि (समणेणं भगवया महा-  
वीरेणं) श्रमण भगवान् महावीर ने (चउत्थस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे  
पण्णत्ते) चतुर्थे ज्ञाताध्ययन का यह उक्त रूप अर्थ प्रज्ञप्त (प्ररूपित)  
किया है तो—(पंचमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते)  
पंचम ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ कहा है ? “ १ ”

‘एवं खलु जंबू !’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवं खलु जंबू) हे जंबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार

टीकार्थ—(जइणं भंते ! ) हे भदन्त ! जे (समणेणं भगवया महावीरेणं)  
श्रमणभगवान् महावीरे (चउत्थस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते) योथाज्ञाता-  
ध्ययनने। पूर्वोक्त अर्थ निरूपित कर्था छे, तयारे (पंचमस्स णं भंते ! णायज्झ-  
यणस्स के अट्ठे पण्णत्ते) पांथभा अध्ययनने। शे। अर्थ भताये छे ? ॥ “सू. १” ॥

एवं खलु जंबू, ? इत्यादि ॥

टीकार्थ—(एवं खलु जंबू ! ) हे जंबू ! तमारा प्रश्नने जवाब आप्रभावे

समये 'वारवई' द्वारावतीनाम द्वारकाऽपरनाम्नी नगर्यासीत्, सा कीदृशी इत्याह—'पार्श्वपरीणायया' प्राची प्रतीच्यायता प्राचीतः प्रतीच्यामायता पूर्वस्या दिशः समारभ्य पश्चिमायां दिशि दीर्घैत्यर्थः । 'उदीणदाहिणविस्थिन्ना' उदग-दक्षिणविस्तीर्णा उत्तरस्यां दिशः समारभ्य दक्षिणस्यां दिशि विस्तीर्णा, 'नवजो-यणविस्थिन्ना' नवयोजनविस्तीर्णा, 'दुवालसजोयणायामा' द्वादशयोजना-यामा=द्वादशयोजनदोर्धा, 'घणवइमइनिम्मिया' घनपतिमतिनिर्मिता घनपतिः= कुबेरस्तस्य मत्या=बुद्ध्या निर्मिता, 'चामीयर-पवर-पागार-णाणामणि-पंचवन्न - कवि - सीसग - सोहिया' चामीकरपवरप्राकारनानामणिपञ्चवर्णकपिशीर्षक शोभिता, चामीकरस्य पवरः प्राकारस्तस्य यानि नानामणिपञ्चवर्णकपिशीर्षकानि तैः शोभिता, सुवर्णमयप्रकुष्टप्राकारस्य यानि चन्द्रकान्तादिविविधमणिमयानि पञ्च-वर्णानि कपिशीर्षकाणि 'कंगुरा' इति भाषाप्रसिद्धानि, तैः शोभिता 'अलयापुरि-

है—( तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईनामं नयरी होत्या ) उस समय और उस काल में द्वारावती नामकी नगरी थी ( पार्श्व परीणायया ) यह नगरी पूर्व दिशासे पश्चिम दिशा तक लंबी थी और ( उदीणदाहिण विस्थिन्ना ) उत्तरदिशा से लेकर दक्षिण दिशा तक विस्तर्ण थी । ( नवजोयणविस्थिन्ना ) नौ योजन का इसका विस्तार था ( दुवालसजोय-णायामा ) १२ बारह योजन की यह लंबी थी । ( घणवइमइ निम्मिया ) घनपति— कुबेर ने इसे अपनी बुद्धि से बनाया था ( चामीयर पवर पागारणाणामणि पंचवन्न कविसीसग सोहिया ) इसका जो प्राकार ( दिवा-र ) था वह सुवर्ण से निर्मित हुआ था । तथा इसके जो कंगूरे थे वे पंचवर्णवाले नाना मणियों से बनाये गये थे । अतः प्राकार और उसके कंगूरों से यह नगरी बड़ी सुहावनी लगती थी । ( अलयापुरी संकासा )

छे, ( तेणं काले णं तेणं समएणं वारवइ नामं नयरी होत्या ) ते क्षणे अने ते समये द्वारावती नामे नगरी હતી. ( પાર્શ્વ પરીણાયયા ) આ નગરી પૂર્વથી માંડીને પશ્ચિમ દિશા સુધી લાંબી અને ( ઉદોણ દાહિણ વિસ્થિન્ના ) ઉત્તર દિશાથી માંડીને દક્ષિણ દિશા સુધી પહોળી હતી. ( નવ જોયણવિસ્થિન્ના ) નવ યોજન સુધી તે નગરીને વિસ્તાર હતો. ( દુવાલસજોયણાયમા ) બાર યોજન લગી તે લાંબી હતી. ( ઘણવइमइनिम्मिया ) ધનપતિ-કુબેરે આ નગરી ને ચેતાની બુદ્ધિથી બનાવી હતી ( ચામીયરપવરપાગાર - ણાણામણિ - પંચવન્નકવિસીસગસોહિયા ) તે શહેરને કોટ ( પ્રાકાર ) સેનાથી બનાવવામાં આવેલો હતો. તેના કાંગરાઓ પાંચ રંગના અનેક મણિઓ વડે બનાવવામાં આવ્યા હતા. કોટ અને કાંગરાઓથી તે નગરી શોભતી હતી. ( અલયાપુરીસંકાસા ) અલયાપુરી ( કુબેરનગરી )

संकाशा ' अलकापुरीसंकाशा = कुबेरनगरीसदृशी ' पमुइयपक्कीलिया ' प्रमुदित-  
प्रक्रीडिता ' पमुइय ' प्रमुदिताः=प्रमोदयुक्ताः, ' पक्कीलिया ' प्रक्रीडिताः विविध-  
क्रीडनपराः लोका यत्र सा, पचक्खं देवल्लोयभूया ' प्रत्यक्षं देवल्लोकभूता प्रत्यक्षी-  
भूतदेवल्लोकवत् प्रतीयमानेत्यर्थः ॥ २ ॥

मूलम्—तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरस्थिमे  
दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था, तुंगे गगणतलमणुलि-  
हंतसिहरे णाणाविहगुच्छगुम्मलयावाल्लिपरिगए हंसमिगमयूर-  
कोंचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेए अणैगतडकडग-  
वियरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघचारण-  
विज्जाहरमिहुणंसंविचिन्ने निच्छच्चणए दसारवरवीरतेल्लोक्कबल-  
वगाणं, सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासाईए ॥ सू०३॥

टीका—' तीसे णं ' इत्यादि । तस्याः खलु द्वारावत्या नगर्यां बहिस्तर-  
पौरस्त्ये दिग्भागे 'रेवतगे' रेवतको नाम ' पव्वए ' पर्वतः ' होत्था ' आसीत्, स  
अलकापुरी ( कुबेर की नगरी जैसी सुन्दर होती है ठीक वैसी ही यह  
भी सुन्दर थी ( पमुइयपक्कीलिया ) इस में निवास करनेवाले जन सदा  
हर्षित रहते थे और विविध प्रकार की क्रीड़ाओं में तत्पर रहते थे  
( पचक्खं देवल्लोयभूया ) इसलिये प्रत्यक्ष में यह नगरी देवल्लोक के  
समान प्रतीत होती थी । सूत्र " २ "

' तीसेणं बारवईए ' इत्यादि

टीकार्थ—(तीसेणं बारवईए नयरीए बहिया) उस द्वारावती नगरी के  
बाहिर ( उत्तरपुरस्थिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था ) उत्तर

जेवी सुंदर छाय छे तेनी ज ते नगरी पणु सुंदर छती. ( पमुइयपक्कीलिया )  
तेमां रडेनारा नागरिके छेमेसां प्रसन्न रडेता छता, अने जत जतनी दभतो  
( क्रीडाओ ) मां व्यस्त रडेता छता. ( पचक्खं देवल्लोयभूया ) तेथी आ नगरी  
प्रत्यक्ष देवलोके जेवी लागंती छती. ॥ सूत्र " २ " ॥

' तीसे णं बारवईए ' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया) ते द्वारावती नगरीनी ओहारे  
( उत्तरपुरस्थिमे दिसीभाए रेवतगनामपव्वए होत्था ) उत्तर पूर्व दिशाभां ओटदी

कीदृश इत्याह—तुङ्गः=अत्युन्नतः, 'गगणतलमणुलिहंतसिहरे' गगनतलमनुलिह-  
च्छिवरः आकाशमदेशमनुस्पृशति शृङ्गं यस्येत्यर्थः 'णाणाविहगुच्छगुम्मलयावलि-  
परिगए' नानाविधगुच्छगुल्मलतावल्लीपरिगतः=नानाविधागुच्छादयः परिगताः=  
सर्वतः समुद्भूता यत्र सः, गुच्छगुल्मलतावल्लीशब्दाः पूर्वं व्याख्याताः, 'हंसमि-  
गमयूरकोंचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेए' हंसमृगमयूरकोंचसारस-  
चक्रवाकमदनसालकोकिलकुलोपपेतः हंसादि-कोविलान्तानां कुलैः वृन्दैः उपपेतः  
=युक्तः । अत्र-मदनशालः=सारिकाविशेषः, अन्ये प्रसिद्धाः । 'अणेगतडकडग-  
विवरउज्जरयपवायपम्भारसिहरपउरे' अनेकतटकटक विवरोज्जरकप्रपातमागम्भार-  
शिखरप्रचुरः, अनेके तटाः कटकामेखलाश्च यत्र स तथा, विवराणि = कन्दराश्च,  
उज्जरकाः=निर्झराः पर्वतात् पतनशीला जलप्रवाहाश्च, प्रपाताः=तटरहितनिराधार-  
स्थानानि च, अथवा प्रपाताः=गर्ताश्च, प्राग्भाराः=ईषदवनताः पर्वतभागाश्च, शि-

पौरस्त्य दिग्विभाग में—ईशान कोण में—रैवतक नाम का एक पर्वत था  
( तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे ) यह बहुत ऊँचा था । इस की चोटी  
आकाश तल को छूती थी ( णाणविहगुच्छगुम्मलयावलिपरिगए )  
नाना प्रकार के गुच्छों से, गुल्मों से, लताओं से और बल्लियों से यह  
सर्व प्रकार से युक्त था । इन गुच्छादि शब्दों का अर्थ पहिले लिखा जा  
चुका है । ( हंसमिगमयूरकोंचसारसचक्रवायमयणसालकोइल कुलो-  
ववेए ) हंस, मृग, मयूर, कोंच, सारस, चक्रवाक सारिका—मेना  
और कोयल इन के समूहों से यह उपेत—युक्त था । ( अणेग तडक  
डगविवरउज्जरयपवायपम्भारसिहरपउरे ) अनेक तटों से अनेक कट-  
कों ( मेखला ) से, अनेक कंदराओं से, अनेक उज्जरको से, निर्झरनों  
से—पर्वतों से गिरते हुए जल प्रवाहों से, अनेक प्रपातों से—तटरहित  
निराधारस्थानों से अथवा गर्तों से कुछ कुछ झुके हुए अनेक पर्वत

के ईशान कोणमें रैवतक नामे पर्वत होता । ( तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे )  
ते बहुत उंचे होते । तेना शिपरे आकाशमे स्पर्शता होता । ( णाणाविहगुच्छ  
गुम्मलयावलिपरिगए ) अनेक लतना शुद्धे, शुद्धे, लताओ अने पल्लीओ  
थी ते ढंकाओवो होता । शुद्ध वगेरे शब्दोना अर्थो पडैलां स्पर्श करवाभां  
आव्यां छे । ( हंसमिगमयूरकोंचसारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेए ) हंस,  
मृग, मयूर, कोंच, सारस, चक्रवाक मेना अने कोयलोना समूहोथी ते युक्त  
होता । ( अणेगतडकडगविवरउज्जरयपवायपम्भारसिहरपउरे ) अनेक तटो मेखला  
ओ ( कटक ) अनेक कंदराओ, अनेक उज्जरको—(अर्झाओ) पर्वतो उपरथी  
नीचे पडैता पाणीना प्रवाडो, अनेक प्रपातो—तट वगरना निराधार स्थानो



स्वराणि=शृङ्गाणि पर्वतोपरितनप्रदेशाश्च, प्रचुराणि=अधिकानि यत्र स तथा, ततः कर्मधारयः । ' अच्छर-गण-देव संघ-चारण-विज्ञाहर मिहुण-संविचिन्ने ' अप्सरोगण-देवसंघ-चारण-विद्याधरमिथुन-संविचीर्णः-अप्सरसां गणाश्च, देवसंघाश्च, चारणाः गगनगमनलब्धिमन्तो मुनिविशेषाः, विद्याधराणां मिथुनानि च तैः संविचीर्णः=आसेवितः, ' निच्वच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोकबलवगाणं ' नित्यक्षणकः दशाह्वरवीरपुरुषत्रैलोक्यबलवतां, दशार्हाः=समुद्रविजयादयः दश, तेषु मध्ये वरास्त एव वीरा धीरपुरुषाः ते चामी-त्रैलोक्यादपि बलवन्तः, अतुलबल-नेमिनाथ युक्तत्वात् तेषां - नित्यक्षणकः=नित्योत्सवस्थानम्, तेषां सर्वे उत्सवास्तत्र भवन्तीति भावः । दशदशार्हाणां नामानि यथा-

“समुद्रविजयो अक्खोभो थिमिओ सागरो हिमव ।

अयलो धरणो पूरणो अभिचंदो वसुदेवोत्ति ” ॥१॥ इति ॥

भागों से तथा अनेक शिखरों से यह प्रचुर था अर्थात् ये तट, कटक आदि इस में अधिक थे । ( अच्छरगणदेवसंघचारणविज्ञाहरमिहुणसंविचिन्ने ) अप्सराओं के गणों से, देवसंघों से गगन में गमन करने की लब्धि युक्त मुनि विशेषों से, और विद्याधरों के मिथुनों से यह सदा सेवित रहता था । ( निच्वच्छणए दसारवरवीरपुरिसते लोकबलवगाणं ) समुद्र विजयादिक दश दशार्हों के बीच में उत्तम धीरवीर पुरुषों का जो की अतुल बलधारी नेमिनाथ से युक्त होने के कारण तीन लोक से भी बलवान थे यह नित्योत्सव का स्थान था । उन के समस्त उत्सव यहीं होते रहते थे । दश दशार्हों के नाम इस प्रकार हैं— १, समुद्र विजय २, अक्षोभ ३, स्तिमित ४, सागर

अथवा गर्ती, थोडा आगजना लागथी नभता अनेक पर्वत लागे। तेमज्ज धुआं शिखरेशी ते प्रचुरइपथी युक्त हुतो। ओटले के तट, कटक वगेरे ते पर्वतमां पुष्केण प्रभाधुमां हुता। ( अच्छरगणदेवसंघचारणविज्ञाहरमिहुणसंविचिन्ने ) अप्सराओना गणुओथी, देवसंघओथी गगन भागे गमन करता मुनि विशेषओथी, अने विद्याधराना युगवोथी ते परंत सदा सेवित रहेटो हुतो। ( निच्वच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोकबलवगाणं ) समुद्र विजय वगेरे दश दशार्होंमां उत्तम धीर वीर पुरुषोना-के ओओ अतुल गजयाणी नेमिनाथथी युक्त होवाने कारणे त्रणे वीरथी गजवान हुता-आ नित्योत्सव भाटेनुं स्थान हुतुं तेमना अधा उत्सवे ओही न थता हुता दश दशार्होंना नामे आ प्रभाणे छे-१ समुद्रविजय, २ अक्षोभ ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवान, ६ अयल,

पुनरसौ पर्वतः ? कीदृशः ? इत्याह—‘सोम्ये’ सौम्यः=मनोहरः, सुभगः=आनन्दजनकः प्रियदर्शनः=दृष्टिसुखदः, सुरूपः=शोभनाकृतिकः, प्रासादीयः=अत्र-प्रासादीय इत्यनन्तरं दर्शनीयः, अभिरूपः, प्रतिरूप इति त्रयाणां पदानां संग्रहः प्रासादीयः=दर्शकजनमनोमोदजनकः, दर्शनीयः=नयनानन्दजनकत्वेन पुनः पुनः प्रेक्षणीयः अभिरूपः=सुन्दराकृतिकः । यद्वा-अभि=प्रतिक्षणं नवं नवमिवरूपं यस्य सौम्यभिरूपः । प्रतिरूपः-प्रतिविशिष्टम् असाधारणं रूपं यस्य स प्रतिरूपः, उत्कृष्टरूपवानित्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

मूलम्—तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते एत्थ णं नन्दणवणे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नन्दणवणप्पगासे पासाईए ४, तस्स णं उज्जाणस्स बहुमंझदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था दिव्वे वन्नओ ॥ सू० ४ ॥

५, हिमवान ६ अचल, ७ धरण, ८ पूरण ९, अभिचंद्र, १० वसुदेव ! (सोम्ये) यह पर्वत बड़ा मनोहर था (सुभगे, प्रियदर्शने, सुखे, प्रासाद) सुभग था—आनन्दजनक था, प्रिय दर्शन था दृष्टि को सुखप्रद था, सुरूप था—शोभन आकृति से संपन्न था, प्रासादीय था, दर्शनीय था, अभिरूप था प्रतिरूप था । दर्शकजन के मन को मोहित करनेवाला होने से प्रासादीय, नयनों को आनन्दजनक होने से दर्शनीय, सुन्दर आकृतिवाला होने से अभिरूप अथवा इसका रूप हर एक क्षण में नवीन नवीन जैसा प्रतीत होता था इसलिये अभिरूप और असाधारणरूप संपन्न होने के कारण प्रतिरूप था । सूत्र “३—”

७ धारण, ८ पूरण, अभिचंद्र, १० वसुदेव, (सोम्ये) आ पर्वत अत्यंत रमणीय होता. (सुभगे, प्रियदर्शने, सुखे, प्रासाद) सुभग होता, प्रियदर्शी होता. ओटवे के आंगोने गमे ओवे होता सुरूप होता, प्रासादीय होता, दर्शनीय होता अभिरूप होता, प्रतिरूप होता. नैनाराओना भनने भसन्न करनार डोवाथी प्रासादीय, आंगोने आनन्द आपनार डोवाथी दर्शनीय, सुंदर आकारवाणे डोवाथी अभिरूप अथवा तो तेनुं इप दरेके क्षण्णे नवुं नवुं दागुं हतुं तेथी ते अभिरूप होता, असाधारण इप संपन्न डोवाने कारणे ते प्रतिरूप होता. ॥ सूत्र ३ ॥

ટીકા—‘તસ્સ ણં’ હત્યાદિ । તસ્ય સ્વલ્લુ રૈવતકસ્ય અદૂરસામંતે અન્ન સ્વલ્લુ નન્દનવનં નામોદ્યાનમાસીત્ તત્ કીદૃશમિત્યાહ—‘સવ્વોડયપુષ્પફલસમિદ્ધે’ સર્વર્થ-કપુષ્પફલસમૃદ્ધમ્ સર્વેપામ્ ઋતૂનાં પુષ્પૈઃ ફલૈશ્ચ સમૃદ્ધં = સમન્વિતમ્, ‘રમ્મે’ રમ્યં=રમણીયં ‘નંદનવનપ્રકાશં’ નન્દનવનતુલ્યમ્, પ્રાસાદીયમ્ ૪, તસ્ય સ્વલ્લુદ્યા-નસ્ય ‘બહુમજ્જદેસમાપ’ બહુમધ્યદેશમાગે ‘સુરપ્પિણં નામં’ સુરપ્રિયં નામં, ‘જક્કલાયયણે’ યક્ષાયતનમ્ ‘હોત્થા’ આસીત્ તત્ કીદૃશમિત્યાહ—‘દિવ્વે’ દિવ્યં=રમ્યં, વર્ણકઃ=વર્ણનપ્રત્યોડન્યત્રાભિહિતઃ । અન્યત્ સુગમમ્ ॥ સૂ.૦૪ ॥

મૂલમ્—તત્થ ણં બારવર્ણે નયરીણ કપ્પે નામં વાસુદેવે

‘તસ્સ ણં રેવચગસ્સ’—હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ ણં રેવચગસ્સ) ઉસ રૈવતક પર્વતકે (અદૂરસામંતે) ન બહુત દૂર ઓર ન પાસ કિન્તુ ઉચિત સ્થાન પર (એત્થણં નંદણવણે નામં ઉડ્ઝાણે હોત્થા) યહાં એક નંદન વન નામ કા ઉદ્યાન થા (સવ્વો ડય પુષ્પફલસમિદ્ધે) યહ સમસ્ત ઋતુઓં સંબન્ધી પુષ્પોં ઓર ફલોં સે સમૃદ્ધ રહતા થા । (રમ્મે ણંદણવણપ્પગાસે) નંદનવન કે જેસા થા । (પાસાઈ ૪) દર્શક જન કે મનંકો પ્રમોદિત કરને વાલા થા । સુમગ પ્રિયદર્શન આદિ ઓર મી વિશેષણ હસમેં લગા લેના વાહિયે યહી વાન “પાસાઈ ૪” કે સાથ રહે હું ૪ પદ સૂચિન કરતા હૈ । (તસ્સ ણં ઉડ્ઝાણસ્સ બહુમજ્જદેસમાપ સુરપ્પિણં નામં જક્કલાયયણે હોત્થા દિવ્વે વલ્લઓ) ઉસ ઉદ્યાન કે ઠીક બીચો બીચ કે સ્થાન મેં સુરપ્રિય નામ કા યક્ષાયતન થા । યહ દિવ્ય થા । હસકા ઓર વર્ણન દૂસરી જગહ કિયા હુઆ હૈ । સૂત્ર “૪”

(તસ્સ ણં રેવચગસ્સ) હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ ણં રેવચગસ્સ) રૈવતક પર્વતી (અદૂર સામંતે) અત્યંત દૂર પણ નહિ તેમજ અત્યંત નજીક પણ ન કહેવાય તેમ (એત્થણં નંદણવણે નામં ઉડ્ઝાણે હોત્થા) ત્યાં ‘નંદનવન’ નામે એક ઉદ્યાન હતું; (સવ્વોડય પુષ્પફલસમિદ્ધે) તે બધી ઋતુઓના પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ (રમ્મે ણંદણ-વણપ્પગાસે) નંદનવન એવું હતું. (પાસાઈ ૪) દર્શકોના મનને હર્ષિત કરનાર હતું. (પાસાઈ ૪) પદની આગળ આર નો આંકડો મૂક્યો છે તે એમ સૂચવે છે કે સુલભ પ્રિયદર્શન વગેરે બીજા પણ વિશેષણો અહીં સમજવા બેઠાએ (તસ્સ ણં ઉડ્ઝાણસ્સ બહુમજ્જદેસમાપ સુરપ્પિણં નામં જક્કલાયયણં હોત્થા દિવ્વે વલ્લઓ) તે ઉદ્યાનની બરાબર વચ્ચે સુરપ્રિય નામે યક્ષનું આયતન હતું. તે દિવ્ય હતું. તેનું વર્ણન અન્યત્ર કરવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂ. “૪” ॥

राया परिवसइ, से णं तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाणं दसण्हं  
दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, उग्गसेण-  
पामोक्खाणं सोलसण्हं रायसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं  
अध्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुइंतसा-  
हस्सोणं, वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाहस्सणिं,  
महासेनपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुपिणी-  
पामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुपिणीपामोक्खाणं  
वत्तिंसाए महिलासाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणे-  
गाणं गणियासाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं इसरतलवर जाव  
सत्थवाहप्रभिईणं वेयडु गिरिसायरपेरंतस्स दाहिणडुभरहस्स  
य बारवईए नयरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरइ ॥सू-५॥

टीका—‘तत्थ णं’ इत्यादि । तत्र तस्यां खलु द्वारावत्यां नगर्यां ‘कण्हे  
नामं’ कृष्णो नाम वासुदेवः राजा=त्रिखण्डाधिपतिः परिवसति । स खलु तत्र  
‘समुद्रविजयपामोक्खाणं’ समुद्रविजयप्रमुखानां दशानां ‘दसाराणं’ दशाह्वाणां  
बलदेवप्रमुखानां ‘पंचण्हं’ पञ्चानां महावीराणाम् । उग्रसेनप्रमुखानां ‘पोडशानां’

‘तत्थ णं बारवईए नयरीए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तत्थ णं बारवईए नयरीए) उस द्वारावती नगरी में (कण्हे नामं  
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके तीन खंड के अधिपति  
राजा रहते थे (सेणं तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं)  
वे वहां समुद्र विजय आदि दश दशाह्वाँ का (बलदेव पामोक्खाणं-

‘तत्थ णं बारवईए नयरीए’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तत्थ णं बारवईए नयरीए) ते द्वारावती नगरीभां (कण्हे नामं  
वासुदेवे राया परिवसइ) कृष्ण वासुदेव नामके त्रिखण्डाधिपति राजा रहते  
हैं। (से णं तत्थ समुद्रविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं) त्यां समुद्र  
विजय विशेषे दशाह्वाणि। (बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं) अण-  
का २

राजसहस्राणां=षोडशसहस्रप्रमितानां राज्ञाम् । प्रद्युम्नप्रमुखानाम् अर्धचतुर्थानां कुमारकोटीनां=सार्धत्रिकोटिसंख्यकानां यादवकुमाराणाम् । शाम्बप्रमुखानां षष्ठ्या दुर्दान्तसाहस्रीणां=षष्ठिसहस्रसंख्यकानां शाम्बादीनां दुर्दान्तानाम् । वीरसेन प्रमुखानामेकविंशत्या वीरसाहस्रीणां=एकविंशतिसहस्रप्रमाणानां वीरसेनादीनां वीराणाम् । महासेनप्रमुखानां षट्पञ्चाशतो बलवत् साहस्रीणां=षट्पञ्चाशत् सहस्रप्रमितानां महासेनादीनां बलवताम् । रुक्मिणीप्रमुखानां द्वात्रिंशतो महिलासाहस्रीणां=रुक्मिण्यादीनां द्वात्रिंशत्सहस्रप्रमितानां महिलानाम् । अनङ्गसेनाप्रमुखानामनेकासां गणिकासाहस्रीणाम्=अनङ्गसेनादीनामनेकसहस्रसंख्यासमितानां गणिकानाम् अन्येषां च बहूनां राजेश्वरतलवरभाटम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठिसेनापतीनां, यावत् सार्धवाहप्रभृतीनां वैताहयगिरिसागरपर्यन्तस्य च, दक्षिणाधर्मभरतस्य च, द्वारावत्याः द्वारकायाः नगर्याश्च, आधिपत्यं यावत् — अत्र यावच्छब्दा-

पञ्चहं महावीराणां ) बलदेव प्रमुख पांच महावीरोंका उग्रसेन प्रमुख १६ सोलह हजार राजाओं का प्रद्युम्न प्रमुख ३॥, साढे तीन करोड़ यादव कुमारों का ( संघ पामोक्खाणं सट्टीए दुदंत साहस्सीणं ) ६० साठ हजार दुर्दान्त शाम्ब आदिकों का ( वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाहस्सीणं ) २१ इक्कीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरोंका ( महासेना पामोक्खाणं छप्पनाए बलवग साहस्सीणं ) ५६ छप्पन हजार बलिष्ठ महासेन आदिकों का ( रुक्मिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिला साहस्सीणं ) ३२ बत्तीस हजार रुक्मिणी प्रमुख महिलाओं का ( अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणिया साहस्सीणं ) अनंगसेना प्रमुख अनेक हजार गणिकाओं का निवास था । ( अन्नेसिंच बहूणं इसर तलवर जाव सत्यवाहपभिईणवे-यडुगिरिसायरपेरंतस्स य दाहिणडुभरहस्स य बारवइए नयरीए

हेन प्रमुख पांच महावीरोंने, उग्रसेन प्रमुख सेण डलर राजाओंने, प्रद्युम्न प्रमुख साठ प्रभु करेड यादव कुमारोंने ( संघपामोक्खाणं सट्टीए दुदंतसाहस्सीणं ) साठ ६० दुर्दान्तसांघ वगेरे ने। ( वीरसेणपामोक्खाणं एकवीसाए वीरसाहस्सीणं ) एकवीस डलर वीरसेन प्रमुख वीरोंने। ( महासेन पामोक्खाणं छप्पनाए बलवग साहस्सीणं ) छप्पन डलर भगवान महासेन वगेरेने। ( रुक्मिणी पामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं ) गत्तीस डलर रुक्मिणी प्रमुख महिलाओंने। ( अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं ) अने अणंगसेना प्रमुख डलर गणिकाओंने निवास डते। ( अन्नेसिंच, बहूणं इसर तलवर जाव सत्यवाहपभिईणं वेयडुगिरिसायरपेरंतस्स य दाहिणडुभरहस्स य बारवइए

दयं पाठोऽनुसन्धेयः—‘ पोरैवच्चं ’ पालयन् विहरति = आस्तेस्म । पौरपत्यं पुरवासिनामग्रेसरत्वं, ‘ सामित्तं ’ स्वामित्वं, ‘ भर्तृत्वं ’ भर्तृत्वं, महत्तरकत्वं ‘ आणार्सरासेणावच्चं ’ आज्ञेश्वर सेनापत्यं ‘ करेमाणे ’ कुर्वन् इति ॥५॥

मूलम्—तत्थ णं बारवईए नयरीए थावच्चा णामं गाहाव-  
इणी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया, तीसेणं थावच्चाए  
गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था  
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तएणं सा थावच्चागाहा-  
वइणी तं दारयं सातिरेगअट्टवासजाययं जाणित्ता सोह-  
णंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि कलायरियस्स  
उवणेइ, जाव भोगसमत्थं जाणिता बत्तीसाए इब्भकुल-  
बालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेह्हावेइ बत्तीसओ दाओ  
जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्धफरिसर-  
सरुववत्ते गंधे जाव भुंजमाणे विहरइ ॥ ६ ॥

टीका—‘ तत्थणं इत्यादि । तत्र=तस्यां खलु द्वारावत्यां नगर्यां ‘ थावच्चा-  
आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरइ ) अन्य और भी अनेक राजेश्वर,  
तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठीसेनापतियों का यावत् सार्थवाह  
आदिकों का, वैताढय गिरिपवं सागर पर्यन्त दक्षिणार्ध भरत का तथा  
द्वारका नगरी का आधिपत्य पौरपत्य, स्वमित्व, भर्तृत्व महत्तरकत्व,  
आज्ञेश्वर सेनापत्य करते हुए रहते थे अर्थात् द्वारका नगरीमें कृष्ण  
वासुदेव राज्य करते थे । सूत्र “ ५ ”

‘तत्थ बारवईए नयरीए’ इत्यादि ।

टीका—( तत्थणं बारवईए नयरीए ) उस द्वारका नगरी में ( थावच्चा-

नयरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणं विहरइ ) अने गीला पणु घण्टा राजेश्वर,  
तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी सेनापतियों सार्थवाह वगैरे उपर वैताढय  
गिरि अने समुद्र सुधीना दक्षिण भारत, नगरों आधिपत्य पौरपत्य,  
भर्तृत्व महत्तरकत्व आज्ञेश्वर सेनापतित्व करता रहता होता । ओटदेके द्वारका  
नगरीमां कृष्ण वासुदेव राज्य करता होता ॥ सूत्र ५ ॥

( तत्थणं बारवईए नयरीए ) इत्यादि ।

टीका—( तत्थणं बारवईए नयरीए ) वे द्वारका नगरीमां ( थावच्चा णामं गाहा-

નામં ' સ્થાપત્યા નામ ' ગાઘાવહ્ની ' ગાઘાપત્ની પરિવસતિ । સા કોદશીત્યાહ-  
આદ્યાન્યધનધાન્યાદિ પરિપૂર્ણા, યાવત્ અપરિપૂર્ણા-અન્યૈઃ પરામવિતુમશક્ત્યા, તસ્યાઃ  
સ્વલ્લ સ્થાપત્યાયાઃ ગાઘાપત્ન્યાઃ પુત્રઃ ' યાવચ્ચાપુત્રે નામં ' સ્થાપત્યાપુત્રો નામ  
સાર્થવાહદારકોઽભૂત । સ કોદશ્ય ઇત્યાહ-સુકુમારપાણિપાદઃ યાવત્ સુરૂપઃ અત્ર  
યાવચ્છબ્દકરણાદયપાઠોઽનુસન્ધેયઃ--' અહીળપદિપુણ્ણપંચિદિયસરીરે, લક્ષ્ણ  
વંજણગુણોવવેષ, માણુમ્માણપમાણપદિપુણ્ણસુજાયસવ્વંગસુંદરંગે, સસિસોમા-  
કારે કંતે પિયદંસણે ઇતિ એતાનિ પદાનિ પ્રાગેવ વ્યાખ્યાતાનિ તતઃ સ્વલ્લ સા  
સ્થાપત્યા ગાઘાપત્ની તં દારકં ' સાતિરેગઅદ્વાસજાયયં ' સાતિરેકાષ્ટવર્ષ-

નામં ગાઘાવહ્ની પરિવસહ ) સ્થાપત્ય નામકી ગાઘા પત્ની રહતી થી ।  
( અદ્વાજાવ અપરિપૂર્ણા ) યહ ધન ધાન્ય આદિ સે પરિપૂર્ણ યાવત્ અપ-  
રિપૂર્ણ અન્ય વ્યક્તિયોં દ્વારા પરીમણિત અશક્ય થી । ( તીસેર્ણ યાવ-  
ચ્ચાપ ગાઘાવહ્નીપુત્રે યાવચ્ચાપુત્રે નામં સત્યવાહદારક હોત્યા )  
હસ સ્થાપત્ય ગાઘાપત્ની કા પુત્ર થા જિસ કા નામ સ્થાપત્ય પુત્ર થા ।  
યહ સાર્થવાહદારક કહલાતા થા । ( સુકુમાલપાણિપાદજાવ સુરૂપે )  
હસકે હાથપેર સુકુમાર થે । યાવત્ યહ અન્હે રૂપચાલે થે । યહાં યાવત્  
શબ્દ સે " અહીળપદિપુણ્ણપંચિદિયસરીરે, લક્ષ્ણવંજણગુણોવવેષ,  
માણુમ્માણપમાણ પદિપુણ્ણસુજાયસવ્વંગ સુંદરંગે સસિ સોમાકારે કંતે,  
પિયદંસણે " હસ પાઠ કા સંગ્રહ હુઆ હૈ । હનપરોં કા અર્થ હિહલે કહા  
જા ચુકા હૈ ( તણે સા યાવચ્ચા ગાઘાવહ્ની તં દારકં સાતિરેગ અદ્વા-  
સજાયયં જાણિત્તા સોહણંસિ તિહિકરણદિવસગચ્છત્તસુહૃત્તંસિ )

વહ્ની પરિવસહ) સ્થાપત્ય નામે એક ગાઘાપત્ની રહેતી હતી. (અદ્વાજાવઅપરિપૂર્ણા)  
તે ધનધાન્ય વગેરેથી પરિપૂર્ણ તેમજ બીજી કોઈ વ્યક્તિથી પરાભૂત ન થાય એવી  
હતી. (તીસેર્ણ યાવચ્ચાપ ગાઘાવહ્નીપુત્રે યાવચ્ચાપુત્રે નામં સત્યવાહદારક હોત્યા)  
સ્થાપત્ય ગાઘાપત્નીને એક પુત્ર હતો તેનું નામ સ્થાપત્ય પુત્ર હતું. તે સાર્થવાહ  
દારક નામે પણ પંકાયેલો હતો. (સુકુમાલપાણિપાદ જાવ સુરૂપે) તેના હાથ  
પગ સુકુમાર હતા તે રૂપાળો હતો, અહીં (યાવત્) અહીં (અહિળપદિપુણ્ણ) પંચિ-  
દિય સરીરે લક્ષણવંજણગુણોવવેષ માણુમ્માણપમાણપદિપુણ્ણસુજાયસવ્વંગ સુંદરંગે  
સસિસોમાકારે કંતે પિયદંસણે ) આ પાઠને સંગ્રહ થયો છે. આ સારના અર્થ  
પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. (તણે સા યાવચ્ચાગાઘાવહ્ની તં દારકં સાતિ-  
રેગ અદ્વાસજાયયં જાણિત્તા સોહણંસિ તિહિકરણદિવસગચ્છત્તસુહૃત્તંસિ ) સ્થાપત્ય

जातकं, किंचिदधिकाष्टवर्षजातं ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते ' कलायरियस्स ' कलाचार्यस्य समीपे उपनयति, यावत् सर्वाः कलाः शिक्षयति मेघकुमारवद् द्वासप्ततिकला अनेन शिक्षिता इत्याशयः । भोगसमर्थं यौवनवयः समागमेन विषयभोगयोग्यताऽपन्नं ज्ञात्वा द्वात्रिंशता ' इम्मकुलबालियाणं ' इम्मकुलबालिकानाम् महाधनाढ्यसार्थवादानां द्वात्रिंशत्संख्यकन्यानाम् एकदिवसेन एकस्मिन्नेव दिने पाणिं ग्राहयति पाणिग्रहणं कारयति । द्वात्रिंशदायः द्वात्रिंशद् हिरण्यकोट्यः द्वात्रिंशत् सुवर्णकोटयः इत्यादिरूपो मेघकुमारवदायोऽवगन्तव्यः । यावत् तदनन्तरं स्थापत्यापुत्रं द्वात्रिंशता इम्मकुलबालिकाभिः सार्धं विपुलान् शब्दस्पर्शरसरूपवर्णगन्धान् विषयान् यावद् भुञ्जानः अनुभवन् विहरति=आस्तेस्म ॥सू०६॥

इस के उस स्थापत्य गाथा पत्नीने उस अपने पुत्र को आठवर्ष से कुछ अधिक जब जाना तब शुभ तिथि करण दिवस नक्षत्र एवं मुहूर्त्त में ( कलायरियस्स ) कलाचार्य के पास ( उवणेइ ) भेजदिया ( जाव भोग समत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इम्मकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेह्हावेइ ) यावत् मेघकुमार की तरह उस स्थापत्य पुत्र ने ७२वहस्तर कलाओं को सीखलिया । यौवनवय के समागमन से विषय भोग की योग्यता विशिष्टइसे जानकर बाद में उस स्थापत्यागाथापत्नीने उसका वैवाहित संस्कार एकही दिनमें ३२ महाधनाढ्य सार्थवाहों की कन्याओं के साथ करवादिया । ( बत्तीसं ओदाओ जाव बत्तीसाए इम्मकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सहकरिसरूवगंवे जाव भुंजमाणे विहरइ ) ३२बत्तीस हिरण्य कोटि ३२ बत्तीस सुवर्ण कोटि इत्यादि रूपदहेज इसे मेघकुमार की तरह मिला । इसके बाद स्थापत्य पुत्र ने ३२ उन इम्मकुल बालिकाओं के साथ

गाथा पत्नीओ पीताना पुत्रने आठवर्ष भी छोडे मोटे छोडेओ लक्ष्मीने शुभ तिथि, करण, दिवस, नक्षत्र अने मुहूर्त्तमां ( कलायरियस्स ) कलाचार्यनी पास ( उवणेइ ) भेकइयो. ( जाव भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इम्मकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेह्हावेइ ) मेघकुमारनी जेभ ते स्थापत्य पुत्र पय भित्तेर क्वाओ शीपीतीधी करे ते युवावस्था ल'पन्न थर्ने विषयोप-  
लोगने लायक थयो त्यारे गाथापत्नीओ ओकज दिवसमां तेनुं लक्ष भत्रीस महाधनाढ्य सार्थवाडोनी कन्याओनी साथै करावडाओं ( बत्तीसं ओदाओ जाव बत्तीसाए इम्मकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सहकरिसरूवगंवे जाव भुंजमाणे विहरइ ) भत्रीस हिरण्य कोटि, भत्रीस सुवर्ण कोटि वनेरे दडेज मेघकुमारनी जेभ तेने पय भणी. त्यार पछी स्थापत्य पुत्र भत्रीस छियकुण भजाओनी



મૂલ્—તેણં કાલેણં તેણં સમણં અરહા અરિદ્ધનેમી સો  
 ચેવ વણ્ણઓ દસથણુસ્સેહે નીલુપ્પલગવલ્લુલિયઅયસિકુસુમ-  
 પ્પગાસે અદ્ધારસહિં સમણસાહસ્સીહિં સદ્ધિં સંપરિવુદે ચત્તાલી-  
 સાપ્ અજ્ઞિયાસાહસ્સીહિંસદ્ધિં સંપરિવુદે પુઠ્ઠાણુપુઠ્ઠિં ચરમાણે  
 જાવ જેણેવ બારવઈ નયરી જેણેવ રેવયગપઠ્ઠવ્ણ જેણેવ નંદન-  
 વણે ઉજ્જાણે જેણેવ સુરપ્પિયસ્સ જક્ખસ્સ જક્ખાયયણે જેણેવ  
 અસોગવરપાયણે તેણેવ ઉવાગઠ્ઠઙ્ગ, ઉવાગચ્છિત્તા અહાપટ્ઠિરૂવં  
 ઉગ્ગહં ઓગિણિહત્તા સંયમેણ તવસા અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરઙ્ગ  
 પરિસા નિગ્ગયા ધમ્મો કહિઓ ॥ ૭ ॥

ટીકા—‘તેણં કાલેણં’ इत्यादि । तस्मिन् काले. तस्मिन् समये अर्हन् अरिष्ट  
 नेभिर्द्वाविंशतितमस्तीर्थकरः समवसत इति भावः, स एव वर्णकः = अन्यतीर्थक-  
 राणां यो वर्णकः ‘आइगरे तित्थगरे’ इत्यादि रूपः कथितः स एवारिष्टनेभि  
 भगवतोऽपि वर्णको बोध्य इत्यर्थः, नवरं—‘दसथणुस्सेहे’ दशधनुस्सेधः=दश-

विपुल शब्द रूप गंधरस और स्पर्श पांचों इन्द्रियों के विषयों को यावत्  
 भोगते हुए अपना समय आनन्द के साथ व्यतीत कर दिया ॥ सूत्र “६”

તેણં કાલેણં તેણં સમણં इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(તેણં કાલેણં તેણં સમણં) उस काल और उस समय में (अरिहा,  
 अरिदुनेमी) उस द्वारावती नगरी में बावीसवें तीर्थकर अर्हत नेमीनाथ  
 भगवान् आये (सो चैव वण्णओ) अन्यतीर्थकरों का जैसा “आइगरे  
 तित्थगरे” इत्यादिरूप से वर्णन किया गया है उसी प्रकार का वर्णन

સાથે પુષ્કળ શબ્દ, સ્પર્શ, રૂપ વસ્તુ અને ગંધ રૂપ પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયો  
 ને ભોગવતાં પોતાનો વખત સુખેથી પસાર કરવા ગયો. ॥ સૂત્ર “૬” ॥

તેણં કાલેણં તેણં સમણં इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(તેણં કાલેણં તેણં સમણં) તે કાળે અને તે સમયે (અરિહા અરિદુનેમી  
 તે દ્વારકા નગરીમાં બાવીસમાં તીર્થકર અર્હત નેમીનાથ ભગવાન પધાર્યા  
 (સો ચૈવ વણ્ણઓ) “આઈગરે તિથગરે”, ના રૂપમાં જેમ બીજા તીર્થકરોનું  
 વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે પ્રમાણેજ અરિદ્ધનેમિ પ્રભુનું વર્ણન પણ બહુ

धनुः परिमित उत्सेध उच्छ्रायो यस्य सः, पुनः कथं भूतौऽसावित्याह—'नील-  
पलंगवलगुलियअयसिकुसुमप्यगासे ' नीलोत्पलंगवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाशः  
नीलोत्पलं = नीलकमलं, गवलं=माहिषं शृङ्गं. गुलिका=नीली, यद्वा-गवलगुलिका  
=माहिषशृङ्गस्य त्वर गगेऽपसारिते सति तदन्तरालवर्तिनीं गुलिका 'अतसी' अलसी  
नाम्नाप्रसिद्धो धान्यविशेषस्तस्य कुसुमं=पुष्पं, तेषां प्रकाश इव प्रकाशो वर्णो यस्य  
स तथा, अष्टादशभिः श्रमणसाहस्रीभिः-अष्टादशसहस्रपरिमितैः श्रमणैः मुनिभिः  
सार्धं संपरिवृतः चत्वारिंशता आर्थिकासाहस्रीभिः=चत्वारिंशत्सहस्रपरिमिताभि-  
रार्थिकाभिः साध्वीभिः सार्धं संपरिवृतः, पूर्वानुपूर्वी=पूर्व्यानुपूर्व्यां तीर्थं करपरंप-  
रया चरन्=विहरन् यावत् यत्रैव द्वारावती नगरी वर्तते यत्रैव रैवतकपर्बतः  
यत्रैव नन्दनवनं नामोद्यानमस्ति, यत्रैव सुरप्रियस्य यक्षस्य यक्षायतनं, यत्रैव,

इन अरिष्टनेमि प्रभुका भी जानना चाहिये । परन्तु उनके वर्णन की अपेक्षा  
इनके वर्णन में इतनी विशेषता है कि ये (दसवणुस्सेहे, नीलुत्पलंगवल-  
गुलियअयसिकुसुमप्यगासे) इनके शरीर की ऊँचाई दश धनुष की थी ।  
शरीर का वर्ण नीलकमल के गवल-माहिष के शृंग के अन्दरभाग  
जैसा गुलिका-नील के जैसा अथवा गवल गुलिका-त्वरा भाग के दूर  
करने पर तदन्तरालवर्तिनी माहिष शृंग की गुलिका के-अलसी के पुष्प  
के वर्ण के समान था । (अष्टारसहिं समणसाहस्रीहिं सद्धिं संपरिवुडे  
चत्तालीसाए अज्जिया साहस्रीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुब्बाणुपुण्ड्रिचरमाणे  
जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंदनवणे उज्जाणे  
जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव  
ववागच्छइ) ये अर्हन् अरिष्टनेमि प्रभु १८ अठारह हजार श्रमणों के साथ  
और ४० चालीस हजार आर्थिकाओं के साथ २ पुर्वानुपूर्वी से-तीर्थ कर

देवुं ओधजे. इत्त अरिष्टनेमि जगवान नी विषे आटहुं विशेष सभञ्जु ओधजे  
हे- ( दसवणुस्सेहे नीलुत्पलंगवलगुलियअयासि कुसुमप्यगासे ) तेभन्तुं शरीर  
दश धनुष ओटहुं उँचुं हुंतुं. तेभना शरीरने। रंग नील कमल गवलमाहिषना  
शींगडाना मध्यभाग जेवो, गुलिका-नील जेवो, अथवातो गवल गुलिका-ऊपर  
नी आभडीने उपाडी वीधापछी तेनी अंदरना माहिषना शींगडानी गुलिका  
अने .अलसीना पुष्पना रंग जेवो हुतो. ( अष्टारसहिं समणसाहस्रीहिं  
सद्धिं संपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जिया साहस्रीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुब्बाणुपुण्ड्रिचर-  
माणे जाव जेणेव बारवई नयरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंदनवणे उज्जाणे जेणेव  
सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव ववागच्छइ ) अर्हन्  
अरिष्टनेमि प्रभु अठार हुंनर श्रमणुनी साथे अने आलीस हुंनर आर्थिका-

અશોકવરપાદપઃ=અશોકનામા મહાવૃક્ષઃ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય 'અહાપદ્ધિ-  
રૂવં' યથાપ્રતિરૂપં=મુનિજનકલ્પાનુસારમ્ અવગ્રહં=સ્થિત્યર્થં વસતેરાજ્ઞાં અવગૃહ્ય  
=ગૃહીતા સંયમેન તપસા ચાત્માનં ભાવયન્ વાસયન્ વિહરતિ=આસ્તેસ્મ । તદા  
વનપાલકઃ સમાગત્ય કૃષ્ણાય વાસુદેવાય વર્ષાપનિકા પ્રદત્તા । પરિપક્ષિર્ગૈતા=  
દ્વારાવતી નગરી નિવાસિનાં જનાનાં પરિપત્ સમૂહઃ નિર્ગતા અરિષ્ટનેમિર્ભગવન્  
સમાગત ઇતિ શ્રુત્વા તં વન્દિતું દ્વારાવતીનગરીતો નિઃસૃતેત્યર્થઃ । સા પરિપદ્  
ભગવન્તં વન્દિત્વા ધર્મં શ્રોતું ભગવતઃ પુરોડવસ્થિતા ધર્મઃ કથિતઃ અરિષ્ટનેમિના  
ભગવતા ધર્મકથા કથિતા ॥ સુ-૭ ॥

પરંપરા કે અનુમાર-વિહાર કરતે હુપ યાવત્ જહાં વહ દ્વારાવતી નગરી  
થી ઉસમેં જહાં રૈવતક પર્વત થા-નંદવન નામકા ઉદ્યાન થા । ઉસમેં મી  
જહાં સુરપ્રિયયક્ષ કા યક્ષાયતન થા ઓર ઉસ મેં મી જહાં અશોક કા  
ઉત્તમ વૃક્ષ થા, વહાં પધારે ( ઉવાગચ્છિત્તા અહાપદ્ધિરૂવં ઇગર્હ ઓગિ-  
ણિહિત્તા સંયમેણં તવસા અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરહ ) આકર કે વન્હોં ને  
મુનિજન કે કલ્પાનુસાર વનપાલ સે વસતિ કી આજ્ઞા પ્રાપ્ત કી-ઔર  
પ્રાપ્ત કર વે વહાં તપ ઔર સંયમ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુપ  
વિરાજમાન હો ગયે ઉસ સમય વનપાલકને આકર કે કૃષ્ણ  
વાસુદેવકો વધાર્હ દી । ( પરિમા નિગયા ધમ્મો કહિઓ ) દ્વારાવતીનગરી  
કે સમસ્ત જનોં કા સમૂહ- ( અરિષ્ટનેમિ ભગવાન આયે હુપ હૈ ) એમા  
સુનકર ઉનકો વંદના કરને કે લિયે દ્વારાવતી નગરી સે નિકલે ।

ઓની સાથે પૂર્વાનુ પ્વોથી-ઓટલે કે તીર્થકર પરંપરા ને અનુસરતાં વિહાર  
કરતાં બ્યાં તે દ્વારાવતી નગરી હતી, બ્યાં રૈવતક પર્વત હતો, બ્યાં નંદવન  
નામે ઉદ્યાન હતું, અને તેમાં બ્યાં સુરપ્રિય યક્ષતું યક્ષાયતન હતું અને તેમાં  
પશ્ચ બ્યાં અશોકતું શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ હતું ત્યાં પધાર્યા. ( ઉવાગચ્છિત્તા અહાપદ્ધિરૂવં  
ઇગર્હ ઓગિણિહિત્તા સંયમેણં તવસા અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરહ ) ત્યાં પધારીને  
મુનિ જ્ઞેનાયિત પ્રબુલિકા મુજ્જ વનપાલક પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને આજ્ઞા  
મેળવીને ત્યાં તપ અને સંયમથી ચેતાના આત્માને ભાવિત કરતાં પ્રિભ્યા.  
તે વખતે વનપાલકે કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે જઈને તેમને શુભ સમાચારો આપ્યા  
( પરિમા નિગયા ધમ્મો કહિઓ ) દ્વારાવતી નગરીન બધા નાગરિકોએ 'અરિ-  
ષ્ટનેમિ ભગવાન અને પધાર્યા છે ' એવું સાંભળીને તેમની વંદના કરવામાટે  
નગરીની બહાર નીકળ્યા. બધા નાગરિકો ભગવાનને વંદન કરીને ધર્મકથા

मूलम्—तएणं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धहे समाणे कोडुंबियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एवं वयासी-  
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं  
गंभीरं महुरसइं कोमुदीयं भेरिं तालेह, तएणं ते कोडुंबिय  
पुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं बुत्ता समाणां हट्ठ जाव मत्थए  
अंजलिं कट्ठ-एवं सामी ! तहत्ति जाव पडिसुणेति, पडिसुणिता  
कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्ख-  
मित्ता जेणेव सहा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवा-  
गच्छंति, उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियं गंभीरं महुरसइं कोमु-  
दियं भेरिं तालेति । तओ णिद्धमहुरगंभीरपडिसुएणं पिव  
सारएइणं बलाहएणं पिव अणुरसियं भेरीए ॥ सू०८ ॥

टीका—‘ तएणं ’ इत्यादि । ततः=तदनन्तरं, खलु स कृष्णो वासुदेवोऽनया  
भगवानरिष्टनेमिः समागत इत्येवं रूपया कथया = वनपालकथितया कथया  
‘ लद्धहे ’ लब्धार्थः लब्धः=प्राप्तः, भगवदागमनरूपोऽर्थो येन स तथा, सच्च कौटु-  
म्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा, एवं=वक्ष्यमाणमकारेण अवा-

भगवान् को वंदना कर के सब धर्म सुनने की अभिलाषा से भगवान्  
के सामने बैठ गये । प्रभुने उन्हें धर्म का उपदेश दिया । “ सूत्र “ ७ ”

तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥

टीकार्थ—( तएणं ) इसके बाद ( से कण्हे वासुदेवे ) उन कृष्ण वासुदेव ने  
( इमीसे कहाए लद्धहे समाणे ) वनपाल के मुख से अरिष्ट नेमि प्रभुका  
आगमन रूप अर्थ विदित कर ( कौडुंबियपुरिसे सहावेइ ) कौटुम्बिक

सांख्यवाणी धर्मिणी तेमनी साथे गयी । प्रभुको यह तेमने उपदेश  
आये । ॥ सूत्र “ ७ ” ॥

तएणं से कण्हे वासुदेवे ध्यादि ॥

टीकार्थ—( तएणं ) त्थार णाह ( से कण्हे वासुदेवे ) कृष्ण वासुदेवे ( इमीसे  
कहाए लद्धहे समाणे ) वनपालकना भ्रांती अरिष्टनेमि प्रभुनी यथशमणीनी बात  
का ३

दीत्-भो देवानुप्रियाः 'स्त्रिपामेव' क्षिप्रमेव=क्षीघ्रमेव सुधर्माणां सभायां गत्वा 'मेघोघरसिंयं' मेघोघरसितां=मेघोघानां मेघसमूहानां रसितमिव रसितं ध्वनिरिव ध्वनिर्यस्यारतां गङ्गीरां=सान्द्रां 'मधुरसदं' मधुरशब्दां 'कोमुदीयं' कौमुदिकां उत्सवसूचनासमये वादनीया कौमुदिका नाम्नी श्रीकृष्णवासुदेवस्य मेरी तां, मेरिं=कुन्दुभि 'तालेह' ताडयत=वादयत । ततः=तदनन्तरं खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो हृष्टाः यावत् हर्षवशविसर्पद् हृदया मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा 'एवं स्वामिन् तथेति' यावत् 'हे स्वामिन् एवमेव तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा प्रतिदृष्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । प्रतिश्रुत्य आज्ञां स्वीकृत्य कृष्णस्य वासुदेवस्यान्तिकतात्=समीपात् 'पडिनिक्खमन्ति' प्रतिनिष्क्रामन्ति=निसरन्ति । प्रति-

पुरुषोंको बुलाया (सहावित्ता एवं बयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा- (स्त्रिपामेव भो देवानुप्रिया सभाए सुहम्माए) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही सुधर्मा नाम की सभा में जाकर (मेघोघरसिंयं गङ्गीरमधुरसदं कोमुदीयं मेरिं तालेह) मेघोके समूह जैसी सान्द्र मधुर शब्दवाली कौमुदिक नामकी मेरी को कि जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती है बजाओ । (तएणं ते कौटुम्बियपुरिसा कण्हेण वासुदेवेण एवं वुत्ता समाना हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्ठ एवं सामी ! तहत्ति जाव पडिसुणेंति) कृष्णवासुदेव की इस प्रकार आज्ञा सुनकर वे कौटुम्बिक पुरुष अधिक हर्षित एवं संतुष्ट हुए और मस्तक पर अंजलि रखकर हे स्वामिन् ! जैसी आपकी आज्ञा है हम वैसा ही करेंगे ऐसा कहकर उन्होंने उनकी आज्ञा स्वीकार कर ली (पडिसुणिता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमन्ति) आज्ञा स्वीकार कर

सांभलीने (कौटुम्बियपुरिसे सहावेह) कौटुम्बिक पुरुषोंने बोलाया. (सहावित्ता एवं बयासी) बोलायीने तेमणे कट्ठ- (स्त्रिपामेव भो देवानुप्रिया ! सभाए सुहम्माए) हे देवानुप्रियो ! सत्वर ते सुधर्मा नाम्नी सभायां गच्छन्ते (मेघोघरसिंयं गङ्गीरमधुरसदं कोमुदीयं मेरिं तालेह) मेघसमूहना गङ्गेन जेवी सान्द्र मधुर शब्दवाणी तेमण उत्सवना वणते वगाडवाभा आवती कौमुदिक नाम्नी मेरी ने वगाडे (तएणं ते कौटुम्बिय पुरिसा कण्हेण वासुदेवेण एवं वुत्तासमाना हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्ठ एवं सामी ! तहत्ति जाव पडिसुणेंति) कृष्ण वासुदेवनी आवी आज्ञा सांभलीने कौटुम्बिक पुरुषो जूणणं हर्षित अने संतुष्ट थया, तथा मस्तके अंजलि राणीने कडेवा दाव्या, " हे स्वामिन् ! आपनी जेवी आज्ञा छे, ते प्रमाणे अमे करीशु आभ कहीने तेआओ तेमनी आज्ञा स्वीकारी दीधी. " पडिसुणिता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्ख

निष्क्राम्य यत्रैव सुधर्मासभा, यत्रैव कौमुदिका मेरी, विद्यते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तर्हि मेघोघरसितां=गम्भीरां मधुरशब्दां कौमुदिकां मेरीं ताडयन्ति=वादयन्ति । ततः = तदनन्तरं ' निद्धमहुरगंभीरपडिसुपणं पिव ' स्निग्धमधुरगम्भीरं प्रतिश्रुतेनैव=स्निग्धं=हृदयहर्षजनकं मधुरं गम्भीरं प्रतिश्रुतं=प्रतिध्वनित्यस्य स तथा, तेनैव केन ? ' सारङ्गणं ' शारदिकेन शरत्कालसमृद्धभूतेन ' बलाहणं पिव ' बलाहकेनैव=मेघेनैव ' अणुरसियं ' अनुरसितम्=अनुगर्जितं मेर्या, शारदिकमेघगर्जितवद् मेरीध्वनिर्जात इत्यर्थः ॥ सू०८ ॥

शूलम्—तएणं तीसे कोमुइयाए मेरियाए तालियाए समा-  
णीए बारवईए नयरीए नवजोयणविस्थिन्नाए दुवालसंजोय-  
णायामाए सिंघाडगतिचउक्कचच्चरकंदरदरी विवरकुहरगिरिसि-  
हर नगरगोउरपासायदुवारभवणदेउलपडिसुयसयसहस्स संकुलं  
करेमाणे बारवइं नयरिं सन्निभतर बाहिरियं सव्वओ समंता से

फिर वे कृष्ण वासुदेव के पास से चलदिये । ( पङ्क्तिक्वमिस्ता जेणेव संमा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया मेरी=तेणेव उवागच्छन्ति ) चलकर वे उस सुधर्मा सभा में जहां वह कौमुदिक नामकी मेरी रखी हुई थी वहां गये ( उवागच्छिस्ता तं मेघोघरसियं गंभीरमहुरसदंकोमुदियं मेरिं तालेति ) वहां जाकर उन्होंने उस मेघो के समूह जैसी सान्द्र गंभीर मधुर शब्द वाली कौमुदिक मेरी को बजाया ( तत्रो निद्धमहुरगंभीरपडिसुपणं पिव सारङ्गणं बलाहणं पिव अणुरसियं मेरीए ) बजते ही उस मेरी की ध्वनी शरत्कालीन मेघ की गर्जना के समान हुई । ॥सू०-८॥

‘मंति’ आशा कयां आइ’ तेओ कृष्णनी पासेथी अडार नीकथ्या.” “ पङ्क्तिक्वमिस्ता जेणेव संमा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया मेरी तेणेव उवागच्छन्ति ” अने त्यांथी तेओ सुधर्मा सभायां न्यां कौमुदिक नामनी मेरी भूकेली હતી त्यां अथा. “ उवागच्छिस्ता तं मेघोघरसियं गंभीरं महुरसदं कोमुदियं मेरिं तालेति ” त्यां બધને તેમણે મેઘસમૂહના બેવી સાન્દ્ર ગંભીર અને મધુર શબ્દવાળી કૌમુદિક-મેરીને વગાડી “ત્રો નિદ્ધમહુરગંભીરપડિસુપણં-પિવ સારંગણં બલાહણં પિવ અણુરસિયં મેરીએ ” તે મેરીમાંથી શરદ મેઘના મેઘની બેમ શબ્દો આવે બધને એમને પ્રસરી ગયા. ॥ સૂ. ૮ ॥

सहे विप्पसरत्तिथा । तएणं बारवईए नयरीए नवजोयणावि-  
त्थिन्नाए बारसजोयणायामाए समुहविजयपामोक्खा दसदसारा  
जाव गणिया सहस्साइं कोमुदियाए भेरीए सहं सोच्चा णिसम्म  
हट्टतुट्टु० जाव पहाया आविद्ध वग्घारियमल्लदामकलावा अह-  
तवत्थचंदणोक्किन्नगायसरीरा अप्पेगइया हयगया एवं गयगया  
रहसीया संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसव-  
ग्गुरापारिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था ।

तएणं से कणहे वासुदेवे समुहविजयपामोक्खे दसदसारे  
जाव अंतियं पाउब्भमाणे पासइ, पासित्ता हट्टतुट्टु जाव कोडुं-  
वियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवा-  
णुप्पिया ! चाउरंगिणी सेणं सज्जेह, विजयं च गंधहत्थिं  
उवट्ठवेह । ते वि तहत्ति उवट्ठवेति, जाव पज्जुवासंति ॥सू०९॥

टीका-‘ तएणं तीसे ’ इत्यादि । ततः खलु तस्यां कौमुदिकायां भेरीं ताडि-  
तायां सत्यां, द्वारावत्या नगर्यां नवयोजनविस्तीर्णाया द्वादशयोजनायामायाः  
‘ सिंघाडगतियचउकचचर कंदरद्रीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउर पासाय दुवार

‘ तएणं तीसे कोमुइयाए ’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (तीसे को मुइयाए) उस कौमुदी (भेरियाए  
तालियाए समाणीयाए) भेरी के बजने पर (बारवईए नयरीए न वजोजन  
वित्थिन्नाए) द्वारावती नगरी के कि जो नव ९ योजन विस्तीर्ण (चौडी)  
तथा (दुवालसजोयणायामाए) १२ बारह योजन लंबी थी-(सिंघाडगतिय  
चउक चचरकंदरद्रीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभ-

“ त एणं तीसे कोमुइयाए ”, इत्यादि ॥१॥

टीकार्थ-“तएणं” त्थार आहं “ तीसे कोमुइयाए ” ते कौमुदी “ भेरियाए  
तालियाए समाणीए ”, देखीने “ बारवईए नयरीए न वजोजन वित्थिन्नाए ” नव  
योजन विस्तार पायेदी तेमए “ दुवालसजोयणाए ” आर येअन, लांणी  
“सिंघाडगतियचउकचचरकंदरद्रीविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासायदुवारभ-

भवनदेउलपडिसुयसयसहस्ससंकुलं ' शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरकन्दरादरीविवर-  
हृगिरिशिखरनगरगोपुरप्रासादद्वारभवनदेवकुलमतिश्रुतशतसहस्रसंकुलां शृङ्गा-  
टकादि देवकुलान्ताः शब्दाः प्रसिद्धाः, तेषु प्रतिश्रुतानां प्रतिध्वनीनां यानि  
शतसहस्राणि तैः संकुला = परिपूर्णां तां तथाविधां कुर्वन् द्वारावतीं नगरीं  
' सन्निभतरबाहिरियं ' साम्यन्तरवाक्षां सर्वतः-समन्तात् स शब्दः=मेरी शब्दः  
' विप्पसरित्था ' विप्रासत्=विशेषेण प्रसृतः ।

ततः खलु द्वारावत्यां नगरीं नवयोजनविस्तीर्णयां द्वादशयोजनयामायां  
समुद्रविजयप्रमुखाः दशदशार्धा-यावत् गणिकासहस्राणि अत्र यावच्छब्दाद्यमर्थोऽ-  
वगम्यते-बलदेवप्रमुखा पञ्च महावीराः, उग्रसेनादयः षोडशसहस्रप्रमिता राजानः  
सार्धत्रिकोटिसंख्यका यादवकुमाराः, षष्टिसहस्रसंख्यकाः शाम्बादयो दुर्दान्ताः,  
वीरसेनप्रमुखा एकविंशति सहस्रप्रमितावीराः, महाबलसेनादयः षट्पञ्चाशत् सह-  
स्रप्रमाणा बलवन्तः, तथा-रुक्मिणीप्रमुखा द्वात्रिंशत्सहस्रपरिमितामहिला अनङ्गसे-  
नादयोऽनेकसहस्रसंख्यका वाराङ्गनाच्चेति । कौमुदीकायामेयाः शब्दं श्रुत्वा

घण देउलपडिसुयसयसहस्ससंकुलं करे माणे बारवई नयरिं सन्निभतर-  
बाहिरियं सव्वओ समंता से सहे विप्पसरित्था) शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क,  
चत्वर, कंदरा, दरी, विवर, कुहर, गिरीशिखर, नगर, गोपुर,  
प्रासादद्वार, भवन, देवकुल, इन सब स्थानों में लाखों प्रति ध्वनियां  
उठी इन लाखों प्रतिध्वनियों से उस द्वारावती नगरी को भीतर  
बाहिर सब प्रकार से सब तरफ से परिपूर्ण करता हुआ वह मेरी का  
शब्द बहुत जल्दी इधर उधर फैल गया । (तपण बारवईए नयरीए नव  
जोयणवित्थिनाए बारसजोयणायामाए समुद्रविजयपामोक्खा दसदसारा  
जाव गणियासहस्साई कौमुदियाए मेरीए सई सोच्चा निसम्म हट्ट  
तुट्ट जावणहाया) इस के बाद ९ नव योजन चौड़ी 'और १२ बारह  
योजन लंबी उस द्वारावती नगरी में समुद्रविजय' आदि दश दशार्धों

देउलपडिसुयसयसहस्ससंकुलं करेमाणे बारवई नयरिं सन्निभतरबाहिरियं सव्वओ  
समंता से सहे विप्पसरित्था " द्वारावती नगरीना शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क,  
चत्वर, कंदरा, दरी विवर, कुहर, गिरिशिखर, नगर, गोपुर, प्रासाद  
द्वार, भवन देवकुल आ अर्धां स्थानोंमां लागो पडवाओ पडया. बेरीने  
ध्वनि सेकंडो पडवाओथी द्वारावती नगरीनी अंदर अंदर ओमेर पूछुं इपे  
प्रसरिने अघे व्यास थछ-गथे. "तपण बारवईए नयरीए नव जोयणवित्थिन्नाए  
बारसजोयणायामाए समुद्रविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणियासहस्साई कौमु-  
दियाए मेरीए सहे सोच्चा निसम्म हट्ट तुट्ट जाव ण्हीया " त्यार आहं नव  
येअन पडोणी अने आरे येअन लागी द्वारावती नगरीमां समुद्र विजय



નિશ્ચય=હૃદયેઽવધાર્યે દૃષ્ટાસ્તુષ્ટા યાવત્ સ્નાતાઃ ‘આવિદ્વગ્ધારિયમલ્લદામકલાવા’ આવિદ્વગ્ધારિયમાલ્યદામકલાપા આવિદ્વઃ પરિષ્ઠતઃ ‘વગ્ધારિયમલ્લદામકલાવા’ પ્રલમ્બિતપુષ્પમાલ્યમુક્તાદિ હારાણાં કલાપો યેસ્તૈ પ્રલમ્બિતપુષ્પમાલ્યમુક્તાદિ હારધારિણં इत्यर्थः । ‘વગ્ધારિય’ इति देशीशब्दः प्रलम्बितार्थकः । अहतवत्त्वचंदणोक्त्तिन्नगायसरीरा’ અહતવસ્ત્વચન્દનોત્કિન્નગાગ્રસરીરા-અહતવસ્ત્વાણિ ચન્દનોત્કિન્નગાગ્રાણિ યેષુ તાનિ તથાશ્રુતાનિ શરીરાણિ યેષાં તે તેષાં શરીરાણિ નૂતનવસનયુક્તાનિ ચન્દનાનુલિપ્તાવયવકાનિ આસન્નિત્યર્થઃ । નૂતનવસનચન્દનાનુલેપધારિણં इति यावत् । अप्येकैके=अप्येके=केचन इत्यंगताः अथारूढाः एवं=एके

ને યાવત્ ગણિકા સાહસ્ય ને મેરી કે શબ્દ કો સુનકર ઔર ઉસે હૃદય મેં અવધારિત કર, बहुत ही अधिक हर्ष से एवं संतोष से युक्त हो स्नान किया-स्नान कर (आविद्वगधारियदामकलावा) उन्होंने ने लंबी २ पुष्प मालाओं से युक्त मुक्तादि हारों को पहिरा “वगधारिय” शब्द प्रलम्बित अर्थ का वाचक देशीय शब्द है । (अहतवत्त्व चंदणोक्त्तिन्नगायसरीरा) नवीन २ वस्त्रों से एवं चंदन के लेप से शरीर को सज्जित किया । “जाव गणियासहस्साइ” में जो (यावत्) पद आया है-वह इस बात को कहता है कि समुद्र विजय आदि दश दशाहों के साथ (बलदेव प्रमुख, पांचमहावीरों ने उग्रसेन आदि १६सोलह हजार राजाओंने, १॥ सढे तीन करोड यदव कुमारोंने, ६०साठ हजार दुर्दान्त शान्बादिकोंने २१६कीस हजार वीरसेन प्रमुख वीरोंने, ५६छप्पन हजार बलवंत महासेनोदिकोंने तथा रुक्मिणी प्रमुख ३२ बत्तीस हजार महिलाओंने

વગેરે ૬૪ દશાહોંએ અને ગણિકા સાહસ્યોંએ ભેરીના અવાજ સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં અવધારિત કરીને બહુજ હર્ષ તેમજ સંતોષ યુક્ત થઈને સ્નાન કર્યું, સ્નાન કરીને “આવિદ્વગ્ધારિયદામકલાવા” તેમણે લાંબી લાંબી પુષ્પમાળાંઓ વાળાં ચોટી વગેરેના હારો ધારણ કર્યાં વાગ્ધારિય શબ્દ પ્રલમ્બિત (લટકતી) અર્થને સૂચવનાર દેશીય શબ્દ છે. “અહતવત્ત્વ ચંદણોક્તિન્નસરીરા” નવાં નવાં વસ્ત્રો તેમજ ચંદનના દેવોથી ચોતાના શરીરને તેમણે શણગાર્યું. “જાવ ગણિયાસહસ્સાઈ” માં જે “યાવત્” શબ્દ છે, તે એમ સૂચવે છે કે સમુદ્રવિજય વગેરે ૬૪ દશાહોંની સાથે બળદેવ પ્રમુખ પાંચમહાવીરોંએ, ઉગ્રસેન વગેરે સોળ હજાર રાજાઓંએ સાડા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોંએ, ૬૦ હજાર દુર્દાંત શાંબાદિકોંએ એકવીસ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોંએ, છપ્પન હજાર બળવાન મહાસેન વગેરેએ તેમજ રુક્મિણી પ્રમુખ ૫૬ત્રીસ હજાર મહિલાઓંએ પણ તેમની જેમ હર્ષિત અને સંતુષ્ટ થઈને સ્નાન

કેચિત્ ગજગતાઃ ગજારુઢાઃ, રહસીયાસંદમાળીગયા' રથશિબિકારસ્યન્દમાનીગતાઃ  
કેચિત્ રથારુઢાઃ, કેચિત્ 'સંદમાળીગયા' સ્યન્દમાનીગતાઃ સ્યન્દમાની=પાલ-  
સ્ત્રીનામ્ના પ્રસિદ્ધો વાહનવિશેષઃ, તમારુઢાઃ, અપ્યેકકે=કેચિત્ પાદવિહારચારેણ  
'પુરિસવગ્ગુરાપરિક્ષિતા' પુરુષવઃગુરાપરિક્ષિતાઃ પુરુષવૃન્દેન યુક્તાઃ સંખ્ય કૃષ્ણસ્ય  
વાસુદેવસ્યાન્તિકે પ્રાદુર્ભૂતુઃ સમાગતાઃ । તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ સમુદ્ર-  
વિજયપ્રસુતાન્ દશદશાહ્વાન્ યાવત્ અન્તિકં પ્રાદુર્ભવતઃ સમાગતાન્ પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા  
દૃષ્ટદુષ્ટોઽતિશયેન પ્રમુદિતઃ કૃષ્ણવાસુદેવઃ કૌટુંબિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ શબ્દયિત્વા  
તૈર્વ ચક્ષ્યમાણપ્રકારેણાવાદીત્-મો દેવાનુમિયાઃ ! ક્ષિપમેવ=ક્ષીપ્રમેવ, ચતુરંગિણી

મી હનકે જૈસા હી હર્ષિત એવં સંતુષ્ટ હો સબ ક્રુહ કિયા । (અપ્પેગહ્યા  
હય ગયા એવં ગયગયા રહસિયા સંદમાળીગયા) હનમેં કિતનેક થોઢો  
પર બેઠકર કિતનેક હાથિયોંપર બેઠકર, કિતનેક રથોંપર બેઠકર કિતનેકા  
શિબિકા, સ્યન્દમની-પાલસ્ત્રી-પર બેઠકર (અપ્પેગહ્યાપાયવિહરચારેણ  
પુરિસવગ્ગુરાપરિક્ષિતા) કિતનેક અનેક પુરુષો સે યુક્ત હાકર પાદ  
વિહાર ચારીગણ-પૈલ હી (કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ અંતિયં પાલ્લભવિત્થા)  
કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પાસ પ્રાદુર્ભૂત હુ-આ ગયે । (તણં સે કળહે વાસુ-  
દેવે સમુદ્રવિજયપામોક્તે દસ દસાર જાવ અંતિયં પાલ્લભમાણે પાસહ )  
હસ તરહ જબ હન કૃષ્ણ વાદેવને સમુદ્રવિજય આદિ દશ દશાર્હોં કો  
યાવત્ અપને પાસ મેં પ્રાદુર્ભૂત હુઆ દેલા તો (પાસિત્તા) દેલ્લકર  
(દૃષ્ટુ દૃષ્ટુ જાવ કોટુંબિયપુરિસે સહાવેહ) હર્ષિત હો યાવત્ કૌટુંબિક  
પુરુષોં કો બુલાયા (સહાવિત્તા એવં વયાસી) બુલાકર હનસેં એસા કહા

કથું, અને સ્નાન પછી પોતાના શરીરને વસ્ત્રો, લેષો તેમજ હાથે વગેરેથી  
થી શણગાર્યા અપ્પેગહ્યા હયગયા એવં ગયગયા રહસીયા સંદમાળીગયા”  
આમાંથી કેટલાક વેડાઓ ઉપર સવાર થઈને કેટલાક હાથીઓ ઉપર બેસીને  
કેટલાક રથોમાં બેસીને કેટલાક શિબિકા, અને પાલસ્ત્રીમાં બેસીને “અપ્પેગહ્યા  
પાયવિહરચારેણ પુરિસવગ્ગુરા પરિક્ષિતા” કેટલાક અનેક માણસોની સાથે  
પગે ચાલીનેજ “કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ અંતિયં પાલ્લભવિત્થા” કૃષ્ણ વાસુદેવની  
પાસે હાજર થયા. “તણં” સે કળહે વાસુદેવે સમુદ્રવિજયપામોક્તે દસદસાર  
જાવ અંતિયં પાલ્લભમાણે પાસહ ” આ રીતે કૃષ્ણવાસુદેવે સમુદ્રવિજય વગેરે  
દશ દશાર્હોં વગેરે તે પોતાની પાસે ઉપસ્થિત થયેલા ભેથા અને “પાસિત્તા”  
ભેથેને “દૃષ્ટુદૃષ્ટુ જાવ કોટુંબિયપુરિસે સહાવેહ” હર્ષિત થઈ કૌટુંબિક પુરુષોને  
બોલાવ્યા “સહાવિત્તા એવં વયાસી” બોલાવીને તેમણે આ પ્રમાણે કહ્યું. “ક્ષિપ્પા

गजाभ्वरथपदातिशुक्तां सेनां सज्जयत्, विजयं = विजयनामानं च गंधहरितनम्र  
' उवट्टवेह ' उपरथापयत्=मण्डनादिना सुसज्जीकृत्य समानयत् । तेऽपि=कौटु-  
म्बिन पुरुषा अपि, कृष्णवासुदेवाणां श्रुत्वा ' तथास्तु ' इत्युक्त्वा तथैवोपस्थाप-  
यन्ति=आनयन्ति, यावत् पयुपासते ॥ सू० ९ ॥

मूलम्-थावच्चापुत्ते वि णिग्गाए जहा मेहेतहेव धम्मं सोच्चा  
णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तणेव उवागच्छइ, उवा-  
गच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, जहा मेहरस तथा चेव णिवेयणा,  
जाहे नो संचाएइ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य  
बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहिय सन्नवणाहि य विन्नवणाहि  
य आघवित्तए वा ४ ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तस्स  
निक्खमणमणुमन्नित्था ।

तएणं सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता म-  
हत्थं महग्गं महरियं रायरिहं पाहुडं गेणहइ, गिणिहत्ता मित्त  
जाव संपरिवुडा जेणेव कणहस्स वासुदेवस्स भवणवरपडिदुवार-

( खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । चारंगिणी सेणं सज्जेह ) भो देवानुप्रि-  
यो । तुम लोग शीघ्र ही चतुरंगिणी सेना को सज्जित करो ( विजयं च  
गंधहर्ति उवट्टवेह ) और विजय नाम के गंध हस्ती को वेष भूषा से  
मंडित कर उपस्थित करो ( ते वि तहस्तिउवट्टवेति ) उन कौटुम्बिकपुरुषों  
ने भी कृष्ण वासुदेव की आज्ञा सुन ( तथास्तु ) ऐसा कहकर वैसा ही  
किया यावत् उनकी पयुपासना की ॥ सू-९ ॥

मेव भो देवाणुप्पिया । चरंगिणी सेणं सज्जेह ” हे देवानुप्रियो ! तमे सत्पदे  
चतुरंगिणी सेना तैथार करे “ विजयं च गंधहर्ति उवट्टवेह ” अने विन्थ  
नामके गंध हारीने सुंदर वेषभां सज्ज करीने उपस्थित करे। “ ते वि तहस्ति  
उवट्टवेति जाव पज्जुवासंति ” ते कौटुम्बिक पुरुषोऽपि कृष्ण वासुदेवनी आज्ञा  
संलग्नीने ( तथास्तु ) आभ करीने तेभनी आज्ञा सुज्ज करुं अने तेभनी  
पयुपासना करी ॥ सूत्र ९ ॥

देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं  
मग्गेणं जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
करयल० वद्धावित्ता तं महत्थं महग्घं महरियं रायरिहं पाहुइ  
उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी ॥ १० ॥

टीका—‘थावच्चापुत्ते वि’ इत्यादि । अथ स्थापत्यापुत्रोऽपि निर्गतः =  
भगवन्तमरिष्टनेमिं वंदितुं स्वगृहाभिः स्मृत इत्यर्थः । यथा मेघः=मेघकुमारः, तथैव  
धर्मं श्रुत्वा निश्चय्य, यत्रैव स्वजननी स्थापत्या गाथापत्नी वर्तते, तत्रैवोपागच्छति  
उपागत्य पादग्रहणं करोति मातृशरणयोः पततिस्मेत्यर्थः । यथा मेघस्य=मेघकुमा-  
रस्य प्रवृज्यार्थं निवेदना प्रार्थनाऽभूत् तथैव स्थापत्यापुत्रस्य निवेदना मातुर-  
न्तिकेऽभवदित्यर्थः ।

‘थावच्चापुत्ते वि णिग्गए’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(थावच्चापुत्ते वि णिग्गए) स्थापत्यापुत्र भी भगवानं अरि-  
ष्टनेमि प्रभुके वंदना करनेके लिये अपने घरसे निकला (जहा मेहे तहेव  
धम्मं सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, जहामेहस्स तथा चेव णिवेयणा ) जिस  
प्रकार मेघकुमार ने धर्म का श्रमण किया था उसी प्रकार स्थापत्या  
पुत्र ने प्रभु अरिष्टनेमी भगवानके पास धर्मोपदेश सुना और सुनकर  
जहां अपनी माता स्थापत्या गाथापत्नी थी वहां गया । जाकर उसने  
उसके दोनो चरण पकड लिये—उसके दोनो चरणोंमें बह गिर गया—  
और जिस प्रकार प्रवृज्या के लिये मेघ कुमार ने प्रार्थना की थी उसी

“थावच्चापुत्ते वि णिग्गए” इत्यादि ॥

टीकार्थ—“थावच्चापुत्त वि णिग्गए” स्थापत्या पुत्र पणु भगवान अरिष्टनेमिने  
वंदन करवा भाटे पोताने धेरथी नीकल्यो. “जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा णिसम्म  
जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, जहामेहस्स  
तथाचेव णिवेयणा” मेघ कुमारे जेम धर्मंतुं अवणु कयुं हुतुं तेमज्ज स्थापत्य  
पुत्रे पणु प्रभुने अरिष्टनेमि भगवाननी पासेशी धर्मने उपदेश सांभल्यो. अने  
सांभल्यो पछी त्यां तेनी माता स्थापत्या गाथा हुती त्यां गयो जधने तेणे  
माताना अने पज पछी वीधा ते तेना पजोमां आणोटी गयो अने जेम मेघकुमारि  
प्रवज्ज्या भाटे पोताना मातापिताने विनंती करी हुती तेमज्ज तेणे पणु करी.

यदा स्थापत्या गाथापत्नी स्वपुत्रं 'नो संचाएह' नो जवनोति अस्य 'आघवित्तए' इत्यादिनां सम्बन्धः । विषयानुलोमाभिः = विषयानुकूलाभिः-वाग्मिश्च, तथाहि - विषयभोग एव मनुष्यलोके सारांशस्तदर्थमेव सर्वे जनाः प्रवर्तन्ते उक्तञ्च—

“ यदि रामा यदि च रमा, यदि तनयो विनयधीशुणोपेतः ।

तनये तनयोत्पत्तिः, सुरवरनगरे किमाधिवयम् ॥ १ ॥ ”

तथा—विषयप्रतिकूलाभिः विषयाः = कामभोगास्तत्प्रतिकूलास्तत्प्रतिषेधेन सद्भावितस्तपः संयमास्तत्सम्बन्धिनीभिः दृक्षणया विषयप्रतिकूलसम्बन्धिरूपोऽर्थः प्रतिबोध्यते । तपः संयमादिकं खलु बालुका कवलवनिरास्वादम् असिधारो-परिगमनमिव सिक्थकदन्तैर्लेह्यमयचणकचर्वणमिवकरेण दीप्ताग्निशिखाग्रहणमिव मेरुगिरितोलनमिव सुदुष्करं भुजाभ्यां समुद्रतरणमिवातिदुष्करमित्येवं तपः संयम-भयोद्वेगकारिणीमिर्वाग्मित्यर्थः । बह्वीमिराख्यापनाभिः = बहुविधैराख्यानैः सामान्यतः कथनैश्च, प्रज्ञापनाभिः=विशेषतः कथनैश्च, संज्ञापनाभिः संबोधनाभिः

प्रकार से इसने भि कि (जाहे गो संचाएह विसयाणुलोमाहि य पडीकू-लाहि य बह्वहि आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहिय विन्नवणाहि य आघवित्तएवा ४) स्थापत्या गाथापत्नी ने उसे विषयानुकूल तथा विषयों के प्रतिकूल आदि वचनों द्वारा खूब २ समझाया-परन्तु वह उन विषयानुकूल विषय प्रतिकूल अनेक विषय आख्यानों द्वारा-सामान्य कथनों द्वारा-प्रज्ञापनाओं द्वारा विशेष कथनों द्वारा संज्ञापनाओं द्वारा-संबोधन पूर्वक कथनों द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा तुम ही इस वृद्धावस्था में मेरे लिये आधार भूत हो इत्यादिरूप प्रेमसहित दीन वचनों द्वारा उसे सामान्यरूप से समझाने के लिये विशेष रूप से समझाने के लिये, विज्ञापित करने के लिये संज्ञापित करने के लिये समर्थ नहीं हुई—

“जाहे गो संचाएह विसयाणुलोमाहि य पडिकूलाहिय, बह्वहि आयवणाहि य पन्न-वणाहिय सन्नवणाहि य विन्नवणाहिय आघवित्तए वा” ४ स्थापत्य गाथा पत्नीञ्चे पोताना पुत्र विषयानुकूल तेभञ्च विषयेने प्रतिकूलञ्चेवी धखी वातो कहीने भूण सभलञ्चे, पणु ते विषयानुकूल विषयप्रतिकूल अनेक आख्याने वडे, सामान्य कथने वडे, प्रज्ञापनाञ्चे वडे, विशेष कथने वडे, संज्ञापनाञ्चे वडे, संबोधन पूर्वक कथने वडे, विज्ञापनाञ्चे वडे, ( तमेञ्च आ वडपणुभां भासे आधार छे ) वगेरे प्रेमभुक्तहीन वयने वडे पोताना पुत्रने ते सामान्य रूप्थी सभलववा भाटे, विशेष रूप्थी सभलववाने भाटे, विज्ञापित करवाने भाटे संज्ञापित करवा भाटे समर्थ यधं थकी नहि. ओटले डे आख्यान वगेरे थार नतना

संबोध्य कथनैश्च, विज्ञापनाभिः त्वमेव ममास्यां वृद्धावस्थायामाधारोऽसि अवलम्बनमसीत्यादि रूपेण समेदनीनवचनेन पुनः पुनर्विज्ञप्तिपूर्वककथनैः, अत्र-विषया-नुकूलामिराख्यानादिरूपाभिश्चतुर्विधामिवाग्मिस्तथा विषयप्रतिकूलामिराख्यानादिरूपाभिश्चतुर्विधामिवाग्मिरिति भावः । ' आद्यविचय वा ' आख्यातुं वा, प्रज्ञापयितुं वा, विज्ञापयितुं वा संज्ञापयितुं वा । यदा स्थापत्या स्वपुत्रमाख्यानादिभिः प्रतिबोधयितुं प्रव्रज्यातो निवर्तयितुं न शक्नोति स्मेति संक्षिप्तार्थः । तदा सा ' अकामिया चेव ' अकामिकैव=अनिच्छावत्येव स्थापत्यापुत्रस्य-स्थापत्यापुत्रनाम्नः स्वतनयस्य निक्खमणमणुमन्नित्था ' निष्क्रमणमन्वन्त्यतः = अनिच्छया प्रव्रज्याग्रहणार्थमाज्ञां प्रदत्तवतीत्यर्थः ।

ततः=तदनन्तरं खलु सा स्थापत्यागाथापत्नी आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय, ' महत्थं ' महार्थं=महामयोजनकं, ' महग्घं ' महार्घं=बहुमूल्यकं, ' महरिहं ' महार्हं=महतां श्रेष्ठपुरुषाणां योग्यं, ' रायरिहं ' राजार्हं=राज्ञां योग्यं, ' पाहुण्डं ' प्राभृतस्य=उपहारं ' भेट ' इति भाषा प्रसिद्धं गृह्णाति, गृहीता मित्र-यावत् संपरिवृता=अत्र यावच्छब्देन-ज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनैरित्यस्य संग्रहः यत्रैव

अर्थात् आख्यान आदि चतुर्विधवचनों द्वारा जो कि विषयानुकूलता तथा विषयप्रतिकूलता के प्रदर्शक थे जब वह स्थापत्या गाथापत्नी उसे समझाने एवं प्रव्रज्या से निवर्तित करने के लिये असमर्थ हुई ( तहे अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणमणुमन्नित्था ) तब उसने विना इच्छा के ही स्थापत्यापुत्र को प्रव्रज्या गृहण करनेकी आज्ञा दे दी ( तएणं सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेह ) बाद में वह स्थापत्या अपने आसन से स्थान से- उठी- ( अब्भुट्ठित्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुणं गेण्हह ) उठकर उसने महार्थसाधक, श्रेष्ठ पुरुषों के, तथा राजाओं के योग्य बहुत कीमती- उपहार लिया- ( गिण्हित्ता ) लेकर वह ( मित्तजाव संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स ) मित्र आदि परिजनों

वयनेन द्वारा दे केओ विषयने अनुकूल तेभञ्ज विषयने प्रतिकूल होता स्थापत्यापत्नी समझानीने प्रव्रज्यावैता पोताना पुत्रने अटकाववाभां समर्थ यधं शक्ती नहि " तहे अकामित्ता चेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणमणुमन्नित्था " त्यारे तेणे धम्मा न होवा छता प्रवन्त्या अहंषु करवानी तेने आज्ञा आपी. त्यारे स्थापत्या पंथी पोताना आसनेथी उथी यधं ( अब्भुट्ठित्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुणं गेण्हह ) उथी यधने महार्थसाधक, उत्तम पुत्रधेने तेभञ्ज राजाओने योज्य अहु किमती भेट दीथी ( गिण्हित्ता ) दधने ते ( मित्तजाव संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स ) मित्र वगैरे परिजनोंनी साथे

કૃષ્ણવાસુદેવસ્ય ' ભવળવરપહિદુવારદેસમાપ ' ભવળવરપ્રતિદ્વારદેશભાગઃ ભવળ-  
વરસ્ય પ્રધાનપ્રાસાદસ્ય પ્રતિદ્વારં વૃહદ્ દ્વારાન્તરાલવર્તિલગુદ્ધારં તસ્ય દેશભા-  
ગોઽસ્તિ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સા પ્રતીહારદેશિતેન દ્વારપાલપ્રદર્શિતેન  
માર્ગેણ યત્રૈવ કૃષ્ણવાસુદેવતત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સા કરતલપરિગૃહીતદશ-  
નસ્યા મસ્તકે અઙ્ગલિં કૃત્વા જયેન વિજયેન ચ વર્ધાપતિ, વર્ધાપયિત્વા તન્મહાર્થ  
મહાર્થ મહાર્હ રાજાર્હ પ્રાશૃતમ્ ઉપનયતિ=કૃષ્ણવાસુદેવસ્યાભિમુખે સ્થાપયતિ, ઉપ-  
નીય = ઉપહારં કૃષ્ણવાસુદેવસ્યાગ્રે નિધાય, एवं=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્ =  
ઉક્તવતી ॥ સૂ. ૧૦ ॥

સે યુક્ત હોકર જહાં કૃષ્ણ વાસુદેવ કે ( ભવળવરપહિદુવારદેસમાપ  
તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) પ્રધાન પ્રાસાદ કા વડે દરવાજે અન્દર લગુદ્ધાર કા  
દેશ ભાગ થા વહાં ગઈ ( ઉવાગચ્છિસ્તા પહિદ્વારદેસિણં મર્ગેણ જેણે  
કળ્હે વાસુદેવે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) વહાં જાકર દ્વારપાલ દ્વારા પ્રદર્શિત  
માર્ગ સે હોકર વહ જહાં કૃષ્ણ વાસુદેવ થે વહાં ગઈ ( ઉવાગચ્છિસ્તા  
કરચલ૦ વદ્ધાવેહ ) વહાં જાકર ઉસને દોનોં હાથો કો અંજલિ રૂપ મેં  
જોડકર ઔર ઉસ મસ્તક પર રલ્લ કર જય વિજય શબ્દોં કા ઉચ્ચારણ  
કરતે હુણ ઉન્હે વધાર્હ દી ( વદ્ધાવિસ્તા તં મહત્થં મહગ્થં મહરિહં રાયરિહં  
પાહુહં ઉવળેહ ) વધાર્હ દેકર ઉસને ફિર મહાર્થસાધક મહાર્થ મહર્તા  
યોગ્ય एवं રાજાઓં કે લાયક ઉસ ભેદ કો રાજાકે સમક્ષ રલ્લ દિયા ।  
( ઉવળિસ્તા एवं વયાસી ) રલ્લ કર ફિર ઉનસે ંસા કહા— સૂત્ર “ ૧૦ ”

કૃષ્ણ વાસુદેવના ( ભવળવરપહિદુવારદેસમાપ તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) ન્યા પ્રધાન  
મહેલ ના મુખ્ય દરવાજાની અંદરના લગુદ્ધારને દેશ ભાગ હોતો ત્યાં ગઈ.  
( ઉવાગચ્છિસ્તા, પહિદ્વારદેસિણં મર્ગેણ જેણે કળ્હે વાસુદેવે તેણેવ ઉવાગચ્છહ )  
ત્યાં જઈને તે દ્વારપાલવડે બતાવવામાં આવેલા મર્ગથી ન્યાં કૃષ્ણ વાસુદેવ  
હોતા ત્યાં ગઈ. ( ઉવાગચ્છિસ્તા કરચલ૦ વદ્ધાવેહ ) ત્યાં જઈને તેણે પોતાના  
હાથોને અંજલીના આકારે બનાવીને તેમને જથ વિજય શબ્દો બોલતા કૃષ્ણ  
વાસુદેવને વધાવ્યા. ( વદ્ધાવિસ્તા તં મહત્થં મહગ્થં મહરિહં રાયરિહં પાહુહં ઉવળેહ )  
વધાવ્યા પછી- સ્થાપત્યાએ મહાર્થસાધક મહાર્થ—ભોટા માણસોને યોગ્ય-  
અને શબ્દોને લાયક તે ભેટને તેમની સામે મૂકી. ( ઉવળિસ્તા एवं વયાસી )  
મૂકીને તેણે તેમને કહ્યું. ॥ સૂ-૧૦ ॥

मूलम्—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं दारए इट्ठे जाव सेणं संसारभयउव्विग्गे इच्छइ, अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए, अहण्णं निक्खमणसक्कारं करेमि, इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउडचामराओ य विदिन्नाओ, तएणं कण्हे वासुदेवे थावच्चा गाहावइणीं एवं वयासी—

अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिण सुनिव्वुया वीसत्था, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि, तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीं सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीं भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी— मा णं तुमे देवाणुप्पिया ! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, मुंजाहि णं देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गाहिए, केवलं देवाणुप्पियस्स अहं णो संचाएमि वाउकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए, अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जे किंचिविआबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारोमि ॥११॥

टीका—‘एवं खलु’ इत्यादि । एवम् = अष्टना प्रकारेण, खलु निश्चये हे देवानुप्रिय । ममेकः—एक एव पुत्रः स्थापत्यापुत्रो नाम दारकः अज्ञातः, इष्टः

‘एस खलु देवाणुप्पिया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(देवाणुप्पिया) हे देवानुप्रिय ! (एवं खलु) मैं आप के पास इसलिये आई हूँ— कि ( मम एगे पुत्ते थावच्चा पुत्ते नामं दारए ) मेरा

( एस खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ) ।

टीकार्थ—( देवाणुप्पिया । ) हे देवानुप्रिय ! ( एवं खलु ) हे, आपनी-पासे मेरे भाटे आवी छुं—के ( मम एगे पुत्ते थावच्चा पुत्ते नामं दारए ) मोरी स्था-



વલ્લભઃ યાવત્=અત્ર યાવચ્છબ્દેનાયં પાઠોઽનુસન્ધેયઃ=કાન્તઃ=કમનીયઃ, પ્રિયઃ= પ્રીતિકારકઃ, મનોજ્ઞઃ = હૃદયાવસ્થિતઃ, ઉદુમ્બરપુષ્પદર્શનમિવ દુર્લભઃ, વર્તતે, સ મમ પુત્રઃ, સ્વલ્પ સંસારમયોદ્વિગ્નઃ સન્ ઇચ્છતિ અર્હતોઽરિષ્ટનેમઃ સમીપે યાવત્ પ્રવ્રજિતુમ્ । અહં સ્વલ્પ નિષ્ક્રમણસત્કારં દીક્ષોત્સવં કરોમિ, હે દેવાનુપ્રિય ! હે સ્વામિન્ ! અહમિચ્છામિ સ્વલ્પ સ્થાપત્યાપુત્રસ્ય નિષ્ક્રામતઃ = દીક્ષાગ્રહણં કુર્વતઃ છત્રચામરાણિ=છત્રચામરમુકુટાદીનિ ત્રિતીર્ણાનિ મવદ્મિઃ પ્રદત્તાનિ મવન્તુ ઇતિ, અહમેતદર્થે મવર્તાં સમીપે સમાગતા યત્ તસ્મૈ છત્રચામરાદીનિ મવન્તો વીતરન્તુ ઇતિ ભાવઃ ।

તતઃ સ્વલ્પ કુળવાસુદેવઃ સ્થાપત્યાગાથાપત્નીમેત્રમવાદીત્ । હે દેવાનુપ્રિયે ! ત્વં સ્વલ્પ મુનિર્વૃતા=સ્વસ્થા, વિસ્વસ્થા=વિશેષતઃ સ્વસ્થા, મુધીરા, આસ્વ=તિષ્ઠ, એક હી અજ્ઞજાત સ્થાપત્ય પુત્ર નામ કાપુત્ર હૈ । વહ ( હટ્ટે જાવ સેણં સંસારમયઽવિવિગ્ને ) મુક્તે વલ્લભ હૈં । યાવત્ શબ્દ સે સ્વલ્પ પાઠ કા યહાં સંગ્રહ હુઆ હૈ- વહ વહુત અધિક કમનીય હૈ પ્રીતિકારક હૈ, મનો- જ્ઞ હૈ, મેરે હૃદય મેં સ્થાન કિયે હુએ હૈ । ઓર ઉદુમ્બર પુષ્પ કે દર્શન કે સમાન દુર્લભ હૈ । વહ મેરા પુત્ર સંસારમય સે ડલિગ્ન હોકર ( ઇચ્છહ અરહઓ અરિષ્ટનેમિસ્સ જાવ પવ્વહસપ ) અહત અરિષ્ટ નેમિ પ્રમુ કે પાસ દીક્ષિત હોના ચાહતા હૈ ( અહણં નિષ્ક્રમણસત્કારં કરેમિ, ઇચ્છામિણં દેવાણુપ્પિયા ! યાવચ્ચાપુત્તસ્સ નિષ્ક્રમમાણસ્સ છત્તમ ઉદ્ધચામરાઓ ય વિ દિન્નાઓ ) સો મૈં ઉસકા દીક્ષોત્સવ કરના ચાહતી હૈં । હસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! મૈં આપસે યહ ચાહતી હૈં કિ આપ મુક્તે ઉસ નિમિત્ત-નિષ્ક્રમણ સ્થાપત્ય પુત્ર કી દીક્ષોત્સવ કે નિમિત્ત છત્ર, ચામર ઓર મુકુટ આદિ દે દેવેં । ( તપણં કળહે વાસુદેવે યાવચ્ચા

પત્યાપુત્ર નામે એકનો એક પુત્ર છે. તે ( હટ્ટે જાવ સેણં સંસાર મય ઽવિવિગ્ને ) મને પ્રિય છે. અહીં ( યાવત્ ) શબ્દથી આપાઠનો સંગ્રહ થયો છે-તે પ્રભુ કમનીય ( ઇચ્છવાયોગ્ય ) છે, પ્રીતિકારક છે, મનોજ્ઞ છે, મારા હૃદયમાં તે સ્થાન પામેલો છે. તેમજ ઉમરડાના પુષ્પના દર્શનની જેમ તે દુર્લભ છે. તે સંસારના ભયથી વ્યાકૂળ થઈ ( ઇચ્છહ અરહઓ અરિષ્ટનેમિસ્સ જાવ પવ્વહસપ ) અહંત અરિષ્ટનેમિ પ્રમુથી દીક્ષિત થવા યાહે છે. ( અહણં નિષ્ક્રમણસત્કાર કરેમિ, ઇચ્છામિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! યાવચ્ચાપુત્તસ્સ નિષ્ક્રમમાણસ્સ છત્ત મઉદ્ધચામ- રાઓ ય વિદિન્નાઓ ) હું તેનો દીક્ષાનો ઉત્સવ ઉજવવા ઇચ્છું છું. એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! આપ મને તે ઉત્સવ નિમિત્ત નિષ્ક્રમણ-સ્થાપત્યાપુત્રના દીક્ષોત્સવ માટે છત્ર ચામર અને મુકુટ વગેરે આપો. ( તપણ કળહે વાસુદેવે યાવચ્ચા

इति सम्बन्धः । अहं खलु स्वयमेव स्थापत्यापुत्रस्य निष्क्रमण सत्कारं करिष्यामि । ततः खलु स कृष्णवासुदेवश्चतुरङ्गिण्या सेनया सह विजयं=विजयनामानं गन्धहस्तिरत्नं यस्य गन्धं समाप्राप्य पलायन्ते गजाः परे । दुरुढः=समारुढः सन् यज्ञैव स्थापत्याया गाथापत्या भवनं वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च स्थापत्यापुत्रम् एवं = वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—देवानुप्रिय । त्वं मुण्डो भूत्वा मा खलु प्रव्रज, दीक्षाग्रहणं मा कुरु इति संबन्धः । हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु विपुलान्=बहुतरान् मानुष्यान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् = शब्दादिविषयानुभवान्

गाहावहणीं एवं वयासी ) स्थापत्या गाथापत्नी की इस बात को सुनने के बाद कृष्णवासुदेव ने स्थापत्यागाथापत्नी से इस प्रकार कहा— ( अच्छा ही णं तुम देवाणुप्पिए ! सुनिब्बुया वीसत्या, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि ) हे देवानुप्रिये ! तुम इस विषय में निश्चिन्त होकर—स्वस्थ और विस्वस्थ होकर—बैठो, मैं स्वयं स्थापत्या पुत्र का निष्क्रमण सत्कार करूँगा । ( तएणं से कण्हे वासुदेवे चाडरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरुढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावहणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ ) ऐसा कहने के बाद वे कृष्ण वासुदेव चतुरंगिणी सेना के साथ विजय नामके हस्ति रत्न पर आरुढ हो कर जहाँ स्थापत्यागाथापत्नी का भवन था वहाँ गये । ( उवागच्छिता थावच्चापुत्तं एवं वयासी ) जाकर उन्होंने स्थापत्या पुत्र से इस प्रकार कहा— ( माणं तुमं देवाणुप्पिया ! सुण्ढे भविस्सा पण्वयाहि ) हे देवानुप्रिय ! तुम मुण्डित होकर दीक्षा ग्रहण मत करो

गाहावहणीं एवं वयासी ) स्थापत्या गाथापत्नी आवातने सांभानीने कृष्णवासुदेवे स्थापत्यागाथापत्नीने कहुं ( अच्छा ही णं तुम देवाणुप्पिए ! सुनिब्बुया वीसत्या अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि ) हे देवानुप्रिये ! तमे आ विषे निश्चित, स्वस्थ अने विस्वस्थ रहे हुं भते स्थापत्यापुत्रने निष्क्रमण उत्सव करीश. ( तएणं से कण्हे वासुदेवे चाडरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरुढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावहणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ ) त्थार पछी कृष्णवासुदेव चतुरंगिणी सेनानी साथे विजयनामाना उत्तम ढाथी उपर सवार थई ते न्यां स्थापत्यागाथापत्नीनुं भवन छतुं त्यां गया. ( उवागच्छिता थावच्चापुत्तं एवं वयासी ) त्यां न्छने तेभण्णे स्थापत्यापुत्रने आ प्रभाण्णे कहुं—( माणं तुमं देवाणुप्पिया ! भविस्सा पण्वयाहि ) हे देवानुप्रिय ! मुंडित थई ने तमे दीक्षा स्वीकारो नहि. ( सुंजाहि णं देवाणुप्पिया !

मम बाहुच्छाया परिगृहीतः=बाहुच्छायां समाश्रितः सन् 'भुंजाहि' भुञ्जस्व, आसेवस्व पुनः पुनर्विषयात्वादसुखेन विहरन् गृहे तिष्ठेत्यर्थः । केवलं तव देवानुप्रियरयाहं नो श्वनोमि वायुकायमुपरितो गच्छन्तं निवारयितुम्, वायुर्गर्भव्यतिरेकेण प्रतिकूलतया तव शरीरस्य स्पर्शने कोऽपि समर्थो नास्तीति भावः । अन्यः खलु देवानुप्रियस्य यत् किंचिदपि आवाधां वा ईषत् पीडां वा व्यावाधां वा विशेषपीडां वा उत्पादयति, तत्सर्वं निवारयिष्यामीत्यर्थः । मम राज्ये तव किमपि दुःखं नो भविष्यति, साहाय्यं ते करिष्यामि, अलं परमकष्टसाध्येन दीप्ता ग्रहणेनेति भावः ॥ सू-१२ ॥

( भुंजाहि णं देवानुप्पिया ! विडले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छाया परिगृहिए ) हे देवानुप्रिय ! मेरी बाहुच्छाया में रहते हुए तुम तो विपुल मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगो को भोगो । ( केवलं देवानुप्पियस्स अहं णो संचाएमि वायुकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए ) हे देवानुप्रिय ! प्रतिकूल होकर तुम्हारे शरीर को मेरी छत्रच्छाया में रहते हुए कोई स्पर्श तक भी नहीं कर सकती है—परन्तु वायुकाय को तुम्हारे ऊपर से जाते हुए मुझ में रोकने की शक्ति नहीं है । अर्थात् वायु के सिवाय और किसी प्राणी में ऐसी शक्ति नहीं है जो मेरी छत्रच्छाया में रहे हुए तुम्हें विरुद्ध बन कर स्पर्श तक भी कर सके । ( अण्णे णं देवानुप्पियस्स जे किंचि वि आवाह वा वावाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारेमि ) वायुकाय के सिवाय यदि कोई दूसरी व्यक्ति देवानुप्रिय तुम्हारे लिये थोड़ी सी भी किसी भी प्रकार की पीड़ा या विशेष पीड़ा उत्पन्न करेगा तो वह सब मैं निवारित करता रहूंगा ।

विडले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छाया परिगृहिए ) हे देवानुप्रिय ! भारी बाहुच्छाया भां रहता तमे मनुष्यशवना पुष्कल काम भोग भोगवे । ( केवलं देवानुप्पियस्स अहं णो संचाएमि वायुकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए ) हे देवानुप्रिय ! भारी छत्र छायाभां रहता तमने प्रतिकूल यधने केध स्पर्शवाणी पणु हिम्मत करशे नहिं, इधत्त वायुकायने के ने तभारी उपर यधने पसार थाय छे—रोकवाणी ताकत भाराभां नथी, ओटले के पवन सिवाय भील केध पणु प्राणी नी ओवी हिम्मत नथी के भारी छत्र छायाभां रहता, प्रति कुण यधने तभारे स्पर्श पणु करी शके । ( अण्णे णं देवानुप्पियस्स जे किं वि विआवाहं वावावाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारेमि ) वायुकायना सिवाय भील व्यक्ति तमने थोड़ी के वधारे पीडा आपशे तो तेने हुं भटाडीश, भार

मूलम्—तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम जीवियंतकरणं मच्चुं एज्जमाणं निवारेसि जरं वा सरीर-रूवविणासिणिं सरीरं वा अइवयमाणं निवारेसि, तएणं अहं तव बाहुच्छाया परिगहिण विउले माणुस्सए कामभोगे भुंज-माणे विहरामि ॥ सू० १३ ॥

टीका—‘ तएणं से थावच्चापुत्ते ’ इत्यादि । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रः कृष्णवासुदेवेनैव मुक्तः सन् कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—हे देवानुप्रिय ! यदि खलु त्वं मम “ जीवियंतकरणं ” जीवितान्तकरणं जीवनविनाशकारकं, ‘ मच्चुं ’ मृत्युं=मरणदुःखं, ‘ एज्जमाणं ’ एज्जगानन्=आगच्छन्तं, निवारयसि, ‘ जरं वा ’ कारण इस का यह है कि मेरे राज्य में तुम्हें कुछ भी कष्ट नहीं होगा । मैं सदा तुम्हारी सहायता करता रहूँगा । क्यों व्यर्थ मैं परम कष्ट साध्य दीक्षा ग्रहण करते हो— छोड़ो इसे । सूत्र “ ११ ”

‘ तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हे णं ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से थावच्चापुत्ते कण्हे णं वासुदेवेणं) कृष्णवासुदेव के द्वारा इस प्रकार कहे गये उस स्थापत्यपुत्र ने (कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा—(जइणं तुमं देवाणुप्पिया मम जीवियंतकरणमच्चुं एज्जमाणं निवारेसि जरं वा सरीर-रूवविणासिणिं सरीरं वा अइवयमाणं निवारेसि) हे देवानुप्रिय ! यदि आपमेरे जीवन का अन्तकरने वाली आते हुए मृत्यु को मुझ से दूर

राज्यभां रहेता तमने के।। पणु आतणी तइदीक्ष थये नडिं डंभेसा हुं तभारी भदइ भाटे पइये डेवोछुं शुं काम व्यर्थं कट भाध्य—कडणु—दीक्षा अडणु करवा तैयार थया छे छोडी आ वपने ! सूत्र “ ११ ”

( तएणं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं इत्यादि ) ।

टीकार्थ—(तएणं) तयार पछी (से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं) कृष्णवासुदेव पडेया रीते कडेवायेला स्थापत्या पुत्रे, (कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) कृष्ण-वासुदेवने आ प्रभाणु कडुं—(जइणं तुमं देवाणुप्पिया मम जीवियंतकरणमच्चुं एज्जमाणं निवारेसि जरं वा सरीररूवविणासिणिं सरीरं वा अइवयमाणं निवारेसि) हे देवानुप्रिय ! जे तये मारा जवन ने नाश करनार मृत्यु ते

જરાં વા=વૃદ્ધાવસ્થાં વા શરીરરૂપવિનાશિનીં, શરીરં વા (વર્તમાનશરીરં) 'અંધવ્યમાણં' અતિપતન્તમ્=આત્મનઃ સકાશાત્ સર્વથા વિયુજ્યમાનં નિવારયસિ; તતસ્તદા સ્વલ્પ અહં તવ બાહુચ્છાયા-પરિગૃહીતઃ મુજબલમાશ્રિતઃ સન્ વિપુલાન્ માનુષ્યાન્ કામ-ભોગાન્ મુજ્જાનો વિહરામિ=પૃથ્વે વત્સ્યામીત્યર્થઃ ।

સંસારાઽસક્તસ્ય જરામરણાદિ દુઃસ્વપ્નો ન ભવતીતિ સંસારસ્વરૂપમિદં સંક્ષેપેણ નિરૂપ્યતે-આત્મકલ્યાણાર્થી જનઃ સ્વલ્પેવં વિભાવયતિ—

एतत् स्वल्पं संसारसुखं तुच्छम्, अस्मिन् संसारे कर्मवशवर्तिनः प्राणिनः केवलं मरणाय जायन्ते, म्रियन्तेऽपि जननायैव, यावन्तः कामभोगास्ते क्षणमङ्गुरा कर सकते हों तथा शरीर के स्वरूप को विनाश करनेवाली आती हुई जरावस्था को निवारण कर सकते होवें या नियमतः आत्मा के साथ सर्वथा वियुज्यमान इस शरीर को आप रोक सकते होवें ( तएणं अहं तव बाहुच्छाया परिगृह्णिए विउले माणुस्सए कामभोगे मुंजमाणे विहरामि ) तो मैं आपकी मुजच्छाया का सहारालेकर विपुल मनुष्यमव-सम्बन्धी कामभोगों को भोगता हुआ घर में रह सकता हूँ । संसार में आसक्त हुए प्राणी के जरा मरण आदि के दुःखों का क्षय नहीं होता है इसलिये संसार का स्वरूप संक्षेप से यहाँ निरूपित किया जाता है जो आत्मकल्याण के अर्थी मोक्षामिलाषी जन होते हैं वे इस प्रकार से विचार करते हैं—यह सांसारिक सुख तुच्छ है । इस संसार में कर्म-वशवर्ती हुए प्राणी केवल मरण प्राप्त करने के लिये ही जन्मते हैं और जन्म धारण-करने के लिये ही मरते हैं । जितने भी कामभोग

મારાથી દૂર કરી શકે છે, તેમજ શરીરના સ્વરૂપને નષ્ટ કરનાર ઘડપણને મટાડી શકે છે, આત્માથી વિયોગ પામતા આ શરીરને તમે વિયુક્ત થવા નહિ દો ( તएणं અહં તવ બાહુચ્છાયા પરિગૃહ્ણિએ વિઉલે માણુસ્સએ કામભોગે મુંજમાણે વિહરામિ ) તે હું તમારી બાહુઓની છાયામાં રહીને પુષ્કળ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતાં ઘરમાં જ રહી શકું તેમ છું. સંસારમાં આસક્તિ રાખનાર પ્રાણીના જરા ( ઘડપણ ) મરણ વગેરે દુઃખો નો ક્ષય થતો નથી તેથી અહીં ૨૬ કલાં સંસારના સ્વરૂપ વિષે ચર્ચા કરવામાં આવે છે. જે આત્મ કલ્યાણને જાળનાર મોક્ષામિલાષી જન હોય છે, તેઓ આ પ્રમાણે વિચાર કરે છે આ સંસારનું સુખ નગરુચ્છ છે. આ સંસારમાં કર્મ વશ થઈને જીવ નારા પ્રાણીઓ શ્રેષ્ઠ મરણ પ્રાપ્ત કરવામાટે જ જન્મ પામે છે, અને જન્મ મેળવવા માટે જ મૃત્યુને ભેટે છે. સંસાર ના બેટલા કામ ભોગો છે તે

આસ્રવરૂપા વિપદાં પદાનિ સન્તિ । લોકવર્તિનઃ સર્વેઽપિ પદાર્થાઃ સિકતાકળ-  
વત્ પરસ્પરમસંબદ્ધાઃ, તેષાં ભોગોઽપિ જીવસ્ય વન્ધનાય પુનઃ પુનર્મોહજનનાય  
ભવતિ । મોહઃ સ્વલુ મહાગતસ્તત્રાજ્ઞાનિનો જીવા નિર્રથકમેવ નિપતન્તિ । એતસ્મિન્  
મુલામાસે સંસારે મમકા સમ્બન્ધઃ । અજ્ઞાનરજન્યાં વિવેકદૃષ્ટૌ મોહદૃતાયાં સત્યાં  
પન્થેન્દ્રિયત્રયો વિંશતિ વિષય તદીય ચત્તદ્વયાધિકવત્તારિશદ્ધિકારરૂપાસ્તસ્કરા  
આત્મગુણરૂપાણિ ધનાન્યપહરન્તિ । યથા પથિકેભ્યો ન રોચતે નિર્જલા ભૂમિ-  
સ્તથા મમેદં સંસારસુત્તં પ્રમોદાય ન પ્રભવતિ । યથા વા-શૈલશિશિરાવસ્થિતપાદ-  
પાનાં મૂલાનિ વાયુર્વિશીર્ણયતિ, તથોન્મૂલયતિ ભોગોઽપિ જીવાનાં મનાંસિ, યથા

હૈ-વે સબ ક્ષણ અંગુર હૈ તથા હસકેદ્વારા હી જીવ નવીન કર્મોં કા આ-  
સ્રવ કરતા હૈ-હસલિયે યે આસ્રવરૂપ હૈ-વિપદાઓ કે સ્થાન મૂત હૈ ।  
હસ લોક મેં જિતને મી પદાર્થ હૈ વે સબ વાલુ કે કળ કે સમાન પર-  
સ્પર મેં અસંબદ્ધ હૈ । હનકા ભોગ મી જીવ કે લિયે નવીન નવીન કર્મોં  
કા બંધદાતા હોતા હૈ ઓર વાર ૨ મોહકા જનક હોતા હૈ । મોહ એક  
બડા ભારી ગત (સ્વડુ) હૈ । હસમેં આત્મજ્ઞાન સે રહિત હુએ પ્રાણી નિ-  
રર્થક હી ગિરતે રહતે હૈ । હસ અસારસંસાર મેં મેરા કિસ સે ક્યા નાતા  
હૈ । અજ્ઞાન રાત્રિ મેં વિવેકદૃષ્ટિ કે મોહાચ્છાદિત હોને પર પાંચો હન્દ્રિયોં  
કે ૨૩, વિષય ઓર હન વિષયોં કે મી ૨૪૦, વિકાર રૂપ તસ્કર (ચૌર)  
આત્મ ગુણ રૂપ ધન કા અપહરણ કરતે રહતે હૈ । જિસ તરહ પથિક જનોં  
કે લિયે નિર્જલ ભૂમિ નહીં રુચતી હૈ ઉસી પ્રકાર મુશ્કે યહ સંસાર સુખ  
નહીં રુચતા હૈ । અથવા જૈસે પર્વત કી ચોટી પર રહે હુએ વૃક્ષોં કી જડોં

સર્વે ક્ષણ અંગુર છે, તેમજ એમના વડે જ છવ ક્યોના આસ્રવ (કર્મ) આત્મામાં  
હાથલ થવું કરે છે. એટલા માટે આ બધા આસ્રવરૂપ છે અને વિપત્તિઓનું  
સ્થાન છે. આ જગતમાં જેટલાં પદાર્થો છે તેઓ સર્વે રેતીના કણાની જેમ પર  
સ્પર અસંબદ્ધ છે. એમના ઉપલોગ પણ નવા નવા ક્યોના બંધનમાં પ્રાણીને  
ફસાવનાર છે. તે વારંવાર મોહજનક હોય છે. મોહ (અજ્ઞાન) બને એક મોટો ખાટો  
(ગત) છે. આત્મજ્ઞાન વગરના પ્રાણીઓ બ્યર્થઆમાં પડ્યા કરે છે. આ નિઃસાર  
જગતમાં માથે કોની સાથે કેવો સંબંધ છે ? અજ્ઞાન રાત્રિમાં બ્યારે વિવેકની  
દૃષ્ટિ અજ્ઞાનથી ઢંકાઈ જાય છે ત્યારે પાંચ હન્દ્રિયોના ત્રેવીશ વિષયો અને  
આ વિષયોના પણ બસો આલીશ વિકાર રૂપી ચોર (તસ્કર) આત્મગુણ રૂપી  
ધન ને ચોરતા રહે છે. જેમ મુસાફરોને નિર્જળ પ્રદેશ ગમતો નથી તેમ જ  
મને પણ આ સંસાર સુખ સારું લાગતું નથી. જેમ પર્વતો પર રહેલાં વૃક્ષોના  
શિખરો મૂળ પવન વિશીલુ (છિન્નવિશિષ્ણ) કરી નાખે છે તેમજ સંસાર

પુરાતનાસ્તરવઃ સ્વકોટરસ્થાનલેન દહ્નમાના અન્તે નિપતન્તિ તદ્વદિહ જીવાઃ  
 કષાયાનલેન પરિતપ્તા અજ્ઞાન્તા અન્તે નરકાદૌ નિપતન્તિ । અહમપિ સંસારદાવા-  
 નલેન પરિતપ્તાન્તઃકરણઃ ક્વાપિ વિષયસુખે શાન્તિ ન યચ્ચામિ । સંપતિ મામકી-  
 નમન્તઃકરણં જન્મજરામરણદુઃસ્વપાષાણૈઃ પરિપૂર્ણં વર્તતે, તસ્માત્ સાશ્રુમુક્તકર્ણં ચ  
 રોદનં કર્તુકામોઽપિ ન રોદિમિ, હમે હિ સ્વજના રુદન્તં મામવલોક્યરોદિવ્યન્તિ ।  
 તસ્માદસારેઽસ્મિન્ સંસારે પ્રવ્રજ્યૈવ મમ શરણમ્ । અપરં ચૈવમસૌ મૃત્યુજરાસ્વભાવં  
 વિભાવયતિ—

કો વાયુ વિશીર્ણ કરેલી છે તેવી તરફ સાંસારિક ભોગ મી જીવોંકે  
 મન કો વિશીર્ણ કરદિયા કરતા છે અને કોટર મેં અવસ્થિત અગ્નિ સે  
 જેસે પુરાને વૃક્ષ જલકર અન્ત મેં જમીન પર ગિર પડતે હૈં તેવી તરફ  
 હસ સંસાર મેં કષાયરૂપઅગ્નિસે પરિતપ્ત હોકર અજ્ઞાન્ત હુપ યે જીવ  
 મી અન્ત મેં નરકાદિ દુર્ગતિયોં મેં જાકર ગિરજાતે હૈં । મેં મી સંસાર  
 દાવાનલ સે પરિતપ્ત અન્તઃકરણ હોકર કિસી મી વૈષયિકસુખ મેં  
 શાન્તિ નહીં દેખ રહા હૈં । હસ સમય મેરા અન્તઃકરણ જન્મ જરા  
 ઓર મરણ કે દુઃસ્વ રૂપ પાષાણોં સે પરિપૂર્ણ બના હુઆ છે । અતઃ મેં  
 જાહતા હૈં કિ મેં ગલા ફાઢ ૨ કર સ્વ જોર ૨ સે રોઝ પરન્તુ નહી રો  
 સકતા હૈં । કારણ યે મેરે પીછે લગે હુપ જો જન હૈં વે સુષ્ટે રોતા દેખ-  
 કર રોને લગ જાવેંગે । હસ લિયે સાર વિહીન હસ સંસાર મેં કોઈ શર  
 ણ મૃત મેરે લિયે છે તો વહ એક પ્રવ્રજ્યા હી છે । મૃત્યુ ઓર જરાકે  
 સ્વભાવ કો યહ આત્મ કલ્યાણાર્થી હસ પ્રકાર સે વિચારતા હૈ—

તા ભોગો પશુ જીવોના મનને વિશીર્ણ (જીર્ણ) કરી નાખે છે. પોતાની  
 અખોદ્ધમાં સ્થળજતો અગ્નિ જેમ જીવોનાં વૃક્ષોને ખાખીને છેવટે જમીન દોસ્ત  
 કરી નાખે છે, તેમજ આ સંસારમાં કષાય રૂપ અગ્નિમાં સંતપ્ત થઈને અજ્ઞા-  
 ન્ત થયેલા જીવો પશુ અન્તે નરક વગેરે દુર્ગતિઓમાં જઈને પડે છે. સંસાર  
 દાવાનળથી સંતપ્ત થયેલું માણસ મન કોઈ પશુ વિષય સુખમાં શાંતિ જોતું  
 નથી. અત્યારે માણસ મન જન્મ જરા (ઘડપણ) અને મરણના દુઃખ રૂપી  
 પશ્ચરોથી પરિપૂર્ણ થઈ ગયું છે. એથી મને તો એમ થાય છે કે હું મોટેથી  
 ખૂંસો પાડી પાડીને ખૂંસ રહું પશુ મારાથી રહાતું પશુ નથી કેમકે મારા  
 સ્વજનો મને રહતો જોઈને પોતે પશુ રહવા માંડશે. એટલે નિઃસાર જગતમાં  
 મારો કોઈ આધાર છે તો તે પ્રવ્રજ્યા જ કહી શકાય મૃત્યુ અને ઘડપણની  
 લયકરતા વિશેનો વિચાર તે સ્થાપત્યાયુત કહે છે. “લાકડામાં બંધ

काष्ठं घुण इव मृत्युः शरीरमुत्तनति । मृत्युतप्ताः श्वासोच्छ्वासकक्षेन शरीरवृक्षं छिनत्ति । मृत्युः खलु रागद्वेषविषज्ज्वालाव्याकुलतया तृषार्त इवाऽऽप्यजलं पिबति । यथा तैलयन्त्रं तिलान् निष्पीडयति, तथा मृत्युः प्राणिनां शरीराणि निष्पीड्य नाशयति । स लोकत्रयवर्तिनः प्राणिनः क्षोभयति । मृत्योपरागमनं प्रागेव पण्मासतः सुराणामपि कल्पतरुपुष्परचितमालां मुकुलयति, चेतांसि तेषां शोकसागरे निमज्जयति । मूर्छान्धकारं पश्यन् मृत्युरूप उल्लको धावन् समायाति ।

हिमानीव कमलवनानि जरा पञ्चेन्द्रियाणि विकृतानि कुर्वती शिथिलयति । सा भक्षितविषवत् त्वरितमेव शरीरं संहरति । भार्याऽपि जरावस्थं पुरुषम्—‘अय-

काष्ठको घुन को तरह मृत्यु मेरे शरीर को घुना रही है । मृत्युरूपी बड़ई श्वासोच्छ्वासरूप आरे से इस शरीररूप वृक्ष को रात दिन काट रहा है । यह मृत्यु रागद्वेषरूप विषकी ज्वाला से व्याकुल जैसी बना हुआ तृषार्त की तरह आयुरूपीजल को पी रहा है जैसे तैल यंत्र-कोल्फू-तिलों को पेल डालता है उसी प्रकार मृत्यु प्राणियोंके शरीर को निष्पीडित कर डालता है । ऐसा तीन लोक में कोई भी प्राणि नहीं है जो इस मृत्युसे क्षुभित न हो रहा हो । मृत्युके आगमन के छहमास के पहिले से देवताओं की भी कल्पवृक्षों के पुष्पों की रचित माला कुम्हला जाती है उनका मन शोक सागर में इस कारण से डूब जाता है । मूर्च्छारूपी अंधकार को देखकर मृत्युरूपी उल्लूक दौड़ता हुआ आ जाता है । हिम संतति (हिम समूह) जिसतरह कमल वनों को विकृत कर शिथिल कर देती है उसी तरह जरावस्था भी पंचेन्द्रियों को विकृत कर शिथिल कर

नी जेम मृत्यु भास शरीरने नष्ट करी रह्यो छे. मृत्यु इपी सुथार श्वासो-  
च्छ्वास इपी कक्षत वडे शरीर इपी वृक्षने रात दिवस कापी रह्यो छे. आ  
मृत्यु रागद्वेष इपी विषनी जवाणा थी व्याकुल थधने तरस्यानी पेठे आयुध्य  
जणने पी रह्यो छे. जेम धाखी तढीने पीढी नाणे छे तेमज मृत्यु  
प्राणीआना शरीरने निप्राण जनावीने नष्ट करीनाणे छे. त्रखे लोकमां ओवु  
कैध प्राणी मने देणातुं नथी के जे मृत्युथी क्षोष पासतुं न डोय. मृत्युना  
छ भडिना पूरे देवानी पखु कल्प वृक्षना पुष्पानी माणाओ बीमणार्ध जय  
छे तेमनु मन शोक सागरमां इणी जय छे. मूर्छा इपी आधाराने जेधने  
मृत्यु इपी घुवड होउतो आवे छे. जाकणे जेम कसण वनोने नष्ट करी नाणे  
छे, शिथिल जनावीडे छे तेमज घडपखु पांथे छेन्द्रियोने विकृत करीने



મૃત્ 'ઈતિ મન્યતે, પુત્રાદયોઽપિ નાદ્રિયન્તે । જરાજ્વાલા-શ્વાસકાસધૂમૈર્જીવ  
વ્યાકુલયન્તી યસ્મિન્ શરીરે પ્રજ્વલતિ, તદ્ ભસ્મસાદ્ કરોતિ । જરાં જલુ સર્વાપ-  
દામાસ્પદં પ્રવલ્લાનલશિલેષ સકલસુખમનોરથ વિનાશિની । અલમધિક્તેન મૃત્યુ-  
જરાદિ સંસારસ્વભાવચિન્તનેન । મૃત્યુજરાનલપ્રતપ્તસ્ય મમ નિષ્ક્રમણમેવ શરણં  
મવિષ્યતિ, યતઃ—

સંસારમહારણ્યે મનુષ્યદેહઃ જલુ સમાધિરૂપસ્ય કલ્પતરોઃ ક્ષેત્રમ્ । તત્ત્વ વિશિષ્ટ  
પુણ્યપુણ્ડરૂપહલ્લેન કૃષ્ટમ્ । નિષ્ક્રમણં તસ્ય વૃક્ષસ્ય बीजम् । वैराग्यजलामिषेकेण  
ઢાલતા હૈ । ભક્ષિત વિષ કી તરહ તુરત હી શરીર કો નષ્ટ કર દેતી હૈ  
ભાર્યાં ભી જરાવસ્થાપન્નપુરુષ કો “ યહુઝ્ઝુ હૈ ” એસા માનને લગતી હૈ ।  
પુત્રાદિક ઉસકા અપમાન કરને લગજાતે હૈ । વે હસકા જરા ભી સન્માન  
નહી કરતે । યહુ જરારૂપી જ્વાલા શ્વાસ કાસરૂપી ધૂમ સે જીવ કો  
વ્યાકુલ કરતી હુઈ જિસ શરીર મે પ્રજ્વલિત હોજાતી હૈ ઉસે ભસ્મસાત્  
હી કર ઢાલતી હૈ । યહુ જરાવસ્થા સમસ્ત આપત્તિયો કા એક સ્થાન  
હૈ । પ્રવલ અગ્નિ કી જ્વાલા કે સમોન સમસ્ત સુખોં કે મનોરથોં કો  
નાશ કરને વાલી હૈ । મૃત્યુ, જરા, આદિ રૂપ સંસાર કે સ્વાભાવ કે  
ચિન્તવન સે અવ ઘસ રહો । મૃત્યુ તથા જરા રૂપ વહ્નિ કી શિક્ષા સે  
પ્રતસ હુપ મુઝે તો અવ નિષ્ક્રમણ (દીક્ષા) હી એક શરણ મૂન હોગા ।  
કારણ સંસારરૂપ હસ ગહનવન મેં યહુ મનુષ્ય દેહ સમાધિ રૂપ કલ્પવૃક્ષ  
કા ક્ષેત્ર હૈ । યહુ વિશિષ્ટ પુણ્ય પુંજરૂપ હલ સે જોતા ગયા હૈ । નિષ્ક્ર-  
મણ (દીક્ષા) ઉસ વૃક્ષ કા बीज હૈ वैराग्यरूपा जल के सिंचन से

શિથિલ કરીનાળે છે. આધેલા વિષની જેમ તે શરીરને જ્વલી નાષ્ટ કરે છે. પત્ની  
પણુ ઘરડા પુરુષને ‘ આ ઉટ છે ’ એમ માને છે. પુત્ર વગેરે પણ તેમને  
તિરસ્કારે છે તેઓ થોડુપણુ તેમનું સન્માન કરતા નથી. આ ઘડપણુની જ્વાળા  
શ્વાસ, કાસરૂપી ધુમાડાથી જીવને વ્યાકુળ કરીને જે શરીરમાં સળગી ઉઠે છે  
તેને લશ્મીભૂત કરી નાળે છે. ઘડપણુ બધી આકૃતિનું એકમાત્ર સ્થાન છે. વિકરાળ  
અગ્નિની જ્વાળાઓની પેઠે બધાં સુખોના તેમજ મનોરથોના મૃત્યુ નાશ  
કરનારુ છે મૃત્યુ. ઘડપણુ વગેરે ના સ્વભાવ વાળા આ જગત વિષેમારે હવે  
કંઈ વિચાર કરવો નથી. મૃત્યુ તેમજ ઘડપણુ રૂપી અગ્નિની જ્વાળાઓથી  
સંતપ્ત થયેલા મારામાટેતો હવે નિષ્ક્રમણુ એટલે કે દીક્ષાગ્રહણુ કરવી-જ  
શરણુ ભૂત થશે કેમકે સંસારરૂપી ભયંકર વનમા આ મનુષ્ય શરીર સમાધિ  
રૂપી કલ્પવૃક્ષનું ક્ષેત્ર છે. આ વિશિષ્ટ પ્રકારના ઉત્તમ પુણ્યરૂપી હળથી ખેડવામાં  
આવ્યું છે. નિષ્ક્રમણુ (દીક્ષા) તે વૃક્ષનું (કલ્પવૃક્ષનું) ખી છે વૈરાગ્યરૂપી

સમાધિરૂપઃ કલ્પતરુરૂપઘટે ચ । વૈરાગ્યજલાઽઽગમનમાર્ગરૂપા નાલિકા તત્ર સદ્ભા-  
વના । જ્ઞાનદર્શનરૂપાણિ તત્ર પુષ્પાણિ, સ્વર્ગાપવર્ગરૂપાણિ ફલાનિ । દેવલોકે  
યત્ સુખં, યદ્ધ સિદ્ધાવસ્થાં પ્રાપ્તસ્યાનન્તસુખં, તદેવ તત્ફલરસઃ, ઇતિ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

✓ સૂત્રમ્—તદ્દર્શનં સે કળ્હે વાસુદેવે થાવચ્ચાપુત્તેણં એવં વુત્તેસમાણે  
થાવચ્ચાપુત્તં એવં વયાસી-દ્દર્શનં દેવાણુપ્પિયા ! દુરતિક્કમણિજ્ઞા  
ણો ખલ્લુ સક્કા સુબલિદ્દણાવિ દેવેણ વા દાણવેણ વા ણિવારિત્તપ્પ  
ણન્નત્થ અપ્પણો કમ્મક્કલ્લણં, તદ્દર્શનં સે થાવચ્ચાપુત્તે કળ્હે  
વાસુદેવં એવં વયાસી-જ્ઞણં દ્દર્શનં દુરતિક્કમણિજ્ઞા ણો ખલ્લુ સક્કા  
જાવ નન્નત્થ અપ્પણો કમ્મક્કલ્લણં તં ઇચ્છામિ ણં દેવાણુપ્પિયા !  
અન્નાણમિચ્છન્તં અવિરઙ્ગકસાયસંચિયસ્સ અત્તણો કમ્મક્કલ્લયં  
કરિત્તપ્પ ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

ટીકા—‘ તદ્દર્શનં સે કળ્હે ’ ઇત્યાદિ । તતઃ=તદનન્તરં ખલ્લુ સ કૃષ્ણવાસુ-  
દેવઃ સ્થાપત્યાપુત્રેણૈવમુક્તઃ સન્ સ્થાપત્યાપુત્રસ્ એવં=વર્તમાણપ્રકારેણ અવાદીત્-

સમાધિ રૂપ કલ્પતરુ ઉત્પન્ન હોતો હૈ ઓર બહતા હૈ । વૈરાગ્યરૂપ જલ  
કે આને કે લિયે માર્ગરૂપ નાલી કે સમાન વહાં સદ્ભાવના હૈ । જ્ઞાન  
રૂપ વહાં પુષ્પ હૈ । સ્વર્ગ એવં અપવર્ગ ( મોક્ષ રૂપ હસકે ફલ હૈ દેવલોક  
મૈં જો સુખ હૈ તથા સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત જીવ કો જો અનન્ત સુખ હૈ વહી  
સબ હસકે ફલોં કા રસ હૈ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

‘ તદ્દર્શનં સે કળ્હે વાસુદેવે ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તદ્દર્શનં) હસકે બાદ ( સે કળ્હે વાસુદેવે) જન કૃષ્ણ વાસુદેવ  
ને ( થાવચ્ચાપુત્તેણં એવં વુત્તે સમાણે ) સ્થાપત્યા પુત્ર કે હસ પ્રકાર  
કહને પર ( એવં વયાસી ) ડસસે એસા કહા—( દ્દર્શનં દેવાણુપ્પિયા)!

જળના સિચ્ચનથી સમાધિરૂપી કલ્પતરુ ઉત્પન્ન થાય છે અને વધે છે વૈરાગ્યરૂપી  
પાણીને લાવવામાટે સદ્ભાવનાઓરૂપી નાળી છે. જ્ઞાન દર્શન જ ત્યાં પુષ્પ છે.  
દેવલોકમાનું સુખ તેમજ સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત થવને જે અનન્ત સુખ છે તેજ  
આ બધા રૂપોનો રસ છે ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

( તદ્દર્શનં સે કળ્હે વાસુદેવે ઇત્યાદિ ॥ )

ટીકાર્થ—( તદ્દર્શનં ) ત્યાર પછી ( સે કળ્હે વાસુદેવે ) કૃષ્ણ વાસુદેવે ( થાવચ્ચા  
પુત્તેણં એવં વુત્તે સમાણે ) સ્થાપત્યા પુત્રની આ વાત સાંભળીને ( એવં વયાસી )

હે દેવાનુપ્રિય ! એતે મૃત્યુજરાદયઃ સ્વલુ દુરતિક્રમણીયાઃ=દુઃપરિહરણીયા, દુર્નિ-  
વારા इत्यर्थः । एयमेवार्थे स्पष्टीकुर्वन्नाह—‘ णो खलु सक्का ’ इत्यादि । नो  
स्वलु शक्याः सुबलिकेन अनन्तबलवता देवेन=तीर्थकरेणाऽपि, यद्वा—महाबलवता  
केनापि देवेन, दानवेन वा निवारयितुं निवर्तयितुं नो स्वलु शक्याः, मृत्युजरादय  
इत्यन्वयः । देवो वा दानवो वा मृत्युजरादीन् रिपून् वारयितुं समर्थो नास्तीत्यर्थः ।  
नान्यत्रात्मनः कर्मक्षयेण आत्मसंचितसकलकर्मक्षयं विनाऽन्योपायेन मृत्युजरादि  
परिहारो नैव भविष्यतीति भावः ।

ततः स्वलु स स्थापत्यापुत्रः कृष्णवासुदेवमेवमवादीत्—यदि स्वलु एते दु-  
र-  
तिक्रमणीया नो स्वलु शक्याः—यावत्—यावत्करणादत्र—‘ सुबलिकेन देवेन दान-

દુરતિક્રમણિજ્ઞા ણો સ્વલુ સક્કા સુબલિણાવિ દેવેણ વા દાણવેણ વા  
ણિવારિસ્સે ણન્નત્થં અપ્પણો કમ્મક્કલ્લણં ) હે દેવાનુપ્રિય ! ચે મૃત્યુ  
જરા આદિ દુરતિક્રમણીય હૈં દુઃપરિહરણીય હૈં । હસકા નિવારણ કરના  
સંસારાવસ્થા જીવ કે લિયે સર્વથા અશક્ય હૈ । હસી અર્થ કો સૂત્રકાર  
સ્પષ્ટ કરતે હુણ કહ રહે હૈં કિ સુબલિક અનન્ત બલ કે સ્વામી તીર્થ કર  
દેવ ભી અથવા મહાબલવાન કોઈ ભી દેવ યા દાનવ હન મૃત્યુ જરા  
આદિ કો કો નિવારણ કરને કે લિયે સામર્થ્ય શાલી નહીં હો સકે  
હૈં । કેવલ આત્મ સંચિત સકલ કર્મોં કા ક્ષય હી એક એસા ઉપાય હૈ  
જો હનકા નિવારણ કર સકતા હૈ । હનકે સિવાય ઓર કોઈ દૂસરા  
ઉપાય નહીં હૈ । ( તણં સે યાવન્નાપુત્તે કણ્ઠં વાસુદેવં એવં વચાસી )  
કૃષ્ણ વાસુદેવ કી હસ વાત કો સુનકર સ્થાપત્યાપુત્ર ને તવ ડન સે  
હસ પ્રકાર કહા— ( જઙ્ઘં એ દુરતિક્રમણિજ્ઞા ણો સ્વલુ સક્કા જાવ ન-

તેમણે કહ્યું ( એ ણ ' વૈવાળુપિયા ! દુરતિક્રમણિજ્ઞા ણો સ્વલુ સક્કા સુબલિ-  
ણા વિ દેવેણ વા દાણવેણ વા ણિવારિસ્સે ણન્નત્થં અપ્પણો કમ્મક્કલ્લણં )  
હે દેવાનુપ્રિય ! આ મૃત્યુ વગેરે દુરતિક્રમણીય છે. સંસારમાં 'રહેતા પ્રાણીને  
માટે નેનું નિવારણ અશક્ય છે " સૂત્રકાર અહીં એવ અર્થને સ્પષ્ટ કરતાં  
કહે છે કે સુબલિક એટલે કે અનન્ત બળવાળી તીર્થ કર દેવ અથવા તેા મહા-  
બળવાન કોઇ દેવ કે દાનવ પણ આ મૃત્યુ ઘડપણ વગેરે ને દૂર કરવાનું સામ-  
ર્થ્ય ધરાવી શક્યા નથી ફક્ત આત્મ સંચિત સકલ કર્મોના ક્ષય એક માત્ર  
ઉપાય છે કે જે આ મૃત્યુ, ઘડપણ વગેરેનું નિવારણ કરી શકે. એના સિવાય  
બીજા કોઇ ઉપાય અમને દેખાતા નથી ( તણં ' સે યાવન્નાપુત્તે કણ્ઠં વાસુદેવં  
એવં વચાસી ) કૃષ્ણ વાસુદેવની આ વાત સાંભળીને સ્થાપત્યા પુત્રે તેમને આ  
પ્રમાણે કહ્યું ( જઙ્ઘં એ દુરતિક્રમણિજ્ઞા ણો સ્વલુ સક્કા જાવ નન્નત્થં

वेन वा निवारयितुम्' इति पूर्वोक्तपाठस्य संग्रहः । अन्यत्रात्मनः कर्मक्षयेण, तद्=तस्मात्, हे देवानुप्रिय । 'अज्ञानमिच्छत् अविरट्-कसायसंचियस्स' अज्ञानमिध्यात्वाविरतिकषायसञ्चितस्य=अज्ञानम्—ज्ञानावरणीयोदयजनितात्मपरिणामरूपं संशयविपर्ययादिलक्षणं मिध्याज्ञानं, मिध्यात्वं=मिध्यात्वमोहनीयोदयजनितात्मपरिणामरूपं तत्त्वार्थाश्रद्धानं क्रुदेवादिषु सुदेवादिवुद्धिर्वा, अविरतिः=विरतिर्विपरीताऽविरतिः, अनिवृत्तिः हिंसादि पापस्थानेभ्यो परिणामाभावः, सावद्य प्रवृत्तिरित्यर्थः । कषायाः=क्रोधमानादयः, तैः संचितस्य युक्तस्य आत्मनः कर्मक्षयं ज्ञानावरणीयाद्यष्टविधकर्मणां नाशं कर्तुमिच्छामि खलु इत्यन्वयः ॥ सू० १३ ॥

अथ अप्पणो कम्मक्खएणं तं इच्छामिणं देवानुप्पिया ! अज्ञानमिच्छत् अविरट्कसाय संचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करिस्सए ) यदि ये जन्म जरा आदि दुरतिक्रमणीय हैं इन्हें दूर करने के लिये सुबलिक देव दानव भी समर्थ नहीं हैं केवल कर्म क्षय ही इनकी निवृत्ति का उपाय है—जब ऐसी बात है तो हे देवानुप्रिय ! मैं ज्ञानावरणीय के उदय से जनित आत्म परिणामरूप अज्ञान से—संशय विपर्यय आदि रूप मिध्या ज्ञान से—मिध्यात्व मोहनीय के उदय से जनित तत्त्वार्थ अश्रद्धा न रूप आत्मपरिणाम से—अथवा क्रुदेव आदि मे सुदेव आदि की विपरीताभि निवेश रूप बुद्धि से हिंसादिक पापस्थानो से अनिवृत्ति रूप परिणाम से सावद्य कार्यों मे प्रवृत्ति से क्रोध मान आदि रूप कषायों से संचित किये गये इन ज्ञानावरणीय आदि रूप आठ प्रकार के कर्मों को क्षय करने की इच्छा कर रहा हूँ । सूत्र “ १३ ”

अप्पणो कम्मक्खएणं तं इच्छामि णं देवानुप्पिया ! अज्ञानमिच्छत् अविरट् कसाय संचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करिस्सए ) ओ ओ जन्म जरा ( धडपधु ) वगेरे दुरती कमखीय छे, ओमनाथी युक्ति भेजववानी सुभलिक देव दानव पधु सामर्थ्य धरावता नथी. इकत कर्म-क्षय ओ ओमजी निवृत्तिनो उपाय छे, त्यारे हे देवानुप्रिय ! हुं ज्ञानावरणीयना उदयथी जनित आत्मपरिणामरूप अज्ञानथी संशय विपर्यय वगेरेना मिध्या ज्ञानथी, मिध्यात्व मोहनीयना उदयथी जनित तत्त्वार्थ अश्रद्धान इय आत्म परिणामथी, अथवा तो क्रुदेव वगेरेमां सुदेव वगेरेनी विपरीताभिनिवेशइय बुद्धिथी, हिंसावगेरे पापनां स्थानोथी, अनिवृत्तिइय परिणामथी, सावद्य कामोमां प्रवृत्तिथी क्रोध, मान वगेरे कषायोथी संचित कस्वामां आवेला ज्ञानावरणीय वगेरे ना आठ प्रकारना कर्मोना क्षय आहुं छुं. ॥ सूत्र १३ ॥

मूत्रम्—तएणं से कणहे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं बुत्ते समाणे कौंडुंवियपुरिसे सद्दावेइ. सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया! वारवइए नयरीए सिंघाडगतियग चउ-क्कचच्चर जाव हत्थिखंधवरगया महया महया सङ्गणं उग्घासे-माणा २ उग्घासणं करेह—

एवं खलु देवानुप्पिया ! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जस्मणसरणाणं इच्छइ अरहता अरिदुनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए तं जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वाईसरे वा तलवरे वा कौंडुंविय माडंविय इब्भसंद्धि-सेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्ते पव्वयंत-मणुपव्वयंति तस्स णं कणहे वासुदेवे अणुजाणइ, पच्छातुरस्स-विय से मित्तनाइ । नियगसंवंधि परिजणस्स जोगखेमं वट्ट-माणं पडिवहति त्तिकट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसंति ॥सू०१४॥

टीका—‘तएणं से कणहे’ इत्यादि । ततः खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्या पुत्रेणैवमुक्तः सन् कौटुम्बिक पुरुषान् जघ्दयति=आह्वयति, जघ्दयित्वा=आहूय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीन्=हे देवानुप्पियाः । वयं गच्छन् द्वारवत्या नगर्या

‘तएणं से कणहे वासुदेवे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणहे वासुदेवे) वे कृष्ण वासुदेव जब (थावच्चा पुत्तेणं) स्थापत्या पुत्र के द्वारा ( एवं बुत्ते समाणे ) इस प्रकार कहने पर उन्होंने ( कौंडुंविय पुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया ( सद्दावित्ता एवं वयासी ) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा—

( तएणं से कणहे वासुदेवे ) इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्वरणान् (से कणहे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवने न्याये ( थावच्चापुत्तेणं ) स्थापत्या पुत्रे ( एवं बुत्ते समाणे ) अ. ३३ते इत्थं न्याये तेभ्ये ( कौंडुंविय पुरिसे सद्दावेइ ) श्रैष्टुम्बिक पुत्रेभ्यो नोदात्था. ( सद्दावित्ता,

शृङ्गाटकत्रिक चतुष्कचत्वरेषु यावत्-महापथेषु=राजमार्गेषु ' हत्थिकंधवरगया ' हस्तिस्कन्धवरगता गजस्कन्धारूढाः महता महता ऋदेन उद्धोषयन्तः २ ब्रुवन्तः उद्धोषणं कुरुत । तदुद्धोषणस्वरूपमाह—' एवं खलु ' इत्यादि ।

एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! अयं स्थापत्यापुत्रः संसारमयोद्विग्नः भीतो जन्ममरणेभ्यः अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके मुण्डो भूत्वा भ्रजितुमिच्छति, तद् तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः ! यः कश्चित् खलु-राजा वा युवराजो वा देवी=राज्ञी वा राजकुमारो वा ईश्वरो वा तलवरो वा कौटुम्बिकमाहम्बिकेभ्यश्चेष्टिसेनापति-  
( गच्छह णं देवानुप्पिया वारवहए नयरी ए सिंघाडग तियग चउक्कच-  
चवरजावहत्थिखंधवरगया महया महया सहेणं उग्घोसेमाणा २ उग्घोसणं  
करेह ) हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और द्वारावती नगरी के शृङ्गाटक,  
त्रिक, चतुष्क, चत्वर यावत्-आदि-महापथोंमें-राजमार्गोंमें- हाथी के  
स्कन्ध पर चढ़े हुए तुम सब लोग बड़े जोर २ बोलते हुए ऐसी घोषणा  
करो ( एवं खलु देवानुप्पिया । थावच्चा पुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जन्म-  
मरणा णं इच्छह अरहओ अरिद्धनेमिस्स अंतिए मुंडे भविस्सा पव्वइत्तए )  
हे देवानुप्रियो ! सुनो-यह स्थापत्यापुत्र संसार के भय से उद्विग्न तथा  
जन्ममरण से भयभीत होकर अर्हत अरिष्टनेमिप्रभु के पास मुंडित  
बन दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा कर रहा हैं-( तं जो खलु देवानुप्पिया  
राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कौटुम्बिय  
माडंबिय इहमसेट्ठिसेणावह सत्थवाहे व थावच्चापुत्ते पव्वयतमणुपव्वयति  
तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणह ) सो हे देवानुप्रियो ! जो कोई राजा,

एवं बयासी ) अने भोलावीने तेभने कहुं-( गच्छह णं देवानुप्पिया । वारवहए  
नयरीए सिंघाडगतियगचउक्कचचवर जाव हत्थिखंधवरगया महया महया सहेणं  
उग्घोसेमाणा २ उग्घोसणं करेह ) हे देवानुप्रियो ! तमे भओ अने द्वारावती  
नगरीना शृङ्गाटक त्रिक चतुष्क, चत्वर वगेरे महापथेभां, राजमार्गेषां हाथी  
उपर सवार थेवेला तमे भधा भोटा साहे आभ घोषित करे-( एवं खलु  
देवानुप्पिया ! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जन्ममरणाणं इच्छह अरहओ  
अरिद्धनेमिस्स अंतिए मुंडे भविस्सा पव्वइत्तए ) हे देवानुप्रियो सांक्षेण आ  
स्थापत्यापुत्र संसारलयधी व्याकुल तेभज जन्म अने मृत्युधी लयवस्त  
यधने अहं त अरिष्टनेमि प्रभुनी पासे मुंडित यधने दीक्षाअडंख करवाना धउछा  
रागे छे ( तं जो खलु देवानुप्पिया । राया वा जुवरा या वा देवी वा कुमारे  
वा ईसरे वा तलवरेवा कौटुम्बिय माडंबिय इहमसेट्ठिसेणावहसत्थवाहेवा थाव-  
च्चापुत्तं पव्वयतमणुपव्वयति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणह ) तो हे

સાર્થવાહા સ્થાપત્યાપુત્રં પ્રવ્રજન્તમનુપ્રવ્રજતિ સ્થાપત્યાપુત્રેણ સહ યઃ કોઽપિ નિ-  
ષ્ક્રમણં કર્તુમિચ્છતિ તસ્મૈ સ્વલુ કૃષ્ણવાસુદેવઃ 'અણુજાણઈ' અનુજાનાતિ, આજ્ઞાં  
દદાતિ । 'પચ્છાતુરસ્સવિય' પથ્થાદાતુરસ્યાપિ ચ-પથ્થાત્ આતુરસ્ય=દ્રવ્યા-  
દ્યમાવાદ્ દુઃસ્વિતસ્ય તસ્ય=તત્સમ્બન્ધિનઃ મિત્રજ્ઞાતિનિજકસમ્બન્ધિપરિજનસ્ય  
'જોગસ્થેમં' યોગક્ષેમં અલબ્ધલાભો યોગઃ લબ્ધપરિરક્ષણં ક્ષેમં તયોઃ સમાહારદ્વન્દ્વઃ  
યોગક્ષેમં વર્તમાનં પ્રતિવદ્ધતિ યે પ્રવ્રજ્યાયાં પ્રવૃત્તા ભવિષ્યન્તિ, તત્સમ્બન્ધિમિત્રા-  
દીનાં યત્ સ્વલુ યોગક્ષેમરૂપકાર્યં કર્તવ્યતયા વર્તેતે, તત્ સર્વં કૃષ્ણવાસુદેવઃ  
સંપાદયિષ્યતીત્યર્થઃ । ઇતિ કૃત્વા ઇત્યેવં વિજ્ઞાપનં મનસિ નિધાય ઘોષણાં=વાર્તા-  
રૂપાં, ઘોષયત યયેયં વાર્તા દ્વારાવતીનગરો નિવાસિનાં સર્વેષાં કર્ણગતા મવેત્ ,  
યુવરાજ, દેવી, રાજ્ઞી, રાજકુમાર ઈશ્વર, તલવર, કૌડુમ્બિક, માળ્ડબિક, ઇન્ધ્યશ્રેષ્ઠી,  
સેનાપતિ અથવા સાર્થવાહ સ્થાપત્યાપુત્ર કે સાથ દીક્ષા લેના  
ચાહતે હો વસલિયે કૃષ્ણવાસુદેવે આજ્ઞા પ્રદાન કરતે હૈં ( પચ્છાતુર-  
સ્સ વિય સે મિત્તનાઈનિયગસંબંધિપરિજનસ્સ જોગસ્થેમં વદ્ધમાણં  
પઢિવદ્ધતિ ત્તિ કદ્દુઘોસણં ઘોસેહ જાવ ઘોસંતિ ) જો દીક્ષા લેનેવાલે  
કે કુટુંબી જન કિસી ખી પ્રકાર સે દુઃખી હોંગે તો उनके संबंधी मित्र,  
જ્ઞાતિ, નિજક, સંબંધી પરિજન કે યોગ ક્ષેમ કો ખી કૃષ્ણ વાસુદેવ  
કરેંગે તાત્પર્ય ઇસકા યહ હૈ કિ જો જન પ્રવ્રજ્યા મેં પ્રવૃત્ત હોંગે उनके  
સમ્બન્ધી મિત્રાદિકો કા જો કર્તવ્યતયા યોગ-અલબ્ધ કા લાભ, ક્ષેમ-  
લબ્ધ કા પરિરક્ષણ રૂપ કાર્ય હોગા વહ સવ કૃષ્ણ વાસુદેવ સંપાદિત  
કરેગા " ઇસ પ્રકાર કી ઇસ ઘોષણા કો હે દેવાનુપ્રિયોં । તુમ અપને  
ચિત્ત મેં અચ્છી તરહ ધારણ કર જિસ પ્રકાર યહ વાત દ્વારાવતી નગરી

દેવાનુપ્રિયો ? બે કેઈ રાજા, યુવરાજ, દેવી, રાજકુમાર, ઈશ્વર, તલવર કૌટુંબિક,  
માલ્ડબિક, ઇન્ધ્ય, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ કે સાર્થવાહ સ્થાપત્યાપુત્રની સાથે દીક્ષા અલબ્ધ  
કરવા ચાહે છે તેમના માટે કૃષ્ણ વાસુદેવ દીક્ષા સ્વીકારવાની આજ્ઞા પ્રદાન  
કરે છે. ( પચ્છાતુરસ્સ વિ ય સે મિત્તનાઈનિયગસંબંધિપરિજનસ્સ જોગસ્થેમં  
વદ્ધમાણં પઢિવદ્ધતિ ત્તિ કદ્દુ ઘોસણં ઘોસેહ જાવ ઘોસંતિ ) દીક્ષાલેનાર કુટુંબીઓ  
બે તેમની દીક્ષાબાદ ગમેતે પ્રકારે દુઃખી હશે તો તેમના સંબંધી, મિત્ર,  
જ્ઞાતિ, નિજક સંબંધી પરિજનોનું યોગક્ષેમ પણ કૃષ્ણ વાસુદેવ કરશે આનો  
ભાવાર્થ એ પ્રમાણે છે કે બે માણસો પ્રવ્રજ્યા અલબ્ધ કરશે તેમના સંબંધી  
મિત્ર વગેરેનું બે કર્તવ્યતયા યોગ-અલબ્ધને લાભ, ક્ષેમ-લબ્ધનું પરિરક્ષણરૂપ  
કાર્ય થશે-તે બધું કૃષ્ણ વાસુદેવ પુરૂં કરશે. હે દેવાનુપ્રિયો ! આ ધોષણને  
તમે સારીપેઠે ચિત્તમાં ધારણ કરો બેથી દ્વારાવતી નગરીના દરેકે દરેક માણસ

तयोच्चैः स्वरेण दुन्दुभ्यादिवौघैः सह भाषणं कुरुतेत्यर्थः । यावद् घोषयन्ति । कृष्णवासुदेवस्यादेशानुसारेण आदेशकारिणः पुरुषाः द्वारावत्यां नगरीं घोषणां कृतवन्त इत्यर्थः ॥ सू० १४ ॥

मूलम्—तएणं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं पहायं सत्वालंकारविभूसिय पत्तेयं २ पुरिस-सहस्सवाहिणीसु सिबियासु दुरुढं समाणं भित्तणाइपरिवुडं थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भयं, तएणं से कण्हे वासुदेवे पुरि-ससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासइ, पासित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव-सेयापीएहिं (कलसेहिं) पहावेइ, पहावित्ता जाव अरहतो अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडा-गातिपडागं पासइ, पासित्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सिबियाओ पच्चोरुहइ ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । स्थापत्यापुत्रस्य अनुरागेण=स्नेहेन पुरुषसहस्रं निष्क्रमणाभिमुखं स्नातं सर्वालङ्कारविभूषितं प्रत्येकं प्रत्येकं पुरुषसहस्रवाहिनीषु

के समस्त मनुष्यों के कर्ण गोचर हो सके इस तरह से षडे २ जोर से हुंदुभि आदि बाजों के साथ करो । इस तरह कृष्णवासुदेव की इस आज्ञा को उन आदेशकारीपुरुषों ने प्रमाणभूत मान कर उसे द्वारावती नगरी में घोषित करके सुना दिया । सूत्र “१४”

‘तएणं थावच्चा पुत्तस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं) स्थापत्यापुत्र के अनुराग से (पुरिससहस्सं) १ हजार पुरुष (निक्खमणाभि

मुधी आ वात सारी रीते पडोयी शके तमे भोटेथी हुंदुलि वगेरे वालांओ। पगाडो अने आ वातनी घोषणा करे। कृष्ण वासुदेवनी आज्ञाने डौटुंभिक पुरुषोओ अग्रभाष्य भाणीने द्वाशवती नगरीभां तेनी घोषणा करी ॥ सूत्र १४ ॥

(तएणं थावच्चापुत्तस्स इत्यादि)

टीकार्थ—(तएणं) त्प्राग्भाक् (थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं) स्थापत्यापुत्र प्रत्ये विशेष प्रेम डोवाने कारणे (पुरिस सहस्सं) ओक डेअर पुरुषो (निक्ख



शिबिकासु दुरुढं=समारूढं सत् मित्रज्ञातिपरिवृतं स्थापत्यापुत्रस्य अन्तिके समीपे प्रादुर्भूतम् उपस्थितम् । ततः खलु स कृष्णवासुदेवोऽन्तिके 'पाउन्मवमाणं' प्रादुर्भवत् पुरुषसहस्रं पश्यति, दृष्ट्वा कौटुम्बिकपुरुषान् आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्—यथा मेघस्य निष्क्रमणाभिषेकः, तथैव 'सेयापीएहि' इवेतपीतैः जलपूर्णैरुप्यसुवर्णमयैः कलशैः कृष्णवासुदेवः दीक्षोत्सुकं पुरुषसहस्रसहितं—स्थापत्यापुत्रं स्नपयति, स्नपयित्वा यावद्मर्वालङ्कारविभूषितं कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकामारोह्य कृष्णवासुदेवः द्वारावतीनगरीमध्यभागेन गत्वा—अर्हतोऽरिष्टनेमेः छत्रोपरिच्छत्रं छत्रत्रयं, पताकातिपताकां=पताकोपरिपताकां पुरुषवृन्दैः सह पश्यति । 'विज्जाहरवारणे' विज्जाहरवारणान् विद्याधरान्=

मुहं) निष्क्रमण के सम्मुख हो गये अर्थात् दीक्षित होने के लिए तैयार हो गये (पहचान) उन्होंने स्नात करके (सन्वाल्करविभूषित) सब प्रकार के अलंकारों से अपने २ शरीर को विभूषित किया (पत्तयं २ पुरि-ससहस्रवाहिणीसु सिबियासु दुरुढं समानं मित्तणाइपरिवुढं) बाद में मित्रादि परिजनों से युक्त हुआ प्रत्येक व्यक्ति उन मेंसे १ हजार पुरुषों को वहन करनेवाली शिबिकापर आरूढ होकर (थावच्छापुत्तस्स अंतियं पाउन्मूयं) स्थापत्या पुत्र के पास आया । (तएणं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्रमनियं पाउन्मवमाणं पासइ) जब कृष्ण वासुदेव ने पुरुष सहस्रको स्थापत्यापुत्र के पास आया हुआ देखा ता (पासित्ता कोटुंभिय पुरिसे सहावेइ) देखकर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सहाविस्ता एवं बयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा—(जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेया पीएहिं पहावेइ, पहाविस्ता जाव अरहओ अरिद्वनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं पासइ - पासित्ता

मणामिमुहं) निष्क्रमण (दीक्षा) भाटे तैयार था गया. (पहचान) तेओ नडाया, (सन्वाल्करविभूषित) अच्छी जतना धरेखान्ओथी तेभने पातानां शरीर शङ्खुगार्थी. (पत्तयं २ पुरिससहस्रवाहिणीसु सिबियासु दुरुढं समानं मित्तणाइ परिवुढं) तयार आइ मित्र वगेरे परिजनोंनी साथे तेओभांथी इरेइ दीक्षार्थी ओइ डल्लर पुरुषो वडेन डरे ओवी पावणी उपर सवार यधने (थावच्छा पुत्तस्स अंतियं पाउन्मूयं) स्थापत्या पुत्रनी पासि आब्यो. (तएणं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्रमनियं पाउन्मवमाणं पासइ) कृष्णवासुदेवे ब्यारे ओइडल्लर पुरुषोने स्थापत्यापुत्रने त्यां आवेला ओथा (पासित्ता कोटुंभिय पुरिसे सहावेइ) तेभण्णे कोटुंभिक पुरुषोने ओलाव्या. (सहाविस्ता एवं बयासी) ओलाव्याने तेभने कथुं. (जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं पहावेइ पहाविस्ता जाव अरहओ अरिद्वनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडाग पासइ पासित्ता विज्जा-

चारणश्रमणात् यावत्-अत्र 'जंस्य य देवे ओवयमाणे' इत्यादि पाठोऽनुसन्धेयः, जृम्भकदेवांश्च गगनादवतरतः पश्यति, दृष्ट्वा शिबिकातः 'पच्चोरुह' प्रत्यवरो-  
हति अवतरति ॥ १५ ॥

मूलम्-तएणं से कणहे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं  
जेणैव अरिहा अरिहनेमी तेणैव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेसं  
सव्वं तं चेव आभरणं तएणं से थावच्चागाहावइणा हंसल-  
क्खणैणं पडगसाढएणं आभरणमल्लालंकारे पडिच्छइ, हारवारि  
धारछिन्नमुत्तावल्लिप्पगासार्तिं अंसूणि विणिम्मंचमाणी २ एवं  
वयासी-

विज्ञाहरचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पच्चोरुह ) जिस प्रकार मेघ  
कुमार का निष्क्रमणाभिषेक ( दीक्षाका उत्सव ) हुआ था उसी प्रकार  
जलपूर्ण श्वेतपीतकलशों द्वारा - रूप्यसुवर्णके घटों द्वारा कृष्णवासुदेव  
ने दीक्षा के उत्सुक - हजार पुरुष सहित स्थापत्यापुत्र का अभिषेक  
किया । अभिषेक कर के फिर उन्होंने उसे सर्व प्रकारके अलंकारोंसे  
विभूषित किया । विभूषित करके फिरवे उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका  
पर आलङ्कृत करारकर द्वावती नगरी के ठीक बीचो बीच से होकर लेचले ।  
चलते २ जब उन्होंने ने अर्हत अरिहनेमिप्रभु के छत्रोपरिछत्र-तीन छत्रों  
को और पताको परिपताकाको पुरुषवृन्दों के साथ देखा-तथा विद्याधरों  
को चारण श्रमणों को आकाश से उतरते हुए जृम्भक देवों को देखा-  
तो देख कर वे शिबिका से नीचे उतरे ॥ सू० १५ ॥

हरचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पच्चोरुह ) जेम मेघकुमारने निष्क-  
मण्णुभिषेक थये । तेमज्ज जणथी परिपूषुं सङ्कटं पीणा कणशे । वडे तेमज्ज आंदी  
सेनाना घडाओ वडे कृष्णवासुदेवे दीक्षार्थी स्थापत्या पुत्र तेमज्ज तेनी साथेना  
ओके डण्णर पुरुषेना अभिषेक कर्ये । अभिषेक पछी तेमज्ज तेने भधां धरेण्णुओ  
थी शण्णुगार्थे । शण्णुगार्थे गाढ तेओ पुरुष सङ्कटं पाडिनी पावणी उपर स्था-  
पत्या पुत्रने मेसाडीने द्वावती नगरीनी भण्णर वच्चे ना भागे थधने आहया ।  
जतां जतां ज्यारे तेओओ अहंता अरिहनेमि प्रभुना छत्र उपर छत्र आभ  
त्रणु उपर उपरी छत्रे, पताकानी उपर पताकाओने तेमज्ज पुरुष सभाज्जने  
जेथे अने विद्याधरने चारण श्रमण्णुने आकाशभांथी नीचे उतरता, ते ज्ज  
जृम्भकदेवाने जेथे त्यारे जेधने तेओ पावणी उपरथी नीचे उतरा पडया ॥१५॥

जइयव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परिक्रमियव्वं जाया !  
अरिंस च णं अट्ठे णोपमाएयव्वं जामेवदिसिं पाउब्भूता तामेव  
दिसिं पडिगया ॥ सू० १६ ॥

‘ तएणं से कण्हे ’ इत्यादि ।

टीका—ततः खलु स कृष्णवासुदेवः स्थापत्यापुत्रं पुरतः ‘ काउं ’ कृत्वा  
यत्रैव अहंन् अरिष्टनेमिः, तत्रैवोपागच्छति अवमुञ्चति । उपागत्य शेषं सर्वं तदेव  
शेषं=आदक्षिणप्रदक्षिणादिकं सर्वं चरितं यत् खलु मेघकुमारस्य, तदेवात्र वाच्यम् ।  
स्थापत्यापुत्रोऽर्हतोऽरिष्टनेमेः समीपादीक्षानकोणदिग्भागे स्वयमेव ‘ आभरणम  
ल्लालंकारे ’ आभरणमाल्यालङ्कारान् ‘ ओमुयइ ’ अवमुञ्चति अवतारयति । ततः  
खलु सा स्थापत्यागाथापत्नी हंसलक्षणेन हंसस्वरूपेण शुक्लवर्णेन ‘ पडगसाढए  
ण ’ पटशाटकेन पृथुलवस्त्रेण आभरणमाल्यालङ्कारान् प्रतीच्छति प्रतिगृह्णाति ।

तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद ( से कण्हे वासुदेवे ) वे कृष्णवासुदेवे  
(‘थावच्चा पुत्तं’) स्थापत्या पुत्र को (पुरओकाउं) आगे करके (जेणेव  
अरिहा अरिष्टनेमि तेणेव उवागच्छइ) जहाँ अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु थे  
वहाँ गये ( उवागच्छिता सेसं मव्वं तं चेव आभरणं ) वहाँ जाकर  
उन्होंने प्रभु की आदक्षिण प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दना की । मेघकुमार  
ने दीक्षा अंगीकार करते समय जो कुछ किया वह सब वहाँ स्थापत्या  
पुत्र ने भी किया बाद में स्थापत्या पुत्रने अरिष्टनेमि प्रभु के पास से  
ईशानकोण में जाकर स्वयं ही अपने माला और अलंकारों को उत्तारा  
(तएणं से) इस समय वहाँ उपस्थित रही हुई उसकी माता गाथा  
पत्नी ने हंस के जैसी शुक्लवर्णवाली अपनी पटशाटिका में उनअवता-

( तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ) ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थारभाह (से कण्हे वासुदेवे) कृष्णवासुदेव (थावच्चा पुत्तं)  
स्थापत्या पुत्रने (पुरओ काउं) आगण राणीने (जेणेव अरिहा अरिष्टनेमी  
तेणेव उवागच्छइ) अथां अहंन् अरिष्टनेमि प्रभु इत्ता त्थां गया. ( उवागच्छिता  
सेसं मव्वं तं चेव आभरणं ) त्थां अर्धने तेभल्ले प्रभुणी आदक्षिण प्रद-  
क्षिणनी साथे वंदना करी मेघकुमार दीक्षा वणते वे कंथं कथुं इत्तुं ते प्रभुं  
स्थापत्यापुत्रे पण्ण कथुं. त्थार भाह स्थापत्यापुत्रे अरिष्टनेमी प्रभुणी पासैथी  
ईशान कैलुमां अर्धने नतते अ माणा अने धरेल्लंभा उताथी, ( तएणं से ) ते  
वणते तेनी माता स्थापत्यागाथापत्नी त्थां इत्ती तेभल्ले इत्तं अणी स्वच्छं अइह

‘ हारवारिधारछिन्नमुक्तावलिष्पगासाइं ’ हारवारिधारछिन्नमुक्तावली प्रकाशानि  
 ‘ अंसूणि ’ अश्रूणि ‘ विणिम्भुंचमाणी २, विनिम्भुञ्चन्ती २ मुक्ताहारजलधारा वि-  
 कीर्णमुक्तावत्स्वच्छाश्रुविन्दून् पुनः पुनर्निपातयन्तीत्यर्थः, एवं=वक्ष्यमाण प्रकारेण  
 अवादीत्-यत्तितव्यं जात ! = हे पुत्र ! संयमाराधनार्थं यत्नं कुरु, घटितव्यं जात !  
 हे वत्स ! संयमे संलग्नोभूत्, पराक्रमितव्यं जात ! = हे अह्म ! संयममतिकूलान्  
 आलस्यादीन् वारयितुं कायादिवलं प्रदर्शय, आरुमथ अर्थे ‘ णो पमाएयव्वं ’ नो  
 प्रमादितव्यम्=प्रमादस्य वशे कदापि मा भूः, इत्युक्त्वा = इति कथयित्वा, स्थाप-  
 त्यापुत्रस्य माता स्थापत्या गाथापत्नी यस्यादृशः सकाशात् प्रादुर्भूता=आयाता  
 तस्यामेवदिशि प्रतिगता ॥ सू० १६ ॥

रित माला अलंकारों को लेकर रखलिया। रखते समय वह (हार  
 वारिधार छिन्न मुक्तावलिष्पगासाइं अंसूणि विणिम्भुंचमाणी २ एवं  
 वयासी) हारवारिधारा और छिन्नमुक्तावली के समान आंसुओं को  
 बार २ बहाती जानी थी। इसी स्थितिमें बनी हुई उस स्थापत्या गाथा  
 पत्नी ने फिर अपने पुत्र से इस प्रकार कहा—(जइयव्वं जाया)। घडियव्वं  
 जाया। परिक्रमियव्वं जाया। अरिस्सिचणं अट्टे णो पमाएयव्वं जामेव  
 दिसिपाउव्वूया तामेव दिसि पडिगया) हे पुत्र। संयम की आराधना  
 के लिये तुम प्रयत्न शील रहना। हे पुत्र! तुम संयम में संलग्न रहना।  
 हे पुत्र संयम के प्रतिकूल आलस्य आदिकों को निवारण करने के लिये  
 अपने नारीरिक आदि बल को प्रस्फुरित करते रहना। इस संयम रूप  
 अर्थमें हे बेटा? तुम कभी भी एकक्षण भी प्रमादके वशावर्ती मत होना।  
 ऐसा कहकर वह माता स्थापत्यागाथा पत्नी जिस दिशा से आई थी  
 वही दिशा में वापिस चली गई ॥ सू० १६ ॥

साडीमां ते ङादेही भाणा अने धरेणुंओ वगेरे धरं दीधां भाणा ओने धरेणुं  
 ओ। साडीमां भूहती वणते (हारवारिधारछिन्नमुक्तावलिष्पगासाइं अंसूणि विणिम्भुंच  
 माणी २ एवं वयासी) तेनी आंणोमांथी नीकणतां आसुंओ। डार पाण्णीनी  
 धारा अने छिन्न मुक्तवणीनी जेम सतत टपकी रह्या हतां। आभ आंसुलीनी  
 आंणोथी स्थापत्यागाथा पत्नी पोताना पुत्रने कडेवा दागी—(जइयव्वं जाया)। घडि  
 यव्वं जाया। परिक्रमियव्वं जाया। अस्सिं च णं अट्टे णो पमाएयव्वं जामेव  
 दिसिं पाउव्वूया तामेव दिसिं पडिगया) हे पुत्र। संयमनी साधना माटे तमे  
 सहा सावध रहैजे डेवत्स। संयमनी साधना माटे प्रतिकूल आलस्य वगेरेना  
 निवारण माटे पोताना शारीरिके अण प्रस्फुरित करता रहै जे आ संयमनी  
 साधनामां तमे कोष्ठ पणु वणते प्रभाव करता नहिं। आ प्रभाणु संधोधीने  
 स्थापत्यापत्नी त्यांथी पोताने घेर पाछी वणी। सूत्र ॥ १६ ॥

मृच्छ—तएणं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ जाव पव्वइए । तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते इरियासमिणं भासासमिणं जाव विहरइ, तएणं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं चउदसपुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वट्ठहिं जाव चउत्थेणं विहरति ।

तएणं अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगारसहस्ससीसत्ताए दलयइ, तएणं से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते तुब्भेहिं अब्भणुन्नाउ समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिआ ! तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेणं उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू० १७ ॥

‘तएणं से थावच्चापुत्ते’ इत्यादि ।

टीका—ततः तदनन्तरं खलु स स्थापत्यापुत्रः पुरुषसहस्रेण सार्धं स्वयमेव

‘तएणं से थावच्चा पुत्ते’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से थावच्चा पुत्ते) उस स्थापत्या पुत्रने पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं करेइ ) उन एक हजार दीक्षित पुरुषोंके साथ अपने केशोंका पंचमुष्ट्री लोच किया—(जाव पव्वइए) यावत्

( तएणं से थावच्चा पुत्ते ) इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थारभाइ (से थावच्चापुत्ते) स्थापत्या पुत्रे (पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) दीक्षा पायेला ओक ६८१२ पुरुषोनी साथे पोताना वाणुं पांथ भुंथी वुंथन कथुं. (जाव पव्वइए) अनेर

પદ્મમુષ્ટિકં લોચં કરોતિ કૃત્વા ચ યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ સહસ્રપુરુષે સહ સ્થાપત્યાપુત્રો  
ઝહંદરિષ્ટનેમેઃ સમીપે ચત્વારિમહાવ્રતાનિ ઉચ્ચારિતવાન્ । તતસ્તદનન્તરં સસ્થાપત્યા  
પુત્રઃ ‘ અણગારે ’ અનગારઃ દ્રવ્યતો ભાવતશ્ચ મુનિર્જાતઃ, સ કીદશ્ચ ઇત્યાહ—‘ હ્રિ-  
યાસમિષ્ ’ ઈર્યાસમિતઃ ઈર્યાસમિતિઃ યતનાપૂર્વકં ગમનં, તયા સમન્વિતઃ, યથા  
કથમપ્યન્યજીવવિરાધના ન સ્યાત્તથોપયોગપૂર્વકગમનવાનિત્યર્થઃ, ‘ માસાસ-  
મિષ્ ’ માસાસમિતઃ માસાસમિતિયુક્તઃ યાવત્ વિહરતિ=યાવચ્છન્દેન ‘ ઇષણાસ-  
મિષ્, આયાણમંડમત્તનિક્ષેવણાસમિષ્, ઉચ્ચારપાસવળચેલજલ્લસિંધાણપારિદ્વા  
વણિયા સમિષ્ ” ઇત્યાદિ વાચ્યમ્ । ઇષણાસમિતઃ=ઇષણાસમિતિયુક્તઃ નિર્દોષ-  
મિક્ષાગ્રહણશીલઃ, આદાનમાળ્ડામત્રનિક્ષેપણાસમિતઃ= માળ્ડામાત્રાદ્યુપકરણાનામ્  
આદાને ગ્રહણે નિક્ષેપણાયાં સ્થાપને ચ યા સમિતિસ્તયા યુક્તઃ, ઉચ્ચારપ્રસવળ

પ્રવ્રજિત હોકરં ઉસને સહસ્રપુરુષોંકે સાથ અરિષ્ટનેમિ પ્રસુકે સમીપ ફિર  
પંચમહાવ્રતોંકા ઉચ્ચારણ કિયાં । હસ તરહ વે સ્થાપત્યાપુત્ર અબ દ્રવ્ય ઔર  
ભાવ દોનોં રૂપસે અનગારાવસ્થાપન બન ગયે । યહી વાત (તણ્ણં સે થાવ-  
ચ્ચા પુત્તે અણગારે જાણે ) હન પદોં દ્વારા વ્યક્ત કી ગઈ હૈ । ( હ્રિયા-  
સમિષ્, માસાસમિષ્ જાવ વિહરહ ) વે યતના પૂર્વક ચલને લગે હ્રિયા  
સમિતિ સે યુક્ત બન ગયે—જિસ તરહ કિસીં ખી અન્ય જીવ કી વિરાધના  
ન હો હસ તરહ ઉપયોગ પૂર્વક ચલને લગે માસા સમિતિ આદિ  
સમિતિ સે યુક્ત હો ગયે । યહાં યાવત્ શબ્દ સે ‘ ઇષણાસમિષ્,  
આયાણમંડમત્તનિક્ષેવણાસમિષ્, ઉચ્ચારપાસવળચેલજલ્લસિંધાણ-  
પારિદ્વાવણીયા સમિષ્ ” હન અવશિષ્ટ સમિતિયોં આદિ કા ગ્રહણ હુઆ  
હૈ । નિર્દોષ મિક્ષા લેના ઇષણા સમિતિ હૈ । માળ્ડામાત્રાદિ ઉપકરણોં  
કે આદાન મેં ગ્રહણ મેં ઔર નિક્ષેપણ મેં ઉપયોગ પૂર્વક પ્રવૃત્તિ કરના

પ્રવ્રજિત થઈ ને તેણે એક હજાર પુરુષોની સાથે અરિષ્ટનેમિ પ્રભુની સાથે પંચ  
મહાવ્રતોનું ઉચ્ચારણ કર્યું. આ રીતે તે સ્થાપત્યા પુત્ર દ્રવ્ય અને ભાવની  
અપેક્ષાએ અનગાર અવસ્થાપન થઈ ગયા. આ વાત (તણ્ણં સે થાવચ્ચાપુત્તે  
અણગારે જાણે) આ પદો વડે પ્રકટ કરવામાં આવી છે તેઓ કેવા અણગાર  
થયા તે નીચેના સૂત્રથી બતાવે છે (હ્રિયા સમિષ્, માસા સમિષ્, જાવ વિહરહ)  
ઈર્યાસમિતિથી યુક્ત થઈ ગયા. એટલે કેઈપણ જીવને વિરાધના (કષ્ટ) થાત્યનહિ  
એવી રીતે જતનથી ચાલવા લાગ્યા તે ભાષાસમિતિ વગેરે સમિતિથી યુક્ત થઈ ગયા.  
‘ યાવત્ શબ્દથી (ઇષણાસમિષ્, આયાણમંડમત્તનિક્ષેવણાસમિષ્, ઉચ્ચાર  
પાસવળચેલજલ્લસિંધાણપારિદ્વાવણીયા સમિષ્) આ સમિતિઓ વગેરેનું ગ્રહણ  
થયું છે. નિર્દોષ મિક્ષા સ્વીકારવી ‘એષણા-સમિતિ’ છે ભાગ્યમાત્રાદિ ઉપકરણોના  
આદાન એટલે ગ્રહણમાં અને નિક્ષેપણ મૂકવામાં ઉપયોગ પૂર્વક-પ્રવૃત્તિ થવી તે

શ્લેષ્મજલ્લશિઘ્વાણપરિષ્ઠાપનિકાસમિતઃ ઉચ્ચારાદીનાં પરિષ્ઠાપનિકાસમિતઃ =  
 ઉત્સર્જને શાસ્ત્રોક્તવિધિપ્રવૃત્તિઃ, તથા યુક્ત ઇત્યર્થઃ । સ મનઃ સમિતઃ વચઃ સમિતઃ  
 કાયસમિતઃ, મનોગુપ્તઃ વચનગુપ્તઃ કાયગુપ્તઃ ગુપ્તેન્દ્રિયઃ' इन्द्रियाणामसत्प्रवृत्तिनि-  
 वर्तनात् गुप्तब्रह्मचर्यः अक्रोधः अमानः अमायः अलोम अतएव शान्तः, प्रशान्तः  
 प्रशमभावसम्पन्नः, उपशान्तः, कषायकारणवर्जितः परिनिर्मुक्तः, योगत्रयसन्ताप-

इसका नाम भाण्डामन्त्रानिक्षेपणा समिति है तथा उभयकाल प्रतिलेखना  
 करना उच्चोर, प्रस्रवण, श्लेष्म, जल्ल शिङ्घाण इनके परिष्ठावन  
 करने में शास्त्रोक्त विधि के अनुसार प्रवृत्ति करना यह उच्चार प्रस्रवण  
 श्लेष्म जल्ल शिङ्घाण परिष्ठापनिका समिति है । इसी तरह वे  
 स्थापत्यानगार मनः समिति से, वचन समिति से कायसमिति से  
 मनोगुप्ति से वचन गुप्ति से कायगुप्ति से युक्त हो गये तथा इन्द्रियों  
 की असत् विषयो में प्रवृत्ति के निवर्तन से, गुप्तिन्द्रिय हो गये । मन,  
 वचन और काय से पूर्ण ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले होने से गुप्त  
 ब्रह्मचारी हो गये क्रोध कषाय से सर्वथा रहित होने से अक्रोध मान-  
 कषाय के अभाव से अमान, मायाकषाय के अभाव से अमाय,  
 लोमकषाय के अभाव होने से अलोम परिणति वाले बन गये । इसी  
 लिये वे शान्त प्रशान्त प्रशम भाव संपन्न, उपशान्त- कषायों के कारणों

ભાંડામન્ત્રાનિક્ષેપણા સમિતિ છે, તેમજ બંને કાળમાં પ્રતિ લેખના કરવી આ ચોથી  
 સમિતિ છે ઉચ્ચાર, પ્રસ્રવણ શ્લેષ્મ, જલ્લ, શિંઘાણ એપણું પરિષ્ઠાવન કરવામાં  
 શાસ્ત્રમાં કહ્યાં મુજબ પ્રવૃત્તિ કરવી આ ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ શ્લેષ્મ જલ્લ શિંઘાણ પરિ-  
 ષ્ઠાપનિકા સમિતિ છે. આ સમિતિથી પણ તેઓ યુક્ત હતા આ રીતે સ્થાપત્યા  
 નગાર મનઃ સમિતિથી, વચન સમિતિથી, કાય સમિતિથી, મનોગુપ્તિથી કાય-  
 ગુપ્તિથી યુક્ત થયા. તે ઇન્દ્રિયોની અસત વિષયોમાં પ્રવૃત્તિના નિવર્તનથી  
 ગુપ્તેન્દ્રિય થયા. તે મન વચન અને કાય (શરીર) થી પૂર્ણ બ્રહ્મચર્યનું  
 પાલન કરનાર હોવા બદલ ગુપ્ત-બ્રહ્મચારી થયા. તે સંપૂર્ણ રીતે ક્રોધ-કષાય  
 વગર હોવા બદલ અક્રોધ માન કષાયના અભાવથી અમાન, માયા કષાયના  
 અભાવથી અમાય, લોમ-કષાયના અભાવથી અલોમ પરિણતિવાળા થયા.  
 અટલા માટે જ તે શાંત, પ્રશાંત પ્રશમભાવ સંપન્ન, તેમજ ઉપશાંત કષાયો  
 ના કારણોથી વર્જિત થયા-પરિનિર્મુક્ત થયા-મન, વચન, અને કાયાએ ત્રણ યોગના

रहित अनास्रवः, हिंसादिवर्जितः, अममः, ममत्वरहितः, अकिंचनः द्रव्यभावपरि-  
ग्रहवर्जितः छिन्नग्रन्थः, स्नेहरहितः, निरुपलेपः—द्रव्यभावलेपवर्जितः, कांस्यपात्र-  
मिव मुक्ततोयः तोयरूपस्नेहरहितत्वात्, शङ्ख इव नीरञ्जनः रागसम्बन्धरहितत्वात्,  
जीवश्चाप्रतिहतगतिः सर्वदेशविहारित्वात्, जात्यकनकमिव जातरूपः निरतिचार-  
संयमवत्त्वात्, गगनमिव निरालम्बनः देशग्रामकुलाद्यालम्बनरहितत्वात्, आदर्श-  
फलक इव प्रकटस्वभावः दर्पणवत् स्वच्छस्वभावत्वात्, वायुरि वा प्रतिबद्धः क्षेत्रा-  
दिषु प्रतिबन्धरहितत्वात्, शारदसलिलमिव शुद्धहृदयः=शरदतुल्यवर्त्मलहृदयः

से वर्जित छुए-परिनिवृत्त हो गये-मनवचनकाय के सन्ताप से  
रहित बन गये। अनास्रव- हिंसादि पापों से रहित हो गये, ममता  
भाव से रहित हो गये, अकिंचन हो गये, द्रव्य और भावरूप परिग्रह  
से मुक्त बन गये। स्नेह रहित हो गये निरुपलेप हो गये द्रव्य भाव लेप  
से रहित हो गये। तोय जलरूप स्नेह से रहित होने के कारण कांस्य  
पात्र की तरह वे मुक्ततोय बन गये। राग के संबन्ध से रहित होने  
के कारण वे शंख की तरह निर्मल हो गये। सर्व देश में बिहारी होने  
के कारण वे जीव की तरह अप्रतिबंध बिहारी बन गये। निरतिचार  
संयम के पालक होने के कारण वे शुद्धसुवर्ण की तरह वे जातरूप हो  
गये। देश, ग्राम आदि के आलंबन से रहित होने के कारण वे गगन  
की तरह निरालम्ब हो गये। दर्पण की तरह स्वच्छ स्वभाव से युक्त  
होने के कारण वे प्रकट स्वभाव हो गये। क्षेत्रादिकों में प्रतिबन्ध रहित

सत्तापथी रहित तथा अनास्रव-हिंसा वगैरे पापकायेथी रहित तथा, ममता  
भावथी रहित तथा, अकिंचन तथा, तेमव द्रव्य ने भावना पेशिग्रहथी मुक्त तथा,  
स्नेहरहित तथा, निरुपलेप तथा, द्रव्य ने भाव लेपथी रहित तथा, तोय (पाणी)  
इय स्नेह वगर डोवाने कारणे ते कांस्यपात्रनी जेम मुक्त तोय 'तथा. रागना  
संबंध थी रहित डोवा भटल ते शंखनी जेम निर्मल तथा. सर्व देशोमां  
विहार करनार डोवाथी ते जिवनी जेम अप्रतिबद्ध गतिवाणा (जनी गति  
क्यांय रोकथ नहि के जेवा ) तथा. निरतिचार संयम ने पाणनाश डोवा-  
थी ते शुद्ध सोनानी जेम नत इय तथा, देश, ग्राम वगैरे ना आलंबन  
थी रहित डोवा भटल ते आकाशनी पेठे निरालंब तथां, अरीसानी जेम  
निर्मल स्वभावना डोवाथी ते 'प्रकट स्वभाव' वाणा तथा, क्षेत्र वगैरेमां  
प्रतिबंध वगरना डोवाथी ते पवननी जेम अप्रति बद्ध विहारी तथा, क्याथे



કષાયોપશમિતત્વાત્, પુષ્કરપત્રમિવનિરુપલેપઃ=મોગામિલાષરૂપલેશર્વજિતત્વાત્, કૂર્મૈવ ગુપ્તેન્દ્રિયઃ વશીકૃતેન્દ્રિયત્વાત્, સ્વત્રિવિપાણમિવ એકજાતઃ સ્વદૂગી=વન્ય જન્તુવિશેષઃ ‘ગેંડા’ ઇતિભાષાપ્રસિદ્ધઃ તસ્ય વિપાણં શૂન્રં તદ્વદેકજાતઃ સ્વાત્માવલમ્બિતત્વાત્, વિહગૈવ વિપ્રમુક્તઃ પશિવત્ સંનિધિવર્જિતત્વાત્, ભારણ્ડપક્ષીવ અપ્રમત્તઃ=ભારણ્ડપક્ષિણો હિ એકોદરાઃ પૃથગ્ગ્રીવા અન્યોન્યફલમક્ષિણો જીવદ્વયરૂપા ભવન્તિ, તે ચ સર્વદા ચકિતચિત્તાસ્તિષ્ઠન્તિ, તદ્વત્ પ્રમાદરહિતત્વાત્ કુંજરૈવ શૂરઃ કર્મશત્રું પરાજેતું દ્વદોત્સાહવત્ત્વાત્, ચન્દ્રૈવ સૌમ્યલેશ્યઃ શુભપરિણામવત્ત્વાત્,

હોને કે કારણ વે વાયુ કી तरह અપ્રતિવદ્ધ વિહારી બન ગયે । કષાયોં કે ઉપશમિત હો જાને સે શરત્ કાલ કે જલ કે સમાન વે નિર્મલ હૃદય સે યુક્ત હો ગયે । મોગામિલાષ રૂપ લેપ સે રહિત હોને કે કારણ વે પુષ્કર (કમલ) પત્ર કી तरह નિરુપલેપ હો ગયે । કચ્છપ કી तरह વે અપની હન્દ્રિયોં કો ગુપ્ત કરને વાલે હોને સે ગુપ્તેન્દ્રિય બન ગયે । કેવલ અપની આત્મા કે હી અવલમ્બન કરને વાલે હોને સે વે ગેંડાહાથી કે વિષાણ કી तरह એક જાત હો ગયે । સંનિધિ સે વર્જિત હોને કે કારણ પક્ષી કી तरह વે વિપ્રમુક્ત હો ગયે । ભારણ્ડ પક્ષી કી तरह વે અપ્રમત્ત રહને લગે । યે ભારણ્ડ પક્ષી એક ઉદરવાલે હોતે હૈં, ગ્રીવા હસકી પૃથક્ હોતી હૈં, અન્યોન્ય ફલ મક્ષી હોતે હૈં—દો જીવ હોતે હૈં । યે સર્વદા ચકિત ચિત્ત રહા કારતે હૈં । કર્મરૂપ શત્રુ કો પરાજિત કરને કે લિયે દ્વદ ઉત્સાહ સંપન્ન હોને કે કારણ યે કુંજર (હાથી) કી तरह શૂર બન ગયે । શુભ-પરિણામોં સે યુક્ત હોને કે કારણ યે ચન્દ્રમણ્ડલ કી तरह સૌમ્ય લેશ્યા

ના ઉપશમનથી શરત ઋતુના પાણીની જેમ તે સ્વચ્છ હૃદયવાળા થયા, ભોગ વિલાસ રૂપ લેપથી રહિત હોવાથી પુષ્કર કમળપત્ર ની જેમ નિરુપલેપ થયા કાચબાની જેમ તે પોતાની ઇન્દ્રિયોને ગુપ્ત કરનાર હોવાથી ગુપ્તેન્દ્રિય થયા. કેવળ પોતાના આત્માને જ અવલંબ આપનાર હોવાથી તે ગેંડા હાથીના વિષાણ (શીંગડા) ની જેમ એક બાત થયા. સંનિધિ વગર હોવાથી પક્ષી ની જેમ તે વિપ્રમુક્ત થયા. ભારણ્ડ પક્ષીની જેમ તે અપ્રમત્ત (મદ વગર) રહેવા લાગ્યા, આ ભારણ્ડ પક્ષી એક પેટ વાળાં હોય છે તેમની ડોક પૃથક્ હોય છે. અન્યોન્ય રૂપ લક્ષી હોય છે—તેમજ એ જીવ હોય છે. તે હમેશાં ચકિતચિત્ત રહે છે. તે સ્થાપત્યાપુત્ર કર્મના શત્રુને પરાજિત કરવા માટે દ્વદ ઉત્સાહ સંપન્ન હોવાથી કુંજર (હાથી) ની જેમ શૂર થયા. શુભ પરિણામોથી યુક્ત હોવાથી તે ચન્દ્રમંડળ ની જેમ સૌમ્ય લેશ્યા વાળા થયા. બીજા છયોને

सूर्यइव दीप्ततेजाः परेषां क्षोभकत्वात्, सागर इव गम्भीरः उदारहृदयत्वात्, मन्दरह्वाप्रक्रम्पः परीषदोत्सर्गैरविचलितत्वात्, वृषभइव जातस्थामा गृहीतभारपारगत्वात्, सिंह इव दुर्धर्षः उपसर्गसृगैः पराजेतुमशक्यत्वात्, वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविसहः शीतोष्णादिसर्वसहत्वात्, सुहुताशन इव तेजसा ज्वलन् तेजोलेख्यादिलब्धिमत्वात्, तस्य स्थापत्यापुत्रानगारस्य न कुत्रापि प्रतिबन्धो भवति । प्रतिबन्धो द्रव्यक्षेत्रकालभावमेदाच्चतुर्विधः, तत्र द्रव्यतः—सचित्ताचित्तमिश्रेषु, क्षेत्रतो ग्रामनगराऽरण्यादिषु, कालतः—समयावलिकादिषु, भावतः क्रोधमयहारयादिषु । स

से युक्त हो गये । दूसरे जीवों को क्षोभ करने वाले तेज से सम्पन्न होने के कारण ये सूर्य की तरह दीप्त तेजवाले बन गये । उदार होने से सागर की तरह इन का हृदय गंभीर हो गया । परीषद और उपसर्गों से अविचलित होने के कारण ये सुमेरुकी तरह अप्रक्रम्प बन गये । गृहीत भार को पार लगाने के कारण वृषभ की तरह ये विशिष्ट शक्ति शाली हो गये । उपसर्ग रूपी सृगों से पराजेतुं अशक्य होने के कारण ये सिंह की तरह दुर्धर्ष बन गये । शीत उष्ण आदि सब सहन करने के कारण ये वसुंधरा ( पृथिवी ) की तरह सर्व स्पर्शसह बन गये । तेजो लेख्यादि लब्धि संपन्न होने के कारण ये जाज्वल्यमान हुताशन ( भग्न ) की तरह विशिष्ट तेजसे चमकने लगे इन स्थापत्या पुत्र मुनिका कहीं पर भी प्रतिबन्ध नहीं था । यह प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा चार प्रकार का कहा गया है । द्रव्य की अपेक्षा सचित्त, अचित्त तथा मिश्र वस्तुओं में, क्षेत्र की अपेक्षा ग्राम,

क्षोभ पमाडनार तेजथी युक्त होवाथी ते सूर्यनी चेठे दीप्त तेज वाणा थया. उदार होता तेथी सागरनी जेमे तेमहुं डैयुं गंभीर थडं जयुं. परीषदो अने उपसर्गोना आकरा प्रहारोथी पञ्च ते विचलित थता नहि तेथी सुमेरु पर्वत नी जेमे ते अप्रक्रम्प थया. स्वीकारेदा कर्तव्योना भारने छेक सुधी पार धरि जवा भाटे ते गण्ड नी जेमे सविशेष शक्ति शाणी थया. उपसर्ग रूपी हरखोथी पराजित न थवाथी ते सिंहनी चेठे दुर्धर्ष थया डंडी, गरभी वगेरे जधुं सहन करवाथी ते वसुंधरा ( पृथिवी ) नी जेमे सर्व स्पर्श थया तेजे लेख्या वगेरेनी सिद्धि युक्त होवाथी ते सगगता अग्नि नी जेमे सविशेष तेजथी प्रकाशित थया. स्थापत्यापुत्र प्रतिबन्ध रहित थयां आ प्रतिबन्ध द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी अपेक्षाचे चार प्रकारने छे. द्रव्यनीअपेक्षाचे सचित्त, अचित्त तेमज मिश्र वस्तुओभां, क्षेत्रनी दृष्टिचे ग्राम, नगर, अरण्य ( वन )

समत्तृणमणिलोष्टकाञ्चनः, समसुखदुःखः, इहलोकपरलोकाऽप्रतिबद्धः, जीवित-  
मरणकाङ्क्षा वर्जितः, संसारपारगामी कर्मनिर्घातनार्थमभ्युत्थितः, एवं च खलु  
मोक्षमार्गे विहरति । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽर्हतोऽरिष्टनेमेस्तथारूपाणां  
स्थविराणान्तिके सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अधीते, अधीत्य च बहुभिर्याव-  
च्चतुर्थेन=चतुर्थभक्तादिनोऽऽत्मानं गावयन् विहरति ।

नगर, अरण्य आदिको में काल की अपेक्षा समय आवलिकआदिकों  
में भाव की अपेक्षा क्रोध, भय, तथा हास्यादिकों में, उन स्थापत्या पुत्र  
को किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था । उन की दृष्टि में तृण,  
मणि, लोष्ट और काँचन समान थे । सुख और दुःख समान थे । इह  
लोक और परलोक से वे अप्रतिबद्ध थे । जीविताशंसा और मरणा  
शंसा से वे रहित बन चुके थे । संसार से रहित हो चुके थे कर्मों के  
नाश करने में ही उनका पुरुषार्थ लगा हुआ था । इस तरह वे समिति  
आदि कौं से समित हो कर मुक्ति के मार्ग में सावधान होकर विचरण  
करने लगे । ( तएणं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहा  
रूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं चोइसपुब्बाइं अहिज्जइ )  
धीरे २ उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने अर्हत अरिट्ठनेमि प्रभु के तथा-  
रूप स्थविरो के पास सामयिक आदि चौदह पूर्वों का अध्ययन भी कर  
लिया ( अहिज्जित्ता न्हृहिं जाव चत्थेणं विहरइ ) उनका अध्ययन  
करके फिर उन्होंने चतुर्थ भक्तादि तपस्या से अपने को भावित किया

वगेरेमां, काणनी अपेक्षाये समय आवलिका वगेरेमां, भावनी दृष्टिओ क्रोध, भय  
तेमज्ज हास्य वगेरेमां ते स्थापत्या पुत्रने काइपण्ण अतनेा प्रतिबद्धं इतो नहिं  
तेना भाटे तो तृष्ण, भयि, लोष्ट ( भाटीनुं ठेकुं ) अने कांथन ( सोनुं )  
आ अथां सरणां ज्ज इतां. सुअ दुःअ अने सरणां इतां. छलु लोक अने पर-  
लोअथी ते अप्रतिबद्ध ( स्वतंत्र ) इता. जीविताशंसा तेमज्ज मरणाशंसाथी  
ते रहित थया. संसारना विषयोथी रहित थधने कर्मोना विनाशमांज तेओ  
पुरुषार्थं संलग्न इता. आ प्रभाण्णे ते स्थापत्यापुत्र समिति वगेरेथी समित  
थधने मुक्तिमार्गमां सावधान थधने त्रियस्सुं कर्वा लाअ्या. ( तएणं से थावच्चा-  
पुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराण अंतिए सामाइयमाइयाइं चोइस  
पुब्बाइं अहिज्जइ ) धीमे धीमे स्थापत्या-पुत्र अनगारे अरिट्ठनेमि प्रभुनी  
पासे थी तेमज्ज तथाइय स्थविरेानी पासेथी सामयिक वगेरे औदपूर्वोनुं अध्य-  
यनं पण्णं कथुं. ( अहिज्जित्ता न्हृहिं जाव चत्थेणं विहरइ ) अध्ययन कथीं भाइ  
स्थापत्या पुत्रे चतुर्थं भक्त वगेरे तपस्याथी चोताना आत्माने भावित कथीं

ततः खलु अर्हन्नरिष्टनेमिः स्थापत्यापुत्रस्यानगारस्य तं=सहागतं 'इन्माइयं' इभ्यादिकम् इभ्यश्रेष्ठिसेनापतिप्रभृतिकम् अनगारसहस्रं शिष्यतया ददाति । स्थापत्यापुत्रेण सह ये सहस्रपुरुषा दीक्षां गृहीतवन्तस्ते सर्वे तस्यैव शिष्याः कृता इति भावः । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारोऽन्यदा कदाचित् अर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दते वाचा रतीति, नमस्यति, कायेन प्रणमति वन्दित्वा नमस्कारं च कृत्वा एवं =वक्ष्यमाणपकारेणअवादीत्—

इच्छामि खलु भदन्त ! हे भगवन् युष्माभिः 'अब्भणुज्जाए' अभ्यनुज्ञातः सन् आज्ञां प्राप्य सदस्सेणानगारेण सार्धं बहिः द्वारावती नगरीतो बहिर्निःसृत्य जनपदविहारं देशे ग्रामानुग्रामविचरणं, विहर्तुं=कर्तुम्, भवदाज्ञया देशे विहारं कर्तुं मिच्छामीत्यर्थः । हे देवानुभिय यथामुत्रं=विहरेत्यर्थः ।

यावत् शब्द से उक्त अर्थ लिया गया है । ( तएणं अरिहा अरिद्धनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इन्माइयं अणगारसहस्सं सीसत्ताए दल्लयइ ) इसके बाद अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु ने उन अनगार स्थापत्यापुत्र के लिये उनके साथ आये हुए उस, इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति आदि अनगार सहस्र को शिष्यरूप से दे दिया । ( तएणं से थावच्चापुत्ते अज्जाया कयाइं अरहं अरिद्धनेमिं वंदइ नमंसइ ) इसके बाद उन स्थापत्यापुत्र ने किसी समय अर्हत अरिष्टनेमि को वंदना की और उन्हें नमस्कार किया— ( वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी ) वंदना नमस्कार करके फिर उन्होंने से उन्होंने ऐसा कहा— ( इच्छामि णं भंते ! तुवमेहिं अब्भणुज्जाये समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ) भदन्त ! यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं इन हजार अनगारों को साथ लेकर द्वारावती नगरी से बाहिर जनपद विहार करना चाहता हूँ ।

'यावत्' शब्दशी उक्त अर्थ ने। स'अइ थये छे. ( तएणं अरिहा अरिद्धनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इन्माइयं अणगारसहस्सं सीसत्ताए दल्लयइ ) त्थार पथी अहं'त अरिष्टनेमि प्रभुये अनगार स्थापत्यापुत्रने तेमनी साथे आवेला अने प्रमत्त्या अइल्लु कदेला पथ्य, श्रेष्ठी सेनापति वगेरे अनगार सहस्र ने शिष्य रूपे आत्था ( तएणं से थावच्चापुत्ते अज्जाया कयाइं अरहं अरिद्धनेमि वंदइ नमंसइ ) त्थार आइ स्थापत्या पुत्रे कौल वणत्त अहं'त अरिष्टनेमि प्रभुने वंदन तेमअ नमस्कार कथो ( वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी ) वंदन अने नमस्कार करीने तंभल्ले तेमने विन ती करी—( इच्छामि णं भंते ! तुवमेहिं अब्भणुज्जाये समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ) छे अइत । तभारी आज्ञा थाय तोहुं ओक हजार अनगारो नी साथे द्वारावती

ततः खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारसहस्रेण . सार्धं तेनोदारेण=प्रधानेन-बह्व-  
जीवनिकायरक्षणपरत्वात् , उग्रेण=तीव्रेण परीषहोपसर्गं सहिष्णुत्वात् , प्रयत्नेन=  
यतनाप्रधानत्वात् बहिर्जनपदविहारं विहरति ॥ १७ ॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं रुमएणं सेलगपुरे नामं नगरं  
हात्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, सेलए राया, पउमावइ देवी,  
मंडुए कुमारे जुवराया । तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोवखा पंच-  
मंतिसया होत्था, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए पारिणा-  
मियाए उववेया रज्जधुरं चितयंति, थावच्चापुत्ते सेलगपुरे  
समोसढे राया णिगगतो धम्मकहा, धम्मं सोच्चा जहाणं देवा-  
णुप्पियाणं अंतिए बह्वे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरन्नं जाव

( अहासुहं देवाणुप्पिया । तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं  
सद्धिं तेणं उरालेणं उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिणं बह्विया जणवय-  
विहारं विहरइ ) प्रभु ने उनसे कहा-यथासुखं देवानुप्रिय ! प्रभु की  
इस प्रकार आज्ञा प्राप्त कर वे स्थापत्यापुत्र षट्जीवनिकाय की रक्षा  
करने में तत्पर होने के कारण उदार, परीषद् और उपसर्गों को सहन  
करने के कारण उग्र, यतना प्रधान होने के कारण प्रयत्न और भग-  
वान् की आज्ञा को प्रधान रूप से अंगीकार करने के कारण प्रगृहीत  
ऐसे १ एक हजार शिष्यों को साथ लेकर वहां से बाहिर देशों में  
विहार किया । सूत्र “ १७ ”

नगरीनी अहार जनपद विहार करवा आहुं छुं . ( अहासुहे देवाणुप्पिया । तएणं  
से थावच्च अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेणं उराले णं उग्गेणं पयत्तणं पग्गहिणं  
बह्विया जणवयविहारं विहरइ ) प्रभुअने तेने कहुं-डेदेवानुप्रिय सुभेधी विहार  
करे. आ रीते स्थापत्यापुत्रे आज्ञा भेजवीने षट्पवनिकायना रक्षणभां सदा तैयार  
होवाथी उदार, परीषद अने उपसर्गोने सहन करवाथी उग्र, यतना प्रधान  
होवाथी, प्रयत्न अने भगवाननी आज्ञा प्रधान रूपथी स्वीकारवाथी प्रगृहीत जेवा  
अेक हजार शिष्योनी साथे त्यां थी अहारनी देशोभां विहार करे. ॥ २५-१७ ॥

पव्वइया, तहाणं अहं नो संचाएमि पव्वइत्ताए, अहन्नं देवाणु-  
प्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाव अहि-  
गयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मोहिं अप्पाणं  
भावेमाणे विहरामि । पंथगपामोक्खा पंचमंतिसया समणोवासया  
जाया, थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू० १८ ॥

‘तेणं कालेणं’ इत्यादि ।

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये शैलकपुरं नाम नगरमासीत् । नगराद् बहिः  
सुभूमिभागं नामोद्यानम् । तस्मिन् नगरे शैलको नाम राजाऽभूत् । पद्मावतीदेवी=प-  
द्मावतीनाम्नीदेवी पट्टराज्ञो । मण्डूककुमारो युवराजोऽभवत् । तस्य खलु शैलकस्य  
राज्ञः पान्थकप्रमुखः पञ्चसत्तानि मन्त्रिणः अमात्याः आसन्, कीदृशास्ते मन्त्रिण  
इत्याह—‘उप्पत्तियाए’ औत्पत्तिकया शास्त्राभ्यासादि निमित्तं विनैव सद्भाविनी  
तथाविधस्योपशमजन्या मति रौत्पत्तिकी तथा, ‘वेणइयाए’ वैनथिकया=विनय-

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में  
(सेलगपुरे नामं नगरं होत्था) शैलक पुर नाम का नगर था (सुभूमि  
भागे उज्जाणे सेलए राया पडमावइ देवी मुंडए कुमारे जुवराया)  
उस में सुभूमि भाग नाम का उद्यान था । शैलक पुर राजा का नाम  
शैलक था । उसकी पट्टरानी का नाम पद्मावती था । मण्डूक नाम का  
इसका युवराज कुमार था । (तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा पंच  
मंतिसयहोत्था) इस शैलक राजा के पांथक प्रमुख पांचसौ मंत्री थे ।  
(उप्पत्तियाए वेणइयाए, कम्मियाए, परिणामियाए, उववेया रज्जधुरं चित-

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले आने ते समये (सेलगपुरे  
नामं नगरं होत्था) शैलक पुर नामे नगरं હતું. (સુભૂમિભાગે ઉજ્જાણે સેલ  
રાયા પડમાવઇ દેવી મુંડણ કુમારે જુવરાયા) ત્યાં સુભૂમિ ભાગ નામે ઉદ્યાન  
હતું શૈલક પુરના રાજાનું નામ શૈલક હતું. પદ્માવતી તેની પટ્ટરાણી હતી.  
મંડૂક નામે તે રાજાનો યુવરાજ હતો. (તસ્સ ણં સેલગસ્સ પંથગ પામોક્ખા  
પંચમંતિસય હોત્યા) આ શૈલક રાજાને પાંથક પ્રમુખ પાંચસો મંત્રીઓ હતા.  
(ઉપ્પત્તિયાએ વેગઇયાએ કમ્મિયાએ પરિણામિયાએ ઉવવેયા રજ્જધુરં ચિત્ત-

लब्धबुद्ध्या, 'कम्मयाए' कर्मजया-लेखनादि कर्माभ्यासतः समुत्पन्नया बुद्ध्या, 'पारिणामियाए' पारिणामिकया दीर्घकालेऽनुमगादुद्भूतया वयः परिणामजन्यया-बुद्ध्या 'उववेया' उपपेताः बुद्धिचतुष्टयेन युक्ताः, 'रज्जवुरं' राज्यधुरं राज्य-रक्षणवर्धनकार्यभारं चिन्तयन्ति = चिन्तयन्तः सन्ति ।

अथ स्थापत्यापुत्रोऽनगारो ग्रामाद् ग्रामान्तरं विहरन् शैलकपुरे शैलकपुर-नगरे 'समोसडे' समवसृतः, 'राया णिग्गओ' राजा=शैलकनृपः 'णिग्गओ' निर्गतः स्थापत्यापुत्रानगरस्यागमनं श्रुत्वा तं वन्दितुं निःसृतः । निर्गत्य स्था-पत्यापुत्रानगरं वन्दित्वा यथोचितस्थान आसोनः स्थापत्यापुत्रमनगरं पर्युपासते । धर्मकथा=श्रुतचारित्रलक्षणधर्मकथा-स्थापत्यापुत्रानगारेण कथिता । अथ शैलको नाम राजा धर्मं श्रुत्वा वदति हे भदन्त ! यथा खलु देवानुमियाणामन्तिके बहवः उग्गाः उग्रवंश्याः भोगा भोगवंशीया राजानो यावत् हिरण्यादिकं त्यक्त्वा

यन्ति) ये समस्त मंत्री औत्पत्तिकी, वैयधिकी कार्मिकी और पारिणामि की इस प्रकार चार तरह की बुद्धि से राज्य के रक्षण का उस के संवर्धन का कार्य किया करते थे । ( थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसडे ) विहार करते २ स्थापत्या पुत्र शैलक पुर नगरमें आये । ( राया णिग्गओ धम्मकहा ) स्थापत्यापुत्र अनगार का आगमन सुनकर उनको वंदन करनेके लिये शैलक राजा अपने नगरसे निकले । निकलकर वे स्थापत्या पुत्र अनगार के पास पहुँचे—वहाँ जाकर उन्होंने उनके सविधि वन्दना की—नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर फिर वे यथोचित स्थान पर बैठ गये । स्थापत्यापुत्र अनगार ने श्रुतचारित्र लक्षणधाली धर्म कथा कही ( धम्मं सोच्चा जहाणं देवाणुप्पियाणं अंते बहवे उग्गा भोगा जाव चहत्ता हिरन्नं जाव पव्वइत्ता, तहा अहं णो संचापमि पव्वइए ) धर्मका-

जथा मंत्रीयो औत्पत्तिकी, वैयधिकी, कार्मिकी अने परिष्कासिकी आरीते आर ज्ञातनी बुद्धिथी राज्यतुं रक्षणे तेमज्ज संवर्धनतुं काम करता हता. थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसडे) विहार करतां करतां स्थापत्या पुत्र शैलकपुरमां आब्या. ( राया-णिग्गओ धम्मकहा ) स्थापत्या पुत्र अनगारतुं आगमन सांभणीने शैलक राजा पोताना नगरथी नीकथा अने स्थापत्यापुत्र अनगारनी पासे पडोन्था. त्यां पडोन्थीने तेमजे तेमने विधिपूर्वक वंदन अने नमस्कार कया. वंदना अने नमस्कार करीने तेयो उचितस्थाने जेसी गया. स्थापत्यापुत्र अनगारे श्रुतचारित्र लक्षणवाणी धर्मकथानो उपदेश आप्यो. ( धम्मं सोच्चा जहाणं देवाणुप्पियाणं अंते बहवे उग्गा भोगा जाव चहत्ता हिरन्नं जाव पव्वइत्ता, तहा अहं णो संचापमि पव्वइए ) धर्मकथा सांभणीने शैलक राजाजे स्थापत्या अनगारने

યાવત્ પ્રવ્રજિતા ભવન્તિ, તથા સ્વલ્પ અહં નો જ્ઞાતોમિ પ્રવ્રજિતુમ્, રાજ્યાદિકં પરિત્યજ્ય પ્રવ્રજ્યાં ગ્રહીતુમસમર્થોઽસ્મીત્યર્થઃ । અહં સ્વલ્પ દેવાનુમિયાણામન્તિકે પચ્ચાણુવ્રતિકં યાવત્ શ્રમણોપાસકઃ, અત્ર યાવચ્છવ્દેન-સપ્તશિક્ષાવ્રતિકં દ્વાદશવિધં શૃદ્ધિધર્મં દેશવિરતિરૂપં પ્રતિષ્ઠતું=સ્વીકર્તુમિચ્છામિ. તદા સ્થાપત્યાપુત્રોઽ-વાદીત્વે દેવાનુમિય ! યથાસુખં ભવેત્ તથા કુરુ કૃત્યેવમભ્યનુજ્ઞાતઃ સન્ શ્રમણો-

ઉપદેશ સુનકર શૈલક રાજા ને સ્થાપત્યા અનગાર સે નિવેદન કિયા-કિ હે ભદ્રન્ત ? જિસતરહ આપ દેવાનુમિય કે પાસ હન અનેક ઉગ્રવંશીય ભોગવંશીય રાજાઓને યાવત્ હિરણ્ય આદિકા પરિત્યાગકર યાવત્ દીક્ષા ધારણ કરલી હૈ ઉસ તરહ મેં દીક્ષા ધરણ કરને કે લિયે સમર્થ નહી હૂં-રજ્યાદિક કા પરિત્યાગ કર પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરને કે લિયે મેં અસમર્થ હૂં (અહન્નં દેવાણુપિયાણં અંતિય પંચાણુવ્વહ્યં જાવ સમણો-વાસય જાવ અહિગયજીવાજીવે, જાવ અહા પરિગ્ગહિયહિં તવોકમ્મેહિં અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરહ) મેં કેવલ દેવાનુમિય કે પાસ પાંચઅણુવ્રતો કો ધારણ કર શ્રમણોપાસક બનનેકી ઇચ્છા કરતા હૂં । યહાં યાવત્ શબ્દ સે સાત શિક્ષા વ્રતો કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । હસ આવક કા ધર્મજો-બારહ અણુવ્રત રૂપ હૈ ઓર જિસે દેશ વિરત કહતે હૈ મેં ઉસે સ્વીકાર કર-નેકી ઇચ્છા કરતા હૂં એસી અપનો ઇચ્છા શૈલક રાજા ને સ્થાપત્યા અન-ગાર કે પાસ અભિવ્યક્ત કી । શૈલક રાજા કી ઇચ્છા જાનકર સ્થાપત્યા અનગાર ને ઉન સે કહા હે દેવાનુમિય ! યથાસુખં- અર્થાત્ જિસ મેં તુમ્હે સુખ માલુમ પહે વૈસા તુમ કરો- હસ પ્રકાર સ્થાપત્યા અનગાર

વિનંતિ કરી-‘ હે ભદ્રન્ત । આપ દેવાનુમિયની પાસેથી જેમ આ અનેક ઉગ્ર-વંશીય ભોગવંશીય રાજાઓ એ દ્રવ્ય-વગેરે બધું ત્યાગીને ભાગવતી દીક્ષા સ્વીકારી છે તેમ હું દીક્ષા સ્વીકારી શકું તેમ નથી, રાજ્ય વગેરે ત્યજીને પ્રમત્યા અહંશુ કરવા માટે હું અસમર્થ છું. (અહન્નં દેવાણુપિયાણં અંતિય પંચાણુવ્વહ્યં જાવ સમણોવાસય જાવ અહિગયજીવાજીવે જાવ અહા પરિ-ગ્ગહિયહિં તવોકમ્મેહિં અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરહ) હું કંઈક દેવાનુમિયની પાસેથી પાંચ અણુવ્રતોને સ્વીકારીને શ્રમણોપાસક થવા આહું છું. અહીં યાવત્ શબ્દથી સાત શિક્ષા વ્રતોનું અહંશુ થયું છે. ગાર વ્રતરૂપ જે શ્રાવકધર્મ છે તેને સ્વીકારવા અહું છું આ-રીતે શૈલક રાજાએ પોતાની ઇચ્છા સ્થાપત્યાપુત્રની સાથે પ્રકટ કરી. શૈલકરાજાની આ બલની ઇચ્છા બધીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેમને કહ્યું-હે દેવાનુમિય ! યથાસુખં-એટલે કે જેમાં તમને



પાસકો જાતઃ । અમળોપાસકાનાં ધર્મઃ સવિસ્તરમુપાસકદશાઙ્ગસૂત્રસ્યાગારધર્મસંજીવની ટીકાયાં વર્ણિતસ્તત્ એવ વિદ્યેયઃ । યાવત્ ‘અદિગયજીવાજીવે’ અધિગત જીવાજીવઃ, જીવાજીવસ્વરૂપાવિદ્ઃ, યાવત્ યથા પરિગૃહીતૈસ્તપઃકર્મમિરાત્માનં ભાવયન્ વિહરતિ । પાન્થકપ્રમુખાઃ પચ્ચશત મન્ત્રિણઃ અમળોપાસકા જાતા દ્વાદશવ્રતધારિણઃ શ્રાવકા અભૂવન્ । સ્થાપત્યાપુત્રઃ બહિઃ=શૈલકપુર નામ્નો નગરાદ્ બહિર્જનપદવિહારં વિહરતિ=કરોતિ સ્મ ॥ ૧૮ ॥

દ્વારા અભ્યનુજ્ઞાત હોકર શૈલક રાજા ને ૧૨ બારહ પ્રકાર કા ગૃહસ્થ ધર્મ સ્વીકાર કર લિયા-વે અમળોપાસક બન ગયે । અમળોપાસકોં કે ધર્મ કા વિસ્તાર પૂર્વક વર્ણન હમને ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર કી અગાર ધર્મસંજીવની નામ કી ટીકા મેં કિયા હૈ । સો વહાં સે જ્ઞાન લેના વ્હાલિયે । જીવ ઓર અજીવ કા કયા સ્વરૂપ હૈ ઇસ વાત કો મી વે જ્ઞાન-ને વાલે બન ગયે । અનેક પ્રકાર કી તપચર્યા મો વે કરને લગે । ઇસ તરહ યથા પરિગૃહીત તપ કર્મોં દ્વારા વે અપને આપકો ભાવિત કરતે હુણ રહને લગે । ( પંથગપામોક્ત્વા પંચમંતિસયા સમળોવાસયા જ્ઞાયા-થાવચ્ચાપુસે બહિયા જળવયવિહારં વિહરહ ) રાજા કે જો પાંથક પ્રમુખ પાંચસો મંત્રી યે-વે મો અમળોપાસક બન ગયે-૧૨ વ્રત ધારી હો ગયે-સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ઉસ શૈલકપુર નગર સે બાહર જનપદ મેં વિહાર કર ગયે । સૂત્ર “ ૧૮ ”

સુખ થાય તેમ કરો. આ પ્રમાણે સ્થાપત્યા અનગારથી આજ્ઞાપિત થયેલા શૈલક રાજાએ બાર પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મો સ્વીકાર્યા. અને તેઓ અમળોપાસક થયા. અમળોપાસકોના ધર્મોનું સવિસ્તર વર્ણન અમે ઉપાસકદશાંગસૂત્રની અગાર ધર્મ સંજીવની નામની ટીકામાં કર્યું છે. જિજ્ઞાસુ જન તેમાંથી બાણી શકે છે. જીવ અને અજીવના સ્વરૂપ વિષેનું જ્ઞાન પણ શૈલક રાજાને થઈ ગયું. અનેક બ્રાહ્મણ તપસ્યાઓ તેઓ કરવા લાગ્યા. આ રીતે યથાપરિગૃહીત તપઃ કર્મો વડે પોતાની બ્રાહ્મણતાને ભાવિત કરતા રહેતા લાગ્યા. ( પંથગપામોક્ત્વા પંચમંતિસયા સમળોવાસયા જ્ઞાયા થાવચ્ચાપુસે બહિયા જળવયવિહારં વિહરહ ) રાજાના પાંથક પ્રમુખ પાંચસો મંત્રી હતા તેઓ પણ અમળોપાસક તેમજ બાર વ્રત ધારી થઈ ગયા. ત્યાર બાદ સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર શૈલકપુર નગરથી બહાર બીજા જનપદોમાં વિહાર કરવા માટે નીકળી પડ્યા. ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

मूल्य-तेर्ण कालेर्ण तेर्ण समएणं सोगंधिया नाम नयरी  
होत्था, वन्नओ, नीलासोए उज्जणे वन्नओ, तत्थ णं सोगंधि-  
याए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अट्ठे जाव  
अपरिभूए ।

तेर्ण कालेर्ण तेर्ण समएणं सुए नामं परिवायए होत्था,  
रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसट्ठितंतकुसले संखस-  
मए लद्धट्ठे पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलयं दसप्पयारं परि-  
व्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तिस्थाभिसेयं च आघवे  
माणे पन्नवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए, तिदंडकुंडियछत्त-  
छल्लयंकुसपवित्तयक्केसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरि-  
दुडे जेणेव सोगंधियानयरी जेणेव परिव्वायगादसहंसि भंडगनि-  
क्खेवं करेइ, करित्ता संखसमणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तएणं सोगंधियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचचचरेसु  
बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ । एवं खलु सुए परिव्वा-  
यए इह हव्वमागए जाव विहरइ, परिसा निग्गया सुदंसणो  
निग्गए, तएणं से सुए परिवायए तीसे परिसाए सुंदसणस्स  
य अन्नेसिं च बहूणं संखाणं धम्मं परिकहेइ-एवं खलु सुदंसणा  
अम्हं सोयमूलए धम्मं पन्नत्ते, सेऽविय सोए दुविहे पन्नत्ते  
तं जहा-दव्वसोए य, उदएणं मट्ठियाए य, भावसोए दव्वेहि  
य मंतेहि य, जन्नं अम्हं देवाणुप्पिया किंचि असुइ भवामो, तं  
सव्वं सज्जो पुढर्वाए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा  
पक्खालिज्जइ, तओ तं असुई सुई भवइ, एवं खलु जीवा

जलाभिसेयं पूयप्पाणे अविग्घेणं सगं गच्छन्ति, तएणं से सुदं-  
सणे सुयंस अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठे सुयस्स अंतिए सोयमू-  
लयं धम्मं गिणहइ, गेणिहत्ता परिट्वायए विपुलेणं असणपाण-  
खाइमसाइमेणं वत्थपरिग्गहेणं परिलाभेमाणे जाव विहरइ ।  
तएणं से सुए परिट्वायगे सोगंधियाओ नयरीओ निगच्छइ,  
निगच्छित्ता बहिया जणवय विहारंविहरइ ॥ सू० १९ ॥

“ तेणं कालेणं ” इत्यादि ।

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौगन्धिका नाम नगरी आसीत् वर्णकः  
सौगन्धिकानगर्या वर्णनं औपपातिकसूत्रोक्त चम्पानगरीइव वाच्यम्, नीलाशोक-  
मुद्धानं=नीलाशोकनामकमुपवनं तत्रासीत् । वर्णकः—अस्योद्धानस्य वर्णनं पूर्ववद्  
बोध्यम् । तत्र खलु सौगन्धिकायां नगर्यां सुदर्शनो नाम नगरश्रेष्ठी प्रतिवसति ।

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यदि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय से  
(सोगंधिया नाम नगरी होत्था) सौगंधिका नाम की नगरी थी—  
(वन्नओ) इस नगरी का वर्णन औपपातिक सूत्र में जिस प्रकार  
चंपानगरी का वर्णन किया गया है उसी तरह का जानना चाहिये ।  
(नीलासोए उज्जाणे) इस नगरी में उद्यान था जिसका नाम नीला-  
शोक था । (वन्नओ) पूर्वकी तरह इस उद्यान का वर्णन जान  
लेना चाहिये । (तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी  
परीवसइ अड्ठे जाव अपरिभूए) उस सौगंधिका नगरी में सुदर्शन नाम

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले अने ते समये (सोगंधिया  
नाम नगरी होत्था) सौगंधिका नामे नगरी હતી (વન્નઓ) ઔપપાતિક  
સૂત્રમાં જે પ્રમાણે ચંપાનગરીનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે પ્રમાણેજ અહીં  
પણ બહુ દેવું બેઈએ, (નીલાસોએ ઉજ્જાણે) આ નગરીમાં એક ઉદ્યાન હતું  
જેનું નામ નીલાશોક હતું. (વન્નઓ) પહેલાંની જેમ આ ઉદ્યાનનું વર્ણન  
પણ બહુ દેવું બેઈએ. (તત્થ ણં સોગંધિયાએ નયરીએ સુદંસણે નામં નયરસેટ્ઠી  
પરિવસઈ, અડ્ઢે જાવ અપરિભૂએ) તે સૌગંધિકા નગરીમાં સુદર્શન નામે નગર

स कीदृश इत्याह—आहत्यः विभवशाली, यावत् अपरिभूतः=केनापि पराम वितुमशक्यः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुक्रो नाम परिव्राजक आसीत् । सकीदृश इत्याह “रिउन्वेयजजुन्वेयसामवेयअथव्वणवेयसद्धितंतकुसले” ऋग्वेद यजुर्वेदसामवेदाथ-र्ववेदषष्ठितन्त्र—कुशलः सर्ववेदसर्वतन्त्रनिपुण इत्यर्थः, ‘संखसमये लद्धट्टे’ सांख्यसमये लब्धार्थः सांख्यशास्त्राभिमतसकलतत्त्वार्थामिद्वः’ पञ्चयमपञ्च नियमयुक्त, तत्र=अ-हिंसा सत्यास्तेदब्रह्मचर्यापरिग्रहाः पञ्चयमाः, शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणि-

का नगर सेठ रहता था । यह विशेष विभूतिशाली था और अपरिभूत था—कोई भी व्यक्ति इसका तिरस्कार (अपमान) नहीं कर सकता था । (तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए णामं परिव्वायए होत्था) उसी काल और उसी समयमें शुक्र नाम का परिव्राजक था (रिउन्वेय, जजुन्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सद्धितंतकुसले, संख समए लद्धट्टे पंचजम पंच नियमजुत्तं सोयमूलगं दसप्पयारपरिव्वायगधम्मं दागधम्मंच सोयधम्मं च तित्थामिसेयंच आघवमाणे पणवेमाणे घाउरत्तवत्थपवरपरिहिए ) यह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद षष्ठितंत्र इनमें कुशल था—निपुण था । सांख्य सिद्धान्त प्रतिवादित सकल तत्त्वों के अर्थका ज्ञाता था । पंचयम और पंचनियम से युक्त तथा शौच मूलक दश प्रकारके परिव्राजक धर्मका दान रूपधर्म का शौच रूप धर्मका तीर्थाभिषेकका उपदेश देता था उसका प्रचार करता था । अहिंसा, सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य और परिग्रह ये पांच यम हैं । शौच सन्तोष तप स्वाध्याय, ईश्वरप्रणि-

शेठ रहते। होते। ते भूणञ्च ऐश्वर्यं संपन्नं अने अपरिभूत होते। कोई पण्य व्यक्ति तेमने। तिरस्कार न करी सकती होती। (तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए णामं परिव्वायए होत्था) ते काले अने ते समये ओक शुक्र नामे परिवा-  
जक होते। (रिउन्वेय, जजुन्वेय, सामवेय, अथव्वणवेय, सद्धितंतकुसले, संख समए लद्धट्टे पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलगं दसप्पयारपरिव्वायगधम्मं दागधम्मं च सोयधम्मं च तित्थामिसेयंच आघवमाणे पणवेमाणे घाउरत्तवत्थ-  
पवरपरिहिए) ते ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तेमञ्च षष्ठितंत्रमां कुशल होते, निपुण होते। सांख्यसिद्धान्तमां कडेला गधा वरवोने। ते गणु-  
नार होते। ते पांच यम तेमञ्च पांच नियम थी युक्त होते। ते शौचमूलक दश जातना परिमाणक धर्मो, दानरूप धर्मो शौचरूप धर्मो तीर्थाभिषेक (तीर्थस्नान) ने। उपदेश आपतो होते। अने पोटाना धर्मो अन्धार करतो होते। अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य अने परिग्रह ओ पांच ‘यम’ छे

ધાનાનિ પઞ્ચનિયમાઃ તૈર્યુક્તમ્ શૌચમૂલકં દશપ્રકારં=યમનિયમસંમેલનેન દશવિધં પરિવ્રાજકધર્મં દાનધર્મ=દાનરૂપં ધર્મં ચ શૌચધર્મ=મૃદ્ધારિજનિતં શૌચરૂપં ધર્મં ચ તીર્થાભિષેકં=ગાઙ્ગાદિ તીર્થોદકસ્નાનં ચ આરુપ્યાપયન્ પ્રસ્થાપયન્ પ્રવર્તયન્ પ્રજ્ઞાપયન્ બોધયન્ ' ધાતુરક્તવસ્ત્રપવરપરિહિત' ધાતુરક્તવસ્ત્રપવરપરિહિતઃ=ગૈરિકધાતુરક્તવસ્ત્ર પવરપરિધાનઃ, ગૈરિકરક્તવસ્ત્રધારીત્યર્થ, ' તિદંડ-કુંડિય - છત્ર - છલ્લયં - કુસ-પવિત્તય-કેસરી હત્યગ' ત્રિદંડ-કુંડિકા-છત્ર-પદ્મના-લકાકુશ-પવિત્રક-કેસરી હસ્તગતઃ, ત્રિદંડાદીનિ સપ્ત હસ્તગતાનિ યસ્ય સ તથા, તત્ર ત્રિદંડ=મનોવાકકાયદંડત્રયપરિજ્ઞાનાર્થં દંડત્રયં, કુંડિકા=કમળહલ્લ, છત્રં, પ્રસિદ્ધં, પદ્મનાલકં = ત્રિકાષ્ઠિકા, અંકુશઃ - પ્રસિદ્ધઃ-દ્વસપલ્લવછેદનાર્થ, પવિત્રક=તામ્રમયમંજુલીયકં, કેસરી = ચીવરસ્ખંડં, પરિવ્રાજકસહસ્રેણ સાર્થં સંપરિવૃતઃ

ધાન યે પાંચ નિયમ હૈં । મિઢી ઓર પાની સે શુદ્ધ કરના હસકા નામ શૌચ હૈં । ગંગા આદિ તીર્થકે જલમેં સ્નાન કરના હસકા નામ તીર્થાભિષેક હૈં । इन बातों को आरुप्यापन-कथन करता हुआ प्रख्यापन प्ररूपणा करता हुआ यह शुक जिन बख्शों को पहिरता था वे गैरिक धातु से रंगे हुए थे । अर्थात् गैरिक धातु से रंगे हुए बख्शों को ही यह पहिरता था । (तिदंढकुंडिय, छत्र छल्लयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगपरिव्वायगसहस्रेण सद्धि संपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छह ) मन, वचन और काय इन तीन दुँडों के परिज्ञान के लिये यह दंढ त्रय का धारी था । कमण्डलु, छत्र, त्रिकाष्ठिका, अंकुश, ताम्रमय अंगुलीयक, ( अंगठी ) और चीवर खंड ये सब उस के हाथ में थे । १ एक हजार साधु मंडल से यह परिवृत था । सो जहाँ वह सौगंधिका नगरी थी और उस में भी जहाँ परिव्राजकों का

શૌચ, સ્નાપ, તપ, સ્વાધ્યાય, ઇન્દ્રિયપ્રભિધાન એ પાંચ નિયમો છે. માટી અને પાણીથી શુદ્ધ કરવું તે શૌચ કહેવાય છે. ગંગા વગેરે તીર્થ જળોમાં નાહવું તે તીર્થાભિષેક કહેવાય છે. આ યમ નિયમોનું આખ્યા વચન તેમજ પ્રરૂપણા કરતો તે શુક પરિવ્રાજક ગૈરિક (ગેરુઆ) વસ્ત્રો પહેરતો હતો. એટલે કે ગેરુ થીરંગેલા વસ્ત્રો જ તે પહેરતો હતો. (તિદંડ કુંડિય, છત્ર, છલ્લયંકુસપવિત્તયકેસરીહત્યગ પરિવ્રાજકસહસ્રેણ સદ્ધિ સંપરિવુડે જેણેવ સોગંધિયા નયરી જેણેવ પરિવ્રાજકાવસહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ) મન, વચન અને કાય આ ત્રણ દંડોના પરિજ્ઞાન માટે તે દંડત્રય (ત્રણદંડ) ધારણ કરતો હતો. કમંડલુ, છત્ર, ત્રિકાષ્ઠિકા, અંકુશ તાંબાની વીંટી અને ચીવરખંડ આ બધાં તેના હાથમાં હતાં. એક હજાર સાધુઓ તેની સાથે હતા. તે ફરતો ફરતો ન્યાં

યત્રૈવ સૌગન્ધિકા નગરી યત્રૈવ પરિવ્રાજકાવસથઃ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પરિવ્રાજકાવસથે માળ્ડકનિષ્ણેપં કરોતિ = ત્રિદંડાદિન્યુપકરણાનિ સ્થાપયતિ, કૃત્વા સાંખ્યસમયેન સાંખ્યસિદ્ધાન્તાનુસારાચારેણ આત્માનં ભાવયન્ વિહરતિ ।

તતઃ સ્વલ્પ સૌગન્ધિકાયાં નગર્યાં શ્રૃંગાટકત્રિકચતુષ્કચત્વરેષુ યાવદ્ રાજ-પથેષુ बहुजनोऽन्योन्यस्य परस्परम्-एवमाख्याति - કથયતિ, एवं સ્વલ્પ શુકો નામ પરિવ્રાજક इह अस्यां सौगन्धिकायां नगर्यां हव्यमागतः=સમાગતઃ યાવદા-ત્માનં ભાવયન્ વિહરતિ । પરિપક્ષિતા । સુદર્શનોઽપિ નિર્ગતઃ । તતઃ સ્વલ્પ સ આશ્રમ ત્યાં વહાં આયા । ( ઉવાગચ્છિત્તા પરિવ્રાજકાવસહસિ મંડલ-નિક્ષેવં કરેદ્, કરિત્તા સંલ્પ સમયેણં ભાવેમાણે વિહરદ્ ) આકર લસને લસ પરિવ્રાજકાશ્રમ મેં અપને માંડોં કો રલ્પ દિયા । ઓર રલ્પ કર સાંખ્ય સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર અપની પ્રવૃત્તિ ચાલુ રલ્પતા હુઆ ઠહર ગયા । ( તણં સોગંધિયાઇ નયરીઇ સિંઘાડગતિગચ્છલ્પ ચચ્ચરેસુ बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ) હસકે ઘાદ લસ સૌ-ગંધિકા નગરી મેં શ્રૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર યાવત્ રાજમાર્ગ મેં અનેક જન પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર ઘાત ચીત કરને લગે ( एवं સ્વલ્પ સુઇ પરિવ્રાજક इह हव्यमागए जाव विहरइ ) બંધુઓ ! શુક નામ કા પરિવ્રાજક હસ અપની સૌગંધિકા નગરી મેં અમીર આયા હૈ । - વહ સાંખ્ય સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર અપની પ્રવૃત્તિ રલ્પતા હુઆ પરિવ્રાજકા શ્રમ મેં ઠહરા હુઆ હૈ । હસ ઘાત સે પરિચિત્ત હોકર ( પરિસા નિગગયા, સુદંસણો, નિગગઇ, તણં સે સુઇ પરિવ્રાજક તીસે પરિસાઇ સુદંસણસ્સ

સૌગંધિકાનગરી હતી અને ત્યાં પરિવ્રાજકોના આશ્રમ હતો ત્યાં આળ્યો. (ઉવાગચ્છિત્તા પરિવ્રાજકાવસહસિ મંડલનિક્ષેવં કરેદ્, કરિત્તા સંલ્પ સમયેણં ભાવેમાણે વિહરદ્) તે પરિવ્રાજકોના આશ્રમમાં પહોંચીને તેને પોતાની બધી વસ્તુઓ મૂકી દીધી અને ત્યાં સાંખ્યસિદ્ધાન્તને અનુસરીને પોતાના ધર્મનો પ્રચાર કરતો રહેવા લાગ્યો (તણં સોગંધિયાઇ નયરીઇ સિંઘાડગતિગચ્છલ્પ ચચ્ચરેસુ बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) ત્યારબાદ સૌગંધિકા નગરીમાં શ્રૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક ચત્વર અને રાજમાર્ગમાં ઘણા માણસો આ રીતે વાતો કરવા લાગ્યા- (એવં સ્વલ્પ સુઇ પરિવ્રાજક इह हव्यमागए जाव विहरइ) મિત્રો ! આપણી આ નગરીમાં શુક નામે એક પરિવ્રાજક હેમણાં જ આળ્યો છે. સાંખ્યસિદ્ધાન્ત અનુસાર તે પોતાની પ્રવૃત્તિઓ આચરે તો પરિવ્રાજક આશ્રમમાં રોકાયો છે. આ વાતની બાજુ થતાં જ (પરિસા



भिषेक पूतात्मानः=जलेनाभिषेकः स्नानं, तेन पूतः शुद्ध आत्मा येषां ते, प्राणिनः 'अविग्धेण' अविघ्नेन प्रतिबन्धरहितेन 'सगं' स्वर्गं गच्छन्ति । ततः खलु स सुदर्शनः शुकस्य शुकनाम्नः परिव्राजकस्य अन्तिके=समीपे धर्म=शौचमूलकं शुकोक्तधर्मं, श्रुत्वा 'हृष्टे, हृष्टः प्रमुदितः सन् शुकस्यान्तिके शौचमूलकं धर्मं गृह्णाति । सांख्यमतं स्वीकुरुतेस्म शुक परिव्राजकस्य पशुपासको जातः, शुकमेव धर्माचार्यत्वेन मन्यतेस्म, धर्मं गृहीत्वा स सुदर्शनः परिव्राजकान् प्रतिदि-वसं विपुलेन निस्तीर्णेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाऽऽहारेण, तथा बल

सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ ) हे-देवानुप्रिय ! जो भी हमारा कोई कर चरण, कमण्डलु आदि-अशुचि हो जाती है उसे पहिले शुद्ध नवीन मृत्तिका से हम मांज लेते हैं और बाद में पवित्र जल से धो लेते हैं- ( तओ तं असुई सुई भवइ, एवं खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणे अविग्धेण सगं गच्छन्ति ) इस तरह वह अशुचि पदार्थ शुचि-पवित्र हो जाता है । इसी प्रकार जीव भी जलाभिषेक से जलस्नान से पवित्रात्मा बन कर बहुत जल्दी बिना किसी रुकावट के स्वर्ग को पहुँच जाते हैं । ( तएणं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हृष्टे सुयस्स अंतिए सोयमूलयं धम्मं गिण्हइ ) इस प्रकार वे सुदर्शन शुक के पास धर्म का श्रवण कर बहुत अधिक हर्षित हुए । बाद में उन्होंने शुक से शौच मूलक धर्म अंगीकार कर लिया । ( गेण्हित्ता परिब्बायए विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपरिग्गहेणं परिलाभेमाणे जाव विहरइ ) शौचमूलक धर्म

देवानुप्रिया ! किं वि असुइ भवइ तं सव्वं सज्जो पुढवीए आसिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ ) हे देवानुप्रिय ! अमारा हाथ, पाग कम-ण्डलु वगैरे अपवित्र थछ नाथ छे तो पहिलां तेने नवीन माटीशी अभि उट्टी ओ छीओ. अने तयार पछी शुद्ध पाणी थी साइ करी लधओ छीओ. ( तओ तं असुई सुई भवइ एवं खलु जीवा जलाभिसेय पूयप्पाणे अविग्धेण सगं गच्छन्ति ) ओ भ्रम ! ते अपवित्र पदार्थ पवित्र थछ नाथ छे. आ रीते एव पणु पाणीशी स्नान करी । पवित्रात्मा थछने सत्तरे कोछ पणु नातना अट-काय के भुशुकेदी वगर २।गे पछोथी नाथ छे. ( तएणं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा ह सुयस्स अंतिए सोयमूलयं धम्मं गिण्हइ ) अ रीते ते सुदर्शन नगर शेठ शुकनी पासेथी धर्मनु श्रमणु करीने भूअनं डपं पाभ्या अने तेनी पासेथी तेमछे शौच मूलक धर्म स्वीकाथी ( गेण्हित्ता परिब्बायए विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपरिग्गहेणं परिलाभे माणे जाव विह-



प्रतिग्रहेण प्रतिष्ठापयन् सत्कारयन् संमानयन् यावद् विहरति=विचरति । ततस्तदनन्तरं खलु स शुकः परिव्राजकः सौगन्धिकाया नगरीं निर्गच्छति, निर्गत्य च बहिर्जनपदविहारं विहरति=करोतिस्म ॥ १९ ॥

( मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं थावच्चापुत्तस्स समोसरणं, परिसा निग्गया सुदंसणो वि णिग्गओ, थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—तुम्हाणं किं मूलए धम्मे पन्नत्ते ? तएणं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वयासी—सुदंसणा अम्हाणं विणयमूले धम्मे पन्नत्ते सेवि य विणए दुविहे पन्नत्ते तं जहा—अगारविणए अणगार विणए य, तत्थ णं जे से अगारविणए से णं चत्तारि अणुवयाइं सत्त सिक्खावयाइं, एक्कारस उवासगपडिमाओ । तत्थणं जे से अणगारविणए से णं चत्तारि महावयाइं, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ

अंगीकार करके उन्होंने फिर अशन पान, स्वाद्य और स्वाद्यरूप चारों प्रकार के आहार से और वस्त्र के प्रदान से उस शुक परिव्राजक को लाभान्वित किया सत्कारित किया, सम्मानित किया। (तएणं से सुए परिन्वायगे सोगंधियाओ नयरीओ निगच्छइ निगच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ) इसके बाद वह शुक परिव्राजक सौगंधिका नगरी से निकला और निकल कर बाहर अन्य देशों की ओर विहार कर गया। “सू-१९.”

रइ ) शौच मूलक धर्म स्वीकारिने तेमछे शुक परिनिव्रज्जने अशन, पान, भाद्य अने स्वाद्य इय आदि प्रकारना आहारो तेमव वओ अर्पिने लाभान्वित कर्यो अने सम्मान कथुं. ( तएणं से सुए परिन्वायगे सोगंधियाओ नयरीओ निगच्छइ, निगच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ) त्थार पछी शुक परिनिव्रज्जक सौगंधिका नगरीथी गहारना जीवइ देशो तरइ बिहार करवा नीकज्जा ॥२५०१६॥

अदिक्षादाणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं सव्वाओ  
राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसणसल्लाओ वेरमणं,  
दसविहे पचक्खाणे बारस भिक्खुपडिमाओ इच्चेएणं दुविहेणं  
विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुब्बेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता  
लोयग्गपइट्ठाणा भवंति ॥ सू० २० ॥

( तेणं कालेणं ) इत्यादि

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौगन्धिकार्या नगर्यां थावच्चापुत्रस्य  
समवसरणमागमनमभूत्, तदा परिषन्निर्गता = सौगन्धिका नगरी निवासिनो  
लोकाः स्थापत्यापुत्रं वन्दितुं निर्गताः, सुदर्शनोऽपि = सुदर्शनाम्ना नगरश्रेष्ठी अपि,  
निर्गतः, तत्रागत्य थावच्चापुत्रं वन्दते नमस्यति, वन्दिरवा नत्वा च एवं = वक्ष्य  
माणप्रकारेण, अवादीत्—हे भगवान् ! युष्माकं किं मूलको धर्मः प्रहसः ? ततस्त-

‘ तेणं कालेणं तेणं समएणं ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तेणं कालेणं तेणं समएणं ) उस कल और उस समय में  
उस सौगन्धिकानगरी में बिहार करते हुए (थावच्चापुत्तस्स समोसरणं)  
स्थापत्यापुत्र अनगर का आगमन हुआ। (परिसा निग्गया, सुदंसणो वि  
णिग्गओ) स्थापत्यापुत्रका आगमन सुनकर सौगंधिका नगरीके निवासी  
जन उनको वंदना करनेके लिये चले सुदर्शनसेठ भी चला। (थावच्चा-  
पुत्तं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) उसने वहाँ पहुँचकर  
स्थापत्या पुत्र अनगरको वचन से स्तुति करने रूप वंदना की तथा काय  
से उन्हे नमन किया। वंदना नमस्कार करके फिर उसने उनसे इस प्रकार

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते क्षणे अने ते समये तेज सौगं-  
धिका नगरीमां बिहार करतां (थावच्चा पुत्तस्स समोसरणं) स्थापत्यापुत्र अन-  
गर आग्या ( परिसा निग्गया सुदंसणो वि णिग्गओ) स्थापत्यापुत्रने आववाणी  
अणु थता ज सौगंधिका नगरीना नागरिको तेभने वंदन करवा नीकणी पइया  
सुदर्शन शेठ पणु तेभने वंदन करवा नीकण्या. ( थावच्चापुत्तं वंदइ, नमंसइ  
वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी ) त्यां पडोन्थीने तेभणु स्थापत्या पुत्र अनगर  
ना वयनथी स्तुति करीने वंदन कर्था तेभज कायाथा नसीने तेभने नमस्कार  
कर्था. वंदन अने नमस्कार करीने सुदर्शन शेठे तेभने विनंती करी ( तुस्हाणं

દનન્તરં ત્વલ્લ સ્થાપત્યાપુત્રઃ સુદર્શનેનૈવમુક્તઃ સન્ સુદર્શનમેવમવાદીત્-

હે સુદર્શન ! અસ્માકં ધર્મઃ દુર્ગતૌ પતતો જન્તુન્ ધરતિ રક્ષતિ શુભસ્થાનં પ્રાપયતિ ઇતિ ધર્મઃ આચારઃ, વિનયમૂલઃ=વિનયતિ અપનયતિ નાશયતિ સકલ-લ્લેશકારકમષ્ટવિધં કર્મ યઃ સ વિનયઃ કર્માપનયનસમર્થચારિત્રલક્ષણોઽનુષ્ઠાન-વિશેષઃ સ એવ મૂલં કારણં યસ્ય સ તથા,-ઉક્તં ચ-

કર્મણાં ત્રાગ્ વિનયનાદ્ વિનયો વિદુષાં મતઃ ।

અપવર્ગં ફલાદ્વ્યસ્ય મૂલં ધર્મતરોરયમ્ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

ચારિત્રમાશ્રિત્ય લઘ્વરિથતિક્તિર્થઃ, યદ્વા વિનયો વિનીતતા દ્રવ્યભાવાભ્યાં નમ્રતા તન્મૂલકઃ, પ્રજ્ઞત્તઃ=તીર્થકરૈઃ પ્રરૂપિતઃ । સોઽપિ ચ વિનયો દ્વિવિધઃ તદ્વચા-

કહા (તુમ્હા જાં કિં મૂલે ધર્મે પવન્તે) હે ભગવાન ! આપકા ધર્મ કિં મૂલક પ્રજ્ઞત્ત હુઆ હૈ । (તણં થાવચ્ચાપુત્તે સુદંસણેણં એવં વુત્તે સમાણે સુદંસણં એવં વચસી) ઇસ પ્રકાર સુદર્શન સેઠ કે દ્વારા ઇસ પ્રકાર પૂછે ગયે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને હસસે ઇસ પ્રકાર કહા (સુદંસણા અમ્હાણં વિણયમૂલે ધર્મે પવન્તે) હે સુદર્શન હમારા ધર્મ-વિનય મૂલક પ્રજ્ઞત્ત હુઆ હૈ । દુર્ગતિમે જાને સે જો પ્રાણિયો કો વચાતા હૈ ઔર શુભ સ્થાન મેં ડન્હે પહુંચાતા હૈ હસકા નામ ધર્મ-આચાર હૈ । સકલ ક્લેશોંકા દાતા જો 'અપ્પટ પ્રકાર કા કર્મ હૈ હસે જો નાશ કરતા હૈ હસકા નામ વિનય હૈ । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ હૈ । યહ વિનય હી ધર્મ કા મૂલ કારણ કહા ગયા હૈ-કહા મિ હૈ જિસકે દ્વારા જીવ મૃદિતિ કર્મોં કા નાશ કર દેતા હૈ તથા અપવર્ગ રૂપ ફલ સે યુક્ત હુએ જો ધર્મરૂપી વૃક્ષકા મૂલ હૈ-વહો વિનય હૈ । એસા વિનય ચારિત્ર રૂપ હી માના ગયા હૈ

કિં મૂલે ધર્મે પવન્તે) હે ભગવાન ! આપના ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો ઠું છે. (તણં થાવચ્ચાપુત્ત સુદંસણેણં એવં વુત્ત સમાણે સુદંસણં એવં વચસી) સુદર્શન શેઠના આ પ્રશ્નને સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે બવાબમાં તેમને કહ્યું (સુદંસણા અમ્હાણં વિણયમૂલે ધર્મે પવન્તે) હે સુદર્શન ! અમાગ ધર્મનો આધાર વિનય મૂલક છે. દુર્ગતિમાં બતા પ્રાણીઓને જે અટકાવે છે અને શુભસ્થાનોમાં તેમને લઈ જાય છે તે ધર્મ-આચાર કહેવાય છે સમસ્ત કલેશોને ઉત્પત્ત કરનાર આઠ પ્રકારના ક્રોધોના જે નાશ કરે છે તેનું નામ 'વિનય' છે. એવું જ વિનય આશ્રિત રૂપ અનુષ્ઠાન વિશેષ છે આ વિનય જ ધર્મનું મૂળ કારણ છે કહ્યું છે કે જેના વડે છવ બલદી ક્રોધોના નાશ કરે છે તેમજ અપવર્ગ (મોક્ષ) રૂપી વૃક્ષનું જે મૂળ છે તે 'વિનય' જ છે આવો વિનય આશ્રિત રૂપ જ ગણાય છે (સે વિવ વિણે દુર્વિદે પળ્લન્તે) તે વિનય

અગારવિનયોઽનગારવિનયઃ । તત્ર સ્વલુ યઃ સઃ અગારવિનયઃ સ સ્વલુ ચતાવારિઅણુ-  
વ્રતાનિ, સપ્ત શિક્ષાવ્રતાનિ, એકાદશોપાસકપ્રતિમાઃ । અગારવિનયવિષયે સવિસ્તર  
વર્ણનમુપાસકદશાઙ્ગટીકાયામગારધર્મસંજીવન્યાં દ્રષ્ટવ્યમ્; તત્ર ચતુર્વિંશતિતમતીર્થ-  
કર શ્રી મહાવીરશાસનત્વેન આનન્દગાથાપતિવર્ણને પચ્ચાણુવ્રતાનિ પચ્ચમહાવ્રતાનિ  
વર્ણિતાનિ । અત્રારિષ્ટનેમેદ્વાંવિંશતિતમતીર્થકરશાસનચતુર્થવ્રતસ્ય પરિગ્રહવિરમણ-

( સે વિ ચ વિણયે દુવિહે પળણ્ણે ) વહ વિનય મ્હી દો પ્રકાર કા પ્રજ્ઞસ  
હુઆ હૈ । (તંજહા) વહ હસ પ્રકાર સે-(અગારવિણે અણગારવિણે ) ૧  
અગાર વિનય-દુસરા અનગાર વિનય । યે દો મેદ ચારિત્ર પર વિનય કો  
લક્ષ્ય મેં રલ્લકર કિયે ગયે હૈ । જબ વિનય કા અર્થ વિનીતતા-નમ્રતા  
હોતી હૈ ઉસ સમય દ્રવ્ય કી અપેક્ષા નમ્રતા ઓર ભાવ કી અપેક્ષા નમ્રતા  
હસ તરહ મ્હી ઉસકે દો મેદ હો જાતે હૈં ( તત્થ ણં જે સે આગારવિણે  
સેણં ચત્તારિ અણુવ્વચાહં સત્તસિક્કાવચાહં એકકારસલ્લવાસગપહિ  
માઓ ) અગારવિનય ચાર અણુવ્રત સાત શિક્ષાવ્રત તથા ૧૧ ઉપાસક  
પ્રતિમા રૂપ હૈ । હસ વિષયકા વિસ્તૃત વર્ણન ઉપાસક દશાંગકી ટીકા  
અગારધર્મ સંજીવની મેં કિયા ગયા હૈ અતઃ યહવિષય વહાં સે જાનહેના  
ચાહિયે । વિશેષ કેવલ હતના હી હૈ-વહાં ચૌવીસવેં તીર્થકર શ્રી મહા-  
વીર સ્વામી કા શાસન હોને સે ઉપાસક દશાઙ્ગસૂત્ર મેં આનન્દગાથાપતિ  
કે વર્ણન મેં પાંચ અણુવ્રત ઓર પાંચ મહાવ્રત કહે ગયે હૈં કિન્તુ યહાં  
ચાઈસવેં તીર્થકર શ્રી અરિષ્ટનેમિ મગવાન કે શાસન મેં ચૌથે વ્રત કા

ના પથ્થુ યે પ્રકાર કહેવામાં આવ્યા છે. ( તં જહા ) તે પ્રકારે આ પ્રમાણે  
છે (અગારવિણે અણગારવિણે) ૧, આગાર વિનય, ૨, અનગાર વિનય  
આ અન્ને વિનયના પ્રકારે ચારિત્ર ગત વિનયને અનુલક્ષીને જ કરવામાં  
આવ્યા છે જ્યારે વિનય શબ્દનો અર્થ 'વિનીતતા' (નમ્રતા) થાય છે ત્યારે  
દ્રવ્યની અપેક્ષાએ નમ્રતા તેમજ ભાવની અપેક્ષાએ પણ નમ્રતા આ રીતે  
પથ્થુ તેના યે લેહ થાય છે (તત્થ ણં જે સે અગારવિણે સે ણં ચત્તારિ અણુવ્વચાહં  
સત્ત સિક્કાવચાહં, એકકારસલ્લવાસગપહિમાઓ) આગાર વિનય પાંચ અણુ  
વ્રત સાત શિક્ષાવ્રત તેમજ અગિયાર ઉપાસક પ્રતિમા રૂપ છે. આ વિષે સ-  
વિસ્તર માહિતી ઉપાસક દશાંગસૂત્રની અગારધર્મસંજીવની ટીકામાં આપે  
લી છે જિજ્ઞાસુ જનોએ ત્યાંથી બહુ લેવું નોંધ્યું. વિશેષ કેવળ એટલું જ  
છે કે ત્યાં ચૌવીસમા તીર્થકર શ્રી મહાવીર સ્વામીનું શાસન હોવાથી આન-  
ન્દ ગાથાપતીના વર્ણનમાં પણ અણુવ્રત અને પાંચ મહાવ્રત કહેલાં છે. પરંતુ  
અહીં બાવીસમાં તીર્થકર શ્રી અરિષ્ટનેમિ ભગવાનના આસનમાં ચોથાવ્રતનો

વ્રતેઽન્તર્ભાવાત્ ચાલ્જ્જામો ધમ્મો ઇતિ વચનાત્ ચત્વારિ અણુવ્રતાનિ, ચત્વારિ મહાવ્રતાનિ આસન્ ઇતિ વિશેષઃ । તત્ર સ્વલ્પ યઃ 'સોઽનગારવિનયઃ સ સ્વલ્પ પશ્ચ મહાવ્રતાનિ, તદ્યથા-સર્વસ્માત્ પ્રાણાતિપાતાદ્ વિરમણં<sup>૧</sup>, સર્વસ્માદ્ મૃષાવાદાદ્ વિરમણં<sup>૨</sup>, સર્વસ્માદ્ અદત્તાદાનાદ્ વિરમણં<sup>૩</sup>, સર્વસ્માત્ પરિગ્રહાદ્ વિરમણં । સર્વસ્માદ્ રાત્રિભોજનાદ્ વિરમણં, યાવન્મિધ્યાદર્શનત્યાદ્ વિરમણં, દશવિધં પ્રત્યાહ્યાનં દ્વાદશભિક્ષુપ્રતિમાઃ, ઇત્યેતેન દ્વિવિધેન, વિનયમૂલકેન ધર્મેણ 'અણુપુલ્વેણ' અણુપુલ્વેણ ક્રમેણ 'અદ્વક્રમ્મપગડીઓ' અષ્ટકર્મપ્રકતીઃ જ્ઞાનાધરણીયાઘષ્ટકર્મપ્રકૃતીઃ 'સ્વવેત્તા' ક્ષપયિત્વા 'લોચગપહટ્ટાણા' લોકાગ્રપતિપાંચવે પરિગ્રહવિરમણવ્રત મેં અન્તર્ભાવ હોને સે 'ચાલ્જ્જામો ધમ્મો' હસ વચન સે ચાર અણુવ્રત ઔર ચાર મહાવ્રત કહે ગયે હૈં ।

(તત્થ ણં જે સે અનગારવિનય સે ણં ચત્તારિ મહવ્વયાઈ તં જહા) હસી તરહ જો અનગાર વિનય હૈ વહ ચાર મહાવ્રત રૂપ હૈ જૈસે (સઘ્વાઓ પાણાહવાયાઓ વેરમણં સઘ્વાઓ મુસાવાયાઓ વેરમણં સઘ્વાઓ અદિન્નાદાણાઓ વેરમણં, સઘ્વાઓ પરિગ્રહાઓ વેરમણં, સઘ્વાઓ ભોયણાઓ વેરમણં જાવ મિચ્છાદંસણસહ્જાઓ વેરમણં) સમસ્ત પ્રાણાતિપાત સે વિરમણ, સમસ્ત મૃષાવાદ સે વિરમણ સમસ્ત અદત્તાદાન સે વિરમણ, સમસ્ત પરિગ્રહ સે વિરમણ હોના હન ચાર પ્રકાર કે મહાવ્રતરૂપ તથા સમસ્ત રાત્રિ ભોજન સે વિરમણ યાવન્ મિધ્યાદર્શન શલ્ય સે વિરમણ હોના હન રૂપ તથા (દસવિહે પચ્ચક્કલાણે વારસમિક્કુપહિમાઓ દસ વિધ પ્રત્યાહ્યાન રૂપ ઔર ૧૨ વારહ મિશ્સુ પ્રતિમા રૂપ હૈ (હચ્ચેવણં દુવિહેણં વિનયમૂલણં ધમ્મેણં અણુપુલ્વેણં અદ્વક્રમ્મપગડીઓ સ્વવેત્તા

પાંચમાં પરિશ્રુ વિરમણુ વ્રતમાં અન્તર્ભાવ હોવાથી "ચાલ્જ્જામો ધમ્મો" એ વચનથી ચાર અણુવ્રત અને ચાર મહાવ્રત કહ્યાં છે. (તત્થ ણં જે સે અનગાર વિનય સે ણં ચત્તારિ મહવ્વયાઈ તં જહા) આ રીતે ૪ અનગાર વિનય પણ ચાર મહાવ્રત રૂપ છે. જેમકે (સઘ્વાઓ પાણાહવાયાઓ વેરમણં સઘ્વાઓ મુસાવાયાઓ વેરમણં સઘ્વાઓ અદિન્નાદાણાઓ વેરમણં સઘ્વાઓ પરિગ્રહાઓ વેરમણં સઘ્વાઓ રાહ ભોયણાઓ વેરમણં જાવ મિચ્છાદંસણસહ્જાઓ વેરમણં) સકળ પ્રાણાતિપાતથી વિરમણુ સકળ મૃષાવાદ (અસત્યભાષણ) થી વિરમણુ, સકળ અદત્તાદાનથી વિરમણુ, અને સકળ પરિગ્રહથી વિરમણુ આ ચાર ભ્રાતના મહાવ્રત રૂપ છે. રાત્રિ ભોજનથી વિરમણુ યાવત્ મિધ્યાદર્શન શલ્યથી વિરમિત થવું, (દસવિહે પચ્ચક્કલાણે વારસમિક્કુપહિમાઓ) દશવિધ પ્રત્યાહ્યાનરૂપ અને બાર પ્રતિમારૂપ છે. (હચ્ચેવણં દુવિહેણં વિનયમૂલણં ધમ્મેણં અણુપુલ્વેણં અદ્વક્રમ્મપગડીઓ સ્વવેત્તા

ષ્ઠાનાઃ=મોક્ષપદાવસ્થિતા ભવન્તિ । લોકોગ્રે સિદ્ધિપદે પ્રતિષ્ઠાનં સ્થિતિયૈર્વાં તે તથા સિદ્ધા ભવન્તિ ॥ ૨૦ ॥

મૂલમ્-તપ્ત્વં થાવચ્છાપુત્તે સુદંસણં એવં વયાસી-તુભ્યેનં સુદંસણા ! કિં મૂલમ્ ધમ્મે પદ્મત્તે ? અમ્હાણં દેવાણુપ્પિયા ! સોયમૂલે ધમ્મે પદ્મત્તે જાવ સગ્ગં ગચ્છંતિ, તપ્ત્વં થાવચ્છાપુત્તે સુદંસણં એવં વયાસી-સુદંસણા ! સે જહાનામમ્ કેઇ પુરિસેણં મહં રુહિરકયં વત્થં રુહિરેણં ચેવ ધોવેજ્ઞા તપ્ત્વં સુદંસણા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણં ચેવ પક્ખાલિજ્ઞમાણસ્સ અત્થિ કાઇ સોહી ? ણો ઇણદ્દે સમદ્દે, એવામેવ સુદંસણા ! તુભંપિ પાણાઇવાણં જાવ મિચ્છાદંસણસંલ્લેણં નત્થિ સોહી જહા તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ રુહિરેણં ચેવ પક્ખાલિજ્ઞમાણસ્સ નત્થિ સોહી, સુદંસણા ! સે જહા ણામમ્ કેઇ પુરિસેણં મહં રુહિરકયં વત્થં સજ્જિયાસ્સારેણં અણુલિપ્પિ, અણુલિપ્પિત્તા પયણં આરુહેઇ આરુ-હિત્તા ઉપ્પંહં ગાહેઇ, ગાહિત્તા તત્તો પચ્છાસુદ્ધેણંવારિણા ધોવેજ્ઞા સે ણૂણં સુદંસણા ! તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાસ્સારેણં અણુલિત્તસ્સ પયણં આરુહિયસ્સ ઉપ્પંહં ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણં વારિણા લોચગ્ગપટ્ટાણા ભવંતિ ) ઇસ પ્રકાર દ્વિવિધ વિનયમૂલક ધર્મની કી આરાધના સે જીવ ક્રમ ૨ સે અષ્ટ વિધ કર્મોની પ્રકૃતિયોની કો સ્વપાકર લોકકે અગ્ર ભાગમેં વિરાજમાન હો જાતે હેં ।-સિદ્ધ પદકે મોક્ષાવન જાતે હેં । સૂત્રા॥૨૦॥

લોચગ્ગપટ્ટાણા ભવંતિ ) આ રીતે વિનયના બંને પ્રકારો જે ધર્મનાં મૂળ છે એવા ધર્મની આરાધના કરવાથી જીવ ધીમે ધીમે અતુલ્ય કર્મોની આઠ બાતની પ્રકૃતિઓનો નાશ કરીને લોકના અગ્રભાગે સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે, તેઓ સિદ્ધપદને લોચગ્ગનાર થાય છે, ॥ સૂ-૨૦ ॥

પક્ષાલિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવઈ ? હંતા ભવઈ, એવામેવ સુદં-  
સણા ! અમ્હંપિ પાણાઙ્ગવાયવેરમણેણં અત્થિ સોહી, જહા વા  
તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ જાવ સુદ્ધેણં વારિણા પક્ષાલિજ્જમા-  
ણસ્સ અત્થિ સોહી, તણં સે સુદંસણે સંબુદ્ધે થાવચ્છાપુત્તં વંદઈ,  
નમંસઈ, વંદિત્તા નમંસિત્તા એવં વયાસી-ઈચ્છામિણં ભંતે ! ધમ્મં  
સોચ્છા જાણિત્તણ જાવ સમણોવાસણ જાણ અહિગયજીવાજીવે  
જાવ પહિલામેમાણે વિહરઈ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

( તણં થાવચ્છા. ) इत्यादि ।

ટીકા- તતઃ સ્વલુ સ્થાપત્યાપુત્રઃ સુદર્શનમેવમવાદીત્-તત્વ સ્વલુ સુદર્શનઃ  
કિં મૂલકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞતઃ ? એવં સ્થાપત્યાપુત્રેણ પૃષ્ઠઃ સન્ સુદર્શનો વદતિ-‘ અમ્હા-  
ણં ’ इत्यादि । हे देशानुप्रिय ! अस्माकं शौचमूलो धर्मः प्रज्ञतः, यावत् स्वर्गं गच्छन्ति  
अत्र यावच्छब्देन-‘ सेऽपि य सोऽपि दुविहे पन्नत्ते तं जहा दव्वसोऽपि य भाव-

तणं थावच्चा पुत्ते इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તણં થાવચ્છાપુત્તે) હસ પ્રકાર કહનેકે બાદ સ્થાપત્યાપુત્ર  
અનગાર ને પુનઃ ( સુદંસણં એવં ) સુદર્શન સે હસ પ્રકાર કહા-( તુમ્હેણં  
સુદંસણા કિં મૂલક ધર્મમે પન્નત્તે હે સુદર્શન ! તુમ્હારા ધર્મ કિં મૂલક  
પ્રજ્ઞત હુઆ હૈ ( અમ્હાણં દેવાણુપ્પિયા ! સોયમૂલ્લે ધર્મમે પન્નત્તે ) તથ  
સુદર્શનને કહા હે દેવનુપ્રિય ! હમારા ધર્મ શૌચમૂલક પ્રજ્ઞત હુઆ હૈ ।  
( જાવ સગં ગચ્છંતિ ) હસ સુદર્શન કે કથન “ મેં સ્વર્ગ જાતે હૈ ” યહાં  
તક કા પાઠ લગા લેના ચાહિયે-જેસે-“સોવિયસોપ દુવિહે પન્નત્તે તંજહા

‘ તણં થાવચ્છા પુત્તે ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તણં થાવચ્છાપુત્તે) (સુદંસણં એવં) આ રીતે ઉપદેશ આવતા સ્થા-  
પત્યાપુત્ર અનગારે ફરી, (સુદંસણં એવં) સુદર્શનને સંબોધતા કહ્યું-(તુમ્હેણં સુદં-  
સણા ! કિં મૂલક ધર્મમે પન્નત્તે)હે સુદર્શન તમારા ધર્મનું મૂળ શું પ્રગટ થયું છે ?  
( અમ્હાણં દેવાણુપ્પિયા ! સોયમૂલ્લે ધર્મમે પન્નત્તે ) જ્યાં આપતાં સુદર્શને કહ્યું  
“હે દેવાનુપ્રિય ! મારા ધર્મનું મૂળ શૌચ (પવિત્રતા) છે.” એટલેકે મારા ધર્મ  
શૌચ મૂલક છે. (જાવ સગં ગચ્છંતિ) ‘યાવત્ સ્વર્ગમાં પહોંચે છે’ સુદર્શનના  
કથનમાં અહીં સુધી લેવું બોધ્યે. જેમ “ સો વિય સોપ દુવિહે પન્નત્તે તં જહા

सोऽयं य इत्यादि एवं खलु जीवा जलामिसेयपूयप्पाणो अविग्वेणं ' इति पर्यन्तं वाच्यम् । ततः खलु स्थाप्यापुत्रः सुदर्शनमेवमवादीत्—सुदर्शन ! तद् यथानामकः कश्चित् पुरुष एकं महद् ' रुहिरकयं ' रुधिरकृतं शोणितलितं वस्त्रं रुधरेण चैव=शोणितेनैव 'धोवेज्जा' धावयेत् प्रक्षालयेत् तदा खलु सुदर्शन ! तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य प्रक्षाल्यमानस्यास्ति=भवन्ति काचित् ' सोही ' शोधिः शुद्धिः निर्मलता, ' णो इण्ठे सम्ठे ' नायमर्थः समर्थः=रुधिरलितं वस्त्रं रुधरेणैव प्रक्षालितं सन् पवित्रं भवतीत्ययमर्थः समर्थो न भवति प्रामाणिकीं बुद्धिमुपगन्तुं न शक्नोतीत्यर्थः । हे सुदर्शन ! एवमेव ' तुव्मपि ' तवापि ' पाणाइवाएणं ' प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शश्रवणेन नास्ति शोधिः, सुदर्शन ! अथ यथानामकः कश्चित् पुरुषः

द्वसोऽयं य भावसोऽयं " इत्यादि से लेकर " एवं खलु जीवा जलामिसेयपूयप्पाणो अविग्वेणं " (तएणं धावच्चापुत्ते सुदर्सणं एवं वयासी) इस प्रकार सुदर्शन का कथन सुनकर स्थापत्यापुत्र अनगारने उस सुदर्शन से इस प्रकार कहा—( सुदर्सणा ! से जहानामए केहपुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएणं सुदर्सणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही ! ) हे सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक बड़े भारी रुधिर लिस वस्त्र को रुधिर से ही धोवे तो रुधिर (खून) से प्रक्षाल्यमान उस वस्त्र की शुद्धि होती है जैसे ( णो इण्ठे सम्ठे ) यह अर्थ समर्थित नहीं होता—रुधिर से लिस हुआ वस्त्र रुधिर से धोने पर साफ-शुद्ध होता है—जैसा यह अर्थ प्रामाणिक बुद्धि द्वारा मान्य नहीं होता है ( एवामेव सुदर्सणाऽ तुव्मपि पाणाइवाएणं जावमिच्छादसणसल्लेणं नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही )

द्वसोऽयं य भावसोऽयं " अहीथी " एवं खलु जीवा जलामिसेयपूयप्पाणो अविग्वेणं " अहीथी सुधी सुदर्शनं कथनं समञ्जं भेद्ये. ( तएणं धावच्चापुत्ते सुदर्सणं एवं वयासी ) आ रीते सुदर्शनं शीथं भूत्वा धर्मविषेणी वात सांभणीने स्थापत्या पुत्र अनगारे तेभने आ प्रभाण्णे क्खुं—( सुदर्सणा ! से जहा नामए केह पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चैव धोवेज्जा तएणं सुदर्सणा ? तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चैव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थिकाइ सोही ? ) हे सुदर्शन ! के.थ पुरुष बोहीणीनुं भोटुं वृणुं बोहीथी न साइ करे तो ते बोहीथी साइ करेनुं वृणुं शुं शुद्ध थये ! ( णो इण्ठे सम्ठे ) जेम बोहीणीनुं वृणुं बोहीथी स्वच्छ थाय न नहि आ वात प्रभाण्णिकं बुद्धिथी गमे तेने करीयेतो पणु भाय थाय न नहि ( एवामेव सुदर्सणा ? तुव्मपि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादसणसल्लेणं नत्थि सोही ) ते रीते सुदर्शन ! तारी पणु



एकं महद् रुधिरकृतं वस्त्रं ' सज्जियाखारेणं ' सर्जिकाक्षारेण सज्जीनाम्ना प्रसिद्धया क्षारमृत्तिकया ' अणुलिपि ' अनुलिपति अनुलिप्य ! ' पयणं ' पचनं पाकस्थानं ' आरुहेइ ' आरोहयति रुधिरलिप्तं वस्त्रं क्षारमृत्तिकानुलिप्तं कृत्वा कर्कस्मिथिम् मृन्मयादिपात्रे निधाय तत्पात्रं चुलिकोपरिस्थापयतीत्यर्थः । आरोह्य ' उण्हं गाहेइ ' उष्णं ग्राहयति उष्णीकरोति ग्राहयित्वा ततः पश्चात् शुद्धेन वारिणा धावयेत् , हे सुदर्शन ! स नूनं तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य सर्जिकाक्षारेण अनुलिप्तस्य पचनमारोहितस्योष्णं ग्राहितस्य शुद्धेन वारिणा ' पक्खालिज्जमाणस्स ' प्र-

इसी तरह हे सुदंसण ! तुम्हारी भी प्राणातिपात से यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से शुद्धि नहीं होती है । जैसे उस शोणितलिस वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि नहीं होती है । ( सुदंसणा ! से जहाणामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयवत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिपिइ, अणुलिपित्ता पयणं आरुहेइ, आरुहित्ता उण्हे गाहेइ, गाहित्ता तओ पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा से णूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स सुद्धेणं सुद्धेणं वारिणा पक्खलिज्जमाणस्स सोही भवइ ) शुद्धि का प्रकार इस तरह है सुदर्शन ! जैसे कोई पुरुष एक महान रुधिरलिस वस्त्र को साजी खारसे अनुलिस कर कीसी मिट्टि के बर्तन में रख उसे चूलेपर रखता है—रखकर फिर उसे गर्म करता है—गर्म कर उसके बाद उसे फिर शुद्ध जल से प्रक्षालित करता है तो हे सुदर्शन ! निश्चय से

પ્રાણુતિપાત થી કે યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યથી શુદ્ધિ થતી જ નથી. જેમ કે લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ લોહી વડે જ થતી નથી. ( સુદંસણા ! સે જહા ણામએ કેઇ પુરિસે એગં મહં રુહિરકયવત્થં સજ્જિયાખારેણં અણુલિપિઇ, અણુલિપિતા પયણં આરુહેઇ, આરુહિત્તા ઉણ્હે ગાહેઇ, ગાહિત્તા તઓ પચ્છા સુદ્ધેણં વારિણા ધોવેજ્જા સે ણૂણં સુદંસણા ! તસ્સ રુહિરકયસ્સ વત્થસ્સ સજ્જિયાખારેણં અણુલિત્તસ્સ પયણં આરુહિયસ્સ ઉણ્હં ગાહિયસ્સ સુદ્ધેણં સુદ્ધેણં વારિણાપક્ખાલિજ્જમાણસ્સ સોહી ભવઇ ) હે સુદર્શન ! લોહીથી ખરડાયેલા લૂગડાની શુદ્ધિ આ પ્રમાણે થાય જેમ કે સૌ પહેલાં લોહીથીનાં વસ્ત્રને માથુસ સાથુખાર ના પાણીમાં બોળીને માટીના વાસણમાં મૂકીને તેને ચૂલા ઉપર ચઢાવે છે અને નીચે અગ્નિ પ્રકટાવીને તેને ઊંડું કરે છે અને ત્યાર બાદ લૂગડાને શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરી નાખે છે તો તે નિશ્ચિત પછે સાથુખારમાં બોળવાથી

પ્રાણાતિપાતવિરમણેન યાવત્ મિથ્યાદર્શનયલ્યવિરમણેના-  
સ્તિ શોધિઃ, આત્મનઃ પવિત્રતા ભવતિ, યથા વા તસ્ય રુધિરકૃતસ્ય વસ્ત્રસ્ય  
યાવત્ શુદ્ધેન વારિણા પ્રપ્રક્ષાલ્યમાનસ્યાસ્તિ શોધિઃ । વસ્ત્રરૂપોઽયમાત્મા રુધિરરૂપ-  
પ્રાણાતિપાતાઘષ્ટાદશપાપસ્થાનોપહ્નિઃ સમ્યક્ત્વરૂપયા ક્ષારમૃત્તિકયાઽનુલેપં  
પ્રાપ્ય શરીરમાણ્ડં જિનકલ્પસ્થવિરકલ્પરૂપપચનસ્થાનોપરી સંસ્થાપ્ય તપોઽગ્નિના  
પરિતાપિતઃ સંયમરૂપશુદ્ધજલેન પ્રપ્રક્ષાલિતઃ સન્ નિર્મલઃ સ્વચ્છદર્પણવત્પ્રકાશમાનો  
ભવતિ નાન્યથેત્યર્થઃ । યે તુ પ્રાણાતિપાતાદિ પરાયણા જીવાઃ શુદ્ધચર્ચં યદ્વારિજ-  
નિતં શૌચં જલામિષેકં ચ કુર્વન્તઃ સન્તિ, તાન્ પ્રતિ દયન્તે સ્વલુ જીવાળીવતત્ત્રવે-  
દિનો વિદ્વાસઃ—અહો ! પ્રાણાતિપાતાદિ સેવનજનિત જ્ઞાનાવરણીયાઘષ્ટવિધકર્મ-  
મલનિરન્તરલેપાનુલેપસંગ્રહપરાયણા અપિ ઇમે જીવાઃ પુનઃ પ્રાણાતિપાતાદિભિરેવ-  
શુદ્ધિમિચ્છન્તિ અહો ! કીદૃશો મોહસ્ય મહિમા ધરીવર્તિ ।

હવે રુધિરલિસ વસ્ત્ર કી સર્જિકા ક્ષાર સે અનુલિસ હોને પર, પાકસ્થાન  
પર રલ્લે જાને પર ગર્મ કિયે જને પર, ઔર શુદ્ધ જલ સે પ્રક્ષાલિત હો  
જાનેપર શુદ્ધિ હોતી હૈ ? ( હંતા મવહ ) હાં હોતી હૈ ( ઇવામેવ સુદંસણા !  
અન્હે પિ પાણાહવાયવેરમણેણં જાવ મિચ્છાદંસણસલ્લવેરમણેણં અલ્થિ  
સોહી ) તો ઇસી તરહ હે સુદર્શન ! હમારી મી પ્રાણાતિપાતવિરમણ સે  
યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્પ કે વિરમણ સે શુદ્ધિ હોતી હૈ અર્થાત્ આત્મા  
કી પરિવ્રતા હોતી હૈ । ( જહા વા તસ્સ રુધિરકયસ્સ વત્થસ્સ જાવ સુદ્ધેણં  
વારિણા પક્ખાલિજ્જમાણસ્સ અલ્થિ સોહી ) જૈસેહસ રુધિરલિસ વસ્ત્ર  
કો યાવત્ શુદ્ધ જલ સે પ્રક્ષાલિત કરને પર શુદ્ધિ હો જાતી હૈ । ( તપણં

ચૂલા ઉપર ચઢાવીને ગરમ, કરવાથી તેમજ શુદ્ધ પાણીથી સાફ કરવા થી  
સ્વચ્છ થઇ બધ છે કે નહિ ( હંતા મવહ ) સુદર્શને જવાબમાં કહ્યું “ સ્વચ્છ  
થઇ બધ છે. ” ( ઇવામેવ સુદંસણા ! અન્હેપિ પાણાહવાયવેરમણેણં જાવ મિચ્છા  
દંસણસલ્લવેરમણેણં અલ્થિસોહી ) તો આ પ્રમાણે જ પ્રાણાતિપાત વિરમણથી  
યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્પના વિરમણથી શુદ્ધિ થાય છે. એટલે કે એમનાથી  
આત્મા પવિત્ર થાય છે. ( જહા વા તસ્સ રુધિરકયસ્સ વત્થસ્સ જાવ સુદ્ધેણં  
વારિણા પક્ખાલિજ્જમાણસ્સ અલ્થિ સોહી ) જેમ કે ઢોહીલીનાં લુગડાં સાથુખાર  
તેમજ શુદ્ધ પાણીથી શુદ્ધ થઇ બધ છે. ( તપણં સે સુવંસણે સંવુદ્ધે થાવચ્ચાપુત્તં  
વંવહ્ નમંસહ, વંદિતા નમંસિતા પવં વયાસી ) આ રીતે ઉપદેશ અપાએલા સુદર્શન  
શેઠે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગરને વિનંતી કરતાં કહ્યું ‘ હે ભગવાન ! શ્રુતચારિત્ર  
રૂપ ધર્મના આરાધક તમને ધન્ય છે. “ આ રીતે કહીને તેમને વંદન તેમજ નમસ્કાર

ततः स्थापत्यापुत्रवचनश्रवणानन्तरं खलु स सुदर्शः संबुद्धः सम्यक्त्वमारुहः सन् स्थापत्यापुत्रं वन्दते श्रुतचारित्रलक्षणसद्धर्मसमाराधनेन धन्योऽसि भगवन्नि-  
त्यादिवाक्येन स्तौति-इत्यर्थः । नमस्यति स्वापकर्षं बोधयन् श्रद्धेयवचनतया गुरु  
भावेन विनयं प्रकटयन् कायेन प्रणमतीत्यर्थः । वन्दित्वा नत्वा एवं=वक्ष्यमाण-  
प्राकारेणात्रादीत्-इच्छामि खलु भदन्त ! हे भगवान् । धर्म=विनयमूलकं भवदुक्तं  
श्रुतचारित्रलक्षणं श्रुत्वा ज्ञातुम्, जीवाजीवपुण्यपापास्त्रवसंवरनिर्जरावन्धमोक्षरूपाणि-  
तत्त्वानि सम्यक् सर्वथा वेत्तुमित्यर्थः यावत्-यावत् करणादत्र धर्मश्रवणजीवाजी-  
वादितत्त्वज्ञानानन्तरं श्रावकधर्मस्वीकारेण, श्रमणोपासको जातः, स कीदृश इत्याह  
-अधिगतजीवाजीवो यावत् प्रतिलाभयन् सत्कारयन् संमानयन् विहरति ॥२१॥

से सुदंसणे संबुद्धे धावच्चा पुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं  
वयासी) इस प्रकार संशोधित हुए सुदर्शन सेठने स्थापत्यापुत्र अनगार  
की हे भगवान् श्रुतचारित्र रूप धर्म के आराधन करने वाले होने से  
आपको धन्य है इत्यादि वचनो द्वारा वंदना की नमस्कार किया । वंदना  
नमस्कार कर फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा ( इच्छामि णं भंते !  
धम्मं सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए-अहिगया जीवा  
जीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ) हे भदंत ! विनय मूलक श्रुतचारित्र  
रूप धर्म को सुनकर मैं जीव, अजिव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा  
एवं मोक्ष इन तत्त्वों को जानना चाहता हूँ । इस प्रकार वह धर्म-  
श्रवण और जीवाजीवादितत्त्वों के बाद श्रावक धर्म स्वीकार कर श्रमणो-  
पासक बन गया । श्रमणोपासक बनकर फिर उसने स्थापत्यापुत्र अनगार  
का आहार आदि प्रदान कर सत्कार किया-सन्मान किया ।

कथा. वंदना अने नमस्कार करीने तेमछे स्थापत्यापुत्र अनगारने विनंति करी  
-( इच्छामि णं भंते ! धम्मं सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाए अहिगय-  
जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ) हे भदंत ! विनयमूलक श्रुतचारित्र  
इय धर्मनी बात सांभलीने हुं डवे एव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर,  
निर्जरा, अध अने मोक्ष आ आ तत्त्वोने स्पष्ट रूपे समझवानी छंछा राखु  
छुं. आ प्रमाछे स्थापत्यापुत्र अनगार ना मोढेशी आ गधां एव अएव  
वगेरे तत्त्वो विवे सांभलीने शेठ श्रावक धर्म स्वीकारीने श्रमणोपासक थछ  
गया. श्रमणोपासक थछने शेठे स्थापत्यापुत्र अनगारने आहार वगेरे  
अपीने सत्कार कथी सन्मान कथुं.

દષ્ટાન્તકી યોજનાઈસ પ્રકાર દાર્ષ્ટાન્તમે કરની ચહિયે-વચ્ચ કે જૈસા  
 યહ અત્મા હૈ રુધિરકે જૈસે પ્રાણાતિપાતાદિક ૧૮ઁઠારહ પાપસ્થાન હૈ ।  
 ઇન સે યહ મલીન હો રહા હૈ । ક્ષાર મૃત્તિકા જૈસા સમ્યક્ત્વ હૈ । સો જવ  
 યહ આત્મા ઇસ સમ્યક્ત્વ રૂપ ક્ષાર મૃત્તિકા સે અનુલિસ હો જાતા હૈ ઓર  
 અપને શરીર રૂપ ખાંડકો જિનકલ્પ તથા સ્થવિર કલ્પ રૂપ પચન સ્થાન  
 પર સ્થાપિત કરતા હૈ તપ, રૂપ અગ્નિસે અપને આપકો તપાતા હૈ તબ  
 યહ સ્વચ્છ દર્પણકી તરહ પ્રકાશમાન હોને લગતા હૈ । ઇસ શુદ્ધિ માર્ગ  
 કે અતિરિક આત્માકી શુદ્ધિ ઓર કિસી માર્ગ સે નહી હો સકતી હૈ ।  
 જો પ્રાણાતિપાતાદિકોમ્ પરાયણ બને હુપ જીવ શુદ્ધિકે લિયે મૃત્તિકા  
 ઇવં જલ કા ઉપયોગ કરતે હૈ ઓર ડસસે આત્માકી શુચિતા મનતે હૈ  
 ગંગાદિ તીર્થમ્ સ્નાન કરને સે પાપોંકી નિવૃત્ત હોના માનતે હૈ ડનકે  
 પ્રતિ જીવ ઓર અજીવકે સ્વરૂપકો જાનનેવાલે વિદ્વજ્જન સદય હો કર  
 કહતે હૈ કી દેખોતો સહી યહ કૈસીમોહ કી પ્રવલ મહિમા હૈ જો  
 પ્રાણાતિપાત આદિ સેવન સે જનિત જ્ઞાનાવરણીય આદિ અષ્ટવિધ  
 કર્મમલ કે નિરન્તર લેપાનુલેપ કે સંગ્રહ કરને મ્ પરાયણ બને હુપ બી

આ ઉક્ત દષ્ટાન્ત દષ્ટાન્તિક રૂપે આ રીતે સમજવું બોધ્યે-આ આત્મા  
 વચ્ચ રૂપે છે. પ્રાણાતિપાત વગેરે અઠાર પાપસ્થાનો લોહીની જેમ છે. એમનાથી  
 આત્મા મલિન થઈ રહ્યો છે સાશુખારના રૂપમાં સમ્યક્ત્વ છે, બીજા  
 આત્મા સમ્યક્ત્વ રૂપ સાશુખારથી અનુલિપ્ત થાય છે અને પોતાના શરીર  
 રૂપી વાસણને જિનકલ્પ તેમજ સ્થાવિરકલ્પરૂપ પચન સ્થાન (ચૂલા)  
 ઉપર મૂકે છે તપ રૂપ અગ્નિ વડે શરીર રૂપી વાસણને તપાવે છે ત્યારે તે  
 સ્વચ્છ દર્પણ ના રૂપમાં પ્રકાશિત થાય છે. આત્માની શુદ્ધિનો આ કેવળ  
 એકજ રાગ છે કે જેનાથી આત્મશુદ્ધિ ચોક્કસ પછે સંભવિત થાય છે.  
 એના સિવાય બીજા કોઈ ઉપાયથી આત્મ-શુદ્ધિ થવી અસંભવિત છે જે પ્રાણા-  
 તિપાત વગેરેમાં લીન થયેલા છવે શુદ્ધિને માટે માટી અને પાણીનો ઉપ-  
 યોગ કરેછે, અને તેમનાથી આત્મ શુદ્ધિ માને છે-ગંગા વગેરે તીર્થ સ્થાનોમાં  
 સ્નાન કરવાથી પાપો નષ્ટ થાય છે એમ માને છે તેમના પ્રત્યે છવ અને  
 અશુવના સ્વરૂપને બાણનારા વિદ્વાનો સહય થઈને કહેછે-બુઝો તો ખરા,  
 અજ્ઞાનનો આ કેવો પ્રબળ મહિમા છે ? કે જેઓ પ્રાણાતિપાત વગેરેના સેવનથી  
 જનિત જ્ઞાનાવરણીયે વગેરે આઠ પ્રકારના કર્મ રૂપી જળને હમેશાં લેપાનુ

मूलम-तएणं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए  
लद्धस्सःसमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपजित्था,  
एवं खलु सुदंसणेणं सोयमूलं धम्मं विप्पजहाय विणयमूले  
धम्मे पडिवन्ने, तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए  
पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए त्तिकट्ठु एवं संपेहेइ, सं-  
पेहित्ता परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव  
परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वाय-  
गावसहंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिए पवि-  
रलपरिव्वायगेहिं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडि-  
निक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झं मज्झेणं  
सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छइ ।

तएणं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो  
अब्भुट्ठेइ, नो पच्चुग्गच्छइ णो अढाइ नो परियाणाइ नो वंदइ  
तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अण-  
ब्भुट्ठियं० पासित्ता एवं वयासी-तुमं णं सुदंसणा ! अन्नदा  
ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि इयारिणंसुदंसणा !  
तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता तं कस्स णं तुमे जाव णो वंदसि  
सुदंसणा ! इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवन्ने ।

ये जीव पुनः उन्ही प्राणातिपातादिको के सेवन से अपनी शुद्धि की  
कामना कर रहे हैं ॥ सूत्र २१ ॥

देयने स'श्रद्धवाभां दीन थयेत्ता ओ जये इरी तेज पाणातिपात वगेरेना  
सेवनथी पोतानी शुद्धि छ'छे छे ॥ सूत्र " २१ " ॥

तएणं से सुदंसणे सुयेणं परिवायएणं एवं वुत्ते समाणे  
आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिवायणं  
एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहओ अरिट्ठनेमिस्स  
अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव  
नीलासोए उज्जाणे विहरइ, तस्स णं अंतिए विणयमूले धम्मं  
पडिवन्ने ॥ सू० २२ ॥

टीका—तएणं इत्यादि—ततस्तदनन्तरं खलु तस्य शुक्रस्य परिव्राजकस्य  
'इमीसे कहाए' अस्याः कथायाः 'लद्धस्स' लब्धार्थस्य=ज्ञातार्थस्य सतः 'अयमे-  
यारूवे' अयमेतद्रूपः वक्ष्यमाणरूपः 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः आत्मगतोविचारः,  
यावत् समुदपद्यत=प्रादुर्भूतः—एवं खलु सुदर्शनेन शौचमूलं धर्मं 'विप्पजहाय'  
विमज्जहाय=परित्यज्य विनयमूलो धर्मः 'पडिवन्ने' प्रतिपन्नः स्वीकृतः । तत्=त-  
स्मात् श्रेयः खलु मम सुदर्शनस्य दृष्टि=दर्शनं जिनप्रवचने श्रद्धानं 'वामेत्तए'  
वमयितुं त्याजयितुं पुनरपि शौचमूलकं धर्ममाख्यातुम्, सुदर्शनस्य यद् विनयमूल-

'तएणं तस्स सुयस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ—तएणं) इसके बाद (तस्स सुयस्स) उस शुक परिव्राजकको  
जब (इमीसे कहाए लद्धस्स समाणस्स) यह ससच्चार विदित हुआ  
सुदर्शन से श्रमणोपासक बन गया—यह खबर मिली—तब (अयमेयारूवे  
अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) उस के मनमें यह प्रकार का विचार  
उत्पन्न हुआ (एवं खलु सुदंसणेणं सोयमूलं धम्मं विप्पजहाय विणय  
मूले धम्मं पडिवन्ने) सुदर्शन शौच मूलक धर्मको परित्याग कर  
विनयमूलक धर्म कोस्वीकार लिया है, (तं से यं खलु मम सुदंसणस्स  
दिट्ठिवामेत्तए पुणरपि सोयमूलयं धम्मं आधवित्तए) सो अब मुझे

'तएणं तस्स सुयस्स' इत्यादि ।

टीकार्थ (तएणं) त्थार णाढ (तस्स सुयस्स) शुक परिव्राजके कथारे (इमीसे  
कहाए लद्धस्स समाणस्स) आ वात सांख्यीके सुदर्शन श्रेष्ठ श्रमणोपासक  
थई गथाछे, त्थारे (अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) तेना मनभां  
विचार स्फुर्थी—(एवं खलु सुदंसणेणं सोयमूलं धम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मं  
पडिवन्ने) के सुदर्शन श्रेष्ठ शौच मूलक धर्मं त्यज्जने विनय मूलक धर्मं स्वी-  
कार्यो छे (तं से यं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठि वामेत्तए पुणरपि सोयमूलयं धम्मं  
आधवित्तए) ते। डवे भारे सुदर्शननी विनय मूलक धर्मं उपरथी श्रद्धा भटा-

कर्मविषयकं श्रद्धानं तदपनीय पुनरपि तं शौचमूलके धर्मे स्थापयितुं मनोचितमित्यर्थः । ' चित्कटु ' इति कृत्वा=इदं मनसि धृत्वा, एवम्=उक्तप्रकारेण ' संपेहेह ' संप्रेक्षते विचारयति, ' संपेहिता ' संप्रेक्ष्य इत्येवं मनसि विचार्य, परिव्राजकसहस्रेण साथं यत्रैव सौगंधिकानगरी यत्रैव परिव्राजकावसथः=परिव्राजकानामावसथ आश्रमः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य परिव्राजकावसथे भाण्डनिक्षेपम् त्रिदण्डाद्युपकरणानां स्थापनं करोति, कृत्वा धातुरक्तवस्त्रपरिहितः गैरिकरागरञ्जितवस्त्रधारी प्रविरल-परिव्राजकैः कतिपयपरिव्राजकाश्रमात् ' पडिनिक्खमई ' प्रतिनिष्क्रामति=निःसरति । प्रतिनिष्क्रम्य निःसृत्य सौगन्धिकाया नगर्यां ' मज्झं मज्झेणं ' मध्यममध्येन मध्यमध्यभागेन यत्रैव सुदर्शनस्य गृहं, यत्रैव सुदर्शनस्तत्रैवोपागच्छति ।

यही योग्य है कि मैं सुदर्शन की विनय मूलक धर्मकीं दृष्टिको हटाकर उसे समझाकर स्थापित करूँ । ( चित्कटु एवं संपेहेह ऐसा मनमें धारण कर उसने पूर्वोक्तरूप से उसे समझाने का विचार किया—( संपेहिता परिव्वायगसहस्रेण सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ ) विचारकर वह फिर परिव्राजक सहस्र के साथ जहाँ वह सौगंधिका नगरी और उस में भी जहाँ परिव्राजकाश्रम था वहाँ आया । ( उवागच्छिता परिव्वायगावसहसि मंडनिक्खेवं करेइ ) आकर उसने उस परिव्राजकाश्रम में अपने भांडोको रख दिया ( करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिण पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहीओ पडिनिक्खमई ) रखकर फिर वह गैरिक धातु से रंगे हुए वस्त्रों को पहिरे हुए कुछेक परिव्राजकों के साथ २ उस परिव्राजकाश्रम से बाहर निकला ( पडिनिक्खमिन्ता सोगंधियाए

डीने दूरी शौच मूलक धर्मप्रत्ये तेनी श्रद्धा जमावणी जेधये ( चित् कटु एवं संपेहेह ) आ रीते मनमां विचार करीने तेखे पडेवांणी जेम तेने समभवानो विचार करीं ( संपेहिता परिव्वायगसहस्रेण सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ ) विचार करीने ते दूरी जेक सद्धस परिव्राजकेनी साथे ज्यां ते सौगंधिका नगरी जेने तेमां पणु ज्या परिव्राजकाश्रम डेतो त्यां आये। ( उवागच्छिता परिव्वायगावसहसि मंडनिक्खेवं करेइ ) आतीने तेखे पोतानी बधी वस्तुजे त्यां भूकी. ( करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिण पविरलपरिव्वायगेहिं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहसो पडिनिक्खमई ) भूकीने ते गैरिकधातुथी रंगायेवां वस्त्रो पडेरीने थोडा परिव्राजकेने साथे लधने आश्रमनी थार नीकये। ( पडिनिक्खमिन्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झं मज्झेणं

ततः खलु स सुदर्शनस्तं शुकमेजमानम् आगच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वा 'नो अब्भु-  
द्वेह' नो अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थानं न करोतिस्म 'नो पच्चुग्गच्छइ' नो प्रत्युद्ग-  
च्छति अभिमुखं न गच्छति, 'नो आढाह' नो अद्रियते आदरं न कुरुते 'नो'  
परियाणाइ' नो परिजानाति=आगमनं नानुमोदयति; नो वन्दते न स्तौति,  
'तुसिणीए संचिद्धइ' तूष्णीकः संतिष्ठति ।

ततः खलु स शुकः परिव्राजकः सुदर्शनमभ्युत्थितं दृष्ट्वा एवमवादीत्-त्वं  
खलु सुदर्शन ! अन्यदा अन्यस्मिन् समये मामेजमानं दृष्ट्वा अभ्युत्तिष्ठसि यावद्-  
नयरीए मज्झं मज्झे णं जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव  
उवागच्छइ ) बाहर निकल कर सौगंधिका नगरी के ठीक बीचों बीच से  
होकर जहां सुदर्शन का घर और उसमें भी जहां सुदर्शन था वहां  
गया ( तए णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासइ ) सुदर्शन ने आते  
हुए परिव्राजक को देखा (पासित्ता नो अब्भुद्वेह, नो पच्चुग्गच्छइ, णो  
आढाह णो परियाणाइ नो वंदइ, तुसिणीए संचिद्धइ ) परन्तु देखकर  
वह उठा नहीं उसके सामने नहीं गया, उसका आदर नहीं किया, उस  
के आगमन की उसने सराहना नहीं की । स्तुति भी नहीं की केवल  
शुपचाप बैठा रहा । ( तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुद्धियं  
पासित्ता एवं वयासी ) जब शुक ने ऐसा देखा अर्थात् सुदर्शन को नहीं  
उठा हुआ, सामने नहीं आया हुआ, आदि रूप से देखा तो देखकर  
उसने उससे इस प्रकार कहा- ( तुमं णं सुदंसणा ! अनया ममं एज्ज-  
माणं पासित्ता अब्भुद्वेसि जाव वंदसि इयाणि सुदंसणा ! तुमं ममं

जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छइ ) अंदार नीकणीने  
सौगंधिका नगरीनी. अराअर वच्चे थधने न्यां सुदर्शनंतुं घर अने तेमां पणु  
न्यां सुदर्शनं हते। त्यां गथे। ( तएणं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासइ )  
सुदर्शनं पणु परिव्राजकने आवता न्थेया. ( पासित्ता नो अब्भुद्वेह, नो पच्चु-  
ग्गच्छइ, णो आढाह, णो परियाणाइ, नो वंदइ, तुसिणीए संचिद्धइ ) परंतु नेह  
ने ते उवा थया नहिं, स्वागत भाटे तेनी सामे गथा नहिं, तेने आदर  
आये नहिं, तेना आगमननी तेमणु सराहना करी नहिं, तेनी स्तुति. पणु  
करी नहिं इत्त तेओ शुपचाप पोतानी न्थ्याओ गेसी न रत्ता. ( तएणं से  
सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुद्धियं पासित्ता एवं वयासी ) शुक  
परिव्राजके शेकने सत्कार भाटे पोतानी सामे नही आवता नेधने कहुं- ( तुमं णं  
सुदंसणा ! अनया ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुद्वेसि जाव वंदसि इयाणि



अत्र यावच्छब्देन—‘पञ्चगच्छसि’ आढासि, परिजाणासि’ इति वाच्यम्, वन्दसे, इदानीं सुदर्शन ! त्वं मामेजमानं दृष्ट्वा यावद् नो वन्दसे, अभ्युत्थानादिकं करोषीत्यर्थः तत्कस्य खलु त्वया सुदर्शन ! अयमेतद्रूपो विनयमूलधर्मः प्रतिपन्नः हे सुदर्शन ! मम धर्मं परित्यज्य त्वया कस्य धर्मः स्वीकृत इत्यर्थः ।

ततः खलु स सुदर्शनः शुकं परित्राजकेनैवमुक्तः सन् आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय करतलपरिशृङ्खितं—शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा शुकं परित्राजकमेवं—वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्—एवं खलु देवानुप्रियाः ? अर्हंतोऽरिष्टनेमिः अन्तेवासी=शिष्यः स्थापत्यापुत्रनामाऽनगारः यावद्—पूर्वानुपूर्व्यावरन् ग्रामानुग्रामं एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वंदसि तं कस्स णं तुमे सुदंसणा इमेयाहूवे विणयमूले धम्मे पडिबन्ने ) सुदर्शन ! जब तुम किसी समय मुझे आता हुआ देखता था तो देखकर उठता था—यावत् वंदना करता था । परन्तु अब इस समय सुदर्शन ! तुम मुझे आता हुआ देखकर यावत् उठे नहीं तुमने मेरी वंदना नहीं की । तो हे सुदर्शन ! तुमने किसका यह इस रूप विनयमूलक धर्म स्वीकार कर लिया है । ( तएणं से सुदंसणे सुकेणं परिन्वायएणं एवं पुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुद्वेइ, अब्भुद्वित्ता करयल० सुयं परिन्वायणं एवं वयासि ) इस प्रकार शुक परित्राजक के द्वारा कहा गया वह सुदर्शन अपने स्थान से उठा और उठकर उसने दोनों हाथों को अंजलि रूप में कर और उसे मस्तक पर रख उससे इस प्रकार कहा कि ( एवं खलु देवानुप्रिया ! अरिहाओ अरिष्टनेमिस्स अंतेवासी थावच्चा पुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीला सोए उज्जाणे विहरइ ) हे देवानुप्रिय ! अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु के

सुदंसणा ! तुम मर्म एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वंदसि तं कस्स णं तुमे सुदंसणा इमेयाहूवे विणयमूले धम्मे पडिबन्ने ) हे सुदर्शन ! पंडितों तुं गये त्थारे भने आवतां भेतो त्थारे स्वागत माटे उलो थतो अने साभे आवीने वंदन विगेरे करेो छेतो पणु अत्थारे भने भेधने तुं उलो थथेो नथी तेमज ते' भने वंदन पणु कथीं नथी. हे सुदर्शन ! ते आ केराप्रकरेो विनयभूणक धर्म स्वीकारेो छे ? (तएण से सुदंसणे सुकेणं परिन्वायए णं एवं पुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुद्वेइ अब्भुद्वित्ता करयल० सुयं परिन्वायणं एवं वयासी ) शुक परित्राजकनी वात साक्षणीने सुदर्शन पोताना स्थानेथी उलो थथेो अने उलो थधने णंने छथनी अंजलीने मस्तके भूझीने तेने कहुं—(एवं खलु देवानुप्रिया ! अरिहाओ अरिष्टनेमिस्स अंतेवासी थावच्चा-पुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ ) हे देवानुप्रिय !

द्रवन् सुखं सुखेन विहरन्, इति संग्रहः । इह=सौगन्धिकानगर्यामागतोऽस्ति, इहैव अस्यामेव नगर्या बहिर्भागे नीलाशोके नीलाशोकनाम्नि उद्याने विहरति, तस्य=स्थापत्यापुत्रस्य खलु अन्तिके=समीपे विनयमूलो धर्मः प्रतिपन्नः मया स्वीकृतः । यदा स्थापत्यापुत्र इहागतस्तदाऽहमपि वंदितुं तत्रगतस्तदा तदुपदिष्टधर्मकथां श्रुत्वा विनयमूलमार्हत्तधर्मे समीचीनं विज्ञाय स एव धर्मः स्वीकृतो मयेतिभावः ॥२१॥

मूलम्—तएणं से सुए परिव्वायए सुदंसणं एवं वयासी—  
तं गच्छामो सुदंसणा ! तव धम्मारियस्स थावच्चापुत्तस्सं  
अंतियं पाउब्भवामो इमाइं च णं एयाख्खाइं अट्ठाइं हेउइं  
पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो, तं जइणं मे से इमाइं  
अट्ठाइं जाव वागरइ, तएणं अहं वंदामि नमंसामि अहमेसे  
इमाइं अट्ठाइं जाव नो से वाकरेइ, तएणं अहं एएहिं चेव  
अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं करिस्सामि ॥ सू० २३ ॥

अंतेवासी स्थापत्या नाम के अनगार मुनि परंपरा के अनुसार चलते हुए, ग्रामानुग्राम विहार करते हुए सुखपूर्वक इस सौगंधिका नाम की नगरी में आये और अब वे नीलाशोक नाम के उद्यान में ठहरे हुए हैं । ( तस्सणं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिबन्ने ) उनके पास मैंने विनयमूल धर्म समीचीन समझ कर स्वीकार कर लिया है । तात्पर्य इसका यह है कि मैं भी उनको वंदना करने के लिये गया था । उन के सुख से जब मैंने धर्मकथा सुनी तब मुझे उनका सिद्धान्त निर्दोष युक्ति शास्त्र से अविरुद्ध प्रतीत हुआ अतः मैंने उनसे उनके उस धर्म को अंगीकार कर लिया है । सूत्र ॥ २२ ॥

अहं'त अरिष्टनेमि प्रबुद्धा अंतेवासी ( शिष्य ) स्थापत्यापुत्र नामना अन-  
गार मुनि परंपराने अनुसरता ओक गाभथी जीने गाभ विहार करवा सौगंधिका  
नगरीमां सुपेथी आव्या. अने हभखां नीलाशोक उद्यानमां उतथां छे. ( तस्स  
णं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिबन्ने ) तेभनी पासे मे' सारी पेठे सभल्लने  
विनय मूलक धर्म स्वीकार्यो छे. तात्पर्य' ओ छे के हुं पण तेभने वंदन  
करवा गयो हतो तेभना श्रीभुण्ठथी मे' धर्म'कथा सांलणी भने तेभना सिद्धा-  
न्तो निर्दोष तेभज शास्त्र सम्मत लाग्या, ओथी मे' तेभनी पासेथी आ  
धर्म'स्वीकार्यो छे. ॥ सूत्र २२ ॥

‘तएणं से सुए’ इत्यादि ।

टीका-ततः खलु स शुकः परिव्राजकः सुदर्शननामकं श्रेष्ठिनम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-तत्=तस्मान् गच्छामः खलु सुदर्शन । तव धर्माचार्यस्य स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भवामः । ‘इमां च’ इमान् अनन्तरमेव वक्ष्यमाण-तया संनिवृष्टान्, च शब्दादन्यांश्च खलु एतद्रूपान्=वक्ष्यमाणस्वरूपान्, अर्थान्=अर्थमाणत्वाद् अधिगम्यमानत्वादर्थः भावा वक्ष्यमाणयात्रा यापनीयादयस्तदन्ये हेतून्=अन्यत्रपतिरेकलक्षणहेतुना ज्ञायमानत्वाद् हेतुरूपास्तान्, प्रश्नान्=प्रश्नविषयत्वात् प्रश्नरूपास्तान्, कारणानि=कारणं तत्प्राप्त्युक्तिरूपम्, उपपत्तिमात्रं तद्विषयत्वाद् कारणानि तानि, व्याकरणानि=सप्रमाणं व्याख्यायमानत्वात् व्याकरणानि च तानि, पृच्छामः । तद्=तस्माद् यदि खलु मम स स्थाप-

‘तएणं से सुए’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सुए)उसशुक (परिव्राजक) परिव्राजक ने (सुदंसणं एवं वयासी) सुदर्शन से ऐसा कहा-(तं गच्छामो णं सुदंसणा । तव धर्माचार्यस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो) तो हे सुदर्शन ! मैं यहाँ से-अब तुम्हारे धर्मचार्य स्थापत्यापुत्र के पास जाता हूँ । (इमां च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेउइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो तं जइणं मे से इमाइं अट्ठाइं जाव वागरइ, तएणं अहं वंदामि नमंसामि, अहमे से इमाइं अट्ठाइं जाव नो से वागरेइ तएणं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिणं वागरणं करिस्सामि) और इस प्रकार के इन अर्थों को, हेतुओं को, प्रश्नों को कारणों को, व्याकरणों को, उनमे पूछूंगा, यदि वे मेरे इन अर्थों का यावत् व्याकरणों प्रश्न

‘तए णं से सुए इत्यादि’

टीकार्थ (तएणं) त्थारूवाइ (सेसुए) शुक (परिव्राजक) परिव्राजके (सुदंस णं एवं वयासी) सुदर्शनने आ प्रभावे कहुं-(तं गच्छामो णं सुदंसणा । तव धर्माचार्यस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो) हे सुदर्शन ! तो डवे अट्ठी थी हुं सीधे तारा धर्मशुरु स्थापत्यापुत्रनी पासो अठ्ठे हुं (इमां च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेउइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो तं जइणं मे से इमाइं, अट्ठाइं, जाव वागरइ तएणं अहं वंदामि, नमंसामि, अहमेसे इमाइं अट्ठाइं जाव नो से वागरेइ तएणं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेउहिं निप्पट्ठपसिणं वागरणं करिस्सामि) तेमनी साथे हुं अथो, डेतुओ, प्रश्नो, कारणो, अने व्याकरणो ना विषे अर्थो करीश, ने ते मारा अथो, डेतुओ, प्रश्नो,

त्यापुत्रः इमान् अर्थान् यावद् व्याकरोति=मम प्रश्नानां समीचीनं समाधानं करिष्यति ततस्तदनन्तरं खलु अहं वन्दे=वन्दिष्ये, नमस्यामि=नमस्करिष्यामि । अथ मम स इमान् अर्थान् यावद् व्याकरणानि नो व्याकरोति=न स्पष्टीकरिष्यति, ततस्तदा खलु अहम् एतैरेव अर्थैर्हेतुभिः ' निष्पट्टपसिणवाशरणं ' निःस्पष्टप्रश्नव्याकरणं=निःस्पष्टानि अव्याख्यातानि प्रश्नव्याकरणानि प्रश्नोत्तराणि येन स तथा तम्, प्रश्नोत्तरकरणासमर्थं करिष्यामि ॥ २३ ॥

मूळम्-तएणं से परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणैण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता थावच्चापुत्तं एवं वयासी-जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं ते अवावाहं पि तं, फासुयं विहारं ते ? ।

तएणं से थावच्चापुत्ते सुएणं परिवायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वयासी—सुया ! जत्तावि मे जवणिज्जंपि मे अवावाहंपि मे फासुय विहारंपि मे, ॥

तएणं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वयासी—किं भंते ! जत्ता ! ॥

सुया ! जन्नं मम णाणदंसणचरित्तवनिमसंसंजममाइ-एहिं जोएहिं जयणा से तं जत्ता ।

से किं तं भंते ! जवणिज्जं ? ।

विशेषः का अच्छी तरह से समाधान कर देंगे तो मैं उन्हें नमस्कार करूंगा । यदि वे मेरे इन अर्थों से लेकर व्याकरणों तक की बातों का कोई ठीक २ स्पष्टीकरण नहीं करेंगे । तो मैं उन्हें उसी समय इन्हीं अर्थ हेतुओं द्वारा प्रश्नोत्तर करने में असमर्थ कर दूंगा ॥ सू० २३ ॥

कारणः तेभञ्ज व्याकरणे विधेना प्रश्नो नां सारी चेठे समाधान करथे तो हुं तेभने वंढन करीश अने जे ते भारा अर्थो व्याकरणे वगेरे ना विधे सारी रीते स्पष्टी करणुं नहिं करी शके तो हुं तेभने तत्त ज प्रश्नोत्तर करवाभां असमर्थ करीथ ॥ सूत्र २३ ॥

सुया ! जवणिजे दुविहे पन्नत्त, तंजहा इंदियजवणिजे  
य नो इंदियजवणिजे य से किं तं इंदियजवणिजे ? ।

सुया ! जन्नं ममं सोइंदिय-चर्विखदिय-घाणिंदिय-  
जिब्भिंदिय फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्ठंति, से तं  
इंदियजवणिजं ।

से किं तं नो इंदियजवणिजं ? ।

सुया ! जन्नं कोहमाणमायालोभा खीणा उपसंता नो  
उदयंति से तं नो इंदियजवणिजे ।

से किं तं भंते ! अवावाहं ?

सुया जन्नं मम वाइयपित्तिय सिंमिय सन्निवाइया विविहा  
रोगायंका णो उदीरेति से तं अवावाहं ।

से किं तं भंते फासुयविहारं ? ।

सुया ! जन्नं आरामेसु वा उज्जाणेसु वा देवकुलेसु वा  
सभासु वा पव्वएसु वा इत्थीपसुपडगविज्जिएसु वसहीसु  
पाडिहारियं पीठफल्लगसेज्जासंथारयं उग्गिण्हित्ताणं विहरामि, से  
त्तं फासुयविहारं ।

सरिसवया ते भंते ! किं भक्खेया अभक्खेया ? ।

सुया ! सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ।

से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ ? सरिसवया भक्खेया वि  
अभक्खेया वि ।

सुया ! सरिसवया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा-मित्तसरिसवया  
धन्नसरिसवया य, तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा

पन्नत्ता, तं जहा—सहजोयया सहवड्डियया सहपंसुकीलि  
यया, ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे  
ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा सत्थप-  
रिणया य असत्थ परिणया य, तत्थ णं जे ते असत्थ-  
परिणया ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते  
सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा फासुगा य अफासुगा  
य, अफासुगा णं सुया ! नो भक्खेया, तत्थ णं जे ते फासुगा  
ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा--जाइया य अजाइया य, तत्थ णं  
जे ते अजाइया ते अभक्खेया. तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा  
पन्नत्ता, तं जहा--एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य । तत्थ णं जे  
ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते एसणिज्जा  
ते दुविहा पन्नत्ता, लद्धा य अलद्धा य, तत्थ णं जे ते अलद्धा  
ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते लद्धा ते समणाणं निग्गंथाणं  
भक्खेया, एणं अट्ठेणं सुया ! एवं दुच्चंति—सरिसवया भक्खेया  
वि, अभक्खेया वि, एवं कुलत्था वि भाणियव्वा, नवरं इमं  
णाणत्तं—इत्थि कुलत्था य धन्नकुलत्था य इत्थि कुलत्था तिविहा  
पन्नत्ता तं जहा—कुलवधूयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ  
य, धन्नकुलत्था तहेव, एवं मासा वि, नवरं इमं नाणत्तं--  
मासा तिविहा पन्नत्ता, तं जहा--कालमासा य अत्थमासा य,  
धन्नमासा य, तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालसविहा  
पन्नत्ता तं जहा—सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया  
धन्नमासा तहेव ।

एगे भवं दुवे भवं अणेगे भवं अक्खए भवं अक्खए भवं  
अवाट्टिए भवं अणेगभूयभावभविएवि भवं ? ।

सुया ! एगे वि अहं दुवेवि अहं जाव अणेगभूयभाव  
भविएवि अहं ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एगे वि अहं जाव अणेग-  
भूयभविएवि अहं !

जण्णं सुया ! दक्खट्टयाए एगे अहं नाणदंसणट्टयाए दुवेवि  
अहं पपसट्टयाए अक्खएवि अहं अक्खएवि अहं अवाट्टिए वि  
अहं उवओगट्टयाए अणेगभूयभाव भविएवि अहं ।

एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता  
नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए केवलि-  
पन्नत्तं धम्मं निसामित्तए, धम्मकहा भाणियव्वा ॥सू० २४॥

‘तएणं से सुए’ इत्यादि-

टीका- ततस्तदनन्तरं स शुकः परिव्राजकसहस्रेण सुदर्शनेन श्रेष्ठिना च  
सार्धं यत्रैव नीलाशौकनामोद्धानं यत्रैव स्थापत्यापुत्र नामाऽनगर आसीत्, तत्रैवो-  
पागच्छति, उपागत्य स्थापत्यापुत्रमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्- ‘जत्ता ते

‘तएणं से सुए’ इत्यादि ।

टीकार्थं-(तएणं) इसके बाद (से सुए) वह शुक परिव्राजक (परिव्रा-  
जकसहस्रेण) सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव  
थावच्चा पुत्तो अणगारे तेणेव उवागच्छइ ) १ एक हजार परिव्राजकों  
के-और सुदर्शन के साथ जहां नीलाशोक उद्यान तथा उसमें जहां

‘तएणं से’ सुए’ इत्यादि ।’

टीकार्थं (तएणं) त्या २४६ (से सुए) शुक परिव्राजक (परिव्राजकसहस्रेण)  
सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे  
तेणेव उवागच्छइ ) ओक हजार परिव्राजकों अने सुदर्शन शोक-नी साथे जहां  
नीलाशोक उद्यान छेतो अने तेमां जहां स्थापत्यापुत्र अनगर छेतो त्यां गथो.

મંતે ! ' હે મદન્ત ! તે તવ યાત્રા વર્તે ? ' જવણિજ્જં તે ' યાપનીયં તે તવ વર્તે ? , ' અવ્યાબાહં પિ તે ' અવ્યાબાધમાપિ તે વર્તે ? , ' ફાસુયવિહારં તે ' પ્રાસુક વિહારસ્તે તવ વર્તે ? !

તતસ્તદનન્તરં સ સ્થાપત્યાપુત્રઃ શુકેન પરિવ્રાજકેનૈવ મુક્તઃ સન્ શુકં પરિ-  
વ્રાજકમેવમવાદીત્-હે શુક ! ' જત્તા વિ મે ' યાત્રાંઽપિ મે મમાઽસ્તિ, ' જવણિ  
જ્જંપિ મે ' યાપનીયમપિ મે મમાઽસ્તિ, ' અવ્યાબાહંપિ મે ' અવ્યાબાધમપિ મે  
મમ વર્તે, ' ફાસુયવિહારં પિ મે ' પ્રાસુક વિહારોઽપિ મે મમાઽસ્તિ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ સ શુકઃ સ્થાપત્યાપુત્રમેવમવાદીત્ ' કિં મંતે ! જત્તા '   
ફા મદન્ત યાત્રા હે મદન્ત ! ફા=કિં સ્વરૂપા તવ યાત્રા ? !

સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર થા વહાં ગયા । ( હવાગચ્છિત્તા થાવચ્ચાપુત્તં  
એવં વયાસી ) વહાં જાકરડસને સ્થાપત્યાપુત્ર સે ' એસા કહા-( જત્તાતે  
મંતે ! જવણિજ્જં તે અવ્યાબાહં પિ તે ફાસુયવિહારં ) તો હે મદન્ત !  
આપકી યાત્રા હૈ કયા ? આપકે યાપનીય હૈ કયા ? આપકે અવ્યાબાધ  
હૈ કયા ? આપકે પ્રાસુક વિહાર હૈ કયા ? ( તણં સે થાવચ્ચાપુત્તે  
સુણં પરિવાયગેણં એવં બુત્તે સમાણે સુયં પરિવાયગં એવં વયાસી ) હસ  
પ્રકાર શુક પરિવ્રાજક સે પૂછે ગયે ઉન સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને હસ-  
શુક પરિવ્રાજક સે એસા કહા-( સુયા ! જત્તા વિ મે, જવણિજ્જંપિ  
મેં અવ્યાબાહંપિ મેં ફાસુયવિહારંપિ મેં ) હે શુક હમારા યાત્રા મી હૈ,  
યાપનીય મી હૈ હમારા અવ્યાબાધ મી હૈ હમારે પ્રાસુક વિહાર મી હૈ ।  
( તણં સે સુણ થાવચ્ચાપુત્તં એવં વયાસી ) જબ સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર  
ને શુક પરિવ્રાજક સે હસ પ્રકાર કહા-તવ ઉસને સ્થાપત્યપુત્ર અનગાર

( હવાગચ્છિત્તા થાવચ્ચાપુત્તં એવં વયાસી ) ત્યાં જીને તેણે સ્થાપત્યાપુત્ર ને  
કહ્યું-( જત્તા તે મંતે ! જવણિજ્જંતે અવ્યાબાહં પિ તે ફાસુયવિહારં ) હે મદન્ત !  
શુ તમારી યાત્રા છે ? યાપનીય છે ? અવ્યાબાધ છે ? તમારે પ્રાસુક  
વિહાર છે ? ( તણં સે થાવચ્ચાપુત્તે સુણં પરિવાયગેણં એવં બુત્તે સમાણેસુયં પરિ-  
વાયગં એવં વયાસી ) શુક પરિવ્રાજકની આ વાત સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર  
અનગારે શુક પરિવ્રાજકને કહ્યું-( સુયા ! જત્તા વિ મેં જવણિજ્જંપિ મેં અવ્યા  
બાહંપિ મેં ફાસુયવિહારં પિ મેં ) હે શુક ! અમારી યાત્રા પણ છે, યાપનીય  
પણ છે, અવ્યાબાધ પણ છે. અને અમારે પ્રાસુક વિહાર પણ છે. ( તણં  
સે સુણ થાવચ્ચાપુત્તં એવં વયાસી ) અમારે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે શુક  
પરિવ્રાજકને આ પ્રમાણે કહ્યું, ત્યારે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેમને કહ્યું-( કિં



શુકસ્ય પ્રશ્નં શ્રુત્વા સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ—‘સુયા’ इत्यादि. । हे शुक ! ‘जन्ने यत् खलु मम ‘ णाणदंसणचरित्तव नियमसंजममाइएहि ’ ज्ञानदर्शनचारित्र तपोनियमसंयमादिकेषु ज्ञानं=ज्ञानावरणीयस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा प्रादुर्भूतो जीवाजीवादि तत्त्वनिर्णयलक्षणआत्मपरिणामः, दर्शनं=दर्शनमोहनीयस्य क्षयोप शमात् क्षयाद्वाऽऽविर्भूतस्तत्त्व श्रद्धानरूपआत्मपरिणामः, चारित्रं=चारित्रमोहनी- यस्य क्षयोपशमात् क्षयाद्वा जातः स्थूलसूक्ष्मप्राणातिपातादि विरमणलक्षण आत्म-

સે હસ તરહ પુનઃ પૂછા (કિં મંતે જત્તા) હે મદન્ત ! યાત્રા શબ્દ કા અર્થ કયા હૈ ? (સુયા જન્નં મમ ણાણદંસણચરિત્ત તવનિયમ સંજમાઈ એહિં જોએહિં જયણા સે તં જત્તા) સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને કહા હૈ શુક ! જ્ઞાનદર્શન, ચારિત્ર, તપ, નિયમ, સંયમ, આદિકોં મેં એવં મન વચન ઔર કાચ इनके व्यापारो में जो हमारी यतनाचार पूर्वक प्रवृत्ति है वही यात्रा है—और ऐसी यात्रा हमारी आनंद के साथ हो रही है । અન્ય શસ્ત્રજયાદિ તીર્થોં કી યાત્રા વીતરાગ માર્ગ મેં નહીં હૈ । જ્ઞાનાવર- ણીય કર્મ કે ક્ષયોપશમ સે, અથવા ક્ષય સે જીવઅજીવ આદિ તત્ત્વોં કે વિષય મેં જો उनके स्वरूप आदि का निर्णय रूप आत्म परिणामउ- त्पन्न होता है वह ज्ञान है ।

दर्शन मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से अथवा क्षय से, जीव के जो तत्त्व श्रद्धान रूप आत्म परिणाम होता है वह दर्शन हैं ।

મંતે જત્તા) હે મદન્ત ! યાત્રા સબ્દનેા અર્થ શુ છે. (સુયા જન્નં મમ ણાણ દંસણચરિત્તવનિયમસંજમમાઈએહિં જોએહિં જયણા સે તં જત્તા) સ્થાપ ત્યાપુત્ર અનગારે કહું—હે શુક ! જ્ઞાન દર્શન, ચારિત્ર, તપ, નિયમ, સંયમ, વગેરે માં અને મન, વચન અને કાયાના વ્યાપારોમાં જે અમારી જતન પૂર્વક આચરણ કરવાની પ્રવૃત્તિ છે, તેજ યાત્રા છે, અને જે યાત્રા અમારી સુખેથી પસાર થઈ રહી છે, શસ્ત્રજય વગેરે તીર્થોની યાત્રા વીતરાગ માર્ગને અનુસરનારાઓ માટે નથી. જ્ઞાનાવરણીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જીવ અજીવ વગેરે વિષયમાં જે તેમના સ્વરૂપ વગેરેના નિર્ણય રૂપ આત્મ પરિણામ ઉત્પન્ન થાય છે તે જ્ઞાન છે.

દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા ક્ષયથી જીવતા જે તત્ત્વ શ્રદ્ધાન રૂપ આત્મપરિણામ હોય છે તે દર્શન છે.

ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમથી અથવા કંઈથી જે સ્થૂલ તેમજ સૂક્ષ્મ

પરિણામઃ, તપઃ=અનશનાદિકં દ્વાદશવિધમ્, નિયમઃ=દ્રવ્યક્ષેત્રકાલભાવતોઽભિગ્રહ  
ગ્રહણપુત્રરુણરૂપમ્, સંયમઃ=ચારિત્રગ્રહણેનૈવ સંયમે પ્રતિબોધિતે પુનઃસંયમ  
પદોપાદાનાદુભયકાલપ્રતિલેખનરૂપઃ, કાલચતુષ્ટા યે સ્વાધ્યાયાદિકરણરૂપા  
સંયમો ગ્રાહ્યાઃ । આદિપદાદ્ ધ્યાનાવશ્યકાદિઃ તત્ર ધ્યાન=ધર્મધ્યાનાદિ, આવશ્યકં  
ષદ્ધિં તેષુ, ‘જોઈ’ યોગેષુ મનોવાકકાયવ્યાપારેષુ, ‘જયણા’ યતના પ્રવૃત્તિઃ,  
સૈવાયાત્રા મમ વર્તતે । નાન્યા શત્રુજયાદિયાત્રા વીતરાગમાર્ગે વર્તતે इत्यर्थः ।

एवमेव भगवतीसूत्रेऽष्टादशशतकस्य दशमोद्देशके भगवता सोमिल ब्राह्म-  
णाय प्रोक्तम्—

શુકો વદતિ—‘સે કિંતં મંતે જવણિજ્ઞ’ અથ કિં તદ્ મદન્ત ! યાપનીયમ્ ? ।

ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે ક્ષયોપશમ સે અથવા ક્ષય સે જો સ્થૂલ તથા  
સૂક્ષ્મ પ્રાણાતિપાત આદિ પાપો સે નિવૃત્તિ રૂપ આત્મા કા પરિણામ હોતા  
હૈ વહ ચારિત્ર હૈ । તપ-અનશન આદિ કે મેદ સે ૧૨ પ્રકાર કા હૈ । દ્રવ્ય,  
ક્ષેત્ર, કાલ, ઔર ભાવ કો લેકર ઉત્તર ગુણરૂપ જો નાના પ્રકાર કે  
નિયમ-અભિગ્રહ-ગ્રહણ સે હી સંયમ સ્ત્રી ગ્રહીત હો જાતા હૈ—ફિર સ્ત્રી  
જો યહાં સંયમ કા સ્વતંત્ર ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ વહ “ ઉભય કાલ મેં  
પ્રતિલેખના કરના ઔર કાલ ચતુષ્ટય મેં સ્વાધ્યાય કરના ઇસ રૂપ સંયમ  
હૈ, યહ વાક્ય ઇસ અર્થ કો સૂચિત કરતા હૈ । આદિ પદ સે “ધ્યાન આવ  
શ્યક” યે ગ્રહીત હુએ હૈ । ધર્મ ધ્યાન આદિ કા નામ ધ્યાન તથા આવશ્યક  
કરને યોગ્ય કર્તવ્ય કા નામ આવશ્યક હૈ । યહ આવશ્યક છ પ્રકાર હૈ ।  
ઇન જ્ઞાનાદિકોં મેં તથા યોગોં મેં જો યતના હૈ યહી યાત્રા હૈ—અન્ય કોઈ  
યાત્રા નહી હૈ યહ જ્ઞાત ભગવતી સૂત્ર મેં ભગવાન ને અઠારહમૌ શતક કે

પ્રાણાતિપાત વગેરે પાપો સ્ત્રી નિવૃત્તિ રૂપે આત્મા નો પરિણામ થાય છે તે  
આરિત્ર છે. તપ, અનશન વગેરેના બેદથી બાર પ્રકારનું છે.

દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવની સાથે ઉત્તર ગુણ રૂપ ને અનેક ભાવના  
નિયમ—(અભિગ્રહ) ગ્રહણથી જ સંયમનું પણ ગ્રહણ થઈ જાય છે, છતાં એ  
અહીં જે સંયમનું સ્વતંત્ર રૂપે ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે, તે અને વખત  
પ્રતિ લેખના કરવી અને કાલ ચતુષ્ટયમાં સ્વાધ્યાય કરવા તે ‘સંયમ’ છે,  
આ વાક્ય એજ અર્થ અહીં સૂચવે છે, આદિપદ વડે “ધ્યાન આવશ્યક”  
પદોનું સૂચન થાય છે. ધર્મ વિષે ધ્યાન વગેરે ‘ધ્યાન’ કહેવાય છે, તેમજ  
આવશ્યક રૂપે કરવા યોગ્ય કર્તવ્યનું નામ ‘આવશ્યક’ છે. આ આવશ્યકતા છ  
પ્રકારે છે. અજ્ઞાનાદિકો વગેરેમાં તેમજ યોગોમાં ને યતના છે તેજ યાત્રા  
છે. બીજી કેઈપણ ભાવની યાત્રા છે જ નહિ. આ વાત “ભગવતી સૂત્ર”  
ના અઠારમા શતકના દશમા ઉદ્દેશમાં ભગવાને સોમિલ બ્રાહ્મણને કહી છે,

સ્થાપત્યાપુત્રઃ કથયતિ-હે શુક ! યાપનીયં દ્વિવિધં પ્રજ્ઞસં, તદ યથા ઇન્દ્રિયયાપનીયં નોઽન્દ્રિય યાયનોયં ચ. ।

શુકો बूते-અથ કિં તદ ઇન્દ્રિયયાપનીયમ્. ? ।

સ્થાપત્યાપુત્રઃ સમાધત્તે-‘ સુયા ! ઇત્યાદિ । હે શુક ! યત્=યસ્માત્ કારણાત્ સ્વલ્લ મમ શ્રોત્રેન્દ્રિ-ચક્ષુરિન્દ્રિય-ગ્રાણેન્દ્રિય-જિહ્વેન્દ્રિ-સ્પર્શેન્દ્રિયાણિ નિરુપહ-તાનિ વશે વર્તન્તે, તદ્ ઇન્દ્રિયયાનીય=ઇન્દ્રિયાણાં વશીકરણં મમ વર્તતે. । ‘ તં ’ ઇતિવાક્યાલક્ષ્ણે, એવમન્યત્રાપિ ।

દશમેઽદેશક મેં સોમિલ બ્રાહ્મણ સે કહી હૈ । (સે કિં તં મંતે જવણિ-જ્જં) હે મદંત ! યાપનીય શબ્દ કા ક્યા અર્થ હૈ ? (સુયા ! જવણિજ્જે દુવિહે પળણસે તં જહા-ઈંદિયજવણિજ્જે ચ ણો ઈંદિયજવણિજ્જે ચ) હસ પ્રકાર શુક પરિત્રાજક કે પૂછને પર સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર ને ઉસે સમ-જ્ઞાયા કિ હે શુક ! યાપનીય દો પ્રકાર કા કહા હુઆ હૈ —જૈસે ? ઇન્દ્રિ યાપનીય ૨ નો ઇન્દ્રિય યાપનીય । (સે કિં તં ઈંદિયજવણિજ્જં) ઇન્દ્રિય યાપનીય કા ક્યા સ્વરૂપ હૈ હસ પ્રકાર શુક કે પૂછ ને પર સ્થાપત્યા પુત્ર ને કહાં (સુયા ! જન્નં મમં સોઈંદિય ચક્ષિંદિય જિર્વિંમદિય ફાસિંદિયાઈં નિરુવહયાઈં વસે વટંતિ, સે તં ઈંદિયજવણિજ્જં) શુક ! શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુઃસ્પર્શ, ગ્રાણેન્દ્રિય, જિહ્વાસ્પર્શ, સ્પર્શોન્દ્રિય નિરુપહત થન કર જો મેરે વશ મેં હો રહી હૈં યહી ઇન્દ્રિય યાપનીય હૈં અર્થાત્ વિના કિસી વાષા કે અપને વિષયોં કો ગ્રહણ કરને મેં સમર્થ હોને પર મી યે પાંચો ઇન્દ્રિયાં જો મેરે વશ મેં વર્ત રહી હૈં યહી

(સે કિં તં મંતે જવણિજ્જં) હે મદંત ! યાપનીય શબ્દનો અર્થ શું છે ? (સુયા ! જવણિજ્જે દુવિહે પળણસે તં જહા ઈંદિયજવણિજ્જે ચ ણો ઈંદિય જવણિજ્જે ચ) શુકપરિત્રાજકના પ્રશ્નને સાંભળીને સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારે તેને સમભવતાં કહ્યું કે-હે શુક ! યાપનીયના એ પ્રકારે કહ્યાં છે. (૧) ઇન્દ્રિય યાપનીય અને (૨) નો ઇન્દ્રિય યાપનીય (સે કિં તં ઈંદિયજવણિજ્જં) ઇન્દ્રિય યાપનીયનું સ્વરૂપ શું છે ? શુક પરિત્રાજકના આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં સ્થાપત્યા પુત્રે કહ્યું—(સુયા ! જન્નં મમં સોઈંદિય ચક્ષિંદિય જિર્વિંમદિય ફાસિંદિયાઈં નિરુવહયાઈં વસે વટંતિ, સે તં ઈંદિયજવણિજ્જં) હે શુક ! શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુ ઇન્દ્રિ ગ્રાણુ ઇન્દ્રિય, જિહ્વા ઇન્દ્રિય, સ્પર્શ ઇન્દ્રિય, નિરુપહત થઇને મારા વશમાં થઇને તેજ ઇન્દ્રિય યાપનીય છે. અટલે કે કેઽપચ્ચ ભતન વાંધા વગર વિપથોને ગ્રહણ કરવાની તાકત હોવા છતાં એ પાંચે ઇન્દ્રિયો મારે વશ થયેલી છે તેજ

શુકઃ પૃચ્છતિ—‘સે કિં’ ઇત્યાદિ । અથ કિં તદ્ નોહન્દ્રિયયાપનીયમ્ । સ્થા-  
પ્ત્યાપુત્ર આહ—‘સુયા’ ઇત્યાદિ । હે શુક ! યત્=યસ્માત્ સહ ક્રોધમાનમાયા  
લોમાઃ ક્રીણા સયં પ્રાપ્તાઃ, ઉપશાન્તાઃ-ઉપશમં પ્રાપ્તાઃ-સન્તો નો ઉદયન્તે=નોદીર્યન્તે,  
નો હન્દ્રિયયાપનીયં નોહન્દ્રિયં મનસ્સ્ય વિકારાઃ કષાયા इह નો હન્દ્રિયશબ્દેન  
ગૃહ્યન્તે, તેવાં યાપનીયં વશીકરણં મમાસ્તિ ।

શુકો વદતિ—‘સે કિં’ ઇત્યાદિ । અથ કિં તદ્ મદન્ત અવ્યાબાધસ્ ? ।  
સ્થાપ્ત્યાપુત્ર આહ—‘સુયા’ । ઇત્યાદિ । હે શુક ! યત્=યસ્માત્ સહ મમ વાતિક  
પૈત્તિક-શ્લેષ્મિકસાંનિપાતિકા= । વાતિકાઃ વાતમકોપજનિતાઃ પૈત્તિકાઃ પ્રકોપ-  
સમુદ્ભવાઃ, શ્લેષ્મિકાઃ કફમકોપમમવાઃ, સાચિપાતિકાઃ=નાતપિત્ત શ્લેષ્મણાં  
સમુદ્ભાસંનિપાતઃ, તન્ન મવાઃ વિવિધા ‘રોગાર્થકા’ રોગાતક્રુઢાઃ=રોગાશ્રાતકાથેતિ

હન્દ્રિય યાપનીય છે । (સે કિં તં નો હંદિયજવણિજ્ઞે) મદંત ! નો  
હન્દ્રિય યાપનીય કા કયા અર્થ છે ? (સુયા જન્નં કોહ માણ માયા લોમા  
ક્રીણા ઉવસંતા નો ઉદયંતિ સે તં નો હંદિયજવણિજ્ઞે) હે શુક જો  
ક્રોધ, માન, માયા ઓર લોમ યે ચાર કષાયે ક્ષયાવસ્થાપન્ન હોકર યા  
ઉપશમ અવસ્થાવાલી હોકર ઉદય મેં નહીં આ રહીં હૈં યહી નો હન્દ્રિય  
યાપનીય છે । નો હન્દ્રિયકા અર્થ મન હોતા છે । મન કે વિકાર યે ક્રોધ,  
માન, માયા, ઓર લોમ યે ચાર કષાયે હૈં । ફસલિયે યે નો હન્દ્રિય શબ્દ  
સે ગૃહીત હુપ હૈં । યાપનીય શબ્દ કા અર્થ વશ કરના હૈં । યે સ્વ  
કષાયે મેરે વશ મેં હો રહી હૈં — યહી નો હન્દ્રિય યાપનીય મેરે વર્ત  
રહા છે । (સે કિં મંતે અવ્યાબાધં) મદંત ! અવ્યાબાધ કા તાત્પર્ય  
કયા છે ? (સુયા જન્નં મમ વાહયપિત્તિય સિમિયસન્નિવાહયા

હન્દ્રિય યાપનીય છે. (સે કિં તં નો હંદિયજવણિજ્ઞે) હે શબ્દ ! નો  
હન્દ્રિય યાપનીયના શો અર્થ થાય છે. (સુયા જન્નં કોહ માણ માયાલોમા ક્રીણા  
ઉવસંતા નો ઉદયંતિ સે તં નો હંદિયજવણિજ્ઞે) હે શુક ! ક્રોધ, માન, માયા,  
અને લોભ એ ચારે કષાય ક્ષય પામીને અથવા તેા ઉપશમિત થઈને ફરી  
ઉદય પામતી નથી એજ નો હન્દ્રિય યાપનીય છે. નો હન્દ્રિય એટલે મન,  
અને ક્રોધ, માન, માયા, અને લોભ એ ચારે મનનાજ વિકારો છે. એથી  
આ બધાના હન્દ્રિય શબ્દથી ગૃહીત થયાં છે. યાપનીય શબ્દનો અર્થ વશ  
કરવું છે. આ બધા કષાયો મારે વશ થયેલા છે. એજ નોહન્દ્રિય યાપનીયને  
હે વર્ત રહ્યો છું (સે કિં મંતે અવ્યાબાધં) હે શબ્દ ! અવ્યાબાધ નો  
શો અર્થ છે ? (સુયા જન્નં મમ વાહયપિત્તિયસિમિયસન્નિવાહયા વિવિધા

દ્વન્દ્વઃ રોગા દાહજ્વરાદયઃ, આતઙ્કાઃ શીઘ્રચાતિનઃ શૂલાદયઃ નો ડદીયન્તે, તદ્ અવ્યાવાધં=અવ્યાવાધાનાં શરીરપીડાનામભાવઃ મમ વર્તેતે. ।

શુકઃ પૃચ્છતિ-‘સે કિં’ ઇત્યાદિ । અથ કોડસો ભદન્ત’ પ્રાસુક વિહારઃ । ?

સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ-‘સુયા’ ઇત્યાદિ । હે શુક ! યત્ યસ્માત્ સ્વલ્પ આરામેષુ=ઉપવનેષુ, ઉદ્યાનેષુ પુષ્પપ્રધાનેષુ રાજવનેષુ, દેવકુલેષુ વ્યન્તરાયતનેષુ, સમાસુ પરિપત્સુ, ‘પવ્વપ્સુ’ પર્વતેષુ, દ્વિપુલક્ષણં તેનાદ્રાદશરથાનેષુ ઇત્યર્થઃ । સ્ત્રી-પશુપંડકવિવર્જિતાસુ વસતિષુ પ્રાતિહારિકં=પુનઃ સમર્પણીયં, પીઠફલકશ્યાસં-

વિવિહા રોચાયંકા નો ડદીરેતિ સે તં અવ્યાવાહં સે કિં તં ભંતે ફાસુચવિહારં આરામેષુ ઉજ્જાણેષુ દેવકુલેષુ, સમાસુ, પવ્વ-પ્સુ, ઇત્યી પસુપંડગ વિવર્જિયાસુ વસંતીસુ પાઠિહારિયં પીઠફલક સંધારયં ઉગ્ગિણિહતાણં વિહરામિ સેત્તં ફાસુચવિહારં ) શુક ! જિસ કારણ સે વાત, પિત્ત ઓર કફ સે જનિત તથા ઇન તીનોં કે સન્નિપાત સે જનિત જો-વિવિધ પ્રકાર કે દાહજ્વર આદિ રોગ શીઘ્ર ઘાતક શૂલાદિક આતંક સુદ્ધે ઉદિત નહી હો રહે હૈં યહી અવ્યાવાધ મેરે વર્તે રહા હૈં । અવ્યાવાધ શબ્દ કા અર્થ શારીરિક પીડા હૈં- ઓર હસ કા અભાવ હસ સમય મેરે મેં વર્તે રહા હૈં । યહી અવ્યાવાધ કા સ્વરૂપ હૈં । હે ભદન્ત ! પ્રાસુક વિહાર કા કયા સ્વરૂપ હૈં ? ઉત્તર-હે શુક ! જિમ કારણ મેં ઉપવનોં મેં પુષ્પ પ્રધાન રાજકીય વનોં મેં દેવઘરોં મેં અર્થાન્ વ્યન્તરાયતનોં મેં પરિષદોં મેં પર્વતોં મેં ઉપલક્ષણ સે અઠારહ સ્થાનોં મેં, સ્ત્રી, પશુ, પંડક-નપુંસકોં સે વિહીન વસતિઓં મેં મઠોં મેં

રોચાયંકા નો ડદીરેતિ સે તં અવ્યાવાહં સે કિં તં ભંતે ફાસુચવિહારં આરામેષુ ઉજ્જાણેષુ દેવકુલેષુ સમાસુ પવ્વપ્સુ ઇત્યી, પસુપંડગવિવર્જિયાસુ વસંતીસુ પાઠિહારિયં પીઠફલકસેજ્જાસંધારયં ઉગ્ગિણિહતાણં વિહરામિ સેત્તં ફાસુચવિહારં ) હે શુક ! વાત, પિત્ત અને કફથી જન્મતા તેમજ આ ત્રણેના સન્નિ-પાતથી ઉદ્ભવતા અનેક દાહજ્વર વગેરે, રોગો શીઘ્રઘાતક શુભ વગેરે આતંક મારા શરીરમાં ઉદ્ભવતા નથી એજ અવ્યાવાધ મારામાં વર્તી રહી છે. અવ્યાવાધનું સ્વરૂપ એજ છે. શુકે સ્થાપત્યાપુત્રને ખીજો પ્રશ્ન કયો -હે ભદંત ! પ્રાસુક વિહારનું સ્વરૂપ શું છે ? તેનો ઉત્તર આપતા સ્થાપત્યા પુત્ર કહે છે-હે શુક ! હું. ઉપવનોમાં, પુષ્પ પ્રધાન રાજકીય વનોમાં, દેવ ઘરોમાં એટલે કે વ્યન્તરાયતનોમાં, પરિષદોમાં પર્વતોમાં-ઉપલક્ષણથી અઠાર સ્થાનોમાં સ્ત્રી, પશુ, પંડક, નપુંસક-વગરની વસતિઓમાં મઠોમાં પ્રાતિહારિક

સ્તારકમવગુહ્ય=યાચિત્વા વિહરામિ=વિચરામિ, સ પ્રાસુકવિહારઃ । ‘તં’ इति वा-  
 क्यालङ्कारे । શુકઃ પુનરપ્યુપહાસાર્થે પૃચ્છતિ-‘સરિસવયા’ इत्यादि । हे भदन्त ।  
 ‘સરિસવયા’ તે તવ કિં મહ્યાઃ, ઉત અમહ્યાઃ કિમ્ ? સ્થાપત્યાપુત્રઃ સમાધત્તે  
 -‘સુયા ।’ इत्यादि । हे शुक । ‘સરિસવયા’ સરિસવયશ્ચ-  
 અમહ્યા અપિ, ‘સરિસવયા’ इति पदस्यार्थभेदाद् મહ્યા અમહ્યા ભવન્તીતિ  
 भावः । શુકઃ પુનરાહ-‘સે કેળદેળ’ इत्यादि । भदन्त ! हे भगवन् तत् केना-  
 येन एवमुच्यते-‘સરિસવયા’ મહ્યા અપિ, અમહ્યા અપીતિ ।

સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ-‘સુયા !’ इत्यादि । ‘સરિસવયા’ સરિસવય-  
 શ્ચ-  
 બ્વોભ્યા અર્થા દ્વિવિધા પ્રજ્ઞાઃ, તદ્ યથા ‘મિત્તસરિસવયા ધન્નસરિસવયા ય’

પ્રાતિહારિક-પુનઃ સમર્પણીય-પીઠ, ફલક, શય્યા સંસ્તારક કો યાચિ-  
 ત કર વિચરણ કરતા હું-ચહી મેરા પ્રાસુક વિહાર હૈ । ઉપહાસ કરને  
 કે અભિપ્રાય સે પુનઃ શુક પરિવ્રાજક પૂછતા હૈ કિ (સરિસવયા તે  
 મંતે કિં મક્લેયા અમક્લેયા ?) મદંત ! “સરિસવય” તુમ્હારે  
 સિદ્ધાન્તાનુસાર મહ્ય હૈં યા અમહ્ય હૈં ? (સુયા સરિસવયા મક્લેયા  
 વિ અમક્લેયા વિ) સ્થાપત્યા પુત્ર ને કહા-શુક ! સરિસવય મહ્ય મી  
 હૈં ઔર અમહ્ય મી હૈં । (સે કેળદેળ મંતે ! એવં બુચ્ચહ સરિસવયા  
 મક્લેયા વિ અમક્લેયા વિ) શુક ને ડનસે પુનઃ પૂછા મદંત ! આપ યહ  
 કિસ અર્થ કો અપેક્ષા લેકર યેસા કહતે હૈં કિ સરિસવય મહ્ય મી હૈં  
 ઔર અમહ્ય મી હૈં । (સુયા સરિસવયા દુવિહા પવત્તા તંજહા મિત્ત સરિ-  
 સવયા ધન્નસરિસવયા) સ્થાપત્યાપુત્રને ડસે સમજાયા કિ શુક ! સરિસવય

-એટલે કે યાચના કરેલી વસ્તુ કે જે પાછી આપાય જેમકે પીઠ, ફળક,  
 શય્યા સંસ્તારકની યાચના કરી ને વિચરું છું. એજ મારો પ્રાસુક વિહાર છે.  
 શુક પરિવ્રાજક ઉપહાસના અભિપ્રાયથી ફરી પ્રશ્ન કરે છે કે (સરિસવયા તે  
 મંતે કિં મક્લેયા અમક્લેયા ?) કે ભદંત ! ‘સરિસવય’ તમારા શાસ્ત્ર પ્રમાણે  
 ભક્ષ્ય છે કે અભક્ષ્ય ? (સુયા સરિસવયા મક્લેયા વિ અમક્લેયા વિ) સ્થાપત્યા  
 પુત્રે તેના ઉત્તરમાં કહ્યું-હે શુક ! ‘સરિસવય’ ભક્ષ્ય પશુ છે અને અભક્ષ્ય  
 પશુ છે. (સે કેળદેળ મંતે ! એવં બુચ્ચહ સરિસવયા મક્લેયા વિ અમક્લેયા  
 વિ) શુકે તેમને ફરી પ્રશ્ન કર્યો-કે હે ભદંત ! તેમ ‘સરિસવય’ તે ભક્ષ્ય  
 તેમજ અભક્ષ્ય કયા અર્થની અપેક્ષાએ કહી રહ્યા છે. (સુયા સરિસવયા દુવિહા  
 પવત્તા તં જહા મિત્તસરિસવયાઃ ધન્નસરિસવયા) સ્થાપત્યાપુત્રે તેને સમ-  
 જાવતાં કહ્યું કે હે શુક ! ‘સરિસવય’ શબ્દનો અર્થ જો ફીતે થાય છે. ૧

મિત્ર સદશવયસ', ધાન્યસર્પપકાશ્રય । 'સરિસવયા' इत्यस्य द्विविधोऽर्थः सद्दशव-  
यसः सर्पपकाश्चेति । तत्र सद्दशवयसो मित्ररूपाः सर्पपकास्तु धान्यरूपा इति भावः ।  
तत्र खलु ये ते मित्र सद्दशवयसः=मित्ररूपाः समानवयसस्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः  
प्रतिबोधिताः तद् यथा—'सह जायया' सहजातकाः समानकालजन्मानः, 'सह-  
वर्द्धियया' सह वर्धितकाः समानवृद्धिं प्राप्ताः, 'सह पंसुकीलियया' सह पांसु-  
क्रीडितकाः सहैव धूलिक्रीडाकारिण इति । वे सर्वे मित्ररूपाः सद्दशवयसकाः खलु  
श्रमणानां निर्ग्रन्थानामभक्ष्याः भोक्तुं न कल्पन्ते । तत्र खलु ये ते धान्यसर्पप-

દો પ્રકારસે પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈ—૧ મિત્રસરિસવય દૂસરા ધાન્ય સરિસ-  
વય—। સરિસવય શબ્દ કી "સહશવય" ઔર સર્પપક" इस प्रकार  
संस्कृत छाया होती है । जब सद्दशवय—समान आयुवाले मित्रजन  
—ऐसा छायार्थक "सरिसवय" पद लिया जाता है—तब उस पक्ष के  
अनुसार सरिसवय अभक्ष्य है ऐसा अर्थ बोध होता है—तथा सर्पपक  
छायार्थक जब सरिसवय पद लिया जाता है तब "सरिसवय" भक्ष्य  
भी है ऐसा अर्थबोध होता है । इसी विषय को अधिक और स्पष्ट  
करने के लिये सूत्रकार कहते हैं कि— ( तत्थ णं जे तं मित्त सरिसवया  
त्ते तिविहा पन्नत्ता, जहा— सह जायया, सह संवर्द्धियया, सहपंसुकीलि-  
यया ते णं समणानं निग्गंथाणं अभक्खेया ) इनमें जो मित्र सरिसवय  
हैं वे तीन प्रकार के प्रज्ञस हुए हैं— जैसे सह जातक, सहवर्धितक, सह  
पांसुकीडितक अपने साथ जिनका जन्म हुआ है वे सहजातक हैं ।  
अपने साथ २ जो वृद्धि को प्राप्त हुए हैं वे सहवर्धित हैं । तथा जो

મિત્ર, સરિસવય, ૨ ધાન્ય, 'સરિસવય.' શબ્દની સંસ્કૃત છાયા ૧, સદશવય,  
અને ૨, સર્પપક બે રીતે થાય છે. ત્યારે સરિસવય નો 'સદશવય' ( સર-  
પી આયુષ્ય ધરાવનારા મિત્ર જન ) આવે. અર્થ અહીં કરવામાં આવે છે  
ત્યારે 'સરિસવય' અભક્ષ્ય છે આવે. અર્થ જણાય છે તેમજ 'સરિસવય'  
પદ સર્પપક ( સરશિયુ ) અર્થમાં લેવાય છે ત્યારે તે ભક્ષ્ય છે આવે. પણ  
અર્થ થાય છે. એજ વાતને વિશેષ સ્પષ્ટ કરતાં સૂત્રકાર કહે છે કે ( તત્થળં  
જે તં મિત્ત સરિસવયા તે તિવિહા પન્નત્તા, તંજહા—સહજાયયા, સહસંવર્દ્ધિયયા,  
સહપંસુકીલિયયા તેણં સમણાણં નિગ્ગંથાણં અમક્ખેયા ) આમાં ત્યારે સરિસવય  
શબ્દનો અર્થ મિત્ર હોય છે, ત્યારે તેના ત્રણ પ્રકાર સમજવા નોંધ્યે જેમકે  
૧, સહજાતક, ૨, સહવર્ધિતક, અને ૩, સહપાંસુકીડિતક. આપણી સાથે  
જન્મ લેનાર સહજાતક કહેવાય છે. અ.પણી સાથે મોટા થનાર સહવર્ધિત

કાસ્તે દ્વિવિધા=દ્વિપ્રકારાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્ યથા શસ્ત્ર પરિણતાશ્ચ । તત્ર સ્વલ્પ યે તે અશસ્ત્રપરિણતાઃ સચિત્તાસ્તે શ્રમણાનાં નિર્ગ્રન્થાનામમધ્યાઃ અસ્વાધાઃ તત્ર સ્વલ્પ યે શસ્ત્રપરિણતાઃ શસ્ત્રપરિણત્યાઽચિત્તાસ્તે દ્વિવિધા પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્ યથા-પ્રાસુકાશ્ચ અપ્રાસુકાશ્ચ । અપ્રાસુકાઃ સ્વલ્પ હે શુક ! નો મધ્યાઃ=અસ્વાધાઃ । તત્ર સ્વલ્પ યે તે પ્રાસુકાસ્તે દ્વિવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્ યથા-‘ જાહ્યા ય અજાહ્યા ય ’ યાચિતાશ્ચ, અયાચિતાશ્ચ । તત્ર સ્વલ્પ-યે તે અયાચિતાસ્તે અમધ્યાઃ અસ્વાધા । તત્ર સ્વલ્પ યે તે યાચિતાસ્તે દ્વિવિધાઃ પ્રજ્ઞપ્તાઃ, તદ્ યથા ઇષળીયાશ્ચ અનેપળીયાશ્ચ । તત્ર સ્વલ્પ

સાથ ૨ ધૂલિ મેં લેલે હૈં વે સહ પાંસુ ક્રીડિતક હૈં । યે સબ અમળ નિર્ગ્રન્થોં કો અમધ્ય હૈં । ( તત્થળં જે તે ઘનસરિસવયા તે દુવિહા પળ્લતા, તંજહા સત્થ પરિણયા ય અસત્થ પરિણયા ય ) જો ધાન્ય સરિસવય હૈં વે દો પ્રકાર કે હૈં-જૈસે ૧ શસ્ત્ર પરિણત ૨ અશસ્ત્ર પરિણત- ( તત્થળં જે તે અસત્થ પરિણયા તે સમળાળં ણિગંથાળં અમકલેયા તત્થળં જે તે સત્થપરિણયા તે દુવિહા પળ્લતા તં જહા ફાસુગાય અફાસુગાય ) इन में जो अशस्त्र परिणत सचित्त- धान्यसरिसवय हॆं वे अमल निर्ग्रन्थों को अमध्य है- अस्वाद्य हॆं । जो शस्त्र परिणत अचित्त हॆं वे प्रासुक और अप्रासुक के भेद से दो प्रकार के हॆं ( अफासुयाणं सुया णो मकल्लेया तत्थणं જે તે ફાસુયા તે દુવિહા પળ્લતા તં જહા જાહ્યાય અજાહ્યા ય તત્થળં જે તે જાહ્યા તે દુવિહા પળ્લતા તં જહા ઇસણિજ્ઞા ય અણેસ-ણિજ્ઞા ય ) इन में जो अप्रासुक धान्य सरिसवय हॆं वे हे शुक खाने

કહેવાય છે, તેમજ બેઝો બેક્રી સાથે માટીમાં રમતાં રમતાં મોટા થયા છે તેઓ સહપાંસુક્રીડિતક મિત્ર કહેવાય છે. શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો માટે આ અમધ્ય છે. ( તત્થળં જે તે ઘનસરિસવયા તે દુવિહા પળ્લતા, તં જહા સત્થ પરિણયાય અસત્થ પરિણયાય ) ધાન્ય બેટલે કે બે અનાબના રૂપમાં સરિસવય ( સરસિયુ ) છે તેના બે પ્રકાર છે-૧ શસ્ત્ર પરિણુત, ૨, અશસ્ત્ર પરિણુત, ( તત્થળં જે તે અસત્થપરિણયા તે સમળાળ ણિગંથાળં અમકલેયા તત્થળં જે તે સત્થપરિણયા તે દુવિહા પળ્લતા તં જહા-ફાસુગાય અફાસુગાય ) આમાં બે અશસ્ત્ર પરિણુત-‘ સચિત્ત ’ ધાન્ય સરિસવય છે તે શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો માટે અમધ્ય છે, અપ્રાધ છે તેમજ શસ્ત્રપરિણુત-અચિત્ત છે તે પ્રાસુક અને અપ્રાસુક આમ બે પ્રકારના છે. ( અફાસુયાણં સુયા ણો મકલ્લેયા-તત્થળં જે તે ફાસુયા તે દુવિહા પળ્લતા તં જહા જાહ્યાય અજાહ્યાય તત્થળ જે તે જાહ્યા તે દુવિહા પળ્લતા તં જહા ઇસણિજ્ઞાય અણેસણિજ્ઞાય ) આમાંથી આ પ્રાસુક ધાન્ય સરસિયુ ( સરિસવય ) છે, તે અપ્રાધ છે પ્રાસુક ધાન્ય સરસિયા ( સરિસવય ) ના બે



યે તે ' અણેસણિજ્જા ' અનેષણીયાસ્તે સ્વલ્લ અમક્ષ્યાઃ । તત્ર સ્વલ્લ યે તે ' એસ-  
ણિજ્જા ' એષણીયાઃ, તે દ્વિવિધા પ્રજ્ઞપ્તાઃ—તદ્ યથા—લઘ્વાશ્ચ અલઘ્વાશ્ચ । તત્ર  
સ્વલ્લ યે તે અલઘ્વાસ્તે અમક્ષ્યાઃ । તત્ર સ્વલ્લ યે તે લઘ્વાસ્તે શ્રમણાનાં નિર્ગ્રન્થાનાં  
મક્ષ્યાઃ હે શુક ! એતેનાર્થેન—ઉત્તરૂપેણ અર્થેન ઉક્તાર્થમાદાયેત્યર્થઃ, એવમુચ્યતે  
' સરિસવયા ' સરિસવયશ્ચન્દવાચ્યા અર્થા મક્ષ્યા અપિ અમક્ષ્યા અપીતિ ।

' એવં કુલત્યા વિ માણિયવ્વા ' એવં ઉક્તપ્રકારેણ કુલત્યા અપિ મણિતવ્યાઃ,  
' નવેરં ' વિશેષઃ હંદં નાનાત્વં સ્ત્રીકુલત્યાશ્ચ ધાન્યકુલત્યાશ્ચ । સ્ત્રીકુલત્યા સ્ત્રિવિધા

યોગ્ય નહીં હૈં । પ્રાસુક ધાન્ય સરિસવય દો પ્રકાર કે હૈં જૈસે યાચિત  
ઔર અયાચિત । હન મૈં જો અયાચિત હૈં વે અમક્ષ્ય હૈં— શ્રમણ  
નિર્ગ્રન્થોં કો સ્થાને યોગ્ય નહીં હૈં । યાચિત એષણીય ઔર અનેષણીય કે  
મેદ સે દો પ્રકાર કે હૈં ( તત્થળં જે તે અણેસણિજ્જા તે ણં અમક્ષેયા )  
હન મૈં જો અનેષણીય ધાન્ય સરિસવય હૈં વે અલ્લાય હૈં । ( તત્થળં જે  
તે એસણિજ્જા તે દુવિહા પન્ના લદ્ધાય અલદ્ધાય, તત્થળં જે તે અલદ્ધા,  
તે અમક્ષેયા, તત્થળં જે તે લદ્ધા તે સમણાણં નિર્ગંધાણં મક્ષેયા )  
જો એષણીય સરિસવય હૈં વે લઘ્વ ઔર અલઘ્વ કે મેદ સે દો પ્રકાર કે  
હૈં— અલઘ્વ અમક્ષ્ય ઔર લઘ્વ શ્રવણ નિર્ગ્રન્થોં કો મક્ષ્ય હૈં । ( એણં  
અટ્ટેણં સુયા એવં વુચ્ચંતિ—સરિસવયા— મક્ષેયા વિ અમક્ષેયા વિ  
એવં કુલત્યા વિ માણિયવ્વા ) હે શુક ! સરિસવય પદ કે હન પૂર્વોક્ત  
અર્થોં કો લેકર એસા મૈં કહતા હૈં કિ સરિસવય મક્ષ્ય મી હૈં ઔર અ-  
મક્ષ્ય મી હૈં । હસી તરહ " કુલત્યા " કે વિષય મૈં મી એસા હી સમ-  
જ્ઞાના ચાહિયે । ( ણવરં હમં નાણત્તં ) પરન્તુ હસ મૈં હસ તરહ વિશેષતા

પ્રકાર છે—યાચિત અને અયાચિત, આમાં અયાચિત સરિસવય અલક્ષ્ય ગણાય  
છે. શ્રમણ નિર્ગ્રન્થો આહારમાં અયાચિત સરિસવયનો પ્રયોગ કરતા નથી.  
( તત્થળં જે તે એસણિજ્જા તે દુવિહા પન્ના લદ્ધા ય અલદ્ધાય, તત્થળં જે તે  
અલદ્ધા, તે અમક્ષેયા, તત્થળં જે તે લદ્ધા તે સમણાણં નિર્ગંધાણં મક્ષેયા )  
એષણીય ( અનેષણીય ) સરિસવયના લઘ્વ અને અલઘ્વ બે પ્રકારો છે નિર્ગ્રન્થો  
એને માટે અલઘ્વ સરિસવય ( સરશિયું ) અલક્ષ્ય છે અને લઘ્વ સરિસવય  
લક્ષ્ય છે. ( એણં અટ્ટેણં સુયા એવં વુચ્ચંતિ સરિસવયા મક્ષેયા વિ અમક્ષેયા  
વિ એવં કુલત્યા વિ માણિયવ્વા ) હે શુક !, આ પ્રમાણે સરિસવય ને પૂર્વોક્ત  
રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કરતાં તેને લક્ષ્ય અને અલક્ષ્ય આમ બંને રીતે કહી શકાય  
આ રીતે ' કુલત્યા ' ના વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ. ( ણવરં હમં નાણત્તં )

પ્રજ્ઞાઃ, તદ્યથા કુલવધૂકા ઇતિચ કુલમાતૃકા ઇતિચ, કુલ દુહિતર ઇતિચ । ધાન્ય કુલત્યાસ્તથૈવ ।

• • • • • એવં માસાઃ માષા અપિ, નવરં વિશેષઃ-ઇદં નાનાત્વમ્. માસા માષા ત્રિવિધાઃ પ્રજ્ઞાઃ. તદ્યથા-કાલમાસાશ્ચ અર્થમાષાશ્ચ ધાન્યમાષાશ્ચ । તત્ર સ્વલુ યે તે કાલ-માસાસ્તે સ્વલુ દ્વાદશવિધાઃ પ્રજ્ઞાઃ, તદ્યથા-શ્રાવણો યાવદ્ આષાઢઃ, તે સ્વલુ અમક્ષ્યાઃ । અર્થમાષા દ્વિવિધાઃ-હિરણ્યમાષાશ્ચ, સુવર્ણમાષાશ્ચ, તે સ્વલુ અમક્ષ્યાઃ ધાન્યમાષાસ્તથૈવ. ॥

હૈ- ( ઇત્થી કુલત્યા ય ઘન કુલત્યા ય ) એક સ્ત્રી કુલસ્થા દૂસરી ધાન્ય કુલસ્થા- તાત્પર્યે ઇસકા- કુલત્યા કી છાયા કુલસ્થા હૈ- ઇસકા અર્થ સ્ત્રી કુલસ્થા ઓર ધાન્ય કુલસ્થા હૈ । કુલથી જાત કા અન્ન વિશેષ જો હોતા હૈ વહી યહ ધાન્ય કુલત્યા સે ગ્રહણ હુઆ હૈ । ( ઇત્થી કુલત્યા તિવિહા પન્નન્તા તં જહા કુલ વધૂયાઈ ય કુલ માતૃયાઈ ય, કુલ ધૂયાઈય ) ઇન મેં જો કુલત્યા કા વાચ્યાર્થ સ્ત્રી કુલસ્થા હૈ વહ ત્રીન પ્રકાર કા હૈં જૈસે- ૧ કુલવધૂ ૨ કુલમાતૃ કા ૩ ઓર કુલ દુહિતા ( લડકી ) ( ધન્ન કુલત્યા તહેવ ) ધાન્યકુલત્યા અર્થ કા નિરૂપણ ધાન્ય સરિસવય કે સમાન જાનના ચાહિયે । ( એવં માસા વિ નવરં ઇમં નાણસં- માસા તિવિહા પન્નન્તા, તં જહા- કાલ માસાય, અત્ય માસાય, ધન્ન માસાય, તત્ય ણં જે તે કાલ માસા તે ણં દુવાલસવિહા પન્નન્તા, તં જહા- સાવ ણે જાવ આસાઢે તે ણં અમક્ષેયા, અત્ય માસા દુવિહા હિરન્ન માસા સુવર્ણ માસા ય તે ણં અમક્ષેયા ધન્ન માસા તહેવ ) ઇસી તરહ “માસા”

આનું સ્પષ્ટીકરણ એવી રીતે કે ( ઇત્થી કુલત્યા ય ઘનકુલત્યા ય ) એક સ્ત્રી કુલસ્થા અને બીજું ધાન્ય ( અનાજ ) કુલસ્થાની છાયા ‘કુલસ્થા’ થાય છે. તેના બે રીતે અર્થ સમજી શકાય છે. સ્ત્રી ને પણ કુલસ્થા કહેવાય છે અને કુલસ્થા એક બાતનું કઠોળ પણ હોય છે તેને ‘કળથી’ કહે છે. ( ઇત્થીકુલત્યા તિવિહા પન્નન્તા તં જહા કુલવધૂયાઈય કુલમાતૃયાઈ ય કુલ ધૂયાઈય ) સ્ત્રી કુલસ્થાના ત્રણ પ્રકાર છે-બેમ કે-(૧) કુળ વધૂ, (૨) કુળ માતૃકા, અને (૩) કુળ દુહિતા ( દિકરી ) ( ધન્નકુલત્યા તહેવ ) ધાન્યાર્થવાચી કુલસ્થા શબ્દનું નિરૂપણ ધાન્ય સરિસવની બેમ સમજવું બેધએ ( એવં માસા વિ નવરં ઇમં નાણસં માસા તિવિહા પન્નન્તા તં જહા-કાલ માસાય, અત્ય માસાય, ધન્ન માસાય, તત્ય ણં જે તે કાલ માસા તે ણં દુવાલસવિહા પન્નન્તા તં જહા સાવ ણે જાવ આસાઢે તે ણં અમક્ષેયા અત્ય માસા દુવિહા હિરન્ન માસા સુવર્ણ માસાય તે ણં અમક્ષેયા પન્ન માસા તહેવ ) આ પ્રમાણે જ ‘માસ’ શબ્દ વિષે પણ

સ્થાપત્યાપુત્રસ્ય તત્ત્વજ્ઞાનજિજ્ઞાસયા શુકઃ પૃચ્છતિ-‘એ મવં’ ઇત્યાદિ. ।  
‘એ મવં’ એકો મવાન્ ? અયં માવઃ-આત્માન એકત્વસ્વીકારે શ્રોત્રાદિ વિજ્ઞા-  
નાનામવયવાનાં ચાત્મડનેકતોપલબ્ધ્યા એકત્વં દૂષયિષ્યામીતિ. ।

‘દુવે મવં’ દ્વૌ મવાન્ ? અયમાશયઃ- આત્મનો દ્વિત્વાભ્યુપગમેડ્ઢમિત્યેક  
ત્વવિશિષ્ટાર્થસ્ય દ્વિત્વવિરોધેન દ્વિત્વં દૂષયિષ્યામીતિ. ‘અણે મવં’ અનેકે  
મવાન્ ? આત્માનોડનેકત્વસ્વીકારેડ્ઢમિત્યેકત્વવિશિષ્ટાર્થસ્યાનેકત્વવિરોધેનાનેક-  
ત્વં દૂષયિષ્યામીતિ માવઃ. । ‘અક્ષણ મવં’ અણ્ણયો મવાન્ ? ‘અવ્વણ મવં’ અ-  
વ્યયો મવાન્, ‘અવટ્ટિણ મવં’ અવસ્થિતો મવાન્, આત્માનિત્ય ઇતિ મવતા સ્વી-  
ક્રિયતે ઇતિપશ્ચત્રયાભિપ્રાયઃ. ।

શબ્દાભિવેચ કે વિષય મેં ખી જાનના ચાહિયે. કિન્તુ ક્ષિનપ્રેક્ષતા ઇસ  
પ્રકાર હૈ-માસ ત્રીન તરહ કે હૈ-જૈસે-કાલમાસ. અર્થમાષ, ધાન્યમાષ ઇન  
મેં જો કાલમાસ હૈં વે ૧૨બારહ પ્રકાર હૈં. જૈસે શ્રાવણ માસ સે લેકર  
આષાઢ માસ તક. યે સબ અમક્ષ્ય હૈં. હિરણ્ય માષા ઓર સુવર્ણમાષા  
કે મેદ સે અર્થ માષ દો પ્રકાર હૈં. યે ખી અમક્ષ્ય હૈં. ધાન્યમાષ કે  
વિષય મેં ધાન્યસરિસવ કે સમાન પ્રરૂપણા જાનની ચાહિયે. અબ સ્થા-  
પત્યા પુત્ર અનગાર સે શુક પરિવ્રાજક તત્ત્વજ્ઞાન કી જિજ્ઞાસા સે પ્રહ્ન  
કરતા હૈ કિ- ( એ મવં દુવે મવં અણે મવં અક્ષણ મવં અવ્વણ  
મવં અવટ્ટિણ મવં અણેગમૂયમાવમવિણ વિ મવં ? ) આપ એક કૈસે  
હૈં ? અર્થાત્ આત્મા મેં યદિ એકત્વ માના જાવે તો શ્રોત્રાદિ વિજ્ઞાનોં  
એવં અવયવો કી અપેક્ષા જો ડસમેં અનેકતા કી ઉપલબ્ધિ હોતી હૈ ડસ  
સે ડસમેં એકતા નહીં બનતી હૈ. યહાં “ મવં ” આત્મા કા લોધક હૈ

વિશેષાર્થો જાણવા જોઈએ. ‘માસ’ શબ્દનો અર્થ ત્રણ રીતે થાય છે. જેમ  
કે કાળ માસ, (૧) અર્થ માષ, (૨) ધાન્ય માષ, (૩) કાળ વાચક માસ  
(મહિના) ના શ્રાવણ થી માંડીને આષાઢ સુધી બાર પ્રકારે છે. આ બધા  
અલક્ષ્ય છે. હિરણ્યમાષ અને સુવર્ણ માષ આ બંને અર્થમાષના બે  
પ્રકારે છે. એ પણ અલક્ષ્ય છે. અનાજના રૂપમાં બે ધાન્ય માષ (અડદ)  
છે તેના માટે ધાન્ય સરિસવની જેમજ નિરૂપણ સમજવું જોઈએ. શુક પરિ-  
વ્રજક તત્ત્વજ્ઞાનની જિજ્ઞાસાથી તેમને પ્રશ્ન કરે છે કે (એ મવં દુવે મવં અણે  
મવં અક્ષણ મવં અવ્વણ મવં અવટ્ટિણ મવં અણેગમૂયમાવમવિણ વિ મવં ?)  
તમે એક છો, એ કેવી રીતે ? એટલે કે આત્મા માં બે એકત્વ માનાય તો  
શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનો અને અવયવોની અપેક્ષાએ તેમાં અનેકતા ઉપલબ્ધ  
હોય છે તેથી. આત્મામાં એકત્વ સિદ્ધ થતું નથી. અહીં ‘લવ’ શબ્દ આત્મ

‘અનેગભૂયભાવમવિષ્ણુ વિ મવં’ અનેક ભૂતમાવ મવિકોઽપિ મવાન ? અનેકે અંશા અવ્યયાભૂતાઃ=અતીતાઃ, માત્રા વર્તમાના મવિકાઃ=માવિનશ્ચ યસ્ય સ તથા, આત્મા અનિત્ય ઇતિ પક્ષો મવતા સ્વીક્રિયત ઇત્યર્થઃ । અનયોર્નિત્યાનિત્યક્ષયોરેકત-

આત્મા એક છે- હસ સિદ્ધાન્ત કો લેકર શુક સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર સે કહતા છે કિ યહ આત્મા કા એકત્વ પક્ષ યુક્તિ સંગત નહી બેઠતા છે કારણ શ્રોત્રાદિ ઇન્દ્રિયો સે જો ભિન્ન ૨ વિજ્ઞાન ઉત્પન્ન હુણ હૈં. એવં-જો ભિન્ન અવયવો કી ઉપલબ્ધિ હોતી છે ઉસ સે આત્મા મેં એકત્વ બાધિત હોતા છે । હસી તરહ યદિ આત્મા મેં દ્વિત્વ માના જાવે તો યહ બી પક્ષ યુક્તિ યુક્ત પ્રતીતિ નહી હોતા છે કારણ “ અહં ” અહં ” ઇત્યાકાર-રૂપ જો આત્મા મેં એકત્વ કી પ્રતીતિ હોતી છે ઉસસે એકત્વ વિશિષ્ટ અર્થ કી હી પ્રતીતિ હોતી છે ઇસલિયે હસ પ્રતીતિ સે ઉસ મેં દ્વિત્વ ( દો ) કા વિરોધ આતા છે । “ અનેગે મવં ” આત્મા કો અનેક બી હસી-લિયે માનના યુક્તિ સંગત પ્રતીતિ નહી હોતા છે કિ ઉસ મેં ફિર ‘ અહં ’ અહં ’ ઇત્યાકારક એકત્વ પ્રતીતિ નહીં બન સકતી છે । હસ પ્રતીતિ સે ઉસ મેં એકત્વ ( એકપન ) કા હી માન હોના છે અનેકતા કે સાથ હસ પ્રતીતિ કા વિરોધ છે । ઇસલિયે યહ પક્ષ બી દુષિત ઠહરતા છે । ‘ અવ્લ-પ મવં ’ આત્મા અક્ષય છે ‘ અવ્લપ મવં ’ અવ્યય છે અવદ્વિષ મવં આત્મા

ને માટે છે. આત્મા એક છે. આ સિદ્ધાન્તને વિષે શુક પરિભાષક સ્થાપત્યા-પુત્ર અનગારને કહે છે કે આત્મા વિષે એકત્વપક્ષ યુક્તિ સંગત લાગતો નથી. કારણ કે શ્રોત્ર વગેરે ઇન્દ્રિયો થી જે જુદી જુદી જાતનાં વિજ્ઞાનો ઉપ-જ થયાં છે અને જે જુદા જુદા અવયવોની ઉપલબ્ધિ થાય છે તેથી આત્મા માં એકત્વ બાધિત થાય છે. આ રીતે જ જે આત્મામાં દ્વિત્વ માનવામાં આવે તો આ વાત પણ ઉચિત લાગતી નથી, કેમકે ‘ અહં ’ ‘ અહં ’ આ રીતે જે આત્મામાં એકત્વની પ્રતીતિ થાય છે તેથી આત્મા એકત્વ વિશિષ્ટ છે એ અર્થ જ સ્પષ્ટ થાય છે આ રીતે આત્મામાં દ્વિત્વ વિષે પણ વાંધો ઉભો થાય છે. “ અનેગે મવં ” આત્માને અનેક પણ માની ન શકાય કેમકે તેમાં પછી ‘ અહં ’ ‘ અહં ’ આ જાતની એકત્વની પ્રતીતિ સંબંધિત થઈ શકતી નથી. એનાથી તેમાં એકત્વનીજ પ્રતીતિ થાય છે. આ રીતે અનેકતા ની સાથે આ પ્રતીતિ નો વાંધો ઉભો થાય છે. આ પ્રમાણે આ પક્ષ પણ સંદોષ જ કહેવાય ( અવ્લપ મવં ) આત્મ અક્ષય છે ( અવ્લપ મવં ) અવ્યય

રપક્ષપરિગ્રહોઽન્યતરં દૂષયિષ્યામીત્યાશયઃ । સ્થાપત્યાપુત્રો વદતિ-‘સુયા’ ઇત્યાદિ ।  
 હે શુક ! ઈકોઽપ્યહમ્, દ્વાવપ્યહમ્, યાવત્-અનેકભૂતભાવભવિકોઽપ્યહમ્ । પુનઃ  
 શુકઃ પૃચ્છતિ-‘ સે કેણદૃષ્ટેણં મંતે ! ’ ઇત્યાદિ । તત્ કેનાર્થેન ભદન્ત । એવમુચ્યતે  
 -ઈકોઽપ્યહં યાવત્-અનેકભૂતભાવભવિકોઽપ્યહમ્ ?

અવસ્થિત છે, નિત્ય છે ‘ અણેગભૂયમાવભવિવિ ભવં ’ અનેક ભૂત,  
 માત્ર ઓર ભવિક પર્યાયોં વાલા છે અનિત્ય છે ભૂત શબ્દ કા અર્થ  
 અતીત, ભાવ કા અર્થ વર્તમાન એવં ભવિક કા અર્થ ભવિષ્યત કાલીન  
 છે અર્થાત્ આત્મા કે ભૂત પર્યાય રૂપ અંશ વર્તમાન પર્યાય રૂપ અંશ  
 તથા ભવિષ્યત કાલ મેં હોને વાલે પર્યાય રૂપ અંશ ડસ કે અવયવ રૂપ  
 છે । ઇસસે આત્મા મેં અનિત્યતા સિદ્ધ હોતી છે । ઇસ તરહ શુક ને  
 સ્થાપત્યા પુત્ર અનગાર કે ઇન સમસ્ત પક્ષોં કો દૂષિત ક્રિયા । નિત્ય  
 પક્ષ અનિત્ય પક્ષ સાથ વિરુદ્ધ પડતો છે ઓર અનિત્ય પક્ષ નિત્ય પક્ષ  
 કે સાથ વિરુદ્ધ પડતો છે ઇત્યાદિ । અવ-સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર સ્થાદ્વાદ  
 સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર ઉત્તર દેતે હેં । ( સુયા ઇમે વિ અહં દુવેવિ અહં  
 જાવ અણેગ ભૂયમાવ ભવિવિ અહં ) હે શુક ! મેં ઈક મી હૂં, મેં દો  
 મી હૂં, યાવત્ અનેક ભૂત ભાવ ભવિક પર્યાયોં વાલા મી હૂં ( સે કેણ  
 દૃષ્ટેણં મંતે એવં બુચ્ચહ, ઇમે વિ અહં જાવ અણેગભૂયમાવભવિવિ વિ

છે. ( અવદ્રિષ્ટિ ભવં ) આત્મા અવસ્થિત છે નિત્ય છે, ( અણેગભૂયમાવભવિવિ  
 વિ ભવં ) અનેક ભૂત, ભાવ અને ભાવિક પર્યાય વાળો છે અનિત્ય છે, ભૂત  
 શબ્દનો અર્થ ભૂતકાળ છે. ભાવ શબ્દનો અર્થ વર્તમાનકાળ અને ભાવિક શબ્દનો  
 અર્થ ભવિષ્ય કાળ થાય છે, એટલે કે આત્માના ભૂત પર્યાય અંશ, વર્તમાન  
 પર્યાય અંશ તેમજ ભવિષ્યમાં થનારા પર્યાય રૂપ અંશ તેના ( આત્માના )  
 અવયવ રૂપ છે. એથી આત્મમાં અનિત્યતા સિદ્ધ થાય છે. આ રીતે શુક  
 પરિત્રાજકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારના બધા પક્ષોને સંદોષ સિદ્ધ કર્યા, આત્મા  
 વિષે નિત્ય અને અનિત્ય આમ બંને પક્ષો એક બીજાથી વિરુદ્ધ છે આ પ્રમાણે  
 જ અનિત્યપક્ષ નિત્યપક્ષ ની સાથે વિરુદ્ધ છે. સ્થાપત્યાપુત્ર અનગાર સ્થાદ્વાદ  
 સિદ્ધાન્ત મુજબ શુકપરિત્રાજકને જવાબ આપતાં કહે છે—( સુયા ઇમે વિ  
 અહં દુવેવિ અહં જાવ અણેગભૂયમાવિમાવિવિ અહં ) હે શુક ! હું એક  
 પણ છું, હું બે પણ છું, અને હું અનેક ભૂત, ભાવ તેમજ ભવિક પર્યાય  
 વાળો પણ છું ( સે કેણદૃષ્ટેણં મંતે એવં બુચ્ચહ, ઇમે વિ અહં જાવ અણેગભૂય  
 માવભવિવિ વિ અહં ) શુકે સ્થાપત્યાપુત્ર અનગારને કહ્યું કે હે ભદન્ત !

અથ સ્થાપત્યાપુત્રઃ સ્થાદ્વાદમવલમ્બ્યોત્તરં કરોતિ 'જળ્ણં સુયા !' इत्यादि । यत् खलु हे भूक । ' दृक्चट्टयाए एगे अहं ' द्रव्यार्थतया एकोऽहम् । द्रव्यत्वेनामेकोऽस्मि जीवद्रव्यस्य एकत्वात्, न तु प्रदेशमिप्रायेण ।

' નાળદંસણદ્વયાए दुवेवि अहं ' ज्ञानदर्शनार्थतया द्वावप्यहम् । ज्ञानदर्शनार्थद्वयमिप्रायेण द्विस्वभावकोऽहमस्मीत्यर्थः । द्वावप्यहमित्यनेन अनेकोऽपि भवानिति प्रश्नस्याप्युत्तरं प्रदत्तम्, उक्तरीत्या द्विस्वभावकत्वाम् श्रोत्रादिविज्ञानानामवयवानां चात्मनोऽनेकत्वाच्च । यथा एको देवदत्त एकस्मिन्नेवकाले पितृत्वपुत्रत्वभ्रातृत्वादीननेकान् स्वभावान् प्राप्नोति ।

अहं ) सो भदंत ! आप ऐसा किस अर्थ को लेकर कह रहे हैं कि मैं एक भी हूँ यावत् अनेक भूत भाव भविक पर्यायों वाला भी हूँ हे शुक ! ऐसा जो मैं कह रहा हूँ सो किस अर्थ की अपेक्षा को लेकर कह रहा हूँ यह सुनो ( जण्णं सुया ! दृक्चट्टयाए एगे अहं ) नाणदंसणद्वयाए, दुवेवि अहं, पपसद्वयाए, अक्खए वि अहं अक्खए वि अहं अवट्टिए वि अहं उवओगद्वयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं ) मैं एक हूँ ऐसा जो मेरा कहना है वह हे शुक ! द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा है । ( द्रव्यार्थिक नय का विषय एक अखण्ड द्रव्य होता है । अतः उस दृष्टि से मैं द्रव्य को एक होने की वजह से एक हूँ । प्रदेशों की अपेक्षा से एक नहीं हूँ । ज्ञान, दर्शन की अपेक्षा से मैं दो रूप भी हूँ दो स्वभाववाला भी हूँ । आत्माका लक्षण उपयोग है । यह उपयोग ज्ञान और दर्शन की अपेक्षा से दो प्रकार का है । इस दृष्टि से मैं एक होता हुआ भी दो रूप हूँ । इस कथन से मैं अनेक भी हूँ इस प्रदन

તમે કયા આધારે કહી રહ્યા છોકે હું એક પણ છું અનેક પણ છું અને હું અનેક ભૂત, ભાવ અને ભવિક પર્યાય વાળો પણ છું ? સ્થાપત્યાપુત્ર અનંગાર શુક પરિજ્ઞાજક ને જવાબ આપતા કહેવા લાગ્યા કે—( જળ્ણં સુયા ! દૃક્ચટ્ટયાए एगे अहं ) नाणदंसणद्वयाए. दुवेवि अहं पपसद्वयाए अक्खए वि अहं अक्खए वि अहं अवट्टिए वि अहं उवओगद्वयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं ) હે શુક ! “ હું એક છું ” માટેં યોઈ કહેતું દ્રવ્યાર્થિક નયની અપેક્ષાઓથી છે. દ્રવ્યાર્થિક નયનેા વિષય એક અખંડ દ્રવ્ય હોય છે, દ્રવ્ય એક હોવાથી, આ દૃષ્ટિએ હું એક છું, પ્રદેશોની અપેક્ષાથી હું એક નથી જ્ઞાન દર્શનની દૃષ્ટિએ મારા બે રૂપ પણ છે. હું બે જાતના સ્વભાવવાળો પણ છું. આત્માનું લક્ષણ ઉપયોગ છે જ્ઞાન અને દર્શનની દૃષ્ટિએ ઉપયોગના બે પ્રકાર થાય છે. આમ હું એક હોવા છતાં પણ બે રૂપ વાળો છું. આથી ‘ હું

‘પણસદ્યપાઐ અવત્વપિ વિ અહં અવત્વપિ વિ અહં અવત્ત્વિપિ વિ અહં’ પ્રદેશાર્થ-  
તયા-અણ્યયોડપ્યહમ્ અસંખ્યાતાનામાત્મપ્રદેશનામેકસ્યાપિ કેનાપિ પ્રકારેણ ક્ષયા-  
ડમાવાત્ । અણ્યયોડપ્યહમ્-કેનાપિ પ્રકારેણેકસ્યાપ્યાત્મપ્રદેશસ્ય નાજ્ઞામાવાત્ ।

કા મી ઉત્તર હો જાતા હૈ । હસ તરહસે માનને પર મી વહાં અહં પ્રત્યય હોને મેં કોઈ બાધા નહીં ઓતી હૈ । ઓર ઉક્તરીતિ સે આત્મા મેં દ્વિત્વ ભાવતા આને પર ઉસમેં શ્રોત્રાદિ વિજ્ઞાનોં કી તથા અવયવો કી અનેકતાં મી વિરુદ્ધ નહીં પડ સકતી હૈ । યહ વિરુદ્ધતા તો આત્મા મેં એક સ્વભાવતા માનને પર હી આતી હૈ । સૂલ મેં એક હોને પર મી અનેક સ્વભાવ કી માન્યતા બાધિત નહીં હોતી હૈ । જૈસે દેવદત્ત એક પદાર્થ મેં પિતૃત્વ, પુત્રત્વ, ભ્રાતૃત્વ આદિ અનેક સ્વભાવ એક હી કાલ મેં હોતે હુપ પ્રતીતિ હોતે હૈ । એક આત્મા કે અસંખ્યાત પ્રદેશ શાસ્ત્ર-કારોં ને કહે હૈ । હન મેં સે કોઈ મી એસા પ્રદેશ નહીં હૈ જિસકા કિસી મી પ્રકાર સે ક્ષય હો સકે અતઃ હસ પ્રદેશ કી અપેક્ષા સે મેં આત્મા અક્ષય હૂં । હસી તરહ એક મી આત્મા કે પ્રદેશ કા કિસી મી તરહ સે નાશ નહીં હો સક ને કે કારણ મેં આત્મા અવ્યય હૂં । અવ્યય શબ્દ કા જો કિન્હીં ૨ ને એસા અર્થ કિયા હૈ કિ કિનનેક પ્રદેશોં કા વ્યય નહીં હોતા હૈ સો વહ આગમ સે વિરુદ્ધ પડતા હૈ કારણ હસ

અનેક છુ’ એ પ્રશ્નનો ઉત્તર પણ પુષ્ટ થાય છે. આ માન્યતાથી ત્યાં ‘અહં’ની પ્રતીતિમાં કોઈપણ જાતનો વાધો જણાતો નથી. અને આ રીતે આત્મામાં દ્વિત્વભાવની સ્થાપન થી તેમાં શ્રોત્ર વગેરે વિજ્ઞાનોની તેમજ અવયવોની અને-કતામાં પણ કોઈ પણ જાતનો વિરોધ જણાતો નથી. આત્મામાં એક સ્વભાવતા માનવામાં જ આ વાધો જોવા થાય છે. આ પ્રમાણે મૂળ રૂપે એક હોવા છતાં પણ અનેક સ્વભાવની માન્યતા કોઈ પણ રીતે બાધિત થતી નથી. જેમકે દેવદત્ત આ એક પદાર્થમાં પિતૃત્વ પુત્રત્વ ભ્રાતૃત્વ વગેરે ઘણા સ્વભાવોની પ્રતીતિ એકજ કાળમાં થાય છે. એક આત્માના અસંખ્યાત પ્રદેશો શાસ્ત્રકારો એ કહ્યા છે. આ અસંખ્યાત પ્રદેશોમાંથી કોઈ પણ એવો પ્રદેશ નથી કે જેનો કોઈપણ રીતે નાશ થઈ શકે. એથી આ પ્રદેશની અપેક્ષાએ હું ‘આત્મા’ અક્ષયછું. આ રીતે આત્માના એક પણ પ્રદેશનો ગમેતે સંજોગોમાં કોઈપણ રીતે નાશ નહિ થવાથી હું ‘આત્મા અવ્યયછું’. અવ્યય શબ્દનો અર્થ ‘કોઈ એ એવી રીતે ક્યોં છે કે “કેટલાક પ્રદેશો નો વ્યય થતો ન હોય તે અવ્યય” તો આ અર્થ આગમથી વિરુદ્ધ છે. કારણકે આ અર્થને માનવાથી ‘કેટલાક પ્રદેશોનો નાશ થાય છે’ આવો અર્થ પણ નીકળે છે. ’ ત્રિકાળમાં

यत्तु-अव्ययः कियतामपि च व्ययाभावादित्युक्तं, तदागमविरुद्धम्-कियतामपीत्युक्त्या कियतानां नाशोभवतीत्यर्थस्यापि बोधापचिसंभवात् । अवस्थितोऽप्यहम्-असंख्यातप्रदेशवत्त्वं कदाचिदपि न विनश्यति तेन मम स्वरूपमविचलं सदाऽवस्थायीत्यर्थः । तस्मान्नित्यस्वरूपोऽप्यहमस्मीति भावः । शिष्यबुद्धिनिर्मलीकरणार्थमेकस्मिन्नेवार्थेऽनेकपर्यायशब्दानां प्रयोगः ।

‘उबओगट्टयाए अणेगभूयभावमविए वि अहं’ अनेकभूतभावमविकोऽप्यहम् । अनेके विषयभेदाद् बहुविधा उपयोगा भूताः=अतीताः, भावाः वर्तमाना, तथा भविकाः=भाविनश्च यस्य स तथा, अतीतकाले बहव-उपयोगाः श्रोत्रादि-

प्रकार के कथन में “ कितनेक प्रदेशों का नाश होता है ” ऐसा अर्थ भी हो जाता है । असंख्यात प्रदेशों से युक्त पना आत्मा में त्रिकाल में भी नष्ट नहीं होता है अतः यह असंख्यात प्रदेशों से युक्त रहने रूप जो आत्मा का स्वरूप है उससे यह आत्मा अविचल है सदा अवस्थित है । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मैं नित्य स्वरूप वाला हूँ । मैं अक्षय हूँ, अव्यय हूँ, अवस्थित हूँ ऐसे जो ये सब पर्याय शब्द एक ही आत्मा रूप अर्थ में प्रयुक्त किये गये हैं वे शिष्य की बुद्धि को निर्मल करने के लिये प्रयुक्त हुए हैं ऐसा जानना चाहिये । “उब ओगट्टयाए अणेगभूयभावमविए वि अहं” यहां अनेक शब्द विषय भेद की अपेक्षा अनेकविध उपयोगों का वाचक हैं ये अनेकविध उपयोग जिस के पहिले हो चुके हैं तथा वर्तमान में जिस में हो रहे हैं और भविष्य में जिस में होंगे अर्थात् अतीतकाल में श्रोत्रादि विज्ञान रूप उपयोग जिस में उत्पन्न हुए हैं, नष्ट हुए हैं, वर्तमान काल में भी जिस में

पणु आत्माभां अस्स ज्ञायात प्रदेशेणो युक्ता भाव नष्ट भवो नथी, जेट्ठा भाटे अस्स ज्ञायात प्रदेशेणो युक्ता रडेत्ताइ आत्मानुं स्वप्प छे तेनाथी आ आत्मा अविचल छे हुं भेशां अवस्थित छे, जेनाथी जे स्पष्ट थाय छे के हुं नित्य स्वप्प वाजो छु, हुं अक्षय छु, हुं अव्यय छु, हुं अवस्थित छु, अने आ गधा जेक अर्थ वाचक पर्याय शब्दो आत्मा इय अर्थभां प्रयुक्त करवाभां आया छे, ते शिष्यनी बुद्धिने निर्माण जनाववा भाटेज, आस सभल देवु जेधज्जे. ( उबओगट्टयाए अणेगभूयभावमविरे वि अहं ) अर्द्धो जे अनेक शब्द छे ते विषय लेहनी अपेक्षाथी अनेक विध उपयोगेणो वाचक छे. आ अनेकविध उपयोगे जेनां पछेलां थर गया छे, वर्तमान कालभां जेभां थर रह्या छे अने भविष्यभां जेभां थर जेट्ठे के श्रोत्र वगेरे विज्ञान इय जेभां भूतकालभां उत्पन्न थया छे, वर्तमान कालभां पणु जेभां



અથ સ્થાપત્યાપુત્રો ધર્મકથા કથયતિસ્મ । નનુ કીદૃશી ધર્મકથા મગવતોપ-  
દિપ્તેતિ જિજ્ઞાસાયામાહ—‘ ધમ્મકઠ્ઠા માણિયવ્વા ’ ઇતિ । ધર્મકથા મણિતવ્વા  
ઔપપાતિકસૂત્રોક્તા ધર્મકથાઽત્ર વાચ્યા સા ચોપાસકદશાંગસૂત્રસ્યાગારધર્મસંત્રી-  
વનીટીકાયાં મયા વિસ્તરતો વ્યાખ્યાતા તતોઽવગન્તવ્યા ॥ ૨૪ ॥

મૂલ્ક-તણ્ણં સે સુણ પરિઠ્ઠાવણ થાવચ્છાપુત્તસ્સ અંતિણ  
ધમ્મં સોચ્છા ણિસમ્મ એવં વયાસી-ઇચ્છામિ ણં મંતે ! પરિ-  
ઠ્ઠાવગસહસ્સેણં સંદ્ધિં સંપરિવુડે દેવાણુપ્પિયાણં અંતિણ મુંડે  
મવિત્તા પઠ્ઠવિત્તણ, અહાસુહં જાવ ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાણ  
તિહંડયં જાવ ધાઉરત્તાઓ ય ઇગંતે ઇદ્દેઝ, ઇદિત્તા સયમેવ  
સિહં ઉપ્પાડેઝ, ઉપ્પાડિત્તા જેણેવ થાવચ્છાપુત્તે અણગારે તેણેવ  
ઉવાગચ્છઝ, ઉવાગચ્છિત્તા મુંડે મવિત્તા જાવ પઠ્ઠવિણ સામાઝ-  
યમાઝયાઝં ચડદસપુઠ્ઠાઝં અહિજ્ઞઝ । તણ્ણં થાવચ્છાપુત્તે  
સુયસ્સ અણગારસહસ્સં સંસિત્તાણ વિચરઝ । તણ્ણં સે થાવ-  
ચ્છાપુત્તે સોગંધિયાઓ નીલાસોયાઓ પઢિનિક્કમઝ, પઢિનિ-  
ક્કમિત્તા વહિયા જણવચ્ચવિહારં વિહરઝય ॥ સૂ. ૨૫ ॥

કથા સુનાઈ । કિસ પ્રકાર કી ધર્મકથા સ્થાપત્યા પુત્ર ને શુક પરિવ્રાજક  
કો સુનાઈ સો યહ કથા ઔપપાતિક સૂત્ર મેં વર્ણિત હુઈ હૈ । વહી કથા  
યહ સમજ્ઞની ચાહિયે । ઉપાસકદશાંગસૂત્ર કી જો અગારધર્મ સં  
જીવની ટીકા હૈ ઉસમેં મૈને હસ કથા કો વિસ્તાર સે વ્યાખ્યાત  
કિયા હૈ । સૂત્ર ॥ ૨૪ ॥

પત્યાપુત્ર અનગારે જે ધર્મકથા શુક પરિવ્રાજકને કહી સંભળાવી તેનું  
વર્ણન “ઔપપાતિક સૂત્ર ” માં કરવામાં આવ્યું છે જિજ્ઞાસુઓએ તે ત્યાંથી  
જાણી લેવી જોઈએ. “ ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર ” ની અગારધર્મસંજીવની ટીકામાં  
પશ્ચ મેં આ કથાનું સવિસ્તર વર્ણન કર્યું છે. ॥ સૂત્ર “ ૨૪ ” ॥

‘तएणंसे इत्यादि ।

टीका—ततस्तदनन्तरं खलु स शुकः परिव्राजकः स्थापत्यापुत्रस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य एवं वक्ष्यमाण प्राकारेणावादीत्—इच्छामि खलु सद्गन्त ! परिव्राजक-सहस्रेण सार्धं संपरिवृतो देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा मन्त्रजितुम् । भवतां समीपेऽहं परिव्राजकसहस्रेण सह केशोल्लुञ्चनेन मुण्डो भूत्वा दीक्षां ग्रहीतुमिच्छामित्यर्थः । ततः स्थापत्यापुत्रोऽवादीत्—हे देवानुप्रिय यथासुखं यावत्= ईप्सित कार्यं दीक्षाग्रहरूपे विलम्बं मा कुरु, इत्येवमुक्तः सन् शुकः परिव्राजकः यावत्

तएणं से सुए परिव्यायए इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से सुए) उस शुक (परिव्यायए) परिव्राजकने (थावच्चापुत्तस्स अंतिए वम्मं सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगार के मुखसे श्रुत चारित्र रूप धर्मका श्रवण कर (णिसम्म) उसे हृदय में अवधारित कर (एवं वयासी) उन से इस प्रकार कहा—(इच्छामि णं भंते । परिव्यायगसहस्से णं सद्धिं संपरिवुडे देवानुप्पियाणं अंतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदंत । मैं आप देवानुप्रिय के पास इन १ एक हजार परिव्राजको के साथ २ मुंडित होकर दीक्षित होना चाहता हूँ (अहामुहं जाव उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंढयं जाव घाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणैव थावच्चापुत्ते तेणैव उवागच्छइ) शुक परिव्राजक की इस भावना को जान कर स्थापत्यापुत्र अनगार ने उससे कहा हे देवानुप्रिय । तुम्हें जैसे मुख हो वैसा करो—इच्छित कार्य जो दीक्षा ग्रहण है उसमें तुम

(तएणं से सुए परिव्यायए इत्यादि)

टीकार्थ—(तएणं) त्पारभाइ (से सुए) शुक (परिव्यायए) परिव्राजके (थावच्चापुत्तस्स अंतिए वम्मं सोच्चा) स्थापत्यापुत्र अनगारना श्री भुभ थी श्रुत चारित्र ३५ धर्मोंनुं श्रवण करीने (णिसम्म) तेने सारी येठे हृदयमां अवधारित करीने (एवं वयासी) तेभने आ रीते कहुं—(इच्छामि णं भंते ! परिव्यायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवानुप्पियाणं अंतिए मुडे भवित्ता पव्वइत्तए) हे भदंत । तमारी पासेथी ओक डल्लर परिव्राजकेनी साथे हुं मुंडित थडिने दीक्षित थवा याडूं छुं (अहामुहं जाव उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए तिदंढयं जाव घाउरत्ताओ य एगंते एडेइ एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेइ उप्पाडित्ता जेणैव थावच्चापुत्ते तेणैव उवागच्छइ) शुक परिव्राजकनी दीक्षित थवानी धच्छा सांभणीने स्थापत्यापुत्र अनगारे तेभने कहुं हे देवानुप्रिय । तभने जेभ गभे तेभ करे। धच्छित कार्यमां ओटवे के दीक्षाग्रहण करवामां योडुं करे नाइ आ रीते

उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे गत्वा त्रिदण्डिकां यावत् त्रिदण्डादीनि सप्तोपकरणानि यावत्  
गैरिकधातुरक्तानि वस्त्राणि चैकान्ते एकान्तप्रदेशे 'एडेइ' एडति=त्यजति एडि-  
त्ता=त्यक्त्वा 'सयमेव सिंहं उप्पाडेइ' स्वयमेव रवहरतेनैव शिखां जटारूपात्  
उत्पाटयति=लुञ्चति ।

यत्तु—दीपिकाकारेण कस्तूरचन्द्रगणिना—यतिना 'सयमेव वसहिं उप्पाडेइ'  
इति स्वकपोलकल्पितं मूलं प्रदर्श्य, दीपिकायां—'स्वयमेव=स्वहस्ताभ्यामेव परिव्रा-  
जकवसतिः त्रिदण्डिकानां निवासार्हं यन्मठं तादृत्पाटयतिस्मिन् समूलं विनाशितवा-  
नित्यर्थः' इत्युक्तं, तद्समीचनम्—हस्तलिखितेषु मुद्रितेषु च प्राचीनपुस्त-  
केषु तदुक्तमूलपाठानवलोकनेन, सर्वत्र 'सिंहं' इत्येव पाठस्य दर्शनेन च उत्सूत्र प्र-

विलम्ब मत करो—इस प्रकार स्थापत्यापुत्र के कहने पर उस शुक परि-  
व्राजकने ईशान कोण में जाकर अपने त्रिदण्डिका आदि सात उपकरणों  
को तथा गैरिक धातु से रक्त हुए वस्त्रों को एकान्त स्थान में रख दिया  
उन्हें छोड़ दिया—और छोड़करफिर अपने आप अपनी जटारूप शिखा  
का उत्पादन किया । दीपिका कार कस्तूर चन्द्र जी गणिने (सयमेव वसहिं  
उप्पाडेइ " ऐसा कपोलकल्पित मूल पाठ दिखा कर दीपिका में जो  
ऐसा लिखा है कि उसने अपने हाथों से त्रिदण्डिकों के निवास  
योग्य मठ को समूल उखाड़ डाला " यह ठीक नहीं है कारण ऐसा पाठ  
हस्त लिखित एवं मुद्रित हुई प्राचीन प्रतियों में देखने में नहीं आता है ।  
वहाँ तो "सिंहं" यही पाठ लिखा हुआ मिलता है । इस तरह से अपनी  
कपोलकल्पना से पाठ को कल्पित कर रखना यह उत्सूत्र प्ररूपणा  
है अपनी शिखा को उत्पादित कर—लुञ्चितकर—वह शुक परिव्राजक

स्थापत्या पुत्रनी आज्ञा सांख्यीने शुक परिव्राजके छिआन केणुमां न्ध ने पोताना  
त्रिदं ड वगेरे सात उपकरणे तेमज गेइ रंजना वेओने ओक तरइ भूझी दीधां  
ओटवे के आ णधी वस्तुओने तेणे सदाने माटे त्याग करी दीधा ओना  
पछी तेणे नटा इप पोतानी शिखानुं वुंयन कथुं. दीपिकाकार कस्तूर चंद्र  
गणिणे " सयमेव वसहिं उप्पाडेइ " आवे कपोलकल्पित भूण पाठ  
जतावतां दीपिकाभां ओ प्रभाणे लब्धुं छे के तेणे ( परिव्राजके ) पोताना  
हाथेथी त्रिदंडिकेना निवास ( मठ ) ने समूण नष्ट करी नाओये छते।  
आ वात ठीक कही शक्य नहि केम के आ जतने प ठ हस्तलिखित तेमज  
मुद्रित ( छपाओवी ) जूनी प्रतीमां ओरा मणने नथी ते प्रतीमा तो ' सिंह '   
पाठज लगेवेओ मणे छे. आवी रीते पोतानी कपोलकल्पना भूतक असत्य  
वातोथी पाठकेने भ्रममां भूकवाना प्रयासो करवा ते भरेणर " उत्सूत्रप्रश्-

रूपगा जनितानन्तसंसारित्वापत्तेः । उत्पाट्य यत्रैव स्थापत्यापुत्रोऽनगारस्तत्रैवो-  
पामच्छति, उपागत्य मुण्डोभूत्वा यावत् प्रवर्जितः दीक्षां गृहीतवान् । सामायि-  
कादीन्येकादशाङ्गानि चतुर्दशपूर्वाणि अधीतेस्म । तदा-शुकस्य सार्थभूताः सहस्रप-  
रिव्राजका अपि दीक्षां गृहीतवन्तः । ततस्तदनन्तरं खलु स्थापत्यापुत्रोऽनगार  
सहस्रं तदानीं दीक्षितान् सहस्रमनगारान् शुकस्य शिष्यतया वितरति, दत्तवान् ।  
ततः खलु स स्थापत्यापुत्रः सोगन्धिकाया नगर्याः नीलाशोकात् नीलाशोकना-  
मकादुद्यानात् प्रतिनिष्कामति, निर्गच्छतिस्म, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनप-  
दविहारं देशमध्ये विहारं विहरति करोतिस्म ॥ २५ ॥

जहां स्थापत्यापुत्र अनगार विराज मान ये वहां गया—( उवागच्छिता  
मुंडे भविता जाव पव्वइए समाइयमाइयाइं चउदसपुव्वाइं अहिउजइ )  
जाकर वह मुंडित हो उनके पास दीक्षित हो गया । सामायिक आदि  
ग्यारह अङ्गो को और चतुर्दश पूर्वो को उसने उनके पास पढा । शुक  
के साथ रहे हुए उन १ हजार परिव्राजकों ने भी भगवती दीक्षा धारण  
करली । ( तएणं थावच्चा पुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियर-  
इ ) स्थापत्यापुत्र अनगार ने इन १ एक हजार साधुओ को शुक परि-  
व्राजक का शिष्य बना दिया । ( तएणं से थावच्चापुत्ते सोगंधिओ नीला  
सोयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिस्सा बहिया जणवयविहारं विहरइ )  
इसके बाद स्थापत्यापुत्र अनगार उस सौगंधिका नगरी से, नीला-  
शोक उद्यान से निकले और निकल कर बाहर जनपदों में विहार  
करने लगे ॥ सू० २५ ॥

पञ्चा ” ७ छे पोतानी शिष्यानुं धुयन करीने शुक्र परिव्राजक न्यां स्थापत्या  
पुत्र अनगार हुता त्यां गया. ( उवागच्छिता मुंडे भविता जाव पव्वइए  
समाइयमाइयाइं चउदसपुव्वाइं अहिउजइ ) त्यां ७धने मुंडित अधने  
तेमनी पासेथी दीक्षा गेणवी वीधी. सामयिक वगेरे अगियार अंगो  
नो तेम ७ चतुर्दश पूर्वोना तेले स्थापत्यापुत्र अनगार पासे रहोने अब्थास  
कथो. शुक्र नी साथे रहेंनारा ओक हंनर परिव्राजकोओ पणु सागवती दीक्षा  
स्वीकारी वीधी. ( तएणं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरइ )  
स्थापत्यापुत्र अनगारे ते ओक हंनर साधुओने शुक्र परिव्राजकना ७ शिष्यो  
पनाव्या. ( तएणं से थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नीलासोयाओ पडिनिक्ख-  
मइ, पडिनिक्खमिस्सा बहिया जणवयविहारं विहरइ ) तयार भाद स्थापत्यापुत्र  
अनगर सौगंधिका नगरी अने नीलाशोक उद्याननी पहार अधने पील नन  
पड ( देश ) भां विहार करवा नीकल्या ॥ सूत्र २५ ॥

मूलम्-तएणं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संप-  
रिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसंनिगासं  
देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने,  
तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउ-  
णित्ता मासियाए संलेहणाए सद्धिं भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता  
जाव केवलवरनाणदंसणसमुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे  
जाव पहीणे ॥ सू० २७ ॥

टीका-‘तएणं से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स स्थापत्यापुत्रोऽनगारहस्तेग  
सार्धं संपरिवृतो ग्रामानुग्रामं विहरन् यत्रैव पुण्डरीकः पुण्डरीकनामकः पर्वतस्त  
त्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पुण्डरीकं पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहति-आरोहति, दूरुह्य  
‘मेघघणसंनिगासं’ मेघघनसंनिकाशं मेघानां घनः समूहस्तद्वत् कालवर्णं ‘देवस-

तएणं से थावच्चापुत्ते इत्यादि ।

टीकार्थ-‘तएणं’ इसके बाद ( से थावच्चापुत्ते ) ये स्थापत्यापुत्र  
अणगार सहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे ) हजार अनगार के साथ१ ग्रामानु  
ग्रामविहार करते हुए ( जेणेव पुंडरीए पव्वए ) जदां पुंडरीक पर्वत था-  
( तेणेव उवागच्छइ ) वहाँ आये ( उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं  
२ दुरुहइ ) वहाँ आकर वे उस पुंडरीक पर्वत पर धीरे २ चढे ( दुरु-  
हित्ता मेघघणसंनिगासं देवसंनिवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओव

‘तएणं से थावच्चापुत्ते ।’ इत्यादि ॥

टीकार्थ-‘तएणं’ त्या२भा६ ( से थावच्चापुत्ते ) स्थापत्यापुत्र (अणगारसहस्सेणं  
सद्धिं संपरिवुडे ) ज्येष्ठ ६७२ अक्षुगारनी साथे ज्येष्ठ गामथी थीजे गाम  
विहार करतां ( जेणेव पुंडरीए पव्वए ) त्यां पुंडरीक पर्वत डेतो ( तेणेव  
उवागच्छइ ) त्यां आल्या ( उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरुहइ ) त्यां  
पडोथीने तेज्या पुंडरीक पर्वतपर धीमे धीमे चढवा भांडया. ( दुरुहित्ता मेघघण-  
संनिगासं देवसंनिवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने ) थदीने तेभजे

निर्वाणं ' देवसंनिपातं=निर्वाणाद्युत्सवसमये यत्र देवाः समागत्य मिलन्ति, देवा  
नां संनिपातः संमिलनं यत्र तं ' पृथिवीशिलापट्टकं प्रतिलेख-  
यित्वा यावत् ' पाओवगमणं शुवन्ने ' पादपोपगमनमनुपाप्तः सहस्रशिष्यै सह  
पादपोपगमनसंस्तारकं कृतवान् । ततः खलु स स्थापत्यापुत्रो बहूनि वर्षाणि सामान-  
परियागं ' श्रामण्यपर्यायं=वारित्रपर्याय ' पाउणिता ' पालयित्वा मासिक्या  
संलेखनया पण्डित्तानि अनशनं छित्त्वा यावत् - केवलवरज्ञानदर्शने सति  
' समुप्पाडेत्ता ' समुत्पाद्य अन्तसमये केवलज्ञानां केवलदर्शनं च संप्राप्य ततः  
पश्चात् सकलकर्मक्षये सिद्धः मुक्तिं प्राप्तः यावत् बुद्धो मुक्तः सर्वदुःख प्रहीणः  
जन्मजरामरणादिदुःखरहितो जातः ॥ २६ ॥

गमणं शुवन्ने) चहकर उन्होंने ने मेघ समूह के समान कृष्ण वर्णवाले  
तथा निर्वाण आदि के उत्सव के समय जहाँ देव एकत्रित होते हैं ऐसे  
पृथिवी शिलापट्टक पर प्रतिलेखना कर यावत् पादपोपगमन संथारा  
धारण कर लिया। साथ के उन १ हजार साधुओं ने भी पादपोपगमन  
संथारा ले लिया। (तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्न परि-  
यागं पाउणिता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदिता जाव  
केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे जाव पहीणे )  
इस तरह उन स्थापत्यापुत्र अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय  
का पालन करके एक मास की संलेखना से साठ भक्तों का अनशन  
द्वारा छेदन कर यावत् अन्त समय में केवल ज्ञान केवल दर्शन प्राप्त  
कर लिया। उन्हें प्राप्त कर फिर वे सकल कर्मों के क्षय होने पर सिद्ध  
बन गये। यहाँ यावत् शब्द से बुद्ध मुक्त सर्व दुःख प्रहीण जन्मजरा  
मरणादि दुःख रहितो जाता " इन पदों का संग्रह हुआ है । सू० २६॥

भैरव समूह जेवी काणी तेमज निवाळु वगेरेना छित्तवना वणते देवे। तथां जे १६४  
थाय छे जेवी शिलापर प्रतिवेचना करीने पादपोपगमन संथारे स्वीक्राये। तेमनी  
साथे जे १ हजार साधुजो पळु (तएणं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नप-  
रियागं पाउणिता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदिता जाव केवलवर-  
नाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओपच्छा सिद्धे जाव पहीणे ) आ रीते स्थापत्यापुत्र  
अनगारे धरुं वर्षां सुधी थावथ पर्यायतुं पालन करीने जे १ भड्डिनानी  
संवेचनाथी साईक वक्तोतुं अनशन वडे छेदन करीने छेवटे केवण ज्ञान केवण  
दर्शन भेजणुं। त्यार पाळ जथां कर्मो क्षय थयां त्यारे तेमने सिद्ध पढ मणुं  
अही। जे 'यावत्' शब्द आव्यो छे तेथी ( बुद्धः मुक्तः सर्वदुःखप्रहीणः जन्म  
जरामरणादिदुःखरहितो जातः ) आ पहेनो स अर्थ थयो छे ॥ सू० २६ ॥

मूलम्—तएणं से सुए अन्नया कथाइं जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए परिसा निग्गया सें-लओ निग्गओ धम्मं सोच्चा देवाणुप्पिया ! पंथगपामोक्खाइं पंचं मंतिसयाइं आपुच्छामि मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि, तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अण-गारयं पव्वयामि, अहासुहं, तए णं से सेलए राया सेलागपुरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहि-रिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएणं से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंच मंति-सए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुयस्स अंतिए धम्मं णिसंतंते सेविय धम्मे इच्छिए पडि-च्छिए अभिरुइए अहंणं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गे जाव पव्वयामि, तुव्वं णं देवाणुप्पिया ! किं करह किं ववसाह किं वा ते हियइच्छंति ?

तएणं ते पंथगपामोक्खा सेलगं रायं एवं वयासी—जइणं तुव्वे देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयह अम्हाणं देवा-णुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलंवे वा अम्हेऽवि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामो, जहा देवाणुप्पिया ! अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा णं पव्वतियाण वि समणाणं बहुसु जाव चक्खुभूए ।

तएणं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए एवं वयासी

जइणं देवाणु० तुब्भे संसार जाव पव्वयह तं गच्छह णं देवा०  
सपसु २ कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुंबमज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्स  
वाहिणिओ सीयाओ दुरुद्धा समाणा मम अंतियं पाउब्भव-  
हत्ति, तहेव पाउब्भवन्ति ।

तएणं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं  
पासइ, पासित्ता हट्ठतुडे कोडुंविय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं  
वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं  
जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह० अभिसिंचइ जाव राया यावद्  
विहरइ ॥ सू० २७ ॥

टीका—ततस्तदनन्तरं खलु स' शुकोऽन्यदा=अन्यस्मिन् काले, कदाचित्  
कस्मिंश्चित् समये यत्रैव शैलकपुरं नाम नगरं यत्रैव सुभूमिभागं=सुभूमिभागनामकम्  
उद्यानं 'तेणेव समोसरिए' तत्रैव समवसतः समागतः । परिषन्निर्गता=शैलकपुर  
नगरनिवासिनां जनानांसंहतिः शुक्रनामाऽनगारं समागतं श्रुत्वा तं वन्दितुं शैलक-  
पुरनगराद्वहिर्निःसृत्येत्यर्थः । शैलकोऽपि निर्गतः शैलकनामा नृपोऽपि शुक्रमनगारं  
वन्दितुं नगराद्वहिर्निःसृतः । निर्गत्य यत्रैव शुकोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छति । अथ

'तएणं से सुए' इत्यादि

टीनार्थ—(नएणं) इसके बाद (से सुए) वे शुक अनगार (अनया कयाइं)  
किसी एक समय (जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए)  
जहां शैलकपुर नाम का नगर और उस में श्री जहां सुभूमिभाग नाम  
का उद्यान था वहां विहार करते २ आये (परिसा निग्गया सेलओ  
निग्गओ, धम्मं सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पंथगपामोक्खाइं पंचमंतिस

(तएणं से सुए) इत्यादि ।

टीकार्थ—'तएणं' त्यागणाह (से सुए) शुक अनगार (अनया कयाइं) के।  
ओह वपते (जेणेव सेलकपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समा  
सरिए) कथां शैलक पुर नामे नगर अने तेमां पणु कथां सुभूमि भाग नामे  
उद्यान हेतुं त्यां विहार करतां करतां आल्या. (परिसा निग्गया सेलओ निग्ग-  
ओ धम्मं सोच्चा जाव देवाणुप्पिया पंथगपामोक्खाइं पंचमंतिसयाइं आपु-



शुकनाम्नाऽनगारेण धर्मकथा कथिता । परिपत् प्रतिगता । ततः शैलको राजा-धर्मं श्रुत्वा यावत्-संबुद्धः शुकमेवमवादीत्-देवानुप्रिय । पान्थकप्रमुखानि पञ्च मन्त्रि-  
शतानि पञ्चशतसंख्यकान् पान्थकादीन् मन्त्रिणः आपृच्छामि, मन्त्रूकं च कुमारं  
स्वपुत्रं राज्ये स्थापयामि, ततः पथात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डोभूत्वाऽगारादन-  
गारतां प्रव्रजामि=स्वीकरोमि । शुक आह-यथासुखं=प्रव्रज्याप्रव्रजणे विलम्बो न  
करणीय इत्यर्थः । ततः खलु स शैलको राजा शैलकपुरं नगरमनुप्रविशति, अनुप्रवि-  
श्य यत्रैव स्वकं=निजं गृहं यत्रैव बाह्या 'उक्टाणसाला' उपस्थानसाला=सभा

याहं आपृच्छामि मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवानुप्पियाणं  
अंतिणं मुंडे भविस्सा आगाराओ अणगारयं पब्बयामि) इनका आगमन  
सुनकर शैलकपुर नगर निवासी जनों का समूह उनके बंदन करने  
के लिये नगरसे बहार निकला । शैलकपुर राजा भी निकले । ये सब  
चलकर वहां आये जहां वे शुक अनगार विराज मान थे । शुक अन-  
गार ने सब को धर्म कथा सुनाई । सुनकर सबलोग वापिस चले गये ।  
शैलक राजा धर्म का उपदेश सुनकर यावत् प्रतिबुद्ध हो गया । उसने  
शुक अनगार से इस प्रकार कहा—देवानुप्रिय । मैं पान्थक प्रमुख  
पांच सौ मंत्रियों से पूछलेना हूँ और अपने पुत्र मंडूक कुमार को  
राज्यमे स्थापित कर देता हूँ । बाद में मैं देवानुप्रिय आपके पास  
मुंडित होकर अगर अवस्था से अनगार अवस्था धारण करलंगा ।  
( अहामुहं तण्णं सेसेलणं राया सेलणपुरं नयरं अणुपविसइ, अणु

पच्छामि मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि तओ पच्छा देवानुप्पियाणं अंतिणं मुंडे  
भविस्सा आगाराओ अणगारयं पब्बयामि ) तेभनु आगमनं सांलणीते शैलक  
पुरेना नागरिकेना समूहे तेभनी वंदनां करवा माटे गहारे नीकल्या. शैलक  
पुरेना राजा पणु वंदन माटे गहारे जया नीकल्या. तेओ जया जयां शुक  
परिज्ज नक विराजमान होता त्यां पछोन्त्यां. शुक परिज्जाजके जयाने धर्मकथा  
सांलणावी. धर्मकथा सांलणी ने जया पोत पोताने स्थाने जाता रद्धा. धर्म  
कथा सांलणीने शैलक राजा ने पोप थयो. तेमणे शुक अनगारने विनंती  
करतां कहुं के—“ देवानुप्रिय । हुं मारा पान्थसो मन्त्रीओने पूछी लो' छु' अने  
मारा पुत्र मंडूक कुमारने राज्याभिषेकासने जेसाडी दंडं तयार पछी तमारी  
पासे मुंडित थयने हुं अगर अवस्था त्यलने अनगार अवस्था धारण  
करीश ( अहामुहं तण्णं सेसेलणं राया सेलणपुरं नयरं अणुपविसइ अणुपवि-

स्थानं, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सिंहासने 'सन्निसन्ने' संनिषण्यः=उपविष्टः । ततः खलु स शैलको राजा पान्थकप्रमुखानि पञ्चमन्त्रिशतानि=पञ्चशतसंख्यकान् पान्थकादीन् मन्त्रिणःशब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-एवं खलु हे देवानुमियाः ! मया शुकस्य=शुकनाम्नोऽनगारस्यान्तिके=समीपे धर्मः=श्रुतचारित्रलक्षणः 'णिसंते' निशान्तः=श्रुतः, सोऽपि च धर्मः 'इच्छि' इष्टः=वाञ्छितः, 'पडिच्छि' प्रतीप्सितः=ग्रहीतुममिलषितः 'अभिरु' अभिरुचितः=प्रत्यात्मप्रदेशे रुचिविषयीभूतः, अहं खलु हे देवानुमियाः ! 'संसारमयउव्विग्गे' संसारमयोद्विग्नः जन्मजरामरणेष्टवियोगानिष्टसंयोगादिभयोद्विग्नः सन् यावद् प्रज्जामि=दीक्षां ग्रहिष्यामि । हे देवानुमियाः ! यूयं किं करिष्यथ किं व्यवसायिष्यथ=कीदृशं व्यवसायमुद्यमं करिष्यथ, किं वा युष्माकं हृदययेप्सित इति, भवतां मनोगतोविचारः कीदृशो वर्तते इत्यर्थः । ततः खलु ते

पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उट्टानसाला तेणेत्त उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएणं से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए सहावेइ ) शैलक राजा के इस प्रकार के विचार सुन कर शुक अनगार ने उनसे कहा-यथा सुखं-अर्थात् शुक-अनगार की इस तरह दीक्षा ग्रहण करने में अनुमति प्राप्त कर शैलक राजा वहां से शैलक पुर नगरमें आये । आकर वे जहां अपना घर और जहां अपनी बाहिर उपस्थानशाला समास्थान-था वहां गये-वहां जाकर उन्होंने सिंहासन पर बैठकर पांचसौ पांथक प्रमुख मंत्रियों को बुलाया-( सहावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवानुमिया मए सुयस्स अंतिए धम्मे णिसंते से विय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए, अभिरुइए अहं णं देवानुमिया ! संसारमयउव्विग्गे जाव पव्वयामि तुंभे णं

सित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उट्टानसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे सन्निसन्ने, तएणं से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए सहावेइ ) शैलक राजाना आ आतना विगारे सांखणीने शुक अनगारे तेभने कहुं- " यथासुभं " ओटवे के तभने जेभां सुण भजे ते करे। शुक परित्राजकनी दीक्षा अछुण करवाभाटेनी अनुमति भेजवीने शैलक राजा त्यांथी शैलकपुर नगरभां आब्या। त्यां आवीने तेओ सीधा पोताना भेडेलनी अइर उपस्थान शाणा ओटवे के सहास्थ न हतुं त्यां पडांथ्या। त्यां जेभने तेभणे सिंहासन उपर जेसीने पांथसे पाथक प्रमुख मंत्रीओने जोलाव्या। ( सहावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवानुमिया ! मए सुयस्स अंतिए धम्मे णिसंते से विय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए अहं णं देवानुमिया ! संसारमयउव्विग्गे जाव पव्व-

પાન્થકપ્રમુખાઃ પાન્થકાદયો મન્ત્રિણઃ શૈલકં રાજાનમેવમદન્ યદિ સ્વલુ યૂયં દેવા-  
નુપ્રિયાઃ ! સંસારમયોદ્વિગ્નાઃ યાવત્ પ્રવ્રજત=પ્રવ્રજિષ્ય, તર્હિ અસ્માકં હે દેવાનુ-  
પ્રિય ! =હે રાજન્ ! કોડન્ય આધાર!=આશ્રયો વા, આલમ્બ=દુઃસ્વાદૌ પ્રપતતાં-  
ધારકઃ વા મવિષ્યતિ, યતોડસ્માકં મવાનેવશરણમ્ , इत्यर्थः । વયમપિ ચ સ્વલુ  
હે દેવાનુપ્રિય ! સંસારમયોદ્વિગ્ના યાવદ્ મવદ્મિઃ સાર્ધમેવ પ્રવ્રજામઃ=દીક્ષાં પ્રદી-

દેવાણુપ્પિયા ! કિં કરેહ કિંવચસહ, કિં વા તે હિયદ્દંછંતિ ? ) બુલાકર  
બનસે એસા કહા-હે દેવાણુપ્રિયો ? મૈને શુક અનગાર કે પાસ શ્રતચારિત્ર  
રૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ સુના હૈ-વહ મુક્ષે વહુત અચ્છા લગા હૈ । મેરી  
હચ્છા ઉસે પ્રહ્ણ કરને કી હો રહી હૈ હર એક આત્મપ્રદેશમે વહ મેરી  
રુચિકા વિષયભૂત બન ગયા હૈ । હે દેવાનુપ્રિયો ! મૈ સંસાર કે ભય સે  
જન્મ જરા મરણ હષ્ટ વિયોગ અનિષ્ટ સંયોગ આદિ કે ડર સે હસ  
સમય ઉદ્વિગ્ન હો રહા હૂં અતઃ મૈ સંયમ ધારણ વહંગા । અતઃ હે દેવા-  
નુપ્રિયો ! તુમ કયા કરોગે , કેસા ઉચ્ચમ કરોગે-આપલોગોં કા મનોગત  
વિચાર કેસા કયા હો રહા હૈ ? ( તણં તે પંથગપામોક્ષ્તા સેલગં રાયં  
એવં વયાસી ) રાજા કી હસ પ્રકાર વાળી સુનકર બન પાંથક પ્રમુખ  
પાંચસૌ મંત્રિયોં ને ઉસ શૈલક રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-( જહ્ણં તુમ્હે  
દેવાણુપ્પિયા ! સંસારમઝવિગ્ના જાવ પવ્વચહ, અમ્મહાણં દેવાણુપ્પિયા !  
કિમન્ને આહારે વા અલવે વા અમ્હે વિ ય ણં દેવાણુપ્પિયા ! સંસારમઝ-  
વિગ્ના જાવ પવ્વચામો ) હે દેવાનુપ્રિય-! યદિ આપ સંસાર ભય સે

યામિ તુમ્હેણં દેવાણુપ્પિયા ! કિં કરેહ કિં વચસહ કિંવાતે હિયદ્દંછંતિ ! ) બોલાવી  
ને રાજાએ તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! મેં શુક અનગર પાસેથી શ્રુતચારિત્ર  
રૂપ ધર્મને ઉપદેશ સાંભળ્યો છે. તેનાથી હું બહુજ પ્રભાવિત થયો છું. શ્રુત  
ચારિત્ર રૂપ ધર્મને સ્વીકારવાની મારી તીવ્ર ઇચ્છા છે, મારા આત્માના પ્રત્યેક  
ભાગમાં શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મ વ્યાપ્ત થઇ ગયો છે. હે દેવાનુપ્રિયો ! હું  
સંસારના ભયથી જન્મ જરા ( ઘડપણ ) ઇષ્ટજનનો વિયોગ, અનિષ્ટ સંયોગ  
વગેરેની બીકથી અત્યારે વ્યાકુળ થઇ રહ્યો છું. તેથી હું સંયમ ધારણ કરીશ  
હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે શું કરશો ? તમે શો ઉદ્યોગ કરશો ? આ વિષે તમારા  
મનમાં કંઈ બાતના વિચારો આવવા માંડ્યા છે ? ( તણં તે પંથગપામોક્ષ્તા સેલગં  
રાયં એવં વયાસી ) રાજાની વાણી સાંભળીને પાંથક પ્રમુખ પાંચસૌ મંત્રીઓએ  
શૈલકરાજને આ પ્રમાણે કહ્યું—(જહ્ણં તુમ્હે દેવાણુપ્પિયા ! સંસારમઝવિગ્ના જાવ  
પવ્વચહ અમ્મહાણં દેવાણુપ્પિયા ! કિમન્ને આહારે વા અલવે વા અમ્હે વિ ય ણં દેવાણુ-  
પ્પિયા ! સંસારમઝવિગ્ના જાવ પવ્વચામો) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે બે સંસાર ભયથી ભય

व्यामः । हे देवानुप्रिय । हे स्वामिन् । यथाऽस्माकं बहुषु कार्येषु=राज्याधिकृत-  
कार्येषु च कारणेषु=राज्यरक्षणोपायेषु च यावत्-तथा - खलु भवद्भिः सार्धं  
प्रव्रजितानामपि श्रमणानां बहुषु यावत् कार्यादिषु चक्षुर्भूतः । यथाऽस्माकमधिकृ-  
तेषु भवान् विश्रामस्थानं, राज्यकार्येषु भवानेव नेत्रतुल्यो नेताऽस्ति तथा चारित्र-  
पालनकार्येष्वपि भवानेव नेतामविष्यतीतिभावः ।

उद्भिन्न हो कर दीक्षित होना चाहते हैं तो हे देवानुप्रिय । अब हमलोगों  
का और कौन आपके सिवाय दूसरा आधार हो सकेगा कौन दुःखा-  
दिक के समय हमलोगों के लिये आलंबन देने वाला होगा, क्यों कि  
हमारे लिये तो आपही एक शरण भूत हैं । अतः जब आप दीक्षित  
होना चाहते हैं तो हम लोग भी संसार भय से उद्भिन्न हो कर आप  
के साथ ही दीक्षा संयम धारण करेंगे । ( जहा देवानुप्पिया ! अम्हं  
बहुसु कज्जेसु य कारणेषु य जाव त्हाणं पव्वतियाणवि समणा णं  
बहुसु जाव चक्खुमूए ) हे देवानुप्रिय ! जोस तरह आप हमलोगों के  
लिये अनेक राज्याधिकृत कार्यों में अनेक कारणों से-राज्य संरक्षण  
के उपायों में-चक्षुर्भूत रहे हैं उसी तरह आपके साथ प्रवृजित हुए  
हमलोगों के चारित्र पालन कार्य में भी आप ही नेता रहेंगे । ( तएणं से  
सेलगे पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए एवं वयासी ) मंत्रि मंडल की इस  
प्रकार बात सुनकर उस शैलक राजा ने उन पांधक प्रमुख पांचसौ  
मंत्रियों से इस प्रकार कहा:-

नस्त थधने दीक्षा मेणववानी ध्विछा शणेछा तो तभारा सिवाय अभारे  
थीन्ने केणु आधार थशे ? आइतना वधते अभने आश्रय आपनार केणु थशे ?  
अभारे भाटे तो तमे व शरणु इय छे, ओटले न्यारे तमे दीक्षित थवानी  
ध्विछा शणे छे त्यारे अभे दोडे पणु आसंसारथी कंटाणी गथा छीन्ने तभारी  
साथे अभे पणु ओच्छस दीक्षा संयम धारणु करीशु ( जहा देवानुप्पिया ।  
अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेषु य जाव त्हाणं पव्वतियाणवि समणाणं  
बहुसु जाव चक्खुमूए ) हे देवानुप्रिय ! तमे नेम अई अभारा भाटे  
धणु राजवहीटना कामेमां धणुं करेणुमां-राज्य संरक्षणु विधेना उपा  
येमां यक्षुभूत रक्षा छे तेथी अभारी साथे प्रव्रजित थधने पणु अभे दोडे  
आरित्रपालन कार्यमां पणु तमे व अभारा नेता थन्ने ओवी अभारी ध्विछा  
छे, ( तएणं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंचमंतिसए एवं वयासी ) मंत्रीओ  
आ नतना विथारे सांखणीने शैलक राजाओ ते पांधक प्रमुख पांचसौ

ततः खलु स शैलकः पान्थकप्रमुखं पञ्चमन्त्रिशतं=पञ्चशतसंख्यकान् पान्थका-  
दीन् मन्त्रिणः, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्—यदि खलु हे देवानुप्रियाः । यूयं  
संसारभयोद्विग्नाः यावत् प्रव्रजत प्रव्रजिष्यथ दीक्षां गृहीष्यथ, तत् तर्हि गच्छत  
खलु हे देवानुप्रियाः । स्वकेषु स्वकेषु कुटुम्बेषु ज्येष्ठान् पुत्रान् कुटुम्बमध्ये स्था-  
पयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिकाः दुरूढाः आरूढाः सतो ममान्तिकं प्रादु-  
र्भवतेति । तथैव प्रादुर्भवन्ति=ते पञ्चशतानि मन्त्रिणः स्व स्व ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्ब-  
मध्ये स्वस्थाने स्थापयित्वा शिबिकामारूढाः सन्तः शैलकनृपस्य समीपे उपस्थिता  
अभूवचित्यर्थः ।

ततः खलु स शैलक राजा पञ्चमन्त्रिशतानि=पञ्चशतानि मन्त्रिणः प्रादुर्भवतः=  
समागतान् पश्यति, दृष्ट्वा दृष्टदृष्टः कौटुम्बिकपुरुषान् = आज्ञाकारिणः पुरुषान्

( जइणं देवाणु० तुम्हे संसार जाव पव्वयह त गच्छह णं देवाणु०  
सएसु २ कुटुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुटुंबमज्जे ठावेत्ता पुरिसहस्सबाहिणिओ  
सीहाओ दुरूढा समाणा मम अन्तियं पाउमवहत्ति तहेव पाउमवन्ति )  
हे देवानुप्रिय । यदि आप लोग संसार भय से उद्विग्न हैं और यावत्  
प्रव्रजित होना चाहते हैं तो जाओ और अपने २ कुटुम्बों में अपने २  
स्थानों पर ज्येष्ठ पुत्रों को स्थापित करके पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं  
पर आरूढ हो कर फिर मेरे पास आजाओ इस प्रकार राजा के  
कथन को सुनकर उनसबने अपने २ कुटुम्बों में अपने २ स्थान पर  
अपने २ ज्येष्ठ पुत्रों को स्थापित किया—और बाद में फिर वे सबके सब  
शैलक राजा के पास में पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ हो  
कर उपस्थित हो गये । ( तएणं से सेलए राया पंचमन्तिसयाइं पाउम-  
वमाणाइं पासइ पासित्ता हट्ठुट्ठे कोडुंबिय पुरिसे सदावेइं सदावित्ता

भन्त्रीओने आ प्रभाञ्जे कहुं—( जइणं देवाणु० तुम्हे संसार जाव पव्वयह तं  
गच्छह णं देवाणु० सएसु २ कुटुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुटुंबमज्जे ठावेत्ता पुरिसहस्स  
बाहिणिओ सीहाओ दुरूढा समाणा मम अन्तियं पाउमवहत्ति तहेव पाउ-  
मवन्ति ) हे देवानुप्रिये । अरेभर जे तमे संसारभयथी संनस्त हो तो  
आओ अपने पोतपोताना कुटुंबोमां पोताना स्थाने ज्येष्ठ पुत्रो ने भूझीने  
पुरुषसहस्रवाहिनी पालपीओमां जेसीने भारी पासो आवो, आ रीते राजानुं  
कथन संसज्जीने तेओ भधा पोतपोताने स्थाने ज्येष्ठ पुत्रोने भूझीने पुरुष  
सहस्रवाहिनी पालपीओमां सवार थछ राजानी पासो आव्या, ( तएणं से  
सेलए राया पंचमन्तिसयाइं पाउमवमाणाइं पासइ पासित्ता तट्ठुट्ठे कोडुंबिय

शब्दयति, आह्वयति । शब्दयित्वा=आह्वय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-क्षिप्रमेव  
=क्षीप्रमेव भो ! देवानुप्रियाः ! मण्डूकस्य कुमारस्य महार्थं=महाप्रयोजनकं यावत्-  
राज्याभिषेकं 'उवट्वेह' उपस्थापयत कुरुत । 'अभिसिचन्ति' अभिषिञ्चन्ति,  
ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषाः सुवर्णरजतकलशैर्मण्डूककुमारं स्नापयित्वा सर्गोलङ्कार  
विभूषितं कृत्वा, तस्य राज्याभिषेकं कुर्वन्ति स्मेत्यर्थः । यावद् मण्डूको राजा  
जातः विहरति=आस्ते ॥ सू० २७ ॥

मूलम्-तएणं सी सेलए राया मंडुयं रायं आपुच्छइ, तएणं  
से मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वया-  
सी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सेलगपुरं नगरं आसित्त  
संमज्जिओवल्लितं गंधोदयसित्तं गंधवट्ठिभूतं करेह य कारवेह य,

एवं वयासी) इसके बाद उस शैलक राजा ने जब उन पांचसौ मंत्रियों  
को अपने समीप उपस्थित हुआ देखा-तो देखकर वह बहुत अधिक  
प्रसन्न एवं संतुष्ट हुआ और उसी समय उसने कौटुम्बिक पुरुषों को  
बुलाया-बुलाकर उनसे कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । मंडुयस्स  
कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्वेह०, अभिसिचइ जाव राया  
यावत् विहरइ) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही मंडूक कुमार का  
महार्थ साधक-महाप्रयोजन भूत-यावत् राज्याभिषेक करो । उन्होंने ने  
उसका राज्याभिषेक किया अर्थात् सुवर्ण रजत के कलशों से मंडूक  
कुमार का अभिषेक कर और उसे समस्त अलंकारों से विभूषित कर  
राज्य पद में अभिषिक्त किया । इस तरह मंडूक कुमार राज्य पदासीन  
हो गया ॥ सूत्र २७ ॥

पुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी) त्थार भाह पोताना पांचसो मंत्रीओने  
आवेला ओधने राजा भूषण प्रसन्न थथा अने संतुष्ट थथा राजाओ तरेत ७  
पोताना कौटुम्बिक पुरुषोने ओलाव्या अने ओलावीने तेभने कहुं- ( खिप्पामेव  
भो देवाणुप्पिया । मंडुयस्स-कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्वेह अभिभि  
चइए जाव राया यावद् विहरइ) हे देवानुप्रियो ! तमे उपदे मंडूक राजा  
कुमारने महार्थसाधक महप्रयोजन भूत-राज्याभिषेक करे कौटुम्बिक पुरु-  
षाओ राजनी आज्ञा प्रमाणे ७ मंडूक राजकुमारने राज्यभिष करे ओपदे के  
तेओओ सोना इपाना इणशेओ मंडूक कुमारने अनियंथ केओ, अने अथा मंडूक-  
क्षेत्राधी तेने शत्रुभादीने राज्य सिद्धिजन उपर ओसांथो, ॥ सूत्र " २७ " ॥

करित्ता य कारवित्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं से मंडुए राया दोच्चंपि कोडुंवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासो-खिप्पामेव भो ! सेलगस्स रत्तो महत्थं जाव निक्ख-मणाभिसेयं जहेव मेहस्स तहेव, णवरं पउमावतीदेवी अग्ग-केसे पडिच्छइ । सच्चेव पडिग्गहं गहाय सीयं दुरुहंति, अवसेसं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिजित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ, तएणं से सुए सेलय-स्स अणगारस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगारसयाइं सोसत्ताए वियरइ, तएणं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहि-या जणवयविहारं विहरइ, तएणं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुर्वि चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे ॥ सू० २८ ॥

‘ तएणं से सेलए ’ इत्यादि ।

टीका-ततः स शैलको राजा मण्डूकं राजानमापृच्छति, हे देवानुप्रिय । अहं दीक्षां ग्रहीष्यामीती । ततः खलु स मण्डूको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् आदेश कारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवं वक्ष्यमाणप्रकारे-

‘ तएणं से सेलए राया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सेलए राया) उस शैलक राजा ने ( मंडुयं रायं आपुच्छइ ) मंडूक राजा से पूछा कहा कि हे देवानुप्रिय । मैं दीक्षा संयम लूंगा ( तएणं से मंडुए राया कोडुंविय पुरिसे सदावेइ )

( तएणं से सेलए राया ) इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्थार भा० (सेलएराया) शैलक राजा ने ( मंडुय रायं आपु-च्छइ ) मंडूक राजा ने पूछा-हे देवानुप्रिय । हे दीक्षा स्वीकरीश । ( तएणं से मंडुए राया कोडुंवियपुरिसे सदावेइ ) त्थार पञ्ची मंडूक राजा ने कौटुम्बिक

णावादीत् सिप्रमेव शीघ्रमेव भो देवानुप्रियाः शैलकपुरं नगरम् 'आसित्तसंम-  
ज्जिओवलितं' आसित्तं संमार्जितोपलिप्तं=आसित्तम् जलेनाऽऽर्द्रीकृतं, संमार्जितं  
संमार्जन्या कचवराद्यपसारणेन संशुद्धः, उपलिप्तं-गोमयादिना संलिप्तं,  
गन्धोदकसिक्तं पुनर्गन्धोदकेन प्रसिक्तं गन्धवर्तिभूतं अगरवतिरूपं सुगन्धमयं यूयं  
कुरुत, अन्यैश्च कारयत कृता च कारयित्वा च 'एयमाणत्तियं' एतामाज्ञप्तिकां=एतां  
ममाज्ञां प्रत्यर्पयत = भवदादिष्टं कार्यं सर्वं संपादितमस्माभिरित्यावेदयतेत्यर्थः ।  
ततः खलु स मण्डूको राजा 'दोच्चं पि' द्वितीयमपि द्वितीयवारमपि कौटुम्बिक-  
पुरुषान्=आदेशकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आहति। शब्दयित्वा एवमवादीत्-

इसके बाद मंडूक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सहावित्ता एवं  
वयासी) बुलाकर उन से ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवानुप्पिया !  
सेलगपुरं नगरं आसित्तं संमज्जिओवलितं गंधवट्टिभूतं करेह्य  
कारवेह्य) भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही शैलकपुर नगर  
को जल से छिड़को- सिंचित करो, कचवर आदि के अपनयन से  
उसे साफ करो, गोमयादि से उसे लीपों गंधोदक से उसे बार २ सिक्त  
प्रसिक्त करो गंधवर्तिरूप करो- सुगन्धमय करो, तथा दूसरों से कर  
वाओ । ( करित्ता कारवित्ता य एयमाणत्ति यं पच्चप्पिणह ) कर के  
और करा के पीछे हमें इस आज्ञा के पालन की खबर दो हमने आप  
की आज्ञानुसार सब कार्य संपादित कर दिया है- ऐसा पीछे हमें  
समाचार दो ( तएणं से मंडुए राया दोच्चं पि कौटुम्बियपुरिसे सहा-  
वेह, सहावित्ता एवं वयासी ) इसके बाद मंडूक राजा ने कुवारा भी

पुरुषाने ओल्लोव्या ( सहावित्ता एवं वयासी ) ओल्लावीने आ प्रभाणु कहुं-  
( खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! सेलगपुरं नगरं आसित्तसंमज्जिओवलितं  
गंधवट्टिभूतं करेह्य कारवेह्य ) हे देवानुप्रियो ! तमे शैलकपुरने पाणीथी  
सत्तरे सिंचित करे क्यरै वगेरे साक्ष करीने, छाणु वगेरेथी लीपे तेमए  
सुवासित पाणीथी वारवार तेने सिंचित करे अने तेने गंधवतिं ओटवे हे  
धूपसणीनी जेम सुवासित भनावे तेमए भीलओथी सुवासमय भनावडावे।  
( करित्ता कारवित्ता य एयमाणत्ति यं पच्चप्पिणह ) आ प्रभाणु जाते करीने अने  
भीलओनी पासेथी करावडावीने काम पुईं थयानुं अमने जणावे। ( तएणं से  
मंडुए राया दोच्चं पि कौटुम्बियपुरिसे सहावेह, सहावित्ता एवं वयासी )  
त्यार भाद मंडूक राजाओ भील पणत कौटुम्बिक पुरुष ओल्ला० २



ક્ષિપ્રમેવમેઃ । શૈલકસ્ય રાજ્ઞો મહાર્થે=મહાપ્રયોજનકં મોક્ષફલકં યાવત્ નિષ્ક્રમણા-  
ભિષેકમ્=દીક્ષોત્સવમ્ ઉપતથાપયત=કુરુત, યથા મેઘસ્ય મેઘકુમારસ્ય પ્રથમાધ્યયને  
નિષ્ક્રમણાભિષેકો વર્ણિતઃ તથૈવ=તદ્વદત્રાપિ વાચ્ય ઇત્યર્થઃ । મણ્ડુકનૃપાઽઽજ્ઞયા  
કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ શૈલકનૃપસ્ય નિષ્ક્રમણાભિષેકં મેઘકુમારવત્ કૃતવન્ત ઇતિ ભાવઃ  
નવરં તર્જૈતાંવાન્ ભેદઃ યત્-પદ્માવતી દેવી પદ્માવતી નામ્ની રાજ્ઞી શૈલકનૃપસ્ય સ્વ-  
માર્યા, અગ્રકેશાન્ = અગ્રભૂતાન્ કેશાગ્રમાગરૂપાન્ ચતુરંગુલવર્જિતાન્ નાપિતક-  
ર્તિતાન્ કેશાન્ પ્રતીચ્છતિ=વસ્ત્રાશ્ચલે શૃક્ષાતિ, મેઘકુમારસ્ય તુ સ્વમાતા ધારિણી-  
દેવી કેશાન્ શૃક્ષાતિસ્મેતિભાવઃ સચ્ચેવા તદિવ=તદ્વત્ = મેઘકુમારવદિત્યર્થઃ,

કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો બુલાયા, ઓર બુલાકર ઉન સે એસા કહા ( સ્ત્રિપ્તા-  
મેવ મો સેલગસ્સ રન્નો મહર્થ જાવ નિક્સલમણાભિસેયં જહેવ મેહસ્સ  
તહેવ- જવરં પડમાવતી દેવી અગ્રકેસે પઢિચ્છહ ) તુમ લોગ શીઘ્ર  
હી શૈલક રાજા કો મોક્ષફલ સાધક યાવન્ નિષ્ક્રમણાભિષેક દીક્ષો-  
ત્સવ- મેઘકુમાર કે દીક્ષોત્સવ કી તરહ કરો । મેઘકુમાર કા દીક્ષોત્સવ  
જૈસા પ્રથમ અધ્યયન મેં વર્ણિત કિયા હૈ વૈસા હી યહાં પર મી સમગ્ર  
લેના ચાહિયે । હસ પ્રકાર મંડુક રાજા કી આજ્ઞા સુનકર ઉન કૌટુમ્બિક  
પુરુષોં ને શૈલક રાજા કા દીક્ષોત્સવ મેઘકુમાર કે દીક્ષોત્સવ કી  
તરહ અચ્છી તરહ સે કિયા । ઉસમેં ઓર હસમેં કેવલ હતના હી મેદ  
રહા કિ હસ દીક્ષોત્સવ મેં પદ્માવતી દેવી જો શૈલક રાજા કી સુલ્ય  
રાની થી ઉસને ઉસકે નાપિત કર્તિત ચતુરંગુલવર્જિત અગ્ર કેશોં કો  
અપને વસ્ત્રાશ્ચલ મેં લિયા ઓર મેઘકુમાર કે દીક્ષોત્સ મેં મેઘકુમાર કે  
નાપિત કર્તિત ચતુરંગુલવર્જિત કેશોં કો ઉસ કી માતા ધારિણી દેવી

બોલાવીને તેમને કહ્યું-કે ( સ્ત્રિપ્તામેવ મો સેલગસ્સ રન્નો મહર્થ જાવ નિક્સલમણ  
ભિસેયં જહેવ મેહસ્સ તહેવ જવરં પડમાવતી દેવી અગ્રકેસે પઢિચ્છહ ) તમે  
મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમ શૈલક રાજાને દીક્ષોત્સવ બોલો  
પ્રથમ અધ્યયનમાં મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવ વિષે જેમ વર્ણન કરવામાં આવ્યું  
છે તેમ જ અહીં પણ સમજવું જોઈએ. આ રીતે મંડુક રાજાની આજ્ઞા  
પ્રમાણે જ કૌટુમ્બિક પુરુષોએ મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવની જેમજ સરસ રીતે  
દીક્ષોત્સવ ઊજાવ્યો. મેઘકુમારના દીક્ષોત્સવમાં અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમાં  
તફાવત આટલોજ સમજવો કે-મેઘરાજાના દીક્ષોત્સવ વખતે બ્યારે તેમનાં  
માતા ધરિણીદેવીએ ચાર આંગળ છોડીને બાકીના બધા નાપિન વડે કપાએલા  
વાળો પોતાના અંગનામાં લીધા હતા, અને શૈલક રાજાના દીક્ષોત્સવમાં તેમનાં

‘पडिग्गहं’ पतद्ग्रहं पात्रं गृहीत्वा शिविकां दूरोहन्ति । आरोहन्ति अम्बघात्र्यादयः रजोहरणपात्रादिकं शैलकराजा तन्मन्त्रिणोऽपि शिविकामारोहन्तिस्मेत्यर्थः । अवशेषं तथैव, यथा मेघकुमारः श्रीमरावीरस्वामिनोऽन्तिके प्रव्रज्यां गृहीतवान् । तथैव शुक्रस्य समीपे शैलकनूपेण प्रव्रज्या गृहीता, तदा-शैलकनूपस्य मन्त्रिणोऽपि पञ्चशतसंख्यकाः पान्थकप्रमुखान्स्तत्रैव प्रव्रज्यां गृहीतवन्त इत्यर्थः । यावत्-गृहीत्वाच सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीतेस्म । अधीत्य च बहुमिश्रतुर्थभक्तादिमिस्तपोभिः यावत्-आत्मानं भावयन् विहरति । तदनन्तरं स शुक्रः शैलकस्याऽनगरस्य तानि पान्थक प्रमुखानि पञ्चाङ्गारशतानि-तान् पान्थकप्रमुखान् पञ्चशतसंख्यकाननगरानित्यर्थः, शिष्यतया वितरति ददातिस्म ।

ने अपने बख्खाञ्चल में लिया था । ( सच्चेव पडिग्गहं गहा य सीयं दुरुहंति अवसेसं तहेव, जाव सामाहयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ ) शैलक राजा उसके मंत्री तथा उसकी अम्बघात्रादि ये सब के सब रजोहरण एव पात्रादिकों को लेकर शिविका ( पालखी ) में आरुढ़ हो गये । जिस प्रकार मेघकुमारने श्री महावीर स्वामी के पास प्रव्रज्या ग्रहण की थी उसी प्रकार शुक्र अनगर के पास शैलक नृपने भी प्रव्रज्या धारण की । नृपके साथ २ उस के पांथक प्रमुख पांच सौ मंत्रियोंने भी वहीं पर दीक्षा ग्रहण की यावत् दीक्षा ग्रहण करने के बाद उस शैलकराज ऋषिने सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । ( अहिज्जिस्ता बह्वहिं चउत्थ जाव विहरइ, तए णं से सुए सेलयस्स अणगरस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगरसयाइं सीसत्ताए वियरइ ) अध्ययन करने के बाद उन्होंने फिर अनेकविध चतुर्थ भक्त आदि की तपस्या की बाद में शुक्र अनगर ने उन शैलक अनगर के

पटशष्ठी पक्षावती देवीके शैलक राजाना वाणो आर आंगण छोडीने आगणना वाणोने पोताना वञ्चांथणभां दीधा. ( सच्चेव पडिग्गहं गहाय सोयं दुरुहंति अवसेसं तहेव जाव सामाहयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ ) शैलकराज तेमना मन्त्रीके तेमज शैलक राजनी अम्बघात्री वगेरे जधां रणेहरेण्ये अने पात्रो वगेरे दधने पावणीभां सवार थए गथां. जगवान महावीरनी पासे जेम मेघकुमारि प्रव्रज्या दीधी हत्ती तेमज शुक्र अनगरनी पासे शैलक राजके प्रव्रज्या स्वीकारी. राजनी साथे तेमना पांथसे पांथके प्रमुण मन्त्रीके के पणु त्यां ज दीक्षा दीधी, दीक्षा दीधा आह शैलक राजके सामयिक वगेरे अगितार अंगोनुं अध्ययन कयुं. ( अहिज्जिस्ता बह्वहिं चउत्थ जावविहरइ, तएणं से सुए सेलयस्स अणगरस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगरसयाइं सीसत्ताए वियरइ ) अध्ययन पछी तेमके अनेक जतना यतुर्थभक्त वगेरेनी तपरथा करी शुक्र अनगरने शैलक अनगरने पांथक प्रमुण पांथसे अन-

ततः खलु सशुकः शुकनामानगरः अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले शैलकपुराभगरात् सुभूमिभागादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति=प्रतिनिर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य=प्रतिनिर्गत्य बहिः= बाह्ये जनपदविहारं विहरति । ततस्तदनन्तरं खलु सशुकोऽनगारोऽन्यदा कदाचित्-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले तेन=पूर्वोक्तेन स्वशिष्येण अनगारसहस्रेण सार्धं संपरिवृतः पुष्पाणुपुष्पौ तीर्थं करगणधरपरंपरया चरन् ग्रामानुग्रामं विहरन् यत्रैव पुण्डरीक=पुण्डरीकनाम्नाप्रसिद्धः पर्वतः यावत् तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीकं पर्वतमारुह्य पृथिवीशिलापट्टकं प्रतिलेख्य

लिखे पांथक प्रमुख आदि ५०० सौ अनगारों को शिष्य रूप से वितरित कर दिया । ( तएणं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खइ, पडिनिक्खमिन्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ, ) इस के बाद किसी एक समय वे शुक अनगार शैलक पुर नगर से और उस सुभूमिभाग नाम के उद्यान से निकले और निकल कर उन्होंने ने वहां से बाहर जनपदों की ओर विहार कर दिया । ( तएणं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपडिबुडे पुष्पाणुपुष्वि चरमाणे गामाणु गामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे ) ग्रामानुग्राम विहार करते २ वे किसी एक समय उस अपने शिष्य अनगार सहस्र के साथ तीर्थंकर, गणधर परंपरा के अनुसार चारित्र की आराधना करते हुए जहां पुंडरीक नाम का प्रसिद्ध पर्वत था वहां आये वहां आकर उन्होंने ने वहां के पृथिवी शीलापट्टक की प्रतिलेखना की प्रतिलेखना कर के फिर उन्होंने ने उस

गारों शिष्य रूपे आया। (तएणं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नयराओ सुभूमिभागाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमिन्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ) तयार भाइ कोइ ओक वण्ठे शुक अनगार शैलकपुराओ सुभूमिभाग उद्यानथी भंडार नीकणीने त्यांथी भंडारणा भीअ जनपदोभां विहार कर्ये। ( तएणं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपडिबुडे पुष्पाणुपुष्वि चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे ) शुक परि-  
त्राजक ओक गामनी भीअे गाम विहार करतां करतां कोइ वण्ठे पोताना ओक डब्बर अनगार शिष्योनी साथे तीर्थंकर, गणधरोनी परंपराने अट्ट-  
सरतां चारित्रनी आराधना करतां करतां व्यां पुंडरीक नामे प्रसिद्ध पर्वत डतो त्यां गया. पडोन्थीने तेभण्ठे त्यां पृथिवी शिलापट्टकनी प्रतिलेखना कर्ये  
पछी तेभण्ठे तेना उपर पोताना ओक डब्बर शिष्योनी साथे पादयोगभन

सहस्रशिष्यैः सह पादपोषगमनसंस्तारकं कृतवान्, ततः खलु स शुक्रो बहूनि वर्षाणि श्रावण्यपर्यायं पालयित्वा केवलवरज्ञानदर्शने समुत्पाद्य सकलकर्मक्षये सति सिद्धः—मुक्तिं प्राप्त इत्यर्थः ॥ २८ ॥

मूलम्—तएण तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहिं य पंतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि ये सीएहिय उण्हेहि य कालातिक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य णिच्चं पाणभोचणेहि य पयइसुकुमालयस्स सुहोचियस्स सरीरंगंसि वेयणा पाउ-  
ब्भूया, उज्जला जाव दुरहिया सा कंडुयदाहपित्तज्जरपरिगय-  
सरीरे यावि विहरइ, तएणं से सेलए तेणं रोयायंकेण सुक्के  
जाए यावि होत्था, तएणं से सेलए अन्नया कयाइं पुव्वाणु-  
पुठ्वि चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ, परिसा  
निग्गया मंडुओ वि निग्गओ सेलयं अणगारं जाव वंदइ, नमं-  
सइ, वंदित्ता नमंस्सित्ता पज्जुवासइ, तएणं से मंडुए राया  
सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्कं भुक्कं जाव सव्वाबाहं सरोगं  
पासइ, पासित्ता एवं वयासी—अहं णं भंते । तुब्भं अहापवत्तेहिं  
तिगिच्छएहिं अहापवत्तेणं ओसहभेसज्जेणं भत्तपाणेणं तिगिच्छं  
आउट्ठावेमि, तुब्भे णं भंते मम जाणसालासु समोसरह फासुअं

पर अपने सहस्र शिष्यों के साथ २ पादपोषगमन संथारा किया । इस तरह उन शुक्र अनंगार ने अनेक वर्षों तक आम्रण्य पर्याय का परिपालन कर के अन्त समय में केवलज्ञान केवल दर्शन प्राप्तकर सकल कर्मों के क्षय होने पर मुक्ति को प्राप्तकर लिया । ॥ सू० २८ ॥

संथादे कुर्यात् । आ रीते ते शुक्र परित्राज्जके धव्वां वषो सुधी आम्रण्य पर्यायं  
परिपालन करीने छेवटे केवलज्ञान केवल दर्शन भेजवीने जथां कुर्यात् न्यादे  
नाश पाभ्यां त्यादे मुक्ति भेजवी ॥ सूत्र “ २८ ” ॥

एसणिजं पीढफलगसेज्जासंथारगं ओगिणिहत्ताणं विहरइ, तएणं  
से सेलए अणगारे मंडुयस्स रत्तो एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ,  
तएणं से मंडुए सेलयं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव  
दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २९ ॥

टीकार्थ—‘तएणं तस्स’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु तस्य शैलकस्य  
राजर्वेस्तैः=अनगारधर्मानुसारेण प्राप्तैः ‘अंतेहि’ अन्तैः=बल्लचणकादिभिः,  
‘पंतेहि, प्रान्तैः=पर्युषितैः, ‘तुच्छेहि’ तुच्छैः अल्पैश्च ‘लहेहि’ रुक्षैः अस्ति-

‘तएणं तस्स सेलगस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (पयइ सुकुमालयस्स सुहोचियस्स) प्रकृति  
सुकुमार तथा सुखोपभोग के योग्य (तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स)  
उस शैलक राजाश्रुषि के (सरीरगंसि) शरीर में (तेहि अंतेहि य  
पंतेहि य तुच्छे हिं य लहे हिं अरसे हिं य विरसेहि य सीएहिं य,  
लणहेहिं य कालाहक्कंते हिं य पमाणाहक्कंते हिं य, णिच्चं पाणभोयणे  
हिं य) अनगार धर्म के अनुसार प्राप्त हुए अन्त प्रान्त, तुच्छ, रुक्ष,  
अरस, विरस, शीत, उष्ण, तथा कालातिक्रान्त (असमय में) नित्य  
पान भोजन आहार करने से (वेयणा पाउब्भूया) वेदना प्रकट हुई । बल्ल  
चणक आदि का नाम अंत हैं । पर्युषित (वासी) अब का नाम प्रान्त है ।  
अल्प आहार का नाम तुच्छ है । स्निग्धता (घृतादि) रहित आहार का

(तएणं तस्स सेलगस्स इत्यादि)

टीकार्थ—(तएણ) ત્યાર બાદ (પયઇ સુકુમાલયસ્સ સુહોચિયસ્સ) શરીરની પ્રકૃતિ  
શુકુમાર તેમજ આરામ ભોગવવા યોગ્ય (તસ્સ સેલગસ્સ રાયરિસિસ્સ) રાજ  
શ્રુષિ શૈવક (સરીરગંસિ) ના શરીરમાં (તેહિ અંતેહિય પંતેહિં ય તુચ્છેહિં ય  
લહેહિ અરસેહિં ય વિરસેહિં સીએહિં ય લણહેહિં કાલાહક્કંતેહિં પમાણાહ  
ક્કંતેહિં, ણિચ્ચં પાણભોયણેહિં) અનગાર ધર્મ અનુસાર પ્રાપ્ત થયેલા અન્ત,  
પ્રાંત, તુચ્છ, રુક્ષ, અરસ, વિરસ, શીત, ઉષ્ણ તેમજ અસમય (કાલાતિક્રાંત)  
માં હમેશાં પાન, ભોજન (આહાર) કરવાથી (વેયણા પાઉબ્ભૂયા) વેદના  
થવા વાગી. બદલ ચણક (ચણા) વગેરે ‘અંત’ કહેવાય છે. વાસી આહાર  
નું નામ ‘પર્યુષિત’ છે. થોડા આહારનું નામ તુચ્છ છે. સ્નિગ્ધતા (ધી રહિત)  
વગર આહાર રુક્ષ કહેવાય છે. હિંગ વગેરેના વધાર વગરના આહારને

ગૈશ્વ, 'અરસેહિય' અરસૈઃ હિઙ્વાદિવ્યાગાર રહિતૈશ્વ, 'વિરસેહિય' વિરસૈઃ પુરાણ-  
ત્વાદ્ વિગતરસૈશ્વ 'સીયેહિય' શીતૈઃ શીતલૈશ્વ 'ઉળેહિય' ઉળૈશ્વ 'કાલાતિ-  
વકંતેહિય' કાલાતિક્રાન્તૈશ્વ ક્ષુધાપિપાસા કાલેષ્વપ્રમાસૈશ્વ 'પમાણાઙ્કંતેહિય' પ્રમા-  
ણાતિક્રાન્તૈશ્વ બુધ્ધ્યાપિપાસાઽનનુકૂલૈશ્વ=બુધ્ધ્યાપિપાસા યત્પ્રમાણા વર્તતે, તામતિ-  
ક્રાન્તૈઃ તન્નિઞ્જારણાઽસમર્થૈઃ સ્વલ્પલઙ્કૈરિત્યર્થઃ । નિત્યપાનમોજનેશ્વ પ્રતિદિવસ-  
પ્રાપ્તૈરન્નપાનૈશ્વ નિત્યં પ્રતિકૂલપાનમોજનં કુર્વતઙ્કિતિ ભાવઃ । પ્રકૃતિસુકુમારકસ્ય  
સ્વભાવક્રોમલસ્ય, મુલોચિતસ્ય=મુલાર્હસ્ય, લેશતોઽપિ વ્લેશાસહસ્યેત્યર્થઃ, શરીરે  
વેદના=દ્યાધિઃ પ્રાદુર્ભૂતા=ઉત્પન્ના, સા વેદના કીદશીત્યાદ્-ઉજ્જલા=દુઃસ્વાતિશયેન  
પ્રલયાગ્નિવજ્જાવલ્યમાના યાવત્-અન્ન યાવત્કરણેન-વિડલા, પગાઢા, ઇત્યનયોઃ

નામ રુક્ષ હૈ । હિંગ આદિ કે વધાર સે રહિત હુએ નીરસ આહાર કા નામ  
અરસ હૈ । પુરાને નીરસ અન્ન કે બને હુએ આહાર કા નામ વિરસ આહાર  
હૈ । બનાકર રલ્લે હુએ શીતલ-ઠંઢે-આહાર કા નામ શીત હૈ । ગરમ ર  
કા નામ ઉળ્ળ હૈ । ક્ષુધા પિપાસા કે સમયમેં નહીં પ્રાપ્ત હુએ આહાર કા  
નામ કાલાતિક્રાન્ત હૈ । અથવા ક્ષુધા પિપાસા કે અનુસાર નહીં પ્રાપ્ત હુઆ  
આહાર બી કાલાતિક્રાન્ત કહા જાતા હૈ । જિતની મૂલ્ક લગી હો, જિતની  
પ્યાસ લગી હો ઉતને આહાર પાની કા નહીં મિલના થોડા સા મિલના  
હસસે શરીર મેં અશક્તિ આદિ ઉત્પન્ન હો જાતી હૈ । અનગાર અવસ્થા  
મેં સાધુ કો અનુકૂલ આહાર પાની નહીં મિલતા હૈ । અતઃ પ્રતિકૂલ આ  
હાર પાની કે સેવન સે શરીર મેં વિવિધ પ્રકાર કી બાધાઈ ઉપસ્થિત હો  
જાતી હૈ । એસા હી રાજકૃષિ શૈલક અનગાર કે લિયે હુઆ । ઉનકે શરીર

અરસ કહે છેજૂના થઈ ગયેલા અનાજનો આહાર બનાવવામાં આવે તે 'વિરસ' નામે ઓળખાય છે ખડું વખત પહેલાં બનાવીને મૂકી રાખેલા ઠંડા થઈ ગયેલા આહારને 'શીત' કહેવામાં આવે છે. એકદમ ગરમ આહારને ઉષ્ણ કહે છે. ભૂખ અને તરસના વખતે આહાર ન મળે તેને કાલાતિક્રાન્ત કહેવાય છે. અથવા ભૂખ અને તરસને યોગ્ય આહાર ન મળવે તેને પણ કાલાતિક્રાન્ત કહેવાય છે. ભૂખ અને તરસના પ્રમાણમાં આહાર અને પાણી મળે નહિ થોડા પ્રમાણમાં મળે તો એનાથી શરીરમાં શિથિલતા આવી જાય છે. અનગાર અવસ્થામાં સાધુને અનુકૂળ આહાર પહોંચી મળતું નથી એથી પ્રતિકૂળ આહાર પહોંચીના સેવનથી શરીર અનેક રીતે નબળું થઈ જાય છે. રાજકૃષિ અનગારની હાલત પણ આવી જ

સંગ્રહઃ । વિપુલા-વિસ્તીર્ણા આત્મપ્રતિપ્રદેશવ્યાપિની, પ્રાગાદા પ્રવર્ધમાના તીવ્રતરા, અતएव-દુરધ્યાસા=દુઃસદ્ધા । વેદનાયાઃ પરિણામં પ્રદર્શયતિ—‘ કંઙુયદાહ ’ इत्यादि । ‘ કંઙુયદાહ પિત્તજ્વરપરિગયસરીરે, કણ્ઢૂકદાહપિત્તજ્વરપરિગતશરીરઃ= કણ્ઢૂકેન=કણ્ઢૂત્યા, દાહેન હૃદયકરચરણનયનજ્વલનેન પિત્તજ્વરેણ ચ પરિગતં વ્યાસં શરીરં यस્ય સ તથા, ચાપિ વિહરતી=આસ્તે । તતઃ સ્વલ્પ સ શૈલકસ્તેન રોગા-તક્કેન રોગેણ સામાન્યેન વ્યાધિના, આતક્કેન પ્રચલતરેણ વ્યાધિના, ચ શુષ્કો જાત-આપ્યાસીત્ । તતઃ સ્વલ્પ સ શૈલકઃ ‘અભ્યા કયાઈ’ અન્યદા કદાચિત્ અન્યસ્મિન્

में जो वेदना उत्पन्न हुई वह ( उज्जला जाव दुरहिया ) बहुत अधिक दुःखातिशय से वर्धित थी अतः प्रलय कालीन अग्नि की तरह शरीर को जला रही थी । यहां यावत् शब्द से “-विजला पगाढा ” इन पदों का संग्रह हुआ है । आत्मा के प्रति प्रदेश में व्याप्त होने से वह वेदना विपुल थी तथा तीव्रतर थी बहुत अधिक दिन प्रतिदिन बढ़ने से वह प्रगाढ थी । इसलिये दुरध्यासથી बढ़ી તકલીફ के साथ वह सहन करने योग्य थी । इस वेदनाजन्य शरीर में क्या, २ परिणाम हुआ इस बात को सूत्रकार ( कंङ्गुय दाहपित्तज्वरपरिगयसरीरे ) इन पदों द्वारा प्रकट करते हैं वे कहते हैं कि उन राजकृषि शैलक अनगार का शरीर कंङ्गुयन-खुजली- के दाहसे और पित्तज्वर से व्याप्त हो गया । हृदय में, हाथों में, चरणों में और नेत्रों में उनके जलन होने लग गई । पित्तज्वर से पित्त में अधिकाधिक गर्मी आ गई- इस से लिया हुआ आहार, उन्हें नहीं पचना और वमन द्वारा वह बाहिर निकल जाता

થઈ ગઈ તેમના શરીરમાં ( ઉજ્જલા જાવ દુરહિયા ) વેદના ખૂબજ થવા માંડી હતી તેથી પ્રલયના અગ્નિની જેમ તેમના શરીરમાં બળતરા થતી હતી. અહીં ‘યાવત્’ શબ્દ થી ( વિજલા પગાઢા ) આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આત્મા ના બધા પ્રદેશોમાં વેદના વ્યાપ્ત થઈ હતી તેથી તે ‘તીવ્રતર’ હતી. દિવસે દિવસે વેદના વધતી જ જતી હતી તેથી તે ‘પ્રગાઢ’ હતી એટલા માટે જ વેદના દુરધ્યાસ એટલે કે બહુ કષ્ટથી સહ્ય હતી. વેદનાને લીધે રાજ કૃષિના શરીરની હાલત કેવી થઈ તે સૂત્ર કાર અહીં સ્પષ્ટ કરતાં કહે છે ( કંઙુય દાહપિત્તજ્વરપરિગયસરીરે ) કે તે રાજકૃષિ અનગારનું શરીર કંઙુયન-અર-જવાની પીડાથી અને પિત્તના જવરથી વ્યાપ્ત થઈ ગયું. તેમની છાતીમાં હાથોમાં, પગોમાં અને આંખોમાં બળતરા થવામાંડી પિત્તજ્વર થી પિત્તમાં ગરમીનું પ્રમાણ વધી જવાથી કરેલા આહારનું પાચન થતું નહિ અને તે જિલટી થઈને બહાર નીકળી જતો હતો. ખાવાપીવા તરફ તેમને સાવ અણ

कस्मिंश्चित् काले पूर्वानुपूर्व्या चरन् यावत्-यत्रैव शैलकपुरं नामनगरं यत्रैव सुभूमि-  
भागं नामोद्यानं तत्रैवोपागच्छति रागत्यच यावद् संयमेन तपसा स्वात्मानं  
भावयन् विहरति । परिषन्निर्गता मण्डूकोऽपि निर्गतः, यत्र शैलकोज्जगारस्तत्रा-  
गत्य शैलकमनगारं यावद् बन्दते नमस्यति, वंदित्वा नत्वा स मण्डूकः  
पर्युपास्ते=सेवते स्म ।

ततः खलु स मण्डूको राजा शैलकस्यानगारस्य शरीरं शुष्कं रुक्षं यावत्-सद्यः-  
बाधं=पीडितं सरोगं=रोगाक्रान्तं पश्यति दृष्ट्वा एवमवादीत्-अहं खलु भदन्त ।

खाने पीने की रुचि जाती रही । (तएणं से सेलए तेणं रोगायकेण सुक्के  
जाए यावि होत्था तएणं से सेलए अन्नया कयाई पुब्बाणुणुं वि चरमाणे जाव जेणेव  
सुभूमिभागे जाव विहरइ) इससे वे शैलक अनगार उस  
रोग से-सामान्य ज्वरादि व्याधि से, आतंग से-प्रबलतर मस्तक  
शूलादि शीघ्रघातक व्याधि से-सूख गये-बिलकुल दुबले पतले शरीर  
बाछे हो गये । किसी एक समय पूर्वानुपूर्वी से विहार करते हुए ये  
जहां शैलक पुर नगर और उसमें भी जहां सुभूमि भाग नाम का  
उद्यान था वहां आये । तप और संयम से अपने आत्माको भावित  
करते हुए ये वहां ठहर गये । (परिसा निग्गया मंडुओ वि निग्गओ, से  
लयं अणगारे जाव वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता, पज्जुवासइ)।  
जनता बंदना करने के लिये आई मंडूक भी आया । सबने शैलक  
राजकृषि को बंदना की नमस्कार किया । बंदना नमस्कार करके मंडूक  
राजा ने उन की सेवा की । ( तएणं से मंडुए राया सेलयस्स अणगा-

गमे थधं गये। डेतो. ( तएणं से सेलए तेणं रोगायकेण सुक्के जाए यावि  
होत्था तएणं से सेलए अन्नया कयाई पुब्बाणुणुं वि चरमाणे जाव जेणेव सुभूमि  
भागे जाव विहरइ ) तेथी शैलक अनगार सामान्य रोगथी आतंगं ज्येष्ठे के  
सभत रोगथी सूक्ष्मं गया, साव हूणणा थधं गया. डेधं वणते पूर्वानु पूर्वो  
थी निहार करतां शैलक अनगार शैलक पुर नगरना सुभूमिभाग उद्यानभां  
आव्या, अने तप अने संयमथी पाताना आत्माने भावित करतां तेजो।  
त्यां रोकया. ( परिसा निग्गया मंडुओ वि निग्गओ सेलयं अणगारे जाव वंदइ,  
नमंसइ वंदित्ता, पज्जुवासइ ) तेमने वंदन करवा भाटे नागरिकोनी परिषद  
नगरनी पहार नीकणी. त्यां पहोन्थीने भधा नागरिकोये शैलक राजकृषिने वंदन  
अने नमस्कार कर्या. वंदन अने नमस्कार करीने मंडूक राबोये तेमनी सेवा  
करी. ( तएणं से मंडुए राया सेलयस्स अणगारस्स शरीरयं सुक्कं सुक्कं जाव



युष्माकं यथाप्रवृत्तैः=यथायोग्यैः रोगोपशमनसमर्थैः चिकित्सकैः वैद्यैः यथाप्रवृत्तेन  
 =यथायोग्येन प्रासुक्येन औषधभैषज्येन औषधम्=एकद्रव्यनिर्मितं, भैषज्यं=द्रव्य  
 समुदायनिर्मितं तेन, भक्तपानेन निरवधाचपानेन, चिकित्सामावर्तयामि कार-  
 यामि । हे भदन्त ! यूयं खलु मम यानशालासु रथादिशालासु समवसरत=आग-  
 च्छत तत्र सुखेन तिष्ठता प्रासुक्येष्णीयं पीठफलकशय्यासंस्तारकमवशुष्य  
 विहरति । ततः खलु स शैलकोऽनगारो मण्डूकस्य राज्ञ-एतमर्थं तथेति प्रतिशृणोति

रस्स सरीरयं सुक्कं सुक्कं जाव सन्वावाहं सरोगं पासइ ) इस के  
 बाद ज्यों ही मंडूक राजा ने शैलक राजकृषि के शरीर को शुष्क रक्ष  
 यावत् पीडित एवं रोगाक्रान्त देखा तो ( पासित्ता एवं वयासी ) देख  
 कर उन से इस प्रकार कहा-(अहं णं भंते ! तुव्मं अहापवत्तेहिंतिगि-  
 च्छपहिं अहापवत्ते णं ओसहमेसज्जेणं भत्तपाणेणं तिगिच्छं आउट्टावेमि)  
 हे भदन्त ! मैं आपकी यथा योग्य-रोगोपशमन करने में समर्थ-वैद्यों  
 द्वारा-उचित प्रासुक (निर्दोष) औषध और भैषज्य से तथा निरवध अन्न-  
 पान से चिकित्सा करवाना चाहता हूँ-इसलिये ( तुव्मे णं भंते ! मम  
 जाणसांलासु समोसरह, फासुअं एसणिज्जं पीठफलकसेज्जासंधारणं  
 ओगिण्हित्ता णं विहरइ ) आप मेरी रथशाला में पधारें और वहां धिराजें  
 सुख शान्ता से वहां ठहरे, प्रासुक एष्णीय, पीठफलक शय्या संस्तारक  
 को सुनि के कल्पानुसार याचित कर लें । ( तएणं से सेलए अणगारे  
 मंडुयस्सरणो एयमट्ठं तह त्ति पडिमुणेइ ) इस प्रकार मंडूक राजा  
 के प्रार्थना करने पर उन शैलक अनगार ने उसकी " तहत्ति " ऐसा

सन्वावाहं सरोगं पासइ ) त्थार भाइ मंडूक राजा ने राजकृषिना शरीरने शुष्क  
 रक्ष यावत् पीडित तेमज्ज रोगाक्रान्त भोयुं तो ( पासित्ता एवं वयासी ) नेधने  
 तेमने आ प्रभाषे कहुं-( अहं णं भंते ! तुव्मं अहापवत्तेहिं . तिगिच्छपहिं  
 अहापवत्ते णं ओसहमेसज्जं णं भत्तपाणे तं तिगिच्छं आउट्टावेमि ) हे भदन्त !  
 भारी दुःख छ के हुं रोगोने मटाडनार योग्य वैद्योनी उचित प्रासुक औषधो  
 अने औषधोद्वारा तेमज्ज निरवध अन्नपान श्री तभारी चिकित्सा ( धलाज )  
 करावडावुं ओटला भाटे ( तुव्मेणं भंते ! मम जाणसांलासु समोसरह फासुअं  
 एसणिज्जं पीठफलकसेज्जासंधारणं ओगिण्हित्ता णं विहरइ ) तथे अभारी रथ  
 शालाभां पधारै अने सुभ शांति पूर्वक त्थां रडे। सुनि अनोचित प्रासुक  
 ओषष्णीय, पीठफलक शय्या संस्तारक त्थां श्री भागी लेजे ( तएण सेलए अण-  
 गारे मंडुयस्सरणो एयमट्ठं तह त्ति पडिमुणेइ ) मंडूक राजांनी आ प्रभाषे

स्वीकुरुतेस्म । ततस्तदनन्तरं स मण्डूको राज्ञा शैलकं वन्दते नमस्यति, वंदित्वा  
नत्वा च यस्यादिशः प्रादुर्भूतः आगतः, तामेर दिशं प्रतिगतः स्वप्रासादं संप्राप्तः ॥ २९ ॥

मूलम्—तएणं से सेलए कळं जाव जलंते सभंडमत्तोवगरणमा-  
याए पन्थयपामोक्खेहिं पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुरम-  
णुपविसइ अणु पविसित्ता जेणेव मंडुयस्स जाणसाला तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासुयं पीढ जाव विहरइ ।  
तएणं से मंडुए विगिच्छए सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-  
तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं  
आउट्ठेह, तएणं ते तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता हट्ठुट्ठा  
समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं ते-  
गिच्छं आउट्ठेति, मज्जपाणयं च से उवदिसंति, तएणं तस्स  
सेलयस्स अहापवत्तेहिं जाव मज्जमाणेण रोगायंके उवसंते होत्था  
हट्ठे मल्लसरीरे जाते ववगयरोगायंके, तएणं से सेलए तंसि  
रोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण० पाण  
खाइमसाइमं, मज्जपाणए य मुच्छिए गडिए गिट्ठे अज्झो-

कह कर उस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया । ( तएणं से मंडुए सेलयं  
वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव  
विसिं पडिगए ) इसके बाद वे मंडूक राजा शैलक अनगार को वंदना  
नमस्कार कर जिस दिशा से प्रकट हुए थे—आये थे—उसी दिशा तरफ  
चले गये । अर्थात् वहाँ से अगरे राज महल में वापिस आ गये ॥ सूत्र २९ ॥

विनंति सांख्यीनि शैलक अनगारे तेमनी विनंतिने “ तद्धेत्ति ” आग कळीने  
स्वीकारी दीधी. (तएणं से मंडुए सेलयं वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता जामेव  
विसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) त्थार आह मंडूक राजा शैलक अनगारने  
पंडन अने नमस्कार करीने व्याथी आ०या छत्ता त्यां जत्ता रक्का ओटले के  
तेओ पोताना राजभवनमां गया ॥ सूत्र २९ ॥

ववन्ने ओसन्ने ओसन्नविहारी एवं पासत्थे, २ पासत्थविहारी कुसीले २ कुसीलविहारी पमत्ते संसत्ते उउवच्चपीढफलगसेज्जा-संथरण पमत्ते यावि विहरइ । नो संचाएइ फासुएसणिज्जं पाढं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणव-यविहारं अब्भुज्जणं पयत्तेण, पग्गहिणं विहरित्थं॥ सू०३०॥

टीका-‘तएणं से’ इत्यादि-ततस्तदनन्तरं खलु स शैलकः कथ्ये=प्रभाते यावत् तेजसा ज्वलति=सूर्ये उदिते सतीत्यर्थः ‘समंडमत्तोवगरणमायाए’ स भाण्डामत्रो-पकरणमादाय भाण्डामत्राणि अन्नपानादिपात्रादि तैः सहोपकरणं रजोहरणादिकम् आदाय=गृहीत्वा, पान्थकप्रमुखैः पञ्चभिरनगरशतैः सार्धं शैलकपुरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव मण्डूकस्य यानशाला वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य प्राप्तुं पीठफलकशय्या संस्तारकं गृहीत्वा यावद् विहरति । ततस्तदनन्तरं खलु स मण्डूको-

‘तएणं से सेलए’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से सेलए) वे राजऋषिशैलक अनगार (कल्लं जाव जलंते समंडमत्तोवगरणमायाए पंथय पामोक्खेहिं पंच हिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुरमणुपविसइ) प्रातः काल जब सूर्य उदित होकर तेज से चमक ने लगा था “समंडमत्तोवगरणमायाए” भाण्डोपकरणको लेकर पांथक प्रमुख पांच सौ अनगारों के साथ शैलक-पुर नगर में प्रविष्ट हुए । (अणुपविसित्ता जेणेव मंडुयस्स जाणसाला-तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट हो कर जहाँ मंडूक राजा की यान शाला थी वहाँ पहुँचे-(उवागच्छित्ता-फासुयं पीढ जाव विहरइ) पहुँच कर वहाँ से मुनि के कल्पानुसार एवणीय पीठ फलक शय्या संस्तारक की याचना

(तएणं सेलए) धृत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) त्थार भाव (सेलए) शैलक अनगार (कल्लं जाव जलंते समंडमत्तोवगरणमायाए पंथयपामोक्खेहिं सद्धिं सेलगपुरमणुपविसइ) सवादे सूर्य उदय पाश्चेत्यादि (समंडमत्तोवगरणमायाए) भांडोपकरण लधने पांथक प्रमुख पांथसो अनगारोनी साथे शैलक पुर नगरमां प्रविष्ट थया (अणुपविसित्ता तेणेव मंडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छइ) प्रवेशीने तेओ न्थां मंडूक राजनी स्थशाला इती त्थां पडोन्था. (उवागच्छित्ता फासुयं पीढ जाव विहरइ) त्थां पडोन्थीने शैलक अनगारे मुनि कल्पानुसार ओषणीय, पीठ झणक शय्या संस्तारकनी याचना करी अने ते ण्धी वस्तुओ तेभए आत्ता

राजा चिकित्सकान् वैद्यान् शब्दयति आह्वयति । शब्दयित्वा=आहूय, एवं  
=वक्ष्यमाणप्रकारेण अयादीत्-यूयं खलु देवानुप्रियाः ! शैलकस्य राजर्षेः ' फासु  
एसणिज्जेण ' प्रासुसैपणीयेन यावत् औषधमेषजेन ' तेगिच्छं ' चिकित्सां  
रोगनिवारणोपायम् आवर्तयत कुरुत । ततस्तदन्तरं चिकित्साकाः वैद्यामण्डकेन  
राज्ञैवपुक्ताः हृष्टतुष्टाः=प्रमुदिताः सन्तः शैलकस्य यथामवृत्तैः साधुकल्पैः प्रासुकैष-  
णीयैरित्यर्थः, औषधभेषजमत्तपानैश्चिकित्सां=व्याधिप्रतीकारम्, आवर्तयति  
=करोति ' मज्जपाणयं च, मद्यपानकंच=मद्यस्य, निद्राकारकद्रव्यविशेषस्य पानं  
च ' से ' तस्य=शैलकस्य उपदिशन्ति ।

कर आह्वा लेजर ठहर गये । (तएणं से मंडुए चिगिच्छए सद्देवइ) इसके  
बाद मंडुक राजा ने वैद्योंको बुलाया (सद्देवित्ता एवं वयासी) बुलाकर  
उनसे ऐसा कहा (तुवमेणं देवाणुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेण  
जाव चिगिच्छं आउट्टेह) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग शैलक राज ऋषि  
अनंगार की प्रासुक एषणीय औषध भेषज से चिकित्सा करो । (तएणं  
ते तेगिच्छया मंडुएणं रत्ता एवं दुत्ता हट्ट तुट्टा समाणा सेलयस्स अहा-  
पवत्तेहिंओसहमेसज्जभत्तपाणेहिं चिगिच्छं आउट्टे ति) इस प्रकार  
मंडुक राजा द्वारा कहे गये उन वैद्यों ने हर्ष एवं संतोष से युक्त होकर  
उन शैलक राजऋषि की यथा प्रवृत्त निर्दोष औषध भेषजों से तथा  
भक्त पानों से चिकित्सा करना प्रारंभ कर दिया । (मज्ज पाण च से उव-  
दिंसति) और निद्रा कारक द्रव्य विशेष का पीना उन्हें बतला दिया ।  
यहां यह जो मद्य शब्द प्रयुक्त हुआ है वह मदिरा अर्थ का वाचक नहीं  
है । किन्तु निद्रा कारक पेयद्रव्य विशेष का वाचक है । क्यों कि-साधु-

भेजणीने तेज्जे त्यां शैकाया । (तएणं से मंडुए चिगिच्छए सद्देवइ) त्थार आह  
मंडुक राजा ने वैद्यों को बोलाया । (सद्देवित्ता एवं वयासी) बोलायीने तेभने  
आ प्रमाणु कंहुं (तुवमेणं देवाणुप्पिया । सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव  
तेगिच्छं आउट्टेह) हे देवानुप्रियो ! तुम शैलक राजऋषि अनंगारनी प्रासुक  
औषणीय औषध अने भेषज थी चिकित्सा करो । (तएणं ते तेगिच्छया मंडुएणं  
रत्ता एवंदुत्ता हट्टा तुट्टा, समाणा सेलयस्स अहापवत्तेहिं ओसहमेसज्जभत्तपाणेहिं  
चिगिच्छं आउट्टेति) आ रीते मंडुक राजांनी वात सांझी ने उर्षित तेभज  
संतुष्ट थयेला वैद्यो शैलक राजऋषिनी उचित औषध अने भेषजोथी तेभज  
भक्तपानोथी चिकित्सा (उत्ताज) करवा लाया । (मज्जपाणयंच से उवदिंसति)  
अने निद्रावश थई शक्य तेवा पहार्थ विशेषने पीवानी विधि तेभने सम-  
जायी, अर्द्धी (मज्ज) मद्य शब्द आये छे ते मदिरा (दारु) ना अर्थ

इह मद्यशब्दो न मदिरार्थकः किंतु निद्राजनक-पानद्रव्यविशेषार्थकः । साधो चिकित्सायां प्रासुकैषणीयौषधानामेव प्रस्तुतत्वादिह मदिरायाः प्रसङ्गाभावात्. साधोर्मद्यपानानधिकारित्वात् आगमेहि साधोर्मद्यपानप्रतिषेधात् मद्यपानस्य चारित्र विध्वंसकत्वाच्च, साधोः सुरापानेन साधुत्वमङ्गापचेश्च, यथा दशवैकालिकसूत्रै-

सुर वा मेरुगं वावि अन्नं वा मज्जगं रसं ।

ससक्खं न पिवे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो. ॥ अ० ५, उ० २, गा० ३६ ।

વઢૂઈ સુંડિયા તસ્સ નાયા મોસં ચ ભિક્ખુણો. ।

આજસોય અનિવ્વાણં સયયં ચ અસાહુયા. ॥ અ ૫ ઉ ૦ ૨, ગા ૩ ૮

जनों की चिकित्सा में प्रासुक एषणीय औषधियों का ही विधान है और यही कारण यहां चल रहा है। यहां मदिरा का तो कोई प्रकरण ही नहीं चल रहा है। दूसरे-साधुओं को मद्यपान का अधिकार ही नहीं है। वे उसके शास्त्रीय मर्यादा के अनुसार अनधिकारी हैं। आगम में साधुओं को मद्यपान करने का निषेध किया गया है। कारण वह चारित्र का विध्वंसक होता है। जहां चारित्र नहीं वहां साधुता कैसी सुरापान से साधुता का भंग होता है यह बात आगम में स्पष्ट है- जैसे दश वैकालिक सूत्र में "सुरं वा मेरुगं वावि अन्नं वा मज्जगं रसं, ससक्खं न पिवे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो" अ० ५ उ० २ गा ३६ वडूई सुंडिया तस्स माया मोसं च भिक्खुणो अजसोय अनिक्का

ને ખતાવવા માટે નહિ પણ નિદ્રાવશ થવાય તેવા પેટા પદાર્થ વિશેષ ને સૂચવવા માટે પ્રયુક્ત થયે છે. કેમકે-સાધુઓની ચિકિત્સામાં પ્રાસુક એષણીય ઔષધીઓજ પ્રાપ્ત સમબલ્ય છે અહીં પ્રકરણ પણ ઔષધીઓનું જ આવી રહ્યું છે મદિરા વિષે ની તે અહીં કંઈ વાત જ નથી ખીજી વાત આ પણ છે કે સાધુઓને મધપાન નો અધિકાર પણ નથી, શાસ્ત્રીય વિધિવિધાનની દૃષ્ટિએ તેઓ મધપાનની બાબતમાં અનધિકારી ગણાય છે આ ગમે તે સાધુઓને મધપાન કરવાની મના કહી છે કેમકે મધપાનથી ચારિત્ર નષ્ટ થાય છે. જ્યાં ચારિત્ર નથી ત્યાં સાધુતાની કલ્પના કરવીજ બ્યર્થ છે. દાડ પીવાથી સાધુતા નાશ પામે છે આ વાત આગમમાં સ્પષ્ટ રીતે સમજાવવામાં આવી છે. દા. ત. 'દશ વૈકલ્પિક સૂત્ર' માં સ્પષ્ટ પણે કહેવામાં આવ્યું છે કે-(સુરંવા મેરુગંવા વાવિ અન્નં વા મજ્જગંરસ, સસક્ખં ન પિવેભિક્ખૂ જસં સારક્ખ મપ્પણો) અ. ૫, ઉ ૧, ગા ૩૬. વઢૂઈ સુ ડિયા તસ્સ માયા મોસંચ

‘ મિલ્લુ ’ મિલ્લુ : ‘ અપ્પણો ’ આત્મનઃ સ્વરય, ‘ જસં ’ યજ્ઞઃ સંયમં ‘ સાર-  
ક્લં ’ સંરક્ષનં ‘ મુરં ’ મુરં મદિરાંવા ‘ મેરગં ’ મેરકં સરકાનામધેયં યદ્યં ‘ વાવિ ’  
વાડપિ ‘ અન્નં વા ’ અન્યદ્વા=અન્યમપિમદિવજાતં ‘ મન્જગં ’ માધકં મદનનકં  
રસં ‘ સસક્લં ’ સસાક્ષિ ‘ ન પિવે ’ ન પિવેત્ સાક્ષિભિઃ કૈવલ્યાદિભિઃ સહેતિ સસાક્ષિ,  
કૈવલ્યાદિકં સાક્ષીકૃત્યેત્યર્થઃ । પદાન્તેડપિ ન પિવેદિતિ ભાવઃ । ૩૬ ॥

‘ તરસ- ’ તસ્ય મુરપાયિનઃ ‘ મિલ્લુણો ’ મિલ્લોઃ સાધોઃ ‘ સયયં ’ સતતં  
‘ મુણ્ડિયા ’ મધપાનવિષયાડસત્તિઃ, ચ પુનઃ માયા=કપટં ‘ મોસં ’ મૃષા  
અસત્યભાષણં, ચ પુનઃ ‘ અજસો ’ અયજ્ઞઃ અપકીર્તિઃ અસંયમશ્ચ ‘ અનિવ્વાણં ’  
અનિર્વાણમ્-અનુપશાન્તિઃ, ચ પુનઃ ‘ અસાહુયા ’ અસાધુતા સાધુ પદાનર્હત્વં વર્ધતે ।  
સર્વનર્થમૂલં મધપાનમિતિ ભાવઃ ॥ ૩૮ ॥

અનયોર્નિસ્તૃતવ્યાખ્યા દશવૈકાલિકસૂત્રસ્ય મત્કૃતાડચારમણિમન્જૂવાતોડવ-  
ગન્તવ્યા ।

વૈથકેડપિ-બુદ્ધિમ્નંશકરત્વાન્મદ્યં પ્રતિષિદ્ધિમિતિબોધ્યતે । ‘ શાલિગ્રામનિઘંટુ ’

ળં સમયં ચ અસાહુયા ” અં ૫ ઉં ૨ ગાથા ૩૮ इन दो गाथाओं द्वारा  
यह कहा गया है कि जो साधु अपने संयम रूप यश की रक्षा करना  
चाहता है वह मदिरा मेरक-सरका तथा और भी जो मादक द्रव्य है  
उनका सेवन न करे । इस के सेवन करने से सेवन करने वाले में  
मद्यपान विषयक आसक्ति बढ़ती है, कपट असत्य भाषण असमभाव  
की वृद्धि होती है और परिणामो में शान्ति नहीं रहती है । असाधुता  
जगती है-यद्वती है । मद्यपान समस्त अनर्थों का मूल कारण है । इन  
दोनों गाथाओं की विस्तृत व्याख्या मैंने दशवैकालि सूत्र के आचार  
मणि मंजूवा में की है । वहां से जान लेनी चाहिये । वैथक ग्रन्थ जो  
शालिग्राम निघंटु है उस में भी बुद्धि को ध्वंस करने वाली होने के

મિલ્લુણો અજસોય અનિવ્વા ણં સમયં ચ અસાહુયા ) અ. ૫ ઉ ૨, ગાથા ૩૮  
આ બે ગાથાઓ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે કે જે સાધુઓ  
પોતાના સંયમ રૂપ યજ્ઞને રક્ષવા યાદે છે, તે મદિરા ( દારૂ ) મેરક ( સરકો )  
અને ખીજ પશુ કેટલાક માદક પદાર્થો છે તેમણે સેવન કરે નહિ એમના  
સેવનથી સેવન કરનારમાં મધપાન વિષેની આસક્તિ વધે છે કપટ અસત્ય વચન  
અને અસંયમ બેવા ભાવોની પણ વૃદ્ધિ થાય છે, અને છેવટે એનાથી  
જીવનમાં શાંતિભંગ થાય છે. અસાધુતા ( હુબતા ) વધે છે. ખરેખર મધપાન  
જગતના બધા અનર્થોનું મૂળકારણ છે. ઉક્ત બંને ગાથાઓની સવિસ્તર  
વ્યાખ્યા ‘ દશવૈકાલિક સૂત્ર ’ની આચાર મણિ મંજૂવામાં આવી છે જિજ્ઞા-  
સુજનોએ ત્યાંથી બાણી લેવું જોઈએ. ‘ શાલિગ્રામ નિઘંટુ ’ નામે વૈથક ગ્રંથમાં

કથં તર્હિ સમ્યગ્દર્શનાદિરત્નત્રયસંરક્ષકસ્ય સાધોશ્ચિકિત્સાયાં મઘપાનાધિકારઃ સ્યાત્. ।

આચારાઙ્ગ મૂત્રેડપિ (શુ૦૨, ૭૦૨) મઘપાનત્રય સંકલ્પેનાપિ સાધુઃ પ્રાયશ્ચિત્તભાગી ભવતીતિ પ્રતિવોધિતમ્. ઉક્તં ચાન્યશ્રાપિ યથા—

અજ્ઞાનાદ્ વારુણીં પીત્વા સંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ ।

મતિપૂર્વમનિર્દેશ્યં પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિઃ ॥ મનુ૦અ૦૧૧-શ્લો૦૧૪૬ ।

મદિરામજ્ઞાત્વા યદિ પિવેત્ તર્હિ પુનરુપનયનસંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, નાન્યથેતિ ભાવઃ । યદિ મદિરાં જ્ઞાત્વા પિવેત્ તર્હિ પ્રાણાન્તકરણેનૈવ શુદ્ધયતિ નાન્યથેતિ સ્થિતિર્ધર્મસ્ય મર્યાદાઽસ્તીત્યર્થઃ ।

કારણ મઘપાન નિષિદ્ધ ક્રિયા હૈ । અતઃ વિચાર ને જૈસી યાન હૈ કિ સાધુ જો તપસંજમ કા સંરક્ષક હોના હૈ વહ અપની ચિકિત્સા કરાને મેં મઘપાન કા અધિકારી કૈસે હો સકતા હૈ । આચારાઙ્ગ સૂત્ર મેં મી (શુ૦ ૨ ૭૦૨) મઘપાન કરને કો સંકલ્પ મી સાધુઓં કો ત્યાગ દેના વ્હાહિયે । યદિ વહ પેસા કરતા હૈ તો ઉસે પ્રાયશ્ચિત્ત કા ભાગી બનના પડતા હૈ । અન્ય સિદ્ધાન્ત કારોં ને મી “અજ્ઞાનાત્ વારુણીં પીત્વા સંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ, મનિપૂર્વમનિર્દેશ્યં પ્રાણાન્તિક મિતિસ્થિતિઃ । મનુ-સ્મૃતિ૦ અ૦ ૧૧ શ્લોક ૧૪૬, હસ શ્લોક દ્વારા વિષય સમજાયા હૈ કિ યદિ કોઈ અજ્ઞાન ભાવ સે મદિરા કો પી લેના હૈ તો વહ પુનઃ ઉપનયન સંસ્કાર સે હી શુદ્ધ હો સકતા હૈ અન્યથા નહીં । યદિ વહ જાનવૂજ કર મદિરા કા સેવન કરતા હૈ તો વહ અપને પ્રાણ અપેણ કર હી શુદ્ધ હો

પણુ મદિરાને બુદ્ધિને નષ્ટ કરનારી હોવા બદલ તેનો વિષેધ સૂચ્યો છે. એટલે આવી નાની સરખી વાતોતો દરેક વ્યક્તિ સમજી શકે છે તો પછી રત્નત્રયના સંરક્ષક સાધુજનો પોતાની ચિકિત્સામાં પણુ મદિરા પાન કેવી રીતે કરી શકે છે ? તેઓ આવું કરેતો તેમને તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડે છે. બીજા પણુ શાસ્ત્રકારો મદિરાનો વિષેધ કરતાં કહેછે (અજ્ઞાનાત્, વારુણીં પીત્વા સંસ્કારેણૈવ શુદ્ધયતિ । મતિપૂર્વમનિર્દેશ્યં પ્રાણાન્તિકમિતિ સ્થિતિઃ ॥ મનુસ્મૃતિ સધ્યાય ૧૧ શ્લોક-૧૪૬ ।) આશ્લોક વડે કહેવામાં આવ્યું છે કે જો કોઈ બ્રાહ્મણમાં પણુ મદિરાનું સેવન કરી જાય તો યજ્ઞોપવીત (જનોઘ) સંસ્કારથી તે દૂરી શુદ્ધ થાય છે. અને જો તે બ્રાહ્મી યૂગ્મને મદિરાનું સેવન કરે તો પોતાના પ્રાણોને અર્પણ કરીને એટલે કે મૃત્યુને ભેટીને જ તે શુદ્ધ થઈ શકે છે, બીજા કોઈપણુ ઉપાયથી તેની શુદ્ધિ અસંભવિત છે. ધર્મશાસ્ત્રોનું એજ વિધાન

अत्रत्य पूर्वापरमूलपाठसमालोचनदोऽप्यत्र मद्यशब्दस्य मदिरार्थकत्वं न सिध्य-  
ति. तथाहि—यथाप्रवृत्तैश्चिकित्सकैर्यथाप्रवृत्तेनौषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सामा-  
वर्तयामीति स्वीकृत्य मण्डूकेन शैलकानगार इत्थं प्रार्थितः—युयं खलु प्रासुकमेपणीयं  
पीठफलकादिकमवगृह्य विहरतेति, शैलकानगारस्तथेति प्रतिश्रुत्य मण्डूकस्य यान-  
शालायां तथैव विहरतिरम. तवोमण्डूकेन चिकित्सका आदिष्टाः—प्रासुकैपणीदेन  
यावत् चिकित्तामावर्तयतेति तत्तश्चिकित्सका मण्डूकस्याज्ञानुसारेण प्रासुकै-  
पणीयैरेवौषधादिभिश्चिकित्सां कुर्वतः साधोरकल्प्यं प्रवचननिर्दिष्टं मण्डूकेनाप्यना-  
दिष्टं तदाज्ञाविरुद्धं मयं पाययितुं कथं प्रवृत्ताः स्युः । कथमपि न ।

सकता है अन्यथा नहीं । यही धर्म की मर्यादा है । यहाँ पर के पूर्वा पर  
के मूल पाठ के समालोचन से भी मद्यशब्द में मदिरा अर्थ सिद्ध नहीं  
होता है । जब मण्डूक राजा ने शैलक राजकवि के समक्ष यह प्रार्थ-  
ना की—कि मैं 'यथाप्रवृत्तेन औषध भैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सां आव-  
र्तयामि' रोगोपशमन करने में समर्थ वैद्यों के द्वारा यथा योग्य निर्दोष  
प्रासुक औषध भैषज्य से आपकी चिकित्सा कराऊँगा आप मेरी यान  
शाला में प्रासुक एषणीय पीठ फलक आदि की याचना करके वहाँ रहें  
तब इस मण्डूक राजा की प्रार्थना को सुनकर वे शैलक अनगार 'तथेति'  
कहकर उसे स्वीकार कर के वहाँ उनकी यानशाला में आए । इनके  
आते ही मण्डूक ने वैद्यों को बुलाकर यह आदेश दिया कि आप लोग  
प्रासुक एषणीय आदि औषध भैषज्य से इनकी चिकित्सा करें । तब  
उन वैद्यों ने मण्डूक की आज्ञानुसार प्रासुक एषणीय औषध आदि से  
उनकी चिकित्सा करने लगे । फिर सोचने की बात है कि जब साधु

छे अर्द्धी पूर्वापरना भूणपाठ्ठी पल्लु मद्यशब्दधी मदिरा विरेनेन अर्थ सिद्ध  
यतो नथी. जेभडे मण्डूके राजाये शैलक राजा ऋषिनी साधे विनंती करतां  
कथं—(यथाप्रवृत्तैः चिकित्सकैः यथाप्रवृत्तेन औषधभैषज्येन भक्तपानेन चिकित्सां  
आवर्तयामि) रोगेने भटाडनारा समर्थ वैद्यद्वारा हुं यथाचित प्रासुक  
औषध भैषज्यथी तमारी चिकित्सा (धलाज) करावीथ भारी रथशाणामां तमे  
प्रासुक ऐषणीय पीठ इलक वगेरेनी याचना करीने त्यां रोकथो त्यारे मण्डूक  
राजनी विनंतीने स्वीकारतां 'तथेति' (साइ) कहीने तेथो तेमनी रथशाणामां  
आव्या. शैलक अनगारनी चिकित्सा भाटे मण्डूके वैद्योने मोलाव्या अने मोला-  
वीने जेभ आव्या करी के तमे प्रासुक ऐषणीय वगेरे लेखथी जेमनी  
चिकित्सा शरु करी. वैद्योपल्लु मण्डूक राजनी आज्ञा प्रमाणे प्रासुक ऐषणीय  
औषध वगेरेथी तेमनी चिकित्सा (धलाज) करवा लाव्या. जेनी साथे साथे



અગ્નિમૂલપાઠાવલોકનેન ચ મૂલગુણનાશકં નિષિદ્ધમથમિહ નૈવ વિજ્ઞાયતે, તથાહિ- ચતુર્વિધાઽઽહારે મધપાને ચ મૃચ્છિતસ્યાપિ શૈલકરચ પ્રમાદદોષવશાત્ કેવલં જનપદવિહારાનર્હતા જ્ઞાતા, ન તુ મૂલગુણનાશસ્તસ્યાશ્રુદિતિ વિજ્ઞાય પાન્યકમપ્ર-  
લેપુ પશ્ચશ્ચતાનગારેષુ પ્રધાનતયા મુખ્યં પાન્યકમનગારં તસ્ય વૈયાટ્યચકરણાર્થં  
સ્દાપયિત્વા પાન્યકવર્જિતાસ્તે સર્વેઽનગારાવહિર્જનપદવિહારં વિહરન્તિસ્મેતિ વક્ષ્યતે ।  
યદિ શૈલકેન નિષિદ્ધમદ્યં સેવિતં સ્યાત્ તર્હિ તસ્મિન્ મૂલગુણરહિતેઽનગારધર્માત્  
પ્રચ્યુતે ચ સતિ પાન્યકાનગારસ્ય તદ્વૈયાટ્યચકરણં વિરુદ્ધયતે ।

મર્યાદા કે અનુસાર અકલ્પ્ય તથા પ્રવચન નિષિદ્ધ વસ્તુ કે દેને કે  
લિયે મંદૂક રાજા ને ડન સે નહીં કહા તો ભલા વે ડસકી આજ્ઞા કે  
વિરુદ્ધ મધ ડનહેં કૈસે પિલાને મેં સમર્થ હો સકતે થે । તથા આગે કા  
મૂલ પાઠ લેલ ને સે ખી યહી વાત પુટ્ટ હોતી હૈ કિ મૂલ ગુણોં કા વિના-  
શક નિષિદ્ધ. મધ ડમ મધ શબ્દ કા વાચ્યાર્થ નહીં હો સકના હૈ ।  
તથા હિ- “ ચતુર્વિધ આહાર ઇવં મધપાન મેં મૃચ્છિત વને હુપ ખી  
શૈલક કો પ્રમાદ દોષ કે વશ સે કેવલ જન પદોં મેં વિહાર કરને કી  
ઓર સે હી અશક્તિ આ ગઈ હૈ, ડનકે મૂલગુણોં કા નાશ નહીં હુઆ  
હૈ ઇસા સમજ્ઞ કર પાંચક કો ડોઢ ઓર સમસ્ત મુનિજન વહાં સે વાહિ-  
રજન પદોં મેં વિહાર કર ગયે ઓર પાંચક કો વે ડનકી વૈયાટ્યસિ કરને  
કે લિયે ડોઢ ગયે । ઇસા સૂત્રકાર આગે કહેંગે । યદિ શૈલક ને નિષિદ્ધ  
મધકા સેવન કિયા હોતા તો વે મૂલગુણો સે ખી રહિત હો જાતે ઓર  
ઇસ તરહ અનગાર ધર્મ સે રહિત હોને પર પાંચક અનગાર કો ડનકી

ખીલ વાત ઓ પછુ છે કે જ્યારે સાધુમર્યાદા મુજબ અકલ્પ્ય તેમજ પ્રવ-  
ચન નિષિદ્ધ વસ્તુ ને આપવા માટે મંદૂક રાજાએ વેદોને આદેશ આપ્યો  
નહિ તે વેદોની શી વાકાત કે તેઓ તેમની આજ્ઞાને ઓળખીને શૈલક  
અનગારને મધ પીવડાવે ? તેમજ આગળના “ મૂળ પાઠને ” જોવાથી પણ  
આવાત સિદ્ધ થાય છે કે શુણેને નષ્ટ કરનાર મધ અહીં મધ-શબ્દનો  
વાચ્યાર્થ થઈ શકે જ નહિ. જેમકે- ચાર જાતના આહાર અને મધ  
પાનમાં મૂર્ચ્છાવશ થયેલા શૈલકને પ્રમાદ દોષથી રક્ષા જનપદો વિહાર કરવા  
માટેની અશક્તિ જ આવી ગઈ છે. તેમના મૂળશુણેનો નાશ થયા નથી આવું  
અમલને જ પાંચકને ત્યાં મૂકીને બધા મુનિઓ ત્યાંથી ખીલ બહારના જન  
પદોમાં વિહાર કરવા માટે નીકળી પડ્યા પાંચકને શૈલકની વૈયાટ્યસિ માટેજ  
મુનિઓ મૂકીને ગયા હતા. આ સૂત્રકાર આ પ્રમાણે આગળ વર્ણન કરવાના  
જ છે હવે જો શૈલકે આગમનિષિદ્ધ મદ્ધિદાનું સેવન કર્યું હોતતો તેઓ  
મૂળ શુણેથી પણ હીન થઈ જાત અને આ પ્રમાણે અનગાર ધર્મ રહિત

કિં ચ-મધપાનાત્ પૂર્વાપરહકાલે સુખપ્રમુક્તસ્ય શૈલકસ્ય રાજર્ષેઃ ચાતુર્માસિકં પ્રતિક્રમિતુકામેન પાન્યકેન ક્ષમાપનાર્થં શિરસા તત્ત્વચરણસંસ્પર્શે કૃતે સતિ સ ઉત્થાય ક્રોધાધિષ્ઠો જાતઃ । તતોડ્સો પાન્યકઃ શૈલકાનગારં વન્દમાનઃ સ્વશીર્ષેણ તત્ત્વચરણયોઃ સ્પૃશન્ પ્રાર્થયતિસ્મ-ક્ષમાધ્વં મેડપરાધં, નૈવં પુનઃ કરિષ્યે इति । મધશબ્દસ્ય નિપિદ્ધમધાર્થકત્વેતુ-મૂલસૂત્રે શૈલકસ્ય રાજર્ષિવિશેષણં નોપપદ્યતે, પાન્યકાનગારકૃતં તદ્ વન્દનાદિકં ચ વિરુદ્ધ્યતે ।

કિં ચ-મધશબ્દસ્ય મદિરાર્થકત્વસ્વીકારે શૈલકસ્ય પશ્ચાત્તાપાદયે સતિ વિશુદ્ધ-વૈયાવૃત્તિ કરના મી વિરુદ્ધ પડતા હૈ । કિં ચ મધ કે પાન કરને સે પૂર્વા-પરાહકાલ મેં સુખ સે સુસ હુપ શૈલક રાજકૃષિ કે, ચાતુર્માસિ પ્રતિક્રમણ કરને કી ઇચ્છા સે જબ ક્ષમાપના યાચનાર્થ મસ્તક સે ચરણોં કા સ્પર્શ કિયા તો વે જગ ગયે ઔર અચાનક નિદ્રા મંગ હોને સે ઉન્હે ક્રોધ આ ગયા । પાંથક ને જબ ઉનકી યહ દશા દેસી તો ઉસને નમન કરતે હુપ ઉનકે ચરણોં કો છૂકર પ્રાર્થના કી મહારાજ ! આપ મેરે અપરાધ કો ક્ષમા કીજિયે આગે એસા અવ નહીં કરુંગા । યદિ મધ શબ્દ કો નિષિદ્ધ મધાર્થક-મદિરાર્થક-માના જાવે તો મૂલ સૂત્ર મેં શૈલક કે લિયે જો રાજકૃષિ શબ્દ કા પ્રયોગ કિયા ગયા હૈ-ઉન્હે જો રાજકૃષિ કે વિશેષણ સે વિશેષિત કિયા હૈ-વહ નહીં વનતા હૈ ઔર ન પાંથક અનગાર કૃત ઉન કે પ્રતિ વંદના આદિ કૃત્ય યુક્તિ સંગત બૈઠતે હૈ ।-યદિ યહાં મધ શબ્દ કો મદિરાર્થક સ્વીકાર કિયા જાવે તો ઉન્હે જો પશ્ચાત્તાપ કે

હોવા બદલ પાંથક અનગારની તેમની માટેની વૈયાવૃત્તિ પણ ઉચિત ગણાત જ નહિ અને બીજું કે બ્યારે મધપાન કરીને પૂર્વાપરાહ કાળમાં શૈલક રાજ કૃષિ સુખેથી સૂતા હતા ત્યારે ચાતુર્માસિ પ્રાતિક્રમણ કરવાની ઇચ્છાથી બ્યારે ક્ષમાપના તાટે પાંથકે તેમનાં ચરણોમાં પોતાના મસ્તકને સ્પર્શ કર્યો ત્યારે તેઓ બ્રૂચત થઈ ગયા, અને આશ્ચિંતા નિદ્રાભંગ થતાં તેઓ ક્રોધા-વિષ્ટ થઈ ગયા. પાંથકે તેમને શુસ્સે થયેલા બોધને ફરી તેમના ચરણોમાં મસ્તક નમાનીને વિનંતી કરતાં કહ્યું કે હે ભગવાન ! મારે શુને માફ કરે ફરીથી આવું નહિ થાય. બે મધ શબ્દ મદિરાના અર્થને સૂચવનારે હોયતો મૂળસૂત્રમાં શૈલકના માટે રાજકૃષિ શબ્દનો પ્રયોગ કરવામાં આવ્યો છે, તેમને રાજકૃષિના વિશેષણથી સંબોધવામાં આવ્યા છે તે કેવી રીતે અને ? પાંથક અનગારે તેમના પ્રત્યે ક્ષમાપના રૂપ વંદન વિનય વગેરે બતાવ્યો તે પણ ઉચિત કેવી રીતે કહી શકાય ? બીજું કે બે મધ શબ્દને મદિરાના અર્થમાં સ્વીકારીએ તો શૈલક અનગાર પશ્ચાત્તાપના હૃદયથી વિશુદ્ધ આરિત્રના આરાધન

चारित्राराधनार्थं कृत प्रतिज्ञस्य कृतनिश्चयस्य तदनन्तरद्वितीयेहि प्रभातकाले आनु-  
पूर्व्या ग्रामानुग्रामविहारार्थं प्रवृत्तिरपि पुनः प्रायश्चित्तग्रहणमन्तरेण नोपपद्यते ।  
तस्मादत्र मध्यशब्दो नास्ति मदिरार्थकः । किं तु-‘मज्जपाणयं पीए पुब्बावरण्हकाल-  
समयंसि सुहप्पसुत्ते’ इत्यग्रिममूलपाठप्रामाण्यात् निद्राजनकपानद्रव्यविशेषार्थक-  
एवेति निश्चीयते ।

तत्त्वतः पूर्वापरमूलपाठपर्यालोचनेन ‘मज्जपाणयं च से उपदिसंति’ ‘जाव-  
मज्जपाणेण’ ‘मज्जपाणए य मुच्छिए’ ‘सुबहुं मज्जपाणयं पीए’ इति पाठाः  
प्रक्षिप्ता एवेति सुधियो विमर्शयन्तु ।

ततस्तदनन्तरं तस्य शैलकस्य यथाप्रवृत्तैः प्रासुकैषणीयैर्यावत्-औषधमैषज्यैर्प-  
थ्याहारैश्च रोगातङ्काः उपशान्ता अभूवन्, दृष्टः=प्रसन्नचित्तः, मल्लशरीरः=मल्लवत्

उदय होने पर विशुद्ध चारित्र आराधन के लिये कृत निश्चय देखा-  
जाता है और उसके बाद जो द्वितीय दिन प्रातःकाल में आनुपूर्व्या ग्रामा-  
नुग्राम विहार की उनमें प्रवृत्ति पाई जाती है वह भी नहीं घटित हो  
सकती है । कारण प्रायश्चित्त ग्रहण के बिना ऐसी प्रवृत्ति होती नहीं  
है । इसलिये यहां मध्य शब्द मदिरार्थक नहीं हैं किन्तु यह “मज्ज  
पाणयं पीए पुब्बावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते” इस अग्रिम मूल  
पाठ की प्रमाणता से निद्राजनक पान द्रव्य विशेष अर्थवालो ही है  
ऐसा निश्चित होता है । तत्त्वतः विचार किया जावे तो पूर्वापर मूल पाठों  
की पर्यालोचना से “मज्जपाणयं च से उपदिसंति, जाव मज्जपाणेण  
मज्जपाणए य मुच्छिए, मज्जपाणए मुच्छिए, सुबहुं मज्जपाणयं पीए”  
ये सब पाठ प्रक्षिप्त ही ज्ञात होते हैं ऐसा बुद्धिमान् जन विचार करें ।  
(तएणंतस्स सेलयस्स अहापवत्तेहि जाव मज्जपाणेण रोयायंके उवसंते

भाटे कृत प्रतिज्ञ देआय छे आने त्यार भाठ तेआ जीआ दिवसे सवाइ ७  
पूर्वापरं परा अनुसार ओके आभथी जीने आभ विहार करवानी छिआ करे छे  
ने आपुं डोटतो तेभनाभां आवी छिआ पखु प्रकट केवी रीते थात ? केअके  
प्रायश्चित्त वगर आपुं ते करी शके ७ नहि. ओटवा भाटे अही भद शण्ड  
भदिराने. अर्थ सूअवतो नथी पखु ( मज्जपाणयं पीए पुब्बावरण्हकालसमयंसि  
सुहप्पसुत्ते “ भद शण्ड भूणपाठने अनुदक्षी ते निद्रा जनक पान द्रव्य  
विशेष “ अर्थ ने ७ सूअवनारो छे. (मज्जपाणयं च से उपदिसंति जाव मज्जपाणेण  
मज्जपाणए य मुच्छिए मज्जपाणए मुच्छिए, सुबहुंमज्जपाणयं पीए ) पूर्वापरनी  
अपेक्षाओ भूणपाठ विषे आपणु जंलीर पणु विचार करीओ तो उक्त पाठ  
प्रक्षिप्त ७ दाओ. (तएणं तस्स सेलयस्स अहापवत्तेहि जाव मज्जपाणेण रोया

पुष्टशरीरः जातः, व्यपगतरोगातङ्कः=सर्वव्याधिरहितो जात इत्यर्थः । ततः खलु स शैलकस्तस्मिन् रोगातङ्के उपशान्ते सति तस्मिन् विपुले=अतिशये अशनपानखाद्यस्वाद्ये=चतुर्विधाऽऽहारे मद्यपानके च निद्राजनकपानद्रव्यविशेषे च मूर्च्छितः आसक्तः ग्रथितः-स्नेहः रज्जुभिर्वद्धः गृद्धो=लोलुपः ' अज्ज्ञो बवन्ने ' अध्युपपन्नः, सरसाहाराद्यधीनजीवनः । ' ओसन्नो ' अवसन्नः=अवसन्न इवावसन्नः श्रान्ततुल्यः, आवश्यक-स्वाध्यायप्रतिलेखनध्यानादिक्रियासु शैथिल्येन श्रान्तहवमोक्षमार्गे शि-

होत्वा ) इस प्रकार इस शैलक राजकृषि के यथा प्रवृत्त प्रासुक एषणीय यावत्-औषध भैषज्यों से और पथ्याहार से रोगातंक उपशमित हो गये ( हट्टे मल्ल सरीरे जाए बवगयरोयायंके, तएणं सेलए तंसि रोगा-यंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण० पाण खाइम साइमे मज्जपाणेण य मुच्छिए गहिए गिद्धे अज्ज्ञो बवन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एवं पासत्थे २ पासत्थ विहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते संसत्ते उववद्धपीठफलकसेज्जासंधारए पमत्ते यावि विहरइ ) वह प्रसन्न चित्त हो गया शरीर से भी मल्ल की तरह पुष्ट हो गये । इस प्रकार रोग और आतंकों से सर्वथा रहित हो गये । इस के बाद वह राजकृषि विविध प्रकार के विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार में एवं मद्यपान में आसक्त हो गये । उन में स्नेह रूपी रज्जु से बन्ध गये-गृद्ध-लोलुप-हो गये और सरस आहार के आधीन जीवन वाले बन गये । उनके हुए व्यक्ति की तरह वह स्वाध्याय,

यंके उवसंते होत्वा ) आ प्रभाणु यथा प्रवृत्त प्रासुक औषणीय यावत् औषध औषधार्थी अने योग्य पथ्य आहारार्थी शैलक राजकृषिना रोगो भटी गया। ( हट्टे मल्लसरीरे जाए बवगयरोयायंके, तएणं सेलए संसि रोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण० पाण खाइम साइमे मज्जपाणेणय मुच्छिए गहिए गिद्धे अज्ज्ञो बवन्ने ओसन्नो, ओसन्न विहारी एवं पासत्थे २ पासत्थविहारी कुसीले २ कुसील विहारी पमत्ते संसत्ते उववद्धपीठफलकसेज्जासंधारए पमत्ते यावि विहरइ ) तेजो शरीरशी पुष्ट तेमज्ज प्रसन्न चित्त अर्ध गया. आ रीते रोग अने आतंके थी तेजोअजे अकहम युक्ति भेजवी वीधी. त्यारथाइ तेजो ज्ञत ज्ञतना पुच्छण प्रभाणुभां ज्ञनाववाभां आवेला अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य इय आर प्रकारना आहारभां तथा मद्यपानभां आसक्त अर्ध गया. तेजो स्नेहइपी दोरीधी जंधाध गया. गृद्ध-अट्टे के दोलुप अर्धने सरस आहाराना सेवनभां तेजो ठेवाध गया. श्रान्त व्यक्तित्वी चेठे स्वाध्याय अति

थिल इत्यर्थः । ' ओसन्नविहारी ' अवसन्नविहारी शिथिलाऽऽचारी आलस्यवशेन मन्दीभूतचरणकरण इत्यर्थः । एवं=अनेन प्रकारेण ' पासस्थे ' पार्श्वस्थः-साधुगुणानां पार्श्वे तिष्ठतीति पार्श्वस्थः ज्ञानादीनां न सम्यगाराधकः । पार्श्वस्थविहारी=पार्श्वस्थानां यो विहारस्तथावर्तनं पार्श्वस्थविहारः सोऽस्यास्तीति पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः=उत्तरगुणविराधनया संज्वलनकषायोदयेन च कुत्सिताऽऽचारः । कुशीलविहारी=कुत्सिताचारशीलः । ' प्रमत्ते ' प्रमत्तः=प्रमादतिस्म-मोहनीयादिकर्मोदयप्रभावात् संज्वलनकषायनिद्राविकथाऽन्यतमप्रमादयोगेन संयमाराधनेषु सीदतिस्मेति प्रमत्तः । ' कर्तरि क्तः ' । ' संसत्ते ' संसक्तः गौरवत्रयाश्रयेण संकीर्णाचारः, ऋतुवृद्धपीठफलकशय्यासंस्तारके प्रमत्तश्चापि विहरति, शेषकालेऽपि कारणमन्तरेण

प्रति लेखन, ध्यान आदि मोक्ष मार्ग में भी शिथिल हो गये । अवसन्न विहारी हो गये-शिथिलचरणवाले बन गये-आलस्य के वश से चरण सत्तरी और करण सत्तरी के आराधना ढीले पड़ गये इस प्रकार वह पार्श्वस्थ हो गये-साधु गुणों के पास में रहने वाला बने रहे-ज्ञानादिकों का सम्यक् आराधन कर्ता वह नहीं रहे । पार्श्वस्थों के विहार जैसा इनका वर्ताव हो गया । उत्तर गुणों की विराधना से और संज्वलन कषाय के उदय से वह कुत्सित आचार वाले हो गये । कुशील विहारी हो गये । मोहनीय आदि कर्मों के उदय के प्रभाव से यह संज्वलन कषाय निद्रा विकथा रूप प्रमादों में से किसी एक प्रमाद के योग से संयम की आराधना करने में शिथिल परिणामी हो गये । गौरवत्रय के आश्रय से उनका आचार शिथिल हो गया । हर एक समय कारण के बिना भी पीठ फलकादि का सेवन करने वाले बन गये सदा इन

लेखन ध्यान वगैरे क्रियाओं में तेमन्न मोक्षमार्गों में तेजो शिथिल थल गया अवसन्न विहारी थल गया, -शिथिल आचरण वाणा थल, अणसने लीधेचरण सत्तरी अने कणसत्तरी रहित थल गया आम तेजो पार्श्वस्थ थल गया सहशुभोभां पथ्यापथ्या जनीने रहोनाश-जनी गया, ज्ञान वगैरेनी सम्यक् आराधना तेमनाथी हवे नहोती थती पार्श्वस्थोना विहारनी जेम तेमनुं आचरण थल गनुं, उत्तर शुभोनी विराधनाथी अने संज्वलन कषायना उदयथी तेजो कुत्सित आचार वाणा थल गया, कुशील विहारी थल गया, मोहनीय वगैरे कर्मोना उदयने लीधे तेजो संज्वलन कषाय निद्रा विकथा रूप प्रमादोभा थी कथं पथु जेक प्रमादना योगथी संयमने आराधनामां शिथिल थल गया, गौरवत्रयना आश्रयथी तेमने आचार शिथिल जनी गया, कारण वगर पथु तेजो गमे लारे पीठ फलक वगैरे नुं सेवन करवा लाग्या, तेजो हथेशां तेना उपर पथ्या ज

પીઠકલકાદિસેવી સંજાત इत्यर्थः । ‘ નો સંચાણ્’ નો જ્ઞનોતિ, અહ્ય વિહર્તુમિ-  
ત્યજાન્વયઃ, પ્રાસુકૈષ્ણીયં પીઠ=પીઠાદિકં પ્રત્યર્થ્ય મળ્લકં ચ રાજનમાપૃચ્છ્ય  
વહિર્જનપદવિહારં ‘ અમ્યુજ્જણ ’ અમ્યુદ્ધતેન-ઉત્તમયુક્તેન, ‘ પયત્તેણ ’ પ્રદત્તેન  
મગમદનુજ્ઞાતેન પ્રમાદરહિતેન, ‘ પગ્ગહિણેણ ’ પ્રમૂહીતેન તીર્થકરૈરપિ સ્વીકૃતેન;  
વિહર્તુ=કર્તુર્ણ । સંજ્વલનકષાયનિદ્રાવિકયાઽન્યતમપ્રમાદવંશગતઃ શૈલકો વહિર્જન-  
પદવિહારં કર્તુમસમર્થો જાત इत्यर्थः ॥ ૩૦ ॥

મૂલમ્—તણ્ણં તેસિં પંથયવજ્ઞાણં પંચણહં અણગારસયાણં  
અન્નયા કયાહં ઇગયઓ સહિયાણં જાવ પુઠ્ઠવરત્તાવરત્તકાલસમ-  
યંસિં ધમ્મજાગરિયં જાગરમાણાણં અયમેયારૂવં અભ્મત્થિણ્ણ જાવ  
સમુપ્પજિત્થા—ઇવં જલ્લુ સેલ્લ યાયરિસી ચહિત્તા રજ્ઞં જાવ પઠ્ઠ-

પર પઢા રહને લગે ( નો સંચાણ્ ફાસુણ્ણિજ્ઞં પીઠે પચ્ચપ્પિણિત્થા  
મંહુયં ચ રાયા અપુચ્છિત્થા વહિયા જળવયવિહારં—અમ્યુજ્જણ પયત્તેણ  
પગ્ગહિણ વિહરિત્થા ) પ્રાસુક ઇષ્ણીય પીઠ આદિ કો પ્રત્યર્પિત કર  
( દેકર ) તથા મંહૂકરાજ સે પૂછકર યહ બાહર જનપદોં મેં વિહાર કરને  
કે લિયે સમર્થ નહીં હુણ । જો વિહાર ઉત્તમ યોગ રૂપ ઉદ્યમ સે યુક્ત  
હોકર કિયા જાતા હૈ અર્થાત્ જિસમેં પ્રમત્ત દશા નહીં રહતી હૈ—  
જિસકે કરને કી ભગવાન્ કી આજ્ઞા હૈ । તથા તીર્થકરોં ને બી જિસે  
કિયા હૈ । તાત્પર્ય્ હિસકા યહ હૈ કિ સંજ્વલન કષાય, નિદ્રા તથા વિ  
કથારૂપ પ્રમાદોં મેં સે કિસી ઇક પ્રમાદ કે વંશગત હોકર વહાં સે  
વિહાર કરને કે લિયે અસમર્થ બન ગયે । સૂત્ર ॥ ૩૦ ॥

રહેતા હતા. (નો સંચાણ્ ફાસુણ્ણિજ્ઞં પીઠે પચ્ચપ્પિણિત્થા મંહુયં ચ રાયા અપુ-  
ચ્છિત્થા વહિયા જળવયવિહારં અમ્યુજ્જણ પયત્તેણ પગ્ગહિણ વિહરિત્થા ) પ્રાસુક  
એષણીય પીઠ કલક વગેરે પાછાં આપી તેમજ મંહૂકે રાજને પૂછીને બહારનાં  
ખીખાં જનપદોં માં વિહાર કરવા માટે પણ તેઓ સમર્થ થઈ શક્યા નહિ.  
બે વિહાર ઉત્તમ યોગ રૂપ ઉદ્યમ વડે કરવા માં આવે છે, એટલે કે બેમાં  
પ્રમત્ત દશા રહેતી નથી તેમજ બે વિહારને કરવાની ભગવાને આજ્ઞા આપી  
છે, અને તીર્થકરે પણ બેને કરતા આવ્યા છે. તેમાં તેઓ અસમર્થ થઈ  
ગયા. તાત્પર્ય એ છે કે આ સંજ્વલન કષાય, નિદ્રા તેમજ વિકથા રૂપ પ્રમાદોં  
માંથી કોઈ પણ એક પ્રમાદના વંશવર્તી થઈને ત્યાંથી બહાર વિહાર કરવા  
સમર્થ થઈ શક્યા નહિ. ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

इए, विउलेणं असण० ४ मज्जपाणए मुच्छिए नो संचाएइ जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं निगं-  
थाणं जाव पमत्ताणं विहरित्तए, तं सेयं खलु देवानुप्पिया !  
अम्हं कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफल-  
गसेज्जासंथारणं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं  
अणगारं वेयावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव पवत्तेण,  
पग्गहियेण जणवयविहारं विहरित्तए, एवं संपेहेत्ति, संपेहित्ता  
कल्लं जाव जलंते सेलयं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसे-  
ज्जासंथारयं पच्चप्पिणंति, पच्चप्पिणित्ता पंथयं अणगारं वेया-  
वच्चकरं ठावंति ठावित्ता बहिया जाव विहरंति ॥ सू०३१ ॥

टीका—‘तएणं तेसिं’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु तेषां पान्यक-  
वर्जानां पञ्चानामनगरशतानां=अञ्चतानगाराणाम्, अन्यथा कदाचित्=अन्यस्मिन्  
कस्मिंश्चित् काले, एकतः सहितानाम्=एकत्रसंमिलितानां यावत् पूर्वरान्नापर-  
रात्रकालसमये= धर्मजागरिकां=धर्मध्यानप्रबोधिनीं कथां जाग्रतां=कुर्वताम्

‘तएणं तेसिं पंथयवज्जाणं’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—( तएणं ) इसके बाद ( तेसिं पंथयवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं  
अन्नया कथाइं एगयओ सहियाणं जाव पुव्वावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं  
जागरमाणाणं अयमेवारुवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था )  
उन पांचसो, पांथक अनगार वर्ज मुनियों को किसी एक समय मध्य  
रात्रि में जब कि वे धर्मध्यान प्रबोधिनी कथा को एकत्र संमिलित होकर

( तएणं तेसिं पंथयवज्जाणं ) ध्याति ॥

टीकार्थ—( तएणं ) त्थार भाव ( तेसिं पंथयवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं  
अन्नया कथाइं एगयओ सहियाणं जाव पुव्वावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं  
जागरमाणाणं अयमेवारुवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था ) पांचसो पाथक अन-  
गार वर्ज मुनियोंने केवल ओक पणते मध्यरात्रिमां न्यादे तेओ भधा ओकठा  
थयने धर्मध्यान प्रबोधिनी कथा विषे अथां करी रह्ता छता त्यादे तेओने आ

અયમેતદ્રૂપઃ=વક્ષ્યમાણપ્રકારકઃ ‘અન્મત્થિય’ અમ્યર્થિતઃ પ્રવચનસંમતઃ યાવત્-  
યાવત્ કરણેન-ચિંતિય, પત્થિય, મનોગય્ इत्येषાં સદ્બ્રહ્મઃ । ચિન્તિતઃ પ્રાર્થિતઃ  
મનોગતઃ સંકલ્પઃ= વિચારઃ ‘સમુપ્પજ્જિત્યા’ સમુદપ્પઘત=અમવત્-એવં અમુના  
પ્રકારેણ સ્વલુ=નિશ્ચયે શૈલકો રાજર્ષિઃ ‘ચહિત્તા’ ત્પત્ત્વા, ‘રજ્જં’ રાજ્યં યાવત્  
પ્રવ્રજિતં= દીક્ષાં ગૃહીતવાન સ ચેદાની ‘વિહલેણ’ વિપુલેન અતિશયેન અશ્નન  
પાનશ્વાદ્યસ્વાદ્યે ચતુર્વિધાહારે નિદ્રાજનકપાનદ્રવ્યવિશેષે ચ મૂર્ચ્છિતઃ=આસક્તઃ  
નો શક્નોતિ યાવદ્ કુત્રાપિ વિહર્તુમ્ । નો સ્વલુ કલ્પતે દેવાનુપ્રિયાઃ ।  
શ્રમણાનાં યાવત્ પ્રમત્તાનાં વિહર્તુમ્, હે દેવાનુપ્રિયા ! પ્રમાદિનો ભૂત્વા શ્રમણાનાં  
સંયમમાર્ગે વિહર્તુ ન કલ્પતે, કિંતુ અમ્યુદ્ધતેન इत्यર્થઃ । ‘તં સેયં’ તત્ત્વચ્છેદ્યઃ=તત્  
તસ્માત્ શ્રેયઃ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાઃ અસ્માકં કલ્પે પ્રમાતે શૈલકં રાજર્ષિમાપૃચ્છ્ય

કર રહે થે । હસ તરહ કા પ્રવચન સંમત ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, મનોગત  
સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ । ( એવં સ્વલુ સેલય રાયરિસી ચહિત્તા રજ્જં  
જાવ પવ્વહય વિહલેણં અસણ ૪ મજ્જપાણે મુચ્છિય નો સંચાપ્પજાવ  
વિહરિત્તય, નો સ્વલુ કપ્પહ દેવાણુપ્પિયા । સમણાણં નિગ્ગંથાણં જાવ  
પમત્તાણં વિહરિત્તય ) શૈલક રાજા ને રાજ્ય કા પરિત્યાગ કર ભગવતી  
દીક્ષા અંગીકાર કી હૈ-હસ તરહ વે રાજકવિ બને હૈ-પરન્તુ અબ વે  
વિપુલ અશ્નન પાન, શ્વાદ્ય ઓર સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર મેં તથા નિદ્રા  
કારક પાન દ્રવ્ય વિશેષ મેં આસક્ત હો રહેં હૈં । કહીં પર ‘મી બાહર  
વિહાર નહીં કરના ચાહતે હૈં । હસ તરહ હે દેવાનુપ્રિયો ! શ્રમણો કો  
પ્રમત્ત બનકર સંયમ માર્ગ મેં વિહાર કરના રહના-ઉચિત નહીં હૈ ।  
( તં સેયં સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હં કલ્લં સેલય રાયરિસિં આપુચ્છિત્તા

બાતનો પ્રવચન સંમત, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, મનોગત સંકલ્પ વિચાર ઉદ્ભવ્યો  
( એવં સ્વલુ સેલય રાયરિસિ ચહિત્તા રજ્જં જાવ પવ્વહય વિહલેણં ૪ મજ્જપાણે મુચ્છિ  
ય નો સંચાપ્પજાવ વિહરિત્તય નો સ્વલુ કપ્પહ દેવાણુપ્પિયા । સમણાણં નિગ્ગંથાણં  
જાવ પમત્તાણં વિહરિત્તય ) શૈલક રાજાએ રાજ્યવૈભવ ત્યજીને ભાગવતી દીક્ષા,  
સ્વીકારી છે એથી તેઓ રાજકવિ તરીકે પ્રસિદ્ધ થયા છે. પણ અત્યારે તેઓ  
પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશ્નન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય આહાર તેમજ નિદ્રાકારક  
પાનદ્રવ્ય વિશેષમાં આસક્ત થઈ રહ્યા છે. ખીને કંઈ વિહાર કરવાની પણ  
તેઓની ઇચ્છા લાગતી નથી. હે દેવાનુપ્રિયા ! આ રીતે શ્રમણોને પ્રમત્ત  
થઈને સંયમમાર્ગમાં રહીને વિહાર કરવો યોગ્ય લાગતું નથી. ( તં સેયં  
સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । અમ્હં કલ્લં સેલય રાયરિસિં આપુચ્છિત્તા પાદિહારિયં પીઢ



‘पाडिहारियं’ प्रातिहारिकं=प्रत्यर्पणीयं, पीठफलकशय्यासंस्तारकं प्रत्यर्प्य, शैलक-  
स्यानगारस्य पान्थकमनगारं ‘वेयावच्चकरं’ वैयावृत्त्यकरं=सेवाकारकं, स्थापयि-  
त्वा बहिरभ्युद्यतेन यावद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन=सोद्यमेन प्रदत्तेन=तीर्थ-  
करानुज्ञापितेन, प्रगृहीतेन तीर्थकराङ्गीकृतेन जनपदविहारं इत्यस्य संग्रहः । विहर्तुम्  
-कर्तुम् शैलकानगारस्य वैयावृत्त्यार्थं पान्थकमनगारं बहिर्विहर्तुमस्माकं श्रेय इत्यर्थ  
एवम्=उक्तप्रकारेण ‘संपेहेति’ संग्रहन्ते, विचारयन्ति । ‘संपेहिता’ संग्रह्य  
विचार्य, कल्ये यावज्जलति=सूर्ये उदिते सति शैलकमापृच्छथ प्रातिहारिकं=प्रत्य-  
र्पणीयं पीठफलकशय्यासंस्तारकं ‘पञ्चप्पिण्ति’ प्रत्यर्पयन्ति प्रत्यर्प्य पान्थकमनगारं  
‘वेयावच्चकरं’ वैयावृत्त्यकरं, ‘ठावंति’ स्थापयन्ति, ‘ठावित्ता’ स्थापयित्वा  
बहिर्यावद्-इह यावत्करणात्-अभ्युद्यतेन प्रदत्तेन, प्रगृहीतेन जनपदविहारं इत्यस्य  
संग्रहः, विहरन्ति । शैलकानगारस्य ये पञ्चशतसंख्यकाः पान्थकप्रमुखा अन-

पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारगं पञ्चप्पिणिस्ता सेलगस्स अण-  
गारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अन्मुज्जणं जाव  
पवत्तेण पग्गहिण जणवयविहारं विहरित्तए ) इसलिय हे देवानुप्रियो !  
हम लोगो को यही कल्याण कारक है कि प्रातः होते ही हम लोग शैलक  
राजकृषि से पूछकर और प्रत्यर्पणीय पीठ फलकशय्यासंस्तारक को  
रखकर वापिस देकर तथा शैलक राजकृषि की वैयावृत्ति करने के लिये  
पान्थक अनगार को रखकर यहां से सोयम के साथ प्रदत्त तीर्थकर की  
दी हुई आज्ञा के अनुसार प्रगृहीत तीर्थकर की आज्ञा को अंगीकार  
कर ऐसा बाहिर देशों में विहार करें । ( एवं संपेहेति, संपेहिता कल्लं  
जाव जलंति सेलयं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथा-  
रयं पञ्चप्पिण्ति, पञ्चप्पिणिस्ता पंथयअणगारं वेयावच्चकरं ठावंति

फलगसेज्जासंथारगं पञ्चप्पिणिस्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं, वेयाव-  
च्चकरं ठवेत्ता बहिया अन्मुज्जणं जाव पवत्तेण पग्गहिण जणवयविहारं  
विहरित्तए ) अष्टवे छे देवानुप्रियो । आपण्ण भाटे कल्याणुने भागं ओक न  
रहो छे के सवारे शैलक राजकृषिनी आज्ञा भेजनीने पीठफलक, शय्या संस्तार  
रक वगेरे पाछां आवीने शैलक राजकृषिनी वैयावृत्ति करवा भाटे पान्थक अन-  
गारने नीमीने छवमपूर्वक आपण्ण अर्द्धीथी तीर्थकरानी आज्ञा सुब्बण तेभन  
तीर्थकरानी आज्ञातुं पालन करतां गढारना भील देशोभां विहार करवा नीकणी  
पडीअ. एवं संपेहेति संपेहिता कल्लं जाव जलंति सेलयं आपुच्छित्ता, पडियारियं  
पीठफलगसेज्जासंथारयं पञ्चप्पिणिस्ता पंथयअणगारं वेयावच्चकरं ठावंति

गाराः शिष्यरूपेण सहचरा आसन् तेषु पान्थकं शैलकानगरसेवार्थं स्थापयित्वा पान्थकवर्जास्ते सर्वेऽनगराः पीठफलकादिकं प्रत्यर्प्य बहिर्जनपदविहारं कुर्वन्ति स्मेत्यर्थः ॥ ३१ ॥

मूलम्-तएणं से पंथए सेलयस्स सेज्जासंथारयउच्चार-  
पासवणखेलसिंघाणमल्लओसहभेसज्जभत्तपाणएणं अगिलाए  
विणएणं वेयावडियं करेइ, तएणं से सेलए अन्नया कयाइं क-  
त्तिय चाउम्मासियंसि विउलं असण० आहारमाहारिण सुबहुं  
मज्जपाणयं पीए पुव्वावरणहकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते, तएणं  
से पन्थए कत्तियचाउम्मासियंसि, कयकाउस्सग्गे देवसियं पडि-  
क्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कंमिउंकामे सेलयं रायरिसिं  
खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ, तएणं से सेलए पंथएणं  
सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे  
उट्टेइ, उट्टित्ताएवं वयासी-सं केस णं भो एस अप्पत्थियपत्थिए  
जाव परिवडिजए जेणं ममं सुहप्पसुत्तं पाएसु संघट्टेइ? तएणं से  
पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिय करयल०क

ठावित्ता बहिया जाव विहरंति) इस प्रकार उन्होंने विचार किया-  
विचार करके प्रातःकाल जब सूर्य अपनी प्रभा से प्रकाशित होने लगा  
तब उन्होंने शैलक राजकवि से पूछकर प्रतिहारिक-प्रत्यर्पणी पीठ फलक  
शय्या संस्तारक को वापिस दे दिया-वापिस देकर फिर उन्होंने उन  
की वैयावृत्ति करने के लिये पांथक अनगर को रख दिया । रखकर फिर  
वे वहां से बाहर दूसरे देशों में विहार कर गये । सूत्र ॥ ३१ ॥

ठावित्ता बहिया जाव विहरंति) आ प्रभाषे तेज्जाओ विचार कर्यो, विचार  
करने ल्यारे सवारे सूर्य उठ्य पाओ ल्यारे शैलक राजकविनी अज्ञाभेणवीने  
प्रत्यर्पणीय ओटवे के पीठफलक शय्या संस्तारकने पाछा सोपीने राजकविनी  
वैयावृत्ति भाटे पांथक अनगरने त्यां नियुक्त करीने तेज्जा त्यांथी अक्षरना  
भील देशोभां विहार करवा नीकल्या ॥ सूत्र ३१ ॥

एवं वयासी-अहणं भंते ! पंथए कायकउस्सग्गे देवसियं पडि-  
क्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे  
सीसेणं पाएसु संघट्टेमि, तं खमंतु मं देवाणुप्पिया ! खमंतु मेऽ  
वराहं तुम्मणं देवाणुप्पिया णाइभुज्जो एवं करणयाए चिकहु  
सेलयं अणगारं एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेइ ।

तएणं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवंवुत्तस्स  
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जितथा-एवं खलु अहं रज्जं च जाव  
ओसन्नो जाव उउबद्धपीठफलगसेज्जासंधारणं गिणिहत्ता  
विहरामि, तं नो खलु कप्पइ समणाणं ओसन्नाणं पासत्थाणं  
जाव विहरित्तए, तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता  
पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंधारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अण-  
गारेणं सद्धिं बहिया अब्भुजएणं जाव जणवयविहारणं विहरि-  
त्तए । एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं याव विहरइ ॥ सू० ३२॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि-ततस्तदनन्तरं खलु स पान्थकः शैलकस्य  
'सेज्जासंधारयउच्चारपासवणखेलसिंघाणमल्लओसइभेसज्जभत्तपाणएणं' शय्यासं-  
स्तारकोच्चारप्रस्रवणखेलसिंघाणमल्लौषधभैषज्यभक्तपानेन 'अगिलाए' अग्लानः सन्

‘तएणं से पंथए इत्यादि’ ॥ सूत्र ॥ ३२ ॥

टीकार्थ—( तएणं ) इसके बाद ( से पंथए ) वह पार्थक ( सेलयस्स )  
शैलक अनगार की (सेज्जासंधारयउच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणमल्ल  
ओसइभेसज्जभत्तपाणएणं ) शय्या संस्तारक के द्वारा उच्चार प्रस्र-  
वण, खेल, जल्ल सिंघाण मल आदि की परिष्ठापना द्वारा औषध भैषज्य  
द्वारा, भक्त पान लाने के द्वारा ( अगिलाए ) बिना कोई ग्लानभाव के

(तएणं से पंथए) इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थार णाइ (से पंथए) पार्थक (सेलयस्स) शैलर रावभुज्जिनी  
( सेज्जासंधारयउच्चारपासवण-खेल-जल्ल-सिंघाणमल्ल-ओसइभेसज्जभत्तपाणएणं )  
शय्या संस्तारक द्वारा, तेभअ उच्चार प्रस्रवण, जेल, सिंघाण मल वगेरे नी

विनयेन वैयावृत्यं सेवां करोति । ततः खलु स शैलकः 'अनया कयाइं' अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले 'कत्तियचाउम्मासियंसि' कार्तिकेचातुर्मासिके विपुलम्=अधिकम्, 'असण०' अशनपानखाद्यस्वाद्यम् 'आहारमाहारिणं' आहारमाहारितः चतुर्विधाहारमतिशयेन कृत्वेत्यर्थः सुबहुं 'मज्जपाणयं' मद्यपानकं=निद्राजनकपानकद्रव्यविशेषं 'पीए' पीतः पीत्वेत्यर्थः । 'पूर्वापराहकालसमयंसि' पूर्वापराहकालसमये=दिवसस्य चतुर्थे प्रहरे सुखमसुप्तः मनोहृत्प्रणीतः भोजनातिशयेन निद्राकारकपानकद्रव्यसेवनेन च गाढनिद्रां प्राप्त इत्यर्थः । यत्तु समाधिना सुखेन सुप्त इत्यर्थ इत्युक्तं तत्र युक्तम् प्रमादसद्भावे समाधेरसम्भवात् अमर्यादितनिद्रांताः समाधेर्दूरवर्तित्वाच्च । ततस्तदनन्तरं स पान्यकः 'कत्तियचाउम्मासियंसि'

(विणएणं) बड़े विनय के साथ (वैयावडियं करेइ) वैयावृत्ति करने लगा । (तएणं से सेलए अन्नया कयाइं) एक दिन की बात है कि वे शैलक अनगार (कत्तिय चाउम्मासियंसि विउलं असण० आहारमाहारिणं सुबहुं मज्जपाणयं पीए पुव्ववरणहकालसमयंसि सुहणसुत्ते) चतुर्मासके कार्तिक महिने में बहुत अधिक अशन, पान, खाद्य, और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार कर के और निद्राकारक पानक द्रव्य विशेष को पी करके दिवस के चतुर्थ प्रहर में सुख से सोये हुए थे । यहाँ पर जो कोई ऐसा पाठ कहते हैं कि वे समाधि पूर्वक सुख से सोये हुए थे वह ठीक नहीं है । कारण प्रमाद के सद्भाव में समाधि का होना बनता नहीं है । अमर्यादित निद्रा और समाधि इनका परस्पर विरोध है ऐसी स्थिति में तो समाधि बहुत दूर रहा करती है । (तएणं से

परिक्षापना द्वारा (अगिलाए) केधपथ अतनो अणुजओ के धया विनाना अनीने (विणएणं) भूअ नअ अर्धने (वैयावडियं करेइ) वैयावृत्ति करवा लाया. (तएणं से सेलए अन्नया कयाइं) ओके दिवस शैलक राजअधि (कत्तियचाउम्मासियंसि विउलं असण — आहारमाहारिणं सुबहुं मज्जपाणयं पीए पुव्ववरणहकालसमयंसि सुहणसुत्ते) यातुर्मासना कार्तिक मासमां भूअ प्रभाणु मां अशन पान, आद्य अने स्वाद्य इप आर अनना आहार करीने अने निद्रा करके आपानक द्रव्य विशेषनुं पान करीने सांजना छेइआ पडोरना वअते सुभेथी सुता छता. अही " धया डोके समाधि पूर्वक सुभेथी शैलक राजअधि सुता छता. " ओ प्रभाणुनो पाठ डोवानुं कडे छे ते योज्य अणुअ व नहि केअके प्रमादअवस्थामां समाधि अथ शकती नथी. अमर्यादित निद्रा अने समाधि आ अने वअथे विरोध छे. आवी स्थितिमां समाधि अथ शकती व नथी.

કાર્તિકચાતુર્માસિકે ' કાયકાઊસ્સગે ' કૃતકાયોત્સર્ગ: ' દેવસિયં ' દૈવસિકં પ્રતિક્રમણં પરિક્રાન્તઃ=કૃતવાન , ચાતુર્માસિકં ' પઢિકમિઝં કામે ' પ્રતિક્રમિતુ-કામઃ શૈલકં રાજર્ષિં ' સ્વામણદ્વ્યાપ ' ક્ષમાપનાર્થ્યા શીર્ષેણ મસ્તકેન પાદયોઃ સંઘટ્ટયતિ સ્પૃશતિ । તતસ્તદનન્તરં ચલુ સ શૈલકઃ શૈલકરાજર્ષિઃ પાન્થકેન=પાન્થકાનગારેણ શીર્ષેણ પાદયોઃ સંઘટ્ટિતઃ સંસ્પૃષ્ટઃ સન્ ' આસુરુત્તે ' આશુરુત્તઃ ક્ષટ્ટિકોપયુક્તઃ, યાવત્ ક્રોધાનલવેગેન ' મિસિમિસેમાણે ' મિસમિસન્ દેદીપ્યમાનઃ ' ઉઢેહ ' ઉત્તિષ્ઠતિ, ' ઉઢિત્તા ' ઉત્થાય એવં=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્ ' સે ' સઃ ' કેસ ' એષઃ ઇતાદ્દશઃ કોઽસ્તિ ચલુ ભોઃ ! ' એસ ' એષઃ ' અપ્પત્થિયપ-ત્થિય ' અપાર્થિતપાર્થકઃ, યાવત્ પરિવર્જિતઃ શ્રી હ્રી ધી રહિતઃ, યઃ ચલુ માં

પંથપ કત્તિય ચાઝમ્માસિયંસિ કય કાઊસ્સગે દેવસિયં પઢિકમણં પઢિક-કંતે ચાઝમ્માસિયં પઢિકકામિઝકામે સેલયં રાયરિસિ સ્વામણદ્વ્યાપ સીસેણં પાણસુ સંઘટ્ટેહ ) હસી સમય પાંથક અનગાર ને હસી ચતુર્માસકે કાર્તિક મહીને મેં કાયોત્સર્ગ કરકે દેવસિક પ્રતિક્રમણ કિયા । ફિર ચાતુર્માસિક પ્રતિક્રમણ કરને કી ઇચ્છા સે હસને શૈલક રાજર્ષિ કે અપને કૃત દોષો કી ક્ષમા યાચના નિમિત્ત મસ્તક સે દોનોં ચરણોં કા સ્પર્શ કિયા । ( તણં સે સેલણ પંથણં સીસેણં પાણસુ સંઘટ્ટિય સમાણે આસુરુત્તે જાવ મિસિમિસે માણે ઉઢેહ ) પાંથક અનગાર કે મસ્તક સે દોનોં ચરણોં મેં સ્પૃષ્ટ હુણ વે શૈલક રાજર્ષિ ઇકદમ કોપ સે લાલ હો ગયે । ઓર મિસ મિસાતે હુણ યાવત્ ક્રોધાનલ કે વેગ સે દેદીપ્યમાન હોતે હુણ-વે ઉઠકર વેઠ ગયે । ( ઉઢિત્તા એવં વયાસી ) વેઠકર હમ પ્રકાર કહને લગે- ( સે કેસણં ભો એસ અપ્પત્થિય પ્ત્થિય જાવ પરિવ-

( તણં સે પંથપ કત્તિયચાઝમ્માસિયંસિ કયકાઊસ્સગે દેવસિયં પઢિકમણં પઢિકકંતે ચાઝમ્માસિયં પઢિકકામિઝકામે સેલયં રાયરિસિ સ્વામણદ્વ્યાપ સીસેણં પાણસુ સંઘટ્ટેહ ) આ વખતે ચાતુર્માસના કાર્તિક માસમાં જ પાંથક અનગારે કાયોત્સર્ગ કરીને દૈવસિક પ્રાતિક્રમણ કર્યું. ત્યાર પછી ચાતુર્માસિક પ્રાતિક્રમણ કરવાની ઇચ્છાથી તેમણે પોતાના કોપોની ક્ષમાપના માટે શૈલક રાજર્ષિના ચરણોમાં પોતાના મસ્તકનો સ્પર્શ કર્યો. તણં સે સેલણ પંથણં સીસેણં પાણસુ સંઘટ્ટિય સમાણે આસુરુત્તે જાવ મિસિમિસેમાણે ઉઢેહ ) પાંથક અનગારના મસ્તકના બંને પગોમાં થયેલા સ્પર્શથી શૈલક રાજર્ષિ એકદમ લાલ થોળા થઈ ગયા, અને ક્રોધ ની જવાબોમાં અગત્ય તેઓ ઉઠીને બેઠા થઈ ગયા. ( ઉઢિત્તા એવં વયાસી ) બેઠા થઈને તેઓએ આ પ્રમાણે

સુત્રમસુત્તં પાદયોઃ સંઘટ્ટયતિ ? તતઃ સ્વલ્પસ પાન્યકઃ શૈલકેનૈવમ્લકઃ સન્ ભીતઃ  
 =મયયુક્તઃ ત્રસ્તઃ=ઉદ્વિગ્નઃ, ત્રસિતઃ કમ્પિતઃ કરતલપરિગૃહીતં શિરઆવર્તં મસ્ત-  
 કેઽઞ્જલિં કૃત્વા એવં=વક્ષ્યમાણમ્કારેણ અવાદીત્-'અહ્ણં' અહં સ્વલ્પ મદન્ત !  
 પાન્યકઃ કૃતકાયોત્સર્ગઃ 'દેવસિયં' દૈવસિકં=પ્રતિક્રમણં પ્રતિક્રાન્તઃ । હે મદન્ત !  
 અહં સ્વલ્પ પાન્યકનામકો ભવદીયશિષ્યઃ કાયોત્સર્ગં કૃત્વા દૈનિકં પ્રતિક્રમણં કૃત-  
 વાન્ , અધુના ચાતુર્માસિકં ક્ષમાપયન્ દેવાનુપિયં વન્દમાનઃ શ્રીર્ષેણ પાદયોઃ સંઘટ્ટ-  
 યામિ, હે દેવાનુપિયાઃ તત્ તસ્માદ્ ક્ષમધ્વં મામ્ , ક્ષમધ્વં મે મમાપાર્ધં , 'તુમ-  
 જ્ઞિજ' ) અરે । યહ કૌન એસા હૈં જો શ્રી હ્રી સે રહિત બુદ્ધિવાલા હુઆ  
 યહાં વિના બુલાયે આ ગયે હૈં ઓર ( જં મમં સુહૃદ્પસુત્તં પાણ્સુ  
 સંઘટ્ટેહ ) સુલ્પ પૂર્વક સોણ હુણ મુઝે પૈરોં મેં સ્પર્શ કર રહા હૈં । ( તણં  
 સે પંથણ સેલણં એવં વુત્તે સમાણે મીણ તત્થે તસિય કરચલ્લંકદ્દુ એવં  
 વયાસી ) હસ પ્રકાર શૈલક કે દ્વારા કહે જાને પર વહ પાંથક અનગાર  
 ડર ગયા, ઉદ્વિગ્ન હો ગયા, રોમ રે ઉસકા કપ ગયા । ઉસી સમય ઉસને  
 દોનોં હાથોં કી અંજલિ જોડકર ઓર ઉસે મસ્તક પર રલ્લકર હસ  
 પ્રકાર કહા-અહ્ણં મંતે પંથણ કયકાઉસગ્ગે દેવસિય પીઢિક્કમણં  
 પઢિક્કંતે ચાઉમ્માસિયં ક્ષામેમાણે દેવાનુપિયં । વંદમાણે સીસેણં પાણ્સુ  
 સંઘટ્ટેમિ) હે મદન્ત ! મેં હૂં આપકા શિષ્ય મેં પાંથક ને કાયોત્સર્ગ કરકે  
 દૈવસિક પ્રતિક્રમણ કર લિયા હૈં । અબ ચાતુર્માસિક દોષોં કી ક્ષમા  
 કરાને નિમિત્ત હે દેવાનુપ્રિય આપકી વંદના કરેતે હુણ મેં આપકે ચરણોં  
 કા સ્પર્શ કિયા હૈં । ( તં સ્વમંતુ મં દેવાનુપિયા ! સ્વમંતુ મેઽવરાહં તુમણં

કહું-( સે કેસણં મો પસ અપ્પલ્લિયપલ્લિય જાબ પરિવઝ્ઞિજ ) અરે ! આ કેણુ  
 છે ? જે શ્રી હ્રી થી રહીત મૂળં જોલાવ્યા વગર જે અહીં આવતો રહ્યો છે.  
 ( જં મમં સુહૃદ્પસુત્તં પાણ્સુ સંઘટ્ટેહ ) હે જે મુખેથી વિશ્રામ કરનારા અને પગેભાં  
 સ્પર્શ કરી રહ્યો છે. ( તણં સે પંથણ સેલણં એવં વુત્તે સમાણે મીણ તત્થે તસિય  
 કરચલ્લંકદ્દુ એવં વયાસી ) શૈલક રાજક્રાન્તિની આ વાત સાંભળીને પાંથક  
 અનગાર ડરી ગયા, ઉદ્વિગ્ન થઈ ગયા અને તેમના અણુ અણુમાં ભય બ્યાસ  
 થઈ ગયો. તરત જ તેઓ બંને હાથોની અંજલિ મસ્તકે મૂકીને આ  
 પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા-( અહ્ણં મંતે પંથણ કયકાઉસગ્ગે દેવસિયપઢિક્કમણં  
 પઢિક્કંતે ચાઉમ્માસિયં ક્ષામેમાણે દેવાનુપિયં ! વંદમાણે સીસેણં પાણ્સુ સંઘટ્ટેમિ )  
 હે મદન્ત ! આતો હું છું આપનો શિષ્ય પાંથક મેં કાયોત્સર્ગ કરીને દૈવસિક  
 પ્રતિક્રમણ કરી લીધું છે ચાતુર્માસિક દોષોની ક્ષમાપના માટે તમારા ચરણોમાં  
 મેં મસ્તકને સ્પર્શ કર્યો છે. ( તં સ્વમંતુ મં દેવાનુપિયા ! સ્વમંતુ મેઽવરાહં

णं 'यूयं खलु । हे देवानुप्रियाः 'णाइ भुज्जो ' न भूयः एवं करणाय प्रवर्तिल्ये इति कृत्वा=इत्युक्त्वा शैलकमनगारमेतदर्थं सम्यग् विनयेन 'भुज्जो भुज्जो ' भूयो भूयः पुनः पुनः 'स्वामेइ' क्षमयति शैलकस्य राजर्षे क्रोधोपशमनार्थं पुनः पुनः स्वापराधं क्षमयति स्मेत्यर्थः ।

ततः खलु तस्य शैलकस्य राजर्षेः पान्थकेनैवमुक्तस्य अयमेतद्रूपो वक्ष्यमाण-  
रूपः यावत् संकल्पः समुदपद्यत=अभवत्-एवम्=अमुना प्रकारेण खलु निश्चये, अहं-  
सर्वं राज्यं त्यक्त्वा च यावत् दीक्षां गृहीत्वा पुनर्विपुलाशनपानादौ मूच्छितः गृद्धः  
अध्युपपन्नः अवसन्नः, यावत् अवसन्नविहारी, पार्श्वस्थविहारी कुशीलः कुशीलविहारी  
प्रमत्तः संसक्तश्चतुर्मासापगमेऽपि क्रतुवद्धपीठफलकशय्यासंस्तारकं गृहीत्वा विह-

देवानुप्पिया ! णाह भुज्जो एवं करणयाए त्ति कद्दु सेलयं अणगारं  
एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ स्वामेइ ) इसलिये हे देवानुप्रिय ! आप  
मुझे क्षमा कीजिये । अब मैं हे देवानुप्रिय ! पुनः ऐसा नहीं करूंगा ।  
इस प्रकार कहकर उसने बार २ शैलक अनगार से अपने इस अपराध  
की वड़े विनय के साथ क्षमा मांगी । (तएणं तस्स सेलयस्स रायरिस्सिस्स  
पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार पार्थक  
अनगार के कहने पर उस शैलक राजर्षि के मन में यह इस प्रकार का  
यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ (एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओसन्नो जाव  
उव बद्धपीठफलगसेज्जासंधारणं गिण्हित्ता विहरामि त नो खलु कप्पह  
समणानं ओसन्ना णं पासत्था णं जाव विहरित्तिए) मैंने समस्त राज्यका परि-  
त्याग कर यावत् जिनदीक्षा धारण की है परन्तु अब मैं पुनः विपुल अशन

तुमणं देवानुप्पिया ! णाह भुज्जो एवं करणयाए त्ति कद्दु सेलयं अणगारं  
एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ स्वामेइ ) ओथी हे देवानुप्रिय ! तमे भने क्षमा  
करी. हे देवानुप्रिय ! इवेथी भाराथी आबुं कोउपयु द्विस्स थरी नहिं आ  
भमाळे पार्थक अनगारे शैलक राजर्षिपिनी ये ताना अपराध अहल बारबार  
विनम्र थधने क्षमा याचना करी. ( तएणं तस्स सेलयस्स रायरिस्सिस्स पंथएणं  
एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ) आ भमाळे पार्थक अनगारनी  
वात सांलणीने शैलक राजर्षिपिना भनभां आ भतने संकल्प-विचार खुशे  
हे ( एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओल्लो जाव उव बद्धपीठफलगसेज्जा  
संधारणं गिण्हित्ता विहरामि तं नो खलु कप्पह समणानं ओसन्नाणं पासत्थाणं  
जाव विहरित्तिए ) सकण राजवैलवनो त्याग करीने ये जिनदीक्षा भेगयी छे.  
पयु अत्थारे करी हुं पुक्कण भमाळुभां अशन, वान वगेदेना सेवनभां आस-

रामि । तत्=तस्मात् नो खलु कल्पते श्रणानाम् अनगाराणां 'पासस्थानं' पार्श्वस्थानां यावत् करणेन—'असक्ताणं कुशीलाणं प्रमत्ताणं संसक्ताणं' इत्येषां संग्रहः । 'अवसक्ता' पार्श्वस्थाः कुशीलाः प्रमत्ताः संसक्ताश्च भूत्वाऽनगाराणां विहर्तुं न कल्पते इत्यर्थः ।

'तं सेयं' तच्छ्रेयः=तत् तस्मात् श्रेयः खलु मे मम कल्पे प्रभातकाले मण्डूकं राजानमापृच्छथ प्रतिहारिकं=प्रत्यर्पणीयं, पीठफलकशय्यासंस्तारकं प्रत्यर्प्य पान्थकेनानगारेण सार्धं बहिः 'अभ्युज्जण' अभ्युद्यतेन=उत्तमसहितेन, यावत्—इह यावत् करणात्—पञ्चत्वेन, पगगहियेण' इत्यनयोः संग्रहः । 'पञ्चत्वेन' मदत्तेन, तीर्थकरानुज्ञापितेन गुरुपदिष्टेन इत्यर्थः, 'पगगहियेण' मगृहीतेन, तीर्थकराङ्गीकृतेन, गुरुसकाशान्मयाङ्गीकृतेनेत्यर्थः जनपदविहारेण विहर्तुम् । नव-

पान आदि में सूच्छित बन रहा हूँ । उन में स्नेहरूपी रङ्गु से बँध गया हूँ । लोलुप हो गया हूँ । सरस आहार आदि के अधीन मेरा जीवन हो गया है । स्वाध्याय प्रतिलेखन आदि आवश्यक क्रियाओं से मैं शिथिल हो रहा हूँ । मेरी चरण सत्तरी और करण सत्तरी दोनों ही आलस्य के बश से मंवीभूत हो रही हैं । इसलिये मैं पार्श्वस्थ हो रहा हूँ । पार्श्वस्थों के जैसा मेरा विहार बर्ताव हो गया है । कुशील-कुत्सित आचार वाला बन गया हूँ । कुशील विहारी हो रहा हूँ । प्रमत्त दशाधीन होकर गौरवत्रय से संकीर्ण आचारवाला बना हुआ हूँ । ऋतुबद्ध पीठ फलक शय्या संस्तारक का से वी हो रहा हूँ । अतः अवसन्न, पार्श्वस्थ, कुशील प्रमत्त एवं संसक्त होकर अनगार रूप से रहना यह श्रेयस्कर नहीं है । (तं सेयं खलु में कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठ

कतं यथं रह्यो छुं स्नेहइपी होरीमां हुं अधाधं गयेो छुं हुं लोलुपं यथं गयेो छुं भाइं एवन सरस आहारने आधिनं यथं गयेो छुं स्वाध्यायं प्रतिवेधनं वगेरे आवश्यकं क्रियांमां हुं शिथिलं यथं गयेो छुं भारी चरण सत्तरीं अने करण सत्तरीं अने आणसने दीधि मंडं यथं रह्यो छुं अथी हुं पार्श्वस्थं यथं रह्यो छुं भारी विहार अने आचरण पणु पार्श्वस्थोनी जेम जे था मांडयेो छुं कुशील-अटवे के हुं कुत्सित आचरण वागेो यथं गयेो छुं कुशील-विहारी यथं रह्यो छुं प्रमत्तना जेवी दशावागेो हुं गौरवत्रयथी संकीर्ण आचार वागेो यथं रह्यो छुं हुं ऋतुबद्ध पीठ फलक शय्या संस्तारक ने सेवनारी यथं गयेो छुं अथी अवसन्न, पार्श्वस्थ कुशील प्रमत्त अने संसक्त यधने अनगार इये रडेवुं नेश्रेयस्कार नथी । (तं सेयं खलु में कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीठफलक शय्या संस्तारक पञ्चविणिता पथरणं



કલ્પિવિહારેણ દેશમધ્યે વિહારં કર્તું શ્રેયઃ इत्यर्थः । एवम्=उक्तप्रकारेण, 'संप्रेक्षते स्व मनसि विचारयतिस्मेत्यर्थः । 'संपेक्षिता' संप्रेक्ष्य विचार्य, कल्पे यावद्विहरति । अत्र यावच्छब्देन—'जलंतेमंडुयं रायं आपुच्छिता, पाण्डिहारियं, पीठफलम सेज्जासंथारयं पञ्चपिण्णह, पञ्चपिण्णित्ता पंथएणं अनगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जाव जणवयविहारेणं' इतिपाठस्य संग्रहः ॥ ३२ ॥

फलમ સેજ્જા સંથારયં પન્ચપિણિત્તા પંથણં અણગારેણં સદ્ધિં બહિયા અબ્ભુજ્જણં જાવ જણવયવિહારેણં વિહરિત્તપ એવં સંપેહેહ, સંપેહિત્તા કલ્લં યાવ વિહરહ ) મેરા હિતતો અબ્હી મેં હૈં કિ પ્રાતઃકાલ મંડુક-રાજા સે પૂછકર પ્રતિહારિકા-જો યે પીઠ ફલમ શય્યા સંસ્તારક હૈં ઉન્હે પીછે દેકર પાંથક અનગાર કે સાથ ઉત્તમ યોગરૂપ ઉચમ સે યુક્ત-અપ્રમત્તદશા વિશિષ્ટ-તીર્થંકરાદિ દ્વારા આચરિત ઔર ગુરુ જન દ્વારા ઉપદિષ્ટ-એસા વિહાર યહાં સે કરદૂં । અર્થાત્ નવ કલ્પિત વિહાર સે અન્ય દેશોં મેં વિહાર કરના હી મુછે અબ્હી હિતકારક હૈં । હસ પ્રકાર કા વિચાર શૈલક અનગાર ને કિયા । બાદ મેં લે હસી વિચાર કે અનુસાર વહાં સે વિહાર કર ગયે । યહાં યાવત્ શબ્દ સે “જલંતે-મંડુયં રાયં આપુચ્છિત્તા પાણ્ડિહારિયં પીઠફલમ સેજ્જાસંથારયં પન્ચપિણ્ણહ, પન્ચ-પિણિત્તા પંથણં અણગારેણં સદ્ધિં બહિયા અબ્ભુજ્જણં જાવ જણવય-વિહારેણં” હસ પાઠ કા સંગ્રહ હુઆ હૈં । હસકા અર્થ ઉપર લિખા જા ચુકા હૈં । સૂત્ર ॥ ૩૨ ॥

અણગારેણં સદ્ધિં બહિયા અબ્ભુજ્જણં જાવ જણવય વિહારેણં વિહરિત્તપ એવં સંપેહેહ સંપેહિત્તા કલ્લં યાવ વિહરહ ) હવે મારા પોતાને માટે તો એજ એથસ્કાર ગણાય કે સવારે મંડુકરાજને જણાવી પીઠ ફલક શય્યા સંસ્તારકો સોંપીને પાંથક અનગારની સાથે ઉત્તમ યોગરૂપ ઉચમથી યુક્ત-અપ્રમત્તદશાવિશિષ્ટ-અને તીર્થંકર વગેરે દ્વારા આચરિત અને શુરુ જન દ્વારા ઉપદિષ્ટ વિહાર કરૂં એટલે કે નવ કલ્પિત વિહારથી બીજાદેશોમાં વિહાર કરવો જ હવે અત્યારના સંભોગોમાં મારે માટે હિતાવહ છે. આરિતે શૈલક અનગારે વિચાર કર્યો. ત્યાર પછી એ વિચાર પ્રમાણે જ ત્યાંથી તેઓએ બીજે વિહાર કર્યો અહીં ‘યાવત્’ શબ્દથી “જલંતે મંડુયં રાયં આપુચ્છિત્તા પાણ્ડિહારિયં પીઠફલમસેજ્જા સંથારયં પન્ચપિણ્ણહ, પન્ચપિણિત્તા પંથણં અણગારેણં સદ્ધિં બહિયા અબ્ભુજ્જણં જાવ જણવયવિહારેણં” આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આના અર્થ પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે ॥ સૂત્ર “૩૨” ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो जो अम्हं निगंथो वां निगंथी  
वा आयरिय उवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव  
संथारए पमत्ते विहरइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४  
हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो ॥ सू० ३३ ॥

टीका—‘एवामेव’ इत्यादि—एवमेव अनेन प्रकारेणैव यथा शैलको राजर्षिः प्रमादी  
जातस्तथैव हे श्रमणा आयुष्मन्तः । योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपा  
ध्यायानामन्तिके समीपे प्रव्रजितः गृहीतप्रव्रज्यः सन् अवसन्नः यावत्—संस्तारके—  
अत्र यावच्छब्देन—अवसन्ननिहारी, पार्श्वस्थः पार्श्वस्थविहारी, कुशीलः कुशीलविहारी  
प्रमत्तः संसक्तः ऋतुबद्धपीठफलकशय्या’ इत्यन्तः पाठः संगृह्यते । एवं चावसन्नत्वादि  
विशिष्टः सन् ऋतुबद्धपीठफलकशय्यासंस्तारके प्रमत्तः=प्रमादीभूत्वा विहरति अव-  
तिष्ठते, स खलु इह लोके चैव बहूनां श्रमणानां ४ श्रमणीनां श्रावकाणां श्राविकाणां

‘एवामेव समणाउसो’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवामेव) जिस तरह शैलक राजकृषि प्रमादी हुवे उसी  
तरह (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणों ! (जो अम्हं निगंथो वा  
निगंथी वा आयरिय उवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव  
संथारए पमत्ते विहरइ इह लोए चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे  
संसारो भाणियव्वो) जो कोई हमारा निर्ग्रन्थ वा निर्ग्रन्थी जन आचार्य  
उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ अवसन्न बन जाता है यावत् ऋतु  
बद्ध पीठ फलकशय्या संस्तारक में प्रसक्त होकर बैठा रहता है वह इस  
लोक में अनेक श्रमण, श्रमणी श्रावक, श्राविकाओं द्वारा हीलनीय होता

(एवामेव समणाउसो) इत्यादि

टीकार्थ—(एवामेव) जेभ शैलकराज कृषि प्रमादवश तथा तेभ (समणाउसो)  
हे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्हं निगंथोवा निगंथीवा आयरिय उवज्झायाणं  
अंतिए पव्वइए समाणे ओसन्ने जाव संथारए पमत्ते विहरइ इह लोए चेव  
बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो) जे कोई हमारा निर्ग्रन्थके  
निर्ग्रन्थी जन आचार्य उपाध्यायणी पास प्रव्रजित अछिने अवसन्न अछि नय  
छे. यावत् ऋतु बद्ध पीठ फलक शय्या संस्तारकभां प्रसक्त अछिने जेसी रहै  
छे. ते आ लोकभां धरु श्रमणो श्रमणीओ अने श्रावक श्राविकाओ द्वारा  
जा २१

હીલ્લનીયઃ નિન્દનીયઃ ક્લિસનીયઃ ગર્હણીયઃ પરિભવનીયઃ, મત્તતિ. । પરલોકેऽપિ ચ  
 खलु आगच्छति, प्राप्नोति बहूनि दण्डानानि 'संसारो माणियन्त्रो' संसारो मणि-  
 तन्व्यः । संसारे स परिभ्राम्यति. अत्र संसारपरिभ्रमणपाठो वाच्यः—यथा— ' अ  
 णाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्ठइ ' अनादिकम् अन-  
 वदग्रम् अनन्तं दीर्घाद्धं दीर्घकालं, दीर्घाध्वानं वा दीर्घमार्गं, चातुरन्तं चतुर्विभागं,  
 चतुर्गતિકં, संसारएव कान्तारं दुर्गममार्गः तत्, तथा अनुपर्यटति पुनःपुन  
 भ્રाम्यतीत्यर्थः ॥ ३३ ॥

મૂલમ્—તણ્ણં તે પંથગવજ્જા પંચ અણગારસયા इमीसे  
 कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्नं सदावेति, सदावित्ता एवं  
 वयासी—सेलए रायरिसी पंथएणं अणगारेणं सद्धिं वहिया जाव  
 विहरइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेलयं उवसंपज्जि-  
 त्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेति, संपेहित्ता सेलयं रायं उपसंपज्जि-  
 त्ताणं विहरंति ॥ सू० ३४ ॥

है, निंदनीय होता है, क्लिप्तनीय होता है, गर्हणीय होता है, परिभ-  
 वनीय होता है । तथा परलोक में भी अनेक दण्डों को पाता है । संसार  
 में वह परिभ्रमण करता है ।

સંસાર પરિભ્રમણ સંબન્ધી પાઠ યહાં હસ પ્રકાર સે લગા લેના ચાહિયે ।  
 “ અણાઇયં અણવદગ્ગં દીહમદ્ધં : ચાઉરંતસંસારકંતારં અણુપરિયટ્ઠઈ ”  
 इसका भाव इस प्रकार है—ऐसा जीव अनादि अनंतरूप संसार कान्तार  
 में कि जो चतुर्गतिरूप विभाग वाला है और जिसका मार्ग या काल  
 बहुत दीर्घ है उसमें पुनः पुनः भ्रमण करता रहता है । सूत्र ॥ ३३ ॥

હીલ્લનીય હોય છે, નિન્દનીય હોય છે, ક્લિસનીય હોય છે, ગર્હણીય હોય છે,  
 પરિભવનીય હોય છે. તેમજ પરલોકમાં પણ ઘણી ભતની શિક્ષાને પાત્ર  
 થય છે તે સંસારમાં પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે.

સંસાર પરિભ્રમણ વિષે પાઠ ગર્હી આ પ્રમાણે જ બહુવેળે બોધ્યો (અણાઇયં  
 અણવદગ્ગં દીહમદ્ધં ચાઉરંતસંસારકંતારં અણુપરિયટ્ઠઈ) આનો ભાવર્થ આ પ્રમાણે  
 છે કે—ચતુર્ગતિ રૂપ વિભાગવાળા અનાદિ અનંત રૂપ સંસાર કાંતારમાં કે બેનો  
 માર્ગ ખૂબજ દીર્ઘ છે વારંવાર એવ પરિભ્રમણ કરતો જ રહે છે. ॥સૂત્ર ૩૩॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि—ततस्तदनन्तरं पान्थकवर्जाः पञ्चअनंगारशतानि=पान्थक रहिताः पञ्चशतसंख्यका अनंगाराः एकोनपञ्चशतसंख्यका अनंगारा इत्यर्थः । ‘इमीसे कहाए’ अस्याः कथायाः, ल्यबलोपे कर्मण्यधिकरणे चेति वार्तिकेन पञ्चमी । इमां कथामाकर्ण्येत्यर्थः । ‘लद्धट्ठा’ लब्धार्थाः प्राप्तामिलविताः सन्तः ‘अन्नमन्नं’ अन्योन्यं परस्परं ‘सदावेति’ शब्दयन्ति आह्वयन्ति, शब्दयित्वा=आह्वय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादिषुः—शैलको राजर्षिः पान्थकेनानंगारेण सार्धं बहि र्यावद् विहरति, अत्र यावच्छब्देन—अम्बुज्जएणं पवत्तेणं पडिगगहिएणं जणव्यविहारं इति पाठस्य संग्रहः अस्य व्याख्या प्राशुक्ता । तत्=तस्मात्, श्रेयः खलु हे देवानुप्रियाःअस्माकं शैलकं शैलकराजर्षिम् ‘उत्तंसपज्जित्ता उत्तंसघ=

‘तएणं ते पंथगवज्जा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं इसके बाद (ते पंथगवज्जा पंच अनंगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समणा अन्नमन्नं सदावेति) वे पांथक वर्ज ५००) सौ अनंगार अर्थात् ४९९ वे साधु जो शैलक राजकृषि के शिष्य थे जब इस कथा को सुना-तो सुनकर अभिलषित अर्थ की प्राप्ति वाले बनकर उन्होंने ने आपस में एक दूसरे को बुलाया—(सदाविता एवं वयासी) बुलाकर इस प्रकार विचार किया—(सेलए रायरिसी पंथएणं अनंगारेणं सद्धि बहिया जाव विहरइ) शैलक राजकृषि पांथक अनंगार के साथ बाहर जनपदों में यावत् विहार कर रहे हैं ।

यहां यावत् शब्द से “अम्बुज्जएणं पवत्तेणं पडिगगहिएणं जणव्य विहारं” इस पाठ का संग्रह किया गया है । इन पदों की व्याख्या

(तएणं ते पंथगवज्जा) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्थार आह (ते पंथगवज्जा पंच अनंगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समणा अन्नमन्नं सदावेति) पांथकने आह करतां गीला आरसे नवालुं राजकृषि शैलकना शिष्योओओ न्यारे आ भधी विगत नाली त्थारे धम्मिगत अर्थनी प्राप्तिनी अभिदापा राभता तेओओ ओक गीलने ओक स्थाने ओकठा थवा भाटे ओलाओ (सदाविता एवं वयासी) ओलावीने ओक न्थ्याओ ओकठा थधने तेओ विचार करवा लाओ, (सेलए रायरिसी पंथएणं अनंगारेणं सद्धि बहिया जाव विहरइ) के शैलक राजकृषि पांथक अनंगारनी साथे ओहारे जनपदोमां विहार करी रह्या छे,

अही ने (यावत्) शब्द छे तेनाथी (अम्बुज्जएणं पवत्तेणं पडिगगहिएणं जणव्यविहारं) आ पाठने अंअह थयो छे, आ पदोनी

ઉપગત્ય તદાજ્ઞામક્ષીકૃત્ય વિહર્તુ જનપદવિહારં કર્તુમિત્યર્થઃ । एवं अमुना प्रका-  
रेण संप्रेक्षन्ते, परस्परं पर्यालोचयन्ति, संप्रेक्ष्य पर्यालोच्य शौलकं 'रायं' राजानं  
राजर्विमित्यर्थः उपसंपद्य-उपेत्य तदाज्ञामादाय विहरन्ति. ॥ ૩૪ ॥

સૂત્ર-તણ સેલણ પંથગપામોક્ત્વા પંચ અળગારસયા  
વહૂણિ વાસાણિસામન્નપરિયાગં પાણિત્તા જેણેવપોંડરીયે પઠવણ  
તેણેવ ઉવાંગચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિન્તા જહેવ થાવચ્છાપુત્તે તહેવ  
સિદ્ધા । ઇવામેવ સમણાસો જો અમ્હં નિગ્ગંથો વા નિગ્ગંથી  
વા જાવ વિહરિસ્સહ ।

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संप-  
त्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्तेत्ति वेमि ॥ ૩૫ ॥

॥ पंचमं णायज्झयणं समत्तं ॥

પહિલે કર દી ગઈ છે । (તં સેયં खलु देवाणुप्पिया । अम्हं सेलयं उव  
संपज्जित्ता णं विहरित्तए.) इसलिये हे देवानुप्रियो ! अब हम लोगों को  
यही उचित-कल्याण कारक-मार्ग है कि हम सब उन शौलक राजकृषि  
की आज्ञा को अंगीकार कर बाहर जनपदों में विहार करें ।

( एवं સંપેહેતિ ) હસ પ્રકાર ડન્હોને વિચાર કિયા-( સંપેહિત્તા  
સેલયં રાયં ઉપસંપજિત્તાણં વિહરંતિ ) વિચાર કર વે સવ કે સવ  
શૌલક રાજા-રાજકૃષિ કે પાસ પહુંચે ઓર ડનકી આજ્ઞા લેકર વિહાર  
કરને લગે । સૂત્ર ॥ ૩૪ ॥

અર્થઃ પહેલાં કરવામાં આવી છે. ( તં સેયં खलु देवाणुप्पिया । अम्हं सेलयं  
उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ) એથી હે દેવાનુપ્રિયે ! અમારા માટે એજ  
હિતાવહ છે કે અમે બધા તે શૌલક રાજકૃષિની આજ્ઞા મેળવીને બહાર ના  
જનપદોમાં વિહાર માટે નીકળીએ

( एवं સંપેહેતિ ) આ પ્રમણે વિચાર કર્યો ( સંપેહિત્તા સેલયં રાય ઉપસંપ-  
જિત્તાણં વિહરંતિ ) વિચાર કરીને તેઓ બધા શૌલક રાજકૃષિની પાસે ગયા,  
અને તેમની આજ્ઞા મેળવીને વિહાર કરવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર " ૩૪ " ॥

टीका—ततस्तदनन्तरं खलु 'सेलए' शैलकराजविः 'पंथगपामोक्त्वा' पान्थकप्रमुखाः, 'पंच' पञ्च, 'अणगारसया' अनगारशतानि, बहूनि वर्षाणि 'सामन्नपरियागं' श्रामण्यपर्यायं 'पाउणिच्चा' पालयित्वा यत्रैव पुण्डरीकः पुण्डरीकपर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यथैव स्थापत्यापुत्रः सिद्धस्तथैव सिद्धः । मासिकीं संलेखनां कृत्वा केवलीभूत्वा सिद्धा मुक्ता जाता इत्यर्थः ।

एवमेव शैलकराजविदेव, हे श्रमणा आयुष्मन्तः । योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावद् प्रमादं परित्यज्य अभ्युद्यतेन सोद्यमेन प्रदत्तेन तीर्थकरानुज्ञा

‘तएणं सेलए पंथगपामोक्त्वा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (सेलए) वे शैलक राजकवि और (पं-  
गपामोक्त्वा पंच सय अणगारसया) पान्थक प्रमुख पांचसौ अनगार  
(बहूणि वासाणि) अनेक वर्षों तक (सामन्नपरियागं पाउणिच्चा) श्रामण्य-  
पर्याय का पालन करके (जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छन्ति)  
जहां पुंडरीक पर्वत था वहां आये । (उवागच्छन्ता जहेव थावच्चा  
पुत्ते तहेव सिद्धा) वहां आकर स्थापत्यापुत्र अनगार की तरह १ मास  
की संलेखना कर केवली होकर मुक्त हो गये । अर्थात् सिद्ध हो गये ।

(एवा मेव समणाउसो जो अम्हं निर्गन्थो वा निर्गन्थी वा जाव  
विहरिस्सइ) इसी तरह शैलक राजकवि की तरह—(समणाउसो) हे  
आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो अम्हं निर्गन्थो वा निर्गन्थी वा जाव विहरि-  
स्सइ) जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण और निर्ग्रन्थ साध्वीजन यावत् प्रमाद

(तएणं सेलए पंथगपामोक्त्वा) इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्पार भा६ (सेलए) शैलक राजकवि अने (पंथगपामोक्त्वा  
पंच अणगारसया) पान्थक प्रमुख पांचसौ अनगार (बहूणि वासाणि) बहू  
वर्षों सुधी (सामन्नपरियागं पाउणिच्चा) श्रामण्य पर्यायतुं पालन करीने  
(जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छन्ति) ज्था पुंडरीक पर्वत डेतो त्थां  
आव्या. (उवागच्छन्ता जहेवथावच्चा पुत्ते तहेव सिद्धा) त्थां आवीने स्थापत्या  
पुत्र अनगारनी जेम जेक मासनी संलेखना करीने केवणी थई मुक्त थई  
गया. जेठले के तेजो सिद्ध थया

(एवामेव समणाउसो जो अम्मं निर्गन्थो वा निर्गन्थी वा जाव विहरिस्सइ)  
आ प्रभाञ्जे शैलक राजकविनी जेम (समणाउसो) हे आयुष्मन्त श्रमणो ! (जो  
अम्हं निर्गन्थो वा निर्गन्थी वा जाव विहरिस्सइ) जे अमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अने  
निर्ग्रन्थ साध्वी जेम प्रमाद वेगेरेने त्यज्जने सोद्यम प्रदत्त-तर्थाकरानुज्ञापित

पितेन गुरूपदिष्टेन, प्रगृहीतेन तीर्थकरैरङ्गीकृतेन जनपदविहारेण विहरिष्यति सोऽनगाऽश्रुर्विधसंघस्यार्चनीयो वन्दनीयोभूत्वा यावत् संसारस्यान्तं कृत्वा मोक्षगामी भविष्यति ॥

एवं खलु जम्बू : ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् संप्राप्तेन सिद्धिर्गतिर्गतेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=उत्तरूपोऽर्थः प्रज्ञप्तः=कथितः । इति ब्रवीमि=अस्य व्याख्यापूर्ववत् ॥

जो ओसओ य पासथो कुसीओ वि पमायओ ।

संवेगा उज्जओ होज्जा सिद्धो सो शैलओ जहा ॥ १ ॥

छाया-योऽवसन्नश्च पार्श्वस्थः कुशीओऽपि प्रमादतः ।

संवेगादुद्यतश्चेत् स्यात् सिद्धोऽसौ शैलको यथा ॥ १ ॥ ३५ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितकलितक-  
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछ-  
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पद्भूषित-कोल्हापुरराज-  
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाङ्ग-  
व्रतिविरचितायां ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानपारधर्मामृतव-  
र्षिण्याख्यायां व्याख्यायां पञ्चममध्ययनं संपूर्णम् ॥

का परित्याग कर सोचम प्रदत्त-तीर्थ करानुज्ञापित-गुरूपदिष्ट और प्रगृहीत-तीर्थं करों द्वारा अङ्गीकृत किये गये ऐसे जनपद विहार से युक्त होगा वह अनगार चतुर्विध संघका अर्चनीय वन्दनीय होकर यावत् संसार का अन्त कर मोक्ष गामी होगा ।

( एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्ते णं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिवेमि ) इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि सिद्धगति को प्राप्त कर चुके हैं इस पांच वे ज्ञानाध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप अर्थ प्रज्ञप्त किया है । ऐसा मैं कहता हूँ “ इति ब्रवीमि ” इन पदों की व्याख्या पहिले की

श्रुतपदिष्ट अने प्रगृहीत तेमज तीर्थं करे द्वारा स्वीकृत जेवा जनपद विहारथी  
श्रुत थसे ते अनगार चतुर्विध संघने अर्चनीय, वंदनीय थधने यावत्  
संसारने अंत करीने मोक्षपद भेगवसे

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्ते णं पंचमस्स णाय  
ज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि ) आरोते डे जंबू ! सिद्ध गति पाभेदा  
लाभवान भडावीरे आ ज्ञाता अध्ययनना पांचमा अध्ययनने अर्थ प्रज्ञप्त  
हये। छे. आभ डुं तने कहुं छुं. “ इतिब्रविमि ” आ पढोनी व्याख्या

गई व्याख्या के अनुसार ही जानना चाहिये । इस संग्रह श्लोक का अर्थ इस प्रकार है—जो प्रमाद से अवसन्न पार्श्वस्थ तथा कुशील हो जाता है वह साधु-अनगार-संवेग भाग से अपने चारित्र में लयमशील होकर शैलक राजकृषि की तरह सिद्ध पदका भोक्ता हो जाता है । सूत्र ॥ ३५ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत “ज्ञाना-  
धर्मकथाङ्गसूत्र की अनगारधर्माभृतवर्षिणी व्याख्या का पांचवा  
अध्ययन समाप्त ॥ ५ ॥

પહેલાં કરવ માં આવી છે આ સમજ સ્વોક્તેનો અર્થ આ પ્રમાણે  
છે-કે જે પ્રમાદથી અવસન્ન પાર્શ્વસ્થ તેમજ કુશીલ થઈ બન્ય છે, તે સાધુ  
(અનગાર) સંવેગ ભાવથી પોતાના ચારિત્રમાં ઉદભવશીલ થઈને શૈલક રાજ-  
કૃષિની જેમ સિદ્ધ પદને મેળવનાર થાય છે. ॥ સૂત્ર ‘ ૩૫ ’ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહં રાજકૃત જ્ઞાનાધર્મકથાંગ  
સૂત્રની અનગાર ધર્માભૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું પાંચમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૫॥



## અથ ષષ્ઠમધ્યયનં પ્રારંભ્યતે—

ગતં પञ્ચમાધ્યયનં-સંપ્રતિ ષષ્ઠમારમ્યતે અસ્યાથં પૂર્વેણ સહામિસમ્બન્ધઃ પञ્ચ-  
માધ્યયને પ્રમાદવતોઽનર્થપ્રાપ્તિઃ અપ્રમાદવતશ્ચગુણઃઅત્રાપિ તાવેવ દોષગુણૌ કથ્યે  
તે इत्यनेन सम्बन्धेनायातस्येदमादिमસૂત્રम् ।

મૂલમ્—જઈળં મંતે ! સમણેળં જાવ સંપત્તેળં પંચમસ્સ  
પાયજ્ઞયણસ્સ અયમઢ્ઠે પન્નત્તે છઢ્ઢસ્સ ણં મંતે ! નાયજ્ઞ-  
યણસ્સ સમણેળં જાવ સંપત્તેળં કે અઢ્ઠે પન્નત્તે ?, એવં ચ્હલુ  
જંબૂ ! તેળં કાલેળં તેળં સમણં રાયગિહે સમોસરણં પરિસા  
નિગ્ગયા । તેળં કાલેળં તેળં સમણં સમણસ્સ જેઢ્ઠે અંતેવાસી  
ઈંદમૂર્હી અદૂરસામંતે જાવ ધમ્મજ્ઞાણોવગણં વિહરહ્ ॥સૂ.૦૧॥

### છઠા અધ્યયન કા પ્રારંભ-

પાંચવાં અધ્યયન સમ્પૂર્ણ હો ચુકા હૈ । અબ છઠા અધ્યયન પ્રારંભ  
હોતા હૈ । હસ કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સંબન્ધ હૈ કિ  
પાંચવે અધ્યયન મેં જો ઁસા કહા ગયા હૈ કિ પ્રમાદ યુક્ત અનગાર કો  
અનેક અનર્થોં કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ તથા જો પ્રમાદ સે રહિત હોતે હૈ ઉન્હેં  
અનેક ગુણોં કા લાભ હોતા હૈ સો હસ અધ્યયન દ્વારા ઉન્હોં દોષ ઔર  
ગુણોં કા કથન કિયા જાવેગા હસી સંબંધ કો લેકર યહ અધ્યયન પ્રારંભ  
હુઆ હૈ । હસ કા આદિ સૂત્ર યહ હૈ-( જઈળં મંતે ! સમણેળં ઇત્યાદિ ।

### છઠ્ઠા અધ્યયનનો પ્રારંભ-

પાંચમા અધ્યયન પછી આ છઠ્ઠું અધ્યયન પ્રારંભ થાય છે. પાંચમા  
અધ્યયનમાં આ પ્રમાણે નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું છે કે પ્રમાદિ અનગાર ઘણા  
અનર્થો મેળવે છે તેમજ જે આ પ્રમાદિ હોય છે તે ઘણા ગુણો પ્રાપ્ત કરે  
છે. તેા હવે આ અધ્યયનમાં તે ગુણો અને દોષોનું કથન વર્ણવવામાં આવશે.  
પાંચમા અધ્યયનની સાથે આ છઠ્ઠા અધ્યયનનો એ જ સંબંધ છે. આ સં-  
બંધને વિચારવાના ઉપક્રમથી જ આ અધ્યયન શરૂ થયું છે. છઠ્ઠા અધ્યયન  
નું પહેલું સૂત્ર આ છે.-જઈળં મંતે ! સમણેળં ઇત્યાદિ ।

टीकार्थ—‘जङ्घं भंते इत्यादि, यदि खलु भदन्त श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन पञ्चमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः षष्ठस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणं, परिषत् निर्गता, तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य ३ ज्येष्ठोऽन्तेवासी इन्द्रभूतिः अदूरसामन्ते जाव धर्मध्यानोपगतो विहरति ॥ सू० १ ॥

टीकार्थ—(भंते) हे भदन्त (जङ्घं) यदि (जाव संपत्तेण समणेणं) मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने (पंचमस्स णायज्झयणस्स) पांचवे ज्ञाताध्ययन का (अयमट्ठे पन्नत्ते) यह पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो (छट्ठस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने छठे ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है।

(एवं खलु जम्बू ! ) इस प्रकार जम्बू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उन से इस तरह कहते हैं कि हे जम्बू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—

(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं परिसा निगया) उस काल और उस समय में राजगृह नगर में भगवान् महावीर का आगमन हुआ। भगवान् के आगमन की बात सुनकर राजगृह नगर से परिषद उन को बंदना करने के लिये उनके समीप पहुँची (ते णं कालेणं तेणं समएणं) उक्तकाल और उस समय में (समणस्स जेट्ठे अन्तेवासीइ-

टीकार्थ—(भंते) हे भदन्त ! (जङ्घं) जे (जाव संपत्तेणं समणेणं) मुक्ति भेजवेला श्रमण भगवान् भट्टावीरे (पंचमस्स णायज्झयणस्स) पांचवा ज्ञाताध्ययनने (अयमट्ठे पन्नत्ते) आ पूर्वोक्त अर्थ निरूपित कर्था छे तो (छट्ठस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?) मुक्ति भेजवेला श्रमण भगवान् भट्टावीरे छट्ठा ज्ञाताध्ययनने सो अर्थ निरूपित कर्था छे ? (एवं खलु जम्बू ! ) जम्बू स्वामीना आगतना प्रश्नने सांख्यीने जवाब आपतां सुधर्मा स्वामी तेभने कहेवा लाज्या के छे जम्बू ! तभारा प्रश्न ने उत्तर सांख्यीने।

(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं परिसा निगया) ते काले आने ते सभये राजगृह नगरमां भगवान् भट्टावीरे पधायी। भगवान् भट्टावीरे स्वामीना आगमननी आणु अतां तेभने पद्वन करवा भाटे राजगृह नगरथी परिषद नीकणी (तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले आने ते पण्ठे (समणस्स जेट्ठे अन्तेवासी इदमूर्ई अदूरसावते जाव धम्मज्झाणोवगए



॥ श्रीकार्ये तत्तत्फलं स इन्द्रभूतिः जातश्रद्धः ॥ श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य  
एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण-अवादीत कथं खलु भवन्तः । जीवाः 'शुक्लवर्णः' 'शुक्लवर्णः'  
अधोगमनस्वभावकत्वं च लघुवर्णः लघुवर्णः-उच्चगमनस्वभावकत्वं ह्यव-  
मागच्छन् इत्यमगच्छन्ति = भगवान् महावीरस्यासौ इति प्रदर्शयति । परः  
समुत्तरमाह- 'गोयमा' इत्यादि । गौतमः । 'मे' अथ 'जहानामे' यथा-  
नामकः = यत्किंचिन्नामकः प्रकृतं महत् शुक्लं त्वं त्रिभिर्बुद्धि-विशेषैः निरूपय-  
तिरुपपन्नं = जातमिदं कृतविकाररहितम् । अविशेषणम् । अविदारितमित्यर्थः दम्भः =  
दाम्भान्ता । प्रसिद्धस्तुणविशेषः । कुशः । स्वनामविख्यातस्तुणविशेषः । वेष्टयति ।  
वेष्टयित्वा = मुचिकच्छेपेन । लिपिः । लिप्यति = लिपिं करोति । लिपित्वा । लिप्य-  
'उणे' । 'उणे' । 'सूर्यावपे' । 'हृदाति' = धारयति । शुक्लं सत् द्वितीयं रूपं = द्वितीयं

। तत्तत्फलं इन्द्रभूतिः जायते इत्यादि ॥ इन्द्रभूतिः तत्तत्  
॥ श्रीकार्ये-तत्तत्फलं । इनके बाद (से) इन्द्रभूति जायते । इन इन्द्रभूति-  
के जिन्हें प्रसुक्त ऊपर-अपूर्व श्रद्धा है (श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य) श्रमण  
भगवान् महावीर से इस प्रकार पूछा-कहण-अन्ते । जीवाः शुक्लवर्णः  
लघुवर्णस्तौ वा ह्यवमागच्छन्ति ) हे भदन्त जीव कैसे श्रीरी अधोगमनस्वभाव-  
कस्वभाव को और कैसे लघुस्वभाववाले उच्च गमन करने के स्वभाव  
को प्राप्त करते हैं । उनके इस प्रश्नका उत्तर भगवान् उद्योत-पूर्वक  
इस प्रकार देते हैं-  
(गोयमा) से जहानामे कह पुरसे एगे मह शुक्लं तुर्व निरुप-  
निरुपय दम्भेहि कुसेहि वेदेहि वेदितो मद्रियालेवेण लिपिः लिपितो  
(उणे दलपद) है गौतम । जैसे कोई पुरुष एक वही सी निरुपय जातादि

॥ श्रीकार्ये तत्तत्फलं इन्द्रभूतिः जायते इत्यादि ॥ इन्द्रभूतिः तत्तत्  
॥ श्रीकार्ये-तत्तत्फलं । इनके बाद (से) इन्द्रभूति जायते । इन इन्द्रभूति-  
के जिन्हें प्रसुक्त ऊपर-अपूर्व श्रद्धा है (श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य) श्रमण  
भगवान् महावीर से इस प्रकार पूछा-कहण-अन्ते । जीवाः शुक्लवर्णः  
लघुवर्णस्तौ वा ह्यवमागच्छन्ति ) हे भदन्त जीव कैसे श्रीरी अधोगमनस्वभाव-  
कस्वभाव को और कैसे लघुस्वभाववाले उच्च गमन करने के स्वभाव  
को प्राप्त करते हैं । उनके इस प्रश्नका उत्तर भगवान् उद्योत-पूर्वक  
इस प्रकार देते हैं-  
(गोयमा) से जहानामे कह पुरसे एगे मह शुक्लं तुर्व निरुप-  
निरुपय दम्भेहि कुसेहि वेदेहि वेदितो मद्रियालेवेण लिपिः लिपितो  
(उणे दलपद) है गौतम । जैसे कोई पुरुष एक वही सी निरुपय जातादि

વારમપિ દર્મૈશ્વ કુશૈશ્વ વેષ્ટયતિ, વેષ્ટયિત્વા મૃત્તિકાલેપેન લિમ્પતિ. । લિપ્ત્વા ઉષ્ણે દદાતિ, શુષ્કં સત્ તૃતીયમપિ=તૃતીયવારમપિ દર્મૈશ્વ કુશૈશ્વ વેષ્ટયતિ, વેષ્ટયિત્વા મૃત્તિકાલેપેન લિમ્પતિ. । एवं खलु ' एणुवाएणं ' एनेनोपायेन, अन्तरा=मध्ये, वेष्यन्, अन्तरा=मध्येन लेपयन्, अन्तरा=मध्ये शोपयन्, यावत् अष्टभिर्मृत्तिका-  
 लैपैः आलिम्यति=समन्ताद्धिप्तं करोति, 'अथाहं' अस्तावे=स्ताघं यावतिजले नांसिका न छुडति तावत् स्ताघं गाघं, स्ताघमिति नञ्समासः तस्मिन् अगाधे ऽति गम्भीरे इत्यर्थः, अथवा-'अथाह' अयं देशीशब्दः अगाधार्थकः, आर्षत्वात् सप्तम्यर्थे प्रथमा, 'अन्तरं' अतारे तरीतुमशक्ये, 'अपोरिसियंसि अपौरुषिके= पुरुषः प्रमाणमस्येति पौरुषिकं, न पौरुषिकमित्यपौरुषिकं तस्मिन् पुरुषप्रमाणाद-  
 धिके, पुरुषैरगाधे ' उदगंसि ' उदके=जले ' पक्खिवेज्जा ' प्रक्षिपति. ।

કૃતચિકાર રહિત, એસીપૂરી-૦કિ જો ફટી તુટી નહિં હૈ તુંથી કો દર્મી  
 સે ઓર કુશોં સે વેષ્ટિત કરતા હૈ, ઓર વેષ્ટિતકર ફિરઉસે મિટ્ટી કે  
 લેપ સે લપેટ દેતા હૈ-લપેટ કર ઉસે ધૂપ મે સુકાતા હૈ-( સુક્કં સમાણં  
 દોચ્ચંપિ દગ્મેહિય કુસેહિય- વેઢેહ, વેઢિત્તા મટ્ટિયાલેવેળાલિપહ, લિપિત્તા  
 ણહે સુક્કં સમાણં તચ્ચંપિ દગ્મેહિય કુસે હિય વેઢેહ, વેઢિત્તા  
 મટ્ટિયાલેવેળં લિપહ ) જાવ વહ અચ્છી તરહ શુષ્ક હો જાતી હૈ  
 તબ દુબારા મી વહ ઉસે દર્મ ઓર કુશોં સે પરિ વેષ્ટિત કરતા હૈ  
 ઓર પરિવેષ્ટિત કર કે ફિર ઉસ પર મિટ્ટી કા લેપ કરતા હૈ-  
 લેપકર પહિલે કી તરહ ફિર ઉસે ધૂપ મેં સૂઝને કે લિયે રખ દેતા  
 હૈ । સુઝ જાને પર ઉસે પુનઃ તૃતીય વાર દર્મ ઓર કુશોં સે વેષ્ટિત  
 કરતા હૈ । વેષ્ટિત કરકે ફિર ઉસ પર મિટ્ટી કા લેપ કરતા હૈ ( एवं  
 खलु एणु वाएणं अन्तरा वेढेमाणे अन्तरा लिपेमाणे अन्तरा सुक्कवे-  
 माणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिपह, अथाहमतारमपोरिसियंसि

રહિત વગર તૂટેલી તુંબીને હાલ તેમજ કુશથી વીંટી લે છે અને ત્યાર  
 બાદ માટીથી તેની આસપાસ લેપ કરે છે અને તેને તાપમાં  
 સુકાવે છે. ( સુક્કં સમાણં દોચ્ચંપિ દગ્મેહિય કુસેહિય વેઢેહ, વેઢિત્તા મટ્ટિયાલે  
 વેળાલિપહ, લિપિત્તા ણહે સુક્કં સમાણં તચ્ચંપિ દગ્મેહિય કુસેહિય વેઢેહ, વેઢિત્તા  
 મટ્ટિયાલેવેળં લિપહ ) બીજાં તુંબી સારી રીતે સુકાઈ બાદ ત્યારે  
 બીજી વખત પણ તેને હાલ અને કુશથી વીંટાળીને ફરી તેના ઉપર માટીનો  
 લેપ કરે છે. લેપ કર્યા બાદ તેને તાપમાં ચૂકે છે. આમ સુકાઈ ગયા બાદ  
 ત્રીજી વખત હાલ અને કુશથી વીંટાળીને માટીનો લેપ કરે છે. ( एवं खलु  
 एणुवाएणं अन्तरा वेढेमाणे अन्तरा लिपेमाणे अन्तरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहिं  
 मट्टियालेवेहिं आलिपह अथाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा ) आ

અથ=નૂન=નિશ્ચયેન ! તત્તુમ્બં તેપામષ્ટાનાં મૃત્તિકાલેપાનાં સમ્બન્ધાદ્ 'ગુરુ-  
યયા' 'ગુરુકતયા' 'મારિયયા' 'મારિકતયા' 'દર્મકુશમૃત્તિકાનાં' મારેણ મારા-  
ક્રાન્તાતયા, અતएव—'ગુરુયમારિયયા' 'ગુરુકમારિકતયા' ઉક્ત હેતુદ્વયસ્ય  
સદ્ભાવેન શીઘ્રનિમજ્જનસ્વભાવતા પ્રદર્શિતા ઉપરિ સલિલમતિવ્રજ્ય=અતિક્રમ્ય  
પરિત્યજ્ય અધો=નીચેઃ ધરણીતલપ્રતિષ્ઠાનં=પૃથ્વીતલં પ્રતિષ્ઠાનમાધારો યસ્ય તત્  
ભવતિ=શૂનિતલમાશ્રિત્ય તિષ્ઠતીત્યર્થઃ ।

एवमेव गौतम ! जीवा अपि प्राणातिपातेन यावद् मिथ्यादर्शनश्रवणेन आनु-  
पूर्या अष्टकर्मप्रकृतिः समर्जयन्ति, तासां गुरुकतया भारिकतया गुरुकभारिक-

उदगंसि पक्खिवेज्जा ) इस तरह के उपायसे बीच २ में वेष्टित कर  
बीच २ में लिपकर बीच २ में सुका कर जब आठ बार मिट्टी के लेप  
से उसे वह लिप्त कर चुकता है और बाद में उसे अगाध गहरे पानी  
में कि जो अतार तथा पुरुष प्रमाण से अधिक है डाल देता है ' अत्थाह '   
यह देशीय शब्द है और इसका अर्थ अगाध होता है ( से णूणं गोयमा  
से तुंवे तेसिं अट्ठण्हं मट्ठियालेवाणं गुरुयात्ताए मारियत्ताए गुरियमारि-  
यत्ताए उप्पिं सल्लिमइवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवइ ) तो  
निश्चय से हे गौतम ! वह तुंबी उन आठ बार के मिट्टी के लेपों के  
संबंध से गुरु हो जाने के कारण और ८ बार के दर्म कुशों के भार  
से वजन दार हो जाने के कारण जैसे शीघ्र ही ऊपर में पानी को  
छोड़ कर नीचे पानी के बैठ जाती है ( एवामेव गोयमा ! ) इसी  
तरह हे गौतम । ( जीवा वि पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं  
अणुपुक्खेणं अट्ठकम्म पगड्डीओ समज्जिणंति ) जीव भी प्राणातिपातया

પ્રમાણે તુંબીને આઠ વખત દાણ અને કુશોથી વીંટાળીને તથા આઠ વખત  
માટીને લેપ કરીને તાપમાં સુકવે છે ત્યાર બાદ તેને ઉડા ' અતાર ' તેમજ  
પુરુષ પ્રમાણ કરતાં વધારે ઘેરા પાણીમાં નાખીદે છે. ( અત્થાહ ) આ દેશીય  
શબ્દ છે અને તેનો અર્થ અગાધ હોય તે. ( સે ણૂણં ગોયમા ! સે તુંવે તેસિં  
અટ્ઠણ્હં મટ્ઠિયાલેવાણં ગુરુયાત્તાપ મારિયત્તાપ ગુરિયમારિયત્તાપ ઉપ્પિં સલ્લિમઇ  
વઇત્તા અહે ધરણિયલપઇટ્ઠાણે ભવઇ ) હે ગૌતમ ! પાણીમાં નાખેલી તે તુંબી  
આઠ વખત માટીના લેપથી ભારે થઇ જવાને કારણે તેમજ આઠ વખત દાણ  
તથા કુશના ભારથી ભારે થઇ જવાને લીધે પાણીમાં નાખતાની સાથે જ  
પાણીમાં નીચે જતી રહે છે અર્થાત્ ટૂંબી બન્ય છે. ( એવમેવ ગોયમા ! ) આ  
પ્રમાણે હે ગૌતમ ! ( જીવા વિ પાણાઇવાણં જાવ મિચ્છાદંસણસલ્લેણં  
અણુપુક્ખેણં અટ્ઠકમ્મપગડ્ડીઓ સમજ્જિણંતિ ) છવ પશુ પ્રાણાતિપાત યાવત્

તથા કાલમાસે કાલ કૃત્વા ધરણીતલમંતિકમ્ય અથો નરકતલમંતિકમ્ય અવતિ,  
નરકાદો<sup>૫</sup> પૂતંતીયથે<sup>૬</sup> એવં, ચલુ ગૌતમી<sup>૭</sup> જીવાં ગુરુત્વં<sup>૮</sup> હવ્યમાગચ્છતિ<sup>૯</sup> શીઘ્ર  
પ્રાપ્તુમ્ભવતિ<sup>૧૦</sup>, યસ્મિન્સમયે ધર્મણાતિપાતદિકં<sup>૧૧</sup> કુર્વન્તિ<sup>૧૨</sup>, તસ્મિન્નૈવ ક્ષમયે<sup>૧૩</sup> ગુરુત્વં<sup>૧૪</sup> પ્રા  
પ્તુમન્તીતિ<sup>૧૫</sup> હવ્ય શબ્દો<sup>૧૬</sup> યોતયતિ<sup>૧૭</sup> યા<sup>૧૮</sup> સૂંશમા<sup>૧૯</sup> ધરણી<sup>૨૦</sup> -<sup>૨૧</sup> તા<sup>૨૨</sup> જાનતઃ  
પૂર્ણમ-અહણ ગાયમા<sup>૨૩</sup> સે<sup>૨૪</sup> તુ<sup>૨૫</sup> તાસિ<sup>૨૬</sup> પદમિલ્લુગસિ<sup>૨૭</sup> મંદિ  
યાલેવંસિ<sup>૨૮</sup> તિન્નસિ<sup>૨૯</sup> કુહિયંસિ<sup>૩૦</sup> પરિસદ્ધિયસિ<sup>૩૧</sup> ઇસ<sup>૩૨</sup> ધરણિયલા<sup>૩૩</sup> ઓ  
ઉપ્પદ્ધતામં<sup>૩૪</sup> ચિદ્દહ<sup>૩૫</sup>, તપ્પાંતરા<sup>૩૬</sup> પાંચોચંસિ<sup>૩૭</sup> સદિયાલે<sup>૩૮</sup> જાવ  
ઉપ્પદ્ધતામં<sup>૩૯</sup> ચિદ્દહ<sup>૪૦</sup>, એવં ચલુ<sup>૪૧</sup> ધરણી<sup>૪૨</sup> ઉવાણી<sup>૪૩</sup> તેસુ<sup>૪૪</sup> અદ્દસુ<sup>૪૫</sup>

વત્ મિથ્યા દશાન શલ્ય સે ક્રમર કર અષ્ટકમી કો પ્રકૃતિયા કો ઉપા-  
જિત કરતે રહતે હૈ । અર્થાત્ વન સે વધતે રહતે હૈ- ( તાસિ ગુરુચાપે  
મારિચાપે ગુરુચાપે કાલમાસે કાલ કિચ્વા ધરણિયલ મદ્વદ્વતા  
અહ નરમતલપદ્ધના મવતિ, એવ ચલુ ગાયમા ) જીવાં ગુરુત્વં<sup>૮</sup> હવ્ય-  
માગચ્છતિ ) । વન પ્રકૃતિયા કો પોદ્ધાલિક હમકે કારણ ગુરુ ઓર મારી  
હોને સે યે ક્રમ વંધ વાલે જીવ મો ગુરુ ઓર મારી હો જાતે હૈ । સ-પલિયે  
વે કાલ માસ મે કાલ કરતે હૈ તવ ધરણિતલ કો અતિક્રમણ કર  
નીચે નરકતલ મે પ્રતિષ્ઠિત હોજાતે હૈ ।

હસ તરહ હૈ ગૌતમ । જીવ જિસ સમય પ્રાણાતિપાત આદિ કમી કો  
કારતે હૈ ડસી સમય મે વે ગુરુત્વ અવસ્થા કો પ્રાપ્તહો જાતે હૈ યદ્વદ્વાત  
હવ્ય શબ્દ સે યોજિત હોતો હૈ । સૂચ

પ્રતિષ્ઠાપ્તિ ન શલ્યથી, હસ પૂર્વક આઠ કમોની પ્રકૃતિઓનું ઉપાજન કરતા રહે  
છે. એટલે કે આઠ કમોથી એવ બધાતા બધ છે (તાસિ ગુરુચાપે-મારિચાપે-  
ગુરુચાપે, કાલમાસે કાલ કિચ્વા ધરણિયલમદ્વદ્વતા અહ નરમતલપદ્ધના  
મવતિ એવ ચલુ ગાયમા ) જીવાં ગુરુત્વં હવ્યમાગચ્છતિ તે જોનાવરણાદિક કમો  
ની પ્રકૃતિઓ પોદ્ધાલિક છે, ગુરુ તેમજ ઓર છે, એટલો મોટો તેમજથી  
ઓ ક્રમે બધવાળો એવા પશુ ગુરુ તેમજ ઓર થઈ બધ્ય છે. અર્થાત્  
કાલમાસે કાલ કરતે છે ત્યારે પૂર્વાતુ અતિક્રમણ કરીને તાપણજ  
એવા કાળ માસમાં કાળ કરે છે ( હાપ ગણદ હસ નેહ જાદ મદ્દ  
તેરક તપમા અવસ્થિત થઈ બધ્ય છે. હાપ ગણદ મરિમ તપમા થાપ  
ઓ પ્રમાણે હૈ ગૌતમ । એવ ચારે પ્રાણાતિપાત વગેરે કમો કરે છે તે  
પ્રમાણે જાતે એવા ગુરુચાપે અવસ્થા મેળવે છે આવા કમો શાપ્થ  
પ્રાણાતિપાતે હોય છે । તપમા ગણદ તપમા ( કાળક્રમણ તિથિવિગમન કાળક્રમણ





ત્યં સ્વલુ તિષ્ઠતિ, एवं स्वलु एतेन उपायेन तेषु अष्टसु मृत्कालेषु स्तिमितेषु यावत् विमुक्तबंधने सति-अधो धरणीतलमतिव्रज्य=उत्पत्य उपरि सलिलतलमति-  
ष्ठानं भवति ।

एवमेव गौतम ! जीवाः प्राणातिपातविरमणेन यावत् मिथ्यादर्शनशल्य-  
विरमणेन आनुपूर्व्यां अष्टकर्मप्रकृतिः क्षपयित्वा गगनतलमुत्पत्य उपरि लोकाग्रे  
प्रतिष्ठानाः सिद्धस्वरूपावस्थिता भवन्ति । एवं स्वलु गौतम ! जीवा लघुकत्वं

एवं स्वलु एएणं उवाएणं तेसु अट्टसु મદિયાલેવેસુ તિન્નેસુ જાવ વિમુક્ક  
બંધને અહે ધરણિયલમહવહ્તા ઉર્પિ સલિલતલપહ્દાણે ઓવહ )  
इसी तरह द्वितीय मिट्टी का लेप जब गीला होकर नष्ट हो जाता है  
परिशदित (सुख) जाता है तब वह तुंबी पहिले की अपेक्षा और  
कुछ वहां से ऊंची उठ जाती है । इसी तरह होते २ जब उस तुंबी के  
दो आठों ही लेप गीले कूथित एवं परिशदित हो जाते हैं तब वह तुंबी  
बिलकुल धरितल से उठकर ऊपर पानी में आ जाती है (एवामेव  
गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं  
अणुपुब्बेणं अट्ट कम्मपगड़ीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइता उर्पि लोयग-  
पइद्दाणा भवन्ति ) इसी तरह हे गौतम ! जीव प्राणातिपात के विरमण से  
यावन् मिथ्यादर्शन शल्य के विरमण से क्रमशः अष्ट कर्मों की  
प्रवृत्तियों को नष्ट कर ऊपर की ओर गगनतल में उठ कर लोक के  
अग्रभागमें सिद्ध स्वरूप से अवस्थित हो जाता है ।

જાવ ઉપ્પાદ્ધતાણં ચિદ્દુઃ एवं स्वलु एएणं उवाएणं तेसु अट्टसु मदियालेवेसु  
तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधने अहे धरणियल महवहत्ता उर्पि सलिलतल पइद्दाणे  
भवइ ) आ रीते तुंभडीना उपरनेओ ओओ वप्पतनेओ लेपपणु बीनेओ थधनेओ-  
गणी नय छे, नष्ट थध नय छे अने परिशदित थध नय छे त्यारे ते पडेका  
करतां पाणीमां क'एक थोडी वधारे उपर आवी नय छे. आथ तुंभडीना आठे  
आठ लेप बीना थधनेओ गणी नय छे त्यारे तुंभडी पोतानी भेजे ओ  
पाणीनी उपर तरसा भांटे छे. ( एवामेव गोयमा ! जीवा पाणाइवायवेरमणे  
णं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणुं पुब्बेणं अट्ट कम्म पगड़ीओ खवेत्ता  
गगणतलमुप्पइता उर्पिलोयगपइद्दाणा भवन्ति )

આ પ્રમાણે જ હે ગૌતમ ! જીવ પ્રાણાતિપાત ના વિરમણથી યાવત  
મિથ્યા દર્શન શલ્યના વિરમણથી અનુક્રમે આઠ કર્મોની પ્રકૃતિઓના નાશ  
કરી ને ઉપર ગગનતલમાં પહોંચીને લોકના અગ્ર ભાગમાં સિદ્ધ સ્વરૂપથી  
અવસ્થિત થાય છે.

હૃદયમાગच्छन्ति शीघ्रं प्राप्नुवन्ति, अस्मिन्नेव समये कर्मक्षये प्रवृत्ता भवन्ति तस्मिन्नेव समये लघुकत्वं प्राप्नुवन्तीत्यर्थः ।

एवं खलु जम्बूः श्रमणेन भगवता महावीरेण षष्ठस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति ब्रवीमि, शेषं सुगमम् ॥ सू० ३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितकलितक-  
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछ-  
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-  
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाह-  
व्रतिविरचितायां ‘ज्ञातार्धर्मकथाङ्ग’ सूत्रस्यानगारधर्मामृतव-  
र्षिण्याख्यायां व्याख्यायां षष्ठमध्ययनं संपूर्णम् ॥ ६ ॥

( एवं खलુ ગોયમા ! જી શાલહુયસં હવ્વ માગછંતિ-એવં જલુ જંબૂ !  
સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં છટ્ઠસ નાયજ્ઞયણસસ અયમઢ્ઠે પન્નસે  
ત્તિવેમિ ॥ ૩ ॥ ૐસ તરહ હે ગૌતમ ! જિવ ઉર્ધ્વં ગમન સ્વભાવ કો શીઘ્ર  
પ્રાપ્ત કર છેતે હૈં-અર્થાત્ વે જિસ સમય કર્મક્ષય કરને મેં પ્રવૃત્ત હોતે  
હૈં ઉસી સમય મેં વે લઘુકત્વ સ્વભાવ કો પ્રાપ્ત હો જાતે હૈં । ૐસ પ્રકાર  
હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને છટે અધ્યયનકા યહ અર્થ કહા હૈં । સૂ. ૩ ।

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાહજી મહારાજ કૃત “જ્ઞાતા-  
ધર્મકથાંગસૂત્ર કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા છટ્ટા  
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૬ ॥

( એવં જલુ ગોયમા ! જીવા લહુયસં હવ્વમાગછંતિ-એવં જલુ જંબૂ !  
સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં છટ્ઠસ નાયજ્ઞયણસસ અયમઢ્ઠે પન્નવે ત્તિવેમિ । ૩ ।  
આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! ૐવ ઉર્ધ્વં ગમનવાળા સ્વભાવને તરત જ મેળવી  
લે છે એટલે કે બ્યારે ૐવ કમોના નાશ માટે પ્રવૃત્ત થાય છે, ત્યારે જ  
તે લઘુકત્વ સ્વભાવને મેળવે છે હે જંબૂ આમ ભગવાન મહાવીરે છક્કા અ-  
ધ્યયનનો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘાસીલાહજી મહારાજકૃત જ્ઞાતાર્ધર્મકથાંગ  
સૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું છટ્ટું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૬॥

## અથ સપ્તમમધ્યયનં પ્રારમ્ભયતે—

ગતં પઠમમધ્યયનમ્ સામ્પતં સપ્તમમારમ્ભયતેઽસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિસમ્બન્ધઃ  
 હાનન્તરાધ્યયને પ્રાણાતિપાતાદિ ક્રિયાવતાં કર્મગુરુતા પ્રોક્તા, તદભિજ્ઞાનાં કર્મ  
 લઘુતા તત્તત્ત્વનાર્થપ્રાપ્તિરુપોઽર્થઃ : इह तु प्राणातिपातादि विरति स्खलितसं  
 क्षकाणामनर्थप्राप्तिः प्रोच्येते । तत्राद्यं सूत्रमाह—

મૂલમ્—જઈળં મંતે ! સમળેળં જાવ સંપત્તેળં હઢ્ઢસ્સ નાય.  
 જ્ઞયણસ્સ અયમટ્ટે પન્નત્તે સત્તમસ્સ ણં મંતે ! નાયજ્ઞયણસ્સ  
 કે અટ્ટે પન્નત્તે ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समणं  
 रायगिहे नाम नयरे होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, तत्थणं राय-

### સાતર્વા અધ્યયન પ્રારમ્ભ—

છઠા અધ્યયન સમ્પૂર્ણ હો ચુકા—અથ સાતર્વા અધ્યયન પ્રારંભ હોતા  
 હૈ । इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबन्ध है—  
 छठे अध्ययन में प्राणातिपात आदि करनेवाले प्राणियों में कर्म गुस्ता  
 कही गई है और नहीं करने वालों में कर्मलघुता कही गई है—तथा इन  
 दोनों का फल क्रमशः अनर्थ एवं अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है । अब  
 इस अध्ययन में यह कहा जावेगा कि जो प्राणानिपात आदि से  
 विरति धारण करके भी उससे स्खलित हो जाते हैं वे जीवअनर्थ पर-  
 परा को भोगते हैं और जो उसकी रक्षा करते हैं वे अभीष्ट-इच्छित  
 अर्थ को प्राप्त कर लेते हैं ।

### સાતર્ણુ અધ્યયન પ્રારંભ.

છઠ્ઠા અધ્યયન બાદ હવે સાતર્ણુ અધ્યયન શરૂ થાય છે. સાતમા અધ્ય-  
 યનનો છઠ્ઠા અધ્યયનની સાથે સંબંધ આ પ્રમાણે છે. છઠ્ઠા અધ્યયન માં  
 પ્રાણુતિપાત વગેરે કરનાર પ્રાણીઓમાં કર્મની શુદ્ધતા કહેવામાં આવી છે અને  
 પ્રાણુતિપાત નહિ કરનાર પ્રાણીઓમાં કર્મની લઘુતા કહેવામાં આવી છે.  
 તેમજ અનુક્રમે આ બંનેનું ફળ યોટલે કે અનર્થ અને અર્થની પ્રાપ્તિ થવી  
 આ વિષે કહેવામાં આવ્યું છે હવે સાતમા અધ્યયનમાં કહેવામાં આવશે કે  
 જે પ્રાણુતિપાત વગેરેથી વિરતિ ધારણ કરવા છતાં તેનાથી સ્ખલિત થઈ બાધ  
 છે, તે જીવો અનર્થપરંપરા જોને ભોગવે છે અને જે જીવો તેની રક્ષા  
 કરે છે તેઓ અબીષ્ટ-મનઃમતા યોટલે કે ઇચ્છિત અર્થ ને મેળવે છે.

गिहे नयरे धण्णे नामं सत्थवाहे परिवसइ० अट्ठे० भद्दा भारिया  
अहीण पंचेदिय० जाव सुरूवा तस्स णं धणणस्स सत्थवाहस्स  
पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था  
तं जहा—धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिणए तस्स णं ध-  
णणस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ  
होत्था, तं जहा—उज्झिया भोगवइया रक्खइया रोहिणिया॥सू०१॥

टीका—‘जइणं भंते’ इत्यादि—अथ जम्बूस्वामी पृच्छति हे भदन्त ! यदि  
खलु श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मुक्तिसंप्राप्तेन षष्ठस्य ज्ञाताध्ययनस्याय-  
मर्थः प्रज्ञप्तः, हे भदन्त ! समस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एवं जम्बू  
स्वामिना प्रश्ने कृते सति सुधर्मास्वामी प्राह एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन्

‘जइणं भंते ! समणेणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइणं भंते ! ) जंबूस्वामी पूछते हैं कि हे भदन्त ! (समणेणं  
जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स णं  
भंते नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ) श्रमण भगवान् महावीर ने  
जो मुक्ति को प्राप्त हो चुके हैं छट्ठे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ  
प्ररूपित किया है तो हे भदन्त ! समस ज्ञाताध्ययन का उन्होंने क्या  
अर्थ प्ररूपित किया है ? (एवं खलु जंबू ! ) इसका उत्तर देते हुए श्री  
सुधर्मा स्वामी जंबूस्वामी से कहते हैं कि हे जंबू ! सुनो श्रमण भगवान्  
महावीर ने जो सातवें ज्ञाताध्ययन का अर्थ प्ररूपित किया है— वह इस  
प्रकार है ( तेणं कालेणं तेणं समएणं ) उस काल और उस समय

‘जइणं भंते ! समणेणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइणं भंते ! ) जंबू स्वामी प्रश्न पूछे छे के छे लक्ष्ज ! (समणेणं  
जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स णं भंते नायज्झ-  
यणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ) मुक्ति पाभेला श्रमण भगवान् महावीर छट्ठे  
ज्ञाताध्ययननो अर्थ पूर्वोक्त रीते रज्जु कथा छे त्यारे छे लक्ष्ज ! तेज्जोश्रीज्जो  
सातमा ज्ञाताध्ययननो सो अर्थ प्ररूपित कथो छे ? (एवं खलु जंबू ! ) आ  
प्रश्नो उत्तर आपतां श्री सुधर्मा स्वामी तेभने कडेवा लाज्जा के छे जंबू !  
सांभणे ! श्रमण भगवान् महावीर सातमा ज्ञाताध्ययननो अर्थ आ प्रभाण्णे

સમયે રાજગૃહં નામ નગરમાસીત્, નગરસ્ય વહિઃ સુભૂમિભાગં નામકમુદ્યાનં 'તત્થ ણં' તત્ર સ્વલુ રાજગૃહે નગરે ધન્યનામા સાર્થવાહઃ પરિવસતિસ્મ સ કીદ્દશઃ, 'અદ્દુ' આદયઃ बहुधनधान्य समृद्धः, तस्य भद्रानाम्नी भार्या, सा किं भूता ? अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरा 'जाव सुरुवा' इह यावत्तरणादिदं ज्ञातव्यं 'लक्खण-वंजण गुणोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगा, सत्ति.सोमा-कारा कंता पियदंसणा सुरुवा' इति एतानि पदानि व्याख्यातपूर्वाणि 'तस्स णं' 'तस्य स्वलु धन्यस्य सार्थवाहस्य पुत्राः भद्रायाः भार्यायाः 'अत्तया' आत्मजा अङ्गजा-निजकुक्षिसंभवा इत्यर्थः चत्वारः सार्थवाहदारका आसन्, तद् यथा

મેં ( રાયગિહે નામ નયરે હોત્યા ) રાજગૃહ નામ કા નગર થા ( સુભૂમિ-ભાગે ઉડ્ડજાણે ) વહાં બાહિર મેં એક સુભૂમિ ભાગ નામ કા ઉદ્યાન થા । ( તત્થ ણં રાયગિહે ધણે નામં સત્થવાહે પરિવસદ્ ) ઉસ રાજગૃહ મેં ધન્ય નામ કા સાર્થવાહ રહતા થા । ( અદ્દુમહા ભારિયા, અહીન પચે દિયં જાવ સુરુવા ) યહ બહુત અધિક ધન ધાન્ય સે સમૃદ્ધ થા । હસકી ભદ્રાનામ કી ભાર્યા થી ।

હસકા શરીર અહીન પંચેન્દ્રિયોં સે પરિપૂર્ણ થા । સુન્દર અંગવાલી થી । " યાવત્ શબ્દસે " લક્ષણવંજણ ગુણોવવેયા, માણુમ્માણપમાણ-પડિપુણ-સુજાય-સવ્વંગ સુન્દરંગા, સત્તિસોમાકારા, કંતા પિયદંસણા સુરુવા " હસ પાઠકા સંગ્રહ ક્રિયા ગયા હૈ

કોઈં બાર પહિલે હન પદો કા અર્થ લિલ્લા જા ચુકા હૈ । ( તસ્સણં ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ પુત્તા મદ્દાપ્પ ભારિયાપ્પ અત્તયા ચત્તારિ સત્થવાહ દારયાં હોત્યા ) ઉસ ધન્ય સાર્થવાહ કે મદ્રાભાર્યા કી કુક્ષી સે ઉત્પન્ન

નિરૂપિત કર્યો છે. ( તેણંકાલેણં તેણં સમણ ) તે કાણે અને તે સમયે ( રાયગિહે નામ નગરે હોત્યા ) રાજગૃહ નામે નગર હતું ( સુભૂમિભાગે ઉડ્ડજાણે ) તે નગરની બહાર સુભૂમિભાગ નામે એક ઉદ્યાન હતું ( તત્થ ણં રાયગિહે ધણેનામં સત્થવાહે પરિવસદ્ ) રાજગૃહ નગરમાં ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો. ( અદ્દુમે મદ્દા ભારિયા અહીન પચેદિય. જાવ સુરુવા ) તે ઘણો જ ધન ધાન્યથી સમૃદ્ધ હતો. ભદ્રા નામે તેની પત્ની હતી. તેનું શરીર અહીન પંચેન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ હતું તે સુન્દર અંગવાળી હતી. 'યાવત્' શબ્દથી અહીં ( લક્ષણવંજણગુણોવવેયા, માણુમ્માણપમાણપડિપુણસુજાયસવ્વંગસુન્દરંગા, સત્તિસોમાકારા, કંતા પિયદંસણા સુરુવા ) આ પાઠને સંગ્રહ થયો છે. આ પદોને પહેલાં ઘણી વખત અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. ( તસ્સણં ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ પુત્તા મદ્દાપ્પ ભારિયાપ્પ અત્તયા ચત્તારિ સત્થવાહદારયાં હોત્યા ) ધન્ય સાર્થવાહને ભદ્રા ભાર્યાના ઉદર જન્મ પામેલાં ચાર સાર્થવાહ દારકા-પુત્ર-હતા.

१ धनपालः, २ धनदेवः, ३ धनगोपः, धनरक्षितश्चेति । तस्य खलु धन्यसार्थवाह-  
स्य चतुर्णां पुत्राणां भार्याश्चतस्रः स्नुषाः—पुत्रवच्चः बभूवुः तद्यथा— १ उज्जिता,  
२ भोगवतिका, ३ रक्षिता, ४ रोहिणिकाचः ॥ सू. १ ॥

मूलम्—तएणं तस्स धणस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्ताव-  
रत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं  
खलु अहं रायगिहे बहूणं ईसर जाव पबिभिईणं सयस्स कुडुंबस्स  
बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्जेसुय  
रहस्सेसुय निच्छप्पसुय ववहारे सुय आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छ-  
णिज्जे मेढीपमाणे आहारे आलंबणे चक्खुमेढीभूए जाव सव्व  
कज्जवड्ढावए तंणज्जइ जंमए गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा  
भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थं  
सि वा विप्पवासियंसि वा इम्मस्स कुटुंबस्स किं मन्ने आहारे वा

हृए चार सार्थवाह दारक-पुत्र-ये ( तं जहा ) उनके नाम ये हैं—( धण-  
पाले, धणदेवे धणगोवे धणरक्षिणए ) धनपाल, धनदेव, धनगोप, धन-  
रक्षित ( तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चऊण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि  
सुण्हाओ होत्था ) उस धन्य सार्थवाह को उन चारपुत्रों की भार्याएं पुत्र  
वधुएं—थी ( तंजहा—उज्जिता, भोगवइया, रक्खइया, रोहिणिया ) धन-  
पालपुत्र की भार्या उज्जिताथी १ धनदेवकी भार्या भोगवतिका थी २, धन-  
गोपकी भार्या रक्षिताथी ३, धनरक्षित की भार्या रोहिणिकाथी ४ ॥ सू. १ ॥

( तं जहा ) तेभना नामे आ प्रभाछे छे—( धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्षि-  
णए ) धनपाल, धनदेव, धनगोप अने धनरक्षितः । ( तस्सणं धणस्स सत्थवा  
हस्स च उण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था ) धन्य सार्थवाहना  
आ आरे पुत्रोने भार्याओ હતી । ( तं જહા ઉજ્જિયા ભોગવડિયા, રક્ખડિયા,  
રોહિણિયા ) ધનપાળની ભાર્યો ઉજ્જિતા હતી ૧, ધનદેવની ભાર્યો ભોગવતિકા  
હતી, ૨, ધનગોપની ભાર્યો રક્ષિતા હતી ૩, ધનરક્ષિતની ભાર્યો રોહિણિકા  
હતી ૪, ॥ સૂ. ૧ ॥

आलंबे वा पडिबन्धे वा भविस्सइ ? तं सेयं खलु मम कल्लं जाव  
जलंते विउलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तणाइ० चउण्हं  
सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्तणाइ णियगसयण०  
य चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं विउलेणं असणं ४ धुवपुप्फ  
वत्थ गंधजाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्हं  
य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिरक्ख-  
णट्ठयाए पंच२ सालि अक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किण्हं  
वा सारक्खेइ वा संगोवेइ वा संवड्ढेइ वा ? ॥ सू० २ ॥

टीका- 'तपणं तस्स' इत्यादि- ततस्तदनन्तरं खलु तस्य धन्यसार्थवा-  
हस्य अन्यदा कदाचित् 'पुत्रवत्तावरत्तकालसमयसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये  
कुटुम्बजागरणं कुर्वतो 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूपः 'अज्झस्थिए' आध्यात्मिकः  
आन्तरोपायसाध्यसुखदुःखादिरूपः यावत्संकल्पः 'मुप्पज्जित्या' समुदपद्यत  
'एवं' अमुना प्रकारेण खलु 'निश्चयेन अहं राजगृहे नगरे बहूनां 'ईसर'

‘ तएणं तस्स भणणस्स ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स घण्णस्स, उस घन्य सार्थवाह को (अभया कथाहं) किसीएक समय (पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि) मध्यरात्रि के समय में जब कि वह कुटुंब जागरणासे जगरहा था (इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार का यह आध्यात्मिक—आंतर उपाय साध्या सुख दुःखदिरूप यावत् संकल्प उत्पन्नहुवा (एवं खलु अहं रायगिहे बहूणं, ईसर जाव पव्वमईणं सयस्स

‘ तपणं तस्स धणस्स ’ इत्यादि !

ટીકાથા—(તણ') ત્યાર બાદ (તસ્ત ઘણત્સ) ધન્ય સાર્થવાહને (અજ્યા કયાઈ) કોઈ વખતે (પુનરાવારત્તકાઠમયસિ) અડધી રાત્રિના સમયે જ્યારે તે કુટુંબ બાંધરણ કરતું હતું. (દ્યેયારુએ અજ્ઞથિપ જાવ સમુપ્પજિત્યા) ત્યારે આ જાતનો આધ્યાત્મિક એટલે કે આંતરિક ઉપાયથી સાધ્ય સુખદુઃખ વગેરે રૂપ યાવત સંકલ્પ ઉદભવ્યો—(પવં ચલુ અહં રાયગિદે વહૂવં) હૈસર

ઈશ્વરા:-એ શ્વરસમ્પન્ના: ' જાવપદ્મર્દ્દન ' યાવત્ શબ્દેન ' તલવરમાહંધિય કોડું-  
વિયદ્મ સેટ્ટસેનાઈસથવાહ ' એતેનાં સંગ્રહઃ, તેન તલવરમાહંધિયકોડુંમ્બકેમ્ય-  
ઐષ્ટિસેનાપતિ સાર્થવાહપ્રમુતીનાં ' સયસ્સ ' સ્વકસ્ય-નિજસ્ય કુટુમ્બસ્ય વહુષુ  
' કજ્જેસુ ' કાર્યેષુ-પ્રયોજનેષુચ પુનઃ ' કારણેસુ ' કારણેષુ-કાર્યજાતસમ્પાદક  
હેતુષુચ, ' કુહુંવેસુ ' કુટુમ્બેષુ બાન્ધવેષુ ચ ' મંતેસુ ' મન્ત્રેષુ-કર્તવ્ય નિશ્ચયાથં  
ગુપ્તવિચારેષુ ચ ' ગુહ્યેસુ ' ગુહ્યેષુ-લજ્જાયા ગોપનીયવ્યવહારેષુ ચ ' રહસ્યેસુ '  
રહસ્યેષુ-પ્રચ્છન્ન વ્યવહારેષુચ ' નિચ્છેસુ ' નિશ્ચયેષુ-પૂર્ણ નિર્ણયેષુ ચ ' વવહારેસુ '  
વ્યવહારેષુચ બાન્ધવાદિ સમાચરિતલોકવિપરીતાદિ ક્રિયા પ્રાયશ્ચિત્તેષુ અત્ર ચકારાઃ  
સમુચ્ચયાર્થ કાઃ એતેષુ વિષયેષુ ' આપુચ્છણિજ્જે ' આપચ્છનીયઃ-ઈત્તપ્રાદુંયોગ્યઃ એકવાર  
મિત્યર્થઃ ' પહિપુચ્છણિજ્જે ' પરિપ્રચ્છનીયઃ સર્વતો માદેન પ્રવટ્ઠવ્યઃ । મેઢી' મેધિઃ  
બ્રીહિયવાદિકળમર્દનાર્થં પથુવન્નનસ્તમ્મઃ, તત્સાદૃશ્યાદયમપિ મેધિઃ-મેધિરૂપઃ,

કુહુંબસ્સ વહુસુ કજ્જેસુ ચ કારણે સુ ચ, કુહુંવે સુ ચ, મંતેસુ ચ, ગુહ્યે  
રહસ્યે નિચ્છે, વવહારે સુ ચ, આપુચ્છણિજ્જે પહિપુચ્છણિજ્જે, મેઢીપ  
માણે આહારે, આલંબણે ) મેં રાજગૃહ નગર મે અનેક એશ્વર્યશાલી  
તલવર, માહંધિક કૌટુબિક દ્વિમ્ય, ઐષ્ટી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ આદિજનો  
કે તથા અપને નિજ કુટુમ્બકે પ્રયોજની ભૂત કાર્યોં મે, કાર્યોં કે સાધન  
ભૂત કારણોં મેં બન્ધુજનોં કે કર્તવ્ય કો નિશ્ચય કરને કે લિયે પ્રવૃત્ત  
ગુપ્તવિચારોં મેં લજ્જાવદ્ધા ગોપનીય વ્યવહારોં મેં-પ્રચ્છન્નવ્યવહારોં મેં-  
પૂર્ણનિર્ણયોં મેં, બાન્ધવાદિજનો દ્વારા સમાચરિત લોક વિરુદ્ધાદિકાર્યોં  
કે પ્રાયશ્ચિત્તોં મેં અર્થાત્ જન સ્વ વિષયોં મેં પૂછા જાતા હૈ, એ સ્વલોગ  
મેરી અચ્છી તરહસે સલાહ લેતે હૈં । મેં જન સ્વ કે લિયે મેધી રૂપ હૂં

જાવ પદ્મર્દ્દન' સયસ્સ કુહુંબસ્સ વહુસુ કજ્જેસુ ચ કારણેસુચ, કુહુંવેસુ ચ,  
મંતેસુચ, ગુહ્યે રહસ્યે નિચ્છે વવહારેસુચ, આપુચ્છણિજ્જે પહિપુચ્છણિજ્જે, મેઢીપમાણે  
આહારે આલંબણે ) રાજગૃહ નગરમા હું ધણુ ઐશ્વર્યશાળી, તલવર, માહં-  
ધિક, કૌટુબિક, દ્વિમ્ય, ઐષ્ટી, સેનાપતિ, સાર્થવાહ વગેરેના તેમજ પોતાના  
કુટુંબનાં જ ખાસ કામોમાં, કાર્યોના સાધન ભૂત કારણોમાં સગાં વહાલાંના  
કર્તવ્યોના નિશ્ચય માટે ની ગુપ્ત મંત્રણાઓમાં છુપાવવા ચોગ્ય લક્ષ્યભરી  
સંબંધિત ગોપનીય કાર્યોમાં-પ્રચ્છન્ન વ્યવહારોમાં-પૂછું નીણુઓમાં, સગાં  
સંબંધીઓ વડે આચારથી વિરુદ્ધ અનાચરણીય કરવામાં આવેલા કાર્યોમાં  
ની પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિમાં-એટલે કે આ બધી સામાજિકરાજનીતિક અને ધાર્મિક  
બાબતોમાં બધા મને પૂછે છે. બધા માણસો મારી સલાહ લે છે. આ બધા  
લોકો માટે હું મેધી રૂપ છું, પ્રમાણ રૂપ છું. અનાજ વગેરેની હાદણી માટે



અર્થાદેતદવલમ્બનૈવ સર્વસ્યાપિ કુદુમ્બસ્થાવસ્થાનમ્ 'પમાણે' પ્રમાણમ્ પ્રત્યક્ષાદિ પ્રમાણવદ્ વસ્તુતત્વપ્રતિબોધકઃ 'આહારે' આધારઃ—આધારવત્ કુદુમ્બાદીનામાશ્રયઃ 'આલંબણે' આલમ્બનં રજ્જાદિવત્ ત્રિપદગર્તપત્તજ્જનોદ્ધારકતયાઽવલમ્બનમ્. 'ચક્ષુ' ચક્ષુઃ નેત્રં તદ્વત્ સકલાર્થપ્રદર્શકઃ, યદુક્તં (મેધિઃ પ્રમાણમાધારઃ આલમ્બનં ચક્ષુરિતિ) 'તદેવ સ્પષ્ટવોધાર્થમૌપમ્યવાચિભૂતશબ્દસંમેલનેન પુનરાવર્તયતિ મેધિભૂતઃ' इत्यादि, यावदिति — यावच्छब्देन (પમાણભૂષ આહારભૂષ આલંબણભૂષ ચક્ષુભૂષ) इत्येषां संग्रहो बोध्यः अर्थतः पुनरुक्तिदोष वारणं तु पूर्वत्र मेधिरिति आरोपित मेधित्ववानित्याद्यर्थेन बोध्यम् । सव्वकज्जवङ्कावए 'सर्व कार्यवर्धकः— सर्वेषा कार्याणां, वर्धकः=सम्पादकोऽस्मि. 'तं' तद्

પ્રમાણરૂપ હું । યીહિ કવ આદિકે કળોં કો મર્દન કરને કે લિયે પશુ જિસ સ્તંભ મેં બાંધે જાતે હેં ઉસકા નામ મેધી હૈ । મેધી કે સહારે સે જિસ તરહ પશુઓં કા અવસ્થાન રહતા હૈ ઉસી તરહ ઉસકે સહારે સે સમસ્ત કુટુંબકા અવસ્થાન થા ફાલિયે ફસે મેધીરૂપ કહા ગયા હૈ । પ્રત્યક્ષ આદિ પ્રમાણ જૈસે વસ્તુતત્વ કે પ્રતિબોધક હોતે હેં ઉસી તરહ યહ બી સવ કે લિયે વસ્તુ કા વાસ્તવિક સ્વરૂપ સમજા દિયા કરતાં થા અતઃ ફસે પ્રમાણ રૂપ પ્રકટકિયા હૈ । મેં હી કુદુમ્બ આદિકા આશ્રય મૂલ હ, રજ્જવાદિક કી તરહ વિપત્તિરૂપ જલ્ડે મેં પતિત જનો કા ઉદ્ધારક હોનેકે કારણ મેં ઉનકા અવલંબન રૂપહું ।

ચક્ષુ જિસ પ્રકાર સામને કે પદાર્થ કા ચર્થ પ્રકાશન કરતા હૈ ઉસી તરહ યહ બી મનુષ્યોં કો રાય લેને પર વાસ્તવિક વસ્તુ કે રહસ્ય સે પરિચિત્ત કરા દેતા થા । અતઃ ફસે યહાં ચક્ષુરૂપ કહા ગયા હૈ ફસીલિયે (ચક્ષુ મેધીમૂષ જાવ સવ્વકજ્જવઙ્કાવ) મેધિ પ્રમાણ,

બળદો જે થાંભલાને બાંધવામાં આવે છે. તેનું નામ મેધી છે મેધી જેમ પશુઓને માટે ખાસ કેન્દ્રરૂપમાં રહેલો આધાર હોય છે તેમજ તેપણ બધાને માટે મેધી રૂપ હોતો પ્રત્યક્ષ વજેરે પ્રમાણો જેમ વસ્તુના તત્ત્વને બતાવનારા હોય છે તેમજ ધન્યસંચવાહ પણ બધાને દરેકે દરેક વસ્તુનું સાચું સ્વરૂપ સમજાવતો હોતો. તેથી તેને પ્રમાણ કહ્યો છે. કુટુંબનો હું જ આશરો છું. હું જ ઉંડા ખાણમાં પડેલા માણસોનો દોરીની જેમ ઉદ્ધારક છું એથી હું તેમના માટે અવલંબન (આધાર) રૂપ છું ચક્ષુ જેમ સામેની વસ્તુને પ્રકાશિત કરે છે. તેમજ તે પણ સલાહ માટે આવેલા માણસોને વસ્તુના સાચા રહસ્યથી વાકેફ કરતો હોતો. એટલા માટે જ (ચક્ષુમેધીમૂષ જાવ સવ્વકજ્જવઙ્કાવ) મેધિ પ્રમાણ આધાર આલંબન અને ચક્ષુ આ પદોની

તસ્માત્કારણત્ 'ળ ણજ્ઞજ્ઞ' ન જ્ઞાયતે મયા 'જં' યત્ત્વ યદિ 'મણ' મયિ 'મયંસિ' ગતે  
ગ્રામાદૌ 'વા' 'જુયંસિ' વ્યુતે—સ્વલિતેવા કર્મવશાદનાચરતઃ સ્વપદાત્પતિતે, હ્યર્થઃ  
'મયંસિ' ધૃતે—પ્રાણવિયોગે સતિ, વા 'મયંસિ' મગ્ને—રોગાદિના કુબ્જ સ્વજ્ઞ-  
ત્વેનાડસમર્થીભૂતે, વા 'લુગંસિ' રુગ્ને—રોગાવસ્થાપ્રાપ્તેસતિ 'સહિયંસિવા'  
સદિતે વ્યાધિવિશેષેણ જીર્ણતાં ગતે સતિ, વા 'પહિયંસિ' પતિતે પ્રાસાદાદિતો-  
ગ્ધાનભાવાદ્વા 'વિદેસત્થંસિ' દેશાન્તરં ગત્વા તથૈવ સ્થિતે વા 'વિપ્પવસિયંસિ'  
વિપ્રોપિતે—સ્વસ્થાનવિનિર્ગતે—દેશાન્તરગમનપ્રવૃત્તે સતિ વા 'મન્ને' અહં મન્ને

આધાર, આલંબન एवं चक्षु इन पदों के साथ सूत्रकार इसी बात को  
और जोरदार शब्दों से समझाने के लिये उपमा वाचक भूत शब्द का  
प्रयोग करते हुए कहते हैं कि यह धन्यसार्थवाह उन सब के लिये  
मेधिभूत था, प्रमाणभूत था, आधारभूत था, आलंबनभूत था और  
चक्षुभूत था। इस तरह यहाँ पुनरुक्ति दोष का सज़ाब भी नहीं  
माना जा सकता है।

कारण पहिले कथन में उसे स्वयं मेधि आदि रूप कहा गया है और  
इस कथन में उसे उन २ जैसा कहा गया है। इस प्रकार पुनरुक्ति दोष  
का वारण हो जाता है। यह धन्य सार्थवाह समस्त ईश्वर आदि जनों  
के सर्व कार्यों का संपादक था—इसलिये उसे यह “सर्व कार्य वर्द्धक”  
कहा गया है। इस प्रकार वह धन्य सार्थवाह अपने में इन समस्त बातों  
का विचार करके अब आगे ऐसा विचार करता है (तं ण णज्ઞજ્ઞજં મણ  
મયંસિ વા જુયંસિ વા, મયંસિ વા મગ્ગસિ વા, લુગંસિ વા, સહિયંસિ

સાથે સૂત્રકાર એ જ વાતને વધારે સ્પષ્ટ કરવા માટે ઉપમા વાચક 'ભૂત'  
શબ્દનો પ્રયોગ કરતાં કહે છે કે ધન્ય સાર્થવાહ બધાને માટે મેધિભૂત હોતો,  
પ્રમાણુ ભૂત હોતો, આધાર ભૂત હોતો, આલંબન ભૂત હોતો અને ચક્ષુ ભૂત  
હોતો. એથી અહીં પુનરુક્તિ રૂપ દોષ ઉદ્ભવવાની શક્યતાથી ઉભી થતી  
નથી. કેમકે પૂર્વ કથનમાં જ તેને મેધિ વગેરે રૂપ બનાવવામાં આવ્યો  
છે અને આ વર્ણનમાં પણ તેને તે પ્રમાણુ જ વર્ણવવામાં આવ્યો છે. આ  
રીતે પુનરુક્તિ દોષનું નિવારણ પણ થઈ જ ગયું કહેવાય. ધન્ય સાર્થવાહ  
બધા ઈશ્વર વગેરે હોડોના બધા કામોને પાર પમાડનાર હોતો. એથી જ તેને  
“સર્વ કાર્ય વર્દક” કહેવામાં આવ્યો છે. આ પ્રમાણુ ધન્ય સાર્થવાહ પોતાની  
મેળે આ બધી વાનો વિષે વિચાર કરતો આગળ આમ વિચારે છે કે (તં ણ  
જ્ઞજ્ઞજં મણ મયંસિવા જુયંસિવા મયંસિવા મગ્ગસિવા, લુગંસિવા, સહિયંસિવા,

‘ઇમસ્સ’ અસ્ય કુટુમ્બસ્ય ‘કિં’ કઃ ‘આહારે’ આધારઃ આશ્રયો ભૂમિરિવ  
 ‘વા’ અથવા ‘આલંબે’ આલમ્બઃ-પતતો રજ્જાદિકમિવ અથવા ‘પટ્ટિબંધે’  
 પ્રતિબન્ધઃ પ્રમાર્જનિકા શલાકાદીનાં પરિરક્ષણાય દવરકણ્ઠ ‘ભવિસ્સહ’ ભવિવ્યતિ  
 ‘તં’ તદ્-તસ્માત્ ‘સેયં’ શ્રેયઃ સ્વલુ નિશ્ચયે મમ ‘કલ્લં’ કલ્યે-શ્વઃ પ્રમાત-  
 સમયે યાવત્-તેજસા ‘જલંતે’ જ્વલતિસતિ-દિનકરે ઉદયં પ્રાપ્તે વિપુલં-પ્રચુરં  
 આશનં ધ ‘ઉવક્કલ્હાવેત્તા’ ઉપસ્કાર્ય નિષ્પાદ્ય મિત્રઘ્નાતિ નિજક સ્વજન સમ્બ-  
 ન્ધિનઃ પરિજનાન્ ચતસ્રઃ સ્તુષાઃ ‘કુલધરવર્ગં’ કુલગૃહવર્ગં, કુલગૃહં-પિતૃગૃહં  
 તદ્ વર્ગં માતાપિત્રાદિકં ‘આમંતેત્તા’ આમંત્ર્ય=મોજનાર્થમાહૂય ‘તં’ તાન્

વા પટ્ટિયંસિ વા વિદેસત્થંસિ વા વિપ્પવસયંસિ વા ઇમસ્સ કુટુંબસ્સ  
 કિં મન્ને આહારે વા આલંબે વા પટ્ટિબંધે વા ભવિસ્સહ ? ) કિં એસા મૈં  
 યદિ યહાં સે દૂસરે ગ્રામ આદિ કો ચલા જાઁ, યા કર્મવશાત્ સ્વપદ  
 સે ચ્યુત હો જા , મરજાઁ કિસી રોગ આદિ કે દ્વારા કુબડા યા  
 લૂલા બન જાઁ, રોગ સે પ્રસિત્ત હો જાઁ, કિસી વ્યાધિ વિશેષ સે જીર્ણ  
 શરીર હો જાઁ કિમી મકાન આદિ સે અચાનક ગિરજાઁ વિદેશ જાકર  
 વહાં રહને લગજાઁ, અથવા યહાં સે વિપ્રોષિત પરદેશ રહને લાલા જાઁ તો  
 એસી સ્થિતિ મૈં મુશ્કે એસા કોઈ નહી જ્ઞાત હોતા હૈ કિ જો ઇસ મેરે કુટુમ્બ  
 કા આધાર હોગા આલંબનમૂત હોગા ઉસકી બુહારુ સંમાર્જની કી સીકોં  
 કો એકત્ર બાંધ કર રક્ષા કરને લાલે ઢોરેકે સામાન રક્ષા કરને લાલા હોગા ।  
 ઇસલિયે જય મૈં એસા માનતા હૂં (તં સેયં સ્વલુ મમ કલ્લં જાવ જલંતે  
 વિઝલં અસણં ધ ઉવક્કલ્હાવેત્તા મિત્તણાહં ચડણહં સુહાણં કુલધરવર્ગં

પટ્ટિયંસિવા, વિદેસત્થંસિ વા વિપ્પવસયંસિ વા ઇમસ્સ કુટુંબસ્સ કિં મન્ને આહારે વા  
 આલંબે વા પટ્ટિબંધે વા ભવિસ્સહ ? ) એ હું અહીંથી બીજે ગામ જતો રહું કે  
 કંઈવશાત્ સ્વપદ (પાતાના અધિકાર) થી બ્રષ્ટ થઈ બાઈ કે મરણને ભેટું, રોગ  
 વગેરેમાં સપડાઈને કૂળડો અથવા અપંગ થઈ બાઈ, રોગી થઈ બાઈ કેઈ વ્યાધિ  
 વિશેષમાં સપડાઈને સાવ દુર્બળ શરીરવાળો થઈ બાઈ, કેઈ મકાન ઉપરથી  
 ઓછિતો પડીબાઈ, વિદેશમાં જઈને ત્યાં રહેવા લાગું અથવા તો અહીંથી  
 વિપ્રોષિત-પરદેશમાં રહેનાર થઈ બાઈ ત્યારે એવી સ્થિતિમાં મને એવી કેઈ  
 પણ વ્યક્તિ દેખાતી નથી કે જે મારા કુટુંબને આધાર થઈ શકે, આલંબન  
 ભૂત થઈ શકે. સાવરણીનાં છૂટાંપડેલાં તરણાંઓને ઝોકીસાથે આંધનાર દોરીની  
 જેમ મારા આ કુટુંબને ઝોકી સાથે સંપીને રાખનાર તેમજ તેની રક્ષાકરનાર  
 કેાણુ હશે ? એ અત્યારે આવી પરિસ્થિતિ છે તો મારો એ વિચાર છે કે-  
 ( તં સેયં સ્વલુ મમ કલ્લં જાવ જલંતે વિઝલં અસણં ધ ઉવક્કલ્હાવેત્તા મિત્તણાહં

मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिनः परिजनोश्च चतस्रः स्तुषाः कुलगृहवर्गं च विपुलेन अशनादिना ४ धूपपुष्पवस्त्रगंधादिभिर्यावत् 'सकृदरेत्ता' सत्कृत्य 'सम्मानेत्ता' सम्मान्य मधुरवचनादिना, तस्यैव मित्रज्ञत्यादेः चतसृणां स्तुषानां कुलगृहवर्गस्य पुरतः समक्षं चतसृणां स्तुषाणां 'परिरक्षणद्वयाए' परिरक्षणार्थं पञ्च

आमंतेत्ता) तो मेरी अब इसी में मलाई है कि मैं कल सूर्योदयहोते ही प्रातःकाल सूर्य के उदय होने पर विपुल मात्रा में अशन पान, स्वाद्य, स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार कराकर मित्र ज्ञाति, निजक स्वजन सम्बन्धी जनों को तथा परिजनों को चारों अपनी इन पुत्र वधूओं को, इनके माता पिता आदिकों को भोजनार्थ आमंत्रित करके (तं मित्तणाइ णियग सयण० य चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवगं विउल्लेणं असण ४ धुव पुप्फवत्थगंधं जाव सककारेत्ता सम्मानेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्हं सुण्हाणं परिरक्खणद्वयाए पंच २ मालि अक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किण्हं वा सारक्खेइ वा संगोवेइ वा संबडेइ वा ) उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन संबंधियों को परिजनों को चारों इन अपनी पुत्र वधूओं को और इनके माता पिता आदिकों को उस विपुल अशनादि से और धूप पुष्प, वस्त्र गंध आदि से यावत् सत्कृत करूँ मधुरवचनादि द्वारा उन्हें सम्मानित करूँ। सत्कृत और सम्मानित करके बाद में मैं उन्हीं मित्र ज्ञाति आदि जनों के चारों ओर अपनी इन पुत्र वधूओं के कुल गृह वर्ग के समक्ष इन चारों पुत्र

चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवगं आमंतेत्ता) हुं डाल सवार यथा ४ सवारे सूयेइथ यथा अशन, पान, स्वाद्य अने पाद्य आभ आर प्रकारेना विपुल मात्राभां आहार तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति, निजक स्वजन, सम्बन्धी तेमज परिजनेना अने आरे पुत्रे आरे पुत्रवधूओ तथा ओमना मातापिता वगेरेने जमवा भाटे ओलावीने ( तं मित्तणाइ णियगसयण. य चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवगं विउल्लेणं असण ४ धुव पुप्फवत्थगंधं जाव सककारेत्ता सम्मानेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्हं सुण्हाणं परिरक्खणद्वयाए पंचरसालि अक्खए दलइत्ता जाणामि तावका किण्हं वा सारक्खेइवा संगोवेइवा संबडेइवा ) मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन सम्बन्धीओने, परिजनेना, पोतानी आरे पुत्रवधूओने, अने तेमना माता पिता वगेरेने पुष्कल प्रमाणभां जनाववाभां आवेला अशन वगेरे आरे प्रकारेना आहारो थी अने धूप, पुष्प वस्त्र गंध वगेरेथी सत्कार कइं तथा मधुरवाणी थी तेमसं सम्मान कइं. तेमनी सत्कार तेमज सम्माननी विधि पूरी कर्था आइ हुं मित्र, ज्ञाति वगेरे तथा पुत्रवधूओना कुटुम्बीओनेनी आभे आरे पुत्र

પશ્ચ સંલ્લંકાન્ શાલ્યેક્ષતાન્ શાલિકૃણાન્ દત્વા 'જાનામિ' જાનામિ 'તાવ' તાવત્ નિશ્ચયેન 'કા' સ્તુષા 'કિંહે' કથં કેન પ્રકારેણ 'સારક્ષેઃ' સંરક્ષયતિ સંગોપયતિ -સંવરણતઃ, મંજૂષાદિષુ સંસ્થાપનેન ગોપનં કરોતિ. અથવા કા-વધૂ 'સંવદ્ઢૃ' સમ્બર્ધયતિ બહુત્વકરણતઃ વપનાદિના ? ॥ સૂ. ૦ ૨ ॥

મૂલ્ય-—એવં સંપેહેઃ સંપેહિતા કલ્લં જાવ મિત્તનાઈ૦ ચડળહં સુળહાણં કુલઘરવગ્ગં આમંતેઃ આમંતિતા વિડલ અસણં ૪ ઉવક્ષેડાવેઃ, તઓ પચ્છા પહાણ મોયણમંડવંસિ સુહાસણ૦ મિત્તનાઈ૦ ચડળહં ય સુળહાણં કુલઘરવગ્ગેણં સદ્ધિં તં વિડલં અસણ ૪ જાવ સક્કારેઃ સમ્માણેઃ સક્કારિતા સમ્માણેતા તસ્સેવ મિત્તનાઈ૦ ચડળહં ય સુળહાણં કુલઘરવગ્ગસ્ત ય પુરઓ પંચ સાલિ અક્ષણ ગેણહઃ ગેણિહતા જેઠ્ઠા સુળહા ઉઙ્ગિયા તં સદ્ધા-વેઃ સદ્ધવિત્તા એવં વયાસી-તુમં ણં પુત્તા મમ હત્થાઓ ઇમે પંચ સાલિ અક્ષણ ગેણહાહિ ગેણિહતા અણુપુવ્વેણં સારક્ષેમાણી સંગોવેમાણી વિહરાહિ । જયાણંઽહં પુત્તા ! તુમં ઇમે પંચ સાલિ અક્ષણ જાણ્ઞા તયાણં તુમં મમ ઇમે પંચ સાલિ અક્ષણ પહિદિજ્ઞાણ્ઞાસિ તિકદ્ધુ સુળહાણ હત્થે દલયઈ દલયિત્તા પહિ-

વધૂઓંની પરીક્ષા કે નિમિત્ત ઉન્હે પાંચ પાંચ શાલિકર્ણોં કો દૂ- ઓર દેકર યહ જ્ઞાત કરૂં કિં ઇન મેં સે કૌન પુત્ર વધૂ કિસ તરહ સે ઇનકી રક્ષાં કરતી હૈ, કૌન પુત્ર વધૂ ઇન્હે મંજૂષા આદિ મેં રલ્લકર શુભ રલ્લતી હૈ ઓર કૌન સી પુત્રવધૂ વપનાદિ ક્રિયા દ્વારા ઉન્હે બઢાતી હૈ । સૂત્ર '૨'

વધૂઓની પરીક્ષા માટે તેઓમાંથી દરેકને પાંચ પાંચ શાલિકર્ણો ( ડાંગરના કર્ણો ) આપું અને આપીને એ વાતની પરીક્ષા કરું કે તેઓમાંથી કોણ કેવી રીતે તે શાલિકર્ણોને સાચવી રાખે છે. કઈ પુત્ર વધૂ શાલિકર્ણોને પેટી વગેરે માં ભૂંધીને શુભ રાખે છે ? અને કઈ પુત્રવધૂ શાલિકર્ણો ને વાવીને તેમની વૃદ્ધિ કરે છે ? ॥ સૂત્ર ૨ ॥

विसृज्येह, तएणं सा उज्झया धणस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसु-  
णेइ पडिसुणिता धणस्स सत्थवाहस्स इत्थाओ ते पंच सालि  
अक्खए गेण्हइ गेणिहत्ता एगंतमवक्कमइ एगंतमवक्कमियाए  
इमेयारूवे अज्झस्थिए० एवं खलु तयाणं कोट्टागारंसि बहवे  
पल्ला सालिणं पडिपुण्णा चिट्ठंति । तं जया णं ममं ताओ इमे  
पंच सालि अक्खए जाइस्सइ तयाणं अहं पल्लंतराओ अंते  
पंच सालि अक्खए गहाय दाहामि त्तिक्खु एवं संपेहेइ संपेहिता  
ते पंच सालि अक्खए एगंते एडेइ एडित्ता सकम्मसंजुत्ता  
जाया यावि होत्था ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘एवं संपेहेइ’ इत्यादि—एवं उक्तरूपेण संप्रेक्ष्यते मनसि विचार्यते ‘संपेहिता  
संप्रेक्ष्य-पर्यालोच्य कल्पे प्रभातसमये, यावत् तेजसा ज्वलति, सूर्य उदये सति  
मित्रज्ञाति स्वजनप्रमुखान् चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गं च-पितृगृहसम्बन्धिमाता  
पित्रादीन्, आमंत्रयति निमन्त्रयति, आमन्त्र्य विपुलमशनादिकं चतुर्विधाद्वारं उप-

‘एवं संपेहेइ संपेहिता’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवं संपेहेइ) धन्यसार्थवाह ने इस पूर्वोक्त प्रकार अपने मन  
में विचार किया ( संपेहिता ) विचार करके ( कलं जाव मित्तगाइ०  
चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ आमंतिता विउलं असणं ४  
उवक्खइवेइ ) फिर उसने प्रातःकाल होते ही सूर्य के उदय हो जाने  
पर मित्र, ज्ञाति, स्वजन आदि को और चारों ही पुत्रवधूओं के कुल  
गृह वर्ग को—उनके माता पिता आदिको को आमंत्रित किया । आमंत्रित

‘एवं संपेहेइ, संपेहिता’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवं संपेहेइ) धन्यसार्थवाह ने पुनोक्त रूपे पोताना मनमां विचार  
कथे. (संपेहिता) विचार करीने ( कलं जाव मित्तगाइ. चउण्हं सुण्हाणं कुलघर  
वग्गं आमंतेइ आमंतिता विउलं असणं ४ उवक्खइवेइ ) सवारे सूर्य उदयपाभतां  
गी साथे ४ तेणु पोताना मित्र, ज्ञाति, स्वजन वगेरेने अने अरे आर पुत्र  
वधूओना कुटुम्बीजनोने तेमना मातापिता वगेरेने ४ मरा माटे आमंत्रित

स्कारयति=निष्पादयति. ततः पश्चात् स्नातो भोजनमण्डपे सुखासननिष्पणः—  
सुखेनासने उपविष्टः सन् मित्रज्ञानिस्वजनादिभिः सार्द्धं चतसृणां स्नुषाणां च  
कुलगृहवर्गेण च सार्द्धं तद्विपुलमशानादिकं भोजयित्वा यावत्सत्कारयति वस्त्रादिभिः  
संमानयति मधुरवचनादिना, सत्कारं कृत्वा संमानयित्वा तस्य धन्यसार्थवाहस्यैव  
स्वमित्रज्ञाति प्रमुखाणामग्रे चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य पुरतः पञ्चशाल्य  
क्षतान्, गृह्णन्ति गृहीत्वा ज्येष्ठा स्नुषा उज्जिका नाम्नी तां शब्दयति शब्दयित्वा

करने के बाद फिर उसने विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध  
आहार तैयार करवाया ।

( तओ पच्छा ण्हाए भोयण मंडवंसि सुहासण० मित्तणाइ० चउण्ह  
य सुण्हाणं कुलघरवग्गेण सद्धिं तं विउलं असणं ४ जाव सक्कारेइ,  
सम्माणेइ ) जब चतुर्विध आहार निष्पन्न हो चुकी तब वह स्नान करके  
भोजनशाला में सुख से आसन पर उपविष्ट ( बैठ गया ) हो गया  
और मित्र, ज्ञाति एवं स्वजनादि को के साथ २ और अपनी पुत्रवधूओं  
के माता पिता आदिकों के साथ २ उस चतुर्विध भोजन की विपुल  
सामग्री का आहार करने के बाद में उन सबका उस ने वस्त्रादि से  
सत्कार किया तथा मधुरवचनादि से सन्मान किया । ( सक्कारित्ता  
सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य  
पुरओ पंच सालि अक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्ह उज्झिया तं  
सद्दावेइ ) जब सबका सत्कार और सन्मान हो चुका तब उस के बाद

कथी. आभ'त्रष्टु आभ्या पछी धन्य सार्थवाहे पुष्कण प्रभाषुमां अशन वगेरे  
ने. आर प्रकारने आहार भनावडाये.

( तओपच्छाण्हाए भोयणमंडवांसि सुहासण मित्तणाइ. चउण्हय सुण्हाणं  
कुलघरवग्गेण सद्धिं तं विउलं असणं ४ जाव सक्कारेइ सम्माणेइ ) न्यारे  
आरे भतने. आहार तैय.र थछ भये त्यारे ते स्नान करीने रसेध घरमां  
शुण्ठेथी आसन उपर भेसी भये अने मित्र, ज्ञाति अने पोताना स्वभने  
वगेरेनी साथे तेभज पोतानी पुत्र वधूओनां सगां वडावांओ भातापिताओ  
नी साथे आरे भतना पुष्कण प्रभाषुमां तैयार करवा मां आवेला आहारने  
जभ्ये जभ्या पछी तेण्णे वओ वगेरे आपीने ते. भधाने सत्कार्या तेभज  
मधुर वचनेथी ते भधानुं सन्मान कथुं. ( सक्कारित्ता सम्माणेत्ता तस्सेव  
मित्तणाइ, चउण्हय सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ पंचसालि अक्खए  
गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्ह उज्झिया तं सद्दावेइ ) न्यारे भधा आभ'त्रित

एवमवदत् हे पुत्रि त्वं खलु मम हस्तादिमान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृहाण, गृहीत्वाच  
'अणुपुण्ड्रेण' 'अणुपुण्ड्रेण'—अनुक्रमेण संरक्षन्ती संगोपायन्ती 'विहराहि' विहर. ।  
'जया' यदा—यस्मिन् समये खलु हे पुत्रि । अहं 'तुमं' तवपार्श्वे इमान् पञ्च  
शाल्यक्षतान् 'जाएज्जा' याचय, 'तया' तदा तस्मिन् समये खलु 'तुमं' त्वं  
मम इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'पडिदिज्जासि' प्रतिदद्याः पश्चाद् मम समर्पये,  
इतिकृत्वा—इत्युक्त्वा ज्येष्ठायाः स्नुषायाः हस्ते ददाति, दत्त्वा च प्रतिविसर्जयति,

धन्य सार्थवाह ने अपने मित्र ज्ञाति आदि जनों के तथा उन चारों  
जपनी पुत्रवधूओं के कुल गृहवर्ग के सामने पांच शाल्यक्षतो को  
लिया और लेकर ज्येष्ठा जो पुत्रवधू थी कि जिसका नाम उज्झिका थी  
उसे बुलाया ( सदावित्ता एवं वयासी तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ  
इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, गेण्हित्ता अणुपुण्ड्रे णं सारक्खेमाणी  
संगोवेमाणी विहराहि ) बुलाकर उससे ऐसा कहा—पुत्रि ! तुम मेरे हाथ  
से इन पांच शाल्यक्षतों को लो और लेकर इन्हें सुरक्षित रखो सम्मा-  
लकर अच्छी तरह से रखो । ( जयाणं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच  
सालिअक्खए जाएज्जतयाणं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदि-  
ज्जाएज्जासि ) जय मैं हे पुत्रि ! तुम से इन पांच शालि अक्षतों को  
मागूं तब तुम मेरे लिये इन्हें पीछे देना ।

( सक्कु सुण्हाए हत्थे दलयइ ) ऐसा कहकर उसने उस ज्येष्ठ  
स्नुषा के हाथ में उन शाल्यक्षतो को दे दिया । ( दलयित्ता पडिविस-  
ज्जेइ ) देकर फिर उसे विसर्जित कर दिया ।

मेढमानेने सत्कार तेमज्ज सन्मान थर्ध गयुं त्थारे धन्य सार्थवाहे पोतना  
मित्र ज्ञाति वगेरे स्वज्जेने तेमज्ज त्थारे पुत्र वधूओना मातापिता वगेरे  
सगावहावा ओनी साभे पांच शाखिकेणु ( सांगरना केणु ) बीधा अने  
पोताना सौथी भोटा पुत्रनी बाथो उल्लिखकाने ओलावी. ( सदावित्ता एवं  
वयासी तुमं णं पुत्ता ! ममहत्थाओ इमे पंचसालि अक्खए गेण्हाहि गेण्हित्ता  
अणुपुण्ड्रेण सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि ) ओलावीने तेने आ प्रभाणु  
कळु “ हे पुत्रि ! आ पांच शाखिकेणुने तमे स्वीकारे अने ओभने सारी  
रति संभाणीने सुरक्षित राखे. ( जयाणं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालि-  
अक्खए जाएज्ज तयाणं तुमं मम इमे पंचसालि अक्खए पडिदिज्जासि ) हे पुत्रि !  
न्थारे हुं तमारी पासैथी शाखिकेणु मायुं त्थारे तमे भने पाछा आपनो.

( सक्कु सुण्हाए हत्थे दलयइ ) आभ कळीने तंणु भोटा पुत्रनी वधूना  
हाथमां शाखिकेणु ने भूकी बीधां. ( दलयित्ता पडिविसज्जेइ ) शाखिकेणु



તતસ્તદનન્તરં રુલુ સા-ઉજ્જિકા નામની વધુઃ ધન્યસ્ય સાર્થવાહસ્યૈતમર્થે 'તદ્વતિ તથેતિ' કૃત્વા-તથાસ્તિત્વતિ કયયિત્વા 'પઢિસુણેઝ' પ્રતિશ્રુણોતિ સ્વીકરોતિ । 'પઢિસુણિતા' પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય ધન્યસ્ય સાર્થવાહસ્ય હસ્તાત્ 'તે' તાન્ પંચશાલ્યક્ષતાન્ શૃદ્ધતિ શૃદ્ધીત્વા 'એગંતમવક્કમઢ' એકાન્તમપક્રામતિ એકાન્ત સ્થાને ગચ્છતિ 'એગંતમવક્કમિયા' એકાન્તમપક્રમિતાયાઃ એકાન્તં ગચ્છન્ત્યાઃ મનસિ 'એમેયારુવે' અયમેતદ્દૂપઃ 'અજ્ઞરિય' આચ્યાત્મિકઃ-આત્માશ્રયો યા-વત્તંકલપઃ સમુદ્પદ્યત એવમમુના પ્રકારેણ રુલુ નિશ્ચયેન 'તાયાણં' તાતસ્ય શ્વશુરસ્ય (તાયાણં) અન્ન આદરાથં વહુવચનં, 'કોટ્ટાગારંસિ' કોટ્ટાગારે 'વહવે' વહવઃ-અનેકસંખ્યકાશાલિનાં 'પલ્લા' પલ્લયાઃ-પલ્લયાકામાનવિશેષા તૈઃ 'પઢિપુણા' પ્રતિપૂર્ણાઃ શૃતાસ્તિત્વંતિ સાર્દ્ધત્રયમણપ્રમિતાનાં ધાન્યાનામેકઃ પલ્લકા इत्यभिधीयते તે પલ્લકા વહવઃ કોટ્ટાગારે શૃતાઃ સંતીતિ સાવઃ । 'તં જયાળં' તદ્-

(તપ્પણં સા ઉજ્જિકા ધણસ્સ તહસ્સિ એવમદ્ધં પઢિસુણેઝ) ચલતે સમયે ઉસ જ્યેષ્ઠ પુત્ર વધુ ઉજ્જિકા ને ધન્ય સાર્થવાહ કે "તથાસ્તુ" કહકરે આ કથનરૂપ અર્થકો સ્વીકાર કરલિયા (પઢિસુણિતા ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ હન્થાઓ તે પંચ સાલિ અવલપે ગેણ્હ) સ્વીકાર કરકે ધન્ય સાર્થવાહ કે હાથસે ઉન પાંચ શાલ્યક્ષનોં કોફિરે ઉસને હે લિયા । (ગેણ્હિતા એગંતમવક્કમઢ) હેકરે ફિરે વહુ વહાંસે એકાન્ત સ્થાન મેં જલી ગઈ । (એગંતમવક્કમિયા એમેયારુવે અજ્ઞરિય ૦) વહાં ઓકરે ઉસને એમા વિચારે કિયા- (એવં રુલુ તાયાણં કોટ્ટાગારંસિ વહવે પલ્લાસાલિ ણં પઢિપુણા ચિદ્ધંતિ) તાન-શ્વશુરજી-કે કોટ્ટાગારંસિ મેં-અનેક ચાવલો કે પલ્લકા મરેહુપે રાખે હૈં । યહાં પલ્લકા એક પ્રમાણ વિશેષ કા નામ હૈ । યહ ૩॥ ) મન કા હોતા હૈ । નં જયાણં સમ તાઓ

આપીને તેમને જ્ઞાની આજ્ઞા આપી. (તપ્પણં સા ઉજ્જિકા ધણસ્સ તદ્વતિ એવમદ્ધં પઢિસુણેઝ) જતી વખતે ચોટા પુત્રની વધુ ઉજ્જિકાએ ધન્ય સાર્થવાહને 'આરુ' (તથાસ્તુ) આમ કહીને તેની આજ્ઞાને સ્વીકારી. (પઢિસુણિતા ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ હન્થાઓ તે પંચ સાલ્યક્ષણ ગેણ્હ) આજ્ઞા સ્વીકાર્યા પછી ધન્ય સાર્થવાહના હાથથી તેમણે પાંચ શાલ્યક્ષણ લઈ લીધાં.

(ગેણ્હિતા એગંતમવક્કમઢ) શાલ્યક્ષણે ને લઈને તે ત્યાંથી એકાન્ત સ્થાન તરફ જતી રહી. (એગંતમવક્કમિયા એમેયારુવે અજ્ઞરિય ૦) ત્યાં એક તરફ આવીને તેણે વિચાર કર્યો- (એવં રુલુ તાયાણં કોટ્ટાગારંસિ વહવે પલ્લાસાલિયં પઢિપુણા ચિદ્ધંતિ) "મારા ચન્નરાના કેકારમાં ચોખાના ઘણા પદ્ધકો ભરેલા છે. (પદ્ધક એક પ્રમાણ વિશેષનું નામ છે. તે આ મણુનું હોય છે) (તં

તસ્માત્-કારણાત્ યદા યરિમન્ સમયે સ્વલ્લ મમ તાતઃશ્વસુર ઇમાન્ પશ્ચ શાલ્ય-  
ક્ષતાન્ યાચિશ્ચયિતિ ' તથા ણં ' તદાનીં તરિમન્નેવ સમયે સ્વલ્લ અહં ' પલ્લંતરાઓ '  
પછાન્તરાત્-કોષ્ટાગારમધ્યે અન્યતરાત્પલ્લકાત્ ' અન્ને ' અન્યાન્ પશ્ચશાલ્યક્ષતાન્  
' ગહાય ' ગૃહીતા ' દાહામિ ' દાસ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા-ઇતિ મનસિ નિધાય ' एवं  
સંપેહેઈ ' एवं સંપ્રેક્ષતે-ચિન્તયતિ ' સંપેહિતા ' સંપ્રેક્ષ-પર્યાલોચ્ય ' તે ' તાન્  
શ્વસુરપ્રદતાન્ પશ્ચશાલ્યક્ષતાન્ ' एगंते ' एकान्ते ' एहेइ ' एडति - પ્રશ્નિપતિ-  
પાતયતીત્યર્થઃ ' एडिता ' પ્રશ્નિપ્ય 'સકમ્મસંજુત્તા' સ્વકર્મ સંપ્રયુક્તા-જાતાવાપ્ય  
મવત્ સ્વગૃહાદિકાર્યકરણે ઉદ્યુક્તાઽઽસીદિત્યર્થઃ ॥મુ० ૩ ॥

મૂલ્ય-एवं भोगवतियाए वि, णवरं सा छोल्लेइ छोल्लित्ता  
अणुगिलइ अणुगिलित्ता जाया, एवं रक्खियावि, णवरं गेण्हइ  
गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए० एवं खल्लु ममं ताओ इमस्स  
मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ सहा-  
वेत्ता एवं वयासी-तुमण्णं पुत्ता मम हत्थाओ जाव पडिदिज्जा

શિ કહુ પંચ સાલિ અક્ષણ જાહસ્સહ તયાણં અહં પલ્લંતરાઓ અંતે  
પંચ સાલિઅક્ષણ ગહાય દહામિત્તિ કટ્ટુ एवं સંપેહેઈ સંપેહિતા તે પંચ  
સાલિ અક્ષણ एगंते एहेइ, एडित्ता सक्कम्मसंजुत्ता जाया यावि  
होत्था ) जब ऐसा कितने ही पल्यंक चावलों के कोष्ठागार में भरे हुए  
रखे हैं तो जिस समय श्वसुरजी इन पांच शाली-अक्षनों को मुझसे  
मां गेंगें मैं उसी समय कोष्ठागार के मध्य में से किसी एक दूसरे  
पल्यंक से लेकर इन पांच शालि-अक्षनों को दे दूंगी । ऐसा उसने विचार  
किया । विचार करके बादमें उसने श्वसुरप्रदत्त पांचशालि अक्षतों को  
एकान्त में दिया । और डालकर फिरवह अपने घर के काम करने  
में लग गई ॥ सू० ३ ॥

જાયાળં મમં તાઓત્તિ કટ્ટુ પંચ સાલિ અક્ષણ જાહસ્સહ તયાણં અહં પલ્લંતરાઓ  
અંતે પંચ સાલિ અક્ષણ ગહાય દહામિ ત્તિ કટ્ટુ एवं સંપેહેઈ, સંપેહિતા તે  
પંચ સાલિ અક્ષણ एगंते एहेइ, एडित्ता सक्कम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था )  
બપાડે, ઘણા પલ્લકો ચોખા કોઠારમાં છે તો જે વખતે સસરા પાંચ શાલિ-  
કણા ભાગશે તે વખતે પાંચ શાલિકણા કોઠારના પલ્લકોમાંથી લઇને તેમને  
આપી દઈશ. “ આ પ્રમાણે વિચારીને સસરાએ આપેલા પાંચ શાલિકણાને  
મોટા પુત્રની વધુએ એક તરફ ફેંકી દીધા. અને ફેંકીને ચોતાના હાથેશાના  
ધરકામમાં પડેલાઈ ગઈ. ॥ સૂત્ર “ ૩ ” ॥

एजासि तिकट्टु मम हत्थंसि पंच सालि अक्खए दलयइ तं भवि-  
यव्वमेत्थ कारणेणं तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहिच्चा ते पंच सालि  
अक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ  
पक्खिवित्ता ऊसीसा मूले ठावेइ ठावित्ता तिसंझं पडिजागर-  
माणी विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—एवं भोगवतिकामपि—भोगवती नाम्नीं स्नुषामप्याह्वयति नवरं  
'सा' भोगवती अश्वुरप्रदत्तपञ्चशालिकणरूपानक्षतान् रवस्थाने नीत्वा 'छोलेइ'  
तुषरहितं करोति 'छोलित्ता' निष्तुपीकृत्य 'अणुगिलइ' अनुगिलति—भक्षयति,  
'अणुगिलित्ता' अनुगिल्य भक्षयित्वा 'जाया' स्वकार्यसंप्रयुक्ता जाताचा-  
प्यासीत्—स्वगृहकार्यकरणे लग्नाऽभवदिति भावः । एवमनेनैव प्रकारेण रक्षिता-  
मपि—रक्षितानाम्नीं तृतीयां स्नुषामप्याह्वयति, आहूय तेन पंचसंख्याः शालिकणा  
दत्ताः, नवरं सा तान् गृह्णाति, रम गृहीत्वा चायमेतद्रूपः 'अज्झत्थिए' आ-

‘ एवं भोगवतिया एवि ’ इत्यादि । सूत्र

टीकार्थ—( एवं भोगवतियाए वि ) उसी तरइ भोगवतिका नामकी  
अपनी पुत्रवधू थी—उसे भी धन्यसार्थवाहने बुलाया (णवरं) इसमें विशेष-  
णता केवल इतनी रही कि (सा छोलेइ) उसने उन शाल्यक्षतोंको अपने  
स्थान पर लेजाकर तुषरहित किया ( छोलित्ता अणुगिलइ ) और तुष  
रहित कर वहलन्हे खा गई ( अणुगिलित्ता जाया ) खाकर बादमें  
अपने काम में लग गई । ( एवं रक्खिया वि ) इसी प्रकार धन्यसार्थवाहने  
अपनी तीसरी रक्षिता नामकी पुत्रवधू को बुलाया (णवरं गेण्हइ, गेण्हित्ता  
इमेयारुवे अज्झत्थिए० ) बुलाकर उसे भी पांच शालिकणों को दिया ।

‘ एवं भोगवतियाएवि ’ इत्यादि

टीकार्थ—( एवं भोगवतियाए वि ) आ प्रमाणे धन्यसार्थवाडे लोणवतिका  
नामनी पोतानी भील पुत्रवधूने गोदावी (णवरं) लोणवतिकाना विषे पधारानुं ओ  
जणुपुं ओधओ के ( सा छोलेइ ) तेणे शादिकणुने पोताना निवास स्थाने लध  
जधने तुष ( इतरां ) वगरना जनाओया ( छोलित्ता अणुगिलइ ) अने शादिकणु  
नां इतरा साइ करीने तेभने भाध गधं. ( अणुगिलित्ता जाया ) आधा पछी  
ते पोताना कामभां परोवाध गधं. ( एवं रक्खिया वि ) आ रीते धन्यसार्थवाडे  
पोतानी भील पुत्रवधू रक्षिताने गोदावी (णवरं) गेण्हइ गेण्हित्ता इमेयारुवे  
अज्झत्थिए ) गोदावीने तेभने पण पांच शादिकणु आओया. रक्षिताओ शादि-

ધ્યાત્મિક-આત્માશ્રેયઃ ચિન્તિતઃ પ્રાર્થિતઃ મનોગત સંકલ્પઃ સમુદ્વેષદત્ત, एवं खलु मां तातः श्वसुरः 'इमस्स' एतेषां मित्रज्ञातिप्रमुखाणां 'पुरओ' पुरतः-समक्षं पुनश्चतस्त्राणां स्तुषाणां कुलगृहवर्गस्य पुरतोऽग्रे शब्दयित्वा चैवमवादीत्, वक्ष्यमाण-रीत्या मां कथितवान् त्वं खलु 'पुत्ता' हे पुत्रि । मम हस्तादिमान् पञ्चशालि-कणान् गृहाण गृहीत्वा आनुपूर्व्यां संरक्षन्ती संगोपायन्ती विहर, यावद् यदाऽहं पुनर्याचयेय तदा खलु त्वं महाभिमान् पञ्चशाल्यक्षतान् 'पडिदिज्जाएज्जासि' भति-दद्याः प्रति समर्पयेः, इति कथयित्वा मम हस्ते पञ्चशालिकणा ददाति 'तं-भवि-यव्व मेत्थ कारणेणं' तस्माद्भूवितव्यमत्र किञ्चित्कारणमित्येवं 'संपेहेइ' संरक्षते-पर्यालोचयति विचारयतीत्यर्थः 'संपेहित्ता' संरक्ष्य-पर्यालोच्य 'ते' तान्

उसने वे छे लिया । छेने के बाद उसे ऐसा विचार आया ( एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हा णं कुलघरवग्ग-स्स य पुरओ सदावेत्ता एवं वयासी ) कि ये मेरे तात-श्वसुर-जो मुझे इस मित्र ज्ञाति-आदि मंडली के समक्ष बुलाकर इसतरह कह रहे हैं ( तुमणं पुत्ता । मम हत्थाओ जाव पडि दिज्जाएज्जासि त्ति कहुं मम हत्थसि पंच सालि अक्खए दलयइ तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं ) कि " हे पुत्रि । तुम मेरे हाथसे पांच शाल्यक्षतों को लो और लेकर इन्हे सुरक्षित देखो । जब मैं तुम से इन्हे पीछे वापिस मांगू तो तुम इन पांचो शाल्यक्षतोंको मुझे समर्पित कर देना । सो ऐसा कहकर जो ये पांच शाल्यक्षतों को मुझे दे रहे हैं तो इस विषय में कोई न कोई कारण अवश्य होना चाहिये ( त्तिकहुं एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ते पंच सालि

કચ્છેને લઇ લીધા અને ત્યાર બાદ તેને આ બાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો-( एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्तणाइ चउण्ह य सुण्हा णं कुलघरवग्ग-स्स य पुरओ सदावेत्ता एवं वयासी ) " મારા શ્વસુરા પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે તેમજ થારે પુત્રવધુઓ ના માતાપિતા વગેરેની સાથે અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહી રહ્યા છે-( तुमणं पुत्ता । मम हत्थाओ जाव पडि दिज्जाएज्जासि त्ति कहुं मम हत्थसि पंच सालि अक्खए दलयइ तं भवियव्वमेत्थकारणेणं ) " હે. પુત્રિ । આ પાંચ શાલિકણો તમે મારી પાસેથી લો અને લઇને એમને સલામીને શોખો. બ્યારે હું તમારી પાસેથી શાલિકણો માગુ ત્યારે આ પાંચે શાલિકણો તમે મને પાછા આપજો. આમ કહીને મને આ શાલિકણો આપી રહ્યા છે તો એની પાછળ અમેતે કારણ તો હોવું જ બેધવ્ય. ( ત્તિ કહદુ एवं સંપેહેइ संपेहित्ता ते पंचसालि अक्खए मुझे बत्ये बंधइ, बंधित्ता रयण कर'डियाए पक्खिवेइ

पञ्चशाल्यसतान् 'सुद्धे' सुद्धे-पवित्रे 'वत्से' वत्से 'बंधइ' बध्नाति- 'बंधिता'  
 वध्वा 'रयणकरंडियाए' रत्नकरंडिकायां-रत्नडिबिकायां 'पक्खिवेइ' पक्खि-  
 पति रक्षार्थं स्थापयति 'पक्खिवित्ता' प्रतिक्षिप्य स्थापयित्वा 'उसीसामूले'  
 उच्छीर्षकमूले-उपधानस्याधोभागे 'ठावेई' स्थापयति 'ठावित्ता' स्थापयित्वा  
 'तिसंझं' त्रिसंध्यं-प्रातर्मध्याह्नसायंकाललक्षणे 'पडिजागरमाणी' प्रति जाग्रती  
 तद्रक्षार्थं सावधानासती 'विहरइ' विहरति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्-तएणं से धणणे सत्थवाहे तहेवमित्त जाव चउत्थि  
 रोहिणीयं सुणहं सद्दावेइ सद्दावित्ता जाव तं भणियव्वं एत्थ  
 कारणेणं तं सेयं खलु मम एए पंच सालि अक्खए सारक्खे-  
 माणीए संगोवेमाणीए संवट्ठेमाणीए तिकट्ठु एवं संपेहेइ संपे-  
 हित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी - तुब्भेणं  
 देवाणुप्पिया ! एए पंच सालि अक्खए गिण्हइ गिण्हित्ता  
 पढम पाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवडयंसि समाणंसि खुट्ठागं  
 केयारं सुपरिकम्मियं करेइ करित्ता इमे पंच सालि अक्खए

अक्खए सुद्धे वत्से बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ, पक्खि-  
 वित्ता उसीसामूले ठावेइ, ठावित्ता तिसंझं पडिजागरमाणी विहरइ )  
 ऐसा जब उसने विचार किया तो विचार करके उसने उन पांच शाल्य  
 क्षतों को शुद्ध वस्त्र में बांधा बांधकर उन्हें फिर रत्ननिर्मित एक डब्बे  
 में रख दिया । रखकर उस डब्बे को उसने उसीसे-के नीचे भाग में  
 सिरहाने के अधोभाग में रख दिया । इस तरह वह प्रातः मध्याह्न  
 और सायंकाल में इन तीनों कालों में उसकी संभाल में सावधान  
 होकर रहने लगी । सूत्र " ४ "

। पक्खिवित्ता उसीसा मूले ठावेइ ठावित्ता तिसंझं पडिजागरमाणी विहरइ;) आभ  
 निवारिने तेण्हे पांच शालिकण्ठेने शुद्ध वस्त्रमां बांधीने रत्न नडेदी  
 ओक डण्ढीमां भूझी दीधा. डण्ढीमां भूझीने तेण्हे ते डण्ढीने पोताना ओ-  
 शीकानी नीचे भूझी दीधी. आ प्रभाण्हे ते सवार णपार अने सांज आभ  
 भण्हे वण्ण ते डण्ढीने संभाणीने राखवा लागी. ॥ सूत्र ४ ॥

वावेह वावित्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खयनिहए करेह करित्ता  
वाडिपक्खेवं करेह करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणु  
पुब्बेणं संवेद्वेह । तएणं ते कोडुंबिया रोहणीए एयमट्ठं पडि-  
सुणंति ते पंच सालि अक्खए गिण्हंति गिण्हित्ता अणुपुब्बेणं  
सारक्खंति संगोवंति विहरंति तएणं ते कोडुंबिया पढम पाउ-  
संसि महाबुद्धिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केयारं  
सुपरिकम्मियं करेति करित्ता ते पंच सालि अक्खए ववंति  
दुच्चपि तच्चपि उक्खयनिहए करेति करित्ता वाडिपरिक्खेवं  
करेति करित्ता अणुपुब्बेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवेद्वे-  
माणा विहरंति ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘ तएणं से धण्णे ’ तत्तदन्तरं खलु स धन्यसार्थबाह ‘ तहेव ’  
तस्यैव मित्रादीन् यावच्चतुर्थी रोहिणिकां सुणं शब्दयति, शब्दयित्वा ‘ जाव ’  
यावच्छब्देन यथा तृतीया रक्षिका शाल्यक्षतविषये चिंतयति तथैव रोहिणिकापि

‘ तएणं से धण्णे ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से धण्णे) उस धन्यसार्थबाह ने (तहेव  
मित्तं जाव चउत्थि रोहिणीयं सुणं सदावेइ ) उसी तरह मित्रादि  
परिजनो के समक्ष अपनी चतुर्थ पुत्रवधू कि जिसका नाम रोहिणी था  
उसे बुलाया ( सदावित्ता जाव तं भणियव्वं ) बुलाकर उसे पांच शाल्य-  
क्षत देकर उन्हें सुरक्षित रखने के लिये उससे कहा ।

श्वसुर की बात सुनकर जिस प्रकार प्राप्त शाल्यक्षतों के विषय में  
तृतीय पुत्रवधू रक्षिका ने विचार किया था उसी तरह इस चतुर्थ पुत्रवधू

‘ तएणं से धण्णे ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्थार भाइ (से धण्णे) धन्य सार्थबाह (तहेव मित्तं जाव  
चउत्थि रोहिणीयं सुणं सदावेइ) आ प्रभाषे न मित्र वगेरे सन्धीओनी साथे  
पोतानी ओथी पुत्र वधू शिड्डीने ओलावी. ( सदावित्ता जाव तं भणियव्वं )  
ओलावीने तेछे पांच शालिकेछे आपीने तेओने सुरक्षित राभवा भाटे कहुं.

ससराणी वात सांवाणीने शिड्डीओ त्रीश पुत्रवधू रक्षिकाओ नेभ  
विशेश कथां तेभज तेछे पणु आ विषे घण्णी नतना विचारै कथां छेवटे ते

વિવિધપ્રકારેણ ચિન્તયતિ, 'તં મણિયવ્વં' તસ્માદ્ભવિતવ્યમત્ર કિંચિત્કારણેન મમ તાતેન શ્વસુરેણ મહાં પંચ શાલ્યક્ષતા દત્તાઃ, તત્ર કોઽપિ હેતુરસ્તિ । 'તં' તદ્ તસ્માત્કારણાત્ 'સેયં' શ્રેયઃ સુલ્ભકરમેતદેવ સ્વલ્ભ મમ 'ए' एतान् पञ्च शाल्य-क्षतान् संरक्षन्त्याः । संगोपायन्त्याः । संवर्द्धयन्त्याः इति निश्चित्य एवं संप्रेक्षते= पर्यालोचयति, संप्रेक्ष्य च कुलगृहपुरूपान्=કૃષિકર્મનિપુણનિજકુટુમ્બપુરુષાન્ શબ્દયતિ=આહ્વયતિ શબ્દયિત્વા ચૈવં વક્ષ્યમાણપ્રકારેણવાદીત્, હે દેવાનુપ્રિયાઃ : યુયં સ્વલ્ભ એતાન્ પંચશાલ્યક્ષતાન્ ગૃહીત ગૃહીત્વા 'પદ્મપાડસંસિ' પ્રથમ પ્રાઘપિ વર્ષાકાલપ્રારમ્ભસમયે 'મહાબુદ્ધિકાયંસિ' મહાઘટ્ટિકાયે 'નિવહ્યંસિ સમાણંસિ' નિપતિતે સતિ મહાઘટ્ટિરૂપેણ જલરાશિ રૂપેઽપ્કાયે ભૂમૌ નિપતિતે સતીત્યર્થઃ

રોહિણીકાને ખી વિવિધરૂપે સે વિચાર ક્રિયા । અન્ત મેં હસ નિષ્કર્ષ પર વહ પહુંચી કિ શ્વસુરજીને જો ચે પાંચ શાલ્યક્ષત મુજે દિયે હૈં— ઓર હનકી રક્ષા આદિ કરને કે વિષય મેં જો મુજ્જ સે કહા હૈ સો હસમેં કોઈ ન કોઈ કારણ અવજ્ય હૈ । (તં સેયં સ્વલ્ભ મમ એ પંચ સાલિ અક્ષણ સારક્ષેમાણી એ સંગોવેમાણી એ સંવર્દ્ધેમાણી એ ત્તિકદ્દુ એવં સંપે-હેઈ ) હસલિયે મુજે યહી સુલ્ભકર હૈ કિ મેં હન પાંચ શાલ્યક્ષતોં કી રક્ષા કરૂં હન કા સંગોપન ઓર સંવર્દ્ધન કરૂં । એસા નિશ્ચય કર ડસને યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે વિચાર ક્રિયા । (સંપેહિતા કુલગરપુરિસે સહાવેઈ ) વિચાર કર ફિર ષાડ મેં ડસને કૃષિકર્મ કરને મેં નિપુણ અપને કુટુમ્બ કે પુરુષો કો બુલાયા । (સહાવિત્તા એવં વચાસી ) બુલા કર એસા કહા— (તુઝમેળં દેવાણુપ્પિયા ! એ પંચ સાલિ અક્ષણ ગિળહહ ગિળિહ્તા પદમપાડસંસિ મહાબુદ્ધિકાયંસિ નિવહ્યંસિ સમાણંસિ સુદ્ધાગં કેયારં

એ નિર્ણય ઉપર આવી કે સસરાએ અને પાંચ શાલીકણે આપ્યા છે અને તેઓની રક્ષામાટે અને જે કંઈ કંઈ છે તેની પાછળ કંઈને કંઈ કારણે તો ચોક્કસ હોવું જ બોધાયે. (તં સેયં સ્વલ્ભ મમ એ પંચ સાલિ અક્ષણ સારક્ષેમાણી એ સંગોવેમાણી એ સંવર્દ્ધેમાણી એ ત્તિકદ્દુ એવં સંપેહેઈ ) તો મારી એજ ફરજ છે કે હું તેઓની રક્ષા કરૂં તેઓનું સંગોપન તેમજ સંવર્દ્ધન કરૂં. આ પ્રમાણે શાહિણી એ પાંચ શાલીકણે ને માટે વિચાર કર્યો. (સંપેહિતા કુલગરપુરિસે સહાવેઈ ) વિચાર કરીને તેણે કૃષિકર્મ કરવામા ઓટલે કે જેવામાં ચતુર એવા પોતાના જ કુટુંબના માણસોને બોલાવ્યા. (સહાવિત્તા એવં વચાસી ) બોલાવીને તેણે આ રીતે કહ્યું—

(તુઝમેળં દેવાણુપ્પિયા ! એ પંચ સાલિ અક્ષણ ગિળહહ ગિળિહ્તા પદમ પાડસંસિ મહાબુદ્ધિકાયંસિ નિવહ્યંસિ સમાણંસિ સુદ્ધાગં કેયારં સુપરિકમ્મિયં કરેઈ )

‘खुड्गां’ ‘शुलकं’ ‘कयारं’ ‘केदार’=क्षेत्रं वयारा, इति भाषा प्रसिद्धं ‘सुपरि कम्मियं’ सुपरिकर्मितं=शाल्यक्षतवपनयोग्यं ‘करेह’ कुरुत, कृत्वा च ‘इमे’ इमान् पञ्चशाल्यक्षतान् ‘बावेह’ वपत प्ररोहार्य क्षेत्रे प्रसिपत, उत्प्वा=क्षेत्रे वपनं कृत्वा द्वितीयमपि तृतीयमपि वारं ‘उक्खयनिहप’ उत्खातनिहतान् क्षेत्रे जातान् पुनस्तान् वर्धनार्थं द्वित्रिवारम्-उत्पाटय अन्यत्र क्षेत्रे समारोपितान् ‘करेह’ कुरुत एकस्मात् स्थानादन्यस्थाने रोपयत ‘करित्ता’ कृत्वा-रोपयित्वा, ‘बाडि-पडिक्खेवं’ बाटिकापरिक्षेपं = प्राकाराकारेण बाटिकां कुरुत कृत्वा संरक्षन्त, संगोपायन्त आनुपूर्व्या=अनुक्रमेण ‘संवड्ढेह’ संवर्धयत ।

सुपरिकम्मियं करेह ) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग इन पांच शालि अक्षतों को लो-और लेकर जब सर्व प्रथम वर्षाकाल के प्रारम्भ में जलराशि रूप अप्काय महा वृष्टिरूप से भूमि पर गिरे तो उस समय तुम छोटी सी एक कयारी में शालि अक्षतों को बोने के योग्य करो ( करित्ता इमे पंच शालि अक्खए बावेह बाविस्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खय निहप करेह, करित्ता बाडिपक्खेवं करेह करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुब्बेण संवड्ढेह ) जब वह कयारी अच्छी तरह से परिकर्मित हो जावे तो उसमें इन पांच शालि अक्षतों को तुम लोग बो दो ।

बोकर दुबारा तिबारा उन्हें उत्खात निहत करो-अर्थात् जब वे खेत में-कयारी में-अंकुररूप से उत्पन्न हो जावे तब उन्हें वृद्धिगत करने के लिये वहां से उखाड़ो और फिर दूसरी जगह-कयारी में उन्हें आरोपित करो । इस तरह दो तीन बार करो । करके फिर उस खेत को बाड़ी से परिवृत करो-प्राकार के आकार जैसी कांटो की बाड़ से

हे देवानुप्रियो ! तमे आ पांच शालिक्खो दो अने वर्षाकाल ना प्रारंभमा अप्कायमहावृष्टि इमे जण वृष्टि थाय त्तारे तमे नानी सरभी ओक कयारी ने आ शालिक्खो पावी शकै ते रीते येअय अनावणे, ( करित्ता इमे पंच शालि अक्खए बावेह बाविस्ता दोच्चपि तच्चपि उक्खइ निहप करेह, करित्ता बाडि पक्खेवं करेह करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुब्बेण संवड्ढेह ) कयारी न्यारे सरस रीते तैयार थइ नय त्तारे तेमां आ पांचे शालिक्खोने वावणे.

पावीने भील अने त्रील वणत उत्थात निहत करे ओटवे के न्यारे शालिक्खो कयारीमां छी नी नय त्तारे तेओना वर्धन साटे ते स्थानेथी उपा-डीने इरी भीने स्थाने रोपो. आ प्रभावे तमे जे त्रलु वणत करे आभ करीने तमे ते शालिक्खोपाणी कयारीनी येअर कांटाओनी वाड अनावो. आ



ततस्तदनन्तरं खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः रोहिण्याः एतमर्थं शाल्यक्षतसंवर्धनरूपमर्थं प्रति शृण्वन्ति—रोहिणी कथनानुसारेण स्वीकुर्वन्ति स्वीकृत्य च तान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृह्णन्ति गृहीत्वा चानुपूर्वेण क्रमेण संरक्षन्ति संगोपायन्ति, 'विहरन्ति' आसते । ततस्तदनन्तरं खलु ते कौटुम्बिकाः पुरुषाः प्रथमप्राद्विपि महादृष्टिकाये निपतिते सति क्षुल्लकं केदारं सुपरिकर्मितं शालिवपनयोग्यं कुर्वन्ति कृत्वा च तान् पञ्च शाल्यक्षतान् वपन्ति द्वितीयमपि तृतीयमपि द्वित्रिवारं 'उक्खय निहण' उखात निहतान् मूलस्थानादुत्पाद्य अन्यत्र स्थाने समारोपितान् कुर्वन्ति कृत्वा बाटिका परिक्षेपं कुर्वन्ति कृत्वा च आनुपूर्व्यां अनुक्रमेण—संरक्षन्तः—सम्यक् रक्षां कुर्वन्तः संगोपायन्तः संवर्धयन्तो विहरन्ति ॥ सू० ५ ॥

उसे घेर दो-और घेर कर उस की रक्षा करो-उपद्रवों से उसे बचावो इस प्रकार क्रमशः इन शालि अक्षतों को तुम लोग बढाओ । ( तएणं ते कौटुम्बिया रोहिणीए पयमद्वं पडिसुणंति ते पंचसालिअक्खए गिण्हंति गिण्हित्ता अणुपुण्वेणं सारक्खेति संगोवंति विहरति ) रोहिणिका के इस शालि अक्षत वर्धनरूप अर्थ को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने स्वीकार कर लिया और उन पांच शालि अक्षतों को उससे ले लिया । लेकर रोहिणीका के कहने के अनुसार क्रमशः उन सब ने रक्षा की और उपद्रवों से उन्हें बचाया ।

( तएणं ते कौटुम्बिया पढमापाउसंसि महा बुद्धिजायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डीयं केयारं सुपरिकम्मियं करंति, करित्ता ते पंच सालि अक्खए ववन्ति दुच्चंपि तच्चंपि उक्खय निहण करंति, करित्ता बाडि परिकखेवं करंति, करित्ता अणुपुण्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संव-

अभाणु तेमे ते वावेत्ता शालिक्खेणा निविधं इति संभाण पुर्वं रक्षा करतां करतां तेज्जाणुं वर्धनं करे । ( तएणं ते कौटुम्बिया रोहिणीए पयमद्वं पडिसुणंति ते पंच सालि अक्खए गिण्हंति गिण्हित्ता अणुपुण्वेणं सारक्खेति संगोवंति विहरति ) रोहिणीका-शालिक्खेणा वर्धनं भाटेना अधा सूयनो कौटुम्बिक पुरुषाणो स्वीकार्या, अने पांचे शालिक्खेणे तेमनी पासेथी लड्डीया. लड्डीने रोहिणीनी सूयना सुज्ज शालिक्खेणा नी तेमणु उपद्रवोत्थी रक्षा करी.

( तएणं ते कौटुम्बिया पढमापाउसंसि महाबुद्धिजायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डीयं केयारं सुपरिकम्मियं करंति, करित्ता ते पंचसालि अक्खए ववन्ति दुच्चंपि तच्चंपि अक्खए निहण करेति, करित्ता बाडिपरिक्खेवं करेति करित्ता अणुपुण्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवइदेमाणा विहरंति ) यथा भाणना

मूलम्—तएणं ते साली अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवाड्ढिज्जमाणा साली जाया किण्हा किण्हो भासा जाव निउरंभभूया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तएणं साली पत्तिया वत्तिया गब्भिया पसूया आगयगंधा खीराइया बद्धफला पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरिय-  
पव्वकंडा जाया यावि होत्था, तएणं ते कोडुंबिया ते सालिए पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं णव पज्जण-  
एहिं असियएहिं लुणेति लुणित्ता करयलमलिए करेति, करित्ता पुणांति, तत्थणं चोवखाणं सूयाणं अवखंडाणं अप्फुडियाणं छड्डुलडाप्पयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए । तएणं ते कोडुंबिया ते साली णवएसु घटएसु पक्खिवंति पक्खिवित्ता

हुमाणा विहरंति ) जब सर्व प्रथम वर्षा काल के प्रारंभ में जलराशी रूप अप्रकाय महा वृष्टि के रूप भूमि पर बरसा तब उन लोगों ने शालि वपन के योग्य एक छोटा क्यारी बनाया । बनाकर उस में उन पांच शालि अक्षतों को बो दिया । बाद में जब वे अंकुर के रूप में उत्पन्न हो गये—तब उन्हें मूलस्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में आरोपित कर दिया । इस तरह दो तीन बार उन्हें उखाड़ और आरोपित किया पश्चात् उस खेत को बाड़ से परिवृत्त कर दिया । इस प्रकार कर के उन सब ने क्रमशः उनकी रक्षा की—उपद्रवों से उन्हें बचाया और उन्हें बढ़ाया ॥ सू० ५ ॥

प्रारंभर्मा न्यादे सौ प्रथम अप्रकाय भडावृष्टि ना इपमां ञ्ण वर्षा थधं त्यादे ते ढोकेअे शालिकेअेने वाववा योअ्य जेवी जेक नान्नी सरणी क्यारी जनावी नान्नी क्यारी जनावीने तेअेअे तेमां पांअ्य शालिकेअेने वाअ्या, न्यादे शालिकेअे अंकुरित थया त्यादे तेअेअे तेमना पोत्ताना भूण स्थानेथी उपाडीने भील स्थाने रैथी दीघा. त्थार भाड क्यारीने तेअेअे कांठानी वाड करी दीघी. आ प्रभाअे ते ढोकेअे थथाअे वावेवा शालिकेअेनी रक्षा करी, उप-  
द्रवेथी तेमनी संधाण राणी अने तेमनुं वधेनं कथुं. ॥ सूत्र “ ५ ”

उवल्लिपंति, उवल्लिपित्ता लंछियमुद्दिष्टं करोति, करित्ता कोट्टा-  
गारस्स एगदेसंस्सि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा  
विहरंति । तएणं ते कोडुंबिया दोच्चंमि वासरत्तंसि पढम  
पाउसंसि महावुद्धिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिक-  
म्मियं निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करोति ते साली  
ववंति दोच्चंमि तच्चंमि उक्खयणिहए जाव लुणोति जाव चलण  
तलमलिष्टं करोति, करित्ता पुणंति तत्थणं सालीणं बहवे कुडवा  
जाव एगदेसंस्सि ठावेति ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा  
विहरंति तएणं ते कोडुंबिया तच्चंसि वासरत्तंसि महावुद्धिकायंसि  
निवइयंसि बहवे केयारे सुपरिकम्मिष्टं जाव लुणोति लुणत्ता  
संवहंति संवहित्ता खलयं करोति खलयं करित्ता मलोति जाव  
बहवे कुंभा जाया, तएणं ते कोडुंबिया साली कोट्टागारंसि  
पक्खिवंति जाव विहरंति चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया  
जाया ॥ सू० ६ ॥

टीका-ततस्तदनन्तरं खलु ते शालय आनुव्यां संरक्ष्यमाणाः संगोप्यमानाः  
संवर्द्धयमानाः शालयः ' जाया ' जाताः-निष्पन्नाः किभूताः ? किण्हा ' कृष्णाः  
वर्णतः श्यामाः ' किण्होभासा ' कृष्णावभासाः कृष्णच्छायाः श्यामकान्तयः यावद्

' तएणं ते साली अणुपुव्वेण ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से साली) अन्य खेत में आरोपित की  
गई वह शाली ( अणुपुव्वेण ) क्रम २ से (सारक्खिज्जमाणा, संगोविज्ज-  
माणा संवद्धिज्जमाणा साली जाया) उन लोगों से रक्षितकी जाकर संगो-  
पित की जाकर बढ़ाई गई सो खूब बढ़ गई (किण्हा किण्हो भासा, जाव

' तएणं ते साली अणुपुव्वेण ' इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यागणाद (से साली) जीवन् जेतव्यां उपाडीने वावेत्ता शालि  
क्षेत्रे। (अणुपुव्वेण) यथाक्रमे (सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा, संवद्धिज्जमाणा  
सालीजाया) तेजोमयी रक्षित, संगोपित तेभ्यः वर्धितं यदने पूज्यं वृद्धि  
पाभ्या। (किण्हा किण्होभासा जाव निवर्त्तयन्त्या, पासाईया दरसणिज्जा, अमिरुवा)

‘मेघ निउरंबभूया’ मेघनिकुरम्बभूता अन्योन्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशात् घन निरंतरच्छायरमणीयमेघानां निकुरंबः समूहस्तद्वत् शोभाशालिन इत्यर्थः अतएव ‘पासाईया’ प्रासादीयाः दर्शकमनः प्रसन्नता हेतुत्वात् ‘दरिसणिज्जा’ दर्शनीयाः नेत्रानन्दकारित्वात् ‘अभिरूवा’ अभिरूपाः कमनीयत्वात् ‘पडिरूवा’ प्रतिरूपा-सर्वथा चित्तहारित्वात् । ततस्तदनन्तरं खल्ल ‘साली’ शालयः ‘पत्तिया’ पत्रिता-पत्रयुक्ता जाता ‘वत्तिना’-वृत्ताकारतया वर्तुला जाता नालरूपतया शाखा-दिना समतया वा वृत्तभावं प्राप्ताः ‘गन्मिया’ गर्मिताः प्रवर्धनानन्तरं जातगर्भाः= अन्तः सञ्जातमञ्जरिका इत्यर्थः ‘पमूया’ पमूताः=निस्सृतमञ्जरिकाः ‘आगय-गंधा’ आगतगन्धाः=सर्वतः प्रसरत्पुष्परमिगन्धाः ‘खीराइया’ क्षीरकिताः= समुत्पन्नदुग्धाः, ‘बद्धफला’ बद्धफलाः क्षीरस्य कणरूपेण परिणामादुत्पन्नफला ‘पक्का’ पक्वाः कणानां परिपाकात् परिपुष्टा ‘परियागया’ पर्यायागताः= सर्वावयवेन पक्कावस्थापुपगताः । ‘सल्लइया’ शलाकिताः=शुष्कपत्रत्वेन

निकुरंबभूया, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा ) वर्ण से वह काली हो गई आभा भी उसकी काली निकलने लगी । यावत् वह मेघ निकुरम्ब समूह जैसी हो गई ।

शाखा प्रशाखाओं के परस्पर में प्रवेश से, सान्द्र और अन्तर रहित छाया से रमणीय मेघों के समूह की तरह वह शोभित होने लगी । जो भी कोई उसे देखता तो उसका मन आनन्द से खिल उठता । नेत्रों को उसके दर्शन से बहुत अधिक शीतलता प्राप्त होती । इसलिये वह कमनीय और प्रतिरूप बन रही थी । चित्ताकर्षक थी और बहुत अधिक मनोज्ञ थी । ( तएणं साली पत्तिया, वत्तिया, गन्मिया, पसूया, आगय गंधा खीराइया, बद्धफला, पक्का, पडियागया, सल्लइया, पत्तइया हरियपव्वकंडा, जाया यावि होत्थो ) धीरे २-समयानुसार वह

ते श्याम रंगना थछ गया, तेभनाभांथी काणी आशा इट्वा लागी. यावत् ते मेघनीकुरंभ जेवां थछ गया.

आ रीते वावेदी ते हांजर शाखा प्रशाखज्जोना प्रवेशथी सांद्र तेभज्ज सधन छायाथी रमणीय मेघसमूहो जेवी शोभवा लागी. जे कोठ तेना ‘सौइय’ ने जेतुं त्यारे तेतुं भन छपंघेल्ल थछने नाथी छत्तुं छत्तुं. तेने जेवाथी नेत्रो शीतलता अनुभवता हत्ता. जेथी ते कमनीय अने प्रतिरूप लागेती हत्ती. ते चित्तने आकर्षनारी तेभज्ज भूणज्ज मनोहरे हत्ती. ( तएणं साली पत्तिया, वत्तिया, गन्मिया, पसूया आगयगंधा, खीराइया बद्धफला पक्कापडियागया, सल्लइया

शलाकारूपेणावस्थिताः 'पत्तइया' पत्रकिताः=पत्रपत्राणां प्रायशः क्षरणादल्प पत्राः, 'हरियपव्वकंडा' हरितपर्वकाण्डाः-हरितानि=परिपक्वतया हरितालवर्णानि आशुक्रानि प्रादुर्भवदङ्कुरवत्पीतवर्णानि - पर्वकाण्डानि येषां ते तथा, जाताश्चाप्य-भवन् सम्पूर्णतया परिपक्वा जाता इत्यर्थः। ततः खलु ते कौटुम्बिकां तान् शालीन्

शाली-धान्य-पत्र युक्त होने लगी, आकारमें गोल २ दिखलाई देने लगी। नाल के ऊपर शाखा आदि-अवयव समान रूप से नीचेकी और छत्तो के समान झुक गये थे इसलिये वह आकार में गोलाकार दिखलाई देती थी। जब वह अच्छी तरह वर्धित हो चुकी तब उसमें भीतर मंजरी आगई और बाहिर निकल आई। चारों ओर सुगंधि उसमें से फैलने लगी।

धीरे २ उस मंजरीमें दूध भा उत्पन्न हो गया। और वह दुग्ध कणरूप से परिणम गया इससे उस मंजरी में अन्न भी आगये। वे अन्नके दाने भी परिपक्व हो गये संपूर्ण रूप से अच्छी तरह पककर पुष्ट हो गये। इस तरह जब वह शालि-धान्य पककर तैयार हो गई-तब उसके पत्ते झुंक हो चले और वे शलाई के आकार में उसमें लटकने लगे। धीरे २ कुछ २ पके हुए पत्ते उसमें से क्षरित भी हो गये। इसलिए उसमें बहुत कम पत्ते लगे हुए रह गये। उसके पर्व काण्ड परिपक्व होने के कारण प्रादुर्भविन अङ्कुर के समान पीले हो गये।

पत्तइया, हरिय पव्वकंडा जाया यावि होत्था) सभय जत्तां यथाक्रमे ते डांगर पांढसा वाणी थवा मांडी, आकारमां ते गोण देखावा लागी, डांगरनी डांडीनी उपर नानी शाखाओ वगेरे अवयवो सरणी रीते छतरीना आकारमां नीचे नभेलां छतां ओथी ज ते आकारमां गोण देखाती छती, न्यारे ते सारी चेठे भोटी थछं गछं त्यरे तेमां भंजरीओ नीकणी, अने तेनी सुवास थोवेर प्रसरी गर्छ, धीमे धीमे भंजरीओमां दूध उत्पन्न थयुं अने यथा सभये ते दूध तेमांज कछुना रूपमां जंघावा लाग्युं, आभ सभय जत्तां शाखिकछु संपूर्ण रीते परिपक्व तेभज पुष्ट थछं गया, आ रीते न्यारे ते शाखिधान्य नो पाक तैयार थछं गथे त्यारे तेना पांढसांसूकाछं गथां अने ते शलाका (सणी) ना आकारे तेमां लटकवा लाग्या, तेमां लटकवा लाग्या धीमे धीमे पांढसां पांढसां तेमांथी भरवा लाग्यां, ओथी जूणज थोडां पांढसां तेनी उपर रडी गथां, तेना पर्वकांड (छांडनी जे गांड वच्चेना लाग) परिपक्व थछं जवाथी प्रादुर्भवित अङ्कुरनी जेम पीणो थछं गथे छतो.

પત્રિતાન્ યાવત્ શલ્યકિત પત્રકિતાન્ જ્ઞાત્વા તીક્ષ્ણૈઃ ' ણવપજ્જણપર્હિ ' નવપા-  
યનકૈ-નવાનિ=નવોનાનિ પાયનકાનિ=છોદ્ધકારેણ તાપિતાનિ કુદ્ધિતાનિ તીક્ષ્ણધારી  
કૃતાનિ કૃત્વા પુનસ્તાપયિત્વા જલે નિવોલનાનિ ચેષાં તાનિ, તૈઃ ' અસિયપર્હિ '   
' અસિય ' રૂપિતા દાત્રાર્થકોડ્યંદેશી શબ્દઃ દાત્રૈરિત્યર્થઃ, હુનન્તિ=છેદયન્તિ, લઘિતા  
' કરતલમલિય ' કરતલમૃદિતાન્ કર લઘર્ષણેતાન્ કુર્વન્તિ, શાલિકણાન્ મઙ્ગ  
રીતો નિસ્સારયન્તીત્યર્થઃ ' [પુણંતિ ' હુનન્તિ પલાલાદીનપસારયન્તિ તત્ર સ્વહુ=

( તપ્પણં તે કૌડુંબિયા તે સાલીય પત્તિય જાવ સલ્લહ્ય પત્તિય  
જાણિત્તો તિક્કલે હિં ણવપજ્જણપર્હિ અરિ રપર્હિ હુણેતિ, હુણિત્તા  
કરયલમલિય કરેતિ, કરિત્તા પુણંતિ, તત્થણં ચોક્કણાણં સયાણં અક્કલ્લ-  
ઙ્ગાણં અપ્પહિયાણં હદ્ધહ્ધાપૂયાણં સાલીણં માગહપ પત્થપ જાપ ) રસ  
તરહ જલ્લ વહ શાલિ-સલ્લ પૂર્ણરૂપ પકકર તયાર હો ગઈ ઓર જલ્લ ઓન  
કૌડુંબિકપુરુષોને ઓસે પત્રિત યાવત્ શાલ્યકિત પત્રકિત-પકે હુપ પત્તો  
ચાલી ઓર શાલિ સે યુક્ત દેલા તો ઓસે પૂર્ણ પકી હુઈ જાનકર તીક્ષ્ણ  
નલ્લ પાયનક લાલે દાત્રો સે-રૈસિયોસે ઓન લોગોં ને ઓસે કાટ લિયા ।

“ હુહાર કે દ્વારા જો તાપિત ઓર કુદ્ધિત કર પહિલે તીક્ષ્ણ ધારી  
લાલે લનાયે ગયે ચે હૈં ઓર લાદ મેં ફિર તાપિત કર જલમેં લુલાયે ગયે  
હૈં ” યહ “ નલ્લ પાયનક ” રસ શબ્દ કા અર્થ હૈં । યહ “ આસિયપર્હિ ”  
યહ રૈસિયા ( દાત્ર ) લાચક દેશીય શબ્દ હૈં । કાટકર ફિર ઓન્હોને  
ઓસલાલિ મંજરો મેં સે હાથોં સે મર્દિત કર શાલિકણોં કો નિકાલા ।

( તપ્પણં તે કૌડુંબિયા તે લાલીય પત્તિય જાવ સલ્લહ્ય પત્તિય જાણિત્તો  
તિક્કલેહિં ણવપજ્જણપર્હિ આસિયપર્હિ હુણેતિ હુણિત્તા કરયલમાલિય કરેતિ, કરિતા  
પુણંતિ તત્થણં ચોક્કણાણં સયાણં અક્કલ્લઙ્ગાણં અપ્પહિયાણં હદ્ધહ્ધાપૂયાણં લાલી  
ણં માગહપ પત્થપ જાપ ) આ પ્રમાણે લ્યારે તે શાલિલાન્ય પૂર્ણરૂપે પરિપકલ્લ  
થઈને તૈયર થઈ ગઈ ત્યારે કૌડુંબિક પુરુષોએ તેને પત્રિત યાવત્ શલ્યકિત  
પત્રકિત એટલે કે પાકેલાં પાંદડાં લાળી ભેઈ ત્યારે તેને પૂર્ણરૂપે પરિપકલ્લ  
થયેલી ભણીને તીક્ષ્ણ ધારલાળી હાતરડીથી તેને કાપી નાખી.

“ હુહાર વડે તપાવી તેમજ ડીપીને પહેલા તીક્ષ્ણ ધારલાળાં બનાવલામાં  
આવે અને ત્યા બાદ ફરી તપાવીતે પાણીમાં ઠંડાં કરવામાં આવે તેને ‘ નલ્લ-  
પાયનક ’ કહેવામાં આવે છે.

‘ આસિયપર્હિ ’ આ દાત્ર ( હાતરડી ) લાચક દેશી શબ્દ છે.

હાંગરને કાપીને તેઓએ શાલિમંજરીઓને હથેળીથી મસળીને શાલીકણો  
હટા પડ્યાં. ભૂસાને તેઓએ ત્યાંથી દૂર કઢ્યું. આ રીતે તે સ્થાન ભૂસુ

तस्मिन् स्थाने 'चोक्खाणं' चोक्षाणं=कचवरनिस्सारणेन स्वच्छानाम् 'सुइयाणं' शूकितानां=शूकयुक्तानां वपनयोग्यानामित्यर्थः 'अखंडाणं' अखण्डानाम्=अख-  
तानाम् 'अप्फुडियाणं' अस्फुटितानाम्=अत्रुटितानाम् 'छड्छडापूयाणं' छड-  
छडापूतानाम्- 'छड-छड' शब्दपूर्वकं सूर्पादिना शोभितानां शालीनां शालि-  
कणानां 'मागइए' मागधकः- मागधदेशप्रसिद्धः, 'पत्थए' प्रस्थकः=मानविज्ञेयो  
जातः, मागधप्रस्थपरिमिताः शालयः संजाता इत्यर्थः ।

ततः खन्तु ते कौटुम्बिकास्तान् शालीन् 'नवएसु' नवकेषु=नूतनेषु  
घटेषु लघुकलशेषेषु 'पक्खिबंति' प्रक्षिपन्ति=स्थापयन्ति भरन्वीत्यर्थः, उल्लिप्य  
'उवलिपंति' उपलिम्पन्ति=घटमुखे पिधानकस्य गोमयादिना संयोजनेन मुख  
निरोधं कुर्वन्ति. उपलिप्य 'लंछियमुद्दिए' लान्छियमुद्दितान् लान्छिता= रेखादि-

उसके प्यार आदिको पलाल को-वहां से हटाया । इस तरह उसस्थान  
में चोखे-कूड़ाकरकट निकलजाने से बिलकुल स्वच्छ हुए-शूक युक्त  
-वपन योग्य ऐसे अखंड-अभ्रत-साबिते-टूटे नहीं तथा छड़ छड़ शब्द  
पूर्वकं सूर्पादि से शोभित किये गये शालिकण निकले जो मागध देश  
प्रसिद्ध १ प्रस्थ प्रमाण हुए । ( तएणं ते कौडुंबिया ते सालि णवएसु,  
घडएसु, पक्खिबंति पक्खिबित्ता उवलिपंति, उवलिपित्ता लंछियमु-  
द्दिए करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेसंसि ठावेति, ठावित्ता सारक्खे-  
माणा, संगोवेमाणा विहरंति ) इस के बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने  
उन शालिकणों को नवीन छोटे २ घडों में भरकर रख दिया ।  
भरने के बाद उन घडोंका मुख ढँक दिया और उसे गोबर आदि  
से लीपकर बंदकर दिया । बन्द करके फिर उन घडों को रेखादि चिह्न

पगेरे साइ करवायो स्वच्छ शालिकणो शूक युक्त-वाववा योअ, अण्ड-अक्षत  
सूप पगेरे, थी छड छड शब्द कराववावीने साइकरेखां शालिकणो नीकय्या.  
ते शालीकणो मागधदेश प्रसिद्ध ओक प्रस्थ प्रमाणु छंता. ( तएणं ते कौडुंबिया  
ते सालिणवएसु घडएसु पक्खिबंति पक्खिबित्ता, उवलिपंति उवलिपित्ता लंछियमु-  
द्दिए करेति, करित्ता कोट्टागारस्स एगदेसंसि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा,  
संगोवेमाणां विहरंति ) तयार भाइ कौटुम्बिक पुरुषोअे शालिकणोने नवा नाना  
नाना कणशोभां करीने भूझी दीधा.

तयार भाइ कणशोना भों ढांडीने तेभने छाखु पगेरेथी लीपीने अंध  
करी दीधा. कणशोने अंध करीने रेणाओ. पगेरेथी तेभने बिहित करीने तेभना  
कपर नामनी भडोर लगावी दीधी. तयार पछी लंकारभां ओक तरइ कणशोने

चिह्नेन चिह्निताः, मुद्रिताः=नाममुद्रादिनाऽङ्कितास्तान् कुर्वन्ति, कृत्वा 'कोट्टागारस्य' कोट्टागाहस्य एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा संरक्षन्तः संगोपायन्तो विहरन्ति ।

ततः खलु ते कौटुम्बिका द्वितीये वर्षारत्रे द्वितीयवर्षसम्बन्धि चातुर्मास्यकाले प्रथमप्रातृषि प्रातृद् प्रारम्भसमये महावृष्टिकायेऽनिर्पतिते महावर्षायां सस्यां क्षुल्लकं केदारं 'सुपरिकम्मियं' सुपरिकर्मितं=विशिष्टं \*लक्षणमृत्तिकादिदानेन हलकुट्टालादिनोत्खनने च संस्कारितं कुर्वन्ति, कृत्वा तान् शालीन् वपन्ति 'दोच्चं पि तच्चं पि' द्विरपि त्रिरपि=द्वित्रिशारमापि 'उक्खयनिहए' उत्त्वातनिहतान्=उत्पाटितरोपितान् यावत् लुनन्ति, यावत् चरणतलमृदितान् कुर्वन्ति, कृत्वा पुनन्ति

से चिह्नित कर उनपर नामकी सुहर लगा दीं । पश्चात् भंडार में उन्हें एक ओर रख दिया । समय २ पर वे लोग उनकी रक्षा और संभाल भी करते रहे । ( तएणं ते कौटुंबिया दोच्चं पि वासारत्तंसि पढम पाउत्तंसि महावुद्धिकायंसि निवहयंसि खुद्वागं केयारं सुपरिकम्मियं करेति ) इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोने द्वितीय वर्ष संवन्धी चौमासा जब लगा -तब-सर्व प्रथम महवृष्टि के रूप में जल के बरस जाने पर, हल से जोत कर तथा कुट्टाल आदि से खोदकर एक छोटा सा खेत तैयार किया । उसमें चिकनी और नरम मिट्टी डालकर उसे बहुत ही अच्छा शालि उपजाने के योग्य बना दिया । ( ते शालि वपन्ति, दोच्चं पि तच्चं पि उक्खय निहए जाव लुण्णेति ) बादमें उस शाली को उसमें बो दिया ।

पहिले की तरह जब वह धान्य अंकुरित हो आई तब उन्होंने उसे वहां से उखाड़ कर दूसरी जगह आरोपित कर दिया । इस तरह यह

मूली दीधा. यथा अभय तेजो तेमनी अंभाण पणु राभता डता. ( तएणं ते कौटुंबिया दोच्चं पि वासारत्तंसि पढम पाउत्तंसि महावुद्धिकायंसि निवहयंसि खुद्वागं केयारं सुपरिकम्मियं करेति ) त्थार पछी कौटुम्बिक पुरुषोने धीन वषे योमासाना दिवसे आन्धां त्थारे सौ पडेवां महावृष्टिना इपे जणवषां थया आद डण्ठो जेडीने तेमज केदाणी वजेरे थो जेदीने जेक नातुं जेतरे त्थार क्थुं नेमां थिकण्णी अने केमण माटी नाणीने तेने भूणज सरस शालि (हांगर) वावरा योम्य भनावी दीधुं (ते साळीवपन्ति, दोच्चं पि तच्चं पि उक्खय-निहए जाव लुण्णेति) त्थार पछी जेतरेमां शालिनेवावी दीधी.

पडेवांनी जेम न्थारे शालिना अंकुरे भंडार नीडण्या त्थारे कौटुम्बिक माणुसे जे तेना छोडेने त्यांथी उपाडीने धीन स्थाने रे.पी दीधा. आ



तत्र खलु शालीनां बहवः कुडवाः शालिसंभृता बहवः कुडवा अभूवन् संजाताः, यावत् एकदेशे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा संरसन्तः संगोपायन्तो विहरन्ति । ततः खलु ते कौटुम्बिकास्तृतीये वर्षारात्रे महावृष्टिकाये निमित्ते सति बहून् केदारान् सुपरिकर्मितान् यावद् लुण्ठन्ति, लुब्धत्वा संवहन्ति=भाररूपेण तान् बद्ध्वा मस्तके स्कंधेवा निधाय खले स्थापयितुं समानयन्ति । तत्रतोऽपनीय तान् सवहन्ति, समुह्य=समानीय 'खलयं' खलकं=धान्यमर्दनस्थानं 'करेति' कुर्वन्ति शालीन् खले स्थापयन्तीत्यर्थः, कृत्वा=खले संस्थाप्य 'मलेति' खले प्रसार्यत्रीवर्द्धयन्ति

उत्खाक (उखारना) निखात (रोपना) रूपक्रिया उन्होंने दो तीन बार की यावत् धीरे २ उसके पूर्णतः पकजाने पर उन्होंने ने उसे काट लिया । (जाव चरण तल मलिए करेति, करेत्ता पुर्णति, तत्थणं सालीणं बहवे कुडवा जाव एगदेसंसि ठावेति ठाविता सारवखमाणा संगोवेमाणा विहरन्ति) यावत् उसे अपने २ पैरों के तलियों से मर्दित किया । बाद में उसे पलालआदि के अपसारण (दूर) से साफ किया । इस तरह वहाँ शालियों के अनेक कुडव (घड़े) उन से भर गये । यावत् उन कुडवों (घड़ों) को उन्होंने ने ले जाकर पहिले की तरह भंडार में एक तरफ रख दिया ।

रखकर वे समय २ पर उनकी सारसंभाल भी करने लगे । (तएण ते कौटुम्बिया तच्चंपि वासारत्तंसि महा बुद्धिकायंसि निवड्यंसि बहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुण्ठेति, लुणिता संवहन्ति संवहिता खलयं करेति, खलयंकरेत्ता मलेति, जाव बहवे कुंमा जाया) इस तरह धीरे २ समय निकल ने पर जब तीसरी बार वर्षा काल सम्बन्धी

रीते आ उत्थात (उपासु) निष्ठात (शेष) नी किया तेमणे ने त्रयवार करी। समय जाता यथासमये जाये पाक तैयार थो गये त्थारे तेओओ तेने कापी दीधा।

(जाव चरण तल मलिए करेति कोत्ता पुर्णति, तत्थणं सालीणं बहवे कुडवा जाव एगदेसंसि, ठावेति ठाविता सारवखमाणा संगोवेमाणा विहरन्ति)

अने 'यावत्' तेने पोताना पगोथी मर्दित कर्यो त्थार पछी तेमांथी लुंठं वगेरे साक्षं कथुं. आ प्रमाणे त्यां शालिओ (डांगर) ना घण्टा कुडव-कण्ठो-भराथ गया. आ रीते ते कौटुम्बिक पुरुषोओ पडेलान्नी ओम न शालिथी परिपूर्य कण्ठोने काष्ठरमां ओक तरक्षं भूरी दीधा. यथा समय शालिना कण-थोनी तेओ संधाण पण्ण राधता डता.

(तएण ते कौटुम्बिया तच्चंपि वासारत्तंसि महाबुद्धिकायंसि निवड्यंसि बहवे केयारे सुपरिकम्मिए जाव लुण्ठेति, लुणिता, संवहन्ति संवहिता खलयं, करेति, खलयं करेत्ता मलेति जाव बहवे कुंमा जाया)

यावत् बहवः=बृहद्घटाः जाताः=अनेकबृहद्घटाः शालिपूर्णा अभूवन्मित्यर्थः । ततःखलु ते कौटुम्बिकाः शालीन् कोष्ठागारे पक्षिपन्ति=स्थापयन्ति यावत् संगोपायन्तो विहरन्ति । चतुर्थे 'वासारत्रे=चतुर्थवर्षसम्बन्धि-चातुर्मास्यकाले वर्षि-

चौमासा प्रारंभ हुआ और उस में सर्व प्रथम महावृष्टि के रूप में जब जलकी वर्षा हुई तो उन कौटुम्बिक पुरुषों ने अनेक खेन सुपरिकर्मित किये उन में उस शाली को बो दिया । यावत् उसे काट लिया । जब वह सब कट चुकी तब गद्दा के रूपमें बांधा तब मस्तक परस्कंध पर भार रूप से उसे रख कर वे सब खलिहान में ले आये । लाकर वहाँ उन्हीं ने धान्यमर्दन के योग्य खलिहान तैयार किया । उस के तैयार हो जाने पर उस में उस शाली को फैला कर रख दिया । बाद में बैलों द्वारा उस की दाँय की । यावत् वह धान्य इतना निष्पन्न हुआ कि उससे षडे २ षडे भर गये । ( तर्पणं ते कौटुम्बिया साली कोट्टागारंसि पक्खिवेति, जाव विहरन्ति, चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंमसया जाया ) इसके बाद उन लोगों ने उन धान्य को कोट्टागार में रख दिया और समय २ उस की देखभाल करने लगे । इसी तरह जब चौथे वर्ष का चतुर्मास

आ रीते समय पसार यतां न्यारे त्रील्ल वपत वर्षा कण आव्ये आने मंडापण्डिना इपे प्रथम वण वर्षा यध त्यारे कौटुम्बिक पुरुषोच्चे वधुां जेतरे तैयार कर्थां.

अधा जेतरेभां तेज्जोच्चे शादी वावी. आने आभ समय जतां न्यारे ते पडेवांनी नेम परिपक्व यध अध त्यारे कौटुम्बिक पुरुषोच्चे शादिने पाक कापी दीधा. न्यारे वधुषी यध त्यारे वाराज्जा भांधी भावे तेमव अले भूझीने अधा जेतरेनी शादिने जणाभां वध आव्या. त्यां वावीने तेज्जोच्चे धान्य मर्दन येज्य अणुं तैयार कथुं तैयार कर्थां आह तेज्जोच्चे शादि ने पाथरी दीधी. आने जणडे इरवीने अणुं कथुं आ प्रभाजे आभगनी पडेवांनी नेम अधी विधिज्जा पताव्या आह जेतरेभांशी शादिधान्य आटलुं अधुं यधुं के नेनाथी वधुा मोटा मोट कणशे बराध गया.

( तर्पणं ते कौटुम्बिया साली कोट्टागारंसि पक्खिवेति, जाव विहरन्ति च उत्थे वासारत्ते बहवे कुंमसया जाया )

त्यार आह तेज्जोच्चे श दिधान्य भी वरैवा कणशेने केकाशभां भूझी दीधा. आने यथा समय तेमनी संवाण राभवा लाव्या. आ प्रभाजे व येथा वर्षा. का २७

तामां शालीनां बहूनि कुम्भशतानि जातानि बहूनि कुम्भशतानि शालिसंभृतानि  
जातानि ॥ सूत्र ॥ ६॥

मूलम्—तएणं तस्स धणस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परि-  
णममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झात्थिए  
जाव समुप्पजित्था एवं खलु मए इओ अईए पंचमे संवच्छरे  
चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणद्वयाए ते पंचसालि अक्खया हत्थे  
दिस्सा तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते पंच सालिअक्खए  
पडिजाइत्तए जाव जाणामि ताव काए किण्हं सारक्खिया वा  
संगोविया वा संवाड्डिया जाव न्ति क एवं संपेहेइ, संपेहिच्चा  
कल्लं जाव जलंते विउलं असणपाणिखाइमसाइमं उवक्खडा-  
वइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर  
जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल-  
घरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी  
—एवं खलु अहं पुत्ता ! इओ अईए पंचमांसि संवच्छरंसि इम-  
स्स मित्तनाइ० चउण्हं य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ  
तव हत्थंसि पंचसालि अक्खए दलयामि, जयाणं अहं पुत्ता !  
एए पंचसालि अक्खए जाण्जा तयाणं तुमं मम इमे पंच  
सालिअक्खए पडिदिज्जाएसित्ति, से नूणं पुत्ता ! अट्ठे समट्ठे,

प्रारंभ हुआ तब उस समय बोई गई और वर्धित हुई उस धान्य के  
सैकड़ों कुंभ तैयार हो गये । अर्थात् वह धान्य इतनी अधिक निपजी  
कि जिससे सैकड़ो बड़े २ घट्टे उससे भर गये । सूत्र " ६ "

आमासामां वाववामां आवेदी शालिथी से'डो भोटा कणशो लराध गथा.  
जेट्ठे डे'शालि धान्येनो जेट्ठो. जघो सरस पाडे तैयार थयो डे तेनाधी  
से'डो भोटा भोटा कणशो लराध गथा. ॥ सूत्र " ६ " ॥

हंता अत्थि । तएणं पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए पडिनि-  
 ज्ञाएहि । तएणं सा उज्झिया धणंस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं  
 सम्मं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव कोट्टागारं तेणेव उवाग-  
 च्छइ, उवागच्छित्ता पल्लाओ पंचसालिअक्खए गेणहइ, गिण्हित्ता  
 जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं  
 सत्थवाहं एवं वयासी एएणं ते पंचसालिअक्खए-त्ति कट्ठु  
 धणंस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच सालि अक्खए दलयइ ।  
 तएणं धण्णे सत्थवाहे उज्झियं सवहसावियं करेइ, करित्ता  
 एवं वयासी-किं णं पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालि अक्खए  
 उदाहु अन्ने ? । तएणं उज्झिया धणं सत्थवाहं एवं वयासी-  
 एवं खलु तुब्भे ताओ ! इओ अईए पंचमे संवच्छरे इमस्स  
 मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल० जाव विहराहि । तएणं  
 अहं तुब्भं एयमट्ठं पडिसुणित्ता ते पंचसालिअक्खए गेणहामि,  
 गिण्हित्ता एगंतमवक्कमामि । तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए  
 जाव समुपजित्था-एवं खलु तायाणं कोट्टागारंसि० जाव संक-  
 म्मसंपउत्ता जाया, तं ण खलु ताओ ते चेव पंच सालिअक्खए  
 एएणं अन्ने । तएणं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं  
 सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झितियं  
 तस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ  
 तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च  
 समुच्छियं च सम्मच्छियं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च  
 बाहिरपेसणकारिं ठवेइ ।

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा णिगंथी  
वा जाव पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं उज्झियाइं भवन्ति सेणं  
इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ जहा  
सा उज्झिया ॥ १ ॥

एवं भोगवइयावि, नवरं तस्स जाव कंडंतिथं च कुट्टंतिथं  
च पीसंतिथं च, एवं रुधंतिथं, रंधंतिथं, परिवेसंतिथं च परि-  
भार्यंतिथं च अब्भंतरियं च पेसणकारिं महाणसिणि ठवेइ ।

एवामेव समणाओ ! जो अम्हं समणो वा जाव पंचयसे  
महाव्वयाइं फोडियाइं भवन्ति से णं इह भवे चेव बहूणं सम-  
णाणं ४ जाव हीलणिजे ४ जहा व सा भोगवइया ॥ २ ॥

एवं रक्खिइयावि, नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते  
पंचसालिअक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे तेणेव उवा-  
गच्छइ, उवागच्छित्ता पंचसालिअक्खए धण्णस्स हत्थे दलयइ ।  
तएणं से धण्णे रक्खिइयं एवं वयासी—किं णं पुत्ता ते चेव एए  
पंचसालिअक्खया उदाट्ठु अन्ने ? त्ति । तएणं रक्खिइया धण्णं  
सत्थवाहं एवं वयासी—ते चेव ताया । एए पंच सालिअक्खया  
णो अन्ने । कहं णं पुत्ता ! एवं खलु ताओ तुब्भे इओ पंचमंमि  
जाव ‘भवियव्वं एत्थ कारणेणं’—ति कट्ठु ते पंचसालिअक्खए  
सुद्धे वत्थे जाव तिसंझं पडिजागरमाणी२ विहरामि, तं एएणं  
कारणेणं ताओ ! ते चेव एए पंच सालिअक्खया, णो अन्ने ।  
तएणं से धण्णे रक्खिइयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठुट्ठं

तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य जाव कंसदूस विउल धण जाव  
साव तेजस्स य भंडागारिणिं ठवेइ ।

एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महव्वयाइं रक्खि-  
याइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे ४  
जहा व सा रक्खिया ॥ ३ ॥

रोहिणियावि एवं चेव, नवरं तुब्भं ताओ ! मम सुबहुयं  
सगडीसागडं दलाह जेणं अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडि-  
णिज्जाएमि । तएणं से धणणे रोहिणिं एवं वयासी—कहं णं  
पुत्ता ! तुमं मम ते पंच सालिअक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइ-  
स्ससि ? । तएणं सा रोहिणी धणणं एवं वयासी—एवं खलु  
ताओ ! तुब्भे इओ पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त० जाव बहवे  
कुंभसया जाया, तेणेव कमेणं, एवं खलु ताओ ! तुब्भे ते पंच  
सालिअक्खए सगडीसागडेणं निज्जाएमि । तएणं से धणणे सत्थ-  
वाहे रोहिणियाए सुबहुयं सगडीसागडं दलयइ । तएणं सा  
रोहिणी सुबहुं सगडीसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्टागारं विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले  
उब्भिदइ, उब्भिदित्ता सगडीसागडं भरेइ, भरित्ता रायगिहे  
नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धणणे सत्थवाहे  
तेणेव उवागच्छइ । तएणं रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव बहु-  
जणो अन्नमन्ने एवमाइक्खइ — धन्नेणं देवाणुप्पिया ! धणणे  
सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणिया सुण्हा पंच सालिअक्खए सगड-  
सागडिएणं निज्जाएइ । तएणंसे धणणे सत्थवाहे ते पंच सालि-

अक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ताहट्ठं पडि-  
च्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल-  
घरस्स पुरओ रोहिणियं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य  
जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव सब्बकज्जवड्ढावियं  
पमाणभूयं ठावेइ ।

एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महाव्वया संवड्ढिया  
भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं० ४ अच्चणिज्जे जाव  
वीईवइस्सइ जहा व सा रोहिणिया ।

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स  
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते—त्तिबेमि ॥

॥ सत्तमं नायज्झणं समत्तं ॥ ७ ॥

टीका—‘तएणं तस्स’ इत्यादि । ततः खलु तस्य धन्यस्य=धन्यसार्थवा  
वाइस्य पञ्चमे संवत्सरे ‘परिणममाणंसि’ परिणम्यमाने=संपूर्यमाणे सति पूर्वा-  
त्रापररात्रकालसमये अयमेतद्रूपः— आध्यात्मिकः=आत्मनि विचारः यावत्  
मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत—एवं खलु मया ‘इओ’ इतः=अद्यतनाद्विसात्प्राग्  
अतीते पञ्चमे वर्षे चतसृणां स्तुषाणां ‘परिक्खणट्ठ्याए’ परीक्षणाधीन=बुद्धि-

‘तएणं तस्स धण्णस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तस्स धण्णस्स) उस धन्य सार्थवाह को  
(पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि) पांच वर्ष जब पूर्ण हो चुके,  
तब (पुनर्वरात्रकालसमयंसि) मध्यरात्रि के समय में (इमेयाक्खे  
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत्  
मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ (एवं खलु मए इओ अईए पंच में

“तएणं तस्स धण्णस्स” इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थार आह (तस्स धण्णस्स) धन्य सार्थवं होने  
(पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि) पांच वर्षों के पूरा होने (पुनर्वरात्र-  
कालसमयंसि) अर्द्ध रात्रिना पद्यते (इमेयाक्खे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था  
अथा) अतः आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पद्यते ।

परीक्षार्थं ते, पञ्च शाल्यक्षता हस्ते दत्ता आसन्, 'सेयं' श्रेयः=उचितम् अस्य प्रतियाचितुमित्यनेन संबन्धः । एवं खलु मम कल्ये यावज्ज्वलति=सूर्योदये सति=प्रभाते पञ्चशाल्यक्षतान् 'पडिजाहत्तए' प्रतियाचितुं=प्रतिग्रहीतुम्, 'जाणामि' जानामि=तदधुना निर्णयामि यत्- 'जाव' यावत्=यावत्संख्यकाः शाल्यक्षता मया दत्तास्ते 'ताव' तावत्=तावन्परिमिताः कया स्तुपया 'किहं' कथं=केन प्रका-  
रेण संरक्षिताः संगोपिताः संवर्द्धिता यावत् 'तिकु' इति कृत्वा इत्यभिप्रायं मनसि निधाय एवं=इत्यमागप्रकारेण संपेक्षयति=विचारयति, संपेक्ष्य कल्ये यावज्ज्वलति प्रभातसमये विपुलमशनं पानं स्वाद्यं चतुर्विधमाहारम्. उपस्का

संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिकखणट्टयाए ते पंच सालि अक्खया हत्थे दिन्ना-तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलं ते पंच सालि अक्खए पडि-  
'जाहत्तए' ) कि मैंने आज से गत पांचवे वर्ष में चारों अपनी पुत्रवधूओं के उन की बुद्धि की परीक्षा के निमित्त हाथों में उन पांच पांच शालि-  
अक्षतों को दिया था, तो अब प्रातःकाल होते ही जब सूर्योदय हो जाय-  
गा-मैं उन पांच शालि अक्षतों को उनसे पीछे मांग लूँ यह उचित है ।

( जाव जाणामि ताव काए किण्हं सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्डिया जाव त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ ) इससे मैं यह निर्णय कर लूँगा कि जितने शाल्यक्षत मैंने उन्हें दिये थे वे उतने शाल्यक्षत किस पुत्र वधू ने किस प्रकार से संरक्षित किये हैं, संगोपित किये हैं और संवर्द्धित किये हैं । इस पूर्वोक्त प्रकार से उसने विचार किया ( संपेहिन्ता

( एवं खलु मए इओ अईए पंचये संवच्छरे चउण्हाणं परिकखणट्टयाए ते पंचसालि अक्खया हत्थे दिन्ना-तं सेयं खलु मम कल्लं ते जाव जलं ते पंचसालि अक्खए पडिजाहत्तए )

के आनन्धी पांच वर्ष पीछेवां मे आरे पुत्रवधूओने तेमनी बुद्धि परीक्षा भाटे तेमना छेओमां पांच शालिक्खो-आप्पा छता तो छवे सवारे सूर्य उठय पामतानी साथे न हुं तेमनी पासेथी पांचे शालिक्खो पाछा भाउं ओ न उचित छे.

( जाव जाणामि ताव काए किण्हं सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्डिया जाव त्ति कट्ठु एवं संपेहेइ )

ओनाथी मने ओ वातनी अणर पडये के मे नेटवां शालिक्खो तेमने आप्पा छता तेने कछ पुत्रवधूओ केवी रीते संरक्षित, संगोपित तेमन संवर्द्धित कयां छे. आ रीते तेओ विचार कयां.



रयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिप्रभृतीन् चतसृणां च स्नुषाणां कुलगृहवर्गेण सार्द्धं भोजयित्वा यावत्तान् संमान्य तस्यैव मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतो 'जेढं' ज्येष्ठां=ज्येष्ठपुत्रवधूम् 'उज्झियं' उज्झिताम्=उज्झितानाम्नीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्- एवं खलु अहं पुत्रि ! इतोऽतीते पञ्चमे संवत्सरे अस्य मित्रादेश्वतसृणां स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतस्तव हस्ते पञ्च शाल्यक्षतान् 'दलयामि' ददामि=दत्तवान् कथितवांश्च

कल्लं जाव जलंते विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेइ-उवक्खडावित्ता-मित्तनाइ० चउण्ह सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेढं उज्झियं सदावेइ ) विचार कर के फिर उसने प्रातःकाल सूर्योदय होने पर विपुलमात्रा में अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप से चारों प्रकार का आहार तैयार करवाया ।

जब चारों प्रकार का आहार अच्छी तरह निष्पन्न हो चुका तब उसने अपने समस्त मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के और चारों पुत्रवधूओं के कुलवर्ग के साथ भोजन किया । बाद में उन सबका सम्मान सत्कार किया । और उन्हीं मित्रादि परिजनों के एवं अपनी चारों पुत्रवधूओं के कुलवर्ग के समक्ष जेठी जो पुत्रवधू थी कि जिस का नाम उज्झिता था उसे बुलाया । ( सदावित्ता एवं वयासी एवं खलु अहं पुता ! इओ अईए पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाणं

( संपेहिता कल्लं जाव जलंते विउलं असण पाण खाइमं उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता मित्तनाइ. चउण्ह सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओजेढं उज्झियं सदावेइ )

विचार करीने तेले सवारि सूर्यो उदयपात्र्या भाइ अशन, पान भाइ अने स्पर्ध आभ आर भतने पुष्केण प्रमाणभां आहार तैयार करवावडाव्यो.

आरे भतने आहार सारी रीते तैयार थइ गये त्यारे तेले पोताना भाधा मित्र ज्ञाति वर्गेरे परिजने। तेभज आरे पुत्रवधूओनां सगावडावांओनी साथे बोजन कयुं. जभ्या भाइ तेले भाधाने सत्कार तथा सम्मान कयुं. त्यारभाइ मित्र वर्गेरे परिजने। अने आरे पुत्रवधूओनां सगावडावांओनी साथे तेले मोटा पुत्रनी वधू उज्झिताने बोलावी.

( सदावित्ता एवं वयासी एवं खलु अहंपुता । इओ अईए पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ तव इत्थंसि पंचशालि अवक्खए दलयामि )

यदा खलु अहं पुत्रि ' एतान् पञ्च क्षात्र्यक्षतान् याचयेयं तदा खलु त्वं महामि-  
मान् पञ्च क्षात्र्यक्षतान् प्रतिदद्याः ' इति, स नूनं पुत्रि । अर्थः समर्थः ? उज्ज्विता  
प्राह- इन्त ! अस्ति=एतत्सत्यमस्ति । श्रेष्ठीप्राह- ' तं ' तत्=तस्मात् खलु  
त्वं हे पुत्रि । मम तान् ' पडिनिज्जाएहि ' प्रतिनिर्यातय=प्रतिसमर्पय । ततःखलु  
सा उज्ज्विता धन्यस्य सार्थवाहरय एतमर्थं सम्यक् प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रति-  
श्रुत्य यत्रैव कोष्ठागारं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' पल्लाओ ' पल्लात=शालि

कुलधरचग्गस्स पुरओ तव हत्यंसि पंच सालि अक्खए दलयामि )  
बुलाकर उससे ऐसा कहा हे पुत्रि ! आज से गन पांचवें वर्ष में मैंने जो  
इन मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों के और चारों पुत्रवधूओं के कुल गृह-  
वर्ग के समक्ष तुम्हारे हाथ में पांच शालि-अक्षतों को दिया था ।  
( जयाणं अहं पुत्ता एए पंच सालि अक्खए जाएज्जा ) - और हे पुत्रि  
ऐसा कहा था कि जब मैं इन पांच शालि-अक्षतों को मांगूँ ( तयाणं  
तुमं मम इमे पंच सालि अक्खए पडिदिज्जाएसि स्ति ) तब तुम मुझे इन  
पांच सालि-अक्षतों को पीछे बापिस दे देना ( सेणूणं पुत्ता अट्ठे समट्ठे )  
हे पुत्रि ! कहो यही बात कही थी न ? ( हंता अत्थि ) तब उज्ज्विताने  
कहा-हाँ यही बात कही थी ( तण्णं पुत्ता ! मम ते सालि अक्खए  
पडिदिज्जाएहि ) तो पुत्रि ! तुम मुझे उन पांच शालि अक्षतों को अब  
पीछे बापिस दे दो । ( तएणं सा उज्ज्विया घण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं  
सम्मं पडिसुणेह पडिसुणिक्का जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ )

गोदावरीने तेणु कहुं के हे पुत्रि ! आबथी पांच वर्ष पडेलां मे  
तने आ अब मित्र ज्ञाति वगेरे परिजने आने-आरे पुत्रवधूओंना सगां  
वडादांओनी आगे तमारा हाथमां पांच शालिकणु आभ्यां छता.

( जयाणं अहं पुत्ता एए पंचसालि अक्खए जाएज्जा )

आने ओम कहुं छतुं के न्यारे हुं तमारी पासैथी आ पांच शालिकणु भाशुं

( तयाणं तुमं मम इमे पंच सालि अक्खए पडिदिज्जाएसि स्ति )

त्यारे तमे भने आ पांचे शालिकणु पाछा आभने. ( सेणूणं पुत्ता अट्ठे  
समट्ठे हे पुत्रि ! गोदो मे तमने ओज वात कही छती ने ? ( हंता अत्थि )  
त्यारे उल्लिखताये कहुं- " छ ओज वात कही छती. " तण्णं पुत्ता ! मम ते  
सालि अक्खए पडिनिज्जाएहि ) तो हे पुत्रि ! ते पांचे शालिकणु तमे भने  
पाछा आपीदो.

( तएणं सा उज्ज्विया घण्णस्स सत्थवाहस्स, एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेह पडिसुणि-  
क्का जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ )

કોષ્ટાત્ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ શુક્લાતિ, શુદ્ધીત્વા યત્રૈવ ધન્યઃ સાર્થવાહસ્તત્રૈવોપાગ-  
ચ્છતિ, ઉપાગત્ય ધન્યં સાર્થવાહમેવમવાદીત્- एते खलु ते पश्च शाल्यक्षताः, इति  
કૃત્વા=इत्युक्त्वा धन्यस्य सार्थवाहस्य हस्ते तान् पश्च शाल्यक्षतान् ददाति ।  
ततः खलु धन्य उज्झिता पुत्रं वधूं 'सवहसावियं' शपथशापितां = शपथयुक्तां  
કરોતિ-शपथं कारयति, कृत्वा एवमवदत्-किं खलु पुत्रि ! त एव-एते पश्च  
શાલ્યક્ષતાઃ, ઉદાહુ=अथवा अन्ये ? । ततः खलु उज्झिता धन्यसार्थवाहमेवमव-

इस प्रकार उज्झिताने उस धन्य सार्थवाह के इस कथन रूप अर्थको स्वी-  
कार कर लिया । और स्वीकार करके जहां कोछागार था-वहां पंर गई ।

( उवागच्छित्ता पल्लाओ पंच सालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता  
जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ ) वहां जाकर उसने शालि  
कोछ से पांच शालि-अक्षतों को ले लिया और ले जाकर जहां धन्य-  
सार्थवाह था वहां आई । ( उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी )  
आकर उसने धन्यसार्थवाह से ऐसा कहा-(एए णं ते पंच सालि अक्खए  
त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच सालि अक्खए दलयइ)  
आपके वे पांच शालि अक्षत ये हैं । ऐसा कहकर उसने धन्यसार्थवाह  
के हाथ में उन पांच शालि अक्षतों को दे दिया । ( तएणं धण्णे सत्थवाहे  
उज्झियं सवहसावियं करेइ करित्ता एवं वयासी-किं णं पुत्ता । ते चेवं  
एए पंच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएणं उज्झिया धण्णं सत्थवाहे

ઉજ્જિતતાએ ધન્યસાર્થવાહની આજ્ઞા સ્વીકારી અને ત્યાર પછી તે જ્યાં કોછાર  
હતો ત્યાં ગઈ.

( उवागच्छित्ता पल्लाओ पंचसालि अक्खए गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव धण्णे  
सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ )

ત્યાં જઇને તે શાલિકોષ્ઠમાંથી પાંચ શાલિકોણે લઈ લીધા અને લઇને  
તે ધન્યસાર્થવાહની પાસે પહોંચી. (ઉવાગચ્છિત્તા ધણ્ણં સત્થવાહં એવં વયાસી)  
ત્યાં આવીને તેણે ધન્યસાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યું.

( एएणं ते पंचसालि अक्खए चि कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच  
સાલિ અક્ખએ દલયइ )

“ તમે આપેલાં પાંચ શાલિકોણે આ રહ્યા ” આમ કહીને તેણે પાંચ  
પાંચ શાલિકોણે ધન્યસાર્થવાહને આપી દીધા

( तएणं धण्णे सत्थवाहे उज्झियं सवहसावियं करेइ करित्ता एवं वयासी किं  
पुत्ता ते चेवं एए पंच सालि अक्खए उदाहु अन्ने ? तएणं उज्झिया धण्णं

दत्-एवं खलु यूयं हे तात ! अतीते पञ्चमे संवत्सरे अस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चत-  
सृणां च स्तुषाणां कुलगृहवर्गस्य 'जाव' यावत् पुरतः पञ्च शाल्यक्षतान् दत्त्वा  
कथितवन्तः-हे पुत्रि ! त्वमेतान् पञ्चशाल्यक्षतान् संरक्षन्ती संगोपायन्ती विह-  
रति । ततः खलु अहं युष्माकमेतमर्थं प्रतिश्रुणोमि, प्रतिश्रुत्य तान् पञ्चशाल्य-  
क्षतान् गृह्णामि, गृहीत्वा-एकान्तमपक्रामामि, ततः खलु तदा मम मनसि अयमे-  
तद्रूप आध्यात्मिकः=विचारः यावन्मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत एवं खलु 'तायाणं'

एवं बयासी एवं खलु तुभ्ये ताओ ! इओ अईए पंचमें संवच्छरे इमस्स  
मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल० जाव विहराहि ) उन पांच शालि  
अक्षतों को हाथ में लेकर धन्य सार्थवाह ने उसे शपथ दिलाई-और  
दिलाकर उससे ऐसा पूछा पुत्रि ! कहो-ये पांच शालि अक्षत वे ही हैं  
या और दूसरे हैं ? इस प्रकार धन्य सार्थवाह के कथन को सुनकर  
उज्जित्ताने उससे ऐसा कहा हे तात ! आपने आज से गत पांचवें वर्ष  
में मित्र ज्ञाति आदि परिजनों के और अपनी पुत्रवधूओं के कुल गृह  
वर्ग के समक्ष पांच शालि अक्षतों को देकर ऐसा कहा था-हे पुत्रि !  
तुम मेरे इन पांच शालि अक्षतों की रक्षा करती रहो-इन्हे उपग्रवों से  
बचाकर सुरक्षित रखो- ( तएणं अहं तुभं एयमहं पडिसुणेमि पडिसु-  
णिता ते पंच सालि अक्खए गेह्णामि गिह्दिता एगंतमवक्कमामि-तएणं  
मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ) मैंने आपके इस कथन  
को स्वीकार कर लिया था । और उन पांच शालि अक्षतों को ले लिया

सत्यवाहे एवं बयासी एवं खलु तुभ्ये ताओ ! इओ अईए पंचमे संवच्छरे इमस्स  
मित्तनाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुल० जाव विहराहि )

ते पांच शालिकष्ठाने हाथमां रणावीने धन्यसार्थवाहे तेने शपथ (सम)  
आपीने करी पूछथुं के डे पुत्रि ! गोवो, आ पांचे शालिकष्ठाने भारा  
आपेला न छे के भीन. आ रीते धन्यसार्थनी वात सांखणीने उज्जित्ताने  
तेभने कहुं-“ हे तात ! आनथी पांचवषं पूवे मित्र ज्ञाति वगेरे परिजने  
तेभन आरे पुत्रवधूओना सगरहावांओनी सामे भने पांचे शालिकष्ठाने आ-  
पतां तमे कहुं डटुं के डे पुत्रि ! तमे भारा आ पांचे शालिकष्ठाने रक्षा  
करे आने ओओने उपद्रवोथी भयावो.

( तएणं अहं तुभं एयमहं पडिसुणेमि, पडिसुणिता ते पंचसालि अक्खए  
गेह्णामि, गिह्दिता एगंतमवक्कमामि-तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव  
समुप्पज्जित्था )

से तभारी आशा प्रभञ्जे ते शालिकष्ठाने छध लीथा. त्यार पाइ डं

તાતાનામ્ આદરાર્થં बहुवचनम् तातस्येत्यर्थः, श्वशुरस्य कोष्ठागारे वहवः पल्लाः शालीनां प्रतिपूर्णास्तिष्ठन्ति, तद् यदा खलु मम सकाशात् तात इमान् पञ्च शाल्यक्षतान् याचिष्यते तदा खलु अहं पल्लन्तरात्=कोष्ठाभ्यन्तराद् अन्यान् पञ्च शाल्यक्षतान् गृहीत्वा दास्यामि, इति कृत्वा एकान्तेऽपक्राम्य तान् प्रक्षिप्य स्व-  
 कर्मसंयुक्तो=स्वकार्यसंलग्नो समभवत् 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् नो खलु तात !  
 तएव पञ्च शाल्यक्षताः, किंतु एते स्वस्वन्ये=कोष्ठाभ्यन्तरादानीताः सन्तीत्यर्थः ।  
 ततः खलु स धन्यः सार्थवाह उज्जिताया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा 'आसुरस्ते'  
 आसुरस्तः=शीघ्रकोपान्वितः यावत् 'मिसमिसेमाणे' मिसमिसन्=क्रोधाग्निना  
 था । लेकर फिर मैं आपके पास किसी एकान्त स्थान में चली आई-  
 वहां आते ही मुझे इस प्रकार का विचार आया—

( एवं खलु तायाणं कोष्ठागारंसि० जाव सकम्म संपउत्ता जाया तं  
 णો खलु ताओ ते चेव पांच सालि अक्खए, एए णं अन्ने ) मेरे श्वसुर  
 जी के यहां कोष्ठागार में तो बहुत से पल्लशालियों के भरे पड़े हैं—तो  
 जिस समय श्वसुर जी इन प्रदत्त पांच शालि अक्षतों को मुझ से पीछे  
 वापिस मांगेंगे तो मैं दूसरे शालि कोष्ठ के भीतर से अन्य पांच शालि  
 अक्षतों को उठाकर दे दूंगी । इस प्रकार विचार कर मैंने आपके द्वारा  
 दिये हुए पांच शालि अक्षतों को इधर उधर डाल दिया और अपने  
 दैनिक कार्य करने में लग गई । अतः हे तात ! ये शालि-अक्षत वे पांच  
 शालि अक्षत नहीं हैं—किन्तु उनसे भिन्न दूसरे ही हैं । ( तएणं से घण्णे  
 उज्जियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरस्ते जाव मिसि मिसे-

તમારી પાસેથી એક તરફ ગઈ ત્યાં આવતાં જ અને વિચાર રકુર્યો

( एवं खलु तायाणं कोष्ठागारंसि० जाव सकम्म संपउत्ता जाया तं णो खलु  
 ताओते चेवपांचसालिअक्खएएणं अन्ने )

મારા સસરાના કોઠારમાં શંગરથી ભરેલા ઘણા પલ્લો છે. તે બધા  
 પલ્લુ તેઓ મારી પાસેથી ફરી પાંચ શાલિકણો માગશે ત્યારે કોઠારમાંથી બીજા  
 પાંચ શાલિકણો તેમને આપીશ. આમ વિચાર કરતાં મેં તમારા આપેલા પાંચ  
 શાલિકણોને આમ તેમ ફેંકી દીધા અને ત્યાર બાદ હું મારા હંમેશાના ઘર-  
 કામમાં પરવાર્ધ ગઈ એથી હે તાત ! આ શાલિકણો તમે જે આપેલા હતા  
 તે નથી. પલ્લુ આ તો બીજા જ છે.

( તएणं से घण्णे उज्जियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरस्ते जाव  
 मिसेमिसे माणे उज्जितियं तस्स मित्तमाइ० च उण्हय सुण्ढाणं कुलघरवग्गस्तप

जाव्वल्यमानः उज्जितां तस्य मित्रज्ञातिप्रभृतेः, चतसृणां च स्नुषाणां कुलगृहवर्गस्य च पुरतस्तां तस्य=स्वस्य कुलगृहस्य 'छारुज्जियं' चारो ज्जिकां=भस्मप्रक्षेपिकाम्, 'छाणुज्जियं' च 'छाणो ज्जिकां=गोमयप्रक्षेपिकाम् 'कयवरुज्जियं' कचवरो-ज्जिकां=गृहकचवरप्रक्षेपिकाम्, 'समुच्छियं' समुच्छिकां=गृहाङ्गणे जलच्छटक दायिकाम्, 'संमज्जियं' संमार्जिकां=गृहसंमार्जनकारिकाम्, 'पाओवदाइयं' पादोदकदायिकां=पादप्रक्षालनजलदायिकाम्, 'ण्हाणोवदाइयं' स्नानोदकदा-यिकां=स्नानार्थजलदायिकाम्, 'बाहिरपेसणकारियं' बाह्यपेषणकारिकं 'बाह्यपे-षणकार्यकारिकाम्, 'ठवेइ' स्थापयति=तादृशकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः।

माणे उज्जितियं तस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्जियं च छाणुज्जियं च कयवरुज्जियं च समुच्छियं च सम्मच्छियं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिर पेसण कारिंठवेइ ) इस तरह वह धन्य सार्धवाह उज्जिताके मुख से इस कथन रूप अर्थको सुनकर और उसे हृदय में अवधारण कर शीघ्र ही कुपित हो गया। मिस मिसाने लग गया-क्रोधरूपी अग्निसे जलने लगा। उसने उसी समय उज्जिता को उस-मित्र ज्ञाति आदि कों के तथा चारो पुत्र वधूओं के कुलगृहवर्ग के समक्ष अपने घर की राख डालने वाली गोबर 'फेंकने वाली' कूड़ाकर कट साफ करने वाली, घरके आंगण में पानी छिड़कने वाली बुहार देने वाली, पाद प्रक्षालन तथा स्नान के लिये जल देने वाली, बाहर जाने का काम करने वाली बना दिया।

अर्थात् बाहिरी काम करने वाली दासी के पद पर उसे रख दिया।

पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्जियं च छाणुज्जियं च कयवरुज्जियं च समुच्छियं च सम्मच्छियं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेइ )

आ प्रभाणु ते धान्य सार्धवाहं उज्जितानां सुप्रेथी आ वात सांलणीने तेने हृदयमां अवधारणु करीने ओकहमं शुस्से थधं गथो.

कुपितावस्थाभां ते क्रोधनी न्वाणाओभां सगगवा लाग्यो. तेणु तेणु क्षणु उज्जिताने मित्र ज्ञाति वगेरे परिणो तेमण्यारे पुत्रवधूओ ना कुण्णा माणुसोनी सामे घरनी राण साइ करनारी, छाणु साइ करनारी, कयरे वगेरे साइ करनारी, घरना आंगणुमां पाणु छोटनारी, आवरणु थो कयरे पाणनारी, पण धोवाभाटे तेमण्य स्नानकरवा मटे पाणु तैयार राखनारी अने धरनी ण्हारना कासो करनारी अनावी दीधी.

ओठले ण्हारनां काम करनारी दासीनाइये धन्यसार्धवाह तेनी निमण्णु करी.

શ્રીવર્ધમાનસ્વામીપ્રાદ— એવમેવ હે શ્રમણાઃ ! આયુષ્મન્તઃ ! યોડસ્માકં નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થીવા યાવત્પ્રવ્રજિતઃ સન્વિહરતિ યદિ પશ્ચ ચ તસ્ય મહાવ્રતાનિ ઉજ્જિ-  
તાનિ=પરિત્યક્તાનિ ભવન્તિ તર્હિ સ સ્વલુ ઇહ મવે એવ વહૂનાં શ્રમણાનાં ચતુર્વિધસ-  
હસ્રેય હીલનીયઃ, નિન્દનીયઃ, ગર્હણીયઃ, યાવત્ ચાતુરન્તસંસારકાન્તારમનુપર્યટિષ્ઠ્યતિ  
યથા સા ઉજ્જિતા ।

એવં મોગવતિકાડપિ=મોગવતિકાનામ્ની ક્ષાલ્યક્ષતમશ્નિકા દ્વિતીયા પુત્રવધૂ-  
રપિ । નવરં=વિશેષસ્ત્વયમ્ તોમોગવતિકાં તસ્ય=નિજસ્ય કુલગૃહસ્ય યાવત્ 'કંઠંતિ  
યંચ' ક્ષુદ્રંતિકામ્=ઉદ્સલાદૌ તળુલાદીનાં તુષાપસારણાર્થ મુશલાદિનાડવધા-  
તિનીય, 'કુદ્રયંતિયંચ' કુદ્રયન્તિકાં=તિલાદિચૂર્ણકારિકામ્, 'પીસંતિયંચ' '  
' પેષયન્તિકાં=ઘરટ્ટાદૌ ગોધૂમાદીનાં પેપણકારિકામ્, 'રુઘંતિયંચ' રુઘયન્તિકાં

( એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હં નિર્ગમ્થો વા નિર્ગમ્થી વા જાવ પવ્વહ્પ પંચ ય સે મહવ્વયાઈ ઉજ્જિયાઈ ભવંતિ, સે ણ' ઇહમવે ચેવ વહૂણં સમણાણે ૪ જાવ અણુપરિયટ્ઠિસ્સહ જહા સા ઉજ્જિયા ) શ્રી વર્ધમાન  
સ્વામી હસકા ઉપસંહાર કરતે હુપ કહતે હૈં કિ હે આયુષ્મંત શ્રમણો !  
જો હમારા નિર્ગ્રન્થ અથવા નિર્ગ્રન્થી સાધ્વીજન દીક્ષા સંયમ લેતે સમય  
પંચમહોવ્રત લેતે હૈં ઓર યદિ વહ અપને મહાવ્રતોં કા પરિત્યાગ કર  
વેતાં હૈં તો વહ ઉજ્જિતા કી તરહ હસ મવ મેં હી અનેક શ્રમણજનોં કો  
દ્વારા તથો ચતુર્વિધ સંચ કો દ્વારા હીલનીય હોતા હૈ, નિન્દનીય હોતા  
હૈ, ગર્હણીય હોતા હૈ—યાવત્ વહ ચતુર્ગતિરૂપ હસ સંસાર મેં પરિશ્રમણ  
કરતા રહના હૈ । ( એવં 'મોગવહ્યાવિ' નવરં જાવ કંઠંતિયંચ, કુદ્રં-  
તિયંચ' પીસંતિયંચ, એવં રુઘતિયંચ, રુઘંતિયંચ પરિવેસંતિય પરિભાગ-

( એવામેવ સમણા ડસો જો અમ્હં નિર્ગમ્થો વા નિર્ગમ્થીવા જાવ પવ્વહ્પ પંચ  
યસે મહવ્વયાઈ ઉજ્જિયાઈ ભવંતિ, સેણ' ઇહમવે ચેવ વહૂણં સમણાણં ૪ જાવ  
અણુપરિયટ્ઠિસ્સહ જહા સા ઉજ્જિયા )

શ્રી વર્ધમાન સ્વામી આવિષે ઉપસંહાર કરતાં કહે છે કે હે આયુષ્મંત  
શ્રમણો ! અમારા જે કોઈ નિર્ગ્રન્થ કે નિર્ગ્રન્થી સાધ્વીજન દીક્ષા સંયમ લેવાના  
વખતે પાંચ મહાવ્રતો સ્વીકારે છે અને લવિષ્યમાં સ્વીકારેલા તે મહાવ્રતો  
નો પરિત્યાગ કરે છે તો તે ઉજ્જિતા ની જેમજ આ લવમાં ઘણા શ્રમણો  
વડે તેજ અતુર્વિધ સંચ વડે હીલનીય હોય છે, નિન્દનીય હોય છે, ગર્હણીય  
હોય છે—યાવત્—તે ચતુર્ગતિ વાળા આ સંસારમાં પરિશ્રમણ કરતો રહે છે.

( એવં મોગવહ્યાવિ, નવરં જાવ કંઠંતિયંચ કુદ્રંતિયંચ પીસંતિયંચ, એવં

यन्त्रे चणकक्रोद्रवादीनां तुपापसारिकाम्, 'रंभंतियं च' रन्धयन्तिकाम्=ओदनादि पाचिकाम्, 'परिवेसयंतियं च' परिवेषणकारिकाम् 'परिमायंतियं च' परिमाजं यन्त्रिकां=पर्वदिनादौ स्वजनगृहेषु खण्डस्वाद्यादीनां संविभागकारिकाम्, 'अभिम तिरियं च' पेसणकारियं 'आभ्यन्तरिकां च' प्रेषणकारिका=गृहाभ्यन्तरप्रेषणकार्य- कारिकाम् 'महाणसिणिं' महानसिकां=महानससम्बन्धिसकलकार्यकारिणीं 'ठवेइ' स्थापयति=गृहाभ्यन्तरकार्यकारिणीत्वेन नियोजयतीत्यर्थः । श्री वर्षमानस्वामी

तियं च अब्भंतिरियं च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ ) इसी तरह धन्य सार्थवाह ने अपने जो दूसरी पुत्रवधू भोगवतिका नाम की थी कि जिसने उन पांच शालि अक्षतों को खा लिया था उसे बुलाया- और उससे भी उज्ज्विता की तरह दिये हुए पांच शालि अक्षतों को वापिस मांगा-उसने " वे पांच शालि अक्षत मैंने खा लिया है जब ऐसा कहा-तब उस धन्य सार्थवाहने उन मित्र-ज्ञाति आदि परिजनों के समक्ष और पुत्रवधूओं के कुलगृह के व्यक्तियों के समक्ष अपने घर के भीतरी काम पर रख दिया ।

उसके अधीन में घर का भीतर का यह काम दिया गया- ओखली में मृशाल से घान्य कूटना और चावल तैयार करना, तिल आदि का चूर्ण करना, चक्की से गेंदुओं आदि पीस कर आटा तैयार करना, चना आदि की दाल बनाना तथा क्रोद्रव आदि को फट्टों से दल कर उनके छिल के दूर कर उन की कुद् ई बनाना ? चावल पकाना, रुंभंतियं च रंभंतियं परिवेसंतियं, परिमायंतियं च अब्भंतिरियं च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ )

आ प्रभाण्णे ७ धन्यसार्थवाहे पोतानी जील पुत्रवधूखोज वतीका- ने पांथे शाखिकण्णे भाइ गधं इती-तेने पोतावी अने तेनी पोसेधी पणु ठलितानी जेम पांथे शाखिकण्णे भाय्या. जवाभमां खोजवतीकाये. ब्यारे जेम कण्ठुं " के ते पांथे शाखिकण्णे हुं भइ गधं छुं. त्पारे धन्यसार्थवाहे तेने मित्र ज्ञाति वगेरे परिजने तेमज्यारे पुत्र वधूओना कुटुंणीओनी साथे तेने धरनी अंदरना कामां तेनी निमण्ठक करी.

धन्यसार्थवाहे धरना नीथे जुज्जभना कामे तेने सोंथ्या इतां-भांडखिया सांखेवाथी शाण ( धान्य ) भांडवी अने जोभा तैयार करवा, तल वगेरेने भूडे करवे. घंटीभां घड वगेरे दणीने डोट तैयार करवे. आभा यण्ण वगेरे नी दाण तैयार करवी. तथा केदरा वगेरेने घंटीथी जरडीने तेनां छोटरां इर



માહ એવમેવ=અનેનૈવ પ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ ! શ્રમણાઃ ! યોઽસ્માકં શ્રમણો વા શ્રમણીવા પ્રવ્રજિતઃ સન્ વિહરતિ, યદિ પંચ ચ તસ્ય મહાવ્રતાનિ ' ફોડિયાઈ ' સ્ફોટિતાનિ=સ્વષ્ઠિતાનિ ભવન્તિ તર્હિ સ સ્વસ્થુ ઇહભવે ચૈવ વહૂનાં શ્રમણાનાં ૪ ચતુર્વિધસંઘસ્ય હીલનીયઃ, યાવત્ સંસારમત્તુપર્યટિષ્ઠ્યતિ યથા ચ સા ભોગવતિકા ધન્યસાર્થવાહસ્ય દ્વિતીય પુત્રવધૂઃ ।

એવં રક્ષિનાઽપિ=રક્ષિતાનામ્ની ધન્યસાર્થવાહસ્ય તૃતીયપુત્રવધૂરપિ, નવરં-ધન્યસાર્થવાહેનં સ્વદત્તશાલ્લસતાન્ પ્રત્યર્પયિતું યાચિતા સતો યત્રૈવ વાસગૃહં તત્રૈ-ભોજન કરને વાલોં કો ભોજન પરોસના, સ્વજન કે ઘરોં મેં સ્વષ્ઠ-સ્નાના સ્નાન આદિ કા વિભાગ કરના રસોઈ ઘર કા સમસ્ત કાર્ય કરના । ( એવામેવ સમણાઽસો જો અમ્હં સમણો વા જાવ પંચય સે મહન્વયાઈ ફોડિયાઈ ભવંતિ સે ણં ઇહ ભવે ચૈવ વહૂણં સમણાણં ૪ જાવ હીલણિજ્જો ૪ જહાવ સા ભોગવહ્યા ) ઇસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા શ્રમણ અથવા શ્રમણી જન પ્રવ્રજિન હોકર પંચ મહાવ્રતોં કા સ્વંદન કરતા હૈ વહં ભોગવતિકા કી તરહ ઇસ ભવ મેં હી અનેક શ્રમણોં દ્વારા તથા ચતુર્વિધ સંઘ દ્વારા હીલનીય હોતા હૈ, યાવત્ અનાદિ અનંત ઇસ સંસાર મેં પરિશ્રમણ કરતા હૈ । ( એવં રક્ષિત્વહ્યાવિ નવરં જેણેવ વાસ-ઘરે તેણેવ ઉવાગચ્છિત્તા મંજૂસં વિહાડેઈ, વિહાડિસા રચણકરંડગાઓ તે પંચ સાલિ અક્ષય ણેણહ ) ઇસી તરહ ધન્ય સાર્થવાહ ને અપની તૃતીય પુત્રવધૂ સે જિસ કા નામ રક્ષિત થા અપને દ્વારા દિયે હુઈ ૫ સાલિ અક્ષતોં કો માંગા-સો વહ જહાં અપના વાસગૃહ થા વહાં આઈ -

કરી તેમાથી કોહરી બનાવવી, ભાત તૈયાર કરવા, જમનારાઓને પીરસવું સગાં સુખધીઓનાં ઘરોમાં પીરસણુ વગેરે મોકલવું રસોઈઘરનું અધુ કામ કરવું. ( એવામેવ સમણાઽસો જો અમ્હં સમણોવા જાવ પંચય સે મહન્વયાઈ ફોડિયાઈ ભવંતિ સે ણં ઇહ ભવે ચૈવ વહૂણં ૪ જાવ હીલણિજ્જો સમણાણં ૪ જહાવ સા ભોગવહ્યા )

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજન પ્રવ્રજિત થઈને પાંચ મહાવ્રતોનું પાલન કરે છે. તે ભોગવતીકાની જેમ આં ભવમાં ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ચતુર્વિધ સંઘદ્વારા હીલનીય હોય છે. યાવત્ અનાદિ અનંત આ સંસારમાં પરિશ્રમણ કરે છે.

( એવં રક્ષિત્વહ્યાવિ નવરં જેણેવ વાસઘરે તેણેવ ઉવાગચ્છિત્ત. ઉવાગચ્છિત્તા મંજૂસ વિહાડેઈ વિહરિત્તા રચણકરંડગાઓ તે પંચસાલિ અક્ષય ણેણહ )

આ રીતે જ ધન્યસાર્થવાહે પોતાની ત્રીજી પુત્રવધૂ રક્ષિતા પાસેથી પોતે આપેલા પાંચ શાલિકણે માગ્યા. તે ત્યાંથી પોતાના નિવાસ

વોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય મઙ્ગૂષા 'વિહાઢેઃ' વિષટયતિ=ઉદ્ધાટયતિ વિષટય્ય મઙ્ગૂષામ્પન્તરત્યાત્ રત્નકણ્ઠકાત્ તાન્ પશ્ચશાલ્યક્ષતાન્ ગૃહ્ણાતિ, ગૃહીત્વા યત્રવ ધન્યઃ સાર્થવાહસ્ત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ ધન્યસાર્થવાહ-સ્ય હસ્તે દદાતિ. । તતઃ સ્વલુ સ ધન્યઃ સાર્થવાહો રક્ષિતાં રક્ષિતાભિર્ધાં તૃતીયપુત્ર વધૂમેવમવદત્- કિં સ્વલુ પુત્રિ ! ત એવૈતે પશ્ચશાલ્યક્ષતાઃ ઉદાહુ- અથવા અન્યે, ઇતિ. । તતઃ સ્વલુ રક્ષિતા ધન્યં સાર્થવાહમેમવદત્ ત એવ તાત ! એતે પશ્ચ શાલ્યક્ષતાઃ, નો અન્યે ધન્યઃ સાર્થવાહ આહ કથં સ્વલુ પુત્રિ ! રક્ષિતાન્માહ-એવં સ્વલુ તાત ! યુયમિતઃ પશ્ચમે સંવત્સરે ' જાવ ' યાવત્ સર્વેષાં મિત્રઘ્નાતિમમૃતીનાં

જ્યાં આકર ઉસને અપની પેટી સ્વોલી-ઉસ મેં સે રક્ષી હુઈ રત્ન કી ક્ષિતિયા નિકાલી-નિકાલ કર ઉસમેં રહે હુએ પાંચ શાલિ અક્ષતોં કો લિયા ( ગિવિહ્તા જેણેવ ધણે તેણેવ ઉવાગચ્છ ) ઓર લેકર જ્યાં ધન્ય સાર્થવાહ થે-વહ જ્યાં આઈ ( ઉવાગચ્છિતા પંચસાલિ અક્ષલએ ધણસસ હત્થે લલયઈ ) જ્યાં આકર ઉસને પાંચ શાલિ અક્ષતોં કો ધન્ય સાર્થવાહ કે હાથ મેં સોંપ દિયા । ( તણે ' સે ધણે રક્ષિત્વહ્યં એવં વયાસી ) ધન્ય સાર્થવાહ ને ઉન્હેં લેકર રક્ષિતા સે એસા કહા ( કિણ ' પુત્તા ! તે જેવ એ પંચ સાલિ અક્ષલયા ઉદાહુ અન્ને ? સ્તિ ) હે પુત્રિ ! જે પાંચ શાલિ અક્ષત વે હી હૈં યા ઓર દસરે ? ( તણે રક્ષિત્વહ્યા ધણે સત્થવાહે એવં વયાસી તે જેવ તાયા । એ પંચ સાલિ અક્ષલયા જો અન્ને ) તથ રક્ષિતા ને ધન્ય સાર્થવાહ સે કહા-હે તાત ! જે પાંચ શાલિ અક્ષત વે હી હૈં અન્ય નહીં હૈં । ( કહં જાં પુત્તા ! એવં સ્વલુ તાઓ તુમ્હે

સ્થાને આવી. ત્યાં તેણે પેટી ખોલીને અંદરથી રત્નજડિત ડાબલી બહાર કાઢી. ડાબલીમાંથી તેણે પાંચે શાલિકણે લીધા. ( ગિવિહ્તા જેણેવ ધણે તેણેવ ઉવાગચ્છ ) અને લઇને ધન્યસાર્થવાહે જ્યા હતા ત્યાં આવી

( ઉવાગચ્છિતા પંચસાલિ અક્ષલએ ધણસસહત્થે લલયઈ )

ત્યાં આવીને તેણે પાંચે શાલિકણે ધન્યસાર્થવાહને આપી લીધા. ( તણે ' સે ધણે રક્ષિત્વહ્યં એવં વયાસી ) ધન્યસાર્થવાહે શાલિકણે લઇને રક્ષિ-તાને કહ્યું ( કિં જાં પુત્તા ! તે જેવ એ પંચસાલિ અક્ષલયા ઉદાહુ અન્ને ! સ્તિ )

“ હે પુત્રિ ! આ પાંચ શાલિકણે તે જ છે કે ખીલ ? ”

( તણે રક્ષિત્વહ્યા ધણે સત્થવાહે એવં વયાસી તે જેવ તાયા ! એ પંચ સાલિ અક્ષલયા જો અન્ને )

ત્યારે રક્ષિતાએ ધન્યસાર્થવાહને કહ્યું-“ હે તાત ! આ પાંચ શાલિકણે તે જ છે ખીલ નહિ.

પુરતઃ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ મહં દત્તવન્તસ્તદા મમ મનસિ સંકલ્પો જાતઃ—યત્તાતઃ સર્વેષાં પુરતઃ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ દદાતિ તત્ ‘ મવિયઞ્વં ઇત્ય કારણેણ ’ ‘ મન્વિત્-વ્યમત્રે કેનાપિ કારણેન=અસ્મિન્ વિષયે કિમપિ કારણમવશ્યં વિદ્યતે ‘ તિક્કદુ ’ ઇતિ કૃત્વા ઇતિવિચાર્ય તાન્ પશ્ચશાલ્યક્ષતાન્ શુદ્ધે=સ્વચ્છે નિર્મલે વસ્ત્રે વદ્ધ્વા રત્નકરણ્ડકે નિશ્પિય ઉચ્છીર્ષકમૂલે સ્થાપયિત્વા ‘ તિસંક્ષ ’ ત્રિસન્ધ્ય=પ્રમાતે મધ્યાહ્ને સાયંકાલેવા ‘ પઢિજાગરમાણી ૨ પ્રતિજાગ્રતી ૨=પુનઃ પુનર્નિરીક્ષમાણા

હઓ પંચમંસિ જાવ ( ‘ મવિયઞ્વં ઇત્ય કારણેણ ’ ) સ્તિક્કદુ તે પંચ સાલિ અક્ષણ સુદ્ધે વત્થે જાવ તિસંક્ષ પઢિ જાગરમાણી ૨ વિહરામિ ) હસ પ્રકાર રક્ષિતા કી વાત સુનકાર ધન્ય સાર્થવાહ ને ડસસે પૂછા-પુત્રિ । યે હસી તરહ સે અમી તક કૈસે રક્ષે રહે-તથ રક્ષિતા ને કહા-સુનો મૈં વતાતી હૂં-આપને આજ સે ગત પાંચવે વર્ષ મૈં જો યે પાંચ શાલિ અક્ષત સુદ્ધે સમસ્ત મિત્ર જ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કે તથા પુત્રવધૂઓં કે કુલગૃહ વર્ગ કે સમક્ષ દિયે યે ડસ સમય મેરે મન મૈં એસા વિચાર આયા કિ યે તાત જો સુદ્ધે સબ જનોં કે સામને હન પાંચ શાલિ અક્ષતોં કો દે રહે હૈં ઓર હન કી રક્ષા આદિ કે વિષય મૈં કહ રહે હૈં-સો હસ મૈં કોઈ ન કોઈ કારણ અવશ્ય હૈં-એસા વિચાર કર મૈંને ડન પાંચ શાલિ અક્ષતોં કો સ્વચ્છ-નિર્મલવસ્ત્ર મૈં બાન્ધ કર ઇક રત્ન કી ડિલિયા મૈં રલ્લ દિયા-ઓર ડસે અપને સિરહાને મૈં રલ્લકર આજ તક મૈં ડસકી હર સમય સંભાલ કરતી આ રહી હૂં ।

( કહણં પુત્તા એવં લલ્લ તાઓ ! તુમ્હે હઓ પંચમંસિ જાવ ‘ મવિયઞ્વં ઇત્ય કારણેણ ’ સ્તિક્કદુ તે પંચસાલિ અક્ષણ સુદ્ધે વત્થે જાવ તિ સંમં પઢિ જાગરમાણી ૨ વિહરામિ )

આ રીતે રક્ષિતાની વાત સાંભળીને ધન્યસાર્થવાહે તેને પૂછ્યું “ હે પુત્રિ ! અત્યાર સુધી કેવી રીતે આ શાલિક્ષોને રાખવામાં આવ્યા. ત્યારે રક્ષિતાએ જવાબ આપતાં કહ્યું “ સાંભળો, હું બધી વિગત તમારી સામે રજુ કરું છું. આજથી પાંચ વર્ષ પહેલાં બધા મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ ચારે પુત્રવધૂઓના કુટુંબીજનોની સામે તમે અને શાલિક્ષો આવ્યા હતા. હે તાત ! તમે અને બધા સ્વજનોની સામે પાંચ શાલિક્ષો આપીને તેઓની રક્ષામાટે અને આજ્ઞા આપી હતી જેથી મેં વિચાર કર્યો કે આમાં કોઈ સહસ્ય ચોક્કસ છુપાયેલું છે આમ વિચાર કરીને પાંચ શાલિક્ષોને સ્વચ્છ નિર્મળ વસ્ત્રમાં આંધીને એક રત્નની ડાબલીમાં મૂકી દીધા, અને તેને ઓશીકાની નીચે મૂકીને આજ (હવે) સુધી તેની રક્ષા કરતી રહી છું.

विहरामि=अद्यावधि तिष्ठामि तदेतेन कारणेन हे तात ! त एवैते पञ्च शाल्य-  
क्षताः, नो अन्ये । ततःखलु स धन्यः सार्थवाहो रक्षिताया अन्तिके=समीपे  
एतमर्थं श्रुत्वा हृष्ट तुष्टः तस्य=निजस्य कुलमृद्स्य ' हिरण्यस्य ' हिरण्यस्य च=  
रजतस्य यावत् कांस्यद्वयं विपुलं यावत्स्वापतेयस्य=हिरण्यादि यावन्मात्रधनस्य  
' मण्डागारिणि ' मण्डागाराधिष्ठात्री ' ठवेइ ' स्थापयति=सर्वधनाधिकारिणी  
त्वेन नियोजयतीत्यर्थः । श्रीवर्धमानस्वामी प्राह एवमेव हे श्रमणाः । आयुष्मन्तः  
योऽस्माकं श्रमणो वा श्रयणी वा प्रव्रजितः सर्वं विहरति, यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि

( तं एषणं कारणेण ताओ ! ते चेव एए पंच सालि अक्खए णो  
अन्ने ) इस कारण हे तात ! वे पांच शालि अक्षत ये ही हैं, दूसरे नहीं  
हैं । ( तएणं से धण्णे रक्खइयाए अंतिए एयमद्धं सोच्चा हट्ठुद्धं तस्स  
कुलधरस्स हिरन्नस्स य जाव कंसदूस्स विउल्ल धण जाव सावतेज्जस्स य  
मंडागारिणि ठवेइ ) इस तरह उस धन्य सार्थवाह ने रक्षिका के मुख  
से इस अर्थ को सुन कर बहुत अधिक प्रसन्न और संतुष्ट होकर उसे  
अपने घर में जितना भी सोना चांदी आदि धन था उसकी अधिकारि-  
णि बना दिया ।

( एवामेव समणाउसो जाव पच य से महव्वयाइं भवंति, सेणंइह  
भवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे ४ जहाव सा रक्खया ) इसी  
तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा श्रमण और श्रमणी जन प्रव्र-  
जित होकर इतस्वनः विहरण करता है यदी उस के पांच महाव्रत

( तं एषणं कारणेण ताओ ! ते चेव एए पंचसालि अक्खए णो अन्ने )

अेटळे डे तात ! ते पांच शालिक्खे ! अेव छे, नील नथी

( तएणं से धण्णे रक्खइयाए अंतिए एयमद्धं सोच्चा हट्ठुद्धं तस्स कुल-  
धरस्स हिरन्नसस्य जाव कंसइस्स विउल्ल धणजाव तेज्जस्सय मंडागारिणि ठवेइ )

आ रीते धान्यसार्थवाडे रक्षिकाना भुजेधी भधी विगत सांलणीने  
पूअअ असन्न तेमअ संतुष्ट थतां तेने पे ताना घरमां अेटळु सोअुं थोही वजेरे  
धन छटुं तेनी अधिकारीळी जनावी छंधी.

( एवामेव समणाउसो जाव पंचयसे महव्वयाइं रक्खयाइं भवंति सेणं  
इहभवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे ४ जहाव सा रक्खया )

आ असाळे डे आयुष्मन्त श्रमणे ! अे आभारा श्रमणु तेमअ श्रमणी  
अने प्रव्रजित थछने आभ तेम विहार करता रहे छे. तेम करतां अे तेमना

રક્ષિતાનિ ભવન્તિ સ સ્વલ્લુ રૂપમેવૈવ વહૂનાં શ્રમણાનાં ॥ ચતુર્વિધસંઘસ્ય અર્ચનીયઃ  
યાવત્ સંમાનનીયો ભવતિ યથા સા રક્ષિતા=ધન્યસાર્થવાહસ્ય તૃતીયા પુત્રવધૂઃ ।

રોહિણિકાપ્યેવમેવ=રોહિણિકાનામ્ની ધન્યસાર્થવાહસ્ય ચતુર્થપુત્રવધૂરપિ પૂર્વ  
વદેવ વિશ્લેષ્યા, નવરં વિશેષસ્ત્વમ્-શ્રેષ્ઠિના સમાહૂય 'મદત્તાન્ પશ્ચશાલ્યશ્વતાન્  
' સમર્પય ' इत्येवं कथिता सती रोहिणिका श्रेष्ठिनं प्रत्याह-हेतात ! यूयं मह्यं  
सुवहुकम्=अनेकसंख्यकं 'सगङ्गीसागडं शकटीशाकटं शकटघः=लघुगाडिकाः  
शाकटं=शकटसमूहः, शकटयश्च शाकटं चेति समाहारे शकटीशाकटम्=अनेकगाङ्गी  
शकटसमूहं 'दलह' दत्त=प्रयच्छत, येन शकटयादिनाऽह 'तुभ्यं' युष्माकं तान्

સુરક્ષિત રહતે હૈં તો વહુ રૂપ મેં હાં અનેક શ્રમણાદિ જનોં દ્વારા  
તથા ચતુર્વિધ સંઘ દ્વારા અર્ચનીય હોતા હૈં યાવત્ સંમાન નીય હોતા  
હૈં । જૈસે વહુ ધન્ય સાર્થવાહ કી તૃતીય પુત્રવધૂ રક્ષિતા હુઈ હૈં । ( રોહિ  
ણિયાવિ એવં એવ નવરં તુભ્યે તાઓ ! મમ સુવહુયં સગડી સાગડં દલાહ  
જેળં અહં તુભ્યં તે પંચ સાલિ અક્ષય પઢિજિજ્ઞાપમિ ) હસી તરહ  
ધન્ય સાર્થવાહ કી ચૌથી પુત્રવધૂ રોહિણી કા બી ચરિત્ર જાનના ચાહિયે  
પરન્તુ રૂપ મેં જો વિશેષતા હૈં-વહુ રૂપ પ્રકાર હૈં-જવ ધન્યસાર્થવાહને  
ચૌથી અપની પુત્રવધૂ રોહિણિકા કો બુઝાયા-ઔર બુલાકર ડસસે પેસા  
કહા કિમૈને આજ સે ગત પાંચવે વર્ષ જો તુજે પાંચ શાલિ-અક્ષત દિયે  
યે-અન્હે તુમ વાપિસ સુજે આજ દો-તવ રોહિણિકાને ડસસેકહા હૈ  
તાત ! આપ મેરે લિયે અનેક છોટી ગાડિયાં ઔર વડી ૨ ગાડિયાં  
દીજિયે-કિ જિનકે દ્વારા મૈં આંપકે ડસ પાંચ શાલિ અક્ષતોં કો અર-

પાંચ મહામતો સુરક્ષિત રહે છે તો આ ભવમાં તે અનેક શ્રમણો દ્વારા અર્ચ  
નીય હોય છે. યાવત્ સંમાનનીય હોય છે, ધન્યસાર્થવાહની ત્રીજી પુત્રવધૂ  
રક્ષિતા જેમ સંમાનનીય થઈ તેમજ તે પણ સંમાનનીય થાય છે.

( રોહિણિયાવિ એવં એવ નવરં તુભ્યે તાઓ ! મમ સુવહુયં સગડીસાગડં દલહ  
જેળં અહં તુભ્યં તે પંચ સાલિ અક્ષય પઢિજિજ્ઞાપમિ )

આ પ્રમાણે હવે આપણે ધન્યસાર્થવાહની ચૌથી પુત્રવધૂ રોહિણીના ચરિત્ર  
વિષે પણ બાણુરું જોઈએ. તેના ચરિત્રની વિશેષ વાત આ પ્રમાણે છે કે—  
જ્યારે ધન્યસાર્થવાહ પોતાની ચૌથી પુત્રવધૂ રોહિણિકાને બોલાવી અને  
બોલાવીને તેને એમ કહ્યું કે આજથી પાંચ વર્ષ પહેલાં મેં તને પાંચ  
શાલિકણો આપ્યા હતા તે મને પાછા આપો. ત્યારે રોહિણિકાએ તેમને કહ્યું,  
કે હે તાત ! તમે મને અનેક નાની મોટી ગાડીઓ આપો કે જેથી તમે  
આપેલા પાંચ શાલિકણોને તેમાં ભરાવીને અહીં લાડુ અને તમને પાછા

पञ्च शाल्यक्षतान् 'पडिणिज्जाएमि' प्रतिनिर्यातयामि=प्रतिसमर्पयामि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहो रोहिणीमेवमवदत्- कथं खलु हे पुत्रि ! त्वं मम तान् पञ्च शाल्यक्षतान् शकटीशकटेन 'पडिणिज्जाइस्ससि' प्रतिनिर्यातयिष्यसि=प्रति-समर्पयिष्यसि ? ततः खलु सा रोहिणी धन्यं सार्थवाहमेवमवदत्-एवं खलु हे तात ! यूयम् इतः पञ्चमे संवत्सरे-अस्य मित्रज्ञातिभृत्यैः पुरतः संरक्षणार्थं संगोपनार्थं पञ्च शाल्यक्षतान् मङ्गं दत्तवन्तः, तात्र गृहीत्वा मया चिन्तितम्-अत्रकेनापि

वाकर यहां ला सऊं-और आपको पीछे वापिस करसके (तएणं से धण्णे रोहिणि एवं वयासी) रोहिणिका की इस प्रकार बात सुनकर धन्यसार्थवाहने उससे ऐसा कहा-(कहं णं पुत्ता ! तुमं मम ते पंच सालि अक्खए सगडी सागडेणं निज्जाइस्ससि) पुत्रि ! किस तरह तुम मुझे वे पांच शालि अक्षत शकटी और शकट समूह में भरने लायक कर पीछे वापिस देना चाह रही हो ? (तएणं सा रोहिणि धण्णं एवं वयासी-एवं खलु ताओ ! तुम्हे इओ पंचमें सबच्छरे इमस्स मित्तं जाव वहवे कुंमसया जाया-तेणेव कमेणं एवं खलु ताओ ! तुम्हे ते पंच सालि अक्खए सगडी सागडेणं निज्जाएमि) धन्यसार्थवाह का ऐसा कहना सुन कर रोहिणिका ने कहा-तान ! आजसे पांचवें वर्ष में आपने मुझे मित्र ज्ञाति आदिपरिजनों के समक्ष बुला कर पांच शालि अक्षत दिये थे-और उनके संरक्षण संवर्धन आदि विषय में आपने शिक्षा की थी ।

आपी शकुं (तएणं से धण्णे रोहिणि एवं वयासी) शैडिबुझाणी आ रीते वात सांभणीने धन्यसार्थवाहे तेने आ प्रभाणु कहुं

(कहं पुत्ता ! तुमं ते पंचसालि अक्खए सगडीसागडेणं निज्जाइस्ससि)

हे पुत्री ! मे' आपेक्षा पांच शालिकष्ठाने तमे नानी भोटी धल्ली भाडी ओभां बरावांने केनी रीते आपवा भागे छे

(तएणं सा रोहिणी धण्णं एवं वयासी-एवं खलु ताओ ! तुम्हे इओ पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्तं जाव वहवे कुंमसया जाया तेणेव कमेणं एवं खलु ताओ तुम्हे ते पंचसालि अक्खए सगडी सागडेणं निज्जाएमि)

धन्यसार्थवाहुं कथन सांभणीने शैडिबुझाणे तेमने कहुं- 'हे तात ! आ-जधी पांच वर्ष पडेला मित्रज्ञाति वगेरे परिजनों नी साथे मने गोलावीने तमे पांच शालिकष्ठो आप्या छटा अने आपती वणते तमे तेमना संरक्षण संवर्धन वगेरेनी आभतमा सूचने कर्थां छटा'.

तमारी पासधी शालिकष्ठो लधने मे' आम विचार कर्थां के आ पास शालिकष्ठो ताते आप्या छे अने तेमना संरक्षण तथा संवर्धन विषे ने

કારણેન ભવિત્વ્યમિતિ, તદનુ પિતૃગૃહપુરુષાન્ સમાહ્રય મયા વર્દયિતું તેમ્યસ્તે પશ્ચ શાલ્યક્ષતા દત્તાઃ । તેઃ સુપરિકર્મિત કેદારેષુ વપનાદિ ક્રિયાભિઃ પરિવર્દિતા જાતોસ્તે પ્રથમે વર્ષે મગધપ્રસ્થપરિમિતાઃ શાલ્યઃ । एवं क्रमशो द्वितीये वर्षे शाली-  
नां बहवः कुडवाः संजाताः । तृतीये वर्षे बहवः कुम्भाः । चतुर्थे संवत्सरे बहूनि कुम्भशतानि शालीनां संजातानि । तेनैव क्रमेण एवं खलु हे तात ! युष्माकं तान् पञ्च शाल्यक्षतान् शकटीशाकटेन प्रतिनिर्यातयामि=समर्पयामि । तत खलु स धन्यः सार्धबाहो रोहिणिकायै सुबहुकम्=अनेकसङ्ख्यकं शकटी शाकटं ददाति ।

મૈને उन्हें लेकर ऐसा विचार किया—कि तातने जो ये पांच शालि अक्षत दिये हैं और उनके संरक्षण आदि के विषय में जो कहा है सो नियमतः इसमें कोई न कोई कारण अवश्य है—ऐसा विचार कर मैंने पितृगृह ( पीघर ) के पुरुषों को बुलाया—और उन्हें उन पांच शालि अक्षतों को बहाने के लिये दिया ।

उन लोगों ने उन्हें लेकर सुपरि कर्मित खेतों में वपनादि क्रिया द्वारा खूब बढ़ाया प्रथम वर्ष में वे मगधदेश प्रसिद्ध प्रस्थप्रमाण निपजे । द्वितीय वर्ष अनेक कुडव प्रमाणबोधने पर हुए । तृतीय वर्ष में वे अनेक कुम्भप्रमाण हुए । चौथे वर्ष सैकड़ों कुम्भप्रमाण हुए । इस तरह आपके द्वारा दिये हुए वे पांच शालि अक्षत आज अनेक गाड़ी और गाड़ा प्रमाण हुए हैं—इसलिये मैं भागके लिये आज उन्हें अनेक गाड़ी और गाड़ा प्रमाण करके पीछे वापिस देरही हूँ । तएणं से घण्णे सत्थवाहे रोहिणिघाए सुबहुयं सगडी सागडं दलयइ, तएणं सा रोहिणि सुबहुं

કંઈ મને કહ્યું છે, જેથી ચોક્કસ આ વાતમા કંઈક રહસ્ય હોવું જોઈએ. એમ વિચાર કરીને મેં પિયરના માણસોને બોલાવ્યા અને તેમને વર્ધન માટે પાંચ શાલિકણે આપ્યા.

તેમણે શાલિકણે લઈ લીધા, અને સુપરિકર્મિત જોતરામાં વારીને તે કણેની ખૂબ વૃદ્ધિ કરી પહેલા વર્ષે મગધ દેશ પ્રસિદ્ધ પ્રસ્થ પ્રમાણ બેટલા શાલિકણે થયા. બીજા વર્ષે વાવવાથી ઘણા કળશો ભરાય તેટલા થયા, ત્રીજા વર્ષે બીજા વર્ષ કરતાં પણ વધારે કળશો ભરાય તેટલી શાલિ થઈ. ચોથા વર્ષે વાવવાથી સેકંડા કળશો ભરાય તેટલી શાલિ થઈ. આ પ્રમાણે તમે આપેલા પાંચ શાલિકણે આજે ઘણી નાની મોટી ગાડીઓમાં ભરાય તેટલા થઈ ગયા છે, તેથી જ હું આપને તે પાંચ શાલિકણે અનેક ગાડીઓમાં ભરાય તેટલા પ્રમાણમાં વર્ધન કરીને પાછા આપી રહી છું.

( તएणं से घण्णे सत्थवाहे रोहिणिघाए सुबहुयं सगडी सागडं दलयइ,

ततः खलु सा रोहिणी सुबहुकं शकटीशाकटं गृहीत्वा यत्रैव स्वकं कुलगृहं=पितृगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कोष्ठागाराणि=कोष्ठगृहाणि 'विहाडे' विघटयति=उदघाटयति, विघटय्य पल्लान्=शालिकोष्ठान् 'उन्मिदे' उन्मिनत्ति=उन्मुद्रितान् करोति, तेषां मुद्रामपनयतीत्यर्थः, उन्मिद्य शकटीशाकटं भरति, भृत्वा राजगृहं नगरं मध्य मध्येन यत्रैव स्वकं गृहं. यत्रैव धन्यः सार्यशाहस्तत्रैवोपागच्छति. । ततः खलु राजगृहे नगरे शृङ्गाटकं यावत्-महापथपथेषु बहुजनोऽन्यो न्यमेवमाख्याति

सगडी सागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्टागारे विहाडेइ) इस तरह रोहिणिका के धन्य सुनकर धन्यसार्थवाहने उसे अनेक शकटी और शकटों को दिया वह रोहिणि का उन अनेक शकटी और शकटों को लेकर जहां अपना कुलगृह था वहां पहुँची-पहुँच कर उसने वहाँ के कोछागार को उघाड़ा (विहाडित्ता पल्लं उन्मिदइ)-उघाड़ कर वहाँ रक्खे हुए शालि-कोष्ठों को खोला उन्हें मुद्रा रहित किया-(उन्मिदित्ता सगडीसामडं भरेइ) बाद में उनसे अनेक शकटी और शकटों को भरा (भरित्ता रायगिहं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ) भर कर राजगृह नगर के ठीक बीचो बीच के मार्ग से होकर वह जहाँ अपना घर था और जहाँ धन्य सार्यशाह थे वहाँ पहुँची-(तएणं रायगिहे नयरे सिंगाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमाइक्खइ, धण्णेणं

तएणं सा रोहिणी सुबहुं सगडीसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्टागारे विहाडेइ)

आ रीते शैडिखिअनी वात सांलणीने धन्यसार्थवाहे तेने धल्ली नानी भोटी गाडीअो आणी. शैडिखिअते गंधी नानी भोटी गाडीअोने लधने अथा पोतानुं पियर डंतुं त्यां आवी त्यां आनीने तेजे त्याने केडार उधाउथे (विहाडित्ता पल्लं उन्मिदइ) त्यारणाड त्यां भूकेला शाकिना केडारोने उधाउथा (उन्मिदि. सासगडीसागडं भरेइ) अने तेभनाथी नानी भोटी धल्ली गाडीअोने लारी.

( भरित्ता रायगिहं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ )

भरीने शरुगृह नगरना ठीक मध्य भागे' यधने अथां तेनुं पोतानुं घर अने अथां धन्यसार्थवाह डेता त्यां पडो'थी

( तएणं रायगिहे नयरे सिंगाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमाइक्खइ,



ધન્યઃ=ધન્યવાદપાત્રં સ્વલ્પ હે દેવાણુમિયાઃ ધન્યઃ સાર્થવાહઃ યસ્ય સ્વલ્પ રોહિણિકા સ્તુષા=ચતુર્થપુત્રવધૂ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ શકટીશાકટેન નિર્યાતયતિ. । તતઃ સ્વલ્પ સ ધન્યઃ સાર્થવાહઃ પશ્ચ શાલ્યક્ષતાન્ શકટીશાકટેન નિર્યાતિતાન્=સમર્પિતાન્ પશ્યતિ દૃષ્ટ્વા હૃષ્ટઃ યાવત્ 'પઢિચ્છહ' પ્રતોચ્છતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતીપ્ય=સ્વી-કૃત્ય તસ્યૈવ મિત્રજ્ઞાતિપ્રમૃતેઃ, ચતસૃણાં ચ સ્તુષાણાં કુલગૃહસ્ય પુરતો રોહિણિકાં સ્તુષાં તસ્ય=નિજસ્ય કુલગૃહસ્ય=કુલમ્ભસ્ય વહુષુ કાર્યેષુ ચ યાવદ્ રહસ્યેષુ ચ

દેવાણુપિયા । ધણે સત્યવાહે તે પંચ સાલિ અક્ષલ્પ સગડી સાગડેળં નિજાઈપ પાસહ પાસિત્તા હદ્દ તુદ્ધ પઢિચ્છહ, પઢિચ્છિત્તા તસ્સેવ મિત્ત-ળહ૦ ચડળ્હ ય સુળ્હાળં કુલઘરસ્સ પુરઓ રોહિણિયં સુળ્હં તસ્સ કુલ ઘરસ્સ વહુસુ કજ્જેસુ ય જાવ રહસ્સેસુ ય અપુચ્છણિજ્જં જાવ સન્વક જ્જ વહુવિયં પમાળભૂય ઠાવેહ ) જષ વે ગાડી ઔર ગાઢે ભરે હૂપ રાજગૃહ કે મધ્યમાર્ગ સે હોકર જા રહે થે-તલ્લ લોગોં ને દેલ્લકર નગરમેં શૃંગાટક આદિ માર્ગોં કે ઉપર પરસ્પર હસ પ્રકાર સે જાન ચિત કરના પ્રારંભ કિયા “ દેવાણુમિયો ! દેલ્લો ધન્ય સાર્થવાહ કિતના અધિક ધન્ય વાદ્ કા પાત્ર હૈ કિ જો ચતુર્થ પુત્ર વધૂ રોહિણિકા કે બ્રાગ પાંચ શાલિ અક્ષતોં કી ગાડી ઔર ગાડોં સે ભરકર પીછે લૌદાપે હૂપ દેલ્લ રહા હૈ । ઔર હૃષ્ટ તુષ્ટ હો ડન્હેં સ્વીકાર કર રહા હૈ । તથા સ્વીકાર કરકે ડસ રોહિણિકા કો મિત્રજ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કે ચારોં પુત્રવધૂઓં કે કુલ ધણેળ દેવાણુપિયા ! ધણે સત્યવાહે તે પંચસાલિ અક્ષલ્પ સગડીસાગડેળં નિ જ્જાઈપ પાસહ પાસિત્તા હદ્દ તુદ્ધ પઢિચ્છહ પઢિચ્છિત્તા તસ્સેવ મિત્તળાહ. ચડળ્હ ય સુળ્હાળં કુલઘરસ્સ પુરઓ રોહિણિયં સુળ્હં તસ્સ કુલઘરસ્સ વહુસુ કજ્જેસુ ય જાવ રહસ્સેસુ અપુચ્છણિજ્જં જાવ સન્વકજ્જ વહુવિયં પમાળભૂયં ઠાવેહ )

અથારે તે નાની ખોટી ગાડીઓ રાજગૃહ નગરના મધ્યમાર્ગે થઇને પસાર થઈ રહી હતી ત્યારે નગરના શૃંગાટક વગેરેમાં એકઠા થયેલા લોકો પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતો કરવા લાગ્યા “ દેવાણુમિયો ! : જુઓ ધન્યસાર્થવાહ કેટલો બધો ભાગ્યશાળી છે કે જે આજે એથી પુત્રવધૂ શેહિબુકા વડે પાંચ શાલિક્ષોનાં ગાડાંઓ અને ગાડીઓ ભરીને ફરી પાછા આવતાં નેહ રહ્યો છે. અને પ્રસન્ન થઇને તુષ્ટ થઇને તેને સ્વીકારી રહ્યો છે. તે આ બધું સ્વીકારીને શેહિબુકાને મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનો તેમજ આરે પુત્રવધૂઓના કુટુંબી-

આપચ્છનીયાં યાવત્ સર્વકાર્યવર્દિકાં પ્રમાણમૂતાં ' ઠવેહ ' ' સ્થાપયતિ=સર્વ કુટુમ્બાધિષ્ઠાત્રીત્વેન તાં નિયોજયતીત્યર્થઃ ।

एवमेव हे श्रमणाः । आयुष्मन्तः ! योऽस्माकं श्रमणोवा श्रमणीवा प्रव्रजितः सन् विहरति यदि पञ्च च तस्य महाव्रतानि संवर्द्धितानि भवन्ति स खलु इह भवे एव बहूनां श्रमणानां ४=चतुर्विधसंघस्य अर्चनीयः—यावत् चातुरन्तर्सारकान्तारं ' वीईवहस्सह ' व्यतिव्रजिष्यति=पारयिष्यति यथा च सा रोहिणिका=धन्यसार्थवा हस्य चतुर्थी पुत्रवधूः । उक्तञ्च—

गृह वर्ग के समक्ष अपने कुटुम्ब के अनेक कार्यों में यावत् रहस्यों में पूछने योग्य यावत् समस्त कार्यों में प्रमाणभूत उसे बना रहा है ।

तथा संपूर्ण कार्यों की बढ़ाने वाली उसे मान रहा है—कारण इस का केवल यही है कि धन्य सार्थवाह ने उस रोहिणिका को अपने समस्त कुटुम्ब की अधिष्ठात्री बना दिया । ( एवमेव समाणाउसो ! जाव पंच य से महव्वया संवद्धिया भवंति सेणं इह भवे चेव बहुणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवहस्सह जहाव सा रोहिणिया एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमं पेक्खे सि वेमि ) इस तरह हे आयुष्मन्न श्रमणो ! जा हमारा श्रमण तथा श्रमणीजम दीक्षित होता हुआ अपने पंच महाव्रतों को बढ़ाता रहता है वह रोहिणिका की तरह इस भवमें ही अनेक श्रमण आदि महानुभावों द्वारा तथा चतुर्विध संघ द्वारा अर्चनीय आदि होता हुआ चतुः

ઓની સાથે પોતાના કુટુંબની ઘણી બાબતોમાં યાવત બીજી યજ્ઞ ઘણી રહે-  
ત્યની મહત્વપૂર્ણ વ તોઆ તેની સલાહ લઈને તેને પ્રમાણુ ભૂત બનાવી રહ્યો છે.

તેમજ શેહિબ્હિકાને તે બધા કામોને સંપૂર્ણ રીતે પાર પાડનારી માની  
રહ્યો છે. કેમ કે ધન્યસાર્થવાહે શેહિબ્હિકાને પોતાના આખા કુટુંબની અધિષ્ઠાત્રી  
બનાવી દીધી છે

( एवामेव समाणाउसो ! जाव पंचय से महव्वया संवद्धिया भवंति से णं इह भवे चेव बहुणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीईवहस्सह जहाव सा रोहिणिया एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमं पेक्खे सि वेमि )

આ પ્રમાણુ જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણુ તેમજ  
શ્રમણીજન દીક્ષિત થઈને પોતાના પંચમદામતોનું વર્ધન કરે રહે છે—તે શેહિ-  
બ્હિકાની જેમ આ જગતમાં જ ઘણા શ્રમણુ વગેરે મહાનુભાવો દ્વારા તેમજ  
ચતુર્વિધ સંઘદ્વારા અર્ચનીય હોય છે. અને તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ અનાદિ  
જ્ઞા ૩૦

“ જહસેટ્ટી તહ ગુરુના, જહણાજનનો તહ સમણસંઘોય ।

જહ બહુયા તહ મન્વા, જહ સાલિકના તહ વયાઈ ॥ ૧ ॥”

છાયા—“ યથાશ્રેષ્ઠી તથા ગુરવઃ, યથાજ્ઞાતિજનસ્તથા શ્રમણસંઘશ્ચ ।

યથા વધ્વસ્તથા મન્વાઃ (શ્રમણાઃ) યથા શાલિકનાસ્તથા વ્રતાનિ ॥ ૧ ॥

इति एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्षं संप्राप्तेन सप्तमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तः अर्थ=भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः ।” इति ब्रवीमि इति पूर्ववत् ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितछलितक-

लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-

त्रપતિકોલ્હાપુરરાજપદત્ત-‘જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય’ પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ-

ગુરુ-બાલબ્રહ્મચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલ-

વ્રતિવિરચિતાયાં ‘જ્ઞાતાધર્મકથા’ સૂત્રસ્થાનગારધર્મામૃતવ-

ર્ષિવ્યાખ્યાયાં વ્યાખ્યાયાં સપ્તમમધ્યયનં સંપૂર્ણમ્ ॥ ૭ ॥

નૈતિ રૂપ હસ અનાદિ સંસાર કાન્તાર કો પારકરવેતાહૈ । કહા મી હૈ-  
એષ્ટી કે સ્થાનાપન્ન યહાં ગુરુજન હૈ જ્ઞાતિજનોં કે સ્થાનાપન્ન શ્રમણ સંઘ  
હૈ, બધુઓં કે સ્થાનાપન્ન મન્વજન હૈ ઔર શાલિકનોં કે સમાન પાંચ  
મહોવ્રત હૈ ।

હસ પ્રકાર હૈ જંબૂ ! મુક્તિ કો પ્રાપ્ત હુપ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર  
ને હસ સપ્ત જ્ઞાતાધ્યયન કા પૂર્વોક્ત અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ । એસા  
મૈં તુમ સે કહતા હૂં ।

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસી લાલજી મહારાજ કૃત “જ્ઞાતા-  
ધર્મકથાસૂત્ર” કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિની વ્યાખ્યા કા સાતવા  
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૭ ॥

સંસાર કાંતાર ( જંગલ ) ને પાર થઇ જાય છે, અહીં એષ્ટીના સ્થાને ગુરુ-  
જનો છે. જ્ઞાતિજનોના સ્થાને શ્રમણસંઘ છે. સગાવહાલા બોના સ્થાને મન્વ-  
જનો છે અને શાલિકણો ના સ્થાને પાંચમહાવ્રતો છે.

આ રીતે હે જંબૂ ! મુક્તિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ સાતમા  
જ્ઞાતા ધ્યયનનો અર્થ પૂર્વોક્ત રૂપે નિરૂપિત કર્યો છે. આમ હું તમને કહી રહ્યો છું.  
શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત ‘જ્ઞાતાધર્મકથા’

સૂત્રની અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિની વ્યાખ્યાનું સાતમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૭॥

## ॥ अष्टममध्ययनं प्रारभ्यते ॥

उक्तं सप्तमाध्यनं सम्પતં મલ્લીનામકમષ્ટમાધ્યયનમુચ્યતે, एवं रूपेण सहो-  
स्य सम्बन्धः—पूर्वाध्ययने ‘महाव्रतानां विराधनायामर्थो भवति, तथा तत्समारा-  
धनायां शिवसुखावाप्तिरूपः परमार्थो भवती’ त्युक्तम्, अस्मिन्मध्ययने तु तेषां  
महाव्रतानामेव स्तोकेनापि मायाशल्येन मालिन्ये सति यथावत् स्वफलजनकत्वं  
नास्तीति प्रतिबोध्यते, इत्येवं प्रसंगतः प्राप्तस्यैतस्याध्ययनस्य प्रथमं सूत्रमाह—

—: अष्टम अध्ययन प्रारभ —

सातवाં અધ્યયન કા ભાવ સંપૂર્ણ હો ગયા છે—અબ મલ્લી નામકા  
અષ્ટમ અધ્યયન પ્રારંભહોતા છે ! હસઅધ્યયન કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ  
હસ પ્રકાર સે સંબંધ છે કિ પૂર્વ અધ્યયનમેં જો યહ વિષય કહા ગયા  
છે કિ જો સાધુમહાવ્રતોં કી વિરાધના કરતા છે વહ અનેક અનર્થોં કા  
ભોક્તા હોતા છે ઔર ચતુર્ગતિ સંસાર મેં પરિભ્રમણ કરતા છે જો હનકી  
રક્ષા કરતા છે—અચ્છી તરહ સે આરાધના કરતા છે—વહ શિવ સુખ  
પ્રાપ્તિરૂપ પરમાર્થકા ભોક્તા હોતા છે ।

અબ હસ અધ્યયન મેં સૂત્રકાર હસવાતકો સ્પષ્ટ કહતે હેં કિ હન  
મહાવ્રતોં મેં યાદિ થોડીસી ખી માયાશલ્ય સે મલિનતા આજાતી છે તો  
વે યથાવત્ અપને ફલકે જનક નહીં હોતે હેં । હસીસંબંધ સે પ્રાપ્ત હુપ  
હસ અધ્યયન કા યહ પ્રથમ સૂત્ર છે જહણં મંતે હત્યાદિ

### આઠમું અધ્યયન.

સાતમું અધ્યયન પુરું થઈ ગયું છે. હવે મલ્લી નામે આઠમું અધ્યયન  
પ્રારંભ થાય છે. આ અધ્યયનનો પૂર્વ અધ્યયનની સાથે સંબંધ એવી રીતે છે  
કે—સાતમા અધ્યયનમાં એ પ્રકારે ચર્ચા થઈ કે જે સાધુ મહાવ્રતોની વિરાધના  
કરે છે તે ઘણા અનર્થોને લોગવનાર હોય છે, અને તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ  
સંસારમાં પરિભ્રમણ કરે છે. જે પંચમહાવ્રતોની રક્ષા કરે છે—સારી પેઠે તેમની  
આરાધના કરે છે તે શિવસુખ પ્રાપ્તિરૂપ પરમાર્થને લોગવતા હોય છે.

હવે આઠમાં અધ્યયનમાં સૂત્રકાર એ બાબતનું સ્પષ્ટીકરણ કરે છે કે  
મહાવ્રતોમાં જો થોડી પણ માયા શલ્યથી મલીનતા આવી જાય તો તેમનું  
રૂપ સંપૂર્ણ પણે મળતું નથી. એજ સંબંધની ચર્ચા માટેના આઠમા અધ્યય-  
નનું આ પહેલું સૂત્ર છે. ‘જહણં મંતે’ હત્યાદિ—

મૂલ્ય—જહ્નં મંતે ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ  
સંપત્તેણં સત્તમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પપ્પણત્તે, અટ્ટમસ્સ  
ણં મંતે ! કે અદ્દે પપ્પણત્તે ? ।

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समणं इहेव जंबू-  
दीवे दीवे महाविदेहेवासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निस-  
ढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीयोयाए महाणइए दाहि-  
णेणं सुहावहस्स वक्खारपव्वतस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमल-  
वणसमुदस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं सलिलावतीनामं विजए  
पन्नत्ते, तत्थ णं सलिलावती विजए वीयसोगानामं राय-  
हाणी पप्पणत्ता, नवजोयणवित्थिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोग-  
भूया, तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसि-  
भाए इंदकुंभे नामं उज्जाणै, तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए  
बले नामं राया तस्स धारणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे,  
होत्था, तएणं सा धारिणीदेवी अन्नया कयाइं सीहं सुमिणे  
पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव महब्बले नामं दारए जाव उम्मुक  
जाव भोगसमत्थे ॥ सू० १ ॥

टीका—श्री जम्बूस्वामी पृच्छति—‘जह्णं मंते !’ इत्यादि ‘जह्’ यदि  
‘णं’ खलु ‘मंते !’ हे भदन्त ! भ्रमणेन भगवता महावीरेण श्रीवर्धमान स्वा-

टीકાર્થ—(જહ્નં મંતે ! ) શ્રી જંબૂસ્વામી સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હૈં  
કિ (જહ્નં મંતે ! ) હે ભદંત ! યદિ ( સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ  
સંપત્તેણં સત્તમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પપ્પણત્તે અટ્ટમસ્સ ણં મંતે ! કે

टीकार्थ—(जह्णं मंते ! ) श्री जम्बू स्वामी पूछे छे के (जह्णं मंते) के भदंत ! ने  
(समणेषं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स णायज्झयणस्स अय-  
मद्वे पप्पणत्ते अट्टमस्स णं मंते ! के अद्वे पप्पणत्ते )



હસ્ય સુખોત્પાદકસ્ય 'વક્ત્રારપન્વયસ્સ' વક્ત્રસ્કારપર્વતસ્ય પશ્ચિમે પશ્ચિમાયાં દિશિ પશ્ચિમલવણસમુદ્રસ્ય 'પુરત્થિમેળ' પૌરસ્ત્યે પૂર્વે, અત્ર અસ્મિન્ સ્થાને સ્થલ સલિલાવતી નામા વિજયઃ પ્રજ્ઞાસઃ- પશ્ચિમ સમુદ્રપામિન્યાઃ શીતોદામહાનદ્યા દક્ષિણતઃ સલિલાવતીનામકં ચક્રનર્તિનાં વિજેતવ્યં ક્ષેત્રલ્પદમાસીત્, તદેવ સલિલાવતીવિજય इत्युच्यते इत्यर्थः ।

તત્ર સ્થલ સલિલાવતીવિજયે વીતશોકા નામ રાજધાની પ્રજ્ઞા કથિતા । સા કીદૃશો- ઇત્યાહ-નવયોજનવિસ્તીર્ણા યાવત્ દ્વાદશ યોજનાયામા પ્રત્યક્ષં દેવ લોકભૂતા સાક્ષાત્ સ્વર્ગસ્વરૂપા । તસ્યાઃ સ્થલ વીતશોકાયા રાજધાન્યા ઉત્તર પૌરસ્ત્યે=દિગ્ભાગે ઈશાનકોણે ઇન્દ્રકુમ્ભં નામોદ્યાનમાસીત્ । તત્ર સ્થલ વીતશોકાયાં રાજધાન્યાં બલો નામ રાજાઽભૂત । તસ્ય બલસ્ય રાજો ધારણી પ્રમુખં દેવીસહસ્રમ્.

હાનદી કી દક્ષિણ દિશામેં, સુખોત્પાદક વક્ત્રસ્કારપર્વત કી પશ્ચિવદિશામેં, પશ્ચિમલવણસમુદ્ર કી પૂર્વ દિશા મેં સલિલાવતી નામ કા વિજય હૈ ।

પશ્ચિમ સમુદ્ર મેં જાનેવાલી શીતોદા મહાનદી કી દક્ષિણદિશા મેં જો સલિલાવતી નામકા વિજય હૈ-જિસે ચક્રવતી જીતા કરતે હૈં । उसी का नाम सलिलावती विजय है ।

( તત્પથં સલિલાવતી વિજય વીયસોગા નામં રાયહાણી પળ્ળન્તા )  
 ઉસ સલિલાવતી વિજય મેં વીતશોકા નામ કી રાજધાની હૈ  
 ( નવ જોયળવિથિન્ના જાવ પચ્ચક્કલં દેવલોય યા ) હસકા નૌ યોજન  
 કા વિસ્તાર હૈ ઓર ૧૨ યોજન કા આયામ હૈ । યહ પ્રત્યક્ષ મેં દેવલોક  
 -અમરાવતી-જૈસી પ્રતીત હોતી હૈ । ( તીસેળં વીયસોગા રાયહાણી  
 ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાણ હંદકુંભે નામં ઉજ્જાણે ) ઉસ વીતશોકા નગરી  
 કે ઈશાન કોળ મેં એક ઇન્દ્રકુંભ નામકા ઉદ્યાન થા । ( તત્પથં વીયસોગા

વતી નામે એક ક્ષેત્ર-ખંડ-છે. જેને ચક્રવર્તી સ.અટો છત્તા આવ્યા છે-તેણું નામ સલિલાવતી વિજય છે

( તત્પથં સલિલાવતી વિજય વીયસોગા નામં રાયહાણી પળ્ળન્તા ) સલિલાવતી વિજયમાં વીતશોકા નામે એક રાજધાની છે ( નવ જોયળ વિથિન્ના જાવ પચ્ચક્કલં દેવલોય મૂયા ) તેના વિસ્તાર નવ યોજન જેટલો તેમજ તેના આયામ ૧૨ ( બાર ) યોજન જેટલો છે તે પ્રત્યક્ષ દેવલોક-અમરપુરી-જેવી મુદર છે. ( તીસેળં વીયસોગા રાયહાણી ઉત્તરપુરત્થિમે દિશિમાણ હંદ કુંભે નામં ઉજ્જાણે ) તે વીત શોકા નગરીના ઈશાન કોણમાં ઇન્દ્રકુંભ નામે એક ઉદ્યાન હતો.

( તત્પથં વીયસોગા રાયહાણી બલે નામં રાયા, તસ ધારણી પામોક્કલં

अवरोधे=अन्तः पुरे आसन्. बलनामकस्य तस्य राज्ञो धारणीप्रमुखः एकसहस्र संख्यकाः देव्यआसन्नित्यर्थः ।

ततस्तदनन्तरं खलु सा धारिणी देवी अन्यदा कदाचित्—अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये सिंह स्वप्ने स्वप्नावस्थायां दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा=जागरिता, यावद् महाबलो नाम दारको जातः इह यावच्छब्देन—सा स्वपवृत्तं मर्तुरग्रे निवेदयति, ततः स्वप्नपाठकमुखात् स्वप्नफलश्रुतिस्ततः सा गर्भवती जाता संपूर्णेषु मासेषु महाबल नामकः पुत्रो जात इत्यर्थो बोद्धव्यः । सा कीदृश इत्याह उन्मुक्त—यावद्

रायहाणीए बले नामं राया, नस्स धारणी पामोक्खं देवी सहस्सं ओराहे होत्था) उस वीत शोका नाम की राजधानी में बल नामका राजा रहता था । उसके अन्तः पुर में धारणी प्रमुख १ हजार रानियां थीं । ( तएणं सा धारिणी देवी अन्नया कयाईं सिहे सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव महव्वले नामं दारए जाए उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे ) एक दिनकी बात है कि जब धारिणी देवी अपनी शय्या में आनन्द के साथ सोयी हुई थी उस समय उसने रात्रिके पश्चिम प्रहरमें स्वप्नमें एक सिंह देखा । स्वप्न देखने के साथ साथ वह जग गई । स्वप्न का वृत्तान्त उसने अपने पतिसे निवेदिन किया । उसने स्वप्न पाठकों को बुलाया और उनलोगोंने स्वप्न फलका रहस्य उसे सुनाया रानीने भी वह सब सुना । वह गर्भवती हो गई । गर्भ के नौ मास रात्रि सगदे सात और आनन्द के साथ उसके व्यतीत हुई । बाद में महाबल नामका पुत्र उससे उत्पन्न हुआ ।

देवी सहस्सं ओराहे होत्था )

ते वीतशोका नामनी राज नीमां णव नामे राज रहेते। हते।

तेना रजुवासमां धारणी ? ण ओकं डंजर राणीओ हती.

( तएणं सा धारिणीदेवी अन्नया कयाईं सिहे सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा जाव महव्वले नामं दारए जाए उम्मुक्कजाव भोगसमत्थे )

ओक वषटनी बात छे के धारिणीदेवी पोतानी शय्या उपर सुजेथी सूती ते समये रात्रिना छेदवा पडोरमां तेखे स्वप्नमां ओक सिंह जेथे. स्वप्न जेतानी साथेज ते जगी गछ, अने स्वप्ननी विगत पोताना पतिने कही संभ-जायी. स्वप्न पाठकेने गोदाव्या अने तेमखे राजने स्वप्नना रूप रिसे अधी बात कही. राणीओ पखु स्वप्नना रहस्यने स्वप्न पाठकेना सुजेथी संभज्युं ते सगर्वा थछ. गर्वांना नव भास अने साडा सात द्विसे सुजेथी पसार थया. तयार भाइ यथा समये तेने मडाणल नामे पुत्रने जन्म थये.



ભોગ સમર્થઃ = ઉન્નુક્તવાલમાત્ર વિજ્ઞાતપરિણતમાત્રઃ સર્વકલાકુશલો ભોગસમર્થો જાત इत्यर्थः ॥ સૂ. ૧ ॥

મૂલમ્-તદ્દર્શનં તં મહાબલં અમ્માપિયરો સરિસિયાણં કમલસિરી પામોક્ષણં પંચણહં રાયવરકન્નાસયાણં ઇગદિવસેણં પાણિ ગેણહાવેતિ, પંચ પાસાયસયા પંચસયદાઓ જાવ વિહરહ, થેરાગમણં, હંદકુંભે ઉજ્જાણે સમોસઢા । પરિસા નિગ્ગયા, વલો વિ નિગ્ગઓ ધર્મં સોચ્ચા ણિસમ્મ જં નવરં મહાબલં કુમારં રજ્જે ઠાવેહ જાવ ઇક્કારસંગવી બહૂણિ વાસાણિ સામણપરિયાયં પાઉણિત્તા જેણેવ ચારુપઠવણ માસિણં ભત્તેણં સિદ્ધે ॥સૂ.૨॥

ટીકા-તતસ્તદનન્તરં ચલુ તં 'મહાબલં' મહાબલનામકં કુમારં માતાપિતૃ 'સરિ સિયાણં' સદૃશીનાં કુલેન વયસા યોગ્યાનાં કમલશ્રીપ્રમુખાણાં, પશ્ચાન્નાં રાજવરક ન્યાશતાનાં=પશ્ચશતાનાં રાજવરકન્યાનામ્, એકદિવસે પાણિ ગ્રાહયતઃ, પશ્ચ

ધીરે ૨ વહ મહાબલ પુત્ર બાલ્યકાલ કો પૂરા કરકે યૌવન અવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુઆ । અવરથાનુસાર વહ વિકસિતજ્ઞાન વાલા મી હોગયા સર્વકલાઓ મેં કુશલમતિ બન ગયા ઓર-પંચેન્દ્રિયોં કે ભોગ ભોગને લાયક મી હો ગયા । સૂત્ર " ૧ "

‘ તદ્દર્શનં તં મહાબલં ’ इत्यादि

ટીકાર્થ- ( તદ્દર્શનં ) इसके बाद ( तं म०बलं अ०मापियरो ) उस महाबल का माता पिताने ( एगदिवसेणं ) एक ही दिन के भीतर ( सरिसियाणं क०मलसिरी प०मोक्खणं प०चणहं रायवरक०न्नासयाणं ) समान कुल, वय वाली क०मलश्री आदि पांचसौ श्रेष्ठ राजक०न्याओं के साथ ( पाणि

સમય જતાં મહાબલ બચપણુ બટાવીને જુવાન થયો. ઉંમરના વધારાથી વધીને તે સવિશેષ વિકાસ યુક્ત જ્ઞાનવાળો ગયો. તે બધી કળાઓમા કુશળ બુદ્ધિ વાળો અને પંચેન્દ્રિયોના ભોગોને ભોગવવા યોગ્ય થઈ ગયો. ॥ સૂત્ર " ૧ " ॥

‘ તદ્દર્શનં મહાબલં ’ इत्यादि

ટીકાર્થ- ( તદ્દર્શનં ) त्या०भा० ( तं म०बलं अ०मापियरो ) म०बलने तेनां माता पिताये ( एगदिवसेणं ) इ०क अ०क दिवसभां ज०.

( सरिसियाणं क०मलसिरीप०मोक्खा णं प०चणहं रायवर क०न्नासयाणं )

સરખા કેળ અને સરખી આયુષ્યવાળી કમળ શ્રી વગેરે પાંચસો ઉત્તમ રાજ કન્યઓની સાથે ( પાણિ ગેણહાવેતિ ) ધરણીવી હીથો. ( પંચ પાસાય સયા પંચ સય

प्रासादशतानि पञ्चशतवधूनां निवासार्थं पञ्चशतानि प्रसादान् कारयत् । पञ्चशतदायः=पञ्चशतप्रमितो दायः=यौतुकं 'दहेज' इति भाषा प्रसिद्धः असुरेण तस्मै महाबलकुमाराय प्रदत्त इत्यर्थः । स महाबलकुमारः यावद्=उपरि प्रासादे मानुष्यकान् कामभोगान् उपभुञ्जानः, विहरति=आस्तेस्मः । अथ—'येरागमणं' स्थविरागमनम्=तत्र वीतशोकायां नगर्यां स्थविराणामागमनमभूदित्यर्थः । ते स्थविराः इन्द्रकुम्भे=इन्द्रकुम्भनामके 'उज्जाणे' उद्याने 'समोसोदा' समवसृताः—अवग्रहमवग्रहावस्थिताः । परिषर्गिता=वीतशोकानगरी निवासीनो लोकाः स्थविराणं वन्दनार्थं बहिर्निःसृता इत्यर्थः । बलोऽपि निर्गतः=बलनामा नृपोऽपि नगर्यां निःसृतः । स्थविराणामन्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चम्य, राजा बलः प्रतिबुद्धः सन्नवादीत्—

गेण्हावेति) विवाह कर दिया । ( पंच पासायसया पंचसयदाओ ) और पांच सौ प्रासाद उन ५०० पांच सौ बधूओं के निवास के लिये बनवा दिये । महाबल कुमारके लिये उसके श्वसुर ने ५०० प्रमाण दहेज दिया । अर्थात् दहेज में भी वस्तुए महाबल कुमारको मिली—वे सब ५०० ५०० सौ थी । ( जाव विहरइ ) इस तरह वह महाबल कुमार यावत् महलों के ऊपर रहता हुआ मनुष्य सब संबंधी काम भोगों को भोगने लगा ( येरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसदा परिसा निगगया बलो वि निगगओ ) वीतशोका नामकी उसनगरी में एक समय स्थविरो का आगमन हुआ वे सब वहाँ के इन्द्रकुंभ नाम के उद्यान में मुनिपरंपरा के अनुसार अवग्रह प्राप्तकर विराजमान हुए । नगरी के परिषद मुनि वंदना के लिये अपने अपने घर से निकल कर उस उद्यान में आई । बल राजा भी आया । ( धम्मं सोऊन्ना जिसस्स

वाओ ) अने पांचसो भडेले ते पांचसो नववधूओ ने रडेवा भाटेअनावी दीधा. भडाअल कुमारना ससराओ पांचसो प्रभाओ देअ आ'धु'. ओटले डे भडाअलकुमारने देअभां ओटली वस्तुओ भणी ते तमाभ पांचसोनी स'भ्यावाणी हटी. ( जाव विहरइ ) आ प्रभाओ भडाअल कुमार 'यावत्' अथा भडेलोभां रहिने मनुष्य लवना अथा सोओओओगववा लाओ.

( येरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसदा परिसा निगगया बलो वि निगगओ )

ओक वणते वीतशोक नामनी ते नगरीभां स्थविरेशुं आगमन थयुं. तेओ अथा त्यांना ध-न्द्रकुंभना उद्यानभां मुनिपरंपराने अनुसरतां अवग्रह भेणवीने विराजमान थया. नागरिकोनी परिषद पोत पोताना वेश्थी नीकणीने मुनिजनेनी वंदना भाटे उद्यानभां आवी. जलराज पण त्यां आओ,

अत्र पूर्ववद् वर्णनं बोध्यम्. यथा हे देवानुप्रियाः महाबलकुमारं राज्ये स्थापित्वा शुष्माकमन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामि. ततः स्थविरैः— 'विलम्बं माकुरु' इत्युक्तोऽसौ बलः यन्नवरं=विशेषवृत्तमाह—महाबलं महाबलनामकं स्वपुत्रं राज्ये स्थापयति स्थापयित्वा स्थविराणां समीपे प्रव्रजितः ।

यावद् एकादशाङ्गविद् एकादशाङ्गान्यधीते स्म.। बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा यत्रैव चारुपर्वतस्तत्रोपागत्य मासिकेन भक्तेन=मासिकभक्तप्रत्याख्याने न मासिकमनशनं कृत्वेत्यर्थः, सिद्धः=मुक्तिं प्राप्तः ॥ सू०२ ॥

जं नवरं महबलं कुमारं रज्जे ठावेइ, जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामणपरियायं पाउणिप्ता जेणेव चारुपव्वए, मासिएणं भक्तेणं सिद्धे ) स्थविरों से श्रुतचारिअ रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर, उसे हृदय में धारण कर राजा बल प्रतिबुद्ध हो गया । और कहने लगा— हे देवानुप्रियो ! मैं महाबल कुमार को राज्य में स्थापित कर आपके पास दीक्षा लेना चाहता हूँ । इस तरह जब राजा ने कहा—तो उन स्थविरों ने “ विलम्ब मत करो ” ऐसा उससे कहा—इस प्रकार उन से आज्ञापित होता हुआ वह महाबल राजा वापिस नगर में आया वहाँ आकर उसने महाबल कुमार को राज्य में स्थापित किया ।

बाद में स्थविरों के पास जाकर दीक्षित हो गया । धीरे २ उसने ११ अंगों का अध्ययन कर लिया । इस तरह उसने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया । पालन करके फिर वह जहाँ वह चारु पर्वत था वहाँ आया । वहाँ आकर उसने १ मास का भक्त प्रत्याख्यान किया । और अन्त में मुक्ति को प्राप्त कि । सूत्र “ २ ”

( धम्म सोच्चा निसम्म जं नवरं महबलं कुमारं रज्जे ठावेइ, जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामणपरियायं पाउणिप्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भक्तेणं सिद्धे )

स्थविरों पास से श्री श्रुतचरित्र इय धर्मानुं व्याख्यान संलग्नी तेने सारी पेटे हृदयमां धारण करीने राजाबल प्रतिबुद्ध थय गये, अने ते कडेवा दाओ— ' हे देवानुप्रियो ! हूं महाबल कुमारने राज्यासने स्थापित करीने तभारी पासैथी दीक्षित थया आहुं छुं. राजनी आ वात संलग्नीने स्थविरों अ तेने कहुं 'विलम्ब करे नहि' आ रीते तेभनी आज्ञा भेजवीने राजा नगरमां आओ. त्यां आवीने तेले महाबल कुमारने राज्यासिद्धासन उपर भेसाओ.

त्यारणाइ राजा स्थविरोंनी पासै आवीने दीक्षित थय गये. धीमे धीमे तेले अजियार (११) अंगानुं अध्ययन कथुं. आरीते तेले धन्यां वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायनुं पालन कथुं. पालन करीने ते न्यां चारुपर्वत डतो त्यां आवीने तेले अक मासनुं भक्त प्रत्याख्यान कथुं. अने अन्ते मुक्ति भेजवी ॥ सू०२ ॥

मूलम्—तएणं सा कमलसिरी अन्नया सीहं सुमिणे जाव बल-  
 भदो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स णं महाब-  
 लस्स रत्तो इमे छप्पियबालवयंसगा रायाणो होत्था, तं जहा  
 अयले धरणे पूरणे वसु वेसमाणे अभिचंदे सहजायया सहवड्ढि-  
 या जाव अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्वं त्तिकहु अन्न-  
 मन्नस्सेयमट्ठं पडिसुणेति, तेणं कालेणं तेणं समएणं इंदकुंभे  
 उज्जाणे थेरा समोसढा । परिसा निग्गया, महब्बले णं  
 धम्मं सोच्चा जं नवरं छप्पियबालवयंसए आपुच्छामि  
 बलभइं च कुमारं रज्जे ठावेमि, जाव छप्पिय बालवयंसए आपु-  
 च्छइ । तएणं ते छप्पियबालवयंसगा महब्बलं रायं एवं  
 वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पव्वयहं अम्हं के अन्ने  
 आहारे वा जाव पव्वयामो । तएणं से महब्बले राया ते  
 छप्पिय बालवयंसए एवं वयासी—जइणं तुब्भे मए सद्धिं जाव  
 पव्वयह तो णं गच्छहं जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जेहिं ठावेह—  
 पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुढा जाव पाउब्भवंति, तए  
 णं से महब्बले राया छप्पियबालवयंसए पाउब्भूते पासइ,  
 पासित्ता, हट्ठुट्ठे कोडुंविय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता बलभ-  
 इस्स अभिसेओ. आपुच्छइ, तएणं से महब्बले जाव माहिद्धीए  
 जाव पव्वइए एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ जाव  
 भावेमाणे विहरइ ॥ सू० ३ ॥

ટીકા-‘તદ્દર્શન સા’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं सा कमलश्री राज्ञी महाबलस्य भार्या, अन्यदा अन्यस्मिन् काले सिंहं स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा । यावत् बलभद्रः कुमारो जातः अत्र यावत्तरुणेनायमर्थोऽवगन्तव्यः-सा स्वप्नवृत्तं मर्तुग्रे निवेदयति ततः स्वप्नपाठकपुत्रात् स्वप्नफलश्रवणं यावत्-तदनन्तरं सा गर्भवती जाता, संपूर्णेषु मासेषु बलभद्रनामकः कुमारः उत्पन्न इति । स युवराजश्चाप्यभवत् । तस्य खलु महाबलस्य राज्ञ इमे=वक्ष्यमाणा षडपि च बालवयस्यका बालमित्राणि

‘तद્દર્શન સા કમલસિરી’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તદ્દર્શન) इसके बाद (सा कमलसिरी) महाबल राजा की रानी कमल श्री ने (अन्यथा) किसी एक समय (सींह) सिंह को (सुमिणे) स्वप्न में (जाब बलभद्रो कुमारो जाओ) देखा और देख कर वह प्रतिबुद्ध हो गई-जग गई-। यावत् उस के बलभद्र कुमार उत्पन्न हुआ यहां यावत् शब्द से इस पाठ का संग्रह हुआ है-कमल श्री ने स्वप्न में जो सिंह देखा था उस स्वप्न को उस ने अपने पति महाबल से कहा-महाबल ने स्वप्नपाठकों को बुलाया उन्होंने ने इस दृष्ट स्वप्न का क्या फल है यह बात उसे सुनाई । सुनकर सब को बड़ा आनन्द हुआ । कमल श्री गर्भवती हुई । नौ मास साढे सात दिन जब गर्भ को पूर्ण हो गया-तब कमल श्री के बलभद्र नाम का कुमार उत्पन्न हुआ ।

(जुवराया याचि होत्या) धीरे २ वह कुमार युवराज भी बन गया ।  
(तस्स णं महाबलस्स रत्तो इमे छप्पियं बालवयंसगा रायाणो होत्या)

‘तદ્દર્શન સા કમલસિરી’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(તદ્દર્શન) त्पारभाद्र (सा कमलसिरी) महाबल राजा की राणी कमल श्री ने (अन्यथा) काल के एक वખते (सींह) सिंह ने (सुमिणे) स्वप्न में (जाब बलभद्रो कुमारो जाओ) देखे अने देखने ते जगी गई. ‘यावत्’ समय क्तां तेने भलभद्र नामे कुमार जन्म्यो. अर्द्धी ‘यावत्’ शब्दशी आ पाठानो संग्रह थयो छे के-कमलश्री ने ने स्वप्न में सिंह देखे छेतो ते स्वप्न विषेनी यथां तेले पौताना पति महाबलने करी महाबले स्वप्नपाठकाने बोलाव्या स्वप्नपाठकाने तेने स्वप्नकुं द्वा भताव्हे. स्वप्नद्वाने लक्ष्मीने भधाने भूषण आभंद थयो. कमलश्री सगर्भा थथ. गर्भने ल्यारे नवमास अने साडा सात द्विधस पूरां थयां त्यारे कमलश्रीना उदरशी भलभद्रनामे कुमारने जन्म थयो.

(जुवराया याचि होत्या) समय पसार थतां कुमार भलभद्र युवराज थथु थथ गया. (तस्स णं महाबलस्स रत्तो इमे छप्पियं बालवयंसगा रायाणो होत्या) महाबल राजने ६ बालमित्र राजाओ थथु छता.

राजान आसन्, तद् यथा—(१) अचलः, (२) धरणः, (३) पूरणः, (४) वसुः (५) वैश्रमणः, (६) अभिचंद्रः, ते कीदृशा इत्याह—‘सहजायया’ सहजातकाः सह समानकाले समुत्पन्नाः, सहवर्षिताः, समानकाले वर्षिताः, यावत्—‘तेसि अन्नयां कयांई एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निसचाणं सन्निविठ्ठाणं इमेयारूवे मिहो-कहांसमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जन्नं देवाणुणिया ! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पन्नज्जा वा विदेशगमणं वा समुपज्जह, तन्नं,’ इत्यन्तस्य पाठस्य संग्रहः । तेषाम् अन्यदा कदाचित् एकतः सहितानां समुपागतानां संनिषण्णानां संनिविष्टानाम् अयमेतद्रूपः मिथः कथासमुल्लापः समुदपद्यत इति छाया । एकतः=एकत्र—एकस्मिन् स्थाने सहितानां=मिलितानां, समुपागतानां सप्तानां मध्ये एकस्य कस्यचिद् भवने कार्यवशात् संग्राप्तानां, संनिषण्णानाम्=उपविष्टानां, संनिविष्टानां=स्थिरसुखा-संनस्थितानाम्—अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः मिथः कथासमुल्लापः=परस्परवातां लापः समुदपद्यत=अभवत्, इत्यर्थः । यत् खलु देवानुमियाः । अस्माकं सुखं वा दुःखं वा प्रव्रज्या वा विदेशगमनं वा समुत्पद्यते, तत् खलु अस्माभिः ‘एगयओ

वसं महाबल राजा के ये छह बाल मित्र राजा थे । ( तंजहा अयले, धरणे, पूरणे, वसु, वेसमणे अभिचंदे सहजायया, सहवड्डिया जाव कम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्ति कट्ठु अन्नमन्नस्सेयमहं पड्डिसुणेंति ) उनके नाम ये हैं—(१) अचल, (२) धरण (३) पूरण (४) वसु (५) वैश्रमण (६) ये अभिचंद्र । सब महाबल राजा के साथ २ उत्पन्न हुए थे, और उन्हीं के साथ २ बड़े हुए थे । एक समय सब ये सबके सब किसी कार्यवश एक स्थान पर एकत्रित हुए तो परस्पर में इन सब ने ऐसा विचार किया—कि चाहे सुख कारक कार्य हो या दुःख कारक कार्य हो, प्रव्रज्या लेना हो या परदेश जाना हो चाहे इनमें से कोई भी

( तंजहा अयले, धरणे, पूरणे, वसु, वेसमणे, अभिचंदे सहजायया सह वड्डिया जाव अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्व त्ति कट्ठु अन्न मन्न स्सेयमहं पड्डिसुणेंति )  
तेमना नामो आ प्रमाणु छे—(१) अचल, (२) धरण, (३) पूरण, (४) वसु, (५) वैश्रमण, (६) अभिचंद्र । आ भधा महाबल राजानी साथे जे जन्म्या हुता, अने तेमनी साथे जे मोटा थया हुता, ओक वधते ब्यापरे भधा कोष कार्यवश ओक स्थाने ओकठा थया त्थारे तेओओ विचार कथो के दुःख कारक के सुख कारक गमे तेषु काम होय प्रमत्त्या अहं कर्नी होय के परदेश गेहुं होय, तो आपणु भधाओ सपीने ज ते काम साथे रहोने कर्नु

समेचा ' एकतः समेत्य ' गित्थरियच्चं ' निस्तरितव्यम् इतिकृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, अस्माभिः सर्वमित्रैर्मिलित्वा सर्वं कार्यं संपादनीयमिति निश्चित्य परस्परमेतमर्थं प्रतिज्ञातवन्त इत्यर्थः ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये इन्द्रकुम्भे उद्याने स्थविराः समवसृताः समागतवन्तः । परिषद्भिर्गताः स्थविरान् वंदितुं वीतशोका नगरी निवासिनो लोका बहिर्निःसृताः, महाबलो राजाऽपि वन्दनार्थं निर्गतः । महाबलः खलु धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धः सन् स्थविरानेवमवादीद् युष्माकमन्तिके प्रवर्जितमिच्छामि यत्नवरं षडपि च बालवयस्यकान् आपृच्छामि बलमद्रं च कुमारं राज्ये स्थापयामि, ततः कार्यं करना हो तो हम सब लोग मिलकर ही वह कार्य करेंगे इस प्रकार से आपस में वे सब वचन बढ़ हो गये । ( तेणं कालेणं तेणं समएणं ) इतने में उस काल और उस समय में ( इंदकुंभउडजाणे थेरा समोसदा ) उस इंदकुंभ उद्यान में स्थविरों का आगमन हुआ— ( परिसा निग्गया महव्वलेणं धम्मं सोच्चा जं नवरं छप्पिय बालवयंसए आपुच्छामि बलमद्रं च कुमारं रज्जे ठावेमि ) स्थविरों का आगमन सुनकर वीतशोका नगरी की परिषद् मुनियों को वंदना करने के लिये अपने २ घर से निकल कर उद्यान में आई, महाबल राजा भी गये । धर्म का उपदेश हुआ महाबल राजा धर्म का उपदेश सुन कर प्रतिबोध को प्राप्त हो गया ।

उसने उसी समय स्थविरों से कहा—भदंत ! मैं आप लोगों के पास दीक्षा धारण करना चाहता हूँ—परन्तु मेरे जो बालसखा हैं मैं उन से

आ प्रभाण्णे तेओ। प्रतिज्ञा ( वचन ) अद्ध थया. ( तेणं काहेणं तेणं समएणं ) ते जाणे अने ते समये इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसदा ) इन्द्रकुंभ उद्यानम् । स्थविशे पधायां।

( परिसा निग्गया महव्वले णं धम्मं सोच्चा जंन वरं छप्पिय बालवयंसए आपृच्छामि बलमद्रं च कुमारं रज्जे ठावेमि )

स्थविशेतुं, आगमन सांलणीने पोत पोताना स्थानेथी नीकणीने वीत शोका नगरीना नागरिकोनी परिषद् मुनियोनी वंदन साठे उद्यानसां आयी. महाबल राजा पणु त्यां गया. मुनिओओ धर्माने। उपदेश आप्थे। धर्मोपदेश श्रवणु करीने राजा महाबलने प्रतिबोध थयो. ओट्टे के वैशब्ध थयो.

महाबले ते समये न स्थविशेने विनंति करी " डे लहत । हुं तमारो पासेथी दीक्षित थवा आहुं छुं. पणु ते पडेलां आ विषे भारा आलसाणाओने

स्थविरैः—‘ मा बिलम्बं कुरु ’ इत्येवमुक्तः सन् स्वभवने समागत्य यावत् तान् षडपि बालवयस्यकान् अपृच्छति । ततः खलु ते षडपि च बालवयस्यकाः महाबलं राजानमेवमवादीत्—यदि खलु देवानुमिताः । यूयं प्रव्रजिष्यथ, अस्माकं कोऽन्य आचारो वा आलम्बो वा भविष्यति यावत्—तस्माद् युष्माभिः सहैव वयं प्रव्रजामः । ततः खलु स महाबलो राजा तान् षडपि च बालवयस्यकान् एवमवादीत्—यदि खलु यूयं मया सार्धं यावत् प्रव्रजिष्यथ, तर्हि खलु स्व स्वभवनं गच्छत इत्ये-

इस विषय में पूछ लूँ और बलभद्र कुमारको राज्य में स्थापित कर दूँ पीछे आपके पास संयम लूँगा । इस प्रकार राजा का कथन सुनकर स्थविरों ने उससे “ मा बिलम्बं कुरु ” बिलम्ब मत करो ऐसा कहा—स्थविरों द्वारा अनुमत हो कर राजा अपने घर पर वहाँ से वापिस आया और आते ही उस ने ( जाव छप्पिय बालवयंसए आपुच्छइ ) अपने बाल काल्य के उन छह मित्रों से पूछा ।

( तएणं ते छप्पिय बालवयंसंग महव्वलं रायं एवं वयासी ) अपने मित्र महाबल की बात सुनकर उन मित्रों ने उससे ऐसा कहा—( जइणं देवा० जाव पव्वयामो ) मित्र । यदि आप दीक्षा लेना चाहते हैं तो फिर हमारा आपके बाद और कौन दूसरा आलंबन तथा आधार होगा—इसलिये हम भी आप ही के साथ दीक्षा संयम धारण करेंगे । ( तएणं एवं वयासी ) इस प्रकार अपने बाल कल्य के मित्रों की बात सुनकर राजा महाबल ने उन से कहा ( जइणं तुव्वे मए सद्धिं जाव

हुं पूछी हउ अने भलभद्र कुमारने राज्यासने भेसाडी हउ. त्थार भाह तभारी पासेथी संयम अहंशु करीश. “आ रीते राजनी विनंती सांभणीने स्थविशेअ तेने कहुं—“ मा विळम्बं कुरु, भाहुं करे नहिं. ” आभ स्थविशेनी आजा भेजवीने ते राजा पोताने घेर पाछे पळ्यो. घेर आवीने तेछे (जाव छप्पियबालवयंसए आपुच्छइ पोताना छये भावसभाअेने पूछयुं.

( तएणं ते छप्पियबालवयंसंगा महव्वलं रायं एवं वयासी ) पोताना मित्र भडाभलनी वात सांभणीने ते मित्रेअ तेने कहुं—“ जइणं देवा जाव पव्वयामो ) हे मित्रवर ! तमे ने दीक्षित थवा आहो छे तो अभाशे केअु आहंअन अने आधार थशे ? अथी अमे पणु तभारी साथे ७ दीक्षा संयम धारशु करीशु. ( तएणं..... एवं वयासी ) आ रीते पोताना भाव सभाअेनी वात सांभणीने भडाभले तेभने कहुं—

( जइणं तुव्वे मए सद्धिं जाव पव्वयइ तोणं गच्छइ जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जे हिं ठावेह )



છાન પુત્રાન્ સ્વકેષુ સ્વકેષુ રાજ્યેષુ સ્થાપયત, સ્થાપયિત્વા પુરુષસહસ્રત્રાહિનીઃ શિવિકા દુરુઢાઃ સમારુઢાઃ સન્તો યાવત્=મમાન્તિકે પ્રાદુર્ભવત, તતસ્તે ષડપિ બ્રાહ્મવયસ્યકાઃ સ્વ સ્વ ઘટે ગત્વા સ્વ સ્વ જ્યેષ્ઠપુત્રં રાજ્યે સ્થાપયિત્વા પુરુષસહસ્રત્રાહિનીઃ શિવિકાઃ સમારુઢાઃ સન્ત મહાબલસ્ય રાજોઽન્તિકે પ્રાદુર્ભવન્તિ । તતઃ સ્વલ્લ સ મહાબલો રાજા ષડપિ ચ બ્રાહ્મવયસ્યકાન્ પ્રાદુર્ભૂતાન્ પश्यति । દૃષ્ટ્વા દૃષ્ટતુષ્ઠો=ડતિશયેન તુષ્ઠઃ સન્ કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયતિ=આહ્વયતિ । શબ્દયિત્વા=આહ્વય બલમદ્રસ્ય બલમદ્રકુમારસ્ય અભિષેકઃ કારિતઃ । તતો મહાબલો બલમદ્રં

પન્વયહ તો ણં ગચ્છહ જેટ્ટે પુત્તે સપર્હિં ૨ રજ્જેર્હિં ઠાવેહ ) યદિ આપ લોગ મેરે સાથ પ્રવ્રજિત હોના ચાહતે હૈં તો અપને ૨ ઘર પર જાઓ-ઔર જાકર જ્યેષ્ઠ પુત્રોં કો અપને ૨ રાજ્યપદ પર સ્થાપિત કરો-બાદ મેં પુરુષ સહસ્ર ત્રાહિની શિવિકાઓ પર આરુઢ હોકર મેરે પાસ યહાં આઓ ( પુરિસસહસ્રત્રાહિનીઓ સીયાઓ દુરુઢા જાવ પાડવ્મવંતિ ) હસ પ્રકાર મહાબલ રાજા કો વાત સુનકર વે છહોં મિત્ર વહાં સે અપને ૨ ઘર પર આયે-ઔર અપને ૨ જ્યેષ્ઠ પુત્રોં કો અપને ૨ પદ પર સ્થાપિત કર પુરુષ સહસ્ર ત્રાહિની શિવિકા પર આરુઢ હો મહાબલ રાજા કે પાસ આયે । ( તણં સે મહાબલે રાગ્યા છપ્પિય બાલ વયંસણ પાડવ્મૂણ પાસહ, પાસિત્તા હહ તુટ્ટે કોડુંબિય પુરિસં સદાવેહ, સદાવિત્તા બલમદ્રસસ અમિસેઓ, આપુચ્છહ ) મહાબલ રાજા ને જબ અપને હન છહોં બાલ મત્લાઓં કો અપને પાસ આગ્યા હુઆ દેખા-તો દેગ્ગકર વે બહુત અધિક

જો તમે બધા ખુશીથી મારી સાથે દીક્ષિત થવા આહતાહો છો તો સત્તરે પોત પોતાની રાજધાનીએ જઇને પોત પોતાના મોટા પુત્રો ને રાજગાદીએ બેસાડીને હાથ પુરુષો વહન કરે એવી ' પુરુષ સહસ્રત્રાહિની ' પાલખીઓ ઉપર બેસીને અહીં આવો. ( પુરિસસહસ્રત્રાહિનીઓ સીયાઓ દુરુઢા જાવ પાડવ્મવંતિ ) આ રીતે મહાબલ રાજાની વાત સાંભળીને છએ મિત્રો ત્યાંથી પોતપોતાને ઘેર આવ્યા અને પોતાના સ્થાને મોટા પુત્રોને રાજ ગાદીએ બેસાડીને પુરુષ સહસ્ર ત્રાહિની પાલખીઓ ઉપર બેસીને જઇને મહાબલ રાજાની પાસે આવ્યા.

( તણં સે મહાબલે રાગ્યા છપ્પિય બાલવયંસણ પાડવ્મૂણ પાસહ, પાસિત્તા હહ તુટ્ટે કોડુંબિયપુરિસં સદાવેહ. સદાવિત્તા બલમદ્રસસ અમિસેઓ, આપુચ્છહ ) પોતાના છએ બાલમિત્રોને પોતાની પાસે આવી બેઠા બેઠા રાજા મહાબલ અત્યંત હાર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થયો. રાજાએ સત્તરે તે સમયે જ કૌટુમ્બિક પુત્ર

राजानम् आपृच्छतिस्म । आपृच्छय स महाबलो यावत् महद्वर्था महाद्युत्या पुरुष-  
सहस्रवाहिनीं शिविकामारुह्य यावत् स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितः दीक्षां ग्रहीत-  
वान् । एकादशाङ्गानि-आचाराङ्गादीनि अधीतेस्म । बहुभिश्चतुर्थादि भक्तैः यावत्  
आत्मानं भावयन् विहरति आस्ते स्म ॥ सू० ३ ॥

मूलम्-तएणं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगा-  
राणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो  
कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-जण्हं अम्हं देवाणुप्पिया ! एगे  
तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तणणं अमहेहिं सव्वेहिं तवो-  
कम्मं उपसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्ति कट्ठु अणमण्णेस्स एयमट्ठं  
पडिसुणोति, पडिसुणित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरंति, तएणं  
से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिणामगोयं कम्मं  
निव्वत्तिंसु ॥ सू० ४ ॥

हर्षित एवं संतुष्ट हुए । उसी समय उन ने कौटुम्बिक पुरुषों को  
बुलाया-बुलाकर बलभद्र कुमार का अभिषेक करवाया ।

इस तरह बलभद्र कुमार अब राज्य पद आसीन हो गये-।  
महाबल राजा ने बलभद्र से पूछा-पूछकर फिर वे पुरुष सहस्र वाहिनी  
शिविका पर आरुह हो गये-और महाक्रुद्धि एवं महाद्युति के साथ २  
चलते हुए वे स्थविरों के पास उद्यान में आये । उन्होंने ने संयम लै लिया ।  
आचारांग आदि ११ अंगों का अध्ययन किया और चतुर्थभक्त आदि  
विचित्र प्रकार की तपस्याओं से अपने आत्मा को भावित किया ॥ सू० ३॥

એને યોદ્ધાઓ અને યોદ્ધાવીને બલભદ્ર કુમારને રાજ્યાભિષેક કરાવડાવ્યો.

આ રીતે બલભદ્ર કુમાર રાજ્યાસને ગિરાજીત થઈ ગયા, રાજા મહાબલે  
પ્રમન્યા વિષે બલભદ્રને પૂછ્યું અને પૂછીને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાદેખી  
ઉપર બેસીને મહાક્રુદ્ધિ અને મહાદ્યુતિની સાથે શોભતા તેઓ ઉદ્યાનમાં સ્થ-  
વિરોની પાસે આવ્યા. અને તેઓએ સંયમ સ્વીકાર્યો. તેમણે આચારાંગ વગેરે  
અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું. અને ચતુર્થભક્ત વગેરે અનેક પ્રકારની  
તપસ્યાઓથી પોતાના આત્માને ભાવિત કર્યો. ॥ સૂત્ર “ ૩ ” ॥

टीका—तेसिं ' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं तेषां महाबलप्रमुखाणां सप्ताना-  
मनगाराणाम् अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले एकतः सहितानाम्  
एकत्रोपविष्टानाम् अयमेतद्वचः=वक्ष्यमाणस्वरूपः ' मिहो ' मिथः=परस्परं ' कथा-  
समुल्लावे ' कथासमुल्लापः- वार्तालापः ' समुपज्जित्था ' समुदपद्यत- अववत्,  
हे देवानुमियाः ! अस्माकं मध्ये ' एगे ' एकः=कोऽप्येकः यत् खलु तपः कर्म  
' उवसंपज्जित्ता ' उपसंपद्य अङ्गीकृत्य खलु विहरति=विहरिष्यति, अस्माभिः सर्वैः  
तत् खलु तपः कर्म उपसंपद्य खलु विहरतुं=विहर्तव्यम्, इति कृत्वा ' अन्नमन्नस्स '   
अन्योन्यस्य परस्परस्य एतमर्थं ' पडिसुणेंति ' प्रतिशृण्वन्ति=प्रतिजानन्ति प्रतिज्ञां

‘ तएणं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तएणं ) इस के बाद ( तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं  
अणगाराणं अन्नया कयाइं ) उन महाबल प्रमुख सान अनगारोंको किसी  
एक समय ( एगयओ सहियाणं इमेयारुवे मिहो कहा समुल्लावे समुप्प  
जित्था ) जब कि ये एक जगह बैठे हुए थे इस प्रकार का यह विचार  
उत्पन्न हुआ—परस्पर में उनकी ऐसी बात चीत चली—( जण्हं अन्हं  
देवानुप्पिया ! एगे तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ) हे देवानुप्पियों !  
हम लोगों में से जो भी कोई तप कर्म को अंगीकार कर अपने आप को  
भावित करेगा—हम सब भी वही तप कर्म आचरित करेंगे । ( तण्णं  
अग्गेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तएत्ति कट्ठु अण-

‘ तएणं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं ’ इत्यादि

टीकार्थ—( तएणं ) त्थारभाइ ( तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं  
अन्नया कयाइं ) डेअ वण्णते मळानल प्रमुण ते साते अनगाराने ( एगयओ  
सहियाणं इमेयारुवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था )—अत्थारे तेओ अेक स्थाने  
अेकठा थधने अेका डेता त्थारे आ प्रमाळे विचार रुधुथी—अेटले डे तेओ आ  
रीते अरस्स परस्स वातथीत करवा दाज्या—( जण्हं अन्हं देवानुप्पिया ! एगे  
तवो कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ) डे देवानुप्पियो ! आपय्वाभांथी गभेते  
व्यक्ति ने जतलुं तप कर्म स्वीकारीने पोताना आत्माने भावित करशे आपळे  
अथा पणु तेअ तप आचरीशु

( तण्णं अग्गेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तएत्ति कट्ठु  
अणमणस्स एयमहं पडिसुणेंति )

કુર્વન્તિ । પ્રતિશ્રુત્ય વહુમિશ્રુત્ય- યાવદ્ ચતુર્થમક્તાદિમિરાત્માનં ભાવયન્તો વિહરન્તિ । તતસ્તદનન્તરં સ મહાબલોઽનગારો ' રમેણ ' અનેન વક્ષ્યમાણેન 'કારણેણ' કારણેન પ્રતિજ્ઞાં કૃત્વા તદન્યથા કરણરૂપેણ ભાષિત્વાતદન્યથા કરણં હિ માયા સાચ સ્ત્રીત્વસ્ય કારણમ્, ઇયં માયાઽભિમાનાત્ પ્રાદુર્ભવતિ, અભિમાનં ચાત્ર- ' અહ મેતેષાં નાયકોઽસ્મિ, ઇતે મદધીના અનુનાયકાઃ સન્તીતિ. યદિ મમોત્કૃષ્ટતા ન સ્યાત્તર્હિ નાયકાનુનાયકાનાં કો વિશેષઃ સ્યાદિત્યેવં ભાવનયા અભિમાનો માયા મણ્ણસ્સ ઇયમદ્દું પહિસુગેંતિ ) હસ પ્રકાર વિચાર કર ડન્હોં ને પરસ્પર મેં હસ વિચાર કો સ્વીકાર કર લિયા ।

( પહિસુગિત્તાં વહુર્હિ ચડત્થ જાવ વિહરંતિ ) સ્વીકાર કર ફિર ડન સબને સાથ હી સાથ ચતુર્થ મક્ત આદિ કી તપશ્ચર્યા કરના પ્રારંભ કર લી- ( તપણં સે મહન્વલે અણગારે રમેણં કારણેણં રિત્થિનામગોયં કમ્મં નિવ્વત્તિસુ ) મહાબલ અનગાર ને હસ વક્ષ્યમાણ કારણ સે સ્ત્રી નામ ગોત્ર કર્મ કા ઉપાર્જન કિયા અર્થાત્ મહાબલ ને પ્રતિજ્ઞા કરકે મી પ્રતિજ્ઞાનુસાર તપશ્ચરણ નહીં કિયા કિન્તુ-કુટિલભાવ રાખકર અન્યથારૂપ સે તપશ્ચરણ કિયા-કહા કુલ્હ ઓર કિયા કુલ્હ-હસી કા નામ માયા હૈ । યહ માયા સ્ત્રીત્વ પ્રાપ્તિ કા કારણ હોતી હૈ । માયા અભિમાન સે ઉદ્ભૂત હોતી હૈ-મહાબલ કે હૃદય મેં અભિમાન હસ કારણ સે આયા થા- કિ મેં હન સબ કા નાયક હૂં-યે મેરે આધીન હૂં-અનુનાયક હૂં-યદિ મેરે મેં હનકી અપેક્ષા ઉત્કૃષ્ટતા નહી હો તો ફિર નાયક ઓર અનુનાયકોં મેં

આ પ્રમાણે વિચાર કરીને બધાએ મળીને એ વાતને સ્વીકારી લીધી.  
( પહિસુગિત્તા વહુર્હિ ચડત્થ જાવ વિહરંતિ ) સ્વીકાર કરીને તેઓએ એકી સાથે ચતુર્થમક્ત વગેરે તપશ્ચર્યા શરૂ કરી

(તપણં સે મહન્વલે અણગારે રમેણં કારણેણં રિત્થિનામગોયં કમ્મં નિવ્વત્તિસુ)

મહાબલ અનગારે જેના કારણ વિષેની ચર્ચા આગળ થશે-તેવા " સ્ત્રી નામ ગોત્ર કર્મનું " ઉપાર્જન કર્યું. એટલે કે મહાબલે પ્રતિજ્ઞા કરીને પશુ તે સુબળ તપનું આચરણ કર્યું નહિ. કુટિલભાવથી તેઓએ બીજી રીતે તપનું આચરણ કર્યું. " કહેવું કંઈ અને કરવું કંઈ " તેનું નામ માયા છે. એ માયા જ સ્ત્રીત્વ પ્રાપ્તિનું કારણ બને છે. અભિમાનથી માયા ઉત્પન્ન થાય છે. મહાબલ ના મનમાં આરીને અભિમાન ઉત્પન્ન થયું કે હું બધાનો નાયક છું. આ બધા મારે આધીન છે-અનુનાયક છે. એ મારામાં તેઓની અપેક્ષા ઉત્કૃષ્ટતા નહિ હોય તો નાયક અને અનુનાયકોમાં તફાવત શો રહ્યો ? આ બાતની ભાવના-

મુત્પાદયતિ । ‘ દૃષ્ટિનામગોચં ’ સ્ત્રીનામગોત્રં यस્ય કર્મણ ઉદયાત્ સ્ત્રીભાવઃ સ્ત્રીત્વં પ્રાપ્યતે તત્ સ્ત્રીનામ કર્મ તથા-ગોત્રં જાતિ કુળ નિર્વર્તકં કર્મ અનયોઃસમા હારઃ સ્ત્રીનામગોત્રં કર્મ ‘ નિવર્તિસુ ’ નિર્વર્તિતવાન્ ઉપાર્જિતવાન્ ॥ સૂ૦૪ ॥

મૂલમ્-જઙ્ઘાં તે મહબ્લવજ્ઞા છ અળગારા ચઉત્થં ઉવસંપ-  
જ્જિત્તાણં વિહરંતિ, તઓ સે મહબ્લે અળગારે છટ્ઠં ઉવસંપ-  
જ્જિત્તાણં વિહરઈ । જઙ્ઘાં તે મહબ્લવજ્ઞા અળગારા છટ્ઠં  
ઉવસંપજ્જિત્તાણં વિહરંતિ, તઓ સે મહબ્લઅળગારે અટ્ઠમં  
ઉવસંપજ્જિત્તાણં વિહરઈ । એવં અટ્ઠમં તો દસમં, અહ દસમં  
તો દુવાલસં, ઇમેહિ ય ણં વીસાણહિ ય કારણેહિં આસેવિય  
બહુલીકણ્હિં તિત્થયરનામગોચં કર્મમં નિવર્તિસુ, તં જહા —

(૧) અરહંત (૨) સિદ્ધ (૩) પવચણ (૪) ગુરુ (૫) થેર  
(૬) બહુસ્સુણ (૭) તવસ્સીસું । વચ્છલ્હયાઈ (૮) તેસિં અભિક્ષણં  
ણાણોવઓગે ય ॥૧॥ (૯) દંસણ (૧૦) વિણણ (૧૧) આવસ્સણ  
ય (૧૨) સીલવ્વણ નિરૂયારં । (૧૩) સ્વળલવ (૧૪) તવ (૧૫)  
ચ્ચિયાણ (૧૬) વેયાવચ્ચે (૧૭) સમાહીય ॥૨॥ (૧૮) અપ્પુવ્વ-  
ણાણગહણે (૧૯) સુયમત્તી (૨૦) પવચણે પમાવણયા । ણ્ણહિં  
કારણેહિં તિત્થયરત્તં લહઈ જીઓ ॥સૂ૦૫॥

કયા મેદ્ હોગા-ઇસ પ્રકાર કી ભાવના ને ઉસ કે હૃદય મેં અભિમાન  
ઉત્પન્ન કિયા ઔર ઇસ અભિમાન ને માયા કો જન્મ દિયા । જિસ કર્મ  
કે ઉદય સે જીવ સ્ત્રીત્વપદ પ્રાપ્ત કરતા હૈ વહ સ્ત્રી નામ કર્મ હૈ તથા  
જાતિકુલ નિર્વર્તક જો કર્મ હોતા હૈ વહ ગોત્ર હૈ । ઇસ પ્રકાર કે કર્મ કો  
માયા કે સદ્ભાવ સે અનગાર ને ઉપાર્જિત કિયા । સૂત્ર “ ૪ ”

એજ મહાબલના મનમાં અભિમાન ને જન્મ આપ્યો હતો. અને એ અભિ-  
માને જ માયાને પશુ ઉત્પન્ન કરી હતી. જે કર્મના ઉદયથી જીવ સ્ત્રીત્વપદ  
પ્રાપ્તવે છે તે સ્ત્રીનામ કર્મ છે તેમજ જે કર્મ જાતિકુલ નિર્વર્તક હોય છે તે  
ગોત્ર છે, માયા ના સદ્ભાવથી આ પ્રમાણે તે અનગારે આ જાતના કર્મનું  
ઉપાર્જન કર્યું. ॥ સૂત્ર “ ૪ ” ॥

टीका— 'जह्णं ते इत्यादि । यदि खलु ते महाबलवर्णा पडनगाराः 'चउत्थं चतुर्थं=चतुर्थभक्तम् । एकोपवासमित्यर्थः, उवसंपज्जित्ता 'उपसंपद्य=स्वीकृत्य खलु विहरंति, ततः स महाबलोऽनंगारः 'छट्ठं' षष्ठं=षष्ठभक्तमुपवासद्वयमुपसंपद्य खलु विहरति । अयं भावः—यदा ते पडनगाराः एकोपवासं कुर्वन्ति, तदा महाबलोऽप्येकोपवासं करोति, परंतु—पारणदिने एवं कथयति अद्य मे शिरोबाधा ते नाहं पारणं करिष्यामि, भवद्भिरेवपारणं कर्तव्यमित्युक्त्वा मायया षष्ठं भक्तं करोतीति ।

यदि खलु ते महाबलवर्णा षष्ठं=षष्ठभक्तमुपसंपद्य=स्वीकृत्य खलु विहरंति, ततः स महाबलोऽनंगारोऽष्टमं अष्टमभक्तमुपसंपद्य खलु 'विहरइ' विहरति ।

'जह्णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा' इत्यादि ।

टीकार्थ—(जह्णं) यदि वे (महब्बलवज्जा) महाबल अनंगार को छोड़कर (छ अणगारा) छह अनंगार (चउत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति) चतुर्थ भक्त की तपस्या करते-तओसे) तो वह (महाबल अणगारे) महाबल अनंगार (छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) दो उपवास करता-तात्पर्य इसका यह है कि जिस समय वे छह अनंगार एक उपवास करते उस समय महाबल अनंगार भी एक ही उपवास करता-परंतु जब पारणा का दिन आता तो कहने लगता कि आज मेरे शिरमे दर्द हो रहा है मैं पारणा नहीं करूंगा-आप लोग ही पारणा करलो ।

इस प्रकार माया को चित्त में रखकर वह दूसरा उपवास करलेता । (जह्णं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उपसंपज्जित्ताणं विहरंति ताओ से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) इसी-तरह वे

'जह्णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा' ध्यादि

टीकार्थ—(जह्णं) ओ तेओ (महब्बलवज्जा) महाबल शिवायना (छ अणगारा) छ अनंगारे । (चउत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति) चतुर्थभक्तानी तपस्या करता (तओसे) त्पारे ते (महाबलअणगारे) महाबल अनंगार (छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) ओ उपवास करता. ओटवे के ब्यादे छ अनंगार ओक उपवास करता त्पारे महाबल अनंगार पणु ओकए उपवास करता. पणु ब्यादे पारणुओ दिवस आवतो त्पारे तेओ कहेता के आओ भाइ भायुं दुःखवा मांडयुं छे, हुं पारणुं करीश नहि. तमे बोडो पारणुं करो.

आरीते मायावश थएने महाबल अनंगार भीने उपवास करता छता.

(जह्णं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, ताओ से महब्बलेअणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ)

एवं यदि ते षडनगारा अष्टमश्च अष्टमभक्तम्. उपसंपद्य विहरति 'तो' तर्हि स महाबलोऽनगारः दशमं=दशमभक्तमुपसंपद्य विहरति । अथ यदि ते षडनगारा-दशमं = दशमभक्तमुपसंपद्य विहरति ' तो ' तदा स महाबलोऽनगारः ' दुबालसं ' द्वादशं द्वादश भक्तम् उपसंपद्य विहरति, एवमधिकाधिकतपः करणादहमुत्कृष्टो भविष्यामीति मायाकरणेन स्त्रीनामगोत्रं कर्मोपाजितवान् तदानीं मिथ्यात्वं सास्वादनं च गुणस्थानमनुभवतिस्म, स्त्रीनामकर्मणो मिथ्यात्वानन्तानुबन्धि मायाहेतुकत्वादिति महाबल अनगार वर्जं छट्ट की तपश्चर्या-दो उपवास-करते तो यह महा-बल अनगार अष्टम की तपश्चर्या-तीन उपवास करता ।

(एवं अष्टमंतो दसमं, अह दसमंतो दुबालसं इमेहिं य णं वीसाए-हिं य कारणेहिं य आसेविय बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिस्सु ) यदि वे छह अनगार अष्टमभक्त की तपश्चर्या करते तो यह महाबल अनगार दशमभक्त की तपश्चर्या करता यदि वे दशम-भक्त की तपश्चर्या करते, तो यह द्वादशभक्त की तपस्या करता । इस तरह अधिकाधिक तप करने से मैं उत्कृष्ट उत्तम-हो जाऊंगा “ इस प्रकार माया पूर्वक तपस्या करने से उसने स्त्री नाम गोत्र-जिस कर्म के उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है ऐसा स्त्री नाम कर्म तथा जाति कुल निर्वर्तक गोत्र कर्म का बंधकर लिया । इस समय मैं मिथ्यात्व और सास्वादन इन दो गुणस्थानों का जीव अनुभव करता है । क्यों कि मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी माया हेतुकता स्त्री नामकर्म में रहती

આ પ્રમાણે બ્યારે તેઓ બધા છએ અનગારો છટ્ટની તપશ્ચર્યા-એ ઉપવાસ-કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર અઠમની તપશ્ચર્યા-ત્રણ ઉપવાસ કરતા હતા

( एवं अष्टमंतो दसमं, अह दसमंतो दुबालसं इमेहिं य णं वीसाएहिय कार-णेहिय आसेविय बहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिस्सु )

તે બધા છ અનગારો બ્યારે અષ્ટમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહા-બલ અનગાર દશમ ભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા આ પ્રમાણે બ્યારે તેઓ છ અનગાર દશમભક્તની તપશ્ચર્યા કરતા ત્યારે મહાબલ અનગાર દ્વાદશ ભક્તની તપસ્યા કરતા હતા. આ રીતે વધારે તપ કરવાથી હું આ બધા કરતાં ઉત્તમ થઈ બધશ તેમ તેઓ માનતા પણ આમ માયાવશ તપ કરવાથી તેણે સ્ત્રીનામ ગોત્ર-એટલે કે જે કર્મના ઉદયથી સ્ત્રીત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે એવું સ્ત્રીનામ કર્મ તેમજ નતિકુલ નિર્વર્તક ગોત્ર કર્મના બંધ કર્યો. આ વખતે મિથ્યાત્વ અને સાસ્વાદન આ બે ગુણ સ્થાનોને જીવ અનુભવે છે. કેમકે મિથ્યાત્વ અને અનંતાનુબંધી માયા

માવઃ । તતઃ સ્વલ્પ સ મહાબલોઽનગારઃ 'ઈમેર્હિ' એમિશ્ચ શાસ્ત્રપ્રસિદ્ધૈઃ સ્વલ્પ વીસા  
 દ્રિય 'વિંશત્યાચ કારણૈઃ વિંશતિસ્થાનકૈઃ' આસેવિય બહુલીકર્ણિ 'આસે-  
 વિતબહુલીકૃતૈઃ પ્રત્યેક સ્થાનસ્ય સકૃત્ કરણાદાસેવિતાનિ. બહુશઃ સેવનાદ્ બહુ  
 લી કૃતાનિ તૈઃ લઘ્વોત્કૃષ્ટરસાયનપરિણામૈરિત્યર્થઃ । તીર્થકરનામગોત્રં કર્મ 'નિ  
 વૃત્તિસ્તુ' નિર્વર્તિતવાન્ ઉપાર્જિતવાનિત્યર્થઃ । તં જહા તદ્યથા-વિંશતિસ્થાનકાર્ના  
 નામાનિ ગાથાત્રયેણ દર્શયતિ (૧-૭) અર્હત્-સિદ્ધ-પ્રવચન-ગુરુ-સ્થવિર-  
 બહુશ્રુતતપસ્વીષુ વત્સલતા ભક્તિઃ-યથાઽવસ્થિતે ગુણગ્રામોત્કીર્તનરૂપા (૮)  
 'તેસિ' તેપામ્ અર્હદાદીનાં 'અમિક્ષણ' અમીર્ષાં=પુનઃપુનઃ જ્ઞાનોપયોગઃ જ્ઞાને-  
 શૂપયોગઃ જ્ઞાનોપયોગઃ इत्यष्ट સ્થાનકાનિ, (૯) દર્શનં=સમ્યક્ત્વં, (૧૦) વિનયો  
 ગુરુદેવાદિવિષયકઃ, (૧૧) આવશ્યકમ્-ઉભયકાલમાવશ્યકકરણમ્ (૧૨) શીલ-  
 વ્રતં ચ નિરતિચારં, વ્રતપ્રત્યાહ્યાનનિર્મલ પાલનમ્, (૧૩) ક્ષણલવેતિ-કાલોપ

૬૧. હાલ કે બાદ હસ મહાબલ અનગાર ને શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ હન વિંશતિ  
 સ્થાનકો કે દ્વારા કિ જો આસેવિત બહુલીકૃત થે તીર્થકર નામ ગોત્ર  
 કર્મ કા બંધ કિયા । પ્રત્યેક સ્થાન કા એક વાર સેવન કરના હસકા  
 નામ આસેવિત ઔર બહુત વાર સેવન કરના હસકા નામ બહુલી કૃત  
 હૈ । (તંજહા) વે વીસ સ્થાન વે હૈ અરિહંત (૧), સિદ્ધ (૨), પ્રવચન (૩)  
 ગુરુ (૪), સ્થાવિર (૫), બહુશ્રુત (૬), તપસ્વી હનમેં વાત્સલ્યભાવ-ભક્તિ  
 -રક્ષના-અર્થાત્ હનકે યથાવસ્થિત ગુણો કા ઉત્કીર્તન કરના (૭), હન  
 કે જ્ઞાન મેં મિરંતર ઉપયોગ રક્ષના (૮), દર્શન કા વિશુદ્ધિ કરના (૯)  
 ગુરુદેવ આદિ કે વિષય મેં વિનય સંપક્ષતા હોના (૧૦), દોનો કાલ મેં  
 આવશ્યક ક્રિયાઓ કો કરના (૧૧), શીલ ઔર વ્રતો મેં આતિચાર રહિત

હેતુકતા અનામ કર્મમાં રહે છે. ત્યાર બાદ મહાબલ અનગારે શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ  
 વિંશતિ (વીસ) સ્થાનકો વડે-કે જે આસેવિત બહુલીકૃત હતા. -તીર્થકર નામ  
 ગોત્ર કર્મને બંધ કર્યો. દરેક સ્થાનતું એક વાર સેવન કરવું તે આસેવિત  
 અને ઘણી વાર સેવન કરવું તે બહુલીકૃત છે. (તંજહા) વીસ સ્થાનો નીચે  
 મુજબ છે-અરિહંત, (૧) સિદ્ધ, (૨) પ્રવચન, (૩) ગુરુ, (૪) સ્થવિર, (૫) બહુ-  
 શ્રુત, (૬) તપસ્વીમાં વાત્સલ્યભાવ-ભક્તિ-રાખવી એટલે કે તેમના યથાવસ્થિત  
 ગુણોનું કીર્તન કરવું. (૭) તેમના જ્ઞાનમાં નિરંતર ઉપયોગ કરતા રહેવું (૮)  
 દર્શનની વિશુદ્ધિ કરવી (૯) ગુરુ દેવ વગેરેની સાથે વિનય રાખવો (૧૦)  
 બંને સમયે (સવાર સાંજ) આવશ્યક ક્રિયાઓ કરવી, (૧૧) શીલ અને



લક્ષણં, ક્ષણલવાદિકાલેષુ પ્રમાદં વિદાય શુભધ્યાનકરણમ્ (૧૪) તપઃ= દ્વાદશ-  
વિધમ્, (૧૫) ત્યાગા=દાનમ્ તથા અમયદાનં સુપાત્રદાનં ચ, તત્રોભયદાનં=મયા-  
નુત્પાદનં પરૈર્મયં પ્રાપ્તસ્ય માર્યમાણસ્ય કથંચિન્મીયમાણસ્ય ચ પરિરક્ષણમ્, અમ-  
યદાનમિહ કરુણાદાનોપલક્ષણમ્ । સુપાત્રેભ્યો દાનં મહાવ્રતધારિભ્યઃ પ્રતિમાધારિ  
શ્રાવકેભ્યથ દાનમ્ સુપાત્રદાનમ્ । इदमुपलक्षणं तेन चतुर्विधसंघं सुखोत्पादनमि-  
त्यर्थः । (૧૬) વૈયાવૃત્યં=આચાર્યાદીનાં શુશ્રૂષા (૧૭) સમાધિઃ=સર્વજીવિનાં સુલો-  
ત્પાદનમ્, (૧૮) અપૂર્વજ્ઞાનપ્રદર્શનં=પ્રસિદ્ધમ્, (૧૯) ધનમક્તિઃ=જિનોક્તાગમેષુ

હોર પ્રવૃત્તિ કરતે રહના વ્રત, પ્રત્યાખ્યાન કો નિર્મલ રૂપસે પાલન કરના (૧૨), ક્ષણ, લવ આદિ કાલોં મેં પ્રમાદ કા પરિહાર ( નિવારણ ) કરતે હુપ શુભ ધ્યાન કરના, (૧૩), તપ-૧૨ પ્રકાર કે તપોં કા આરાધન કરના (૧૪), ત્યાગ-અમય દાન ઓર સુપાત્ર દાન દેના કિસી કો મય ઉત્પાદન નહીં કરના યહ અમયદાન હૈ-તથા દૂસરોં દ્વારા મય કો પ્રાપ્ત હુપ અથવા માર્યમાણ યા કિસી મી તરહ મરણોન્મુલ્ક હુપ એસે વ્યક્તિ કી અપની શક્તિ કે અનુસાર રક્ષા કરના, ઉન પર કરુણા ધર-  
સાના, ઉનકે પ્રતિ દયા માવ રક્ષના યહ સર્વ અમય દાન હૈ ।

યહ અમયદાન કરુણાદાન કા ઉપલક્ષક હૈ । મહાવ્રતધારી સંકલ સંયમીજનોં કો અથવા પ્રતિમાધારી શ્રાવકોં કો આહારાદિ દાન કરનાં યહ સુપાત્ર દાન હૈ । ચતુર્વિધ સંઘ કે લિયે સુલ્ક કા ઉત્પાદન કરના ઇસકા યહ ઉપલક્ષક હૈ (૧૬), વૈયાવૃત્ય-આચાર્ય આદિ કી શુશ્રૂષા કરના (૧૭) સમાધિ-સમસ્ત જીવોં કો સુલ્ક મિલે ઇસ પ્રકાર કા પ્રય-

ત્વોમાં અતિથાર વગર થઇને પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવું-વ્રત, પ્રત્યાખ્યાન તું નિર્મળ રૂપથી પાલન કરવું. (૧૨) ક્ષણ, લવ વગેરે કાળોમાં પ્રમાદ રહિત થઇને શુભ ધ્યાન ધરવું. (૧૩) તપ, -બાર પ્રકારના તપોતું આરાધન કરવું; (૧૪) ત્યાગ, અભય દાન અને સુપાત્ર દાન આપવું, કોઇને પણ ભયની સ્થિતિમાં મૂકેલો નહિ તે અભયદાન છે તેમજ બીજાઓ દ્વારા ભયની સ્થિતિમાં મૂકાયેલા અથવા તે કોઇપણ રીતે મરણોન્મુખ થતા વ્યક્તિની પોતાની શક્તિ સુબળ રક્ષા કરવી, તેમની ઉપર કરુણા રાખવી, કયાભાવ બતાવવો આખું અભયદાન કહેવાય છે.

આ અભયદાન કરુણાદાનનો ઉપલક્ષક છે. મહાવ્રતધારી બધા સંયમી જોનેને અથવાતો પ્રતિમાધારી શ્રાવકોને આહાર વગેરે દાન કરવું તે સુપાત્ર દાન છે. ચતુર્વિધ સંઘના માટે સુખતું સર્જન કરવું આ તેનો ઉપલક્ષક છે. (૧૫) વૈયાવૃત્ય-આચાર્ય વગેરેની સેવા કરવી, (૧૬) સમાધિ-બધા પ્રાણીઓને

પરમાનુરાગઃ, (૨૦) પ્રવચને પ્રમાવના=પ્રમુતમવ્યેભ્યઃ પ્રવ્રજ્યાદાનં, મત્કૂપપત-  
ત્પ્રાણિત્રાણસમાશ્વાસનપરાયણજિનશાસનમહિમોપવૃંહણં સમસ્તસ્ય જગતોજિનશાસન  
રસિક કરણં મિથ્યાત્વતિમિરાપહરણં, ચરણકરણશરણીકરણં ચ ।

एतानी-तीर्थकरत्वप्राप्तिः विंशतिस्थानकानि सर्वजीवसाधारणानि सन्तीति  
दर्शयितुमाह-‘एपहिं तित्थयरत्तं लहइ जीवो’ इति । एतैः कारणैस्तीर्थकरत्वं  
लभते जीवः ।

સ્ન કરના, (૧૭), અપૂર્વ જ્ઞાન કા પઢના, (૧૮), શ્રુતભક્તિ-જિનેન્દ્ર દ્વારા  
પ્રતિપાદિત આગમોં મેં પરમ અનુરાગ રાખના, (૧૯), પ્રવચન પ્રમાવના  
અનેક ભવ્ય જીવોં કો પ્રવ્રજ્યા દેના, સંસારકૂપ મેં પડતે હુપ પ્રાણીયોં  
કી રક્ષા કરને કે આશ્વાસન મેં પરાયણ એસે જિનશાસન કી મહિમા  
બઢાના, સમસ્ત જગત કે જીવોં કો જિન શાસન કા રસિક બંનાના,  
મિથ્યાત્વરૂપ તિમિર કા ધ્વંસ કરના, ઓર ચરણ સત્તરી એવં કરણ  
સત્તરી કી શરણ મેં રહના યહ સબ પ્રવચન પ્રમાવન હૈ (૨૦) ।

ये २० स्थान समस्त जीवों को तीर्थकर पदकी प्राप्ति में कारण  
है । ( एपहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ) इन्हीं बीस स्थानक के  
सेवन से जीव तीर्थकर पद को प्राप्त करता है । अन्यत्रभी यही बात  
कही है-जिनागम में अनेक तप प्रसिद्ध हैं परन्तु इन श्री बीसस्थानरूप  
तपस्या के समान और कोई तप नहीं हैं । इन बीस स्थानों में से कोई  
एक स्थान की आराधना करके जीव अरिहंतो के बीच में उत्तम  
जिनेन्द्र के पद को पाता है ।

સુખ મળે તેમ કરવું-(૧૭) અપૂર્વજ્ઞાનનું વાંચન કરવું. (૧૮ શ્રુતભક્તિ-જિને  
ન્દ્રપ્રતિપાદિત આગમો-માં પ્રથમ અનુરાગ રાખવો, ૧૯ પ્રવચન પ્રમાવના  
-અનેક ભવ્યજીવોને પ્રવ્રજ્યા આપવી. સંસાર રૂપી વાવમાં પડનાર પ્રાણીઓની  
રક્ષા કરવા રૂપ આશ્વાસન માં પરાયણ બોવા જિન શાસનનો મહિમા પ્રશસ્ત  
કરવો. જગતના બધા જીવોને જિનશાસનના રસિક બનાવવા. મિથ્યાત્વ રૂપ  
અધકારનો નાશ કરવો, અને ચરણસત્તરી અને કરણસત્તરીની શરણમાં  
રહેવું આ પ્રવચન પ્રમાવના છે. ૨૦

આ વીસ સ્થાનો બધા જીવોને માટે તીર્થકર પઢની પ્રાપ્તિમાં કારણ  
ભૂત હોય છે. “एपहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीवो” આ કારણો દ્વારા જ  
જીવ તીર્થકર પદ મેળવે છે. બીજી ઘણી જગ્યાએ પણ એજ વાત કહેવામાં  
આવી છે. જિનાગમોમાં અનેક તપ પ્રસિદ્ધ છે, પણ આ શ્રી વીસ સ્થાન  
રૂપ તપસ્યા જેવી બીજી કોઈપણ તપસ્યા નથી. આ વીસ સ્થાનોમાંથી ગમે  
તે જોઈ સ્થાનની આરાધના કરીને જીવ અરિહંતોની મધ્યે ઉત્તમ જિનેન્દ્રના  
પદને મેળવે છે.

યદુક્તમ્—

ભૂયાંસ્યપિ તપાંસિસ્યુઃ, પ્રસિદ્ધાનિ જિનાગમે ।

પરંશ્રીવિંશતિસ્થાન- તપસ્તુલ્યં તપો નદિ ॥ ૧ ॥

અન્યન્ન-વીસાપ અન્નયર્, ઠાગં આરાદિઞ્જ જે વીસા ।

અરિહાર્ણમ્ મન્થે, જિણિદ્પદમુત્તમં લઘ્ન ॥ ૨ ॥

પુનઃ-પુરિમેણ પચ્છિમેણય, એ સન્ને વિ ફાસિયા ઠાળા ।

મન્થિમગેર્હિં જિનેર્હિં, એમં દો તિણિ સન્ને વા ॥ ૩ ॥

હતિવચનાદાદિનાથજીવેન વર્ધમાનજીવેન ચ પૂર્વસ્મિન્ તૃતીયમર્થે સર્વાણિ વિંશતિસ્થાનકાનિ સેવિતાનિ, અન્યૈર્દ્વાવિંશતિતીર્થકરજીવૈરેકં દ્વે ત્રીણિ સર્વાણ્યપિ સ્પૃશ્તાનિ, નિયમો નાસ્તિ । મલ્હિનાથ જીવેન તુ સર્વાણ્યેવ સેવિતાનાંતિ ભાવઃ ।

એતેષુ વિંશતિ સંખ્યાકેષુ યે વસન્તિ તદારાધનાયાં પ્રવૃત્તા ભવન્તિ, તે સ્થાનકવાસિનઃ કથ્યન્તે । ઉક્તં ચ—

“તિથિંગર પયદાહસુ, વસહ ય વીસાસુ ઠાળગેલું જે ।

આરાઘનદ્વમણિસં, ઠાળગવાસી ય સો દ્વપ ॥ ૧ ॥”

છાયા—“તીર્થક્રૂર પદદાયિષુ વસતિ ચ વિંશતો સ્થાનકેષુ યત્ ।

આરાધનાર્થમનિર્ગં, સ્થાનકવાસો ચ સ ભવતિ ॥ ૧ ॥” ઇતિ ।

આદિ નાથ પ્રસુ કે જીવ ને ઔર શ્રી મહાવીર પ્રસુકે જીવને પૂર્વ તૃતીય ભવ મેં સમસ્ત વીસ સ્થાનોં કી આરાધના કી થી । વીસ કે ઘાકી ૨૨ તીર્થકરોં ને કિન્હીને એક કિન્હીને ૨ કિન્હીને ૩ સ્થાનોં કી ઔર કિન્હી ૨ ને સઘહી સ્થાનોં કી આરાધના કી । એસા નિયમ નહીં હૈં કિ તીર્થકર પ્રકૃતિ કે વંધ કે લિયે ઇન વીસો હી સ્થાનોં કી આરાધના કરની પડની હો । મલ્હિનાથ કે જીવ ને તો ઇન વીસોહી સ્થાનોં કી આરાધના કી । વીસ સ્થાનોં મેં જો રહતે હૈં ડનકી આરાધના કરને મેં પ્રવૃત્ત હોતે હૈં—વે સ્થાનકવાસી કહલાતે હૈં । ઉક્તંચ-તર્થકર

પૂર્વતૃતીય ભવમાં આદિનાથ પ્રભુના છુવે અને શ્રી મહાવીર પ્રભુના છુવે વીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી. વચ્ચેના શેષ બાવીસ તીર્થકરો માંથી કોઈએ એક કોઈએ બે, કોઈએ ત્રણ સ્થાનોની અને કોઈ કોઈએતો બધા સ્થાનોની આરાધના કરી હતી. એવો કોઈ ચોક્કસ નિયમ નથી કે તીર્થકર પ્રકૃતિના બંધને માટે ઉક્ત વીસે વીસસ્થાનોની આરાધના કરવી જ પડતી હોય. મલ્હિનાથના છુવેતો આ બધાંની વીસેવીસ સ્થાનોની આરાધના કરી હતી આ વીસ સ્થાનોમાં જે રહે છે તેમની આરાધના કરવામાં જે તત્પર રહે છે તેઓ ‘સ્થાનકવાસી’ કહેવાય છે ઉક્તચ-તીર્થકર પ્રકૃતિને આપનારા ઉક્ત વીસ

अन्यच्च—“ तीर्थङ्कर पदप्राप्तेः, स्थानकेषु च विंशती ।

वसन्त्याराधनार्थं यत्तस्मात् स्थानकवासिनः ॥ १ ॥” इति ।

मूलम्—तएणं ते महाबलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, जाव एगराइयं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तएणं ते महाबलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तं जहा—चउत्थं करेति, करित्ता सब्बकामगुणियं पारेति, पारित्ता छट्ठं करेति । करित्ता चउत्थं करेति, करित्ता अट्ठमं करेति, करित्ता छट्ठं करेति, करित्ता दशमं करेति, करित्ता अट्ठमं करेति, करित्ता दुवालसमं करेति, करित्ता दसमं करेति, करित्ता चाउदसमं करेति, करित्ता दुवालसमं करेति, करित्ता सोलसमं करेति, करित्ता चोदसमं करेति, करित्ता अट्ठारसमं करेति, करित्ता सोलसमं करेति, करित्ता वीसइमं करेति, करित्ता अट्ठारसमं करेति, करित्ता वीसइमं करेति, करित्ता सोलसमं करेति, करित्ता अट्ठारसमं करेति, करित्ता चोदसमं करेति, करित्ता सोलसमं करेति, करित्ता दुवालसमं करेति, करित्ता चाउदसमं करेति, करित्ता दसमं करेति, करित्ता दुवालसमं करेति, करित्ता अट्ठमं करेति, करित्ता दसमं करेति, करित्ता छट्ठं करेति, करित्ता अट्ठमं करेति, प्रकृति के दाता इन २० स्थानों में जो आराधना करने के निमित्त सदा घसते हैं—निवास करते हैं—वे ही स्थानकवासी कहलाते हैं । दूसरे श्लोक का भी यही भाव है । सूत्र “ ५ ”

स्थानोभां आराधनां कश्चाना प्रयोजनथी जेज्जे उभेसा निवास करे छे—वसे छे, तेज्जे स्थानवासी कहवाय छे. जीण श्लोक नो पणु जेअ अर्थ छे. सूत्र “ ५ ” ॥

करित्ता चंडत्थं करेति करित्ता छट्ठं करेति, करित्ता चंडत्थं करेति, सव्वत्थ सव्वकामगुणिणं पारेति. एवं खल्ल एसा खुड्ढागसीह निक्कालियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासोह सत्तहि य अहोरत्तेहि य अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ,

तयाणंतरे दोच्चपि परिवाडीए चउत्थं करेति, नवरं विग-  
इवज्जं पारेति, एवं तच्चापि परिवाडी नवरं पारणए अलेवाडं  
पारेति, एवं चउत्था वि परिवाडी नवरं पारणए आयंविलेण  
पारेति ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएणं ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खल्ल ते महाबलप्रमुखा सप्ता-  
नगराः ‘मासियं’ (१) मासिकीम् एकमासपरिमार्णां प्रथमां भिक्षुप्रतिमाम्  
‘उवसंपज्जित्ताणं’ उपसंपद्य स्वीकृत्य, विहरन्तिस्म । एवम् अमुना प्रकारेण ‘जाव-  
एगराइयं’ यावत् एकान्विकीम् अत्र यावत् करणात् ‘दो मासियं’ तेमासियं  
चउम्मासियं पंचमासियं छम्मासियं सत्तमासियं पढमसत्तराईदियं वीयसत्तराईदियं

‘तएणं ते महाबल पामोक्खा’ । इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते महाबलपामोक्खा) उन महाबल  
प्रमुख सातों अनगरों ने (मासियं भिक्षुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं  
विहरन्ति) १ मास की प्रमाण वाली १ प्रथम भिक्षु प्रतिमा धारण की  
(जाव एगराइयं उवसंपज्जित्ताणं विहरन्ति) इसी तरह दो मास प्रमाण  
वाली द्वितीय भिक्षु प्रतिमा, तीन मास प्रमाण वाली तृतीय भिक्षु  
प्रतिमा, ४ चार मास प्रमाण वाली चतुर्थ भिक्षु प्रतिमा, पांच मास

‘तएणं ते महाबल पामोक्खा’ । इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थार ग्राह (ते महाबलपामोक्खा) महाबल प्रमुख सात  
अनगरों ने (मासियं भिक्षुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरन्ति) एक मास की  
प्रमाणवाली १ प्रथम भिक्षु प्रतिमा धारण करी. (जाव एगराइयं उवसंपज्जि-  
त्ताणं विहरन्ति) आ प्रमाण ४ के मास प्रमाणवाली द्वितीय भिक्षुप्रतिमा,  
प्रमाण ५ वाली तृतीय भिक्षुप्रतिमा, आर आर मास प्रमाण वाली चतु-

તત્ત્વસત્તરાઈંદિયં અહોરાઈંદિયં ' इति पाठस्य संग्रहः । तत्र २. द्वैमासिकीं, ३ कीं, ४, चातुर्मासिकीं ५, पंचमासिकीं, ६, षाण्मासिकीं, ७. सप्तमासिकीं, सर्मा. ८. प्रथम सप्तरात्रिदिवां, ९. द्वितीय सप्तरात्रिदिवां, १०. तृतीय सप्तरात्रिदिव, इमा दश प्रतिमा उपसंपद्य, एकादशीम्-११. अहोरात्रिकीं, १२. द्वादशीम्- एक रात्रिकीम् इत्येवं द्वादशप्रतिमा उपसंपद्य विहरन्ति स्म । आसां वर्णनं दशाश्रुत-स्कन्धे सप्तमाध्ययने मुनिहर्षिणी टीकायां द्रष्टव्यम् ।

તતસ્તદન્તરં સ્વહુ તે મહાબલપ્રમુખા સપ્તાનગારા ' खुड्गाणं ' क्षुल्लकं ' सीह निक्कीलियं ' सिंहनिष्क्रीडितं=सिंहनिष्क्रीडितनामकं सिंहो यथा विहरन् स्व पश्चा-

પ્રમાણ ચાલી પાંચવીં ભિક્ષુપ્રતિમા, ૬ માસ પ્રમાણ ચાલી છઠી ભિક્ષુપ્રતિમા, ૭ માસ પ્રમાણ ચાલી સપ્તમી ભિક્ષુપ્રતિમા, પ્રથમ સાત રાત્રિ દિન પ્રમાણ ચાલી ૮ મી ભિક્ષુપ્રતિમા, દ્વિતીય સાત દિન રાત્રિ પ્રમાણ ચાલી ૧૦ વી ભિક્ષુપ્રતિમા તથા ૧ દિન રાત્રિ પ્રમાણ ચાલી ૧૧ વીં ભિક્ષુપ્રતિમા ઓર એક રાત્રિ પ્રમાણ ચાલી ૧૨વીં ભિક્ષુપ્રતિમા ડન સ્વ અનગારોંને ધારણ કી ।

इन समस्त प्रतिमाओं का वर्णन दशाश्रुतस्कंध में सप्तम अध्ययन में मुनि हर्षिणी नाम की टीका में किया गया है । वहां से देख लेना ।

( तपणं ते महन्बलपामोक्त्वा सप्त अणगारा खुड्गाणं सीहनिक्की लियं तवोक्कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ). इसके बाद उन महाबलप्रमुख सातों ही अनगारों ने लघु सिंह निष्क्रीडित नाम का तप किया । जिस

થંભિક્ષુપ્રતિમા પાંચ માસ પ્રમાણવાળી પાંચમી ભિક્ષુપ્રતિમા, ૬ માસ પ્રમાણ વાળી છઠી ભિક્ષુપ્રતિમા, સાત માસ પ્રમાણવાળી સાતમી ભિક્ષુપ્રતિમા, પ્રથમ સાત રાત્રિ દિવસ પ્રમાણવાળી આઠમી ભિક્ષુપ્રતિમા, ૧૦ સાત દિવસ રાત્રિ પ્રમાણ વાળી નવમી ભિક્ષુપ્રતિમા, ત્રીજી સાત દિવસ રાત્રિ પ્રમાણવાળી દશમી ભિક્ષુ પ્રતિમા તેમજ એક દિવસ રાત્રિ પ્રમાણવાળી અગિયારમી ભિક્ષુપ્રતિમા; અને એક રાત્રિ પ્રમાણવાળી બારમી ભિક્ષુ પ્રતિમા, તેઓ બધા અનગારોં એ ધારણ કરી.

આ બધી પ્રતિમાઓ વિષે વિગત વાર અર્થાં ' દશાશ્રુતસ્કંધ ' ના સાતમા અધ્યયનની મુનિહર્ષિણી નામની ટીકામાં કરવામાં આવી છે. જિસાસુ-ઓએ ત્યાંથી બહુ લેવું જોઈએ.

( તપણં તે મહન્બલપામોક્ત્વા સપ્ત અણગારા खुड्गाणं सीह निक्कीलियं तवो कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति )

ત્યાર બાદ મહાબલ પ્રમુખ સાતે સાત અનગારોંએ લઘુસિંહનિષ્ક્રીડિત નામે તપ કર્યું. સિંહ જેમ ચોતાના પાછળના ભાગની તરફ ડોકીયું કરતો

જ્ઞાનં પश्यति, तथा यत् तपः पूर्वकृतं पुनरावर्त्योत्तरोत्तरं क्रियते तत् सिंहनिष्क्री-  
डितमित्युच्यते । तपःकर्मोपसंपद्य विहरन्ति । तत्र क्षुल्लकं सिंहनिष्क्रीडितं  
तपः कर्म केन प्रकारेण तैः कृतमित्याकाङ्क्षायाग्माह—‘ तंजहा ’ इत्यादि चतुर्थ  
चतुर्थभक्तमेकोपवासरूपं कुर्वन्ति कृत्वा ‘ सच्चकामगुणियं ’ सर्वकामगुणितं=सर्व-  
कामगुणाः दुग्धदधिघृततैलमधुररूपा विकृतयः संजाता यत्र तत् सर्वकामगुणितम्.  
इदं पारणक्रियायाविशेषणं, ‘ पारंति ’ पारयन्ति=पारणं कुर्वन्ति । पारयित्वा षष्ठं  
कुर्वन्ति, ततः पारणं कृत्वा षष्ठभक्तं द्रव्युपवासरूपं तपः कुर्वन्ति— इत्यर्थं कृत्वा

तरह सिंह अपने पश्चात् भाग का निरीक्षण करता आगे चलता है उसी  
प्रकार जो तप पूर्वकृत तपो को साथ लेकर आगे २ किया जाता है उस  
का नाम सिंहनिष्क्रीडित तप है । ( तंजहा ) यह क्षुल्लक सिंह निष्क्री-  
डित तप उन्होंने ने किस प्रकार से किया इस बात को अब सूत्रकार  
प्रदर्शित करते हैं ।— (चउत्थं करेंति, करित्ता सच्चं कामगुणियं पारंति,  
पारित्ता छट्टं करेंति, करित्ता चउत्थं करेंति करित्ता अट्टमं करेंति, करित्ता  
छट्टं करेंति, करित्ता, दसमं करेंति, करित्ता अट्टमं करेंति, करित्ता दुवा-  
लसमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता चाउदसमं करेंति करित्ता  
दुवालसमं करेंति) उन्होंने ने पहिले चतुर्थ भक्त—एक उपवास किया । एक  
उपवास करके विगद्य सहित पारणा किया पारणा करके फिर छट्टभक्त  
—दो उपवास किये दो उपवास करके फिर उन्होंने ने पारणा किया बाद  
में चतुर्थ भक्त किया । चतुर्थभक्त करके पारणा किया फिर—तीन उप-

આગળ ચાલે છે તે પ્રમાણે જ જે તપ પૂર્વે કરેલાં તપોને સાથે લઇને  
આગળ કરવામાં આવે છે, તે તપ સિંહ નિષ્ક્રીડિત કહેવાય છે. ( તં જહા )  
અનગારોએ આ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કેવી રીતે કર્યું ? તે વિશે  
સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરતાં કહે છે.

( ચઉત્થં કરેતિ, કરિત્તા સચ્ચકામગુણિયં પારેતિ, પરિત્તા, છટ્ટં કરેતિ  
કરિત્તા ચઉત્થં કરેતિ, કરિત્તા અટ્ટમં કરેતિ, કરિત્તા છટ્ટં કરેતિ, કરિત્તા દસમં  
કરેતિ. કરિત્તા અટ્ટમં કરેતિ, કરિત્તા દુવાલસમં કરેતિ કરિત્તા ચાઉદસમં કરેતિ  
કરિત્તા દુવાલસમં કરેતિ )

તેઓએ સૌ પ્રથમ ચતુર્થભક્ત—એક ઉપવાસ કર્યો. એક ઉપાસ કરીને  
વિગદ્ય સહિત પારણાં કર્યાં. પારણા કર્યા બાદ ફરી છટ્ટભક્ત—બે ઉપવાસ કર્યા.  
બે ઉપવાસ કરીને તેઓએ પારણાં કર્યા ત્યાર બાદ ચતુર્થ ભક્ત કર્યા બાદ  
પારણાં કર્યા. ત્યાર પછી ત્રણ ઉપવાસ રૂપ અષ્ટમ ભક્ત કર્યો. અષ્ટમ ભક્ત

चतुर्थं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमम्, अष्टमभक्तं त्र्युपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा षष्ठं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं चतुरूपवासरूपं दशमभक्तं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टमं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं पञ्चोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा दशमं कुर्वन्ति. कृत्वा चतुर्दशं षडुपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा द्वादशं कुर्वन्ति. कृत्वा षोडशं सप्तोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा चतुर्दशं कुर्वन्ति, कृत्वाऽष्टादशं अष्टोपवासरूपं कुर्वन्ति, कृत्वा षोडशं कुर्वन्ति, कृत्वा विंश-

वासरूप अष्टमभक्त किया अष्टम भक्त करके पारणा किया फिर छठ् भक्त रूप दो उपवास किये । षष्ठ भक्त करके पारणा किया फिर दशमं भक्त रूप चार उपवास किये चार उपवास करके पारणा किया फिर अष्टम भक्त रूप तीन उपवास किये । अष्टम भक्त करके पारणा कियो फिर पञ्च उपवास रूप द्वादश भक्त किया द्वादश भक्त करके पारणा किया । पुनः दशम भक्त किया । दशम भक्त करके पारणा किया फिर षट् उपवास रूप चतुर्दश भक्त किया । चतुर्दश भक्त करके पारणा किया पुनः द्वादश भक्त रूप पांच उपवास किये । ( करित्ता सोलसमं करेति ) पांच उपवास करके पारणा किया पुनः ७ उपवासरूप सोलस भक्त किया (करित्ता चोदसमं करेति) ७ उपवास करके पारणा कियो—बाद में ६ उपवास किये (करित्ता अट्टारसमं करेति) पारणा करके फिर अष्टादश भक्त रूप ८ उपवास किये (करित्ता सोलसमं करेति) आठ उपवास करके पारणा किया फिर ७ उपवास किये ( करित्ता बीसइमं करेति) सात उपवास करके उसका

करीने पारणुं कर्थां त्थार आठ छठ् भक्त रूप मे उपवासो कर्थां. षष्ठ भक्त करीने पारणुं कर्थां त्थार आठ दशम भक्त रूप त्थार उपवासो कर्थां. त्थार उपवासोना अन्ते पारणुं कर्थां त्थार आठ अष्टम भक्त रूप त्रषु उपवासो कर्थां. अष्टम भक्त करीने पारणुं कर्थां त्थार आठ द्वादश भक्त पांच उपवास कर्थां त्थार पछी पारणुं कर्थां. करी दशम भक्त कर्थां. दशम भक्त करीने पारणुं कर्थां. अने त्थार आठ छ उपवास रूप चतुर्दश भक्त कर्थां.

चतुर्दश भक्त करीने पारणुं कर्थां. करी द्वादश भक्त रूप पांच उपवासो कर्थां. ( करित्ता सोलसमं करेति पांच उपवासो करीने पारणुं कर्थां. करी सोलस भक्त सात उपवास कर्थां ( करित्ता चोदसमं करेति ) सात उपवास करीने पारणुं कर्थां त्थार आठ छ उपवासो कर्थां. “ करित्ता अट्टारसमं करेति ” पारणुं करीने अष्टादश भक्त रूप आठ उपवासो कर्थां. “ करित्ता सोलसमं करेति आठ उपवासो करीने पारणुं कर्थां त्थार आठ सात उपवासो कर्थां. “ करित्ता बीसइमं करेति ” सात उपवासो करीने तेण्ण पारणुं कर्थां, त्थार



તિતમં નવોપવાસરૂપં કુર્વન્તિ । કૃત્વાઽષ્ટાદશં કુર્વન્તિ કૃત્વા વિંશતિતમં કુર્વન્તિ  
 કૃત્વા પોઢં કુર્વન્તિ, કૃત્વાઽષ્ટાદશં કુર્વન્તિ, કૃત્વા ચતુર્દશં કુર્વન્તિ, કૃત્વા પોઢં  
 કુર્વન્તિ, કૃત્વા દ્વાદશં કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્દશં કુર્વન્તિ કૃત્વા દશમં કુર્વન્તિ કૃત્વા  
 દ્વાદશં કુર્વન્તિ, કૃત્વાઽષ્ટમં કુર્વન્તિ, કૃત્વા દશમં કુર્વન્તિ કૃત્વા પષ્ઠં કુર્વન્તિ, કૃ-

પારણા કિયા-ફિર ૧ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા અદ્વારસમં કરેતિ ) ડસ  
 કા પારણા કિયા-ફિર ૮ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા વીસહમં કરેતિ ) આઠ  
 ઉપવાસ કરકે ડસ કા પારણા કિયા-ફિર ૧ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા સોલ-  
 સમં કરેતિ ) ૧ ઉપવાસ કરકે ડસ કા પારણા કિયા-ફિર ૭ ઉપવાસ  
 કિયે ( કરિત્તા અદ્વારસમં કરેતિ ) સાત ઉપવાસ કા પારણા કિયા-૮  
 ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા ચોદસમં કરેતિ ) ડન આઠ ઉપવાસ કા પારણા  
 કિયા-ફિર ૬ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા સોલસમં કરેતિ ) ૬ ઉપવાસ કા  
 પારણા કિયા-ફિર ૭ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા દુવાલસમં કરેતિ )  
 ૭ ઉપવાસ કરકે ડસ કા પારણા કિયા-ફિર ૫ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા  
 ચાઢહસમં કરેતિ ) ૬ ઉપવાસ કરકે ડસ કા પારણા કિયા-ફિર ૬  
 ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા દસમં કરેતિ ) ૬ ઉપવાસ કરકે પારણા કિયા  
 ફિર ૪ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા દુવાલસમં કરેતિ ) ૪ ઉવાસ કા પાર-  
 ણા કિયા-પારણા કરકે ૫ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા અદ્વમં કરેતિ ) ૫  
 ઉપવાસ કા પારણા કિયા-ફિર ૩ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા દસમં

ખાઢ ક્ષરી નવ ઉપવાસોં કથાં. “ કરિત્તા અદ્વારસમં કરેતિ ” અને તેનાં પારણાં  
 કથાં. ત્યાર ખાઢ આઠ ઉપવાસો કથાં. “ કરિત્તા વીસહમં કરેતિ ” અઠ ઉપ-  
 વાસો ક્ષરીને તેનાં પારણાં કથાં. ત્યાર પછી નવ ઉપવાસો કથાં “ કરિત્તા  
 સોલસમં કરેતિ ” નવ ઉપવાસો ક્ષરીને તેનાં પારણાં કથાં. ત્યાર ખાઢ સાત  
 ઉપવાસો કથાં “ કરિત્તા અદ્વારસમં કરેતિ ” સાત ઉપવાસનાં પારણાં ક્ષરીને  
 આઠ ઉપવાસો કથાં “ કરિત્તા ચોદસમં કરેતિ ” અને આઠ ઉપવાસોનાં પારણાં  
 કથાં. ત્યાર પછી છ ઉપવાસો કથાં “ કરિત્તા સોલસમં કરેતિ ” છ ઉપવાસોના  
 પારણાં ક્ષરીને સાત ઉપવાસ કથાં “ કરિત્તા દુવાલસમં કરેતિ ” સાત ઉપવાસ  
 ક્ષરીને તેનાં પારણાં કથાં ત્યાર ખાઢ પાંચ ઉપવાસો કથાં. “ કરિત્તા ચાઢહસમ  
 કરેતિ ” પાંચ ઉપવાસો ક્ષરીને તેનાં પારણાં કથાં. ત્યાર ખાઢ છ ઉપવાસો  
 કથાં. “ કરિત્તા દસમં કરેતિ ” છ ઉપવાસનાં પારણાં કથાં, અને ત્યાર પછી  
 ચાર ઉપવાસો કથાં. “ કરિત્તા દુવાલસમં કરેતિ ” ચાર ઉપવાસના પારણાં  
 ક્ષરીને પાંચ ઉપવાસો કથાં “ કરિત્તા અદ્વમં કરેતિ ” પાંચ ઉપવાસનાં પારણાં  
 કથાં અને ત્યાર ખાઢ ત્રણ ઉપવાસો કથાં. “ કરિત્તા દસમં કરેતિ ” ત્રણ

ત્વાઽષ્ટમં કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્થં કુર્વન્તિ, કૃત્વા ષષ્ઠં કુર્વન્તિ કૃત્વા ચતુર્થં કુર્વન્તિ  
સર્વં સર્વકામગુણિતેન પારયન્તિ । ચતુર્થં કુર્વન્તીત્યાદિ-સર્વં સર્વકામગુણિતેન પાર-  
યન્તીત્યન્તસ્યાયં નિષ્કર્ષઃ-સિંહનિષ્ક્રીડિતં તપોદ્વિવિધં મહત્ સુસ્લકંચ ।  
તત્રાત્મલોભગત્યા-

કરેંતિ ) ૩ ઉપવાસ કા પરણા કિયા ફિર ૪ ઉપવાસ કિયે ( કરિત્તા  
છટ્ઠં કરેંતિ ) ૪ ઉપવાસ કા પારણા કિયા-ફિર ૨ ઉપવાસ કિયે ( કરિ-  
ત્તા અઠ્ઠમં કરેંતિ ) ૨ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર ૩ ઉપવાસ કિયે  
( કરિત્તા ચતુર્થં કરેંતિ ) ૩ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર ૧ ઉપવાસ  
કિયા ( કરિત્તા છટ્ઠં કરેંતિ ) ૧ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર ૨ ઉપ-  
વાસ કિયે ( કરિત્તા ચતુર્થં કરેંતિ ) ૨ ઉપવાસ કા પારણા કરકે ફિર  
૧ ઉપવાસ કિયા ( સન્વત્થ સન્વકામગુણિણં પારેંતિ ) પારણા  
જો ઇન્હોં ને કિયા વહ સર્વં વિગય સહિત કિયા

( एवं खलु एसा खुद्दागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परि-  
वाडी छहिं-मासेहिं सत्तहिं अहोरेत्तेहिं य अहासुत्तं जाव अहाराहिया  
भवइ ) इस तरह क्षुद्र सिंहनिष्क्रीडित तप की प्रथम परिपाटी है । यह  
छह मास और सात दिन रात तक सूत्रोक्त विधि के अनुसार यावत्  
आराधित होती है ।

अर्थात् इसके करने में सात दिन रात अधिक ६ मास का समय  
लगता है । यहां “सर्वकामगुणित ” ऐसा जो पारणा का विशेषण

ઉપવાસોના પારણા કરીને ત્યાર પછી ચાર ઉપવાસો કર્યા. “ કરિત્તા છટ્ઠં કરેંતિ ”  
ત્યાર ઉપવાસનાં પરણાં કર્યાં, ત્યાર બાદ બે ઉપવાસ કર્યા. “ કરિત્તા અઠ્ઠમં  
કરેંતિ ” બે ઉપવાસનાં પારણાં ત્રણ ઉપવાસ કર્યા “ કરિત્તા ચતુર્થં કરેંતિ  
ત્રણ ઉપવાસના પારણાં કરીને એક ઉપવાસ કર્યો. “ કરિત્તા છટ્ઠં કરેંતિ ”  
એક ઉપવાસનાં પારણાં કરીને બે ઉપવાસો કર્યા. “ કરિત્તા ચતુર્થં કરેંતિ  
બે ઉપવાસનાં પારણાં કરીને એક ઉપવાસ કર્યો “ સન્વત્થ સન્વ કામગુણિ  
ણં પારેંતિ ” તેઓએ અર્ધાં પારણા વિગય સહિત કર્યા હતા.

( एवं खलु एसा खुद्दागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी  
छहिं मासेहिं सत्तहिं अहोरेत्तेहिं आहासुत्तं जाव अहाराहिया भवइ )

આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની આ પ્રથમ પરિપાટી છે. છ માસ અને  
સાત દિવસ રાત સુધી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ ‘યાવત્’ તેની આરાધના હોય છે.

એટલે કે આ મતને કરવામાં છ માસ અને સાત દિવસ રાત બેટલો  
વખત લાગે છે અર્ધી “ સર્વકામગુણિત ” ને પારણાના વિશેષણ રૂપે મૂક-

ચતુર્મક્તાદિ વિંશતિતમપર્યન્તં, પ્રતિલોમગત્યા ।

વિંશતિતમમક્તાદિતચતુર્થમક્તપર્યન્તં ચ મિલિત્વા તપઃ ક્ષુલ્લકમિત્યુચ્યતે । અનુલોમસમાપ્ત્યનન્તરં પ્રતિલોમકરણાત્ પ્રાગ્ મધ્યેઽષ્ટાદશમક્તં ભવતિ । ચતુર્થ ષષ્ઠાષ્ટમાદીનિ તુ એકૈકશ્વદ્વયા એકોપવાસ દ્વયુપવાસાદીનિ । इह चतुर्थपष्ठाष्टमदशम द्वादशचतुर्दशषोडशमक्तानि प्रत्येकं चत्वारि २ त्रिणि अष्टादशानि, द्वे विंशतितमे एवं तपोदिनानि १५४ चतुःपञ्चादधिकं भूतं, पारणदिनानि ३३ त्रयस्त्रिंशद्भवन्ति ।

રહ્યા હૈ उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यह सिंहनिष्क्रीडित तप क्षुल्लक और महत् की अपेक्षा से दो प्रकार का होता है—इनमें अनुलोम गति से प्रथम चतुर्थमक्त से प्रारंभ होकर विंशतितम पर्यन्त किया जाता है और प्रति लोमगति से प्रथम विंशतितम मक्तादि से प्रारंभ कर चतुर्थमक्त पर्यन्त समाप्त किया जाता है । इस तरह अनुलोम प्रतिलोम विधि से किया गया यह तप क्षुल्लक निष्क्रीडित तप माना गया है । अनुलोम विधि की समाप्ति होने के बाद प्रतिलोम विधि से इसे करने के पहिले बीच में अष्टादश मक्त हो जाते हैं । ये चतुर्थ षष्ठ अष्टमादि एक एक उपवास की वृद्धि से एक उपवास दो उपवास तीन उपवास आदि वाले होते हैं ।

इसमें चतुर्थ षष्ठ अष्टम, दशम द्वादश चतुर्दश और षोडश मक्त ये प्रत्येक क्रमश ४-४-३-३ हो जाते हैं, तथा विंशतितम ९ उपवास दो होते हैं । तपस्या के दिन १५४, पारणा के दिन ३३ इस प्रकार मिला

વામાં આવ્યો છે તેનો અભિપ્રાય આ પ્રમાણે છે કે સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ ક્ષુલ્લક અને મહતની દૃષ્ટિએ બે પ્રકારનું હોય છે. અનુલોમ ગતિથી પહેલાં ચતુર્થ ભક્તથી આરંભીને વિંશતિતમ સુધી તપ કરવામાં આવે છે અને પ્રતિ લોમ ગતિથી પ્રથમ વિંશતિતમ ભક્ત વગેરે થી આરંભીને ચતુર્થ ભક્ત સુધી પુરૂં કરવામાં આવે છે, આ રીતે અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિથી કરવામાં આવેલું આ તપ ક્ષુલ્લક નિષ્ક્રીડિત તપ ગણાય છે. અનુલોમ વિધિની સમાપ્તિ બાદ પ્રતિલોમ વિધિથી આ તપ આરંભ કરીને તેના પહેલાં વચ્ચે અષ્ટાદશ ભક્ત થઈ જાય છે આ ચતુર્થ, અષ્ટ, અષ્ટમ વગેરે એક એક ઉપવાસની વૃદ્ધિથી એક ઉપવાસ, બે ઉપવાસ અને ત્રણ ઉપવાસ વગેરેના હોય છે.

આમાં ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ, ચતુર્દશ અને ષોડશ ભક્ત આ ગણા અનુક્રમે ચાર ચાર, ત્રણ ત્રણ, થઈ જાય છે. તેમજ વિંશતિતમ નવ ઉપવાસ બે હોય છે. તપસ્યાના દિવસો ૧૫૪, અને પારણાના દિવસો ૩૩,

ઉમયં મિલિત્વા પ્રથમપરિપટયાં ૧૮૭ સપ્તાશાત્યધિકેમેકંશતં દિનાનિ ભવન્તિ પારણકં ચ સર્વત્ર સર્વકામગુણિતં=સવિકૃતિકં કુર્વન્તિ-इत्यर्थः । एवं खलु एषा क्षुद्रसिंहनिष्क्रीडितस्य तपः कर्मणः प्रथमा परिपाटी षड्विंशमसैः सप्तमिश्राहोरा-  
त्रैश्च यथासूत्रं सूत्रोक्तविधिना यावद् आराधिता भवति । उत्तरीत्या क्षुद्रकसिंह  
निष्क्रीडितस्य तपसः प्रथमायां परिपाट्यां सप्तरात्रिदिवાધિકાઃ ષળમાસા ભવન્તિ  
પારણં ચ વિકૃતિસહિતં ભવતિ ।

इदमस्य तपसः प्रथमपरिपाटीयन्त्रम्, एकमेव द्वितिय तृतीयचतुर्थं पदि-  
पाटीनामपि यन्त्रं बोध्यम् ।

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |  |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|--|
| ૧ | ૨ | ૧ | ૩ | ૨ | ૪ | ૩ | ૫ | ૪ | ૬ | ૫ | ૭ | ૬ | ૮ | ૭ | ૯ |   |  |
| ૧ | ૨ | ૧ | ૩ | ૨ | ૪ | ૩ | ૫ | ૪ | ૬ | ૫ | ૭ | ૬ | ૮ | ૭ | ૯ | ૮ |  |

તદનન્તરં પ્રથમપરિપાટીકરણાનન્તરં દ્વિતીયાયાં પરિપાટ્યાં ચતુર્થ કુર્વન્તિ,  
નવરં વિકૃતિવર્જે પારયન્તિ । પારણં કુર્વન્તિ, एवं तृतीयाऽपि परिपाटीं, नवरं  
कर प्रथम परिपाटी में १८७, दिन हो जाते हैं । पारणा के दिन विगय  
सहित आहार लिया जाता है । इस प्रकार इस क्षुद्र सिंह निष्क्रीडित  
तप की प्रथम परिपाटी ६ मास ७ दिन रात तक सूत्रोक्त विधि के  
अनुसार आराधित होती है । इस तप की प्रथम परिपाटी का यन्त्र  
उपर संस्कृत टीका में दिया है । इसी तरह, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ  
परिपाटी का भी यंत्र जानना चाहिये ।

( तयाणंतर.... ..પારેતિ )

जब प्रथम परिपाटी के अनुसार क्षुद्र सिंह निष्क्रीडित तप आरा-  
धित हो चुकता है तब उसके बाद द्वितीय परिपटी में जो चतुर्थ भक्त  
की तपस्या करते हैं वे विकृतिवर्ज आहार का पारणा करते हैं ।

આમ બનેલો સરવાળો પ્રથમ પરિપાટીમાં ૧૮૭ દિવસનો હોય છે. પારણાના  
દિવસે વિગય સહિત આહાર કરવામાં આવે છે. આ પ્રમાણે ક્ષુદ્રસિંહ નિષ્ક્રી-  
ડિત તપની પ્રથમ પરિપાટી સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ છ માસ અને સાત દિવસ  
રાત સુધી આરાધિત હોય છે. આ તપની પ્રથમ પરિપાટીનું યંત્ર ઉપર સંસ્કૃત  
ટીકામાં બતાવ્યા મુજબ છે. આ પ્રમાણેજ દ્વિતીય, તૃતીય ચતુર્થ પરિપાટીના  
યંત્ર વિષે પણ બાણુર્વ બોધ્યો.

( તયાણંતર.....પરિતિ )

જ્યારે પ્રથમ પરિપાટી મુજબ ક્ષુદ્રસિંહ-નિષ્ક્રીડિત તપની આરાધના  
પૂરી થઈ બપ છે ત્યારે દ્વિતીય પરિપાટીમાં ચતુર્થ ભક્તની તપસ્યા કરનારા  
વિકૃતિ વર્જ આહારનાં પારણાં કરે છે.

પારણકે-અણેપકૃતં=અસ્તિગ્ધં=રૂઢ્યં પારયન્તિ । एवं चतुर्थ्यपि परिपाटी नवरं  
પારણકે આચામામ્ભેન પારયન્તિ=રૂઢાન્નમચિત્તજલપ્લાવિતં કૃત્વા તેન પારણં  
કુર્વન્તીત્યર્થઃ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

મૂલમ્-તણં તે મહબ્બલપામોક્ષા સત્ત અણગારા खुड्ढागं  
સીહનિક્કીલિયં તવોકમ્મં દોહિં સંવચ્છરેહિં અટ્ટાવીસાણ અહો-  
રત્તેહિં અહાસુત્તં જાવ આણાણ આરાહેત્તા જેળેવ થેરે ભગવંતે  
તેળેવ ઉવાગચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવંતે વંદંતિ નમંસંતિ  
વંદિત્તા, નમંસિત્તા એવં વયાસી-इच्छामो णं भंते ! महालयं  
સીહનિક્કીલિયં તહેવ જહા खुड्ढागंनवरंचोत्तीसइमाओ नियत्तण  
ણાણ પરિવાડોણ કાલો ઇમેણં સંવચ્છરેણં છહિં માસેહિં અટ્ટા-  
રસહિ ય અહોરત્તેહિં સમપ્પેહ્ । સબ્બંપિ સીહનિક્કીલિયં છહિં  
વાસેહિં દોહિ ય માસેહિં વારસેહિં ય અહોરત્તેહિં સમપ્પેહ્ । તણં  
તે મહબ્બલપામોક્ષા સત્ત અણગારા મહાલયં સીહનિક્કીલિયં  
અહાસુત્તં જાવ આરાહેત્તા જેળેવ થેરે ભગવંતે તેળેવ ઉવાગચ્છંતિ,  
ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગવંતે વંદંતિ નમંસંતિ વંદિત્તા નમંસિત્તા  
બહુણિ ચઉત્થ જાવ વિહરંતિ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

इसी तरह तीसरी भी परिपाटी होती है । परन्तु इसमें जो पारणा  
होता है वह विगय वर्जित रुक्ष अन्न का होता है । इसी तरह की चौथी  
परिपाटी होती है परन्तु इस में जो पारणा होता है वह चावल आदि  
का घोया हुआ घोवान पानी में अर्थात् अचित्त जल से प्लावित हुए  
रुक्ष अन्न याने आयंबिल का होता है ॥ सूत्र ६ ॥

આ પ્રમાણે ત્રીજી પરિપાટી પણ હોય છે પણ તેનાં પારણાં વિગય  
વગરના રુક્ષ અન્નનાં હોય છે. આ પ્રમાણે ચોથી પરિપાટી પણ હોય છે.  
પણ તેનાં પારણાં ભાત વગેરેના ઝોસામણુમાં એટલે કે અચિત્ત પાણીથી  
પ્લાવિત થયેલા રુક્ષ અન્ન અર્થાત્ આયંવિલના હોય છે. ॥ સૂત્ર ૬ ॥

ટીકા-તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્લુ તે મહાવલપ્રમુખાઃ સપ્તાનગારાઃ 'સુહ્રુગં' છુલ્લકં=લઘુકં, સિંહનિષ્ક્રીડિતં-ચતસ્રસિઃ પરિપાટીમિર્યુક્તં તપઃ કર્મ દ્વામ્યાં સંવત્સરાભ્યા-મષ્ટાવિંશત્યાઽહોરાત્રૈઃ 'અહાસુત્તં' યથાસૂત્રં સૂત્રોક્તવિધિના, યાવદ્=ઇહ યાવત્ કરુણાદ્ જ્ઞાનાદિમોક્ષમાર્ગાનતિક્રમેણ ક્ષાયોપશ્ચમિકભાવાનતિક્રમેણ વા 'અણાપ' આજ્ઞયા=મગવદાજ્ઞયા પ્રવચનાનુસારેણ આરાધ્ય, યત્રૈવ સ્થવિરા મગવન્તસ્તત્રૈવો પાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય સ્થવિરાન્ મગવતો વન્દતે=સ્તુવન્તિ, નમસ્યન્તિ=પ્રણમન્તિ, વન્દિત્વા નત્વા એવમવદન્

હે મદન્ત ! વયમિચ્છામઃ સ્વલ્લુ 'મહાલયં' મહત્ સિંહનિષ્ક્રીડિતં તપઃ કર્મ કર્તુમ્, તતઃ સ્થવિરાજ્ઞયા મહાવલપ્રમુખાઃ સપ્તાનગારાઃ મહાસિંહનિષ્ક્રીડિતં તપઃ

'તદ્દણં તે મહાવલપામોક્ષા' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તદ્દણં) ઇસકે બાદ (તે મહાવલપામોક્ષા સત્ત અણગારા) વે મહાવલ પ્રમુખ સાતો હીં અનગાર (સુહ્રુગં સીંહ નિકીલિયં) લઘુ સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપઃ કર્મ કો (દોહિં સંવચ્છરેહિં અદ્ધાવીસાપ અહોરત્તેહિં) દો વર્ષ ૨૮ દિન રાત તક (અહાસુત્તં) યથા સૂત્ર (જાવ આણાપ આ-રાહેત્તા) યાવત્ મગવાન કી ઇસ તપ કો કરને કી જેસી આજ્ઞા હૈ હસ કે અનુસાર આરાધિત કર (જેગેવ થેરે મગવંતે તેગેવ ઉવાગચ્છન્તિ ઉવાગચ્છિત્તા થેરે મગવંતે વંદન્તિ નમંસન્તિ, વંદિત્તા નમંસિત્તા એવં વયાસી) જહાં સ્થાવિર મગવાન થે વહાં ગયે । વહાં જાકર ઉન્હોને મગવંત સ્થ-વિરો કો વંદન કી-ઉન્હે નમસ્કાર ક્રિયા વંદના નમસ્કાર કરકે ફિર વે ઇસ પ્રકાર બોલે (ઈચ્છામો ણં મંતે ! મહાલયં સીંહનિકીલિયં

'તદ્દણં તે મહાવલપામોક્ષા' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તદ્દણં) ત્યારબાદ 'તે મહાવલપામોક્ષા સત્ત અણગારા' મહાબલ પ્રમુખ સાતે અનગારો (સુહ્રુગં સીંહનિકીલિયં) લઘુસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરીને (દોહિં સંવચ્છરેહિં અદ્ધાવીસાપ અહોરત્તેહિં) બે વર્ષ ૨૮ દિવસ રાત મુઘી (અહાસુત્તં) સૂત્રોક્ત વિધિ મુજબ (જાવ આણાપ આરાહેત્તા) તેમજ તેને આરાધવાની ભગવાનની જેવી આજ્ઞા છે, તે મુજબ આરાધીને

(જેગેવ થેરે મગવંતે તેગેવ ઉવાગચ્છન્તિ ઉવાગચ્છિત્તા થેરે મગવંતે વંદન્તિ નમંસન્તિ, વંદિત્તા, નમંસિત્તા એવં વયાસી)

જ્યાં સ્થવિર ભગવાન હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે ભગવંત સ્થ-વિરોની વંદના કરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યા. વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ એ વિનંતી કરતાં આ પ્રમાણે કહ્યું.

કર્મ કર્તુ પ્રવૃત્તાઃ, 'તદેવ' તથૈવ=મહાસિંહનિષ્ક્રીડિતમપિ તદ્વદેવ ભવતિ-જહા  
 ખુડ્ઘાગં' યથા ક્ષુલ્લકં=લઘુસિંહનિષ્ક્રીડિતં, નવરં વિશેષસ્તુ 'ચોત્તીસઙ્માઓ  
 નિયત્તપ' ચતુર્લિંગશતમાદ્ નિર્વર્તતે-અયમર્થઃ-ચતુર્થમક્તમેકોપવાસરૂપમાદિતઃ  
 કૃત્વાનુલોમગત્યા પૂર્વોક્ત-ક્ષુલ્લકસિંહ નિષ્ક્રીડિતતપઃ કર્મવત્ ષોડશોપવાસરૂપ-  
 ચતુર્લિંગશતમપર્યન્તં કરોતિ પુનસ્તસ્માન્નિર્વર્તતે=પ્રત્યાવર્તતે, તદ્ યદા-ચતુર્લિંગશતમ-

તદેવ જહા ખુડ્ઘાગં નવરં ચોત્તીસઙ્માઓ નિયત્તપ ઇગાં પરિવાહિણ  
 કાલો ઇગેણં સંવચ્છરેણં છર્હિ માસેર્હિં અદ્વારસહિય અહોરત્તેર્હિં ય  
 સમપ્પેહ) હે ભદંત ! હમ લોગ મહાન્ સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપઃ કર્મ  
 કરના આહતે હિં. હસકે બાદ વે સ્થવિર ભગવાન્ની આજ્ઞા સે મહાબલ  
 પ્રમુખ સાતો હી અનગાર બ્રહ્મ સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મ કરને મેં  
 પ્રવૃત્ત હો ગયે.

યહ મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપ ઓ ક્ષુલ્લકસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કી  
 હી તરહ હોતા હૈ-પરન્તુ હસમેં હતની વિશેષતા રહતી હૈ કિ હસ તપ  
 કો કરને વાલા સંયમી એક ઉપવાસ રૂપ ચતુર્થ ભક્ત કો સર્વ પ્રથમ  
 કરતા હૈ ફિરવહ અનુલોમ ગતિ સે પૂર્વોક્ત ક્ષુલ્લકસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ  
 કર્મ કો આરાધિત કરને કે ક્રમ કી તરહ સોલહ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્લિ  
 શાસમ પર્યન્ત હસ તપ કો કરતાં હૈ.

બાદ મેં વહાં સે લૌટના હૈ-લૌટને કા ક્રમ હસ પ્રકાર હૈ-જબ યહ

( ઇચ્છામો ણં મંતે ! મહાલયં સીંહનિષ્ક્રીડિતયં તદેવ જહા ખુડ્ઘાગં નવરં  
 ચોત્તીસઙ્માઓ નિયત્તપ ઇગાં પરિવાહિણ કાલો ઇગેણં સંવચ્છરેણં છર્હિ માસેર્હિં  
 અદ્વારસહિય અહોરત્તેર્હિં ય સમપ્પેહ )

હે ભદંત ! અમે મહાન સિંહનિષ્ક્રીડિત તપઃ કર્મ કરવા ઇચ્છી  
 ઓ છીએ. ત્યાર બાદ સ્થવિર ભગવાન્ની આજ્ઞાથી મહાબલપ્રમુખ સાતે અન-  
 ગારો મહાન સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપ કર્મમાં પ્રવૃત્ત થઈ ગયા.

મહાસિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની વિધિ પણ ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રીડિત તપની  
 વિધિની જેમજ હોય છે. પણ તેના કરતાં તેમાં એટલી વિશેષતા હોય છે  
 કે આ તપને આચરનાર સંયમી એક ઉપવાસ રૂપ ચતુર્થ ભક્તને સૌ પહેલાં  
 આચરે છે ત્યાર બાદ તે અનુલોમ ગતિથી પૂર્વે પણ પેલા ક્ષુલ્લક સિંહ નિષ્ક્રી-  
 ડિત તપઃ કર્મના આરાધન કેમની જેમજ સોળ ઉપવાસ રૂપ ચતુર્લિંગશતમ  
 સુધી આ તપને કરે છે.

કરણાનન્તરં પ્રતિલોમગત્યા પ્રત્યાવૃત્તિકાલે મધ્યે પચ્ચદશોપવાસરૂપં દ્વાત્રિશં ભક્તં કૃત્વા પુનઃ પોઢશોપવાસરૂપં ચતુર્વિંશત્તમં કરોતિ, તતશ્ચતુર્દશોપવાસરૂપં ત્રિંશત્તમં કૃત્વા દ્વાત્રિશં કરોતિ एवं પૂર્વોક્તક્રમેણ તતશ્ચતુર્થભક્તપર્યન્તં કરોતિ । इदं महासिंहनिष्क्रीडितस्य तपसः प्रथमपरिपाटी यन्त्रत-

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |   |   |   |   |    |   |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|----|---|
| ૧  | ૨  | ૧  | ૩  | ૨  | ૪  | ૩  | ૫  | ૪  | ૬  | ૫  | ૭  | ૬ | ૮ | ૭ | ૯ | ૧૦ | ૯ |
| ૧  | ૨  | ૧  | ૩  | ૨  | ૪  | ૩  | ૫  | ૪  | ૬  | ૫  | ૭  | ૬ | ૮ | ૭ | ૯ | ૧૦ | ૯ |
| ૧૧ | ૧૦ | ૧૨ | ૧૧ | ૧૩ | ૧૨ | ૧૪ | ૧૩ | ૧૫ | ૧૪ | ૧૬ |    |   |   |   |   |    |   |
| ૧૧ | ૧૦ | ૧૨ | ૧૧ | ૧૩ | ૧૨ | ૧૪ | ૧૩ | ૧૫ | ૧૪ | ૧૬ | ૧૫ |   |   |   |   |    |   |

इमेऽङ्का उपवासनां निवेशिताः । एवमेव द्वितीयतृतीय चतुर्थपरिपाटीनां प्रत्येकं यन्त्रं बोध्यम् ।

इह महासिंह निष्क्रीडिते तपस्येकस्यां परिपाट्यामनुलोमप्रतिलोमतश्च<sup>१</sup>तुर्थ-  
षष्ठाष्टमादि त्रिंशत्तमपर्यन्तानि चत्वारि चत्वारि 'द्वात्रिंशानि त્રોणि, ' द्वे चतु  
स्त्रिंशत्तमे ' भवन्ति ।

સોલહ ઉપવાસ કર ચુકતા હૈ-તથ પ્રતિલોમ ગતિ સે પ્રત્યાવૃત્તિ કાલ મે બીચ મેં યહ ૧૫ ઉપવાસરૂપ દ્વાત્રિંશત્ ભક્ત કરતા હૈ-પુનઃ સોલહ ઉપવાસરૂપ ચતુર્વિંશત્તમ ભક્ત કરતા હૈ । ફિર ચતુર્દશ ઉપવાસ રૂપ તીસ ભક્ત કરતા હૈ-इन्हें कर के फिर १५ उपवास करता है । इस प्रकार पूर्वोक्त क्रम से यह चतुर्थभक्त पर्यन्त तपस्या करता है । इस महासिंह निष्क्रीडित तप का प्रथम परिपाटीयंत्र उपर संस्कृत टीका में दिया है । इस प्रकार समझ लें ।

યંત્ર મેં જો અંક દિયે હૈવે અંક ઉપવાસોં કે હૈ । इसी तरह द्वितीय  
तृतीय और चतुर्थ परिपाटीयों के प्रत्येक के अंक जानना चाहिये । इस  
महासिंह निष्क्रीडित तप में एक परिपाटी में अनुलोम प्रतिलोम की

ત્યાર બાદ તે ત્યાંથી પાછો ફરે છે. પાછા ફરવાનો ક્રમ આ પ્રમાણે છે. જ્યારે તે સોળ ઉપવાસો કરી લે છે ત્યારે પ્રતિલોમ ગતિથી પ્રત્યાવૃત્તિ કાળમાં વચ્ચે પંદર ઉપવાસ ૩૫ દ્વાત્રિંશત ભક્ત કરે છે. ફરીતે સોળ ઉપવાસ ૩૫ ચતુર્વિંશત્તમ ભક્ત કરે છે. જ્યાર બાદ ચતુર્દશ ઉપવાસ ૩૫ ત્રીશ ભક્ત કરે છે. અને ત્યાર પછી પંદર ઉપવાસ કરે છે. આ રીતે પૂર્વોક્ત ક્રમથી તે ચતુર્થ ભક્ત પર્યન્ત તપસ્યા કરે છે. મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપનું પ્રથમ પરિ-  
પાટી યંત્ર ઉપર સંસ્કૃત ટીકામાં બતાવ્યા પ્રમાણે સમજ લેવું.

આ અંકો ઉપવાસો ના છે. આ પ્રમાણે જ દરેક બીજી, ત્રીજી અને ચોથી પરિપાટીઓના અંકો બાજુવા બોધજો. મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપમાં ચોક પરિપાટિમાં અનુલોમ પ્રતિલોમની અપેક્ષા ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ, વગેરેથી



इह प्रत्येकपरिपाटया अनुलोमप्रतिलोमतः सर्वानि तपोदिनानि संकलनया ४९७सप्तनवत्यधिकानि चत्वारिंशतानि, तथा-पारणदिनानि-६१ एकाधिक पण्डित-  
ख्यकानि भवन्ति, एषामुभयेषामाकलनेन यावान् कालो भवति, तं प्रदर्शयितु-  
माह 'एगाए परिवाडीए' इत्यादि। एकस्याः परिपाटयाः कालः-एकेन संवत्सरेण  
षड्भिर्मासैरष्टादशभिश्चाहोरात्रैः 'समप्पेइ' समाप्यते संपूर्णो भवति। 'सव्वंवि'  
सर्वमपि अशेषमपि चतसृभिः परिपाटीभिर्युक्तमित्यर्थः, 'सीहनिक्कीलियं' सिंह  
निष्कीडितं तपः- षड्भिर्वर्षैर्द्वाभ्यां च मासाभ्यां द्वादशभिश्चाहोरात्रैः पारण-  
दिनैः 'समप्पेइ' समाप्यते= संपूर्णं भवति-यथामूत्रं यावदाराधितं भवतीत्यर्थः

अपेक्षा चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, आदि से लेकर त्रिंशत्तम-१४ उपवासो-तक  
सब उपवास चार चार हो जाते हैं। अर्थात् प्रथम भक्त ४, चतुर्थ  
भक्त ४ षष्ठ भक्त ४ अष्टम भक्त ४, इत्यादि १४ उपवासों तक जानना  
चाहिये। १५ उपवास ३, और १६ उपवास २ हो जाते हैं।

यहां प्रत्येक परिपाटी में अनुलोम प्रतिलोम विधि के अनुसार  
समस्त तपस्या के दिनों की संख्या मिलाकर ४९७ होती है। पारणा के  
दिनों की संख्या ६१। इन दोनों के संकलन से जितना समय होता  
है-सूत्रकार उसे " एगाए परिवाडी ए " इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते  
हैं-वे कहते हैं कि एक परिपाटी का काल एक वर्ष ६ मास और १८ रात  
दिनों में समाप्त होता है। (सव्वं वि सीहनिक्कीलियं छहिं वासेहिं दोहिं  
मासेहिं बारसहिय अहोरत्ते हिं य समप्पेइ) और समस्त यह सिंह नि-  
ष्कीडित तप छह वर्ष दो मास एवं १२ दिन रात में समाप्त होता है।

માંડીને ત્રિંશત્તમ-૧૪ ઉપવાસો-સુધી બધા ઉપવાસો ચારચાર હોય છે એટલે  
કે પ્રથમ ભક્ત ૪ ચતુર્થ ભક્ત ૪, ૫ઠ્ઠ ભક્ત ૪, અષ્ટમ ભક્ત ૪, વગેરે  
૧૪ ઉપવાસો સુધી બાણુવું બેઠબે. ૧૫ ઉપવાસ ૩ અને ૧૬ ઉપવાસ ૨  
થઈ બાય છે.

આ પ્રમાણે અહીં દરેકે દરેક પરિપાટિમાં અનુલોમ પ્રતિલોમ વિધિ  
સુજળ તપસ્યાના બધા દિવસોની ગણતરી કરીએ તો ૪૯૭ થાય છે. પારણાના  
દિવસોની સંખ્યા ૬૧ હોય છે આ બંનેના સરવાળાના બેટલા દિવસો થાય  
છે. સૂત્રકાર 'એગાએ પરિવાડીએ' વગેરે પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે. સૂત્રકાર  
કહે છે કે એક પરિપાટીનો કાળ એક વર્ષ છ માસ અને અઠાર દિવસોમાં  
પૂરો થાય છે. (સવ્વં વિ સીહનિક્કીલિયં છહિં વાસેહિં દોહિં માસેહિં વારસહિય  
અહોરત્તેહિંય સમપ્પેઈ અને આ સિંહ નિષ્કીયડિત તપને સંપૂર્ણ પછે પૂરું થવામાં  
છ વર્ષ બે માસ અને આર દિવસ રાત બેટલા વખત લાગે છે,

ततस्तदनन्तरं खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगाराः 'महालयं' महत्, सिंह निष्क्रीडितं यथासूत्रं-सूत्रानतिक्रमेण यावद् आश्रया आराध्य यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नत्वा बहूनि बहुविधानि चतुर्थे. यावद् चतुर्थपञ्चाष्टमादीनि तपांसि कुर्वन्तो विहरन्ति. ॥ सू० ७ ॥

मूलम्-तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं दुरुहंति, दुरुहित्ता जाव दोमासियाए संलेहणाए सवीसं भत्तसयं चउरासीइं वाससयसहस्साइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता चुलसीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववन्ना । तत्थ णं अत्थेग-इयाणं देवाणं वत्तिसं सागरोवमाइं ठिईं तत्थणं महब्बल-

( तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सिंह निष्क्रीडितं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छन्ति ) इस प्रकार वे महाबल प्रमुख सातों ही अनगार इस महासिंह निष्क्रीडित तप को यथा सूत्र यावत् आराधित करके जहां स्थविर भगवन्त थे वहां आये । ( उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदन्ति नमंसन्ति, वंदित्ता नमंसित्ता, बहूणि चउत्थ जाव विहरन्ति ) वहां आकर उन्होंने ने स्थविर भगवन्तो को वंदना की नमस्कार किया-और वंदना नमस्कार करके फिर वे चतुर्थ षष्ठ अष्टमादि तपों को करते हुए विहार करने लगे ॥सू०७॥

( तएणं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सिंहनिष्क्रीडितं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छन्ति )

आ दीते यथासूत्रं अने यावत् यथाविधि महासिंहनिष्क्रीडित तपने आराधीने महाबल प्रमुख साते अनगारो अथां स्थविर भगवन्तं इत्ता त्यां आब्बा.

( उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदन्ति नमंसन्ति, वंदित्ता नमंसित्ता, बहूणि चउत्थ जाव विहरन्ति )

त्यां जधने तेमण्णे स्थविर भगवन्तो ने वंदनं अने नमस्कारं कथां, अने वंदनं तेमज्जं नमस्कारं करीने तेज्जो त्यार भाइ चतुर्थं षष्ठं अष्टमं वजेरे तपोने आरधतां विहारं करवा दाब्ब. ॥ सूत्र " ७ " ॥

वज्राणां छण्हं देवाणां देसूणाइं वच्चीसं सागरोवमाइं ठिई मह-  
व्वलस्स देवस्स पडिपुन्नाइं वच्चीसं सागरोवमाइं ठिई ॥सू०८॥

टीका—‘तएणं ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते महाबलप्रमुखाः सप्तानगारास्तेनोदारेण इहलोकाधाशंसारहितत्वेन प्रधानेन तपः कर्मणा ‘सुक्का’ शुष्काः शुष्कशरीराः रक्तमांसशोषणात् ‘भुक्खा’ बुभुक्षिताः बहुतपस्वित्यात् । ‘जहाखंदओ’ यथा स्कन्दकः स्कन्दकनामकोऽनगारः भगवतीसूत्रे द्वितीयशतके प्रथमोद्देशके वर्णितस्तथा संज्ञाता इत्यर्थः, नवरं—एतावान् विशेषः—‘थेरे’ स्थविरान् स्कन्दको महावीरमापृष्टवान् एते तु स्थविरानित्यर्थः आपृच्छय ‘चारुपव्वयं’

‘तएणं ते महाव्वलपामोक्खा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते महाव्वल पामोक्खा) सत्त अणगारा) वे महाबल प्रमुख सातों ही अनगार (तेणं ओराळेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ) भगवती सूत्र के द्वितीय शतक के प्रथम उद्देशक में वर्णित स्कंदक मुनि की तरह उसे इहलोक परलोक आदि की आशंसा से रहित होने के कारण प्रधान तप से शुष्क शरीर एवं बुभुक्षित (भूख युक्त) हो गये । (नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं दुरुहंति) दुरुहिता जाव दो मासियाए संलेहणाए सबीसं भत्तसयं चउरासीइं वाससयसहस्साइं सामणपरियागं पाउणंति) किन्तु स्कंदक मुनि की अपेक्षा इन मानों अनगारों में यह विशेषता हुई कि स्कंदक मुनि ने महावीर प्रभु से आज्ञा ली और इन्होंने स्थविर भगवन्तों से आज्ञा ली

‘तएणं ते महाव्वल पामोक्खा सत्त अणगारा’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थाभाह (महाव्वलपामोक्खा सत्त अणगारा) भट्टाश्रम प्रभुभ आते अनगादे । (तेणं ओराळेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ) भगवती सूत्रना धीन शतनकन पडेवा छेइ शकभां वसित स्कंदक मुनिनी जेम तेजे छुद्धेइक अने परदेइक पगेदेनी अशंसा (धम्म) इडित डोवा यहइ प्रधान तपथी शुष्क शरीर अने बुभुक्षित (भूभ्या) यध गया ।

(नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारु पव्वयं दुरुहंति, दुरुहिता जाव दो मासियाए संलेहणाए सबीसं भत्तसयं च उरासीइं वाससय सहस्साइं सामणपरियागं पाउणंति)

स्कंदक मुनिजे न्यादे भगवान भट्टावीर पाजे आज्ञा भेजथी छती त्यादे जे आते अनगादेजे भगवत स्थविरे । पासेथी आज्ञा भेजथी स्कंदमुनी कतां जेमना जिंसे आठहुं ज वधादे नल्लुवुं लेधजे आ प्रभाजे आते अनगादे

चारुपर्वतं चारुनामकं पर्वतं 'दुरुहंति' दूरोहन्ति=आरोहन्ति, 'दुरुहिता' दूरह्य  
=आरुह्य यावद् पृथिवीशिलापट्टकं प्रमार्ज्य पादपोषगमनं स्वीकृत्य द्विमासिकयासं-  
लेखनया सर्वशक्तिकं भक्तशतं 'चउरासीहं वाससयसहस्साहं' चतुरशीतिं वर्षशतसह-  
स्राणि=चतुरशीतिलक्षवर्षाणि, आमण्यपर्यायं=चारित्रपर्यायं पालयन्ति, पालयित्वा  
चतुरशीतिं पूर्वशतसहस्राणि=चतुरशीतिलक्षपूर्वाणि सर्वायुः पालयित्वा जयन्ते  
विमाने देवतयोपपन्नाः=देवत्वनेपोपातमुत्पत्तिं प्राप्ताः ।

तत्र खलु अस्त्येककानां देवानां द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि यावत् स्थितिः । तत्र  
खलु महाबलवर्जानां षण्णां देवानां देशोनानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः ।  
महाबलस्य देवस्य प्रतिपूर्णानि द्वात्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिर्जाता ॥ सू० ८ ॥

इस तरह ये सानों ही अनंगार भगवंत स्थविरो से आज्ञा लेकर चारु  
नाम के पर्वत पर पहुँचे-वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने वहाँ के शिलापट्टक  
की प्रमार्जना की-बाद में पादपोषगमन संधारा धारण कर लिया । दो  
मास की संलेखना से १२० भक्तों का छेदन कर उन्होंने ने ८४ लाख वर्ष  
तक आमण्य पर्याय का पालक किया ।

इस तरह अपनी ८४ लाख पूर्व की समस्त आयु समाप्त कर अन्त  
में देह का परित्याग कर वे पांच अनुत्तर विमान के अन्दर जयन्त  
विमान में ( तत्थणं अत्ये गइयाणं देवाणं वत्तीसं सागरोवमाहं ठिई  
तत्थणं महब्बलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाहं वत्तीसं सागरोवमा-  
हं ठिई महब्बलस्स देवस्स पड्डिपुन्नाहं वत्तीसं सागरोवमाहं ठिई ) वहाँ  
कितने क देवों की वत्तीस सागर प्रमाण स्थिति है सो महाबल को  
छोड़कर छह देवों की स्थिति कुछ कम वत्तीस सागर की हुई और  
महाबल की स्थिति पूर्ण वत्तीस सागर की हुई । " सूत्र ९ "

भगवंत स्थविरो नी आज्ञा प्राप्त करीने चारु नामे पर्वत उपर पहुँचिआ, त्यां  
पहुँचिने तेज्जाजे पादपोषगमन संधारे धारण कर्यो.

आ प्रमाजे पोताने ८४ लाख पूर्वजुं अपूर्ण आयुष्य पूरुं करीने  
अन्ते देह छोडीने तेज्जा पांच अनुत्तर विमानमां जयन्त नामना विमाकमां  
देवना पर्यायथी जन्म पाग्या.

( तत्थणं अत्येगइयाणं देवाणं वत्तीसं सागरोवमाहं ठिई-तत्थणं महब्बल  
वज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाहं वत्तीसं सागरोवमाहं ठिई )

त्यांना केटलाक देवेनी जत्रीश सागर प्रमाजे स्थिति छे. महाभलने  
पाद करतां जीआ छ देवेनी स्थिति जत्रीश सागर प्रमाजेमां बोडी ज्जाछी  
थइ अने महाभलनी स्थिति पूरी जत्रीश सागर जेटवी थइ ॥ सूत्र " ८ "

मूलम्—तएणं ते महब्बलवज्जा छप्पिय देवा ताओ देव-  
लोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतं चयं  
चइत्ता इहेव जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु राय-  
कुलेसु पत्तेयं पत्तेयं कुमारत्ताए पन्नायायासी, तं जहा पडिबुद्धी  
इक्खागराया, चंदच्छाए अंगराया, संखे कासिराया, रुप्पी कुणा-  
लाहीवई, अंदीणसत्तुकुराया, जितसत्तु पंचालाहिवई॥ सू०९ ॥

टीका—‘तएणं ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं ते महाबलवज्ज्याः षडपि देवास्त-  
स्माद् देवल्लोकाद् जयन्ताद् विमानाद् । ‘आउक्खएणं’ आयुः क्षयेण—देवसम्बन्धिन  
आयुष्कर्मदलिकनिर्जरणेन, देवसम्बन्ध्यायुः क्षयेण ‘भवक्खए’ भवक्षयेण भवनि-  
बन्धनभूतकर्मणां गत्यादीनां निर्जरणं ‘ठिइक्खएणं’ स्थितिक्षयेण=देवसम्बन्धि-  
स्थितिक्षयेण तैरानन्तरं चयं=देवशरीरं त्यक्त्वा इहेव जम्बूद्वीपे नाम्नि द्वीपे

‘तएणं ते महब्बलवज्जा छप्पियदेवा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तएणं ) इसके बाद ( ते महब्बल वज्जिया ) महाबल के  
सिवाय वे ( छप्पिय देवा ) छहों देव ( ताओ देवल्लोगाओ आउक्खएणं  
भवक्खएणं ठिइक्खएणं ) उस देवलोक से जयन्त विमान से—देवलोक  
संबन्धी आयु कर्म के दलिकों की निर्जना हो जाने से अर्थात् देव पर्याय  
संबन्धी आयु के क्षय हो जाने से भव के कारण भूत गत्यादि कों की  
निर्जना हो जाने से स्थिति के क्षय हो जाने से ( अणंतं ) उसी समय  
( चयं चइत्ता ) देव शरीर को छोड़कर ( इहेव जंबूद्वीवे दीवे भारहे  
वासे ) इसी जंबू द्वीप नाम के द्वीप में, भारतवर्ष में—भरत क्षेत्र में—

‘तएणं ते महब्बल वज्जा छप्पिय देवा’ इत्यादि

टीकार्थ—( तएणं ) त्यागना ( ते महब्बल वज्जिया ) महाबल के  
( छप्पियदेवा ) छ देव । ( ताओ देवल्लोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं )  
ते देवल्लोकना जयन्त विमानथी देवल्लोक संबन्धी आयु कर्मना दलिकानी  
निर्जरा थई जवाथी ओट्टे के देव पर्याय संबन्धी आयुध्य क्षय थावाथी लयना  
कारण भूत गति पगेरेनी निर्जरा थई जवाथी, स्थितिना क्षय छोवाथी  
( अणंतं ) ते समयेज्ज ( चयंचइत्ता ) देव शरीरने छोडीने ( इहेव जंबूद्वीवे दीवे  
भारहे वासे ) जंबूद्वीप नामना ओज द्वीपमां—भारत वर्षमां—भारत क्षेत्रमां

( मध्यजम्बुद्वीपे ) सारते वर्षे भरत-क्षेत्रे, विशुद्धपितृमातृवंशेषु राजकुलेषु प्रत्येकं २ कुमारतया ' पञ्चायाया' इत्या प्रत्युत्पन्ना अभूवन् तद्यथा-१. प्रतिबुद्धिः-इक्ष्वाकुराजः प्रथमो जीवः प्रतिबुद्धि नामकः कोशलदेशाधिपतिः । यत्रदेशे-अयोध्यानगरी २. चन्द्रच्छायः-अङ्गराजः द्वितीयो-धरणि जीवः चन्द्रच्छायना-माङ्गल देशाधिपतिः यत्र चम्पानगरी ३. शङ्ख काशिराजः, तृतीयोऽभिचन्द्रजीवः शङ्खनामा-काश्लिदेशाधिपतिः यत्र वाराणसी नगरी । ४. रुक्मी-कुणालाधिपतिः चतुर्थः पूरण जीवः-रुक्मीनामकः कुणालदेशाधिपतिः यत्र श्रावस्ती नगरी । ५. अदीनशत्रुः-कुरुराजः, पञ्चमो वसु जीवोऽदीनशत्रुनामकः कुरुदेशाधिपतिः । यत्र-

( विशुद्धपिहमाहवंसेषु ) विशुद्ध माता पिता के वंश वाले राज कुलों में ( पत्तयं २ ) पृथक् २ ( कुमारत्ताए पञ्चायायासी ) पुत्र रूप से उत्पन्न हुए । ( तंजहा ) इनमें ( पंडिबुद्धी इक्ष्वागराया चंदच्छाए अंगराया संखे कासिराया, रुपी कुणालाहिवर, अदीणसत्तू कुरु राया, जितपत्तू पंचालाहिवई ) प्रथम जो अचल का जीव था वह कोशल देश का अधिपति हुआ, जिस में अयोध्या नगरी है-इसका नाम वहां प्रतिबुद्ध हुआ । दूसरा जिसका नाम धरण था वह चन्द्र छाया नाम का अङ्ग देश का अधिपति हुआ । इस अंग देश में रूपी नगरी है । तीसरा जो अभिचन्द्र का जीव था वह काशी देश का राजा हुआ । वहां इसका नाम शङ्ख हुआ । इस काशी देश में बनारस नाम की नगरी है । चौथा जो पूरण का जीव था वह कुणाल देश का अधिपति हुआ उसका वहां नाम रुक्मी था । इस कुणाल देश में श्रावस्ती नगरी है । पांचवां जो

“विशुद्धपिहमाहवंसेषु” विशुद्ध मातापिताना वंशवाणा राजकुलोमां (पत्तयं २) शुद्धा शुद्धा (कुमारत्ताए पञ्चायायासी) पुत्र रूपे जन्म पाभ्या. (तंजहा) आ अधिमां.

( पंडिबुद्धी इक्ष्वागराया चंदच्छाए अंगराया संखे कासिराया रुपी कुणालाहिवर अदीणसत्तू कुरुराया, जितसत्तू पंचालाहिवई )

पंडेवो अचलनो एव कोशल देशनो अधिपति थयो कोशल देशनु पाटनगर अयोध्या नगरी छत्तुं. अचलनो एव त्यां प्रतिबुद्ध नामे पंकाथो.

भीलो धरणि अंग देशनो अधिपति थयो तेनुं नाम चंद्रच्छाय छत्तुं. भील अभिचंद्रनो एव काशी देशनो राज थयो. ते त्यां शङ्ख नामे प्रसिद्धि पाभ्यो. आ काशी देशमां बनारसनामे नगरी छे. योथा पूरणनो एव कुणाल देशनो अधिपति थयो. त्यां तेनुं नाम रुक्मी छत्तुं. आ कुणालदेशमां

દેશે-હસ્તિનાગપુરમ્ । ૬. જિનશત્રુ પાશ્ચાલાધિપતિઃ, પશ્ચો વૈશ્રવણ જીવો જિત-  
શત્રુનામકઃ પાશ્ચાલદેશાધિપતિઃ, યત્રદેશે કામ્પિલ્યં નગરમ્ । एवं पदपि पृथक्  
૨ સ્થાનેષુ રાજાનો બાતાઃ ॥ સૂ. ૯ ॥

મૂલમ્-તર્ણાં સે મહબ્બલે દેવે તીર્હિ ણાણેહિં સમગ્ગે ઉચ્ચ-  
ઢાણદ્વિણ્ણસુ ગહેસુ સોમાસુ દિસાસુ વિતિમિરાસુ વિસુદ્ધાસુ  
જહ્ણસુ સઝણેસુ પયાહિણાણુકૂલંસિ ભૂમિસર્પિણિ સારુયંસિ  
પવાયંસિ નિપ્પક્કસસ્સમેઢ્ઢીયંસિ કાલંસિ પમુદ્ધપક્કીલિણ્ણસુ  
જળવણ્ણસુ અદ્ધરત્તકાલસમયંસિ અસ્સિણીજલ્લસેણં જોગમુવા-  
ગણં જે સે હેમંતાણં ચઊત્થે માસે અઢ્ઢમે પક્કલે ફગ્ગુણસુદ્ધે  
તસ્સ ણં ફગ્ગુણસુદ્ધસ્સચઊત્થિ પક્કલેણં જયંતાઓ વિમાણાઓ  
વત્તીસં સાગરોવમદ્વિઢ્ઢયાઓ અણંતરં વયં ચહ્ણતા ઇહેવ જંબુદ્વીવે  
દીવે ભારહે વાસે મિહિલાણ રાથહાણીણ કુંભગસ્સ રત્તો પમા-  
વર્ણેણ દેવીણ કુચ્છિંસિં આહારવક્કંતીણ સરીરવક્કંતીણ ભવવક્કં  
તીણ ગબ્ભત્તાણ વક્કંતે તંરયણિં ચ ણં ચોદસમહાસુમિણાવન્નઓ  
મત્તારકહ્ણં સુમિણપાઢગપુચ્છા જાવ વિહરહ્ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

વસુ કા જીવ થા વહ કુરુ દેશ કા અધિપતિ હુઆ-વહાં હસકા નામ  
અદીન શત્રુ થા । કુરુ દેશ મેં હસ્તિનાગ પુર હૈ । તથા હઠા જો વૈશ્રવણ  
કા જીવ થા પાશ્ચાલ દેશ કા અધિપતિ હુઆ-હસકા વહાં નામ જિત  
શત્રુ પદા થા । હસ મેં કપિલા નામ કો નગરી હૈ ।

હસ તરહ યે હહોં પૃથક્ ૨ સ્થાનોં મેં રાજા હુપ । સૂત્ર “ ૯ ”

શ્રાવસ્તી નગરી છે. પાંચમે વસુને જીવ કુરુદેશનો અધિપતિ થયો. તેનું નામ  
અદીન શત્રુ હતું. કુરુ દેશમાં હસ્તિનાપુર નગર છે. તેમજ છઠો વૈશ્રવણનો  
જીવ પાંચાલ દેશનો અધિપતિ થયો. તેનું નામ જિત શત્રુ હતું. પાંચલ દેશમાં  
કપિલા નામે નગરી છે.

આ પ્રમાણે તેઓ છઠો જુદા જુદા દેશોમાં રાજ્ય પદે સુશોભિત  
થયા ॥ સૂત્ર “ ૯ ” ॥

टीका—‘तपणं से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं स महाबलो देवस्त्रिभिर्ज्ञानैः ‘समग्ने’ समग्रः संयुक्तः, ‘उच्चवृष्टाणद्विष्टसु’ उच्चस्थान स्थितेषु ग्रहेषु सूर्यादिषु सौम्यासु दिग्दाहाद्युत्पातरहितासु ‘दिसासु’=दिक्षु विविधमिरासु तीर्थंकर गर्भावासप्रभावाद् व्यपगतान्धकारासु विशुद्धासु=संज्ञावातरजः कणादि रहितत्वेन निर्मलासु ‘जइएसु’ जापिकेषु राजदीनां विजयसूचकेषु ‘सउणेसु’ शकुनेषु काकरुतादिषु ‘पर्याहणाणुकूलंसि’ प्रदक्षिणानुकूले प्रदक्षिणावर्तत्वात् प्रदक्षिणः, शुभावहः सुरमिशीतमन्दत्वादनुकूलश्च तस्मिन् ‘भूमिसर्पिसि’ भूमिसर्पिणी=भूमौ प्रसरणशीले मारुते बायौ, ‘पवार्यंसि’ प्रवाते वातुं प्रवृत्ते, ‘निष्फन्नसस्समेइणीयंसि’ निष्पन्नसस्यमेदिनीके निष्पन्नसस्या मेदिनी भूमिर्यस्मिन् तथाभूते काले ‘पमुइयपक्कीलएसु’ प्रमुदितप्रक्रीडितेषु जनपदेषु अर्धरात्रकालसमये अग्निनीलक्षत्रेण ‘जोगं’ योगं चन्द्रयोगम्, उपागतेन प्राप्तेन, यःसः=प्रसिद्धः ‘हे मंताणं’ हेमन्तानां मार्गशीर्षादि फाल्गुनान्तानां शीतकालमासानां मध्ये चतुर्थी मासः, अष्टमः पक्षः कृष्णादि मासस्य शाल्लसंघमत्वाद्दृष्टमत्वं पक्षस्येति भावः फाल्गुनशुद्धः=फाल्गुनस्य शुद्धः शुक्लः द्वितीयपक्षोऽस्तीत्यर्थः । तस्य फाल्गुनशुद्धस्य ‘चउत्थिपक्खे’ चउर्थीपक्षे फाल्गुनशुद्धस्य पक्षस्य या चतुर्थी तिथिस्तस्याः पक्षः पार्श्वोर्ध्वरात्रिरिति भावः, तत्र—‘णं’ इतिवाक्यालङ्कारे, जयन्ताद् विमानाद् द्वात्रिंशत्सागरोपमस्थितिकादनन्तरं चयं=देवसम्बन्धिधारीरं त्यक्त्वा—इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां

‘तपणं से महब्बले’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तपणं) इसके बाद (से महब्बले देवे) वह महाबल वा जीव देव (तीर्हि णाणेहि समग्ने) मति ज्ञान श्रुतज्ञान और अवधि ज्ञान इन तीन ज्ञानों का धारी हो कर (अणंतरं) उन छहों के बाद अपनी स्थिति पूर्ण कर (जयंताओ विमाणाओ) उस जयंत विमान से (चइत्ता) चल कर (इहेव जंबूद्वीवे द्वीवे) इसी जंबू द्वीप नाम के द्वीप में (भार

‘तपणं से महब्बले’ इत्यादि

टीकार्थ—(तपणं) त्पारभाह “से महब्बले देवे” देव महाबलने ७५ “तीर्हि णाणेहि समग्ने” मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान आ त्रये शानेने धारण करनार अधिने “अणंतरं” ते छब्बेना पछी पोतानी स्थिति पूरी करीने “जयंताओ विमाणाओ” जयंत विमानशी “चइत्ता” आलीने “इहेव जंबूद्वीवे द्वीवे” जंबू द्वीप नामना आज द्वीपमां (भारह बासे)



‘कुम्भगस्त’ कुम्भकस्य कुम्भकनामकस्य राज्ञः प्रभावत्याः=प्रभावतीनाम्न्या देव्यः ‘कुच्छिसि’ कुक्षौ ‘आहारवक्कंतीए’ आहारव्युत्क्रान्त्या=आहारपरिवर्तनेन मनुष्योचिताहारग्रहणेनेत्यर्थः, ‘सरीरवक्कंतीए’ शरीरव्युत्क्रान्त्या=देवशरीरपरिवर्तनपूर्वकमनुष्यशरीरग्रहणेनेत्यर्थः ‘भववक्कंतीए’ भवव्युत्क्रान्त्या=देवभवं विहाय मनुष्यभवग्रहणेन ‘गम्भत्ताए वक्कंते’ गर्भतया व्युत्क्रान्तः=गर्भरूपेण समुत्पन्नः । तस्यां रजन्यां च खलु चतुर्दश महास्वप्नाः प्रभावती देव्या दृष्टः।

हे वासे ) भरत क्षेत्र में ( मिहिलाए रायहाणीए ) मिथिला राजधानी में ( कुम्भगस्त रन्नो पभावइए देवीए कुच्छिसि ) कुम्भक राजाकी प्रभावती देवी की कुक्षि में ( आहार वक्कंतीए ) आहार के परिवर्तन से—मनुष्योचित आहार के ग्रहण से, ( सरीरवक्कंतीए ) शरीर की व्युत्क्रान्ति से देव शरीर के परिवर्तन पूर्वक मनुष्य शरीर के ग्रहण से, ( भव वक्कंतीए ) भव की व्युत्क्रान्ति से देव भव को छोड़कर मनुष्य भव के ग्रहण से ( गम्भत्ताए वक्कंते ) गर्भरूप से उत्पन्न हुए ।

जब यह प्रभावती की कुक्षी में गर्भ रूप से उत्पन्न हुए तब ( गहेसु उच्चट्टाणट्टिएसु ) सूर्यादिग्रह उच्चस्थान पर स्थित थे । ( दिसासु सोमासु ) चारों दिशाएँ दिग्दाह आदि उपद्रवों से रहित थी ( वितिमिरासु विसुदासु ) तीर्थंकर के गर्भावास के प्रभाव से वे अन्धकार रहित बन गई थीं एवं झंझावात रजकण आदि से रहित हो कर निर्मल हो गई थीं ।

भरत क्षेत्रमा “मिहिलाए रायहाणीए” मिथिला राजधानीमां कुम्भगस्तरन्नो पभावइए देवीए कुच्छिसि ” कुलक राजनी प्रभावती देवीना उदरमां “आहार वक्कंतीए ” आहाराना परिवर्तनथी मानवोचित आहारना अड्डथी “ सरीर वक्कंतीए ” शरीरनी व्युत्क्रान्तिथी ओटसे के देव शरीरना परिवर्तन तेमए मनुष्य शरीरना अड्डथी “ भववक्कंतीए ” लवनी व्युत्क्रान्तिथी देव लवने त्यष्टने मनुष्य लवने अड्डथु करवानी आपेक्षाथी “ गम्भत्ताए वक्कंते ” गर्भ रूपे जन्म पाव्या.

ज्यादे तेजो प्रभावतीना उदरमा गर्भरूपे अवतथो तयारे “ गहेसु उच्चट्टाण ट्टिएसु ” सूर्य वगेरे अडे उच्च स्थाने डता दिसासु सोमासु यारे दिशाओ दिग्दाह वगेरे उपद्रवो वगरनी डती. “ वितिमिरासु विसुदासु ” तीर्थंकर ना गर्भावासना प्रभावथी दिशाओ प्रकाश युक्त तेमए अंधानिव रणश्रु वगेरेथी रहित थधने स्वच्छ बनी गथ.

उस समय ( सवणे सु जइएसु ) काक आदि पक्षी, राजा आदि के विजय सूचक शब्द बोल रहे थे । ( मारुयंसि ) हवा भी ( पयाणु कूलंसि ) प्रदक्षिणावर्त हो कर ( पवायंसि ) वह रही थी । सुरभी और शीतल मन्द होने के कारण वह अनुकूल थी । ( भूमि सर्पिसि ) भूमि का स्पर्श वह कर रही थी । ( कालंसि ) वह समय ऐसा था कि जिसमें ( निष्पन्नसस्समेइणीयंसि ) निष्पन्न सस्य से मेदिनी आच्छादितहरी भरी बनी हुई थी ( जणवएसु ) जन पद भी ( पमुइयपक्कीलीएसु ) हर्ष से हर्षित बने हुए थे और विविध प्रकार की क्रीडाओ में रत थे- ( अद्धरत्तकालसमयंसि ) यह समय अर्द्ध रात्रि का था । ( अस्सिणी णक्खत्तेणं जोगमुवगएणं ) इस में अश्विनी नक्षत्र का चन्द्र के साथ योग हो रहा था ( जे से हेमंताणं चउत्थे मासे अट्टमे पक्खे फग्गुण सुद्धे ) यह अर्ध रात्रि का समय फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष का था । यह मास हेमंत काल के मासों में चौथा मास तथा ८ वां पक्ष है । ( तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थि पक्खे णं ) ऐसी उस फाल्गुन शुक्ल चौथ की अर्द्धरात्रि के समय में वे महाबल देव अपनी ३२ सागर की स्थिति पूर्ण करके उस जयंत नामक विमान से चव कर प्रभावती देवी

ते वण्ठे ( सवणेसु जइएसु ) कागडा वगेरे पक्षीओ राजा वगेरेना भाटे बिबल्लने सुयवनारा शण्डो उन्चारी रह्या छता. ( मारुयंसि ) पवन पक्षु ( पयाणुकूलंसि ) प्रदक्षिणावर्त थधने ( पवायंसी ) वातो छतो शीतल मन्द अने सुगंध युक्त पवन अनुकूल लागतो छतो. ' भूमिसर्पिसि ' ते पृथ्वीने स्पर्श करता वातो छतो छतो. ' कालंसि ' आवो सुण्ड समय छतो के जेभां ( निष्पन्नसस्समेइणीयंसि ) निष्पन्न धानथी भेडिनी ' पृथ्वी ' लीलाछम आवः रह्यु थी ठंकाछ रही छती. ' जणवएसु ' जनपद पक्षु ' पमुइय पक्कीलीएसु ' हर्षभां तरबोण थध रह्युं छतुं. अने जातजातनी क्रीडाओभां भरत छतुं ' अद्धरत्तकालसमयंसि ' अर्द्धी रातनो वण्ठत छतो. ' अस्सिणीणक्खत्तेणं ' जोगमुवगएणं ' अश्विनी नक्षत्रनो अन्द्रनी साथे योग थध रह्यो छतो. ' जे से हे मंताणं चउत्थे मासे अट्टमे पक्खे फग्गुणसुद्धे ' श्रागळु भडिना नो शुक्ल पक्ष आलतो छतो. आ भडिने हेमंत काणना भडिनाभां योथो भडिने तेभज आठयो पक्ष छे. ' तस्सणं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थि पक्खेणं ' ओवी श्रागळु शुक्ल योथना अर्द्धी रातना वण्ठते मंडाणल देव पोतानी जत्रीश सागरनी स्थिति पूरी करीने ते ज्यंत नामक विमानभांथी यवीने प्रभावती देवीना गर्भभां

वर्णकः= तेषां स्वप्नानां वर्णनं वाच्यं तच्चान्यत्र सविस्तरं द्रष्टव्यम् तेषां नामानि केवलं प्रोच्यन्ते—गज-वृषभ-सिंह-लक्ष्मी-पुष्पमाला-चन्द्र-सूर्य-ध्वज-पूर्णकलश-पद्मसर-समुद्र-देवविमान-रत्नराशिवह्नय इति । भर्तृकथनम् स्वप्नवृत्तं भवे निवेदयतीत्यर्थः । स्वप्नपाठकपृच्छा=स्वप्नफलवाचकान् समाहूय भर्ता कुम्भकन्धेन स्वप्नफलपृच्छा कृतेत्यर्थः । यावत्-स्वप्नपाठकैः स्वप्नफलं निवेदितं, तत्सर्वं प्रथमाध्ययने धारिणीदेव्या अधिकारे यथा कथितं तथैव वाच्यं विशेषस्तु-धारिण्या स्वप्ने गज एव दृष्टः, प्रभावत्वा तु चतुर्दश स्वप्ना इति । एवं च तैरुक्तम्—

के गर्भ में आये । ( तं रयणिं च णं चौदस महासुमिणा वज्रओ ) उस रात्रि में उस प्रभावतीदेवी ने १४ महास्वप्न देखे । इन महास्वप्नों का सविस्तर वर्णन अन्यत्र से जानना चाहिये हम यहाँ उन के नाम निर्देश करते हैं जो इस प्रकार चन्द्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकलश, पद्मसर, समुद्र देवविमान, रत्नराशि और अग्नि । इन स्वप्नों को देखकर प्रभावती ने अपने पति कुम्भक राजा से कहा राजा ने उसी समय स्वप्नपाठकों को बुलाया—और उनसे इन स्वप्नों के फल को पूछा ।

उन्होंने ने इन स्वप्नों का क्या फल है यह बात राजा को कही । यह सब विषय इसी के प्रथम अध्ययन में धारिणी देवी के अधिकार में जिस प्रकार से प्रकट किया गया है उसी प्रकार से यहाँ भी जानना चाहिये । धारिणी देवी ने स्वप्न में केवल एक हाथी ही देखा था । प्रभावती ने तो चौदह महास्वप्न देखे । अन्त में उन स्वप्न पाठकों ने कहा—राजन ! प्रभावती देवी ने जो ये चौदह सुन्दर स्वप्ने देखे हैं—उन

स्थित तथा ' तं रयणिं चणं चौदसमहासुमिणा वज्रओ ' ते रात्रिमां प्रभावती देवीको १४ स्वप्नो ज्ञेयां आ अथां महास्वप्नो विषेणुं सविस्तर वणुंन निशुसुओओ गीओथी न्णणी देवुं नोओओ, प्रभावती देवीको, चन्द्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकलश, पद्मसर, समुद्र, देवविमान रत्नराशि ओने अग्नि आटली वस्तुओओ स्वप्नमां नोओ हती, आ स्वप्नोने ज्ञेया आठ प्रभावतीको पोताना पति कुम्भक राजने स्वप्न विषे कहुं ओने तेमणे तरत न स्वप्नपाठकेने ज्ञाताओओ ओने तेमने आ स्वप्नोना इण विषे पूछथु

स्वप्न पाठकेओओ आ स्वप्नोनुं इण थुं थये तेनी अधी विगत राजने कही संलगावी. ज्ञाताध्ययन ना प्रथम अध्ययनमां धारिणिदेवीना असंगमां आ विषे सविस्तर वणुंओओ ओओ पणु ते मुणन न समणु देवुं नोओओ स्वप्नमां धारिणी देवीको इकत ओक हाथी न ज्ञेयो हतो पणु प्रभावतीको ते ओओ महा स्वप्नो ज्ञेयां हतां, स्वप्ननुं इण वणुंवतां स्वप्न पाठकेओओ कहुं

हे राजन् ! प्रभावती देव्या चतुर्दश शोभनाः स्वप्ना अवलोकिताः । तत्प्रभावान्त्वं  
ऋवर्ती वा तीर्थकरो वा भविष्यति । स्वप्नफलं श्रुत्वा सा प्रभावती गर्भं सुखसु-  
खेन वहमाना विहरति=आस्ते स्म ॥ सू० १० ॥

मूलम्—तएणं तीसे पभावर्इए देवीए तिण्हं मासाणं बहु-  
पडिपुन्नाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूए—धन्नाओ णं ताओ  
अस्मयाओ जाओ णं जलथलयभासुरण्यभूएणं दसद्धवन्नेणं  
मल्लेणं अत्थुयपच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निस्सन्नाओ सणिण-  
वन्नाओ य विहरंति, एगं च महं सिरिदामगंडं पाडलमल्लिय  
चंपय असोग पुन्नाग नाग मरुयगदमणगअणोज्जकोज्जयपउरं  
परमसुहफासदरिसणिज्जं महयागंधद्वणिं मुयंतं अग्घायमा-  
णीओ डोहलं विणेति ।

तएणं तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवं डोहलं पाउ-  
ब्भूयं पासित्ता अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जल-  
थलय० जाव दसद्धवन्नमल्लं कुंभगसो य भारगसो य कुंभग-  
स्स रन्नो भवणांसि साहरंति, एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव  
मुयंतं जाव उवणेति, तएणं सा पभावती देवीजलथलयजाव  
मल्लेणं जाव डोहलं विगेइ, तएणं सा पभावती देवी पसत्थ-

के प्रभाव से इस के या तो कोई तीर्थकर जन्म लेगा या कोई चक्रवर्ती ।  
इस प्रकार स्वप्नों का फल सुनकर प्रभावती बड़ी प्रसन्न हुई और उस  
ने आनंद के साथ गर्भ को धारण करते हुए सुखपूर्वक समय को  
व्यतीत किया । सूत्र “ १० ”

“ हे राजन् ! प्रभावती देवीके चौदह उत्तम स्वप्नों नेथां छे, तेना प्रभाव  
ती केभना उरथी कंति तीर्थकर जन्मवेशे कां कौध चक्रवर्ती । ” आ प्रभावे  
स्वप्न क्षण सांक्षणीने प्रभावती भूभज प्रसन्न थछ. अने सुप्रेथी गर्भ धरथ  
करी ने समय पसार करवा लागी ॥ सूत्र १० ॥

डोहला जाव विहरइ, तएणं सा पभावई देवी नवणहं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्टमाणं यरत्तिदियाणं जे से हेमंताणं पढमं मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सणं एक्कारसीए पुव्वरत्ता-वरत्त० अस्सिणी नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उच्चट्टाणाट्टिएसु गहेसु पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोगमारोगं एकूणवीसि-इमं तित्थयरं पयाया ॥ सू० ११ ॥

टीका—‘तएणं तीसे’ इत्यादि—ततस्तदनन्तरं खलु तस्याः प्रभावत्वा देव्या त्रिषु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु=अशेषतः सम्पूर्णेषु सत्सु अयमेतद्रूपः दोहदः गर्भसद्भावजनिताभिलाषः प्रादुर्भूतः—धन्याः खलु ता अम्वाः=पुत्रमातरः या खलु ‘जलथलयभासुरप्पभूएणं’ जलस्थलजभास्वरप्रभू—तेन जलेषु स्थलेषु च यज्जात भास्वरं=विकसितं, प्रभूतं प्रचुरं, तेन ‘दसद्धवन्नेणं’ दशार्धवर्णेन पञ्चवर्णयुक्तेन माल्येन माल्येभ्यो हितं माल्यं=पुष्पजातं, तेन ‘अत्थुयपच्चत्थुयंसि’ आसृत प्रत्यासृते क्रमशः उपर्युपरि समाच्छादिते शयनीये=शय्यायां ‘सन्निसन्नाओ’ सन्निषण्णाः=संनिविष्टाः ‘सण्णिवन्नाओ’ संनिषणाः सुप्ताश्च विहरन्ति सुखेन

‘तएणं तीसे पभावईए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इस के बाद (तीसे पभावईए देवीए) उस प्रभावती देवी के जब (तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं) तीन मास अच्छी तरह से पूर्ण हो चुके—तब (इमेयारूवे दोहले पाउवमूए) उसे इस प्रकार का दोहला उत्पन्न हुआ—(घन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ) वे माताएँ धन्य हैं (जाओ णं जल थलय भासुरप्पभूएणं दसद्धवन्ने णं मल्ले णं) जो जल में एवं स्थल में उत्पन्न हुए विकसित पंचवर्णों के प्रभूतपुष्पों से (अत्थुय पच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सण्णिवन्नाओ य

‘तएणं तीसे पभावइए ।’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्पराध्या (तीसे प्रभावइए देवीए) प्रभावतीदेवीने न्यारे (तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं) त्रय भडिना सारी रीते पसार थड सुक्खा त्यारे (इमेयारूवे दोहले पाउवमूए) तेने आ प्रभावे दोहले उत्पन्न थयुं के (घन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ) ते माता ओ धन्य छे. (जाओ णं जल थलय भासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं मल्लेणं) जेओ जल आने स्थलभां उद्भवेलो आने विकास पामेलो पांचरंगना पुष्पण प्रभावभुमां ओकसो करेलां पुष्पाथी

તિષ્ઠન્તિ તા અમ્બા ધન્યાઃ, ઇતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ । એકંચ મહત્ વિશલં 'સિરિ-  
દામગંડં' શ્રીદામકાણ્ડં શ્રીદામ્નાં=શોભાયુક્તમાલાનાં કાણ્ડં સમૂહં 'પાટલમલ્લિ-  
યચંપય- અસોગ- પુષ્પાગ-નાગમરુયગ-દમણગ-અળોજ્જ કોજ્જયપર' પાટલા-  
મલ્લિકા- ચમ્પિકા-ડશોક-પુંનાગનાગ - મરુવક-દમનકા- ડનવધકુલ્લ પ્રચુરં,  
પાટલાઘા પુષ્પજાતયઃ- પાટલપુષ્પં, 'ગુલાવ' ઇતિ પ્રસિદ્ધં મલ્લિકાપુષ્પં=ચમ્પ-  
કપુષ્પમ્, અશોકપુષ્પમ્, પુન્નાગયુષ્પમ્, નાગપુષ્પં, મરુવકઃ પત્રજાતિ વિશેષઃ,  
દમનકપુષ્પમ્, અનવધઃ- સુન્દરઃ, કુલ્લકઃ શતપત્રિકા વિશેષઃ, એતાનિ પ્રચુરાણિ  
યત્ર તત્ તથા, 'પરમસુહ્ર્વાસદરિસણિજ્જં' પરમસુખસ્પર્શદર્શનીયં પરમસુખદઃ  
સ્પર્શોયસ્ય તદ્ તત્ત્વ દર્શનીયં દૃષ્ટિસુખદં ચેતિ 'મહ્યા ગંધદ્રાણિ' મહાસુરભિગ-  
ન્ધગ્રાણિ મહાસુરભિગન્ધગુણં તુસિદેતું પુદ્ગલસમૂહં મુશ્ચત્ પ્રસારયત્ તદ્ આજિગ્રન્તયઃ

વિહરંતિ ) હસ તરહ એક એક કરકે ક્રમશઃ પુષ્પોં કે અનેક સ્વરોં સે  
સમાચ્છાદિત હુઈ શય્યા પર બેઠતી હૈં સુખ સે શયન કરતી હૈં । (એગં  
ચ મહં સિરીદામગંડ પાટલમલ્લિયચંપયઅસોગપુષ્પાગનાગમરુયગદમ-  
ણગઅળોજ્જકોજ્જયપરં પરમસુહ્ર્વાસદરિસણિજ્જં મહ્યાગંધદ્રાણિમુ-  
ચંતં આધાયમાણીઓ દોહલં વિણેતિ ) ઔર અદ્વિતીય શ્રીદામકાંડ  
કો-શોભાયુક્ત માલાઓ કે સમૂહ કો કિ જિસમેં પાટલ (ગુલાવ)  
મલ્લિકા (મોંઘરા ) ચંપક, અશોક, પુષ્પાગ, નાગ, મરુવા, દમનક એવં  
સુન્દર કુલ્લક કે પુષ્પોં કા પ્રાચુર્ય હૈ, જિસકા સ્પર્શ પરમ સુખ કારક  
હૈ ઔર જો દૃષ્ટિ કો આનંદ દાયક હૈ તથા તુસિ કારક મહાસુરભિ ગંધ  
ગુણ વાલે પુદ્ગલોં કો જો ફેલા રહ્યા હૈ સૂંઘતી હુઈં અપને ગર્ભ મનોરથ

( અત્યુચ પશ્ચત્યુચંસિ સયણિજ્જંસિ સન્નિસજ્ઞાઓ સન્નિવજ્ઞાઓ ચ વિહરંતિ ) આ  
રીતે અનુક્રમે પુષ્પોના ચરથી ઠંકાએલી એવી શય્યા ( પથારી ) ઉપર બેસે છે  
અને મુખેથી શયન કરે છે.

( એગં ચ મહં સિરીદામગંડ પાટલમલ્લિયચંપયઅસોગપુષ્પાગનાગમરુય-  
ગદમણગઅળોજ્જકોજ્જ પરં પરમસુહ્ર્વાસદરિસણિજ્જં મહ્યા ગંધદ્રાણિમુચંતંઆધાય  
માણીઓ દોહલં વિણેતિ )

એમાં પાટલ ( ગુલાબ ), મલ્લિકા, ચંપક, અશોક, પુષ્પાગ, નાગ, મરુવો,  
દમનક અને સુંદર કુલ્લકના પુષ્પો પુષ્કળ પ્રમાણમાં છે, સ્પર્શ એનો અત્યંત  
સુખદ છે અને જે દૃષ્ટિને આનંદ આપનાર છે અને તુલકરનાર મહાસુગંધ  
શુભવાળા પુદ્ગલોને જે ફેલાવી રહ્યો છે-એવા અદ્વિતીય ( સર્વોત્તમ )

તેન તથાવિધેન શ્રીદામકાળદેન પ્રાણેન્દ્રિયં તર્પયન્ત્યઃ દોહદં = ગર્ભસદ્ભાવજનિત મનોરથં ' વિળેતિ' વિનયન્તિ=પૂરયન્તિ । તા એવ જનન્યો જગતિ ભાગ્યશાલિન્યઃ પ્રશંસનીયા ધન્યાશ્ચ સન્તીત્યર્થઃ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ- તસ્યાઃ પ્રભાવત્યા દેવ્યાઃ ઇમમેતદ્દૂપં દોહદં પ્રાદુર્યૂતં દૃષ્ટ્વા યથા સંનિહિતાઃ સમીપસ્થિતા વાનવ્યન્તરાદેવાઃ સ્નિપમેવ જલસ્થલીત્પન્નાનિ યાવદ્દશાર્ધવર્ણાનિ = પશ્ચવર્ણાનિ માલ્યાનિ = પુષ્પાણિ કુંભાગ્રશ્ચ કુંભ- પરિમાણતઃ, મારાગ્રશ્ચ મારપરિમાણતશ્ચ કુંભકસ્ય રાજો ભવને સંહરન્તિ= સમાનયન્તિ. । એકંચ સ્વલુ મહત્ શ્રીદામકાળં યાવદ્ મુશ્ચત્ ઉપનયન્તિ-સમીપે સમાનયન્તિ । તતઃ સ્વલુ સા પ્રમાસ્તી દેવીજલસ્થલજ યાવત્- યાવચ્છન્દેન-

કી પૂર્તિ કરતી હૈં ( વે માતાએ ધન્ય હૈં એસા સંબંધ યહાં પર લગા લેના વ્હાહિયે ) ( તણં ) ઇસકે વાર ( તીસે પમાવતીએ દેવીએ ઇમેયારુવે દોહલં પાડવ્હૂતં પાસિત્તા અહાસન્નિહિયા વાળમંતરા દેવા લિપ્પામેવ જલથલયં જાવ દસદ્વવન્નં મલ્લં કુંભગસ્સોય મારગસોય કુંભગસ્સ રન્નો મવર્ણંસિ સાહરંતિ ) હસ પ્રમાવતી દેવીકે ઇસ પ્રકારકે દોહલેકો ઉત્પન્ન દુઝા દેલ કર કે સમીપ મેં રહે હુએ વાનવ્યન્તર દેવોને શીઘ્ર હી જલ મેં ઓર સ્થલ મેં ઉત્પન્ન પંચવર્ણ કે પુષ્પોં કો કુંભ પરિમાણ મેં ઓર મારપરિમાણ મેં કુંભક રાજા કે મવન પર લાકર રલ્લ દિયા ।

( એગં ચ ણં મહં સિરિદામગંઢં જાવ મુર્યંત જાવ ઉવળેતિ ) ઓર સાથ મેં એક વડા મારી શ્રીદામકાળં મી કિ જિસમેં પાટલ ગુલાબ

શ્રી દામકાંઠ ( સુદશમાળાઓના સમૂહ ) ની સુવાસ અનુભવતી પોતાના ગર્ભ મનોરથ ( દોહદ ) ની પૂર્તિ કરે છે. ( ખરે ખર તે માતાઓ ધન્ય છે. ) ( તણં ) ત્યાર બાદ.

( તીસે પમાવતીએ દેવીએ ઇમેયારુવે દોહલં પાડવ્હૂતં પાસિત્તા અહાસન્નિ હિયા વાળમંતરા દેવા લિપ્પામેવ જલ થલયં જાવ દસદ્વવન્નં મલ્લં કુંભગસ્સોય મારગસોય કુંભગસ્સ રન્નો મવર્ણંસિ સાહરંતિ )

પ્રમાવતી દેવીના આ પ્રમાણેના દોહલાને ઉત્પન્ન થયેલા બાણીને પાસે રહેનારા વાનવ્યંતર દેવોએ તરત જ જળ અને સ્થળમાં ઉત્પન્ન થયેલાં પાંચવર્ણના પુષ્પોને કુંભ પરિમાણમાં અને માર પરિમાણમાં કુંભક રાજાના ભવન ઉપર લાવીને મૂકી દીધાં

( એગં ચ ણં મહં સિરિદામગંઢં જાવ મુર્યંત જાવ ઉવળેતિ ) પાટલ વગેરે ના પુષ્પો જેમાં ચૂથેલાં છે, અને જે નેત્રોને માટે સુખદ અને સ્પર્શ પશ્ચ જેને આનંદ દાયક છે, અને જેમાંથી ઘોષેર સુગંધી પ્રસરી રહી છે એવો

‘ जल थल इत्यनन्तरं ’ ‘ मासुरप्पभूषणं दसद्वन्नेण ’ इति संग्रहः, माल्येन=पुष्प जातेन यावत्—अत्र यावच्छब्देन— ‘ अत्थुयपच्चत्थुयंसि ’ इत्यारभ्य ‘ अगघाव माणीओ ’ इतिपर्यन्तस्य ग्रहणम्, दोहदं विनयति=पूरयति। ततः खलु सा प्रभावती देवी प्रशस्तदोहदा यावद् संपूर्णं दोहदा संमानित दोहदा विहरति।

अथ भगवत्स्तस्य तीर्थकरस्य सकल जगत्कल्याणकरं जन्मकदाऽभवदिति जिज्ञासायामाह—‘ तएणं ’ इत्यादि।

ततस्तदन्तरं खलु सा प्रभावती देवी नवस्र मासेषु बहुप्रतिपूणेषु=सर्वथा संपूर्णेषु तदनन्तरम् अर्धाष्टमेसु रात्रिदिवेषु व्यतीतेषु योऽसौ हेमन्तानो हेमन्त ऋतु संज्ञकानां मार्गशीर्षदिफाल्गुनान्तानां प्रथमो मासः, द्वितीयः पक्षः मार्गशीर्ष शुद्धः मार्गशीर्षमासस्य शुद्धः शुक्लः पक्षो वर्तते, तस्य—खलु एकादश्यां तिथौ पूर्वरात्रापररात्रकालसमये मध्यरात्रे अश्विनी नक्षत्रे योगं=चन्द्रयोगप्रपागते—प्राप्ते आदिकेपुष्पगुंथे हुए हैं और जो नेत्र को सुख देने वाले एवं सुखस्पर्श हैं जिसमें से सुगंध ही सुगंध चारों ओर फैल रही है रानिके पास लाकर उपस्थित किया। (तएणं सा प्रभावती देवी जल थलय जाव मल्लेण जाव दोहलं विणेइ) इसके अनन्तर उस प्रभावती देवीने जल थलके विकसित पंच वर्ण वाले प्रभूत पुष्पों से समाच्छादित हुई शय्या पर बैठकर शयन कर श्रीदामकाण्ड को कि जो पाटल (गुलाब) आदि के पुष्पों से गुंथा हुआ था यावत् गंध को फैला रहा था सूंघ कर अपने दोहले की पूति की। (तएणं सा प्रभावती देवी पसत्थ दोहला जाव विहरइ, तएणं सा प्रभावई देवी नवण्हं मासाणं बहु पडिपुण्णाणं अद्वट्टमाणं य रसिं दियाणं जे से हेमन्ताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सणं एगारसीए पुव्वरत्तावरत्तं० आस्सिणीनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उच्चट्टाणट्टिएसु गहेसु पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोग्गारोग्गं एग्गु

अेक भोठी भारे श्रीदामकांड पणु वानव्यंतरे त्थां लाव्या (तएणं सा प्रभावती देवी जलथलय जाव मल्लेण जाव दोहलं विणेइ) त्थार भाद प्रभावती देवीके जणना विकसित पांचरंगना पुष्पोथी समाच्छादित शय्या उपर भेसी ने, शयन करीने, पाटल वगेरेना पुष्पोथी गुंथायेला सुवासित श्रीदामकांडने सुंधीने पोताना दोहदनी पूति करी

(तएणं सा प्रभावती देवी पसत्थदोहला विहरइ, तएणं सा प्रभावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्वट्टमाणं यराईदियाणं जे से हेमन्ताणं पढमेमासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्सणं एगारसीए पुव्वचावरत्तं. आस्सिणीनक्खत्तेणं जोग



સતિ ઉચ્ચસ્થાનસ્થિતેષુ ઉચ્ચરાશિગ તેષુ ગ્રહેષુ સૂર્યાદિષુ પ્રમુદિત પ્રક્રીડિતેષુ હૃદયેષુ ક્રીડાવત્સુ ચ જનપદેષુ=દેશેષુ સત્સુ આરોગ્યારોગરહિતા અનાવાધા પ્રસવવેદના રહિતા સતીત્યર્થઃ આરોગ્યં = અનાવાધં લક્ષેશર્વર્જિતં एकोनविंशतितमं तीर्थकरं प्रजाता=प्रजननिवती. ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ળવીસદ્વમં તિત્થયરં પયાયા) હસ પ્રકાર પ્રશસ્ત દોહલા વાલી વહ પ્રમા-  
વતી દેવી કિ જિસ કા દોહલા અચ્છો તરહ સે પૂર્ણ હો ચુકા હૈં ઓર  
જિસ દોહલે કો રાજા આદિજનોં ને બી સન્માનિત કિયા હૈ આનન્દ પૂર્વ  
ક રહને લગી । અવ સૂત્રકાર યહ પ્રકટ કરતે હૈં કિ ભગવાન્ ડન તીર્થ  
કર કો જગત્ કલ્પાળ કારક જન્મ કિસ સમય હુઆ-વે કહતે હૈં કિ  
જબ ગર્ભ કે નૌ માસ સમ્પૂર્ણ રૂપ સે ડ્યતીત હો ચુકે ઓર ડનકે ડપર  
સાઢે સાત રાત કા સમય ઓર અધિક નિકલ ચુકાં ડસ સમય  
પ્રમાવતી દેવી ને હેમન્ત કાલ કે પ્રથમ માસ માર્ગશીર્ષ શુક્લ ઇકાદશી  
કે ડિન મધ્ય રાત્રિ કે સમય અશ્વિની નક્ષત્ર મેં, જય કિ ડસકા યોગ  
ચન્દ્રમા કે સાથ હો રહા થા ઓર સૂર્યાદિગ્રહ ઉચ્ચસ્થાન પર સ્થિત થે તથા  
જનપદોં મેં આનન્દ કી લહરે છાંયી હુઈથી-વિવિધ પ્રકાર કી ક્રીડાઓં  
મેં વે રત થને હુઇ થે વિના કિસી વાધા કે કલેશર્વર્જિત ૧૧ વેં તીર્થકર  
કો જન્મ ડિયા ॥ સૂત્ર ૧૧ ॥

મુવાગણં ઉચ્ચદ્વાળદ્વિષ્ણુ ગ્રહેસુ પમુદ્ય પન્કલીલેષુ જળવણ્ણુ આરોગ્યારોગં  
પ્રજાવતીસદ્વમં તિત્થયરં પયાયા)

આ રીતે બેતું ઢોહલ સંપૂર્ણ પછે પૂરું થયું છે અને રાજા વગેરે શુભ  
જનોએ પછે બેના ઢોહલને સન્માનીત કર્યું છે એવી પ્રશસ્ત ઢોહલ વાળી  
પ્રભાવતી દેવી આનંદની સાથે પોતાના દિવસો પસાર કરવા લાગી, હવે  
સૂત્રકાર જગત્ ના કલ્યાણ કરનારા એવા ભગવાન તીર્થકર નો જન્મ ક્યારે  
થયો તેનું વર્ણન કરતાં કહે છે-કે બ્યારે ગર્ભના નવમાસ પૂરા થઇ ગયા  
અને નવમાસ ઉપર સાઠ સાત દિવસરાતનો સમય પસાર થયો ત્યારે હેમ-  
તકાળના પ્રથમ મહિનાના શુક્લ પક્ષ અગિયારસના દિવસે અડધી રાતના  
સમયે અશ્વિની નક્ષત્રમાં-બ્યારે તે નક્ષત્રનો યોગ ચન્દ્રની સાથે થઇ રહ્યો  
હતો અને સૂર્ય વગેરે ગ્રહો ઉચ્ચ સ્થાને સ્થિત હતા અને આખા જનપદમાં  
આનંદનાં મોજાઓ પ્રસરી રહ્યા હતાં અને બધા માણસો અનેક ભતની  
રમતો અને ક્રીડાઓમાં મસ્ત થઇ રહ્યા હતા ત્યારે પ્રભાવતી દેવીએ કલેશ  
અને દુઃખ રહિત થઇને ૧૬ મા તીર્થકર ને જન્મ આપ્યો. ॥ સૂત્ર “ ૧૧ ” ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समयेणं अहोलोगवत्थव्वाओ  
अट्ट दिसाकुमारीओ मयत्तरीयाओ जहा जंबूद्वीवपन्नत्तीए जम्मणं  
सव्वं नवरं मिहिलाए कुंभयस्स पभावईए अभिलाओ संजो-  
एव्वो जाव नन्दीसरवर दीवे महिमा, तथा णं कुंभए राया  
बहूहिं भवणवइ४ तित्थयर जायकम्मं जाव नामकरणं, जम्हाणं  
अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीते  
तं होउणं णामेणं मल्ली, जहा महाब्बले नाम जाव परिवड्डिया  
सा वच्चती भगवती दियलोयचुता अणोवमसिरीया। दासीदास  
परिवुडा परिकिन्ना पीढमहेहिं ॥ सू० १२ ॥

टीका—‘तेणं कालेणं’ इत्यादि। तस्मिन् काले चतुर्थारकलक्षणे तस्मिन्  
समये जिन जन्मसमयेऽधोलोक वास्तव्या अष्ट दिक्कुमार्यः महत्तरिकाः प्रधानाः  
भोगङ्करा १, भोगवती २, सुभोगा ३, भोगमालिनी ४, सुवत्सा ५, वत्समित्राः  
६, वारिषेणा ७, बलाहका ८, इत्येतन्नामिकाः समागताः। यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ  
भगवतस्तीर्थंकरस्य जन्मवर्णितं, सर्वं तथैव विज्ञेयम्, नवरं=एतावान् विशेषः

‘तेणं कालेणं तेणं समयेणं’ इत्यादि

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समयेणं) उस काल और उस समय में  
(अहो लोगवत्थव्वाओ) अधोलोक में निवास करनेवाली (अट्ट) आठ  
(दिसाकुमारीओ) दिक्कुमारिकाएँ (मयत्तरीयाओ जहा जंबूद्वीवपन्नत्तीए  
जम्मणंसव्वं) जिनका नाम भोगङ्करा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी  
सुवत्सा, वत्समित्रा वारिषेणा और बलाहका है आई। जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति

‘तेणं कालेणं तेणं समयेणं’—इत्यादि

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समयेणं) ते काले अने ते समये (अहोलोग  
वत्थवाओ) अधोलोकां रडेनारी (अट्ट) आठ (दिसाकुमारीओ) दिशा  
कुमारिकाओ (महत्तरीयाओ जहा जंबूद्वीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं) जेभना  
नामो भोगङ्करा भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा,  
वारिषेणा, अने बलाहका—छे—त्यां आवी—‘जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति’ भां भगवान्  
हा ३७

इह मिथिलार्या नगर्यां कुम्भकस्य राज्ञः प्रभावत्याः अभिलापः=वर्णनं संयोक्तव्यः  
=वक्तव्यः, यावत् नन्दीश्वरवरे द्वीपे महिमा=उत्सवः, देवैकृतः । तदा खलु  
कुम्भको राजा बहुभिर्भवनपतिवानव्यन्तर-ज्योतिष्क वैमानिकैः जन्मोत्सवे कृते सति  
तीर्थकरजातकर्म यावत् नामकरणं कृतवान् यस्मात् खलु अस्माकम् अस्यां  
दारिकायां गर्भगतायां मातुर्मात्स्यशयनीये कुसुमशय्या विषये दोहदो विनीतः=

મેં ભગવાન તીર્થંકર ને જન્મ કા જૈસા વર્ણન કિયા ગયા હૈ-વૈસા હી  
વર્ણન યહાં જાનના ચાહિયે (નવરં) પરન્તુ ઉસકી અપેક્ષા હસમેં હતની  
વિશેષતા હૈ (મિહિલાઈ કુંભયસ્સ પમાવહૈ અમિલાઓ) કિ યહાં  
મિથિલા નગરી કુંભક રાજા ઔર રાની પ્રભાવતી કા સમ્બન્ધ લિયા  
ગયા હસલિયે મલ્લીનાથ તીર્થંકર કે જન્મ કે વર્ણન કરને મેં હનસબ  
કા યોગ લગા લેના ચાહિયે ।

( જાવ નંદીસર વરે દીવે મહિમા ) મલ્લિનાથ તીર્થંકર કે જન્મ કા  
ઉત્સવ નંદીશ્વર નામ કે દ્વીપ મેં દેવોં ને કિયા । (તયાળં કુંમર રાયા  
બહુહિં ભવળવહ ૪ તિલ્થયર જાય કમ્મં જાવ નામ કરણં) હસકે બાદ  
કુંમક રાજા ને અનેક ભવનપતિ વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક એવં વૈમાનિક  
દેવોં કે દ્વારા જન્મોત્સવ કિયે જાને પર તીર્થંકર કા જોતકર્મ યાવત્  
નામ કરણ કિયા । (જમ્હાળં અમ્હે હમીઈ દારિયાઈ માઉઈ મલ્લ  
સયણિજ્જંસિ દોહલે વિળીઈ તં હોઊળં ણામેળ મલ્લી) નામ કરણ

તીર્થંકર ના જન્મ વિષે જેવું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેવું જ વર્ણન  
અહીં પણ બહુવું બેઠ્યું. (નવરં) પણ તેના કરતાં અહીં આટલી વિશેષતા  
બહુવી બેઠ્યું કે (મિહિલાઈ કુંમયસ્સ પમાઈઈ અમિલાઓ) અહીં મિથિલા  
નગરી, કુંભક રાજા અને રાણી પ્રભાવતીના સંબંધ વિષે વર્ણન કરવામાં આવે  
છે એટલે મલ્લિનાથ તીર્થંકરના જન્મ વર્ણનમાં આ બધાનો યોગ અપેક્ષિત છે.

( જાવ નંદીસરવરે દીવે મહિમા ) દેવોંએ મલ્લિનાથ તીર્થંકરનો જન્મો-  
ત્સવ નંદીશ્વર નામના દ્વીપમાં બિજાવ્યો હતો. (તયાળં કુંમર રાયા બહુહિં ભવળ  
વહ ૪ તિલ્થયર જાયકમ્મં જાવ નામ કરણં) બહુ ભવનપતિ વાન વ્યંતર, જ્યોતિષ્ક  
અને વૈમાનિક દેવોંએ જ્યારે સારી પેઠે ભગવાન તીર્થંકરનો જન્મોત્સવ બિજાવી  
લીધો ત્યારે કુંભક રાજાએ તેમનો જોતકર્મ યાવત્ નામ કરણ સંસ્કાર કર્યો.

(જમ્હાળં અમ્હે હમીઈ દારિયાઈ માઉઈ મલ્લસયણિજ્જંસિ દોહલે વિળીઈ  
તં હોઊળં ણામેળ મલ્લી)

રાજાએ તેમનું નામ મલ્લિ પાડ્યું કેમકે જ્યારે તે ગર્ભમાં હતા ત્યારે તેમની  
માતાને માલતીના પુષ્પોની માળાની શય્યાનું દોહક થયું હતું અને તેમના દોહકની

देवैः पूरितः, तद् भवतु खलु इयं नाम्ना मल्लिः मालायै हितं, तव साधु वा माल्यं कुसुमं तद्वतामिलाषरूपदोहदपूर्वकमेतस्या दारिकाया जन्मसंजातं तस्मा दस्या नाम 'मल्ली' इतिकृतम् । अस्याः स्त्रीत्वेऽपि जिनस्तीर्थकरोऽर्हदिति शब्दानां बाहुल्येन पुंस्त्वे प्रवृत्तिदर्शनात्पुल्लिङ्गशब्देन व्यवहारः । यथा महाबलो नाम=

में उनका नाम मल्ली रखा गया-क्यों कि राजाने यह विचारा कि जब ये गर्भ में थी तो इनकी माताको पुष्पोंकी माल्य की शय्या के विषय में दोहला उत्पन्न हुआ था-और उस दोहले की पूर्ति देवों ने की थी अतः यह पुत्री नाम से मल्ली रहो- इसी अभिप्राय से राजा ने उसका नाम मल्लि रखा ।

“मालायै हितं तत्र साधु वा माल्यं” इस व्युत्पत्ति के अनुसार माल्य शब्द का अर्थ कुसुम होता है । सो जब ये माता के गर्भ में थी तब माता को उस माल्य के विषय में अमिलाष रूप दोहला उत्पन्न हुआ था-जिस की पूर्ति देवों ने की थी-अतः उस दोहद पूर्वक इस लड़की का जन्म हुआ-इस कारण राजा ने उसका नाम मल्लि रख दिया । यद्यपि यह स्त्रीरूप में थी-तौ भी “जिनः तीर्थंकर अर्हत” इत्यादि शब्दों की बहुलता से पुल्लिङ्ग में प्रवृत्त देखी जाती है-इसलिये यहां इनका पुल्लिङ्ग शब्द से व्यवहार तीर्थंकर की अपेक्षा किया गया है । (जहा महाबले नाम जाव पडिबड्डिया “सा बद्धह भगवती दिय लोय चुता अणोवम सिरीया दासी दास परिखुडा परिकिन्ना पोढमहेहि” ,

पूर्ति देवाये करी હતી. એથી જ રાજાએ તે પુત્રીનું નામ મલ્લિક પાડ્યું હતું

“માલાયૈ હિતં તત્ર સાધુવા માલ્યં” આ બ્યુત્પત્તિ સુબળ માલ્ય શબ્દને અર્થ કુસુમ ( પુષ્પ ) થય છે. બ્યારે મલ્લિક માતાના ગર્ભમાં હતા ત્યારે તેમને માલ્ય ની અમિલાષા રૂપ દોહક ઉત્પન્ન થયું હતું તે દોહકની પૂર્તિ દેવાએ કરી હતી. એથી માલ્યના દોહકથી જન્મેલી તે પુત્રીનું નામ રાજાએ મલ્લિક પાડ્યું બે કે આ સ્ત્રી રૂપે હતી છતાં એ “જિન તીર્થંકરઃ અર્હત્” વગેરે શબ્દો ના બાહુલ્યથી તે પુલ્લિંગથી જ સંબોધિત કરવામાં આવે છે. એટલા માટે અહીં એ પુલ્લિંગ શબ્દથી વ્યવહાર કરવામાં આવે છે તે તેમની તીર્થંકરની અપેક્ષાથી જ.

(જહા મહાબલે નામ જાવ પડિબડ્ડિયા “સા બદ્ધતી ભગવતી દિયલોય ચુતા અણોવમસિરીયા દાસીદાસપરિખુડા પરિકિન્ના પોઢમહેહિ” “૧” )

ભગવતી સૂત્રના મહાબલનાં વર્ણનની જેમ જ મલ્લિકના વર્ણન વિષેય

યથા ભગવતી સૂત્રે મહાવલો વર્ણિતસ્તથેયં મહી વિજ્ઞેયેત્યર્થઃ ।

અથ ગાથા દ્વયેન મહિ વર્ણયતિ-‘ સા વદ્વદ્ ’ ઇત્યાદિ

સા વર્ધમાના ભવતી દુલોકચ્યુતા અનુપમશ્રીકા,

દાસીદાસપરિવૃતા પરિકીર્ણા પીઠમદૈઃ ॥ ૧ ॥

સા મહી વર્ધમાના=અનુદિનં વૃદ્ધિં ગતા, ભગવતી=એશ્વર્યાદિગુણયુક્તા, દુલોકચ્યુતા દેવલોકાદનુત્તરવિમાનાચ્યુતા=અવતીર્ણા, અનુપમ શ્રીકા=અદ્વિતીય શોભાયુક્તા, દાસીદાસપરિવૃતા, પીઠમદૈઃ=વયસ્યૈઃ પરિકીર્ણા=પરિકરવતી बहु-સહચરી યુક્તેત્યર્થઃ ।

અસિતશિરોજા મુનયના વિમ્બોષ્ટી ધવલદન્તપદ્મિકા ।

વરકમલકોમલાઙ્ગી ફુલોત્પલગન્ધનિઃશ્વાસા ॥ ૨ ॥

અસિત શિરોજા=અમરવદતિશ્યામવર્ણકેશા, મુનયના = મુલોચના, વિમ્બોષ્ટી =વિમ્બવદ્વક્તવર્ણોષ્ટી, ધવલદન્તપદ્મિકા ધવલા કુન્દમુક્તાદિવચ્છુલ્લવર્ણા દન્ત પદ્મિકર્ત્તવિદન્તશ્રેણિકા યસ્યાઃ સા તથા, વરકમલકોમલાઙ્ગી=વરકમલવત્ - અશુષ્ક કમલપુષ્પવત્ કોમલાનિ મૃદુહાન્યજ્ઞાનિ યસ્યાઃ સા તથા, ફુલોત્પલગન્ધનિઃશ્વાસા=વિકસિતનીલકમલવદ્ગન્ધયુક્તનિઃશ્વાસવતી જાતા ॥ સૂ. ૧૨ ॥

જિસ પ્રકાર ભગવતી સૂત્ર મેં મહાવલો કા વર્ણન કિયા ગયા હૈ-  
ઉસી પ્રકાર સે હન મહી કા મી વર્ણન જાનના ચાહિયે-સૂત્રકાર હસી  
વાત કા વર્ણન “ સા વદ્વદ્ ” હસ ગાથા દ્વારા કરતે હૈ-બે કહતે હૈ કિ  
યે મહિલ નામ કી કન્યા પ્રતિદિન વૃદ્ધિગત હો રહી થી । એશ્વર્ય આદિ  
ગુણો સે યુક્ત થી । અનુત્તર વિમાન સે ચલ કર આઈ થી અનુપમ શ્રી સે  
સંપન્ન થી । દાસી દાસ પરિવૃત્ત થી ઓર અનેક સહચરિયો સે યુક્ત થી ।

ઉનકે બાલ ભ્રમર કે સમાન અતિ શ્યામ વર્ણ વાલે થે । લોચન વડે  
સુહાવને થે । વિમ્બ જૈસે લાલ વર્ણ વાલે હનકે દોનો ઓછ થે । દાંતો  
કી પદ્મિકા કુન્દ તથા મુક્તા આદિ કે સમાન ચિલકુલ શુભ્ર થી । અશુષ્ક

બાણુવું જોઈએ. “ સા વદ્વદ્ ” આ ગાથા વડે સૂત્રકાર જોઈ વાત સ્પષ્ટ કરવા  
માગે છે. તેઓ વર્ણન કરતાં કહે છે કે મહિલ નામે કન્યા દિવસે દિવસે  
મોટી થઈ રહી હતી. તે એશ્વર્ય વગેરે ગુણોથી પૂર્ણ હતી તે અનુત્તર વિમા-  
નથી ચલીને આવી હતી અને અનુપમ શ્રી સંપન્ન હતી. તે દાસી દાસોથી  
વીરળાગેલી તેમજ ઘણી સહચરીઓથી યુક્ત હતી.

તેમના વાળ ભ્રમર જેવા અત્યંત કાળા હતા. તેમનાં નેત્રો મનોહર  
હતાં. બંને હોઠ બિંબાકૃત જેવા લાલ હતા. તેમની દંતપંક્તિ કુંદ તેમજ મોટી

मूलम्—तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कबाल-  
भावा जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्कि-  
डसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं सा मल्ली देसूणवाससय-  
जाया ते छप्पिरायाणो विउलेण ओहिणा आभोषमाणी २  
विहरइ । तं जहा — पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं पंचालाहिवइं,  
तएणं सा मल्ली कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं  
वयासी — तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! असोगवणियाए एणं महं  
मोहणघरं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं, तस्स णं मोहणघरस्स  
बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह, तोसिं णं गब्भघरगाणं  
बहुमज्झदेसभाए जालघरयं करेह, तस्स णं जालघरयस्स बहुम-  
ज्झदेसभाए मणिपेढियं करेह, जाव पच्चप्पिणंति ॥सू०१३॥

टीका—‘तएणं सा’ इत्यादि—ततस्तदनन्तरं खलु सा मल्ली मल्लीनाम्नी ‘विदेह  
रायवरकन्ना’ विदेहराजवरकन्या=विदेहो मिथिलाजनपदः, तस्य राजा कुम्भ-  
कस्तस्य वराकन्या=पुत्री ‘उम्मुक्कबालभावा’ उन्मुक्तबालभावा, अपगतवाल्या  
वस्था यावत् रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च अतीवातीवोत्कृष्टा उत्कृष्ट-

कमल पुष्प के जैसा इनका मृदुल अंग था। विकसित नील कमल के  
समान गंध युक्त इनका निश्वास था। सूत्र “ १२ ”

‘तएणं सा मल्ली’ इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) विदेह  
राजकी कन्या वह मल्ली (उम्मुक्क बालभावा) बाल्यावस्था का परित्याग  
कर (जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्किडसरीरा

वगेरे जेवी जेकडभ स्वच्छ हत्ती. ताका कमल पुष्पना जेवां तेमनां सुकामण  
अगो हत्ता. तेमनो निश्वास प्रकुलित नीलकमल जेवां सुवासित हत्तो. ॥ सूत्र “ १२ ”  
‘तएणं सा मल्ली’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्पारथाह (विदेहरायवरकन्ना सा मल्ली) विदेह राजकन्या  
भद्वि (उम्मुक्कबालभावा) अथपक्ष पटावीने (जाव रूवेण जोव्वणेण य

શરીરા ચાપિ જાતા ડસીદિતિ સમ્બન્ધઃ=। તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્લ સા મલ્લિદેશોન વર્ષશત જાતા દેશોનં=કિશ્ચિદ્નં વર્ષશતં જાતં=મૃતં વ્યતીતં યસ્યાઃ સા તથા, દેશોનશતવર્ષવયસ્કા સતીત્યર્થઃ તાન્ ષડપિ પ્રતિબુદ્ધચાદીન્ રાજ્ઞો વિપુલેનાવધિના= અવધિજ્ઞાનેન આમોગયન્તી ૨ પુનઃ પુનઃ પશ્યન્તી વિહરતિ, તિષ્ઠતિ સ્મ । તદ્વયા- પ્રતિબુદ્ધિં યાવત્ જિતશત્રુ પાશ્ચાલાધિપતિમ્ । પ્રતિબુદ્ધિ નામા ઈક્ષ્વાકુવંશ્યો રાજાઽ યોધ્યાધિપતિઃ, ચન્દ્રચ્છાયોઽજ્ઞદેશાધિપતિઃ, શઙ્ગનામા કાશીજનપદાધિપતિઃ, રુક્મીનામા કુળાલાધિપતિઃ, અદીનશત્રુનામા કુરુદેશરાજઃ, જિતશત્રુઃ પશ્ચાલા-

જાયા યાવિ હોત્યા ) યાવત્ રૂપ, યૌવન એવં લાવણ્ય સે અત્યંત ઉત્કૃષ્ટ શરીર યુક્ત હો ગઈ । (તર્ણ સા મલ્લી દેસૂળ વાસસય જાયા-તે છપ્પિ રાયણો વિપુલેળ ઓહિણા આમોપમાણી ૨ વિહરહ ) ડસ સમય ડસ કી અવસ્થા શત વર્ષ સે કુલ્લ કમથી । પ્રતિબુદ્ધિ આદિ અપને સાવ કે ડન ૬ રાજાઓં કો ડયોંહી ડનોંને અપને અવધિજ્ઞાન સે જાના તો ડને માલૂમ હો ગયા કિ ( પઢિબુદ્ધિ જાવ જિયસતુ પંચાલાહિવઈ ) અચલ કા જીવ કોશલ દેશ કો અધિપતિ હુઆ હૈ-વહ ઈક્ષ્વાકુવંશીય હૈ ઓર ડસકા નામ પ્રતિબુદ્ધ હૈ ।

ધરણ કા જીવ ચંદ્રચ્છાય નામ કા અંગ દેશાધિપતિ હુઆ હૈ । અભિચન્દ્ર કા જીવ કાશી દેશ કો અધિપતિ હુઆ હૈ ડસકા નામ ડસ સમય શંખ હૈ । પૂરણ કા જીવ કુળાલ દેશ કા અધિપતિ હુઆ હૈ । ડસકા નામ રુક્મી હૈ । વસુકા જીવ કુરુદેશ કા અધિપતિ હુઆ હૈ

લાવન્નેણ ચ અતીવ ૨ ઉચ્ચિક્રદ્વસરીરા જાયા યાવિ હોત્યા ) યાવત્ રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી એકદમ ઉત્તમ શરીરવાળી થઈ ગઈ.

( તર્ણ સા મલ્લીદેસૂળ વાસ સમજાયા તે છપ્પિ રાયણો વિપુલેળ ઓહિણો આમોપમાણી ૨ વિહરહ )

તેમની ઉંમર તે વખતે સો વર્ષ કરતાં ઓછી હતી. પ્રતિબુદ્ધિ વગેરે પેતાની સાથેના તે છ રાજાઓને તેણે પોતાના અવધિજ્ઞાનથી બાધ્યા ત્યારે તેને બાધુ થઈ કે ( પઢિબુદ્ધિ જાવ જિયસતું પંચાલાહિવઈ ) અચલને એવ કોશલને અધિપતિ થયો છે. તે ઈક્ષ્વાકુવંશીય છે, અને તેનું નામ પ્રતિબુદ્ધ છે.

ધરણને એવ અંગ દેશને અધિપતિ થયો છે અને તેનું નામ ચંદ્ર-ચ્છાય છે અભિચંદ્રને એવ કાશી દેશને અધિપતિ થયો છે અને અત્યારે તેનું નામ શંખ છે. પૂરણ ને એવ કુળાલ દેશને અધિપતિ થયો છે અને તેનું નામ રુક્મી છે વસુને એવ કુરુ દેશને અધિપતિ થયો છે અને તેનું

ધિપતિઃ, एतान् षडपि राज्ञः पुनपुनरवधिज्ञानेन विलोकयन्ती तिष्ठतिस्मेत्यर्थः।  
જ્ઞાનત્રયસંપન્ના મલ્લી મગવતી સ્વકીયાવધિજ્ઞાનોપયોગેનેદં વિદિતવતી-પૂર્વમવ-  
સ્નેહવશાત્તે ષડપિ રાજાનો માં પરિણેતુમાગમિષ્યન્તીતિ તેણાં પ્રતિબોધાર્થમુપાયો  
મયા વિધેય इति भावयति स्मेति भावः । ततस्तदनन्तरं सा मल्ली कौटुम्बिक  
પુરુષાન્ આજ્ઞાકારિણઃ પુરુષાન્ શબ્દયતિ=આહ્વયતિ, શબ્દયિત્વા=આહ્વય, एवं=  
વશ્યમાણ પ્રકારેણ, અવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! यूयं खलु अशोकवनिक्कायामेकं  
મહત્=બૃહત્ મોહનગૃહ=સંમોહનગૃહં ગૃહં ' કરેહ ' કુરુત=નિર્માત, કીદૃશં તદિત્યાહ  
' अणेगखंभसयसन्निविट्ठं ' અનેકસ્તમ્મશતસન્નિવિટ્ઠમ્ અનેકાનિ રતમ્મશતાનિ  
સન્નિવિટ્ઠાનિ સંલગ્નાનિ યસ્મિન્ તત્ તથાવિધમ્ । तस्य खलु मोहनगृहस्य बहुम-

उसका नाम अदीन शत्रु है । वैश्रवण का जीव पांचालाधिपति हुआ  
है । उसका नाम जितशत्रु है ( तएणं सा मल्ली कोट्टुंबिय पुरिसे  
सहावेह ) इस प्रकार अपने पूर्वभव के साथियों की परिस्थिति को ज्ञात  
कर उस मल्ली भगवती ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया- ( सहावित्ता  
एवं वयासी ) और बुलाकर उन से ऐसा कहा- ( तुभमे णं देवाणुप्पिया !  
असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह-अणेगखंभसयसन्निविट्ठं )  
हे देवानुप्रियों ! तुम अशोकवनिक्का में सैकड़ों खंभों से युक्त एक  
विशाल संमोहन गृह बनाओ । इस घर को बनाने को आदेश उन  
मल्ली भगवती इसलिये दिया था कि उन्होंने ने अपने अवधिज्ञान से यह  
जान लिया था कि वे छहों राजा पूर्वभव के स्नेह से सुझ से विवाह  
करने के लिये यहां आबेंगे-अतः मुझे उन्हें प्रतिबोधित करने के  
लिये उपाय करना चाहिये ।

નામ અદીનશત્રુ છે. વૈશ્રવણ નો જીવ પાંચાલ દેશનો અધિપતિ થયો તે અને  
તેનું નામ જિતશત્રુ છે. ( તएणं सा मल्ली कोट्टुंबिय पुरिसे सहावेह ) આ રીતે  
પોતાના પૂર્વભવના મિત્રોની પરિસ્થિતિ બાણીને મદદી ભગવતીએ કૌટુમ્બિક  
પુરુષોને યોદ્ધાબ્યા. “ सहावित्ता एवं वयासी ” અને યોદ્ધાવીને તેમને કહ્યું.

( तुभमेणं देवाणुप्पिया ! असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह-अणेग-  
खंभ सयसन्निविट्ठं )

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અશોક વનિકામાં સેકડો ચાંભલાઓ વાળું એક  
ઘોટું સંમોહન ઘર બનાવો. મદદી ભગવતીએ સંમોહન ઘર એટલા માટે  
બનાવડાવ્યું હતું કે પોતાના અવધિજ્ઞાન થી તેમણે એ વાત બાણી લીધી હતી  
કે તેઓ છએ રાજા પૂર્વ ભવના પ્રેમને લીધે તેમની સાથે લગ્ન કરવા અહીં  
આવશે એથી તેમને પ્રતિબોધિત કરવાના ઉપાયો તેમણે મદદીને કરવા જ  
એકએ કૌટુમ્બિક પુરુષોને તેમણે આગળ કહ્યું-



ધ્યદેશભાગે=સર્વથા મધ્યસ્થાનભાગે વદ્-‘ ગબ્મઘરણ ’ ગર્મગૃહાન્ અન્તર્ગૃહાન્ કુરુત । વાસ મવનાનિ તેષાં ચ ગર્મગૃહાણાં વહુમધ્યદેશભાગે જાલગૃહં અન્ ગૃહાન્તર્ગતં વસ્તુ બદ્ધિઃ સ્થિતાઃ પશ્યન્તિ, તદર્થં કુદ્યેષુ દાર્વાદિનિર્મિતજાલકાનિ વર્તન્તે તદ્ જાલગૃહં કુરુત તસ્ય સ્વલ્લુ જાલગૃહસ્ય વહુમધ્યદેશભાગે મણિપીઠિકાં મણિમયપીઠિકાં, કુરુત, કૃતા યાવત્ પ્રત્યર્પયન્તિ મલ્લીભગવત્યા આદેશાત્ કોદુમ્બિકપુરુષા મોહનગૃહં તત્ર મધ્યમાગે વટ્સંસ્ત્યકં ગર્મગૃહં તન્મધ્યે મણિમય

( તત્સ ણં મોહનઘરસ્સ વહુમજ્જદેસમાણ છ ગબ્મઘરણ કરેહ )  
 ઉસ સંમોહન ગૃહ કે ઠીક મધ્યમાગ મેં છ ગર્મગૃહોં કો બનાઓ ( તો સેણં ગબ્મઘરણાણં વહુમજ્જદેસમાણ જાલઘરયં કરેહ તત્સ ણં જાલ ઘરયસ્સ વહુમજ્જદેસમાણ મણિપેઢિયં કરેહ, જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ )  
 ગર્મ ગૃહોં કે મધ્યમાગ મેં જાલઘર કો બનાઓ । જાલિયોં મેં સે જિસ ઘર કી વસ્તુ કો બાહિર રહે હુણ મનુષ્ય દેસ લેતે હૈં । વહ જાલ ઘર કહ્લાતે હૈં । યે જાલિયાં બીતોં મેં કાષ્ટ આદિ કી બનાકર લગાઈ જાતી હૈં । જિસ પ્રકાર મકાનોં મેં હવા તથા પ્રકાશ આને કે લિયે લિફ્ફકિયોં હુઆ કરતી હૈં-ઉસી પ્રકાર સે યે જાલિયાં બી લગાઈ જાતી હૈં । ઔર ઉસ જાલ ગૃહ કે ઠીક બીચ કે સ્થાન મેં મણિનિર્મિત પીઠિકા કો બનાઓ ।

બનાકર પીછે હસકી હમેં સૂચના દો । હસ પ્રકાર મલ્લી ભગવતી કે આદેશ કો પાકર ઉન કોદુમ્બિક પુરુષોં ને ૧ મોહન ગૃહ, ઉસકે બીચ મેં છ ગર્મ ગૃહ ઉનકે બીચ મેં ૧ જાલ ગૃહ ઔર ઉસ કે બીચ મેં મણિ-

“ તત્સણં મોહનઘરસ્સ વહુમજ્જદેસમાણ છ ગબ્મઘરણ કરેહ ” સંમોહન ઘરને । અધવચ્ચે છ ગર્મગૃહો બનાવો.

( તીસેણં ગબ્મઘરણાણં વહુમજ્જ દેસમાણ જાલ ઘર યં કરેહ તત્સ ણં જાલ ઘરયસ્સ વહુમજ્જદેસમાણ મણિપેઢિયં કરેહ જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ )

ગર્મગૃહોના મધ્ય ભાગમાં બાલ ઘર બનાવો જે ઘરની અંદરની વસ્તુઓ ને બહારના માણસો ઘરની બાળીઓથી બેઈ લે છે, તે ઘરને બાળઘર કહે છે. બાળીઓ બી તોમાં લાકડા વગેરેની બનાવીને મૂકવામાં આવે છે. ઘરોમાં પવન તેમજ પ્રકાશ ને આવવાને માટે બારીઓ હોય છે, તેમજ બાળીઓ પણ મૂકવામાં આવે છે ) આ બાળ ઘરની બરાબર અધવચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા બનાવો.

આબધું તૈયાર થઈ બધ ત્યારે મને સૂચિત કરો. આરીતે મટલી ભગવતીની આજ્ઞા સાંભળીને કૌટુંબિક પુરુષોએ એક સંમોહન ઘર, તેની વચ્ચે છ ગર્મગૃહ, તેની વચ્ચે એક બાળગૃહ અને તેની વચ્ચે મણિ જડિત પીઠિકા

पीठिकां च कृत्वा मल्लीभगवत्याः समीपमागत्यावेदयन्ति स्म. भवेदीयादेशमनु-  
सृत्य सर्वं साधितमस्माभिरिति कथयन्ति स्मेत्यर्थः ॥ सू. १३ ॥

मूलम्—तएणं मल्लीमणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं  
सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावन्नजोव्वणगुणोव्वेयं कणगमईं  
मत्थयच्छिड्डं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेइ, करित्ता जं विउलं  
असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ, तओ मणुन्नाओ असण  
४ कल्लाकल्लि एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगमईए मत्थ-  
यच्छिड्डाए जाव पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी २ विहरइ ।  
तएणं तीसेकणगमईए जाव मच्छयच्छिड्डाए पडिमाए एगमेगंसि  
पिंडेपक्खिप्पमाणे २ तओ गंधे पाउब्भवइ, से जहानामए  
अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्टनराए अमणामतराए॥सू०१४॥

टीका—‘तएणं मल्ली’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली=मल्लीकुमारी मणि-  
पीठिकाया उपरि आत्मनः सदृशीं सदृशत्वं च सदृशवयस्कां स्वशरीरसदृशप्रमाणं  
सदृशलक्षणयौवनशुणीपपेतां स्वसदृशलक्षण्यादिशुणैः सहितां, कनकमयीं सुवर्णै-  
न-

मय पीठिका बनाई—और बनाकर फिर वे मल्ली भगवती के पास  
आये—आकर कहने लगे—आपके आदेशानुसार हमने सब बनाकर  
यथावत् तैयार कर दिया है । सूत्र “ १३ ”

‘ तएणं मल्ली मणिपेढियाए ’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (मल्ली) मल्ली कुमारीने (मणिपेढियाए  
उवरि अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावन्न जोव्वण गुणो

अनावी अने अनावीते तेज्जो मल्ली भगवतीनी आये आग्या अने आवीने  
कहेवा आग्या—“ डे देवानुमिथे डुमारी आशा प्रभावे अये यथावत अणु  
तैयार करावी दीधु छे. ” ॥ सूत्र “ १३ ” ॥

‘तएणं मल्ली मणिपेढियाए’ इत्यादि

टीकार्थ—( तएणं ) तयार गाड ( मल्ली ) मल्ली कुमारीजे.

( मणिपेढियाए उवरि अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिस लावन्न

मितां 'मत्थयच्छिद्रं' मस्तकच्छिद्रां मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां 'पउमुप्पलप्पिहाणं पओत्पलपिधानां=रक्तनीलकमलानि पिधानानि मस्तकच्छिद्रस्याच्छादनानि यस्यास्तां प्रतिमां = स्वतुल्यकृतिकपुत्तलिकां कारयति = शिल्पकारैर्निर्मापयति । कारयित्वा सा मल्ली कुमारी यद् 'विउलं' विपुलं=बहुलम्, अशनपानखाद्य स्वाद्यं=चतुर्विधमाहारम् आहारयति=भुङ्क्ते, ततः तस्मात्-'मणुन्नाओ' मनोह्वाम् प्रियरसयुक्तात् अशनपानखाद्यस्वाद्यात् चतुर्विधाहारमध्यात् 'कल्लाकल्लि' कल्याकल्यदिने दिने, एकमेकं पिण्डं=प्रासं गृहीत्वा, तस्याः कनकमय्याः मस्तकच्छिद्राया यावत् प्रतिमाया मस्तके=मस्तकोपरिभागवर्तिनि रन्ध्रे प्रक्षिपन्ती=एकमेकं प्रासं निपातयन्ती 'विहरइ' विहरति=आस्ते स्म । ततस्तदनन्तरं खलु तस्यां कनक-

ववेयं कणगमइं मत्थयच्छिद्रं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिं करेइ ) उस माणिपीठिका के ऊपर अपनी जैसी-अपनी जैसी वयवाली अपने शरीर के सदृश प्रमाणवाली, अपने जैसे लावण्य आदि गुणों वाली एक सुवर्ण निर्मित पुत्तलिका शिल्पियों से बनवाई । उसके मस्तक में एक बड़ा सा छेद रखवाया । वह छेद रक्त नील कमल रूप ढक्कन से ढका हुआ था । ( करिस्ता जं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लि एग द्वारेणं पिउगहाय ..विहरइ ) जब इस प्रकार की पुत्तलिका बनकर तैयार हो चुकी-तब उस मल्ली कुमारी ने विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया और स्वयं खाया-बाद में उस प्रियरसयुक्त आहार में से प्रतिदिन वह एक एक ग्राम को लेकर उस मस्तक छिद्र वाली सुवर्ण की पुत्तलिका के उस मस्तकोपरिभागवर्ती छेद में डालने लगी-( तएणं

जोव्वणगुणोववेयं कणगमइं मत्थयच्छिद्रं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिं करेइ )

ते भण्णि पीठिका ऊपर शिष्य शास्त्रीको पासेथी पोताना जेवी. पोताना जेवा आशुब्धनी, पोताना शरीर जेवा प्रमाणुनी पोताना जेवा लावण्य वजरे शुष्णवाणी जेक सोनानी पूतणी गनावडानी. तेना भावाभां जेक मोटुं काण्डं रभाण्डुं. ते काण्डं रक्तनील कमलना ढांकणुथी ढाँडेलुं छटुं.

( करिस्ता जं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ तओ मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लि एगद्वारेणं पिउगहाय ..विहरइ )

अथारे आरीते सोनानी पूतणी तैयार अथ गंध त्यारे भट्टी कुमारीजे अशन पान आद्य अने स्वाद्य रूप आर जातने। पुष्कण प्रमाणुभां आहार तैयार करावडायो, अने छमेशा ते आहारभांथी पोते जमती, अने त्यार आद तेभांथी जेक कोणीको लधने काण्डवाणी सोनानी पूतणीना

मय्यां यावत् मस्तकच्छिद्रायां प्रतिमायामेकैकस्मिन् पिण्डे प्रक्षिप्यमाणे प्रक्षिप्यमाणे सति ' तओ ' ततः=तस्या पुत्तलिकाया सकाशाद् गन्धः=दुर्गन्धः पाउब्भवद् ' प्रादुर्भवति=वर्हिर्निस्सरति स्म । सदृष्टान्तं पुत्तलिकां वर्णयति-तद् यथानामकम्=यथा दृष्टान्तम्-' अहिमडेइ वा ' अहिमृतक इति वा यावत्-अत्र यावच्छब्देन-' गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा, मज्जारमडेइ वा, मणुस्समडेइ वा, महिसमडेइ वा, मूसगमडेइ वा, आसमडेइ वा, हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा, वाघमडेइ वा, विगमडेइ वा, दीविमडेइ वा, इति सङ्ग्रहः ' गोमृतक इति वा, शुनकमृतक इति वा, मार्जारमृतक इति वा, मनुष्यमृतक इति वा, महिषमृतक, इति वा मूषकमृतक इति वा, अश्वमृतक इति वा, हस्तिमृतक इति वा, सिंहमृतक इति वा, व्याघ्रमृतक

तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छयछिद्राप पडिमाए एगमेगंसि पिंड पक्खिप्पमाणे २ तओ गंधे पाउब्भवद् ) इस प्रकार करते करते उस सुवर्ण मयी पुत्तलिका में मस्तक के छेदः द्वारा पिंड पहुँच ने पर उस पुत्तलिका से दुर्गन्ध निकल ने लगी ।

( से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्टतराए अमणामतराए ) वह दुर्गन्ध ऐसी थी-जैसी मरे हुए सर्प के सड़ जाने की होती है । यहाँ यावत् शब्द से " गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा " इत्यादि का संग्रह हुआ है ।

इसका अर्थ इस प्रकार है-वह दुर्गन्ध गाय के मरे हुए सड़े कलेवर की होती है मरे हुए कुत्ते के सड़े कलेवरकी होती है, मरे हुए बिलाव के सड़े कलेवर की होती है, मनुष्य के मरे हुए सड़े कलेवर की होती है, महिष के मरे हुए सड़े कलेवर की होती है, मरे हुए चूहे के सड़े कलेवर की होती है, मरे हुए घोड़े के सड़े कलेवर की

भाथानां कालुषाणां नाभ्यती. (तएणं तीसे कणगमत्तीए जाव मच्छय छिद्राप पडिमाए एगमेगंसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ तओ गंधे पाउब्भवद्) आसीते सोनानी भूतणीमां हरेश्च ओकं ओकं केणीये। नाभवाथी तेभांथी दुर्गंधं नीकणवा दागी. ( से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्टतराए अमणामतराए ) भरेला आने सडेला सापना जेवी ते दुर्गंध छती. अहाँ यावत् शब्दथी ' गोमडेइवा, सुणगमडेइवा ' वगेरेने सङ्ग्रह थये छे. आने अर्थ आ प्रभाण्ठे थाय छे डे भरिने सडी गथेला गायना शरीरना जेवी भरिने सडवा माँडेला इतराना शरीरना जेवी भरिने सडवा माँडेला जिलाडाना शरीरना जेवी, भरिने सडतां भाणुसना शरीरना जेवी, भरिने सडतां पाडाना शरीरना जेवी, भरिने सडतां ढंहरना शरीरना जेवी, भरिने सडतां थोडाना शरीरना जेवी, भरिने सडी गथेला छाथीना शरीरना जेवी,

इति वा, वृकमृतक इति वा, द्वीपिमृतक इति वा, इतिच्छाया, एषां मृतसर्पादि कलेवराणां दुर्गन्धः खलु यादृशोऽनिष्टः प्रादुर्भवति ' एतो ' एतस्माद् ' अनिष्टतराए ' अनिष्टतरः अधिकस्तीव्रः, अतएव ' अमणामतराए ' अमनआमतरः= मनसोऽति प्रतिकूलो दुर्गन्धस्तस्याः पुत्तलिकाया अमवदित्यर्थः ॥ सू० १४ ॥

સૂત્ર—તેણં કાલેણં તેણં સમણં કોસલણામં જણવણ, તત્થ ણં સાગેણ નામં નયરે, તસ્સ ણં ઉત્તરપુરત્થિમે દિસી-ભાણ, ઇત્થ ણં મહં એગે ણાગઘરણ હોત્થા દિઠ્ઠવે સચ્ચે સચ્ચો-વાણ સંનિહિયપાડિહેરે, તત્થ ણં નયરે પઢિબુદ્ધિનામં ઇક્ખાગુ-રાયા પરિવસહ, પડમાવર્ણ દેવી સુબુદ્ધી અમચ્ચે સામદંડમેય-કુસલે, તણં પડમાવર્ણ દેવીણ અન્નયા કયાહં નાગજન્નણ યાવિ હોત્થા । તણં સા પડમાવર્ણ નાગજન્નમુવદ્ધિયં જાણિત્તા જેણેવ પઢિબુદ્ધી, તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ પરિગ્ગહિયં સિરસાવત્તં દસનહં મત્થણ અંજલિં કદ્દુ એવં વયાસી —એવં ચલુ સામી ! મમ કલ્લં નાગજન્નણ યાવિ ભવિસ્સહ, તં

હોતી હૈ, મરે હુણ હાથી કે સહે કલેવર કી હોતી હૈ, મરે હુણ સિંહ કે સહે કલેવર કી હોતી હૈ, મરે હુણ વ્યાઘ્ર કે સહે કલેવર કી હોતી હૈ વૃક ઓર દ્વીપ કે સહે કલેવર કી હોતી હૈ । હન મૃત સર્પાદિકોં કે સહે હુણ કલેવરોં કી દુર્ગંધ જિસ પ્રકાર અનિષ્ટ હોતી હૈ ઉસી પ્રકાર હસસે ભી અનિષ્ટતર વહ પુત્તલિકા સે નિકલતી હુઈ દુર્ગંધ થી—અમન આમતર થી મન કો જરા સી ભી રુચે એસી નહીં થી—કિન્તુ મન કે અતિસર્વથા પ્રતિકૂલ થી । સૂત્ર “ ૧૪ ”

મરીને સહી ગયેલા સિંહના શરીરના જેવી, મરીને સહી ગયેલા વાઘના શરીરના જેવી મરીને સહી ગયેલા વરુ અને દ્વીપકા (દ્વીપ)ના શરીરના જેવી, મરીને સહી ગયેલા સાપ વગેરેના શરીરના જેવી અનિષ્ટકારી દુર્ગંધ હોય છે તેવી જ અને તેઓના કરતાં યજ્ઞ વધારે અનિષ્ટતર પૂતળીમાંથી નીકળતી દુર્ગંધ હતી. મનને એકદમ અણુઅણુ થાય તેવી સર્વથા પ્રતિકૂળ તેમાંથી નીકળતી દુર્ગંધ હતી. ॥ સૂત્ર “ ૧૪ ” ॥

इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समानी नागजन्नयं  
गमित्तए, तुब्भेवि णं सामी ! मम नागजन्नयंसि समोसरहा  
तएणं पडिबुद्धी पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ । तएणं  
पउमावई पडिबुद्धिणा रन्नो अब्भणुन्नाया हट्ठतुट्ठ जाव कोडुं-  
बियपुरिसे सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणु-  
प्पिया ! मम कल्लं नागजण्णए भविस्सइ तं तुब्भे मालागारे  
सदावेह, सदावित्ता एवं वदह एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं  
नागजण्णए भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! जलथलय०  
दसद्धवन्नं मल्लं णागघरयंसि साहरह, एगं च णं महं सिरिदा-  
मंगडं उवणेह । तएणं जलथलय दसद्धवन्नेणं मल्लेणं णाणा-  
विह भत्तिसुविरइयं हंसमियमउरकोच सारसचक्रवायमयणसाल-  
कोइलकुलोववेयं ईहामियजावभत्तिचित्तं महग्घं महरिहं विपुलं  
पुप्फमंडवं विरएह तस्सणं वट्ठमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदा-  
मंगडं जाव गंधधुणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलंबेह, ओलंबित्ता  
पउमावइं देविं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह । तएणं ते कोडुंबिया  
जाव चिट्ठंति ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तेणं कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कोसला-  
नाम जनपदः देश आसीत्, तत्र खलु साकेतनामकं नगरमासीत् । तस्य साकेत

‘तेणं काले णं तेणं समएणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं काले णं तेणं समएणं) उस काल और उस  
समय में (कोसला नाम जनपद) कोशल नामका जन पद-देश था ।

‘तेणं कालेण तेणं समएणं’ इत्यादि

टीकार्थ—(तेणं कालेण तेणं समएणं) ते क्षणे अने ते वण्णते (कोसल नाम  
जनपद) कोशल नामके जनपद (देश) छेतो. (तत्थणं सागेए नामं नयरे )

नगरस्य खलु उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे=ईशानकोणे अत्र खलु महदेकं नागगृहमासीत् तत् कीदृशमित्यात-दिव्यं=प्रधानं, सत्यं कामनापूरकत्वात् 'सच्चोवाए' सत्यावपातं =सत्याभिलाषं, 'संनिहियपाडिहेरे' संनिहितप्रातिहार्यं=संनिहितं विनिवेशितं प्रातिहार्यं प्रतीहारकर्म व्यन्तरदेवेन यस्मिन् तत्तथा देवाधिष्ठितमित्यर्थः । तत्र खलु नगरे=साकेतनगरे प्रतिबुद्धिनामा इक्ष्वाकुराजः=इक्ष्वाकुवंशीयो राजा परिवसति । पद्मावती देवी तस्य भार्याऽऽसीत् । 'सुबुद्धिः अमच्चे' सुबुद्धिनामकस्तस्यामात्यः=मंत्री, स कथंभूत इत्याह-'सामदंडमेयकुसले' सामदण्डभेदकुशलः

(तत्स्थणं सागेए नामं नयरे) उस में साकेत नाम का नगर था । (तस्स णं उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए-एत्थ णं महं एगे णागधरए होत्था दिव्वे सच्चवे सच्चोवाए संति हियपाडिहेरे) उस के ईशान कोण में विशाल नागधर था ।

यह दिव्य और प्रत्येक व्यक्ति की कामना का पूरक होने से सत्य था । जो भी कोई कामना-अभिलाषा-इसके समक्ष करता वह उस की सफल हो जाती-सत्य हो जाती-इसलिये यह सत्याभिलाष था । इसके द्वार पर व्यन्तर देव प्रतिहार के रूप में खड़े रहते थे इसलिये यह संनिहित प्रातिहार्य था । (तत्स्थ णं नयरे पडिबुद्धी नामं इक्खागुराया परिवसइ, पडमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदंडमेयकुसले) उस साकेत (अयोध्या) नगर में इक्ष्वाकुवंश से उत्पन्न प्रतिबुद्ध नाम का राजा रहता था । इस की भार्या का नाम पद्मावती था । अमात्य का नाम सुबुद्धि था ।

तेमां साकेत नामे नगर हंतुं.

(तस्सणं उत्तर पुरत्थिमे दिसी भाए-एत्थणं महं एगे णागधरए होत्था) दिव्वे सच्चवे सच्चोवाए संतिहिय पडिहेरे)

तेना ईशान कोणमां ओक मोठु नागधर हंतुं.

ते दिव्य अने इरेके इरेक भावुसनी धम्मिअने पूरी करनार डोवाथी सत्य हंतुं. गमे ते व्यञ्जित पोतानी धम्मिअ-कामना-तेनी सामे प्रकट करतो, तेनी धम्मिअ ते ओक्कस पूरी पाडंतुं हंतुं. तेनी कामना सङ्ग तेमअ सत्य थती हत्ती. ओथी अ ते सत्याभिलाष हंतुं. व्यन्तर देवे तेना द्वारे प्रतिहारना इपमां ओशा रडेता हत्ता ओथीअ ते संनिहित प्रातिहार्य हंतुं.

(तत्स्थणं नयरे पडिबुद्धीनामं इक्खागुराया परिवसइ, पडमावई देवी सुबुद्धी अमच्चे सामदंडमेयकुसले)

साकेत नगरमां इक्ष्वाकुवंशमां अमोदो प्रतिबुद्ध नामे राजा रडेता हत्ता. तेनी भार्यांतुं नाम पद्मावती हंतुं. तेना अमात्य (मंत्री) तुं नाम सुबुद्धि हंतुं.

સામ=સાન્ત્વનપ્રયોગ, ઢણ્ઢ=યુદ્ધ, મેદ=શત્રુપક્ષે મન્વિસૈનિકાદિમિર્વિરોધોત્પાદ-  
નમ્, તેષુ કુશલ=નિપુણઃ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ પદ્માવત્યાદેવ્યા અન્યદા કદાચિત્  
નાગયજ્ઞકથાપ્યાસીત્=નાગમહોત્સવ દિવસઃ સમાયાત્ इत्यर्थः । તતસ્તદા સ્વલુ  
સા પદ્માવતી દેવી નાગયજ્ઞં નાગમહોત્સવદિવસમ્, ઉપસ્થિતં=સમાયાતં જ્ઞાત્વા  
યત્રૈવ પ્રતિબુદ્ધિર્નામ ઈશ્વાકુરાજરત્રૈવોપાગચ્છતિ । ઉપાગત્ય કરતલ પરિગૃહીતં શિર-  
આવર્તે દશનસ્વં મસ્તકેઽંજલિં કૃત્વા એવં=વક્ષ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્=હે સ્વામિન્ ।  
એવં સ્વલુ મમ કલ્પે આગમિદિવસે નાગયજ્ઞકથાપિ મવિવ્યતિ, તદ્=તસ્માત્ ઇચ્છામિ

यह अमात्य साम, दण्ड, और मेद नीति में कुशल था । शत्रु को  
शांति से बश करना यह साम नीति है, युद्ध से बश करना-उसे परा-  
स्त कर अपने आधिपत बसाना-यह दण्ड नीति है-शत्रु की सेना में  
मंत्री तथा सैनिकों में विरोध उत्पन्न कराना इस का नाम मेद है ।  
( तर्ण पउमावईए देवीए अन्नया कयाई नागजन्नए यावि होत्था )  
एक समय की बात है कि पद्मावती देवी के यहाँ नागयज्ञ के महोत्सव  
का दिन आया । ( तर्ण सा पउमावई नागजन्न मुबद्धियं जाणिस्ता जेणेव  
पडिबुद्धी-तेणैव उवागच्छइ ) अतः वह पद्मावती देवी नाग यज्ञ-नागमहो-  
त्सव का दिन आया हुआ जान कर जहाँ अपने पति प्रतिबुद्धि राजा थे  
वहाँ गई । ( उवागच्छिस्ता करयल परिगग्हियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए  
अंजलिं कट्टु एवं बयासी ) वहाँ जाकर उस ने राजा को दोनों हाथों की  
अंजलि बनाकर और मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-बाद में वह  
इस प्रकार कहने लगी- ( एवं स्वलु सामी मम कल्लं नाग जन्नए

તે અમાત્ય સામ દંઢ તેમજ મેદ નીતિમાં કુશળ હતો. શત્રુને શાંતિથી  
વશકરવો તે સામનીતિ છે. યુદ્ધ લડીને વશ કરવો, તેને હરાવવો અને  
પોતાને અધીન કરવો તે દંઢનીતિ તે. શત્રુની સેનામાં મંત્રી તેમજ સૈનિકોમાં  
વિરોધ ઉત્પન્ન કરવો તે મેદ નીતિ છે. ( તર્ણ પડમાવઈએ દેવીએ અન્નયા  
કયાઈ નાગજન્નએ યાવિહોત્થા ) એક સમયની વાત છે કે પદ્માવતી દેવીને ત્યાં  
નાગયજ્ઞ નો મહોત્સવ દિવસ આવ્યો. ( તર્ણ સા પડમાવઈ નાગજન્નમુવદ્ધિયં  
જાણિસ્તા જેણેવ પડિબુદ્ધિ તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ) નાગ મહોત્સવ ના દિવસની બાહુ  
થતા પદ્માવતી દેવી પ્રતિબુદ્ધ રાજાની પાસે ગઈ. ( ઉવાગચ્છિસ્તા કરયલપરિ-  
ગહિયં સિરસાવત્તં દસનહં મત્થએ અંજલિં કટ્ટુ એવં બયાસી ) ત્યાં બેઠે તેણે બે  
હાથોની અંજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી કહ્યું  
( એવં સ્વલુ સામી મમ કલ્લં નાગ જન્નએ યાવિ મવિસ્સઈ તં ઇચ્છામિ ણં



खलु, स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता=आदिष्टासती नागयज्ञकं गन्तुं नागमहोत्सवं कर्तुं=नागगृहं गन्तुम् 'इच्छामी' ति पूर्वण समन्वयः । हे स्वामिन् ! यूयमपि खलु मम नागयज्ञे=नागपूजायां समवसरत=आगच्छत यत्तु 'मया सार्धं समागच्छत इत्यर्थः' इति व्याख्यातं तत् प्रमादिकम् पद्मावत्या उक्तिं स्वीकृत्य हि राज्ञः पद्मावद् गमनपरं शास्त्रं विरुध्येत । ततस्तदनन्तरं खलु स प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको नृपः पद्मावत्या देव्या एतमर्थम्=मार्थनारूपं प्रतिबुध्नोति=स्वीकरोतिस्मिन् । ततः खलु पद्मावती प्रतिबुद्धिना राज्ञाऽभ्यनुज्ञाता दृष्टा तृष्ठा० यावत् कौटुम्बिकपुरुषान् आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवं=वक्ष्यमाण-प्रकारेणात्रादीत्- हे देवानुप्रियाः ! एवं खलु मम कल्ये नागयज्ञको भविष्यति,

यावि भविस्सह, तं इच्छामिणं सामी ! तुभेहि अम्मणुन्नाया समाणी नागजन्नए यं गमित्तए ) स्वामीन् ! कल नागमहोत्सव होगा-मैं कल नागमहोत्सव मनाऊंगी-अतः आपसे आज्ञा लेने आई हूँ अतः आप आज्ञा दे तो मैं कल नागमहोत्सव मनाने के लिये नाग गृह जाऊँ । हे स्वामिन् ! आप भी मेरे इस उत्सव में पधारे ।

( तएणं पडिबुद्धी पडमावईए देवीए एयमहं पडिबुणेह ) पद्मावती देवी के इस कथन को सुनकर प्रतिबुद्धि राजा ने उस के प्रार्थना रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया ( तएणं पडमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अम्मणुन्नाया हट्टुट्टु जाव कोटुंविण पुरिसे सहावेह ) इस के अनन्तर प्रतिबुद्धि राजा से आज्ञापित हुई वह पद्मावती देवी बहुत अधिक हर्षित एवं संतुष्ट हुई । यावत् उस ने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया ( सहाविस्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम, कल्लं नागजण्णए भविस्सह,

सामी । तुभेहि अम्मणुन्नाया समाणी नागजण्णएयं गमित्तए )

हे स्वामिन् आवती कावे भारे त्यां नाग महोत्सव थये. हुं आवती कावे महोत्सव उल्लववानी छुं. ओथी नाग महोत्सव उल्लववानी तभारी पासैथी आज्ञा भोगववा आवी छुं. तभारी आज्ञा थाय तों हुं आवती कावे नाग महोत्सव भाषुवा नागधर लठिं. हे स्वामि ! उत्सवमां पधारवा तभने पणु हुं आभं'त्रणु आपु छुं.

( तएणं पडिबुद्धि पडमावईए देवीए एयमहं पडिबुणेह ) पद्मावती उं कथन सांक्षणीने प्रतिबुद्धि राजाये तेनी विनंती स्वीकारी दीधी. " तएणं पडमावई पडिबुद्धिणा रत्ता अम्मणुन्नाया हट्टुट्टु जाव कोटुंविणपुरिसे सहावेह " प्रतिबुद्धि राजा पडे आज्ञाकित थयेवी राष्ट्री पद्मावती देवी अण्णल्ल ङ्खितं तेमज संतुष्ट अध. यावत् तेष्से कौटुंजिक पुद्धाने गेलाव्या,

तद्=तस्मात् यूयं मालाकारान् शब्दयत, शब्दयित्वाएवं वदत-एवं खलु पद्मावत्या  
देव्याः कल्ये=प्रभाते नागयज्ञकः=नाग महोत्सवो भविष्यति तद्=तस्माद् यूयं खलु  
हे देवानुमियाः जलस्थलजभास्वरप्रभूतं जलोत्पन्नं विकसितं प्रचुरंदशार्ध वर्णं=पञ्च-  
वर्णमालयं कुसुमजातं माल्यं च नागगृहे सहरत=समानयत. एकंच खलु महत् श्रीदाम-  
काण्डमुपनयत. समानयत । ततः खलु जलस्थलज भास्वर प्रभूतेन दशार्धवर्णेन  
माल्येन-‘णाणाविह भक्तिषु-विरइयं’ नानाविध भक्ति मुरचितम् अनेकप्रकारकचित्ररचना  
सुशोभितं, पुष्पमण्डपं विरचयतेति सम्बन्धः, पुनः कथंभूतं तदित्याह-‘हंसमियमल-  
रकोच सारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेवं’ हंसमृगमयूरकोञ्चसारसचक्रवाक  
मदन शालकोकिल कुञ्जोपपेतम्-इंसादि कोकिलान्ताः प्राग् व्याख्याताः, तेषां कुलैः  
समूहैश्चित्ररूपैरुपपेतं युक्तं, ‘ईहामियजावभत्तिचिचं’ ईहामृग यावद् भक्तिचित्रम्

तं तुम्हे मालागारे सदावेह, सदावित्ता एवं वदह एवं खलु पद्मावईए  
देवीए कल्लं नाग जणणए भविस्सइ ) बुलाकर उन से उस ने ऐसा कहा  
देवानुमियो ! मेरे यहाँ कल नागमहोत्सव होगा-इसलिये तुम लोग  
मालियों को बुलाओ-और बुलाकर उन से ऐसा कहो-कि पद्मादेवी के  
कल नाग यज्ञ होगा । ( तं तुम्हेणं देवाणुप्पिया ! जल थलय० दसद्धवन्ने  
मल्लं णागधरयंसि साहरह ) सो तुम सब हे देवानुमियो ! जलथल में  
उत्पन्न हुए विकसित पंचवर्णों के पुष्पों को नागघर पर पहुँचाओ  
और साथ में एक महान् श्रीदामकाण्ड को भी । ( तएणं जलथल०  
दसद्धवन्ने णं मल्लेणं णाणा विह भत्तिस्सु विरुयं हंस मिय मउर कोच  
सारसचक्रवायमयणसालकोइलकुलोववेयं ईहामिय जाव भत्तिचिचं

“ सदावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया मम कल्लं नाग जणणए  
भविस्सइ, तं तुम्हे मालागारे सदावेह सदावित्ता एवं वदह एवं खलु पद्मावईए  
देवीए कल्लं नागजणणए भविस्सइ ”

गोदावरीने तेभने कल्लुं- “ देवानुमियो ! मेरे त्थां आपती कडे नाग  
महोत्सव थसे. ओथी तथे भाणीओने गोदावो अने गोदावरीने तेभने ओ  
प्रभाणे कडे के कडे पद्मावती देवीने त्थां नाग महोत्सव थसे. ( तं तुम्हेणं  
देवाणुप्पिया ! जल थलय. दसद्धवन्ने मल्लं णागधरयंसि साहरह ) तो हे  
देवानुमियो ! तमे णधा ञण थणभा उत्पन्न थयेवां पांथ रणेना पुण्णेने  
अने श्रीदामकांडने नागधरेभां पडोत्थाडे

“ तएणं जल थल० दसद्धवन्ने णं मल्लेणं णाणाविह भत्तिस्सु विरुयं हंस  
मियमउर काँच सारस चक्रवायमयणसाल कोइलकुलोववेयं ईहामिय जाव  
भत्ति चिचं महग्घं महरिहं विपुलं पुष्पमंडवं विरएह )

અત્ર યાવચ્છબ્દેન — ‘ઈદામૃગેત્યનન્તરં — વૃષભતુરગમકરવિહગવ્યાલકકિઞ્ઞરુશરમકુઞ્જરવનલતાપદ્મલતા’ ઇતિપાઠસ્ય ગ્રહણમ્ । ઈદામૃગો વૃકઃ, રુક્ષરમૌ મૃગજાતિવિશેષૌ અન્યે સ્પષ્ટાર્થાઃ તેષાં ભક્ત્યા ચિત્રરચનયા ચિત્રસુ-આશ્ચર્ય જનકંમ્, ‘મહર્થ’ મહાર્થ-મહામૂલ્યકં ‘મહરિહં’ મહાર્થ-મહતાં યોગ્યં, વિપુલં વિસ્તીર્ણમ્, ઈદૃશં પુષ્પમંડપં વિરચયત કુરુતેત્યર્થઃ । તસ્ય પુષ્પમંડપસ્ય સ્વલ્લુ બહુમધ્યદેશભાગે-સર્વથા મધ્યભાગે એકં મહત્ શ્રી દામકાષ્ઠં યાવત્ પાટલાદિપુષ્પ સમૂહસહિતગન્ધગ્રાણિ ગન્ધવૃત્તિ મુશ્વત્-પ્રદદત્ ‘ઉલ્લોચંસિ’ ઉલ્લોચે=ચન્દ્રા-તપે વસ્ત્રનિર્મિતવૃદ્ધાભ્યન્તરિકાવરણે-‘ઓલંબેહ’ અવલમ્બયતઃ, ઓલંબિતા અવ-

મહર્થં મહરિહં વિપુલં પુષ્પમંડવં વિરપહ્ ) હસ કે અનન્તર લે સબ જલ થલ કે વિકસિત પંચવર્ણો કે પુષ્પોં સે ઓર અનેક પ્રકાર કે ચિત્રોં કી રચના સે સુશોભિત એક પુષ્પ મંડપ બનાવે, હસ મંડપ કો લે હંસ મૃગ, મયૂર, ક્રૌંચ, સારસ, ચક્રવાક, મદનશાલ કોકિલ હન સબ કે ચિત્રોં સે સુશોભિત કરેં ઈદા મૃગ-વૃક, વૃષભ, તુરગ, મકર, વિહગ, વ્યાલક-સર્પ, કિઞ્ઞર, ઇષ, શરભ, કુંજર-વનલતા ઓર પદ્મલતા હન કે ચિત્રોં કી રચના સે હસે આશ્ચર્ય કારક બનાવેં ।

વહ પુષ્પ મંડપ કીમતી મહારુષોં કે યોગ્ય; એવં વિસ્તીર્ણ હો એસા બનાવેં । ( તસ્સર્ણં બહુમજ્જદેસમાપ ઇદં મહં સિરિદામગંઢં જાવ ગંધદ્વણિં મુયંતં ઉલ્લોચંસિઓલંબેહ, ઓલંબિતા પડમાવહં દેવીં પઢિવાલે માણા ૨ ચિદ્વહ, તણં તે કોઢુંબિયા જાવ ચિદ્વંતિ ) ઓર હસ કે ઠીક મધ્ય ભાગ મેં તને હુપ ચંદોવા કે નીચે એક બડા ખારી શ્રીદામ

અને ત્યાર બાદ બળથળ ના વિકાસ થયેલા પંચવર્ણોના પુષ્પોથી તેમજ જાત જાતના ચિત્રોની રચનાથી શોભતો એક પુષ્પોનો માંડવો બનાવે. હંસ, મૃગ, મેર, ક્રૌંચ, સારસ, ચક્રવાક મદનશાલ અને કાચલ આબધાં પશુ પંખીઓ નાં ચિત્રો થી માંડવાને શબ્દગારે તથા ધંડામૃગ, વરુ, બળદ, ઘોડા, મગર, પક્ષી વ્યાલક, ( સર્પ ), કિન્નર, રુરુ, શરભ, હાથી, વનલતા, અને પશુલતાના સુંદર ચિત્રોથી માંડવાને અદ્ભુત રીતે સુશોભિત કરે.

પુષ્પમંડપ કિંમતી તેમજ મહાપુરુષોને યોગ્ય વિશાળ હોવો જોઈએ.

( તસ્સર્ણં બહુમજ્જદેસમાપ ઇદં મહં સિરિદામગંઢં જાવ ગંધદ્વણિં મુયંતં ઉલ્લોચંસિ ઓલંબેહ, ઓલંબિતા પડમાવહં દેવીં પઢિવાલેમાણા ૨ ચિદ્વહ, તણં તે કોઢુંબિયા જાવ ચિદ્વંતિ )

અને તાણેલા ચંદ્રવાની નીચે ઠીક મધ્યભાગમાં નાકને પોતાની સુવાસ થી નૃત્ય કરાવનાર એક, બહુ મોટો શ્રીદામકાંડ લટકાવે.

लस्य पद्मावतीं देवीं ' पडिवाछेमाणा ' प्रतिपालयन्तः २ प्रतीक्षमाणाः प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततस्तदनन्तरं खलु ते कौटुम्बिकाः कौटुम्बिकपुरुषाः यावत्-यथापद्मावत्यासमादिष्टं तथा कृत्वा पद्मावतीदेवीं प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्तिस्मा॥ सू० १५॥

मूलम्—तएणं सा पउमावई देवी कल्लं० कोडुंबिण एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नगरं सन्निभतर बाहिरियं आसित्त समज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति तएणं सा पउमावई देवी दोच्चंपि कोडुंबिय० खिप्पामेव लहुकरण-जुत्त० जाव जुत्तामेव उवटुवेह, तएणं तेऽपि तहेव उवटुवेति । तएणं सा पउमावई देवी अंतो अंते उरंसि णहाया जाव धम्मियं जाणं दुरूढा, तएणं सा पउमावई देवी नियगपरिवाल संपरिवुडा सागेयं नगरं मज्झंमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरणिं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसूइभूया उल्लपडसाडिया जाइं

काण्ड-पुष्पो का गजरा—कि जिस से नासिका इन्द्रिय को तृप्ति कारक गंध निकल रही हो को लटकावें । लटका कर फिर मुझ-पद्मावती की वहां प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहें । इस प्रकार उन कौटुम्बिकपुरुषों से पद्मावती देवी ने ऐसा कहा—पद्मावती देवी के इस कथनानुसार सब ही काम उन कौटुम्बिक पुरुषों ने किया—अर्थात् मालियों को बुलाया—और उन से इस पूर्वोक्त प्रकार के पुष्प मंडप की रचना करने को कहा—उन्होंने सब कार्य व्यवस्थित ढंग से कर दिया और पद्मावती देवी की प्रतीक्षा करते हुए वे सब वहां ठहरे रहे । सूत्र “ १५ ”

लटकावने भारी-पद्मावती देवीनी जथा त्यां प्रतीक्षा करता शोकाय, आ भ्रातृ पद्मावती देवीको कौटुम्बिक पुरुषोंने नागमंडोत्सव विषे सूचने आभ्यां पद्मावती देवीना आदेश मुख्य कौटुम्बिक पुरुषोंको माणीकोने छोड़ाव्या अने छोड़ावने तेमने यथायोग्य पुरुषमंडप बनाववानी आज्ञा आपी, आ भ्रातृ जंधु काम व्यवस्थित रीते पतावने पद्मावती देवीनी राख जेता तेको त्यां शोकाया, ॥ सूत्र “ १५ ” ॥

तत्थ उप्पलाईं जाव गेण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव  
पहारेत्थ गमणाए, तएणं, पउमावईए दासचंडीओ बहूओ  
पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडुच्छुगहत्थगयाओ पिट्ठओ सम-  
णुगच्छंति । तएणं पउमावई सव्विड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नागघरयं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता  
लोमहत्थगं जाव धूवं डहइ, डहित्ता पडिबुद्धिं पडिवालेमाणी  
पडिवालेमाणी चिट्ठइ ॥ सू० १६ ॥

टीका:—‘ तएणं सा ’ इत्यादि-ततस्तदनन्तरं खलु सा पद्मावती देवी  
कल्ये द्वितीयदिवसे प्रभाते कौटुम्बिकान्=आज्ञाकारिणः पुरुषान् एवं=वक्ष्यमाण-  
प्रकारेणावादि-भो देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव, साकेतं नगरं ‘ सन्मितर  
बाहिरियं ’ साम्यन्तरवाहं=अभ्यन्तरेण-मध्यभागेन सह बाह्यं वहिर्भागं यत्र तत्-  
‘ आसित्तसम्मज्जिओवलित्त ’ आसित्तं संमार्जितोपलिप्त=आसित्तं=सुगन्धितजले-  
राद्रीकृतं संमार्जितं=मार्जन्यादिभिः कचवरापसारणेन निर्मलीकृतं पश्चादुपलितं

‘ तएणं सा पउमावई देवी इत्यादि ’ ।

टीकार्थः—(तएणं) इस के बाद (सा पउमावई देवी) उस् पद्मावती देवीने  
(कल्लं कोडुबिए एवं वयासी ) दूसरे दिन प्रातःकाल उन कौटुम्बिक  
पुरुषों से ऐसा कहा—( खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नगरं  
सन्मितर बाहिरियं आसित्त सम्मज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणेंति )  
‘ भो देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही साकेत नगर को भीतर बाहिर  
सुगन्धित जल से सींचो, बुहारु लेकर उसे कूड़ा कर कट कचरा हटाकर  
बिलकुल साफ करो, गोबर आदिसे उसे लीपों इस प्रकार पद्मावती देवी

‘ तएणं सा पउमावई देवी ’ इत्यादि

टीकार्थः ( तएणं ) त्थार भाव ( सा पउमावई देवी ) पद्मावती देवीने ( कल्लं  
कोडुबिए एवं वयासी ) जीने दिवसे सवारै कौटुम्बिक पुरुषोंने आ प्रभाते कल्लं

( खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नगरं सन्मितरबाहिरियं आसित्त  
सम्मज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणेंति )

छे देवानुप्रियो ! तमे लोके सत्तरे साकेत नगरा नी भडार अने अंदर  
सुवासित पाणी छांटे सारणीथी कचरे ओकदम साई करे अने छाणु वगेशी  
दीया पद्मावती देवीनी आज्ञा सांभलीने कौटुम्बिक पुरुषोंने ते प्रभाते ज

ગોમયાદિનાઽનુલિસં કુરુત યાવત્ પ્રત્યર્પયન્તિ-યથા-પદ્માવતી દેવ્યા આદિદ્વં  
તથા કૃત્વા તે કૌડુમ્બિકા હે સ્વામિન્યઃ સર્વં સાધિતમસ્માભિરિતિ-તદાજ્ઞાં પ્રત્યર્પ-  
યન્તિ-આવેદયન્તિ સ્મ । તતસ્તદનન્તરં સા પદ્માવતી દેવી ' દોઢ્ધંચંપિ ' દ્વિતીય-  
વારમપિ કૌડુમ્બિકપુરુષાન્ શબ્દયિત્વા એવમવાદિત્-હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! ક્ષિપ્રમેવ  
' લહુકરણજુત્ત૦ ' લપુકરણયુક્ત૦ યાવદ્ યુક્તમેવ વૃષભૈર્યુક્તાં કૃત્વા રથમુપસ્થાપ-  
યત । તતસ્તદનન્તરં ચલુ તેઽપિ કૌડુમ્બિકપુરુષાઅપિ યથા પદ્માવત્યા સમાદિદ્વં  
તથૈવ રથમુપસ્થાપયન્તિ । તતઃ ચલુ સા પદ્માવતી દેવી અન્તોઽન્તઃપુરે=અન્તઃ  
પુરસ્ય મધ્યે સ્નાતા યાવદ્ સર્વાલંકાર વિશૂષિતા ધાર્મિકં યાનં=રથં, દુરુદ્ધા=આરો-

કે આદેશ કો પાકર ડન કૌડુમ્બિક પુરુષો ને વૈસા હી સબ કુછ કાર્ય-  
યાવત્ કર દિયા ઓર પીછે પદ્માવતી કે પાસ જાકર કહા-સ્વમિની-  
આપને જૈસા કામ કર ને કો કહા યા હમ ને વહ કામ વૈસા હી કર  
દિયા હૈ । ( તર્ણ સા પડમાવડૈ દેવી દોઢ્ધંચંપિ કૌડુમ્બિય૦ લિપ્પામેવ  
લહુ કરણ જુત્ત૦ જાવઃ જુત્તામેવ ઉવદ્ધવેહ, તર્ણ તે વિ તદેવ ઉવદ્ધાવૈતિ )  
હુસકે બાદ પદ્માવતી દેવીને દુવારા મી ડન કૌડુમ્બિક પુરુષોકો બુલાયા  
ઓર બુલાકર કહા-મો દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ શીઘ્ર હી જલ્દી ૨ ચાલ  
સે ચલને વાલે બૈલોં કો જોત કર યહાં એક રથ કો ઉપસ્થિત કરો ।  
પદ્માવતી કી હુસ આજ્ઞા કો પાકર વે કૌડુમ્બિક પુરુષ મી પદ્માવતી કે  
આદેશાનુસાર રથ કો બૈલોં સે યુક્ત કર લે આચે । ( તર્ણ સા પડમા-  
વડૈ દેવી અંતો અંતેઽરંસિ ણ્હાયા જાવ ધમ્મિયં જાણં દુરુદ્ધા ) રથ  
જબ આ ચુકા-તબ પદ્માવતી દેવી ને અન્તઃ પુર કે મીતર હી સ્નાન કિયા  
યાવત્ સમસ્ત અલંકારોં સે આપને આપ કો વિશૂષિત કર ફિર વહ

કથું અને ત્યાર બાદ તેમની પાસે આવીને કહેવા લાગ્યા-હે સ્વામિનિ ! તમે  
એ કામ કરવાની અમને આજ્ઞા આપી હતી તે કામ અમે એ સરસ રીતે  
પૂર્ણ કરી દીધું છે.

તર્ણ સા પડમાવડૈદેવી દોઢ્ધંચંપિ કૌડુમ્બિય લિપ્પામેવ લહુકરણ જુત્તા૦  
જાવ જુત્તામેવ ઉવદ્ધવેહ તર્ણ તેવિ તદેવ ઉવદ્ધાવૈતિ )

ત્યાર બાદ પદ્માવતી દેવીએ બીજા વાર કૌડુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા  
અને બોલાવીને કહ્યું “ હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સત્વરે શીઘ્ર નતિ વાળો બળદ  
બેતરીને એક રથ લાવો. પદ્માવતી દેવીની આગ્રહાણે આજ્ઞા સાંભળીને કૌડુમ્બિક  
પુરુષો પશુ તેમની આજ્ઞા મુજબ રથમાં બળદ બેતરીને લઈ આવ્યા. ( તર્ણ  
સા પડમાવડૈ દેવી અંતો અંતેઽરંસિ ણ્હાયા જાવ ધમ્મિયં જાણં દુરુદ્ધા ) બીજા  
રથ સંબંધ થઈને આવી ગયો ત્યારે પદ્માવતી દેવીએ રણવાસની અંદર જ  
સ્નાન કર્યું યાવત્ સર્વ પ્રકારના ઘરેણાંઓથી પોતાના શરીરને શણગાર્યું  
અને ત્યાર પછી તે ધાર્મિક રથમાં બેસી ગઈ.

इतिस्म । ततः खेळुं सा पद्मावती देवी निजकपरिवारसंपरिवृता संख्यादिपरि-  
 वारेण युक्ता साकेतनगरं मध्यमध्येन निर्याति=निर्गच्छति । निर्याय=निर्गत्य  
 यत्रैव पुष्करणी कमलयुक्ता वापी वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पुष्करणीमव-  
 गाढते=प्रविशति । अवगाह्य जलमज्जनं यावत्-स्नानं कृत्वा परमशुचिभूता 'उल्लप-  
 ङ्गसाडिया' आर्द्रपटशाटिका, सार्द्रपरिधानीयवस्त्रा यानि तस्यां पुष्करिण्यामुत्प-  
 लानि यावत्पद्मादीनि तानि गृह्णाति गृहीत्वा यत्रैव नागगृहं वर्तते तत्रैव प्रधारयति  
 प्रवर्तते गमनाय । ततस्तदनन्तरं खलु पद्मावत्या दासवेदयो बह्व्यः पुष्पपटल-  
 कहस्तगताः=हस्तपरिवृतपुष्पकरण्डकाः धूपकडुच्छुकहस्तगताः=धूपाधारपात्राणि

उस धार्मिक यान पर रथ पर आरुढ हो गई । ( तएणं सा पडमावई  
 देवी नियगपरिवाल संपरिवुडा सागेयं नयरं मज्झं मज्झे णं णिज्जाइ  
 णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ ) इस के बाद पद्मावती  
 देवी अपने परिवार से घिरी हुई होकर उस साकेत नगर के ठीक बीचों  
 बीच के मार्ग से होकर निकली-निकल कर वह जहां कमलों से युक्त  
 वापी थी-वहां पर आई- ( उवागच्छित्ता पुक्खरणि ओगाहइ ) आकर  
 उस ने उस पुष्करिणी में प्रवेश किया - ( ओगाहित्ता जलमज्जनं  
 जाव परमसुइभूया उल्ल पड साडिया जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हइ )  
 प्रवेश कर जल स्नान किया यावत् परम शुची भूत बनी हुई उस ने  
 गीली साड़ी पहिं ने ही पुष्करिणी से कमल चुन लिये ( गिण्हित्ता जेणे-  
 व नागघरण तेणेव पहारेत्थ गमणाए ) चुन कर फिर वह जहां नाग  
 घर था उस ओर चल दी- ( तएणं पडमावईए दासवेडीओ बहूओ

( तएणं सा पडमावईदेवीनियग परिवालसंपरिवुडा सागेयं नयरं मज्झं  
 मज्जेणं णिज्जाइ णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छइ )

त्यास आढ पद्मावती देवी पीताना संपूर्ण परिवारनी साथे साकेत नग-  
 रीनी भरा भर मध्यभागं भां यधने पसार यधं अने न्यां कभयो युक्त वाप  
 ढती त्यां पडोंथी ( उवागच्छित्ता पुक्खरणि ओगाहइ ) त्यां पडोंथीने ते  
 पुष्करिणी ( कभगवाव ) भां उतरी.

ओगाहित्ता जलमज्जनं जाव परमसुइभूया उल्ल पडसाडिया जाइं तत्थ  
 उप्पलाइं जाव गेण्हइ )

उतरीने तेणे पाणीभां स्नान कयुं यावत् ते पशु पवित्र यधने तेणे  
 धीनां दुगांथीव पुष्करिणीभांथी कभयो भूट्यां. (गोण्हित्ता जेणेव नागघरण तेणेव  
 पहारेत्थ गमणाए ) भूट्या आढ पद्मावती देवी न्यां नागघर ढटुं ते तश्च गधं.

હસ્તે ધૃતવત્યઃ પૃષ્ઠતઃ સમનુગચ્છન્તિ । તતઃ સ્વલ્લ સા પદ્માવતી દેવી સર્વદર્યા= સચિદાસ્યાદિપરિજનૈઃ સહ યત્રૈવ નાગમૃદં તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય નાગમૃદ- મનુપ્રવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય રોમહસ્તકં=મયૂરપિચ્છનિર્મિતમાર્જનીં મૃદીત્વા નાગમૃદં સંમાર્જ્યં યાવદ્ ધૂપં દહતિ, નાગમૃદામ્યન્તરે સમન્તાત્ ધૂપં દહતિ સ્મ । ધૂપં દગ્ધ્વા પ્રતિબુદ્ધિ=પ્રતિબુદ્ધિનૃપં સ્વપતીં પ્રતિપલયન્તી પ્રતિપાલયન્તી=પુનઃ પુનઃ પ્રતીક્ષમાણા તિષ્ઠતિ સ્મ ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

પુષ્પપટલગહત્યગયાઓ ધ્રુવકડુચ્છગહત્યગયાઓ પિટ્ટઓ સમનુગ-  
ચ્છન્તિ ) ઉસ કે પીછે ૨ ઉસ કી અનેક દાસ ચેટિયા પુષ્પ કરણ્ડો કો  
ઔર ધૂપ કે પાત્રોં કો હાથોં મેં લિયે હૂપ ચલી । ( તર્ણ પડમાવર્દ  
સન્નિહિત્વે જેણેવ નાગધરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા નાગધરયં  
અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા લોમહત્યગં જાવ ધૂવં હહહ હહિત્તા પટિ-  
બુદ્ધિ પટિવાલેમાણી ૨ ચિટ્ટહ ) ઇસ કે અનન્તર પદ્માવતી સચ્ચી, દાસી  
આદિ પરિજન રૂપ અપની સમસ્ત કદ્ધિ કે સાથ જહાં વહ નાગ ઘર  
થા વહાં આઈ-વહાં આકર વહ નાગ ઘર કે ખીતર ગઈ ખીતર જાકર  
ઉસ ને વહાં રસી હુઈ મયૂર પિચ્છ નિર્મિત માર્જની કો ઉઠાયા-ઉઠા કર  
ઉસ ને ઉસસે ઉસ નાગઘર કો જ્ઞાઢા જ્ઞાઢ કર ફિર ઉસ ને વહાં  
યાવત્ ધૂપ જલાઈ । ધૂપ જલા કર ફિર વહ અપને પતિદેવ પ્રતિબુદ્ધિ  
રાજા કી પ્રતીક્ષા કરતી હુઈ બેઠ ગઈ । સૂત્ર “ ૧૬ ”

( તર્ણ પડમાવર્દ દાસ ચેટીઓ વહુઓ પુષ્પપટલગહત્યગયાઓ ધ્રુવકડુ-  
ચ્છગહત્યગયાઓ પિટ્ટઓ સમનુગચ્છન્તિ )

તેની પાછળ ધણી દાસ-દાસીઓ પુષ્પ-કરણ્ડકો તેમજ ધૂપદાનીઓ  
હાથોમાં ઉચકી ચાલવા લાગી.

(તર્ણ પડમાવર્દ સન્નિહિત્વે જેણેવ નાગધરે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિત્તા  
નાગધરય અણુપવિસહ અણુપવિસિત્તા લોમહત્યગં જાવ ધૂવં હહહ હહિત્તા પટિબુદ્ધિ  
પટિવાલેમાણી ૨ ચિટ્ટહ )

આરીતે પદ્માવતી દેવી સચ્ચી દાસી વગેરે પરિજન રૂપ પોતાની સંપૂર્ણ  
કદ્ધિની સાથે જ્યાં તે નાગધર હતું ત્યાં પહોંચી અને ત્યાં પહોંચીને તે  
નાગધરની અંદર ગઈ. ત્યાં જઈને તેણે ચોરપીંછી હાથમાં લીધી અને ત્યાર-  
પછી તેણે નાગધરને સ્વચ્છ બનાવ્યું. નાગધરની સફાઈ કરાવે તેણે ધૂપ સળગાવે  
અને પછી પોતાના પતિ પ્રતિબુદ્ધિની પ્રતીક્ષા કરતી ત્યાં જ બેસી ગઈ. સૂ. ૧૬



सूक्ष्म—तएणं पडिबुद्धी णहाए हत्थिखंधवरगते सकोरंट जाव  
 सेयवरचामराहिं० हयगयरहजोहमहयाभडगचडकरपहकरेहिं सा-  
 केयनयरं० णिगच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव नागघरे तेणेव उवा-  
 गच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आ-  
 लोए पणामं करेइ, करित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ अणुपविसित्ता  
 पासइ तं एगं सहं सिरिदामगंडं। तएणं पडिबुद्धी तं सिरिदाम-  
 गंडं सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तांसि सिरिदामगंडंसि  
 जाय विम्हयमणे सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—तुमन्नं देवाणु-  
 प्पिया ! मम दोच्चंणं बहूणि गामागर जाव सन्निवेसाइं आहिं-  
 डसि बहूणि रायईसर जाव गिहाइं अणुपविससि तं अत्थि णं  
 तुमं कहिंचि परिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुवे जारिसए णं इमं  
 पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?

तएणं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वयासी — एवं खलु  
 सामी ! अहं अन्नया कयाइं तुब्भं दोच्चेणं मिंहिलं रायहाणि  
 गण, तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए  
 अत्तयाए मल्लीए संवच्छरपडिलेहणगंसि दिठ्ठवे सिरिदामगंडे  
 दिट्ठपुवे तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरिदाम-  
 गंडे सयसहस्सतमं कलं ण अग्घइ, तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिं  
 अमच्चं एवं वयासी—केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेह-  
 रायवरकन्ना जस्स णं संवच्छरपडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स  
 पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतमं कलं न  
 अग्घइ ?, तएणं सुबुद्धी पडिबुद्धि इवखायुरायं एवं वयासी—

विदेहरायवरकन्नगा सुपइड्डियकुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ,  
तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा  
णिसम्म सिरिदामगंडजणितहासे दूयं सदावेइ, सदावित्ता एवं  
वयासी—गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहणिं  
तत्थ णं कुंभगस्स रन्नो धूयं पभावईए देवीए अत्तयं मल्लिं  
विदेहवररायकण्णगं मम भारियत्ताए वरेहि जतिविय णं सा  
सयं रज्जं सुक्का, तएणं से दूए पडिबुद्धिणा रत्ता एवं वुत्ते समाणे  
हट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणिता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घटं  
आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरहं  
पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावित्ता दुरुढे जाव हयगयमहयाभडचड-  
गरेणं साएयाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए  
जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥सू०१८॥

टीकाः—ततस्तदनन्तरं खलु प्रतिबुद्धिः प्रतिबुद्धिनामको राजा स्नातो  
मुकुटाद्यलङ्कारवस्त्रविभूषितः हस्तिस्कन्धवरगतः ‘सकोरण्टमल्लदामेणं’ सको-  
रण्टमाल्यदाम्ना कोरण्टाल्य पुष्परतवकवन्ति माल्यदामानि पुष्पस्रजस्तैः सहितेन  
छत्रेण भ्रियमाणेन यावत् श्वेतवरचामरैरुद्धोजितैश्च सहितः, हयगजरथयोधमहा-

‘तएणं पडिबुद्धी णहाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (पडिबुद्धी) प्रतिबुद्धि राजाने (णहाए)  
स्नान किया बाद में वे मुकुट आदि अलंकारों से और राजसी वस्त्रों  
से अलंकृत होकर (हस्तिखंघवरगए) अपने पट्ट हाथी पर बैठ गये—  
(सकोरंट जाव सेयवरचामरार्हि० हयगयरह जोहमहया भड

‘तएणं पडिबुद्धिणहाए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थारथाड (पडिबुद्धि) प्रतिबुद्धि राजाने (णहाए) स्नान  
कथुं अने मुकुट वगेरे आभूषणो तेभए राजसी वस्त्रोथो अलंकृत थधने  
(हस्तिखंघवरगए) पोताना भास हाथी उपर सवार थथा.

(सकोरंट जाव सेयवर चामरार्हि० हयगयरह जोह महया भडचडकरेहिं  
साकेयनयरं निग्गच्छइ)

भट चरकरपहकरैः हय गजादीनां समूहैश्च सहितः साकेतनगरस्य मध्यभागेन निर्गच्छति । निर्गत्य स प्रतिबुद्धिवृत्तपो यत्रैव नागमृदं वर्तते तत्रैवोपागच्छति उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति=अवतरति प्रत्यवरह्ण=अधः प्रत्यवतीर्य आ-  
लोके=नागदर्शने प्राप्ते सति प्रणामं करोति कृत्वा पुष्पमण्डपं पञ्चावती निर्मापित-  
पुष्पमयमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य पश्यति तदेकं महत् श्रीदामकाण्डम् ।

चड कर पह करेहिं साके यं नगरं० निगगच्छइ ) उन के बैठते ही छत्र धारी ने उन पर कोरण्ट पुष्प के गुच्छों से निर्मित मालाओं से युक्त छत्र को तान दिया ।

चमर ढोर ने वालों ने उन पर श्वेत उत्तम चमर ढोरना प्रारंभ कर दिया । बाद में वे हय, गज आदि के समुदाय से युक्त होकर साकेत नगर के मध्यभाग से होकर निकले ( निगगच्छिता जेणेव नाग घरे, तेणेव उवागच्छइ ) निकल कर नागघर की ओर चल दिये ( उवाग-  
च्छिता इत्थि खंधाओ पच्चो रहइ, पच्चो रहिस्ता आलोए पणामं करेइ )  
वहां पहुँच कर वे उस हाथी से नीचे उतरे-उतर कर ज्यों ही उन्हें नाग प्रतिमा दिखलाई पड़ी तो उसी समय उन्होंने ने उसे नमस्कार किया ।

( करिस्ता पुष्पमंडपं अणुपविसइ, अणुपविसिस्ता पासइ, तं एगं महं सिरिदामगंडे ) नमस्कार कर फिर वे पञ्चावती देवी द्वारा निर्मापित पुष्प मंडप में प्रविष्ट हुए । वहां उन्होंने ने उस विशाल श्री दाम काण्ड

राज न्यारे हाथी उपर सवार थई गया त्यारे छत्र धारीओ - तेमना उपर डैरंट पुष्पांना शुन्धेथी अनेहुं तेमन भाणाओथी शे।सितुं छत्र ताण्थुं.

अमर धारीओ तेमना उपर अइइ तेमन उत्तम अमरः ढेणवा लाय्हा. आम प्रतिपुद्धि राज ड्य, गज पगेरे समुदायनी साथे साकेत नगरना मध्यभागे थईने ( निगगच्छिता जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छइ ) ने तरइ नागघर डंतुं ते तरइ गया.

( उवागच्छिता इत्थिखंधाओ पच्चोरहइ, पच्चोरहिस्ता आलोए पणामं करेइ )

त्यां पंडोचीने तेओ हाथी उपरथी नीचे उतर्या अने उतरिने न्यारे तेओओ नागप्रतिमाओ ओध त्यारे तरत न तेमणे तेमने नमन कथुं.

( करिस्ता पुष्प मंडपं अणुपविसइ, अणुपविसिस्ता पासइ, तं एगं महं सिरिदाम गंडे )

नमन कथी बाद राज पञ्चावती देवी वडे अनानवाभां आवेला पुष्प मंडपभां प्रविष्ट थया त्यां तेमणे मोटा श्रीदामकांडने ओथो.

ततस्तदनन्तरं खलु प्रतिबुद्धिस्तं श्रीदामकाण्डं सुचिरं कालं=बहुकालं निरीक्षते एकाग्रमनसा पश्यतिस्म । निरीक्ष्य तस्मिन् श्रीदामकाण्डे जातविस्मयः 'अपूर्वदृष्टमिदं श्रीदामकाण्डं' मित्याश्चर्यं प्राप्नोति सन् सुबुद्धिः=सुबुद्धिनामकममात्यं=स्वमन्त्रिणम्, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु मम 'दोच्चेणं' दौत्येन=इतो भूत्वा बहून् यावत् ग्रामाकरनगरसंनिवेशान् अहिण्डसि = परिभ्राम्यसि, बहूनि च राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकश्रेष्ठिसेनापतिसार्थवाहानां यावद् गृहाणि अनुप्रविशसि, तदस्ति खलु त्वया दृष्टपूर्वं को-देवा । (तएवं पडिबुद्धि तं सिरिदामगंडं सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तंसि सिरिदामगंडसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी) देख ने के बाद प्रतिबुद्धि राजा ने बहुत देर तक उस का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण किया ।

निरीक्षण करने के बाद उसे उस श्रीदामकाण्ड के विषय में बड़ा आश्चर्य हुआ । आश्चर्य युक्त होकर उसने अपने सुबुद्धि मंत्रीसे फिर इस प्रकार कहा-(तुमं णं देवानुप्पिया । मम दोच्चेणं बहूणि गामागर जाव गिहाइं अणुपविससि-तं अत्थि णं तुमं कहिंवि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठ पुण्वे जारिसए णं इमं पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे )

हे देवानुप्रिय ! तुम मेरे दूत होकर अनेक ग्रामों में अनेक आकरों में, अनेक नगरों में अनेक संनिवेशों में घूमते फिरते हो वहाँ बहुत से राजा, ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी सेनापति और सार्थवाहों के घरों में भी आते जाते रहते हो, तो क्या तुमने ऐसा

(तएवं पडिबुद्धि तं सिरिदामगंडं सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तंसि सिरिदामगंडसि जाय विम्हयमणे सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी)

तेने जेउने प्रतिबुद्धि राजाके सूक्ष्म दृष्टिथी गहु वअत सुधी तेहु निरीक्षषु कयु”.

राजाने श्रीदामकांड जेउने 'अनंग आश्चर्य' थयु. तेभणु पोतान्ता भंत्री सुबुद्धिने आ प्रमाणु कयु-

(तुमन् देवानुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर जाव गिहाइं अणुपविससि तं अत्थिं तुमं कहिंवि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुण्वे जारिसए णं इमं पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे)

हे देवानुप्रिय ! माराइत थयने तमे घषां गाभो, आउरो नगरो अने संनिवेशोभां इरता रडो छो, त्यां घषा राजा ईश्वर, तलवर, माडम्बिक कौटुम्बिक, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्थवाहोना निवास स्थानभां थयु आवागमन

कुञ्जचिदेतादृशं श्रीदामकाण्डम्, यादृशं खलु इदं पद्मावत्या देव्याः श्रीदामकाण्डं वर्त्तते । ततः खलु सुबुद्धिः सुबुद्धिनामा मन्त्री प्रतियुद्धिं राजानमेवं वक्ष्यमाण प्रकारेण अवादीत्—एवं खलु स्वामिन् ! अहमन्यदा कदाचित् युष्माकं दौत्येन दत्तो भूत्वा मिथिलां राजधानीं गतः ।

तत्र=मिथिलाराजधान्यां खलु मया कुम्भकस्य=कुम्भकनाम्नो राज्ञो दुहितुः पुत्र्याः प्रभावत्या देव्या आत्मजाया मल्लीयाः=कुम्भकनृपस्य पुत्री या प्रभावती देव्या आत्मजा=गर्भजा मल्ली नाम्नो कुमारी वर्षते तस्या इत्यर्थः, 'संवच्छरपरिलेहणगंसि' 'संवत्सरप्रतिलेखनके=वर्षपूर्ति संख्याकरणदिवसे वार्षिके जन्मदिवसोत्सवकाले इत्यर्थः दिव्यम् आश्चर्यकारकं श्रीदामकाण्डं दृष्टपूर्व=पूर्वकाले दृष्टम् । तस्य खलु श्रीदामकाण्डस्येदं पद्मावत्याः श्रीदामकाण्डं शतसहस्रतमां कलां

श्रीदामकाण्ड जैसा कि ये श्रीदामकाण्ड पद्मावती देवी का है कहीं देखा है ? ( तएणं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वयासी ) राजा की इस प्रकार बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उन प्रतियुद्धि राजा से इस तरह कहा ( एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाहं तुव्मं दोच्चेणं मिहिलं राय हाणिणं मए तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पमावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छरपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे ) स्वामिन् ! मैं किसी एक समय आपका दूत बनकर मिथिला राजधानीमें गयो हुआ था । वहाँ मैंने कुम्भक नरेश की पुत्री प्रभावती देवी की आत्मजा-गर्भजा-मल्ली कुमारी की वर्ष गांठ के अवसर पर आश्चर्य कारक श्रीदामकाण्ड को देखा था ।

( तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगंडे सयस-हस्सतमे कल्लं ण अगघइ ) उस के समक्ष पद्मावती देवी का यह श्री

कहे। छे, तो तभी पद्मावती देवीना जेवो श्रीदामकांड काँध स्थाने जेथे छे ? ( तएणं सुबुद्धि पडिबुद्धिरायं एवं वयासी ) राजानी आ प्रभावे वत साँलणीने आमात्य सुबुद्धिजे प्रतियुद्धि राजाने आ प्रभावे कहुं—

( एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाहं तुव्मं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिणं मए तत्थणं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पमावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए, संवच्छरपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे )

हे स्वामिन् ! ओह वज्रते तमारा इत तरीके जे हुं मिथिला राजधानी भां गये। छेतो।

त्यां मे कुंभक राजानी पुत्री प्रभावती देवीनी आत्मजा-पुत्री-मल्ली-कुमारीना जन्मोत्सव प्रसंगे जूणज नवार्धपमाडे तेवो श्रीदामकांड जेथे छेतो।

नार्हति । मल्लीकुमार्या यदस्ति श्रीदामकाण्डं तस्य शोभासुगन्धादिगुणानां लक्षां-  
शमपि प्राप्तुं न शक्नोति पद्मावत्याः श्रीदामकाण्डमित्यर्थः ।

ततः खलु प्रतिबुद्धिममात्यमेवमवादीत्—हे देवानुप्रिय ! कीदृशी खलु मल्ली  
विदेहराजवरकन्या यस्याः खलु संवत्सरप्रतिलेखनके श्रीदामकाण्डस्य पद्मा-  
वत्या देव्या श्रीदामकाण्डं शतसहस्रतमामपि कलां नार्हति ? । ततः खलु सुबुद्धिः  
प्रतिबुद्धिमिक्ष्वाकुराजमेवमवादीत्—हे स्वामिन् ! विदेह राजवरकन्यका मल्लीमाम्नी

दामकाण्ड लक्षांश ( लाखमा भाग भी सुन्दर और सुगंधीत में नहीं  
हैं ) भी नहीं हैं ( तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमरुच्चं एवं वयासी ) इस  
प्रकार सुनने के बाद प्रतिबुद्धि ने सुबुद्धि अमात्य से ऐसा कहा—  
( केरिसियाणं देवानुप्पियो ! मल्ली वीदेहरायवर कला ) हे देवानुप्रिय !  
विदेह राजा की वह उत्तम कन्या मल्ली कुमार कैसी है कि  
( जस्स णं संबच्छरपडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावईए देवीए  
सिरिदामगंडे सयसहस्सत्तमंपि कलं न अगघइ ) जिस की वार्षिक जयं-  
ती के श्रीदाम कांड के समक्ष पद्मावती देवी का यह श्रीदामकांड  
लक्षांश भी नहीं ज्ञात हो रहा है ।

( तएणं सुबुद्धिपडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वयासी ) इस तरह  
सुनकर सुबुद्धि ने इक्ष्वाकु वंशों में उत्पन्न प्रतिबुद्ध राजा से ऐसा कहा  
( विदेहरायवरकनगा सुपइडिय कुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ ) स्वा-

( तस्स णं दिरीदामगंडस्स इमे पउमावईए सिरिदामगंडे सय सहस्सतमे  
कलं ण अगघइ )

तेनी सामे पद्मावती देवीना आ श्रीदामकांड लक्षांश पणु नथी. ओटले  
के सुगंध के सौंदर्य जनेनी इष्टिओ मल्लीकुमारीना जन्मेत्सव प्रसंगना  
श्रीदामकांडनी सामे आ कंधं जन्थी ( तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमरुच्चं एवं  
वयासी ) आरीते सांखणीने प्रतिबुद्धिओ सुबुद्धि अमात्यने आ प्रभाणु कहुं—  
( केरिसियाणं देवानुप्पिया ! मल्ली वीदेहरायवरकला ) हे देवानुप्रिय ! विदेह  
राज पुत्री मल्लीकुमारी ओवी देवी छे के.

“ जस्स णं संबच्छरपडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावईएदे वीए सिरि  
दामगंडे सयसहस्सत्तमं पि कलं न अगघइ ”

जेमना जन्मेत्सवना श्रीदामकांडनी सामे पद्मावती देवीना आ श्रीदाम  
कांड लक्षांश पणु लागतो नथी.

( तएणं सुबुद्धि पडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वयासी ) आ रीते सांखणीने  
इक्ष्वाकुवंशमा उत्पन्न प्रतिबुद्ध राजाने सुबुद्धिओ कहुं ( विदेहरायवरकनगा

सुप्रतिष्ठितकूर्मोन्नतचारुचरणा, सुप्रतिष्ठितौ=सुष्ठुसंस्थानवन्तौ=कूर्मोन्नतौ=कूर्म  
पृष्ठगदुपर्युन्नतौ चारु=सुन्दरौ चरणौ यस्याः सा तथा, वर्णरुः=वर्णनं विशेषतो  
जम्बूद्वीपमज्ञप्त्यादौ द्रष्टव्यम् ।

ततः खलु प्रतिबुद्धिभूषः सुबुद्धेरमात्यस्यान्तिके एतमर्थं मल्लीकुमारी सौन्द-  
र्यादि गुणवर्णनरूपं श्रुत्वा=श्रवणं गोचरीकृत्य, निशम्य=अर्थतोऽवधार्य श्रीदामका-  
ण्डजनितहर्षः=श्रीदामकाण्डगुणश्रवणसंजातप्रमोदः सन् दूतं शब्दयति आह्वयति,  
शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! गच्छ खलु त्वं मिथिलां राजधानीं,  
तत्र खलु कुम्भरुस्य राज्ञो दुहितरं प्रभावत्या देव्या आत्मजां मल्लीं विदेहराजक-

मिन् । वह विदेहराज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी अच्छे आकार  
वाले, कूर्म की पृष्ठ के समान उन्नत सुन्दर चरण वाली है । इस का  
विशेष वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति आदि में किया गया है ।

( तएणं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमहं सोच्चा  
णिसम्म, सिरिदामगंडजणिनहासे दूयं सहावेइ ) इस प्रकार श्रीदाम  
कांड के गुणों के श्रवण से अत्यधिक हर्षित हुए प्रतिबुद्धि राजा ने  
सुबुद्धि अमात्य के मुख से मल्ली कुमारी के सौन्दर्य आदि गुणों का  
वर्णन सुनकर और उसे हृदय में निश्चित कर दूत को बुलाया ( सहा-  
वित्ता एवं वयासी ) बुलाकर उससे ऐसा कहा ( गच्छाहिणं तुमं  
देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणि ) हे देवानुप्रिय ! तुम मिथिला नाम की  
राजधानी को जाओ- ( तत्थ णं कुम्भरुस्स रण्णो धूयं पभावईए देवीए

सुपइद्विय कुम्मुन्नय चारुचरणा वन्नओ ) हे स्वामिन् ! ते विदेह राज्ञी  
उत्तमकन्या मल्लीकुमारी सरस आकारवाणा कायव्यानी पीठना जेवा सुंदर  
उन्नत चरणवाणी छे । ( तेमनुं विशेष वणुंन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति वगेरे भां कर-  
वाभां आणु छे

( तएणं पडिद्धि सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमहं सोच्चा णिसम्म सिरि-  
दामगंडजणितहासे दूयं सहावेइ )

आ प्रभाषे सुबुद्धि अमात्यना मोढेथी श्रीदामकांडना शुषु श्रवणुथी  
तेमज्ज मल्लीकुमारीना सौंदर्यं वगेरे शुषुणी यथी सांलग्गिने तेने हृदयभां  
अवधारित करीने थूणज्ज हर्षित थयेत्ता प्रणिबुद्धि राज्ञे इतने जोलाये।  
( सहावित्ता एवं वयासी ) जोलावीने तेने कहुं- ( गच्छाहिं णं तुमं देवाणुप्पिया !  
मिहिलं रायहाणि ) हे देवानुप्रिय ! तमे मिथिलानी राजधानीभां ज्ञेओ।

( तत्थणं कुम्भरुस्स रण्णो धूयं पभावईए देवीए अत्तयं मरिक्क विदेहराज  
कण्णगं मम भरियत्ताए वरेहिं )

ન્યકાં મમ માર્યાત્વેન ધરય, અયમર્થ:-હે દેવાનુપ્રિય ! મિથિલાં ગત્વા કુન્ભવન્દ્રપં  
જ્ઞહિ-સાકેતનગરાધિપતિઃ પ્રતિબુદ્ધિનામાનુપસ્તવ કન્યકાં મલ્લીં ધર્મપત્નીત્વેન  
પ્રીતુમિચ્છતિ, તદનુમન્યસ્વેતિ ।

યદ્યપિ ચ સા સ્વયં રાજ્યં શુલ્કં=મૂલ્યં યસ્યાઃ સા તથા, સ્વસ્ય નિકુપમ-  
સુશીલાદિગુણવત્તયા સા યદિ સ્વ શુલ્કત્વેન રાજ્યમભિલષેત્તદાઽહં સર્વં રાજ્યં  
સમર્પયામીતિ ભાવઃ। તતઃ રુદ્રુ સ દુતઃ પ્રતિબુદ્ધિના રાજ્ઞા એવમુક્તઃ સન્ દૃષ્ટતુષ્ટો

અત્તપ મર્લિલ વિદેહવરરાયકળગંગં મમ મારિયત્તાપ વરેહિં) વહાં  
કુંભક રાજા કી પુત્રી મલ્લીં કુમારી કો કિ જો પ્રમાવતી દેવી કે ગર્ભ  
સે ઉત્પન્ન હુઈ હૈ મેરી માર્યા કે રૂપ સે વરો અર્થાત્ તુમ મિથિલા રાજ-  
ધાની મેં જાકર કુંભક રાજા સે કહો કિ સાકેતાધિપતિ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા  
આપકી કન્યા મલ્લી કુમારી કો અપની ધર્મપત્ની બનાના યાહતે હૈ-  
સો આપ હસ કી સ્વીકૃતિ પ્રદાન કરો

( જહ વિય ણં સા સયં રજ્જસુક્કા ) યદ્યપિ મૈં હમ યાત કો જાનતા  
હૂં કિ વહ કન્યા રાજ્ય હી હૈ શુલ્ક જિસ કા એમી હૈ-અર્થાત્ વહ અનુ-  
પમ સુશીલાદિ ગુણોં સે યુક્ત હોને કે કારણ અપને શુલ્કપને સે રાજ્ય  
કી અમિલાષા યદિ કરેગી તો મૈં હસે સમસ્ત અપના રાજ્ય મી  
સમર્પિત કર દૂંગા ।

( તપ્પણં સે વૂપ પહિબુદ્ધિણા રન્ના એવં વુસે સમાણે હટ્ટં પહિ  
સુણેહ ) હસ પ્રકાર રાજા કા અભિપ્રાય હૃદયંગમ કર વહ સુબુદ્ધિ  
અમાત્ય વઢા હી અધિક હર્ષિત એવં સંતુષ્ટ હુઆ ઓર હસ ને મિથિલા  
રાજધાની જાના સ્વીકાર કર લિયા । ( પહિસુણિત્તા જેણેવ સણ ગેહે

અને પ્રભાવતી દેવીના ઉદરથી જન્મ પામેલી કુંભકરાજાની પુત્રી કુમારીની  
મારી વધૂના રૂપે યાચના કરો, એટલે કે તમે મિથિલા રાજધાનીમાં જાંધને  
કુંભક રાજાને કહોકે સાકેતના અધિપતિ પ્રતિબુદ્ધિ રાજા તમારી પુત્રી મલ્લી  
કુમારી ને પોતાનીવધૂ બનાવવા યાહે છે તો તમે તેની સ્વીકૃતિ આપો.

( જહવિયણં સા સયં રજ્જસુક્કા ) મલ્લીકુમારી અત્યન્ત સૌંદર્યવતી તેમજ  
રાજ્ય જેતું શુલ્ક (કિંમત) છે આવી અદ્ભુત સુશીલ વગેરે ગુણોવાળી કન્યા  
છે. એ વાત હું સારી પેઠે જાણું છું એટલે કે અનુપમ શુભવતી મલ્લી  
કુમારી પોતાના શુલ્ક રૂપે મારા રાજ્યને પણ માંગશે તો હું માફ આપું  
રાજ્ય તેને સમર્પિત કરવા તૈયાર છું.

( તપ્પણં સે વૂપ પહિબુદ્ધિણા રન્ના એવં વુસે સમાણે હટ્ટં પહિસુણેહ )  
આ રીતે રાજાને અભિપ્રાય હૃદયમાં પ્રધારણ કરીને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ખૂબ જ



ऽतिक्रयेन प्रमुदितो भूत्वा प्रतिश्रुणोति आज्ञामङ्गीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य-  
यत्रैव रक्षकं गृहं यत्रैव चातुर्घण्टोऽश्वरथो वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातु-  
र्घण्टमश्वरथं प्रतिक्लपयति=सज्जयति, प्रतिकल्प्य चातुर्घण्टमश्वरथं सज्जीकृत्य  
दूरुढः=समारुढः सन् यावत्-इयगजमहाभट चटकरेण सहितः साकेतात् साकेत-  
नगराद् निगच्छति, निर्गत्य यत्रैव विदेहजनपदः यत्रैव मिथिलानगरी तत्रैव प्रधा-  
रयति गरुनाय=गंतुं प्रवृत्तः प्रस्थित इत्यर्थः । इति प्रतिबुद्धिनामकस्य राज्ञः सम्-  
न्धः कथितः ॥ सू० १७॥

जेणेव चाउगघंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ ) स्वीकार कर पहिले  
वह अपने घर गया ।

वहां जाकर फिर वह जहां चार घंटों से युक्त अश्वरथ रखा था  
वहां गया ( उवागच्छिस्ता चाउगघंटे आसरहं पडिकप्पावेइ ) वहां जाकर  
उम ने उसे चातुर्घट रथ को अच्छी तरह सज्जित कर बाया ( पडि-  
क्पाविस्ता दुरुढे जाव हय गय महया भडचड गरेण साण्याओ णि-  
गगच्छइ ) जब रथ अच्छी तरह सज्जित हो चुका तो वह बाद में उस  
पर आरुढ़ हुआ-और हय, गज, महाभटों के समूह से युक्त होकर  
साकेत नगर से बाहिर निकला ( णिगगच्छिस्ता जेणेव विदेह जणवए  
जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए निकल कर फिर वह  
जहां विदेह जनपद और उस में भी जहां वह मिथिला राजधानी थी  
वस ओर थल दिया । सूत्र “ १७ ”

इषित तेभञ्ज संतुष्ट थये अने तेछे मिथिला राजधानी जयानी राजनी  
आज्ञा स्वीकारी. ( पहिलुणिस्ता जेणेव सए गेहे जेणेव चाउगघंटे आसरहे तेणेव  
उवागच्छइ ) स्वीकारीते की पडेखां पोताने घेर गये.

घेर पडेथीने ते न्यां आर घंटीओ वाणे। अश्वरथ भूकेहो छतो त्यां गये.  
( उवागच्छिस्ता चउगघंटे आसरहं पडिकप्पावेइ ) त्यां जधने तेछे आतुर्घंटे  
रथने सारी चेठे शाब्बाओ.

( पडिकप्पाविस्ता दुरुढे जाव हयगय महया भडचडगरेण साण्याओ णिगगच्छइ )

न्यारे रथ सारी रीते तैयार थइ गये। त्यारे तेना पर सवार थये। अने  
हाथी घोडा भडाभटोना इणनी थोडाओनी साथे साथे साकेत नगरथी  
पहार नीकलये।

( णिगगच्छिस्ता जेणेव विदेह जणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ  
गमणाए )

नीकणीने ते ने तरइ विदेह जनपद अने मिथिला राजधानी छती  
ते तरइ गये. ॥ सूत्र “ १७ ” ॥



તિહિકરણદિવસનક્ષત્તમુહુત્તંસિ વિપુલં અસળઃ ઉવક્ષ્ણાવેતિ,  
 ઉવક્ષ્ણાવિત્તા મિત્તળાઈ૦ આપુચ્છંતિ, આપુચ્છિત્તા જેનેવ  
 પોયટ્ટાણે તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ ॥ સૂ૦ ૧૮ ॥

ટીકા-અથ દ્વિતીયસ્ય ચન્દ્રચ્છાયનામ્નો નૃપસ્ય સંબન્ધં પ્રસ્તાવિત્-‘તેણં કાલેણ’  
 इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये अङ्ग नामा जनपद आसीत् । तत्र खलु  
 चम्पा नाम नगरी असीत् तत्र खलु चम्पायां नगर्यां चन्द्रच्छायोऽङ्गराज असीत् ।  
 तत्र खलु चम्पायां नगर्याम् अरहन्नप्रभुत्वाः बहवः संयात्रा नौकावाणिजकाः=  
 संगतायात्रा संयात्रा तत्प्रधाना नौकावाणिजकाः-पोतवणिजः मिलित्वा देशान्तर  
 गामिनो नौकया वाणिज्यकारिणः परिवसन्ति, कथंभूतास्ते इत्याह-आदथाः=घन

‘તેણં કાલેણં તેણં સમણં’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તેણં કાલેણં તેણં સમણં) ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમયમે  
 (અંગનામ જણવણ હોત્યા) અંગ નામકા જનપદ થા-(તત્થળં) ઉસ જનપદ  
 મેં (ચંપાનામં નયરી હોત્યા) ચંપા નામ કી નગરી થી (તત્થળં ચંપા  
 નયરીણ ચંદ્રચ્છાણ અંગરાયા હોત્યા) ઉસ ચંપા નગરી મેં ચન્દ્રચ્છાય  
 નામ કે અંગ દેશાધિપતિ રહતે થે ।

(તત્થળં ચંપાણ નયરીણ અરહન્નગ પામોક્સા બહવે સંજત્તા ણાવા  
 વણિયગા પરિવસંતિ) ઓર ઉસી ચંપા નગરી મેં અરહન્નક પ્રમુલ  
 અનેક પોતવણિક્ક જો સાથ ૨ વ્યાપાર કે નિમિત્ત પરદેશ કી યાત્રા-  
 ગમના ગમન-કરતે રહતે થે । નૌકાઓ દ્વારા જો વ્યાપાર કરતે હૈં વે  
 પોતવણિક કહલાતે હૈં । (અહ્હા જાવ અપરિભૂયા) યે સબ ઘન ધાન્યા-

‘તેણં કાલેણં તેણં સમણં’ इत्यादि

ટીકાર્થ-(તેણં કાલેણં તેણં સમણં) તે કાળે અને તે સમયે (અંગનામ  
 જણવણ હોત્યા) અંગનામે જનપદ હતું (તત્થળં) તે જનપદમાં (ચંપા નામ  
 નયરી હોત્યા) ચંપા નામે નગરી હતી. (તત્થળં ચંપાણ નયરીણ ચંદ્રચ્છાણ  
 અંગરાયા હોત્યા) તે ચંપા નગરીમાં ચન્દ્રચ્છાય નામના અધિપતિ રહેતા હતા.

(તત્થળં ચંપાણ નયરીણ અરહન્નગપામોક્સા બહવે સંજત્તાનાવા વાણિયગા  
 પરિવસંતિ)

તે ચંપા નગરીમાં અરહન્નક પ્રમુખ ધણી પોતવાણિકો-કે-એઓ વેપાર  
 એકવા માટે દેશ પરદેશમાં આવ જ કરતા રહેતા હતા નિવાસ કરતા હતા.  
 નૌકાઓ વડે એઓ વેપાર કરે છે તેઓ પોતવાણિક કહેવાય છે (અહ્હા જાવ

ધાન્યપૂર્ણા યાવદ્ અપરિભૂતાઃ પૈઃ પરામવિતુમશ્કયાઃ । તતઃ=તત્ર=તેષુ સ્વહ સ્તોડરહન્નકઃ શ્રમણોપાસકઃ શ્રાવકશ્રાપ્યાસીત્ , ન કેવલં ધનધાન્યાદિયુક્તવાસીત્ કિંતુ-આર્હતાગમાનુરાગી શ્રમણાનાં સેવકશ્રાપ્યાસીદિત્યર્થઃ । પુનઃ કિં ભૂતો-ડસાવિત્યાહ- ' અદિગયજીવાજીવે ' અભિગતજીવાજીવઃ = જીવાજીવતત્ત્વજ્ઞઃ વર્ણકઃ=અસ્ય વર્ણનમન્યત્રોક્તરીત્યાડવગન્તવ્યમ્ । તતઃ સ્વહુ' તેષામહરન્નકપ્રમુખાણાં સંયાત્રાનૌકાવાણિજકાનાં વ્યવસાયિકાનામ્ , અન્યદા કદાચિત્=અકસ્મિન્ કસ્મિંશ્ચિત્ સમયે, એકતઃ સહિતાનામ્=અકત્ર સંમિલિતાનાં અયમેતદ્રૂપઃ=વક્ષ્યમાનસ્વરૂપઃ, મિથઃ કથાસંલાપઃ પરસ્પરકથાલાપઃ સમુદપથત=અભવત્ શ્રેયઃ

દિ સે પરિપૂર્ણ યાવત્ દૂસરો સે પરામવિતું અશ્કય થે ( તપણ સે અરહન્નગે સમણોવાસપ યાવિ હોત્યા ) હન મેં અરહન્નક શ્રમણોપાસક મી થા । કેવલ યહ ધન ધાન્યાદિ સે પરિપૂર્ણ હી નહીં થા કિન્તુ આર્હત આગમાનુરાગી ઔર શ્રમણ જનોં કા ઉપાસક મી થા ।

( અહિતગત જીવોજીવે વન્નઓ ) જીવ કા કયા સ્વરૂપ હૈ, અજીવ કા કયા સ્વરૂપ હૈ ઇસ્ વાત કા યહ જ્ઞાતા થા । ઇસ્ કા વિશેષ વર્ણન અન્યત્ર ક્રિયા ગયા હૈ ।

( તપણ તેસિ અરહન્નગપામોકલાણં સંજુત્તા ણાવા વાણિયગાણં અન્નયા કયાઈં એગયઓ સહિઆણં ઇમે યયારૂવે મિહો કહાસંલાવે સમુપ્પજ્જિત્યા ) કિસી એક દિન ચે અરહન્નક પ્રમુખ સાંયાત્રિક પોત-વણિક કિસી કાર્ય વજા જબ સબ કે સબ કિસી એક સ્થલપર એક ત્રિત હુપ તો હન્હોં ને પરસ્પર મેં વક્ષ્યમાણ રૂપ સે એસા વિચાર ક્રિયા-

અપરિભૂયા ) તેઓ બધા ધન ધાન્ય વગેરે સમસ્ત વૈભવોથી સંપન્ન હતા તેઓ બધા અપરાધેય હતા. ( તપણ સે અરહન્નગે સમણોવાસપ યાવિ હોત્યા ) આમાં એક અરહન્નક નામે શ્રમણોપાસક પણ હતા. તે કેવળ ધન ધાન્યથીજ સમૃદ્ધ નહતા પણ તે આર્હત આગમાનુરાગી અને શ્રમણવનોનો સેવક પણ હતા.

( સહિત ગત જોવાજીવે વન્નઓ ) જીવ અને અજીવ સ્વરૂપ વિષે તે સંપૂર્ણ પણે જ્ઞાતા હતા. ( આ બાબતનું વિશેષ વર્ણન બીજા સ્થાને કરવામાં આવ્યું છે. )

( તપણ તેસિ અરહન્નગપામોકલાણં સંજુત્તા ણાવા વાણિયગાણં અન્નયા કયાઈં એગયઓ સહિઆણં ઇમે યયારૂવે મિહો કહાસંલાવે સમુપ્પજ્જિત્યા )

એક દિવસે અરહન્નક પ્રમુખ બધા સાંયાત્રિક પોતવલિક કેાઇ સ્થળે એકઠા થયા અને તેઓએ પરસ્પર મળીને આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો,

સ્વલુ અસ્માકં ગણિમં ગણયિત્વા વ્યવહારયોગ્યં યથા નાલિકેરપૂર્ણીફલાદિકં, ધરિમં યત્ તુલાષ્ટતં વ્યવહારયોગ્યં ભવતિ તદ્ ધરિમમ્, મેયં યત્-સેટિકાદિભિર્મીયતે તદ્ મેયમ્, પરિચ્છેદ્યં યત્-ગુણતઃ પરિચ્છેદ્યતે પરીક્ષ્યતે વક્ષરત્નાદિ, તત્ પરિચ્છેદ્યં, ચ માણ્ડકં ચતુર્વિધં ક્રયાણકં ગૃહીત્વા લવણસમુદ્રં પોતવહનેન અવગાદિતુમ્=ઉત્તરીતુમ્, ઇતિ કૃત્વા ઇતિ નિશ્ચિત્ય, અન્યોન્યં=પરસ્પરમ્, એતમર્થં ચતુર્વિધં ક્રયાણકં ગૃહીત્વા નૌકાયાનેન લવણસમુદ્રસંતરણરૂપમર્થં પ્રતિશ્ચુ-વન્તિ=સ્વીકૃવન્તિ । પ્રતિશ્ચુત્ય=સ્વીકૃત્ય ગણિમં ચ ૪ ગૃહ્ણન્તિ, ગૃહીત્વા શકટી શાકટિકં=લઘુશકટમહાશકટાનાં સમૂહં ચ સજ્જયન્તિ-નૂતનરજ્જ્વાલુપકરણે:

( સેયં સ્વલુ અમ્હં ગણિમં, ધરિમં, ચ મેઝ્જં ચ પરિચ્છેઝ્જં ચ મંડગં ગઘાય લવણસમુદ્ધં પોતવહ્ણેણ ઓગાદિત્તણ ) ગણિમ - ગિનતી કરકે વ્યવહાર યોગ્ય-જેસે નારિયલ, પૂર્ણીફલ આદિ, ધરિમ-તુલા પર તૌલકર વ્યવહાર યોગ્ય-જેસે સસ્યાદિ, મેય સેટિકાદિ સે પ્રમાણ કર વ્યવહાર યોગ્ય, ધૌર પરિચ્છેદ્ય-ગુણસે પરીક્ષા કર વ્યવહાર યોગ્ય-જેસે વક્ષરત્ન આદિ હન ચાર પ્રકાર કે ક્રયાણક કો દો નૌકાઓંમેં ખર કર હમ લાંગ બાહર લવણસમુદ્રકો પાર કર ચલે-હસમેં હમ લોગોંકો બહુત લાભ હોગા ।

( ત્તિ કદ્દુ અન્નમન્નં એયમદ્ધં પઢિસુણેતિ, પઢિસુણિત્તા ગણિમં ચ ૪ ગેણંતિ, ગેણિત્તા સગહસાગહિયં મરેતિ ) હસ પ્રકાર પરસ્પર વિચાર કર ડન સબ ને એક મત હો હસ ચતુર્વિધ ક્રયાણક કો લેકર નૌકા સે લવણ સમુદ્ર કો પાર કરને રૂપ અર્થ કો સ્વીકાર કર લિયા ।

( સેયં સ્વલુ અમ્હં ગણિમં, ધરિમં ચ મેઝ્જં ચ પરિચ્છેઝ્જં ચ મંડગં ગઘાય લવણસમુદ્ધં પોતવહ્ણેણ ઓગાદિત્તણ )

ગણિમ- ગણીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમ કે નારિયેળ, સોપારી, વગેરે ધરિમ-ત્રાજવાં માં ભેળીને વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમકે ધાન વગેરે, મેય-માપના પ્રમાણથી વ્યવહાર (વેપાર) કરી શકાય જેમકે તેલ વગેરે અને પરિચ્છેદ્ય-ગુણથી પરીક્ષા કરીને વ્યવહાર કરી શકાય જેમકે વક્ષરત્ન વગેરે આ ચારે ભાતની વસ્તુઓ વિક્રય માટે બે નૌકાઓમાં લાદીને આપણે લોકો બહાર લવણસમુદ્રને પાર કરીએ તો આપણને ખૂબ લાભ થશે.

( ત્તિ કદ્દુ અન્નમન્નં એયમદ્ધં પઢિસુણેતિ, પઢિસુણિત્તા ગણિમં ચ ૪ ગેણંતિ, ગેણિત્તા સગહસાગહિયં મરેતિ )

આ રીતે ચારે ભાતની વેપારની વસ્તુઓ નૌકાઓમાં મૂકીને લવણસમુદ્રને પાર કરવાની બધાએ સર્વશ્રમ્ભતિથી સ્વીકારી. અને સ્વીકારીને તેઓએ

परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा गणिमस्य ४ भाण्डकस्य शकटीशाकटिकं भरन्ति= पूरयन्ति । भृत्वा=पूरयित्वा शोमने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुद्घर्तं विपुलं=विस्तीर्णम् अशनपानखाद्यस्वाद्यं चतुर्विधमाहारमुपस्कारयन्ति = निष्पादयन्ति । मित्रज्ञातिम-  
मुखान् भोजनवेलायां भोजयन्ति, यावद् आपृच्छन्ति स्म. अरहन्नक प्रमुखाः सं-  
यात्रानौकावाणिजका यात्रावसरे मित्रज्ञातीन् भोजयित्वा वाणिज्यार्थं नौकया  
समुद्रसंतरणकामास्तान् मित्रज्ञातीन् स्वस्वानुमति प्रदानार्थं प्रार्थयन्ति स्मेत्यर्थः ।  
आपृच्छय=संप्रार्थय शकटीशाकटिकं योजयन्ति वृषभैः सह संयोजयन्ति संयोज्य  
चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव गम्भीरकं गम्भीरकाख्यं समुद्रतीरवर्ति पोत-

स्वीकार कर के फिर उन सबने चारों प्रकार के क्रयाणक को लिया—लेकर  
उसे नूतन रज्ज्वादि से परिष्कृत की गई गाड़ी और गाड़ों में भर दिया ।

(भरित्ता सोहर्णसि तिहिकरण दिवसनक्खत्तमुद्घुत्तंसि विपुलं असणं  
४ उक्खल्लडावेति) भर कर फिर उन्होंने ने शुभतिथि, करण दिवस नक्षत्र  
रूपमुद्घर्त में विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध  
आहार को बनवाया — ( भित्तणाह० भोजनवेलाए मुंजावेति जाव  
आपुच्छंति ) जब वह बन कर तैयार हो चुका—तो उन्होंने ने अपने २ मित्र,  
ज्ञाति आदि परिजनों को भोजन के अवसर पर भोजन करवाया और  
फिर उन से पूछा—हम लोग बाहर व्यापार के लिये जाना चाहते हैं—  
इसलिये आप लोग इस विषय में अपनी २ अनुमति प्रदान करें—इस  
तरह उन से प्रार्थना की— ( अपुच्छित्ता ) पूछ कर ( सगडसागडियं  
जोयति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव गंभीरए पोय

आरे जतनी वेयाणुनी वस्तुओने नवा होरडाओवाणी गाडी तेभए गाडाओभां भूझी.

(भरित्ता सोहर्णसि तिहिकरणनक्खत्तमुद्घुत्तंसि विपुलं असणं ४ उक्खल्लडावेति)

भरीने तेओओे शुभतिथि, करण, नक्षत्ररूप मुद्घर्तभां अशन, पान,  
खाद्य अने स्वाद्य आभ आरे जतना आहार पुण्ण प्रमाणभां बनावडाव्या.  
( भित्तणाह० भोजनवेलाए मुंजावेति जाव आपुच्छंति ) व्यारे आहार तैयार  
थइ गथे त्यारे तेओओे पोताना मित्र ज्ञाति वगेरे परिजनेने जभवाभाटे  
ओढावने जभाडया अने ब्या पछी तेभने तेओओे पूछथुं “ अओे अधां  
वेपार ओडवाभाटे अहार जवा धन्नीथे छीओे ”

ओथी तओे अधा अओे अनुमति आपो. आरीते तेओओे तेभने विनंती  
करी. ( आपुच्छित्ता ) आशा भेजवाने.

( सगडसागडियं जोयति जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव

प्रचनं=पोतनगरं नौकारोहणस्यानं वर्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटी-  
शाकटिकं मुञ्चन्ति, शकटीशाकटिका समूहावस्थितं क्रयाणकादिकं सर्वं वस्तु जात-  
मवतारयन्ति, मुक्त्वा=सर्वं वस्तुजातं शकटेभ्योऽवतार्य पोतवहनं=नौकायानं  
सज्जयन्ति यथोचितनूतनोपकरणैः परिष्कृत्य दृढीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा=परिष्करणेन  
दृढीकृत्य गणिमस्य च यावच्चतुर्विधस्य माण्डकस्य=क्रयाणकस्य भरन्ति=गणिमादि  
चतुर्विधक्रयाणकस्य स्थापनेन नौकायानं पूरयन्ति स्मेत्यर्थः । तण्डुलानां च समि-  
तस्य गोधूमस्य गोधूमचूर्णनिष्पन्नपक्वान्विशेषस्य च तैलकस्य च गुडस्य च घृत-  
स्य च गोरसस्य च उदकस्य च उदकमाजनानां च औषधानां=त्रिकटुकादीनाम्  
पट्टणे तेणेव उवागच्छन्ति ) फिर उन्होंने ने क्रयाणको से भरी हुई गाड़ी  
और गाड़ों को जुत बाया-जुतवा कर फिर वे सब के सब चंपा नगरी  
के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर जहाँ गंभीरक नाम का जहाज  
पर सवार होने का स्थान ( बंदरगाह ) था वहाँ पर आये ।

( उवागच्छित्ता सगडसागडियं मोर्यन्ति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेति  
सज्जित्ता, गणिमस्स य जाव चउज्विहस्स भंडगस्स भरेंति ) वहाँ आकर  
उन लोगों ने अपनी २ गाड़ियों और गाड़ों को ढील दिया ढीलकर पोत  
यानों को सज्जित किया-यथोचित नूतन उपकरणों से दृढ़ किया ।  
सज्जित करके फिर बाद में उस चतुर्विध गणिमादि रूप क्रयाणक को  
गाड़ियों और गाड़ों पर से उतार २ कर नौका यान में यथोचित स्थान  
पर भर दिया ( तंदुलाणय संभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य  
घयस्स य गोरयस्स य उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य मेसज्जा-

गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छन्ति )

तेमने वेयाणुना भावसाभानथी बरेही गाडी अने गाडाने जेतथो अने  
'तयार पछी तेओ भां बां'चा नगरीनी भराभर वज्जेवचथना भागंथी पसार  
थअने न्यां गंभीरक नामजुं वडाणु पर जेसवानुं स्थान (बंदर) छेतुं त्यां पडोन्थ्या.

( उवागच्छित्ता सगडसागडियं मोर्यन्ति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेति, सज्जित्ता  
गणिमस्स य जाव चउज्विहस्स भंडगस्स भरेंति )

त्यां पछोन्थीने तेओओ पोतपोतानी गाडीओ तेमज गाडोओने छेडीने  
यथाश्रित नवीन उपकरण्थी वडाणु तैयार कथुं. वडाणुने सुदृढ रीते  
तैयार करीने तेओओ गाडी तेमज गाडोओनी वेयाणुनी अभी वस्तुओ वडाणुभां  
यथास्थाने जोडवी दीधी.

( तंदुलाण य संभियस्स य तेल्लयस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरयस्स य  
उदयस्स य उदयमाणाण य ओसहाण य मेसज्जाण य तगस्स य, कट्टस्स य आव

અથવા-एकद्रव्यरूपाणां च भैषज्यानां पथ्यानामाहारविशेषाणाम् अथवा द्रव्यस-  
यौगरूपाणाम् च तृणस्य च काष्ठस्य च आवरणानाम्=अक्षरसकादीनां च प्रहरणानां  
च खड्गादिशस्त्राणां अन्येषां च बहूनां पोतवहनप्रायोग्याणां=नौकायानोपनेयानां  
द्रव्याणां=स्थापनेन पोतवहनं=नौकायानं भ्रमन्ति पूरयन्ति स्म । शोभने=शुभावहे,

णय तणस्स य, कट्टस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसि च  
बहूणं पोयवहणंपाउग्गाणं दब्बाणं पोयवहणं भरेति )

नौका यान में उन्होंने ने चावलों को भरा, गेहूँओं को भरा, गेहूँओं  
के आँटे को और आटे से निष्पन्न पक्वान्न विशेष को भरा । तैल, गुड़  
घृत गोरस भरा पानी भरा पानी के वर्तनों को भरा । त्रिकुट आदि  
औषधियों को भरा पथ्याहार विशेष भैषज्यों को भरा, तृणों को भरा  
लकड़ियों को भरा अंगस्स आदि आवरणों को, खड्ग, आदि शस्त्रों को  
तथा और भी अनेक वस्तुओं को जो पोत वहन के योग्य थी भरा ।

इस तरह उन्होंने ने इन समस्त वस्तुओं को, यथोचित स्थान पर  
स्थापित उस नौका यान को भर दिया । यहां पर जो औषध और  
भैषज्य ये दो शब्द प्रयुक्त हुए हैं उन से ऐसा भी अर्थ बोध होता है  
कि त्रिकुट आदि जो अलग २ द्रव्य हैं वे औषध और इन का समुदाय  
रूप जो द्रव्य है-जैसे चूर्ण आदि वह भैषज्य है । “पोयवहणपाउ-  
ग्गाणं” पद का यह अर्थ है कि जो द्रव्य नौका द्वारा अच्छी तरह ढोया-  
जा सके वह सब उन्होंने ने उस में भर दिया । ( सोहणंसि तिहि करण

रणोण य, पहरणाण य, अन्नेसि च बहूणं पोयवहणंपाउग्गाणं दब्बाणं पोयवहणं  
भरेति )

તેમણે ગ્રામા, ઘઉં, ઘઉંનોઢોટ તેમજ ઘઉંનાંઢોટથી બનાવવામાં આવેલું  
પક્વાન્ન વિશેષ, તૈલ, ગોળ ઘી, ગોરસ, પાણી, પાણી ભરવાના વાસણો,  
ત્રિકૂટ વગેરે ઔષધીઓ, પથ્યાહાર વિશેષ ભૌષભ્યો, ચારો, લાકડાં, અંગરસ  
વગેરે આવરણો, ખડગ વગેરે શસ્ત્રો અને બીજાપણ ધણી વહાણ માં લઈજવા  
ગોચ્ય બધી વસ્તુઓ વહાણમાં લાદી-

આ પ્રમાણે તેમણે બધી વસ્તુઓને યથાસ્થાને ગોઠવીને વહાણને સામા-  
નથી ભરી દીધું. અહીં ઉપર ‘ભૌષભ્ય’ અને ‘ઔષધ’ આ બે શબ્દો  
પ્રયુક્ત થયા છે તેથી અહીં આ પ્રમાણે પણ અર્થ થાય છે કે ત્રિકુટ વગેરે  
જે જુદા જુદા દ્રવ્યો છે તે ઔષધ અને આ બધાને એકઠાં કરવાં જેમકે  
ચૂર્ણ વગેરે તે ભૌષભ્ય છે “પોયવહણપાઉગ્ગાણં” પદનો અર્થ આ પ્રમાણે છે  
કે જે દ્રવ્ય નૌકાવટે સારી રીતે લઈ જઈ શકાય તે બધું તેમણે તેમાં ભર્યું હતું.



ત્રિયિકરણ દિવસ નક્ષત્રમુહૂર્તે વિપુલં=વિસ્તીર્ણમ્, અશનપાનલાઘ્વસ્વાદ્ભં=ચતુર્વિ-  
ધમાહારમુપસ્કારયન્તિ=સંપાદયન્તિ, ઉપસ્કાર્ય મિત્રજ્ઞાતિપ્રમુખાન્ મોજયિત્વાડ્ડપુ-  
ચ્છન્તિ, સમુદ્રયાત્રાનુમતિપ્રદાનાર્થે માર્થયન્તિ આપૃચ્છ ચ ત્રૈવ પોતસ્થાનં=નૌકા-  
યાનારોહણસ્થાનં વર્તતે તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય ચ તત્ર સ્થિતાઃ ॥સૂ૦ ૧૮ ॥

મૂલમ્-તણં તેસિં અરહન્નગ જાવ વાણિયગાળં પરિયણા  
જાવ તારિસેહિં વગ્ગૂહિં અભિણંદંતા ય અભિસંથુળમાણા ય  
ણ્વં વયાસી-અજ્જ તાય માય માડલ માઢ્ઞજ્ઞે ભગવયા સમુદ્દેળં  
અભિરક્ખિજ્ઞમાણા ૨ ચિરજીવિહ ભદ્ધં ચ મે પુણરવિલદ્ધદ્દે કય-  
કજ્ઞે અણદ્દસમગ્ગે નિયગં ઘરં હવ્વમાગપ્ પાસામોત્તિકદ્દુ તાહિં  
સોમાહિં, નિદ્ધાહિં દીહાહિં, સપ્પિવાસાહિં પપ્પુયાહિં દિટ્ઠીહિં  
નિરીક્ખમાણા મુહુત્તમેત્તં સંચિટ્ઠંતિ તઓ સમાણિણસુ પુપ્ફવ-  
લિકમ્મે દિન્નેસુ સરસરત્તચંદણદહર પંચંગુલિતલેસુ, અણુક્ખિ-

દિવસનક્ષત્રમુહૂર્તસિ વિપુલં અસળ ૪ ઉવક્કલદાવેતિ, ઉવક્કલદાવિત્તા,  
મિત્તણાઈ૦ આપુચ્છંતિ, આપુચ્છિત્તા જેળેવ પોયદ્ધાળે તેળેવ ઉવાગચ્છંતિ )  
જબ સબ પ્રકાર કા ચતુર્વિધ ક્રયાણક નૌકાયાન મેં મરા જા ચુકાં તથ  
પુનઃ ઉન લોગોં ને અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર નિષ્પન્ન કરવાયા,  
ઔર કરવા કર અપને ૨ મિત્ર જ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કો જિમાયા જિમા  
કર ઉન સે સમુદ્રયાત્રા કર ને કી અનુમતિ માંગી-ઔર માંગ કર ફિર  
થે સબ કે સબ પોત વણિક્ જહાં નૌકા પર ચઢને કા સ્થાન થા વહાં  
આયે-ઔર આકર વહાં ઠહર ગયે । મૂત્ર “ ૧૮ ”

(સોદ્દહંસિ તિહિકરણદિવસનક્ષત્રમુહૂર્તસિ વિપુલં અસળ ૪ ઉવક્કલદાવેતિ, ઉવ-  
ક્કલદાવિત્તા, મિત્તણાઈ૦ આપુચ્છંતિ, આપુચ્છિત્તા જેળેવ પોયદ્ધાળે તેળેવ ઉવાગચ્છંતિ

જ્યારે ચારે જાતની વેચાણ કરવાની વસ્તુઓ જહાજમાં લરાઈ ગઈ  
ત્યારે તેમણે અશન વગેરે ચારે જાતનો આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો અને  
કરાવડાવીને પોતપોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને જમાડ્યા અને જમા-  
ડીને તેમની પાસેથી સમુદ્રયાત્રા કરવાની આજ્ઞા માગી અને આજ્ઞા મેળવીને  
તેઓ બધા પોતવણિકો જ્યાં વહાણમાં બેસવાનું થવાનું સ્થાન હતું ત્યાં  
આવ્યા અને ત્યાં આવીને તેઓ બધા ત્યાં રોકાયા. ॥ સૂત્ર “ ૧૮ ” ॥

त्तंसि ध्रुवंसि पूइएसु समुद्वाएसु, संसारियासु, बलयवाहासु  
ऊंसिएसु सिएसु झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तरेसु, जइएसु सव्वस-  
उणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु, महया उक्किट्टिसीहणाय  
जयरवेणं पक्खुभितमहासमुद्भवभूयं पिव मेइणिं करेमाणा  
एगदिसिं संजुत्ता नावा वाणियगा णावं दुरूढा ।

तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु—हंभो सव्वेसिमविभे अत्थ  
सिद्धीओ उवाट्ठिताइं कल्लाणाइं, पडिहयाइं सव्वपावाइं, जुत्तो  
पूसो विजओ मुहुत्तो अयं देसकालाओ, तओ पुस्समाणवेणं वक्के  
उदाहिए हट्ठुत्ता कुच्छिधारकन्नधारगम्भिज्जसंजाता णावा  
वाणियगा वावारिसु तं नावं पुन्नुच्छंगं पुण्णमुहिं बंधणेहिंतो  
मुचंति ॥ सू० १९ ॥

टीका—‘तएणं तेसिं’ इत्यादि—तवस्तदनन्तरं खलु तेषामरहन्नक प्रभु  
खाणां यावत् नौकावाणिजकानां परिजना यावत् तादृशीभिर्वाणिभिरभिनन्दन्तश्चामि  
संस्तुवन्तश्चैवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादिषुः—हे आर्य ! =हे पितामह ! तात ! हे पितः  
हे मातुल ! हे मागिनेय ! भगवता महता समुद्रेण ‘अभिरत्खिज्जमाणा’ २ अभि

‘तएणं तेसिं अरहन्नग जाव’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणा  
जाव तारिसेहिं वग्गुहिं अभिणंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वयासी)  
उन अरहन्नक यावत् अन्य और पोतवणिजों के परिजनों ने यावत्  
उस २ प्रकार की वाणियों द्वारा उन सबका अभिनन्दन एवं संस्तवन  
करते हुए उन से इस प्रकार कहा—(अज्ज ! ताय ! माय ! माउल !  
माइणज्जे ! भगवया समुदेणं अभिरत्खिज्जे माणा २ चिरं जीवह भदं

‘तएणं तेसिं अरहन्नग जाव’ इत्यादि

टीकार्थ—‘तएण’ त्याग्याह “अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणा जाव  
तारिसेहिं वग्गुहिं अभिणंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वयासी” ते अरहन्नक प्रभुभ्य  
पोतवणिजैः परिजनेः तेभ्युं अनेक ज्ञातानां भक्षणवाञ्छायां च ते अभिनन्दन  
अने संस्तवन कृतां तेभ्यो कृतेषु दायाः । (अज्ज ! ताय ! माय ! माउल !  
मणिज्जे भगवया समुदेणं अभिरत्खिज्जे माणा २ चिरं जीवह भदं च ते ) हे आर्य !

રક્ષયમાણાઃ૨=સુરક્ષયમાણાઃ૨ ચિરં बहुकालं जीवत, मद्रं च युष्माकं भवत पुनरं  
 पिं लब्धार्थान् लब्धलाभान् कृतकार्यान् सम्पादितसकलकृत्यान् अनघसमग्रान्=  
 अनघाश्च ते समग्राः अनघसमग्रास्तान् दोषरहितत्वादनवाः, धनेषु परिवारेषु चं  
 हासाभावात्. समग्राः तथाविधान् युष्मान् निजकर्म=स्वकीयं, गृहं हव्यमागतान्  
 शीघ्रमागतान् वयं पश्यामः, इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा ताभिः सौम्याभिर्निर्विकारत्वात्,  
 स्निग्धाभिः सस्नेहत्वात्, दीर्घाभिः दूरं यावदवलोकनात् ' सप्तिवासाहिं ' सप्ति-  
 पासाभिः=दर्शनेच्छावतीभिः, ' पप्पुयाहिं ' मृच्छताभिः=अश્રુपूर्णाभिः. दिट्ठीहिं '  
 दृष्टिभिः निरीक्षमाणा अवलोकमानाः मुहूर्तमात्रं संतिष्ठन्ते अरहन्नादीनां  
 परिजंना अश્રુपूर्णदृष्टिभिस्तान् पश्यन्तोमुहूर्तमात्रं निश्चला अभवन्तित्यर्थः।  
 ततः ' समाणिपसु ' समापितेषु सम्यक् संपादितेषु पुष्पवेलिकर्मसु पुष्पाक्षत-

च એ) હે આર્ય ! હે તાત ! હે બ્રાતઃ ! હે મામા ! હે ભાગિનેય ! આપલોગ  
 હસ ભગવાન્ વિશાલ સમુદ્ર સે બાર૨ સુરક્ષિત હોતે હુપ ચિર કાલ તક  
 જીવિત રહેં । આપ સબકા કલ્યાણ હો । ( પુનરવિ લદ્દહે, કય કજ્જે,  
 અળહસમગ્ગે નિયગં ઘરં હવ્વમાગપ પાસામો ) હમ લોગ લાભ સે યુક્ત  
 સમ્પાદિત સકલ કાર્યોં વાલે ચિના કિસી શારીરિક આદિ બાબા સે રક્ષિત  
 ઘન ઔર પરિવારોં સે પરિપૂર્ણ હુપ આપ સબ કો ઘર પર શીઘ્ર આયા  
 હુઆ દેલેં । ( સિ કદ્દુ ) એસા કહ કર વે વહાં-(તા હિં સોમાહિં નિદ્દાહિં,  
 દીહાહિં, સપ્પિવાસાહિં, પપ્પુયાહિં દિટ્ઠીહિં નિરીક્ષમાણા મુહુત્તમેત્તં  
 સંચિદ્ધંતિ ) સૌમ્ય સ્નિગ્ધ, દીર્ઘ, દર્શનેચ્છાવતી ઔર અશ્રુપૂર્ણ દૃષ્ટિયોં  
 સે ઉન્હેં દેલ્ખતે હુપ એક મુહૂર્ત તક બેઠે રહે । ( તઓ સમાણિપસુ પુષ્પ-  
 વલિકર્મ્મેસુ દિન્નેસુ સરસરત્તચંદણદહર, પંચંગુલિતલેસુ, અણુવિલસંસિ

હેતાત ! હે બાઇ ! હે મામા ! હે ભાણેજ ! તમે બધા આ ભગવાન  
 વિશાળ સમુદ્રવડે વારંવાર સુરક્ષિત થઇને ચિરકાળ સુધી જીવતા રહો.  
 તમારું કલ્યાણ થાઓ. “ પુનરવિલદ્ધે, કયકજ્જે, અળહસમગ્ગે નિયગં  
 ઘરં હવ્વમાગપ પાસામો ” અમે બધા તમને લાભાન્વિત થયેલા, બધા કાર્યોને  
 ખાર પમાડનારા, કોઇ પણ ભતની શારીરિક મુશ્કેલી વગર એટલે કે સ્વસ્થ  
 શરીરવાળા, ધન તેમજ પરિપૂર્ણ પરિવારથી યુક્ત થઇને ઘેર પાછા આવેલા  
 બેઠાઓ. “ સિકદ્દુ ” આમ કહીને તેઓ ત્યાં.

( તાહિં સોમાહિં નિદ્દાહિં દીહાહિં, સપ્પિવાસાહિં પપ્પુયાહિં, દિટ્ઠીહિં નિરી-  
 ક્ષમાણા મુહુત્તમેત્તં સંચિદ્ધંતિ )

સૌમ્ય, સ્નિગ્ધ, બહુવખત સુધી દર્શનની ઈચ્છાવાળી અને આંસુ બીની  
 દૃષ્ટિઓથી તેમને ભેતા એક મુહૂર્ત સુધી બેસી રહ્યા.

(તઓ સમાણિપ મુપુષ્પ વલિકર્મ્મેસુ દિન્નેસુ સરસરત્તચંદણદહરપંચંગુલિ તલેસુ,

दानादिकर्मसु, तथा-सरसरक्तचन्दन दर्दर पञ्चाङ्गुलितलेषु सरसरक्तचन्दनस्य दर्दरेण चपेटाऽऽकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु करतलाङ्गुलैषु दत्तेषु परीधानीयेषु उत्तरीयेषु वस्त्रेषु च सरसरक्तचन्दनाङ्गुलितकरतलमुद्रणेषु कृतोष्णित्यर्थः । अन्तिमपते=अनुप-  
आत् ऊर्ध्वशिपते धूपे गुग्गुलादि धूमे कृते सति, पूजितेषु=धूपादिनां संमानितेषु समुद्रवातेषु समुद्रसम्बन्धिपवनेषु, तथा संसारितेषु स्थानान्तरादानीय यथोचित स्थाने निवेशितेषु वलयवाहुषु=दीर्घकाष्ठरूपेषु बाहुषु, तथा उच्छ्रितेषु ऊर्ध्वमुखम-  
वस्थापितेषु सितेषु शुक्लेषु ध्वजाग्रेषु पताकाग्रेषु, तथा-पट्टमवादितेषु पट्टभिः पुष्पैः प्रवादितेषु, यद्वा-पट्ट यथा भवति तथा प्रवादितेषु त्र्येषु बाणेषु, तथा जयिकेषु जयकारकेषु सर्वशकुनेषु=वायसरुतादिषु, तथा-गृहीतेषु=प्राप्तेषु राज-  
वरशासनेषु=समुद्रयात्रार्थं चम्पानगरीभूपस्याऽऽज्ञापत्रेषु तथा-महोत्कृष्टसिंहनाद

ध्रुवंसि, पूइएसु समुद्रवाएसु संसारियासु वलयवाहासु, उसिएसु सिए-  
सुक्षयगोसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु, जइएसु सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु ) इसके बाद पुष्प अक्षत दानादिक कर्म जब समाप्त हो चुका, परिधानीय वस्त्रों पर सरस रक्त चंदन के चपेटाकार से हाथे जब लगाये जा चुके, गुग्गुल आदि धूप अग्नि में डालकर जब उस का धूम किया जा चुका समुद्रीय हवाए जब धूपादि प्रदान द्वारा पूजित की जा चुकी दीर्घ काष्ठ रूप वलय ( पतवार ) स्थानान्तर से लाकर जब यथोचित स्थान पर रखे जा चुके, शुभ्र ध्वजाओं के अग्रभाग जब ऊर्ध्वमुख कर अवस्थापित हो चुके, चतुर बजाने वालों के द्वारा जब अच्छी तरह बाजे बजाये जा चुके जय कारक वायसरुतादि रूप सर्व शकुन जब अच्छी तरह से हो चुके और समुद्र यात्रा करने का आदेश पत्र जब चंपा नगरी के राजा का प्राप्त हो चुका तब(महया उक्किड्डीसी.

अणुक्खित्तंसि ध्रुवंसि पूइएसु समुद्रवाएसु संसारियासु वलयवाहासु उसिएसु सिएसु  
क्षयगोसु पडुप्पवाइएसु तूरेसु जइएसु सव्वसउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु )

त्यार भाद पुष्प अक्षत दान वगेरे नी विधि परीथर्ध गध, परिधानीय वस्त्रो उपर सरस लाल चंदनना थापाओ लागवी लीधा, पूगण वगेरे धूप अग्निमां नाणीने धूप करी लीधा, धूप वगेरे अप्पिने समुद्रना पवनेनी अर्थनानुं काम पुई थर्धगयुं, नीला स्थानेथी दीर्घकाष्ठरूप वलय ओटले के सुकान वगेरे वहाणु उपर यथास्थाने सुकाध गया, शुभ्रध्वजोना अग्रभाग न्यारे ऊर्ध्वमुखना रूपे अवस्थापित थर्ध गया, कुशण वालवाणाओ वडे सरस वालओ वगाडवानुं काम पति गयुं, न्य पमाडनारा कागडा वगेरे पक्षी ओना भांगतिक शण्डे ओटले के सारा सुकन थर्ध गया अने अप्पानगरीना राजा पासेथी समुद्रयात्रा करवाने परवाने “ आदेश पत्र ” तेओनी पासे आवी गथे त्यारे.

जयरवेण उच्चस्वरयुक्त जय जय ध्वनिता प्रक्षुभितमहासमुद्रवभूतामिव वायु प्रक्षोभजनितमहासागरध्वनिव्याप्तमिव मेदिनीं = पृथग्निं प्रचुरनादवतीं कुर्वाणा एकदिशि एकस्यां दिशि संयात्रानौका वाणिजका नावं नौकायानं दुरुद्धाः आरोहन्ति स्म ।

ततस्तदनन्तरं ' पुस्तमानवो ' पुष्पमानवः=भागधो मङ्गलपाठकः ' वक्त्रमुदाहु ' वाक्यमुदाह-मङ्गलवचनयुक्तवान् तदाह-हंभो इत्यादि हे नौकायात्रिकाः ' सव्वेसिमविमे ' सर्वेषामपि युष्माकम् अर्थसिद्धयो भवतु, उपस्थितानि कल्याणानि भवन्तु तथा प्रतिहितानि सर्वपापानि भवन्तु=सर्वविघ्नाः प्रतिहता विनष्टा भवन्त्वित्यर्थः । ' जुत्तो ' युक्तः ' पूसो ' पुष्पः=पुष्पाख्यो नक्षत्रविशेषः अनुकूलेन चन्द्रमसा युक्त इत्यर्थः । पुष्पनक्षत्रं यात्रायां प्रशस्तम् तथ चोक्तं-

हृणायजयरवेणं पक्खुभित्तमहासमुद्रवभूयंपिव मेहणिं करेमाणा ) उत्कृष्ट सिंहनाद जैसी जय जय ध्वनि से वायु के प्रक्षोभ से जनित महासागरकी ध्वनि से व्याप्त हुई की तरह मेदनी को करते हुए ( संजुक्तानां नावा वाणियगा एगदिसिं णावं दुरुद्धा ) वे सांयात्रिक पोत वणिक् नाव पर सवार हुए ।

( तओ पुस्तमानवो वक्त्रमुदाहु ) इतने में ही मंगल पाठक-चारण-ने मंगल ध्वनि की ( हंभो सव्वेसिं भविमे अत्थसिद्धीओ उवड्ढि ताई कल्लाणाई, पडियाइं सव्व पावाइं, जुत्तो पूसो, विजओ मुहुत्तो अयंदेसकालो ) हे हे नौका यात्रिकों ! आप सब को अर्थ की सिद्धि हो, सब कल्याण आपके लिये सदा उपस्थित रहें, समस्त प्रकार के विघ्न आपकी इस मांगलिक यात्रा में नाश हों पुष्प नक्षत्र का अनुकूल चन्द्रमा के साथ योग रहा है यात्रा में पुष्प नक्षत्र का योग प्रशस्त होता (महया उक्किट्ठसीहृणायजयरवेणं पक्खुभित्तमहासमुद्रवभूयंपिव मेहणिं करेमाणा)

पवनशी-क्षुब्ध महासागरना सर्वत्र व्याप्त थयेला ध्वनीनी जेम सिंढेनाहं जय जय ध्वनिथी पृथ्वीने शण्डि करता ( संजुक्तानां वाणियगा एगदिसिंणावं दुरुद्धा ) ते समथे मांगदिकेओ ओटवे हे आरखेओ भंगणध्वनि क्यो ।

( हंभो सव्वेसिमविमे अत्थसिद्धीओ उवड्ढिताई कल्लाणाई पडियाईं सव्वपावाइं, जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयंदेसकाओ )

हे पोतवण्डिके ! तमने अधाने अर्थनी सिद्धि थाय तमने सदा कल्याणे। प्राप्त थाओ, भंगणयात्राना तमाश अधा विघ्नेनाश पाओ अत्यादे अन्ननी साथे पुष्पनक्षत्रने अनुकूल योग थई रह्यो छे । ( यात्राभां पुष्पनक्षत्रने योग

अपि द्वादशमे चन्द्रे पुण्यः सर्वार्थसाधनः ॥ इति ॥

विजयो मुहूर्तोऽधुना विद्यते, अयं देशकालः=समयः प्रस्थाने शुभावह इत्युक्तं-मागधेन । ततस्तदनन्तरं 'पुस्तमानवेण' पुण्यमानवेन मागधेन 'वक्के' वाक्ये=माङ्गलिकवचने, 'उदाहिए' उदाहृते उक्ते सति हृष्टतुष्टाः अतिशयेन प्रमुदिताः 'कुच्छिधारकन्नधार गम्भिज्ज रांजत्ताणावावाणियगा' कुक्षिधार कर्णधार गर्भज संयात्रा नौवाणिजकाः=कुक्षिधाराः नौकायाः पार्श्वतो नियोजिता सञ्चालकाः, कर्णधारः नाविकाः प्रधानभूता नौकावाहकाः, गर्भजाः=नौमध्ये स्थित्वा यथावसरकार्यकर्त्तारः, संयात्राः=संगताः संमिलिताः सन्तो देशान्तर-गामिनः, नौ वाणिजकाः=नौकया वाणिज्यकारिणः भाण्डपतयः सर्वपते व्यापृत वन्तः स्व स्व व्यापारे प्रवृत्ताः सन्तः, तां नावं पूर्णोत्सङ्गां विविधक्रयाणकजातैः

है-उक्तञ्च अपि द्वादशमे चन्द्रे पुण्यः सर्वार्थसाधनः । इस समय विजय मुहूर्त वर्त रहा है । प्रस्थान के लिये यह समय शुभावह है । ( तओ पुस्तमानवेण वक्के उदाहिए हट्टुट्टा कुच्छिधारकन्नधारगम्भिज्ज संजात्ता णावा वाणियगा वावारिसु ) इस तरह पुण्य मानव-चारण जब मंगल ध्वनि कर चुका-तब हर्षित और संतुष्ट हुए कुक्षिधार-नौका के पार्श्व में नियोजित किये गये संचालक जन, कर्णधार-खेवदियाजन, गर्भज-नौका के भीतर बैठ कर अवसरानुकूल कार्य कर्त्ता जन, और सांयात्रिक जन-मिलकर परदेश जाने वाले पोतवणिक कि जिन का क्रयाणक नौका में भरा हुआ था-ये सब के सब अपने २ व्यापार-कार्य में प्रवृत्त हो गये ( तं नावं पुण्नुच्छंगं पुण्ण सुहिं वंधणेहिं तो मुंचंति ) और उस नौका को कि जिस का मध्यभाग विविध क्रयाणकों से पूर्ण

प्रशस्त होय छे-कुछ पक्ष छे- 'अपिद्वादशमे चन्द्रे पुण्यः सर्वार्थसाधनः' ) अत्यारे विजयना मुहूर्तना समय आवी रह्यो छे. प्रस्थान भाटे अत्यार नो वपत्त शुभावह छे.

( तओ पुस्तमान वेणवक्के उदाहिए हट्टुट्टा कुच्छिधारकन्नधार गम्भिज्ज संजात्ता णावावाणियगा वावारिसु )

आरते न्यारे पुण्यमानवे-अरखो-नो भंगण पाठ थठ बूक्यो त्यारे हर्षित तेभज संतुष्ट थयेला कुक्षिधार-नौकाना पार्श्वभागमां नियुक्त करायेला संयात्रिका, कर्णधार-नौकायलावनाराओ, गर्भज-नौकाना अंदरना भागमां भेसीने अवसरानुकूल काम करनाराओ अने सांयात्रिकनो-वेपारीओ-के जेमनी वस्तुओने नौकामां लादेली छती, पोतपोताना काममां वजगी गया.

( तं नावं पुण्नुच्छंगं पुण्णमुहिं वंधणेहिं तो मुंचंति )

अने जेना वस्तुना भागमां अनेक जतनी वेयाछुनी वस्तुओ लदेली

संभृतान्तरालां, पूर्णमुखीं यथोचितसंभृताग्रभागां बन्धनेभ्यः तीरस्थशङ्कुबद्धरज्जु-  
बन्धनग्रन्थिमुन्मुच्य मुञ्चन्ति=विसर्जयन्ति ॥ सू० १९ ॥

मूलम्—तएणं सा नावा विमुक्कबंधणा पवणबलसमाहया  
उस्सियसिया विततपक्खा इव गरुडजुवई गंगासलिलतिक्खि  
सोयवेगेहिं संखुब्भमाणी २ उम्मीतरंगमालासहस्साइं समइ-  
च्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुदं अणेगाइं जोयण-  
सयाइं ओगाढा, तएणं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजात्ताना-  
वावाणियगाणं लवणसमुदं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं  
समाणाणं बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—अकाले  
गजिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसदे, अभिक्खणं २ आगासे  
देवयाओ नञ्चन्ति, एगं च णं महं पिसायरूवं पासन्ति, तालजंघं  
दिवंगयाहि बाहाहि मसिमूसगमहिसकालगं भरियमेहवत्तं  
लंबोट्टं निग्गयग्गदंतं निल्लालियजमलजुयलजीहं आऊसिय-  
वयणगंडदेसं चीणचिविटनासियं विगयभुग्गभुमयं खज्जोयग-  
दिज्जचक्खुरागं उत्तासणगं विसालवच्छं विसालकुच्छि पलंबकुच्छि  
पहसियपयालियपयीडियगत्तं पणच्चमाणं अप्फोडंतं अभिवयंतं  
अभिगज्जंतं बहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयंतं नीलुप्पलगवल-

भरा हुआ था तथा अग्रभाग भी जिस का यथोचित अनेक प्रकार की  
संचालन सामग्री से व्याप्त हो रहा था तीर पर की कील में बंधी हुई  
रस्सी के बंधन को खोलकर छोड़ दिया । सूत्र “ १९ ”

इति अने अग्रभागमां यथोचित अतमतनी संचालन सामग्री लदेदी इती  
ओवा वहाणुने किनारा उपर ना थांल्लानुं बंधन ओदीने मुक्ता कइवाभां  
आणुं ॥ सूत्र “ २० ” ॥

ગુલિય અયસિકુસુમપ્પગાસં ચુરધારં અસિંગહાય અભિમુહમાવ-  
યમાણં પાસંતિ ॥ સૂ૦ ૨૦ ॥

ટીકા—‘તર્ણ સા’ इत्यादि-ततस्तदनन्तरं खलु सा नौ विमुक्तबन्धना  
बन्धनरहिता पवनबलसमाहता=वायुवेगप्रेरिता ‘उस्सियसिया’ उच्छ्रितसितपटा  
नौकायां वायुसंग्रहार्थं बृहद्वस्त्रमुच्छ्रितं कृत्वा निबध्यते, उच्छ्रितशुक्लपटेन सा  
नौः कीदृशीत्याह—‘विततपक्खा इव गरुडजुवई’ विततपक्षेव गरुडयुवतिः  
विततपक्षा=प्रसारितपक्षा गरुडभार्या गगने गच्छन्ती, यथा भवति तद्वदित्यर्थः,  
गङ्गासलिलतीक्ष्णस्रोतोवेगैः गङ्गाजलस्य ये तीक्ष्णास्तीव्राः स्रोतोवेगाः=प्रवाहवे-  
गास्तैः संक्षुब्धन्ती २ प्रेर्यमाणा २ समुद्रं प्रतीति भावः, ‘उम्मीतरङ्गमालासहस्साई’  
ऊर्मितरङ्गमालासहस्राणि ऊर्मयो महाकल्लोला बृहत्तरङ्गाः, तरङ्गाः=इस्वकल्लोलाः  
छन्दुतरङ्गास्तेषां माला आवलयः तासां सहस्राणि, समति क्रामन्ती २ समुत्तेरन्ती  
२ कतिपयैर्वहुभिरहोरात्रैर्दिवसै रात्रिमिश्र लवणसमुद्रं अनेकानि योजनशतानि

‘તર્ણ સા નાવા’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તર્ણ) इस के बाद (विमुक्तक बंधणा) बन्धन से विमुक्त  
हुई (सा नावा) वह नौका ( पवणबलसमाहता ) वायु के वेग से प्रेरित  
होकर ( गंगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखुब्धमाणी २ ) गंगा जल  
के प्रवाह वेगों से बार २ इधर उधर क्षुभित होती हुई ( उस्सियसिया )  
अपने ऊपर वायु संग्राहार्थ बांधे गये शुभ्रवस्त्र से ( वितत पक्खा गरुड  
जुवईइव ) पांखों को पसार कर आकाश में उड़ती हुई गरु युवती के  
जैसी प्रतीत होने लगी । ( उम्मीतरंग मालासहस्साई ) समइच्छमाणी  
२ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवण समुद्रं अणेगाईं जोयणसयाईं ओगाढा )

‘તર્ણ સા નાવા’ इत्यादि.

ટીકાર્થ—(તર્ણ) त्थार आढ (विमुक्तक बंधणा) बंधन मुक्त थयेलुं (सा नावा)  
ते वहायु ( पवणबलसमाहता ) पवनना आघातोर्थी प्रेरित थधने ( गंगा-  
सलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखुब्धमाणी ) गंगाना तीव्रप्रवाहथी क्षुलित थपुं.  
( उस्सियसिया ) पवन भरधने वहायुने गतिभणे जेवा येताना स्वरथ  
सहथी “ वितत पक्खा गरुडजुवई इव ” पांणे प्रसारेली अने अकाशभां उडती  
गरुड युवतीनी जेम लागतु छपुं.

( उम्मीतरंग माला सहस्साई समइच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवण  
समुद्रं अणेगाईं जोयणसयाईं ओगाढा )



‘ओगाढा’ अवगाहिता तीर्णा । ततस्तदनन्तरं खलु तेषाम् अरहन्नकप्रमुखाणां संयात्रा नौवाणिजकानां लवणसमुद्रमनेकानि योजनशतानि अवगाहितानां तीर्णानां सतां बहूनि ‘उप्पाइयसयाहं’ उत्पातशतानि प्रादुर्भूतानि । तान्युत्पादशतानि वर्णयति—

‘तं जहा’ इत्यादि । तद् यथा—अकाले गर्जितं वर्षाकालं—विना मेघध्वनिः, अकाले विद्युत् अकाले ‘थणियसहे’ स्तनितशब्दः मेघस्य गम्भीरध्वनिरभूत् तथा—अभीक्ष्णं=पुनः पुनः आकाशे देवता नृत्यन्ति तथा—एकं च खलु महत् बृहत् पिशाचरूपं पश्यन्ति अरहन्नकप्रमुखाः संयात्रा नौ वाणिजकाः अकालमेघध्वनि-बडे वेग के साथ उर्मियों—महालहरों के तरंगों के—छोटी २ लहरों के—माला सहस्र को उल्लंघन करती हुई वह नौका कितनेक दिनों के बाद लवण समुद्र में अनेक योजनों तक पहुँच गई । ( तएणं तेसि अरहन्नग पामोक्खाणं संजत्तानावा वाणियगाणं लवणसमुद्धं अणेगाहं जोयण सयाहं ओगाढाणं समाणाणं बहूद्धं उप्पाइयसयाहं पाउब्भूयाहं ) इस के बाद उन सांघात्रिक अरहन्नक प्रमुख नौका वणिकों को जब कि वे लवण समुद्र में अनेक सैकड़ों योजनों को पार कर चुके थे बहुत से सैकड़ों उपद्रव सामने आने लगे ।

( तं जहा ) जैसे— ( अकालेगड्जिए, अकाले विज्जुए, अकाले थणियसहे, अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ नच्चन्ति, एणं च णं महं पिसायरूवं पासंति ) वर्षा काल के बिना ही उस समय मेघध्वनि होने

श्रुत्यन्तीत्य वेगे नानामोटा से'कडो मोब्भूओ ने वटापीने इ'ट्ठाक दिवसो भाड वडावु लवणसमुद्रमां धणुा योन्नो दूर सुधी पडो'थी गयुं.

( तएणं तेसि अरहन्नगपामोक्खाणं संजत्तानावा वाणियगाणं लवणसमुद्धं अणेगाहं जोयणसयाहं ओगाढाणं समारणं बहूद्धं उप्पाइयसयाहं पाउब्भूयाहं )

त्यार भाड सांघात्रिक अरहन्नक प्रमुष पोतवड्डिको लवण समुद्रमां न्यारे से'कडो योन्नो सुधी दूर पडो'थीगया त्यारे से'कडो आइतो तेभनी सांभे अभूभवादागी. ( तं जहा ) नेभ के

( अकाले गड्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसहे, अभिक्खणं २ आगासे देवयाओ नच्चन्ति, एणं च णं महं पिसायरूवं पासंति )

वर्षाकाण डोवा न छतां मेघ गर्जनाओ थवा मांडी, वीजणीओ नभू कवा दागी अन्ये मेघनो गंक्षिर ध्वनि पणु थवा मांडयो. आकाशमां बार'बार देवताओ नायता नेवामां आववा दाग्या.

विद्युद्विद्योतन पुनः पुनर्देवतृत्यप्रदर्शनपूर्वकमेकं बृहत् पिशाचरूपं विलोकयन्ति । स्मेत्यर्थः । कथम्भूतं तत् पिशाचरूपमित्याह—‘ तालजंघ ’ तालजङ्घं तालवृक्षवद्दीर्घं जङ्घवे यस्य तत्तथा, दिवं गताभ्यां गगनस्पर्शिभ्यां बाहुभ्यां महादीर्घाभ्यां बाहुभ्यां युक्तमित्यर्थः । मषीमूशकमहिषकालकं मषी-कज्जलं मूषको महिषश्च प्रसिद्धः तद्वत् कालकं कृष्णवर्णं यत्तत्तथा, भरियमेहवन्नं ’ भूतमेघवर्णं = जलपूर्ण-घनीभूतमेघघटावदतिश्यामं, लम्बोष्ठं, निर्गताग्रदन्तं निर्गतानि : मुखोद्बहिर्भूतानि अग्रानि अग्रभागा येषां ते निर्गताग्रास्तथा भूतादन्ता यस्य तथोक्तस्तं, ‘ निल्लालियजमलजुयलजीहं ’ निर्लालितयमलयुगलजिह्वम् निर्लालितं - मुखोद्बहिर्भूतं यमलं=समं युगलं द्वयं जिह्वयो र्येन तत्तथा, ‘आऊसियवयणगंडदेसं’ प्रविष्टवदन-

लगी, बिजली चमक ने लगी, और मेघ की गंभीर ध्वनि भी होने लगी । बार २ आकाश में देवता नाचते हुए दिखलाई पड़ने लगे ।

तथा विशाल काय—पिशाच का रूप भी दृष्टिगोचर होने लगा । ( तालजंघ दिवं गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग महिसकालगं ) इस पिशाच की दोनों जंघाएँ तालवृक्ष के समान दीर्घ थीं । दोनों बाहु मानो आकाश को छूते थे । कज्जल, मूषक, और महिष के समान इस का वर्ण काला था । ( भरियमेहवन्नं, लंबोष्ठं निगयगदंतं निल्ललिय जमलजुयलजीहं, आऊसिय वयणगंडदेसं, चीण चिपिटनासियं विगय भुगभगभुमयं ) जल से भरी हुई घनी भूत मेघघटा की तरह इस का शरीर अत्यंत काला था । ओष्ठ बड़े लंबे थे । आगे के दाँत बाहर निकले हुए थे । इस की जिह्वा के दोनो अग्र भाग एक ही साथ मुख से बाहिर

तेमजे विशाण शरीरवाणा पिशाचतुंरप पणु जेवाभां आववा बाधुं.  
( तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं मसिमूसग महिसकालगं ) ते पिशाचानी जने साथणे तालवृक्षानी जेम दांणी હતી. જને હાથ બાજુ આકાશને સ્પર્શતા હોય. મેશ, ઉંદર અને પાકાના જેવો તેનો રંગ કાળો હતો.

( भरियमेहवन्नं, लंबोष्ठं निगयगदंतं निल्ललियजमलजुयलजीहं, आऊसियवयणगंडदेसं, चीणचिपिटनासियं विगयभुगभगभुमयं )

પાણીથી ભરેલી સાન્નર મેઘ ઘટાઓની જેમ તેનું શરીર ઘણું કાળું હતું. હોઠ ઘણાં લાંબા અને નીચે લપકતા હતા. આગળના દાંત બહાર નીકળી ગયેલા હતા. તેની જીભના આગળના ખંને ટેરવાં એકી સાથે મોંથી બહાર નીકળી રહ્યાં હતાં. તેના ખંને ગાલ મોંમાં ઘેસીગયેલા હતા.

ગણ્ડદેશં પ્રવિષ્ટૌ વદને ગણ્ડદેશૌ કપોલમાગૌ यस્ય તત્તથા, 'ચીળચિપિટનાસિયં' ચીનચિપિટનાસિકં, ચીના=હૂસ્વા ચિપિટા ચ નાસિકા यस્ય તત્તથા, 'વિગય-શુગભગશુમયં' વિકૃતશુગ્નમન્નશ્રુવમ્ વિકૃતે સવિકારે શુગ્ને મન્ને=અતીવવક્રે શ્રુવૌ यस્ય તત્ તથા, 'સ્વજ્જોયગદિત્તચ્ચચુરાગં' સ્વઘોતકદીપ્તચ્ચુરાગં, સ્વઘોતક-વદીપ્તચ્ચુરાગો લોચનરક્તત્વં यस્ય તત્તથા, 'ઉત્તાસણગં' ઉત્ત્રાસનકં મયાનકં વિશા-લવક્ષસ્કં=વિસ્તીર્ણેરઃ સ્થલં, વિશાલકુચ્છિ=વિસ્તીર્ણેદરમ્, પ્રલમ્બકુચ્છિ=દીર્ઘોદ-રમ્, 'પહસિયપયાલિયં પયહિયગત્તં' પ્રહસિતપ્રચલિતપ્રપતિતગાત્રમ્ । પ્રહસિતાનિ પ્રવિકાસિતાનિ પ્રચલિતાનિ=પ્રકમ્પિતાનિ પ્રપતિતાનિ પ્રકર્ષેણ શ્લેષીભૂતાનિ ગા-ત્રાણિ यस્ય તત્તથા, 'પણ્ણમાણં' પ્રનૃત્યત્ 'અપ્પોહંતં' આસ્ફોટયત્, અભિવયંતં 'અભિવ્રજત્, 'અભિગજ્જંતં' અભિગર્જત્, 'બહુસો' અદૃઢહાસે વિણિમ્મુયંતં 'બહુ-

નિકલ રહે થે । દોનોં કપોલ હસકે મુખ કે ખીતર છુસે હુપ થે—અર્થાત્ દોનોં ગાલ હસ કે પિચ કે હુપ થે ।

નાક હસ કી છોટી ઓર ચપટી થી । હસ કી દોનોં મોઢેં વિકૃત શુગ્ન ઓર મન્ન થી । અથવા શુગ્ન મન્ન થી અત્યન્ત વક્ર થી—(સ્વજ્જોય-ગદિત્તચ્ચચુરાગં, ઉત્તાસણગં વિસાલવચ્છં, વિસાલકુચ્છિ પલંબકુચ્છિ પહસિયપયાલિય, પયહિયગત્તં) હસ કી આંખોં કી લલાઈ સ્વઘોત (આગ્યા) કે સમાન દીપ્ત થી, ઊરસ્થલ (છાતી) હસ કા મયોત્પાદક થા, પેટ વિસ્તીર્ણ ઓર લંબા થા । શરીર હસ કા પ્રહસિત પ્રચલિત પંચ શ્લેષી ભૂત ઢીલા થા । યહ ઉસ સમય, (પણ્ણમાણં અપ્પોહંતં, અભિ-વયંતં અભિગજ્જંતં, બહુમો ૨ અદૃઢહાસે વિણિમ્મુયંતં) નૃત્ય કર રહા થા ।

અપની દોનોં મુજાઓં કા આસ્ફાલન (બજાતા) કર રહા થા । એસા જ્ઞાત હોતા થા કિ માનોં ગર્જના કરતા હુઆ સમક્ષ (સામને) હી

તેનું નાક નાનું અને થપટું હતું. તેની ખંને ભસ્મરે વિકૃત ખડખડી અને ભગ્ન હતી. અથવા શુગ્નભગ્ન અને વક્ર—ત્રાંસી—હતી.

(સ્વજ્જોયગદિત્તચ્ચચુરાગં ઉત્તાસણગં વિસાલવચ્છં, વિસાલકુચ્છિ પલંબ-કુચ્છિ, પહસિય પયાલિય, પયહિયગત્તં)

તેની આંખોની રતાશ આગિયા જેવી ચમકતી હતી. તેનું વક્ષસ્થળ ભયંકર હતું. પેટ વિશાળ અને લાંબું હતું. તેનું શરીર પ્રહસિત, પ્રચલિત અને શ્લેષી ભૂત એટલે કે લપડી ગયેલું હતું. ત્યારે.

(પણ્ણમાણં અપ્પોહંતં અભિવયંતં, અભિગજ્જંતં, બહુમો ૨ અદૃઢહાસે વિણિમ્મુયંતં) તે નાચી રહ્યો હતો. પોતાના ખંને શુભ્રાંશુનું તે આસ્ફાલન (અક્ષાપત્તુ)

શોડશદ્વાસં વિનિર્મુઞ્ચત્, ' નીલુપ્પલગવલગુલિય અંયસિક્કુસુમપ્પગાસં ' નીલોત્પલ  
ગવલગુલિકાતસીકુસુમપ્રકાશં=નીલોત્પલં=નીલકમલં, ગવલં=મહિષશૃંગં, ગુલિકા  
=કૃષ્ણવર્ણવસ્તુવિશેષઃ પ્રસિદ્ધઃ, અતસીકુસુમમ્, અતસી=અલસીનામ્નાપ્રસિદ્ધો ધાન્ય-  
વિશેષસ્તસ્ય કુસુમં=પુષ્પં, તદ્વત્ પ્રકાશો વર્ણો यस્ય સ તથા તમ્, નીલકમલાદિ-  
સદૃશવર્ણમિત્યર્થઃ, ખુરધારં ક્ષુરધારં ક્ષુરસ્યેવ ધારા यस્ય સ તત્તથા તમ્ અતિતીક્ષ્ણ  
ધારમિત્યર્થઃ, [અસિં = કૃપાણં, ગૃહીત્વા, અભિમુદ્ધમાવયમાણં ] અભિમુદ્ધમાપતંત્  
પશ્યન્તિ સર્વેઽપિ સાંયાત્રિકાઃ અરહન્નકપ્રમુક્ત્વા અવલોકન્તે સ્મ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

મૂલમ્.—તદ્દર્શનં તે અરહણગવજ્ઞા સંજ્ઞાનાવાવાણિયગા ઇર્ણ  
ચ ણં મહં તાલપિસાયં પાસંતિ તાલજંધં દિવં ગાયાહિં બાહાહિં  
ફુદ્ધસિરં ભમરણિગરવરમાસરાસિમહિસકાલર્ણં ભરિયમેહવન્નં  
સુપ્પણહં ફાલસરિસજીહં લંબોટ્ટં ધવલવટ્ઠઅસિલિટ્ઠ તિક્ખ-  
થિરપીણકુઢિલદાઢોવગૂઢવયણં વિકોસિયધારાસિજુયલસમસ-

આ રહ્યા છે । બાર બાર તો યહ અદ્વદ્વાસ કરતા થા । ( નીલુપ્પલગવલ  
ગુલિય અયસિ કુસુમપ્પગાસં ખુરધારં અસિ ગહાય અભિમુદ્ધ માવય  
માણં પાસંતિ ) નીલકમલ, ગવલ-મહિષ શૃંગ, ગુલિકા-કૃષ્ણ વર્ણક  
વિશેષ, અલસી પુષ્પ, કે સમાન હસકા સારા શરીર અત્યંત કાલા થા ।

યહ એક તલવાર લિયે હુણ થા, જિસ કી ધારા ક્ષુરા કી ધારા કે  
સમાન તીક્ષ્ણ થી । વન અરહન્નક પ્રમુક્ત સાંયાત્રિકો ને ઉસે હસ  
તરહ સે દેખા કિ વહ ઉસ તલવાર કો ઢેકર હમ લોગોં કી ઓર  
આરહ્યા છે । સૂત્ર " ૨૦ "

કરી રહ્યો હતો. તેને બેઠેને એમજ લાગતું હતું કે તે બાણે ગર્જના કરતો  
સામે આવી રહ્યો હોય તે વારંવાર અદ્વદ્વાસ "ખડખડાટ કરીને હસતું" કરતો હતો.

( નીલુપ્પલગવલગુલિયઅયસિક્કુસુમપ્પગાસં ખુરધારં 'અસિં ગહાય અભિમુદ્ધ-  
માવયમાણં પાસંતિ )

નીલકમળ, ગવલ, કપડાંનાં ગુલિકા-કૃષ્ણવર્ણક વિશેષ, અલસીના પુષ્પની  
એમ તેનું શરીર ઘણું કાળું હતું.

તેના હાથમાં છરાનીધાર એવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી તલવાર હતી. અરહન્નક  
પ્રમુખ સાંયાત્રિકોને એમ થયું કે તે પિશાચ હાથમાં તલવાર લઇને તેમની  
તરફ જ ધસી આવી રહ્યો છે. ॥ સૂત્ર " ૨૦ " ॥

रिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरुफुरंतनिछालियगजीहं  
 अवयच्छियमहल्लविगयवीभच्छलालपगलंतरत्ततालुयं हिं-  
 लुयसगन्भकंदरविलंबअंजणगिरिस्स अग्गिजालुगिलंतवयणं  
 आऊसियअक्खचम्मउड्डुगंडदेसं चोणचिपिडवंकभग्गणासं  
 रोसागयधमधमेतमारुतनिट्टुरखरफरुसञ्जुसिर ओभुग्गणासिय-  
 पुडं घाडुब्भडरइयभीसणमुहं उद्धमुहकन्नसक्कुलियं महंत  
 विगयलामसंखालगलंवंतचलियकन्नं पिंगलदिप्पंतलोयणं  
 भिउडिताडियनिडालं नरसिरमालपरिणद्धच्चिंधं विच्चित्तगोणस-  
 सुवच्चपरिकरं अवहोलंत पुप्फुयायंतसप्पविच्छुय गोधंदरनउल-  
 सरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियागं भोगकूरकण्हसप्पधमधमे-  
 तलंवंतकन्नपूरं मज्जारसियाललइयखंधं दित्तवुद्युयंतं वूयकय-  
 कुंमलसिरं घंटारवेण भीमं भयंकरं कायरज्जणहियफोडणं  
 दित्तमट्टहासं विणिम्मुयंतं वममारुहिरपूयमंसमलमलिणपोच्चड-  
 तणुं उत्तासणयं विसालवच्छं पेच्छतां भिन्नणहरोममुहनयण-  
 कन्नवरवग्गचित्तकत्तीणिवत्तणं सरसरुहिरगयचम्मविततऊस  
 वियवाहुजुयलं ताहि य खरफरुसअसिणिद्धअणिट्टु दित्त असुभ  
 अप्पिय अमणुन्न अक्कंतवग्गुहि य तज्जयंतं पासंति, तं ताल-  
 पिसायरूवं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता भीया० संजायभय  
 अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा२ वड्डूणं इंदाण य खंदाण  
 य रुद्धसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकि-  
 रियाण य वड्डूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा२ चिट्ठंति ॥१॥

टीका-सर्वैः नौकास्थैः सांयात्रिकैः पिशाचरूपं दृष्टं, तत्रारहन्नकआवकवज्ज्यै-  
र्यत्कृतं तद् दर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूपं सविशेषं वर्णयन्नाह-‘तएण’ इत्यादि।

ततस्तदनन्तरं खलु तेऽरहन्नकवज्ज्याः संयात्रानौवाणिजकाः वक्ष्यमाणविशे-  
षणकं पिशाचस्वरूपं पश्यन्ति, दृष्ट्वा च मीतास्त्रस्ता बहूनामिन्द्रादीनां बहूनि  
मान्यता शतानि कुर्वन्तस्तिष्ठन्तीति वाक्यार्थः। कीदृशं पिशाचस्वरूपं पश्यन्ती-  
त्याह-‘एणं च णं महं’ इत्यादि। एकं च खलु महान्तं तालपिशाचम्=अतिदी-  
र्घत्वेन तालवृक्षकारः पिशाचस्तालपिशाचस्तम् पश्यन्ति, कथम्भूतं तालपिशाच-  
मित्याह-‘तालजंघं’ इति तालवृक्षवद्दीर्घं जङ्घे यस्य स तालजङ्घस्तम्, दिवं  
गताभ्यां=गगनस्पर्शिभ्यां बाहुभ्यां युक्तं, स्फुटं शिरसं=स्फुटं स्फुटितं बन्धनरहि-  
तत्वाद् विकीर्णं शिरः शिरोजातत्वाद् केशजालं यस्य स तथा तं, ‘भमरणिगरवरमा-

‘तएणं ते अरहण्णगवज्ज’ इत्यादि।

अब सूत्रकार इसी पिशाच के स्वरूप का पुनः विशेष वर्णन करते  
हुए कह रहे हैं कि जितने भी उस नौका में सांयात्रिक थे उन सबने  
एक अरहन्नक आवक के बिना उस विकराल पिशाच को देखकर  
क्या २ किया उनकी कैसी स्थिति हुई इस बात को कहने के लिये पहिले  
वे उक्त पिशाच के स्वरूप को विशेष रूप से पुनः कहते हैं-

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (अरहन्नगवज्जा) एक अरहन्नक आवक  
के सिवाय (संजसाणावा वाणियगा) उन समस्त सांयात्रिक पोत  
वणिक जनों ने (एणं च णं महं तालपिसायं पासंति) एक बड़ा ताल  
वृक्ष के जैसा पिशाच ताल वृक्ष के समान लंबी २ जंघाओं वाला था।

इस के दोनों बाहु मानों आकाश को स्पर्श कर रहे थे। इस के

‘तएणं ते अरहण्णगवज्जा’ इत्यादि

टीकार्थ-सूत्रकार अच्छी ढ़री पिशाचयुं सविशेषवर्णन करवाने कीछाथी  
कडे छे के पिशाचने ओधने अरहन्नक आवक सिवायना आछीना पील्ल गधा  
सांयात्रिकानी शुं स्थिति थध अने ते विकराण पिशाचयुं रौद्र स्वरूप ओधने  
तेओओ शुं शुं कथुं ओनुं वर्णन करतां पडेलां ते पिशाचना स्वरूपं विशेष  
रूपथी वर्णन हुं अच्छी करुं छुं-

“तएणं” त्थार भाद “अरहन्नगवज्जा” अरहन्नक आवकना सिवाय  
“संजसाणावा वाणियगा” गधा सांयात्रिक पोतवणिक जनो ओ “एणं च णं  
महं तालपिसायं पासंति” ओटा तालवृक्ष ओवो अने ताल वृक्ष ओवी ओटी  
साथणो वाणो पिशाच ओथो.

तेना णंने ऊथ आकाशने स्पर्शता डेता. छूटा पडेला तेना भाथाना वाण

સરાસિમહિસકાલર્ગ ' અમરનિકરવરમાષરાશિમહિષકાલર્ક=તત્ર અમરનિકર ઇવ= અમરસમૂહ ઇવ વરમાષરાધિરિવ, મહિષ ઇવ ચ યઃ કાલર્કઃ=કૃષ્ણવર્ણકસ્તં, 'મરિ-યમેહવન્નં' ભૃતમેષવર્ણ=જલપૂર્ણમેષઘટાવદતિનીલમ્, 'સુપ્પળહં' શૂર્પનક્ષં શર્પવત્ નસ્વા યસ્ય સ શૂર્પનસ્વસ્તં, ફાલસદ્દશજિહ્વં, ફાલમિદ્ધાગ્નૌ પ્રતાપિતં બોધ્યમ્, તત્સાદૃશ્યં ચ વર્ણદૈર્ઘ્યદીપ્ત્યાદિમિરિતિ, લમ્બોષ્ઠં=દીર્ઘોષ્ઠં, 'ઘવલવટ્ટ અસિલિટ્ટ તિક્કલથિરપીણકુટિલદાદોવગૂઢવચર્ણ' ઘવલવટ્ટાશ્લિષ્ઠતીક્ષ્ણસ્થિરપીણકુટિલદં-ષ્ટ્રોપગૂઢવદનં' ઘવલાભિઃ=ચેતાભિઃ, વૃત્તાભિર્વર્તુલાભિરશ્લિષ્ઠાભિર્વિરલાભિઃ તી-ક્ષ્ણાભિઃ સ્થિરાભિર્દ્રઢાભિઃ ઉપચિતત્વેન પીનાભિઃ=સ્થૂલાભિઃ વક્તૃતયા કુટિલામિથ દંષ્ટ્રાભિરુપગૂઢં વ્યાપ્તં વદનં યસ્ય સ તથા તમ્ અતિવિશાલદંષ્ટ્રમિત્યર્થઃ, 'વિકો-સિયધારાસિજુયલસમસરિસતપુય ચંચલગલંતરસલોલચવલપુરુરેત્તનિલ્લાલિયમ્ગ-જીહં' વિકોશિતધારાસિયુગલ સમસદ્દશતનુકચશ્ચલગલદ્રસલોલચપલપુરુરમાણ-નિર્લાલિતાગ્રજિહ્મ, તત્ર વિકોશિતા=અપનીતાવરણા ધારા યયોસ્તૌ વિકોશિત-

શિર કે બાલ બંધન રહિત હોને સે ઇધર ઉધર વિચરે હુણ થે ! હસ કા વર્ણઅમર સમૂહ ઉડદ કી રાશિ ઓર મહિષ કે શ્રુંગ જેસા કાલા થા । (મરિય મેહવન્નં) જલ સે મરી હુઈ મેષ ઘટા કે સમાન અત્યન્ત ક્યામ થા ।

(સુપ્પળહં, ફાલ સરિસ જીહં લંબોષ્ઠં, ઘવલવટ્ટ અસિલિટ્ટ તિક્કલ થિર પીણકુટિલદાદોવગૂઢવચર્ણ) નલ્લ હસ કે સૂપ (સૂપડા) જેસે થે । જિહ્વા હસ કી અગ્નિ મેં લાલ કિયે ગયે ફાલ કે સમાન થી । ઓછ લંબે ૨ થે । હસકા મુલ ચેત, ગોલ, ૨ વિરલી, નુકીલી, સ્થિર-દૃઢ-સ્થૂલ ઓર કુટિલ ટેઠી ૨ ઢાંઢોં સે યુક્ત થા ।

(વિકોસિય ધારાસિજુયલ સમસરિસતપુયં ચંચલ ગલંત રસ લોલ ચવલપુરુરેત્ત નિલ્લાલિયમ્ગજીહં) હસ કી જિહ્વા ઢોનોં અગ્ર

આમતેમ વિખેરાઈ ગયા હતા. તેનારંગ ભમરાઓના ટોળા, અડદનો ઢંગલો અને પાડાના શિંગડાં જેવો કાળો હતો "મરિય મેહવન્નં" પાણીથી ભરેલી મેષની ઘટાઓની જેમ ખૂબજ કાળો હતો.

(સુપ્પળહં, ફાલસરિસજીહં લંબોષ્ઠં, ઘવલવટ્ટ, અસિલિટ્ટ, તિક્કલથિરપીણ કુટિલદાદોવગૂઢવચર્ણ)

તેના નખો સૂપડા જેવા હતા. તેની જીભ અગ્નિમાં લાલચોળ થઈ ગયેલી હળની કોસ જેવી હતી તેના હોઠ લાંબા હતા. તેનું મોં સફેદ ચોળ મટોળ અણિયાળી, મજબૂત મોટી તેમજ કુટિલ ગ્રાંસી દાઢો વાળું હતું.

(વિકોસિય ધારાસિયુજલસમસરિસતપુયં ચંચલગલંતરસલોલચવલપુરુરેત્ત નિલ્લાલિયમ્ગજીહં)

धारी तयोस्स्योः खड्गयोर्द्युगलं=द्वयं तेन समसदृश्यौ=अतितुल्ये तनुके=मतले, चञ्चलं यथाभवति, यथाऽविश्रान्तं गलन्त्यौ=रसातिलालसत्वात् लालाबिन्दून्धः पातयन्त्यौ, अतएव रसलोले=रसास्वादानुरक्ते, चपले चञ्चले, अतएव फुरफुरायमाणे=प्रकम्पमाने, निर्लालिते मुखाद्वहिष्कृते, अग्रजिह्वे=अग्रभूतजिह्वे जिह्वाये येन स तथा तम् अतिदीर्घजिह्वमित्यर्थः तथा=‘ अवयच्छियमहल्लविगयबीमच्छलालपगलंतरत्ततालुयं ’ प्रसारितमहाविकृतबीमत्सलालाप्रगलद्रक्ततालुकम्, प्रसारितं मुखप्रसारणेन दृश्यमानं महाविकृतं बीमत्सं लालाभिः प्रगलद्रक्तं च तालु यस्य स तथा तं मुखप्रसारणमकटोभूतमहाविकृतलालापूर्णरक्ततालुवन्तमित्यर्थः तथा=‘ हिङ्गुलुयसगम्भकंदरविलंबअंजनगिरिस्स ’ हिङ्गुलुकसगम्भकंदरविलामिवाञ्जनगिरेः=हिङ्गुलेन रक्तवर्णकद्रव्यविशेषेण सगम्भ=सान्तरालं कन्दरूपं विलमिव अञ्जनगिरेः=कञ्जलपर्वतस्य मुखप्रसारेण रक्तातिदीर्घं जिह्वा तालु युक्तमुख विवरस्य हिङ्गुलुक पुञ्जसम्भूतकन्दरसादृश्यादति कृष्णवर्णमहाविशालशरीरस्याज्ञ-

भाग म्यान से निकाली हुई तलवार के समान तीक्ष्ण थी । पतलि थी । चंचल थी । रस में अतिलालसावाले होने के कारण उन से निरन्तर लार बह रही थी । रस के आस्वादन में वे अनुरक्त थे । चंचल होने के कारण वे कंप रहे थे । और मुख से बाहिर निकले हुए थे । तात्पर्य—इस की जीभ बहुत लंबी थी ।

( अवयच्छियमहल्लविगयबीमच्छलालपगलंतरत्ततालुयं, हिङ्गुलुयसगम्भकंदरविलंबअंजनगिरिस्स अग्निजालुग्गिलंतवयणं ) तालु इस का मुख के फाड़ते समय दिखलाई पड़ता था । महा विकराल था । बीमत्स था । लार से गीला हो रहा था और लाल था । इसका मुख अंजनगिरि ( काला पर्वत ) के हिङ्गुलुक से भरे हुए कंदरा रूप बिल के

तेनी एल्लना अने आगणनां टेस्वां म्यानमांथी अहार काढेदी तलवारनी नेम तीक्ष्णुं हत्तां, पातणां हत्तां चंचणुं हत्तां अने विषयना रसेने अहंशुं करवा भाटे अत्यंत दोषुप तेमअ आतुर होवा अहल्ल तेमांथी सतत लाण टपकथा अ करती हत्ती. तेज्जे रसास्वादमां अनुरक्त हत्तां. चंचणुं होवाने दीधे तेज्जे मूलुरक्षां हत्तां, अने मांथी अहार नीकणी रक्षां हत्तां. मतलण अये छे तेनी एल्ल भूण लांणी हत्ती

( अवयच्छियमहल्लविगयबीमच्छलालपगलंतरत्ततालुयं, हिङ्गुलुयसगम्भकंदरविलंबअंजनगिरिस्स अग्निजालुग्गिलंतवयणं )

मैं पड़ोशुं करती वणते तेजुं ताणवुं देणातुं हत्तुं. ते नीलत्स हत्तुं. लाणथीलीनुं अर्थ कहुं हत्तुं अने लाहयेण हत्तुं. तेजुं अा अंजनगिरि ( काला पर्वत ) ना हिंजणेथी करेदी कंदराना दर जेहुं हत्तुं ते अहुं विशाफ अने



નગિરિસામ્યાદ અજ્ઞનગિરેઃ કન્દરમિવ તન્મુલં પ્રતિભાતીતિમાવઃ । ‘અગ્નિજા-  
લુગિલંતવયર્ણ’ અગ્નિજ્વાલોદ્ગિરિદ્ વદનમ્ અગ્નિજ્વાલા ઉદ્ગિરિદ્=વહ્નિપ્લુર્વદ્=વ-  
દનં મુલં यस્યે સ તથા તમ્, यस્ય મુલ્લાદ્ અગ્નિજ્વાલાનિસ્સરતિ તથાવિષમિત્યર્થઃ,  
‘આઝસિય અક્લચમ્મઽહ્દગંદેસં’ આયુષિતાક્ષવર્માપકૃષ્ટ ગણ્ડદેશમ્-આયુષિત્વં  
વલિયુક્તમ્ યદક્ષવર્મ-શ્ચક્રો જલાકર્ષણ કોશસ્તદ્વદપકૃષ્ટૌ=અન્તઃ પ્રવિષ્ઠૌ ગણ્ડદેશૌ  
યસ્ય સ તથા તમ્, ‘વીળચિપિઢવંકમગ્ગણાસં’ વીનચિપિટ વક્રમગ્ગનાસં=વીના  
=હસ્તા, ચિપિટા=નિમ્ના, વક્રા=કુટિલા, મગ્ગા=મગ્ગેવ અયોધનોપરિકુટ્ટનેન પ્ર-  
સૃતેવ નાસા યસ્ય સ તથા તૈ, ચિપિટનાસિકાવન્તમિત્યર્થઃ ‘રોસાગયધમધમેંત-  
મારુતનિદ્દુરંઝરફરુસશ્ચુસિરં ઓમુગ્ગણાસિયપુઢં’ રોષાગતધમધમાયમાનમારુતનિ-

સમાન થા । यह स्वयं अति विशाल और अत्यंत काले वर्ण का था  
इस लिये अंजनगिरि के जैसा था-तथा इस की जिह्वा और तालुये  
दोनों अतिरक्त थे इस लिये वे हिङ्गुल के समान लाल थे ।

इसलिये सूत्रकार ने उस के मुख को अंजनगिरि की हिङ्गुल से  
भरी हुई कंदरा से उपमित किया है । इस के मुख से अत्यन्त लाल  
जिह्वा और तालु बाला होने के कारण ऐसा ज्ञात होता था कि  
मानों अग्नि की ज्वाला ही बाहर निकल रही है । ( आऊसियअक्ल-  
चम्म उह्दगंदेसं, वीणचिपिडवंकमगगणासं रोसागयधमधमेंतमारुत  
निदुदुरं खरफरुसशुसिरओमुगगणासियपुडं, वाडुच्चमडरइयभीसणमुहं )  
इस के दोनों कपोल ( गाल ) पानी को खींच ने वाले शुष्क वलि  
युक्त चरस के समान भीतर को घुसे हुए थे । नासिका इस की हृष  
चिपटी थी । देखी इस नासि का के छेदों से जो श्वासोच्छ्वास निकलता

અતિશય કાળારંગતું હતું. એટલા માટે જ તે અંજનગિરિ જેવું હતું. તેની  
છલ અને તાળવું બન્ને ખૂબજ લાલ હતાં એથી તેઓ હિંગગોઢ જેવા લાલ હતાં.  
સૂત્રકારે અંજનગિરિની હિંગગોઢથી ભરેલી કંદરાની તેના મોંની જે  
ઉપમા આપી છે. તેની પાછળ એજ કારણ છે. તેનું તાળવું અને છલ ખૂબજ  
લાલ હોવાથી એમ લાગતું હતું કે બાહ્યે તેના મોંમાંથી અગ્નિની જવાળાઓ  
બહારનીકળી રહી હોય.

(આઝસિય અક્લ ચમ્મ ડહ્દગંદેસં વીળચિપિઢવંક મગ્ગણાસં રોસાગય ધમ-  
મેંત મારુત નિદ્દુરંઝર ફરુસ શ્ચુસિરો મુગ્ગણાસિયપુઢં વાડુચ્ચમડરઇયમીસણમુહં)  
તેના બંને ગાલ હોવાની એમ કચ્ચલીયોવાળા એમ મોંમાં પેચી ગયેલા  
હતા. નાક તેનું નાનું અને અપડું હતું, ત્રાંચા નાકના ડિઢ્રોથી શ્વાસોચ્છવાસ

ष्टुरस्वरपरुषधुषिरावभुग्ननासिकापुटम् रोषात् क्रोधादिवागतः प्रबलतया धमधमा-  
यमानः धमधमेतिशब्दं कुर्वन् मारुतो=वायुनिष्ठरस्तीव्रः स्वरपरुषः=अतिकर्कशः पर-  
मदुःसहः, शुषिरयोः=स्त्रयोर्यस्य तत्तथा, तदेवं भूतम्-अवभुग्नं-वक्रं नासिकापुटं  
यस्य तथा तम् मल्लावद्वधमधमायमानश्चासोच्छ्वासपूर्णवक्रनासिकायुक्तमित्यर्थः 'घाटु-  
भमद्वरुयमीषणमुहं' घाटोद्धटरचितमीषणमुखं=तत्र घाटाम्यां शिरोऽवयवविशेषा-  
भ्याम् उद्धटं-विकरालं दुर्दर्शं रचितम् अतएव मीषणं मयंकरं, मुखं यस्य स तथा  
तं विकृतमयानकमुखयुक्तम् 'उद्धमुहकन्नसक्कुलियं' ऊर्ध्वमुखकर्णशष्कुलीकम्=  
ऊर्ध्वमुखे कर्णशष्कुल्यौ कर्णपुटौ यस्य स तम् । तथा-'महंतविगयलोमसंखालगगलं-  
तचलियकन्नं' महाविकृतलोमशङ्खालग्नलम्बमानवलितकर्णम्, महान्ति विकृतानि  
अमुन्दराणि लोमानि ययोस्तौ महाविकृतलोमानौ, तथा-तौ च शङ्खालग्नौ=शङ्खः=  
अक्षिप्रान्तभागस्तत्रालग्नौ=संलग्नौ तंस्पर्शिनौ लम्बमानौ च चलितौ=चञ्चलौ च कर्णौ  
यस्य स तथा तम्, 'पिङ्गलदिप्यंतलोयणं' पिङ्गलदीप्यमानलोचनं=पिङ्गले कपिले,

था वह ऐसा मालूम देता था कि मानों बड़े क्रोध से आ रहा है-और  
इसी लिये वायु भरते समय भस्त्रा ( धमनी ) से जैसा धम २ शब्द  
होते हैं उसी प्रकार का उस से भी धम धम ऐसा शब्द होता रहता  
था । वह तीव्र था अतिकर्कश था कठोर था । दुःसह था । उस का मुख  
शिर के अवयव विशेषों ने ऐसा ही दुर्दर्श बनाया था कि जिस से वह  
बड़ा भयंकर लगता था ।

( उद्धमुहकन्नसक्कुलियं ) इस के दोनों कर्णपुट ऊँचे उठे हुए  
थे । ( महंतविगयलोमसंखालगगलं तचलियकन्नं ) इन दोनों कानों  
के रोम इस के महा विकराल थे शंख अक्षि प्रान्त भाग तक ये दोनों कान  
फैले हुए थे । इसीलिये ये बड़े लंबे थे और चंचल थे ।

नीकणतो ढतो ते अेम ञ्छुतो ढतो के ञ्छे ञ्हु कोधभां सराधने ते सामे  
धसी आवतो डोय, ओधी ञ् न्यारे ते म्वास डेतो ढतो त्यारे अम्मा  
( धमञ्जु ) मांथी अेम ' धम ' धम शण्ड थतो रडे छे तेवेअध्वनि थया  
ढतो. ते तीम, ककंश कठोर अने दुःसह ढतो. तेना भोंना कड इपा अवथ-  
वेथी ते दुर्दर्श अने मडा लयंकर लागतो ढतो.

( उद्धमुहकन्नसक्कुलियं ) तेनी ञ्ने तरङ्गी कानपटी उथे उपसेदी ढती  
( महंतविगयलोमसंखालगगलं तचलियकन्नं ) ञ्ने कान परना रुपांटा मडाविक-  
राण ढतां. आंभना ञ्छुआओसुधी तेना ञ्ने कान इवायेला ढता. ओटला  
भाटे ञ् ओओ लांभा अने थंथण ढता.

दीप्यमाने=भास्वरे, लोचने यस्य स तथा तम्, मार्जारवत्पदीसनेत्र मित्यर्थः, तथा = 'मिउडितडियनिडाल' भ्रुकुटितडिल्लालटं=भ्रुकुटिः- भ्रूवक्रता कोपकृता सैव तडिद् यस्मिन्, तथाविधं ललाटं, मालं यस्य स तथा तम् कोपावेषेन विद्युत्सदृश-भ्रूसमुल्लसितललामयुक्तमित्यर्थः । तथा-'नरसिरमालपरिणद्धविधं' नरशिरोमाला-परिणद्धचिह्नं=नरशिरोमालैव परिणद्धं=परिघृतं चिह्नं=पिशाचत्वं बोधकं लक्षणयेन स तथातं=नरतुण्डमाला धारिणमित्यर्थः । तथा-'विचित्तगोणसमुबद्धपरिकरं' विचि-प्रगोनसमुबद्धपरिकरं=विविचैः=बहुवर्णकयुक्तैः, गोनसैः=सर्पविशेषैः, सुबद्धः परिकरः कवचो येन स तथा तम्, 'अवहोलंतपप्फुयायंतसप्पविच्छुय गधुंदरनउलसरड विरइयविचित्तवेयच्छमालियागं' अवधोलयत् फुत्तुर्वत् सर्पवृश्चिकगोधोन्दुरनकुल-सरटविरचितविचित्रवैकलमालिकं=अवधोलयन्तः किंचिम् प्रसर्पन्तः फुत्तुर्वन्तश्च ये सर्पाः वृश्चिकाः गोधा उन्दुरा नकुलाः सरटाश्च तैर्विरचिता विचित्रा विविध-वर्णवती, वैकलमालिकास्कन्धलम्बितमाला यस्य स तथा तम्, स्कन्धदेशे फुत्कार-

(पिंगलदिप्यंतलोयणं, मिउडितडियनिडालं नरसिरमालपरिणद्धं विधं विचित्तगोणसमुबद्धपरिकरं अवहोलंतपप्फुयायंतसप्प विच्छुय गोधंदरनउलसरडविरइयं विचित्तवेयच्छमालयागं) इस की दोनों आँखें मार्जार (बिल्ली) की तरह पीली और चमकीली थीं। इस का ललाट भ्रू वक्रता रूप बिजली से युक्त था इस ने पिशाचत्व के बोधक नरतुंडकी माला रूप चिह्न को धारण कर रक्खा था। इस ने जो कवच पहिरा हुआ था-वह अनेक वर्णवाले सर्पों से व्याप्त हो रहा था। अथवा-कवचके स्थानापन्न इस ने विविध वर्णवाले सर्पों को अपने शरीर पर धारण कर रक्खा था।

स्कन्ध देश में, इधर उधर, सरकते हुए तथा फुत्कार करते हुए सर्पों की, वृश्चिकों की, गोंहों की, उन्दुरों की, नकुलों की, सरटों की, विविध

(पिंगलदिप्यंतलोयणं मिउडितडियनिडालं नरसिर-मालपरिणद्धं विधं विचित्तगोणसमुबद्धपरिकरं अवहोलंतपप्फुयायंतसप्पविच्छुयगोधंदरनउलसरडविरइयं विचित्तवेयच्छमालयागं)

तेनी ज'ने आंजो जिलासानी जेम पीणी अने चमकती હતી. પકેશુ (ભસ્મર) રૂપ વીજળીથી તેનું કપાળ યુક્ત હતું. પિશાચપણના પ્રમાણ રૂપે તેણે નરતુંડની માળા પહેરેલી હતી. ઘણારંગના સાપોથી તે આવેશિત હતો. અથવા કવચના સ્થાને તેણે ભતભતના રંગવાળા અનેક સાપોને શરીર ઉપર ધારણ કરેલા હતા.

અથા ઉપર આમતેમ હિલચાલ કરતા એટલે કે સરકતા તેમજ કુદાર કરતા સાપો, વીંછીઓ, ઘો, ઉંદરો, નોળિયાઓ, અને સરટોની અનેક રંગો

युक्तमसर्पत्सर्पादिमालाधारिणमित्यर्थः । तथा—‘मोगकूरकण्हसप्पधमधर्मेतलंबंतकन्न  
पूरं’ मोगकूरकण्हसर्पधमधमायमानलम्बमानकर्णपूरम्=मोगैः=फणैःकूरी भयंकरौ  
मोगकूरी, तौ च कण्हसर्पौ च मोगकूरकण्हासर्पौ, तौ च धमधमायमानौ=कुत्तुर्वन्तौ  
तावेव लम्बमाने कर्णपूरे=कर्णालङ्कारविशेषौ यस्य स तथा तम्, तथा—परिधृतकण्हसर्प  
कर्णभूषणमित्यर्थः ‘मज्जारसियाललहयखंघं’ मार्जारशृगाललगितस्कन्धम्=मार्जा  
रशृगाललगिता संयोजिताः स्कन्धयोरेन स तथा तम्, ‘दिस्सधुधुयंत धूयकयकुंतल-  
सिरं’ दीप्तधुधुर्बद्धधूककुतकुंमलशिरस्कम्=दीप्त-दीप्तस्वरं यथामवत्येवं धुधुशब्दं  
कुर्वन्तो यौ धूकाः=उल्लाकाः तपचकृतः कुम्भलः शेखरकः शिरोभूषणं शिरसि येन  
स तथा तम्, शब्दायमानोल्कशिशोभूषणधारिणमित्यर्थः, तथा—घंटारवेण भीमं=  
भयंकरम्, घण्टानां शब्देन भीमं भयंकरम्, अतिमयानकम्, तथा—‘कायरजण-  
हिययफोडणं’ कातरजनहृदयस्फोटनम्=कातरजनानां मीरजनानां यानि हृद-

वर्णं संपन्न माला उस ने पहिरी हुई थी । ( मोगकूरकण्हसप्पधम  
धर्मेत लंबंतकन्नपूरं ) कर्णपूरों के स्थान पर इसने फणावलि से भयंकर  
बने हुए, तथा कुत्कार करते हुए काले दो सर्पों को पहने रखे थे ।  
( मज्जारसियाल लहय खंघं ) अपने दोनों स्कन्धों पर इसने मार्जार  
और शृगालों को बैठा रखा था । ( दिस्सधुधुयंत धूयकयकुंतलसिरं ) दीप्त  
स्वर जिस तरह से हो इस तरह से घू घू करते हुए उल्लुओं को इस  
ने अपने शिर का आभूषण—मुकुट बनाया था । ( घंटारवेण भीमं भयं-  
करं कायरजणहियय फोडणं दिस्समत्तट्टहासं विणिम्भुयंतं वसारुहिर-  
पूयमंसमलमलिणपोच्चडतणुं ) घंटाओं के शब्द से यह भयंकर बना  
हुआ था । कातरजनों के हृदय का भयजनक होने से यह विदारक बना

वाणी भाषा तेले पड़ेदेवी होती । (मोगकूरकण्हसप्पधमधर्मेतलंबंतकन्नपूरं) कुं-  
लाना स्थाने तेले कण्हाज्याथी भयंकर तेमज कुलार करता जे भाषा सापो पड़े-  
देवा होता (मज्जारसियाललहयखंघं) पोताना भन्ने भषा उयर तेले भिडाडा भन्ने  
शृगालने भेसाडेवा होता । (दिस्सधुधुयंत धूयकयकुंतलसिरं) भोटा :साहे ‘धू’  
‘धू’ करनार धूयडाने तेले पोताना भाथाना आभूषण जेटले के मुकुट बनाव्या होता ।

(घंटारवेण भीमं भयंकरं जणहिययफोडणं दिस्स मत्तट्टहासं विणिम्भुयंतं  
वसारुहिरपूयमंसमलमलिणपोच्चडतणुं)

घंटना भीम ध्वनिथी ते भयंकर लागतो होता । कातर जनाने हृदयाना  
भयथी निरीक्षुं करनार होवाथी ते ‘विदारक’ होता । वारंवार ते महुा भयंकर उग्र

યાનિ તેષાં સ્ફોટનં મયજનકત્વેન વિદારકં, તથા-વિષમદૃઢાસં વિશિષ્મ્યંતં ' વિસમદ્વાદ્વાસમ્=ઉગ્રમદ્વાદ્વાસં વિનિર્મુશ્ચન્તં=મકુર્વન્તમ્, તથા- ' વસારુહિરપૂયમંસ-મલમલ્લિણપોચ્ચઢતણું ' વસારુહિરપૂયમાંસમલમલ્લિણપોચ્ચઢતણુમ્=વસારુહિરપૂયમાંસમલૈર્મલ્લિના પોચ્ચઢા આદ્રાં ' પચ પચ ' કુર્વાણા તનુઃ શરીરં યસ્ય સ તથાતમ્, તથા- ' ઉત્તાસણયં ' ઉત્તાસનકમ્=ઉદ્વેજકં, વિશાલવક્ષસ્કમ્=વિસ્તીર્ણવક્ષસ્યલકમ્ ' પેચ્છંતામિન્નણહરોમમુહનયણકન્નવરવગ્ધચિત્તકત્તીણીવસર્ણં ' પ્રેક્ષમાણાઽમિન્નનલ્લરો-મમુલ્લનયનકર્ણવરવ્યાઘ્ર ચિત્ર કૃત્તિનિવસનમ્=તત્ર પ્રેક્ષમાણા-દૃશ્યમાના અમિષ્ઠાઃ =અચ્છિન્નઆનલાઞ્ચ રોમાણિ ચ મુલ્લં ચ નયને ચ કર્ણૌ ચ યસ્થાં સા પ્રેક્ષમાણાઽમિન્નનલ્લરોમમુલ્લનયનકર્ણૌ સા ચાસૌ વરવ્યાઘ્રસ્ય ચિત્રા-વિવિધકર્ણકા, કૃત્તિ-શ્ચર્મ સૈવ નિવસનં-પરિધાનં વલ્લં યરય સ તથા તમ્ અલ્પઢવ્યાઘ્રચર્મપરિધાનમિત્યર્થઃ, તથા- ' સરસરુહિરગયચમ્મવિતતઝસરિયવાહુજુયલં ' સરસરુહિરગજચર્મ વિ-તતોચ્છૂતવાહુયુગલં=સરસં-રુહિરાદ્રૌ યદ્ ગજચર્મ, તદ્ વિતતં-વિસ્તારિતં યત્ર તત્ સરસગજચર્મવિતતં, તદેવં ભૂતમ્ ઉચ્છૂતમ્ ઉત્થાપિતં વાહુયુગલં યેન સ તથા તમ્

હુઆ થા વાર ૨ યહ મહા ડગ્ર, અદ્વાદ્વાસ કર રહા થા । હસ કા શરીર વસા-ચર્મી, રુહિર, પૂય-પીપ, માંસ એવં મલ્લ ઇન સે મલ્લિન હો રહા થા । ઓર મસક ને પર પચ પચ હસ પ્રકાર કા શબ્દ કરને લગતા થા ।

( ઉત્તાસણયં, વિશાલવક્ષં પેચ્છંતામિન્નણહરોમમુહનયણકન્ન વરવગ્ધચિત્તકત્તીણિવસર્ણં, સરસરુહિરગયચમ્મવિતતઝસરિય વાહુ જુયલં ) હસે દેખતે હી લોગ કાંપ જાતે થે, । હસ કા વક્ષસ્થલ ( છાતી ) વહુત વિશાલ થા । હસ ને જો વ્યાઘ્ર કા વિવિધ વર્ણ વાલા ચર્મ રૂપ વલ્લ પહિર રહ્યા થા હસ મેં સ્પષ્ટ રૂપ સે વ્યાઘ્ર કે અચ્છિન્ન નલ્લ, રોમ, મુલ્લ, નયન' ઓર કાન દૃષ્ટિગત્ હો રહે થે । અપને ઉત્થાપિત કિયે હુય વાહુ યુગલ મેં હસ ને લમ્બા લૂન સે લથ પથ હુઆ મીલા ગજ કા ચમડા ધારણ કર રહ્યા થા । ( તાહિયલ્લરફલ્લસઅસિ

અદ્વાદ્વાસ કરતો હતો. તેનું શરીર વસા-ચર્મી, લોહી, પીપ, માંસ અને મળથી ખરડાયેલું હતું. અને ભેરથી હવાવાથી (ફેસકી જવાથી) 'પચ' પચ શબ્દ થતો હતો.

(ઉત્તાસણયં, વિશાલવક્ષં પેચ્છંતામિન્નણહરોમમુહનયણકન્નવરવગ્ધ ચિત્તકત્તી ણિવસર્ણં, સરસરુહિરગયચમ્મ વિતત ઝસરિયવાહુજુયલં )

તેને ભેતાની સાથે જ માણસો મૃજવા માંડતા હતા. તેનું વક્ષસ્થળ ખૂબજ પહોળું હતું. અનેક બાતના રંગોના પહેરેલા વાઘના આમડાના વલ્લમાં વાઘના આખા નખો, કંવાંટા, ચોં આંખે અને કાન સ્પષ્ટ રીતે દેખાઇ રહ્યાં હતાં. હવા કરેલા બંને હાથમાં તેણે લોહીથી ખરડાયેલું લાંબુ હાથીનું આમડું પહેરેલું હતું.

ऊर्ध्वीकृतशुजद्वयलम्बमानमस्त्रदुधिरगजचर्मधारिणमित्यर्थः । तथा—‘ ताहिय खर  
फरुसअसिणिद्धअणिठदिच्चअसुमअप्पियअमणुन्नअक्कंतवग्गूहिं य तज्जयंतं’ तामिश्च  
खरपरुपास्निग्धनिष्ठदीप्ता शुभा प्रिया मनोज्ञा कान्तवाग्मिश्च तर्जयन्तं=ताभिः  
=तादृशीभिर्मयंकराभिश्च, खरपरुषा=अतिकर्कशा, अस्निग्धाः=स्नेहरहिता, अनि-  
ष्टा=दुःश्रवत्वेनानीप्सिताः, दीप्ता=उपतापजनकत्वादुज्ज्वलाः, अशुभाः=अमङ्गलाः,  
अप्रियाः=श्रुतिकदुस्वात्, अमनोज्ञाः=मनोविकृतिजनकत्वात्, अकान्ताश्च विकृत  
स्वरत्वाद् या वाचस्ताभिश्च तर्जयन्तं=अस्तयन्तं पश्यन्तिस्म । अथ पुनस्तत् ताल  
पिशाचरूपं ‘ एज्जमाणं ’ एजमानं=नावंप्रति अभ्यागच्छत् पश्यन्ति, दृष्ट्वा मीताः,  
प्रस्ताः, प्रसिताः, उद्विग्नाः, संजातभयाः अन्योन्यस्य=परस्परस्य, कार्यं=शरीरं,  
‘ समतुरंगेमाणा २ ’ आश्लिष्यन्तः २ बहूनामिन्द्राणां च स्कन्दानां=कार्तिकेयाणां  
च, रुद्रसिववैश्रमणनागानां नागो=भवनपतिविशेषः, भूतानां यक्षानां च भूतयक्षाः

णिद्ध अणिठदिच्चअसुमअप्पियअमणुन्नअक्कंतं वग्गूहिं य तज्जयंतं  
पासइ ) उस ताल पिशाच को भयंकर, अत्यन्त कर्कश, स्नेह शून्य,  
अनिष्ट, उपताप जनक, अमंगल रूप अप्रिय अमनोज्ञ, एवं अकान्त  
ऐसी अपनी वाणी से दूसरों को दुःखित करता हुआ उन लोगोंने देखा ।

( तं तालं पिसायरूपं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता, मीया०  
संजायभया अन्नमन्नस्स कार्यं समतुरंगेमाणा २ बहूणं इंदाणय खंदाण  
य रुदिसिव वेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टं किरि-  
याण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवाइयमाणा २ चिद्धंति ) और साथ में  
यह भी देखा की वह ताल पिशाच का रूप हम लोगों की और आ रहा

( ताहि य खरफरुस असिणिद्ध अणिठदिच्च असुमअप्पियअमणुन्नअक्कंतं  
वग्गूहिं य तज्जयंतं पासइ )

ताल पिशाचने ते दोकान्ते पातानी लयंकेर, अत्यंत कर्कश, स्नेह  
रहित, अनिष्ट उपताप जनक, अमंगलरूपं अप्रिय अमनोज्ञ, अने अकान्त  
( पीबत्स ) वाष्पिणी पीबन्त्योने त्रास आपतो ज्येथो ।

( तं तालं पिसायरूपं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता, मीया० संजायभया,  
अन्नमन्नस्स, कार्यं समतुरंगेमाणा २ बहूणं इंदाण य खंदाण य रुदिसिववेसमण  
णागाणं भूयाणय जक्खाणय अज्जकोट्टं किरिया य बहूणि उवाइयसयाणि ओवा  
इयमाणा २ चिद्धंति )

—व्यन्तरभेदास्तेषाम्, तथा—आर्यकोटिक्रियाणां च=आर्याप्रशान्तस्वभावा देव्यः, कोटिक्रिया=चण्डिकारूपादेव्यः, तासां बहूनि उपयाचितशतानि=बहुविधानि मान्यताशतानि उपयाचमानाः २ कुर्वन्त २ स्तिष्ठन्ति ॥सू-२१॥

मूलम्—तएणं अरहन्नए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अत्तेत्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुद्विग्गे अभिन्नमुहराग णयणवन्ने अदीणविमण-माणसे पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ, पम-जित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता करयलओ एवं वयासी-नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, जइ णं अहं एत्तो उवसग्गाओ मुंचामि. तो मे कप्पइ पारित्तिए अहणं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि, तो मे तहा पच्चक्खाए यव्वे त्तिकहु सागारं भत्तं पच्चक्खाइ, तएणंसे पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहन्नगं एवं वयासी-हं भो ! अरहन्नगा अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया णो खलु

है इस बात को देख कर वे सब के सब भयभीत हो गये, डर गये, उद्भिन्न हो गये। उन के प्रति प्रदेश में भय का संचार हो गया। इस तरह होकर वे सब परस्पर में एक दूसरे के शरीर से चिपक गये। और अनेक इन्द्रों की स्कन्द की कार्तिकेय की रुद्र की शिव की वैश्रमण की नाग की भूत की यक्ष प्रशान्त स्वभाव वाली देवियों की तथा चण्डिका रूप देवियों की सैकड़ों प्रकार बार २ मान्यता करने लग गये। सूत्र “२१”

ताव पिशाच ने तेजोको पीतानी तरह ४ आवतो जेयो. आरीते जेधने तेजो गधा लयत्रस्त यधगया, गीगया, उद्भिन्न यधगया. तेमना आत्माना प्रतिप्रदेशमां लयतुं संचरषु यध गयुं. तेजो लयलीत यधने ओक गीलने ओंटी पठया, अने तेजोमांथी घषु धन्नीनी स्कंदनी, कार्तिकेयनी रुद्रनी, शिवनी, वैश्रमणनी, नागनी, भूतनी, यक्षनी, प्रशान्त स्वभाववाणी देवीजोनी तेम ४ चण्डिकाइ देवीजोनी सेकडे प्रकारनी बार-बार मानता मानवा दाग्या. ॥ सूत्र “ २१ ” ॥

कप्पइ, तव सीलव्वयगुणवेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासाइं चालित्तए वा एवं खोभेत्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जइणं तुमं सीलव्वय जाव ण परिच्चयसि तो ते अहं एयं पोयवहणं दोहि अंगलियाहिं गेणहामि, गिण्हत्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइं उड्डं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता अंतो जलंसि णिव्वोलेमि जेणं तुमं अट्ठुहट्ठवसट्ठे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तएणं से अरहन्नए समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयज्जीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा तुमं णं जा सद्धा तं करेहित्तिकट्ठु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥ सू० २० ॥

टीका—अरहन्नकवज्यैः सांयात्रिकैर्यथावृष्टितं तदुक्तम्, अधुनाऽरहन्नकेन पिशाचरूपमवलोक्य यत् कृतं तदाह—‘ तएणं ’ इत्यादि । ततस्तदा खलु स अरहन्नकः अरहन्नकनामको मुख्यः सांयात्रिकः, श्रमणोपासकः=आवकस्तं दिव्यम्

तएणं से अरहन्नए इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद मुख्य सांयात्रिक अरहन्नक को छोड़ कर अन्य सांयात्रिकों ने जो २ किया उस के बाद (समणोवासए अरहन्नए) श्रमणोपासक अरहन्नक ने (तं दिव्वं पिसायरूवं पासित्ता ) जब दिव्य

‘ तएणं से अरहन्नए ’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) अरहन्नक सिवायना गीला सांयात्रिकोनी आवी डालत थड थार भाइ (समणोवासए अरहन्नए) श्रमणोपासक अरहन्नक (तं दिव्वं पिसायरूवं पासित्ता ) अथारे ते दिव्य अपूव्वं—अद्वुत—पिशाचना रूपे



अपूर्वदृष्टमद्भुतं पिशाचरूपम् एजमानं=नावं प्रचि समागच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वाअभी तः, भयरहितः, अत्रस्तः त्रासमपाप्तः अचलितः, अपाप्तलोभः असंभ्रातः, संभ्रा-  
न्तिरहितः अनाकुलः, अव्यग्रः अनुद्विग्नः, अप्रकम्पः अभिन्नमुखरागनयनवर्णः=  
अभिन्नौ-अविकृतौ मुखरागनयनवर्णौ यस्य स तथा, तस्य भयाभावांमुख-  
रागोनयनवर्ण आन्यथा न अदीनविमानो जातइत्यर्थः मानसः=अदीनविमनः-नदीनं  
दैन्यप्राप्तं, नापि विमनः=दुर्मनः नापि विकृतं मानसं यस्य स तथा तस्य मनो-  
ऽप्यन्यथा न जातमित्यर्थः, तथा भूतः सन्न पोतवहनस्य नौकायानस्यैकदेशे=एक-  
भागे वस्त्रान्तेन=वस्त्राञ्चलेन खलु भूमिम्=उपवेशनस्थानं प्रमार्जयति प्रमार्ज्यं  
स्थानम्-उपवेशनार्हं स्थानं संशोध्य जीवादिरहितं कृत्वा तत्र तिष्ठति=उपविशति,  
स्थित्वा=उपविश्य करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं दशनखं मस्तकेऽज्जालिं कृत्वा  
एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-नमोऽस्तु अर्हद्भयो यावत् सिद्धिगतिनामधेयं

अपूर्वदृष्ट-अद्भुत-पिशाच रूप को ( एज्ज मानं ) नाव की तरफ आता  
हुआ ( पासइ ) देखा-तो ( पासित्ता देखकर वह ( अभीए ) डरा नहीं  
( अतत्थे ) अस्त नहीं हुआ ( अचलिए ) धैर्य से चलायमान नहीं हुआ  
( असंभते ) घबराया नहीं ( अणाउले ) आकूल व्याकुल नहीं बना  
( अणुव्विगो ) उद्विग्न नहीं हुआ ( अभिन्न मुखरागणयनवन्ने ) उस  
के मुख का राग और नयनों का वर्ण विकृत नहीं बना ( अदीणविम-  
णमाणसे ) उस का मन न दीन बना और न विकृत ही बना ( पोयव  
हनस्स एगदेसंसि बत्थं तेण भूमिं पमज्जइ ) किन्तु नौका यान के एक  
तरफ वस्त्राञ्चल से भूमि को प्रमार्जित करने लगा- ( पमजित्ता )  
प्रमार्जित कर के फिर वह ( ठाणं ठाइ ) बैठ ने के योग्य स्थान का  
संशोधन कर उसे जीवादि रहित कर वहाँ बैठ गया। ( ठाइत्ता करयलओ

“ एज्जमानं ” पोताना वहाणु तरइ आवतु “ पासइ ” जेयुं त्यारे “ पासित्ता ”  
जेधने ते “ अभीए ” बाय पाभ्यो नहि, “ अतत्थे अस्त थये नहि, “ अचलिए ”  
धैर्यथी विशासित थये नहि, “ असंभते ” गबराये नहि, “ अणाउले व्याकुण  
थये नहि, ( अणुव्विगो ) उद्विग्न थये नहि, ( अभिन्नमुखरागणयनवन्ने )  
तेना मेना रंजअने आंभोना वलुंनभां जराये विकृत थये नहि ( अदीण  
विमणमाणसे ) तेजुं मन दीन जन्थुं नहि तेभज विकृत थयुं नहि.  
( पोयवहनस्स एगदेसंसि बत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ ) ते वहाणुना ओके तरइनी  
भूमिने वस्त्रना छेडाथी प्रमार्जित करवा लाये। ( पमजित्ता ) प्रमार्जित  
करीने ते ( ठाणंठाइ ) जेसवा येअ स्थानजुं संशोधन करीने. स्थानने एव  
वजेइथी रहित भनावीने त्यां जेसीगये।- ( ठाइत्ता करयलओ एवं वयासी )

स्थानं संप्राप्तेभ्यः, यदि खल्वहम् एतस्मादुपसर्गाद् पिशाचकृतसंकटात्, निर्वि-  
घ्नो भवामि शुश्रामि, तदा मे तथा=तावत्पर्यन्तं प्रत्याख्यातव्यम्० चतुर्विधभक्त-  
प्रत्याख्यानं मयाऽनुष्ठेयमित्यर्थः, इति कृत्वा साकारभक्तं=चतुर्विधमाहारं प्रत्या-  
ख्याति०। ततस्तदनन्तरं खलु स पिशाचरूपधारी देवः, यत्रैवारहन्नकः अरहन्नक-  
नामकः श्रमणोपासकः = श्रावकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यारहन्नकम्-एवं=  
वक्ष्यमाणमकारेणावादीत-हंभो ! अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! =अप्रार्थितं

एवं वयासी ) बैठ कर उस ने अपने दोनों हाथों की अंजलि बनाई ।  
और उसे मस्तक पर रख कर आवर्त करते हुए वह इस प्रकार कह ने  
लगा-( णमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं ) यावत् सिद्धगति को  
प्राप्त हुए अर्हंत प्रभुओं को नमस्कार हो (जइणं अहं एत्तो उवसग्गाओ-  
मुंचामि तो मे कप्पइ पारित्तए)

यदि मैं इस पिशाच कृत उपसर्ग से बच गया तो ही अशनादि  
ग्रहण करूँगा (अहं णं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि तो मे तद्वा पच-  
क्खाएयव्वे ) यदि मैं इस उपसर्ग से नहीं बचा तो मेरे तौवत्पर्यन्त  
चतुर्विध आहार का त्याग है ( त्ति कइहु ) ऐसा विचार कर ( सागारं  
भत्तं पचक्खाइ ) उसने साकार चतुर्विध आहारका प्रत्याख्यान कर दिया ।  
अर्थात् सागारी संथारा किया - ( तएणं से पिसायरुव्वे जेणेव अर-  
हन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ ) इस के बाद वह पिशाच रूप  
धारी देव जहाँ वह श्रमणोपासक अरहन्नक बैठा था-वहाँ आया

એચીને તેણે પોતાના બ'ને હાથની અ'જ્ઞિ બનાવી અને તેને મસ્તક ઉપર  
મૂંચીને ફેરવતાં તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો-“ણમોત્થુણં અરહંતાણં જાવ  
સપત્તાણં” યાવત્-સિદ્ધગતિને પામેલા અર્હંત પ્રભુઓને મારા નમસ્કાર છે.

( જઈણં અહં એત્તો ઉવસગ્ગાઓ મુંચામિ તો મે કપ્પઈ પારિત્ત

ને હું' આ પિશાચના ઉપસર્ગોથી બચી જઈશ તોજ આહાર વગેરે  
શહેણ કરીશ. “ અહંણં એત્તો ઉવસગ્ગાઓ ણ મુંચામિ તો મે તદ્વા પચ્ચક્ખાણ  
યવ્વે ” આ ઉપસર્ગથી મારી રક્ષા નહિ થાય તો તાવત્પર્યન્ત ચારભૂતના  
આહારનો હું' ત્યાગ કરું છું. “ત્તિકહુ” આમ વિચારીને “ સાગરં ભત્તં  
પચ્ચક્ખાઈ ” તેણે સાકાર ચતુર્વિધ આહારનું પ્રાત્યાખ્યાન કર્યું.

એટલે કે તેણે સાગારી સંથારો કર્યો

( તएणं સે પિસાયરુવ્વે જેણેવ અરહન્નए સમણોવાસए તેણેવ ઉવાગચ્છइ )

ત્યાર બાદ પિશાચ રૂપ ધારીદેવ જ્યાં શ્રમણોપાસક એકાહિતા ત્યાં આગ્યો,  
શ્રા ૪૫

—यत् केनापि न प्रार्थितं मरणं, तत् प्रार्थितं येन, स अप्रार्थितप्रार्थितः । यद्वा-  
हे तत्सम्बोधनम् हे मरणप्रार्थक !—अप्रस्थित प्रस्थित । अप्रस्थितः येन प्रस्थित इव  
सुमूर्धुरित्यर्थस्तस्य संबोधनम्, हे मरणवाञ्छक ! यावत् इह यावच्छब्देन  
' दुरन्तपतलवक्त्रणा, हीनपुण्याचाउदसिया सिरिहिरिधीकिचि ' इत्यन्तस्य संग्रहः ।  
दुरन्तप्रान्तलक्षण ! दुरन्तं विपाककटु प्रान्तम् अवसानं लक्षणं स्वभावो यस्य स  
तथा, तस्यामन्त्रणं, हीनपुण्य चातुर्दशिक ! हीना क्षीणा पुण्या=चन्द्रकला शुभकार-  
कत्वात् तस्यां सा हीनपुण्या=कृष्णपक्षीयेत्यर्थः, सा चासौ चातुर्दशी च हीनपुण्य  
चातुर्दशी, तस्यां जातः, तत्सम्बोधनम् हे माग्यहीन इत्यर्थः । श्रीहीधी कीर्तिपरि-  
वर्जित । हे दरिद्र । हे निर्लेज्ज । हे बुद्धिहीन ! हे कुलकलङ्कित । श्रीः=लक्ष्मीः,  
ह्रीः=लज्जा, धीः=बुद्धिः, कीर्तिः=यशः, ताभिः नो खलु कल्पते तवशीलव्रतगुण-  
विरमणप्रत्याख्यानपौषधोपवासान्-तत्र शीलानि=सामायिकदेशवकाशिकपौषध-  
तिथिसंविभागाख्यानि, व्रतानि=पञ्चाणुव्रतानि, गुणाः=त्रीणिगुणव्रतानि, विरमणं

(उवागच्छिता अरहन्नगं एवं वयासी) आकर उस ने अरहन्नक  
से इस तरह कहा (हं भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया)  
हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मरण की इच्छा करने वाला ।  
यावत् शब्द से “ हे दुरन्त प्रान्त लक्षण ! हे हीन पुण्य चातुर्दशिक !  
हे श्रीहीधी कीर्ति परिवर्जित ! हे कुल कलङ्कित ! ( नो खलु कल्पे,  
तव शीलव्यगुण वेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाहं चालित्तए वा  
एवं खोमेत्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चव  
त्तएवा ) मुझे तुम्हारे द्वारा पालित शीलो को व्रतों को गुणव्रतों को  
मिथ्यात्व की विनिवृत्ति को पर्व दिनों में हरित काय आदि के परित्याग

“ उवागच्छिता अरहन्नगं एवं वयासी ” आवीने तेले अरहन्नकने आ प्रभावे  
कथं—“ हं भो अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया ” हे अरहन्नक !  
हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मृत्युने छेड़वानी छच्छा राखनार ! ‘ यावत् ’ शब्दही  
हे दुरन्तप्रान्त लक्षण ! हे हीनपुण्य चातुर्दशिक ! हे श्रीहीधी कीर्ति परिवर्जित !  
हे कुलकलङ्कित !

( नो खलु कल्पे, तव शीलव्यगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाहं चालित्तए  
वा एवं खोमेत्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चवत्तएवा )

तभारा वडे आश्रित शीलोने, व्रतोने, गुणव्रतोने, मिथ्यात्वनी विनि-  
वृत्तिने, पर्वना द्विसेमां हरिनाय वगेरेना परित्यागने, औदय, आठम,

=मिथ्यात्वान्निवर्त्तनम्, प्रत्याख्यानं=पर्वदिनेषु हरितकायादि त्याज्यानामवश्यं परित्यागः, पोषधोपवासः=पोष=पुष्टिधर्मस्य वृद्धिं घत्त इति पोषधः=चतुर्दश्यष्टम्य-मावास्यापूर्णिमादिपूर्वदिनानुष्ठेयो व्रतविशेषः, एतेषां द्वन्द्वे ताव् चालयितुं वा करणयोगरूपेण परिवर्त्तयितुम्, एवं क्षोभयितुं वा एतान् एवं परिपालयामि, अथवा परित्यजामीति क्षोभं कर्तुं, खण्डयितुं देशतो मङ्क्तुं भङ्क्तुं सर्वतो वा उज्झितुं देशविरतेस्त्यागेन, वा परित्यक्तुं सम्यक्त्वस्यापि त्यागात् वा, तद् यदि खलु त्वं शीलव्रत० यावत् न परित्यजसि तदा तवाहमेतत् पोतवह्नं नौकायान् द्वाभ्यामङ्गुलीभ्यां तर्जनीमध्यमाभ्यां गृह्णामि, गृहीत्वा सप्ताष्टतालप्रमाणमा-श्रान् गगनमागान् यावत्, ऊर्ध्वं विहायसि=गगने 'उज्जिहामि' उद्विष्यामि=प्रापयामि, 'उज्जिहत्ता' उद्विष्य=ऊर्ध्वमाकाशे नीत्वा, 'अंतो जलंसि,' अन्त-

को, चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा आदि पर्वदिनों में अनुष्ठेय व्रत विशेष रूप पोषध को अन्यथा करण योग रूप से परिवर्तित करने की तुम इन्हें इस तरह से पालो अथवा इन का परित्याग कर दो इस रूपसे उन्हें क्षुभित करने की उन्हें एक देश अथवा सर्वदेश से खंडित करने की भंग करने की देश विरति के छुड़वाने की अथवा सम्यक्त्व के परित्याग से उन के त्याग करवाने की मुझ में शक्ति नहीं है। अतः (जह्णं तुमं सीलव्य जाव ण परिचयसि तो ते अहं पोयवहणं दोहि अंगुलियार्हि गेण्हामि) तुम इन शीलव्रत आदि कों को स्वयं छोड़ दो-यदि नहीं छोड़ोगे तो मैं तुम्हारी इस नौका को दो अंगुलियों से-तर्जनी और मध्यमा से-पकड़ लूँगा (गिण्हत्ता सत्तह तालप्पमाणमेत्ताइं उड्डं

अभास, पूनम वगेरे, पर्वना द्विसेमां अनुष्ठेय व्रतविशेष रूप पोषधने, अन्यथा करणयोग रूपी परिवर्तित करवानी, तमे आ मतो आ रीते आत्थरे के आने। परित्याग करे आ प्रभाणु तेमने क्षुभित करवानी, तेमने ओकदेश अथवा सर्वदेशी भंडित करवानी-भंग करवानी-देशविरतिना त्याग अथवा सम्यक्त्वना परित्यागथी तेमने परित्यक्त करवडाववानी भासमां ताकात नथी ओथी.

(जह्णं तुमं सीलव्य जाव ण परिचयसि तो ते अहं पोयवहणं दोहि अंगुलियार्हि गेण्हामि)

तमे पोतानी भेजेअ आ शीलव्रत वगेरे ने। त्याग करे. ने तमे आ प्रभाणु करेथो नडि तो हुं तभारा वडाणुने मे आंगणीओथी ओटवे के तर्जनी आने मध्यमा आंगणीओथी-पकडी पाडीश.

(गिण्हत्ता सत्तहतालप्पमाण मेत्ताइं उड्डं वेदासं उज्जिहामि-उज्जिहत्ता अंतो

जले-जलमध्ये, 'णिष्कोलेमि' निबोडयामि=निमज्जयामि, येन त्वं 'अट्टुह्व-  
वसहे' आर्तदुर्घटवशात्=आर्तम्-आर्चध्यानम् दुर्घटं=हिंसादिदुर्घटनायुक्तत्वाद्  
रौद्रध्यानार्त्तं, तयोर्वैशेन क्रतुः-पीडितः, अतएव-'असमाहिप्ते' असमाधिप्राप्तः,  
अकाले चैव=मरणकालात्पूर्वमेव जीवीतात् 'ववरोविज्जसि' व्यपरोपयिष्यसे-व्यप-  
गतोऽयं विष्यसि मरिष्यसीत्यर्थः । ततः पिशाचवचनश्रवणानन्तरं सोऽरहन्नकः श्र-  
मणोपासकः तं देवं पिशाचरूपं मनसा चैव एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत=पि-  
शाचरूपं देवं स्वमनसि सम्बोध्य स्वात्मन्येव वक्ष्यमाणप्रकारेणोक्तवानित्यर्थः, हे  
देवात्मिय ! हे देव ! अहं खलु अरहन्नको नाम श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीवः  
=जीवाजीवतत्त्वज्ञः, नो खलु अहं शक्यः केनापि देवेन वा यावत् नैर्ग्रन्ध्यात् प्र-

वेशांस उन्विहामि-उन्विहिता अतो जलसि णिष्कोलेमि ) और पकड़  
कर सात आठ ताल प्रमाण आकाश भाग तक उसे ऊपर पानी में  
डुबो दूँगा । ( जेणं तुमं अट्टुह्ववसहे असमाहिप्ते अकाले चैव  
जीवियाओ ववरोविज्जसि ) जिससे तुम आर्त्त और दुर्घट-रौद्र-ध्यान  
के वश से पीडित होते हुए असमाधि को प्राप्त हो जाओगे और मरण  
काल से पहिले ही जीवन से रहित हो जाओगे ।

(तएणं से अरहन्नए समणो वासए तं देवं मणसा चैव एवं वया-  
सी ) इस तरह उस पिशाच रूप धारी देव के वचन सुनने के बाद उस  
श्रमणोपासक अरहन्नक ने उस देव से अपने मन ही मन ऐसा कहा-  
(अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजी  
वा जीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावय-

जलसि णिष्कोलेमि)

अने पंडीने सात आठ ताल प्रमाण तेने ऊपर आकाशमां लई बंध  
अने त्यांथी पाणीमां डुगाडी भूडीथ.

( जे. णं. तुमं अट्टुह्ववसहे असमाहिप्ते अकाले चैव जीवियाओ ववरोविज्जसि )

अथी तणे आर्त्तं अने दुर्घट-रौद्र-ध्यानथी पीडित थता असमाधिने  
शेणवशे अने मृत्युकाण ना पळेतां अ एवम वगरना थर्धं थशे.

( तएणं से अरहन्नए समणोवासए तं देवं मणसा चैव एवं वयासी )  
आरीते पिशाच रूपवाणा देवनी वात सांलगिने श्रमणोपासक अरहन्नके  
देवने पोताना मनमां अ आप्रभाणु कहुं.

( अहं देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे  
नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा

वचनात् 'चालित्तए' चालयितुम्=अन्यथाभावं कारयितुं वा, 'खोमित्तए' क्षोभयितुं=संशयोत्पादनेन क्षोभं कर्तुं वा, तथा—'विपरिणामित्तए' विपरिणमयितुं=विपरीताध्यवसायोत्पादनेनाप्यन्यथाकर्तुं वा, केनापि देवादिना श्रावकधर्माद् विचालयितुं नाहं शक्य इति संक्षिप्तार्थः । तत् खलु या=यादृशी अद्वा वर्तते तत्—तथा कुरु, त्वं यत् कर्तुमिच्छसि तत् कुरुष्वेत्यर्थः 'इति कट्ठ' इति कृत्वा=इति स्वात्मन्युत्त्वा, अभीतः यावद्—अत्र यावच्छब्देन 'अतत्थे, अचल्लिए, असंमंते अणाउले, अणुक्किगे, इत्येषां पदानां संग्रहः, एतान्यस्मिन्नेवसूत्रे व्याख्यातानि,

णाओ चालित्तए वा खोमित्तए वा विपरिणामित्तए वा तुमं णं जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्ठ अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीण विमणमाणसे निच्चले निष्फंदे तुसिणीए, घम्मज्झाणोवगए विहरइ) हे देवानुप्रिय देव ! मैं अरहन्नक नामका श्रमणोपासक श्रावक हूँ ।

जीव अजीव आदि तत्त्वों के स्वरूप को जानने वाला हूँ । किसी भी देव में ऐसी शक्ति नहीं है जो मुझे इस निर्ग्रन्थ प्रवचन से बिचलित कर सके उस में अन्यथा भाव रूप से परिणामासके क्षुभित कर सके—संशयोत्पादन से मुझे उस में संदिग्ध बना सके तथा विपरिणामी बना सके—विपरीत अध्यवसाय के उत्पादन से उस में मुझे विपरीत बुद्धि वाला कर सके, तात्पर्य इस का यही है कि कोई भी देव ऐसा नहीं है कि जिस के द्वारा मैं श्रावक धर्म से बिचलित किया जा सकूँ ।

इसलिये हे देव ! तुम्हारी जैसी अद्वा हो वैसा तुम करो । इस

खोमित्तए वा विपरिणामित्तए वा तुमं णं जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्ठ अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाणसे निच्चले निष्फंदे तुसिणीए घम्मज्झाणोवगए विहरइ )

हे देवानुप्रियदेव । हूँ अरहंनक नामे श्रमणोपासक श्रावक हूँ ।

एव अएव वगेरेना तत्त्वोना स्वरूपने आबुनार हूँ । कोष्ठपण्डु देवमां ताकातनथी के ने भने पोताना निगृथप्रवचनथी विचिखित करी शके, तेमां अन्यथा भाव रुपथी परिखुभावी शके, क्षुभितकरी शके, संशय उत्पन्न करीने भने तेमां शंकाशील बनावी शके. अने विपरिखुभावी बनावी शके, विपरीत अध्यवसायना उत्साहनथी निगृथ प्रवचन अत्रे भने विपरीत बुद्धिबाणो करी-शके. मतलब अे छे के कोष्ठपण्डु देवमां आटवी ताकत नथी के ते भने पोताना श्रावक धर्मथी उगावी शके.

अेथी देव ! तमारी जेवी अद्वा डोय तेम करे। मनमां देवने संशोधीने

અભિન્નમુખરાગનયનવર્ણઃ=મયાભાવાદપ્રતિહતમુખનેત્રપ્રતિમઃ, તથા-અદીનવિધનો-  
માનસઃ=મયસંશયરહિતત્વાત્ વિશાદવૈમનસ્યરહિતચિત્તઃ, અતएव-નિશ્ચલઃ=સુધીરઃ  
ધર્મે દૃઢતર इत्यर्थः, નિસ્પન્દઃ=કિંચિદ્પિકમ્પરહિતઃ, તૂષ્ણીકઃ કૃતવાક્સંયમઃ સ  
મૌન इत्यर्थः ધર્મધ્યાનોપગતઃ ધર્મધ્યાનમેવ શરણં કૃત્ય તત્પરાયણઃ વિહરતિ=  
આસ્તેસ્મ ॥૬૦૨૨॥

પ્રકાર દેવ કો મન મેં સંબોધન કરકે ઉસ અરહન્નક શ્રમણોપાસક ને  
મન હી મન કહા-ઔર અમીત, અત્રસ્ત, અચલિત, અસંભ્રાન્ત, અના-  
કુલ, અનુદ્વિગ્ન, ચિત્ત બના રહા । નિર્ભય હોને કે કારણ ઉસ કે મુખ  
ઔર નેત્ર કી કાંતિ મેં અન્તર નહી આયા ।

મય ઔર સંશય સે રહિત હોને કી વજહ સે ઉસ કા ચિત્ત વિષાદ  
एवं વૈમનસ્ય સે રહિત રહા । ઇસીલિયે અપને ધર્મ મેં દૃઢ બના હુઆ વહ  
જરા બી ઉસ સે વિચલિત નહી હુઆ । કિન્તુ ચુપચાપ મૌન ધારણ કર  
एक ધર્મ ધ્યાન કો હી ઇસ સ્થિતિ મેં શરણ માન ઉસી મેં વહ તત્પર  
બના રહા । અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત આદિ જો સંબોધન પદ સૂત્ર મેં આયે હૈં  
उन का अर्थ इस प्रकार है-जिसे कोई भी नहीं चाहता है ऐसा अप्रा-  
र्थित मरण होता है उसे भी अरहन्नक आवक चाह रहा है ।

इसलिये देव ने उसे अप्रार्थित प्रार्थित इस संबोधन से संबोधित  
किया है । देव ने यह समझ कर की यह अरहन्नक अपने धर्म पर यदि

अरहन्नक श्रमणोपासके पाताना मनमां न आम कहुं. अने ते अभीत  
अत्रस्त, अचलित, असंभ्रांत, अनाकुल, अनुद्विग्न, चित्तधी शांतथधने भेसी  
रह्यो ते निर्भय हुतो तेथी तेना भो अने आंगोनी कान्तिमां नराये परिवर्तन  
अयुं नहि.

ભય તેમજ સંશય વગર હોવાથી તેનું ચિત્ત વિષાદ અને વૈમનસ્ય  
રહિત હતું એથી જ તે પોતાના ધર્મ પ્રત્યે દૃઢભાવ રાખતો તે જરાએ  
વિચલિત થયો નહિ, પણ ચુપચાપ મૌન ધારણ કરીને કૃત ધર્મધ્યાનને જ  
આ સ્થિતિમાં શરણ માનીને તેમાં તે તસ્લીન થઈ ગયો. અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત  
વગેરે જે સંબોધન પદો સૂત્રમાં આવ્યા છે તેના અર્થ આપ્રમાણે છે-કે જે  
મરણ ને ભેટવાનું કોઈપણ ઇચ્છે નહિ તે મરણને અરહન્નક આવક ઇચ્છી રહ્યો  
હતો. એથી જ દેવે તેને અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત આ બંનેના સંબોધનથી સંબો-  
ધિત કર્યો છે. અરહન્નક જો પોતાનો ધર્મને વળગી રહેશે તો તેના વિષાદ

મૂલ્મ-તણ્ણં સે દિઠ્ઠે પિસાયરૂવે અરહન્નગં સમણોવાસગં  
દોચ્ચંપિ તચ્ચંપિ एवं વયાસી-હં ભો ! અરહન્નગાં અદીણ  
વિમળમાણસે નિચ્ચલે નિપ્પંદે તુસિણીણ ધમ્મજ્ઞાણોવગમ્  
વિહરઇ, તણ્ણં સે દિઠ્ઠે પિસાયરૂવે અરહન્નગં ધમ્મજ્ઞાણો-  
વગમં પાસઇ, પાસિત્તા બલિયંતરાગં આસુરુત્તે તં પોયવહણં દોહિં

હઠ બના રહતા હૈ તો હસ કા પરિણામ ઉસે વિપાકકાલ મેં કટુ હી  
ભોગના પહેગા-ઉસે દુરન્ત પ્રાન્ત લક્ષણ હસ સંબોધન પદ સે બોધિત  
કિયા હૈ । કૃષ્ણ પક્ષ કી ચતુર્દશી મેં ચન્દ્રકલા ક્ષીણ રહતી હૈ-હસલિયે  
શુભ કારક ચન્દ્રકલા સે વિહીન હોને કે કારણ વહ ચતુર્દશી હીન પુણ્ય  
માની જાતી હૈ દેવ કહતા હૈ કિ માલુમ હોતા હૈ તેરા જન્મ હુઆ હૈ  
અતઃ તૂં ભાગ્ય હીન હૈ । હસલિયે અરહન્નક આવક કો ઉસ ને હીન  
પુણ્ય ચાતુર્દશિક હસ સંબોધન પદ સે બોધિત કિયા હૈ । શ્રી હ્રી આદિ  
પ્રત્યેક મેં વર્જિત પદ કે સાથ સંબોધન પદ લગાકર દેવ ને અરહન્નક  
કો સંબોધિત કિયા હૈ-જૈસે હે શ્રી વર્જિત હે હ્રી વર્જિત આદિ । સામા-  
યિક, દેશાવકાશિક, પૌષધ, અતિથિ સંવિભાગ યે શીલ હૈ । અણુવ્રત  
૫ હૈ । ગુણવ્રત ૩ હૈ । યહ સબ આવક કા ધર્મ હૈ । હસ તરહ ૪ શિક્ષા-  
વ્રત, ૫ અણુવ્રત ઔર ૩ ગુણવ્રત યે ૧૨ પ્રકાર આવક ધર્મ કે યહાં  
પ્રકટ કિયે ગયે હૈ । સૂત્ર “ ૨૨ ”

કાળમાં પકિણ્ણમ કટુ જ લોગવવું પડશે. આ બાણીને જ દેવે તેને “ દુરંત  
પ્રાંત લક્ષણ ” આ પદથી સંબોધ્યો છે. કૃષ્ણ પક્ષની ચૌદશનાં દિવસે ચંદ્રકલા  
ક્ષીણરૂપે રહે છે. એથી તે અમંગળકારી ગણાય છે તે મંગળકારી  
નહીં હોવાથી તે ચૌદશ હીન પુણ્ય ગણાય છે. દેવ તેને કહે છે કે તારા  
જન્મ આવા સમયે જ થયો છે એથી તું અભાગિયો છે. અરહન્નક આવકને  
દેવે એટલા માટે જ હીનપુણ્યચાતુર્દશિક પદવડે સંબોધિત કર્યો છે. શ્રી, હ્રી  
વગેરે દરેક પદની સાથે વર્જિત વિશેષણ લગાડીને જ દેવે અરહન્નકને સંબો-  
ધિત કર્યો છે. જેમ કે-‘હે શ્રીવર્જિત ! હેહ્રી વર્જિત ! વગેરે. સામાયિક,  
દેશાવકાશિક, પૌષધ, અતિથિસંવિભાગ આ બધા શીલ છે આણુવ્રત પાંચ છે.  
શુભ્રવ્રત ત્રણ છે. આ બધા આવકનો ધર્મ છે. આરીતે આર શિક્ષાવ્રત, પાંચ  
આણુવ્રત, અને ત્રણ શુભ્રવ્રત આમ બાર પ્રકારનો આવક ધર્મ અહીં ચર્ચ-  
વામાં આવ્યો છે. ॥ સૂત્ર “ ૨૨ ” ॥



अंगुलियाहिं गिण्हइ, गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं  
 एवं वयासी—हं भो ! अरहन्नगा ! अप्पत्थियपत्थिया णो  
 खलु कप्पइ, तव सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विह-  
 रइ । तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निगं-  
 थाओ० चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे  
 संते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं उव्वरिं जलस्स  
 ठवेइ, ठावित्ता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता  
 दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता अंतलिक्खपडिव्विन्ने सखिं  
 खिणियाइं जाव परिहिए अरहन्नगं समणोवासयं एवं वयासी  
 —हं भो ! अरहन्नगा ! धन्नोऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव  
 जीवियफले जस्स णं तव निगंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती  
 लद्धा पत्ता अभिसमन्नगया । एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के  
 देविंदे देवराया सोहम्मो कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए  
 सुहम्माए वट्ठणं देवाणं० सज्झगते सहया सट्ठेणं आइक्खइ४,  
 एवं खलु जंबूदीवेर भारहे वासे चंपाए नयरीए अर-  
 हन्नए समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्के केणइ  
 देवेण वा दाणवेण वा णिगंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा  
 जाव विपरिणामेत्तए वा । तएणं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स०  
 णो एयमट्ठं सद्वहामि०, तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव  
 समुप्पज्जेत्था, गच्छामि णं अरहन्नयस्स अंतिये पाउव्ववामि,  
 जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं पियधम्मो ? नो पियधम्मो

ददधम्मे नो ददधम्मे ? सीलच्चयगुणे किं चालेति जाव परिच्चयइ  
णो परिच्चयइ त्तिकट्ठु, एवं संपेहेमि, संपेहिता ओहिं पउंजामि,  
पउंजिता देवाणुप्पियं ओहिणा आभोएमि, आभोइत्ता उत्तरपुर-  
त्थिमं० उत्तरविउत्थियं० ताए उक्किट्ठाए गईए जेणेव समुदे  
जेणेव देवाणुप्पिया ! तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छिता देवा-  
णुप्पियस्स उवसगं करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिया भीया  
वा०, तं जणं सक्के देविंदे देवराया वदइ सच्चेणं एसमट्ठे तं  
दिट्ठेणं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसे भाव परक्कमे लद्धे पत्ते  
अभिसमन्नागए, तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खसंतु णं  
देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो२ एवं करणयाए त्तिकट्ठु पंजलिउडे  
पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो२ खामेइ, खामित्ता अर-  
हन्नयस्स दुवे कुंडलजुयले दलयति, दलयित्ता जामेव दिसिं  
पाउब्भूय तामेव दिसि पडिगए ॥ सू० २३ ॥

टीका.—‘तएणं से दिव्वे’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स दिव्यः  
पिशाचरूपः=पिशाचरूपधारी, अरहन्नकम्० अरहन्नकनामकं श्रमणोपासकं=आवकं  
‘दोच्चं पि’ द्वितीयवारमपि, तच्चं पि=तृतीयवारमपि, एवम्=उक्तप्रकारेण अवा-  
दीत—हंमो ! अरहन्नक० ! अप्रार्थित प्रार्थित ! नो खलु कल्पते—तव शीलव्रत०

‘तएणं से दिव्वे पिसायरूवे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से दिव्वे पिसाय रूवे) उस पिशाचरूप  
धारी देव ने ( अरहन्नगं समणोपासगं ) उस श्रमणोपासक अरहन्नक  
से ( दोच्चं पि तच्चं पि ) दुबारा-तिबारा भी ( एवं वयासी ) ऐसा ही  
कहा की है अरहन्नक० । अप्रार्थित प्रार्थित ! मुझ में ऐसी शक्ति नहीं

‘तएणं से दिव्वे पिसायरूवे’ इत्यादि

टीकार्थ—( तएणं ) त्यादृशाद् “से दिव्वे पिसायरूवे” ते पिशाचरूप धारी  
देवे “ अरहन्नगं समणोपासगं ” श्रमणोपासक अरहन्नकर्थी “ दोच्चं पि तच्चं पि ”  
शील आने श्रील वपत्त पद्य “ एवं वयासी ” आ प्रभावे क कट्ठु—“ डे  
अरहन्नक०, अप्रार्थित प्रार्थित तभारा शील विगेरे आवुक्क धम्मने अद्वयानी के  
का० ४६

इत्यादि-येन त्व मार्तदुर्घटवशातः असमाधिमाप्तः अवाले चैव जीविताद् व्यपरो-  
पयिष्यसे इत्यन्तं . पूर्वोक्तमेववाक्यं द्वितीयतृतीयवारमभ्युक्तवानित्यर्थः । तथापि  
सोऽरहन्नकः श्रावकः अदीन विमनो मानसः=विषादवैमनस्य रहितचित्तः,  
निश्चलः=धीरः, निस्पन्दः=मयामावृद्ध कम्परहितः=तूष्णीकः= भयरहितवत्त्वेन  
संभयवाग्व्यापाररहितः : यद्वा-कृतवाक् संयमः, धर्मध्यानोपगतः, धर्मध्यानशरण-  
मुपागतः विहरति-आस्तेस्म० ।

ततस्तदन्तरं खलु स दिव्यः पिशाचरूपोऽरहन्नक धर्मध्यानोपगतं पश्यति,  
इष्टा बलिततरकम्=अत्यन्तम् आशुरुतः=इदिति क्रोधाविष्टस्तत् पोतवहनं=नौका-  
यनं, द्वाभ्यामङ्गलीभ्याम्=तर्जनीमध्यमाभ्यां गृह्णाति । गृहीत्वा सप्ताष्टतालप्रमाण  
हैं कि मैं तुम्हारे इन शीलादिकों का परिवर्तन आदि कर सकूँ अतः  
तुम स्वयं ही इन का परित्याग कर दो-तो ठीक है-नहीं तो मैं तुम्हारी  
नौका को पानी में डुबा दूंगा ।

इस से तुम, आर्त्त रौद्रध्यान के वशावर्ती होकर असमाधि को  
प्राप्त हो जाओगे-तथा मरण काल से पहिले ही जीवन से रहित हो  
जाओगे । इस तरह जैसा उस ने प्रथम बार कहा-द्वितीय और तृतीय  
बार भी अरहन्नक श्रावक को वैसा ही कहा-( तर्णं से दिव्ये पिसाय  
रूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ पसित्ता बलियतरागं आसु-  
रुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गिण्हइ ) इस के बाद जब उस  
पिशाचरूप धारी देव ने अपनी बात पर ध्यान नहीं देते हुए अरहन्नक  
श्रावक को विषाद वैमनस्य से रहित चित्त होकर निश्चल-रूप से बिना

तेमां केअ पणु नतनेा हेरक्षर करवानी माराभां ताकात नथी, ले तमे पोतानी भेजेअ  
अभनेा त्याग करे तो ठीक ! नहीं तो तमारा वडाखुने हुं पाणीभां डुगाडीकथि.

तेथी तमे आर्त्तरौद्र ध्यानना वशवर्ती थधने असमाधिने प्राप्तकरथे।  
तेमअ भृत्युना संभय पडेकां अ भृत्युने लेटथे। आ प्रभावे जेम तेवे पडेवी  
वणत कथुं छटुं ते प्रभावे अ गील अने त्रील वणत पणु अरहन्नक  
श्रावकने देवे कथुं.

( तर्णं से दिव्ये पिसायरूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ पसित्ता  
बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गिण्हइ )

-त्यार भाइ पिशाचरूप धारी देवे अरहन्नक श्रावकने विषाद अने वैम-  
नस्य रहित चित्तवाणे। थधने निश्चल रूपथी, लय वजर थधने, मौन धारण

अन्तर्गारधर्मोन्मृतवर्षिणी टी० अ० ८ अङ्गराजवरिते अरहन्नकभावकवर्णनम् ३६३

मात्रान् यावत् ऊर्ध्वं गगने नीत्वाऽरहन्नके श्रावकपेवम्-उक्तप्रकारेण अवादीत्-  
हंभो ! अरहन्नक ! अप्रार्थित प्रार्थित ! नो खलु कल्पते तव शीलव्रतं तथैव-सो  
ऽरहन्नकः पूर्ववदेव यावत् धर्मध्यानोपगतो विहरति-आस्ते स्म० ।

किसी भय के मौन सहित धर्मध्यान में ही मग्न देखा तो देख कर वह  
उस पर क्रोध के आवेश से अत्यन्त लाल पीला बन गया । और उस  
पोतयान को उस ने अपनी दोनों अंगुलियों-मध्यमा एवं तर्जनी अंगु-  
लियों से-पकड़ लिया । ( गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं एवं  
वयासी ) पकड़ कर वह उसे ऊपर आकाश न सात आठ ताल प्रमाण  
आकाश भाग तक ले गया-ले जाकर फिर उस में अरहन्न श्रावक को  
इस प्रकार कहा - ( हं भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! णो खलु  
कप्पइ तव शीलव्वय तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ ) हे अरहन्नक !  
हे अप्रार्थित प्रार्थित ! मुझे तुम्हारे इन शीलव्रत आदिकों को विचलित  
आदि करना उचित नहीं हैं अतः तुम ही खुशी से उन्हें छोड़ दो-नहीं  
तो मैं तुम्हारी इस नौका को यहां से पटक कर पानी में डूबो दूंगा-  
जिस से तुम असमाधि प्राप्त होकर आर्चध्यानादि के वशवर्त्ति बन मर-  
णकाल से पहिले मृत्युके वश हो जाओगे । देवके इस कह ने पर अर-  
हन्नक श्रावकने कुछ भी ध्यान नहीं दिया प्रत्युत उसे मन ही मन

करीने धर्मध्यानमां न तट्ठीन जेथे त्थारे ते तेना उपर-कोधमां लशधं  
लाव पीणा थधं अथो, अने तेणे वडाएने पोतानी जे आंगणीओ-मध्यमा  
अने तर्जनी-वटे पकडी दीधुं. “ गिण्हित्ता सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नग एवं वयासी ”  
पकडीने ते वडाएने सात आठ ताल प्रमाण जेट्ठुं आकाशमां लधंगये अने  
लधं जधने तेणे अरहन्नक श्रावकने आ प्रभाए कहुं.

( हं भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पइ तवशीलव्वय  
तहेव धम्मज्झाणोवगए विहरइ )

हे अरहन्नक ! हे अप्रार्थित प्रार्थित ! हुं तमने पोताना शीलव्रत वगेरेथी  
विचलित कइं ते थोअ न वेणाव जेथी तमे राशुपुशीथी पोतानी भेजे न  
तेमने त्यजे नडितो तमाश वडाएने हुं अहीथी पट्ठीने पाणीमां डूबाडी  
इधश. जेथी तमे असमाधिने भेजनीने आर्तध्यान वगेरेना वशवर्त्ती थशे  
अने छेवटे मृत्युना समय पडेवां न मृत्युने खेदशे हेवनी आ वात पर  
अरहन्नक श्रावकें जराजे ध्यान आभ्युं नडि अने तेणे पोताना भनमां न

ततस्तदनन्तरं खलु स पिशाचरूपः=पिशाचरूपधारी देवः, अरहन्कं यदा नो शक्नोति निर्ग्रन्थात् प्रवचनात् चालयितुं वा स्तोमयितुं वा विपरिणमयितुं वा ताहे, तदा स पिशाचः 'संते' श्रान्तः=परिश्रमं प्राप्तः स्थगनः, मनसा खिन्न इत्यर्थः, यावत्-अत्र यावत् करणेन-तस्यै परितंते इत्यनयोः संग्रहः । तान्तः-शरीरेण खेदं प्राप्तः, परितान्तः=सर्वथा खिन्नः, 'निव्विन्ने' निर्विण्णः=उपसर्गकरणात् प्रतिनिवृत्तः, तत् पोतवहणं=नौकायानं, शनैः शनैरुपरिजलस्य, 'ठवेइ' स्थापयति० 'ठाविंत्ता' स्थापयित्वा तद् दिव्यं पिशाचरूपं 'पडिसाहरइ' प्रतिसंहरति

संघोषित कर " मुझे इस निग्रन्थ प्रवचसे कोह भी देव विचलित नहीं कर सकता है " ऐसा ही विचार-कहा-तथा अडिग भावसे निर्भय बन मौन लिये हुए अपने धर्मध्यानमें ही बह स्थिर रहा ।

( तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ, निगंथाओ पावयणाओ चालितए वा स्तोमितए वा विपरिणा मितए वा ताहे संते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं उवरिजलस्सं ठवेइ ) इस तरह वह पिशाच रूप धारी देव जब अरहन्क आवक को निर्ग्रन्थ प्रवचन० से चलावे के लिये, उस से क्षुभित करने के लिये, विपरिणमित करने के लिये समर्थ नहीं हो सका तब श्रान्त और भग्न मन से खिन्न-होकर वह उपसर्ग करने रूप अपने कूट्य से प्रति निवृत्त हो गया । और घीरे २ आकाश से उतार उस पोतयान को उस ने पानी के ऊपर रख दिया । ( ठाविंत्ता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ )

विचार करीने कहुं—"आ निर्ग्रन्थ प्रवचनशी भने केह पणु देव हटावी शकथे नहि" आभ विचारी ने निश्चय अने निर्भय बधने ते मौन पाणतो ते पोताना धर्मध्यान भांज तहवीन रह्यो.

( तएणं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निगंथाओ पावयणाओ चालितए वा स्तोमितए वा विपरिणमितए वा ताहे संते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं उवरि जलस्सं ठवेइ )

आ प्रमाणे पिशाच रूपधारी देव 'न्याये अरहन्न आवकने निर्ग्रन्थ प्रवचनशी विचलित करवाभां, तेनाथी क्षुभित करवाभां, विपरिणमित करवाभां शक्तिमान् यथ शक्यो नही' त्याहे श्रान्त अने भग्नमनशी खिन्न बधने उपसर्ग करवा इप पोताना कर्मशी प्रतिनिवृत्त श्रद्ध गयो. अने आकाशभांथी धीमेधीमे उतरिने तेले वडाणु ने पाणी उपर भूझीझु. ( ठाविंत्ता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ )

विलीनयति० । प्रतिसंहत्य=पिशाचरूपमन्तर्हितं कृत्वा दिव्यं=प्रशस्तं परमसुन्दरं देवरूपं विकुर्वति प्रादुर्भाषयति । विकुर्वित्वा = दिव्यं देवरूपं प्रादुर्भाव्य, अन्तरिक्षप्रतिपन्नः=आकाशस्थितः, 'सखिखिणियाई' सर्किङ्किणोकानि यावद् अवरोहणाणि परिहितः, स देवोऽरहन्तकं श्रमणोपासकमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हंभो ! अहो ! अरहन्तक ! धन्योऽसि खलु त्वं, हे देवानुप्रिय ! यावत् त्वया जन्मजीवितफलं लब्धं, यस्य खलु तव निर्ग्रन्थे प्रवचने इमेतद्वा प्रतिपत्तिः=सम्पत्कथ्ना लब्धा=उपार्जिता प्राप्ता=स्वायत्तीकृता०, अभिसमन्वागता=

रखकर फिर उसने वह अपना दिव्य पिशाच का रूप समेट लिया-अन्तर्हित कर लिया-( पडिसाहरित्ता दिव्यं देवरूपं विउव्वह, विउव्वित्ता अंतलिकखपडिवन्ने सखिखिणियाई जाव परिहिण अरहन्तगं जाव समणोवासयं एवं वयासी ) अन्तर्हित कर के फिर बाद में वह अपने वास्तविक दिव्यरूप में आ गया ।

दिव्यरूप में आकर के उसने जो उस समय वस्त्रों को धारण कर रखा था-वे क्षुद्र घंटिकाओ से युक्त बड़े ही सुन्दर थे । आकाश में रह कर ही उसने श्रमणोपासक अरहन्तक से इस प्रकार कहा-( हं भो अरिहन्ता ! धनो सि णं तुमं देवणुप्पिया ! जाव जीवियफले जस्सणं तव निगंथे पावयणे इमेयारूवे पडिवत्तीलद्धा पत्ता अभिसमन्नागया ) अहो अरहन्तक ! तुम धन्य हो । हे देवानुप्रिय ! तुमने यावत् जन्म और जीवन का फल प्राप्त कर लिया है जो इस निर्ग्रन्थ प्रवचन में इस प्रकार

भूद्धीने तेणुं पोत्तातुं दिव्यं पिशाचइय अन्तर्हित करी बीधुं

पडिसाहरित्ता दिव्यं देवरूपं विउव्वह, विउव्वित्ता अंतलिकखपडिवन्ने सखि-  
णियाई जाव परिहिण अरहन्तगं जाव समणोवासयं एवं वयासी )

अन्तर्हित करीने तेणुं पोत्ताना सात्था दिव्य इयने करी धारणा करी बीधुं.

दिव्य रूपमां पडेदेवां तेना वओ नानी नानी धूधरीओवाणां भूअअ सुहर  
ऊतां. आकाशमां स्थिर रह्हीने तेणुं श्रमणोपासक अरहन्तकने आ प्रमाणे कथुं-

( हं भो अरिहन्ता धनोसि णं तुमं देवणुप्पिया । जाव जीवियफले जस्स-  
णं तव निगंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्तीलद्धा पत्ता अभिसमन्नागया )

हे अरहन्तक तमे धन्य छे ! हे देवानुप्रिय ! तमे संपूर्ण पणु जन्म  
अने लुधनतुं इण भेणवी बीधुं छे. केम के आ निअर्थ प्रवचनमां आ रीते

સમ્યગાસેવિતા વર્તેતે૦ હે દેવાનુપ્રિય ! એવમ્=અમુના પ્રકારેણ સ્વલ્પ શક્તિ દેવેન્દ્રઃ=પરમૈશ્વર્યવત્ત્રાદેવાનામિન્દ્રઃ, દેવરાજઃ=દેવાનાં રાજા કાન્ત્યાદિગુણાધિક્યેન વિરાજમાનત્વાદ્, સૌધર્મે=સૌધર્મનામકે પ્રથમે કલ્પે, સૌધર્માવતંસકે વિમાને સુધર્માયાં સુધર્માલ્ક્યાયાં સમાયાં દેવસમાયાં બહુનાં દેવાનાં મધ્યગતઃ=મધ્યે સ્થિતઃ મહતા શબ્દેન=ઉચ્ચૈ. સ્વરેણ, 'આહ્વલ્હ' આહ્વાતિ=સામાન્યરૂપેણ વ્રતીતિ, ભાષતે=વિશેષતઃ કથયતિ, પ્રજ્ઞાપયતિ=સામાન્યતાં વૌચંયતિ, પ્રરૂપયતિ, વિશેષતઃ પ્રતિવૌધયતિ૦ કિમિત્યાહ 'એવં સ્વલ્પ' इत्यादिना ।

કીં યહ સમ્યક શ્રદ્ધા પ્રાપ્ત કીં હૈં ઓર હસે અપને આવીન કર લિયા હૈં । તથોં બહુ શ્રદ્ધા હસ સમય તક મીં તુમ્હારે દ્વારા અઠ્ઠી તરહ અચલ રૂપ મેં સેવિત હો રહી હૈં । ( એવં સ્વલ્પ દેવાણુપ્પિયા ! સકકે દેર્વિદે દેવરાયા સોહમ્મે કપ્પે સોહમ્મ વર્ડિસપ્પ વિમાણે સમાપ્પ ) સુહમ્માપ્પ વહૂણં દેવાણં મજ્જગપ્પ મહયા સહેણં આહ્વલ્હ ૪ ) મૈને તુમ્હારે સાથ એસા ક્યોં કિયા હસકા કારણ યહ હૈં કિં હે દેવાનુપ્રિય ! એક દિવસ પરમ ઐશ્વર્યશાલી દેવોં કે ઇન્દ્ર શક દેવરાજ ને સૌધર્મ નામ કે પ્રથમ કલ્પ મેં સૌધર્માવતંસક વિમાન મેં અનેક દેવોં કે બીચ મેં બેઠકર અપની સુધર્માસભા મેં ઉચ્ચસ્વર સે પહિલે તો સામાન્ય રૂપ સે, કહોં, બાદ મેં ભાષણ દ્વારા વિશેષ રૂપ સે કહા । પહિલે સામાન્ય રૂપ સે સમજાયા, બાદ મેં વિશેષરૂપ સે સમજાયા । હસ મેં હન્નોં ને કહા— ( એવં સ્વલ્પ જંબૂદ્વીવે ૨ મારહે વાસે વૈપાવ નયરીપ્પ અરહન્નપ્પ સમ-

તમે સમ્યક શ્રદ્ધા મેળવી છે અને તેને સ્વાર્ધીન બનાવ્યું છે' અત્યાર સુધી પણ તમે તે શ્રદ્ધા ને જ સારી રીતે અચળ રૂપે વળગી રહ્યા છો.

( એવં સ્વલ્પ દેવાણુપ્પિયા ! સકકે દેર્વિદે દેવરાયા સોહમ્મે કપ્પે સોહમ્મવર્ડિસપ્પ વિમાણે સમાપ્પ સુહમ્માપ્પ વહૂણં દેવાણંમજ્જગપ્પ મહપ્પ સહેણં આહ્વલ્હ ૪ )

મેં જો કંઈ તમારી સાથે વર્તન કર્યું છે તેની પાછગણ કર્યું જા પ્રમાણે છે કે હે દેવાનુપ્રિય ! એક દિવસે પરમ ઐશ્વર્યશાળી દેવોના ઇન્દ્ર શક દેવરાજે સૌધર્મનામના પહેલા કલ્પમાં સૌધર્માવતંસક વિમાનમાં બસી દેવોની વચ્ચે બેસીને પોતાની સુધર્મા ગ્રામાં ગોટા સાથે પહેલાં તો સામાન્ય રૂપે કહ્યું અને ત્યાર બાદ પોતાના ભાષણ વડે વિશેષ રૂપમાં કહ્યું. તેઓ જો પહેલાં સામાન્ય અને ત્યાર પછી વિશેષ રૂપમાં સમબલતાં કહ્યું—

( એવં સ્વલ્પ જંબૂદ્વીવે ૨ મારહે વાસે વૈપાવ નયરીપ્પ અરહન્નપ્પ સમગોવાસપ્પ

‘એવં સ્વલ્લ જમ્બૂદ્વીપેદ્વીપે જમ્બૂદ્વીપનામકે દ્વીપે મારતે ર્વે=દક્ષિણમરતક્ષેત્રે ચમ્પાયાં નગર્યામ્ અરહનનકઃ શ્રમણોપાસકોઽભિગતજીવાજીવો. યાવત્-સમ્યક્ત્વ-મૂલદેશવિરતિલક્ષણે ધર્મે દૃઢચિત્તો વર્તતે, અસૌ નો સ્વલ્લ શક્યઃ કેનાપિ દેવેન વા દાનવેન વા દ્વિપુરુષલક્ષણમ્- કિન્નરેણ વા, કિંપુરુષેણ વા મહોરગેણ વા ગન્ધર્વેણ વા ક્ષિતિસંયોજ્યમ્ ૦ । તત્ર દેવો વૈમાનિકો ય્યોતિષ્કો વા દાનવો મવનપતિ, હતરે કિન્નરાદયો વ્યન્તરમેદાઃ, ‘ગિર્ગંથાઓ’ નૈર્ગન્થ્યાત્ પ્રવચનાત્ ચાલયિતું. વા યાવત્ ક્ષોભયિતું વા, ‘વિપરિણામિત્તણ’ વિપરિણમયિતું=વિપરીતાધ્યવસાયોત્પાદ-નેનાયથામાયં જનયિતું વા । જમ્બૂદ્વીપાન્તર્ગતમરતક્ષેત્રે ચમ્પાનગરી નિવાસી-અરહ-નનક નામકઃ શ્રાવકો કેનાપિ દેવાદિના શ્રાવકધર્માચ્ચાલયિતું શક્યત્ इतिभावः ।

ળોધાસણ અહિંગયજીવાજીવે નો સ્વલ્લ સવકે કેળઈ દેવેળ વા ઢાળ વેળ વા ગિર્ગંથાઓ પાવયળાઓ ચાલિત્તણ વા જાવ વિપરિણામેત્તણ વા) દેવો-જંબૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં દક્ષિણ મરત ક્ષેત્ર મેં, ચંપા નામ કી નગરી મેં જીવ અજીવ આદિ તત્ત્વોં કા જ્ઞાતા અરહનનક નામ કા શ્રમણોપાસક સેઠ રહતા હૈ ।

યહ સમ્યક્ત્વ મૂલ દેશ વિરતિ રૂપધર્મ મેં ઇતના દૃઢચિત્ત હૈં કિં યહ કિસી ખી દેવ દાનવ, કિન્નર, કિંપુરુષ, મહોરગ, ગન્ધર્વ દ્વારા અપને નિર્ગન્થ પ્રવચનરૂપ ગૃહીત ધર્મ સે વિચલિત નહીં કિયા જા સકતા હૈ ।

ક્ષુભિત નહીં કિયા જા સકતા હૈ । વિપરીત અધ્યવસાય કે ઉત્પા-દન સે ઉત્તમેં અન્યથા ભાવ ઉત્પન્ન નહીં કિયા જા સકતા હૈં ઇન મેં વૈમાનિક એવં ય્યોતિષી દેવોં કા દેવ પદ સે તથા મવનપતિ કા દાનવ પદ સે ગ્રહણ હુઆ હૈ । શેષ કિન્નરાદિકોં કા કિ જો વ્યન્તર દેવ હૈં હપલક્ષણ સે ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ ।

અહિંગય જીવાજીવે નો સ્વલ્લ સવકે કેળઈ દેવેળ વા ઢાળવેળ વા ગિર્ગંથાઓ પા-વયળાઓ ચાલિત્તણ વા જાવ વિપરિણામેત્તણ વા )

જુઓ-જંબૂદ્વીપ નામનાં દ્વીપમાં દક્ષિણ મરતક્ષેત્રમાં ચંપાનામની નગરીમાં શુભ અશુભ વગેરે તત્ત્વોને બાબુનાર અરહનનક નામે શ્રમણોપાસક શેઠ રહે છે.

તે સમ્યક્ત્વમૂળ દેશ વિરતિ રૂપ ધર્મમાં આટલો બધો સ્થિર ચિત્ત છે કે ગમે તે દેવ દાનવ, કિન્નર કિંપુરુષ મહોરગ, ગન્ધર્વ વડે પણ પોતાના નિર્ગન્થ પ્રવચન રૂપ ધર્મથી તે વિચલિત થતો નથી.

ક્ષુભિત તેમજ વિપરીત અધ્યવસાયના ઉત્પાદનથી તેમાં ખીલો ભાવ ઉત્પન્ન થતો નથી. અહીંયા દેવપદથી વૈમાનિક અને ય્યોતિષી દેવોંનું તેમજ દાનવપદથી મવનપતિનું અહંશ કરવામાં આનું છે.



તત્ત્વતઃ=શક્રદેવેન્દ્રવચનશ્રવણાનન્તરં રુદ્ર અહં હે દેવાનુપ્રિય ! શક્રસ્ય નો એ-  
તમર્થ શ્રદ્ધામિ નો પ્રત્યેમિ નો રોચ્યામિ, શક્રોક્તવાક્યાર્થે મમ વિશ્વાસો ન જાત  
इत्यर्थः । ततः रूद्र ममायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणरूपः अभ्यर्थितः यावत्-चिन्तितः,  
प्रार्थितः, कल्पितः, मनोगतः संकल्पः-समुदपद्यत=समभवत्-गच्छामि खलु अरह-  
न्-वक्तव्यान्तिके=समीपे प्रादुर्भवामि, तावद् अहम् अरहन्नकं, शक्रेण प्रशंसितोऽरहन्नकः  
स कीदृशो वर्तते ' किं प्रियधर्मे ' किं प्रियधर्मा=प्रियोधर्मो यस्य स प्रियधर्मा,  
प्रीतिभावेन सुखेन च धर्मस्य स्वीकारात् प्रियधर्मा वर्तते किम्, अथवा ' नो पि-  
यधर्मे ' नो प्रियधर्मा स नास्ति प्रियधर्मा, तथा-किमसौ ' ददधर्मे ' ददधर्मा  
विपत्सुपस्थितास्वपिधर्मस्यापरित्यागकरणात् ददः=स्थिरः धर्मो यस्य स ददधर्मा,

તાત્પર્યેં હસ કાં કેવલ એક યહી હૈ કિ જંબૂદ્વીપ નામ કા એક દ્વીપ  
હૈ । હસ મેં ભરત ક્ષેત્ર નામ કા ક્ષેત્ર હૈ । હસ મેં ચંપા નામ કી નગરી  
હૈ । યહ અરહન્નક નામ કા શ્રાવક હમી નગરી કા નિવાસી હૈ । વહ  
અપને ધર્મ મેં ઇતના અધિક દદ હૈ કિ હસે અપને ધર્મ સે વિચલિત કર  
ને કી કિસી બી દેવ દાનવ મેં શક્તિ નહીં હૈ । (તણં અહં દેવાણુપ્પિ-  
યા ! સવક્સસંણો એયમહં સદ્દહામિં તણં મમ હમેયારુવે અજ્ઞત્થિય  
જાવ સમુપ્પજ્જેતથા) જવ શક્ર દેવેન્દ્ર ને હસ પ્રકાર કહા-તો હનકે  
કથન કો સુનનેકે બાદ હે દેવાનુપ્રિય મુજે હનકે હન વચનો પર વિશ્વાસ-  
શ્રદ્ધા નહીં હુઈં વે હનકે વચન મુજે રુચિકારક નહીં હુય । અતઃ મેરે  
મનમેં હસ પ્રકાર કા અભ્યર્થિત, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત સંકલ્પ હસમ  
હુઆ ( ગચ્છામિણં અરહન્નસસ અંતિય પાહમ્મવામિ, જાણામિ તાવ અહં

તાત્પર્ય-આ પ્રમાણે છે કે જંબૂદ્વીપનામે દ્વીપ છે. તેમાં ભરતક્ષેત્ર નામે  
ક્ષેત્ર છે. તે ક્ષેત્રમાં ચંપા નામે નગરી છે. તે અરહન્નકે શ્રાવક ચંપા  
નામે નગરીમાં વસે છે. તે પોતાના ધર્મમાં એટલો અધો સુદૃઢ છે કે દેવ  
દાનવમાં પણ તાકાત નથી કે તેઓ તેને પોતાના ધર્મથી હટાવી શકે.

( તણં અહં દેવાણુપ્પિયા ! સવક્સસં ણો એયમહં સદ્દહામિં તણં મમ હં  
મેયારુવે અજ્ઞત્થિય જાવ સમુપ્પજ્જેતથા )

અત્રારે શક દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે તેમની વાત સાંભળીને મને  
તેમની વાત ઉપર શ્રદ્ધા તેમજ વિશ્વાસ ઝેઠો નહિ. મને તેમના વચન ગમ્યાં  
પણ નહિ. એથી મારા મનમાં આ જાતનો અભ્યર્થિત, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત,  
કલ્પિત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો.

(ગચ્છામિ ણં અરહન્નસસ અંતિય પાહમ્મવામિ જાણામિ તાવ અહં અરહન્નાં કિં

अथवा—‘ नो ददधम्मे ’ नो ददधर्मां सोऽरहन्नको नास्ति ददधर्मा ? स च शील-  
व्रतशृणान् किं चालयति=अपनयति यावत् परित्यजति, किं वा नो परित्यजति अत्र  
यावत् करणात्-क्षोभयति किं वा नो क्षोभयति ? खण्डयति किं वा नो खण्डयति ?  
उज्झति किं वा नो उज्झति ? इति बोध्यम् । इति कृत्वा=इत्येवं मनसि विचार्य,  
एवं संप्रेक्षे, संप्रेक्ष्य अवधिम्=अवधिज्ञानं प्रयुञ्जे प्रेरयामि प्रयुज्य देवानुप्रियम् आ-  
भोगयामि=पश्यामि । आभोग्य उत्तरपौरस्त्यम्=ईशानकोणदिग्भागं गच्छामि,  
गत्वा, ‘ उत्तरविउन्विथं ’ उत्तरवैक्रियं करोमि, कृत्वा तयोत्कृष्टया गत्या=देवस-  
म्बन्धिन्या गत्या यत्रैव सप्रदः, यत्रैव देवानुप्रियस्तत्रैवोपागच्छामि, उपागत्य दे-

अरहन्नगं किं पियधम्मे ? नो पियधम्मे ददधम्मे नो ददधम्मे ? शील-  
व्ययगुणे किं चालेति, जाव परिच्चयइ, णो परिच्चयइ) कि चलो अरह-  
न्नक के पास चले—और चलकर यह ज्ञातकरें कि अरहन्नक को धर्म प्रिय  
है, कि नहीं है, वह धर्म में दद है कि नहीं है । वह अपने शीलों को,  
व्रतों को और गुणों को छोड़ता है अथवा नहीं छोड़ता है, उन्हें क्षुभित  
करता है, या नहीं करता है, उनका खंडन करता है या नहीं करता है।  
प्रवचन में एक देश से भी उस में अतिचार लगाता है या नहीं  
लगाता है ( त्तिकइहु एव संपेहेमि ) हे अरहन्नक ! मैंने ऐसा विचार  
किया ( संपेहिता ओहिं पडंजामि ) विचार करके फिर मैंने अपने अव-  
धिज्ञान को जोड़ा ( पडंजिता देवानुप्पियं ओहिणा आभोएमि, आभो-  
इत्ता उत्तरपुरत्थिमं० उत्तर विउन्विथं० ताए उक्किहाए गइए जेणेव देवा-  
णुप्पिया तेणेव उवागच्छामि ) अवधिज्ञान को जोड़ कर मैंने उसके द्वारा  
आप देवानुप्रिय को देखा ।

पियधम्मे नो ददधम्मे ? शीलव्यय गुणं किं चालेति जाव परिच्चयइ, णो परिच्चयइ

के आलो अरहन्नकनी पासे बध्मे अने बध्ने तपास करीअ के तेने  
धर्म प्रिय छे के केम ? ते पोताना शीलांने, व्रताने अने शुल्लाने त्यजे छे के  
केम ? तेमने क्षुभित करे छे के नहि ? तेमने तेमनुं अंडन करे छे के केम ?  
प्रवचनमां ओके देशथी पख तेमां अतिचार लागे छे के केम ? ( ति कहुं एव  
संपेहेमि ) हे अरहन्नक ! मे आ प्रभाळे विचार करीये । ( संपेहिता ओहिं  
पडंजामि ) विचार करीने मे आरा अवधिज्ञानथी संगति भेसाडी

( पडंजिता देवानुप्पियं ओहिणा आभोएमि आभोइत्ता उत्तरपुरत्थिमं० उत्तर  
विउन्विथं० ताए उक्किहाए गइए जेणेव समुदे जेणेव देवानुप्पिया तेणेव उवागच्छामि  
अने तेनी संगति वडे देवानुप्रिय तमने मे भेया,

વાનુપ્રિયસ્યોપસર્ગ કરોમિ । નો ચૈવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! મીતા વા ત્રસિતા વા  
ઉદ્વિગ્ના વા સંજાતમયા વા જાતાઃ । તદ્=તસ્માદ્ યત્ સ્વલુ શક્નો દેવેન્દ્રો દેવરાજો  
વદતિ, સત્યઃ સ્વલુ ઇષોઽર્થો દૃષ્ટઃ । તદ્ તસ્માત્ દૃષ્ટા સ્વલુ દેવાનુપ્રિયાણાં શ્વ  
તામ્ ઋદ્ધિઃ=શુભાનામૈશ્વર્યમ્, ઘુતિઃ=આન્તરં તેજઃ, યજ્ઞઃ=હ્યાતિઃ, યાવદ્=અત્ર  
યાવચ્છબ્દેનેદં દ્રષ્ટવ્યમ્ બલં=શારીરં પરાક્રમં, વીર્યમ્=આત્મિકં બલમ્, પુરુષકારઃ

દેવલકર મૈંઈશાન કોણ કી ઓર ગયા । વહાં જાકર મૈંને ઉત્તર વૈક્રિય  
કી રચના કી-રચના કર ઉસ દેવમવ સમ્બન્ધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિ સે જહાં  
સંસુદ્ર થાં ઓર જહાં આપ દેવનુપ્રિય થે વહાં મૈં આયા (ઉવાગચ્છિત્તા  
દેવાણુપ્રિયસ્સ ઉવસર્ગં કરેમિ) આકર મૈંને ફિર આપ દેવાનુપ્રિયકે ઉપર  
ઉપસર્ગ કરના પ્રારંભ કરદિયા । ( જો ચેવળં દેવાણુપ્રિયા મીયા વા તં  
જળળં સવ્કકે દેવિંદે દેવરાયા વદહ સચ્ચે નં ઇસમદ્દે) પરન્તુ આપ દેવાનુ-  
પ્રિય મીત નહીં હુપ, ત્રસ્ત નહીં હુપ ત્રસિત નહીં હુપ ઉદ્વિગ્ન નહીં હુપ  
ઓર ન ઉત્પન્ન હુઆ હૈ મય જિસ કો ઇસ હી હુપ । ઇસ લિયે મૈંને જૈસા  
આપકે વિષય મૈં શક્રદેવ રાજા દેવેન્દ્ર ને કહા થા બૈસા હી આપકો  
દેખા-( તં દિદ્દેળં દેવાણુપ્રિયાણં ઇહી, જુઈ જસે જાવ પરક્કમે, લદ્દે પત્તે  
અમિસમન્નાગપ) અવ મૈંને આપકે શુળોં કા ઇશ્વર્ય દેખલિયા પ્રત્યક્ષ કર  
લિયા । આપકી ઘુતિ-આન્તરતેજ, આપકી હ્યાતિ યાવત્ શબ્દ સે આપ-  
કા શારીરિક પરાક્રમ, આપકા આત્મિક બલ આપકા સ્વધર્મ મૈં દૃઢતા

બોધને હું ઇશાન કોણ તરફ ગયો. ત્યાં બંધને મેં ઉત્તર વૈક્રિયની  
રચના કરી, રચના કરીને તે દેવભવ સંબંધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિથી બન્યાં સંસુદ્ર હતો  
અને-બન્યાં દેવાનુપ્રિય તમે હતા ત્યાં આવ્યો.

( ઉવાગચ્છિત્તા દેવાણુપ્રિયસ્સ ઉવસર્ગં કરેમિ )

આવીને દેવાનુપ્રિય તમારા ઉપર ઉપસર્ગ ( ખાધા ) શરૂ કર્યો.

( જો ચેવ જં દેવાણુપ્રિયા મીયા વા તં જળળં સવ્કકે દેવિંદે દેવરાયા વદહ  
સચ્ચે નં ઇસમદ્દે )

પણુ દેવાનુપ્રિય તમે તેનાથી ક્યાં નથી, ત્રસ્ત થયા નથી, ત્રસિત થયા  
નથી, ઉદ્વિગ્ન થયા નથી તેમજ તમારામાં મય ઉત્પન્ન થયો નથી. બેથી તમારા  
વિષે શક્ર દેવરાજે જે કંઈ કહ્યું છે તે તમને બોતાં બરોબર લાગે છે.

(તં દિદ્દેળં દેવાણુપ્રિયાણં ઇહી, જુઈ જસે જાવ પરક્કમે લદ્દે પત્તે અમિસમન્નાગપ)

હવે મેં તમારા શુભોની સમૃદ્ધિ બોધ લીધી છે. તમારી ઘુતિ આંતર  
તેજ, તમારી પ્રસિદ્ધિ યાવત્ શબ્દ વડે તમારા શરીરનું શરાતન, તમારું

સ્વધર્મ દૃઢતારૂપ ઇતિ, પરાક્રમઃ=ધર્મારાધનજન્યશક્તિવિશેષઃ, લઘ્વઃ=ઉપાર્જિતઃ, પ્રાપ્તઃ=સ્વાયત્તીકૃતઃ, અમિસમન્વાગતઃ=સમ્યગ્માસેવિતઃ । અહો ! અરહન્નક ! મહતામૃદ્ધ્યાદયો મયા દૃષ્ટાઃ, યથા પરાક્રમો ધર્મારાધનાલ્લઘ્વઃ પ્રાપ્તોઽમિસમન્વાગતથ્ચ સોઽપિ મયા દૃષ્ટ ઇતિ માવઃ ।

તત્=તસ્માત્ ક્ષમયામિ, ત્વલ્લ હે દેવાનુપ્રિયાઃ । મવન્તઃ, હે દેવાનુપ્રિયાઃ । ક્ષમન્તુ મવન્તઃ હે દેવાનુપ્રિયા ! ક્ષન્તુમર્હન્તિ મવન્તઃ । મસ્કૃતાઽપરાધં ક્ષન્તું યોગ્યા મવન્ત ઇતિ માવઃ । નાપિ શ્રૂયોશ્રૂયઃ एवं કરણતયા=પુનઃ પુનરેવં ન કરિષ્યામિ, ઇતિ કૃત્વા=એવમુક્ત્વા, પ્રાક્કલિપુટઃ=સંયોજિતાક્ષરી કૃતકરદ્વયપુટઃ, પાદપતિતઃ પચ્ચાક્ષ્ણમનપૂર્વકં ચરણયોઃ પતિતઃ સન્ એતમર્થમ્=સ્વકૃતાપરાધરૂપં વિનયેન=વિન-

રૂપ પુરુષકાર આપકા ધર્મારાધન જન્ય શક્તિરૂપ પરાક્રમ, જે સર્વ ગુણ મૈને દેખ લિયા । હન સર્વ ગુણોં કો આપને અચ્છી તરહ ઉપાર્જિતકિયા હૈ ।

અચ્છી તરહ હન સર્વ કો આપને અપને આધીન બનાયા હૈ । ઔર અચ્છી તરહ સે હન સર્વ ગુણોં કો આપને સેવિત કિયા હૈ । ( તં સ્વામેમિ, ણં દેવાણુપ્પિયા ! સ્વમે તુ ણં દેવાણુપ્પિયા । ણાહ મુઙ્ગો ૨ एवं કરણયાણ સ્તિકદ્દુ પંજલિઉઢે પાયવહિણ્ણમદ્દં વિણણં મુઙ્ગો ૨ સ્વામેહ ) અતઃ હે દેવાનુપ્રિય । આપ કો મૈં સ્વમાતા હૂં । આપ દેવાનુપ્રિય મુઞ્જે ક્ષમા કરેં । મૈંને અમી તક જો આપકે અપરાધ કિયે હૈ મૈં ઉન્ની કી આપસે ક્ષમા ચાહતા હૂં । આપ મેરે અપરાધોં કો ક્ષમા કરને યોગ્ય હૈ । અવ આને મૈં એસા નહીં કરૂંગા । હસ પ્રકાર કહ કર ઉસ દેવને અપને દોનોં હાથોં કો જોડા ઔર જોડ કર ફિર વહ ઉસ અરહન્નક શ્રાવક કે ચરણોં મૈં

આત્મિક બળ, તમારૂં ધર્મમાં દૃઢરૂપ પુરુષકાર, ધર્મની આરાધનારૂપ તમારૂં પરાક્રમ આ બધા શુભો મેં જોઈ લીધા છે, તમે આ બધા શુભો સારી પેઠે મેળવ્યા છે.

આ બધાને સારી પેઠે તમે પોતાને સ્વાધીન બનાવ્યા છે આ ક્ષેત્રે શુભોત્તું સેવન તમે સારી રીતે કર્યું છે.

( તં સ્વામેમિ ણં દેવાણુપ્પિયા । ણાહ મુઙ્ગો ૨ एवं કરણયાણ સ્તિકદ્દુ પંજલિઉઢે પાયવહિણ્ણમદ્દં વિણણં મુઙ્ગો ૨ સ્વામેહ )

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને હું બમાતું છું. દેવાનુપ્રિય તમે મને ક્ષમા કરો. મેં જે કંઈ પણ તમારા અપરાધ કર્યા છે હું તેમની તમારાથી ક્ષમા ચાહું છું. તમે મારા અપરાધો ક્ષમા કરવા યોગ્ય છે. હવેથી ભવિષ્યમાં કોઈ પણ વખત મારાથી આવું અયોગ્ય વર્તન થશે નહિ. આ રીતે કહીને તે દેવ પોતાના બન્ને હાથ જોડ્યા અને ત્યારબાદ તેણે અરહન્નક શ્રાવકના પગમાં

अभावेन भूयोभूयः क्षमयति, क्षमयित्वा अरहन्नकस्य द्वे कुण्डलयुगले ददाति दत्त्वा यस्या दिशः स देवः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः=देवलोके गत इत्यर्थः ॥ सू० २३ ॥

मूलम्—तएणं से अरहन्नए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ, तएणं ते अरहन्नगपामोक्खा नावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेति, लंबित्ता सगडिसागडं सज्जेति, सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगडि० संकामेति, संकामित्ता सगडी० जोएंति, जोइत्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं मोएइ, मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए तं महत्थं महग्घं महंरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलयुयलं च गिणहंति, गिणित्ता मिहिलं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० तं महत्थं दिवं कुंडल युयलं उवणेंति । तएणं तेसिं संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ,

पंचांग नमन पूर्वक नमस्कार किया नमस्कार कर उसने अपने अपराध की उससे बड़े विनय के साथ बार २ क्षमा कराई । ( क्षामित्ता ) क्षमा कराकर ( अरहन्नस्स ) उसने अरहन्नक श्रावक के लिये ( दुवे कुंडल जुयले दलयति—दलयित्ता—जामेव दिस्सि पाउब्भूए तामेव दिस्सि पडिगए ) दो कुंडल युगल दिये । देकर के फिर वह जिस दिशा से आया था—प्रकट हुआ था—उसी दिशा की ओर वापिस हो गया देवलोक को चला गया । सूत्र “ २३ ”

पंचांग नमनपूर्वक नमस्कार कर्था अपने चोताना अपराधोनी अहुं ज विनय साथे बार-बार क्षमा करावी. (क्षामित्ता) क्षमा करावीने ( अरहन्नस्स, तेण्णे अरहन्नक श्रावकने (दुवेकुंडलयुयले दलयति दलयित्ता जामेव दिस्सि पाउब्भूए तामेव दिस्सि पडिगए)

ये कुंडलोनी ओक आपी. ते आपीने जे दिशाभांथी आओये हुतो, प्रकट भयो हुतो ते जे दिशा तरफ देवलोकांभां जेतो रह्यो. ॥ सूत्र “ २३ ” ॥

पडिच्छित्ता मल्लीं विदेहवररायकन्नं सदावित्ता तं दिव्वं कुंडल-  
 जुयलं मल्लीं विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धइ पिणाद्धित्ता पडि-  
 विसज्जेइ तएणं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावा  
 वाणियगे विउलेणं वत्थगंध जाव उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता  
 रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ पडिविसज्जेइ, तएणं अरह-  
 न्नग संजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवाग-  
 च्छंति, उवागच्छित्ता भंडववहरणं करेति, करित्ता पडिभंडं  
 गिण्हंति, गिण्हित्ता सगडी० भरेति, भरित्ता जेणेव पोयपट्टणे  
 तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोतवहरणं सज्जेति, सज्जित्ता  
 भंडं संकामेति, दक्खिणाणुकुलेणं वाउणा जेणेव चंपा पोय-  
 ट्ठाणे तेणेव पोयं लंबेति, लंबित्ता सगडी० सज्जेति, सज्जित्ता  
 तं गणिमं ४ सगडी० संकामेति, संकामित्ता जाव महत्थं पाहुडं  
 दिव्वं च कुंडलजुयलं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए  
 अंगराया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव  
 उवणेति, तएणं चंदच्छाए अंगराया तं दिव्वं महत्थं च कुंडल  
 युगलं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तं अरहन्नगपामोक्खे एवं वयासी  
 -तुब्भे णं देवा०। बहूणि गामागार जाव आहिंडह लवणसमुदं  
 च अभिक्खणं २ पोयवहणेहिं आगाहेह, तं अत्थियाइं भे केइ  
 कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुब्बे ? तएणं ते अरहन्नगपामोक्खा  
 चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! अम्हे इहेव  
 चम्पाए नयरिइ अरहन्नपामोक्खा बहवे संजत्तगा णावा वा-  
 णियगा परिवसामो, तएणं अम्हे अन्नया कयाइं गणिमं च४

तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो, तएणं  
से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वे कुंडलजुयलं  
पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता पडिविसज्जेइ, तं एसणं सामी अम्हेहिं  
कुंभगराय भवणांसि मल्ली विदेह० अच्छेरए दिट्ठे तं नो खलु  
अन्ना कावि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली  
विदेह०, तएणं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ,  
सम्माणेइ, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ, तएणं चंदच्छाये वाणि-  
यगजणियहरिसे दूतं सदावेइ, जाव जइविय णं सा सयं रज्ज-  
सुक्का, तएणं से दूते हट्ठ जाव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २५॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु सोऽरहन्नकः, ‘निरूपसर्गम्’  
उपसर्गाभावो जातः, इति कृत्वा=इतिविज्ञाय प्रतिभां=साकारसंस्काररूपं नियम  
विशेषं पारयति स्म० । ततस्तदनन्तरं खलु ते ऽरहन्नकप्रमुखा नौकावाणिजकाः  
सांयात्रिकाः दक्षिणानुकूलेन वातेन यत्रैव गम्भीरकं गम्भीरनामकं पोतपत्तनं नौका

‘तएणं से अरहन्नए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से अरहन्नए) उस अरहन्नक आवक  
ने (निरूप सगगामिति कहु) उपसर्ग दूर हो गया है ऐसा जानकर  
पडिमं परेइ) अपने साकारी संधारे को पारित किया ।

(तएणं ते अरहन्नग पामोक्खे नावावाणियगा दक्खिणानुकूलेणं  
वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्ठणे तेणेव उवागच्छंति) इसके अनन्तर  
वे समस्त अरहन्नक प्रमुख सांयात्रिक पोत वाणिक् दक्षिणानुकूल वायु

‘तएणं से अरहन्नए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्थार भाव (से अरहन्नए) ते अरहन्नक आवके (निहवस-  
गामिति कहुं) उपसर्ग (संकट) जेतो रह्यो छे जेम भागीने (पडिमं परेइ)  
पोताना साकारी संधाराने पारित कथो।

(तएणं ते अरहन्नगपामोक्खे नावावाणियगा दक्खिणानुकूलेणं वाएणं जे  
गंभीरए पोयपट्ठणे तेणेव उवागच्छंति)

त्थार पछी जथा अरहन्नक प्रमुख सांयात्रिक पोत वाणिक् दक्षिणानु-  
कूल पवनस्थी जथा गंभीर नामे नावने दांअरवातुं अंदर डटुं त्थां पडोअथा।

उत्तरणस्य ॥ नं वर्तने, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च पोतं=नावं, 'लबेति, लम्बयन्ति तीरस्थाने कश्चकुषु रज्ज्वादिभिर्निबध्य स्थिरी कुर्वन्ति० । 'लंबित्ता' लम्बयित्वा शकटी शाकटिकं=लघुशकटवृहच्छकटानां समूहं सज्जयन्ति=नवीनोपकरणरज्जादिभिः परिचुर्बन्ति, रज्जयित्वा तं गणिमं धरिमं मेयं परिच्छेद्यं चतुर्विधं क्रयाणकसमूहं शकटीशाकटिके 'संकामेति संक्रामयन्ति=स्थापयन्ति, संक्राम्य=तेऽरहन्नक प्रमुखाः सांयात्रिकाः शकटीशाकटिकं योजयन्ति=बलीवर्दादिभिर्योजितं कुर्वन्ति, योजयित्वा शकटारूढास्ते यत्रैव मिथिलाः राजधानीवर्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिलायां राजधान्यां बहिरग्रोद्याने=प्रधानोद्याने शकटीशाकटिकं मोचयन्ति=शकटेभ्यो बलीवर्दान् पृथक्कुर्वन्ति, मोचयित्वा मिथिलायां राजधान्यां तन्म-

से जहाँ गंभीर नाम का नौका के ठहर ने का स्थान था (बंदर गाह था) वहाँ पहुँचे । ( उवागच्छित्ता पोयं लबेति ) वहाँ पहुँच कर उन लोगों ने नौका को खड़ा कर दिया—तीर स्थित अनेक खूंटों में रज्ज्वादि से उसे बाँधकर स्थिर कर दिया । ( लंबित्ता सगडसागडं सज्जेति ) खड़ा करके छोटी छोटी गाडियों को और गाडों को तैयार किया—नवीन उपकरण एवं रज्ज्वादि से उन्हें सज्जित किया । ( सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगडि ४ संकामेति ) सज्जित करके फिर उन्होंने ने उस गणिम, धरिम, मेय एवं परिच्छेद्य रूप चतुर्विध—क्रयाणक को नौका से उतार कर उन गाडी गाडों में भरा ( संकामित्ता सगडी० जोएति, जोहत्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छन्ति ) भर कर फिर उन्होंने ने उन्हें जोता—जोत कर जहाँ मिथिला नगरी थी वहाँ वे आये । ( उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अगुज्जाणंसि सागडसगडी मोएइ मोहत्ता मिहिलाए रायहाणीए तं महत्थं महगधं महरिहं बिउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलजुयलं

( उवागच्छित्ता पोयं लबेति ) त्यां पडोच्छीने तेओओ नावने छली राणी. छिनारानी डोरीओथी तेने सारी रीते आंधी डीपी. ( लंबित्ता सगड सागडं सज्जेति ) त्थार पछी नानी गाडीओ तेभओ भाटां गाडाओने डोरीओ वगेरे साधनेओ सओओ कथां. ( सज्जित्ता तं गणिमं ४ सगडि ४ संकामेति ) सओओ कथां आह तेभओ गबुभ, धरिभ, मेय आने परिच्छेद्य रूप आर प्रडा-रणी वेयाओनी वस्तुओने नावभांथी उतारीने गाडीओ आने गाडाओभां डोरी (संकामित्ता सगडी० जोएति, जोपत्ता जेणेव महिला तेणेव उवागच्छन्ति ) सामान कथां पछी तेभओ गाडीओ आने गाडाओने नेतथां आने नेतरीने न्यां मिथिला नगरी छती त्यां गया.

( उवागच्छित्ता महिलाए रायहाणीए बहिया अगुज्जाणंसि सगडीसागडं



हार्थं महाप्रयोजनकं 'महर्घं' महार्घं=बहुमूल्यकं, महार्हं महतां योग्यं विपुलं विस्तीर्णं राजार्हं राजयोग्यं प्राभृतम्-उपहाररत्नादिकं कुण्डलयुगलं=देवेन दत्तं कुण्डलद्वयं च गृह्णन्ति, गृहीत्वा मिथिलामनुपविशन्ति । अतुप्रविश्य यत्रैव कुम्भकः=कुम्भकनामको मिथिलानरेशो वर्तते, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं शिर आवर्त दशनस्वं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तन्महार्थं प्राभृतं रत्नादिकं दिव्यं कुण्डलयुगलं च उपनयन्ति=राज्ञः पुरतः स्थापयन्ति । ततस्तदा खलु कुम्भको राजा तेषाम्=अरहन्नकादीनां सांयात्रिकानां नौकावाणिजकानां यावत् रत्नादि च गिणहन्ति, गिण्हित्ता मिहिलं अणुपविसन्ति ) वहां आकर उन लोगों ने मिथिला राजधानी के बाहिर प्रधान बगीचे में उन गाड़ी गाड़ों को ढील दिया । ढील देने के बाद फिर उन्होंने मिथिला राजधानी में जाने के लिये उस मद्रा प्रयोजन साधक, बहुमूल्य, महापुरुषो के योग्य रत्नादिकों को भेट (नजराने) को और देव प्रदत्त उन दोनों कुंडलों को कि जो राजा के लायक थे लिया-और लेकर वे मिथिला राजधानी में गये ( अणुपविसिस्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छिस्ता करयल० तं महर्घं दिव्यं कुंडलजुयलं उवर्णेति ) वहां जाकर फिरवे जहां कुम्भक राजा थे वहां गये-वहां पहुंचकर उन सबने राजा को दोनो हाथो की अंजलि कर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया ।

बाद में साथ मे लाया हुआ वह रत्नादिक रूप उपहार और कुंडल मोपइ मोइत्ता मिहिलाए रायदाणीए तं महर्घं महर्घं महर्घं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडल जुयलं च गिणहन्ति, गिण्हित्ता मिहिलं अणुपविसन्ति )

त्यां पडोन्थीने तेमणे गाडीओ अने गाडीओने छोडी दीधां अने त्याए भाइ तेमणे मिथिला राजधानीमां जवा भाटे ते भडाप्रथेजाननी सिद्धि भाटे अहु डिंभती भडापुइधेने लायक जेवा रत्ना वजेरेनी सेट तथा देवे आपेक्षा अने कुंडणेने के जेओ राजने येअ्य छता ते दीधां अने लधने तेओ मिथिला राजधानीमां गया.

( अणुपविसिस्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छन्ति उदागच्छित्ता करयल० तं महर्घं दिव्यं कुंडलजुयलं उवर्णेति )

त्यां जधने तेओ ज्यां कुंभक राज छता त्यां पडोन्थीं, त्यां पडोन्थीने तेओ अधाओ राजने अने छायनी अंजलि भनावीने अने तेने मस्तके भूझीने नमन कर्थां. पछी साथे लावेलां रत्ना वजेरेना उपहार तेमज कुंडणे तेमणे सेट कर्थां.

प्राभृतं कुण्डलद्वयं च प्रतीच्छति=प्रह्णाति, प्रतीच्छथ=गृहीत्वा च मल्लीं विदेह राज-  
वरकन्यां शब्दयति, शब्दयित्वा च तद् दिव्यं=मनोहरं कुण्डलयुगलं मल्लया विदेह  
राजवरकन्याकाया 'पिण्डेह' पिन्दयति=पिन्दुं करोति परिधापयतीत्यर्थः ।  
पिन्दयथ प्रतिविसर्जयति=तां कन्यान्तः पुरे स्वभृत्यैः प्रापयति, ततस्तदन्तरं खलु  
स कुम्भको राजा तान् अरहन्नकप्रमुखान् नौकावाणिजकान् विपुलेन वस्त्रगन्ध-  
माल्यावङ्कारेण संमान्य यावत् उच्छुल्कं=शुल्कमावाव वितरति=ददाति । 'अरहन्न-  
कादिभ्योव्यवहर्तृभ्यः क्रयविक्रयव्यवहारनियमितं राजशुल्कं मद्भृत्यैर्न प्रहीव्य  
मित्याज्ञापत्रं प्रदत्तवानिति भावः । वितर्य=शुल्कमावविषयकमाज्ञापत्रं दत्त्वा,

उन्होंने ने राजा को भेंट किये । (तएणं कुंभए तेसि संजत्तगाणं जाव  
पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्ली विदेहवररायकन्नं सदावेइ सदावित्ता तं  
दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेहवरराजकन्नगाए पिण्डइ) कुम्भक राजा  
ने उन सांघत्रिको की उस दिये कुए रत्नादि भेंटको तथा कुण्डलद्वय  
को स्वीकार कर लिया-स्वीकार करने के बाद फिर विदेहवरराजकन्या  
मल्ली कुमारी को बुलाया-बुलाकर वे दोनों दिव्य कुण्डल उस विदेह  
वरराजकन्या मल्ली कुमारी को पहिरा दिये ।

(पिण्डित्ता पडिविसज्जेइ) पहिराकर फिर उसे वहां से दूर्तो के  
साथ कन्यान्तः पुर मे विसर्जितकर दिया । (तएणं से कुंभए राया ते  
अरहन्नगपामोक्खे नावावणिगये विउले णं वत्थगंध जाव उस्सुक्कं  
वियरइ) इसके बाद कुम्भक राजाने उन अरहन्नक प्रमुख सांघात्रिकां का  
विपुल, वस्त्र, गंधमाला, अलंकारों से सन्मान किया । सन्मान करके

(तएणं कुंभए तेसि संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लीविदेह वररायकन्नं  
सदावेइ, सदावित्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेह वरराज कन्नगाए पिण्डइ) -

कुंभक राजाએ તે સાંઘાત્રિકોની રત્નો વગેરેની ભેટ તેમજ કુંડળોને  
સ્વીકાર્યાં. સ્વીકાર્યા પછી વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લિકુમારીને યોદ્ધાવી અને  
યોદ્ધાવીને અને દિવ્ય કુંડળો વિદેહવરરાજકન્યા મલ્લિકુમારીને પહેરાવ્યાં.

(પિણ્ડિત્તા પડિવિસજ્જેइ) પહેરાવીને તેને દૂતોની સાથે ત્યાંથી કન્યા-  
ન્તપુરમાં પહોંચાડી

(તएणं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे नावावणियगे विउले णं वत्थ  
गंध जाव उस्सुक्कं वियरइ )

ત્યાર પછી કુંભકરાજાએ અરહન્નક પ્રમુખ સાંઘાત્રિકોનું વિપુલ વસ્ત્ર ગંધ  
માળા અલંકારોવડે સન્માન કર્યું. સન્માન કરીને તેમની વસ્તુઓનો કર (મહેસૂલ)

‘रायमग्गमोगाढे’ राजमार्गमवगाढात् राजमार्गसमीपावस्थितान् आवासान् निवासस्थानानि वितरति=अरहन्नकादीनां वासार्थमाज्ञां ददाति, प्रति विसर्जयति=एवं व्यवस्थां तदर्थं विधाय कुम्भको राजा स्वनिर्दिष्टानि वासस्थानानि गन्तुमादिशति स्मेत्यर्थः । ततः खलु अरहन्नक सांयात्रिकाः यत्रैव राजमार्गमवगाहिता=राजमार्गसंनिष्ठया आवासाः=वासस्थानानि वर्तन्ते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य राजदत्तभवनेषु निवसन्तस्ते भाण्डव्यवहरणं=गणिमादिकस्य क्रयाणकवस्तुजातस्य विक्रयं कुर्वन्तिस्म० । कृत्वा प्रातिभाण्डं=स्वकीयं गणिमादिकं भाण्डं विक्रीय तन्मूल्येन पुनरन्यत् क्रीतं स्वोपयोगिवस्तुजातरूपं भाण्डं प्रतिभाण्डं, तद् गृह्णन्ति=संचिन्वन्ति, गृह्यत्वा शकटी शकटिकं भरन्ति=पूरयन्ति० भृशं मिथिलानगरीतः प्रस्थिताः सन्तः यत्रैव गम्भीरकं गम्भीरकाख्यं पोतपत्तनं=नौकारोहणस्थानं वर्तते तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहनं=नौकायानं सञ्जयन्ति=नवीनो-

उन की वस्तुओं पर से कर-टेक्स-माफ कर दिया । इन व्यवहारी अरहन्नकादिकों से क्रय विक्रय के व्यवहार पर नियमित राज शुल्क मेरे नौकर न लेवे इस प्रकार का आज्ञा पत्र उन्हें लिखकर दे दिया । (वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ, पडिविसज्जेइ ) शुल्क भाव विषयक आज्ञापत्र प्रदान करके राजा फिर उन्हें राजमार्ग के समीप में रहे हुए राजकीय मकान ठहरने के लिये देदिये । इस प्रकार उनकी व्यवस्था करके बाद में कुम्भक राजा ने वहाँ से उन्हें बिदा किया ( तएणं अरहन्नग संजत्ता जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे-तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता मंडववहरणं करेंति, करित्ता पडिमंडं गिण्हंति गिणिहत्ता सगडी० भरेंति, भरित्ता जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेति ) राजा से बिना बिदा लेकर वे अरहन्नक सांयात्रिक जन जहाँ राजमार्ग में राजकीय भवन थे वहाँ आये ।

भाइ कथो वेपारी अरहन्नक प्रमुण वगेदेनी पासोथी कथं विकथना उपर भारा राज कर्मआरीओ शुल्क(कर)वे नहिं आ प्रमाणेजुं आज्ञापत्र राजाओ तेभने दथी आप्थुं ।

( वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरइ, पडिविसज्जेइ )

शुल्क भाइजुं आज्ञापत्र तेभने आप्थीने राजाओ राजमार्गनी पासो आवेदो पोतानो मडेव तेभने उत्तरवा भाटे आप्थो. आ प्रमाणे व्यवस्था करीने कुम्भक राजाओ त्याथी तेभने विदाय कथा.

(तएणं अरहन्नग संजत्ता जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मंडववहरणं करेंति, करित्ता पडिमंडं गिण्हंति गिणिहत्ता सगडी० भरेंति, भरित्ता जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेति)

पकरणरज्ज्वादिभिः परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा भाण्डं संक्रामयन्ति, स्थापयन्ति दक्षिणानुकूलेन वायुना यत्रैव चम्पापोतस्थानं=चम्पानगरीसमीपे नौकावतरणस्थानं वर्तते तत्रैव पोतं=नावं लम्बयन्ति=तीरस्थितानेकशङ्कुषु रज्ज्वादिभिर्वद्ध्वा स्थिरीकुर्वन्ति, लम्बयित्वा शकटीशाकटिकं=लघुशकटवृहच्छकटाकां समूहं सज्जयन्ति=परिष्कुर्वन्ति, सज्जयित्वा तद् गणिमं वरिमं मेयं परिच्छेद्यं=चतुर्विधं भाण्डं शकटीशाकटिके शकटसमूहे संक्रामयन्ति=स्थापयन्ति संक्राम्य यावद् महार्थं प्राप्तं दिव्यं देवेन दत्तं कुण्डद्युगलं च गृह्णन्ति, गृहीत्वा चम्पानगर्यां प्रविष्टा चन्द्रच्छायः चन्द्रच्छायनामाऽङ्गराजः = अङ्गदेशाधिपतिस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तन्महार्थं यावद्

वहाँ आकर वे उन भवनों में ठहर गये-और वहीं रहते हुए वे अपनी क्रयाणक गणिमादिरूप वस्तुओं का विक्रय करने लगे। और उनके विक्रय से जो मूल्य उन्हें प्राप्त होता था उससे दूसरी अपने व्यवहार के उपयोगी वस्तुओं को खरीदने लगे। इस तरह जब उन का संग्रह हो चुका तब उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों को उनसे भरा-और भरकर मिथिला नगरी से प्रस्थित होकर जहाँ गंभीरक नाम का पोत पत्तन था वहाँ आये। वहाँ आकर उन्होंने नौकायान को सज्जित किया (सज्जिता मंडं संकामेति, दक्षिणानुकूलेण वाउणा जेणेव चंपा पोयट्टणे तेणेव पोयं लंबेति-लंबित्वा सगङ्गी० सज्जेति, सज्जित्वा तं गणिमं ४ सगङ्गी० संकामेति संकामित्वा जाव महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडल जुयलं गिण्हित्वा जेणेव चंदच्छाए अंगाराया तेणेव उवागच्छन्ति ) सज्जित

राजानी आज्ञा भणवीने अरुद्धन्नक सांथात्रिके न्यां राज मार्गनी पासे राज भंडेल डेतो त्यां पहुँच्यां.

त्यां जधने तेजो भंडेलभां शकया अने त्यां रङ्गिने ज तेजो पोतानी वेयाणु भाटेनी वस्तुज्जोनु वेयाणु करवा लाय्या. वेयाणुथी तेजोने जे ४४ रकम भणती तेनाथी तेजो पोताना वेपार भाटेनी भील वस्तुज्जोनी भरीही करवा लाय्या आ प्रभाणु वस्तुज्जोने स'ग्रह थयो त्यारे ते लोकेज्जो गाडीज्जो अने गाडीज्जोयां वस्तुज्जो बरी अने आ प्रभाणु मिथिलां नगरीथी प्रस्थान करीने तेजो न्यां गंभीरक नाये पोत पत्तन डेतुं त्यां गया त्यां जधने तेजोज्जो पहुँचुने तैयार क्युं.

(सज्जिता मंडं संकामेति दक्षिणानुकूलेण वाउणा जेणेव चंपापोयट्टणे तेणेव पोयं लंबेति लंबित्वा सगङ्गी० सज्जेति सज्जित्वा तं गणिमं ४ सगङ्गी संकामेति संकामित्वा जाव महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं गिण्हन्ति गिण्हित्वा जेणेव चंदच्छाए अंगाराया तेणेव उवागच्छन्ति )

प्राभृतं दिव्यं कुण्डलयुगलं चोपनयन्ति, चन्द्रच्छायतृपस्याग्रे स्थापयतीत्यर्थः। ततः खेले चन्द्रच्छायतृपोऽङ्गराजस्तद् दिव्यं महार्थं कुण्डलयुगलं च प्रचीच्छति—पृच्छति, प्रतीच्छ्य गृहीत्वा तान् अरहन्तकप्रभुत्वान् नौकावाणिजकान् एवमवादीत्—वक्ष्यमाण-करके उसमें गाड़ी और गाड़ों से उतर २ कर अपने भांडों को रखा। दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर फिर वे वहाँ से चले—और चलकर जहाँ चंपा नगरी के समीप में नौका के ठहरने का स्थान था वहाँ आकर उन लोगों ने लंगड़ डाल दिया अपनी नौका को ठहरा दिया।

नौका को ठहरा कर फिर गाड़ी और गाड़ों को सज्जित किया—सज्जित करने के बाद उसमें से गणिमादि वस्तुओं को उतार २ कर उन गाड़ी और गाड़ों में भरा-भर कर फिर वे महार्थ साधक प्राभृत (भेद) को और दिव्य कुण्डलयुगल को लेकर चंपा नगरी में प्रविष्ट हुए।

वहाँ प्रविष्ट होकर जहाँ अंगदेशाधिपति चंद्रच्छाय राजा थे—वहाँ गये। (उवागच्छित्ता तं महर्त्थं जाव उवर्णेति, तएणं चंद्रच्छाय अंगाराया तं दिव्वं महर्त्थं च कुण्डलयुगलं पडिच्छइ) वहाँ पहुँच कर उन लोगों ने उस महार्थ साधक भेद को और कुण्डलयुगल को राजा को भेंट किया अंगदेशाधिपति चंद्रच्छाय राजा ने उस भेंट एवं दिव्य महार्थ कुण्डल युगल को स्वीकार कर लिया—(पडिच्छित्ता ते अरहन्तकपामोक्खे एवं वयासी) स्वीकार करके फिर उसने उन अरहन्तक आदि

तैयार करीने गाडीओ तथा गाडांओमांथी पोताना लाडिने तेमां भूक्या. दक्षिणानुकूल पवन पडेवा लाग्यो तयारे तेओ त्यांथी आस्था अने चंपा नगरीनी पासे वडांथुने उल्लुं राजवानी अभ्या हती त्यां अंगर नाभ्युं अने वडांथु उल्लुं राजभुं. वडांथु उल्लुं राजांनि गाडीओ अने गाडांओने तैयार करीने तेमां अभिभ वगेरे वस्तुओ वडांथुमांथी उतारीने भूकी अने तयार पछी भडांथु साधक लेट अने दिव्य कुण्डणी लेट लहने चंपा नगरीमां गया.

त्यां लहने ज्यां अंगदेशाधिपति चंद्रच्छाय राजा हता त्यां गया.

(उवागच्छित्ता तं महर्त्थं जाव उवर्णेति तएणं चंद्रच्छाय अंगाराया तं दिव्वं महर्त्थं च कुण्डलयुगलं पडिच्छइ)

त्यां पडेयांनि तेओओ भडांथु साधक लेटने तेमज कुण्डणी लेट राजने लेट करी. अंगदेशना राजा चंद्रछाये पछु ते लेट तेमज दिव्य भडांथु कुण्डणी लेटने स्वीकारी. (पडिच्छित्ता तं अरहन्तकपामोक्खे एवं वयासी) स्वीकार्या गाढ तेणे अरहन्तक वगेरे सांयात्रिकिने आ प्रभाणे कल्लु—

प्रकारेणोक्तवान् हे देवानुप्रियाः । यूयं खलु बहून् ग्रामाग्र० यावत्-अत्र यावत्कर्णादिदं द्रष्टव्यम्-० 'ग्रामाकरनगरखेटकर्वटमहम्बद्रोणमुख पत्तन निगमसंनिवेशान्' इति तत्र ग्रामो जनपदः, आकरः-सुवर्णाद्युत्पत्तिस्थात् नगरं-कररहितं, खेटं-धूलीप्राकारं, कर्वटंकुनगरं, महम्ब-दूरवर्ति संनिवेशान्तरं, द्रोणमुखं-जलपथस्थ-लपथयुक्तं, पत्तनं - जलपथ - स्थलपथयोरुत्तरेण युक्तं, निगमो-वणिग्जनानां स्थितः, संनिवेशः-कटकदीनामावासः, तान् ग्रामादीन् 'आहिंडह' आहिण्ड-ध्वे=परिभ्राम्यथ, तथा लवणसमुद्रं चामीक्ष्यं २ पोतवहनेः=नौकायानैः, 'ओगाहेह' अवगाहध्वे=तरथ, तत्=तस्माद् यूयं कथयत-अस्ति चापि युष्माभिः किमपि कुत्रचिद् आश्चर्यं दृष्टपूर्वं पूर्वं युष्माभिर्यत् किमप्याश्चर्यं कुत्रचिद् दृष्टमस्ति, तन्मग्रे वर्णयतेत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु तेऽरहन्नकप्रमुखाः व्यवहारिणश्चन्द्रच्छायमङ्गराजमेवमवादिषुः=वक्ष्यमाणप्रकारेणोक्तवन्तः-हेस्वामिन् । एवं खलु वयमिहैव चम्पायां नगर्याम् अरहन्नकप्रमुखा बहवः सांयात्रा नौकावाणिजकाः परिवसामः,

सांयात्रिक से इस प्रकार कहा-( तुमहे णं देवानुप्पिया बहूणि गामा गर जाव आहिंडह, लवणसमुद्रं च अभिक्खणं २ पोयवहणेहि ओगाहेह ) हे देवानुप्रियो ! आप लोग अनेक ग्राम आकर आदि में परिभ्रमण करते रहते हो-तथा लवण समुद्र को भी नौका यानों से पार २ पार करते रहते हो ( तं अत्थियाहं मे केहं कहिं चि अच्छेए दिट्ठ पुब्बे ? ) तो कहो यदि कहींपर आप लोगों ने कोई आश्चर्य देखा हो तो । ( तएणं ते अरहन्नग पामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी ) ऐसा राजा की जिज्ञासा जानकर उन व्यवहारी अरहन्नक प्रमुखों ने अंगदेशाधिपति उन चंदच्छाय राजा से इस प्रकार कहा-( एवं खलु सामी अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नग पामोक्खा बहवे संजत्तगा णावा

( तुम्हेणं देवानुप्पिया बहूणि गामागार जाव आहिंडह लवणसमुद्रं च अभिक्खणं २ पोयवहणेहि ओगाहेह )

हे देवानुप्रियो ! तमे धर्मां गाम आकर वगेरेभां परिभ्रमणु करता न रहो। छो तेमन लवणसमुद्रने पणु वडाणु वडे पारंपार पार करता रहो। छो

( तं अत्थियाहं मे केहं कहिं चि अच्छेए दिट्ठपुब्बे ! ) तमे केहं पणु नवाधनी पात लेध डेय तो बतावो।

( तएणं अरहन्नगपामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी )

अंगदेशाधिपति राजा चंदच्छायनी जिज्ञासा लाधुनि अरहन्नक, प्रमुजो ओ तेने आ प्रमाणु कछु—

( एवं खलु सामी अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे

ततः खलु वयमन्यदा कदाचिद् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये गणिमं च ४ गणि-  
मादि चतुर्विधं क्रयाणकं पोतवहने भृत्वा समुद्रे प्रस्थिताः, तथैव अहीनातिरिक्तं=  
न न्यूनाधिकं, किंतु यथादृष्टं तथैव भवतामग्रे कथयामः, यावत्=समुद्रेगच्छन्तो  
वयं गम्भीरपुरपत्तनं=नौकावतरणस्थानं प्राप्य शकटसमूहे सर्वं क्रयाणकं भृत्वा  
मिथिलार्यां नगर्यां बहिरुद्धाने शकटसमूहमवस्थाप्य कुम्भकस्य राज्ञोदर्शनार्थं  
मिथिला नगरीं प्रविष्टाः, यावत् - कुम्भकस्य राज्ञः प्राभृतं दिव्यं कुण्डलयुगलं  
चोपनयामः, कुम्भकनृपायोपहारं वयं प्रदत्तवन्त इत्यर्थः । तदा खलु स कुम्भकः

वणियगा परिवसामो, तएणं अम्हें अन्नया कयाई गणिमं च ४ तहेव  
अहीणमतिरिक्तं जाव कुंभगस्स रत्तो उवणेमो ) स्वामीन् सुनो हम  
अरहन्नक प्रमुख अनेक सांयात्रिक पोतवणिक्यही चंपा नगरी में रहते हैं

हम लोग किसी एक समय, गणिमादि चतुर्विध क्रयाणक को पोत  
वहन में भरकर यहां से समुद्रीय रास्ते से होकर मिथिला राजधानी  
गये हुए थे । वहां हम ने जो कुछ देखा वह आपके समक्ष न न्यून रूप  
में और न अधिक रूप में किन्तु जैसा देखा वैसा ही हम निवेदित  
करते हैं—हम लोग नौका से यहां से प्रस्थित होकर गंभीरक पोत पत्तन  
पर पहुँचे वहां उतर कर हम लोगों ने समस्त अपना क्रयाणक शकटों  
में भर दिया । वहां से चल कर फिर हम लोग मिथिला नगरी के बाहिर  
एक उद्यान में गाड़ियों को रख कर कुम्भक राजा के दर्शन करने के  
लिये मिथिला नगरी गये । वहां राजा के समीप पहुँच कर हम लोगों  
ने उन के समक्ष अपनी भेंट रख दी और कानो के दो कुंडल भी

संजत्तगा णात्ता वणियगा परिवसामो तएणं अम्हे अन्नया कयाई गणिमं च ४ तहेव  
अहीणमतिरिक्तं जाव कुंभगस्स रत्तो उवणेमो )

हे स्वामी ! अमे अरहन्नक प्रमुख अनेक सांयात्रिक पोत वाणिज्ये  
अही' अ'पानगरीमां ७ रहीये छीजे.

अमे कौंछ वणत्त गच्छिअ वगेरे त्थार अतनी वेयाणुनी वस्तुओ पोत  
वहन नां भूझीने अहीथी समुद्रना आगेथी मिथिला राजधानीमां गया हता.  
त्यां अमे ७े क'छ जेथुं छे ते तमारी सांमे वधारे पडतुं पणु नहि तेमज्ज  
ओखुं पणु नहि ओटव के त्यां ७ेवी रीते ७े इपमा अमे जेथुं छे ते  
विषे तमारी सांमे निवेदन करीये छीजे. अमे दोके अहीथी वडाणु वडे प्रधान  
करीने गंभीरक पोतपत्तन उपर पडोअ्या. त्यां उतरिने अमे वेयाणुनी अधी  
वस्तुओ गाडाओमां बारी. त्थार पछी त्यांथी आदीने मिथिला नगरीनी अडार  
उद्यानमा गाडीओने उलीराणीने कुंभक, राजना दर्शन भाटे मिथिला, नगरीमां

‘मल्लीए’ मल्ल्याः=मल्लीनाम्न्या विदेहराजवरकन्यायाः=स्वकन्यकायास्तद् दिव्यं कुण्डलयुगलं पिनद्वयति, पिनद्वय=परिधाप्य प्रतिविसर्जयति । हे स्वामिन् ! तदेवा खलु अस्माभिः कुम्भकस्य राज्ञो भवने, मल्ली विदेहराजवरकन्या=विदेहराजस्य कुम्भकस्य वरा सर्वगुणयुक्त्वात् श्रेष्ठा कन्या, आश्चर्यं दृष्टम्=अवलोकितम् । तत् नो खलु अन्या काऽपि तादृशी देवकन्या वा यावत्-अत्र यावच्छब्देनेदं द्रष्टव्यम्-‘अमुरकन्या वा-नागकन्या वा जक्सकन्या वा गंधर्वकन्या वा राजकन्या वा’ इति । अमुरकन्या वा नागकन्या वा यक्षकन्या वा गन्धर्वकन्या वा राजकन्या वा, इति संस्कृतम्, यादृशी खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या, यादृशी मिथिलाशी-

( तएणं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्याए तं दिव्वं कुण्डलयुगलं पिणद्धेइ ) भेद को स्वीकार करके उसी समय उन कुम्भक राजा ने अपनी विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी को बुलाया-और बुलाकर वे दो कुण्डल उसे पहिना दिये । ( पिणद्धित्ता पहिविसज्जेइ ) और पहिना कर फिर उसे कन्यान्तः पुर में प्रति विसर्जित कर दिया । ( तं एसणं सामी अम्हे हिं कुंभरायमवर्णसि मल्ली विदेह अच्छेए दिट्ठे, तं नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देव कन्या वा जाव जारिसियाणं मल्ली विदेह० ) इस तरह हे स्वामीन् ! हमने कुम्भक राजा के भवन में सर्व गुण संपन्न विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी रूप अश्चर्य देखा है ।

हमारी दृष्टि में अन्य कोई भी ऐसी देव कन्या, असुर कन्या, नाग कन्या, यक्ष कन्या, गंधर्व कन्या अथवा राज कन्या आश्चर्य रूपा नहीं है

गथा. त्यां जर्धने अग्ने तेननी साग्ने सेट तेमज्ज कानना कुंडली जेड भूही. ( तएणं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्याए तं दिव्वं कुण्डलयुगलं पिणद्धेइ )

सेट स्वीकारिने तेज्ज वणते कुंडल राजाग्ने पोतानी विदेह राजवरकन्या भल्ली कुमारीने जालावी. अग्ने जालावीने कुंडली तेने पडेशाव्यां. ( पिणद्धित्ता पहिविसज्जेइ, ) अग्ने पडेशावीने तेने कन्यान्तःपुरमां भोजली दीधी.

( तं एसणं सामी अम्हे हिं कुंभरायमवर्णसि मल्ली विदेहअच्छेए दिट्ठे तं नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देवकन्या वा जाव जारिसियाणं मल्लीविदेह० )  
आ प्रभाषे हे स्वामी ! अग्ने कुंडल राजाग्ने भल्लीमां सर्वशुभ संपन्न विदेह राजवर कन्या भल्ली कुमारीनां रूपमां आश्चर्यं जेषुं छे.

अमारी साग्ने जीलु कोर्ध पणु देवकन्या अमुर कन्या, नाग कन्या, यक्ष कन्या, गंधर्वकन्या, अथवा तो राजकन्या नथी के जे जेवी विदेह राजवर कन्या भल्ली कुमारी जेवी आश्चर्य रूपा होय.



श्वरस्य कुम्भकस्य कन्यका मल्ली दिव्याश्चर्यरूपा विराजते, नास्ति तादृशी काऽपि देवकन्या तथा न सन्यसुरकन्यकादयः काश्चिदपि तच्छ्रुत्या इति भावः ।

ततस्तदनन्तरं खलु चन्द्रच्छायनामा वृषस्तान् अरहन्नकप्रमुखान् सत्कारयति=बद्धादिना तेषां सत्कारं करोति, सम्मानयति=मधुरवचनादिना प्रशंसति । सत्कृत्य संमान्य प्रतिविसर्जयति । तेभ्योऽरहन्नकादिभ्यो व्यवहर्तृभ्यः क्रयविक्रय व्यवहारेषु राजकीय शुल्कं मदीयमृत्यैर्न ग्रहीतव्यमित्याज्जापत्रं दत्वा तान् विसर्जयति स्मेत्यर्थः । ततः खलु चन्द्रच्छायो वाणिजकजनितहर्षः = अरहन्नकादि वाणिजकवचनश्रवणेन मल्लीकुमार्यां संजातानुरागः सन् दूतं शब्दयति, यावद्=

जैसी कि विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी है । ( तएणं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता, पडिविसज्जेइ, तएणं चंदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूतं सदावेइ, जाव जइ वि य णं सा सयं रज्जसुक्का, तएणं से दूते हट्ठे जाव पहारेत्था गमणाए ) इस प्रकार उन अरहन्नक प्रमुख सांघात्रिकों के मुख से मल्ली कुमारी रूप आश्चर्य श्रवण कर चंदच्छाय राजा ने उन अरहन्नक प्रमुख पोत वणिकों का बद्धादि प्रदान द्वारा सत्कार किया और मधुर वचनादि द्वारा उनकी बहुत २ प्रशंसा की ।

बाद में उन्हें अपने पास से राजकीय शुल्क माफ कर विसर्जित कर दिया उन्हें इस प्रकार का “ मेरे भव्य जन इन अरहन्नक आदि व्यवहारी जनों से क्रय विक्रय के व्यवहार में राजकीय शुल्क न छेवें आज्ञा पत्र लिखकर दे दिया । पश्चात् उन अरहन्नक आदि वणिगजनोंके वचनों के

( तएणं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेइ, सम्माणेइ सक्कारित्ता, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ तएणं चंदच्छाए वाणियगजणियहरिसे दूतं सदावेइ जाव जइ वि य णं सासयं रज्जसुक्का तएणं से दूते हट्ठे जाव पहारेत्था गमणाए )

आ नीते ते अरहन्नक प्रमुख सांघात्रिकानां भोथी मल्लीकुमारी इय आश्चर्यं सांघात्रिणे अहच्छाय राजाओ अरहन्नक प्रमुख ते पोत वासिकेनो वत्थ वगेरे आपीने सत्कार कथो तेमज्ज मधुर वचनो वडे तेमना भूवज्ज वप्पाणु कथो.

त्यार भाइ राजकीय कर ( भडेसुल ) माइ करीने तेमने विहाय करती वप्पते “ भाइ तमाम राजकर्मचारीओ अरहन्नक वगेरे वेपारीओ पासोधी कय विक्रयना व्यवहारमां राजकीय कर लेवो नहि ” आ जातुं आजापत्र लणी आप्पुं त्यार पछी अरहन्नक वगेरे वसुकि जेनोना भोथी सांघात्रेदा वचनोथी मल्लीकुमारी उपर जेमना हृदयमां प्रेम उत्पन्न थयो छे, जेवा ते

अत्र यावत् कहणादिदं द्रष्टव्यम्—शब्दयित्वा चैवमत्रादीत्—हे देवानुप्रिय ! त्वं मिथिलायां नगर्यां गत्वा कुम्भकं राजानं ब्रूहि—तव कन्यकां मल्ली चन्द्रच्छायो वाञ्छति ' इति । यद्यपि च खलु सा स्वयं राज्यशुल्का = राज्यार्थिनी, एवं चेत्तस्याः समग्रं राज्यं समर्पयामीति भावः । ततस्तदनन्तरं खलु स दूतश्चन्द्रच्छाय-यनुपाज्ञया दृष्टतुष्टः=अत्यन्तं प्रमृदितः सन् यावत् कतिपय सैन्यसहितो रथारूढः प्राधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्त इत्यर्थः । इति द्वितीयस्य चन्द्रच्छायनाम्नो नृपस्य सम्बन्धः कथितः ॥ सू० २४ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं ससण्णं कुणाल नाम जणवए होत्था, तत्थ णं सावत्थी होत्था, तत्थ णं रुप्पी कुणालाहि-वई नामं राया होत्था, तस्स णं रुपिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहुनामं दारिया, होत्था, सुकुमाल० रुवेण य जोवणेणं लावणेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि

अवगणसे मल्ली कुमारीके ऊपर जिसका अनुराग उत्पन्न हो गया है ऐसे उस चन्द्रच्छाय राजा ने उसी समय दूत को बुलाया । बुला कर उससे ऐसा कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम मिथिला नगरी में जाकर कुम्भक राजासे कहो कि आपकी पुत्री मल्ली कुमारी को चन्द्रच्छाय राजा चाहते हैं ।

यदि वह पुत्री मेरे समस्त राज्य को चाहेगी तो मैं उसे अपना समस्त राज्य समर्पित कर दूंगा । इस तरह वह दूत चन्द्रच्छाय राजा की आज्ञा से हर्षित एवं संतुष्ट होता हुआ कतिपय सैन्य सहित वहां से रथ पर आरूढ होकर मिथिला नगरी की ओर प्रस्थित हो गया । इस तरह यह द्वितीय चन्द्रच्छाय नामके राजा का संबंध कहा । सूत्र “ २४ ”

अदृच्छाय राजाणे तरत अ इतने भोलाओंने अने तेने कहुं—हे देवानुप्रिय ! तमे मिथिला नगरीमां जधने कुंभक राजाणे कडेके तमारी पुत्री मल्ली कुमारी ने अदृच्छाय राजा आछे छे.

जो ते पुत्री भारा आभा राजाजने पणु छिच्छे तो हुं तेने पोतातुं राज्य समर्पवा तैथारे छुं. आ रीते इत अदृच्छाय राजाणी आज्ञाथी हर्षित तेमज संतुष्ट थतो नथी केटलाक सैन्यनी साथे त्यांधी रथ उपर सवार थधने मिथिला नगरी तरत आछे. आ प्रभाछे आ भीज अदृच्छाय नामना राजा ना संबंध विषे कहुं ॥ सूत्र “ २४ ” ॥

होत्था, तस्मिन् णं सुबाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासियमज्ज-  
 णए जाए यावि होत्था, तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई  
 सुबाहुदारियाए चाउम्मासियज्जणयं उवट्ठियं जाणइ,  
 जाणित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी  
 —एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहुदारियाए कल्लं चाउम्मासि-  
 यमज्जणए भविस्सइ, तं कल्लं तुब्भेणं रायमग्गमोगाढंसि  
 मंडवं जलथलयदसच्चवन्नमल्लं साहरेह जाव सिरिदामगंडं  
 ओलइति । तएणं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवन्नगारसेणिं  
 सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणु-  
 प्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविहपंच-  
 वन्नेहिं तंदुलेहिं णगरं आलिहइ, तस्स बहुमज्झदेसभाए  
 पट्ठए रयेह, रएइत्ता जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से रुप्पी  
 कुणालाहिवई हत्थिक्खंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए  
 महया भडच्चडगरयहयरविंदपरिक्खित्ते अंतैउरपरियालसंप-  
 रिउडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्ठु जेणेव रायमग्गे जेणेव  
 पुप्फमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिक्खंधाओ  
 पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसइ, अणुपवि-  
 सित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तएणं  
 ताओ अंतै उरियाओ सुबाहुदारियं पट्ठयंसि दुरुहेति  
 दुरुहित्ता सेयपीयएहिं कलसेहिं णहाणेंति, णहाणित्ता सव्वा-  
 लंकारविभूसियं करेंति करित्ता पिउणो पायं वंदिउं उव-

गेति, तएणं सुबाहुदारिया जेणेव रुपी राया तेणेव उवा-  
गच्छई उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ, तएणं से रुपी राया  
सुबाहुदारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहुदारियाए  
रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसघरं सदावेइ,  
सदावित्ता एवं वयासी—तुमणं देवाणुप्पिया मम दोच्चेणं  
बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, तं अत्थि ताई  
ते कस्सइरन्नो वा ईसरस्स वा कर्हिच्चि एयारिसए मज्जणए  
दिट्ठपुवे जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए ?  
तएणं से वरिसघरे रुपि करयल० एवं वयासी—एवं खलु  
सामी ! अहं अन्नया तुब्भेणं दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ  
णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए  
मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्झणए दिट्ठे, तस्स णं मज्ज-  
णगस्स इमे सुबाहुदारियाए मज्जणए सहस्सइमंप्पि कलं  
न अग्घेइ, तएणं से रुपी राया वरिसघरस्स अंतिए एय-  
मट्ठं सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजणितहास दूतं  
सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—जाव जेणेव मिहिला नयरी  
तेणेव पहारेत्थए गमणाए ॥ सू० २५ ॥

टीका—अथ तृतीयस्य रुक्मिनाम्नोत्पत्त्य संबन्धं प्रस्तौति—‘ तेणं कालेणं’  
इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणालो नाम जनपदः=देशः, आसीत्,

‘ तेणं कालेणं तेणं समएणं ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तेणं कालेणं तेणं समएणं ) उस काल और उस समय में  
( कुणाल नाम जणवए होत्था ) कुणाल नामका जनपद अर्थात् देश था ।

‘ तेणं कालेणं समएणं ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—( तेणं कालेणं तेणं समएणं ) ते काले अने ते समये ( कुणाल नाम

તત્ર=તસ્મિન્ દેશે સ્વલુ શ્રાવસ્તી નામ નગર્યાસીત । તત્ર=શ્રાવસ્ત્યાં નગર્યાં સ્વલુ  
 'રુપ્પી' રુક્મી=રુક્મિનામા કુણાલાધિપતિઃ=કુણાલદેશાધિપતિર્નામ=પસિદ્ધઃ  
 રાજાઽઽસીત્ । તસ્ય સ્વલુ રુક્મિણો દુહિતા=પુત્રી ધારિણીદેવ્યા આત્મજા=ગર્ભ-  
 સંયુત્પન્ના, સુવાહુર્નામ=સુવાહુનામ્ની દારિકા=કન્યકા આસીત્ । સા સુવાહુદારિકા  
 કીદૃશીત્યાહ- 'સુઝમાલપાણિપાયા' સુકુમારપાણિપાદા=કોમલકરચરણવતી, તથા-  
 રૂપેણ=આકૃત્યા વર્ણેન ચ, યૌવનેન=તારુણ્યેન, લાવણ્યેન ચોત્કૃષ્ટા=ઉત્કર્ષવતી  
 પ્રધાનેત્યર્થઃ, અતएव-ઉત્કૃષ્ટ શરીરા=પરમસુન્દરાઙ્ગી યાવત્ સકલવનિતાગુણસંપન્ના  
 ( તત્તથળં સાવત્થી નામ નગરી હતો ) ઉસ જનપદ-દેશ-મેં શ્રાવસ્તી  
 નામે કી નગરી થી । ( તત્તથળં રુપ્પી કુણાલાહિર્વર્દ નામે રાયા હતો-  
 તત્સળં રુપ્પિસ્સ ધુયા ધારિણીઃ દેવીઃ અસ્યા સુવાહુનામં દારિયા  
 હતો ) ઉસ શ્રાવસ્તી નગરી મેં કુણાલ દેશ કે અધિપતિ જિન કા નામ  
 રુક્મેશી યા રહતે થે । હસ રુક્મી રાજા કી ઇક પુત્રી થી । જિસ કા  
 નામ સુવાહુ થા ।

યહ ધારિણી દેવી કે ગર્ભ સે ઉત્પન્ન હુઈ થી । ( સુકુમાલ૦ રુવેળ  
 ય જોન્વળે નં લાવળેળે ય ઉક્કિદ્ધા, ઉક્કિદ્ધ સરીરા જાયા યાવિ હતો )  
 હસ કે હાથ ઓર ચરણ હી અધિક સુકુમાર થે । યહ રૂપ-આકૃતિ ઓર  
 વર્ણ સે યૌવન સે તથા લાવળ્ય સે સચ મેં સુન્દર માની જાતી થી । હસ  
 કારણ યહ પરમ સુન્દરાઙ્ગી થી ઓર સ્ત્રી સંબંધી સમસ્ત ગુણો સે યુક્ત

જળવં હતો ) કુણાલ નામે જનપદ એટલે કે દેશ હતો. ( તત્તથળં સાવત્થી  
 નામે નગરી હતો ) તે જનપદ-દેશમાં શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી.

(તત્તથળં રુપ્પી કુણાલહિર્વર્દ નામે રાયા હતો તત્સળં રુપ્પિસ્સ ધુયા ધારિ-  
 ણીઃ દેવીઃ અસ્યા સુવાહુ નામે દારિયા હતો)

શ્રાવસ્તી નગરીમાં કુણાલ દેશના અધિપતિરુક્મી રહેતા હતા. રુક્મી  
 રાજા ને એક પુત્રી હતી તેનું નામ સુવાહુ હતું.

ધારિણી દેવીના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો હતો.

( સુકુમાલ૦ રુવેળ ય જોન્વળે નં લાવળેળે ય ઉક્કિદ્ધા, ઉક્કિદ્ધસરીરા જાયા  
 યાવિ હતો )

તેના હાથપગ ખૂબ જ સુંદાર હતા. તે રૂપ, આકૃતિ, યૌવન, તેમજ  
 લાવણ્ય બધામાં સુંદર ગણાતી હતી. તેથી તે ખૂબજ સુંદર અંગોવાળી અને  
 સ્ત્રી સંબંધી બધા શુભેચ્છી યુક્ત હતી.

जाता चाप्यासीत्० । तस्याः खलु सुबाहुदारिकाया अन्यदाकदाचित् चातुर्मासिकं मञ्जनकं=स्नानं=स्नानमहोत्सवश्चाप्यभूत् ततस्तदनन्तरं स रुक्मीकुणालाधिपतिः सुबाहुदारिकायाः=स्वपुत्र्याश्चातुर्मासिकमञ्जनकमुपस्थितं जानाति० । ज्ञात्वा कौटुम्बिकपुरुषान्=आज्ञाकारिणः पुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एव-मवादीत्-हे देवानुमित्राः ! एवं खलु सुबाहुदारिकायाः मम पुत्र्याः कल्ये=प्रभाते द्वितीयदिवसेत्यर्थः चातुर्मासिकमञ्जनकं चातुर्मासिकस्नानमहोत्सवो भविष्यति, तत् तस्मात् कल्ये यूयं खलु राजमार्गमवगाढे=राजमार्गसंनिकृष्टे मण्डपे जलस्थ-लजदशार्धवर्णमाल्यं=जलजं स्थलजं पञ्चवर्णपुष्पसमूहं संहरत=समानयत, यावत्-

थी । ( तीसेणं सुबाहु दारियाए अन्नया चाउम्मासियमञ्जणए जाए यावि होत्था ) एक दिन इस सुबाहु पुत्री के चातुर्मासिक स्नान महोत्सव का समय आया ( तएणं से रुपी कुणालाहिर्वहं सुबाहु दारियाए चाउ-म्मासिय मञ्जणयं उवड्डियं जाणइ ) कुणाल देशाधिपति रुक्मि राजा को अपनी पुत्री सुबाहु दारिका के चातुर्मासिक स्नानोत्सव का जब ध्यान आया-तब ( जणित्ता कौटुम्बिय पुरिसे सहावेइ ) ऐसा जान कर उस ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया- ( सहावित्ता एवं बयासी ) और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-( एवं खलु देवानुमित्रिया ! सुबाहु दारियाए कल्लं चाउम्मासिय मञ्जणए भविस्सइ ) हे देवानुमित्रियों ! कल प्रातः काल सुबाहु दारिका का चातुर्मासिक स्नान होगा । ( तं कल्लं तुव्मेणं रायम गमोगाहंसि मंडवं जलथल दसद्धवन्न मल्लं साहरेइ ) अतः तुम लोग राज मार्ग के समीप मुख्य मंडप में कल प्रातः काल ही जल, स्थल में

(तीसेणं सुबाहुदारियाए अन्नया चाउम्मासिय मञ्जणए जाए यावि होत्था)

એક દિવસે સુબાહુ પુત્રીને આતુર્માસિક સ્નાન મહોત્સવને સમય આવ્યો.

(તएणं से कुणालाहिर्वहं सुबाहु दारियाए चाउम्मासिय मञ्जणयं उवड्डियं जाणइ)

कुणाल देशના राज रुक्मीने તેની પુત્રી સુબાહુને આતુર્માસિક સ્નાન-ત્સવને બ્યારે વિચાર આવ્યો ત્યારે (જણિત્તા કૌટુમ્બિય પુરિસે સહાવેइ) તેણે કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા (સહાવિત્તા एवं बयासी) અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું—

(एवंखलु देवानुमित्रिया ! सुबाहुदारियाए सकल्लं चाउम्मासियमञ्जणए भविस्सइ)

હે દેવાનુમિત્રિયા ! આવતી કાલે સવારે સુબાહુ દારિકાનું આતુર્માસિક સ્નાન થશે.

( તં કલ્લં તુવ્મેણં રાયમગમોગાહંસિ મંડવં જલા થલ દસદ્ધવન્નમલ્લં સાહરેइ )

એથી તમે આવતી કાલે સવારે રાજમાર્ગની પાસેના મુખ્ય મંડપમાં

अत्र यावच्छब्देनेदं द्रष्टव्यम्—एकंच खलु महत् श्रीदामकाण्डमुपनयत, तस्य मण्ड-  
पस्य खलु बहुमध्यदेशभागे एकं महत् श्रीदामकाण्डं यावत् पाटलादि पुष्पसमूह  
सहितं गंधध्राणि मुञ्चत् उल्लोचे अवलम्बयतः इति ततस्ते कौटुम्बिक पुरुषास्तथैव  
मण्डपमध्ये उल्लोचे=चन्द्रातपे श्रीदामकाण्डमवलम्बयन्ति०। ततः खलु स रुक्मी  
कुणालाधिपतिःसुवर्णकारश्रेणि=सुवर्णकारान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाण  
प्रकारेणावादीत्— भो देवानुप्रियाः ! क्षिपमेव=क्षीघ्रमेव, राजमार्गमवगाढे=राज-  
मार्गाऽऽसन्ने पुष्पमण्डपे ननाविधपञ्चवर्णैः=अनेकविधैः पञ्चवर्णरज्जितैस्तण्डुलै  
र्नगरं आलिखत=रचयत स्वस्तिकाद्याकारैश्चित्रयतेत्यर्थः । तस्य लिखितचित्रस्य

उत्पन्नं ह्ये पंच वर्णं के पुष्पों को लाकर उपस्थित करो ।

( जाव सिरिदाम गंडे ओलइति ) तथा एक बड़ा भारी श्री दामकांड-  
बहुत बड़ी लंबी पुष्पमाला—भी लाना । जो पाटल ( गुलाब ) आदि पुष्पों  
से गुंथा हुआ हो और जिस में से नासिका को तृप्ति करने वाली  
सुगंधि निकल रही हो । उस मंडप के ठीक बीचो बीच ऊपर तने हुए  
चंद्रबामें उसे लटका देना । इस तरह राजाकी आज्ञानुसार उन कौटु-  
म्बिक पुरुषों ने सब कार्य कर दिया श्रीदाम कांड को वहां ऊपर चंद्रबा  
में लटका दिया । ( तएणं से रुप्पी कुणालाहिर्वई सुवन्नगारसेणिं सद्दा-  
वेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! रायमग्गमो  
गाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविह पंचवण्णेहिं तंदुलेहिं नगरं आलिहह )  
इस के बाद उस कुणालाधिपति रुक्मी राजा ने सुनारों को बुलाया—  
और बुला कर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो । तुम लोग क्षीघ्र ही

જળ તેમજ સ્થળના પંચવર્ણના પુष्પો લાવો.

( जाव सिरिदामगंडे ओलइति ) तेमज्जे ओक मोटो श्रीदामकांड—भोटो  
पुष्पमाला—पणु साथे लावो. ते श्रीदामकांड गुलाब वगैरे पुष्पोधी गुंथाओले  
तेमज्जे नासिका तृप्त थाय तेवी सुवासवाणो होवो. ओछओ. तेने मंडपनी  
भरेभर वन्ने उपर ताणुवाभां आवेला चंद्रवाभां लटकावन्ने. आ प्रमाहे  
राजानी आज्ञा सांलणीने ते राज पुरुषोओ तेमनी आज्ञा प्रमाहे ज काम पुइं  
करी आण्ठुं. श्रीदामकांडने अधवन्ने चंद्रवाभां लटकाव्ने.

( तएणं से रुप्पी कुणालहिर्वई सुवन्नगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं  
वयासी खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणा-  
विह पंचवण्णेहिं तंदुलेहिं नगरंआलिहह )

त्यारपणी कुणालाधिपतिओ सोनीओने ओलाव्या अने ओलावीने तेओने कछु—

बहुमध्यदेशमार्गे पट्टकं रचयत, रचयित्वा यावत् प्रत्यर्पयन्ति । हे स्वामिन् ! यथा देवेन समादिष्टं तथा सर्वं साधितमस्माभिरित्येवं ते कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु स रुक्मी कुणालाधिपतिर्हस्तिस्कन्धवरगतः=गजस्कन्धोपरि वरासने विराजमानः, 'चाउरंगिणीए' चतुरङ्गिण्या गजाश्वरथपदातिरूपया 'सेणाए' सेनया 'महया भडचडगडपहयरविंदपरिक्खित्ते' महामटचडगरपहयरघृन्दपरिस्मितः महामटानां चडगरः विच्छर्दः समर्दः अन्यजनदुष्प्रवेश्यः तथाविधो यः पहयरः समुदायस्तस्थ घृन्दं=समूहः तेन परिस्मितः=परिवृतः, 'चडगर' इति 'पहयर' इति च देशीयः शब्दः समुहार्थवाचकः । अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतः सुबाहुं=सुबाहु-राजमार्ग के समीप बने हुए पुष्प मंडप में अनेक रंगों से रंगे हुए चावलों से नगर की रचना करो ।

( तस्स बहुमज्झदेसमाए पट्टयं रहेय ) उसने ठीक बीचों बीच में एक पट्टक बनाओ—( रएइत्ता जाव पच्चप्पिणांति ) पट्टक बनाकर उन लोगों ने राजा को इसकी पीछे खबर कर दी—उन्होंने कहा स्वामी ! जैसा कार्य करने के लिये आपने आज्ञा प्रदान की थी—वैसाही सब काम हमने कर दिया है इस प्रकार की राजा को सूचना कर दी—( तएणं से रूपी कुणालाहिर्वई हत्थि खंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भडचडगर पहयरविंदपरिक्खित्ते अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमंडवे तेणेव उवागच्छइ ) इस के बाद वे कुणालाधिपति रुक्मी राजा हाथी पर बैठ कर चतुरंगिणी सेना के साथ २ महामटों के समूह से कि जिस से भीतर और कोई दूसरा

“ हे डेवातुत्रियो ! तमे सत्त्वरे राजभार्गनी पासे अनाववाभां आवेत्ता पुष्प-मंडपभां अनेक रंगशी रंगायेत्ता योभाथी नगरनी रचना करे।

( तस्स बहुमज्झ देसमाए पट्टयं रहेय ) तेनी भरोभर अधवन्ने ओक पट्टक अनावे। ( रएइत्ता जाव पच्चप्पिणांति ) आ प्रभाखे पट्टक अनावीने तेओओ राजने सूचना करी हे हे स्वामी ! ओ प्रभाखे कर्म करवानी तमे अभने आज्ञा आपी हती ते प्रभाखे अधुं ओमे तैयार करी दीधुं छे।

( तएणं से रूपी कुणालाहिर्वई हत्थि खंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भडचडगरपहयरविंदपरिक्खित्ते अहे उरपरियालसंपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गं जेणेव पुप्फमंडवे तेणेव उवागच्छइ )

त्यार पछी ते कुणालाधिपति रुक्मी राज हाथी ऊपर सवार थईने अतुरंगिणी सेनानी साथे साथे ओभां डोधपधुं पेसी शके नहिं तेवा भडा-



નામ્ની દારિકાં=પુત્રી, પુરતઃ અગ્રે કૃત્વા યત્રૈવ રાજમાર્ગો યત્રૈવ પુષ્પમંડપસ્તઙૈ-  
 વોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય હસ્તિસ્કન્ધાત્ પ્રત્યવરોહતિ=પ્રત્યવરતરતિ, પ્રત્યવરુહ  
 પુષ્પમંડપમનુપ્રવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય સિંહાસનવરગતઃ 'પુરત્યામિમુદ્ધે' પૌરસ્ત્યામિ-  
 મુલ્લઃ પૂર્વદિક્મુલ્લઃ, 'સન્નિસન્ને' સંનિષણ્ણઃ=ઉપવિષ્ટઃ । તતસ્તદનન્ 'તાઓ'  
 તાઃ, 'અંતેઊરિયાઓ' અન્તઃ પુરવાસિન્વો વનિતાઃ સુવાહુદારિકાં પદ્મકે 'દુરુહંતિ'  
 દુરોહતિ=આરોહયન્તિ ઉપવેશયન્તીત્યર્થઃ । દુરુહ=આરોહ્ય શ્વેતપીતકૈઃ=રાજતસૌવર્ણૈઃ  
 કલશૈઃ સ્નપયન્તિ, સ્નપયિત્વા સર્વાલંકારવિભૂષિતાં કુર્વન્તિ, કૃત્વા=ભૂષયિત્વા, પિતુઃ  
 પાદૌ વન્દિતુમ્પ્રપન્નયન્તિ તત સ્વલ્લ સુવાહુદારિકા યત્રૈવ રુક્મી રાજા તત્રૈવોપાગ-

મનુષ્ય ઘુસ નહીં સકતા હૈ તથા અન્તઃ પુર સે પરિવૃત્ત હોતે હુપ અપની  
 પુત્રી સુવાહુદારિકા કો આગે કરકે જહાં રાજમાર્ગ કૈ સમીપ પુષ્પમંડપ  
 બનાં હુઆ થા વહાં આયે । ( ઉવાગચ્છિત્તા હત્થિસ્વંધાઓ પચ્ચોરુહહ, પચ્ચોરુહિત્તા  
 પુષ્પમંડવં અણુપવિસહ-અણુવિસિત્તા સીંહાસનવરગણ પુરત્યામિમુદ્ધે સન્નિસન્ને )  
 વહાં આકર વે હાથી કૈ સ્કંધ સે નીચે ઉતરે । ઉતર કર પુષ્પ મંડપ મેં ઉપવિષ્ટ હુપ ।  
 વહાં જાકર વે પૂર્વદિશા કી તરફ મુલ્લ કર કૈ શ્રેષ્ઠ સિંહાસન પર બેઠ ગયે । (તર્ણ તાઓ અન્તે ઊરિયાઓ  
 સુવાહુદારિયં પદ્મ્યંતિ દુરુહંતિ, દુરુહિત્તા સેયપીયપદ્મિ કલસેહિં ણ્હાવેન્તિ,  
 ણ્હાવિત્તા સન્ગાલંકારવિભૂસિયં કરેન્તિ-કરિત્તા પિઞ્ણો પાયં વંદિઙં ઉવ્વેન્તિ )  
 હસ કૈ બાદ ઉન અન્તઃ પુર નિવાસિની સ્ત્રિયોં ને સુવાહુદારિકા કો પાટ પર  
 ચઢાયા-ઔર ચઢા કરકે-બેઠા કર કૈ-ચાંદી ઔર સુવર્ણ કૈ શ્વેત પીલે કલશોં સે  
 હસે સ્નાન કરાયા-સ્નાન કરાને કૈ બાદ

બટોના સમૂહની વચ્ચે તેમજ અન્તઃપુરની સાથે પોતાની પુત્રી સુબાહુ દારિકાને  
 આગળ રાખીને ત્યાં રાજમાર્ગની પાસે પુષ્પમંડપ હોતો ત્યાં ગયા.

( ઉવાગચ્છિત્તા હત્થિસ્વંધાઓ પચ્ચોરુહહ, પચ્ચોરુહિત્તા પુષ્પમંડવં અણુપવિસહ  
 અણુપવિસિત્તા સીંહાસનવરગણ પુરત્યામિમુદ્ધે સન્નિસન્ને )

ત્યાં આવીને તેઓ હાથીના ઉપરથી નીચે ઉતર્યા. ઉતરીને તેઓ પુષ્પ-  
 મંડપની અંદર ગયા. ત્યાં બેઠને તેઓ પૂર્વ દિશા તરફ મોં કરીને એક  
 ઉત્તમ આસન ઉપર બેસી ગયા.

( તર્ણ તાઓ અંતેઊરિયાઓ સુવાહુદારિયં પદ્મ્યંતિ દુરુહંતિ દુરુહિત્તા સે-  
 યપીપદ્મિ કલસેહિં ણ્હાવેન્તિ, ણ્હાવિત્તા સન્ગાલંકારવિભૂસિયં કરેન્તિ કરિત્તા પિઞ્ણો  
 પાયં વંદિઙં ઉવ્વેન્તિ )

ત્યારબાદ રણુવાસની સ્ત્રીઓએ સુબાહુ દારિકાને પદ્મ ઉપર ચઢાવી અને  
 તેના ઉપર બેસાડીને ચાંદી તેમજ સોનાના સફેદ અને પીળા કળશોથી તેને

च्छति, उपागत्य पादग्रहणं करोति । तत् खलु स रुक्मीराजा सुबाहुदारिकामङ्गे-  
उत्सङ्गे निवेशयति, निवेश्य सुबाहुदारिकाया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च  
यावद् विस्मितः=आश्चर्यं प्राप्तः, वर्षधरं=वर्षधरपुरुषं अन्तः पुररक्षकं षण्ठपुरुषं  
शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्=उक्तवान्-  
हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु मम दौत्येन=दूतो भूत्वा वहूनि ग्रामाकरनगरगृहाणि  
अनुपविशसि, तद् तस्माद्ब्रूहि-अस्तित्वापि त्वया कस्यचिद् राज्ञो वा ईश्वरस्य वा  
व्यवहारिणो वा सार्थवाहस्य वा श्रष्टिनो वा कुत्रचिद् ईदृशं मञ्जनकं दृष्टपूर्वं,  
फिर उसे समस्त अलंकारों से विभूषित किया-विभूषित करके फिर वे  
उसे पिता के चरणों की बंदना करने के लिये ले चली ।

(तएणं सुबाहुदारिया जेणेव रूपी राया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-  
च्छित्ता पायगग्रहणं करेइ, तएणं से रूपी राया सुबाहु दारियं अंके  
निवेशेइ, निवेशित्ता सुबाहुदारियाए रूपेण य जो० लाव० जाव विम्हिए  
वरिसधरं सहावेइ ) सुबाहु दारिका भी जहां रुक्मी राजा विराजमान  
थे-वहां आई वहां आकर के उसने पिता के चरणों में नमन किया इस  
के बाद राजाने उस सुबाहुदारिका को उठाकर अपनी गोद में बैठा लिया  
बैठाकर उस सुबाहुदारिका के रूपसे यौवन से और लावण्य से विस्मि-  
त हुए उन राजा ने वर्षधर अतःपुर के रक्षक नपुंसक-कंचुकी को  
बुलाया ( सहावित्ता एवं वयासी-तुमण्णं देवानुप्पिया । मम दोच्चेणं  
बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ

नवडावी, नवडावीने तेने अथा धरेष्ठांओथी शब्बुगारी, शब्बुगारीने तेओ तेने  
पिताना अरब्धाना वंदन भाटे लई गई.

( तएणं सुबाहु दारिया जेणेव रूपीराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
पायगग्रहणं करेइ, तएणं से रूपीराया सुबाहुदारियं अंके निवेशेइ, निवेशित्ता  
सुबाहुदारियाए रूपेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधरं सहावेइ )

सुभाहु दारिका 'षष्ठु जथां रुक्मी राजा भेडा हुता त्यां आवी, आवीने  
तेषु पिताना अरब्धानां वंदन कया'. त्यारणाह राजाओ सुभाहु दारिकाने उडा-  
वीने पीताना भोजाभां भेसाडी दीधी. भेसाडीने सुभाहु दारिकाना इप, यौवन  
अने लावण्यथी विस्मय पाभेला राजाओ वर्षधर रज्जुवासना रक्षक नपुंसक-  
कंचुकीने भेलाओ.

(सहावित्ता एवं वयासी तुमण्णं देवानुप्पिया ! मम दोच्चे णं बहूणि गामाग-  
रनगर गिहाणि अणुपविससि, तं अत्थियां ते कस्सइ रज्जो वा इसरस्स वा किं  
हा ५०

याहिं खलु अस्याः सुबाहुदारिकाया मञ्जनकम् ? । यतस्तदनन्तरं खलु स वर्ष-  
 र्धरः=अन्तःपुररक्षकः पण्डपुरुषः, रुक्मिणं करतलपरिसृहीतं शिर आवर्त दशनखं  
 मंस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे स्वामिन् ! अहम् अन्यदा=अन्य-  
 स्मिन् समये युष्माकं दौत्येन=दूतो भूत्वा मिथिलां राजधानीं प्रतिगतः, तत्र खलु  
 मया कुम्भकस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्याः प्रभावस्था देव्याः प्रभावतीदेव्या आत्म-  
 जायाः=अज्ञातायाः मल्लयाः=मल्लीनाम्न्याः, विदेहराजवरकन्यकायाः यद् मञ्ज-  
 नकं दृष्टं, तस्य खलु मञ्जनकस्य=मल्लीमञ्जनकस्य, इदं सुबाहुदारिकाया मञ्जनकं  
 शतसहस्रतमामपि=लक्षामपि कलां=शोभाया अंशं 'न अगवेइ' नार्हति, न प्राप्नोती-

रन्नो वा इसरस्स वा कहिं चि एयारिसए मञ्जणए दिट्ठपुण्वे जारिसएणं  
 इमीसें सुबाहुदारियाए मञ्जणए ) बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानु-  
 ग्रियं ! तुम हमारे दूत होकर अनेकग्रामों में आकरों में नगरों एवं घरों  
 में जाते रहते हो, तो कहो तुमने पहिले ऐसा स्नपन मंहोत्सव कही किसी  
 राजा का किसी ईश्वर का किसी व्यवहारी का किसी सार्थवाहक अथवा  
 किसी श्रेष्ठी का देखा है जैसा कि इस सुबाहु दारिका का यह हुआ है ।

( तएणं से वरिसधरे रुप्पि करयल० एवं वयासी-एवं खलु सामी  
 अहं अन्नया कयाइं तुम्हेणं दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थणं मए कुम्भकस्स  
 रन्नों धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मञ्जणए  
 दिट्ठे, तस्स णं मञ्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मञ्जणए सयसहस्स-  
 इमंपि कलं न अगवेइ ) ऐसा सुनकर उस वर्ष धरने दोनों हाथों की  
 अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर चढ़ाकर रुक्मी राजा से इस

चि एयारिसए मञ्जणए दिट्ठ पुण्वे जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मञ्जणए

आलावीने तेमण्णे आ प्रभाण्णे कहुं—" हे देवानुग्रिये ! तमे अभाश  
 इतन्ना इपमां धम्म आभा, आकारो, नगरा आने धरोमां अवरो-अवर करता रहे।  
 छ। तो अतावे के तमे पडेवां ओवे सुणाहु दारिका ओवे स्नपन मंहोत्सव कोध  
 रात्त, ईश्वर, कोध व्यवहारी, कोध सार्थवाह अथवा कोध श्रेष्ठीने त्यां ओवे छे ।

( तएणं से वरिसधरे रुप्पि करयल० एवं वयासी-एवं खलु सामी ! अहं  
 अन्नया कयाइं तुम्हेणं दोच्चेणं मिहिलं गए तत्थ णं मए कुम्भकस्स रन्नों धूयाए  
 पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेह रायकन्नगाए मञ्जणए दिट्ठे, तस्स णं  
 मञ्जणगस्स इमे सुबाहुदारियाए मञ्जणए सयसहस्सइमंपि कलं न अगवेइ )

आ प्रभाण्णे सालणीने ते वर्षधरे अने हाथनी अञ्जली बनावीने तेने  
 भस्तके भूमीने रुक्मी राजने कहुं के हे स्वामी ! हुं कोध वणत तभाश इत

સ્મર્યઃ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્પ સ રુક્મી રાજા વર્ષધરસ્ય=વર્ષધર પુરુષસ્યાન્તિકે=સમીપે  
'અયમ્મદં' શ્રુત્વા નિશ્ચમ્ય 'સેસં તહેવ' શ્રેષ્ઠં તથૈવ-શેષવૃત્તાન્તં ચન્દ્રચ્છાયનૃપ-  
ત્ત્વં બોધ્યમિત્યર્થઃ । તથાચાયં સમ્બન્ધઃ-સ રુક્મી-તં વર્ષધરં પ્રત્યેવમવાદીત-  
હે દેવાનુપ્રિય ! કીદૃશી મલ્લી વર્તેતે, તદા વર્ષધર આહ-નો સ્વલ્પ અન્યા કાપિ  
તાદૃશી દેવકન્યા વા યાવત્ યાદૃશી સ્વલ્પ મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા, અત્ર યાત્રચ્છ-  
ન્દેનામુરનાગયક્ષગન્ધર્વાદિ કન્યકાઃ સંગ્રાહાઃ, તતઃ સ્વલ્પ સ રુક્મી વર્ષધરપુરુષં

પ્રકાર કહા-હે સ્વામિન । મੈં કિસી સમય આપકા દૂત હોકર મિથિલા  
નગરી ગયા હુઆથા-વહાં મૈંને કુ'મક રાજા કી પુત્રી કિ જો પ્રભાવતી  
કી કુક્ષિ સે અવતરિત હુઈ હૈ મલ્લી કુમારી કા જો વિદેહ રાજા કી  
પુત્રિયોં મૈં સર્વોત્તમ હૈ જૈસા સ્નાન મહોત્સવ દેખા ઉસકે સમક્ષ યહ  
સુષાહુદારીકા કા મઝ્જનોત્સવ લક્ષાંશ-લાખમેં અંશ કો ભી પ્રાપ્ત નહી  
કર સકતા હૈ । (તપ્તેણં સે રુપી રાયા વરિસધરસ્સ અંતિઅં અયમ્મદં  
સોચ્ચા ણિસમ્મ સેસં તહેવ મઝ્જણગજણિતહાસે દૂતં સદાવેહ, સદા-  
વિત્તા एवं વયાસી જાવ જેણેવ મિથિલા નયરી તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણં)  
હસ કે બાદ રુક્મી રાજાને જબ વર્ષધર ( કંચુકી પુરુષ ) કે  
મુખ સે એસી બાત સુની તો ઉસકા વિચાર કર ઉસને ચન્દ્રચ્છાય રાજા  
કી તરહ અર્થાત્ રાજા ને વર્ષ ધરસે મલ્લી કુમારી કે વિષય મૈં અપની  
જિજ્ઞાસા પ્રકટ કી-પૂછા વહ કેસી હૈ-તબ વર્ષધર ને ઉસ સે કહા-હે  
દેવાનુપ્રિય ! કયા કહેં-જૈસા વહ હૈ એસી તો કોઈ ભી કન્યા નહીં હૈ-ન  
એસી કોઈ દેવ કન્યા હૈ ન કોઈ અસુર કન્યા હૈ, ન કોઈ નાગ કન્યા હૈ,

તરીકે મિથિલા નગરીમાં ગયો હતો. ત્યાં મેં પ્રભાવતીના ગર્ભથી જન્મેલી  
વિદેહ રાજાની બધી પુત્રીઓમાં શ્રેષ્ઠ કુક્ષિ રાજાની પુત્રી મલ્લી કુમારીને  
જેવો સ્નાન મહોત્સવ જોયો. તેની સાથે સુષાહુ દારિકાનો સ્નાન મહોત્સવ  
લક્ષાંશ પણ કહી શકાય તેમ નથી.

(તપ્તેણં સે રુપીરાયા વરિસધરસ્સ અંતિઅં અયમ્મદં સોચ્ચા ણિસમ્મ સેસં તહેવ  
મઝ્જણગજણિતહાસે દૂતં સદાવેહ, સદાવિત્તા एवं વયાસી જાવ જેણેવ મહિલા  
નયરી તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણં )

રુક્મી રાજાએ જ્યારે વર્ષધર ( કંચુકી પુરુષ ) ના સુખેથી આ પ્રમાણે  
વાત સાંભળી ત્યારે તેના વિષે વિચાર કરીને તેણે ચન્દ્રચ્છાય રાજાની જેમ  
એટલે કે રાજાએ વર્ષધરને મલ્લી કુમારીના સંબંધમાં પોતાની ઇચ્છા જણા-  
વતાં કહ્યું કે તે કેવી છે ? ત્યારે જવાબમાં વર્ષધરે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય !  
શું કહું ? જેવી તે કન્યા છે તેવી તો કોઈ પણ નથી. એવી કોઈ નથી દેવકન્યા

સત્કારયતિ, સમ્માનયતિ, સત્કૃત્ય સંમાન્ય પ્રતિવિસર્જયતિ, તતઃ સ્વઠુ સ રુક્મી કુળાધિપતિઃ—મજ્જનજનિતકર્ષઃ = મલ્લીમજ્જનકશુભ્રવણસંજાત તદ્વિષયકા-રાગઃ સન્ દૂતં શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીત—યાવત્ અન્ન યાવત્કરણાદિદં દ્રષ્ટવ્યમ્ । હે દેવાનુપ્રિય ! શીઘ્રમેવ મિથિલાં રાજધાનીં ગત્વા કુમ્ભકં રાજાનં બ્રૂહિ—‘રુક્મી કુળાલદેશાધિપતિસ્તત્ત્વ કન્યકાં મહીં વાઙ્છતિ’ इत्यादि । તતઃ સ્વલ્લુ રુક્મિણ આદેશાનુસારેણ સ દૂતો રયારુદઃ સન્ યત્રેવ મિથિલાનગરી, તત્રૈવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય = ગમન્તું પ્રવૃત્તઃ । इति तृतीयस्य रुक्मिणो राज्ञः सम्बन्धः कथितः ॥ सू० २५॥

ન કોઈ યક્ષ કન્યા હૈ, ન કોઈ ગન્ધર્વ કન્યા હૈ આદિ ૨ ।

એસા વર્ષધર સે સુનકર રુક્મી રાજા ને વર્ષધર કા સત્કાર કિયા સન્માન કિયા । સત્કાર સન્માન કરકે ફિર ઉસે અપને પાસ સે વિસર્જિત કર દિયા । બાદ મેં કુંળાલ દેશાધિપતિ ઉન રુક્મી રાજા ને મહી કુમારી કે મજ્જનોત્સવ તથા ગુણોં કે શ્રવણ સે હર્ષિત ઓર ઉસ કુમારી મેં અનુરક્ત ચિત્ત હો કર દૂત કો બુલાયા-બુલાકર ફિર ઉસસે એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ યહાં સે શીઘ્ર હી મિથિલા રાજધાની કો જાઓ ઓર જાકર કુંભક રાજા સે કહો કિ કુંળાલ દેશાધિપતિ રુક્મી રાજા તુમ્હારી કન્યા મલ્લી કુમારી કો યાહતે હૈ । इत्यादि

इस तरह अपने स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर वह दूत रथ पर सवार हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस ओर प्रस्थित हो गया । यह तृतीय राजा रुक्मी का संबंध कहा गया है । सूत्र “ २५ ”

કે નથી અસુર કન્યા કે નથી યક્ષાકન્યા કે નથી ગન્ધર્વ કન્યા, વગેરે.

આ રીતે વર્ષધરની વાત સાંભળીને રુક્મી રાજાએ વર્ષધરને સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું. સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમને પોતાની પાસેથી વિદાય કર્યા. ત્યારપછી કુંભાલ દેશાધિપતિ રુક્મી રાજાએ મલ્લી કુમારીના મજ્જનોત્સવ તેમજ શુભેના શ્રવણથી હર્ષિત તથા તે કુમારીમાં અનુરક્ત ચિત્ત વાળા થઈને દૂતને બોલાવ્યો. દૂતને બોલાવીને તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અહીંથી સત્વરે મિથિલા રાજધાનીમાં જાઓ અને જઈને કુંભક રાજાને કહો કે કુંભાલ દેશાધિપતિ રુક્મી રાજા તમારી કન્યા મલ્લી કુમારીને યાહે છે વગેરે.

આ પ્રમાણે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞા મેળવીને દૂત રથ ઉપર સવાર થઈને મિથિલા નગરી તરફ રવાના થયો. આ રીતે તૃતીય રાજા રુક્મીનો સંબંધ કહેવામાં આવ્યો છે. ॥ સૂત્ર ॥ ૨૫ ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं कासी नाम जणवए होत्था  
तत्थ णं वाणारसी नाम नयरी होत्था, तत्थ णं संखे नासं  
कासी राया होत्था, तएणं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए  
अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघ-  
डिए यावि होत्था, तएणं से कुंभए राया सुवन्नगारसेणिं स-  
द्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमस्स  
दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह, तएणं सा सुवन्नगा-  
रसेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ २, पडिसुणित्ता तं दिव्वं  
कुंडलजुयलं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेइ,  
णिवेसित्ता बहूहिं आपहिं य जाव परिणामेमाणा इच्छइ, तस्स  
दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं घडित्तए, नो चेवणं संचाएइ  
संघडित्तए, तएणं सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० वद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं  
खल्लु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावित्ता जाव संधिं संघाडेत्ता  
एयमाणं पच्चप्पिणह, तएणं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गिण्हामो  
जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो संचाएमो संघाडित्तए,  
तएणं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुंडलस्स अन्नं सरिसयं  
कुंडलजुयलं घडेमो, तएणं से कुंभए राजा तीसे सुवन्नगारसेणीए  
अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आपुरुत्ते तिवलियभिउडी नि-  
डाले साहट्ठु एवं वयासी—से केणं तुब्भे कलायाणं भवह ?  
जे णं तुब्भे इमस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएह संधिं संघा-

डेत्तए ? सुवन्नगारे निव्विसए आणावेइ, तएणं ते सुवन्नगारा  
 कुंभेणं रण्णा निव्विसया आणत्तासमाणा जेणेव साइंर गिहाइं  
 तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडामत्तोवगरणमायाए  
 मिहिलाए रायहाणीए मज्झं मज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता  
 विदेहस्स जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव  
 वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जा-  
 णंसि सगढीसागढं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गि-  
 षहंति, गिण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव  
 कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० जाव  
 एवं वयासी-अम्हेणं सामी ! मिहिलाओ नयरीओ कुंभएणं  
 रन्ना निव्विसया आणत्तासमाणा इह हव्वमागया तं इच्छामो  
 णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा  
 सुहंसुहेणं परिवसितुं । तएणं संखे कासीराया तं सुवन्नगारे एवं  
 वयासी-किन्नं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुंभएणं रन्ना निव्विसया  
 आणत्ता ? तएणं ते सुवन्नगारा संखं एवं वयासी-एवं खलु  
 सामी ! कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए  
 मल्लीए कुंडलजुयलस्स संघीं विसंघडिए, तएणं से कुंभए  
 सुवन्नगारसेणिं सदावेइ, सदावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता,  
 तं एएणं कारणेणं सामी ! अम्हे कुंभएणं निव्विसया आणत्ता,  
 तएणं से संखे सुवन्नगारे एवं वयासी-केरिसिया णं देवाणु-  
 प्पिया ! कुंभगस्सधूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेह

रायवरकन्ना ?, तएणं ते सुवन्नगारा संखरायं एवं वयासी-  
णो खल्लु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव-  
कन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तएणं  
से संखे कुंडलजुयलजणितहासे दूयं सदावेइ, जाव तहेव  
पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २६॥

टीका—अथ चतुर्थस्य शङ्खनामो नृपस्य सम्बन्धमस्तावमाह—‘तेणं  
कालेणं’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये काशीनाम जनपद आसीत्,  
तत्र खल्लु शङ्खो नाम काशीराज आसीत् । ततस्तदनन्तरं खल्लु तस्या मल्लया  
विदेहराजवरकन्याया, अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, तस्य  
दिव्यस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि=सन्धानं योजनं, ‘विसंघडिए’ विसंघटितः=  
भुटितश्चाप्यभवत्, ततस्तदा खल्लु स कुम्भको राजा सुवर्णकारभ्रेणि शब्दयति,

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय  
में (काशी नाम जनपद होत्था) काशी नाम का देश था (तत्थणं बांणो-  
रसी नगरी होत्था) उसमें बनारसी नाम की नगरी थी (तत्थणं संखे  
नामं काशी राया होत्था) उसमें काशी देशाधिपति शंख नाम का राजा  
रहता था (तएणं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइं  
तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संघी विसंघडिए यावि होत्था) एक  
समय की बात है कि उस विदेह राज वर कन्या मल्ली कुमारी के उन  
दिव्य कुंडलों की संघी टूट गई—उन का जोड़ खुल गया ।

(तएणं से कुंभए राया सुवन्नगार सेणि सदावेइ सदावित्ता एव)

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ ते वण्ठे (काशी नाम जनपद  
होत्था) काशी नामे देश हते। (तत्थणं वाराणसी नगरी होत्था) तेभां अना-  
रस नामे नगरी हती (तत्थणं संखे नामं काशीराया होत्था) तेभां काशी  
देशना अधिपति शंख नामे राजा रहते। हते।

(तएणं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुं-  
डलजुयलस्स संघी विसंघडिए यावि होत्था)

ओके वण्ठनी बात छे के विदेहराजवर कन्या मल्ली कुमारीना दिव्य  
कुंडलाने संधिने भाग टूटी गये।



શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-હે દેવાણુપ્રિયા! અસ્ય દિવ્યસ્ય કુન્ડલયુગલસ્ય સન્ધિ  
 'સંધાહેઠ' સંઘટયત સન્ધાને સંયોજનં કુરુત તતસ્તદા સ્વહ સા સુવર્ણકારશ્રેણિઃ  
 એતમ્=કુન્ડલસંધાનકરણરૂપમ્ અર્થે=કાર્યે તથાઽસ્મિન્નિતિ કથયિત્વા પ્રતિશૃણોતિ=  
 સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય તદ્ દિવ્યં કુન્ડલયુગલં ગૃહ્ણાતિ, ગૃહીત્વા યત્રૈવ  
 'સુવન્નગાર મિસિયાઓ' સુવર્ણકારમિસિયાઃ સુવર્ણકારાણાં વૃષ્ટિકાઃ=આસનાનિ  
 -ઉપવેશનસ્થાનાનિ તત્રૈવોપગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સુવર્ણકારમિસિયાસુ-સુવર્ણકારો-  
 પવેશનસ્થાનેષુ નિવિશતિ=ઉપવિશતિ નિવિશ્ય=ઉપવિશ્ય, વહુભિઃ = અનેકવિધેઃ  
 ઔપૈઃ=સાધનૈઃ યાવત્-અત્ર યાવત્કરણાત્-ઉપાયૈઃ=પ્રયોગૈઃ, સ્થિતિભિઃ=વ્યવસ્થા-  
 મિરિતિ બોધ્યમ્ । પરિણમયન્તિ=પૂર્વસ્વરૂપં સમ્પાદયન્તિ સા સુવર્ણકારશ્રેણિ-  
 સ્તસ્ય દિવ્યસ્ય કુન્ડલયુગલસ્ય સન્ધિ ઘટયિતુમિચ્છતીતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ ।

વયાસી તુભ્યેનં દેવાણુપ્પિયા ! ઇમસ્સ દિવ્વસ્સ કુંડલજુયલસસ સંધિ  
 સંધાહેઠ ) તવ કુંભક રાજા ને સુવર્ણકારોં કો બુલાયાઔર બુલાકર વન  
 સે પેસા કહા-હે દેવાણુપ્રિયોં ! તુમ લોગ ઇમ દિવ્ય કુંડલ યુગલ કી  
 સંધિ કો જોડુ દો ( તણં સા સુવન્નગારસેણી એમહં તહત્તિ પઢિ  
 સુણેઠ ૨, પઢિ સુણિત્તા તં દિવ્વં કુંડલજુયલં ગિણ્હઠ, ગિણિહત્તા જેણેવ  
 સુવન્નગારમિસિયાઓ તેણેવ ઉવાગચ્છઠ, ઉવાગચ્છિત્તા સુવન્નગાર  
 મિસિયાસુ ણિવેસઠ, ણિવેસિત્તા વહુહિં આપહિં ય જાવ પરિણામે માણા  
 ઇચ્છઠ તસસ દિવ્વસ્સ કુંડલ જુયલસસ સંધિત્તપ ) ડસ સુવર્ણકાર શ્રેણી  
 ને કુંડલોં કી સંધિ કો જોડુ ને રૂપ અર્થ કો " તથાસ્તુ કહકર સ્વીકાર  
 કર લિયા-ઔર વે દોનોં દિવ્ય કુંડલ રાજા કે પાસ સે લે લિયે । લેકર  
 ફિર વે સવ જહાં સુવર્ણકારોં કે બેઠ ને કે સ્થાન થે વહાં ચલે આવે ।

( તણં સે કુંભ રાયા સુવન્નગારસેણિં સદાવેઠ સદાવિત્તા એવં વયાસી તુ-  
 ભ્યેનં દેવાણુપ્પિયા ! ઇમસ્સ દિવ્વસ્સ કુંડલજુયલસસ સંધિ સંધાહેઠ )

ત્યારે કુંભક રાજાએ સોનીઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું  
 કે હે દેવાણુપ્રિયે ! તમે આ દિવ્ય કુંડળો નો સંધિ ભાગ ભેડી આપો.

( તણં સા સુવન્નગાર સેણી એમહં તહત્તિ પઢિસુણેઠ ૨ પઢિસુણિત્તા તં  
 દિવ્વં કુંડલજુયલં ગિણ્હઠ, ગિણિહત્તા જેણેવ સુવન્નગારમિસિયાઓ તેણેવ ઉવાગ-  
 ચ્છઠ, ઉવાગચ્છિત્તા સુવન્નગારમિસિયાસુ ણિવેસઠ, ણિવેસિત્તા વહુહિં આપહિં ય  
 જાવ પરિણામેમાણા ઇચ્છઠ તસસ દિવ્વસ્સ કુંડલજુયલસસ સંધિત્તપ )

તે સોનીઓએ તથાસ્તુ કહીને કુંડળો નો તુરંત ભાગને ભેડવાની  
 આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી. અને અને દિવ્ય કુંડળો રાજાની પાસેથી તેઓ એ  
 લઈ લીધાં. લીધા પછી તેઓ બધા બધાં સોનીઓને બેસવાનાં સ્થાન હતાં

नो चैव खलु शक्नोति संघटयितुम् तैः सुवर्णकारैस्तस्य त्रुटितस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि संघटयितुमनेकोपायाः कृताः, परंतु कुण्डल सन्वेर्यथोचित योजनाऽभावात्ते विफलप्रयत्ना अभूवन्निति भावः । ततस्तदनन्तरं खलु सा सुवर्णकारश्रेणिर्यत्रैव कुम्भकः—मिथिलाराजः तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिशृहीतं शिर आवृतं दशनखं मस्तकेऽङ्गलिं कृत्वा=करद्वयं संयोज्य 'वद्धावेत्ता' वर्धयित्वा—'जयजये' ति शब्देनाभिनन्द्य, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे स्वामिन् । एवं खलु अद्य यूयमस्मान् शब्दयय, शब्दयित्वा यावत्=मवद्भिरेवं वक्ष्यमाङ्गताः—'अस्य कु-

आकर उन स्थानों में बैठ गये—बैठकर उन लोगों ने अनेक साधनों से, अनेक उपायों से अनेक व्यवस्थाओं से उस दिव्य कुंडल के युगल की संधि को जोड़ने की इच्छा की, परन्तु ( नो चैवर्ण संचाएह संघडिचए, तएणं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंमए तेणेव उवागच्छइ ) वे उस संधी को यथोचित रूप से जोड़ने में समर्थ नहीं हो सके—अतः उन का समस्त प्रयत्न विफल हुआ—। इस तरह विफल प्रयत्न वाले हुए वे लोग जहां मिथिलाधिपति कुंभक राजा थे—वहां गये उवागच्छिता करयल० वद्धावेत्ता एवं वयासी ) वहां जाकर उस सुवर्णकार श्रेणी ने दोनों हाथों को जोड़कर राजाको बधाई दी—जय हो विजय हो इस तरह उसका अभिनंदन किया—बाद में इस प्रकार कहा—( एवं खलु सामी ! अज्ज तुम्हे अस्हे सदावेह, सदाविता जाव संघि संघाडेत्ता एयमाणं पच्चप्पिणह ) स्वामिन् । आपने आज हमलोगों को बुलाया था और

त्यां आग्या, त्यां तेओ भेडा अने भेसाने ते दोहाओ जात जातनां साधनो, उपायो तेभअ अनेक जातनी व्यवस्थाओथी अने कुंडणोना तूटेवा भागने सांधवाना प्रयत्नो कथा पद्य

( नो चैव णं संचाएह संघडिचए, तएणं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंमए तेणेव उवागच्छइ )

तेओ कुंडणोना तूटेवा संधिभागने सांधवामां समर्थ थय शक्या नहि अने तेओना भधा प्रयत्नो निष्फल भन्ना आ प्रभाओ निष्फल प्रयत्न वाणा तेओ भधा त्यां मिथिलाधिपति कुंभक राजा डेटा त्यां गथा ( उवागच्छिता करयल० वद्धावेत्ता एवं वयासी ) त्या अर्थने ते सोनीओओ अने हाथ जोडी ने राजाके जयथाओ जयथाओ आ प्रभाओ ना शब्दोथी अलि-नहित कथा अने त्यार पछी डडेवा लाज्या—

एवं खलु सामी ! अज्ज तुम्हे अस्हे सदावेह सदाविता जाव संघि संघाडेत्ता एयमाणं पच्चप्पिणह )

કુંડલયુગલસ્ય સન્ધિ સંઘટયત, સન્ધિ સંઘટચ=ત્રુટિતં સન્ધિ યોજિત્વા-પ્રતામાજ્ઞાં  
=મમાજ્ઞસિં પ્રત્યર્પયત ' ઇતિ, તતઃ સ્વલુ ક્યં તદ્ દિવ્યં કુંડલયુગલં શૃલીમઃ,  
યત્રૈવ સુવર્ણકારટ્ટર્ષિકાઃ, યાવત્-તત્રૈવોપાગચ્છામઃ ઉપાગત્ય તત્રોપવિશ્ય વયં કુંડલ  
યુગલસ્ય સંધિ સંઘટયિતું પ્રયત્નં કૃતવન્તઃ પરંતુ નો શક્તુમઃ સંઘટયિતું સંયોજયિ-  
તું, તતઃ તસ્માત્ કારણાત્ સ્વલુ હૈ સ્વામિન્ ! પતરય દિવ્યસ્ય કુંડલસ્યાન્યત્  
સંદેશં કુંડલયુગલં ઘટયામઃ=રચયામઃ, તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ સ કુમ્ભકો રાજા તસ્યાઃ  
સુવર્ણકારશ્રેણ્યાઃ સુવર્ણકારસમૂહસ્ય અન્તિકે=સમીપે, એતમર્થઃ=કુંડલસન્ધિસંઘટન

બુલાકર એસા કહા થા કિ તુમ લોગ હસ દિવ્ય કુંડલ યુગલ કી સંધિ  
કો કિ જો ટૂટ ગઈ હૈ-સ્વલુ ગઈ હૈ-ઠીક કર દો-જોડ દો-ઔર જોડકર  
હમોરી હસ આજ્ઞસિ કો પૂર્ણ કર હસ કી હમૈ જ્વહર દો ( તણ અમ્હે  
તં દિવ્યં કુંડલયુગલં ગિણ્હામો-જેજેવ સુવન્નાગારભિસિયાઓ જાવ  
નો સંચાપમો સંઘડિત્તણ તણ અમ્હે સામી ! એયસ્સ દિવ્વસ્સ કુંડલસ્સ  
અન્નં સરિસયં કુંડલયુગલં ઘટેમો ) હમને ડસ દિવ્ય કુંડલ યુગલ  
કો લે લિયા થા-ઔર લેકર હમ લોગ જહાં સુવર્ણ કારોં કે બેઠ ને કા  
સ્થાન થા-વહાં ચલે ગયે થે-વહાં બેઠકર હમ લોગોં ને અનેક સાધનોં  
દ્વારાં, અનેક ઉપાયોં દ્વારા ઔર અનેક વ્યવસ્થાઓં દ્વારા હમ કુંડલ  
યુગલ કી સંધિ કો જોડનેકા પ્રયત્ન કિયા-પરન્તુ યયોચિત રુપસે જોડને  
મેં હમ લોગ સફલ પ્રયત્ન નહી હો સકે હૈ-અતઃ હૈ સ્વામિન્ ! આપકી  
આજ્ઞા હો તો હમ હસ દિવ્ય કુંડલકે સ્માન ઔર દૂસરા કુંડલ યુગલ  
બના દેતે હૈ-(તણ સે કુંભણ રાયાનીસે સુવન્નગારસેનીણ અંતિણ એયમંદં

હે સ્વામિન્ તમે આજે અમને બોલાવ્યા હતા અને બોલાવીને કહ્યું  
હતું કે તમે લોકો આ દિવ્ય કુંડળોને સધિ ભાગ તરી ગયો છે તેને સાધે  
કરી આપો, સાંધી આપો અને સાંધીને અમને ખબર આપો.

( તણ અમ્હે તં દિવ્યં કુંડલ યુગલં ગિણ્હામો જેજેવ સુવન્નાગારભિસિયા  
ઓ જાવ નો સંચાપમો સંઘડિત્તણ તણ અમ્હે સામી ! એયસ્સ દિવ્વસ્સ કુંડલસ્સ  
અન્નં સરિસયં કુંડલયુગલં ઘટેમો )

અમે તે કુંડળની જોડને લીધી અને લઇને જ્યાં સોનીઓને બેવસાની  
જગ્યાઓ છે ત્યાં ગયા. ત્યાં બેસીને અમે લોકોએ ઘણાં સાધનો ઉગયોને ઘણી  
વ્યવસ્થાઓ વડે આ જાને કુંડળોના તુટેલા ભાગને સાંધવાના પ્રયત્નો કર્યો, પણ  
તેઓને યોગ્ય રીતે સાંધવામાં અમે લોકો સફળ થયા નથી, એથી હે સ્વામી !  
આપની આજ્ઞા હોય તો આ દિવ્ય કુંડળોનેવાજ બીજા કુંડળો ઘડી આપીએ.

योग्यताराहित्यरूपं श्रुत्वा=शब्दतः कर्णगोचरीकृत्य, निश्चय्य=अर्थतोऽवगम्य, 'आसुरुते' आशुरुतः=झटितिक्रोधाविष्टः, 'तिवलियं' त्रिवलिकां=रेखात्रयाभिन्वयति कारिकां, 'भिउडी' भ्रुकुटिं वक्रोभूतभ्रुवं, ललाटे=माछे संहृत्य=आवृण्य-एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-अथ खलु यूयं 'कलायाणं' कलादानां-कलामाददत इति कलादाः स्वर्णकारास्तेषां के भवथ ? न कोऽपीत्यर्थः ये खलु यूयमस्य कुण्डलगुगलस्य नो शक्नुथ सन्धिं संघटयितुम् । ये खलु सुवर्णकारास्ते कलामात्रं सुवर्णमादाय तद् वितत्य राजादीनां मनोहरं कनकमयमाभूषणादिकं रचयन्ति यूयं तु झुटितस्य सुवर्णसन्धेः संयोजनेऽप्यसमर्थाः स्य तर्हि कलादाकुलोद्भवा यूयमिति कथं-  
सोच्चा णिसम्म आसुरुते तिवलियं भिउडी निडाळे साहट्टु एवं वयासी)

इस प्रकार उस सुवर्णकार भ्रेणी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे विचार कर वह कुंभक राजा उस पर झटिति क्रोध से लाल पीली आंखों वाला हो गया-और भ्रुकुटि को मस्तक पर चढाकर इस प्रकार बोला ( से केणं तुम्हे कलायाणं भवह ? जेणं तुम्हे इमस्स कुंडल जुयलस्स नो संचाएह संधिं संघाट्टेत्तए ? ) जब तुम लोग इस कुंडल गुगल की संधि को ही नहीं जोड़ सकते हो तो फिर तुम सुवर्णकार कैसे ? जो सुवर्णकार होते हैं वे तो कलामात्र (योढा) भी सोनेका पसार कर ऐसे २ आभूषण उसके बना देते हैं जो राजादिकोंके मनको भी हरण कर लेते हैं ।

तुम लोग तो दूटे हुए सुवर्ण की संधि को भी जोड़ने में अक्षम बन रहे हो तो फिर कैसे हम तुम्हें सुवर्णकारों के कुलों में उत्पन्न हुआ

तएणं से कुंभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णि-  
सम्म आसुरुते तिवलियं भिउडी, निडाळे साहट्ठं एवं वयासी )

आ रीते सोनीओना भुजेथी आ वात सांक्षणीने अने ते विषे भरेओअर विचारने कुंभक राजा तेओना ऊपर भुजए कोधथी दाव पीणा अथ गथा अने बभभरे। छड़ी अक्षवीने आ प्रभाखे कडेवा दाग्या-

( सेकेणं तुम्हे कलायाणं भवइ ? जेणं तुम्हे इमस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएह संधिं संघाट्टेत्तए ? )

तमे आ अने कुंडलोना टूटेवा संधिआने अ संधी शकवाभां अस-  
मर्थ छे त्यारे तमे सुवर्णकार कथं रीते छे । तेओ सुवर्णकार होय छे तेओ तो कला मात्र पणु सोनुं होय तेने इवावीने ओवां ओवां धरेणुंओ तैयार करी आयि छे डे जनाथी राजओना मन पणु प्रसन अथ नय छे.

तमे होडे। न्यारे टूटेवा सोनाने संधि पणु नेडी शकता नथी त्यारे अमे तमने सुवर्ण करीना कुणवां जन्मेवा कथा आधारि मानी छे ? ( सुव-

મન્યે, इति भावः । ततः स कुम्भको राजा किं कृतवान् ? इत्याह— ' ते ' इत्यादि, तान् सुवर्णकारान् ' निर्व्विसप्त ' निर्व्विषयान् स्वदेशतो निष्क्रान्तान् आज्ञापयति ' मम राज्याद्वह्निर्गच्छथ ' इत्याज्ञां ददाति स्मेत्यर्थः ।

ततः खलु ते सुवर्णकाराः कुम्भेन=कुम्भकेन राज्ञा निर्व्विषयाः स्वदेशतो निर्ग-  
તામવિતુમ્ આજ્ઞાપ્તાઃ સન્તઃ યત્રૈવ સ્વાનિ સ્વાનિ ગૃહાણિ, તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ,  
ઉપાગત્ય ' સમંઢમત્તોવગરણમાયાપ ' સમાખ્દામત્તોપકળમાદાય સ્ત્રકીયમાખ્દમાજ-  
નાદ્યુપકરણં ગૃહીત્વા શકટસમૂહેડવસ્યાપ્ય મિથિલાયા રાજધાન્યા મધ્યમધ્યેન  
નિષ્ક્રામન્તિ=નિર્ગચ્છન્તિ, નિષ્ક્રમ્ય વિદેહસ્ય જનપદસ્ય મધ્યમધ્યેન મધ્યે યૂત્વા,  
યત્ર કાશીર્જનપદઃ, યત્રૈવ વારાણસી તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય ' અગુજ્જાણસિ'

માને । ( સુવર્ણગારે નિર્વિસપ આળવેહ ) હસ તરફ કહ કર ઉસ કુંભક  
રાજા ને ઉન સુવર્ણકારોં કો અપને દેશ સે બહિર નિકલ જાને કી-આજ્ઞા  
દે દી । ( તર્ણ સે સુવર્ણગારા કુંભેર્ણ રજ્ઞા નિર્વિસયા આળતા સમા-  
ળા જેળેવ સાઈ ૨ ગિહાઈં તેળેવ ઉવાગચ્છન્તિ, ઉવાગચ્છિત્તા સમંઢામ-  
ત્તોવગરણમાળાપ મિહિલાપ રાયહાળીપ મજ્ઞં મજ્ઞેર્ણ નિક્લમંતિ )  
હસકે વાદ બે સુવર્ણકાર કુંભક રાજા સે અપને દેશ સે બહિર નિકલ  
જાને કે લિયે આજ્ઞસ હોકર જહાં અપને ૨ ઘર થે વહાં આયે । વહાં આકર  
ઉન્હોં ને અપને ૨ માંઢ માજન આદિ ઉપકરણોં કો ગાડિયોં મેં ભરા  
ઔર ભરાકર મિથિલા રાજધાની કે વીર્ષોં વીચ સે હોકર નિકલે ।  
( નિક્લમિત્તા વિદેહસસ જળવયસસ મજ્ઞં મજ્ઞેર્ણ જેળેવ કાસી જળવપ  
જેળેવ વાળારસી નયરી તેળેવ ઉવાગચ્છન્તિ ) ઔર નિકલ વિદેહ જનપદ  
કે ખીતર સે હોકર જહાં કાશી દેશ ઔર વનારસી નગરી થી વહાં આયે ।

જાગારે નિર્વિસપ આળવેહ ) આ પ્રમાણે કહીને કુંભરાજાએ તે સુવર્ણકારોને  
પોતાના દેશની બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી.

તર્ણ સે સુવર્ણગારા કુંભેર્ણ રજ્ઞા નિર્વિસયા આળતા સમાળા જેળેવ સાઈ  
૨ ગિહાઈં તેળેવ ઉવાગચ્છન્તિ, ઉવાગચ્છિત્તા સમંઢામત્તોવગરણમાયાપ મિહિલાપ  
રાયહાળીપ મજ્ઞં મજ્ઞેર્ણ નિક્લમંતિ )

આર પછી તે સોનીઓ કુંભક રાજાની પાસેથી પોતાના દેશમાંથી બહાર  
નીકળી જવાની આજ્ઞા સાંભળીને જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં  
આવીને તેઓ એ પોતાના વાસણ વગેરે સામાનને ગાડીઓમાં ભરી. અને  
ભરીને મિથિલા રાજધાનીના રાજમંચે થઈને નીકળ્યા.

( નિક્લમિત્તા વિદેહસસ જળવયસસ મજ્ઞં મજ્ઞેર્ણ જેળેવ કાસી જળવપ  
જેળેવ વાળારસી નયરી તેળેવ ઉવાગચ્છન્તિ )

અને નીકળીને વિદેહ જન પદની વચ્ચે થઈ ને જ્યાં કાશીદેશ અને  
બનારસી નગરી હતી ત્યાં ગયા.

अभोधाने=प्रधानोधाने, सगडीसागडं' शकटीशाकटं=लघुशकटवृहच्छकटानां समूहं 'मोएति' मोचयन्ति शकटेभ्यो बलीवदान् पृथक् कुर्वन्ति मोचयित्वा महार्थं=महामयोजनकं यावत्-महार्थं=महामूल्यकं महार्हं=महतां राजादीनां योग्यं, माभूतम्=उपहारं गृह्णन्ति, गृहीत्वा वाराणस्या नगर्यां मध्यमध्येन=वाराणस्या नगर्यामध्ये भूत्वा यत्रैव शङ्खः शङ्खनायां काशिराजस्तत्रैवोपागच्छन्ति० । उपागत्य करतलं यावत् मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे स्वामिन् । एवं वयं खलु मिथिलाया नगर्याः कुम्भकेन राज्ञा निर्विषयाः=स्वदेश निर्गता भवितुमाश्रिताः सन्त इह 'हृवमागया' हृव्यमागताः शीघ्रमागताः,

(उवागच्छिता अगुञ्जाणंसि सगडी सागडं मोएति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गिण्हति, गिणिहत्ता वाणारसीए नयरीए मज्झंमज्झेण जेणेव संखे कासी राया तेणेव उवागच्छति) वहां आकर उन्होंने अपनी २ गाड़ी और गाड़ों को वहां के बगीचे में ठहरा दिया-और ठहरा कर फिर ये सब महार्थसाधक-कीमती तथा राजादिकों के योग्य भेंट को लेकर वानारसी नगरी के बीच से होकर जहां काशी राज शांख राजा थे वहां आये । (उवागच्छिता करतलं जाव एवं वयासी-अम्हेण सामी ! मिहिलाओ-नयरीओ कुंभएण रत्ता निव्विसया आणत्ता समाणा इहं हृवमागया) वहां आकर उन्होंने दोनों हाथों को जोड़ कर और उनकी अंजलि को माथेपर रखकर राजा को नमस्कार किया, बाद में इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् । हमलोगों को कुंभक राजा ने

उवागच्छिता अगुञ्जाणंसि सगडी सागडं मोएति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गिण्हति, गिणिहत्ता वाणारसीए नयरीए मज्झं मज्झेण जेणेव संखे कासी राया तेणेव उवागच्छति )

त्यां आवीने तेज्जो ओ पोत पोतानी गाडीज्जो तेमज्ज गाडांज्जोने. त्यांना भास उद्यानभां शैक्यां अने शैकीने तेज्जो पन्था मद्धार्थं साधक भट्टंज कीमती तेमज्ज राजा वगैरे ने योग्य जेवी खेट लघने पनारसी नगरिनी ठीक पन्थे धरने ज्यां काशीराज शंभराज हता त्यां गया.

उवागच्छिता करतलं जाव एवं वयासी अम्हेणसामी ! मिहिलाओ नयरीओ कुंभएण रत्ता निव्विसया आणत्ता समाणा इहं-हृवमागया )

त्यां जधने तेमखे पने हाथे जोडीने अज्जली मस्तके भूमीने राजने वंदन कथां अने तेज्जो कडेवा दाज्यां-डे स्वामिन् । कुंलक राजजे अभने दोडेने मिथिलानगरीथी पढार जता रडेवाणी आत्ता आपी छे मिथिलानगरीनी पढार कडा-



पुत्र्याः=प्रभावतीदेव्या आत्मजायाः=अङ्गजातायाः, मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकायाः, कुण्डलयुगलस्य सन्धिविसंघटितः=वृद्धितः । ततः खलु स कुम्भकः सुवर्णकार श्रेणिम्=अस्मानित्यर्थः शब्दयति, शब्दयित्वा यावत्-अत्रयावच्छब्देनेदं द्रष्टव्यम्-तेनैवं वयमाह्वसाः-अस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धि संघटयत सन्धि संघटय=वृद्धितं सन्धिं योजयित्वा, एतामाह्वा=ममाह्वसि, प्रत्यर्पयत " इति ततः खलु वयं तद् दिव्यं कुण्डलयुगलं गृहीत्वा निजोपवेशनस्थानमागत्य तत्रोपविश्य नानाविधैरुपायैः पूर्व-स्वरूपं सम्पादयन्तस्तस्य कुण्डलयुगलस्य सन्धिं संघटयितुं प्रयासं कृतवन्तः, परन्तु नो शक्नुमः संघटयितुम्, ततः खलु कुम्भकस्य राज्ञः पुरोगत्वाऽस्माभिरेवमावेदि-

धूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुण्डलयुगलस्य संधी विसंघटिए-तएणं से कुंभए सुवन्नगरसेणिं सहावेइ, सहाविस्ता जाव निव्विसंघा आणत्ता ) हे स्वामीन् ! कुंभक राजा की पुत्री कि जो प्रभावती की कुक्षि से उत्पन्न हुई है और जिसका नाम मल्ली कुमारी है-के दो कुंडलों की संधी विघटित हो गई थी-सो कुंभक राजाने हमसब सुवर्ण कारों को बुलाया था-और ऐसा कहा था कि तुम लोग इन की संधी को जोड़ कर ले आओ-हमलोगों ने उनकी आज्ञानुसार उन दोनों कुंडलों को लेलिया और लेकर हमलोग अपने २ बैठने के स्थान पर बंहे आए-वहां बैठकर हमलोगों ने नाना प्रकार के उपायों से उन कुंडलों को पूर्वावस्थ धनाने के लिये वृद्धित संधी को जोड़ने का बहुत प्रयास किया परन्तु यथावत् हमलोग उसे संघटित नहीं कर सके अतः हमलोग उनके समीप पहुँचे-और वहां जाकर उनसे प्रार्थना की कि

(एवं खलु सामी ! कुंभगरस्स रन्तो धूयाए पभावइए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुण्डलयुगलस्य संधी विसंघटिए तएणं से कुंभए सुवन्नगरसेणिं सहावेइ, सहाविंत्ता जाव निव्विसंघा आणत्ता )

हे स्वामीन् ! प्रभावती राज्ञीना गलथी जन्म पासेली कुंभक राजनी पुत्री मल्ली कुमारीना जे कुंभकोना साधो तूटी गयो कुंभक राजाजे भधा सेनीओने भेलाओया अने कहु के तमे दोहो आ कुंभकोनी संधिने लेडी आपो. अभोओ तेमनी पासेथी कुंभको लई लीधा अने लइने असे भधा पोतपोताना भेसवाना स्थाने आवी गयो. त्यां भेसीने अभोओ जत-जतना उपायोथी ते कुंभकोने पडेलांना जेवा ज सारा जनावी आपवानी जेटवे के तूटेवे. संधि लागू करी सांधी आपवा साटे धलु प्रयत्नो कर्या पण ते कुंभकोने पूर्ववत् सारा करवामा समर्थ थई शक्या नहि असे दोहो राजनी पासे गयो अने तेमने विनंति करी के हे महाराज ! असे भइ ज



તમ્-અસ્ય દિવ્યસ્ય કુણ્ડલયુગલસ્ય સન્ધિ સંઘટયિતુ પ્રયાસં કૃતવન્તઃ, પરંતુ નો શ્વનુમઃ સંઘટયિતુમ્, તતઃ સ્વલ્લુ કુમ્ભકસ્ય રાજ્ઞઃ પુરો ગત્વાઽસ્માભિરેવ મવાદિત્-અસ્ય દિવ્યસ્ય કુણ્ડલયુગલસ્ય સન્ધિ સંઘટયિતુ પ્રયત્નં કૃતવન્તોઽપિ વ્યં નો શક્તાઃ સંઘટયિતુમ્, તસ્માત્ સ્વલ્લુ હે સ્વામિન્ । એતત્સદ્દશમન્યત્ કુણ્ડલયુગલં ઘટયામઃ ઇતિ । તતઃ ક્રોધાવિષ્ટેન કુમ્ભકેન રાજ્ઞા એવં ' નિવિસયા ' નિર્વિપયા સ્વદેશતો નિર્ગતા મવિતુમ્, આજ્ઞાપ્તાઃ=આદિષ્ઠાઃ ।

તતઃ સ શબ્દઃ કાશીરાજઃ સુવર્ણકારાનેવમવાદીત-હે દેવાલુપ્રિયાઃ । કીદૃશી સ્વલ્લુ કુમ્ભકસ્ય રાજ્ઞો દુહિતા=પુત્રી પ્રભાવત્પા દેવ્યા આત્મજા=અજ્ઞાતાતા, મણી

મહારાજ હમલોગ પ્રયત્ન કરને પર મી ઇંસ કાર્યમેં અસફલિત હો રહે હૈં-અતઃ આપકો આજ્ઞા હો તો હમ ઇન્હીં કુંડલોં જૈસા કુંડલ ઓર ધનાદેવેં-બસ હમારા ઇતનાં હી કહના થા કિ રાજા ઇકદમ ક્રોધ કે આવેશ મેં આ ગયે-ઓર હમલોગોં કો અપને દેશ સે નિકલ જાને કી આજ્ઞા દે બેઠે । બસ ( તં એણં કારણેણં સામી ! અમ્હે કુંમણં નિવિસયા આણત્તા-તેણં સે સંલે સુવજગારે એવં વયાસી-કેરિસિયા ણં દેવાણુપિયા ! કુંમણધૂયા પમાવહણ દેવીએ અત્તયા મલ્લી વિદેહ રાયવર-કન્ના ) હે સ્વામીન્ યહીકારણ હૈ કિ જિસસે હમલોગ કુંમક રાજા કે દ્વારા દેશ સે નિકલ જાને કે લિયે આજ્ઞસહુએ હૈં-શંખ રાજાને ઊન સુવર્ણ કરોં કો અપને રાજ્યમેં બસનેકે લિયે સુશી સે આજ્ઞાપ્રદાન કી ।

હસ પ્રકાર સુનને કે અનન્તર ડસ શંખ રાજા ને સુવર્ણકારોં સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાલુપ્રિયોં ! કહો-કુંમક રાજા કી બહ વિદેહવર

પ્રયત્નો કર્યા છતાં આ કામમાં અમે સફળ થઈ શક્યા નહિ. એથી તમે આજ્ઞા આપો તો આ કુંડળો જેવાં જ ખીલ જો કુંડળો બહી આપીએ અમારી આ વાત સાંભળીને રાજા એકદમ લાલચોળ થઈ ગયા અને અમને પોતાના દેશથી બહાર જવાની આજ્ઞા આપી દીધી.

( તં એણં કારણેણં સામી ! અમ્હે કુંમણં નિવિસયા આણત્તા તેણં સે સંલે સુવજગારે એવં વયાસી કેરિસિયાણં દેવાણુપિયા ! કુંમણધૂયા પમાવહણ દેવીએ અત્તયા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્ના )

હે સ્વામીન્ ! બસ એ કારણને લીધે જ કુંભક રાજાએ અમને દેશવટો આપ્યો. શંખ રાજાએ તે બધા સોનીઓને પોતાના દેશમાં રહેવાની ખુશીથી પરવાનગી આપી.

સોનીઓની આ બધી વાત સાંભળીને શંખ રાજાએ તેમને કહ્યું કે-હે

વિદેહરાજવરકન્યાકા ? , તતઃ સ્વલુ તે સુવર્ણકારાઃ શઙ્ગં રાજાનમેવમવદન્-હે સ્વામિન્ ! નો સ્વલુ અન્યા કાચિત્ તાદૃશી દેવકન્યા વા ગન્ધર્વકન્યા વા યાવત્-અત્ર યાવત્છેનેદં બોધ્યમ્-અસુરકન્યા નાગકન્યા યક્ષકન્યા વાં હિતિ, યાદૃશી સ્વલુ મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા મલ્લીસદૃશી કાઽપિ કન્યા લોકત્રયે નાસ્તીત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ સ શઙ્ગઃ કાશીરાજઃ કુણ્ડલયુગલજનિતદર્ષઃ-કુણ્ડલયુગલમહત્ત્વશ્રવણસંજા-તમલ્લીવિષયકાનુરાગઃ સન્ દૂતં શબ્દયતિ, યાવત્-અત્ર યાવત્છબ્દેનેદં દ્રષ્ટવ્યમ્-શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! શીઘ્રમેવ મિથિલાં ગત્વા કુમ્ભકં રાજાનં

રાજ કન્યા મલ્લી કુમારી-કિ જિસકા જન્મ પ્રભાવતી કી કુક્ષિ સે હુઆ હૈ-કૈસી હૈ ? ( તપણં તે સુવર્ણગારા સંસ્કરાયં એવં વગાસી-ળો સ્વલુ સામી ! અન્ના કાઈ તારિસિયા દેવકન્ના વા ગંધર્વકન્ના વા જારીસિયાણં મલ્લી વિદેહવરાયકન્ના-તપણં સે સંઘે કુણ્ડલયુગલજણિતહાસે દૃયં સદાવેઈ, જાત તહેવ પહારેત્થ ગમણા ) હિસકે પ્રત્યુત્તર મેં ડન સુવર્ણ કારોને શંખ રાજા સે હિસ પ્રકાર કહા હે સ્વામિન્ ! એસી તો કોઈ દેવ-કન્યા ખી નહીં હૈ, ગંધર્વ કન્યા ખી નહીં હૈ, અસુરકન્યા ખી નહીં હૈ, નાગકન્યા ખી નહીં હૈ ઓર ન કોઈ યક્ષ કન્યા હી હૈ કિ જૈસી વિદેહ વર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી હૈ । તાત્પર્યં હિસકા યહી હૈ કિ-મલ્લી કુમારી જૈસી કન્યા લોકત્રય મેં ખી નહીં હૈ । હિસ પ્રકાર કુણ્ડલયુગલ કે મહત્ત્વ શ્રવણ સે મલ્લીકુમારી કે વિષય મેં જિસે અનુરાગ (આવ ડ-ત્પન્ન હો જુકા હૈ એસે ડસ શંખ રાજાને દૂતકો બુલાયા-બુલાકર ડસ સે એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ શીઘ્ર હી મિથિલા જાકર કુમ્ભક

દેવાનુપ્રિયો ! અત્રાવો કુમ્ભક રાજાની વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લી કુમારી કે બેને । જન્મ પ્રભાવતીના ગર્ભથી થયો છે તે કેવી છે ?

( તપણં તે સુવર્ણગારા સંસ્કરાયા એવં વગાસી-ળો સ્વલુ સામી ! અન્ના કાઈ તારિસિયા દેવકન્ના વા ગંધર્વકન્ના વા જારીસિયાણં મલ્લી વિદેહવરાયકન્ના-તપણં સે સંઘે કુણ્ડલયુગલજણિતહાસે દૃયં સદાવેઈ, જાત તહેવ પહારેત્થ ગમણા )

તેના જવાબમાં સોનીઓએ શંખ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે સ્વામીન્ ! બેવી વિદેહવર રાજકન્યા મલ્લીકુમારી છે તેવી તો દેવકન્યા પણ નથી, ગંધર્વકન્યા પણ નથી, અસુર કન્યા પણ નથી, નાગકન્યા પણ નથી અને યક્ષ કન્યા પણ નથી. તાત્પર્યં એ છે કે-મલ્લીકુમારી બેવી કન્યા ત્રણે લોકોમાં પણ નથી.

આ રીતે કુણ્ડળોના મહત્ત્વ વિષે વાત સાંભળતાં જ મલ્લી કુમારીના ઉપર બેના મનમાં અનુરાગ જન્મ પામ્યો છે એવા તે શંખ રાજાએ દત્તને બોલાવ્યો અને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મિથિલા નગરીમાં સત્ત્વરે

બ્રૂહિ-શઙ્ગઃ કાશિરાજસ્તવ કન્યકાં મલ્લીં વાચ્છતિ ' ઇત્યાદિ । તથૈવ=પૂર્વોક્ત રુ-  
ક્મિદૂતવત્ , પ્રાધારયદ્ ગમનાય=તતઃ શઙ્ગસ્ય કાશીરાજસ્યાજ્ઞયા સ દૂતો રથા-  
રુઢઃ સન્ યત્રૈવ મિથિલાનગરી તત્રૈવ ગન્તું પ્રવૃત્ત ઇત્યર્થઃ । ઇતિ ચતુર્થસ્ય શઙ્ગસ્ય  
રાજ્ઞઃ સમ્બન્ધઃ કથિતઃ ॥ સૂ. ૨૬ ॥

મૂલમ્—તેણં કાલેણં તેણં સમણં કુરુ જણવણ હોત્થા, તત્થ  
ણં હત્થિણાઊરનયરે અદીણસત્તૂ નામં રાયા હોત્થા, જાવ વિહ-  
રહ, તત્થ ણં મિહિલાણ કુંભગસ્સ પુત્તેપમાવર્ણણ અત્તણ મલ્લીણ  
અણુજાણણ મલ્લદિન્નણ નામકુમારે જાવ જુવરાયા યાવિ હોત્થા  
તણં મલ્લદિન્ને કુમારે અન્નયા કોઢુંબિયં સહાવેહ, સહાવિત્તા  
ણં વયાસી-ગચ્છહ ણં દેવાણુપ્પિયા ! તુભ્ભે મમં પમદવર્ણસિ  
ણં મહં ચિત્તસમં કરેહ અણેગ જાવ પચ્ચપ્પિણંતિ, તણં સે  
મલ્લદિન્ને ચિત્તગરસેણિં સહાવેહ, સહાવિત્તા ણં વયાસી-તુભ્ભે  
ણં દેવાણુપ્પિયા ! ચિત્તસમં હાવમાવવિલાસ વિબ્બોયકલિણહિં  
રુવેહિં ચિત્તેહ, ચિત્તિત્તા જાવ પચ્ચપ્પિણહ, તણં સા ચિત્તગર  
સેણી તહત્તિ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા જેણેવ સયાહં ગિહાહં  
તેણેવ ડવાગચ્છતિ, ડવાગચ્છિત્તા, તૂલિયાઓ વન્નણ ય ગિણિહહ,

રાજાસે કહો કિ કાશી દેશાધિપતિ શંખ રાજા આપકી કન્યા મલ્લી  
કુમારી કો ચાહતે હૈં ઇત્યાદિ ।

હસ પ્રકાર અપને રાજા કાશી રાજ કી આજ્ઞા સે વહ દૂત રથ પર  
આરુઢ હોકર જહાં મિથિલા નગરી થી ડસ ઓર ચલ દિયા । હસ તરહ  
યહ ચતુર્થ શંખ રાજા કા વૃત્તાન્ત પ્રકાર કહા ગયા હૈં । સૂત્ર “ ૨૬ ”

પહોંચો અને કુંભક રાજાને કહેા કે કાશી દેશાધિપતિ શંખ રાજા તમારી  
કન્યા મલ્લીકુમારીને આહે છે વગેરે.

આ રીતે પોતાના રાજા કાશી રાજાની આજ્ઞા મેળવીને હૂત રથ ઉપર  
સવાર થયો અને બે તરફ મિથિલા નગરી હટી તે તરફ રવાના થયો આ  
રીતે આ યોથા શંખ રાજાનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર “ ૨૬ ” ।

गिण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता  
भूमिभागे विरंचइ, विरंचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जित्ता चित्तसमं  
हावभाव जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था, तएणं एगस्स  
चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धापत्ता अभिसमन्नागया—  
जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि  
पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तेइ,  
तएणं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण  
पायंगुटुं पासइ, तएणं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं  
खलु ममं मल्लीए एवि पायंगुट्टाणुसारेणं सरिसगं जाव गुणो  
ववेयं रूवं निव्वत्तित्तेए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता भूमिभागं सज्जेइ,  
सज्जित्ता मल्लीएवि पायंगुट्टाणुसारेणं जाव निव्वत्तेइ, तएणं सा  
चित्तगरसेणी चित्तसभं हावभाव जाव चित्तेइ, चित्तित्ता जेणेव  
मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव जाव एतमाणत्तियं पच्चप्पिणइ,  
तएणं मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता  
सम्माणित्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलेइ, दलित्ता पडि-  
विसज्जेइ । तएणं मल्लदिन्ने अन्नया पहाए अंतेउरपरियाल-  
संपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ,  
उवागच्छित्ता चित्तसभं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता हावभाव-  
विलास विब्बोयकलियाइं रूवाइं पासमाणे२ जेणेव मल्लीए  
विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ  
गमणाए ॥ सू०२७ ॥

ટીકા—અથ પશ્ચમસ્યાદીનશત્રુનામ્મો રાજ્ઞઃ સમ્બન્ધપ્રસ્તાવમાહ—‘તેણં કાલેણ’  
 इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुरुजपदः=कुरु नामको देशः, आसीत्,  
 तत्र=तस्मिन् देशे, हस्तिनापुरे=नगरे अदीनशत्रुनां राजाऽऽसीत्०। यावद् विहरति  
 -राज्यं पालयन् स आस्त स्मेत्यर्थः ।

इतश्च तत्र खलु मिथिलायां कुम्भकस्य पुत्रः प्रभावत्याः आत्मजः=अङ्गजातः,  
 मल्ल्याः=मल्लीकुमारिकाया अनुजातकः=लघुभ्राता, मल्लदत्तो नाम कुमारः,  
 यावद्=राजनीतिकुशलं युवराजश्चाप्यभूत् । ततस्तदनन्तरं मल्लदत्तः कुमारः

‘ તેણં કાલેણં તેણં સમણં ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समणं) उस काल और उस समयमें (कुरु  
 जणवए होत्था—तत्थणं हत्थिणाउरनयरे अदीण सतू नामं राया होत्था  
 जाव विहरइ ) कुरु नाम का देश था—उस में हस्तिनापुर नाम के नगर  
 में अदीन शत्रु नाम के राजा रहते थे । ये न्याय नीति के अनुसार  
 अपने राज्य का परिपालन अच्छी तरह से करते थे । ( तत्थ णं मिहि-  
 लाए कुंभगस्स पुत्ते पभावइए अत्तए मल्लीए अणु जाणए मल्ल दिन्नए  
 नाम कुमारे जाव जुवराया यावि होत्था ) उस मिथिला नगरी में कुंभक  
 राजा के यहां प्रभावती से एक पुत्र और हुआ था—जिस का नाम मल्ल  
 दत्त कुमार था यह मल्ली कुमारी का छोटा भाई था ।

राजनोति में यह विशेष निष्णात था । अतः राजा ने इसे युवराज

‘ તેણં કાલેણં તેણં સમણં ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( તેણં કાલેણં તેણં સમણં ) તે કાળે અને તે સમયે

(કુરુજણવए होत्था तत्थणं हत्थिणाउरनयरे अदीणसतू नामं राया होत्था  
 जाव विहरइ )

કુરુ નામે દેશ હતો. તેમાં હસ્તિનાપુર નામે નગરમાં અદીનશત્રુ નામે  
 રાજા રહેતો હતો. તે ન્યાય અને નીતિને અનુસરીને રાજ્ય-શાસન  
 ચલાવતો હતો.

( तत्थ णं मिहिलाए कुंभगस्स पुत्ते पभावइए अत्तए मल्लीए अणु जाणए मल्ल-  
 दिन्नए नामकुमारे जाव जुवराया यावि होत्था )

તે મિથિલા નગરીમાં કુંભક રાજાને ત્યાં પ્રભાવતી રાણીના ગર્ભથી એક  
 પુત્રનો જન્મ થયો હતો તેનું નામ મલ્લદત્તકુમાર હતું અને તે મલ્લીકુમારીનો  
 નાનો ભાઈ હતો. રાજનીતિમાં તે અણ જ નિષ્ણાત હતો. એથી રાજાએ યુવ-  
 રાજપદે તેની નીમણુંક કરી હતી.

अन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अत्रादीत्- हे देवानुप्रियाः ! गच्छत खलु यूयं मम 'पमदवर्णसि' प्रमदवर्णे = अन्तःपुरस्थितोद्याने, एकां महतीं 'चित्तसमं' चित्रसमां=चित्रगृहं 'करेह' कारयत चित्रसमाया विशेषणमाह- 'अणेग' इति-अणेगखंभसयसंनिविद्धं 'अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टम्, अनेके-अनेकप्रकारा नानावर्णदेदीप्यमानचाकचिक्यचञ्चक्षुश्चित्ताह्लादजनकमणिगत-विचित्रशिल्पपरचना सुशोभिता ये स्तम्भाः सुवर्णमयस्तम्भाः, तेषां शतैः संनिविष्टम् =समन्वितम्, 'जाव पच्चपिण्णंति' यावत् प्रत्यर्पयन्ति-कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव चित्रसमां कृत्वा मल्लदत्तस्य पुरः समागत्य तदाह्वां निवेदयन्ति, भवदाह्लादनुसारेण सर्वे साधितमस्माभिरिति कथयन्ति स्मेत्यर्थः । ततः खलु स मल्लदत्तश्चित्र-

का पद प्रदान कर दिया था । ( तएणं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोहुं वियंसदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छहणं देवाणुप्पिया । तुमहे ममं पमदवर्णसि एगं महं चित्तसमं करेह अणेग जाव पच्चपिण्णंति ) एक दिन मल्लदिन कुमार ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उन से ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम जाओ और प्रमदोद्यान में-अन्तः पुर-स्थित बगीचे में एक बड़ा चित्रगृह बनाओ ।

वह अनेक सुवर्ण मय स्तंभशत से समन्वित हो । इन स्तंभों में नाना वर्ण के चमकीले मणि जड़े हुए हों । जो अपनी चाकचिक्य से चक्षु और चित्त के आह्लादक हो । इन मणियों द्वारा उन स्तंभों में विचित्र शिल्प रचना की गई हो । इस प्रकार मल्लदत्त कुमार की आज्ञा प्राप्त कर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उसी के अनुसार चित्र गृह की रचना

(तएणं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोहुं वियंसदावेइ सदावित्ता एवं वयासी गच्छहणं देवाणुप्पिया । तुमहे मम पमदवर्णसि एगं महं चित्तसमं करेह अणेग जाव पच्चपिण्णंति)

એક દિવસે મલ્લદિનકુમારે કૌટુંબિક પુરુષોને યોલાવ્યા અને યોલાવીને તેમને કહ્યું—હે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે પ્રમદોદ્યાનમાં જાઓ અને ત્યાં રજુ-વાસના ઉદ્યાનમાં એક મોટું ચિત્રગૃહ તૈયાર કરો.

ચિત્રગૃહ સે'કડો સોનાના થાંભલાવાળું હોયું બેઠ્યો. તે થાંભલાઓમાં ચમકતા ઘણા મણિઓ જડેલા હોવા બેઠ્યો. પોતાના પ્રકાશથી જ્ઞેનારાની આંખોને આશુ દે તેવું તેમજ ચિત્તને આહ્લાદ આપનારું હોયું બેઠ્યો. મણિઓ વડે તેના થાંભલાઓમાં ભતભતના શિલ્પની રચના કરવામાં આવેલી હોવી બેઠ્યો. આ રીતે મલ્લદત્ત કુમારની આજ્ઞા મેળવીને કૌટુંબિક પુરુષોએ

કરશેર્ણિ=ચિત્રકારાનુ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વૈવમવાદીત્— હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! યૂયં સ્વહ  
ચિત્રસમાં=ચિત્રગૃહં 'હાવભાવવિલાસવિવોચકલિર્ણિ' હાવભાવવિલાસવિવોચકલિતૈઃ  
=શૃંગારભાવાભ્યાં સંજાતા સ્ત્રીચેષ્ટા હાવઃ, ભાવો મનોવિકારઃ, વિલાસો હાવભેદઃ  
વિવોચકઃ—અભિમતપ્રાપ્તાવપિગર્વાદનાદરઃ, અયમપિ હાવભેદઃ । અન્યેત્વૈવમાહુઃ—

હાવો મુખવિકારઃ સ્યાદ્ ભાવશ્ચિત્તસમુદ્ભવઃ ।

વિલાસો નેત્રજો જ્ઞેયો વિષ્ણમો મૂ સમુદ્ભવઃ ॥૬૧॥

કરકે હસે સ્વહર દી કિ આપકી આજ્ઞાનુસાર હમને સ્વ કામ કર લિયા હૈ ।

(તણસે મલ્લદિન્ને ચિત્તગરસેર્ણિ સદાવેદ્, સદાવિત્તા એવં વયાસી)  
હસકે બાદ હસ મલ્લદસ્ત કુમાર ને ચિત્રકારોં કો બુલવાયા ઓર બુલ-  
કર હનસે હસ પ્રકાર કહા—( તુભેર્ણ દેવાણુપ્પિયા ! ચિત્તસમં હાવભાવ  
વિલાસ વિવોચકલિર્ણિ રૂવેર્ણિ ચિત્તેહ ચિત્તિત્તા જાત્ર પચ્ચપ્પિણહ )  
હે દેવાનુપ્રિયોં ! તુમ લોગ ચિત્રગૃહ કો હાવ, ભાવ, વિલાસ, એવં વિવોચક  
યુક્ત ચિત્રો સે ચિત્રિત કરો । સ્ત્રિયોં કી જો ચેષ્ટા શૃંગાર એવં મનો  
વિકાર જન્ય હોતી હૈ—હસ કા નામ હાવ હૈ । માનસિક વિકૃતિકા નામ  
ભાવ હૈ । વિલાસ હાવ કા હી એક પ્રકાર હૈ । અભિ મત (ઇચ્છિત) કી  
પ્રાપ્તિ હોને પર મી જો ગર્વ સે હસ મેં અનાદર હોતા હૈ—હસ કા નામ  
વિવોચક હૈ । યહ મી હાવ કા હી એક ભેદ હૈ । હન હાવ ભાવાદિકોં કે  
વિષય મેં કોઈ ૨ એસા મી કહતે હૈં કિ મુખ કા જો વિકાર હોતા હૈ  
વહ હાવ હૈ, ચિત્ત સે જો વિકાર ઉત્પન્ન હોતા હૈ, વહ ભાવ હૈ । નેત્ર

તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ચિત્રગૃહનું નિર્માણ કરીને તેમને ખબર આપી કે  
આજ્ઞા મુજબ અમેએ બધું કામ પુર્ણ કરી નાખ્યું છે

( તણ સે મલ્લદિન્ને ચિત્તગરસેર્ણિ સદાવેદ્ સદાવિત્તા એવં વયાસી )

ત્યારબાદ મલ્લદસ્ત કુમારે ચિત્રકારને જોલાલ્યા અને જોલાલીને તેમને કહ્યું કે—

( તુભેર્ણ દેવાણુપ્પિયા ! ચિત્તસમં હાવભાવવિલાસવિવોચકલિર્ણિ રૂવેર્ણિ  
ચિત્તેહ, ચિત્તિત્તા જાત્ર પચ્ચપ્પિણહ )

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે ચિત્રગૃહને હાવ, ભાવ, વિલાસ અને જિમ્મોકવાળા  
ચિત્રોથી ચિત્રિત કરો. સ્ત્રીઓની શૃંગાર અને મનોવિકાર જન્યને ચેષ્ટાઓ  
હાવ કહે છે. માનસિક વિકૃતિનું નામ ભાવ છે. અભિમત (ઇચ્છિત) ની  
પ્રાપ્તિ હોવા છતાં પણ ગર્વથી જે તે અનાદર હોય છે તેનું નામ વિવોચક  
છે. તે પણ હાવનો જ એક પ્રકાર છે. આ હાવ, ભાવ વગેરેના વિશે કેટલક  
આ પ્રમાણે પણ કહે છે કે મોંનો વિકાર જ હાવ છે, ચિત્તથી જન્મે છે તે

एतैर्हावादिभिः कलितैर्त्र्युक्तैः, रूपैः=चित्रविशेषैः चित्रयत=चित्रितं कुरुत, चित्रयित्वा यावत् प्रत्यर्पयत=यमाज्ञा संपादितेति मां कथयतेत्यर्थः । ततस्तदनन्तरं खलु सा चित्रकारश्रेणिः=तथेति='तथास्तु' इत्युक्त्वा प्रतिशृणोति=स्वीकुरु-  
ते स्म । प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकानि गृहाणि, तत्रैवोपागच्छति. उपागत्य 'तूलियाओ  
वन्न ए य' तूलिका वर्णकांश्च=तूलिकाः=केशमप्यश्चित्रलेखनकूर्चिकाः, वर्णकान्=  
पञ्चवर्णकद्रव्याणि, च गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव चित्रसभा तत्रैवानुप्रविशति, अनुप्रविश्य  
भूमिभागं=चित्रविरचनस्थानं 'विरंचेइ' वेवेक्ति=अत्रोत्थं चित्रणीयमिति कृत्वा  
रेखादिभिर्मित्यादौ विभागं करोति, 'विरंचित्ता' विविच्य=भूमिं सज्जयति

સે જો ભાવ ઉત્પન્ન હોતા હૈ વહ વિલાસ એવં શ્રુ સે જો ઉત્પન્ન હોતા હૈ  
વહ વિભ્રમ હૈ । જબ હસ પ્રકાર કે ચિત્રોં સે વહ ચિત્રગૃહ ચિત્રિત હો  
જાવે-તબ હમેં હસ કી સ્ખર દો- ( તર્ણ સા ચિત્તગરસેણી તહત્તિ  
પહિસુણેઈ, પહિસુણિત્તા જેણેવ સયાઈં ગિહાઈં તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવા-  
ગચ્છિત્તા તૂલિયાઓ વન્નપ્પગિણહઈ, ગિણિહત્તા જેણેવ ચિત્તસભા  
તેણેવ અણુપવિસઈ ) હસ કે બાદ ઉસ ચિત્રકાર શ્રેણિ ને " તથાસ્તુ "   
હસ પ્રકાર કહકર મલ્લદત્ત કુમાર કી આજ્ઞા કી સ્વીકાર કર લિયા-  
ઑર સ્વીકાર કરકે ફિર વે સબ કે સબ અપને ૨ ઘર આ ગયે-વહાં  
આકર હન્હોં ને અપની ૨ તૂલિકાઓં કી ઑર વર્ણકોં-પંચવર્ણ બાલે  
દ્રવ્યોં કી લિયા-લેકર જહાં-વહ ચિત્રગૃહ થા ઉસ ઑર ચલ દિયે ।  
વહાં આકર વે ઉસ કે અન્દર ગયે ( અણુપવિસિત્તા ભૂમિભાગે વિરંચેઈ  
વિરંચિત્તા ભૂમિ સજ્જેઈ, સિજ્જિત્તા ચિત્તસભં દાવ ભાવ જાવ ચિત્તેઉં

ભાવ છે, નેત્રથી જે ભાવ ઉત્પન્ન હોય છે તે વિલાસ અને ભવાંથી જે ઉત્પન્ન  
હોય છે તે વિભ્રમ છે. બ્યારે આ પ્રમાણે તે ચિત્રગૃહ ચિત્રિત થઈ બાથ  
ત્યારે અમને તમે સૂચિત કરવો

( તર્ણ સા ચિત્તગરસેણી તહત્તિ પહિસુણેઈ પહિસુણિત્તા જેણેવ સયાઈં ગિહાઈં  
તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિત્તા તૂલિયાઓ વન્નપ્પગિણહઈ, ગિણિહિત્તા જેણેવ ચિત્ત-  
સભા તેણેવ અણુપવિસઈ )

ત્યારપછી તે ચિત્રકારોએ 'તથાસ્તુ' (સાડ) આ પ્રમાણે કહીને મલ્લદત્ત  
કુમારની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારપછી તેઓ ગળા પોતપોતાને ઘેર  
આવી ગયા. ત્યાં આવીને તેઓએ પોતપોતાની પીંછીઓ અને વર્ણકો એટલે  
કે પાંચ રંગવાળા દ્રવ્યોને સાથે લીધા અને લઈને જે તરફ ચિત્રગૃહ હતું  
તે તરફ રવાના થયા. ત્યાં પહોંચીને તેઓ તેમાં પ્રવિષ્ટ થયા

અણુપવિસિત્તા ભૂમિભાગે વિરંચેઈ વિરંચિત્તા ભૂમિ સજ્જેઈ, સિજ્જિત્તા ચિત્ત



मार्जनादिभिः परिष्करोति, सज्जयित्वा चित्तसमां ' हावभाव-जाव ' हावभाव-यावत्=हावभावविलासविबोकोकलितैः, रूपैः=चित्रविशेषैः, ' चित्तेउ ' चित्रयितुं ' पयत्ता ' प्रवृत्ता चाप्यभवत् । सा चित्रकारश्रेणिश्चित्रगृहं हावभावादियुक्त चित्र-विशेषैश्चित्रयितुं प्रवर्ततेस्म ' इत्यर्थः ।

ततः=तत्र खलु एकस्य चित्रकारस्य इमेयारूपा इत्येतद्रूपा=वक्ष्यमाणस्वरूपा चित्ररत्नलब्धि=चित्रकरणविशिष्टशक्तिः, मनसि यादृशं रूपं चिन्तयति तादृशं करोत्येवं भूता लब्धिः, लब्धा=उपार्जिता, प्राप्ता=स्वायचिकृता, अभिसमन्वा गता=सम्यगासे-

पयत्ता यावि होत्था ) अन्दर प्रविष्ट होकर सबसे पहिले उन्होंने ने चित्र रचने के स्थान को रेखादि द्वारा अंकित किया

यहां इस प्रकार का चित्र काटना चाहिये इस प्रकार के विचार से भित्ति के ऊपर रेखा आदि खींचकर उन्होंने ने उस का विभाग किया-विभाग कर के फिर वहां की भूमि को उन्होंने ने साफ किया-साफ कर के फिर वे चित्रकार उस चित्रगृह को हाव भाव आदि वाले चित्र विशेषों से चित्रित करने में लग गये । ( तएणं एगस्स चित्तगरस्स इमे यारूवे चित्तगर लद्धी लद्धा, पत्ता अभि समन्वागया-जस्सणं दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्सणं देसाणु-सारेणं तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तेइ ) इन में एक चित्रकार ऐसा था जिसमें चित्र करने की विशिष्ट शक्ति थी । इस ने इस शक्ति को पहिले से ही

समं हाव भाव जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था )

तेमां प्रवेशीने तेज्जाओ सौ पडेक्षां चित्र जनाववानी जग्था उपर देजाओ जनावी.

अर्ही आ प्रभाओ चित्र तैयार करवानुं छे. आ प्रभाओ विचार करीने बीत वगेरे उपर देजाओ वगेरे होरीने तेमने विलाज्जन कथुं, विलाज्जन करीने ते स्थानने तेज्जाओ स्वच्छ जनावुं. स्वच्छ जनावीने ते चित्रकारी चित्रगृहने डाव लाव वगेरेना विशेष चित्रोथी चित्रित करवा लाया.

( तएणं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे चित्तगरलद्धी लद्धा, पत्ता अभिसमन्ना गया, जस्सणं दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्सणं देसाणुमारणं तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तेइ )

आ जधाओमां ओइ चित्रकार ओवो पणु डतो छे तेमां चित्र तैयार करवानी विशेष शक्ति डती. तेओ चोतानी चित्र जनाववानी असाधारण शक्ति

बिता, यस्य, खलु द्विपदस्य-मनुष्यादेर्वां चतुष्पदस्य गवादेर्वां, अपदस्य=चरण-  
रहितस्य सपदीवृक्षादेर्वां, एकदेशमपि एकाङ्गमपि पश्यति तस्य खलु देशानुसारेण  
चक्षुर्गोचरीकृतैकदेशानुसारेण 'तयाणुरुवं' तदनु रूपं दृष्ट द्विपदादियोग्यं, रूपं चित्रं  
'निव्वत्तेइ' निर्वर्तयति=रचयति । ततस्तदनन्तरं खलु स चित्रकरदारको मल्लयाः=  
मल्लीकुमारिकायाः, 'जवणियंतरियाए' यवनिकान्तरितायाः=यवनिकया - पर-  
दारुणेन आवरणपटेन, अन्तरितायाः=व्यवहितायाः परदाभ्यन्तरस्थिताया इत्यर्थः ।  
जालान्तरेण=गवाक्षरन्ध्रेण पदाकुण्डं पश्यति-दृष्टवान् । ततः खलु तस्य चित्रकारस्य=  
चित्रकारदारकस्य, अयमेतद्रूपः=अयं वक्ष्यमाणस्वरूपः, यावद्=विचारः समुदपद्यत-  
श्रेयः=श्रेयस्करम् अभ्युदयजनकं, खलु मम मल्लया अपि पादाकुण्डानुसारेण सदृशकं=  
मल्लीसमानं यावद्-गुणोपपेतं=मल्लया अङ्गेषु यत्र ये सौन्दर्यादिगुणाः तैः समन्वितं,

उपार्जित किया था-प्राप्त किया-था-उस में यह विशेष चतुर था,  
इस का इसे अच्छा अभ्यास था ।

यह जिस मनुष्यके, चतुष्पद गवादिके, अपद सर्पादि अथवा वृक्षादि  
के जिस किसी एक एक भाग को देख लेता तो उसी के अनुसार यह  
उस का पूर्ण चित्र अंकित कर देता था । ( तर्पण से चित्तगरदारए  
मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुहं पासइ, तर्पणं तस्स  
चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु ममं मल्लीए वि पायंगुह्वाणु-  
सारेण सरिसगं जाव गुणोववेयं रुवं निव्वत्तिअए एवं संपेहेइ ) एक  
दिन इस चित्रकार ने परदा के भीतर बैठी हुई मल्लि कुमारी के पैर  
का अंगूठा गवाक्ष छिद्र से देख लिया था सो उस के मन में ऐसा विचार  
आया कि मेरे लिये यह श्रेयस्कर है कि मैं मल्ली कुमारीका भी पादा-  
ङ्गुष्ठानुसार यावत् गुणोपपेत उसी के जैसा, चित्र बनाऊँ ।

पडेहेथी ७ भेणवेही डती. चित्रकणाभां ते भूष ७ प्रवीणु तेम ७ तेनो ते  
सारे अभ्यासी डतो.

ते चित्रकार भाष्यसना, गाय वजेरे ओपगांओना, साप वजेरे अपहोना  
अथवा तो वृक्ष वजेरेनो डे.छपणु ओक भाग ओध डेतो. अने त्थारभाड ते  
प्रभाओनां ७ आओडूण तेमनां चित्र होरतो डेतो.

( तर्पणं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुहं  
पासइ तर्पणं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु ममं मल्लीए वि पायं-  
गुह्वाणुसारेण सरिसगं जाव गुणोववेयं रुवं निव्वत्तिअए एवं संपेहेइ )

ओक द्विपस ते चित्रकारे पडहानी पाछण ओठेही मल्लीकुमारीना पगनो  
अंगूठा गवाक्षना छालुभांथी ओध डीधो त्यारे तेना मनगं ओम थयुं डे डुं  
मल्लीकुमारीना पगना अंगूठाना ओपु ७ सुंदर चित्र तयार करे.

રૂપં=ચિત્રં નિર્વર્તયિતું=રચયિતુમ્ । એવમ્=ઉક્તપ્રકારેણ, સંપ્રેક્ષતે=સ ચિત્રકરદારકો વિચારયતિસ્મ । સંપ્રેક્ષ્ય=મનસિ વિમૃશ્ય, भूमिभागं=ચિત્રકરણસ્થાનં સઙ્ગયતિ=માર્જનલેપાદિના સંસ્કરોતિ, સઙ્ગયિત્વા મલ્લયા અપિ પાદાશુષ્ઠનુસારેણ યાવત્=સદૃશકં ગુણોપપેતં રૂપં નિર્વર્તયતિ=રચયતિસ્મ । તતસ્તદન્તરં સ્વલુ સા ચિત્રકાર-શ્રેણિશ્ચિત્રસમાં 'હાવભાવ-જાવ' હાવભાવ-યાવન્=હાવમાત્રવિચારસંવિવ્ચોકકલિતેઃ રૂપૈઃ, ચિત્રૈઃ 'ચિત્તેહ' ચિત્રયતિ, ચિત્રયિત્વા યતૈવ મલ્લદત્તઃ કુમારસ્તઙ્ગોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય યાવત્ એતામાત્નાં પ્રત્યર્પયતિ- હે સ્વામિન્ । મત્રદાજ્ઞાનુસારેણ ચિત્રગૃહં

મલ્લી કુમારી કે અંગ મેં જહાં ૨ જો જો સૌન્દર્યાદિ ગુણ હૈ ઉન સબ ગુણોં કો ઉસ મલ્લી કુમારી કે ચિત્ર મેં અંકિત કરૈ । એસા જબ ઉસ ને વિચાર કિયા- ( સંપેહિત્તા ) તો ઉસ વિચાર કે અનુસાર ( ભૂમિ-ભાગં સઙ્ગેહ, સઙ્ગિત્તા મલ્લીએ વિ પાયંયુદ્ધાનુસારેણ જાવિ નિવ્વત્તેહ, તર્ણં સા ચિત્તગરસેણી ચિત્તસમં હાવમાવજાવ ચિત્તેહ, ચિત્તિત્તા જેણેવ મલ્લ દિન્ને કુમારે તેણેવ જાવ એતમાણસિયં પચ્ચપ્પિણહ ) ઉસ ને વહાં કા ભૂમિભાગ સાફ કિયા-માર્જન, લેપ આદિ દ્વારા ઉસે સંસ્કારિત કિયા-સંસ્કારિત કરકે ફિર ઉસ ને વહાં મલ્લી કુમારી કા મી દ્દુષ્ટ પાદાશુષ્ઠ કે અનુસાર ચિલકુલ હૂબહૂ જૈસે કે તેસા ગુણોપપેત રૂપ-ચિત્ર અંકિત કર દિયા ।

इसके बाद उस चित्रकारों की श्रेणी ने उस चित्रगृह को हावभाव विलास एवं विव्चोक वाले रूपों से-चित्रों से अंकित कर दिया-चित्रित कर दिया-चित्रित कर फिर वे सब के सब मल्लदत्त कुमार जहां बैठा

મલ્લી કુમારીના અંગમાં જ્યાં જ્યાં જે જે સૌંદર્યના શુભો છે તે બધા શુભોને તે મલ્લીકુમારીના ચિત્રમાં અંકિત કરે. આ પ્રમાણે જ્યાંયે તેણે વિચાર કર્યો-( સંપેહિત્તા ) અને તે વિચાર ને અનુસરતાં જ

( ભૂમિભાગં સઙ્ગેહ, સઙ્ગિત્તા મલ્લીએ વિ પાયંયુદ્ધાનુસારેણ જાવિ નિવ્વત્તેહ તર્ણં સા ચિત્તગરસેણી ચિત્તસમં હાવમાવ જાવચિત્તેહ, ચિત્તિત્તા જેણેવ મલ્લદિન્ને કુમારે તેણેવ જાવ એતમાણસિયં પચ્ચપ્પિણહ )

તેણે તે જગ્યાને સ્વલુ બનાવી અને માર્જન લેપન વગેરેથી તે સ્થાનને સાફ કર્યું સાફ કર્યો બાદ તેણે પહેલાં બેથેલા મલ્લી કુમારીના ચગના અંગુડા ના જેવું જ આબેહૂબ શુભોપેત રૂપ ચિત્ર અંકિત કર્યું.

ત્યાર બાદ ચિત્રકારોએ જ્યાંયે ચિત્રગૃહને હાવભાવ વિલાસ અને વિવ્ચોકનાં ચિત્રોથી ચિત્રિત કરી આપ્યું ત્યારે તેઓ બધા જ્યાં મલ્લદત્ત

चित्रितमस्माभिरित्येवं चित्रकारश्रेणिः कथयति स्मेत्यर्थः। ततः खलु मल्लदत्तश्चित्र-  
कारश्रेणिं 'सकारेइ' सत्कारयति, वचनादिना, संमानयति=वस्त्रादिना । 'संकां-  
रित्ता' सत्कार्यं-सत्कारं कृत्वा 'सम्माणित्ता' संमान्य विपुलं=विस्तीर्णं 'जीवि-  
यारिहं' जीविकार्हं=वृत्तियोग्यं, 'पीइदाणं' प्रीतिदानं=परमहर्षहेतुकं दानं ददाति  
दत्त्वा प्रतिविसर्जयति । ततः खलु मल्लदत्तोऽन्यदा-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये  
स्नातोऽन्तः पुरपरिवारासंपरिहृतः 'अम्मघाईए' अम्माधात्र्या=उपमात्रा सार्धं यत्रैव  
चित्रसमा=चित्रगृहं वर्तते, तत्रैवोपागच्छति । उपागत्य चित्रसमामनुभवविशति=  
चित्रगृहे प्रवेशं करोति, अनुभवित्य हावभावविलासविब्रोककलितानि रूपाणि=

था-वहाँ आये-आकर के उन्होंने उससे कहा स्वामिन् ! हमलोगों  
आपकी आज्ञानुसार चित्र गृह को चित्रित कर दिया है-(तएणं) इस  
प्रकार चित्रकारों के मुख से सुनकर (मल्लदिन्ने कुमारे चित्तंगरसेणिं-  
सकारेइ, सम्माणेइ, सकारित्ता सम्माणित्ता, विपुलजीवियारिहं पीइ-  
दाणं दळेइ, दलित्ता पडिविसज्जेइ) मल्लदत्त कुमारने उस चित्रकार  
श्रेणी का सत्कार किया सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिरउस  
ने उसे विपुल जीविकाके योग्य प्रीतिदान दिया-और बाद में उसे  
विसर्जित कर दिया । (तएणं मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अंतेउरपरियाल  
संपरिखुडे अम्मघाईए सद्धि जेणेव चित्तसमा तेणेव उवागच्छइ) इसके  
पश्चात् किसी एक दिन वह मल्लदत्त कुमार स्नान कर के अन्तः पुर  
परिवार से युक्त होकर अपनी अम्माधात्री के साथ जहाँ चित्रगृह था  
वहाँ गया-(उवागच्छित्ता चित्तसमं अणुपविसइ अणुपविसित्ता हावभाव

कुमार भेडा डेता त्यां आव्या अने आवीने तेजोअे आ प्रभाखे कहुं-डे  
डे स्वामिन् ! तभारी आज्ञा मुज्ज अजोअे चित्रगृह तैयार करी दीधुं छे.  
'(तएणं)' आ रीते चित्रकारे ना भोंधी सांझणीने

(मल्लदिन्ने कुमारे चित्तंगरसेणिं सकारेइ, सम्माणेइ, सकारित्ता सम्माणित्ता,  
विपुलजीवियारिहं पीइदाणं दळेइ, दलित्ता पडिविसज्जेइ )

मल्लदत्त कुमारने चित्रकारोंनुं सत्कार तेमज्ज सन्मान कथुं, सत्कार अने  
सन्मान करीने तेखे तेमने पुष्कण प्रभाखुभां लुविकायोग्य प्रीतिदान आभ्युं  
अने त्थार पछी तेजोअे नवानी रत्न आपी.

( तएणं मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अंते उरपरियाल संपरिखुडे अम्मघाईए सद्धि  
जेणेव चित्तसमा तेणेव उवागच्छइ )

त्थार पछी डेअे जोक द्विच मल्लदत्त कुमार स्नान करीने रघुवासना  
परिवारने साथे वधने पोतानी अम्माधात्रीनी साथे न्यां चित्र गृह डहुं त्यां गये

ચિત્રાણિ પદ્યન્ યઙૌ મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયાઃ, ' તયાણુરૂવે ' તદનુરૂપં = તત્સદૃશં, રૂપં=ચિત્રં ' ણિન્વત્તિષ્ ' નિર્વર્તિતં = રચિત માસીત્ તઙૌવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય= ગન્તું પ્રવર્તતેસ્મ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

મૂલ્ય-તણ્ણં સે મલ્લદિન્ને કૂમારે મલ્લીષ વિદેહરાયરવ-  
કન્નાણ તયાણુરૂવે રૂવે નિન્વત્તિયં પાસઈ, પાસિત્તા ઇમેયારૂવે  
અઙ્ગસ્થિષ્ જાવસમુપજિત્થા-એસ ણં મલ્લીવિદેહરાયરવકન્ન-  
ત્તિકદ્દુ લજ્જિષ્ વીડિષ્ વિઅડે સણિયં પચ્ચોસક્કઈ । તણ્ણં  
મલ્લિદિન્નં અમ્મધાઈ પચ્ચોસક્કંતં પાસિત્તા એવં વયાસી-કિન્નં  
તુમં પુત્તા! લજ્જિષ્ વીડિષ્ વિઅડે સણિયં સણિયં પચ્ચોસક્કઈ?,

તણ્ણં સે મલ્લદિન્ને અમ્મધાઈ એવં વયાસી-નો જુત્તં ણં  
અમ્મો ! મમ જેઠાણ ભગિણીણ દેવયમ્બ્યાણ લજ્જાણિજ્ઞાણ મમ  
ચિત્તગરણિન્વત્તિયં સમં અણુપવિસિત્તણ્ણ?, તણ્ણં અમ્મધાઈ  
મલ્લદિન્નં કૂમારં એવં વયાસી-નો ખલ્લુ પુત્તા ! એસ મલ્લી,  
એસ ણં મલ્લીણ વિદેહરાયરવકન્નાણ ચિત્તગરણં તયાણુરૂવે

વિલાસવિમ્બોયકલિયાઈ રૂવાઈ પાસમાણે જેણેવ મલ્લીણ વિદેહરાયરવ-  
કન્નાણ તયાણુરૂવે ણિન્વત્તિષ્ તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ) વહાં જાકર ચિત્ર-  
ગૃહ મેં પ્રવિષ્ઠ હુઆ-પ્રવિષ્ઠ હોકર હાવભાવ, વિલાસ એવં વિન્વોક સે  
યુક્ત ડન રૂપોંકો ચિત્રોં કો-વારં દેસતા હુઆ વહ જહાં વિદેહ રાજવ-  
રકન્યા કા તદનુરૂપ ચિત્ર બના હુઆ થા ડત્ત ઓર ગથા ॥ સૂત્ર ૨૭ ॥

( ઉવાગચ્છિત્તા ચિત્તસમં અણુપવિસઈ અણુપવિસિત્તા હાવભાવવિલાસવિમ્બોય  
કલિયાઈ રૂવાઈ પાસમાણે ૨ જેણેવ મલ્લીણ વિદેહરાયરવકન્નાણ તયાણુરૂવે-  
ણિન્વત્તિષ્ તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ )

ત્યાં પહેંચીને તે ચિત્રગૃહમાં ગયો અને જઈને હાવભાવ વિલાસ  
અને ણિન્વોકવાળા તે ચિત્રોને જોતાં તે જ્યાં વિદેહ રાજવર કન્યાના જેવું  
જ ચિત્ર દોરેલું હતું તે તરફ ગયો ॥ સૂત્ર “ ૨૭ ” ॥

रूवे णिव्वत्तिए । तएणं मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते एवं वयासी-केसणं भो चित्तयरए अपत्थिय पत्थिए जाव परिवज्जए जेणं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवय-  
भूयाए जाव निव्वत्तिए त्तिकट्ठु तंचित्तगरं वज्झं आणवेइ, तएणं सा चित्तगरसेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिंयं जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी-एवं खलु सामी ! तस्स चित्तग-  
रस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नगया, जस्स णं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेइ, तं माणं सामी ! तुब्भे तंचित्तगरं वज्झं आणवेह, तं तुब्भे णं सामी ! तस्स चित्तगरस्स अन्नं तया-  
णुरूवं दंडं निव्वत्तेह । तएणं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ. छिंदावित्ता निव्विसयं आणावेइ ॥ सू०२८ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि ! ततस्तदनन्तरं खलु स मल्लदत्तः कुमारो मल्लया विदेहराजवरकन्यायाः=स्वाम्रजाताया भगिन्याः ‘तयाणुरूवं’ तदनु रूपं=मल्लीसदृशं रूवं=रूपं चित्रं, ‘निव्वत्तिं’ निर्वर्तितं=चित्रकारद्वारेण रचितं, पश्यति । इट्ठा ‘इमेयारूवे’ अयमेतद्रूपः=अयं वक्ष्यमाणस्वरूपः, ‘अज्झत्थिए’ आध्यात्मिकः=आत्मगतः, यावत्=संकल्पः, ‘समुपज्जित्था’ समुपपद्यत=संजातः-एषा

‘तएणं से मल्लदिन्ने कुमारे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से मल्लदिन्ने कुमारे) उस मल्लदत्त कुमार ने (विदेहराजवरकन्याए मल्लीए तयाणुरूवं निव्वत्तिं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था) विदेह राज की वर-

‘तएणं से मल्लदिन्ने कुमारे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्थार भा६ (से मल्लदिन्ने कुमारे) ते भद्रे इत्युभारे (विदेह राजवरकन्याए मल्लीए तयाणुरूवं निव्वत्तिं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था )

खलु मल्ली विदेह राजवरकन्या, इति कृत्वा लज्जितः=सामान्यतः, व्रीडितः=विशेषतो लज्जितः, व्यर्दः=सर्वथा लज्जां प्राप्तः सन् शनैः शनैः 'पञ्चोसकह' प्रत्यवस्कृते=तस्मात् स्थानात् प्रतिनिवर्ततेस्म । ततस्तदनन्तरं खलु मल्लदत्तं=मल्लदत्तकुमारम्, 'अम्माघाई' अम्बधात्री=मातृप्रतिनिधिरूपा धात्रीस्तन्यादि दानेन पोषिका उपमातेत्यर्थः, 'पञ्चोसकहंत' प्रत्यवस्कृत्मानं पश्चाद्विवर्त्तमानं दृष्ट्वा एवं=वक्ष्यमाण प्रकारेणावादीत्-हे पुत्र ! किं=कस्मात्कारणात् खलु त्वं लज्जितो व्रीडितो व्यर्दः=अत्यन्तं लज्जितः सन् शनैः शनैः प्रत्यवस्कृत्से ? । ततः खलु स मल्लदत्तकुमारः अम्बाधात्रीमेवमवादीत्-'अम्मो !' हे अम्ब ! 'नो जुत्तं' नो युक्तं=नो

કન્યા મલ્લીકુમારીકા કિ જો અપની બડી બહિન થી તદનુરૂપ ચિત્ર ચિત્ર-કાર દારક કે દ્વારા અદ્વિત કિયા ગયા જ્યોં હી દેલા-તો દેલકર ડસ-કેં મન મેં હસ પ્રકાર કા સંકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ-(એસણં મલ્લી વિદેહ-રાંયવરકન્નત્તિકદ્દુડુ લજ્જિણ, વીઢિણ વિઝડે સણિયં ૨ પન્ચોસકહ) યહતો વિદેહરાજ કી વર કન્યા મલ્લી કુમારી હૈ । એસા વિચાર કરવહ પહિલે તો લજ્જિત હુઆ-બાદ મેં વિશેષરૂપ સે લજ્જિત હુઆ । ઔર હંસ તંરહ વહ દુઃખિત હોકર ધીરે ૨ વહાં સે ચલદિયા । (તણં મંલ્લદિન્નં અમ્મધાઈ પન્ચોસકહંતં પાસિત્તા એવં વયાસી-કિન્નં તુમં પુત્તા લજ્જિણ વીઢિણ વિઝડે સણિયં ૨ પન્ચોસકહ ?) હસ તંરહ મલ્લીદત્તં કુમાર કો વહાં સે ધીમી ૨ ચાલ સે જાતા હુઆ દેલ્લકર ડસકી અમ્બા-ધાય ને ડસસે એસા કહા-કયોં તુમ લજ્જિત-વ્રીડિત એવં વિશેષ લજ્જિતં હોકર યહાં સે ધીરે ૨ ચલે જા રહે હો-(તણં સે મલ્લદિન્ને

જ્યારે પોતાની મોટી બહેન વિદેહવર કન્યા મલ્લીકુમારીનું ચિત્રકારવડે દોરાયેલું આયોદ્ધન ચિત્ર જોયું ત્યારે તે જોતાંજ તેના મનમાં વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે (એસણં મલ્લી વિદેહરાયવરકન્ય ત્તિકદ્દુડુ લજ્જિણ વીઢિણ વિઝડે સણિયં ૨ પન્ચોસકહ) આતો વિદેહરાજની વરકન્યા મલ્લી કુમારી છે. આમ વિચારીને પહેલાંતો તે લજ્જિત થયો અને ત્યાર બાદ તે ખૂબજ લજ્જિત થયો આ રીતે તે દુઃખી અવસ્થામાં ત્યાથી ધીમે ધીમે જતો રહ્યો.

(તણં મલ્લદિન્નં અમ્મધાઈ પન્ચોસકહંતં પાસિત્તા એવં વયાસી-કિન્નં તુમં પુત્તા લજ્જિણ વીઢિણ વિઝડે સણિયં ૨ પન્ચોસકહ ?)

આ રીતે મલ્લીકુમારને ત્યાંથી ધીમે ધીમે જતો જોઈને તેની અંબા-ધાયે કહ્યું કે-તમે કેમ લજ્જિત-વ્રીડિત અને અવિશેષ પીડિત થઈને અહીંથી ધીમે ધીમે જઈ રહ્યા છો. (તણં સે મલ્લાદિન્ને અમ્મધાઈ એવં વયાસી)

ચિત્તં ચલુ મમ જ્યેષ્ઠાયા મગિન્યા ગુરુદેવતભૂતાયાઃ, પૂજ્યાયાઃ, લજ્જનીયાયાઃ= લજ્જતે યસ્યાઃ સકાશાત્ સા લજ્જનીયા, 'કૃત્ય પ્રત્યયસ્ય બાહુલકત્વાદપાદાને-  
ડનીયર પ્રત્યયઃ' તસ્યા અગ્રે મમ ચિત્રકરનિર્વર્તિતાં સમાં=ચિત્રગૃહમ્ અનુપવેષ્ટુમ્.  
અત્ર ચલુ ચિત્રગૃહે મમ પૂજ્યા જ્યેષ્ઠા મગિની મલ્લીકુમારી સ્થિતાઽસ્તિ, તસ્માદત્ર  
મમ પ્રવેશકરણં નોચિત મિત્યર્થઃ । તતસ્તદનન્તરં ચલુ અમ્બાધાત્રીમલ્લદત્તં કુમાર  
મેવાદીત-હે પુત્ર ! નો ચલુ=નિશ્ચયેન ઇષા મલ્લીવર્તતે, કિંતુ એતત્ ચલુ મલ્લ્યા  
વિદેહરાજવરકન્યાયા ચિત્રકરેણ તદનુરૂપં રૂપં=ચિત્રં નિર્વર્તિતં=રચિતમસ્તિ ।  
તસ્માદત્ર લજ્જાકરણં તવ નોચિતમિતિ ભાવઃ ।

અમ્મધાર્હાઈં एवं वयासी) इस प्रकार सुनकर उस मल्लदत्त कुमारने अम्बा-  
धाय से ऐसा कहा-(णो जुत्तं णं अम्मो ! मम जेद्दाए भगिणीए गुरुदेवभू-  
आए मम चित्तगरणिव्वत्तिं सभं अणुपविसत्तए ) मुझे चित्रकार से  
निर्वर्तित इस चित्रगृहमें प्रवेश करना उचित नहीं है, कारण यहां मेरी  
गुरुदेव जैसा-पूज्य तथा जिसके समक्ष मैं लजाता हूँ-जिनके सामने  
आते जाते मुझे लज्जा आती है-ऐसी बड़ी बहिन बैठी हुई हैं ।

तात्पर्य इसका यह है कि इस चित्रगृह में मेरी पूज्य बहिन मल्ली  
कुमारी बैठी हुई है इसलिये उनके समक्ष मुझे यहां प्रवेश करते हुए  
लज्जा आती है । (तएणं अम्माधार्हाईं मल्लदिन्नं कुमारं एवं वयासी-नो  
चलु पुत्ता एस मल्ली-एसणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्त  
गरणं तयाणुरुवे चित्ते णिव्वत्तिए ) ऐसा सुनकर अम्बाधात्री उपमाता  
ने मल्लदत्त कुमारसे इस प्रकार कहा-हे पुत्र ! ये स्वयं मल्ली कुमारी  
नहीं हैं-यह तो विदेहराजकी उत्तम कन्या उन मल्ली कुमारी का चित्र

આ પ્રમાણે સાંભળીને તે મલ્લદત્ત કુમારે અંબાધાય ને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-

( ણો જુત્તં ણં અમ્મો ! મમ જેદ્દાએ મગિણીએ ગુરુદેવભૂયાએ લજ્જણિ-  
જ્ઞાએ મમ ચિત્તગરણિવ્વત્તિયં સમં અણુપવિસત્તએ )

ચિત્રકારો વડે ચિત્રિત કરવામાં આવેલા આ ચિત્રગૃહમાં પ્રવેશવું મારા માટે  
ઉચિત નથી કેમકે શુરુદેવ જેવી પૂજનીય તેમજ જેમની સામે જતાં પશુ હું  
લજ્જિત થાઉં છું એવા મારા મોટાં બહેન અહીં બેઠાં છે.

મતલબ એ છે કે આ ચિત્રગૃહમાં મારી પૂજ્ય-બહેન મલ્લી કુમારી  
બેઠી છે. એથી તેમની સામે જતાં મને લજ્જા આવે છે

( તएणं अम्माधार्हाईं मल्लदिन्नं कुमारं एवं वयासी-नो ચલુ પુત્તા એસમલ્લી  
एसणं मल्लीए विदेह रायवरकन्नाए चित्तगरणं तयाणुरुवे चित्ते णिव्वत्तिए )

આ પ્રમાણે સાંભળીને અંબાધાત્રી ઉપમાતા એ મલ્લદત્ત કુમારને કહ્યું કે  
કે હે પુત્ર ! આ બાતે મલ્લીકુમારી નથી પણ આ તો વિદેહરાજની ઉત્તમ



તતસ્તદન્તરં સ્વલુ મલ્લદત્તઃ=મલ્લદત્તકુમારઃ, અમ્બાધાત્રયા એતસ્મ=ઉત્તરુપ્, અર્થ મૃત્વા, આશુરુત્તઃ=શીઘ્રં ક્રોધાચિદ્ધઃ, એવં=વધ્યમાણપ્રકારેણ, અવાદીત્-ક એપ સ્વલુ મોઃ! ચિત્રકરઃ ‘અપત્થિયપત્થિય’ અપાર્થિતપાર્થિતઃ યત્ કેનાપિ ન પ્રાર્થ્યતે, તદપ્રાર્થિતં મરણં તત્ પ્રાર્થિતં યેન સોઽપ્રાર્થિત પ્રાર્થિતઃ મરણવાઙ્મક હત્યર્થઃ યાવત્ પરિવર્જિતઃ=શ્રીહ્રીધૃતિ કીર્તિ પરિવર્જિતઃ, એતદ્વૈવાધ્યયને પ્રાગ્ વ્યાખ્યાતસ્મ, યેન સ્વલુ મમ જ્યેષ્ઠાયા મગિન્યા ગુરુ દૈવતભૂતાયાઃ=પૂજ્યાયાઃ, યાવત્-તદનુરૂપં ‘નિવ્વત્તિએ ચિક્કહુ’ નિર્વર્તિતસ્મ?, ઇતિકૃત્વા=ઇત્યુક્ત્વા, તં ચિત્રકારં વધ્યં=હન્તવ્યમ્-આજ્ઞાપયતિ યેન મલ્લીચિત્રં લિખિતં સ ચિત્રકારો હન્તવ્ય હત્યાજ્ઞાં દત્તવાનિત્યર્થઃ। તત સ્વલુ સા ચિત્રકર શ્રેણિરસ્યા ઉત્તરુપાયાઃ કથાયા-

કારને તદનુરૂપ ચિત્ર બનાયો છે। ફસલિયે યહાં લડ્ડા કરના તુમ્હે યોગ્ય નહીં હૈં। (તણં મલ્લદિન્ને અમ્મધાઈએ એમદું સોચ્ચા આસુરત્તે એવં બયાસી) અમ્બાધાય કે મુખ સે એસી બાત સુનને કે બાદ મલ્લ-દત્ત કુમાર ને ડસ અપની અમ્બાધાય સે ક્રોધ મેં મરે હુએ હોકર ફસ પ્રકાર કહાઃ-(કેસણં મો! ચિત્તયરએ અપત્થિયપત્થિએ જાવ પરિવર્જિએ જેણં મમ જેઢાએ મગિનીએ ગુરુદેવમૂયાએ જાવ નિવ્વત્તિએ) અરે! કૌન એસા મરણ વાઙ્મક તથા શ્રી હ્રીધૃતિ, એવં કીર્તિ સે પરિવર્જિત ચિત્ર-કાર હૈં કિ જિસને ગુરુદેવ જેસા-પૂજ્ય મેરી જ્યેષ્ઠ મગિની કા યહાં તદ-નુરૂપ ચિત્ર ચિત્રિત કિયા હૈ। (ત્તિકદ્દુતં ચિત્તગરં વજ્જં આણવેદ) ફસ પ્રકાર કહકર ડસને ડસ ચિત્રકાર કો વધ્ય ઘોષિત કર દિયા।

જિસ ચિત્રકાર ને મેરી પૂજ્ય જ્યેષ્ઠ મગિની કા યહ ચિત્ર યહાં લિખા હૈ-વહ વધ્ય હૈ ફસ પ્રકાર ડસને આજ્ઞા દેવી-(તણં સા

કન્યા મલ્લીકુમારીનું આગેહૂબ દોરાયેલું ચિત્ર છે. એથી અહીં લલ્લા તમારા તમારા માટે યોગ્ય નથી. (તણં મલ્લદિન્ને અમ્મધાઈએ એમદું સોચ્ચા આસુરત્તે એવં બયાસી) અમ્બાધાય ના મોથી આ વાત સાંભળીને મલ્લદત્ત કુમારે તે પોતાની અમ્બાધાય ને ક્રોધમાં લાગીને કહ્યું કે-

(કેસણં મો! ચિત્તયરએ અપત્થિયપત્થિએ જાવ પરિવર્જિએ જેણં મમ જેઢાએ મગિનીએ ગુરુદેવમૂયાએ જાવ નિવ્વત્તિએ)

અરે! એવો કોણ મૃત્યુને આહવાર શ્રી, હ્રી, ધૃતિ અને કીર્તિ રહિત ચિત્રકાર છે કે જેણે ગુરુદેવ જેવા પૂજ્ય મારાં મોટાં ગહેનનું અહીં આગેહૂબ ચિત્ર દોર્યું છે. (ત્તિકદ્દુ તં ચિત્તગરં વજ્જં આણવેદ) આ પ્રમાણે કહીને તેણે તે ચિત્રકારને વધ્ય (મારવા યોગ્ય) ઘોષિત કર્યો.

મારા પૂજ્ય મોટા ગહેનનું જે ચિત્રકારે અહીં જે ચિત્ર દોર્યું છે તે વધ્ય છે આ રીતે તેણે પોતાની આજ્ઞા ઘોષિત કરી

લઘ્યાર્થા-જ્ઞાતાર્થા સતી યત્રૈવ મલ્લદત્તઃ કુમારસ્તત્રૌગોપાગચ્છતિ. ઉપન્ગત્ય કરતલ પરિગૃહીતં યાવત્-શિર આવર્ત મસ્તકેઽઞ્જલિં કૃત્વા જયવિજય શબ્દેન વર્ધયતિ=અભિનન્દયતિ, વર્ધયિત્વા, એવમવાદીત્-હે સ્વામિન્ ! एवं खलु तस्य चित्रकरस्य, इममेतन्प्राप्त=वक्ष्यमाणस्वरूपा चित्रकरलङ्घिलंन्धा=अर्जिता प्राप्ता=स्त्रायत्तीकृता अभिसमन्वागता=सम्यग्गासेविता, यस्य खलु द्विपदस्य वा यावत्-चतुष्पदस्य वा अपदस्य वा एकदेशमपि पश्यति तस्य खलु देशानुसारेण तदनु रूप रूपं 'निव्वत्तेइ' निर्वर्तयति=रचयति, तत्=तस्मात् हे स्वामिन् ! मा खलु यूयं तं चित्रकरं वध्य-चित्तगरसेणी इमीसे कहाए, लद्धद्वा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिगग्हियं जाव वद्धावेइ, वद्धाविस्ता एवं वयासी-एवं खलु सामी ! तस्स चित्तगरस्स इमेयाख्वा चित्तगरलद्धीलद्धा, पत्ता अभिसमन्नागया जस्सणं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेइ ) इस प्रकार इस उक्त रूप कथा का हाल जब उस चित्रकार त्रेणी को मालूम हुआ-तब वह जहां मल्लदत्त कुमार था वहां पहुँची पहुँच कर उसने उसे दोनो हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर धरकर नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा बधाई दी बधाई देकर फिर वह इस प्रकार कहने लगी-स्वामिन् ! उस चित्रकार को इस प्रकार की यह चित्रकार लब्धि प्राप्त हुई है-उस पर उसका अचि-कार जम गया है-उस का उसे अच्छी तरह अभ्यास हो चुका है-कि जिसकी बजह से वह किसी भी द्विपद, चतुष्पद, अपद का एक देश भी देखकर उसके अनुमार तदनु रूप चित्ररच देता है । (तं माणं सामी ।

( તુર્ણ સા ચિત્તગરસેણી ઇમીસે કહાए लद्धद्वा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने-कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिगग्हियं जाव वद्धावेइ, वद्धा-विता एवं वयासी एवं खलु सामी ! तस्स चित्तगरस्स इमेयाख्वा चित्तगरलद्धी लद्धा, पत्ता अभिसमन्नागया जस्सणं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेइ )

આ રીતે ચિત્રકારને ઉપરની બધી વિગતની બાજુ થઈ ત્યારે ન્યાં મલ્લદત્ત કુમાર હોતો ત્યાં તેઓ પહોંચ્યા અને પહોંચીને બંને હાથોની અંજલી બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરતાં જય વિજયના શબ્દો ઉચ્ચારતાં તેણે કહ્યું—હે હે સ્વામિન્ ! તે ચિત્રકારને આ પ્રમાણેની વિશેષ શક્તિ પ્રાપ્ત થઈ છે તે કલા ઉપર તેના પૂરે પૂરો અધિકાર આવી ગયો છે. તે સારી પેઠે અભ્યસ્ત થઈ ગયો છે એથી તે કોઈ પણ દ્વિપદ ( માણસ ) ચતુષ્પદ ( પશુ ) અને અપદ ( સાપ વગેરે ) ના કોઈ પણ એક દેશને જોઈને તે મુજબ તેના જેવું જ ચિત્ર દોરી આપે છે. ( તં માણં સામી ! તુન્ને-

માજ્ઞાપયત-વધાર્થમાજ્ઞાં મા કુરુતેત્યર્થઃ, તત્=તસ્માત્ હે સ્વામિન્ ! યુયં સ્વહુ તસ્ય ચિત્રકરસ્યાન્યં તદનુરૂપં ચિત્રકરાપરાધસદૃશં, ઘટ્ટં ' નિવ્વત્તેહ ' નિર્વૈત્તયત=કુરુત । તત્=ચિત્રકરશ્રેણિસવિનયવચનશ્રવણાનન્તરં, સ્વહુ સ મલ્લદત્તસ્તસ્ય - મલ્લીચિત્રં રચયિતુઃ, ચિત્રકરસ્ય ' સંઢાસગં ' સન્દંશકમ્=કરુજઙ્ઘયોઃ સન્ધિ નાઢીરૂપમિત્યર્થઃ, ' છિંદાવેહ ' છેદયતિ-કર્તયતિસ્મ યત્તુ-' સંઢાસંગતિ ' હસ્તૌ છેદયતિસ્મ' ઇતિવ્યાખ્યાતં-તદ જ્ઞાનવિઙ્ઘમ્ભિતમ્-તેઝૈવ ચિત્રકરેણ' હસ્તિનાપુરે નગરે ગત્વા પુનર્મલ્લીચિત્રં રચિતમિત્યેતદર્થં પ્રતિવોધકમૂલપાઠવિરોધાત્ હસ્તામાથે ચિત્રલેખના-

તુભ્યે તે ચિત્તાગરં વજ્ઞં આણવેહ ) હસલિયે હે સ્વામિન ! આપ ઉસ ચિત્રકાર કો મારને કી આજ્ઞા પ્રદાન ન કીજિયે (તં તુભ્યેણં સામો ! તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ અન્નં તયાણુરૂવં દંઢં નિવ્વત્તેહ, તણ્ણં સે મલ્લદિન્ને તસ્સ ચિત્તગરસ્સ સંઢાસગં છિંદાવેહ, છિંદાવિત્તા નિવ્વિસયં આણવેહ ) કિન્તુ હે નાથ ! આપ ઉસ ચિત્રકર કો બતાયે ગયે હસ ચિત્ર કે અનુસાર કિસી ઔર દસરે દંઢ કા નિર્વારણકર દીજિયે-હસ પ્રકાર ચિત્રકાર શ્રેણી કે વચન સુનને કે બાદ મલ્લદત્ત કુમાર ને ઉસ મલ્લી કે ચિત્ર બનાને વાલે ચિત્રકાર કી ઉરુ ઔર જંધાઔં કી સંધિ કો છિંદવા દિયા-કતરવા દિયા-

( જો " સંઢાસંગતિ " કિસી ૨ ટીકાકાર ને એસા માન કર " ઉસ કે દોનોં હાથ કટવા દિયે " હસ પ્રકાર કા વ્યાખ્યાન કિયા હૈ વહ ઠીક નહી જ્ઞાન હોતા હૈ-કારણ " હસી ચિત્રકાર ને હસ્તિનાપુર મેં જાકર મલ્લી કુમારીકા ચિત્ર રચા હૈ " એસા જો આગે મૂલપાઠ આનેવાલા ઉસ

તં ચિત્તાગરં વજ્ઞં આણવેહ ) એથી હે સ્વામિન્ ! તમે તે ચિત્રકારને મારવાની આજ્ઞા માંડી વાળો.

( તં તુભ્યેણં સામો ! તસ્સ ચિત્તાગરસ્સ અન્નં તયાણુરૂવં દંઢં નિવ્વત્તેહ, તણ્ણં સે મલ્લદિન્ને તસ્સ ચિત્તગરસ્સ સંઢાસગં છિંદાવેહ, છિંદાવિત્તા નિવ્વિસયં આણવેહ ) એને હે નાથ ! તમે ચિત્રકારને તે ચિત્ર બદલ બીજી ગમે તે સભ કરો. આ પ્રમાણે ચિત્રકારોનાં વચન સાંભળીને મલ્લદત્તકુમારે મલ્લીકુમારીનું ચિત્ર બનાવનાર ચિત્રકારના ઉરુએ-બાંધાએના સાંધાએને કપાવી દીધા.

" સંઢાસંગતિ " આ પ્રમાણેના પાઠના આધાર લખને કેટલાક ટીકાકારો આમ માનતા થયા છે કે તે ચિત્રકારના બંને હાથ પણ કપાવવામાં આવ્યા હતા. પણ હકીકતમાં આ વાત સત્યથી વેગળી છે કેમકે એ જ ચિત્રકાર આગળ હસ્તિનાપુરમાં બંધને મલ્લીકુમારીનું ચિત્ર દોરે છે આ પ્રમાણે જે

संभवात् । छेदयित्वा 'निष्ठासयं' निर्विषयम्-विषयान्निर्गतं स्वदेशात् बहिर्गन्तु-  
मित्यर्थः, आज्ञापयति=आज्ञां दत्तवान् ॥ सू०२८ ॥

मूलम्—तएणं से चित्तगरए मल्लदिन्नेण णिव्विसए आणत्ते  
समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयराओ णिक्ख-  
मइ, णिक्खमित्ता विदेहजणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव कूरु-  
जणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ, उवा-  
गच्छित्ता भंडणिक्खेवं करेइ, करित्ता चित्तफलं सज्जेइ, स-  
ज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेण एवं  
णिव्वत्तेइ, णिवत्तित्ता कक्खंतरांसि लुब्भइ, लुब्भित्ता महत्थं  
जाव पाहुडं गिणहइ, गिणिहता हत्थिणापुरं नयरं मज्झं मज्झेणं  
जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं  
करयल जाव बद्धाविता पाहुडं उवणेइ, उवणिता  
एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी ? मिहिलाओ राय-  
हाणीओ कूभगस्स रत्तो पुत्तेणं पभावईए देवीए अत्तएणं  
मल्लदिन्नेणं कूमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए  
तं इच्छामिणं सामी ! तुब्भं बाहुच्छाया परिगहिए जाव परि-  
वसित्तए, तएणं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगरदारयं एवं

का फिर विरोध आवेगा । हाथों के बिना चित्र लिखना कैसे बन सकता  
है । जंघा कटवा देने के बाद फिर उस ने उसे अपने देश से बाहर  
चले जाने की आज्ञा दे दी । “ २८ ”

भूय पाठ आगण आवशे तेनी साथे हाथ कपाववानी उक्त बात भक्ष  
येसती नथी, हाथ वगर चित्र दोरी व कर्ष रीते शक्य ?

मल्लदिन्नेकुमारे नान्धाओ कपाववानी सज्ज करीने ते चित्रकारने देशवटो  
आये। ॥ सूत्र “ २८ ” ॥

वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! मल्लदिण्णेणं निव्विसए  
आणत्ते ? तएणं से चित्तयरदारए अदीसत्तुरायं एवं वयासी-  
एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे -अण्णया कयाइं चित्त-  
गरसेणिं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-तुम्हे णं देवाणु-  
णुप्पिया ! मम चित्तसभं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव मम  
छिंदावेइ, छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ, तं एवं खलु सामी !  
मल्लदिण्णे कुमारेणं निव्विसए आणत्ते ।

तएणं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वयासी - से  
केरिसए णं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तयाणुरुव्वे-रुव्वे नि-  
व्वत्तिए ? तएणं से चित्तगरदारए कक्खंताराओ चित्तफल्यं  
णीणेइ, णीणित्ता अदीणसत्तूस्स उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी  
-एसणं सामी ! मल्लीए विदेहराजवरकन्नाए तयाणुरुव्वस्स  
रुव्वस्स केइ आगारभावपडोयारे निव्वत्तिए, णो खलु सक्के  
केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकणगाए तयाणु-  
रुव्वे रुव्वे निव्वत्तिए, तएणं अदीणसत्तू पडिरुव्वजणियहासे  
दूयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी - तहेव जाव पहारेत्थ  
गमणयाए ॥ सू० ॥

टीका—‘तएणं से इत्यादि । ततस्तदन्तर खलु स चित्रकारो मल्लदत्तेन निर्वि-  
पयः=देशनिर्गतो भवितुम् आज्ञाप्तः सन् समाण्डामत्रोपकरणमादाय=स्वशृङ्गमागत्य

‘ तएणं से चित्तगरए ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चित्तगरए) वह चित्रकार (मल्ल दिन्ने  
णं निव्विसए आणत्ते समाणे) मल्लदत्त कुमारसे देशसे बाहिर निकल

‘ तएणं से चित्तगरए ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्यागणाद ( से चित्तगरए) अत्रिआर (मल्लदिन्नेणं निव्विसए  
आणत्ते समाणे ) मल्लदत्तकुमार पडे अयाओही देश अडार ज्ञानी आआ सांख्यीने

स्वकोय भाण्डाद्युपकरणं गृहीत्वा मिथिकातो नगरीतो निष्क्रामति=वहिर्निस्सरति निष्क्रम्य विदेहं जनपदं=विदेहदेशस्य मध्यमध्येन=मध्येभूत्वा प्राकृतत्वात् षष्ठ्यर्थे द्वितीया, यत्रैव कुरुजनपदः=कुरुनामको देशः, यत्रैव हास्तिनापुरं नगरं, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'मंडनिकखेवं' भाण्डनिक्षेपं=भाण्डाद्युपकरणानां स्थापनं करोति कृत्वा 'चित्तफलकं' चित्रफलकं=चित्रणोपपट्टकं यस्मिन् पट्टके चित्रं रचनीयं तदित्यर्थः, सज्जयति=मार्जनलेपादिना संस्फुरीति, सज्जयित्वा मल्लया त्रिदेहराज-

जाने के लिये आज्ञप्त होता हुआ ( समंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ णिक्खमिप्ता विदेह जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव कुरु जणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ ) अपने घर आया-वहां आकर उसने अपने भाण्ड आदि उपकरणों को लिया-और लेकर फिर वह मिथिला नगरीसे बाहिर निकल गया-निकल कर वह विदेह जनपद के बीच से होकर जहां कुरु जनपद था और जहां हस्तिनापुर नगर था-वहां आये- ( उवागच्छित्ता मंडनिकखेवं करेइ, करित्ता चित्तफलकं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्टानुसारेणं रुवं णिव्वत्तेइ ) वहां आकर के उस ने अपने भांड आदि उपकरणों को यथास्थान रख दिया-रखकर के फिर उसने चित्र फलक को-जिस में चित्र रचा जाता है उस पट्टिये को-मार्जन लेप आदि से ठीक ठाक किया-अर्थात् पहिले उसने उस पट्टि को साफ किया पश्चात् उस पर रंग आदि का लेप लगाया ।

( समंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ णिक्खमिप्ता विदेह जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरनयरे तेणेव उवागच्छइ ते पोताने घेर आओये अने त्यांथी तेण्हे बांड-वासण्ण वगेरे वस्तुओ वीधी. वधने मिथिला नगरीनी पढार नीकओये अने नीकणीने विदेह जणपदनी वन्ने थधने न्यां कुरुजनपद छंतुं अने न्यां हस्तिनापुर नगर छंतुं त्यां-ओये. )

( उवागच्छित्ता मंडनिकखेवं करेइ, करित्ता चित्तफलकं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए त्रिदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्टानुसारेणं रुवं णिव्वत्तेइ )

त्यां वधने तेण्हे पोतानी बांड वगेरे वस्तुओने उचित स्थाने गोठवी वीधी अने गोठवीने चित्र इलकुं-ओटवे के जेमां चित्र दोरवामां आवे छे ते पाटियातुं-भाज्जं लेपन वगेरे करीने तैयार कथुं. मतलब आ प्रभाण्णे छे के पढेलां तेण्हे पाटियाने स्वच्छ पनाओयुं तयारपछी रंग वगेरेनो लेप कर्यो,

વરકન્યાયાઃ પાદાહુઘ્વાનુસારેણ રૂપં=તદીયં ચિત્રં નિર્વર્તયતિ । નિર્વર્ત્ય 'કવલં-તરંસિ' કક્ષાન્તરે-કક્ષસ્થ=બાહ્યર્મ્પલસ્ય અન્તરે=આમ્યન્તરે 'હુષ્પહ' હુષ્પતિ ધરતીત્યર્થઃ । 'હુષ્પિત્તા' હુષ્વા=વૃત્ત્વા 'મહત્થં જાવ' મહાર્થં યાવત્-મહાર્થં, મહાર્થં, 'પાહુઢં' પ્રાશૃતમ્=ઉપહારં, ગૃહ્ણતિ, ગૃહીત્વા હસ્તિનાપુરં નગરં-હસ્તિના-પુરનગરસ્ય મધ્યમધ્યેન યત્રૈવ-અદીનસત્રુરાજા તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય તં કરતલ-યાવત્ કરતલ પરિગૃહીતં શિર આવર્તે મસ્તકેઽઙ્ગલિં કૃત્વા જપજયેતિ શબ્દેન વર્ધયતિ=અભિનન્દયતિ, વર્ધયિત્વા પ્રાશૃતમુપચયતિ=અગ્રે સ્થાપયતિ ઉપનીય એવ

બાદ મેં વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી કા ઉસકે ઉપર પાદ કે અંગુષ્ઠ કે અનુસાર તદનુરૂપ ચિત્ર રચા । ( ગિન્વત્તિત્તા કવલંતરંસિ હુષ્મહ, હુષ્મિત્તા મહત્થં જાવ પાહુઢં ગિન્હહ, ગિન્હિત્તા, હત્થિણા પુરં નયરં મઙ્ગલં મઙ્ગલેણં જેણેવ અદીણ સત્રુરાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) ચિત્ર રચકર કે ફિર ઉસને ઉસે અપની કાલિ મેં દબાયા-દબા કર મહાર્થં યાવત્ મહાર્થં પ્રાશૃત ( વહુ મૂલ્ય મેટ ) લિયા, ઓર લેકર હસ્તિનાપુર નગર કે બીચોં બીચ સે હોકર વહ જહાં અદીન શત્રુ રાજા થે વહાં ગયા- ( ઉવાગચ્છિત્તા તં કરયલ જાવ વદ્ધાવેહ, વદ્ધાવિત્તા પાહુઢં ઉવણેહ, ઉવણિત્તા એવં વયાસી ) વહાં જાકર ઉસને દોનોં હાથોં કી અંજલિ બના કર ઓર ઉસે મસ્તક પર રક્ષ કર રાજા કો નમસ્કાર કિયા બાદ મેં જય વિજય આદિ શબ્દોં દ્વોરા ઉન્હેં વધાઈ દી । વધાઈ દેકર ઉસ ને લાયે હુપ મેંટ કો ઉન કે સમક્ષ રક્ષ દિયા । રક્ષ દેને કે બાદ ફિર ઉસ

ત્યારણાહ ચિત્રકારે પગના અંગુઠાને અનુરૂપ વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી-કુમારીનું આબેહૂખ ચિત્ર દોર્યું.

( ગિન્વત્તિત્તા કવલંતરંસિ હુષ્મહ, હુષ્મિત્તા મહત્થં જાવ પાહુઢં ગિન્હહ ગિન્હિત્તા, હત્થિણાપુરં નયરં મઙ્ગલં મઙ્ગલેણં જેણેવ અદીણસત્રુરાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ )

ચિત્ર દોર્યા પછી ચિત્રને ખગલમાં ઇલાવીને મહાર્થ સાધક-ખુદુ જ મૂલ્યવાન ભેટ લીધી અને લઇને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઇને જ્યાં અદીનશત્રુ રાજા હતા ત્યાં ગયો.

ઉવાગચ્છિત્તા તં કરયલ જાવ વદ્ધાવેહ વદ્ધાવિત્તા પાહુઢં ઉવણેહ ઉવાણિત્તા એવં વયાસી ત્યાં જઈને તેણે ખને હાથોની અંગલી ઇલાવીને તેને માથે મૂકીને રાજા ને નમન કર્યા અને ત્યાર ણાહ તેણે 'જય વિજય' વગેરે શબ્દોથી રાજા ને વધામણી આપી. વધામણી આપીને ચિત્રકારે પોતાની પાસેની ભેટ રાજાની સામે મૂકી. ભેટ અર્પણ કર્યા બાદ તેણે રાજાને આ પ્રમાણે વિનંતિ કરી કે

मवादीत्—हे स्वामिन् । एवं खलु अहं मिथिलातो राजधानीतः कुम्भकस्य राज्ञः पुत्रेण प्रभावत्या देव्या आत्मजेन—अङ्गजातेन, मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषयः= देशाभिर्गन्तुम्=आज्ञप्तः सन् इह= अस्मिन् स्थाने, हव्यं=शीघ्रम् आगतः । तत्= तस्मात् हे स्वामिन् ! इच्छामि खलु शुष्माकं बाहुच्छाया परिगृहीतः—भुजवलाभ्रयं गृहीत्वेत्यर्थः यावत् परिवस्तुम्, अत्र—यावच्छब्देन—निर्मयः, निरुद्विग्नः सन्, सुख सुखेन, इतिबोध्यम् । ततः खलु सोऽदीनशत्रुराजा, तं चित्रकरदारकमेवमवादीत् हे देवानुप्रिय । किं=कुतः, खलु त्वं मल्लदत्तेन निर्विषयः—देशाद् बेहिर्गन्तुम्,

ने उन से इस प्रकार कहा—एवं खलु अहं सामी ! मिहिलाओ राय हाणीओ कुंभगस्त रण्णो पुत्तेणं, पभावईए देवीए अत्तएणं मल्ल दिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए ) हे स्वामिन् ! मिथिला राजधानी से वहाँ के कुम्भक राजा के पुत्र और प्रभावती के अंगज मल्लदत्त कुमार से देश से निर्वासित किया गया यहाँ आये हैं ।

( तं इच्छामिणं सामी ! तुम्हें बाहुच्छाया परिगृह्णिए जाव परिवसित्तए ) अतः हे स्वामिन् । मैं आगकी भुजच्छाया का आश्रय लेकर यहाँ रहना चाहते हैं । यहाँ “ यावत् ” शब्द से “ निर्मयः ” निरुद्विग्नः सन् सुखं सुखेन ” इस पाठ का संग्रह किया गया है । ( तएणं से अदीनसत्तू राया तं चित्तगरदारयं एवं वयासी—किन्ने तुमं देवानुप्पिया ! मल्ल दिन्नेणं निव्विसए आणत्ते ) उस की इस प्रकार बात सुनकर अदीन शत्रु राजा ने उस चित्रकर दारक से इस प्रकार पूछा—

( एवं खलु अहं सामी ! महिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्त रण्णो पुत्तेणं पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए )

हे स्वामीन् ! मिथिला राजधानीना प्रभावती देवीना अभयी जन्म पायेला कुंभक राजाना पुत्र मल्लदत्तकुमारो भने देशवटो आय्यो छे तेथी हुं अही' तमारो शरत्ते आय्यो छुं'.

( तं इच्छामि णं सामी ! तुम्हें बाहुच्छाया परिगृह्णिए जाव परिवसित्तए )

येथी हे स्वामी । हुं तमारो आहुंअयाना आश्रयमां अही' रहेवा आहुं छुं, अही' ' यावत् ' पढथी ' निर्मयः ' ' निरुद्विग्नः सन् सुखं सुखेन ' आ पाठने स'अहुं कस्वामां आय्यो छे

( तएणं से अदीन सत्तूराया तं चित्तगरदारयं एवं वयासी किन्ने तुमं देवानुप्पिया ! मल्लदिन्नेणं निव्विसए आणत्ते )

आ पात सांखणीने अदीनशत्रु राजाये चित्रकरदारकने आ प्रभाए छहुं



आज्ञप्तः ? ततः स चित्रकरदारकः, अदीनशत्रुं राजानमेवमवादीत्-हे स्वामिन् ! एवं खलु मल्लदत्तः कुमारोऽन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये, चित्रकरश्रेणिं चित्रकारान् शब्दयति=आहूतवान् । शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! यद्यं खलु मम चित्रसभां चित्रयत तं चेव सत्त्वं भाणियत्वं ' तदेव सर्वं भाणितव्यम्-इह चित्रकर विषयकं सरुलं पूर्वोक्तमेव वृत्तान्तं वाच्यमितिर्थः, ' जाव मम संडासअं छिंदावेइ ' यावन्मम सन्देशकं छेदयति । चित्रयत ' इत्यादि,

हे देवानुप्रिय । तुम किस कारण से मल्लदत्तकुमार से निर्वासित होने के लिये आज्ञप्त किये गये हो ( तर्णं से चित्तयरदारए अदीण सत्तूरायं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइं चित्तगरसेणिं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-तुव्वेणं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं तं चेव सत्त्वं भाणियत्वं जाव मम संडामगं छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ तं एवं खलु सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसये आणत्ते ) उस चित्रकर दारक ने तब अदीन शत्रु राजा से कहा-हे स्वामिन् ! मल्लदत्त कुमार ने किसी एक समय चित्रकारों की श्रेणी को बुलाया और बुलाकर उस से ऐसा कहा कि हे देवानुप्रियों ! तुम लोग मेरे इस चित्रगृह को चित्रित करो इस तरह पहिले की सब घटना उस चित्रकार ने अदीनशत्रु राजा को उरु और जंघाओं को छेदने तक की सुना दो । छिंदवा कर फिर उन्होंने मुझे

हे हे देवानुप्रिय ! मल्लदत्त कुमारे तमने शा क्षस्सुथी देशभांथी निवसित थइं ज्वानी आजा आपी छे ?

( तर्णं से चित्तयरदारए अदीण सत्तूरायं एवं वयासी-एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइं चित्तगरसेणिं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-तुव्वे णं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं तं चेव सत्त्वं भाणियत्वं जाव मम मंडाएणं छिंदावेइ छिंदावित्ता निव्विसयं आणवेइ तं एवं खलु सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसये आणत्ते )

चित्रकारदारके ल्यारे अदीनशत्रु राजाने इत्थं के छे स्वामीन् ! मल्लदत्त कुमारे ओक पणते चित्रकाराने जोडाव्या अने जोडावीने तेमने इत्थं के छे देवानुप्रियो ! तमे मारा चित्रगृहने चित्रित इत्थे. आ रीते चित्रकारे अदीन-शत्रुनी सामे ठुओ-जंघाओने कपाववा भुधीनी भधी विगत रत्न करी. अने तेणे अंते आ प्रभावे इत्थं के जंघाओने कपावीने मल्लदत्तकुमारे भने पोटाना

छेदयित्वा निर्विषयम्=देशनिष्कासनमाज्ञापयति ' तदेवं खलु हे स्वामिन् ! अहं मल्लदत्तेन कुमारेण निर्विषय आह्वतः ।

ततस्तदनन्तरं खलु अदीनशत्रु राजा तं चित्रकारमेवं वक्ष्यमाण प्रकारेण, अवादीत् — हे देवानुप्रिय ! तत् कीदृशं खलु त्वया मल्लयास्तदनु रूपं रूपं =चित्रं निर्वर्तितम् ? ततः खलु स चित्रकरदारकः कक्षान्तरात् = बाहुमूलाभ्यन्तराद् चित्रफलकं यस्मिन् मल्लयाश्चित्रं लिखितमासीत् तदित्यर्थः, ' गीणेइ ' नयति = बहिर्नयति बहिष्करोतीत्यर्थः, ' गीणिता ' नीत्वा अदीनशत्रोः राज्ञ उपनयति=अग्रे स्थापयति, उपनीय, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्=हे स्वामिन् ! एष खलु मल्लया-विदेहराजवरकन्यायाः पादाङ्गुष्ठानुसारेण तदनु रूपस्य तत्सदृशस्य रूपस्य चित्रस्य ' केइ ' कोऽपि कश्चित्, किञ्चिन्मात्रः ' आगार

देश से बाहर निकल जाने के लिये आज्ञा दे दी । इस तरह मल्लदत्त कुमार से निर्वासित होता हुआ-मैं यहां आया हूँ ।

(तएणं अदीणसत्तूराया तं चित्तगरं एवं वयासी-से केरिसएणं देवानुप्पिया । तुमे मल्लीए तयाणुरुवे रूवे निव्वत्तिए ? तएणं से चित्तगरदारए कक्खंतराओ चित्तफलयं गीणेइ, गीणिता अदीणसत्तुस्स उवणेइ) चित्रकर की इस बात को कर्णपथ करके अदीनशत्रु राजा ने उस चित्रकार से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! मल्लीकुमारी का चित्र तुमने तदनु रूप कैसा बनाया था । इस प्रकार राजा का वचन सुनकर उस चित्रकरदारक ने अपनी कक्षा के भीतर से दबे हुए उस चित्र फलक को कि जिसमें मल्लीकुमारी का चित्र अंकित किया हुआ था बाहर निकाला और बाहर निकाल कर उसे अदीनशत्रु राजा के समक्ष रख दिया । ( उवणिता एवं वयासी ) रखकर वह फिर इस

देशभांथी भंडार जता रडेवाने हुकग इथे छे. त्यांथी तेभनी आज्ञा प्रभाञ्जे भंडार नीङ्गीने हुं अहो आव्वा छुं.

(तएणं अदीण सत्तूराया तं चित्तगरं एवं वयासी-से केरिसएणं देवानुप्पिया । तुमे मल्लीए तयाणुरुवे रूवे निव्वत्तिए ? तएणं से चित्तगरदारए कक्खंतराओ चित्तफलयं गीणेइ, गीणिता अदीणसत्तुस्स उवणेइ )

चित्रकारनी पाठ सांझणीने अदीनशत्रु राजाजे ते चित्रकारने कछुं डे छे देवानुप्रिय ! मल्लीकुमारीनुं आणेहुण चित्र तमे डेनुं होथुं हुतुं ? आ रीते राजाना वयने सांझणीने चित्रकारदारडे मल्लीकुमारीनां चित्रपाणु इलक भग-दभांथी भंडार कडथुं अने तेने अदीनशत्रु राजानी सामे भूझी दीधुं. ( उवणिता एवं वयासी ) भूझीने तेजे राजाजे कछुं डे—

માવાપહોયારે ' આકારભાવપ્રત્યવત્તારઃ=આકૃતિચેષ્ટયોરાવિર્ભાવઃ, નિવ્વત્તિ' નિર્વર્તિતઃ, પાદાશુષ્ઠામાત્રદર્શનાનુમિતત્વેન મત્કૃતચિત્રેણ પૂર્ણરૂપેણાકૃતિ ચેષ્ટયોરાવિર્ભાવઃ કિંતુ સ્વરૂપ એવ પ્રકટોકૃત इत्यर्थः નો સ્વરૂપ શક્ય કેનાપિ દેવેન વ યાવત્-દાનવેન વા ગન્ધર્વેણ વા યક્ષેણ વા મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયાસ્તદનુ-રૂપં રૂપં નિર્વર્તયિતુમ્, તસ્યા મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયાઃ સ્વરૂપં લોકોત્તરં વર્ણનાતીત મસ્તિ, દર્શનાદેવ તત્સ્વરૂપસ્ય પૂર્ણ જ્ઞાનં મર્ચિતું શક્યતે, इति भावः । તતઃ સ્વલ્લુ અદીનશત્રુઃ ' પઢિરૂવજણિયહાસે ' પ્રતિરૂપ જનિતર્હર્ષઃ=પ્રતિરૂપં=ચિત્રં તેન જનિતસ્તદ્દર્શનસમુત્પન્નઃ, હર્ષઃ=સુત્વં કાર્યે કારણોપચારાદનુરાગોઽપિ હર્ષ इत्युच्यते, મલ્લીવિષયકાનુરાગ इत्यर्थः, સ યસ્યાસ્તિ સ તથા, મલ્લીચિત્ર દર્શન

પ્રકાર બોલા-(એસણં સામી ! મલ્લીએ વિદેહરાજવરકન્યાએ તયાણુરૂવ-સ્સ રૂવસ્સ કેહ આગારભાવપહિયારે નિવ્વત્તિએ, ણો સ્વલ્લુ સક્કે કેળહ દેવે-ણ વા જાવ મલ્લીએ વિદેહરાજવરકન્યાએ તયાણુરૂવે રૂવે નિવ્વત્તિએ) હે સ્વામિન્ ! મૈને વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લી કુમારી કે હસ પાદાંશુષ્ઠા-નુસાર સે અંકિત કિયે ગયે ચિત્ર કા થોડા સાહી-કિશ્ચિન્માત્ર-આકૃ-તિએવં ચેષ્ટાકા આવિર્ભાવ ચિત્રણ કિયા હૈ-મૈને યહ ચિત્ર મલ્લીકુમારી કા અંકિત કિયા હૈ-વહ ઉનકે અંગુષ્ઠ કો દેલ્લકર અવશિષ્ટ અઙ્ગાદિ કા અનુમાન લગાકર બનાયા હૈ ।

હસલિયે હસ ચિત્ર મેં કિશ્ચિન્માત્રા મેં હી ઉનકે આકારાદિકા અં-કન હુઆ હૈ પૂર્ણરૂપ સે નહીં । પૂર્ણરૂપ સે ઉન વિદેહરાજવરકન્યા મલ્લી કુમારી કે તદનુરૂપ ચિત્ર બનાને મેં ન કોઈ દેવતા સમર્થ હૈ, ન કોઈ દાનવ સમર્થ હૈ, ન કોઈ ગન્ધર્વ સમર્થ હૈ ઓર ન કોઈ યક્ષ હી સમર્થ

(એસણંસામી ! મલ્લીએ વિદેહરાજવરકન્યાએ તયાણુરૂવસ્સ રૂવસ્સ કેહ આગાર ભાવ પહોયારે નિવ્વત્તિએ ણો સ્વલ્લુ સક્કે કેળહ દેવેણ વા જાવ મલ્લીએ વિદેહરાજવર-કન્યાએ તયાણુરૂવે રૂવે નિવ્વત્તિએ )

હે સ્વામીન્ ! વિદેહરાજ વર કન્યા મલ્લીકુમારીનું તેમના પગના અંશુ-કાને બેઠને જ તેમની આકૃતિ અને ચેહરાઓના આછા ખ્યાલ આપતું ચિત્ર મેં દોર્યું છે. તેમના અંશુકાને બેઠને જ બાકીના બધા અંગોનું ચિત્રણ અનુમાનથી કરવામાં આવ્યું છે.

ઐથી આ ચિત્રમાં તેમના આકાર વગેરેનું અંકન ઓછી માત્રામાં જ થયું છે. વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીનું આબેહૂળ ચિત્ર બનાવવાનું સામર્થ્ય કોઈ દેવતામાં નથી કે નથી કોઈ દાનવમાં, નથી કોઈ ગન્ધર્વમાં કે નથી કોઈ યક્ષમાં.

समुत्पन्न तद्विषयकानुरागवानित्यर्थः । एवंभूतः सच्च द्रुतं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवा  
दीत्-‘तद्देव’ तथैव=काशीराजः शब्दः स्वदूतमुक्तवान्, तद्वदित्यर्थः, यावत् प्राधारयद्  
गमनाय=अदीनशत्रो राज्ञ आह्वया स दूतो रथारूढः सन् यत्रैव मिथिला नगरी  
तत्रैव गन्तुं प्रवृत्त इत्यर्थः । इति पञ्चमस्यादीनशत्रुनामकस्य राज्ञः सम्बन्धः  
कथितः ॥ सू० २९॥

सूत्रम्-तेषां कालेण तेषां समपणं पंचाले जणवए कंषिह्णे  
पुरे नयरे, तत्थणं जियसत्तू नामं राया पंचालाहिवई होत्था,  
तत्सणं जियसत्तूस्स धारिणी पामोक्खं देविसहस्सं ओरेहे  
होत्था, तत्थणं मिहिलाए चोक्खा नामं परिवाइया रिउव्वेद  
जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था, तएणं सा चोक्खा परिवाइया  
मिहिलाए बहूणं राईसर जाव सत्थवाह पभिइणं पुरओ दाण-  
धम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पणणवे-

है । (तएणं अदीनसत्तू पडिरुवजणियहासे दूयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी  
वयासी तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए ) इस प्रकार चित्रकर के मुख से  
सुनकर राजा ने उसे अपने राज्य में रहने के लिये खुशी से आज्ञा  
प्रदान कर दिया । चित्र के देखने से जिन्हें मल्लि विषयक अनुराग  
उत्पन्न हो गया है ऐसे उन कुरुदेशाधिपति अदीन शत्रु राजा ने अपने  
दूत को बुलाया-और, बुलाकर जिस प्रकार काशीराजा शंख ने अपने  
दूत से कहा था-उसी तरह इन्होंने भी उससे कहा । की आज्ञा प्राप्त  
कर वह दूत रथ पर आरूढ हो जहाँ मिथिला नगरी थी उस और  
चल दिया ॥ सूत्र २९ ॥

तएणं अदीनसत्तू पडिरुवजणियहासे दूयं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी  
तद्देव जाव पहारेत्थ गमणाए )

आ रीते चित्रकारना श्रेणी नधी विगत सांभलीने राज्ञे तेने पोताना  
राज्यमां रहवान्नी आज्ञा आपी दीधी । चित्रने जेधने न अदीनशत्रु राज्ञा  
भनमां भद्विदुभारी माटेने अनुराग उत्पन्न थइ गये । राज्ञे तुरत ओक  
इतने जोडाव्यो अने जेम काशीराज श'जे पोताना इतने कछु छटुं ते  
प्रभावे न तेबु पछु पोताना इतने कछु । आज्ञा भेगवनि इत रथ उपर सवार  
थयो अने जे तरइ मिथिला नगरी छती ते तरइ रवाना थयो ॥ सूत्र “ २९ ” ॥

माणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ, तएणं सा चोक्खा  
 परिव्वाइया अन्नया कयाई तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउर-  
 त्ताओ य गिण्हइ, गिणिहत्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनि-  
 क्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल परिव्वाइया सद्धिं संपरिवुडा  
 मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रत्तो भवणे  
 जेणेव कण्णतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवा-  
 गच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए  
 भिसियाए निसियइ, निसियित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए  
 पुरओ दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना  
 चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी-तुब्भेणं चोक्खे किंमूलए धम्मे  
 पन्नत्ते ? तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्ली विदेहरायवर-  
 कम्मं एवं वयासी-अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे,  
 जण्णं अम्हं किंचि असुइ भवइ, तएणं उदएण य मट्ठियाए  
 जाव अविग्घेणं सगं गच्छासो, तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्ना  
 चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी-चोक्खा ! से जहानामए केई  
 पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेजा अत्थिणं चोक्खा !  
 तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण धोवमाणस्स काई सोही ?,  
 नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा ! तुब्भेणं पाणाइवाएणं जाव  
 मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहावतस्स रुहिरकयस्स  
 वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोवमाणस्स, तएणं सा चोक्खा परिव्वा-  
 इया मल्लीए विदेहरायकन्नाए एवं दुत्ता समाणा संकिया  
 कंखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था.

मल्लीए णो संचाएइ किंचि वि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसि-  
णिया संचिट्ठइ, तएणं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडीओ  
हीलेंति निंदंति खिसंति गरहंति अप्पेगइया होरुयालति  
अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति, अप्पेगइया वाघाडीओ  
करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुभंति ।

तएणं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायकरकन्नाए दासचे-  
डियाहिं जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव  
मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जइ,  
मिसियं गिण्हइ, गिण्हित्ता कर्णतेउराओ पडिनिक्खमइ, परि-  
निक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता परिव्वाइया  
संपरिवुडा जेणेव पंचालजणवए, जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंपिल्लपुरे बहूणं राईसर० जाव  
परुवेमाणी विहरइ ॥ सू० ३० ॥

टीका—अथ षष्ठस्य जितशत्रुनाम्नो राज्ञः सम्बन्धपस्तावमाह—‘तेणं  
कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पञ्चालः अधुना पंजाबनाम्ना

इस तरह यह पञ्चमराजा का संबंध प्रकट किया है । अब छठेराजा  
का सम्बन्ध प्रकट करने के लिये सूत्रकार कहते हैं:—

तेणं कालेण तेणं समएणं इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेण तेणं समएणं) उस काल और उस समय में  
(पंचाले जणवए कंपिल्ले पुरे नयरे) पञ्चाल नामका देश (जो अभी पंजाब

आ रीते पञ्चमराजनो संबंध प्रकट करवाभां आये। छे. हुवे छठ्ठा  
राजनो संबंध स्पष्ट करवा भाटे सूत्रकार कहे छे—

‘तेणं कालेण तेणं समएणं’ इत्यादि

टीकार्थ—(तेणं कालेण तेणं समएणं) ते काले आने ते समये (पंचाले जणवए  
कंपिल्ले पुरे नयरे ) पञ्चाल नामे देश—के अन्धारे पंजाब नामे प्रसिद्ध छे.

प्रसिद्धः जनपदः—देशः आसीत् तत्र= तस्मिन् देशे 'कंपिलपुरे' काम्पिल्यपुरे ' =काम्पिल्यपुरनामके, 'नगरे' नगरे, जितशत्रुनाम राजा पञ्चाङ्गाधिपतिरासीत्, तस्य खलु जितशत्रो राज्ञो धारिणीप्रमुखा देवीसहस्रम् 'ओरोहे' अत्रोधे=अन्तःपुरे आसन् ।

इतश्च मिथिलायां नगर्यां खलु 'चोक्खा' चोक्षा=चोक्षानाम्नी परिव्राजिका ऋग्वेद—यावत्—चतुर्वेद परिनिष्ठिता श्रुतिस्मृत्यादिसकलशास्त्राभिज्ञा चाप्यासीत् । ततस्तदनन्तरं सा चोक्षा परिव्राजिका मिथिलायां नगर्यां बहूनां राजेश्वर—यावत् राजेश्वरतलवरकौटुम्बिकमाण्डविकश्रेष्ठिसार्धवाहपभृतीनां पुरतः = अग्रे, दानधर्मं च शौचधर्मं च तीर्थाभिषेकं तीर्थजलस्नानधर्मं च आरूपापयन्ती=आरूपानम्—आरूपातां कुर्वती कथयन्तीत्यर्थः, प्रज्ञापयन्ती=सम्यग बोधयन्ती, प्ररूपयन्ती=

नामसे प्रसिद्ध है) था। उस देशमें कांपिल्यपुर नामका नगर था। उसमें पंचाल देश के अधिपति जित शत्रु राजा रहते थे। (तस्सणं जियस-त्तुस्स धारिणी पामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे होत्था) उस जित शत्रु राजा के अन्तः पुर में धारिणी प्रमुख ? एक हजार देवियां थीं। (तत्थ णं मिहिलाए चोक्खानामं परिन्वाइया रिउब्बेय जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था) इस तरह मिथिला नगरी में ऋग्वेद आदि चारों वेदों की तथा स्मृति आदि समस्त शास्त्रों की परिज्ञाता चोक्षा नाम की परिव्राजिका भी रहती थी—(तएणं सा चोक्खा परिवाइया मिहिलाए बहूणं राइसर जाव सत्थवाहपभिहणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्था भिसेयं च आघवेमाणी पणवेमाणी परूवेमाणी उवहंसेमाणी, विहरइ)

होता। ते देशमां कांपिल्यपुर नामे नगर छत्तुं। तेमां पंचाल देशमा अधिपति जितशत्रु राजा रहैता छत्ता।

( तस्सणं जियसत्तुस्स धारिणी पामोक्खं देविसहस्सं ओरोहे होत्था )

जितशत्रु राजाना रक्षुवासमां धारिणी प्रमुखा ओक छत्ता रक्षुआ छत्ती।

( तत्थणं मिहिलाए चोक्खानामं परिन्वाइया रिउब्बेय जाव परिणिट्ठिया याविहोत्था )

मिथिला नगरीमां ऋग्वेद वगेरे आरे वेदे। तेमज्ज स्मृति वगेरे गंधा शास्त्रोने लक्षुनारी चोक्षा नामे ओक परिव्राजिका रहैती छत्ती।

( तएणं सा चोक्खा परिन्वाइया मिहिलाए बहूणं राई सरजाव सत्थवाह-पभिहणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च अघवेमाणी पणवे-माणी परूवेमाणी उवहंसेमाणी विहरइ )

दान शशास्त्रानुसारेण शौचादि धर्माणां विधि नियमभेदादि प्ररूपणां कुर्वती उपदर्शयन्ती=स्वाचरणेन साक्षात् कारयन्ती, विहरति=आस्तेस्म ।

ततस्तदनन्तरं सा चोक्षा परिव्राजिना अन्यदा कदाचित् अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये त्रिदण्डं=दण्डत्रयं च कुण्डिकां=कमण्डलु च यावत्=धातुरक्तानि वस्त्राणि गृह्णाति, गृहीत्वा 'परिव्वाङ्गावसहायो' परिव्राजिकावसथात्=परिव्राजिकानां मठात् 'पडिनिक्खमइ' प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य 'पविरल परिव्वाङ्गा' पविरलपरिव्राजिकाभिः=अल्पसंख्यकसंन्यासिकाभिः सार्धं=सह, संपरिवृता=युक्ता मिथिलां राजधानीं मिथिलाया राजधान्या इत्यर्थः मध्यमध्येन यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवनं यत्रैव 'कण्णंते उरे' कन्यान्तः पुरं, यत्रैव मल्ली विदेवारावरकन्या, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'उदयपरिफासियाए' उदकपरि

वह चोक्षा परिव्राजिका मिथिला नगरी में अनेक राजेश्वर, तलवर, कौटुम्बिक, माण्डविक, अष्टी, सार्धवाह आदिकों के समक्ष दान धर्म शौच धर्म, और तीर्थाभिषेक का कथन करती थी, उन्हें अच्छी तरह समझाती थी उस शौचादि धर्मों की अपने शास्त्रानुसारविधि नियम आदि के भेद से प्ररूपणा करती थी और अपने आचरण से साक्षात् उन का प्रदर्शन भी करती थी । ( तर्णं सा चोक्खा परिव्वाङ्गा अन्नया कयाइं तिदंडं च कुण्डियं च जाव धाउरस्तोओ य गिण्हइ, गिण्हत्ता परिव्वाङ्गावसहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्तो पविरलपरिव्वाङ्गासद्धिं संपरिवुडा मिहिला रायहाणि मज्झं मज्झेण जेणेव कुम्भगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णंतेउरे जेणेव मल्ली विदेह रायवरकन्ना-तेणेव उवागच्छइ ) एक दिन वह चोक्षा परिव्राजि का अपने त्रिदंड कमण्डलु, तथा गैरिक धातु से रक्त हुए वस्त्रों को लेकर

मिथिला नगरीमां चोक्षा परिव्राजिका वस्त्रा राजेश्वर, तलवर, कौटुम्बिक भांडविक, अष्टि, सार्धवाह वगैरेणी सामे दानधर्म, शौचधर्म आने तीर्थस्थान विषे धर्म अर्थ्या करती હતી. તેમને તે સારી પેઠે શીચ વગેરે ધર્મો તેમજ શાસ્ત્રાનુસાર વિધિ નિયમ વગેરેના બેદોની બાબતમાં સમજાવતી હતી. અને જાતે બધા શીચ વગેરે આચરણોને આચરીને પ્રત્યક્ષ રૂપમાં તેના દેખાવ કરતી હતી. (તર્ણ સા ચોક્ષા પરિવ્વાઙ્ગા અન્નયા કયાઈં તિદંડં ચ કુંડિયં ચ જાવ ધાઉર-સ્તોઓ ય ગિણ્હઈ, ગિણ્હિત્તા પરિવ્વાઙ્ગાવસહાઓ પડિનિક્કલમઈ, પડિનિક્કલમિત્તા પવિરલપરિવ્વાઙ્ગાસદ્ધિં સંપરિવુડા મિહિલા રાયહાણિ મજ્ઞં મજ્ઞેણ જેણેવ કુંભગસ્સ રન્નો ભવણે જેણેવ કણ્ણંતેઉરે જેણેવ મલ્લી વિદેહરાયવરકન્ના-તેણેવ ઉવાગચ્છઈ ) એક દિવસ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા પોતાના ત્રિદંડ, કમંડલુ તેમજ ગેરૂથી



સ્પૃષ્ટાર્યા=જલપ્રક્ષેપેણ સિક્તા, દર્મોપરિ 'પન્ચત્યુયા' પ્રત્યસ્તુતાર્યા=પ્રસારિતાર્યાં 'મિસિયાર્યાં' વૃષિકાયામ્=આસને નિષીદતિ=ઉપવિશતિ, નિષદ્ય મલ્લયા વિદેહરાજવરકન્યાયાઃ પુરતો દાનધર્મં ચ યાવદ્ વિહરતિ દાનધર્મશૌચધર્માદિ-કમાભ્યાપયન્તી પ્રજ્ઞાપયન્તી સા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા આસ્તે સ્મ ।

તતઃ સ્વલ્લ મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા ચોક્ષાં પરિવ્રાજિકામેવમવાદીત-હે ચોક્ષે ! તત્ર સ્વલ્લ કિં મૂલો ધર્મઃ પ્રજ્ઞસઃ ' તતઃ=મલ્લીવચન, શ્રવણાનન્તરં સ્વલ્લ સા

પરિવ્રાજિકોં કે મઠ સે નિકલી ઔર કિતનીક પરિવ્રાજિકાર્યોં કો સાથ લેકર મિથિલા રાજધાની કે બીચોં બીચ સે હોકર વહ જહાં કુંમક રાજા કા મવન થા તથા ઉસ મેં જહાં કન્યાન્તઃ પુર ઔર ઉસ મેં બી વિદેહ રાજ કી ઉત્તમ કન્યા મલ્લી કુમારી થી વહાં આઈ- ( ઉવાંગ-ચ્છિત્તા ઉદય પરિ ફાસિયાદ દમ્ભોવરિ પન્ચત્યુયાદ મિસિયાદ નિસિયદ વહાં આંકર વહ જલ સે સિચ્ચિત દુપ તથા દર્મ કે ઉપર વિહાયે ગયે આસન પર બેઠ ગઈ । ( નિસિયિત્તા મલ્લીદ વિદેહરાયવરકન્નાદ પુરબો દાળધર્મં ચ જાવ વિહરદ ) બેઠકર ઉસને વિદેહ રાયવર કન્યાકે સમક્ષ દાનં, ધર્મ શૌચધર્મ આદિ કી કથા કી-પ્રરૂપણા કી ( તદ્દર્શન મલ્લી વિદેહરાયવર કન્ના-ચોક્ષં પરિવાહ્યં ઇવં વયાસી ) બાદ મેં વિદેહ રાજ કી ઉત્તમ કન્યા મલ્લીકુમારી ને ઉસ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા સે ઇસ પ્રકાર કંહા- ( તુમેણં ચોક્ષે કિં મૂલદ ધર્મે વળ્લતે ? ) હે ચોક્ષે ! તુમ્હારે યહાં ધર્મ કિં મૂલક ( કિસ મૂલક ) પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈ ।

ર ગેલા વચ્ચોને લઈને પરિવ્રાજિકાના મઠથી બહાર નીકળી અને કેટલીક પરિ-વ્રાજિકાઓની સાથે મિથિલા રાજધાની વચ્ચે થઈને જ્યાં કુંભકરાબનો મહેલ હતો તેમજ જ્યાં કન્યાન્તઃપુર અને તેમાં પણ વિદેહરાજની ઉત્તમ કન્યા મલ્લીકુમારી હતી ત્યાં પહોંચી.

(ઉવાંગચ્છિત્તા ઉદય પરિફાસિયાદ દમ્ભોવરિપન્ચત્યુયાદ મિસિયાદ નિસિયદ) ત્યાં આવેલો તે પાછી છાંટેલા દર્બના ઉપર પાથરવામાં આવેલા આસન ઉપર બેસી ગઈ.

( નિસિત્તા મલ્લીદ વિદેહરાયવરકન્નાદ પુરબો દાળધર્મં ચ જાવ વિહરદ ) બેસીને તેણે વિદેહરાજવર કન્યાની સાથે દાનધર્મ, શૌચધર્મ વગેરેની વ્યાખ્યા કરી. ( ચોક્ષં પરિવાહ્યં ઇવં વયાસી ) ત્યારપછી વિદેહરાજની ઉત્તમ કન્યા મલ્લીકુમારીએ ચોક્ષા પરિવ્રાજિકાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે— ( તુમેણં ચોક્ષે કિં મૂલદ ધર્મે વળ્લતે ? ) હે ચોક્ષે ! તમારામાં ધર્મ કિં મૂલક પ્રરૂપિત કરવામાં આવ્યો છે.

चोक्षा परिव्राजका मल्ली विदेहराजवरकन्या मेघमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! अस्माकं खल्लं शौचमूलको धर्मः प्रज्ञप्तः, यत् खलु अस्माकं किंचिदभुचिमवति, तत् खलु उदकेन=जलेन च मृत्तिकाया-यावत्-भुचिमवति, एवं खलु वयं जलामिषेकपूता-त्मानः अविघ्नेन स्वर्गं गच्छामः ।

ततः=चोक्षापरिव्राजिकावचनश्रवणानन्तरं खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या चोक्षा परिव्राजिकामेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे चोक्षे ! तद् ययानामर्क-इदं दृष्टान्तोपन्यासे-दृष्टान्तं प्रदर्शयामि तावदित्यर्थः-यथा कोऽपि पुरुषो रुधिर-

( तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकनं एवं वयासी ) प्रत्युत्तर में उस चोक्षा परिव्राजिका ने विदेह राजवर कन्या उस मल्ली कुमारी से ऐसा कहा

( अम्हणं देवाणुप्पिए । सोयमूलए धम्मे, जणं अम्हं किंचि असुइ भवइ तएणं उदएण य मड्डियाए जाव अविग्गेणं सगं गच्छामो तएणं मल्ली विदेहरायवरकक्षा चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी ) हे देवानुप्रिये ! हमारा धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त हुआ है । इसीलिये हमारी कोई वस्तु जब अशुचि हो जाती है-तब हम लोग उसे जल एवं मृत्तिका से पवित्र कर लेते हैं । इस तरह हम लोग जल स्नान से पवित्रात्मा होकर बिना किसी विघ्न के शीघ्र ही स्वर्ग पहुँच जाते हैं ।

इस प्रकार चोक्षा का कथन सुनकर विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी ने उस चोक्षा परिव्राजिका से ऐसा कहा- ( चोक्खा-से

( तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लि विदेहरायवरकनं एवं वयासी )

जवाअभां चोक्षा परिव्राजिकाने विदेह राजवर कन्याने आ प्रभाण्णे ढुं ढे—

( अम्हणं देवाणुप्पिए । सोयमूलए धम्मे जणं अम्हं किंचि असुइ भवइ, तएणं उदएणं य मड्डियाए जाव अविग्गेणं सगं गच्छामो तएणं मल्ली विदेहरायवरकन्या चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी )

हे देवानुप्रिये । हमारे धर्म शौच मूलक प्रज्ञप्त थया छे. जेटला भाटे अमारी गये ते वस्तु ज्यादे अशुचि थय जय छे त्यादे अमे तेने पाछी अने भाटीथी पवित्र करीजे छीजे. आ रीते अमे पाछीमां स्नान करीने पवित्रात्मा थय-जयजे छीजे अने निर्विघ्न इये जलही स्वर्गमां पहुँची जयजे छीजे.

आ रीते चोक्षां कथन सांलणीने विदेहराजनी उत्तम कन्या मल्लि-कुमारीजे चोक्षा परिव्राजिकाने कहुं ढे—

कृतं=शोणितलिप्तं वस्त्रं रुधिरैर्णैव शोणितलिप्तस्य वस्त्रस्य रुधिरैव धाव्यमानस्य=प्रक्षाल्यमानस्य काऽपि शोधिः ? नायमर्थः समर्थः=रुधिरलिप्तवस्त्रस्य रुधिरैव कापि शुद्धिर्न भवतीत्यर्थः । चोक्षे । एवमेव=रुधिरसंसृष्टवस्त्रदृष्टान्तेनैव शुष्माकं स्वच्छ प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शनशल्येन=अष्टादशपापस्थानसेवनेन, नास्ति शुद्धिः=न भवति काचिदपि शुद्धि र्नात्मन इत्यर्थः, यथैव तस्य रुधिरकृतस्य वस्त्रस्य रुधिरैर्णैव धाव्यमानस्य=प्रक्षाल्यमानस्य नास्ति शुद्धिः । ततः स्वच्छ=तत्पश्चात् सा चोक्षा परिव्राजिका मल्लया विदेहराजवरकन्या एवमुक्ता सति 'संकिया' शङ्किता 'कंसिया' 'काक्षिता'=यदि मनसि विचार्योत्तरं दास्यामि तत्समीचीनं भविष्यति न वा ?' इति संशययुक्ता । 'यदि मद्भिचारितमुत्तरं सम्पद्य न भवेत्तर्हि

जहा नामए केई पुरिसे रुहिरकयं बत्थं रुहिरैणं चेव धोवेज्जा अत्थिणं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स बत्थस्स रुहिरैणं धोव्वमाणस्स काई सोही ? नो इण्डे समद्वे एवामेव चोक्खा ! तुव्वेणं पाणाह्वाएणं जाव मिच्छादं सणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स बत्थस्स रुहिरैणं चेव धोव्वमाणस्स ) चोक्षे । जैसे कोई पुरुष रुधिर ( खून ) से लिप्त हुए वस्त्र को रुधिर ( खून ) से ही धोवे-तो क्या चोक्षे । उस रुधिर लिप्त वस्त्र की रुधिर से धोये जाने पर कोई शुद्धि हो सकती है ? । रुधिर से लिप्त वस्त्र की रुधिर से धोने पर शुद्धि होती है-यह बात तो कोई भी समझदार प्राणी नहीं मान सकता है । उसी तरह हे चोक्षे । प्राणातिपात यावत् मिथ्या दर्शन शल्य के सेवन से-अष्टादश पाप-स्थानों के सेवन से-आप लोगों की आत्मा की भी किसी तरह से शुद्धि नहीं हो सकती है । जैसे उस रुधिर से सने हुए वस्त्र को रुधिर

( चोक्खा ! से जहा नामए केई पुरिसे रुहिरकयं बत्थं रुहिरैणं चेव धोवे-ज्जा, अत्थिणं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स बत्थस्स रुहिरैणं धोव्वमाणस्स काई-सोही ? नो इण्डे, समद्वे एवामेव चोक्खा ! तुव्वेणं पाणाह्वाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थिकाई सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स बत्थस्स रुहिरैणं चेव धोव्वमाणस्स )

हे चोक्षे । जेभ कोइ भायुस बोहीथी भरडाओला वओ बोहीथी ज धावे तो शु बोहीथी भरडाओला वओ बोहीथी ज धावडाववाभां आवे तो तेनी शुद्धि थध गध कडेवाय ? आ वात तो गजे ते व्यङ्गित पायु समथु शके तेम छे. आ प्रभाणु हे चोक्षे । प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्यना सेवनथी तमाश जेवा बोडोनी शुद्धि कोइपायु रीते संभवी शके तेम नथी. जेभ येला बोहीथी भरडाओला वओनी शुद्धि बोहीथी थध शकती ज नथी तेमज । मिथ्यादर्शन शल्यना सेवनथी पायु शुद्धि थती नथी.

किमन्यदुत्तरं दास्यामी ' त्वेवमुत्तरविषयक वाञ्छायुक्ता । ' विद्भिर्गच्छिया ' विचिकित्सिता= ' अस्मिन्नुत्तरे दत्ते सति किं मल्लया अत्र श्रद्धोत्पत्त्यस्यते किं वा नोत्पत्त्यते ' इत्येवं विचिकित्सा=संशयः, संज्ञाता यस्या सा विचिकित्सिता, तथा- ' मेयसमावण्णा ' मेदसमापन्ना=अत्र मेदो मतेर्मङ्गः-मयाऽधुना किं कर्तव्यमिति निर्णयामवाद् व्याकुलतारूपस्तं समापन्ना संप्राप्ता, जाताचाप्यभवत् शङ्कितेत्यादि विशेषणचतुष्टयेन चोक्षा परिव्राजिका मल्लयाः समुचित दृष्टान्तेन दृढीकृतं प्रश्न समाधातुं व्याकुलीजाता, इति भावः मल्लयाः ' गो संचाएइ ' नो

से धोने पर किसी भी प्रकार की शुद्धि नहीं होती है । ( तएणं सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेह रायवर कत्ताए एवं बुत्ता समाणा संक्रिया कंखिया विद्भिर्गच्छिया मेय समावण्णा जाया यावि होत्था ) इस प्रकार विदेह राज की वर कन्या मल्ली कुमारी के द्वारा समझाई गई वह चोक्षा परिव्राजिका शंका से युक्त बन गई, कांक्षा से युक्त बन गई, विचिकित्सा ( फलके प्रति संदेह और मेद ( अपने मंतव्य का चिच्छेद ) से समापन्न हो गई । मनसे सोचकर यदि मैं मल्ली कुमारीको उत्तर दूंगी-तो न मालूम वह उत्तर सच्चा होगा कि नहीं होगा इस प्रकारका उसके हृदयमें बैधी भाव आनेसे वह चोक्षाशंकित बन गई ।

यदि मेरा दिया हुआ उत्तर ठीक नहीं होगा-तो उस का उत्तर मैं क्या दूंगी-इस प्रकार वह उत्तर विषयक वाञ्छा से युक्त बन गई । मल्ली कुमारी को उत्तर देने पर भी कौन जाने उस में उस की श्रद्धा होगी-या नहीं होगी इस तरह वह विचिकित्सा-से युक्त बन गई ।

( तएणं सा चोक्खा परिवाइया मल्लीए विदेहरायवरकत्ताए एवं बुत्ता संक्रिया कंखिया विद्भिर्गच्छिया मेयसमावण्णा जाया यावि होत्था )

आ प्रभाण्णे विदेहरायवर कन्या मल्लीकुमारी वडे समभववामां आवेली चोक्खा परिव्राजिका शंकाथी युक्ता थधं गधं, कांक्षाथी युक्ता थधं गधं, विचिकित्सा ( इण-भासि विसे स'हेइ युक्ता ) अने खेद ( पोतानी मान्यतानो नाश ) समापन्न थधं गधं. मल्लीकुमारीने जवाणमां हूं ' केअं पणु वस्तु रअू करीश तो ते साथी हथे के केम ? आ जातनी सुअंवलुथी चोक्षानुं मन शंकित थधं गधुं.

" जे भारे जवाण अरोअर नहिं होय तो जीले शेा जवाण हूं ' आपीश ? आ प्रभाण्णे ते जवाणना विसे वांछायुक्ता थधं गधं. " मल्लीकुमारीने जवाण आग्या छातां पणु तेने भाश जवाण उपर विश्वास जेसथे के केम ? " आ रीते ते विचिकित्सा युक्ता थधं गधं. " आ परिस्थितिमां भारे शुं कश्चुं

शक्नोति कंचिदपि 'पामोक्खं' प्रमोक्षम्=प्रमुच्यते 'प्रश्नवन्धनादनेनेति-प्रमोक्षः प्रश्नस्य परिहारम्, उत्तरमित्यर्थः 'आइक्खित्तए' आख्यातुं=कथायितुम्, यदा चोक्त्वा परित्राजिका मल्लयाः प्रश्नस्योत्तरं वक्तुमसमर्था जाता, तदा सा 'तुसिणीया' तूष्णीका=मौनावलम्बिनी भूत्वा 'संचिद्दइ' संतिष्ठते संस्थिता । ततस्तदनन्तरं खलु तां चोक्षां मल्लयावहव्यो दासवेटिकाः=दासपुत्र्यः 'हीलेंति' हिलन्ति-अवमानयन्ति, निन्दन्ति-जात्याशुदाटनेन कुत्सन्ति, खिसन्ति-दोषकीर्तनेनोपहसन्ति, गर्हन्ते सर्वसमक्षं निन्दां कुर्वन्ति, अप्येकिकाः एकाः काश्चित्-क्रोधयन्ति तस्याः कोपमुद्भावयन्ति, अप्येकिकाः=एकाः काश्चित्-'मुहमक्कडियाओ' मुखमर्कटिकाः=मुखानां तिर्यकानि कुर्वन्ति, अप्येकिकाः=एकाः काश्चित् 'वग्घा-

अब इस समय मुझे क्या करना चाहिये इस तरह का वह निर्णय नहीं कर सकने के कारण व्याकुल बन जाने से मेद समापन्न बन गई।

(मल्लीए णो संचाएइ किं चि वि पामोक्खा माइक्खित्तए तुसिणीया संचिद्दइ, तएणं चोक्खं मल्लीए बहुओ दास चेडीओ हीलेंति, निंदंति, खिसंति गरहंति) अतः वह मल्ली कुमारी को कुछ भी प्रमोक्षाग्रहण का उत्तर-नहीं दे सकी, किन्तु चुपचाप बैठी रही। जब चोक्षा की ऐसी हालत मल्ली कुमारी की दास चेडियों ने देखी तो वे उसका अपमान रूप हीलना करने लग गई। जाती आदि के उद्घाटन से उस से घृणा रूप निंदा करने लगी। दोषों के कीर्तनसे उस का उपहास रूप खिसना करने लगी। सबके समक्ष उसके अवर्ण वादरूप गर्हणा करने लगी (अप्पेगइया हेरुयालंति, अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुमंति) इन

जोधओ ? " आ नतना विवेकणी शक्ति पणु तेनी नाश पामी डती ओथी ते व्याकुल थधने सेह समापन्न जनी गध डती.

(मल्लीए णो संचाएइ किंचि वि पामोक्खामाइक्खित्तए तुसिणीया संचिद्दइ, तएणं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति, निंदंति, खिसंति गरहंति) ओथी-महदीकुमारीने ते ज्वाणमां क'ध पणु कही शकी नडि. ते साव भूणी थधने जेसी ज रही. महदीकुमारीनी दास चेटीओओ बोझानी आ प्रमाखेनी स्थिति जेध तारे तेओ तेनी अपमानइय हीलना करवा लागी नति वगेरेहुं उद्घाटन करीने तेनी धूषा इय निंदा करवा लागी. तेना दोषेने कडेती उपहास इय भिसना करवा लागी अधानी साभे तेनी अवर्णवाद इय गर्हण करवा लागी.

(अप्पेगइया हेरुयालंति, अप्पेगइया मुहमक्कडियाओ करेंति अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति, अप्पेगइया तज्जमाणीओ निच्छुमंति)

હીઓ' વ્યાપ્રાટિકા=ઉપહાસાર્થ શબ્દવિશેષાન્ કુર્વન્તિ, અપ્યેકિકાઃ એકાઃ કાશ્ચિત્ 'તજ્જમાણીઓ' તર્જયન્ત્યઃ - દુર્વચનતઃ, 'મમ પ્રશ્નસ્યોત્તરં દેદિ, નો ચેત્ પથાદ્ જ્ઞાસ્યસિ' इत्यादिना भीषयन्त्य इत्यर्थः । निच्छुमंति निधिपन्ति=निस्सारयन्ति ।

તત્સ્તદન્તરં સા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા મલ્લ્યા વિદેહરાજરક્ત્યાયાઃ દાસચે-  
ટિકામિઃ 'યાવત્-હિલ્યમાના નિન્દ્યમાના ગર્હમાણા, આશુરુતા=શીઘ્રં ક્રોધાત્રિષ્ટા  
યાવત્ 'મિસમિસેમાણી' મિસસમિન્તી ક્રોધાન્નલેન જાઞ્ઞવલ્યમાના મલ્લ્યાં વિદેહ  
રાજવરકન્યાયાં 'પઓસમાવજ્જહ' પ્રદેષમાપદ્યતે=પરમદ્વેષવતી જાતા । તતઃ સા

મેં સે કિસી એક ને ઉસે ક્રોધ ઉદ્ભાવિત-કિયા, કિસી એક ને ઉસ કે સામને અપના મુલ્ખ મોઢ લિયા, કિસી એક ને ઉસ કી હૈંસી ઉઢા ને કે લિયે વિશેષ શબ્દોં કા પ્રયોગ કિયા, કિસી એક ને દુર્વચનોં સે ઉસે તર્જિત કિયા, કિસી એક ને "મેરે પ્રશ્ન કા ઉત્તર દે, નહી તો પીછે તુજે માલૂમ પડેગી" इस तरह कहकर उसे डराया और वहाँ से निकाल दिया । (तएणं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडि-  
याहिं जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुता जाव मिसि मिसे माणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पओसमावज्जह, मिसियं गिण्हइ, गिण्हिस्ता कण्णंतेउराओ पडिनिक्खमह ) इस तरह विदेह राज कि  
वरकन्यामल्ली कुमारी की दास चेदियों से अपमानित घृणित, और निन्दित होनी हुई वह चोक्षा परिव्राजिका, क्रोध से लाल हो गई, और मिसमिसाती हुई क्रोध से जाञ्जवल्‍यमान होती हुई-वह विदेह राज की उसम कन्या मल्ली कुमारी के ऊपर परम द्वेषवती बन गई ।

તેઓમાંથી કેાઈકે તેને ક્રોધિત કરી, કેાઈએ તેની સામેથી ચોં ફેરવી લીધું. કેાઈએ તેની મશ્કરી કરવા વિશેષ શબ્દોના પ્રયોગ કર્યો, કેાઈએ દુર્વચનોથી તેને તિરસ્કાર કર્યો, કેાઈએ તેને "મારા સવાલનો જવાબ આપ નહિતર તારી ખબર લઈ લાઈશું" આ રીતે બીક બતાવી અને ત્યાંથી બહાર કાઢી મૂકી.

(તएणं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं जाव गरहिज्ज  
माणी हीलिज्जमाणी, आसुरुता जाव मिसि मिसे माणी मल्लीए विदेह रायवरक-  
न्नाए पओसमावज्जह, मिसियं गिण्हइ, गिण्हिस्ता कण्णंतेउराओ पडिनिक्खमह )

આ રીતે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીની દાસ ચેટીયોથી અપમાનિત,  
ઘૃણિત અને નિન્દિત થતી ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા ક્રોધમાં લાલચોળ થઈ ગઈ અને  
ક્રોધમાં સળગતી તે વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારી પ્રત્યે ખૂબ જ ઈર્ષાળુ-દ્વેષ  
કરનારી થઈ ગઈ.

ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા ' મિસિયં ' વૃષિકા= આસનં સ્વકીયમિતિમાવઃ, યુક્તાતિ  
 યુક્તૈત્વા ' કણંતેતરાથો ' કન્યાન્તઃ પુરાત્ મલ્લયા મવનાત્, પ્રતિનિષ્ક્રામતિ=  
 નિઃ સરતિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય મિથિલાતો નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય પરિવ્રાજિકા સંપરિવ્રતા  
 પ્રવિરલસંન્યાસિકાભિયુક્તા, યત્રૈવ પંચાલજનપદઃ=પંચાલનામકો દેશોઽસ્તિ,  
 યત્રૈવ=યસ્મિન્ દેશે કામ્પિલ્યપુર નામ નગરં, તત્ર= તસ્મિન્ નગરે ઉપાગચ્છતિ,  
 ઉપાગત્યચ કામ્પિલ્યપુરે નગરે વહૂનાં રાજેશ્વરાદીનાં પુરતઃ સ્વમતં યાવદ્-આરુપ્યા-  
 પયન્તી પ્રજ્ઞાપયન્તી પ્રરૂપયન્તી વિહરતિ=આસ્તેસ્મ ॥ સૂ. ૩૦ ॥

મૂલમ્-તદ્દર્શનં સે જિયસત્તુ અન્નદા કયાઈ અંતેરપરિચાલ  
 સંપરિવુડે એવં જાવ વિહરઈ, તદ્દર્શનં સા ચોક્ષા પરિવ્રાજિકા સંપ-

ઉસ ને ઉસી સમય વહાં સે અપના આમન ઉઠાયા-ઔર ઉઠાકર  
 વહ કન્યાન્તઃ પુર સે-મલ્લી કુમારી કે મવન સે બાહિર નિકલ આઈ ।  
 ( પઢિ નિકલમિસ્તા ) બાહિર નિકલકર ( મિહિલાઓ નિર્ગચ્છઈ, નિર્ગ-  
 ચ્છિસ્તા પરિવ્રાજિકા સંપરિવુડા જેગેવ પંચાલ જનવદ, જેગેવ કંપિલ્લપુરે  
 નયરે તેગેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિસ્તા કંપિલ્લપુરે વહૂનાં રાઈસરં જાવ  
 પરુવેમાળી વિહરઈ ) ફિર વહ મિથિલા નગરી સે ચલ દી ।

ચલકર પરિવ્રાજિકાઓં કો સાથ મેં લિયે હુપ જહાં પાંચાલ દેશ  
 ઔર ઉસમેં જહાં કાંપિલ્ય નગર થા વહાં આઈ । વહાં આકર વહ અપને  
 મત કી અનેક રાશ્વજેર આદિકોં કે સમક્ષ આરુપ્યાપના ઔર પ્રરૂપણાક-  
 રતી હુઈ રહને લગી ॥ સૂ. ૩૦ ॥

તેણે તરત જ પોતાનું આસન ત્યાંથી ઉપાડી લીધું અને કન્યાન્તઃપુરથી  
 એટલે કે મલ્લીકુમારીના મહેલથી તે બહાર નીકળી ગઈ. ( પઢિનિકલમિસ્તા )  
 બહાર નીકળીને

( મહિલાઓ નિર્ગચ્છઈ નિર્ગચ્છિસ્તા પરિવ્રાજિકા સંપરિવુડા જેગેવ પંચાલ  
 જનવદ, જેગેવ કંપિલ્લપુરે નયરે તેગેવ ઉવાગચ્છઈ ઉવાગચ્છિસ્તા કંપિલ્લપુરે વહૂનાં  
 રાઈ સરં જાવ પરુવેમાળી વિહરઈ )

તે મિથિલા નગરીમાંથી ચાલતી થઈ

પરિવ્રાજિકાઓની સાથે તે ચાલતી ચાલતી તે ન્યાં પાંચાલ દેશ અને  
 તેમાં પણ ન્યાં કાંપિલ્યનગર હતું ત્યાં આવી. ત્યાં આવીને તે પોતાના ધર્મની  
 ધણી રાજેશ્વર વગેરેની સામે આરુપ્યાપના, પ્રજ્ઞાપના અને પ્રરૂપણા કરતાં  
 રહેવા લાગી. ॥ સૂ. " ૩૦ " ॥

रिवुडा जेणैव जितसत्तुस्स रणो भवणै जेणैव जितसत्तु तेणैव  
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जियसत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेइ ।  
 तएणं से जियसत्तु चोक्खं परिवाइयं एजमाणं पासइ, पासित्ता  
 सीहासणाओ अब्भुहेइ, अब्भुद्धित्ता चोक्खं सक्कारेइ, सक्कारित्ता  
 आसणैणं उवणिमंतेइ, तएणं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए  
 जाव भिसियाए निसीयइ, जियसत्तुं रायं रज्जे य जाव अंतउरे  
 य कुसलादंतं पुच्छइ, तएणं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रत्तो  
 दाणधम्मं च जाव विहरइ, तएणं से जियसत्तु अप्पणो ओरो-  
 हंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वयासी-तुमंणं देवाणुप्पिया !  
 बहूणि गामागार० जाव अडसि, बहूणि य राईसर० गिहाइं  
 अणुपविससि, ते अरियाइ ते कस्तवि रत्तो वा जाव कहिंचि  
 एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह अवरोहे ? तएणं  
 सा चोक्खा परिवाइया जियस ईसिं अवहसियं करेइ, करित्ता  
 एवं वयासी-एवं च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स  
 अगडदद्दुरस्स ? , केणं देवाणुप्पिए से अगडदद्दुरे ? जियसत्तु !  
 से जहानामए अगडदद्दुरे सिया तथेव बुद्धे अण्णं अगडं वा  
 तलागं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे चेंव मण्णइ-अयं चेंव अगडे  
 वा जाव सागरे वा । तएणं तं कूवं अण्णे सामुहए दद्दुरे हव्वमागए,  
 तएणं से कूवदद्दुरे तं सामुहदद्दुरं एवं वयासी-से केसणं  
 तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ? तएणं से सा-  
 मुहए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी-एवं खल्ल देवाणुप्पिया !



अहं सामुद्दण्डद्वरे, तएणं से कूवदद्वरे तं सामुद्दणं दद्वरं एवं  
 वयांसी-के महालण्णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ? तएणं से  
 सामुद्दण्ड दद्वरे तं कूवदद्वरं एवं वयांसी-महालण्णं देवाणुप्पिया !  
 समुद्दे ! तएणं से दद्वरे पाएणं लीहं कड्डेइ, कड्डित्ता एवं वयांसी  
 —एमहालण्णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ? णो इणट्ठे समुद्दे,  
 महालण्णं से समुद्दे ! तएणं से कूवदद्वरे पुरमस्थिमिलोओ  
 तीराओ उप्पिडित्ता णं गच्छेइ, गच्छित्ता एवं वयांसी-ए  
 महालण्णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ? णो इणट्ठे समुद्दे, तहव  
 एवामेव तुमं पि जियसत्तु अन्नेसिं वहुणं राईसरं जाव सत्थवा-  
 हपभिईणं भज्जं वा भगिणीं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे  
 जाणेसि जारिसए मम चेवणं ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स,  
 तं एवं खलु जियस मिहिलाए नयरीये कुंभगस्स चूया पभा-  
 वंतीये अत्तया मल्ली नामंति रुवेण य जुंवेणैण जाव नो खलु  
 अण्णो काई देयकंन्ना या जारिसिया मल्ली, मल्लीए विदेह  
 राययरकंन्नाए छिण्णस्स वि पायंगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयस-  
 हस्स तमं पि कलं न अग्घइ त्तिक्कहु जामेय दिसं पाउब्भूया तामेव  
 दिसं पडिगया, तएणं से जियसत्तु परिव्याइयाजणियहासे दूयं  
 सदायैइ, सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३१ ॥

टीका—‘तएणं से’ इत्यादि । ततस्तदन्तरं स जितशत्रुः अन्यदा कदाचिद्

‘तएणं से जियसत्तु अन्नया कयाई’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से जियसत्तु, वह जितशत्रु (अन्नया कयाई)

(तएणं से जियसत्तु अन्नया कयाई । इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थार भाव (से जियसत्तु) जितशत्रु (अन्नया कयाई) के।

=અન્યસ્મિન્ કર્મિશ્ચિત્ સમયે 'અંતેરપરિયાલસંપરિવુદે' અન્તઃ પુરપરિવાર સંપરિવૃતઃ=અન્તઃ પુરસ્ય પરિવારેણ=સ્ત્રીજનૈઃસંપરિવૃતઃ યુક્તઃ, एवं यावद् विहरति- तिष्ठति । 'तए' ततः=तदा, खलु सा चोक्त्वा परिब्राजिका परिवृता=स्वशिष्य- संन्यासिका सहित यत्रैव जितशत्रो राज्ञो भवने=प्रासादः, यत्रैव=यस्मिन्नेव स्थाने जितशत्रुः, तत्रैवोपागच्छति, जितशत्रु जयेन=विजयेन=जय विजय शब्द कीर्तनेन 'वद्धावेइ' वर्णयति । ततः खलु स जितशत्रुश्चोक्षां परिब्राजिकाम् एजमानाम्=आगच्छतीं पश्यती, दृष्ट्वा सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय चोक्षां सत्करोति, सत्कृत्य आसनेन 'उवणिमंतेइ' उपनिमन्त्रयति=उपवेशनार्थं प्रार्थ-

કિસી એક દિન ( અંતેરપરિયાલસંપરિવુદે ) અપને અન્તઃ પુર પરિવાર કે સાથ ( एवं यावद् विहरइ ) बैठा हुआ था (तएणं सा चोक्त्वा परिवृता- इया) इतने में वह चोक्षा परिब्राजिकाओंके साथर (जेणेव जितसत्तुस्स रण्णो भवणे जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिय- सत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेइ ) जहां जितशत्रु राजा का महल था और जहां वे जितशत्रु राजा विराजमान थे वहां आई आकर उसने उन्हें जय विजय शब्दोंसे बन्धुवाद दिया—(तएणं से जियसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एजमाणं पासइ, पासित्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता चोक्खं सक्कारेइ, सक्कारित्ता आसणेण उवणिमंतेइ ) जब चोक्षापरिब्राजिका को जितशत्रु राजाने आते हुए देखा था—तो वह देखते ही अपने सिंहा- सन से उठ बैठा था—और उठकर उसने चोक्षा परिब्राजिका का आदर सत्कार किया था । आदर सत्कार करके उसने उसे आसन पर

એક દિવસે ( અંતેરપરિયાલ સંપરિવુદે ) પોતાના રણુવાસના પરિવારની સાથે ( एवं यावद् विहरइ ) બેઠો હતો. ( તएणं सा चोक्त्वा परिव्वाइया ) તેટલામાં ચોક્ષા પરિબ્રાજિકાઓની સાથે

( જેણેવ જિતસત્તુસ્સ રણ્ણો ભવણે જેણેવ જિતસત્તૂ તેણેવ ઉવાગચ્છइ, ઉવાગચ્છિત્તા જિયસત્તૂં જएणं વિજएणं વદ્ધાવેइ )

જ્યાં જિતશત્રુ રાજાનો મહેલ હતો અને જ્યાં જિતશત્રુ રાજા બેઠો હતો ત્યાં ગઈ. ત્યાં પહોંચીને તેણે રાજાને જય વિજય શબ્દોથી વધાવ્યા.

( તएणं से जियसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एजमाणं पासइ, पासित्ता सीहा- सणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता चोक्खं सक्कारेइ, सक्कारित्ता आसणेण उवणिमंतेइ )

જિતશત્રુ રાજાએ જ્યારે ચોક્ષા પરિબ્રાજિકાને આપતી બેઠી ત્યારે તેણે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થયેને ચોક્ષા પરિબ્રાજિકાને તેણે આદર સત્કાર કર્યો. આદર સત્કાર કરીને રાજાએ તેને આસન ઉપર બેસવા માટે કહ્યું.

यति। तएणं चोक्षा 'उदगपरिफासियाए, उदकपरिस्पृष्टायां=जाल प्रक्षेपेण सिक्कायां यावत्-दर्भोपरि प्रत्यास्तृतायां 'भिसियाए' वृषिकायां 'निसीयइ' निषीदति=उपविशति। जितशत्रुं राजानं राज्ये च यावदन्तः पुरे च कुशलोदन्तं कुशलसमाचारं पृच्छति, ततः खलु सा चोक्षा जितशत्रो राज्ञः पुरतो दानधर्मं च यावद्-शौचधर्मादिकमाख्यापयन्ती प्रज्ञापयन्ती प्ररूपयन्ती विहरती=आस्ते स्म। ततस्तदनन्तरं खलु स जितशत्रुः, आत्मानः स्वस्य, 'ओरोहंसि' अवरोधे=अन्तः पुरे यावद् विस्मितः=आश्चर्ययुक्तः सन् चोक्षाम् एवं=वक्ष्याणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिया! त्वं खलु-बहूनि, ग्रामाकरं यावत्=ग्रामाकरखेटकृत्वादीनि अडसि=गच्छसि बहूनि

बैठ जाने के लिये कहा-। (तएणं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निसीयइ) अतः वह चोक्षा परित्राजिका जलसे सिञ्चित हुए यावत् आसन पर बैठ गई।

(जियसत्तू रायं रज्जे य जाव अंतेउरेय कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाणधम्मं च जाव विहरइ) बैठने के बाद उसने जितशत्रु राजा से राज्य एवं अंतः पुर की कुशलवार्ता पृछी बाद में उसने जितशत्रु राजा के समक्ष दान धर्म शौच धर्म आदिका कथन किया, प्ररूपणा किया प्रज्ञापन किया, (तएणं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वयासी) इसके बाद उस जितशत्रु राजा ने अपने अन्तः पुर में विस्मित होकर उस चोक्षा परित्राजिका से इस प्रकार कहा-(तुमणं देवाणुप्पिया! बहूणि ग्रामागरं जाव अडसि बहूणि य राईसरं गिहाइं अणुपविससि) हे देवाणुप्रियो! तुम अनेक

(तएणं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निसीयइ)

चोक्षा परित्राजिका पाणी छोटैला आसन उपर गेली अथ

(जियसत्तू रायं रज्जे य जाव अंते उरेय कुसलोदंतं पुच्छइ तएणं चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाणधम्मं च जाव विहरइ)

त्यार आइ तेणु राजाने राज्य तेभ्य रक्षुवासनी कुशल वार्ता पृछी अने परित्राजिकाओ आ गंधु करीने जितशत्रु राजानी सामे दानधर्म, शौचधर्म, वजरेणुं कथन कयुं, प्रज्ञपणु कयुं अने प्रज्ञापन कयुं।

(तएणं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वयासी)

रक्षुवासभा छोटैला राज्य एतशत्रुओ तेनी बात सांजणीने विस्मय थामता परित्राजिकाने कथुं डे—

(तुमणं देवाणुप्पिया! बहूणि ग्रामागरं जाव अडसि बहूणि य राईसरं गिहाइं अणुपविससि)

च 'राईसर० गिहाई' राजेश्वरादीनां गृहाणि अनुप्रविशसि, तत्=तस्मात् कथय-  
अस्ति चापि, 'ते' त्वया कस्यापि राज्ञो वा यावत्- ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वः,  
यादृशः खलु अयं ममावरोधः ? अन्तःपुरम् ततस्तदनन्तरं खलु सा चोक्षा परिव्रा-  
जिका जितशत्रुमीपदपहसितं करोति, कृत्वा एवं वयासी ।

हे देवानुप्रिय ! एवं च सदृशः खलु त्वं तस्य 'अगडददुरस्स' अवटददुरस्य  
=कूपमण्डकस्य । चोक्षाया वचनं श्रुत्वा जितशत्रुश्लोकां पृच्छंति-'केण' इत्यादि ।  
कः खलु हे देवानुप्रिये ! सोऽवटददुरः=कूपमण्डकः ? चोक्षा परिव्राजिका कथ-  
यति-तद् यथानामकम् = यथानामकमितिपदं दृष्टान्तं प्रदर्शयामि तावदित्यर्थः

ग्राम, आकर, खेट कर्वट आदिस्थानों में जाती रहती हो, तथा अनेक  
राजेश्वर आदि जनों के गृहों में प्रवेश भी करती रहती हो (तं अत्थि-  
याइ ते कस्स विरन्नो वा जाव कहिं चिं एरिसए आरोहे दिट्ठपुण्वे जारि-  
सए णं इमे मह अवरोहे) तो कहो तुमने किसी राजा आदि का ऐसा  
अन्तः पुर पहिले कभी कहीं देखा है ? कि जैसा मेरा यह अन्तः पुर है ।  
(तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसि अवहासेयं करेइ, करित्ता  
एवं वयासी) इस प्रकार सुनने के बाद उस चोक्षा परिव्राजिकाने पहि-  
ले तो राजा को कुछ हँसाया बाद में हँसाते हुए उनसे ऐसा कहा-एवं  
च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडददुरस्स) हे देवानुप्रिय !  
तुम तो उस कूपमण्डक के समान हो ऐसी चोक्षा की बात सुनकर बीच  
में ही राजा ने उससे कहा (केणं देवाणुप्पिए से अगडददुरे ? देवानु-

हे देवानुप्रिये ! तमे धणु आम,आकर, जेटकर्मट वगेरे स्थानोभां अवर-  
-नवर करता रहे। छे तेमअ धणु राबळो वगेरेना भडेलोभां पणुळळो छे।

तं अत्थियाइ ते कस्स विरन्नो वा, जाव कहिं चिं एरिसए आरोहे दिट्ठपुण्वे  
जारिसए णं इमे मह अवरोहे )

तो अतावे के म.रा जेयो रणुवास केधपणु राबळ वगेरेने। तमे  
लेथो छे।

(तएणं सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तू ईसि अवहासेयं करेइ, एवं करित्ता वयासी)

आ रीते सांभणीने चोक्षा परिव्राजिकाजे पडेलां तो राबळे चोडो डेसांथो  
त्यार पछी डेसावतां तेमने कळुं के-

( एवं च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडददुरस्स )

हे देवानुप्रिय ! तमे तो चेला इवाना देडका जेवा छे ! चोक्षानी आ  
पाल सांभणीने राबळे वच्चेथी अ तेने कळुं के ( के णं देवाणुप्पिए से अगड

યથા-એકઃ કૂપમણ્ઢકઃ સ્યાત્=આસીત્, સ સ્વલ્પ 'તત્થ' તન્ન=તસ્મિન્ કૂપે જાતઃ, તત્રૈવ કૂપે એવં 'બુદ્ધે' વૃદ્ધઃ=વૃદ્ધિગતઃ, અન્યમ્-'અગઢ' અવટં=કૂપં વા, 'તલાગં' તલાગં=કમલયુક્તાગાધજલાશયં વા, 'દર્હં' દૂરં=પ્રસિદ્ધં, 'સરં' સરઃ=સરોવરં વા, સાગરં વા, અપર્યન્નેવં મન્યતે-અયમેવાવટો વા યાવત્ સાગરો વા । એતસ્માત્ કૂપાન્મહાજલસ્થાનમન્યન્નાસ્તીત્યેવં મનસિ જાનાતીતિ ભાવઃ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્પ તં કૂપંપતિ, 'અણે' અન્યઃ સામુદ્રકઃ=સમુદ્રે જાતઃ 'દદ્દુરે' દર્દુરઃ=મણ્ઢકઃ, હવ્યમાગતઃ=સહજગત્યા સમાગતઃ । તતઃ સ્વલ્પ સ કૂપદર્દુરઃ=કૂપમણ્ઢકઃ તં 'સામુદ્રદદ્દુરં' સામુદ્રનિવાસિન્ મણ્ઢકમ્ એવં=વશ્યમાણ પ્રકારેણ અવાદીત્-યથા ક એષ સ્વલ્પ ત્વં હે દેવાનુપ્રિય ! 'કત્તો' કુતઃ=કસ્માત્

પ્રિય ! વહ કૂપમંઢક કેસા હોતા હૈ ! (જિયસત્ત ! સે જહાનામએ અગઢ-દદ્દુરે સિયા સે ણં તત્થ જાએ તથેવ બુદ્ધે અન્નં અગઢં વા તલાગં વા દર્હં વા સરં વા સાગરં વા અપાસમાણે ચેવ મણ્ઢક અયં ચેવ અગઢે વા જાવ સાગરે વા ) હસ પ્રકાર જિતશત્રુ રાજા કી બાત સુનકર ચોક્ષા પરિવા-જિકા ને ઉસસે કહા-જિતશત્રોં સુનો મૈં તુમ્હેં સમજાતી હૂં-જૈસે કોઈ એક કૂપકા મેંઢક કિ જો ઉસી મૈં ઉત્પન્ન હુઆ હો ઓર ઉસી મૈં પલપુષ કર વઢા હુઆ હો વહ જૈસે અપને કુપે કે સિવાય ઓર કિસી-કુપે કો, તલાગ કમલયુક્ત અગાધ-સરોવર કો વ્રહ કો જલાશય વિશેષ કો, અથવા સમુદ્રકો કમી નહીં દેખતા હુઆ એસા હી માનતા હૈ કિ યહી મેરા કુઆ ઓર દુસરા કુઆ હૈ ? યાવત્ સાગર હૈ ।

હસ કુપે કે સિવાય ઓર દુસરા કોઈ બઢા ભારી જલસ્થાન કહીં પર નહીં હૈં (તણં તં કૂવં અણે સામુદ્રદદ્દુરે હવ્યમાગ-તણં

દદ્દુરે ?) હે દેવાનુપ્રિય ! કૂવાનો ઢેડકો કેવો હોય છે ?

( જિયસત્ત ! સે જહાનામએ અગઢદદ્દુરે સિયા સે ણં તત્થ જાએ તથેવ બુદ્ધે અન્નં અગઢં વા તલાગં વા દર્હં વા સરં વા સાગરં વા અપાસમાણે ચેવ મણ્ઢક અયં ચેવ અગઢેવા જાવ સાગરે વા )

આ પ્રમાણે જિતશત્રુ રાજાની વાત સાંભળીને ચોક્ષા પરિવાજિકાએ તેને કહ્યું કે જિતશત્રો ! સાંભળો તમને હું બધી વાત સમજાવું છું. જેમ કોઈ એક કૂવાનો ઢેડકો કે જે કૂવામાં તે જન્મ્યો છે અને તેજ ત્યાંજ ઉછર્યો છે તે જેમ પોતાના કૂવા સિવાય બીજા કોઈપણ કૂવા, તલાગ-કમળોવળું અગાધ સરોવર, દ્રઢ જલાશય વિશેષ અને સમુદ્રને કોઈપણ વખત ન જોવાથી એમ જ માને છે કે આ મારો કૂવો જ બીજો કૂવો છે યાવત્ સાગર છે.

આ મારા કૂવા સિવાય બીજુ કોઈ મોટું સરોવર કે જગત્સ્થાન જગતમાં નથી. (તણં તં કૂવં અણે સામુદ્રદદ્દુરે હવ્યમાગ) આ પ્રમાણે

स्थानाद् वा इह हव्यमागतः ? ततः खलु स सामुद्रको ददुरः तं कूपददुरमेवं वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्—हे देवानुप्रिय ! अहं सामुद्रको ददुरः=समुद्रनिवासी मण्डूकोऽस्मि । ततः खलु स कूप ददुरस्तं सामुद्रं ददुरमेवमवादीत्—‘ के महालय ’ कियन्महालयः=कियान विशालः खलु हे देवानुप्रिय ! स समुद्रः ? ततस्तदनन्तरं खलु स सामुद्रो ददुरस्तं कूपददुरमेवमवादीत् महालयः=अति विस्तीर्णः, खलु देवा-

से कूपददुरे तं सामुद्रददुरं एवं बयासी) इस प्रकार की मान्यता वाले उस मेढक के कूपपर उसी समय में कोई दूसरा समुद्र में रहने वाला मेढक आगया—उसे आया हुआ देखकर कूप के मेढक ने उस समुद्र निवासी मेढक से कहा—( से केसणं तुमं देवानुप्रिया ! कत्तो वा इह हव्यमागतः ? ) हे देवानुप्रिय ! यह तुम कौन हो—इस समय कहाँ से आरहे हो ? ( तएणं से सामुदे ददुरे तं कूपददुरं एवं बयासी प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी मेढक ने उस कूप मेढक से ऐसा कहा ( एवं खलु देवानुप्रिया ! अहं सामुद्रददुरे ) हे देवानुप्रिय ! मैं समुद्र का रहने वाला मेढक हूँ ( तएणं से कूप ददुरे तं सामुद्रं ददुरं एवं बयासी ) उस के ऐसे वचन सुन कर कूप मेढक ने उस समुद्र के निवासी ददुरे से इस प्रकार पूछा ( के महालयं देवानुप्रिया ! से समुदे ? ) हे देवानुप्रिय वह समुद्र कितना बड़ा है ? ( तएणं से सामुद्रददुरे तं कूपददुरं एवं बयासी ) प्रत्युत्तर में उस समुद्र निवासी ददुर ने उस से ऐसा कहा—( एवं खलु देवानुप्रिया महालयं

संकुचित विचार धरावता कूपाना देवकानि पासे गीले केधं समुद्रमां रडेनारा देवके आये। तेने आवेले। ओधने कूपाना देवकाने समुद्रना देवकाने कहुं— ( से केसणं तुमं देवानुप्रिया ! कत्तो वा इह हव्यमागतः ? ) हे देवानुप्रिय ? तमे केधुं छे ? अत्यारे तमे क्यांथी आवे। छे ? ( तएणं से सामुदे ददुरे तं कूपददुरं एवं बयासी ) जवाणमां ते समुद्रमां रडेनारा देवकाने कूपाना देवकाने आ प्रभाणु कहुं के ( एवं खलु देवानुप्रिया ! अहं सामुद्रददुरे ) हे देवानुप्रिय ! हूं समुद्रमां रडेनारा देवके छुं ( तएणं से कूपददुरे तं सामुद्रं ददुरं एवं बयासी ) तेनी आ प्रभाणु वात सांखणीने कूपाना देवकाने ते समुद्रमां रडेनारा देवकाने आ प्रभाणु कहुं के ( के महालयं देवानुप्रिया ! से समुदे ? ) हे देवानुप्रिय ! ते समुद्र केटवी भोटो छे ? ( तएणं से सामुद्रददुरे तं कूपददुरं एवं बयासी ) जवाणमां समुद्रना देवकाने तेने आ प्रभाणु कहुं के—

( एवं खलु देवानुप्रिया, महालयं देवानुप्रिया ! समुदे, तएणं से ददुरे

નુપ્રિય ! સમુદ્રઃ, તતસ્તદનન્તરં खलु स ददुरः=कूपमण्डूकः, पादेन रेखां कर्षति, कृष्ट्वा, एवमवादीत्-इयन्महालयः=एतावान् विस्तीर्णः खलु हे देवानुप्रिय । स समुद्रः ?, तदा समुद्रमण्डूक आह-‘ नायमर्थः समर्थः ’ इति अयं रेखाया निर्दिष्टो विस्तारः समुद्रविस्तारं बोधयितुं न शक्तइत्यर्थः । उक्तार्थे हेतुमाह-‘ महालय खलु स समुद्रः ’ खलु=निश्चेन स समुद्रो महालयोऽनि विस्तीर्णः समुद्रस्य महत्त्वं न केनापि निर्देष्टुं शक्यत इतिभावः । ततस्तदनन्तरं खलु स कूपददुरः पौरस्त्यात् =अग्रवर्तिनः, तीरादुत्पत्य=कूर्दयित्वा खलु गच्छति, = कूपस्य द्वितीयतीरमिति-भावः । गरवा एवमवादीत्-इयन्महालयः=एतावान्विहालः खलु हे देवानुप्रिय ।

देવાણુપ્પિયા ! સમુદ્દે, તણં સે દદુરે પાણં લીહં કઢ્ઢેહ, કઢ્ઢિત્તા એવં વયાસી, એ મહાલણં દેવાણુપ્પિયા ! સે સમુદ્દે ણો ઇણદ્દે સમદ્દે મહાલણં સે સમુદ્દે ) હે દેવાનુપ્રિય ! વહ સમુદ્ર તો વહુન વડા હૈ । હસ વાન કો સુનકર ઉસ કૂપ મેઢક ને અપને પૈર સે એક રેખા खेंची और खेंचकर बोला हे देवानुप्रिय ! वह समुद्र इतना भारी विशाल है । प्रत्युत्तर में उस समुद्रवासी मेंढक ने उस कूप मेंढक से कहा- नहीं वह इतना बड़ा नहीं है-वह तो इस से भी अधिक बड़ा है अर्थात् रेखा से निर्दिष्ट जो विस्तार है वह समुद्र के विस्तार को बनलाने में समर्थ नहीं हो सकना है-उस का विस्तार तो क्या कहे-वहुन ही अधिक है । ( तणं से कूवददुरे पुगत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्पिडित्ता णं गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी ए महालणं देवाणुप्पिया । से समुद्वे णो इणद्वे समद्वे ) समुद्रवासी मेंढक की वात सुनकर वह कूप मेंढक अपने अग्रवर्ती तीर से कूप के दूसरे तीर पर उछल गया-वहां

પાણં લીહં કઢ્ઢેહ, કઢ્ઢિત્તા એવં વયાસી, એ મહાલણં દેવાણુપ્પિયા ! સે સમુદ્દે ણો ઇણદ્દે સમદ્દે મહાલણં સે સમુદ્દે )

હે દેવાનુપ્રિય ! સમુદ્ર તો બહુ વિશાળ છે.

આ વાત સાંભળીને ક્વાના દેડકાએ પોતાના પગથી એક લીટી દોરી અને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે સમુદ્ર આટલો વિશાળ છે ! ત્યારે જવાબમાં સમુદ્રના દેડકાએ કહ્યું કે નહિ, તે આટલો મોટો નથી તે તો એના કરતાં પણ વિશાળ છે એટલે કે લીટી દોરીને જે વિસ્તાર બતાવવામાં આવ્યો છે તે સમુદ્રની વિશાળતાને અંકિત કરવામાં અશક્તિમાન છે તેના વિસ્તાર તો ખૂબ જ વિશાળ છે.

( તણં સે કૂવદદુરે પુરત્થિમિલ્લાઓ તોરાઓ ઉપ્પિડિત્તા ણં ગચ્છઈ ગચ્છિત્તા એવં વયાસી, એ મહાલણં દેવાણુપ્પિયા ! સમુદ્દે ણો ઇણદ્દે સમદ્દે )

सः समुद्रः १, एवं कूपमण्डकस्य वचः श्रुत्वा समुद्रमण्डकः पुनराह—‘ नायमर्थः समर्थः, इति दर्शनादेव समुद्रस्य महत्त्वं ज्ञातं भवति नतु तत् कथमपि निर्देष्टुं वक्तुं च शक्यं केनापीति भावः । तथैव=यथा स कूपमण्डकस्तद्वदेव, एवमेव = उक्त प्रकारेणैव, त्वमपि हे जितशत्रो ! अन्येषां बहूनां राजेश्वर-यावत् सार्थवाहप्रभृतीनां भार्या वा भगिनी वा दुहितरं वा स्नुषां वा अपश्यन् जानासि-यादृशं ममैव खलु अवरोधः =अन्तःपुरं, तादृशं नो अन्यस्य ।

जाकर कहने लगा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हारे द्वारा निर्दिष्ट वह समुद्र क्या इतना बड़ा है ? इस प्रकार कूप मेंढक के वचन सुन कर उस सासुद्रिक मेंढक ने कहा-

भाई क्या बतलावें देखने से ही उस की महत्ता ज्ञात हो सकनी है । यह कहने की और निर्दिष्ट करने की बात नहीं है । उस का निर्देश और कथन तो कोई कर ही नहीं सकता है । ( तथैव एवामेव तुमपि जियसत् ! अन्नेसिं बहूणं राईसर जाव सत्थवाह पमिईणं भज्जं वा भगिणीं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणेसि-जारिसए मम चेव-णं ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स ) इसी तरह हे जितशत्रो ! तुमने भी कभी और किसी राजेश्वर आदि सार्थवाह प्रभृतियों की भार्या को, भगिनी को, दुहिता को, स्नुषा को देखा नहीं है-इसीलिये ऐसा मान रहे हो कि जैसा अन्तः पुर हमारा हैं-वैसा और किसी का कहीं पर

समुद्रमां रडेनारा डेडकानी वात सांलणीने ते कूवाने। डेडके पोते न्यां भेडे डतो ते कूवाना डिनारा उपरथी कूवाना भील डिनारा उपर कूही गये। अने त्यां जधने कडेवा लाग्ये। डे डे देवानुप्रिय ! तमे जे समुद्रनी वात करे। छे। ते शुं आटवे। भोटो छे ? आ रीते कूवाना डेडकानी वात सांलणीने समुद्रना डेडकाये कछु—

बाध शुं कहीये ? समुद्रने जेवार्थी ज तेनी विगणतातुं ज्ञान थर्ग शके तेम छे। सुजेथी कडेवानी अने डीठीज्यो वगेरेथी निर्देध ते। थध शके तेमज्झातुं नथी।

( तथैव एवामेव तुमपि जियसत् ! अन्नेसिं बहूणं राई सरजाव सत्थवाह पमिईणं भज्जं वा भगिणीं वा धूयं वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेवणं ओराहे तारिसए णो अण्णस्स )

आ प्रमाद्ये ज डे जितशत्रो ! तमे पछु कोध द्विपस भील कोध राजेश्वर वगेरे तेमज्झ सार्थवाह वगेरेनी खीज्योने, भडेनने, दुडिताने, स्नुषा ( पुत्रनी वहुं ) ने जेध नथी। जेटवे ज तमे आभ मानो छे। डे मारा जेवे। रणुवाध भीजे कथाथ डोय ज नदि।



तदेवं खलु हे जितशत्रो ! मिथिलायां नगर्यां कुम्भकस्य राज्ञो दुहिता=पुत्री, प्रभावत्या आत्मजा=अङ्गजाता मल्ली नाम इति, रूपेण=सुन्दराकृत्या च यौवनेन च यावत् नो खलु अन्या कापि देवकन्या वा तादृशी विद्यते, यादृशी मल्ली । मल्ल्या विदेहराजवरकन्यायाच्छिन्नस्यापि पादाङ्गुष्ठस्यायं तवावरोधः शतसहस्र-तमामपि कलां=लक्षांशमपि नाहति ' इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा, सा चोक्षा परिव्राजिका यस्या दिशः प्रादुर्भूता, तामेव दिशं प्रतिगता । ततः खलु स जितशत्रुः परिव्रा-

भी नहीं है । ( तं एवं खलु जियसत्तू मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूया पभावतीए अत्तया मल्ली नामंति-रूपेण य जोव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली ) इसलिये हे जितशत्रो ! सुनो- मिथिला नगरी में कुंभक राजा की पुत्री जो प्रभावती की कुक्षि से उत्पन्न हुई है मल्ली कुमारी है । वह रूप और यौवन से इतनी अधिक सुन्दरी है कि उस के समक्ष ऐसी कोई देव कन्या आदि कोई भी कन्या सुन्दरी नहीं है- ( मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए छिण्णस्स वि पायंगुट्ठस्स इमे तवारोहे सयसहस्सतमं पि कलं न अग्घइ, त्ति कइडु जामेव दिसं पाउव्वूया तामेव दिसं पडिगया तएणं से जियसत्तू परि-व्वाइया जणियहासे दयं सदावेइ, सदावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए ) उस विदेह राज की उत्तम कन्या मल्ली कुमारी के कटे हुए पादाङ्गुष्ठ के एक लाख वें अंश बराबर २ भी यह आपका अवरोध अन्तपुर नहीं है ।

इस प्रकार कहकर वह चोक्षा परिव्राजिका जिस दिशा से आई

( तं एवं खलु जियसत्तू मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूया पभावतीए अत्तया मल्ली नामंति रूपेण य जोव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली )

ओटला भाटे छे एतशत्रो ! सांलगो, मिथिला नगरीभां प्रभावतीना गलंथी जन्मेली कुंभक राजानी पुत्री भल्लीकुमारी पोताना इय अने यौवनथी ओटली भधी सुंदरी छे के तेनी सामे तो देवकन्या पखु क'छ नथी ।

( मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए छिण्णस्स वि पायंगुट्ठस्स इमे तवारोहे सय सहस्सतमं पि कलं न अग्घइ, त्ति कइडु जामेव दिसं पाउव्वूया तामेव दिसं पडिगया तएणं से जियसत्तू ! परिव्वाइया जणियहासे दयं सदावेइ सदावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए )

विदेह राजानी उत्तम कन्या भल्लीकुमारीना कपाओला अंगूठाना ओक दाभभा भाग भराभर पखु आ तमारो अवरोधजन ( रज्जुवास ) नथी ।

आ प्रभाणे कहीने चोक्षा परिव्राजिका के दिशाथी आवी छती ते दिशा

जिका जनितहर्षः = चोक्षा परिव्राजिका वचनश्रवणानन्तरसंज्ञातमल्लीविषय-  
कानुरागः, दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा 'जाव पहारेत्थगमणाए' यावत्-मिथिलां  
गन्तुमादिष्टवान् ततः स दूतस्तदाज्ञानुसारेण माधारयद् गमनाय मिथिलां गन्तु  
प्रवृत्तः। इति षण्णामपि राज्ञां सम्बन्धः पृथक् २ प्रोक्तः ॥ सू० ३१ ॥

मूळम्-तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं  
दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थगमणाए, तएणं छप्पि-  
यदूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छिंति, उवागच्छित्ता  
मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं२ खंधावारनिवेसं करेति,  
करित्ता मिहिलं रायहाणिं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता  
जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पत्तेयं२ कर-  
यलपरिगहियं सिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कट्ठु  
साणं२ राईणं वयणाइं निवेदेति, तएणं से कुंभए तेसिं  
दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं

थी उसी दिशा तरफ वापिस चली गई। चोक्षा परिव्राजिका के वचन  
सुनने के बाद जिसे मल्ली कुमारी के विषय में अनुराग उत्पन्न हो गया  
है ऐसे उस जितशत्रु राजा ने दूत को बुलाया-और उस से मिथिला  
जाने के लिये कहा-वह दूत भी अपने राजा की आज्ञानुसार मिथिला  
नगरी तरफ जाने के लिये वहां रवाना हो गया। सूत्र " ३१ "

तरङ्ग पाछी जाती रही. चोक्षा परिव्राजिका भांथी भव्दीकुमारीना सौंदर्य  
विशे प्रशंसाजनक शब्दो सांभलीने जेना मनभां तेना भाटे अनुराग उत्पन्न  
थयो छ जेवा ते जितशत्रु राजाओ इतने गोलाओओ अने तेने मिथिला जवा  
भाटे आज्ञा करी इत पोताना राजना हुकम प्रभावे मिथिला नगरी तरङ्ग  
जवा छपडी गयो. ॥ सूत्र " ३१ " ॥

भिउंडि एवं वयासी-न देमिणं अहं तुब्भं मल्लिं विदेहराय-  
वरकण्णं तिकट्ठु ते छप्पिदूए असक्कारिय असम्माणिय अव-  
हारेणं णिच्छुभावेइ । तएणं जियसत्तू पामोकखाणं छण्हं  
राईणं दूया कुंभएणं रत्ता असक्कारिया असम्माणिया अव-  
हारेणं णिच्छुभाविया जेणेव सगा२ जाणवया जेणेव सयाइं२  
एगाराइं जेणेव सगा२ रायाणो तेणेव उवागच्छंति, उवाग-  
च्छित्ता करयल परि० एवं वयासी-एवं खलु सामी ! अम्हे  
जियसत्तू पामोकखाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव  
जेणेव मिहिला जाव अवहारेणं निच्छुभावेइ, तं ण देइणं  
सामी ! कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकण्णं साणं २ राईणं  
एयमट्ठं निवेदेति ।

तएणं ते जियसत्तू पामोकखा छप्पिरायाणो तेसिंदूयाणं  
अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्णमण्णस्स  
दूयसंपेसणं करेति, करित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणु-  
प्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव  
निच्छूडा, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कुंभगस्स जत्तं  
गेहिहत्तए त्तिकट्ठु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणि-  
त्ता ण्हाया सण्णद्धा हत्थिखंधवरगया सकोरंट मल्लदामेणं छत्तेणं  
धरिज्जमाणेणं, उद्धुव्वमाणाहिं सेयवरचामराहिं महयाहय-  
गयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा  
सन्विद्धीए जाव रवेणं सएहिं२ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति

निगच्छिता एगयओ मिलायंति, मिलायिता जेणेव मिहिलां  
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ३२ ॥

टीका—‘तएणं तेसिं’ इत्यादि। ततस्तदन्तरं तेषां जितशत्रुप्रमुखानां  
पणां राज्ञा दूता यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैव ‘माधारयद् गमनायं’ गन्तुमुद्यताः।  
ततः खलु षडपि दूता यत्रैव मिथिला तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिलाया  
‘अगुज्जाणंसि’ अग्रोधाने=प्रधानोधाने, प्रत्येकं २ ‘खंधावारनिवेशं’ स्कन्धावार-  
निवेशं=शिविरस्य ‘छावनी’ इति माया प्रसिद्धस्य निवेशं स्थापनं कुर्वन्ति, कृत्वा,  
मिथिलां राजधानीमनुप्रविशन्ति, यत्रैव कुम्भको राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

‘तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खानं’ इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इस के बाद (तेसिं जियसत्तू पामोक्खानं छण्ह  
राईणं) उन जितशत्रु प्रमुख छो राजाओं के (दूयां) दून (जेणेव  
मिहिला) जहां वह मिथिला नगरी थी (तेणेव पहारेत्थ गमणाए)  
उस ओर अपने २ स्थान से चल दिये (तएणं छप्पियदूया जेणेव  
मिहिला तेणेव उवागच्छन्ति) चलते २ वे छोहों ही दूत एक  
ही साथ जहां मिथिला नगरी थी वहां आये। (उवागच्छिता  
मिहिलाए अगुज्जाणंसि पत्तेयं २ खंधावारनिवेशं करेंति, करिस्ता मि-  
हिलं रायहाणि अणुपविसंति) वहां आकर मिथिलानगरी प्रधान उद्यान  
में उन सबने अलग २ अपनी २ छावनी डाल दी। छावनी डालकर  
फिर वे मिथिला नगरी में प्रवेश किया—(अणुपविसिस्ता जेणेव कुंभं)

तएणं तेसिं जियसत्तू पामोक्खानं’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्वा२पछी (तेसिं जियसत्तू पामोक्खानं छण्ह राईणं)  
जितशत्रु प्रमुख छो राजाओं (दूयां) दूता (जेणेव मिहिला) जहां मिथिला  
नगरी होती (तेणेव पहारेत्थ गमणाए) ते तत्क्ष पोतपोताना स्थानेथी उपडी  
गया। (तएणं छप्पिय दूया जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छन्ति) ते छो राजा  
आवता आवता छो साथे २ जहां मिथिला नगरी होती त्हां आवी पडोन्था।

(उवागच्छिता मिहिलाए अगुज्जाणंसि पत्तेयं २ खंधावार निवेशं करेंति,  
करिस्ता मिहिलं रायहाणि अणुपविसंति)

त्हां पडोन्थीने जथा छो मिथिला नगरीना प्रधान उद्यानमां पोतपोताने  
पडाव नाभ्यो। पडाव नाभीने-ते छो मिथिला नगरीमा गया। (अणुपविसिस्ता  
जेणेव कुंभं तेणेव उवागच्छन्ति) जने जहां कुंभके राजा होता त्हां पडोन्था।

प्रत्येकं २ करयल परिगृहीतं शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा स्वेषां स्वेषां राज्ञां 'वयणाई' वचनानि=कथनानि निवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं स कुम्भको राजा तेषां दूतानामन्तिके-समीपे, एतमर्थं 'जितशत्रुप्रमुखः' षडपि राजानो मली कञ्चन्ति' इत्येतद्वचनं वृत्तान्तं श्रुत्वा 'आसुरुत्ते' आशुरुत्तः=शीघ्रं क्रोधाविष्टः, यावत्-त्रिवलिकां=रेखात्रययुतां भ्रुकुटि=भ्रुवः कौटिल्यं ललाटे कुर्वन् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अथादीत्=हे दूताः 'नो दास्यामि खलु अहं युष्माकं राजभ्यो मल्लीं विदेहराजवरकन्याम्' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा तान् षडपि दूतान् अस्तकृत्य,

तेष्वेव उवागच्छन्ति) प्रवेश कर जहां कुम्भक राजा थे-वहां आये (उवागच्छन्ति पतेयं २ करयल परिगृहीतं शिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कहुं साणं २ राईणं वयणाणि निवेदेंति) वहां आकर उन सबोंने मिल २ रूप से कुम्भक राजा को दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-नमस्कार कर के फिर उन्होंने क्रमशः अपने २ राजा का कथन उसे सुनाया-(तएणं से कुम्भए तेसिं दूयाणं अन्तिए एयमदं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं मिउडिं एवं वयासी) जितशत्रु प्रमुख छहों ही दूषति मेरी पुत्री मल्लीकुमारी को ब्याह रहे हैं इस प्रकार का समाचार उन दूतों के पास से सुनकर वह कुम्भक राजा इकदम क्रोधित हो गया-और उसी समय उसकी त्रिवलियुक्त भ्रुकुटि मस्तक पर चढ़ गई ।

इसी आवेश में उसने उन दूतों से इस प्रकार कहा-(न देमि णं अहं तुवमं मल्ली विदेह रायवरकणं ति कहुंते छप्पि दूए असक्का-

(उवागच्छन्ति पतेयं २ करयलपरिगृहीतं शिरसावत्तं दसनहं मत्थए अंजलिं कहुं साणं २ राईणं वयणाणि निवेदेंति )

त्यां जहाँ ने तेजो अधाओ जुहा जुहा रूपमां कुंलक राजने अने लथनी अजलि अतापीने अने तेने मस्तकें भुङ्गीने नमस्कार कया अने नमस्कार करीने तेजोओ वाराइरती पोतपोताना राजनी सदृशो तेमने कही संलग्नाओ.

(तएणं से कुम्भए तेसिं दूयाणं अन्तिए एयमदं सोच्चा आसुरुत्तेजाव तिवलियं मिउडिं एवं वयासी)

एतशत्रु प्रमुख छओ छ राजओ भारी पुत्री मल्लीकुमारीने बाडे छे आ नतनेओ सदृश इतोना मोथी सालगनीने कुंलक राज ओकदम गुरसे थर गय अने त्रल्ले रेखाओवाणा तेमनी भ्रुकुटी लभरी पके थर गर.

कौतना आवेशमां राजओ ते इतोने कही संलग्नाओ के—

(न देमि णं अहं तुवमं मल्ली विदेहरायवर कणं ति कहुंते छप्पि दूए

असमान्य, च 'अवहारेण' अपद्वारेण = भवनपश्चाद्भागस्थितलघुद्वारेण 'णिच्छुभावे' निःसारयति० ।

ततस्तदनन्तरं खलु ते जितशत्रुप्रमुखानां षण्णां राज्ञां दूताः क्रुम्भकेन राज्ञा, असत्कारिताः असम्मानिता अपद्वारेण निःसारिता सन्तः यत्रैव स्वकाः २ = आत्मीयाः २, 'जाणवया' जानपदाः = देशाः, यत्रैव स्वकानि २ नगराणि, यत्रैव स्वकाः २ राजान आसन्, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपायुगत्य करतलपरिशृङ्खलं दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादिषुः — हे स्वामिन् !

रिय अवहारेणं णिच्छुभावेह ) हे दूतों ! मैं अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी तुम्हारे राजाओं के लिये नहीं दूंगा " ऐसा कहकर उसने उन दूतों को न कोई सत्कार किया और न कोई सम्मान ही किया—किन्तु उन्हें भवन के पीछे भाग के छोटे से दरवाजे से बाहिर निकाल दिया । ( तएणं जियसत्तू पामोकखाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रत्ता असक्कारिया असम्मानिया अवहारेणं णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाहं २ नगराहं जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवागच्छन्ति ) इस तरह उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं के वे दूत कुंभक राजा से असत्कृत एवं असम्मानित होते हुए जब महल के पिछले छोटे से द्वार से बाहिर निकाल दिये गये तब वे वहां से प्रस्थित होकर जहां अपना २ जनपद था, वहां अपने २ नगर थे, और उन में भी जहां अपने २ राजा थे वहां आ गये ।

असक्कारिय असम्मानिय अवहारेणं णिच्छुभावेह )

" हे दूतो भारी पुत्री विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तमारा राज्ञोने आपीश नहि. " आ प्रभाषे कहीने राज्ञे दूतोने कोछि पण् इपमां सत्कार अने सम्मान न करतां तेजोने पोताना भडेलना पाछणना नाना आरखेथी भडार काढी भूझ्या.

( तएणं जियसत्तू पामोकखाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रत्ता असक्कारिया असम्मानिया अवहारेणं णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगार जाणवया जेणेव सयाहं २ नगराहं जेणेव सगार रायाणो तेणेव उवागच्छन्ति )

आ प्रभाषे एतशत्रु प्रमुख राज्ञोना ते दूतो कुंभकराज वडे असत्कृत अने असम्मानित यतां न्यारे भडेलना पाछवा आरखेथी भडार काढी भूझ-पायां आव्या त्यारे तेजो त्यांथी रवाना यधने न्यां तेमने जनपद ( देश ) छतो, न्यां तेमनुं नगर छतुं अने तेमां पण् न्यां तेमना राज छता त्या पडोन्त्या.

एवं खलु वयं जितशत्रुप्रमुखानां पणानां राज्ञां दत्ताः 'जमगसमगं' युगपत्  
 = एकस्मिन् काल एव, यत्रैव मिथिला यावत् - तत्रैव गत्वा स्वेषां स्वेषां  
 राज्ञां वचनानि निवेदितवन्तः, तदा स कुम्भकः शीघ्रं क्रोधाविष्टः सन् 'न दास्या-  
 म्यहं मल्ली' मित्युक्त्वाऽस्मानसत्कृत्यासंमान्य, अपद्वारेण 'निच्छुभावेइ' निःसा-  
 रयति=निष्कासयति स्मेत्यर्थः। ततः=तस्माद् न ददाति हे स्वामिन्। कुम्भको  
 मल्लीं विदेर राजवरकन्याम् इत्युक्त्वा षडपि दत्ताः स्वेषां स्वेषां राज्ञामेतमुक्तमर्थं  
 निवेदयन्ति कथयन्ति स्म।

(उवागच्छिता करयलपरि० एवं वयासी) वहां आकर उन्होंने उन्हें  
 दोनों हाथों की अंजलि बनाकर नमस्कार किया (एवं खलु सामी।  
 अम्हे जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव  
 मिहिला जाव अवहारेणं निच्छुभावेइ) हे स्वामिन्! हम सब जितशत्रु  
 प्रमुख छहों राजाओं के दत्त एक ही समय जहां मिथिला नगरी थी-वहां  
 पहुँचे-वहां पहुँचकर कुम्भक राजा के दर्शनार्थ उनके राजमहल में गये  
 वहां जाकर हमलोगों ने सविनय अपने २ राजाओं के वक्तव्य उन्हें  
 कहकर सुनाये सुनते ही वे कुम्भक राजा क्रोध से भर गये-और कहने  
 लगे-हम अपनी पुत्री मल्ली कुमारी किसी को नहीं देगे ऐसा कहते  
 हुए उन्होंने ने बाद में हमलोगों को असत्कृत एवं असंमानित कर अपने  
 महल से उसके पिछले छोटे से दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया।

(उवागच्छिता करयल परि० एवं वयासी) त्यां आवीने तेभञ्जे जने  
 काशेनी अंजली पतावीने नमन कर्था।

(एवं खलु सामी! अम्हे जियसत्तू पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमग-  
 समगं चेव जेणेव मिहिला जाव अवहारेणं निच्छुभावेइ)

अने कहुं हे स्वामिन्! अमे भधा जितशत्रु प्रमुण छजे छ राजाओंना  
 दूतो जेक ज समयमां न्यां मिथिला नगरी छती त्यां पडोन्था, त्यां पडो  
 थिने कुलकराजना दशन भाटे अमे राजमहलमां गया. त्या पडोन्थिने अमे  
 दोक्रेजे विनयनी साथे पोतपोताना राजांना सदृश तेभने कही संलग्नाथो.  
 कुलकराज ते सदृशांजोने सांलगतां ज शुरुसे थछ गया अने कडेवा लाग्था  
 के हुं भारी पुत्री मल्लीकुमारी केधने य आपीथ नहि. आस कडेतां तेभञ्जे  
 अम्हने असत्कृत तेभज असंमानित करीने पोताना भडेलना पाछगना नाना  
 आरक्ष्ण्थी पडार कादी भूक्या.

ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः बह्वपि राजानस्तेषां दूतानामन्तिके=समीपे, एतमर्थं श्रुत्वा=कर्णगोचरीकृत्य, निश्चम्य=अर्थमवगम्य आश्रुताः=शीघ्रं क्रोधा-विष्टाः 'अण्णमणस्स' अन्योन्यस्य=परस्परस्य दूतसंघेयं कुर्वन्ति, कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अत्रादिषुः—हे देवानुप्रिया ! एवं खलु अस्माकं वृणां राज्ञां दूताः युगपदेव यावदसत्कृत्यासमान्यापद्वारेण 'णिच्छूढा' निक्षिप्ताः= निः

(तं णं देइणं सामी ! कुंभए मल्लिं चिदेहरायवरकन्नं साणं २ राईणं एयमइं नि वेदेति) अतः हे स्वामिन् ! आप निश्चय समझे—कुंभ-कराजा अपनी चिदेह राजवरकन्या मल्लीकुमारी को नहीं देता है । ऐसा कहकर उन छहों दूतों ने इसी उक्त अर्थ की पुष्टी अपने २ राजाओं के समक्ष की । (तएणं से जियसत्तू पामोकखा छप्पिरायानो तेसिं दूयाणं अन्तिए एयमइं सोच्चा निसम्म असुरुत्ता अण्णमणस्स दूय-संपेसणं करेति) इसके बाद उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने दूतों के मुखसे इस बात को सुनकर और उसे समझ कर क्रोधित हो अपने २ दूतों को एक दूसरे राजा के पास भेजा ( करित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवानुप्रिया ! अहं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चैव जाव णि-च्छूढा ) भेज कर उन दूतों से यह समचार कहलवाये—हे देवानुप्रियो ! देखो हम छहों राजाओं के दूत एक ही समय कुंभक राजा के पास

(तं णं देइणं सामी ! कुंभए मल्लिं चिदेहरायवरकन्नं साणं २ राईणं एयमइं निवेदेति)

जोथी हे स्वामिन् ! तमे योद्धसपणे आ नक्षीवो के कुंभक पोतानी विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी आपणे नहि आ प्रभाणे कहीने छजे इतोअे पोतपोताना राजजोनी साथे पोताना मतनी पुष्टि करी.

(तएणं से जियसत्तू पामोकखा छप्पिरायानो तेसिं दूयाणं अन्तिए एयमइं, सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्ण मणस्स दूयसंपेसणं करेति)

त्यारभाइ एतयत्र प्रमुख छजे राजजो इतोना जुजोथी आ प्रभाणे बात साक्षणीने अने तेने नरैणर समणेने गुस्से थया अने पोतपोताना इतोने जोक जीव राजनी पासो भोक्थ्या.

(करित्ता एवं वयासी एवं खलु देवानुप्रिया ! अहं राईणं दूया जमग-समगंचैव जाव णिच्छूढा)

तेजोअे ते इतोनी साथे आ नतने सदेश भोक्थ्या के हे देवानुप्रियो ! आपणा छजे राजजोना इतो, जोकी वण्णे कुंभकराजानी पासो गथा. त्यां तेणे



સારિતાઃ । તત્=તસ્માત્ શ્રેયઃ સ્વલ્લ હૈ દેવાણુપિયાઃ ! અસ્માકં કુમ્ભકાય કુમ્ભક-  
પરાજયાય 'જત્તં' યાત્રાં=યુદ્ધયાત્રાં ગ્રહીતું=સ્વીકર્તું શ્રેય ઇતિ પૂર્વસમ્બન્ધઃ । ઇતિ  
કૃત્વા=ઇતિ પરામૃશ્ય-ત્રિચાર્યં, પરસ્પરસ્યૈતમર્થં પ્રતિગૃણ્ણન્તિ, સ્વીકૃર્વન્તિ, પ્રતિ-  
શ્રુત્ય, તે જિતશત્રુપ્રમુલ્લાઃ વડપિ રાજાનઃ સ્નાતાઃ સખદ્વાઃ=યુદ્ધોપકરણ-કવચાદિ  
ધારણેન સજ્જીકૃતશરીરાઃ, હસ્તિસ્કન્ધવરગતાઃ=ગજોપરિસમારૂઢાઃ, 'સકોરંદ

પહુંચે-વહાં ઉસને હમલોગોં કે દૂતોં કા કોઈં મી સત્કાર ઔર સન્માન  
નહીં કિયા-કિન્તુ ઉન્હેં અપમાનિત કર અપને મહલ કે પિછલે છોડે  
દરવાજે સે બાહિર નિકલવા દિયા-(તં) અતઃ-(સેયં સ્વલ્લ દેવાણુપિયા ।  
અમ્હં કુંભગસસજત્તં ગેણિહ્તાપ સ્તિ કટ્દટ્ઠ અણ્ણમણ્ણસ્સ ઇયમટ્ઠં પઢિ-  
સુણેંતિ, પઢિસુણિત્તા, ણ્હાયા, સણ્ણદ્દા હત્થિકંધવરગયા સકોરંદમલ્લ  
દામેણં છત્તેણં ધરિજ્જમાણેણં ઉદ્ધુયમાનાર્હિં સેયવરચામાર્હિં મહ્યાં  
હયગયરહપવરજોહકલિયાપ ચાડરંગિણીપ સેણાપ સદ્ધિં સંપરિવુડા સન્નિ-  
હ્વીપ જાવ નિગ્ગચ્છંતિ) હમ લોગોંકા અથ યહી કર્તવ્ય શ્રેયસ્કર હૈં કિ હમ  
લોગ કુમ્ભક રાજા કો પરાજિત કરને કે લિયે ઉન પર ચઢાઈ કર દેં ।

હમ પ્રકાર કા જબ ઉન સબ કા પરામર્શ હો ચુકા તથ સબ ને એક  
મત હો હસ બાત કો માન લિયા । મન ઊંને કે બાદ બે જિતશત્રુ પ્રમુલ્લ  
સબ હી રાજા નહીં ઘોકર યુદ્ધોપકરણોં સે સુસજ્જિત હો ગયે । ઔર  
હાથિયોં કે સ્કન્ધોં પર આરૂઢ હોકર મહાન ૨ હયોં સે-ગજોં સે રથોં સે

આપણા દૂતોના સત્કાર કે સન્માન કંઈજ કયું નથી, અને તેમને અપમાનિત  
કરીને પોતાના મહેલના પાછલા નાના બારણેથી બહાર કાઢી મુકાવ્યા છે (તં) એથી

(સેયં સ્વલ્લ દેવાણુપિયા ! અમ્હં કુંભગસસ જત્તં ગેણિહ્તાપ સ્તિકટ્ઠટ્ઠ અણ  
મણ્ણસ્સ ઇયમટ્ઠં પઢિસુણેંતિ, પઢિસુણિત્તા, ણ્હાયા સણ્ણદ્દા, હત્થિકંધવરગયા સકો-  
રંદમલ્લદામેણં છત્તેણં ધરિજ્જમાણેણં ઉદ્ધુયમાનાર્હિં સેયવરચામાર્હિં મહ્યાં હય  
ગયરહપવરજોહકલિયાપ ચાડરંગિણીપ સેણાપ સદ્ધિં સંપરિવુડા સન્નિહ્વીપ જાવ  
સ્વેણં સપર્હિં ૨ નગરેહિતો જાવ નિગ્ગચ્છંતિ )

હવે અમારા માટે એક જ કર્તવ્ય શ્રેયસ્કર લાગે છે કે અમે કુંભક  
રાજાને હરાવવા માટે તેમના ઉપર આક્રમણ કરીએ.

બીયારે આ પ્રમાણે બધાએ વિચાર કર્યો ત્યારે સહુએ એકમત થઇને  
આ નિર્ણય સ્વીકારી લીધો. ત્યારપછી જીતશત્રુ પ્રમુખ બધા રાજાઓ સ્નાન  
કરીને યુદ્ધ માટેનાં બધાં સાધનોથી સુસજ્જ થઇ ગયા અને તેઓ બધા

मल्लदामेण ' सकोरुण्टमात्यदाम्ना=कोरुण्ट पुष्पमात्यदामयुक्तेन ' छत्तेण धरिज्ज-  
माणेण उद्धुव्वमाणार्हिं सेयवरचामराहिं ' छत्रेण ध्रियमाणेन स्वस्वभृत्येन उद्धु-  
यमानैः श्वेतवरचामरैश्चयुक्ताः, ' महायाहयगयरहयवरजोहकलियाए ' महाहय-  
गजरथप्रवरयोधकलितया=महान्तश्च हयगजरथप्रवरयोधाश्चेति समाहारद्वन्द्वः महा-  
हयगजरथप्रवरयोधं, सेनाङ्गत्वादेकवद्भावः, तेन कलितया = युक्तया, अतएव-  
चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं संपरि कृताः ' सव्विड्डीए ' सर्वद्वर्द्या = राजचिह्नादि  
रूपया युक्तः यावद्-रवेण = युद्धोत्साहवर्षकतुर्यादि शब्देन स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो  
नगरेभ्यो यावद् निर्गच्छन्ति, निगत्य, एकतः एकत्र-एकस्मिन् स्थाने मिलन्ति,  
मिलित्वा ते जितशत्रुप्रमुखः षडपि राजानो यत्रैव मिथिलानगरी, तत्रैव प्राधारयन्  
गमनाय=गन्तुं प्रवृत्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३२ ॥

प्रवर योधाओंसे कलित चतुरंगिणी सेना को साथ लेकर अपने २ नगरों  
से बाहिर निकले । हाथी पर जब ये राजा जन बैठे हुए थे उस समय  
इन के ऊपर छत्र धारी भृत्यों ने कोरुण्टक पुष्प मात्य दाम से युक्त छत्र  
ताना हुआ था । आमर ढोरने वाले भृत्यजन उस समय इन के ऊपर  
श्वेतवर आमर ढोर रहे थे । ये समस्त राजाजन राज्यार्थ आह्लाद जनक  
रूप सर्वद्वि से युक्त होकर ही उत्साह वर्षक तुर्यादि के शब्दों द्वारा  
संस्तुत होते हुए-अपने २ नगरों से निकले थे । ( निगच्छित्ता एगया-  
ओ मिलायंति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए )  
निकल कर ये सब एक स्थान पर मिल गये । मिलनेके बाद ये सब जितशत्रु  
प्रमुख-उन्हों राजा फिर वहांसे मिथिला नगरीकी ओर चल दिये । सू. ३२।

छाथीओना उपर खवार थधने भोटा घोडाओ, छाथीओ, रथो अने भण्डाहर  
घोडाओनी अतुरंगिणी सेना साथे लधने पोतपोताना नगरनी भण्डार नीकल्या.  
छाथीओ उपर न्यारे भधा रानओ भेडा डता ते वभते छत्रधारी भृत्योओ  
तेभना उपर कोरुण्टक पुष्पमात्य दामवाणुं छत्र धडुं डतुं. आभर ढेणनारा  
भृत्यओने ते सभये तेभना उपर सङ्केह आभरो ढेणता डता. ते भधा रानओ  
रान्यार्थ आहुलादिप सर्वद्वि युक्त थधने उत्साह वधारनार तुर्यादिना शब्दो  
पडे संस्तुत थता पोतपोताना नगरेशी भण्डार नीकल्या डता.

( निगच्छित्ता एगयाओ मिलायंति-मिलायित्ता, जेणेव मिहिला तेणेव  
पहारेत्थ गमणाए )

भण्डार नीकणीने तेओ भधा ओक स्थाने ओकठा थया. ओकठा थधने तेओ भधा  
लुतशत्रु प्रमुख छओ रानओ त्यांथी मिथिला नगरी तरङ्ग रवाना थया. ॥ सू० ३२ ॥

मूलम्—तएणं से कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धहे समणे बलवाउयं सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव० हय जाव सेणणं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणइ, तएणं कुंभए णहाए सण्णद्धे हत्थिखंध० सकोरंट० सेयवरचामराहिं० महया मिहिलं मज्झंमज्झेणं णिज्जाइ, णिज्जित्ता विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देस अंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंधावरनिवेसं करेइ, कृत्वा, जियसत्तूपामोक्खा छप्पियरायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ. तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिय रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभएणं रत्ता संद्धि संपलग्गा यावि होत्था, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हयमहियपवरवीरघाइयनिविडियचि-  
धद्धयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसो दिसिं पडिसोहिंति, तएणंसे कुंभए जियसत्तूपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहित जाव पडिसेहिए समणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव आधारणिज्जमितिकट्टु सिग्धंतुरियं जाव वेइयं जेणेव मिहिला-  
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिलं अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ॥सू०३३॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु स कुम्भको राजाऽस्याः

‘तएणं से कुंभए राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं इसके बाद (से कुंभए इमीसे कहाए लद्धहे समणे बल

तएणं से कुंभएराया इत्यादि ॥

टीकार्थ—(त एणं) त्या २ ५७ (से कुंभए इमीसे कहाए लद्धहे समणे बल

कथाया लब्धार्थः= ज्ञातार्थः सन् ‘बलवाउयं’ बलव्यापृतं=सैन्यव्यापारपरायणं= सैन्यनायकमित्यर्थः, शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत् भो देवानुप्रिय ! क्षिप्रमेव ‘हयजाव सेणं’ हय०यावत्-सैन्यं-हयगजरथप्रवरयोध-कलितं चतुरङ्गयुक्तं सैन्यं ‘सन्नाहेह’ संनाह्य=सन्नद्धं कृत-सज्जीकृतित्यर्थः । यावत् प्रत्यर्पयति, ततोऽसौ सेनापतिः सैन्यं सज्जीकृत्य, कुम्भकं राजानं निवेदयति-हे स्वामिन् ! सैन्यमस्माभिः सन्नद्धीकृतमिति । ततस्तदनन्तरं स कुम्भको राजा स्नातः सन्नद्धः = युद्धोपकरणशस्त्रास्त्रकवचादि धारणेन सज्जीकृतशरीरः हस्ति-स्कन्धव्रगतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कौरण्टपुष्परचितमालायुक्तेन छत्रेण स्वभृत्येन

वाउयं सहावेइ ) कुंभक राजा को जब यह पता चला-तब उस ने अपने सेना नायकको बुलाया-(महाविक्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा-(क्षिप्पामेव० हय गय जाव सेणं सन्नाहेह जाव पक्वप्पिणह ) भो देवानुप्रिय ! तुम जल्दी से जल्दी हय-गज-रथ एवं प्रवर योधाओं से युक्त चतुरंगिणी सेना को सजाओ । और इस की हमे पीछे आकर खबर दो-सेना नायक ने ऐसा ही किया-सेना सजा कर राजा को खबर दी कि हे स्वामिन् ! हमने आप की आज्ञानुसार सैन्य सज्जित कर दिया है । ( तपणं कुंभए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खं० सकोरंट० सेयवर चामरारहिं महया मिहिलं मज्झं मज्झेणं णिज्जाइ ) इस के बाद कुंभक राजा ने स्नान कर अपने शरीर को युद्धोपकरणों से-शस्त्र अस्त्र एवं कवचादि के धारण से-सज्जित किया । बाद में हाथों के स्कन्ध पर

बाधयं सहावेइ ) कुंभक राजाने न्याये आवातनी लब्ध थल न्याये तेष्से पोताना सेनापतिने गोलाभ्ये ( सहाविक्ता एवं वयासी ) गोलावीने तेने कथुं—

( क्षिप्पामेव० हय गय जाव सेणं सन्नाहेह जाव पक्वप्पिणह )

हे देवानुप्रिये ! तमे अत्ररे बोझा, छाथी, रथ अने गडाद्वर योद्धाओं-वाणी चतुरंगिणी सेना तैयार करो अने अभने भणर आपो। सेनापतिओ पोतानुं काम पुइ कथुं, अने राजाने सुयना आपी के हे स्वामिन् ! तमारी आज्ञा प्रभाओ अभे सेना तैयार करी दीधी छे.

( तपणं कुंभए ण्हाए सन्नद्ध हत्थि खं० सकोरंट० सेयवरचामरारहिं महया मिहिलं, मज्झं मज्झेणं णिज्जाइ )

न्यायभाट्ट कुंभक राजाओ स्नान कथुं अने पछी पोताना शरीरने युद्धना साधनोधी सुसज्ज कथुं. जोटले के राजाओ शस्त्र, अस्त्र, इवय वगेरे धारण कथो. तेओ छाथीनी उपर सवार थया, राजाने छाथी उपर सवार थयेवा.

प्रियमाणेन युक्तः, तथा-उद्भूयमानैः=वीज्यमानैः श्वतवरचामरैर्युक्तः तथा-महा-  
हयगजरथादियुक्तया चतुरङ्गिण्या सेनया संपरिव्रतः, सर्वदर्या संपन्नः तूरीमेर्या-  
दिवाद्यमहानादेन मिथिलानगर्या मध्यमध्येन 'णिज्जाइ' निर्याति=निर्गच्छति ।  
निर्याय विदेहजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशान्तः स्वदेशस्य सीमा वर्तते,  
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'खंधावारनिवेशं' स्कन्धावारनिवेशं=स्कन्धावारस्य  
शिविरस्य 'छावनी' इति मापाप्रसिद्धस्य निवेशं-स्थापनं, कुर्वन्ति । कृत्वा स  
कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः 'पडिवाले माणे' प्रतीक्षमाणः, युद्धस-  
ज्जः युद्धाय सज्जः शस्त्रास्त्रकवचवन्धेन युद्धार्थमुद्यतः सन् प्रतितिष्ठति । ततस्तदनन्तरं

विराजमान हो गये । उन के बैठते ही । छत्र धारियों ने उन के ऊपर  
कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र धारण किया चमर ढोर ने  
बालों ने उन के ऊपर श्वेत चमर ढोर ना प्रारंभ कर दिया । इस प्रकार  
महागज, हय, रथादि से युक्त चतुरंगिणी सेना से घिरे हुए अपनी  
पूर्ण तैयारी के साथ मिथिला नगरी के बीचसे होकर निकले । (णिगच्छि-  
त्ता विदेहं जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देस अंते तेणेव उवागच्छइ )  
निकल कर विदेह जनपद के बीच से होकर जहाँ अपने देश की सीमा  
थी वहाँ पहुँचे ।

( उवागच्छिता खंधावारनिवेशं करेइ ) वहाँ पहुँच कर उन्होंने वहीं  
अपनी छावनी स्थापित कर दो- ( करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय  
रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिद्धइ ) बादमें जितशत्रु प्रमुख

नेधने छत्रधारीओओ कोरंट पुष्पोनी भाणाथी शोलातुं छत्र धयुं". आभर ढोणनार  
भूत्थोओ आभरौ ढोणवानुं शइ कयुं". आ सीते महुगज हय रथ वजरे तेभओ  
चतुरंगिणी सेना युक्त यधने पोतानि पूरी तैयारी साथे मिथिला नगरीनी  
पच्छेना राजभागं उपरथी गहारे नीकल्या.

(णिगच्छित्ता विदेहं जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव देस अंते तेणेव उवागच्छइ )  
नीकणीने विदेह जनपदनी पच्छे यधने जथा पोताना देशनी छेद डती त्यां पडोअथा.  
उवागच्छिता खंधावारनिवेशं करेइ त्यां पडोअनीने तेओओ त्यां ओसेनानी छावणी  
नाथी (करित्ता जियसत्तू पामोक्खा छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे  
पडिचिद्धइ )

त्यारणाद जितशत्रु प्रमुख छओ राजओनी प्रतीक्षा करतां तेओ त्यांभ  
युद्धने आटे कभर कसीने रोजाया.

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो यत्रैव कुम्भकस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कुम्भकेन राज्ञा सार्धं 'संपलग्ना' संपलग्नाः—युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चाप्यभवन् । ततस्तेदनन्तरं खलु जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानः कुम्भकं राजानं 'इयमहिय-पवरवीरघाड्यनिविडियविंघद्वयच्छत्तपडागं' इतमथितप्रवरवीरघातित—निपतित चिह्नध्वजच्छत्रपताकं—इताः=मारिताः, मथिताः=विलोडिताः—ताडिताः, तथा घातिताः घातम् आघातं व्यथां प्राप्ताः प्रवरवीराः=महामटाः, यस्य स इतमथित प्रवरवीरघातितः, आर्षत्वाद् घातितशब्दस्य परमयोगः, निपातिताश्चिह्नध्वजपताका यस्य स निपतितचिह्नध्वजच्छत्रपताकः, ततः कर्मधारयः, तमेवभूतं नष्टैर्न्यध्वजपताकमित्यर्थः 'किच्छप्पाणोवगयं' कुच्छप्पाणोपगतं—कुच्छे—कष्टे, प्राणा

उन छहों राजाओं कीप्रतीक्षा करते हुए वे वहींपर युद्धके लिये कटिबद्ध होकर ठहरगये । ( तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति ) इतने में वे जितशत्रुप्रमुख छहों राजा जहाँ वे कुंभक राजा पहुँचे हुए थे—वहाँ आ गये ।

(उवागच्छित्ता कुंभएणं रत्ता सद्धिं संपलग्ना यावि होत्था) आते ही उन लोगोंने कुंभकराजा के साथ युद्ध करना प्रारंभ कर दिया । ( तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं इयमहियपवरवीर घाड्यनिविडियविंघद्वयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसो दिस्सि पडि से-हिंति ) युद्ध में उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने कुंभकराजा के कितनेक वीरों को जान से मार डाला, कितनेक वीरों को बुरी तरह पीटा, और कितनेक वीरों को घायल कर दिया । तथा राजचिह्न रूप ध्वज—पताका एवं छत्र उसके जमीन पर गिरादिये । इस तरह उसके

(तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति )  
अट्टलाभां तेज्जो छज्जे शतशत्रु प्रमुखे राजज्जो न्या कुंलकराज्ज इता त्यां पडेअत्था.

( उवागच्छित्ता कुंभएणं रत्ता सद्धिं संपलग्ना यावि होत्था ) अने तेज्जोअजे तशत ७४ युद्ध शत्रु करो दीधुं.

( तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पिरायाणो कुंभयं रायं इयमहिय पवरवीर-घाड्य निविडिय विंघद्वयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसोदिस्सि पडिसेहिंति )

युद्धमां तेज्जो जितशत्रु प्रमुखे छज्जे राजज्जोअजे कुंलक राजना डेटलाक वीशेने ज्ञानथी मारी नाभ्या, डेटलाक वीशेने लथंकर रीते टीपी नाभ्या, अने डेटलाक वीशेने ७४भगी ज्ञानावी दीधा तेम ७४ राज जिह्म ३५ ५५७—

उपगता यस्य स कुच्छप्राणोपगतस्तं प्राणसंकटापन्नम् 'दिशः दिशं' = एकस्या दिशः—अपरां दिशं—'पडिसेहेति' प्रतिषेधयति=निवारयन्ति ततस्तदनन्तरं खलु स कुम्भको राजा जितशत्रुप्रमुखैः षड्वीराजमिहृतमथित—यावत् प्रवरवीरघाति विह्वलध्वजछत्रपताकः कुच्छप्राणोपगतः प्रतिषिद्धः सन् अस्थामा=आत्मबलरहितः, अबलः=सैन्यरहितः अत एव 'अवीरिण्'—अवीर्यः=उत्साहरहितः । यावत्—'आधारणिज्जं' आधारणीयम्—आत्माधार्यते स्थाप्यते यत्र तद् धारणीयं, न धारणीयमिति विग्रहः, आधारणीयं परबलम्—अत्र शत्रुसैन्ये ममात्मधारणमशक्वमित्यर्थः । इतिकृत्वा—एवं विचार्य, शीघ्रं त्वरितं यावत् चलितं वेगितं यत्रैव मिथिला तत्रैवो-

प्राण बहुत अधिक संकट में पड़ गये । वह वहां से दूसरी तरफ भागना भी चाहता था—तो भी उन्होंने ने उसे दूसरी ओर भागने नहीं दिया । (तएवं से कुंभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राहिं हिं हयमहित० जाव पडिसेहिण् समाणे अत्थामे अबलेअवीरिण् जाव आधारणिज्जमित्तिकइह सिगं तुरियं जाव वेइयं जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ) इस तरह जितशत्रु आदि छहों राजाओं से हत मथित तथा घातित प्रवरवीरवाला और निपातित बिह्वल ध्वज पताका वाला वह कुंभक राजा जब संकट युक्त प्राणोंवाला बन गया और युद्धभूमि से दूसरी ओर भागने के लिये असमर्थ हो गया तब आत्मबल और सैन्यबल से रहित बना हुआ वह उत्साह रहित हो गया । एवं परबल को अजेय मान कर वहां से शीघ्र ही त्वरा युक्त, वेगयुक्त चाल से जहां मिथिला नगर थी उस तरफ आया ।

पताका—अने छत्रने अभीन डपर नाभी दीधां. आ रीते तेना प्राणु आक्षतमां इसाध गया. त्यांथी ते भील तरइ नासी ज्वानी तेयारी करता डता त्यारे एतशत्रु प्रभुण रान्धोओ तेने नासी ज्वा दीधा नडि.

(तएवं से कुंभए जियसत्तू पामोक्खेहिं छहिं राहिं हिं हयमहित० जाव पडि सेहिण् समाणे अत्थामे अबले अवीरिण् जाव आधारणिज्जमित्तिकइह सिगं तुरियं जाव वेइयं जेणेव महिला तेणेव उवागच्छइ)

आ रीते एतशत्रु वगेरे छओ रान्धोओथी डत, अथित तेमअ घातित थेद्धाओवाणा अने निपातित बिह्वल ध्वज पताकावाणा ते कुंभक रान्धना प्राणु पणु न्यादे आक्षतमां इसाध गया अने रणभूमिमांथी नासी ज्वानी पणु तड युमांथी थेडा त्यादे आत्मबल अने सैन्यबल वगर अनेला तेओ साव निड-त्साही थंड गया. आभरे तेओओ शत्रुपक्षने अत्रेय सभएने ओकडम जड्डी वेगयुक्त अडपलेर आधथी न्यां मिथिला नगरी डती ते तरइ रवाना थया.

पागच्छति उपागत्य मिथिलामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य मिथिलाया द्वाराणि 'पिहेइ' पिदधाति=आवृणोति । पिषाय 'रोहसज्जे' रोधसज्जः=रोधेन शत्रु-मयाद् गमनागमनमार्गमवरुध्य सज्जः=रक्षां कुर्वन् तिष्ठति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्—तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता मिहिलं रायहाणि णिस्संचारं णिरुद्धारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ताणं चिट्ठंति, तएणं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणि रुद्धं जाणित्ता अब्भं-तरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जियसत्तूपामो-क्खाणं छणहं राईणं अंतराणिय छिद्वाणिय विरहाणिय मम्मणि य अलभमाणेबहुहिं आपहिं य उवाएहिं य उप्पत्तियाहि य वेणइया ए हि य कम्मयाहि य परिणामियाहि य बुद्धीहिं परिणामेमाणेऽ किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झिया-यइ । इमं च णं मल्लीं विदेहरायवरकत्ता पहाया जाव बहुहिं खुज्जाहिं संपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पायगहणं करेइ । तएणं कुंभए मल्लीं विदेहरायवर-कनं णो आढाई नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ । तएणं

वहां आते ही वह मिथिला नगरी में प्रविष्ट हो गया । (अणुपवि-सित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ) प्रविष्ट होकर उसने मिथिला के द्वारों को बंद करवा दिया और शत्रु के भय से आने जाने के मार्ग को रोक कर अपनी रक्षा करने में तल्लीन हो गया ॥ सूत्र ३३ ॥

त्यां आवतां च मिथिला नगरीमां तेजो प्रविष्ट भया

(अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ)

प्रवेशीने तेभल्ले मिथिलाना इरवाण्णोने णं ध करवी दीधा अने शत्रुनी णीकथी आववा जवाना भागेनि यल्लु रोझीने पोतानी रक्षा भाटे तेजो तत्पर थर्क गया. ॥ सूत्र " ३३ "



मल्ली विदेहरायवरकन्नाकुंभं एवं वयासी-तुब्भेण ताओ अण्णदा  
 ममं एज्जमाणं जाव निवेसेह, किण्णं तुब्भं अज्ज ओह्य मण  
 संकप्पे जाव झियायह !, तएणं कुंभं मल्लि विदेहरायवरकन्नं एवं  
 वयासी-एवं खल्ल पुत्ता तव कज्जे जियसत्तूपमुखेहिं छहिं राईहिं दूया  
 संपेसिया, तेणं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तएणं ते जि-  
 यसत्तूपामोक्खा तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया  
 समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं जाव चिट्ठंति । तएणं  
 अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तूपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि  
 अलभमाणे जाव झियामि, तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना  
 कुंभं रायं एवं वयासी-माणं तुब्भं ताओ ! ओह्यमणसंकप्पा  
 जाव झियायह, तुब्भेणं ताओ तेसिं जियसत्तूपामोक्खाणं छण्हं  
 राईणं पत्तेयं रहसियं दूयसंपेसे करेह, एगमेगं एवं वदह-तव  
 देमि मल्लि विदेहरायवरकण्णं तिकट्टु संझाकालसमयंसि पविर-  
 लमणुसांसि निसंतंसि पत्तेयं २ मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह  
 अणुप्पवेसित्ता गम्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए  
 दुवाराइं पिहेह, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठह, तएणं कुंभं एवं  
 तं चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिट्ठइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—‘तएणं ते’ इत्यादि । तवस्तदनन्तरं खल्ल जियसत्तूपमुखाः पडपि  
 राजानो यत्रैव मिथिला नगरी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य मिथिलां राजधानीं

‘तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव

(तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा) इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्या२ भा६ (जियसत्तूपामोक्खा छप्पिरायाणो जेणेव  
 मिहिला तेणेव उवागच्छंति)

‘गिस्संचारं’ निः संचारं=यथा जनानां प्रवेशनिर्गमरूपः संचारस्तत्र न स्यात् तथा,  
‘गिरुच्चारं’ निरुच्चारं-उन्-उर्ध्वं चरणं=प्राकारस्थोपरिभागेन गमनागमनरूपं  
जनानां यथा न भवेत् तथा, इदं द्रव्यं क्रिया विशेषणं यद्वा-निरुच्चारम्-उच्चारः  
पुरीषं तद्विसर्गार्थं यज्जनानां वहिर्गमनं तद्वहितं यथा स्यात् तथा, सर्वतः सर्व-  
दिक्षु=समन्तात् सर्वविदिक्षु ‘ओरुंमिच्छाणं’ अवरुध्य=वेष्टयित्वा तिष्ठन्तिस्म ।

ततस्तदन्तरं खलु स कुम्भको राजा मिथिलां राजधानीमवरुद्धां ज्ञात्वा  
‘अभंतरियाए’ आभ्यन्तरिकायाम् = अभ्यन्तरवर्तिन्याम् उपस्थानशालायाम्-  
आस्थानमण्डपे समास्थान इत्यर्थः. सिंहासनवरगतः-राज्ञः प्रधानासनसमुपविष्टः,  
तेषां जितशत्रुप्रमुखानां घण्टां राज्ञाम् अन्तराणि=अवसराणि, छिद्राणि=दूषणानि,  
विवरान्=एकान्तान्, मर्माणि=गुप्तदोषान् अत्र चकारो वाक्यालङ्कारपरः, अलभ-

मिहिला-तेजोव उवागच्छन्ति ) जितशत्रु प्रमुख वे छहों राजा जिस  
तरफ मिथिला नगरी थी उस ओर बढे ( उवागच्छित्ता मिहिलं रायहा-  
णि गिस्संचारं गिसंचारं सन्वओ समंता ओरुंमिच्छाणं चिट्ठंति ) वहाँ  
आकर उन्होंने ने उस मिथिला राजधानीको सब ओरसे घेर लिया-इससे  
मनुष्योंका आना जाना रुक गया-यहाँ तक हो गया कि कोई भी व्यक्ति  
कारण सर भी बाहर नहीं निकल सका (तएणं से कुंमए राया मिहिलं  
रायहाणि रुद्धं जाणित्ता अभंतरियाए उवट्ठाणसालाए सींहासनवरगए)  
इस के अनन्तर कुंभक राजा ने अपनी राजधानी मिथिला नगरी  
को शत्रुओं द्वारा रुद्ध जाना-तब किले की भीतर रहे हुए समामंडप  
में स्थित सिंहासन पर बैठकर वह ( तेसिं जियसत्तु पामोक्खाणं छण्हं  
राईणं अंतराणि छिद्राणि य विरहाणि य मम्माणि य अलभमाणे ) उन

जितशत्रु प्रमुख छहों राज्यों मिथिला नगरी तरफ बंधा.

( उवागच्छित्ता मिहिलं रायहाणि गिस्संचारं गिसंचारं सन्वओ समंता  
ओरुंमिच्छाणं चिट्ठंति )

त्यां मिथिला नगरीनी पासे आवीने योमेर तेजोओ घेरे। नाओओ आ  
रीते भाओसोनी अवर अवर सहंतर अंध अंध गंध.

तएणं से कुंमए राया मिहिलं रायहाणि रुद्धं जाणित्ता अभंतरियाए उव-  
ट्ठाणसालाए, सींहासनवरगए )

त्यारभाह अथारे कुंलक राजओ पोतानी राजधानी मिथिला नगरीने शत्रुओ वडे  
घेराओली ओध त्यारे तेजो डिहलानी अंदर सभाअडमां सिंहासन उपर मेसीने

( तेसिं जियसत्तु पामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि छिद्राणि य विरहाणि  
य मम्माणि य अलभमाणे )

मानः=अमाप्नुवन्, बहुभिः=, आयैः=इष्टसिद्धिउपायैः-साधनैश्च 'उत्पत्तियाहि' औत्पत्तिकाभिः=स्वामाविकीभिः-शास्त्राभ्यासेन विनैव समुत्पन्नाभिरित्यर्थः, 'वेण-इयाहि' वैनयिकीभिः=विनयतः प्राप्ताभिः, 'कम्मयाहि' कार्मिकाभिः=अभ्यास लब्धाभिश्च अत्रापि चक्रारा वाक्यालङ्कार बोधकाः, बुद्धिभिः 'परिणामेमाणे २' परिणमयन् परिणमनकुर्वन्-अमात्यैः सह विचारयन्नित्यर्थः, कमपि आयं वा उपायं वा अलममानः 'ओहयमणसंकप्पे' अपहतमनः संकल्पः=विध्वस्तमनोरथः सन् यावत् 'झियायइ' ध्यायति=अर्तध्यानं कुर्वन्नास्तेस्म ।

जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के अवसरों को, दूषणों को विवरों को...  
....एवं गुप्तदोषों को देखने की ताक में रहने लगा-परन्तु जब अपने इन शत्रुओं के उसे अवसर दूषण आदि देखने में नहीं आये तब उसने बहूहिं, आएहिं य, उवाएहिं य, उत्पत्तियाहिं य, वेणइयाहि य, कम्म-याहि य परिणामियाहि य बुद्धीहिं परिणामेमाणे २) अनेकविध इष्ट सिद्धिकारक उपायों से उन्हें परास्त करने की बात सोची तथा औत्प-त्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी एवं परिणामि की बुद्धियों से मंत्रियों के साथ बैठकर बार २ इस बात का विचार भी किया परन्तु इस स्थिति में उसे (किं चि आयं वा उवायं वा अलममाणे) जब इष्ट सिद्धिकारक कोई भी उपाय नजर नहीं आया तब वह (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) अपहत मनः संकल्प होकर अर्तध्यान करने लग गया-

जितशत्रु प्रमुख छठे राजाओंना अवसराने, इषणाने, विवराने अने शुद्ध दोषाने जेवा भाटे लाग जेता जेसी रह्या। पणु ज्यारे आ कामभां पणु ते सङ्ग थरु शक्या नहि जेटले के शत्रु पक्षना इषणो वगेरे ते अणु शक्या नहि त्यारे तेभणु

(बहूहिं, आएहिं य उवाएहिं य उत्पत्तियाहिय, वेणइयाहिय, कम्मयाहिय, परिणामियाहिय, बुद्धीहिं परिणामे माणे २)

जितजितना छष्ट सिद्धि करनारा उपायोथी तेजाने डराववानी बात उपर विचार कथी, तेभज औत्पात्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी अने पारिष्ठाभिकी बुद्धि-ज्योथी मंत्रीज्योथी साथे जेसीने बार-बार आ समस्या उपर मंत्रणु पणु करी पणु जेवी गंभीर छलतमां तेजाने (किं चि आयं वा उवायं वा अलममाणे

ज्यारे छष्ट सिद्धि भाटेने। केह पणु उपाय ज्योथी नहि त्यारे (ओहयमण संकप्पे जाव झियायइ) दुःखी थधने आर्तध्यान करवा लाग्या।

‘ હમં ચ ણં ’ અસ્મિન્ કાલે સ્વહ, અત્રાર્ષત્વાત્સપ્તમ્યયે દ્વિતીયા મહી વિદે-  
હરાજવરકન્યા સ્નાતા યાવદ્ બહોમિઃ ‘ સુજ્ઞાહિ ’ કુન્નજામિઃ=વક્રસંસ્થાનામિ  
દાંસીમિઃ સંપરિવૃતા યત્ર કુન્નમકો રાજા તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય રાજઃ પાદ-  
ગ્રહણં - ચરણસ્પર્શપૂર્વકં નમનં કરોતિ । તતસ્તદનન્તરં સ્વહ કુન્નમકો રાજા મહીં  
વિદેહરાજવરકન્યાં ‘ ણો આઢાહ ’ નો આદ્રિયતે નો પરિજાનાતિ, ‘ મહી સમા-  
ગતા ’ इत्यपि न जानाति ऐश्वरीकः मौनमावसहितः संतिष्ठतेस्म । ततस्तदन्तरं

દુઃખિત હોને લગા (હમં ચ ણં મહી વિદેહરાયવરકન્ના, પઠાયા જાવ બહૂહિ  
સુજ્ઞાહિ સંપરિવુઢા જેણેવ કુંમર તેણેવ ઉવાગચ્છહ ) इसी समय विदेह  
राजवरकन्या मल्ली कुमारी स्नान कर वस्त्राभरणों से अलंकृत शरीर  
होकर अनेक वक्र संस्थान वाली दासियोंके साथ जहाँ कुंमकराजा थे वहाँ  
आई । (उवागच्छित्ता कुंमगस्त पायगग्रहणं करेइ ) आकर उसने अपने  
पिता कुंमक राजा के चरणों में नम (तएणं कुंमए मल्लि विदेहरायव-  
रकन्नं णो आढाइ णो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ) परन्तु व्यग्रचित्त  
होने से विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी का कुंमक राजा ने कोई  
आदर नहीं किया और उसे इस बातका ही पता चला कि मल्लीकुमारी  
आई है । केवल वह मौनभाव धारण किये हुए चुपचाप बैठा रहा (तएणं  
मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंमगं एवं वयासी ) पिता की इस परिस्थिति

( હમં ચ ણં મલ્લી વિદેહરાયવરકન્ના પઠાયા જાવબહૂહિ સુજ્ઞાહિ સંપરિ  
વુઢા જેણેવ કુંમર તેણેવ ઉવાગચ્છહ )

આ અરમામાં વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીએ સ્નાન કર્યું અને ત્યાર  
પછી વસ્ત્રો, આભરણો તેમજ અલંકારથી અલંકૃત થઈને ઘણી વક્ર સંસ્થાન-  
વાળી ઢાસીઓની સાથે કુંભક રાજાની પાસે ગઈ.

( ઉવાગચ્છિત્તા કુંમગસ્ત પાયગગ્રહણં કરેइ ) અને ત્યાં જઈને તેણે પોતાના  
પિતા કુંભક રાજાના ચરણોમાં નમન કર્યું.

( તણં કુંમર મલ્લિ વિદેહરાયવરકન્નં ણો આઢાહ, ણો પરિયાણાહ,  
તુસિણીએ સંચિટ્ઠહ )

બ્યાકુગ ચિત્તવાળા કુંભક રાજાએ વિદેહરાજવર કન્યા મલ્લીકુમારીને  
આદર કર્યો નહિ. કે સત્કાર કર્યો નહિ રાજાને તો માત્ર આટલું જ લાન  
થયું કે મલ્લીકુમારી આવી છે.

રાજા સાવ મૂંઝા થઈને બેસી જ રહ્યા. ( તણં મલ્લી વિદેહરાયવર  
કન્ના કુંમગં एवं वयासी ) પિતાની આવી હાલત જોઈને વિદેહરાજવર કન્યા  
મલ્લીકુમારીએ તેમને પૂછ્યું કે—

મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા કુમ્ભકં રાજાનમેવં=વધ્યમાણપ્રકારેણ, અત્રા રીત્-હે તાત ! યૂયં સ્વલુ અન્યદા=અન્યસ્મિન્ સમયે મામ્ ' એજમાણં ' એજમાનામ્ આગચ્છન્તી યાવત્-હઢ્ઢા, આદિયધ્વે, પરિજાનીય, ઉત્સજ્ઞે ' નિવેસેહ ' નિવેશયય, કિં=કેન કમરણેણ સ્વલુ યૂયમદ્યોપહતમનઃ સંકલ્પો યાવત્-ધ્યાયથ=આર્તધ્યાનં કુરુથ ? તતઃ =મલ્લીવચનશ્રવણાનન્તરં કુમ્ભકો રાજા મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યામેવમવાદીત્-હે પુત્રિ ! એવં સ્વલુ તવ કાર્યે વિવાહરૂપં કાર્યં નિમિત્તીકૃત્યેર્થઃ, જિતશત્રુપ્રમુલ્લેઃ પદ્મીરાજમિદ્તાઃ સંપેષિતાઃ, તે સ્વલુ મયાં ' અસંકારિયા ' અસત્કૃતાઃ=અનાદૃતા

કો દેવકર ઉસ વિદેહવરરાજકન્યા મલ્લિકુમારી ને ઉનં સે પૂછાં-(તુભે ણં તાઓ અણ્ણયા મમં એજમાણં જાવ નિવેસેહ, કિણ્ણં તુભં અજ્ઞે ઓહયમણસંકપ્પેં જાવ સ્થિયાયહ) હે તાત ! પહિલે જબં કમી આપ મુલ્લે આતી હુઈ દેવકતે થે તો ઉસ સમય મેરા આદર કરતે થે-મુલ્લે જાનલેતે થે, ઓર અપની ગોદ મેં બેઠા લેતે થે-પરન્તુ આજ કયા કારણ હૈ જો આપ અપહતમનઃ સંકલ્પ હોકર ચિન્તાગ્રસ્ત બેઠે હુપ હૈ

(તણં કુમ્ભક મલ્લિક વિદેહરાજવરકનનં એવં વયાસી) હંસ પ્રકારં મુનં કર રાજાને અપની વિદેહ રાજવર કન્યા મલ્લિકુમારી સે કહાં - (એવં સ્વલુપુત્રા ! તવ કજ્જે જિય સત્તૂપ્પમુલ્લેહિં છહિં રાઈહિં દૂયા સંપે સિયાં તેણં મપ અસંકારિયા જાવ નિચ્છુદા, તણં તે જિયસત્તૂ પામો-કલા તેસિં દૂયાણં અંતિય એયમદ્દં સોચ્ચા પરિકુવિયા- સમાણા મિહિલં રાયદ્દાણિ નિસ્સંચારં જાવ ચિદ્દંતિ), હે પુત્રિ ! તુહારે સાથ વૈવાહિક

(તુભે ણં તાઓ અણ્ણયા મમં એજમાણં જાવ નિવેસેહ કિણ્ણં તુભં અજ્ઞે ઓહયમણ સંકપ્પેં જાવ સ્થિયાયહ

હે પિતા ! પહેલાં ગમે ત્યારે મને આવતી બેતા ત્યારે મારા તમે આદર કરતા હતા, મને બહુી લેતા હતા અને મને પોતાના ખોળામાં બેસાડતા હતા. પણ આજે શું કારણ છે કે તમે ઉદાસ થઇને આર્તધ્યાનમાં બેઠા છો. (તણં કુમ્ભકમલ્લિક વિદેહરાજવરકનનં એવં વયાસી) આ રીતે રાજાએ વિદેહ-રાજવર કન્યાની વાત સાંભળીને તેણે કહ્યું કે—

(એવં સ્વલુ પુત્રા તવ કજ્જે જિયસત્તૂપ્પમુલ્લેહિં છહિં રાઈહિં દૂયા સંપેસિયા, તેણં મપ અસંકારિયા જાવ નિચ્છુદા, તણં તે જિયસત્તૂ પામોકલા તેસિં દૂયાણં અંતિય એયમદ્દં સોચ્ચા પરિકુવિયા સમાણા મિહિલં રાયદ્દાણિ નિસ્સંચારં જાવ ચિદ્દંતિ)

યાવત્-અસંમાનિતા અપદ્વારેણ ' નિચ્છ્રવા ' નિક્ષિપ્તા:-નિ: સારિતા: । તત્તે: સ્વસ્તુ  
તે જિતશત્રુપ્રમુખાસ્તેષાં દૂતાનામન્તિકે એતમર્થે શ્રુત્વા ' પરિકુપિયાં ' પરિકુપિતાં:  
=અતિશયેન ક્રોધાવિષ્ટા: ' સમાણા ' સન્ત:, મિથિલા રાજધાની નિ:સંચારં  
યાવત્-નિરુચ્ચારં=સર્વત: સમન્તાદશરુચ્યં ' ચિદ્વૃત્તિ ' વિષ્ઠન્તિ । તતસ્તસ્માદ્  
કારણાત્ સ્વસ્તુ હે પુત્રિ! તેષાં જિતશત્રુ પ્રમુખાણાં ષણ્ણાં રાજાં અન્તરાણિઃ અલભ-  
માનો યાવદ્ બંદુભિરાયૈરુપાયૈરૌત્પત્તિકયાદિબુદ્ધિમિશ્ર પરિણમયન્ કમપ્યાધિમુર્ખાયં  
શાં અલભમાન અપહતમનઃ સંકલ્પ: સન્ ' જિયામિ ' ધ્યાયામિ=આર્તધ્યાનં કરોમિ ।

સંબંધ જોડને કે લિયે જિતશત્રુ પ્રમુખ છહોં રાજાઓને અપને ૨ દૂતે  
મેરે પાસ મેજે થે

મૈને उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया-और उनके उन दूतोंको  
अनादृत एवं असंमानित कर महल के पीछे के दरवाजे से बाहिर निक  
लवा दिया उन दूतों से जब इन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने इस  
परिस्थिति को सुना तो वे बहुत अधिक कुपित हुए । और इसी छीये  
उन्हीं ने अब मिथिला राजधानी को सब तरफ घेर लिया है । जिस का  
परिणाम यह हुआ कि लोगों का आना रुक गया और वह कारणवश  
बाहिर नहीं आनी जाती है । ( तएणं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामो-  
क्ख्वाणं छण्हं राईणं अ तराणि ४ अलभमाणं जाव जियामि ) इसलिये हैं  
पुत्रि ! मैं अभी तक उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं के अन्तर आदि  
को-अवसर आदि को देखने की ताकमें रहा आया-परन्तु मुझे उसका

હે પુત્રિ ! જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ તમારી સાથે લગ્ન કરવાની  
વિચારથી મારી પાસે ફરો નોકલ્યા હતા.

મેં તેમના પ્રસ્તાવને સ્વીકાર્યો નહિ અને તેમના દૂતોનો અનાદર અને  
અસંમાન કરીને મહેલના પાછળના નાના બારણેથી તેઓને બહાર કઢાવી  
મૂક્યા. પોતાના દૂતોની પાસેથી આ બધી વિગત બાણીને જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ  
રાજાઓ ખૂબ જ ગુસ્સે થયા, અને હવે તેઓએ મિથિલા નગરીને ચારે  
બાજુથી ઘેરી લીધી છે. તેના પરિણામે લોકોની અવર જવર બધ થઈ ગઈ  
છે. કોઈપણ કારણસર લોકો બહાર બધ શકતા નથી એવી લયંકર પરિસ્થિતિ  
ભળી થઈ છે. ( તएणं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तू पामोक्ख्वाणं छण्हं राईणं  
अंतराणि अलभमाणे जाव जियामि )

એટલા માટે હે પુત્રિ ! હજી સુધી પણ હું જીતશત્રુ પ્રમુખ છએ  
રાજાઓના અન્તર વગેરેને જોટલે કે અવસર વગેરેની લાગમાં રહ્યો પણ મને

તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્લ સા મલ્લી વિદેહરાજવરકન્યા કુમ્ભકં રાજાનમ્ એવં-  
વશ્યમાણપ્રકારેણ, અવાદીત્-હે તાત ! યુયં સ્વલ્લ મા અપહતમનઃ સંકલ્પો યાવત્-  
ધ્યાયથ, હે તાત ! યુયં સ્વલ્લ તેષાં જિતશત્રુપ્રમુખાણાં પળ્ળાં રાજાં પ્રત્યેકં રહસિ  
દૂતસંપ્રેષણં કુરુત, એકેકં પ્રત્યેકં વદત-‘ તત્ર=તુમ્યં દાસ્યામિ મહીં વિદેહરાજવર-  
કન્યામ્ ’ ઇતિ કૃત્વા-ઇત્યુક્ત્વા, સન્ધ્યાકાલસમયે - સૂર્યેઽસ્તંગતેસતિ ‘ પવિરલ-  
મળસંસિ ’ પ્રવિરલમનુષ્યે-માર્ગાદૌ ક્વચિદ્ ક્વચિદ્ પ્રવિરલા અલ્પા મનુષ્યા યત્ર  
સ તથા તસ્મિન્, રાત્રિસદ્ભાવે સતોત્યર્થઃ તથા નિશાન્તે=જનકલકલે ધ્વનિર્વર્જિતે,

કોઈં ખી છિદ્ર આદિ નહીં મિલ રહા હૈ । મૈને અનેક વિધ ઉપાયોં સે  
અહેં પરાસ્ત કરને કા વિચાર ખી કિયા-ઔત્પત્તિ કી આદિ બુદ્ધિયોં સે  
સચિવોં કે સાથ અહેં વશ કરને કી મંત્રણા ખી કી પરન્તુ મુઝે કહ ખી  
ઉપાય અહેં વશ યો પરાસ્ત કરને કા નજર નહીં આ રહા હૈ-અતઃ  
અપહતમનઃ સંકલ્પ વાલા બના હુઆ મૈં હસ સમય ચિન્તાગ્રસ્ત હો  
રહા હૂં । ( તર્ણ સા મહીં વિદેહરાયવરકના કુંભયં રાયં એવં વયાસી )  
હસ પ્રકાર અપને પિતા કુંભક રાજા કી વાત સુનકર અસ વિદેહરાજ-  
વર કન્યા ને અન સે કહા - ( માળં તુઝમે તાઓ । ઓહ્યમળસંકળ્પા  
જાવ શિયાયહ ) હૈ તાત ! આપ અપહત મનઃ સંકલ્પ હોકર યાવત્  
ચિન્તિત ન બને મૈં હસ વિષયમેં આપકો ઉપાય બનલાતી હૂં ( તુઝમેળં  
તાઓ તેસિં જિય સત્ પામોક્ષાણં છળ્હં રાયાગં પત્સેયં રહસિયં દૂય  
સંપેસે કરેહ ) હૈ પિતાજી ! વહ ઉપાય યહ હૈ કિં આપ અન જિતશત્રુ  
પ્રમુખ રાજાઓં મૈં સે પ્રત્યેક રાજા કે પાસ ઇકાન્ત મૈં અપના દૂત

અત્યાર સુધી તેમનું એક પણ છિદ્ર ( ખામી ) ની બાજુ થઈ શકી નહિ થણા  
ઉપાયોથી તેમને હરાવવાના વિચારો પણ એ કયાં છે, ઔત્પત્તિકી વગેરે  
બુદ્ધિઓથી મંત્રીઓની સાથે વિચારણા પણ કરી છે પણ મને તેઓને સ્વાધીન  
બનાવવા કે હરાવવા માટેનો કોઈ એક પણ ઉપાય જણાતો નથી. એથી  
અપહતમનઃ સંકલ્પવાળો હું આતંધ્યાનમાં તક્લીન થઈને બેઠો છું. ( તર્ણ  
સા મલ્લી વિદેહરાયવરકન્યા કુંભયં રાયં એવં વયાસી ) આ રીતે પોતાના  
પિતા કુંભક રાજાની વાત સાંભળીને વિદેહરાજવર કન્યાએ તેમને કહ્યું કે-  
( માળં તુઝમે તાઓ ! ઓહ્યમળસંકળ્પા જાવ શિયાયહ ) હૈ તાત ! અત્યારે  
તમે ચિંતામગ્ન છો એટલે તેને દૂર કરવા માટે હું એક ઉપાય બતાવું છું.  
( તુઝમેળં તાઓ તેસિં જિયસત્ પામોક્ષાણં છળ્હં રાયાગં પત્સેયં રહસિયં  
દૂયસંપેસે કરેહ ) હૈ પિતા ! તમે જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓમાંથી દરેક રાજાની  
પાસે એકાંતમાં પોતાનો દૂત બોલો.

प्रति निशान्ते जनानां निद्रोपगतत्वेन सर्वथा जनध्वनिसंचाररहिते यस्मिन् काले कोऽपि मार्गे दूतं न पश्येदिति भावः, प्रत्येकं मिथिलां राजधानीमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य गर्भगृहेषु अभ्यन्तरवर्तिभवनेषु अनुप्रवेशयत, ततो मिथिलाया राजधान्या द्वाराणि पिधत्, आच्छादयत पिधाय रोधसज्जः—रोधेन प्रतिरोधेनाऽऽत्मरक्षां कुर्वन् तिष्ठत । ततः—मल्लीवाक्यश्रवणानन्तरं खलु कुम्भको राजा मल्लया

भेजिये ( एगमेगं एवं वदह—तव देमि मल्लि विदेहरायवरकण्ठं चिकद्दु संज्ञाकालसमयंसि पविरलमणूसंसि निसंतंसि पडि निसंतंसि पत्तेयं २ मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह ) वह दूत जाकर उन प्रत्येक से ऐसा—कहे कि हम अपनी पुत्री विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी तुम्हें देंगे । ऐसा कहकर ( दूतों से कहलवा कर ) फिर उन राजाओं में से प्रत्येक राजा को आप ऐसे संध्याकाल के समय में—जब कि सूर्य बिलकुल अस्त हो गया हो—रात्रि का समय आ गया—हो मार्ग में भी कहीं कहीं पर ही थोड़े से मनुष्य का संचार हो रहा हो—मकान भी मनुष्यों की कल कल ध्वनि से रहित हो चुके हों—सबों के निद्राधीन बन जाने से जिन में से जन ध्वनि बिलकुल ही नहीं प्रकट हो रही हो अपनी मिथिला नगरी में बुलवाई ये—उन्हें प्रवेश कराईये ( अणुप्पवेसित्ता गम्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराईं पिहेह पिहिसा रोहसज्जे चिद्दह तएणं कुंभए एवं तं चेव जाव पवे सेह, रोहसज्जे चिद्दह ) प्रवेश करावा कर उन्हें आप गर्भ गृहों में—ठहरा दीजिये ।

( एगमेगं एवं वदह तव देमि मल्लि विदेहरायवरकण्ठं चिकद्दु संज्ञाकाल समयंसि पविरलमणूसंसि निसंतंसि पडि निसंतंसि पत्तेयं २ मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह )  
ते दूत तेमनी पासे जधने दरेकने आ प्रभाणु कडे के आभारी कन्या विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी तमने आभीशुं. आ प्रभाणु दूत वडे दरेकनी पासे सदेशे गोदलीने ते राजाओंमांथी दरेकने तमे संध्याकाणना समये ज्यारे सुरज भरीभर अस्त थई गये होय, रात्रिने वणत थई गई होय, मार्गमां भडुं ज गोदा भाणुसेानी अवर जवर थवा मांडी होय, भाणुसेाना गोदाटथी धरे पणु ज्यारे शांत थई गया होय त्यारे मिथिला नगरीमां गोदावे.

( अणुप्पवेसित्ता गम्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराईं पिहिसा रोहसज्जे चिद्दह तएणं कुंभए एवं तं चेव जाव पवेसेह, रोहसज्जे चिद्दह )  
गोदावीने तेजोने तमे गर्भगृहोमां शडे.



विदेहराजवरकन्याया एवम्=उक्तपकारेणोक्तः सन् तदेव=तथैव कृत्वा यावत्-  
नितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञः प्रवेशयति, प्रवेश्य रोधसज्जस्तिष्ठति ॥सू० ३४॥

मूलम्—तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा छप्पियरायाणो कल्लं  
प्राउप्पभायाए रयणीए जलंते सूरिए जालंतरेहिं कणगमयं  
मत्थयाछिड्डं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासइ, एसणं मल्ली विदे-  
हरायवरकणणत्तिकट्टु मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे  
स लावणणे य मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववणणा अणि-  
मिसाए दिट्ठीए पेहमाणार चिडंति ।

तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना पहाया जाव सव्वा-  
लंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जार्हिं जाव परिविखत्ता जेणेव जाल-  
घरए जेणेव कणयपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ तं पउमं उवणेइ, तएणं गंधे  
णिज्जावइ, से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए  
वेव । तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभि-

बाद में मिथिला राजधानी के द्वारों को बन्द करवा दीजिये । इस  
प्रकार उन्हें यहां रोक कर आप अपनी आत्मरक्षा करिये । मल्ली कुमारी  
के इन वचनों को सुनने के बाद कुंभक राजा ने विदेह राजवर कन्या  
उस अपनी पुत्री मल्लीकुमारी के कहे अनुसार वैसा ही किया । अर्थात्  
दूतों द्वारा उन सब को अपने घरों बुलवा लिया एवं उन्हें तल घरों में  
ठहरा दिया । सूत्र “ ३४ ”

त्यां पछी मिथिला राजधानीना दरवाज्जो गंध करवावडी हो, आ  
रीते तेज्जोने अछीं गंध करीने तये आत्मरक्षा करै। विदेहराजवर कन्या  
मल्लीकुमारीना वचनो सांभगोने कुंभक राजाओ तेज्जोने कहुं ते सुजय न कथुं  
ओटले के इतो बडे तेज्जो गंधाने गोताने त्यां गोवावी दीधा अने गर्भगृहोभां  
तेज्जोने शडी दीधा. ॥ सूत्र “ ३४ ” ॥

भूया समाना सएहिं २ उत्तरिजएहिं णासाइं पिहोति, पिहित्ता  
परम्मुहा चिट्ठंति, तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियस-  
त्तूपामोक्खे एवं वयासी-किण्णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! सएहिं २  
उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह ?, तएणं ते जियसत्तूपा-  
मोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्नं एवं वयंति-एवं खलु देवाणु-  
प्पिए ! अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिमूया समाना सएहिं २  
जाव चिट्ठामो ।

तएणं मल्ली विदेहरायकन्ना ते जियसत्तूपामोक्खे एवं  
वयासी-जइ ता देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग० जाव पडिमाए  
कल्लाकल्लि ताओ मणुण्णाओ असण पाण खाइमसाइमाओ  
एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे  
इम्मस्स पुण ओरालिय सरीरस्स खेलांसवस्स वंतासव्वस्स  
पित्तासवस्स सुक्खसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरू-  
वमुत्तपूइयपुरिसपुणस्स सडणपडण विद्धंसणधम्मस्स केरिसए  
परिणामे भविस्सइ ?, तं मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्स-  
एसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्जह मुज्जह अज्जोववज्जह,  
एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुरूहे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे  
अवरविदेहवासे सलिलावइंसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए  
महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था, सह-  
जाया जाव पव्वइया, तएणं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं कार-  
णेणं इत्थीनामगायं कम्मं निव्वत्तेमि जइणं तुब्भं चोत्थं उव-  
संपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि,

सेसं तहेव सव्वं, तएणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा, तत्थं णं तुब्भे देसूणाइं बत्ती-साइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुब्भं ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवेर जाव साइं२ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं अहं देवाणुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउ-क्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया ।

किं थ तयं पम्हुट्टं जं थ तथा भो जयंत पवरंमि ।

वुत्था समयं निवध्दं देवा ! तं संभरह जाइ ॥ सू०३५॥

टीका—‘तएणं ते’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानः कल्ये—द्वितीयदिनसे ‘पाउप्पभायाए’ प्रादुः प्रमातायां—प्रादुर्भूतः संजातः, प्रमातः—मातः कालो यस्याः सा प्रादुः प्रमाता तस्याम् अवसानं प्राप्ता-यामित्यर्थः रजण्यां=रात्रौ, ‘जलंते सूरिए’ ज्वलति—उदिते सूर्ये, सुवर्णनिर्मितां मस्तकछिद्रां—मस्तकोपरिभागे छिद्रयुक्तां ‘पउमुप्पलपिहाणं’ पञ्चोत्पलपिधानां=छिद्रोपरि कमलाच्छादनयुक्तां, प्रतिमां=प्रतिकृतिं पश्यन्ति, दृष्ट्वा, ‘एपा—खलु मल्ली विदेहराजवरकन्या वर्तते’ इति कृत्वा=इति ज्ञात्वा, मल्लया विदेहराजवर-

तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जलंते सूरिए) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी और सूर्य का उदय अच्छी तरह हो चुका तब (जालं तरेहिं) खिडकियों के रन्ध्रों से (कणगमयं मत्थयछिइइं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासइ) कनक मय उस प्रतिकृति को कि जिस के मस्तक में छिद्र था और वह छिद्र जिस

( तएणं जियसत्तू पामोक्खा इत्यादि ॥

टीकार्थ—( तएणं ) त्यागभाह ( ते जियसत्तू पामोक्खा छप्पियरायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जलंते सूरिए ) ते शत्रुशत्रु प्रमुख छहो राजाओओ ओओ द्विसे न्यादि रात पूरी यध ओने सूर्यो उदय पाओओ त्यागे ( जालं तरेहिं ) भारीओओना काष्ठुओओमांथी ( कणगमयं मत्थयछिइइं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासइ ) ओना माथाभां काष्ठुं हटुं तेवी सोनानी प्रतिकृति ( भूतिं ) ने लेध.  
( एसणं मल्ली विदेहरायवरकण्णचिकट्टु मल्लीए विदेहरायवरकन्याए रुवे य

कन्याया रूपे=मनोहाराकारे च यौवने वयसि लावण्ये-यौवनवयोजनितकान्ति-  
विशेषे च मूर्च्छिता-रूपयौवनलावण्यदर्शनेन मोहिताः, 'गिद्धा' गृद्धाः=लोलुपाः,  
'गद्विया' ग्रथिताः=निबद्धचित्ता, अध्युपपन्ना=अत्यन्तासक्ताः अनिमेषया निमेष-  
पातरहितया दृष्ट्या प्रेक्षमाणाः २ अनुक्षणं पुनः पुनर्विलोकयन्तस्तिष्ठन्ति स्म ।

ततस्तदनन्तरं खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या स्नाता यावत्-सर्वालंकार-  
विभूषिता बह्वीभिः कुञ्जिकाभि र्यावत्-दासीभिः 'परिक्लिप्ता' परिसिन्ना=  
परिवेष्टिता यत्रैव जालगृहं गवाक्षयुक्तं गृहं, यत्रैव कनकप्रतिमा=स्वकीया सुवर्ण-

का पद्मोत्पल से ढका हुआ था देखा ( एसणं मल्ली विदेह रायवर कण  
त्ति कट्टु मल्लीए विदेह रायवरकन्याए रूपे य जोव्वणे य लावण्ये य मु-  
च्छिया गिद्धा गद्विया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठए पेहमाणा २ चिट्ठंति

देख कर अरे ! यह तो विदेह राजवर कन्या मल्ली कुमारी हैं, ऐसा  
जान कर वे सब उस विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी के रूप यौवन  
एवं लावण्य पर मूर्च्छित हो गये-मोहित हो गये, लोलुप हो गये । उन  
में उन का चित्त बंध गया । इस तरह अत्यंत आसक्त होकर वे सब  
के सब अनिमेष दृष्टि से बार २ उस की तरफ देखते रहे । ( तएणं  
सा मल्ली विदेहरायवरकन्या ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया बह्वहिं  
खुज्जाहिं जाव परिक्लिप्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमं तेणेव  
उवागच्छइ ) इस के पश्चात् विदेह राजवर कन्या मल्लीकुमारी स्नान  
आदि कर के समस्त अलंकारों से विभूषित शरीर हो अनेक कुञ्जक  
संस्थान वाली दासियों के साथ २ जहां वह जाल गृह और उस में भी

जोव्वणे य लावण्ये य मुच्छिया गिद्धा गद्विया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठिए  
पेहमाणा २ चिट्ठंति )

जोधने " अरे आ तो विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारी न छे, " आभ  
जोधिने तेज्जे अथा विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीना इय यौवन अने लाव-  
ण्येना प्रभावथी मूर्च्छित थय गया. मोहित थय गया. लोलुप थय गया. तेमां  
तेमनुं चित्त बांटी गयुं. आ रीते जूअए आसक्त थयने तेज्जे अथा बार-बार  
तेनी तरफ ओता रह्या.

( तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्या ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया बह्वहिं ख-  
ज्जाहिं जाव परिक्लिप्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमं तेणेव उवागच्छइ )

त्यारपछी विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीजे स्नान वजेर पतांचीने अथा  
अलंकाराथी पाताना शरीरने शबुगारीने घबूरी कुण्जक ( कुण्डा ) संस्थानवाणी  
दासीजोनी साथे न्यां ते जालगृह अने तेमां पबु न्यां ते सोनानी प्रतिमा

મયી પ્રતિકૃતિઃ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય તસ્યાઃ કનકપ્રતિમાયાઃ મસ્તકાત્  
તત્-પિધાનરૂપં પદમ્ 'અવળેઈ' અપનયતિ=દૂરીકરોતિ, પદ્માપસારણેન કનકમય-  
પ્રતિકૃતેર્મસ્તકોપરિસ્થિતરન્નપ્રમુદ્ધાટયતીત્યર્થઃ। તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્લુ ગન્ધઃ=દુર-  
ભિગન્ધઃ, 'ણિદ્વાવઈ' નિર્ધાવતિ=શીઘ્રં વહિર્નિઃસરતિ, તદ્ યથા નામકમ્-  
તથાહિ-યથા-'અહિમહેતિ વા 'અહિમૃતક ઇતિ વા મૃતસર્પસ્ય તીવ્રદુર્ગન્ધઃ પ્રસ-  
રતિ, તદ્દદિત્યર્થઃ, સ યાવત્-ગોમૃતકઙ્ગૈવ, શ્વમૃતકઙ્ગૈવેત્યાદિવોધ્યમ્ 'એતોત્રિ'=  
એતસ્માદપિદુર્ગન્ધાત્ અશુભતર એવ-અત્યન્તં મનો વિકૃતિજનકસ્તીવ્રતરો દુઃસહૈવ  
વર્તેતે। તત્ સ્વલ્લુ તે જિતશત્રુપ્રમુલાસ્તેનાશુભેન ગન્ધેનાભિમૂતાઃ સન્ત સ્વકૈ સ્વકૈ-  
રુચરીયૈઃ ઉત્તરીયવત્તૈઃ, 'ળાસાઈ' નાસિકાઃ પિદધતિ=આચ્છાદયતિ પિધાય  
'પરમ્મુદ્ધા' પરાદ્મુલાઃ પરાવર્તિતમુલાસ્તિષ્ઠન્તિસ્મ।

જહાં વહ સુવર્ણમયી પ્રતિમા થી વહાં આઈ। (ઉવાગચ્છિત્તા તીસે કળગ-  
પઢિમાઈ મત્થયાઓ તં પવમં અવળેઈ) વહાં આકર કે ઉસ ને ઉસ  
કનક મય પુતલી કે મસ્તક સે ઉસ કમલ કો હટાયા (તણં ગંધે  
ણિદ્વાવઈ) ઢક્કન કે હટતે હી ઉસ મેં સે વહુત ખારી દુર્ગન્ધ નિકલી  
(સે જહાનામઈ અહિમહેતિ વા જાવ અશુભતરાઈ ચેવ) વહ દુર્ગંધ એસી  
અશુભતર થી કિ જૈસી મરે હુઈ સર્પ કે સફે શરીર કી હોતી હૈ-તથા  
ગોમૃતક ઇવં શ્વમૃતક, કી હોતી હૈ। (તણં તે જિયસત્તૂ પામોક્લા  
તેળં અમુમેળં ગંધેળં અભિમૂયા સમાળા સપઈ ૨ ઉત્તરિજ્જેહિં ળાસાઈ  
પિહેંતિ) ઉસ દુર્ગંધ કે નિકલતે હી ઉન જિતશત્રુ પ્રમુલ છહોં રાજાઓ  
ને અપને ૨ ઉત્તરીય વચ્છાંચલોં સે અપની ૨ નાંક કો ઢક લિયા।

(મૂર્તિ) હતી ત્યાં ગઈ. (ઉવાગચ્છિત્તા તીસે કળગપઢિમાઈ મત્થયાઓ તં પવમં)  
અવળેઈ) ત્યાં આવીને તેણે તે સોનાની પ્રતિમાપર રહેલું સોનાના કમળવાળું  
ઢાંકણું ઉઘાડ્યું. (તણં ગંધં ણિદ્વાવઈ) ઢાંકણું ફર થતાં જ તેમાંથી અત્યંત  
ખરાબ દુર્ગંધ નીકળવા લાગી. સે જહાનામઈ અહિમહેતિ વા જાવ અશુભતરાઈ ચેવ)  
તે દુર્ગંધ એટલી ખરાબ હતી કે મરેલા સાપના સડી ગયેલા શરીરની તેમજ  
ગોમૃતક અને શ્વમૃતકની હોય છે.

(તણં તે જિયસત્તૂ પામોક્લા તેળં અમુમેળં ગંધેળં અભિમૂયા સમાળા સપ-  
ઈ, ૨ ઉત્તરિજ્જેહિં ળાસાઈ પિહેંતિ)

દુર્ગંધ બહાર આવતાંની સાથે જ છતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓએ  
ગોતાંની ઉત્તરીયવચ્છના છેડાથી ગોતપોતાનું નાક ઢાંકી દીધું.

ततस्तदन्तरं खलु सा मल्ली विदेहराजवरकन्या तान् जितशत्रुप्रमुखान् राक्ष-  
एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत् हे देवानुप्रियाः ! किं=केन कारणेन खलु यूयं  
स्वकैरुत्तरीयै यावत्-नासिकाः पिपाय पराङ्मुखास्तिष्ठथ ? , ततः खलु ते जितश-  
त्रुप्रमुखाऽऽ मल्ली विदेहराजवरकन्याम्, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदन्ति-हे देवानु-  
प्रिये ! एवं खलु वयमनेनाशुभेन-अनिष्टतरेण दुरभिणा गन्धेन, अभिभूताः सन्तः  
स्वकैः २ यावत्-उत्तरीयैः स्व स्व नासिकां पिपाय पराङ्मुखाः, 'विद्वामो'  
तिष्ठामः=स्थिताः स्मः ।

(पिहित्ता परम्मुहा चिद्वन्ति' तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्या ते  
जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी ) और दूसरी तरफ मुख-करके बैठ  
गये । जब मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या ने उन्हें इस प्रकार देखा  
तो वह बोली- ( किणं तुब्भं देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं  
जाव परम्मुहा चिट्ठह तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा मल्ली विदेह रायवर  
कन्नं एवं वयंति ) हे देवानु प्रियो ! आप लोग क्यों अपने अपने उत्त-  
रीय वस्त्रों से अपनी २ नाक को छक कर और पुतली की और से  
हुँह फेरकर बैठ गये हैं । मल्ली कुमारी विदेहराजवर कन्या की इस  
प्रकार बात सुन कर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उससे ऐसा कहा  
( एवं खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेणं असुमेणं गंधेणं अभिभूया  
समाणा सएहिं २ जाव चिट्ठामो ) हे देवानुप्रिये ! हमलोगो से यह  
अशुभ गंध सहन नहीं हो रही है अतः हम लोग अपने २ उत्तरीय

( पिहित्ता परम्मुहा चिद्वन्ति तएणं सा मल्ली विदेहरायवरकन्या तं जियसत्तू  
पामोक्खे एवं वयासी )

॥ अने तेज्जो भधां भों ईरीने भेसी गया. कन्यारे विदेहराजवर कन्या  
मल्लीकुमारी तेज्जोने आ प्रभाज्जे करता जेया ल्यारे तेज्जे कहुं—

( किणं तुब्भं देवाणुप्पिया ! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह  
तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा मल्ली विदेहरायवरकन्नं एवं वयंति )

हे देवानुप्रियो ! तमे बोको या क्षरषुथी पोतातुं नाक उत्तरीयवस्त्रना छेकाथी  
हाथीने प्रतिमाना तरक्षी भों ईरवा भेसी गया छे ?

विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीनी आ बात सांझणीने अतथशु प्रमुभ  
छजे रामज्जोते तेने कहुं—

( एवं खलु देवाणुप्पिए अम्हे इमेणं असुमेणं गंधेणं अभिभूया समाणा  
सएहिं २ जाव चिट्ठामो )

ततस्तदनन्तरं तेषां राज्ञां वचनं श्रुत्वा खलु मल्लो विदेहराजवरकन्या तान् जितशत्रुप्रमुखान् राज्ञः प्रत्येवमवादीत्—हे देवानुप्रियाः ! यदि तावत् अस्यां कनक मय्यां यावत्—प्रतिमायां 'कल्लाकल्लि' कल्याकल्ये=पतिदिवसं तस्माद् मनोवाद् अशनपानखाद्यस्वाद्यात्=चतुर्विधाऽऽहाराद् एकैकः पिण्डः=ग्रासः प्रक्षिप्यमाणः' अथमेतद्रूपः=मनोविकृतिकारकस्तीव्रतरो दुःसहो दुर्गन्धः, अशुभः=अनिष्टतरः पुद्गलपरिणामो जातः, तर्हि पुनरौदारिकशरीरस्य ऋष्यास्रवस्य=यस्मात् कफप्रस्रावो भवति तस्य, वान्तास्रवस्य=वान्तम्—उद्गर्णं तस्यास्रवः प्रस्रावो यस्माद् भवति तस्य, पित्तास्रवस्य=पित्तस्यास्रवो निः सरणं यावत् तस्येत्यर्थः । तथा शुक्रशोणित-पूयास्रवस्य दूषोच्छ्वास निःश्वासस्य=ब्राह्मवायुमहणमुच्छ्वासः, शरीरान्तर्गतस्य

चस्त्राचल्लो से नाक ढक और इस तरफ मुँह कर फेर कर बैठ गये हैं । ( तएणं मल्लो विदेहरायवर कन्या ते जियसत्तू पामोक्खे एवं बयासी ) ईस के अनन्तर विदेहराजवर कन्या मल्ली कुमारी ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं से कहा—( जइता देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग ० जाव पडिमाए कल्ला कल्लि ताओ माणुण्णाओ असणपाणखाइमसाइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे २ इमेयारूवे असुमे पोग्गलपरिणामे ) हे देवा-नुप्रियो ! इस कनकमयी पुनली में मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप चतुर्विध आहारका डाला गया एक २ ग्रास जब इस प्रकारका मनो-विकृति जनक अशुभ तर पुद्गल परिणामरूप दुर्गन्धवाला बन गया है तो ।

( इमस्स पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्ता-सवस्स सुक्कसोणियपूयासवस्स ऊमासनीसासस्स दुरुवमुत्तपुइय

हे देवानुप्रिये ! आ भराव गंध अमारा भाटे असह्य थर्ध पडी छे, जेथी अभे पोतपोताना उत्तरीयना छेडाथी नाक इणावीने अने आ तरुथी भो इरवीने भेसी गया छीजे, ( तएणं मल्ली विदेहराजवर कन्या ते जियसत्तू पामोक्खे एवं बयासी ) त्थारपछी विदेहराजवर कन्या मल्लीकुमारीजे श्रुतशत्रु प्रमुख राजाज्योने कहुं के—

( जइता देवाणुप्पिया ! इमीसे कणग ० जाव पडिमाए कल्ला कल्लि ताओ मणुण्णाओ असणपाणखाइम साइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे २ इमेयारूवे असुमे पोग्गलपरिणामे )

हे देवानुप्रिये ! आ सेनानी पूतनीमां मनोज्ञ अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप आर जतना आहारने न'आज्येवो जेक जेक डोणीयो न्यारे आ प्रभावे मनोविकृतिजनक अशुभतर पुद्गल परिणाम रूप दुर्गन्धवायो थर्ध गथो छे त्थारे—

શાયોર્નિર્ગમનં નિઃ શ્વાસઃ તૌ દૂરૂપાવનિષ્ઠૌ યસ્ય સ તથા, તસ્ય દૂરૂપમૂત્રપૂતિ-  
કપુરીષ પૂર્ણસ્ય=દૂરૂપેન પૂતિકેન અનિષ્ટગન્ધવતા પુરીષેણ પૂર્ણસ્ય, તથા તત્ર-  
શંટનપટનવિધ્વંસનધર્મસ્ય=શંટન-કુષ્ઠાદિરોગાક્ત્યાદેઃ પતનં ડવરાદિના શૈથિલ્યં,  
વિધ્વંસનં=નાશઃ एते શટનાદયો ધર્માઃ સ્વભાવા યસ્ય સં તસ્ય, કીદશઃ પરિણામો  
પ્રવિવ્યયિતિ? અશનાદ્યાદારાદુધ્વૃતસ્યૈકૈકગ્રાસસ્ય પ્રતિદિવસં પ્રતિકૃતૌ પ્રસિપ્તસ્ય યદિ

પુરિસ પુણસ્સ સઢણ પઢણ વિઢ્ઢંસણ ધમ્મસ્સ કેરિસણ પરિણામે મ્હવિ-  
સ્સહ ) હસ ઔદારિક શરીર કા પુઢ્ઢલ પરિણમન ઉસકી અપેક્ષા મી  
અધિકતર અનિષ્ટ દુર્ગંધ ચાલા નહીં હોગા કયા ? અવશ્ય હોગા-કયોંકી  
યહ કફ કા આશ્રય મૂત હૈ । સમય ૨ પર હસસે વમન કા નિસ્સરણ  
હોતા રહતા હૈ । પિત્ત મી હસ સે નિકલતા રહતા હૈ । શુક્ર, શોણિત,  
एवं પીચ હસ મેં બાહિર વહતા હૈ । હસકા જો શ્વાસ ઔર ઉચ્છ્વાસ હૈ  
વે મહા દુરૂપ-અનિષ્ટનર હૈ । યહ દુરૂપ મૂત્ર एवં અનિષ્ટ ગંધ વાલે મલ  
સે સદા મંરા રહતા હૈ । યહ શટન, પટન, તથા વિધ્વંસન ધર્મ ચાલા હૈ ।  
કુષ્ઠાદિ રોગ દ્વારા જો હસ કે અંગુલિ આદિ અવયવ ગિર જાતે હૈ ઉસ  
કા નોમ શટન હૈ । ડવરાદિ અવસ્થા સે જો હસમેં શિથિલતા આ જાતી  
હૈ ઉસ કા નામ પતન હૈ । નાશ હોને કા નામ વિધ્વંસન હૈ । કારણ  
હસ કા હસ પ્રકાર હૈ કિ અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર સે ઉત્પન્ન હુપ  
પ્રક ૨ ગ્રાસ કા જો પ્રતિદિન હસ પ્રતિકૃતિ મેં પ્રક્ષિપ્ત કિયા જાતા હૈ

( હમસ્સ પુણ ઔરાલિય સરીરસ્સ સ્થેલાસવસ્સ વંચાસવસ્સ પિત્તાસવસ્સ મુક્ક  
સોણિય પૂયાસવસ્સ દુરૂવ ઉસાસનીસાસસ્સ દુરૂવમુત્ત પૂડયપૂરિસ પુણસ્સ સઢણ-  
પઢણ વિઢ્ઢંસણ ધમ્મસ્સ કેરિસણ પરિણામે મ્હવિસ્સહ )

આ ઔદારિક શરીરનું પુઢ્ઢલ પરિણમન તેના કરતાં પણ વધુ અનિષ્ટ  
દુર્ગંધવાળું થશે નહિ ? અરે ! ચોક્કસ થશે. કેમકે આ કહેનું આશ્રય છે. આમાંથી  
વારંવાર વમનનું નિસ્સરણ થતું રહે છે. પિત્ત પણ આમાંથી નીકળતું રહે છે.  
શુક્ર, શોણિત (લોહી) અને યદ્ આમાંથી બહાર વહેતું રહે છે. આમ થી  
એના શ્વાસોચ્છવાસ મહા દુરૂપ અનિષ્ટતર છે આ શરીર દુરૂપ મૂત્ર અને  
અનિષ્ટ દુર્ગંધવાળા મળથી હંમેશા ભરાએલું રહે છે. આ શરીર શટન, પતન,  
તેમજ વિધ્વંસન ધર્મવાળું છે કાઠ વગેરે રોગ વડે જે શરીરના આંગળીયો  
વગેરે અવયવો ખરી પડે છે તેનું નામ શટન છે. ઘડપણને લીધે શરીરમાં જે  
શિથિલતા આવે છે તેને પતન કહેવાય છે. નાશ થતું તે વિધ્વંસન કહેવાય  
છે આનું કારણ બતાવવામાં આવેલો કોળિયો જે એક એક કરીને દરેદર  
આ પૂતળીમાં નાખવામાં આવ્યો છે. તે જ્યારે આવું તીવ્ર અનિષ્ટતર દુર્ગંધ



पुद्गलपरिणामस्तीव्रतरोऽनिष्टतरोदुर्गन्धः प्रसरति, तर्हि पुनरस्यौदारिकशरीरस्य श्लेष्मादिनानाविधमलपूर्णस्य शटनपटनध्वंसनस्वभावस्य पुद्गलपरिणामस्तस्मादप्यधिकतरोऽनिष्टदुर्गन्धो भविष्यतीत्यर्थः । तस्मात् हे देवानुप्रियाः । यूयं खलु मानुष्यकेषु कामभोगेषु मा 'सज्जह' मा सज्जत-सज्जं नो कुरुत, 'मा' इत्यस्य प्रत्येकमपिसम्बन्धः । 'रज्जह' रज्जत=रागं मा कुरुत, 'गिज्जह' गर्धध्वम् गृद्धि-तृष्णां मा कुरुत, 'मुज्जह' मुह्यत मोहं नो कुरुत विषयदोषं मा विस्मरतेत्यर्थः, 'अज्जोववज्जह' अच्युपपद्यम्यम्=कामभोगानां ध्यानं मा कुरुतेत्यर्थः । हे देवानुप्रियाः । एवं खलु यूयं वयमितस्तृतीये भवग्रहणे अपरविदेहवर्षे पञ्चिभीयमहाविदेहक्षेत्रे सलिलावत्यां सलिलावतीनामके विजये धीतशोकायां राजधान्यां महाबलप्रमुखाः सप्तापि च बालवयस्यराजानः=राजकुलगृहीतजन्मानः

यदि इस प्रकार का तीव्र अनिष्टतर दुर्गन्ध रूप पुद्गल परिणाम है तो फिर इस औदारिक शरीर का कि जो श्लेष्मादि नाना विध मल से परिपूर्ण हो रहा है तथा शटन पटन एवं विध्वंसन जिस का स्वाभाविक धर्म है पुद्गल परिणाम इस से भी अधिक तर अनिष्ट दुर्गन्ध वाला ही होगा

( तं माणं तुम्हे देवानुप्पिया । माणुस्सपसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह गिज्जह, मुज्जह, अज्जोववज्जह ) इसलिये हे देवानुप्रियों ! तुम लोग मनुष्य भव संवधो काम भोगों में मत फँसो, उन में राग भाव मत करो तृष्णा मत बढ़ाओ, मुग्ध मत बनो और न इन का ध्यान ही करो । ( एवं खलु देवानुप्पिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्रहणे अवर विदेहवासे सलिलावइमि विजए वीयसोगाए रापहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसया रायाणो होत्था ) हे देवानुप्रियों !

इय पुद्गल परिणामवाणुं थाय त्थारे आ औदारिक शरीरतुं के जे श्लेष्म वगेरे बल्ला भोगाथी लशओतुं छे-अने शटन, पटन, अने विध्वंसन जेतुं स्वाभाविक धर्म छे-पुद्गल परिणाम जेना करतां पल्लु पल्लु अनिष्ट दुर्गन्धवाणुं छरी ज.

( तं मा णं तुम्हे देवानुप्पिया । माणुस्सपसु कामभोगेसु सज्जह; रज्जह गिज्जह, मुज्जह, अज्जोववज्जह )

ओथी छे देवानुप्रियो ! तभी मनुष्यभवना काम लोभोभा इत्याशा नहि, तेमां राग उत्पन्न करे नहि, तेना प्रति तृष्णतुं वर्द्धन करे नहि, मुग्ध थाओ नहि अने तेना कोछ दिनस पल्लु विचार करे ज नहि.

( एवं खलु देवानुप्पिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्रहणे अवविदेह वासे सलिलावइमि विजए वीयसोगाए रापहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसया रायाणो होत्था )

‘होत्या’ संजाताः कीदृशाः ? इत्याह—‘सहजाया’ सहजाता=सहोत्पन्नाः, यावत्—सहवर्षिताः सहक्रीडितकाः, ‘पञ्चइया’ मन्त्रजिताः=सहैव दीक्षां गृहीतवन्त इत्यर्थः । ततः खलु हे देवानुप्रियाः ! अहं ‘इमेणं कारणेणं’ वक्ष्यमाणेन कारणेन स्त्रीनामगोत्रं कर्म निव्वत्तमि’ निर्वर्तयामि=अर्जयामि तस्मिन् भवे मया स्त्रीनामगोत्रं कर्ममित्यर्थः । येन कारणेन स्त्रीनामगोत्रं कर्म निर्वर्तितं तदाह—‘अहणं’ इत्यादि । यदि खलु यूयं चतुर्थं=चतुर्थभक्तं तपः, उपसंपद्य विहरथ, ‘तए’ ततः=तदा खलु अहं षष्ठं=षष्ठभक्तं तपः, उपसंपद्य विहरामि=तिष्ठामि । शेषं तथैव सर्वम्,

हम तुम आज से तीसरे भव में पश्चिम महा विदेह क्षेत्र में सलिलावती नाम के विजय में वर्तमान वीतशोका नाम की राजधानी में “बालव-यस्य” सात राजपुत्र थे । उस समय हम लोगों का नाम महाबल आदि था ( सहजाया जाव पञ्चइया ) हम सब साथ ही उत्पन्न हुए थे—और साथ ही बड़े हुए थे । साथ ही धूलि क्रीडा में रत रहा करते थे । निमित्त पाकर हम सातों ने ही उस समय दीक्षा धारण की थी । ( तएणं अहं देवानुप्पिया । इमेणं तुव्वं चोत्थं उवसंपज्जिस्ताणं विहरई तएणं अहं छट्ठं उवसंपज्जिस्ताणं विहरामि सेसं तहेव सव्वं ) मैंने उस भव में इस कारण से स्त्री नाम गोत्रकर्म का बंध किया कि तुम सब लोग यदि चतुर्थ भक्त करते तो हम भी तुम्हारे साथ चतुर्थ भक्त ही करते परन्तु कोई बहाना बनाकर पारणा के दिन भी छट्ठ आदि तपस्या कर लिया करते । यह सब विषय इसी अध्ययन में पहिले स्पष्ट किया जा चुका है ।

हे देवानुप्रिया । हुं अने तमे आबुथी त्रीज अवमां पश्चिम भडा-विदेहक्षेत्रमां सलिलावती नामना विजयमां विधमान वीतशोका नामनी राज-धानीमां ‘आववयस्य’ सात राजपुत्रो हता ते समये अभाश नामो भडावल वगेरे हता. ( सहजाया जाव पञ्चइया ) अमे अथा साथे ७ ७-भ्या हता. अने साथे साथे ७ भोटा थया हता. भाटीमां पञ्च आपण्णे अथा साथे साथे ७ रभ्या हता. समथ आवतां आपण्णे साते ७ण्णाओ दीक्षा धारणु करी हती.

( तएणं अहं देवानुप्पिया । इमेणं कारणेणं इत्थीनामगोत्रकम्मं निव्वत्तमि जणं तुव्वं चोत्थं उवसंपज्जिस्ताणं विहरई तएणं अहं छट्ठं उवसंपज्जिस्ताणं विह-रामि सेसं तहेव सव्वं )

ते अवमां आ कारुथी स्त्रीनाम गोत्र कर्मना बंध कथी. तमे अथा न्यारे अतुर्थभक्त करता त्यारे हुं पणु तमारी साथे अतुर्थभक्त तो करता ७ पणु अमे ते भडाना डेऊण पारणुना द्विसे पणु छट्ठ वगेरे तपस्याओ करता रहेतो हतो. (आ विपेत्तुं अणुं पणुंन आ अध्ययनमां पहिलां करवामां आणुं छे.)

अरिमन्नेवाध्ययने प्रागुक्तवद्बोध्यम् । ततस्तदनन्तरं खलु हे देवानुप्रियाः ! ययं कालमासे कालं कृत्वा जयन्ते विमाने उत्पन्नाः=देवमवं प्राप्ताः, तत्र खलु युष्माकं देशीनानि द्वात्रिंशत्सागरोपमानि स्थितिः, ततः खलु ययं तस्मादेवल्लोकादनन्तरं वयं=देवशरीरं, त्यक्त्वा इहैव=अरिमन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे जम्बलब्धा यावत्-  
'रवानि २ राज्याः शुषपसं पथ विहरय, ततस्तदनन्तरं खल्वहं हे देवानुप्रियाः ! तस्माद्  
'देवल्लोकादायुःक्षयेण च्युत्वा यावत्--'दारियचाए' दारिकतया पुत्रीभावेन  
'पञ्चायाया' प्रत्यायाता=संजाता-अथ तान् जितशत्रुप्रमुखान् पटपिराणः पुनः

( तएणं तुम्हे देवानुप्पिया ! कालमासे कालं किञ्चा जयन्ते विमाणे उववण्णा-तत्थणं तुम्हे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुम्हे ताओ देवलोयाओ अणंतरे वयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे २ जाव साइं २ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ) हे देवानुप्रियो ! आप लोग काल मास में मृत्यु के अवसर में काल कर-जयन्त विमान में देव पर्याय से उत्पन्न हुए । वहाँ आप सब की कुछ कम ३२ बत्तीस सागर की स्थिति हुई । जब यह स्थिति समाप्त हो चुकी-तो उसी समय आप लोग वहाँ से चक्कर इसी जंबूद्वीप में उत्पन्न हो गये-और अपने २ राज्यों का भोग करने लगे । ( तएणं अहं देवानुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पञ्चायाया ) तुम लोगों के च्युत होने के बाद हे देवानुप्रियो ! मैं भी उस देवलोक से आयुक्षय हो जाने के कारण च्युत हुआ-और च्युत होकर कन्या रूप से उत्पन्न हो गया हूँ ।

( तएणं तुम्हे देवानुप्पिया ! कालमासे कालं किञ्चा जयन्ते विमाणे उववण्णा तत्थणं तुम्हे देसूणाइं बत्तीसाइं सागरोवमाइं ठिई, तएणं तुम्हे ताओ देवलोयाओ अणंतरे वयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे २ जाव साइं २ रज्जाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ )

हे देवानुप्रियो ! तबे काण भासमां मृत्युना वणते काळ करीने जयंत विमानमां देवपर्यायथी जन्म पाभ्या. त्यां तमारी अधानी भन्नीस ( ३२ ) सागरनी स्थिति करतां कंठकं ओछी ओटली स्थिति यथ. व्यादे आ स्थिति पूरी यथ त्यादे तरत ४ तबे त्यांथी अवीने आ जंबूद्वीपमां उत्पन्न तथा छे अने पोतपोतानां सन्धेनुं शासन यथाववा लाभ्या छे.

( तएणं अहं देवानुप्पिया ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पञ्चायाया )

त्यारणाह हे देवानुप्रियो ! हुं पण देवलोकमांथी आयुक्षम होवा गइल आवीने अर्ही पुत्री रूपमां जन्म पाभी छुं.

પૂર્વજન્મવૃત્તાન્ત સ્મારયન્તી મહી યદવોચત્ તદ્ ગાથયા પ્રાહ-કિં ય તયં ઇત્યાદિ।  
મો રાજાનઃ કિં તદ્ વિસ્મૃતં યુષ્માભિઃ તદા-તસ્મિન્ કાલે પૂર્વભવે જયન્તપ્રવરે=  
જયન્તનામકેડનુત્તરવિમાને 'દેવાઃ' દેવાભૂત્વા 'વૃત્યા' યુયન્ ઉપિતઃ = નિવાસં  
કૃતવન્તઃ, 'ય' ઇતિ વાક્યાલક્ષ્ણે 'સમયનિબદ્ધાં=વયં પરસ્પરેણ પ્રતિવોધનીયા'  
ઇત્યેવં સંકેતેન નિબદ્ધાં = પરિગૃહીતાં, તાં દેવસમ્બન્ધિનીં જાતિં જન્મ. 'સંમરહ'   
સંસ્મરતેતિ ॥ સૂ૦ ૩૪ ॥

મૂલ્ય-તણં તેસિં જિયસત્તપામોક્ષાણં છણહં રાયાણં મ-  
હીણ વિદેહરાયવરકન્નાણ અંતિણ ઇયમદ્દં સોઞ્ઞા ણિસમ્મ સુમેણં  
પરિણામેણં પસત્થેણં અજ્ઞવસાણેણં લેસાહિં વિસુજ્ઞમાણીહિં  
તયાવરણિજ્જાણં૦ કમ્માણં સ્વઓવસમેણં ઈહાવોહમગ્ગણગવેસણં  
કરેમાણાણં સણિણજ્જાઇસ્સરણે સમુપ્પન્ને. ઇયમદ્દં સમ્મં અભિ-  
સમાગચ્છંતિ, તણં મલ્લો અરહા જિયસત્તપામોક્ષે છપ્પિ  
રાયાણો સમુપ્પણજાઇસ્સરણે જાણિત્તા ગમ્મધરાણં દારાઇં વિહા-  
લાવેઙ્, તણં તે જિયસત્તપામોક્ષા જોણેવ મહી અરહા તેણેવ

इसी पूर्वोक्त-पूर्वजन्मके वृत्तान्त को उन छह जितशतृ प्रमुख राजाओं  
को याद कराती हुई मल्ली कुमारीने जो कुछ कहा वही गाथा द्वारा सूत्र-  
कार प्रदर्शित करते हैं-वह गाथा “ किं य तयं पम्हुट्टं ” इत्यादि यह है ।  
इसका तात्पर्य यह है-हे राजाओं ! क्या आपलोग वह पूर्वभव भूल  
गये कि जिसमें हम सबलोग जयन्त नामके अनुत्तर विमान में देव होकर  
रहे हैं । सो “ हम परस्पर में एक दूसरे को प्रतिबोधित करेंगे ” ऐसी  
प्रतिज्ञासे प्रतिबद्ध उस देव भवसम्बन्धी जन्मको अब याद करो ॥सू० ३५॥

આ પૂર્વજન્મની વિગત છએ છતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને બતાવતી  
મલ્લીકુમારીએ જે કંઈ કહ્યું છે તે અહીં સૂત્રકાર ગાથા દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-  
( કિંય તયં પમ્હુટ્ટં ) ઇત્યાદિ

એનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય છે કે, હે રાજાઓ શું તમે લોકો પૂર્વ  
ભવને ભૂલી ગયા છો કે જ્યારે અમે બધા જયન્ત નામના અનુત્તર વિમાનમાં  
દેવ થઈને રહ્યા હતા. તો “ અમે એક બીજાને પ્રતિબોધિત કરીશું. ” આ  
પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઈને મેળાવવા તે દેવભવના જન્મને તમે યાદ કરો. ॥સૂ. “૩૫”॥

उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता तएणं महब्बलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागयायावि होत्था तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तप्पामोक्खे छप्पियरायाणो एवं वयासी- एवं खल्ल देवाणुप्पिया ! संसारभयउविग्गा जाव पव्वयामि, तं तुब्भे णं किं करेह किं च ववसह जाव किं भे हियसामत्थे ?, तएणं जियसत्तप्पामोक्खा मल्लिं अरहं एवं वयासी - जइणं तुब्भे देवाणुप्पिए संसार जाव पव्वयह अम्हे णं देवाणुप्पिए ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा जह चेव णं देवाणुप्पिए ! तुब्भे अम्हेइओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मघुरा होत्था, तहा चेव णं देवाणु- प्पिये ! इण्हपि जाव भविस्सह, अम्हे वि य णं देवाणुं ! संसार भयउविग्गा जाव भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो । तएणं मल्ली अरहा ते जियस- त्पामोक्खे एवं वयासी-जणं तुब्भे संसार जाव मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया सएहिं रज्जेहिं जेठ्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहह दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह, तएणं ते जियसत्तपासुक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति, तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवाग- च्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ, तएणं कुंभए ते जियसत्तूपामोक्खे विपुलेणं असणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं

सकारेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ते जियसत्तूपामोक्खा कुंभ-  
एणं रएणा विसज्जित्ता समाणा जेणेव साइं रज्जाइं जेणेव  
नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगाइं रज्जाइं उव-  
संपज्जित्ता विहरंति, तएणं मल्ली अरहा 'संवच्छरावसाणे  
निक्खमिस्सामि' ति मणं प्हारेइ ॥ सू० ३६ ॥

टीका—'तएणं तेसि' इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु तेषां जितशत्रुप्रमुखानां  
वर्णां राज्ञां, मल्ल्या विदेहराजवरकन्याया अन्तिके=समीपे 'एयमट्ठं' एतमर्थं=  
पूर्वमवृत्तान्तरूपमुक्तमर्थं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=हृद्यमर्थं, शुभेन परिणामेन  
प्रशस्तेनाध्यवसायेन लेख्याभिः 'विसुज्झमाणीहिं' विशुध्यन्तीः 'तयावरणिज्जाणं'  
तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीनां, कर्मणां क्षयोपशमने 'ईहावोहमगगवसेवणं'  
इहाऽवोहमार्गं गवेषयाम्-ईहा-मर्थं विशेष विचार्य समालोचनाभिमुखो मतेन्या-

'तएणं तेसि जियसत्तूपामोक्खाणं' इत्यादि

(तएणं) इस के बाद (तेसि जियसत्तूपामोक्खाणं) छण्हं रायाणं  
मल्लीए विदेहरायवरकनाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म, सुमेणं  
परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावर  
णिज्जाणं० कम्माणं खओवसमेणं ईहावोयमगगणगवसेवणकरेमाणार्णं  
सण्णि जइस्सरणे समुप्पन्ने ) उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं को जब  
उन्होंने ने विदेहराजवरकन्या मल्ली कुमारी से इस प्रकार सुना और  
उसका मन से अच्छी तरह विचार किया-तो शुभ परिणाम से प्रशस्त  
अध्यवसाय से लेख्याओं की विशुद्धि से, तथा तदावरणीयकर्मों के

'तएणं तेसि जियसत्तूपामोक्खाणं' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेसि जियसत्तूपामोक्खाणं) छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकनाए  
अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म, सुमेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं  
विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं० कम्माणं खओवसमेणं ईहावोयमगगणगवसेवण  
करेमाणार्णं सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने )

एतशत्रु प्रमुख छहों राजाओंके न्याये विदेहराजवर कन्या मल्ली-  
कुमारीना सुभथी आ भधी पूर्ववर्तनी विगत सांखणी अने मनमां तेना उपर  
सारी पेटे विचार हथी त्यारे शुभ परिणामथी, प्रशस्त अध्यवसायथी लेख्या-  
ओंकी विशुद्धिथी तेमज तदावरणीय कर्मोंना क्षयोपशमथी, छंडा, अपाह,

પારઃ, વિચાર इत्यर्थः । स चात्र—“ किं मल्लो कथित पूर्वभववृत्तान्तस्तथा संजातः, अपिच देवभवं प्राप्य जयन्तविमाने किं वयमवस्थिता आस्मे ” त्येवंरूपो बोध्यः । अपोहः—निश्चयः, स चेत्यम्—उक्तविचारे निरन्तरसंश्रमनाया बुद्धेः परिणामः खल्वेवमभवत्—“ मल्लयुक्तरीत्या निश्चयेन वयं सप्तानगाराः पूर्वभवे तपोऽनुष्ठानं कृतवन्तः, तत्प्रभावाच्च जयन्तविमाने देवत्वेन संजाता ” इति । ईहापोहाभ्यां

ક્ષયોપશમસેર્હા, અપોહ માર્ગણ એવં ગવેષણ કરને પર સંજ્ઞા જાતિ સ્મરણ જ્ઞાન ઉત્પન્ન હો ગયા । અર્થ વિશેષ કો વિષય કરને વાલી સમાલોચના કી તરફ જુકતા હુઆ જો મતિ વ્યાપારરૂપ વિચાર હોના હૈં ઉસકા નામ ઈહા હૈં । યહાં ઇસકા સમન્વય ઇસ તરહ સે સમજ્ઞના યાહિયે—મલ્લી કુમારી ને જો પૂર્વભવીય વૃત્તાન્ત કહા હૈં વહ કયા ડસી તરહ સે હુઆ હૈં

કયા દેવ ભવ કો પ્રાપ્તકર હમલોગ જયન્ત વિમાન મેં સાથ રહે હૈં ? ઈહા કે બાદ જો નિશ્ચય રૂપ યોગ હોતા હૈં ઉસકા નામ અપોહ હૈં—ઇસકા સંબંધ યહાં ઇસ પ્રકાર સે જાનના યાહિયે—જબ ઉક્ત વિચાર મેં બુદ્ધિ સંલગ્ન હો ગઈ તો ઉસકા પરિણામ ઇસ પ્રકાર નિકલા—ઠીક હૈં—મલ્લી કુમારી કે કથનાનુસાર હમ સાતોં અનગારોં ને તપોઅનુષ્ઠાન નિયમતઃ ક્રિયા હૈં—ઇસસે ઉસકે પ્રભાવ સે હમલોગ કાલ માસ મેં કાલકર જયન્ત વિમાન મેં દેવ કી પર્યાય અવસ્થા ઉત્પન્ન હુવ હૈં । ઇસ પ્રકાર કા ઈહિત અર્થ મેં જો નિશ્ચયાત્મક વિચાર હોતા હૈં વહી અપોહ હૈં ।

માર્ગણ અને ગવેષણ કરવાથી તેમને સંજ્ઞા—મતિ સ્મરણ જ્ઞાન થયું. અર્થ વિશેષને વિષય બનાવીને સમાલોચના તરફ વળતો જે મતિવ્યાપાર રૂપ વિચાર હોય છે તે ‘ઇહા’ છે. અહીંયા ઇહા વિષેનો સંબંધ આ રીતે સમજવો જોઇએ કે મલ્લીકુમારીના કુળેથી પૂર્વજાતની વિગત સાંભળીને રામજોના મનમાં જે આ પ્રભાવેના વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે મલ્લીકુમારીએ જે પૂર્વજાતનું વૃત્તાન્ત કહ્યું છે તે શું ખરેખર તેમજ હશે ।

દેવલવ મેળવીને શું અને બધા જોડી સાથે જ્યંત વિમાનમાં રહ્યા છીએ ? ઇહા પછી જે નિશ્ચય રૂપ બોધ થાય છે તેનું નામ અપોહ છે, તેના સંબંધ અહીં આ પ્રભાવે સમજવો જોઇએ કે જ્યારે પૂર્વજાતના વિચારોમાં બુદ્ધિ સંલગ્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના પરિણામમાં તેઓના મનમાં આ પ્રભાવેના નિશ્ચય થયો કે ‘ ઠીક છે ’ મલ્લીકુમારીના કહેવા સુજ્ઞ અને સાતે અનગારોએ મળીને નિયમ પૂર્વક તપસ્યા કરી છે તેના પ્રભાવથી અને લોકો કાળ માસમાં કાળ કરીને જ્યંત વિમાનમાં દેવની પર્યાયથી જોલસપણે જન્મ પામ્યા હોઇશું. આ રીતે ઇહિત અર્થમાં જે નિશ્ચયાત્મક વિચાર ઉત્પન્ન હોય છે તે જ અપોહ છે.

નિશ્ચિતોર્થે માર્ગગવેષણાભ્યાં દૃઢીમદ્દતીત્યતઆહ — ‘ મગ્ગગવેસણ ’ इति, માર્ગણ-ઈહાપોહાભ્યાં નિશ્ચિતોર્થેઽન્વયધર્માલોચનં અન્વયઃ-સદ્ભાવઃ-યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ પરસ્પર સુહૃદ્ભાવ વિષયવિરાગદર્શનેન પૂર્વભવે સહાવસ્થાનપૂર્વકં તપશ્ચરણં, તદ્વત્તુ જયન્તવિમાનાવસ્થાનાં દૃઢં નિશ્ચીયતે, ગવેષણમ્-ઈહાપોહાભ્યાં નિશ્ચિતેર્થે વ્યતિરેકધર્માલોચનમ્ વ્યતિરેકો નામ-અભાવઃ, યથા-અસ્માસુ સપ્તસુ યદિ પરસ્પરસુહૃદ્ભાવો ન સ્યાત્, તથા યદિ વિષયવિરાગો ન સ્યાત્, તર્હિ પૂર્વભવસમ્બન્ધિ સહાવસ્થાનપૂર્વકં તપશ્ચરણં જયન્તવિમાનાવસ્થાનાં ચ ન સ્યાત્, इत्येवमन्वयव્યતિરેક-ધર્માલોચનાદુક્તાર્થસ્ય નિશ્ચયો દૃઢતરો ભવતીતિ તદેવમીહાઽપોદ્દમાર્ગગવેષણં

ईहा और अपोह से निश्चिन किया गया पदार्थ मार्गण और गवेषण से दृढ हो जाना है। मार्गण शब्द का अर्थ है ईहा। और अपोह से निश्चिन हुए अर्थ में अन्वय धर्म की पर्यालोचना करना। जैसे ऐसा विचार आना कि इन सातोमें जब परस्पर में सुहृद्भाव ( मैत्री भाव ) और विषय विराग देखा जाता है तो इस से यह बात दृढरूप से निश्चिन हो जाती है कि इन लोगों ने सहावस्थान पूर्वक तपश्चरण किया है और बाद में जयन्त विमान में ये उत्पन्न हुए हैं। गवेषण शब्द का अर्थ है ईहा और अपोह से निश्चिन हुए पदार्थ में व्यतिरेक धर्म की आलोचना करना। जैसे इन सातों में यदि परस्पर में सुहृद्भाव तथा विषय विराग नहीं होता तो पूर्वभव में इन का साथ रहकर तपश्चरण करना, तथा जयन्त विमान में उत्पन्न होने भी नहीं होता।

इस तरह अन्वय और व्यतिरेक धर्म की आलोचना से उक्तार्थ का निश्चय दृढतर हो जाता है। संज्ञी जीवों के पूर्व भव का ही स्मरण इस

ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત કરાએલો પદાર્થ માર્ગણ તેમજ ગવેષણથી દૃઢ થઇ જાય છે. માર્ગણ શબ્દને અર્થ આ પ્રમાણે છે કે ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા અર્થમાં અન્વય ધર્મની પર્યાલોચના કરવી. જેમકે અત્યારે સાતેમાં પરસ્પર મિત્રભાવ અને વિષય વિરાગ ( વિશેષ રાગ ) જોવાય છે ત્યારે જોનાથી આ વાત ચોક્કસપણે પુષ્ટ થાય છે કે આ લોકોએ સહાવસ્થાનપૂર્વક પૂર્વભવમાં તપશ્ચરણ કર્યું છે અને ત્યારબાદ તેઓ જ્યંત વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા છે. ‘ ગવેષણ ’ શબ્દને અર્થ છે, ઇહા અને અપોહથી નિશ્ચિત થયેલા પદાર્થમાં વ્યતિરેક ધર્મની આલોચના કરવી. જેમકે આ સાનેમાં હમણાં એક બીજા માટે સુહૃદ્ભાવ તેમજ વિષય વિરાગ હોત નહિ તો પૂર્વભવમાં તેમનું સાથે રહીને તપ કરવું તેમજ જ્યંત વિમાનમાં જન્મ પામવું પણ થાત નહિ.

આ રીતે અન્વય અને વ્યતિરેક ધર્મની આલોચનાથી ઉપર વર્ણવવામાં આવેલા અર્થનો નિશ્ચય દૃઢ રૂપે થઇ જાય છે. સંજ્ઞી જીવોના પૂર્વભવનું સ્મર-



કુર્વતાં 'સખિજ્ઞાહસરણે' સંહિજાતિસ્મરણં=સંહિનાં મનોયુક્તાનાં જાતિઃ પ્રાક્તનં  
જન્મ તસ્યાઃ સ્મરણં, જાતિસ્મરણં સંહિનામેવમવતિ નત્વસંહિનામિતિ બોધયિતું  
સંજ્ઞીતિ વિશેષણં પ્રયુક્તમિતિમાવઃ । સમુત્પન્નં=સંજાતમ્, ર્દ્વાપોઢાદિકરણેન  
જિતશત્રુપ્રમુખાણાં પળ્લાં રાજ્ઞાં પૂર્વમવસમ્બન્ધિ સકલવૃત્તાન્તસ્મરણમભૂદિતિ સંક્ષેપઃ ।  
'પયમદ્વ' ર્દ્યાદિ । ઇતમર્થે સમ્યગભિસમાગચ્છન્તિ તેન જાતિસ્મરણેન પૂર્વમવ  
સમ્બન્ધિસકલવૃત્તાન્તં સમ્પર્ગ જ્ઞાતવન્ત ઇત્યર્થઃ ।

તતસ્તદનન્તરં મલ્લી 'અરહા' અર્હન્ જિતશત્રુપ્રમુલાન્ પઢપિ રાજ્ઞઃ સમુત્પન્ન-  
જાતિસ્મરણાન્ જ્ઞાત્વા ગર્ભગૃહસ્ય દ્વારાણિ 'વિઢાઢાવેઢ' વિઢાટયતિ-ઉદ્ઢાટયતિ '  
તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ તે જિતશત્રુપ્રમુલાઃ યત્રૈવ મલ્લી અર્હન્ તર્જોવોપાગચ્છતિ, ઉપા-

જાતો સ્મરણ જ્ઞાની જીવ કાં હાંતા હૈ-અર્થાત્ જાતિ સ્મરણ જ્ઞાની સંજ્ઞી  
જીવ કો હી હોતા હૈ-અસંજ્ઞી જીવ કો નહીં । ર્દસી વાન કો પ્રકટ કરને  
કે લિયે "સંજ્ઞી" યહ વિશેષણ દિયા હૈ । ર્દસ પ્રકાર ર્દહા, અપોહ  
આદિ કે કરને સે ડન જિતશત્રુ પ્રમુખ છહોં રાજાઢ્રાં કો પૂર્વમવ સંબંધી  
સકલ વૃત્તાન્ત સ્મૃત હો ગયા । યહી વાત "પયમદ્વં સમ્મં અભિસમા-  
ગચ્છન્તિ" ર્દસ સૂત્રાંશ દ્વારા સૂત્રકાર ને પ્રકટ કી હૈ (તર્ણ મલ્લી  
અરહા જિયસત્ પામોકલે છપિરાયાળો સમુપ્પન્નજાહસરણે જાણિસા  
ગમ્મધરાઈં દારાઈં વિઢાઢાવેઢ) ર્દસ કે વાદ મલ્લી અરિહંત ને ડન  
જિતશત્રુ પ્રમુખ છહોં રાજાઢ્રોં કો ઉત્પન્ન જાનિ સ્મરણ જ્ઞાન વાલા જાન  
કર ગર્ભગૃહોં કે દ્વારોં કો ઉદ્ઢાટિત કરવા દિયા । (તર્ણ તે જિયસત્  
પામોકલા મલ્લી અરહા તેણેઢ ઉવાગચ્છન્તિ) દ્વારોં કે ઉદ્ઢાટિત હોતે  
હી જિતશત્રુ પ્રમુખ સય હી રાજા જહાં મલ્લી કુમારી થી વઢાં આયે ।

જી ૪ આ જાતિસ્મરણ જ્ઞાનાં જીવને હોય છે એટલે કે જાતિસ્મરણ જ્ઞાન  
સંજ્ઞી જીવોને જ થાય છે, અસંજ્ઞી જીવોને નહિ. એ વાતને સ્પષ્ટ કરવા માટે  
જ અહીં 'સંજ્ઞી' વિશેષજી આપનામાં આવ્યું છે. આ રીતે ઈહા અપોહ વગેરેથી  
જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓને પૂર્વભવ સંબંધી ગુણ જ્ઞાન થઈ ગયું. એ જ  
વાત (પયમદ્વં સમ્મં અભિસમાગચ્છતિ) આ સૂત્ર થ વડે સૂત્રકારે સ્પષ્ટ કરી છે.

(તર્ણ મલ્લી અરહા જિયસત્ પામોકલે છપિરાયાળો સમુપ્પન્નજાહસરણે  
જાણિત્તા ગમ્મધરાઈં દારાઈં વિઢાઢાવેઢ)

ત્યારબાદ મલ્લી અરિહંતે છએ જિતશત્રુ પ્રમુખ રાજાઓને જાતિ-  
સ્મરણજ્ઞાનથી યુક્ત થયેલા જાણીને ગર્ભગૃહોના બારણાઓ ઉઘડાવી દીધા.  
(તર્ણ તે જિયસત્ પામોકલા જેણેવ મલ્લી અરહા તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ)  
બારણાઓ ઉઘડતાં જિતશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ મલ્લીકુમારી પાસેઆવી ગયા.

गत्य तदनु पूर्वभवस्य महाबलप्रमुखाः सप्ताऽपि बालवयस्याः बालमित्राणि  
'एष्यथो' एकत्र एकस्मिन् स्थाने 'अभिसमन्वागया' अभिसमन्वागताः संमि-  
लित्वाक्षोभ्यन् 'ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली अर्हन् तान् जितशत्रुप्रमुखान् षडपि  
राज्ञः प्रत्येवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः । एवं खलु अहं संसारमयोद्विग्ना-चतुर्गतिक  
भवभ्रमणभयाद्व्याकुला, यावत् प्रव्रजामि-दीक्षां ग्रहीष्यामि तत्-तस्माद्, यूयं  
खलु 'किं करेह' किं कुरुष्व=किं करिष्यथ, वर्तमानसामीप्ये भविष्यति वर्तमानवत्प्र-  
'योगः । 'किं च ववसह' किं च व्यवस्यथ, कं व्यवसायम् उद्यमं करिष्यथ, यावत्-  
किं मे हियसामत्ये' किं गृहे निवत्स्यथ, कामसुखानि किं भोक्ष्यथ किं वा प्रव्रजिष्यथ,  
किं युष्माकं हृदयसामर्थ्यम्-कीदृशं मनोबलं युष्माकम् । ततस्तदनन्तरं खलु  
जितशत्रुप्रमुखाः षडपि राजानो मल्लीमर्हन्तं प्रत्येवमवदन्-हे देवानुप्रियाः । यदि

( उवागच्छित्वा तएणं महव्वलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसा एगयओ  
अभिसमन्वा गयायावि होत्था ) वहां जाकर पूर्वभव के महाबल प्रमुख  
सातों ही बालवयस्य इस तरह एकस्थान पर संमिलित हो गये ( तएणं  
मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे छप्पियरायाणो एवं वयासी ) इस  
के बाद मल्ली कुमारी अरिहन् ने उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं से  
इस प्रकार कहा ( एवं खलु देवानुप्रिया संसारमय उद्विग्ना जाव  
पव्वयामि ) हे देवानुप्रियों ! संसारमय से उद्विग्न बनी हुई मैं तो दीक्षित  
होनी हूँ- ( तं तुवमेणं किं करेह किंच ववसह जाव किमे हियसामत्ये )  
अब-तुम सब कहो क्या करोगे क्या उद्यम करोगे घर में रहोगे-काम  
सुखों को भोगोगे या संगम लोगे ? कहो तुम्हारा मनोबल कैसा है ?  
( तएणं जियसत्तू पामोक्खा मल्लि अरहं एवं वयासी ) मल्ली अरिहन्त

( उवागच्छित्वा तएणं महव्वलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसा एगयओ  
अभिसमन्वागया यावि होत्था )

आ धीते पूर्वभवना भडाणण प्रमुण साते भाणमित्रो ओक स्थाने लेगा था।

( तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे छप्पियरायाणो एवं वयासी )

सातों के महाबल कुमारी अरिहन् ने जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं से आ-प्रभाषण  
के द्वारा एवं खलु देवानुप्रिया संसारमय उद्विग्ना जाव पव्वयामि ) हे  
देवानुप्रियों ! संसारमय त्रासपीड़ाओं से तो हवे दीक्षा अवश्य है ।

तुवमेणं किं करेह किं च ववसह जाव किं मे हियसामत्ये )

पणु हवे तसे पधा शुं करेशो ? शेो उद्यम करेशो ? घरभां रहेशो, काम  
सुणेो भोगवशो के समय अवश्य करेशो ? गतावेो तमाइं सामर्थ्यं केहुं छे ?

( तएणं जियसत्तू पामोक्खा मल्लि अरहं एवं वयासी )

यूयं संसारमयोद्विग्ना यावत् प्रव्रजथ=प्रव्रजिष्यथ, अस्माकं खलु हे देवानुप्रियाः । किमन्यदालम्बनं वा सहायो वा कोऽन्य आधारो वा=आश्रयो वा, कः प्रतिबन्धो अकार्यकरणे प्रतिरोधकः सन्मार्गे स्थापयितुं धर्मोपदेशक इत्यर्थः वा, यथैव खलु हे देवानुप्रियाः । यूयमस्माकमितस्तृतीयभवग्रहणे बहुषु कार्येषु च मेधिः मेधिव-  
हालम्बनम्-आधारो वा किं च यूयं प्रमाणं=युष्मानुसृत्य वयमास्मेत्यर्थः, यावद्-  
चक्षुर्भूतः=नेत्रवत् समविषममार्गदर्शकाः, धर्मधुराः=धुर इव धुरः धर्मस्य धुरः=वाहका  
धर्मप्रवर्तका इत्यर्थः । अस्माकं धर्मरक्षका यूयमास्त, तथैव खलु हे देवानुप्रियाः ।

की ऐसी बात सुनकर उन जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं ने उन मल्ली अरिहंत से इस प्रकार कहा—( जह्णं तुम्हे देवाणुप्पिण संसार जाव पव्वयह, अम्हे णं देवाणुप्पिण ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिवंधे वा तह चेवणं देवाणुप्पिण ! तुम्हे अम्हे इओ तच्चे भव-  
ग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढीपमाणं जाव धम्मधुरा होत्था ) हे देवा-  
नुप्रिये ! जब तुम संसार के भय से उद्विग्न होकर यावत् दीक्षा संयम अंगीकार करना चाहती हो तो हे देवानुप्रिये ! कहो फिर हमे तुम्हारे सिवाय अब और कौन दूसरा सहाय करने वाला होगा—कौन हमारा आलंबनभूत होगा कौन हमारा आधार होगा कौन हमें अकार्य करने से मना करने वाला होगा—कौन सन्मार्ग में स्थापित करने के लिये धर्म का उपदेश दाता होगा— । जिस प्रकार आप आज से तीसरे भव में हमारे लिये अनेक कार्यों में मेधि की तरह आलंबन रूप हुए आधार भूत हुए प्रमाणभूत हुए, सम विषम मार्ग का दर्शक होने से चक्षुर्भूत

सद्वली अरिहंतना आ प्रभाणु विचारो सांलणीने ते एतशत्रु प्रभुण छम्मे राजाओओ मल्ली अरिहंतने कल्लुं हे

( जह्णं तुम्हे देवाणुप्पिण संसार जाव पव्वयह, अम्हे णं देवाणुप्पिण ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिवंधे वा तह चेव णं देवाणुप्पिण ! तुम्हे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था )

हे देवानुप्रिय ! संसार लयशी व्याकुल यधने न्यारे तमे पोते दीक्षा संयम स्वीकारवा छम्मेओओ त्थारे हे देवानुप्रिये ! जतावेो तभारा वजर अभासे सहायक पीलो कोणुं छरे ? अभासे आश्रयन कोणुं छरे ? अभासे आधार कोणुं छरे ? जोटां काम करतां अभने रोकनार कोणुं छरे ? अभासे जेवा ने सन्मार्ग तरङ्ग वाणनार धर्मना उपदेशक कोणुं छरे ? जेम आश्रयी पहेलांनाना त्रीण लवमां अभासे भाटे वल्लां कामाभां तमे मेधिनी जेम आलंबन इप थया, आधार भूत थया प्रभाणु भूत थया, समविषम मार्गने जतावनार डोवा जहल्ल अल्लुभूत थया, धर्मनी धुराइप थया, धर्मना मार्गमां प्रवृत्ति करावनार

‘इहिंषि’ इदानीमपि यावद् भविष्यति । वयमपि खलु हे देवानुमियाः ! संसार-  
भयोद्विग्नाः यावद् मीता ‘जन्ममरणाणं’ जन्ममरणेभ्यः आर्षत्वात्पञ्चम्यर्थे  
पठ्ठी, ‘देवानुप्पियाणं’ देवानुमियैः युष्माभिः सार्द्धं मुण्डा भूत्वा यावत्-प्रत्र-  
जामः=दीक्षां ग्रहीष्यामः, ततः-जितशत्रुप्रमुखान् तेषां वचनं श्रुत्वा, खलु मल्ली  
अहन् तान् जितशत्रुप्रमुखान् एवमवादीत्-यदि खलु यूयं संसारभयोद्विग्नाः यावद्  
मया सार्धं प्रत्रजथ, तत्=तस्मात् गच्छत खलु यूयं हे देवानुमियाः ! स्वेषु स्वेषु  
राज्येषु ज्येष्ठान् पुत्रान् राज्ये स्थापयत, स्थापयित्वा पुरुषसहस्रत्रादिनी शिविकाः  
द्रोहत=आरोहत, दूढाः सन्तो ममान्ति कंषादुर्भवतः आगच्छत । ततस्तदनन्तरं

हुए, धर्म को धुरा रूप हुए-धर्ममार्ग में प्रवृत्ति कराने वाले हुए ( तदा  
चेव णं देवानुप्पिए ! इहिंषि जाव भविस्सह ) उसी प्रकार इस भव में  
भी आप ही होवे ( अम्हे वि य णं देवानु० संसारभयउव्विग्गा जाव  
भीया जन्ममरणाणं देवानुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो )  
इसलिये-हम भा हे देवानुमिये ! संसारभय से उद्विग्न बने हुए यावत्  
जन्म मरण से भीत हुए आप देवानुमिय ! के साथ ही मुंडित होकर  
यावत् जिन दीक्षा ग्रहण करेंगे ।

( तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी-जणं  
तुम्हे संसार जाव मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह णं तुम्हे देवानुप्पिया !  
सएहिं २ रज्जेहिं जेठे पुत्ते रज्जे ठावेह ठावित्ता पुरिससहस्स बाहिणी-  
ओ सीयाओ दुरूहह ) इस के बाद मल्ली अरिहंत ने उन जितशत्रु  
प्रमुख राजाओं से इस प्रकार कहा-यदि तुम सब संसारभय से उद्विग्न

थ्या ( तदा चेव णं देवानुप्पिए ! इहिंषि जाव भविस्सह ) ते प्रभाञ्छे आ  
भवमां पथु तमे न् अमने धर्ममां प्रवृत्ति करानार थाञ्छा।

( अम्हे वि य णं देवानु० संसारभयउव्विग्गा जाव भीया जन्ममरणाणं  
देवानुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो )

जेठवा भाटे हे देवानुमिये ! संसार भयथी व्याकुण तेमन् नन्म भरलुना  
लयथी अस्त थयेदा अमे पथु हे देवानुमिय तमारी साथे न् सुडित थधने  
जिन दीक्षा स्वीकारीशुं.

( तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू पामोक्खे एवं वयासी- जणं तुम्हे संसार  
जाव मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह णं तुम्हे देवानुप्पिया ! सएहिं २ रज्जेहिं  
जेठे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्स बाहिणीओ सीयाओ दुरूहह )

त्यार पछी भक्ती अरिहंते लुत्तशत्रु प्रमुअ राजाओने आ प्रभाञ्छे कथुं  
हे ने तमे अथा संसार भयथी व्याकुण अछने मारी साथे जिन दीक्षा अद्धलु

खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः 'मल्लिस्स अरहतो' मल्ल्या अरहतः, एतमर्थ=उत्तरूपमर्थं प्रतिशुष्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति स्म ।

ततः खलु मल्ली अरहन, तान् जितशत्रुप्रमुखान् षडपि राज्ञो गृहीत्वा=सार्धनीत्वा यत्रैव कुम्भकी राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कुम्भकस्य पादयोः 'पाडेइ' पातयति=प्रणमयति, ततः खलु कुम्भको राजा तान् जितशत्रुप्रमुखान् विपुलेन=प्रचुरेण, अशनपानस्नाद्यस्वाद्येन=चतुर्विधाऽऽहारेण, पुष्पवस्त्रामाल्याल-

होकर मेरे साथ जिन दीक्षा धारण करना चाहते हो तो हे देवानुप्रियो ! जाओ और अपने अपने राज्य में पहिले अपने अपने ज्येष्ठ पुत्र को स्थापित करो-स्थापित करके फिर पुरुष सहस्र बाहिनी शिबिकाओं पर बैठो- ( दुर्द्धा समाणा मम अंतियं पाउम्भवह ) उन पर बैठे हुए फिर हमारे पास आओ । ( तएण ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमहं पडिसुणेंति ) इस प्रकार उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं ने मल्ली अरिहंत की इस बात को स्वीकार कर लिया । ( तएणं मल्ली अरहा-ते जियसत्तू गहाय जेणेव कुंभए-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ, तएणं कुंभए ते जियसत्तू पामोक्खे विपुलेणं असण ४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ ) इस के पश्चात् उन मल्ली अरिहंत ने उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं को अपने साथ लिया और लेकर वे जहां कुंभक राजा थे वहां पहुँचे वहां पहुँच कर उन्होंने ने कुंभक राजा के चरणोंमें झुका कर उन से बंदना करवाई ।

अस्वा धृच्छता हे। ते हे देवानुप्रियो ! पोत पोताना राज्ञ्यमां तमे जाओ अपने त्यां पडेवा राज्ञ्यादीओ पोतपोताना सोटा पुत्रने भेसाओ अने पछी पुरुष सहस्रबाहिनी पादपीओमां भेसो. ( दुर्द्धा समाणा मम अंतियं पाउम्भवह ) अने भारी पासे आवो.

( तएणं ते जियसत्तू पामोक्खा मल्लिस्स अरहओ एयमहं पडिसुणेंति ) मल्ली अरिहंतनी आ वातने ण्हा एतशत्रु प्रमुख राज्ञ्योओ स्वीप्ररी दीधी. तएणं मल्ली अरहा ते जियसत्तू गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु, पाडेइ, तएणं कुंभए ते जियसत्तू पामोक्खे विपुलेणं असण ४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ )

त्यारण्हा मल्ली अरहंते एतशत्रु प्रमुख राज्ञ्योओने पोतानी साथे दीधी अने लधने तेओ न्यां कुंभक राजा हेता त्यां गया. त्यां लधने कुंभक राजाना चरणोमां बंदन करान्यां.

कुंभक राज्ञ्यो पछु एतशत्रु प्रमुख राज्ञ्योओने विपुल अशन पशेरे चार

कुम्भरेण सत्करोति, यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते जितशत्रुप्रमुखाः कुम्भकेन राज्ञा विसर्जिताः सन्तः, यत्रैव स्वनि २ राज्यानि, यत्रैव नगराणि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वानि २ राज्यान्पुनसंघं विहरन्ति । ततः खलु मल्ली अहं संवच्छरावसाणे 'संवत्सरावसाने=वर्षरूपा' सत्या 'निक्खमिस्सामि' 'त्ति' निष्कमिष्यामिति दीक्षां ग्रहीष्यामिति मनसि प्रधारयति=निश्चिनोति स्म ॥ सू० ३६॥

कुम्भक राजाने भी उन जितशत्रु प्रमुख राजाओं का विपुल अशनादि रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प; वस्त्र; गंध माल्यादि से सत्कार किया । ( जाव पडिविसज्जेइ ) यावत फिर उन्हें विसर्जित कर दिया । ( तएण ते जियसत्तू पामोक्खा कुम्भरेण रण्णा विसज्जिता समाणा जेणेव साइं साइं रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छन्ति उवागच्छिता सगाइं रज्जाइं उवसंपज्जिता विहरन्ति तएण मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ ) कुम्भक राजा के द्वारा विसर्जित होते हुए जितशत्रु प्रमुख राजा जहाँ अपने २ राज्य और उन में भी जहाँ अपने ५ महल थे वहाँ आये । वहाँ आकर वे सब अपने २ राज्य कार्यों में संलग्न हो गये ।

वर्ष समाप्त होने पर दीक्षा धारण करूँगा ऐसा महिं प्रभुने निश्चित विचार कर लिया । सूत्र " ३६ "

आहारार्थी तेभञ्ज पुष्प, वस्त्र, गंध, भाक्ष्य वगैरर्थी सत्कार कर्था, ( जाव पडिविसज्जेइ ) त्यागणां तेभ्योने विदाय कर्था.

( तएण ते जियसत्तू पामोक्खा कुम्भरेण रण्णा विसज्जिता समाणा जेणेव साइं साइं रज्जाइं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छिता सगाइं रज्जाइं उवसंपज्जिता विहरन्ति, तएण मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ )

कुम्भक राजाने त्यांथी विदाय यधने एतत्तत्तु प्रमुखा राजाभ्यो न्यां पोतपोतातुं राज्य अने तेमां पखु न्यां पोतपोताना महेत्थो इता त्यां गथा त्यां नधने तेभ्यो अधा पोतपोताना राजकाजमां परोवाध गथा.

अक वर्ष पछी दीक्षा धारण करीश, महली प्रभुजे आ जतने आक्षय विचार करी दीक्षा इतो. ॥ सूत्र " ३६ " ॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं सकस्सासणं चलइ, तएणं  
सक्के देविंदेइ आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ,  
पउंजित्ता मरुल्लि अरहं ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता इमेया-  
रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था—एवं खलु जंबूद्वीवे दीवे  
भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स रत्तो भवणांसि मल्ली अरहा  
निक्खमिस्साइ त्ति मणं पहारेइ, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नम-  
णागयाणं सक्काणंइ अरहंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थ  
संपयाणं दलित्तए, तं जहा—

तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडिओ ।

असितिं च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाणं ॥ १ ॥

एवं संपेहेइ, संपेहिन्ता वेसमणं देवं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी  
—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे जाव असीति  
च सयसहस्साइं दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जंबु-  
द्वीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगभवणांसि इमेयारूवे  
अत्थसंपदाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेवमम एयमाणत्थियं  
पच्चप्पिणाहि, तएणं से वेसमाणे देवे सक्केणं देविदेणं देवराएणं  
एवं वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जंभए देवे  
सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया !  
जंबूद्वीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणि कुंभगस्स रत्तो  
भवणांसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयं च कोडीओ

आसियं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अथसंपयाणं साहरेइ,  
 साहरित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणेह, तएणं ते जंभगा  
 देवा वेसमणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्टतुट्ठा जाव पडिसुणेति,  
 पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति,  
 अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रुवाइं विउव्वंति, विउव्वि-  
 त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव बीइवयमाणा जेणेव जंबूदीवे दीवे  
 जेणेव भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स  
 रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभगस्स रत्तो  
 भवणंसि तिन्नि कोडिसिया जाव साहरंति, साहरित्ता जेणेव  
 वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव  
 पच्चप्पिणंति, तएणं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया  
 तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणइ,  
 तएणं मल्ली अरहा कल्लाकल्लि जाव मागअहो पायरा सो  
 त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य-  
 करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ट य  
 अणूणाइं सयसहस्साइं इमेयारूवं अथसंपदाणं दलयइ, तएणं  
 से कुंभए मिहिलाए रायहाणीए तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ  
 महाणससालाओ करेइ, तत्थ णं वहवे मणुयादिणः भइभत्तवे-  
 यणा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडिंति, उवक्खडित्ता  
 जे जहा आगच्छंति तं जहा—पंथिया वा पहिया वा करोडिया  
 वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहित्था वा तेसिं य तहा



आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विपुलं असणं४ परि-  
भाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति, तएणं मिहिलाए सिंघाङ्ग जाव  
बहुजणो अपणमणस्स एवमाइवखइ-एवं भासइ, एवं पन्नवेइ, एवं  
परूवेइ, एवं खलु देवाणु० ! कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्व-  
कामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असणं४ बहुणं समणाण य  
जाव परिविसज्जइ ।

“वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जइ बहुविहीयं ।

सुरअसुरदेवदाणव नरिंद महियाणं निक्खमणे ॥१॥

तएणं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिन्निकोडिसया अट्टासीति  
च होंति कोडिओ असिति च सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थ  
संपयाणं दलइत्ता निक्खमामिति मणं पहारेइ ॥ सू० ३७ ॥

टीका—‘तेणं कालेणं’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सौधर्मकृत्ये  
शक्यस्य=इन्द्रस्य आसनं चरतिस्मिन्, ततः खलु शक्रो देवेन्द्रः=देवानां मध्ये परमैश्व-  
र्यवान् देवराज आसनं चरितं पश्यति, दृष्ट्वा ‘ओहिं’ अवधिं पउंजइ प्रयुज्जे,  
केन कारणेन ममासनं चलीत्येतस्मिन् विषये स्वकीयोप रोगं नरति स्वेत्यर्थः ।  
प्रयुज्य=अवविज्ञानेन ‘आभोएइ’ आभोगयति=विशोक्तयति, मल्ली अरहं संप्रति

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में  
(सक्कस्सासणं चलइ) इन्द्र का आसन चलायमान हुआ (तएणं सक्के  
देविंदे देवराया आसणं चालियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजि-  
त्ता मल्लि अरहं ओहिणा आभोएइ) देवों के बीच में परम ऐश्वर्यवान्

“तेणं कालेणं तेणं समएणं” इत्यादि ॥

टीकार्थ (तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले अने ते पणते (सक्क  
स्सासणं चलइ) इन्द्रजं आसन रेखी उठ्युं.

(तएणं सक्के देविंदे देवराया आसणं चालियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउं  
जइ, पउंजित्ता मल्लि अरहं ओहिणा आभोएइ)



હતિ । તત્=તસ્માત્ 'જીયમેયં' જીતમેતત્-જીતં-મર્યાદા-પરમ્પરાઽઽગત આચારઃ  
પ્રતત્-પ્રવમસ્તિ-યદ્-'તીયપચ્ચુપ્પન્નમગાયણં' અતીત પ્રત્યુત્પન્નાનાગતાનાં  
=મૂતવર્તમાનમાવિનાં, કાલત્રયવર્તિનામિત્યર્થઃ શ્રદ્ધાણં દેવેન્દ્રાણાં દેવરાજાનામ્  
અદ્-અર્હતાં મગવતાં નિષ્ક્રામતામિમામેતદ્ભૂપાં=વક્ષ્યમાણામ્ 'અથસંપયાણં' અથ-  
સંપયા 'ઇતિ હ્રસ્વ દ્વિતીયાન્તમ્-અર્થસંપદ્ સહ દાતુમ્ યદા-અર્હન્તો મગવન્તો  
નિષ્ક્રમણામિમ્લતા મવન્તિ, તદા તેષાં માતાપિત્રોઽર્થસંપદ્મુપનયન્તિ દેવેન્દ્રા  
હતિ મર્યાદાઽસ્તીત્યર્થઃ । ઇન્દ્રાઃ કિયદ્દ્રવ્યં દદતીત્યાકાઙ્ગધાયમાહ-તં જહા-  
ઇત્યાદિ-તદ્ યથા ।

તિષ્ણેવ ય કોઢિસયા અઢાસીતિ ચ હૌતિ કોઢીઓ ।

અસિતિ ચ સયસહસ્રા ઇંદા દલયંતિ અરહાણં ॥ ૧ ॥

ત્રીણ્યેવ ચ કોટિશતાન્યષ્ટાશીતિશ્ચ મવન્તિ કોટયઃ ।

અશીતિશ્ચ શતસહસ્રાણિ ઇન્દ્રા દદતિ અર્હતામ્ ॥ ૧ ॥

ત્રીણિ કોટિશતાનિ, અષ્ટાશીતિ કોટયઃ, અશીતિશતસહસ્રાણિ સ્વર્ણદીનારાણિ  
તીર્થંકરાણાં નિષ્ક્રમણે વાર્ષિકદાનાય દાતવ્યાનિ મવન્તિ તાનીન્દ્રા અર્હતાં મવન્તે  
દદતિ=અર્પયન્તિ ।

મેં મહી નામ કે અરિહંત પ્રભુ “મેં દીક્ષા ધારણ કહુંગા” એસા વિચાર  
કર રહે છે (તં જીયમેયં તીયપચ્ચુપ્પન્નમગાયણં સવ્ક્રાણં ૩ અરહં-  
તાણં મગવતાણં નિવલ્લમમાગાનાં ઇમેયારૂઠ્ઠં અથ સંપયાણં દલિત્તપ્) ।  
હસ લિયે કાલત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોં કા પરમ્પરાગત યહ આચાર હૈ કિ વે  
દીક્ષા લેને કે લિયે તત્પર હુપ્ તીર્થંકર પ્રભુઓં કે માતા પિતાઓં કે ઘર  
અર્થ સંપત્તિ પ્રદાન કરે દેવેન્દ્ર જો અર્થ સંપત્તિ પ્રદાન કરતે છે (તં જહા)  
ઉસ કા પ્રમાણ હસ પ્રકાર હૈ ત્રીન સૌ કરોડ, અઢાસી કરોડ, ઔર  
અસ્સી લાલ્લ સ્વર્ણ દીનારેં । વાર્ષિક દાન મેં તીર્થંકરોં કે નિષ્ક્રમણ કે  
સમય મેં ઇતના દ્રવ્ય ઇન્દ્ર ડન કે મવન પર લાકર રલ્લતેં છે ।

(તં જીયમેયં તીય પચ્ચુપ્પન્નમગાયણં સવ્ક્રાણં ૩ અરહંતાણં મગવતાણં  
નિવલ્લમમાગાનાં ઇમેયારૂઠ્ઠં અથસંપયાણં દલિત્તપ્)

એટલા માટે કાળત્રયવર્તી દેવેન્દ્રોના પરંપરાથી આલેતો આવેલો આ  
પ્રમાણેના આચાર છે કે તેઓ દીક્ષા લેવા માટે તૈયાર થયેલા તીર્થંકર પ્રભુઓના  
માતા-પિતાઓને અર્થ સંપત્તિ અર્પણ કરે તે પ્રમાણે ઇન્દ્ર અર્થ સંપત્તિ અર્પે  
છે (તં જહા) તેણે પ્રમાણ આ પ્રમાણે છે. “ત્રણસો કરોડ, ઇશ્વારી કરોડ અને  
એશી લાખ સ્વર્ણસુદાઓ. વાર્ષિક દાનમાં, તીર્થંકરોના નિષ્ક્રમણના વખતે  
આટલું દ્રવ્ય ઇન્દ્ર તેમને ઘેર પહોંચાડે છે.

एवं संपेक्षते=विचारयतिस्म । संपेक्ष्य वैश्रमणं देवं शब्दयति, शब्दयित्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्=हे देवानुप्रिय । एवं खलु जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'यावत्-अशीतिशतसहस्राणि दातुम्' अर्हतां भगवतां निष्क्रमतां त्रीणि कोटिशतानि अष्टाशीति कोटीः अशीतिशतसहस्राणि दातुं सर्वेषामिन्द्राणां मर्यादाऽस्तीति भावः । तत्=तस्माद् गच्छ खलु देवानुप्रिय । जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकमन्त्रे इमामेतद्रूपामर्थसंपदं खलु 'साह-राहि' सहर=पापय । संहृत्य क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव मम 'एयमाणत्तिय' आहसिकौ प्रत्यर्पय=ममाज्ञायाः प्रत्यर्पणं कुरु ।

ततस्तदनन्तरं खलु स वैश्रमगो देवः शक्रेण देवेन्द्रेण देवराजेनैवमुक्तो हृष्टः करतलपरिगृहीत दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् 'पडिसुणेइ' प्रतिबुणोति=एवं "कस्सियामि" इत्युक्त्वा स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य, जृम्भकान्

( एवं સંપેહેઈ, સંપેહિત્તા વેસમણં દેવં સહાવેઈ, સહાવિત્તાં एवं वयासी ) ऐसा विचार उस शक्त देवेन्द्र ने किया । कर के फिर उसने वैश्रमणदेव-कुबेर-को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-( एवं खलु देवानुप्पिया । जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसह-स्साईं दलहत्तए ) हे देवानुप्रिय । इस जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष क्षेत्र में मिथिला नाम की नगरी है । उस के राजा कुम्भक के महल में मल्ली नाम की तीर्थंकर प्रभु हैं वे दीक्षा लेने का विचार कर रहे हैं । इसलिए इन्द्रों का यह परम्परागत नियम है कि वे उन के निष्क्रमणं महोत्सव के समय तीन सौ करोड़, अठ्ठासी करोड़, और अस्सी लाख स्वर्ण दीनारों वार्षिक दान में देने के लिये उन के माता पिता के भवन

( एवं સંપેહેઈ, સંપેહિત્તા વેસમણં દેવં સહાવેઈ, સહાવિત્તાં एवं वयासी )

તે શક દેવેન્દ્રે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો અને ત્યારબાદ તેણે વૈશ્રમણદેવ કુબેરને બોલાવ્યો, બોલાવીને તેને કહ્યું—

( एवं खलु देवानुप्पिया । जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सय सहस्साईं दलहत्तए )

હે દેવાનુપ્રિય ! આ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં ભારતવર્ષ ક્ષેત્રમાં મિથિલા નામની નગરી છે ત્યાંના રાજા કુંભકના મહેલમાં મલ્લી નામના તીર્થંકર પ્રભુ છે. તેઓ દીક્ષા લેવાનો વિચાર કરી રહ્યાં છે. એટલા માટે ઇન્દ્રોના આ બળને પરપરાથી ચાલતો આવતો નિયમ છે કે તેઓ તેમના નિષ્ક્રમણ મહોત્સવના વખતે ત્રણસો કરોડ, ઇંઝાશી કરોડ અને એશી લાખ સોના મહોદો વાર્ષિક દાનના રૂપમાં તેમને ત્યાં ઘેર પહોંચાડે.

देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—हे देवानुप्रियाः ! गच्छत खलु यूयं जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे—भरतक्षेत्रे मिथिलायां राजधान्यां कुम्भकस्य राज्ञो भवने—त्रीणि कोटिशतानि, अष्टाशीतिकोटीः, अशीतिशतसहस्राणि, इमामेतद्भा-  
मर्थसंपदं “साहरह” संहरत=प्रापयत संहृत्य ममाङ्गसिकां प्रत्यर्पयत । ततः खलु तेजृम्भकादेवाः, ‘वेसमणेण’ वैश्रमणेन=एवमुक्ताः सन्तो हृष्टतुष्टा यावत् प्रति-  
शृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, ‘उत्तरपुरतियमं’ उत्तर पौरस्त्यम्=ईशान-  
कोणरूपं ‘दिसीभागं’ दिग्भागम्, ‘अवक्रमंति’ अवक्रामन्ति, गच्छन्ति,  
अवक्रम्य=गत्वा यावत्—‘उत्तरवेउच्चियाइं रूवाइं’ उत्तरवैक्रियाणि रूपाणि विकु-  
र्वन्ति विकुर्वणां कुर्वन्ति ‘विकुर्वित्ता’ विकुर्वित्ता, ‘विकुर्व’ इति सौत्रो धातुः,  
तेन ल्यब न भवति । तयोत्कृष्टया गत्या=दिव्यगत्या देवसम्बन्धि ‘बोडवयमाणा’  
व्यतिव्रजन्तः आगच्छन्तः यत्रैव जम्बूद्वीप द्वीपः, भारतं वर्षं, यत्रैव मिथिला  
राजधानी, यत्रैव कुम्भकस्य राज्ञो भवनं, तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य कुम्भकस्य  
राज्ञो भवने त्रीणि कोटिशतानि यावत्—अष्टाशीतिकोटीः, अशीतिलक्षाणि इमामेतद्-  
रूपामर्थसंपदं ‘साहरन्ति’ संहरन्ति=प्रापय । संहृत्य—यत्रैव वैश्रमणो देवस्त-  
त्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतलपरिमृहीतदक्षनखं शिरावर्तं मस्तकेऽञ्जलिं

पर पहुँचावें ( तं गच्छहणं देवाणुप्पिया । जंबूद्वीपे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभगभवणंसि इमेयारूवे अत्थ संपदाणं साहराहि ) अतः  
हे देवानुप्रिय ! तुम जाओ—और जंबूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारत  
वर्ष क्षेत्र में वर्तमान मिथिला नगरी के कुम्भक राजा के भवन पर इतनी  
पूर्वोक्त अर्थ संपत्ति को पहुँचाओ ( साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाण-  
त्तियं पच्चप्पिणाहि ) पहुँचा कर पीछे हमें इस की खबर दो । ( तएणं  
से वेसमणे देवे सक्केणं देविदेणं देवराएणं एवं बुत्ते हट्ठे करयल जाव  
पडि सुणेइ ) शक्र देवेन्द्र देव राज के द्वारा इस प्रकार आज्ञापित किये

( तं गच्छहणं देवाणुप्पिया ’ जंबू द्वीपे दीवे भारहे वासे मिहिलाए कुंभग  
भवणंसि इमेयारूवे अत्थसंपदाणं साहराहि )

ओटला भाटे छे देवानुप्रिय ! तमे ब्भओ अने जंबूद्वीप नामना द्वीपमां  
स्थित भारतवर्ष क्षेत्रमां विद्यमान मिथिला नगरीना कुंभक राजाना भवन उपर  
कहा सुण्ण अर्थ संपत्ति ओटले छे द्रव्य तेमने त्यां पडोयाओ. ( साहरित्ता  
खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ) पडोयाओने तमे अभने सूचित करे.

( तएणं से वेसमणे देवे सक्केणं देविदेणं देवराएणं एवं बुत्ते हट्ठे करयल  
जाव पडिसुणेइ )

कृत्वा यावत्—प्रत्यर्पयन्ति, भवदीयाज्ञानुसारेण सर्वसाधितमस्माभिरिति निवेदयन्ति स्म । ततस्तदनन्तरं खलु स वैश्रमणो देवो यत्रैव अको देवेन्द्रो देवराजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतवपरिगृहीत दशनत्वं यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।

गये उस वैश्रवण देव ने हर्षित एवं संतुष्ट होते हुए अपने दोनों हाथों की अंजलि बना कर उसे मस्तक पर रक्खा और नमस्कार कर देवेन्द्र की बात स्वीकार कर ली । “ मैं ऐसा ही करूँगा ” इस प्रकार कह कर उस ने उन की आज्ञा मान ली ।

( पडि सुणिता जंमए देवे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया । जंबूदीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणि कुंमगस्स भवणंसि तिन्नेव यकोडिसया अट्टासीयं च कोडीओ आसे यं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थ संपयाणं साहरेइ ) आज्ञा मानकर फिर उस ने जृम्भकदेवों को बुलाया और बुला कर उन से ऐसा कहा— हे देवानुप्रियों ! तुम जंबूद्वीप नाम के इस द्वीप में स्थित भारत वर्ष क्षेत्रान्तर्गत मिथिला नाम की राजधानी में जाओ—और जाकर वहां के कुंभक राजा के महल में तीन सौ अट्टासी करोड़ ८०, अस्सी लाख सुवर्ण दीनारे पङ्कचाओ ( साहरित्ता ) पङ्कचा कर ( मम एयमाणात्तियं पंचवप्पिणेइ ) फिर मुझे इस आज्ञा पूर्ति की पीछे खबर दो । ( तएणं

शके देवेन्द्र देवराज वडे आ प्रभाणु आज्ञापित थयेला वैश्रवण-देव-कुणेर छर्षित तेभज संतुष्ट भधने पोताना अने हाथेनी अंजली बनावीने तेने भस्तके भूईने नमस्कार कथां अने देवेन्द्रनी आज्ञा स्वीकारी बीधी. “ हुं आभ ज करीश ” आ प्रभाणु कहीने तेभनी तेणु आज्ञा स्वीकारी.

( पडिसुणिता जंमए देवे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया । जंबूदीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणि कुंमगस्स भवणंसि तिन्नेव यकोडिसया अट्टासीयं च कोडीओ आसे यं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहरेइ )

आज्ञा स्वीकारिने तेणु जृम्भक देवाने गोलाव्या अने गोलावीने तेज्याने आ प्रभाणु कहुं डे-डे देवानुप्रियो । तथे जंबूद्वीप नामना द्वीपमां स्थित भारतवर्ष क्षेत्रमां वर्तमान मिथिला नामनी राजधानीमां ज्ञायो अने जधने त्यांना कुंभक राजना भडेलमां त्रयुसे करोड, छक्याशी करोड, ओशी लाख सेना भडोरो पडोयाडो. ( मम एयमाणात्तियं पंचवप्पिणेइ ) पडोयाडया भाड भारी आज्ञा प्रभाणु संपूषपणु काम पूइ थध जयुं छे तेनी अने अथर आपो.

તે જંભગા દેવા વેસમણેણં एवं वृत्ता समाणा हृद् तुद्धा जाव पडिसुणेंति, પડિસુણિત્તા ઉત્તરપુરત્થિમં દિસીમાગં અવકકમંતિ, અવકકમિત્તા જાવ ઉત્તર વેઝવિયાઈ, રુવાઈ વિઝવંતિ ) હસ કે વાદ વૈશ્રમણ દેવ કે દ્વારા હસ તરફ અજ્ઞાપિત હુણે બન જંભક દેવો ને હર્ષિત એવં સંતુષ્ટ હોઈને હસ કી આજ્ઞા કો માન લિયા-સ્વીકાર કર લિયા-। સ્વીકાર કર વે ઈશાન કોણ કી ઓર ગયે । વહાં જાકર બન્હોં ને ઉત્તર વૈક્રિય રૂપોં કી વિકુર્વણા કી-( વિઝવિત્તા તાણે ઉચ્ચિદ્વાણે જાવ વીહવયમાણા જેણે જંબૂદીવે દીવે મારહે વાસે જેણે મિહિલા રાયહાણી, જેણે કુંભગસ્સ રણોમવણે તેણે ઉવાગચ્છંતિ) વિકુર્વણા કરકે ફિર વે હસ દેવ ગતિ સંબંધી ઉચ્ચિદ્વાણે ગતિ સે યાવત્ ચલતે હુણે જહાં જંબૂદ્રોપ નામ કા દ્વીપ મારત વર્ષ નામ કા ક્ષેત્ર, હસ મેં મી જહાં મિથિલા નામ કી રાજધાની હસમેં મી જહાં કુંભક રાજા કા રાજ પ્રાસાદ થા-વહાં આયે ।

( ઉવાગચ્છિત્તા કુંભગસ્સ રણો મવણંસિ તિન્નિ કોહિસયા જાવ સાંહરંતિ ) વહાં આકર બન્હોં ને કુંભક રાજા કે મવન મેં ત્રીનસૌ અઢાસી કરોડ ઓર ૮૦ લાલ સુવર્ણ દીનારસે મંડાર મર દિયા । (સાંહરિ-

( તણે જંભગા દેવા વેસમણેણં एवं वृत्ता समाणा हृद् तुद्धा जाव पडिसुणेंति, પડિસુણિત્તા ઉત્તરપુરત્થિમં દિસીમાગં અવકકમંતિ અવકકમિત્તા જાવ ઉત્તર-વે ઉચ્ચિયાઈ રુવાઈ વિઝવંતિ )

ત્યારબાદ વૈશ્રવણ દ્વારા આજ્ઞાપિત થયેલા જંભક દેવોએ હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થઈને તેની આજ્ઞાને માની લીધી એટલે કે તેની આજ્ઞા સ્વીકારી. સ્વીકાર્યા બાદ તેઓ ઇશાન દેવ તરફ ગયા ત્યાં જઈને તેઓએ ઉત્તર વૈક્રિય રૂપોની વિકુર્વણા કરી.

(વિઝવિત્તા તાણે ઉચ્ચિદ્વાણે જાવ વીહવયમાણા જેણે જંબૂદીવે દીવે મારહે વાસે જેણે મિહિલા રાયહાણી, જેણે કુંભગસ્સ રણો મવણે તેણે ઉવાગચ્છંતિ)

વિકુર્વણા કર્યા પછી તેઓ દેવગતિ સંબંધી ઉચ્ચિદ્વાણે ગતિથી ચાલતાં બધાં જંબૂદ્રીપ નામે દ્વીપ, ભારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર અને તેમાં પણ બધાં મિથિલા નામની રાજધાનીમાં કુંભક રાજાને મહેલ હોતો ત્યાં ગયા.

( ઉવાગચ્છિત્તા કુંભગસ્સ રણો મવણંસિ તિન્નિ કોહિસયા જાવ સાંહરંતિ ) ત્યાં જઈને તેઓએ કુંભક રાજાના મહેલમાં ત્રણસો ઇંદ્રાશીકેશ અને એશી લાખ-સોભામહેશ લાંકર-ખળનામાં મૂકી દીધી.

તત્તસ્તદનન્તરં રાત્રી મહીન્ 'કલ્લાકર્લિલ' કલ્યાકલ્યે=પ્રતિદિવસં 'જાવ માગહઓ પાયરાસોત્તિ' યોવત્-માગધકં પ્રાતરાશં, મગધદેશસમ્બન્ધિનં પ્રાતરાશં-પ્રામાતિકં મોજનકાલં યાવત્ આરમ્મ પ્રહરદ્વયપર્યન્તં વહુમ્બઃ 'સળાહાણ ય' સનાથેમ્બ-સ્વસ્વામિકેમ્બશ્ચ 'અળાહાણ ય' અનાયેમ્બશ્ચ=રક્કેમ્બશ્ચ, 'પંથિયાણ ય' પાન્થિકેમ્બઃ પન્થાનં નિત્ય ગચ્છન્તીતિ પાન્થાસ્ત એવ પાન્થિકાસ્તેમ્બશ્ચ, 'પહિયાણ ય' પથિકેમ્બઃ-પથિ ગચ્છન્તીતિ પાથિકાસ્તેમ્બશ્ચ, 'કરોહિયાણ ય' કારોહિકેમ્બઃ=કરોટ્યા કપાલેન ચરન્તીતિ કરોટિકાસ્તેમ્બશ્ચ, 'સ્વપરધારી' હિતિમાધાપ્રસિદ્ધેમ્બશ્ચ, 'કપ્પહિયાણ ય' કર્પટિકેમ્બઃ-કર્પટશ્ચરન્તીતિ કર્પટિકાસ્તેમ્બઃ, કન્થાધારિ-મિશ્નુકેમ્બઃ, એકમેકહિરણ્યકોટિમ્, તથા- 'અટ્ટ ચ જાવ જેનેવ વેસમણે દેવે તેનેવ ઉવાગચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ્ જાવ પુરુષવ્વિપ્પિણંતિ) રાત્રી ફિર વે જહાં વૈશ્રમણ દેવ થા વહાં ગયે વહાં જાક-હ ઉત્તહોં ને હાથ જોડકર " આપકી આજ્ઞાનુસાર હમને કુંભક રાજા કે મ્બન અર્થ સંપદા પહુંચા દી હૈ, એસી સ્વર ઉસે પીછે કર દી । (તણં મલ્લી અરહા કલ્લાકર્લિલ જાવ માગહઓ પાયરાસોત્તિ વહૂણં સળાહાણ ય અળાહાણ ય પંથિયા ય પહિયાણ ય કરોહિયાણ ય કપ્પહિયાણ ય એમ્મેગં હિરણ્યકોટિં અટ્ટ ય અણૂણાઈં સયસહસ્સાઈં હમેયારુવં અત્થ સંપદાણં દલયઈ ) હસકે બાદ મલ્લી અરિહંત પ્રમુ ને કલ્યાકલ્ય-પ્રતિ-દિન પ્રાતઃ સમય સે હેકરં દોપહર તક અપને સનાથોં કો, અનાથોં કો, પન્થિકોં કો, પથિકોં, સ્વપર ધારિયો કો, કન્થા ધારિયોં કો પ્રતિદિવસ ૧ વર્ષ તક ૧ કરોડ ૮૦ અસ્મી લાલ્લ સ્વર્ણ દીનરોં દોં ।

( સાહરિત્તા જેનેવ વેસમણે દેવે તેનેવ ઉવાગચ્છંતિ, ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ્ જાવ પુરુષવ્વિપ્પિણંતિ )

મૂક્યા પછી તેઓ જ્યાં વૈશ્રમણ દેવો હતા ત્યાં ગયા, ત્યાં જઈને તેઓએ હાથ બેંડીને " તમારી આજ્ઞા મુજબ અમેએ કુંભક રાજાના ભવનમાં અર્થ-સંપત્તિ પહોંચાડી દીધી છે. " આ પ્રમાણેની સૂચના કરી.

( તણં મલ્લી અરહા ! કલ્લાકર્લિલ જાવ માગહઓ પાયરાસોત્તિ વહૂણં સળાહાણ ય અળાહાણ ય પંથિયાણય પરિયાણ ય કરોહિયાણ ય કપ્પહિયાણય એમ્મેગં હિરણ્યકોટિં અટ્ટ ય અણૂણાઈં સયસહસ્સાઈં હમેયારુવં અત્થસંપદાણં દલયઈ )  
ત્યારબાદ મલ્લી અરહંત પ્રમુએ કલ્યાકલ્ય દરરોજ સવારના વખતથી માંડીને ધ્યેયરસુધી બધા સનાથોને, અનાથોને, પંથોને અને પથિકોને, સ્વપરધારીઓને, કન્થાધારીઓને એક વર્ષ સુધી એક કરોડ એંશી લાખ સોના મહોરો આપી.



મોજનદાને, ન શ્રુતં નાપિદૃષ્ટમિત્યાશ્ચર્યપૂર્વકં વર્ણયતીત્યર્થઃ । एवं ‘पन्नवेइ’ प्रज्ञापयति विस्तारेण बोधयति, एवं ‘परुवेइ’ प्ररूपयति-सदृष्टान्तं वर्णयति, किमाख्यातीत्याह-‘ एवं खलु ’ इत्यादि-एवं खलु हे देवानुमियाः ! कुम्भकस्य राज्ञो भवने ‘सर्वकामगुणियं’ सर्वकामगुणितं=सर्वेन्द्रियसुखजनकं ‘किमिच्छियं’ किमिच्छकम्=इच्छानुसारं विपुलमशनपानखाद्यस्नानं बहुभ्यः श्रमणेभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च, यावत् यथा समागतेभ्यः सनाथानाथपान्थिकादिभ्यः परिवेष्यते ।

“ वरवरिया घोसिज्जइ किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं ।

सुरअसुरदेवदाणव नरिंदमहियाण निक्खमणे ॥१॥ ”

‘वरवरिया’ वरवरिका-वर वा=याचस्व याचस्व इति घोषणा, ‘घोसिज्जइ’

कुम्भकस्य રણો ભવર્ણાંસિ સર્વ કામગુણિયં કિમિચ્છિયં વિપુલં અસળં ૪ બહૂળં સમણાણં જાવ પરિવેસિજ્જેઈ ) હસ કારણ મિથિલો નગરી મેં શ્રૃંગાટક આદિ સ્થાનોં પૂર અનેક જન મિર્લ ૨ કર એક દૂસરે સે એસા કહને લગે, આશ્ચર્ય યુક્ત હોકર હસ પ્રકાર બોલને લગે- વિસ્તાર પૂર્વક હસ પ્રકાર એક દૂસરે કો સમજાને લગે, તથા દૃષ્ટાન્ત દેકર ૨ હસ પ્રકાર વર્ણન કરને લગે-હે દેવાનુમિયોં ! કુંભક રાજા કે ભવન પર સર્વેન્દ્રિય સુખ જનક, અશન પાન, લાઘ્ય એવં સ્વાધ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર અનેક શ્રમણોં કે લિયે, બ્રાહ્મણોં કે લિયે યાવત્ સમાગતોં કે લિયે, સનાથોં અનાથોં કે લિયે ઔર પાંથિકોદિકોં કે લિયે ઇચ્છાનુસાર દિયા જાતા હૈ ( વરવરિયા ઘોસિજ્જઈ, કિમિચ્છિયં દિજ્જએ બહુ વિહીયં, સુર અસુર દેવ દાણવનરિંદ મહિયાણ નિક્કમણે ) સુર અસુર, દેવ, દાનવ, એવં નરેન્દ્રોં દ્રાગ પૂજ્ય તીર્થકરોં કે નિષ્કમણે

ભાસઈ એવં પન્નવેઈ, એવં પરુવેઈ, એવં ચલુ દેવાણં ? કુંભકસ્ય રણો ભવર્ણાંસિ સર્વકામગુણિયં કિમિચ્છિયં વિપુલં અસળં ૪ બહૂળં સમણાણં ય જાવ પરિવેસિજ્જેઈ)

એના લીધે મિથિલા નગરીના શ્રૃંગાટક વગેરે સ્થાનોમાં નાગરિકોનાં ટોળે ટોળાં એકઠાં થઈને આશ્ચર્ય પામતાં વિસ્તારપૂર્વક એક-બીજાને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યાં, સમજાવવા લાગ્યાં તેમજ દૃષ્ટાન્તો આપીને આ પ્રમાણે વર્ણન કરવા લાગ્યાં કે હે દેવાનુમિયો ! કુંભક રાજાના મહેલમાં સર્વેન્દ્રિય સુખજનક અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાધ્યય ચાર ભતનો આહાર ઘણા શ્રમણો, બ્રાહ્મણો, સમાગતો, સનાથો, અનાથો અને પાંથિકો વગેરેને માટે ઈચ્છા મુજબ આપવામાં આવે છે.

વરવરિયા ઘોસિજ્જઈ, કિમિચ્છિયં દિજ્જએ બહુવિહીયં, સુર અસુર દેવ, દાણવનરિંદ મહિયાણ નિક્કમણે )

સુર, અસુર, દેવ, દાનવ અને નરેન્દ્રોવડે પૂજ્ય તીર્થકરોના નિષ્કમણના અર્થે “ ભોગે, ભોગે ” આ ભતની ઘોષણા કરવામાં આવી છે અને ઘણી

યોગ્યતે કિમિચ્છયં=કિમિચ્છકમ્ इच्छानुसार दीयते बहुविधिकम् । सुरासुरदेव  
दानवनरेन्द्र महितानां=અર્હતાં તીર્થકરાણાં નિષ્ક્રમણે ॥ ૧ ॥

તતઃ खलु मल्ली अर्हन् अस्य-‘મળં પહારેહ’ મનસિ પ્રધારયતિ, હત્પનેન  
સમ્બન્ધઃ । કિં પ્રધારયતીત્યાહ-‘સંવચ્છરે’ સંવત્સરે खलु त्रीणि कोटिशतानि अष्टा-  
दश च भवन्ति कोटयः । अशीतिशतसहस्राणि स्वर्णदीनाराणि तीर्थकरनिष्क्रमणे  
દાતવ્યાનિ ભવન્તિ इमामेतद्रूपामर्थसंपदं खलु दत्ता निष्क्रमामि दीक्षां ग्रहीष्यामि  
इति ॥ सू० ૩૭ ॥

મૂખ્ય-તેણં કાલેણંતેણં સમણં લોગંતિયા દેવા બંમલોણ  
કપ્પે રિદ્ધે વિમાણે પથ્થહે સણહિંર વિમાણેહિં સણહિંર પાસાયવ-  
હિંસણહિં પત્તેયંર ચ્હહિં સામાણિયસાહસ્સીહિ તિહિં પરિસાહિં  
સત્તહિં અણિણહિં સત્તહિં અણિયાહિવર્હિં સોલસહિં આચરક્ખ-  
દેવસાહસ્સીહિં અન્નેહિં ય વહૂહિં લોગંતિણહિં દેવેહિં સહિં સંપ-  
રિવુડા મહયા હ્યનટ્ટગીયવાડય જાવ રવેણં દિઠ્ઠાવં ભોગભોગાવં

સમય મેં “ માંગો માંગો ” ऐसी घोणणा कराई जाती है और अनेक  
प्रकार का किमिच्छक ( तुम्हारी क्या इच्छा है ) दान भी दिया जाता  
है । ( तएणं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिन्नि कोडिसया अट्ठासीति च होति  
कोडीओ असिंति च सयसहस्साहं इमेयारूवं अत्थ संपयाणं दलइत्ता  
निक्खमोमिति मणं प्हारेह ) अबमल्ला अरिहंत ने “ एक साल में  
तीन सौ करोड़-तीन अरब अट्ठासी करोड़ ८० लाख स्वर्ण दीनारें  
तीर्थकर निष्क्रमण ( दीक्षा अवसर पर ) में दातव्य होती हैं सो मैं  
इतनी अर्थ संपत्ति देकर दीक्षा ग्रहण करूंगा “ ऐसा मन में निश्चित  
विचार किया । सूत्र “ ३७ ”

જાતલું ‘કિમિચ્છક’ ( તમારી શું ઇચ્છા છે ? ) દાન પણ આપવામાં આવે છે.

( તણં મલ્લી અરહા સંવચ્છરેણં તિન્નિ કોડિસયા અટ્ઠાસીતિ ચ હોતિ  
કોડીઓ અસિંતિ ચ સયસહસ્સાહં ઇમેયારૂવં અત્થસંપયાણં દલહિત્તા નિક્ખમો  
મિત્તિમણં પહારેહ )

હવે મલ્લી અરહંતે “ એક વર્ષમાં ત્રણસો કરોડ, ત્રણ અબજ, અઠ્યાશી  
કરોડ એંશી લાખ સોના મહોરો તીર્થ કર નિષ્ક્રમણ ( દીક્ષાના સમયે ) માં  
આપવામાં આવે છે તો હું આટલી અર્થ સંપત્તિ આપીને જ દીક્ષા અહણ  
કરીશ ” આ પ્રમાણે મનમાં ચોક્કસપણે વિચાર કર્યો. ॥ સૂત્ર “ ૩૭ ”

मुंजमाणा विहरन्ति, तं जहा—‘ सारस्सयमाइच्चा वल्लि—वरुणा  
य गइतोया य । तुसिया अब्बावाहा अगिन्त्ता चेव रिट्ठाया  
॥ १ ॥ ” तएणं तेसि लोयन्तियाणं देवाणं पत्तेयं आसणाइं  
चलन्ति तहेव जाव अरहन्ताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्त  
एत्ति तं गच्छामो णं अम्हेवि मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करोमि  
त्तिकट्ठु एवं संपेहेत्ति, संपेहिन्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अव-  
क्कमन्ति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं संमोहणन्ति, समो-  
हणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव  
मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रत्तो भवणे जेणेव मल्ली  
अरहा तेणेव उवागच्छन्ति उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवन्ना  
सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं पवरपरिहिया करयल० ताहिं  
इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं एवं वयासी—बुज्झाहिं भयवं ! लोगनाहा !  
पवत्तेहिं धम्मतिरथं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सइ  
त्तिकट्ठु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयन्ति, वयित्ता मल्लि अरहं  
वंदन्ति नमंसन्ति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया  
तामेव दिसिं पडिगया । तएणं मल्ली अरहा तेहिं लोगन्ति-  
एहिं देवेहिं संबोहिणसमाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा०  
करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए  
समाणे मुंडे भवित्ता जाव पव्वइत्ताए, अहासुहं देवा० ! मा  
पडिबन्धं करेहि, तएणं कुंभए कोडुंवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता  
एवं वयासी—खिप्पामेव अट्टसहस्सं सोवणिणयाणं जाव भोमे-

जाणांति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्टवेह जाव उवट्टवेति, तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तएणं सक्के ३ आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव अट्टसहस्सं सोव-णिण्याणं जाव अण्णं च तं विउलं उवट्टवेह जाव उवट्टवेति, तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा, तएणं से सक्के देविंदे देवराया कुंभराया य मल्लि अरहं सीहासणं पुरत्थाभिमुहं नि-वेसेइ अट्टसहस्सेणं सोवणिण्याणं जाव अभिसिंचइ, तएणं मलिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च सन्निभतरवाहिरियं जाव सव्वओ समंता परिधावन्ति, तएणं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं जाव सव्वालंकारविभू-सियं करेइ, करित्ता कोडुंभियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव मणोरमं सीयं उवट्टवेह, ते उवट्टवेति, तएणं सक्के ३ आभिओगिए० खिप्पामेव अणेगखंभ० जाव मणोरमं सीयं उवट्टवेह जावसावि सीया तं चेव सीयं अणुपविट्ठा ॥सू० ३६॥

टीका—‘तेणं कालेणं’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये लोका-न्तिका देवा ब्रह्मलोके कल्पे रिष्टविमानप्रतरे स्वकेषु स्वकेषु विमानेषु स्वकेषु

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (लोकान्तिया देवा बंभलोए कप्पेरिट्टविमाण पत्थडे) लोकान्तिक देवों के जो ब्रह्मलोक नाम के कल्प में स्थित रिष्ट विमान पाथडे में वर्तमान

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काले अने ते समये (लोकान्तिया देवा बंभलोए कप्पे रिष्टविमाणपत्थडे) लोकान्तिक देवों के अने ब्रह्मलोक नामना कल्पमास्थित रिष्ट पाथडामां रहेवा।

સ્વર્કેષુ પ્રાસાદાવતંત્રકેષુ પ્રત્યેકં ૨ ચતુર્થિઃ સામાનિકસહસ્રૈઃ, તિસ્રભિઃ પરિપદ્ધિઃ સસમિરનીકૈઃ=હસ્ત્યશ્વરથપદાતિમહિપગન્ધર્વનાટ્યરૂપૈઃ સસ્રકટકૈઃ સસમિરનીકાધિપતિભિઃ, ષોડશભિરાત્મરક્ષકદેવસહસ્રૈઃ, અન્યૈશ્વ વહુભિર્લૌકાન્તિવૈદેવૈઃ સાર્થ સંપ્રરિહુતાઃ, 'મહયા' મહતા 'અહ્યનદ્વગીયવાહ્ય રવેળ' અહત નૃત્યગીતવાદિચરવેળ=અહત=અપ્રતિહતઃ, નૃત્યગીતવાદિત્રાણાં યો રવઃ = મંધુરધ્વનિસ્તેન ભોગ-ભોગાન્=દિવ્યસુખભોગાન્=શુજમાના વિહરન્તિ-આસતે । તદ્વ્યથા-તેષાં નામાન્યાહ-

“સારસ્સયમાઙ્ગ્ચા, વહ્નિ વરુણા ય ગદ્ગતોયા ય ।

તુસિયા અવ્વાવાહા, અગ્નિગ્ચા ચેવરિદ્વા ય ॥૧॥ ” ઇતિ ॥

(૧) સારસ્વતાઃ, (૨) આદિત્યાઃ, (૩) વહ્નયઃ, (૪) વરુણાશ્ચ, (૫) ગર્તનો-

(સપદ્ધિ ૨ વિમાણેહિં, સપદ્ધિ ૨ પાસાયવદિસપદ્ધિ પત્તેયં ૨ ચડહિં સામાણિયસાહસ્તીહિં તિહિં પરિસાહિં સત્તહિં અણિપદ્ધિં સત્તહિં અણિયાહિવર્ધિં સોલસહિં આયરક્ષદેવસાહસ્તીહિં અન્નેહિં વહ્નિહિં લોગંતપદ્ધિં દેવેહિં સહિં સંપરિહુડા ) અપને ૨ વિમાનોં મેં રહે હુપ અપને ૨ શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદોં મેં અલગ ૨ ચાર ૨ હજાર સામાનિક દેવોં કે સાથ, ત્રીન ૨ પરિષદાઓં કે સાથ, સાત ૨ અનીકોં કે સાથ, સાત ૨ અનીકાધિપનિયોં કે સાથ સોલહ ૨ આત્મ રક્ષક દેવોં કે સાથ તથા ઔર મી અન્ય લોકાન્તિક દેવોં કે સાથ રહતે હેં (મહયા અહ્યનદ્વગીયવાહ્ય જાવ રવેળ દિવ્વાઈ ભોગભોગાઈ શુજમાણા વિહરંતિ) એવં જો નૃત્ય ગીત, તથા બાજોં કી અપ્રતિહત ધ્વનિ પૂર્વક દિવ્ય ભોગોં ભોગા કરતે હેં । (તં જહા ) જન લૌકાન્તિક દેવોં કે આઠ ભેદ હોતે હેં વે આઠ ભેદ યે હેં- ૧ સારસ્વત ૨ આદિત્ય, ૩ વહ્નિ, ૪ વરુણ-૫ ગર્તનોય, ૬ તુપિત,

(સપદ્ધિ, ૨ વિમાણેહિં ૨ પાસાયવદિસપદ્ધિ પત્તેયં ૨ ચડહિં સામાણિય સાહસ્તીહિં તિહિં પરિસાહિં સત્તહિં અણિપદ્ધિં સત્તહિં અણિયાહિવર્ધિં આયરક્ષ-દેવ સાહસ્તીહિં અન્નેહિં વહ્નિહિં લોગંતપદ્ધિં દેવેહિં સહિં સં પરિહુડા )

પોતપોતાના વિમાનોમાંના ઉત્તમ પ્રાસાદોમાં જુદાજુદા ચાર હેબર સામાનિક દેવોની સાથે, ત્રણ ત્રણ પરિષદાઓની સાથે, સાત સાત અનીકોની સાથે, સાત સાત અનીકાધિપતીઓની સાથે, સોળ સોળ આત્મરક્ષક દેવોની સાથે તેમજ બીજા પણ લૌકાન્તિક દેવોની સાથે રહે છે

(મહયા અહ્યનદ્વગીય વાહ્ય જાવ રવેળ દિવ્વાઈ ભોગભોગાઈ શુજમાણા વિહરંતિ)

અને જેઓ નૃત્ય, ગીત તેમજ વાદ્યોની અપ્રકિત ધ્વનિપૂર્વક દિવ્ય ભોગોનો ઉપલેખ કરતા રહે છે. (તં જહા) આ લૌકાન્તિક દેવોના આઠ ભેદો હોય છે તે આ પ્રમાણે છે-૧ સારસ્વત, ૨ આદિત્ય, ૩ વહ્નિ, ૪ વરુણ,

યાશ્વ, (૬) તુષિતાઃ, (૭) અવ્યાબાધાઃ, (૮) આગ્નેયાશ્વ, एतेऽष्टौ कृष्णराज्य-  
वकाशान्तरस्थाधि-विमानाष्टकवासिनः, तथा ( ९ ) रिष्टाश्च = रिष्टाख्यविमान-  
प्रतरासिनः ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ તેષાં લોકાન્તિકાનાં દેવાનાં પ્રત્યેકં આસનાનિ ચલન્તિ  
તથૈવ યાવત્-સૌધર્મેન્દ્રવદેવાવધિ પ્રયુજ્જતે, પ્રયુજ્ય મલ્લીમર્હેન્તમાભોગયતિ તતઃ  
સ્વલ્વેવં સંકલ્પઃ સમુદ્પદ્યત-મલ્લી અર્હંબિષ્કમિતુમિચ્છતિ, एवं मर्यादाऽस्ति

૭ અવ્યાબાધ ૮ આગ્નેય યે આઠ લૌકાન્તિક દેવ કૃષ્ણ રાજ્ય ...  
મિશ્ર ૨ આઠ વિમાનો મેં રહતે હૈં । તથા જો રિષ્ટ હૈં વે રિષ્ટ નામક વિમા-  
ન પ્રતર મેં રહતે હૈં । ( તપ્ત ) સો ( તેસિં લોચંતિયાળં દેવાળં પસેયં ૨  
આસનાહ ચલંતિ ) હન લૌકાન્તિક દેવોં કે પ્રત્યેક કે આસાન કંપિત હુપ ।

( તહેવ જાવ અરહંતાણં દેવાળં નિઃસ્વમમાણાળં સંવોહળં કરેત્તપ  
ત્તિ તં ગચ્છામોળં અમ્હે વિ મલિલસ્સ અરહઓ સંવોહળં કરેમિ ત્તિં કર્તુ  
અં સંપેદંતિ ) અતઃ ઇન્હોં ને સવ ને અપને ૨ અવધિજ્ઞાન સે વિચાર  
કિયા કિ હમારે આસન કંપિત કયોં હુપ હૈં સો જિસ તરહ સે સૌધ-  
ર્મેન્દ્ર ને અપને આસન કંપિત હોને કા કારણ જાન લિયા થા ડસી  
પ્રકાર ઇન્હોં ને શ્રી જોન લિયા । હસ તરહ કારણ જાનકર ઇન્હોં કે મન  
મેં પેસા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ કિ મલ્લી અર્હન્ ઘર સે નિકલ ને કી-દીક્ષા  
અંગીકાર કરને કી ઇચ્છા કર રહે હૈં -સાં હમ લૌકાન્તિક દેવોં કી પેસી

૫ ગર્વતાય, ૬ તુષિત, ૭ અવ્યાબાધ, ૮ આગ્નેય. એ આઠ લૌકાન્તિક દેવ  
કૃષ્ણરાજ્ય.....બુદ્ધા બુદ્ધા આઠ વિમાનોમાં રહે છે. તેમજ એ રિષ્ટ છે તેઓ  
રિષ્ટ નામક વિમાન પ્રતરમાં રહે છે. ( તપ્ત ) તે આ પ્રમાણે ( તેસિં લોચંતિ  
યાળં દેવાળં પસેયં ૨ આસનાહ ચલંતિ ) આ બધા લૌકાન્તિક દેવોમાંથી કરેકના  
આસનો ડાલવા માંડયાં.

( તહેવ જાવ અરહંતાણં દેવાળં નિઃસ્વમમાણાળં સંવોહળં કરેત્તપ ત્તિ તં ગચ્છા-  
મોળં અમ્હે વિ મલિલસ્સ અરહઓ સંવોહળં કરેમિ ત્તિં કર્તુ અં સંપેદંતિ )

એટલા માટે આ બધા દેવોએ પોતપોતાના અવધિજ્ઞાન વડે વિચાર કર્યો  
કે અમારા આસનો શા માટે ડાલવા માંડયા છે ? તેા જેમ ઇન્દ્રે પોતાના  
આસનને ડાલવાનું કારણ બાધ્યું હતું તે પ્રમાણે આ બધાઓએ પણ બાધી લીધું.

આ પ્રમાણે કારણની ખાત્રી કરીને તેમના મનમાં આ બાતનો વિચાર  
ઉદ્ભવ્યો કે મલ્લી અર્હન્ ઘેરથી નીકળી બધાની-દીક્ષા સ્વીકારવાની ઇચ્છા  
કરી રહ્યાં છે, તેા આ સમયે અમારા જેવા બધા લૌકાન્તિક દેવોની એવી

લોકાન્તિકદેવાનાં, યદ્ અર્હતાં નિષ્ક્રામતાં સંવોધનં કર્તુમિતિ = દીક્ષાવસરં  
 વોધયિતુમિત્યર્થઃ, તદ્=તસ્માદ્ ગચ્છામઃ સ્વલ્લ વયમપિ મલ્લ્યા અર્હંતો સંવોધનં  
 કુર્મં એતિ કૃત્વા એવં સંપ્રેક્ષન્તે=વિચારયન્તિ સંપ્રેક્ષ્ય, ઉત્તરપૌરસ્ત્યં દિગ્ભાગમ્=  
 ઈશાનકોણમ્ અવક્રામન્તિ, અવક્રમ્ય વૈક્રિયસમુદ્ધાતેન સમવહન્તિ ઉત્તરવૈક્રિયં  
 કુર્વન્તિ । સમવહત્ય સંસ્થાતાનિ યોજનાનિ યાવત્-દણ્ડ નિઃસારયન્તિ, દણ્ડં  
 રત્નમયં કુર્વન્તિ-કૃત્વા ચ એવં યથા જુમ્મકાઃ-જુમ્મકદેવવદ્ દેવલોકસમન્વિ  
 દિવ્યગત્યા યાવત્-યત્રૈવ મિથિલા રાજધાની યત્રૈવ કુમ્મકસ્ય રાજ્ઞો ભવનં યત્રૈવ  
 મલ્લી અર્હન્ તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ ઉપોગત્ય અન્તરિક્ષપ્રતિપન્નાઃ ગગનસ્થાઃ, સકિ-

મર્યાદા હૈં કિં વૈરાગ્ય કી મન મેં ભાવના ડ્યોં હી તીર્થકરોં કો આવે-  
 તલ્લ ઉન્હે સંવોધન કરના-યહ્ કહના કિં મગવાન્ । યહ્ દીક્ષા કે લિયે  
 ઉચિત્ અવસર હૈં । હમલિયે હમ લોગ મી ચલેં ઓર મલ્લી અર્હંત કો  
 સંવોધન કરેં । એસા વિચાર કર ( ઉત્તરપુરત્થિમં દિસીમાયં અવક્ક-  
 મંતિ, અવક્કમિત્તા વેડવ્વિયસમુદ્ધાણં સમોહણંતિ, સમોહણિત્તા  
 સંસ્થિજ્ઞાઈં જોયગાહ એવં જંમગા જાવ જેણેવ મિહિલા રાયહાણી જેણેવ  
 કુંભગસ્સ રણ્ણો ભવણે, જેણેવ મલ્લી અરહા તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ ) વે-  
 સલ્લ કે સલ્લ લોકાન્તિક દેવ ઈશાન કોણ મેં ગયે-વહાં જાકર ઉન્હાં ને  
 વૈક્રિય સમુદ્ધાત સે ઉત્તર વૈક્રિય કી વિકુર્વણા કી-વિકુર્વણા કર કે ઉન્હોં  
 ને અપને અત્તમપ્રદેશોં કો રત્નમય દણ્ડાકાર રૂપ મેં બાહર નિકાલા ।

બાદ મેં જુમ્મક દેવોં કી તરહ વે સલ્લ દેવ લોક સંબન્ધી ઉત્કૃષ્ટ ગતિ  
 સે જંહાં મિથિલા રાજધાની થી-ઉમ મેં મી જહાં કુંમક રાજા કા ભવન

મર્યાદા ( પ્રભુલિકા ) હોય છે કે તીર્થકરોના મનમાં જ્યારે વૈરાગ્યની ભાવના  
 ઉદ્ભવે કે તરત જ મને સંવોધન કરવું-એટલે કે તેમને આ પ્રભાણે વિનંતી  
 કરવી કે હે ભગવં ! દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો આ ઉચિત અવસર (સમય) છે,  
 એટલે અમે પણ ત્યાં જઈએ અને તેઓને સંવોધન કરીએ. આમ વિચાર કરીને

( ઉત્તર પુરત્થિમં દિસીમાયં અવક્કમંતિ, અવક્કમિત્તા, વેડવ્વિય સમુદ્ધા-  
 ણં સમોહણંતિ, સમોહણિત્તા, સંસ્થિજ્ઞાઈં જોયગાહ એવં જહા જંમગા જાવ જેણેવ  
 મિહિલા જેણેવ કુંભગસ્સ રણ્ણો ભવણે, જેણેવ મલ્લી અરહા તેણેવ ઉવાગચ્છંતિ )  
 તેઓ બધા લૌકિક દેવો ઈશાન કોણમાં ગયા, ત્યાં જઈને તેમણે  
 વૈક્રીય સમુદ્ધાતથી ઉત્તર વૈક્રીયની વિકુર્વણા કરી, વિકુર્વણા બાદ તેમણે પોતાના  
 આત્મપ્રદેશોને રત્નમય દંડાકાર રૂપમાં બહાર કાઢ્યા.

ત્યારપછી જુમ્મક દેવોની જેમ તેઓ બધા દેવલોક સંબન્ધી ઉત્કૃષ્ટગતિથી  
 જ્યાં મિથિલા રાજધાની હતી તેમાં પણ જ્યાં કુંભક રાજાનો મહેલ અને  
 મલ્લી અર્હંત વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યા.

झिणीकानि=क्षुद्रघण्टिकायुक्तानि यावद् वस्त्राणि 'पवर परिहिया' प्रवरेण विधिना परिहिताः दिव्यवस्त्रधारिण इत्यर्थः, करतलपरिमृहीतदशनखं शिर आवर्तं मस्तके-  
ऽञ्जलिं कृत्वा तामिरिष्टाभि कमनीयाभिर्वाग्मिरेवमवादीत्—हे भगवन् ! हे लोक-  
नाथ ! 'बुज्झाहि' बोधय, भव्यजीवान् प्रवर्तय धर्मतीर्थचतुर्वर्षिसंन्यस्वरूपं  
धर्मतीर्थप्रवर्तनस्य फलमाह—'जीवाणं' इत्यादि, जीवानां 'द्वियसुहनिस्सेय-  
सकरं' हितसुखनिश्चयसकरं, हितकरं—नरकनिगोदादि दुःखनिवारकत्वात्,

आ—उस-में भी जहाँ मल्ली अर्हत विराजमान थे वहाँ आये । ( उवा-  
गच्छित्ता अंतलिक्खपडिवन्ना सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं पवरपरि-  
हिया करयल० ताहिं इट्ठाहिं जाव बग्गहिं एवं वयासी—बुज्झाहिं भयवं ।  
लोगनाहा ! पवसे हिं घम्मतित्थं जीवाणं द्वियसुहनिस्सेयसकरं भवि-  
स्सइ ) वहाँ आकर भी वे नीचे नहीं उतरे किन्तु आकाशमें अघर खड़े  
बोले । उस समय उन्होंने ने बड़े सुन्दर वस्त्र जो कि क्षुद्र किकिणियों से  
युक्त थे पहिर रखे थे । अघर रहे हुए ही उन्होंने दोनों हर्षाकी अञ्जलि  
बना और उसे मस्तक पर रख वहीं से मल्लि अर्हत को नमस्कार  
किया बाद में बड़ी मीठी २ मनोहर वाणियों द्वारा उन से इस प्रकार  
कहा—हे भगवान् हे लोक नाथ ! भव्यजीवों को आप समझाओ चतुर्विध  
संन्यस्वरूप धर्मतीर्थ की आप प्रवृत्ति करो । इससे जीवों नरक निगोद  
आदि के दुःखों से छुटकर वह धर्मतीर्थ हितकारी होगा । स्वर्ग आदि

( उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवन्ना सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं पवर-  
परिहिया करयल० ताहिं इट्ठाहिं जाव बग्गहिं एवं वयासी बुज्झाहिं भयवं ! लोगनाहा  
पवत्तेहिं घम्मतित्थं जीवाणं द्विय सुय निस्सेयसकरं भविस्सइ )

त्यां पडेअंथीने तेओ नीचे उतर्या नडि पष्ण आकाशमां अ अद्धर ओवा  
रहीने ओव्वा—देवोओ ते वणते सुद्धर वओ पडेरेवां डतां, तेभनां वओ नानी  
नानी बूधरीओथी शोअतां डतां, आकाशमां अद्धर रहीने अ तेओओ पोताना  
अने होथीनी अंअदी अनावी अने तेने अस्तके भूरीने त्यांथी अ भव्वी  
अडंतेने नमस्कार कथां, त्यारपछी भूण अ भीमां अने अनोद्धर वयने, द्वारा  
तेओ, तेभने विनंती करतां डडेवा लाय्या—' हे भगवन् ! हे लोकनाथ ! तमे  
अव्यथोवने ज्ञान आपो, अतुविध संव इप धर्मतीर्थनी तमे प्रवृत्ति केशे,  
ओनाथी ओवने नरक निगोद वगेरेना दुःखोथी युक्त करावीने डितकारी धर्म  
तीर्थ तश्च तेभने उन्मुण केशे, ते धर्मतीर्थ ते बोडोना भाटे स्वर्ग वगेरेने  
अमंड ( अतीव ) आनंद आपनार होवाथी मुणकर अशे, तेभन अडित



સુલ્કરં સ્વર્ગાધમન્દાનન્દનકત્વાત્ , નિઃશ્રેયસકરં—મોક્ષપ્રાપ્તકત્વાત્ , મન્વિષ્ય-  
તીતિ કૃત્વા=ઉત્ત્વા, દ્વિતીયવારમપિ, તૃતીયવારમપિ एवं વદન્તિ, ઉત્ત્વા, મલ્લીમ્  
અર્હન્તં વન્દન્તે નમસ્યન્તિ, વન્દિત્વા નત્વા યસ્યા એવ દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતાસ્તામેવ  
પ્રતિગતાઃ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલ્લ મલ્લી અર્હન્ તૈર્લોકાન્તિકૈર્દેવૈઃ સંવોધિતઃ સન્ યત્રૈવ  
માતાપિતરૌ તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગમ્ય કરતલપરિગ્રહીતં દક્ષનસ્થં શિરઃપર્વતં મસ્ત-

કા અમન્દ અત્યન્ત અનન્દ કા પ્રસાતા હોને સે વહ ધર્મનીર્થ ઉન્હે સુલ્લ  
કર હોગા । તથા સુક્તિ પ્રાપ્તિ કા કારણ હોને સે વહ ધર્મનીર્થ ઉન અવ્ય  
જીવો કો નિઃશ્રેયસકર હોગા ( તિકદ્દુ દોચ્ચંપિ તચ્ચંપિ एवं વયંતિ,  
વયિન્સા મલ્લિ અરહં વંદન્તિ, નમંસન્તિ, વંદિતા નમંસિન્તા જામેવ દિસિ  
પાલ્લમૂયા તામેવ દિસિ પહિગયા ) હસ પ્રકાર કહ કર ઉન લોકાન્તિક  
દેવો ને વુધારા તથા તિવારા મી એસા હી કહા-કહ કર ફિર ઉન્હો ને  
મલ્લી અરિહંત કો વંદના કી-નમસ્કાર કિયા । વંદના નમસ્કાર કરકે  
ફિર વે જિસ દિશા સે પ્રકટ હુએ થે ઉસી દિશા કી તરફ ચલે ગયે ।

( તપ્પણં મલ્લી અરહા તેહિં લોગંતિએહિં દેવેહિં સંવોહિએ સમાણે  
જેણેવ અમ્મા પિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ-ઉવાગચ્છિન્તા કરયલં ઇચ્છામિ  
ણં અમ્મયાઓ ! તુમ્હેહિં અબ્બણુણ્ણાએ સમાણે મુંહે અવિન્તા જાવ પવ્વહ  
ત્તએ, અહાસુહં દેવાણુમા પહિવંધં કરેહિં ) હસ પ્રકાર ઉન લૌકાન્તિક  
દેવો દ્વારા સંવોધિત હોતે હુએ વે મલ્લી અરહંત જહાં અપને માતા પિતા

શ્રેણવવાનું કારણ હોવા બદલ તે ધર્મનીર્થ તે અવ્ય જીવોના માટે નિઃશ્રેયસકર થશે.

( તિકદ્દુ દોચ્ચંપિ एवं વયંતિ, વયિન્સા મલ્લિ અરહં વંદન્તિ, નમંસન્તિ, વંદિતા  
નમંસિન્તા જામેવ દિસિ પાલ્લમૂયા તામેવ દિસિ પહિગયા )

આ રીતે કહીને તે લોકાન્તિક દેવોએ ખીલ અને ત્રીલ વખત પણ આ  
પ્રમાણે જ વિનંતી કરી વિનંતી કરીને મલ્લી અર્હંતને તે દેવોએ વંદન અને  
નમસ્કાર કર્યા. વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેઓ જે દિશા તરફથી પ્રગટ  
થયા હતા તે દિશા તરફ જ જતા રહ્યા.

( તપ્પણં મલ્લી અરહા તેહિં લોગંતિએહિં દેવેહિં સંવોહિએ સમાણે જેણેવ  
અમ્માપિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છન્તિ-ઉવાગચ્છિન્તા કરયલં ઇચ્છામિ ણં અમ્મયાઓ  
તુમ્હેહિં અબ્બણુણ્ણાએ સમાણે મુંહે અવિન્તા જાવ પવ્વહત્તએ, અહા સુહં દેવાણુમા  
પહિવંધં કરેહિં )

આ પ્રમાણે લોકાન્તિક દેવો વડે સંવોધિત થતાં મલ્લિ અરહંત ન્યાં  
પોતાના માતાપિતા હતાં ત્યાં આન્યાં. ત્યાં આવીને તેઓએ ત્રી પહેલાં પોતાના

केऽञ्जलिं कृत्वा, एवमवादीत्—इच्छामि खलु हे अम्ब ! हे तात ! युष्माभिरभ्य-  
नुज्ञातः सन् मुण्डो भूत्वा यावत् प्रवर्जितुम्, मानापितरावृचतुः—हे देवानुमिय !  
यथासुखं भवेत् तथा कुरु, मा प्रतिवन्धं=विक्रमं मा कुरु । ततः=मल्लीमहन्त-  
मेवमुक्त्वा, खलु स कुम्भकः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्  
सिममेवाष्टसहस्रम्—अष्टाधिकसहस्रं (१००८) सौवर्णिकानां यावद्० अत्र यावदित्य

ये-वहाँ आये । वहाँ आकर उन्होंने ने पहिले उन्हें दोनों हाथ जोड़ कर  
चरणों में नमस्कार किया । बाद में वे बोले—कि हे अम्ब हे तात ! मैं  
आप लोगों से आज्ञा लेकर मंडित हो यावत् दीक्षा लेना चाहती हूँ आ-  
पकी आज्ञासे मुझे दीक्षा लेना है इस प्रकार मल्लीअरिहंतकी बात सुन  
कर उन के माता पिता दोनों ने उन से “ यथासुखं देवानुमिय । ”  
जैसे तुम्हें सुख हो—तुम वैसा करो—देरी मत करो ऐसा कहा । (तएणं  
कुम्भए कोटुम्बिय पुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव  
अह सहस्सं सोवणिगाणं जाव भोमेज्जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव  
तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेइ जाव उवट्ठवेति ) इस के बाद कुम्भक राजाने  
अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुला कर उनसे ऐसा कहा—हे  
देवानु मियो ! तुम लोग शीघ्र ही १००८ सुवर्ण निमित्त कलशों को  
रूप्यमय कलशोंको मणिमय कलशों को सुवर्ण रूप्य निर्मित कलशोंको,  
सुवर्ण मणि निर्मित कलशों को, रूप्यमणि निर्मित कलशों को, स्वर्ण,

मातापिताना अरब्बोभां नमस्कार कर्था । त्थारभाइ तेओ उडेवा लाब्बां के डे  
मातापिता । हुं तभारी आज्ञा भेजवीने भुंठित थपने दीक्षा अहणु करवा  
आहुं छुं । ” मल्ली अहं तना भांथी आ प्रभाणु वात सांलणीने तेभना माता  
पिताओओ तेभने कहुं “ यथासुणं देवानुमिय । ” ओटसे के डे देवानुमिये !  
तभने जेम सुण प्राप्त थाय तेभ करे अने गोडु करे नहिं ।

( तएणं कुम्भए कोटुम्बियपुरिसे सहावेइ, सहावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव  
अहसहस्सं सोवणिगाणं जाव भोमेज्जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थय-  
राभिसेयं उवट्ठवेइ जाव उवट्ठवेति )

त्थारपछी कुंलक राजाओ पाताना कौटुम्बिक पुरुषोने गोलाब्बा अने  
गोलावीने तेभने आ प्रभाणु कहुं के डे देवानुमियो ! तभे दोको सत्तरे ओक  
हज्जर आठ ( १००८ ) सोनाना कणशे, आंहीना कणशे, भल्लिमय कणशे,  
सोना अने आंहीथी गनावेला कणशे, सोना अने भल्लिओथी गनाववाभां

નેત્રેદં બૌધ્ધ્યમ્-રૂપ્યમયાનાં, મણિમયાનાં, સુવર્ણરૂપ્યનિર્મિતાનાં સુવર્ણમણિનિર્મિ-  
તાનાં, રૂપ્યમણિનિર્મિતાનાં, સ્વર્ણરૂપ્યરત્નમયાનામિતિ । ભૌમેયાનામ્ પાર્થિવાનાં  
ઘટાનામિતિ અન્યચ્ચ મહાર્થ યાવત્-તીર્થકરામિષેકમ્ તીર્થકરનિષ્ક્રમણામિષેક-  
સાધનમ્ ' ઉવદ્વેહ ' ઉપસ્થાપયત, પ્રાપયત, યાવત્-ઉપસ્થાપયન્તિ ।

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ચમરોડસુરેન્દ્રઃ યાવદ્-અચ્યુત પર્યવસાનાઃ=  
ચમરેન્દ્રાદારમ્યાચ્યુતેન્દ્રપર્યન્તાશ્વતુઃ પશ્ચિ સંસ્થાકા ઇન્દ્રાઃ, આગતાઃ । તતસ્ત-  
દનન્તરં સ્વલ્પ શક્રો દેવેન્દ્રો દેવરાજઃ=સૌધર્મેન્દ્રઃ, આભિયોગિકાન્ દેવાન્ શબ્દયતિ,  
શબ્દયિત્વા એવમનાદીત્-ક્ષિપમેવાષ્ટસહસ્રં સૌવર્ણિકાનાં યાવત્-અન્યચ્ચ તદ્

રૂપ્ય, મણિ નિર્મિત કલશોં કો મિટ્ટી કે કલશોં કો તથા ઓર મી મહા-  
ર્થ-મહા પ્રયોજન સાધક મૂત-તીર્થ કર-નિષ્ક્રમણામિષેક ( દિક્ષાકે )  
સાધનોં કો ઉપસ્થિત કરો । રાજા કી હસ પ્રકાર આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર ઉન  
લોગો ને આજ્ઞાનુસાર સબ સાધનોં કો ઉપસ્થિત કર દિયા ।

( તેણં કાલેણં તેણં સમણં ચમરે અસુરિંદે જાવ અચ્ચુપજ્જવ  
સાણા આગયા, તણં સક્કે ૩ આમિયોગિણે દેવે સદાવેહ, સદાવિત્તા  
એવં વયાસી ) ઉસ કાલ મેં ઓર ઉસ સમય મેં ચરમેન્દ્ર સે લેકર અચ્ચુ  
તેન્દ્ર પર્યન્ત ૬૪ ઇન્દ્ર આ ગયે । હસ કે અનન્તર શક્ર દેવેન્દ્ર દેવ રાજ  
ને-સૌધર્મેન્દ્ર ને-આમિયોગિક દેવોં કો બુલાયા-ઓર બુલાંકર ઉન સે  
હસ પ્રકાર કહા-( સિપ્પામેવઅદ્દસહસસ સૌવર્ણિયાણં જાવ અણં ચ  
તં વિડલં ઉવદ્વેહ, જાવ ઉવદ્વેતિ ) તુમ લોગ શીઘ્ર હી ૧૦૦૮, સુવર્ણ  
આદિ કે નિમિત્ત કલશોં કો તથા ઓર મી વિપુલ માત્રાં મેં તીર્થકર

આવેલા કળશો, સોના ચાંદી અને મણિઓથી બનાવેલા કળશો, માટીના કળશો  
તેમજ ખીબ પથ્થુ મહાર્થ-મહાપ્રયોજન સાધકમૂત-તીર્થકર નિષ્ક્રમણામિષેકના  
સાધનો લાવેા. રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા મેળવીને તેઓએ આજ્ઞા મુજબજ  
બધા સાધનો લઈ આવ્યા.

( તેણં કાલેણં તેણં સમણં ચમરે અસુરિંદે જાવ અચ્ચુપજ્જવસાણા આગયા,  
તણં સક્કે ૩ અમિયોગિણે દેવે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવં વયાસી )

તે કાળે અને તે સમયે ચરમેન્દ્રથી માંડીને અચ્યુતેન્દ્ર સુધીના ચોસઠે  
ઈન્દ્રો આવી પહોંચ્યા.

ત્યારબાદ શક દેવેન્દ્ર અને દેવરાજે-સૌધર્મેન્દ્રે આભિયોગિક દેવોને  
બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

( સિપ્પામેવઅદ્દસહસસ સૌવર્ણિયાણં જાવ અણં ચ તં વિડલં ઉવદ્વેહ જાવ ઉવદ્વેતિ )  
તમે લોકો સત્વરે એક હજાર આઠ ( ૧૦૦૮ ) સોના વજેરથી બનાવવામાં  
આવેલા કળશો તેમજ ખીબ પથ્થુ તીર્થકરોના અલિપેક માટેના સાધનો પુરક

विपुलं तीर्थकराभिषेकसाधनमुपस्थापयत, यावद्-उपस्थापयन्ति । तेऽपिदेवो-  
पस्थापिताः सर्वेऽपि कलशास्तानेव-कुम्भकोपस्थापितानेव कलशान् अनुप्रविष्टाः;  
दिव्याः कलशा दिव्यानुभावेन कुम्भककलशेषु प्रविष्टास्तेन कुम्भककलशानां  
शोभतिशयः संजात इति भावः ।

ततस्तदनन्तरं खलु स शक्रो देवेन्द्रो देवराजः कुम्भको राजा च मल्लीमहन्तं  
सिंहासने पौरस्त्याभिमुखं=पूर्वदिशाऽभिमुखं निवेशयति=उपवेशयति । अष्टसह-  
स्रेण=अष्टाधिकसहस्रेण, सौवर्णिकानां यावत् अभिषिञ्चति, अष्टाधिकसहस्रसंख्यकैः  
प्रत्येकं कलशैः सौवर्णिकादि स्नपयतीत्यर्थः ततस्तदनन्तरं खलु मल्लया भगवतो-  
के अभिषेक के साधनों को उपस्थित करो । उन सब ने वैसा ही किया ।  
( ते वि कल सा तेचेव कलसे अणुपविष्टा, तएणं से सक्के देविंदे देव-  
राया कुंभराया य मल्लि अरहं सीहासणं पुरत्याभिमुहं निवेसेह ) इस  
तरह कुंभक राजा द्वारा उपस्थापित कलशों के साथ २ वे सब दिव्य  
कलशाएक जगह मिलाकर रख दिये गये ।

इससे कुंभक राजा के कलशों की शोभा और अधिक बढ़ गई ।  
बाद में शक्र देवेन्द्र देवराज ने और कुंभक राजा ने मल्ली अहन्त को  
सिंहासनके उपर पूर्वाभिमुख करके बैठा दिया । (अष्टसहस्रेणं सौवर्णि-  
याणं जाव अभिसिंचह, तएणं मल्लीस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे  
अप्पेगइया, देवा मिहिलं च सन्नितरवाहिरियं जाव सव्वओ समंता  
परिधावन्ति ) बैठा ने के बाद फिर उन्होंने ने उन १००८, सुवर्ण आदि के  
प्रत्येक कलशों से उनका अभिषेक किया ।

प्रभाषुमां लावो. तेओ मधाओ तेम ७ कथुं.

( ते वि कलसा ते चेव कलसे अणुपविष्टा, तएणं से सक्के देविंदे देवराया  
कुंभराया य मल्लि अरहं सीहासणं पुरत्याभिमुहं निवेसेह )

आ रीते कुंभकराज वडे भूकाओवा कणशोनी साथे ७ ते दिव्य कणशो  
पणु ओक ७ स्थाने गोठनी दीधा.

ओनाथी कुंभक राजना कणशोनी शोला पूण ७ वधी गध. त्यार पछी  
शके देवेन्द्र देवराज अने कुंभक राजाओ मल्ली अहन्तने सिंहासन उपर पूर्व-  
दिशा तन्त्रे में राणीने ओसाडी दीधा.

( अष्ट सहस्रेणं सौवर्णियाणं जाव अभिसिंचह, तएणं मल्लीस्स भगवओ  
अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया, देवा मिहिलं च सन्नितरवाहिरियं जाव सव्वओ  
समंता परिधावन्ति )

ओसाडीने तेओओ ओक छेकर आठ सोना वजेरेना हरेके हरेक कणशथी  
तेमने अभिषेक कथी.

અમિષેકે વર્તમાનેડપ્યેકકાઃ=અપ્યેકે-કેચન દેવાઃ મિથિલાં રાજધાર્નીં ચ સામ્ય-  
નતરં ઘોષાં=અન્તર્વહિશ્ચ યાવત્-સર્વતઃ=સમન્તાત્=દિશુ વિદિશુ પરિધાવન્તિ=  
હર્ષાતિશયેન કૂર્દન્તિ સ્મ । તતસ્તદનન્તરં કુમ્ભકો રાજા દ્વિતીયવારમપિ ' ઉત્તરા  
વક્ત્રમણં ' ઉત્તરાવક્ત્રમણમ્=ઉત્તરાભિમુખં મલ્લીં નિવેશ્ય યાવત્-સર્વાલક્ષ્ણાવિશૂષિતાં  
કરોતિ । કૃત્વા, કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શન્દ્યતિ, શન્દયિત્વા, પૃથમવાદીત્-દે દેવા.  
તુમિયાઃ ! સિમમેવ મનોરમાં શિવિકામૃપસ્થાપયત । તતસ્તદનન્તરં ચલુ શક્રો દેવે-

હસ પ્રકાર જબ મલ્લી અહીંત કા અમિષેક હો રહ્યા થા-તથ કિતનેક  
દેવ હર્ષાતિશયકે વશવર્તીં હોકર મિથિલા નગરીમેં ખીતર ઓર બહાર સંબ  
ઓર હધર સે ડધર કૂદ રહે થે । (તણં કુમ્ભ રાયા દોચ્ચંપિ ઉત્તરાવ  
વક્ત્રમણં જાવ સન્વાલંકારવિશૂષિયં કરેહ કરિત્તા કોટુંબિયપુરિસે સદ્ગાવેહ  
સદ્ગાવિત્તા એવં વયાસી) જબ અમિષેક ક્રિયા સમાપ્ત હો ચુકી-તથ કુમ્ભક  
રાજાને દૂસરી બાર ફિર મલ્લી અરિહંતં કો પૂર્વકી ઓર મુખ કરકે સિંહા  
સન પર બેઠાયા-ઓર ઉન્હેં સમસ્ત અલંકારો સે વિશૂષિત ક્રિયા બાદ મેં  
કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો જુલાકર ઉનસે એસા કહા-(લિપ્પામેવ મનોરમ સી-  
યં ઉવદ્વેહ, તે ઉવદ્વેતિ તણં સર્વકે ૧ આમિયોગિ ૦ લિપ્પામેવ  
અંગેવ લંબ ૦ જાવ મનોરમ સીયં ઉવદ્વેહ જાવ સા વિ સીયા તં ચેવ  
સીયં અણુપવિટ્ટા) તુમ લોગ શીઘ્રહી અનેક સ્તમ્ભ શત યુક્ત એક શિયિકા  
કો ઉપસ્થિત કરો-ઉન લોગોં ને ખી રાજા કી આજ્ઞાનુસાર શીઘ્ર  
વેસીહી શિવિકા લાકર ઉપસ્થિત કર દી । હસ કે અનન્તર શક્ર દેવેન્દ્ર

આ પ્રમાણે જ્યારે આખાજી મલ્લી અહીં તને અમિષેક થઈ રહ્યો હતા  
ત્યારે મિથિલા નગરીની બહાર અને અંદર યોગેર હર્ષાતિશયથી કેટલાક દેવ-  
તાઓ આમતેમ ફરી રહ્યા હતા.

( તણં કુમ્ભ રાયા દોચ્ચંપિ ઉત્તરાવક્ત્રમણં જાવ સન્વાલંકારવિશૂષિયં કરેહ  
કરિત્તા કોટુંબિયપુરિસે સદ્ગાવેહ, સદ્ગાવિત્તા એવં વયાસી )

જ્યારે અમિષેકની વિધિ પૂરી થઈ ત્યારે કુંભક રાજાએ ખીલુ વખત  
મલ્લી અહીં તને પૂર્વની તરફ એ રાખીને બેસાડ્યા અને તેમને બધાં ઘર-  
ણાંઓથી શબ્દગાથાં ત્યારપછી કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવીને તેઓને હુકમ કર્યો કે

( લિપ્પામેવ મનોરમ સીયં ઉવદ્વેહ, તે ઉવદ્વેતિ, તણં સર્વકે ૨ આમિયો-  
(ગિ ૦ : લિપ્પામેવ અંગેવ લંબ ૦ જાવ મનોરમ સીયં ઉવદ્વેહ જાવ સા વિ  
સીયા તં ચેવ સીયં અણુપવિટ્ટા )

તમે બોડો સેકડો થાંબલાઓવાળી એક પાલખી સત્વરે લાવો. કૌટુંબિક  
પુરુષો પણ જલ્દીથી રાજાની આજ્ઞા મુજબ પાલખી લઈ આવ્યા. ત્યારબાદ

न्द्रो देवराजः—आभियोग्यान् देवान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्—हे देवा-  
नुमियाः ! श्रिममेव 'अणेगखंम० जाव मणोरमं सीयं उवट्टवेह' अनेकस्तम्भशत  
संनिविष्टा यावद्—मनोरमां शिविकाम् उपस्थापयत, यावत् सापि शक्रो देवेन्द्रो-  
पस्थापितापि शिविका तामेव—कुम्भकोपस्थापितामेव शिविकामनुप्रविष्टा दिव्यानु-  
भाषेनेति भावः । सू० ३८ ॥

मूलम्—तएणं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्टेइ अब्भु-  
ट्टित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता  
मणोरमं सीयं अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरमं सीयं दुरुइइ,  
दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरस्थाहिमुहे सन्निसन्ने, तएणं कुंभए  
अट्टारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—  
तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! णहाया जाव सव्वालंकारविभूसिया  
मल्लिस्स सीयं परिवहह, जाव पग्विहंति, तएण सक्कं दावदे  
देवराया मणोरमाए दक्खिणिळ्ळं उवरिळ्ळं बाहं गेणहइ, ईसाणे  
उत्तरिल्लं गेणहइ, चमरे दाहिणिळ्ळं हेट्ठिल्लं, बली उत्तरिल्लं  
हेट्ठिल्लं, अवसेसा देवा जहारिहं मणोरमं सीयं परिवहंति ।  
“ पुर्वि उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोमकूवेहिं । पच्छावहंति  
सीयं, असुरिंदसुरिंद नागिंदा ॥ १ ॥ चलच्चवलकुंडलधरा,

देवराज ने भी आभियोगिक देवों को बुलाया—और उनसे अनेक स्तम्भ-  
शत युक्त शिविका (पालखी) ले आने को कहा—उन्होंने भी शीघ्र वैसी ही  
शिविका (पालखी) लाकर वहाँ उपस्थित कर दी। वह शिविका अपने दिव्य  
प्रभाव से कुंभक राजा की शिविका के साथ मिल गई। सूत्र “ ३८ ”

शक्र देवेन्द्र देवराजे पशु आभियोगिक देवाने बोलाव्या अने तेभने से'कडा  
थांभलाओवाणी पादभी लाववाने हुकम कर्यो. ते बोको पशु सत्वर पादभी  
लई आव्या. देवराजनी ते पादभी पोतानी दिव्य प्रभाधी कुंभक राजनी  
पादभी साथे लणी गइ. ॥ सूत्र “ ३८ ” ॥

सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदावहंति सीयं  
 जिणिंदस्स ॥ २ ॥ ” तएणं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं  
 दुरुढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठमंगलगा पुरओ  
 अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया एवं निग्गमो जहा जमालिस्स, तएणं  
 मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिलं मब्भि-  
 तरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जहा उववाईए जाव  
 परिधावंति, तएणं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे  
 जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ  
 पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता आभरणालंकारं मुंचइ, तं पभावई  
 पडिच्छई । तएणं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ।  
 तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता  
 खीरोदगसमुद्धे पक्खिवइ । तएणं मल्ली अरहा ‘णमोऽस्थुणं  
 सिद्धाणं त्तिकहु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, जं समयं च णं  
 मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जइ तं समयं च णं देवाणं माणु-  
 स्साण य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवाइयनिग्घोसे य  
 सक्कस्स वेयणं संदेसेणं णिलुक्के यावि होत्था । जं समयं च णं  
 मल्ली अरहा सामाइय चरित्तं पडिवज्जं तं समयं च णं मल्लिस्स  
 अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने ।  
 मल्लीणं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे  
 पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एकारसीपक्खेणं पुव्वण्हकाल-  
 समयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं

जोगमुवागएणं तिहिं इत्थीसएहिं अर्म्मिभतरियाए परिताए,  
तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिताए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्व-  
इए । मद्धि अरहं इमे अट्ट रायकुमारा अणुपव्वइंसु—तं जहा  
—“ णंदेय णंदिमित्ते सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य । अमरवइ,  
अमरसेणे, महसेणे, चेव अट्टमए ॥ १ ॥ ” तएणं से भवणवइ ४  
मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिमं करेति, करित्ता जेणेव नंदी-  
सरवरे० अट्टाहियं करेति करित्ता जाव पडिगया । तएणं मल्ली-  
अरहा जं चेव दिवसं पव्वाइए तस्सेव दिवसस्स वरणहकाल-  
समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्ठयंसि सुहास-  
नसवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पस-  
त्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणकम्मरयविकरणकरं  
अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलवरनाणदंसणे  
समुप्पन्ने ॥ सू० ३९ ॥

टीका—‘ तएणं मल्ली ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली अर्हन् सिंहासना-  
दभ्युत्तिष्ठति अभ्युत्थाय यत्रैव मनोरमाशिविका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मनो-  
रमां शिविकां ‘ अणुपयाहिणी करेमाणा ’ अणुपदक्षिणी कुर्वाणा=आनुकूल्येन

‘ तएणं मल्ली अरहा—इत्यादि । ’

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (मल्ली अरहा) सिंहासणाओ अब्भुट्ठेह  
मल्ली अर्हन् सिंहासन से उठे (अब्भुट्ठित्ता जेणेव) मनोरमा सीया तेणेव  
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मनोरमं सीयं अणुपयाहिणी करेमाणा मनो-  
रमं सीयं दुरुहइ; दुरुहित्ता सिंहासणवरगये पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने)

“ तएणं मल्ली अरहा ” इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्पराभाह (मल्ली अरहा) सिंहासणाओ अब्भुट्ठेह) मल्ली अर्हन्  
सिंहासन उपरथी उवा यथा.

( अब्भुट्ठित्ता जेणेव) मनोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मनोरमं  
सीयं अणुपयाहिणी करेमाणा मनोरमं सीयं दुरुहित्ता सिंहासणवरगये पुरत्थाभि  
मुहे सन्निसन्ने)



સ્વશુભવાઢ્છયા-સ્વદક્ષિણભાગે કુર્વતી, મનોરમાં શિવિકાં 'દુરુહઙ્' દુરોહતિ= આરોહતિ, દુરુહ સિંહાસનવરગતઃ પૌરસ્ત્યાભિમુલ્લઃ=પૂર્વદિશ્મુલ્લઃ સન્ સન્નિષ્ણઃ। તતઃ સ્વલ્લ-કુન્ભકોઽષ્ટાદશ 'સેણિપ્પસેણીઓ' શ્રેણિ-પ્રશ્રેણીઃ=શિવિકાવાહકાન્-અવાન્તરજાતીયપુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્=હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! યુયં સ્વલ્લ સ્નાતા યાવત્-સર્વાલંકારવિભૂષિતાઃ મલ્લીયાઃ શિવિકાં પરિવહત, સ્કન્ધોપરિધારયત યાવત્-પરિવહન્તિ ।

ઠઠકર વે જહાં વહ મનોરમ શિવિકાથી વહાં ગયે । વહાં જાકર વે ઉસ મનોરમ શિવિકા કો અપને શુભ કી વાઢ્છા સે અપને દક્ષિણ ભાગ મેં કરતે, હુએ ઉસ શિવિકા પર આરુઢ હો ગયે આરુઢ હો કર ફિર વે પૂર્વ દિશા કી તરફ મુલ્લ કર કે ઉસ પર રલ્લે હુએ સિંહાસન પર વેઠ ગયે । ( તણં કુંમણ અઢ્ઢારસસેણિપ્પસેણીઓ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવં વયાસી ) હસ કે વાદ કુંમક રાજા ને ૧૮, શ્રેણી પ્રશ્રેણી જનોં કો-શિવિકાં વાહક ૧૮ પ્રકાર કે અવાન્તર જાતીય પુરુષોં કો બુલાયા-ઔર બુલા કર ઉન સે પેસા કહા-( તુમ્હેણં દેવાણુ પ્પિયાં ! ણ્ઢાયા જાવ સવ્વાલંકાર વિભૂસિયા મલ્લીસસ સીયં પરિવહહ, જાવ પરિવહન્તિ ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ સ્નાન કર તથા સમસ્ત અલંકારોં સેવિભૂષિત હોકર મલ્લી અર્હત કી પાલસી કો ઠઠાઓ રાજા કી હસ પ્રકાર આજ્ઞા ડાકર ઉન લોગોં ને ઉસ પાલસી કો અપને ૨ સ્કંધો પર ઠઠા કર રલ્લ લિયા ( તણં સવ્કે દેવિંદે દેવરાયા મણોરમાએ દક્ષિણિલ્લં ડવરિલ્લં

અને ઉભા થઈને જ્યાં મનોરમ પાલખી હતી ત્યાં પહોંચ્યાં. ત્યાં પહોંચીને તેઓ તે મનોરમ પાલખીને આત્મશ્રેયની ઇચ્છાથી પોતાની જમણી બાજુએ રાખીને તે મનોરમ પાલખી ઉપર ચઢીને તેઓ પૂર્વદિશા તરફ મોં કરીને તેના ઉપર મૂકેલા સિંહાસન ઉપર બેસી ગયાં.

( તણં કુંમણ અઢ્ઢારસસેણિપ્પસેણીઓ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવં વયાસી ) ત્યાર પછી કુંભક રાજાએ અઢાર શ્રેણી પ્રશ્રેણીજનોને પાલખી ઉચ્ચનારા અઢાર પ્રકારના અર્વાતર ભતિના પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આદેશ આપ્યો કે—

( તુમ્હે ણં દેવાણુપ્પિયા ! ણ્ઢાયા જાવ સવ્વાલંકારવિભૂસિયા મલ્હિસસ સીયં પરિવહહ જાવ પરિહન્તિ )

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સ્નાન કરો અને ત્યારબાદ બધા અલંકારોથી અલંકૃત થઈને મલ્લી અર્હતની પાલખીને ઉચ્ચકો. રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ લોકોએ તરત સ્નાન કરીને પાલખીને પોતપોતાના બસા ઉપર ઉચ્ચકી લીધી.

ततः खलु शक्रो देवेन्द्रो देवराजो मनोरमायाः शिविकाया दक्षिणिल्लं= दाक्षिणात्यं=दक्षिणदिग्भागस्थम्, 'उत्तरिल्लं' उपरितनं उपरिभागस्थं 'बाहं' बाहुं=दण्डं गृह्णाति ईशानः-ईशानेन्द्रः- 'उत्तरिल्लं' उत्तरदिग्भागस्थम् उपरितनं बाहुं=दण्डं गृह्णाति, चमरः=चमरेन्द्रः 'दाहिणिल्लं' दाक्षिणात्यं=दक्षिणदिग्भागस्थं 'हेट्टिल्लं' अधस्तनं दण्डं गृह्णाति, वली=वलीन्द्रः 'उत्तरिल्लं' उत्तरीयम्=उत्तरभागस्थम् अधस्तनं दण्डं गृह्णाति अवशेषा देवाः भवनपति-व्यन्तर-ज्योतिष्क-वैमानिकेन्द्राः, 'जहारिहं' यथाऽहं-यथायोग्यं स्व स्व योग्यताऽनुसारं मनोरमां शिविकां परिवहन्ति ।

“पुंवि उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोमकूवेहि ।

पच्छा वहंति सीयं असुरिन्द-सुरिन्द-नागिदा ॥ १ ॥

बाहं गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्लं बाहं गेण्हइ चमरे दाहिणिल्लं हेट्टिल्लं, वली उत्तरिल्लं हेट्टिल्लं अवसेसा देवा जहारिहं मनोरमं सीयं परिवहंति ) बाद में शक्र देवेन्द्र देव राजा ने उस मनोरमा शिविका के दक्षिण दिग्भागवर्ती ऊपरके दण्डे को पकड़ा, ईशानेन्द्र ने उत्तर दिग्भागस्थ ऊपर के दण्डे को पकड़ा चमरेन्द्र ने दक्षिणदिग्भागवर्ती नीचे के दण्डे को पकड़ा ।

अवशिष्ट भवन पति, व्यन्तर ज्योतिष्क एवं वैमानिक इन्द्रों ने अपनी २ योग्यताके अनुसार उस शिविका का परिवहन किया । (पुंवि उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठ रोमकूवेहि । पच्छावहंति सीयं असुरिन्द सुरिन्द नागिदा ) सब से प्रथम हर्षके वश से रोमाञ्च युक्त हुए मनुष्यों ने उस शिविका को अपने स्कंधों पर रखा-बाद में असुरेन्द्रों ने, सुरेन्द्रों

( तएणं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाण दक्खिणिल्लं उत्तरिल्लं बाहं गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्लं बाहं गेण्हइ चमरे दाहिणिल्लं हेट्टिल्लं वली० उत्तरिल्लं हेट्टिल्लं अवसेसादेवा जहारिहं मनोरमं सीयं परिवहंति )

त्यार भाइ शक्र देवेन्द्र देवराजे ते मनोरम पादप्रीणा दक्षिण भागुना हंडाने आब्यो, ईशानेन्द्रे उत्तर दिशा तरङ्गना उपरना हंडाने आब्यो, चमरेन्द्रे दक्षिण दिशा तरङ्गना नीचेना हंडाने आब्यो, वलीन्द्रे उत्तर दिशा तरङ्गना हंडाने आब्यो.

भाकीना मया भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिके इन्द्रोणे पोतपोतानी योग्यता युग्मण पादप्रीणुं परिवहन कयुं.

(पुंवि उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोम कूवेहिं पच्छा वहंति सीयं असुरिन्दसुरिन्दनागिदा) पुलकित अने छपधेला थयेला भाष्यसेणे सौथी पडेलीं पादप्रीने पोताना

ચલચલકુંડલધરા સચ્છંદ વિઝવિઝયામરણધારી ।

દેવિંદ દાણવિંદા વહંતિ સીયં જિણિંદસસ ॥ ૨ ॥

‘પુર્વિ’ પૂર્વ ‘ઉચ્ચિત્તા’ ઉત્તિષ્ઠા સ્કન્ધોપરિનીતા મનુષ્યૈઃ, સા શિવિકા, મનુષ્યૈઃ કથંભૂતૈરિત્યાહ-‘દૃઢરોમકૂવેર્હિ’ દૃષ્ટરોમકૂપૈઃ હર્પવશેન રોમાશ્ચયુક્તૈઃ, પશ્વાત્-અમુરેન્દ્ર-સુરેન્દ્ર-નાગેન્દ્રાઃ શિવિકાં વહન્તિ-સ્કન્ધોપરિ નયન્તિસ્મ ॥ ૧ ॥ દેવેન્દ્ર-દાનવેન્દ્રાઃ જિનેન્દ્રસ્ય શિવિકાં વહન્તિ ’ઇત્યન્વયઃ । તે દેવેન્દ્રાદયઃ કથં-ભૂતા ઇત્યાહ-ચલેત્યાદિ ચલચલ કુંડલધરાઃ=ચલાશ્ચ તે ચલ કુંડલધરાથેતિ વિગ્રહઃ । પુનઃ કિં ભૂતા ઇત્યાહ-‘સચ્છંદવિઝવિઝયામરણધારિણઃ’ સ્વચ્છન્દ-વિકુર્વિતામરણધારિણઃ=સ્વચ્છન્દેન-સ્વેચ્છયા વિકુર્વિતાનિ-વૈક્રિય શક્તિસમુત્પા-દિતાનિ આમરણાનિ-મૂષ્ણાનિ ધારયિતું શીલં યેષાં તે તથા ભૂતાઃ ॥ ૨ ॥

તતઃ રત્ન મલ્લયા અર્હતો મનોરમાં શિવિકાં દુરુદસ્ય=સમારુદસ્ય સતઃ ‘તપ્પ-દમયા’ તપ્પથમતયા=સર્વતઃ પૂર્વમ્ ઇમાનિ અષ્ટાષ્ટમઙ્ગલકાનિ=અષ્ટમણિતાનિ

ને ઓર નાગેન્દ્રોં ને રલા । ( ચલચલકુંડલધરા સચ્છંદવિઝવિઝયા મરણધારી, દેવિંદ દાણ વિંદા વહંતિ સીયં જિણિંદસસ ) इन देवेन्द्रा दिकों के कुंडल उस समय इधर से उधर अत्यन्त चंचल हो रहे थे । उन्होंने ने जो आभरण धारण कर रखे थे वे अपनी इच्छानुसार वैक्रिय शक्ति से समुत्पादित किये हुए थे । इस तरह देवेन्द्रों और दानवेन्द्रों ने जिनेन्द्र की शिचिका को अपने २ स्कंधों पर रखा । ( तपणं मल्लस्य अरहाओ मनोरमं सीयं दुरुदस्त समाणस्त तपपदमयाए इमे अष्टमंगलगा पुरओ अहाणुपुञ्जीए संपट्टिया ) इस के अनन्तर उस मनोरम शिचिका पर

ખલા ઉપર ઉચ્ચી, ત્યારપછી અમુન્દ્રોએ, સુરેન્દ્રોએ અને નાગેન્દ્રોએ ઉચ્ચી.

( ચલચલ કુંડલધરા, સચ્છંદવિઝવિઝયામરણધારી, દેવિંદ દાણવિંદા વહંતિ સીયં જિણિંદસસ )

તે વખતે દેવેન્દ્ર વગેરેના કુંડળો આમ તેમ ખૂણ હાલી રહ્યા હતા.

ધારણ કરેલા આભરણોને દેવોએ પોતાની ઇચ્છા મુજબ વૈક્રિય શક્તિ વડે ઉત્પન્ન કરેલાં હતાં. આ પ્રમાણે દેવેન્દ્રો અને દાનવેન્દ્રોએ જિનેન્દ્રની પાલખી પોતપોતાના ખાલે ઉચ્ચી હતી.

( તપણં મલ્લસ્ય અરહાઓ મનોરમં સીયં દુરુદસસ સમાણસ્સ તપ્પદમયાએ ઇમે અષ્ટ અઢમંગલગા પુરઓ અહાણુપુજ્વીએ સંપટ્ટિયા )

ત્યારબાદ મનોરમ પાલખી ઉપર બેઠેલા મલ્લી અર્હતની સામે સૌ પ્રથમ અનુક્રમે આઠ આઠ મંગળ દ્રવ્યો મૂકવામાં આવ્યાં-તે દ્રવ્યોના નામો આ પ્રમાણે છે,

અષ્ટસંખ્યકાનિ મજ્જલાનિ પુરતઃ=અગ્રે ' અહાણુપુવ્વીપ ' યયાનુપૂર્વ્યા=અનુક્રમેણ સંપ્રસ્થિતાનિ-ચલિતાનિ, एवं તેણાં નામાનિ-(૧) સોવત્થિય ' સ્વસ્તિકઃ, (૨) સિરિવચ્છા ' શ્રીવત્સઃ, (૩) ણંદિયાવત્ત ' નન્દ્યાવર્તઃ, (૪) વદ્ધમાણગ ' વર્ધમાનઃ (૫) મહાસણ ' મદ્દાસનમ્ (૬) ' કલસ ' કલશઃ, (૭) ' મચ્છ ' મત્સ્યુગ્મમ્, (૮) ' દપ્પણ ' દર્પણશ્વેતિ । एवं નિર્ગમો યથાજમાલેઃ જમાલિવર્તિર્ગમનં=નિર્ગમન વર્ણનં વિજ્ઞેયમ્ ।

તતઃ સ્વલ્લ મલ્લી અર્હતો નિષ્ક્રાવતઃ=નિષ્ક્રમણં કુર્વતઃ, અપ્પેકકાઃ-કેવન-દેવા સ્વસ્ત્રવૈક્રિયશક્ત્યા મિથિલાં રાજધાનીમ્-' સર્વિમતરવાહિરિયં ' સામ્યન્ત-રવાહ્યામ્ = અન્તર્વહિઃ ' આસિત્તસંમજ્જિઓવલિત્તં ' આસિત્તસંમાર્જિતોપલિસામ્ આસિત્તાં=પૂર્વગલકુગૈરમિષિત્તામ્, પશ્ચાત્ સંમાર્જિતામ્=કચવરાધપનયનેન સંશો-ધિતામ્, તતઃ ઉપલિસાં સ્વટિકા ચૂર્ણાદિના સંલિસાં કુર્વન્તિ, કૃત્વા યાવત્-પરિ-ધાવન્તિ=દર્શોત્કર્ષણેતસ્તતઃ કુર્વન્તિ ।

આરુઢ હુપ મલ્લી અર્હતકે આગે સબ સે પહિલે ક્રમાનુસાર આઠ ૨ મંગલ દ્રવ્ય ઉપસ્થિત હુપ । ડનકે નામ યે હૈં

(૧) સોવત્થિય-સ્વસ્તિક (૨) સિરિવચ્છા-શ્રી વત્સ (૩) ણંદિયાવત્ત-નન્દિકાવર્ત (૪) વદ્ધમાણગ-વર્ધમાન (૫) મહાસણ-મદ્દાસન (૬) કલસ-કલશ (૭) મચ્છ-મત્સ્ય યુગ્મ (૮) ઔર દપ્પણ-દર્પણ ( एवं નિર્ગમો જહા જમાલિસ ) મલ્લી અર્હત કે નિર્ગમ કા વર્ણન જ-માલિકે નિર્ગમ કી તંરહ હી જાનના પ્વાહિયે । ( તણં મલ્લીસસ અર-હઓ નિક્કલમમાણસસ અપ્પે ૦ દેવા મિહિલં સર્વિમતરવાહિરિયં આસિ-ય સંમજ્જિઓવલિત્તં જહા ઉવવાઈંણ જાવ પરિધાવંતિ ) જબ મલ્લિ અર્હત કા નિષ્ક્રમણ હો રહા થા ડસ સંમય કિતનેક દેવોં ને અપની વૈક્રિયશ-

(૧) સોવાત્થિય-સ્વસ્તિક, (૨) સિરિવચ્છા-શ્રીવત્સ, (૩) ણંદિયાવત્ત-નન્દિકાવર્ત (૪) વદ્ધમાણુગ-વર્ધમાન, (૫) મહાસણુ-મદ્દાસન, (૬) કલસ-કલશ, (૭) મચ્છ-મત્સ્યયુગ્મ, (૮) અને દપ્પણુ-દર્પણુ ( અરીસો ). ( एवं નિર્ગમો જહા જમાલિસ ) મદ્દલી અહંતના નિર્ગમનું વણું ન જમાલિના નિર્ગ-મની જેમ જ વાણુનું બેઠાએ

( તણં મલ્લિસસ અરહઓ નિક્કલમમાણસસ અપ્પે ૦ દેવા મિહિલં સર્વિમતર-વાહિરિયં આસિયસંમજ્જિઓવલિત્તં જહા ઉવવાઈંણ જાવ પરિધાવંતિ )

બ્યારે મદ્દી અહંતની નિષ્ક્રમણુવિધિ આલતી હંતી ત્યારે કેટલાક દેવોએ પોતાની વૈક્રિય શક્તિ વડે મિથિલા રાજધાનીની અંદર અને અહાર બંધે બળ

તતઃ સ્વલુ મલ્લી અર્હન્ યત્રૈવ સહસ્રાન્નવગમુદ્યાનં યત્રૈવાશોકવરપાદપઃ,  
તત્રૈયોયમગચ્છતિ. ઉપાગઃપ શિવિકાતઃ પ્રત્યવરોહતિ પ્રત્યવસ્ત્રાભરણાલંકારં મુચ્ચતિ  
તદાભરણાલંકારં પ્રભાવતી=મલ્લયા જનની પ્રતિચ્છતિ વસ્ત્રાશ્ચલે ધારયતિ તતઃ  
સ્વલુ મલ્લી અર્હન્ સ્વયમેવ=સ્વહસ્તેનૈવ પચ્ચમુષ્ટિકં લોચં શિરઃ કેશશ્ચન્નં કરોતિ ।

:ક્તિ સે મિથિલા રાજધાની કો ખીતર બાહિર મે જલકળોં સે સિશ્વિત કર  
દિયા થા, કૂડા કરકટ કે અપનપન સે ઉસે બિલકુલ સાફ સુધર કર  
દિયા થા ઓર ચૂના આદી સે ઉસે લીપ પોત દિયા થા । યાવત્ હર્ષોત્કર્ષ  
સેવે હધર ઉધર ઉસમેં હચ્છાનુસાર સ્ત્રૂબ કૂંદે ઓર ઉછલે થે ।

ઔપપાતિક સૂત્ર મેં નિષ્કનગ કા જૈસા વર્ણન યહાં ખી જાનના  
ચાહિયે । ( તર્ણં મલ્લી અરહા જેગેવ સહસ્તંબવળે ઉજ્જાળે જેળેવ અ-  
સોગવરપાયવે તેળેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિતા સીયાઓ પચ્ચોરુહહ,  
પચ્ચોરુહિતા આભરણાલંકારં મુચ્ચહ, તં પ્રભાવર્હ પહિચ્છર્હ ) વે મલ્લી  
અર્હત જહાં સહસ્રાન્નવન નામકા ઉદ્યાન ઓર ઉસમે જહાં અશોક વૃક્ષ  
થા વહાં પહુંચે વહાં પહુંચ કર વે ઉસ શિવિકા સે નીચે ઉતરે ઉતર કર  
ઉન્હોને અપને આભરણ ઓર અલંકારોં કો ઉતારા-ઉતારે હુપ ઉન આ-  
ભરણ ઓર અલંકારોં કો ઉનકી માતા પ્રભાવતી ને અપને વસ્ત્રાશ્ચલ મેં  
રખ લિયા ( તર્ણં મલ્લી અરહા સયમેવ પંચમુદ્ધિયં લોચં કરેહ ) હસકે  
બાદ ઉન મલ્લી અર્હત ને અરને કેશોં કા પંચમુષ્ટિ લોચ કિયા ।

સિંચન કથું હંતુ. કથરો વગેરે વાળીને તેને સ્પર્શ બનાવી અને ચુના વગેરેથી  
ઘોળી નાખ્યું હતું. યાવત્ હર્ષવેશ થઇને તેઓ ખૂબ ઇચ્છા મુજબ ઉછળ્યા  
અને કૂદ્યા હતા.

ઔપપાતિક સૂત્રમાં નિષ્કમણ્ડુ વણુન કરવામાં આવ્યું છે, અહીં પણ તે  
મુજબ જ સમજાવેલું બેઠ્યું.

( તર્ણં મલ્લી અરહા જેળેવ સહસ્તંબવળે ઉજ્જાળે જેળેવ અસોગવરપાયવે  
તેળેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિતા સીયાઓ પચ્ચોરુહહ, પચ્ચોરુહિતા આભરણાલંકારં  
મુચ્ચહ, તં પ્રભાવર્હ પહિચ્છર્હ )

મલ્લી અર્હત બધાં સહસ્રાન્નવન નામે ઉદ્યાન અને તેમાં પણ બધાં અશોક  
નામે વૃક્ષ હંતુ ત્યાં પહોંચ્યાં, ત્યાં પહોંચીને તેઓ પાલખીમાંથી નીચે ઉતર્યા,  
નીચે ઉતરીને તેમણે પોતાનાં આભરણ અને ઘરેણાંઓ ઉતાર્યા. મલ્લી અર્હતના  
આભરણ અને ઘરેણાંઓને તેમના માતા પ્રભાવતીએ પોતાના વસ્ત્રના છેડામાં  
લપ લીધાં. ( તર્ણં મલ્લી અરહા સયમેવ પંચમુદ્ધિયં લોચં કરેહ ) ત્યારપછી મલ્લી  
અર્હતે પોતાના વાળોનું પંચમુષ્ટિ હાથેન કથું.

ततः रल्लु इक्रो देवेन्द्रो देवराजो रल्लया अर्हतः केशान् प्रतीच्छति लुञ्चितान्  
केशान् स्वे धरति, प्रतिच्छत् क्षीरोदसमुद्रे इति पति । तत रल्लु मल्ली अर्हन्—  
'णमोऽत्थुण सिद्धाणं' नमोऽतु रल्लु रिद्धेभ्यः इति वृत्ता सामागिकचारित्रं  
प्रतिपद्यते=मानोति । यस्मिन् समये च रल्लु रल्लो अर्हन् चारित्रं प्रतिपद्यः,  
तस्मिन्नेव समये रल्लु देवानां मनुष्याणां च 'णिग्घोसे' निर्घोषः शब्दः, 'तुरिय  
'णिणाय गीयवाइय निग्घोसे य' तुर्यनिनादगीतवादित्र निर्घोषश्च=वाद्यगीतध्वनिश्च,  
शक्रवचनसंदेशेन=शक्रेन्द्राज्ञया, 'णिल्लुके' निल्लीनः=तिरोहितः निवृत्तः चाप्यभवत् ।

( तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छि-  
त्ता खीरोदग समुदे पक्खिवइ ) उन मल्लि प्रभुके लुञ्चित केशोको शक्र  
देवेन्द्र देवराज ने अपने बल्ल में रख लिया और रखकर क्षीर सागर मे  
उन्हे प्रक्षिप्त कर दिया । ( तएणं मल्ली अरहा " णमोत्थुणं सिद्धाणंत्ति-  
कइहु सामाइयचरितं पडिवज्जइ ) मल्ली अर्हंतने " सिद्धों को नम-  
स्कार हो " ऐसा पाठ बोल कर सामागिक चारित्र को धारण किया ।  
( जं समयं च णं मल्ली अरहा चरितं पडिवज्जइ तं समयं च णं देवाणं मा-  
णुस्साण य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स  
वयणसंदेसणं णिल्लुक्के यावि होत्था ) जिस समय मल्ली अर्हंत ने  
चारित्र को अंगीकार किया था उस समय देवों और मनुष्यों का निर्घोष  
हुआ था तथा बाजों एवं गीतों की जो ध्वनि हुई थी वह सब शक्रेन्द्र  
की आज्ञा से बन्द कर दी गई ।

( तएणं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ पडिच्छित्ता खीरोदग-  
समुदे पक्खिवइ )

ते मल्ली प्रभुना लुञ्चित वाणाने शक्र देवेन्द्र देवराजे पाताना वल्लभां  
लथ दीधा अने लथने क्षीर सागरभां तेजाने नाणी दीधा.

( तएणं मल्ली अरहा " णमोत्थुणं चि कइहु सामाइय चारितं पडिविसज्जइ )

मल्ली अर्हंते " सिद्धोने भारा नमस्कार " आ पाठेनु वांयन करतां  
सामागिक यादित्त धारणु कथुं

( जं समयं च णं मल्ली अरहा चरितं पडिवज्जइ, तं समयं च णं देवाणं  
माणुस्साण य णिग्घोसे तुरिय निणाय गीयवाइयनिग्घोसे य सक्कस्स वयण  
संदेसणं णिल्लुक्के याविहोत्था )

व्यापरे मल्ली अर्हंते यादित्तने। स्वीकार कथो त्यापरे देवे। अने भाषु-  
सोना थयेदा लुषं निर्घोषने तेमज्ज वाणान्ना अने गीतोना ध्वनिने शक्रेन्द्र  
पाताना हुकमशी गंध करावी दीधा.

यस्मिन् समये च खलु मल्ली अर्हन् सामायिकं चारित्रं प्रतिपन्नं=प्राप्तवान्, तस्मिन् समये च मल्ल्या अर्हतो मानुष्यधर्मादुत्तरं=प्रधानं मनःपर्यवज्ञानं समुत्पन्नम्, गृहस्थदशायां ज्ञानत्रयमासीत् चारित्रग्रहणानन्तरं तु तदानीमेव चतुर्थज्ञानमभवदिति भावः । मल्ली खलु अर्हन् 'जेसे' यः सः हेमन्तानां मार्गशीर्षदि मासचतुष्टयात्मकानां शीतकालानाम् द्वितीयो मासः चतुर्थः पक्षः-मार्गशीर्षस्यापक्षतश्चतुर्थः पक्षः 'पोस सुद्धे' पौष शुद्धः, पौषमासस्य शुद्धः पक्षः, तस्य खलु पौषशुद्धस्य एकारसीपक्षेण' एकादशीपक्षे खलु एकादशीतिथेः पक्षः-अर्थां

( जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिबज्जइ तं णं मल्लिस्स अरहाओ माणुसधम्मो उत्तरिए मणपज्जवणाणे समुत्पन्ने ) सामायिक चारित्र को अंगीकार करते ही मल्ली अर्हतको चौथा मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया । गृहस्थ अवस्था में मल्ली अर्हत के मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान ये तीन ज्ञान जन्म जात थे । परन्तु ज्यों ही इन्होंने चारित्र ग्रहण किया उसी समय इन्को मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न हो गया । ( मल्ली णं अरहाजे से हेमन्ताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खेपोस सुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं पुब्बण्हकालसमयंसि अट्टमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं तिहिं इत्थी सएहिं अविमतरियाए परिसाए तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुद्धे भवित्ता पव्वइए ) मल्ली अर्हत ने जिस समय सर्व विरतिरूप चारित्र अंगीकार किया था उस समय हेमन्तकालका द्वितीय मास था, चौथा पक्ष था उसका नाम पौष मास था-पौष मासका शुद्ध

( जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिबज्जइ तं समयं च णं मल्लिस्स अरहाओ माणुसधम्मो उत्तरिए मणपज्जवणाणे समुत्पन्ने )

सामायिक चारित्रने स्वीकारतानी साथे ४ भेदी अर्द्धतने चौथुं मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न थयं गयु. गृहस्थ अवस्थाभां भेदी अर्द्धतने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान आ त्रये ज्ञान ४-भज्जत हतां. पणु न्यादे तेओओ चारित्र अर्द्धे कयुं त्थारे तेभने मनःपर्यवज्ञान थयं गयु.

( मल्ली णं अरहा जेसे हेमन्ताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स णं पोससुद्धस्स एकारसी पक्खे णं पुब्बण्हकालसमयंसि अट्टमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं तिहिं इत्थी सएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुद्धे भवित्ता पव्वइए )

भेदी अर्द्धते न्यादे सर्व विरति रूप चारित्र स्वीकार, त्थारे हेमन्त काणेने पीणे भक्षिणेने हतो. चौथुं पणवाडियुं हतुं. ते भक्षिणानुं नाम पौष

શકાલે, પૂર્વાહ્નિકાલસમયે, અષ્ટમેન ભક્તેન 'અપાણર્ણ' અપાનકેન જલરહિતેન અશ્વિનીનક્ષત્રેણ 'જોગં' યોગં=ચન્દ્રયોગત્ ઉપાગતેન ત્રિમિઃ સ્ત્રીશ્ચૈઃ આભ્યન્તરિકયા પરિષદા, સાર્થં તથા-ત્રિમિઃ પુરુષશ્ચૈઃ બાહ્યયા પરિષદા સાર્થં મુખ્ડો મૂલા મન્નજિતઃ=દીપ્તાં ગૃહીતવાન્ । મલ્લયા અર્હત્ આભ્યન્તરિકા પરિષત્ સ્ત્રીમિઃ, અન્યેષાં તીર્થંકરાણાંતુ પુરુષૈરાભ્યન્યરિકા પરિષત્ સંજાતા । મલ્લીમર્હન્તમિમે વશ્યમાણા અસ્ટ રાજકુમારા અનુવ્રજિતાઃ, તદ્ વથા-તેષાં નામાન્યે વમ્—

ગંદે ય ગંદિમિત્તે, સુમિત્ત બલમિત્ત માણુમિત્તે ચ ।

અમરવદ્ અમરસેજે, મહસેજે ચૈવ અદ્દમપ્ ॥ ૧ ॥

પક્ષ થા એકાદશી કા દિન થા, પૂર્વાહ્નિકાલકા સમય થા । અપાનક ચૌધિહાર અષ્ટમ ભક્ત ઇન્હોં ને ધારણ કર રહ્યા થા અશ્વિની નક્ષત્રકા ચન્દ્રમાકે સાથ શુભ યોગ વર્તે રહો થા ।

ત્રીન સૌ ઇનકી અભ્યન્તર પરિષદકી આર્યિકા થી ઔર બાહ્ય પરિષદ કે ત્રીન સૌ પુરુષ થે । સૌ ઊન સબકે સાથ ઇન્હોંને દીક્ષા ધારણ કી થી । અન્યતીર્થંકરો કી આભ્યન્તર પરિષદ મેં સ્ત્રીયાં નહીં રહીં હૈં થે તો ઇન્હીં કી આભ્યન્તર પરિષદ મેં કહી ગઈં હૈં । વહાં તો આભ્યન્તર પરિષદા મેં પુરુષ હી રહે હૈં । (મલ્લિ અરહં ઇમે અદ્દ રાયકુમારા અણુપવ્વહંસુ-તં જહા - ગંદે ય ગંદિમિત્તે સુમિત્ત બલમિત્ત માણુમિત્તેય, અમરવદ્ અમરસેજે મહસેજે ચૈવ અદ્દમપ્) મલ્લી અર્હત ને જિસ સમય દીક્ષા ધારણ કી ડસ સમય ઇનકે સાથ જો આઠ રાજકુમાર દીક્ષિત હુપ થે-ઊનકે નામ થે હૈં ।

હંતુ. પોષ મહિનાનો શુકલ પક્ષ હંતો, અગિયારસનો દિવસ હંતો, પૂર્વાહ્ન કાળનો વખત હંતો, અપાનક અષ્ટમ ભક્ત તેમણે ધારણ કરેલું હંતું. અશ્વિની નક્ષત્રનો ચન્દ્રની સાથે શુભયોગ થઈ રહ્યો હંતો.

તેમની આભ્યન્તર પરિષદાની ત્રણસો આર્યિકાઓ હતી અને બાહ્ય પરિષદાના ત્રણસો પુરૂષો હતા. તેઓ બધાની સાથે તેમણે દીક્ષા ધારણ કરી હતી. બીજા તીર્થંકરોની આભ્યન્તર પરિષદામાં સ્ત્રીઓ ન હતી. એમની આભ્યન્તર પરિષદામાં સ્ત્રીઓ વિશે વર્ણન કરેલ છે. બીજા તીર્થંકરોની પરિષદામાં માત્ર પુરૂષો જ રહ્યા છે.

(મલ્લિ અરહં ઇમે અદ્દ રાયકુમારા અણુપવ્વહંસુ તં જહા ગંદેય ગંદિમિત્તે સુમિત્તબલમિત્તમાણુમિત્તેય । અમરવદ્, અમરસેજે મહસેજે ચૈવ અદ્દમપ્ )

જે વખતે મલ્લી અર્હતે દીક્ષા ધારણ કરી હતી તે સમયે તેમની સાથે જ દીક્ષિત થયેલા આઠ રાજકુમારોના નામો આ પ્રમાણે છે—(૧) નન્દકુમાર,



(१) नन्दः-नन्दकुमारः, (२) नन्दिमित्रः-नन्दिमित्रकुमारः, (३) सुमित्रः-सुमित्रकुमारः, (४) बलमित्रः-बलमित्रकुमारः, (५) भानुमित्रः-भानुमित्रकुमारः, (६) अमरपतिः-अमरपतिकुमारः, (७) अमरसेनः-अमरसेनकुमारः, (८) महासेनः-महासेनकुमार इति ।

ततस्तदनन्तरं खलु ते भवनपत्यादयश्चतुर्विधा देवा मल्लया अर्हतो निष्क्रमण-महिमानं कुर्वन्ति, कृत्वा यत्रैव नन्दीश्वरं नामाद्रीपस्तत्राष्टाहिकाम्=अष्टाहसाध्य-मुत्सवं कुर्वन्ति कृत्वा च यावत्-यस्यादिशः प्रदुर्भूतास्तां दिशं प्रतिगताः, ततः खलु मल्ली अर्हन् यस्मिन्नेव दिवसे प्रव्रजितः=दीक्षां गृहीतवान् तस्यैव दिवसस्य पश्चाद् पराह्णकाल समये-पश्चिमे-प्रहरे, अशोकवरपादपस्याधः पृथिवीशिलापट्टके

(१) नन्दकुमार (२) नन्दिमित्र कुमार (३) सुमित्र कुमार (४) बालमित्र कुमार (५) भानुमित्र कुमार (६) अमरपति कुमार (७) अमरसेन कुमार और (८) महासेन कुमार । (तएणं से भवण-वइ ४ मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिमं करेति, करिस्ता जेणेव नंदी सरवरं० अट्ठाहियं करेति, करिस्ता जाव पडिगया) भवनपति आदि चारों प्रकार के देवों ने मल्ली अर्हत के निष्क्रमण महोत्सव की खूब २ महिमा की और करके फिर वे आठ वां जो नंदीश्वर द्वीप है वहाँ गये-वहाँ जाकर उन्होंने अष्टाहिक महोत्सव किया । यह महोत्सव आठ दिनतक लगातार होता है । अष्टाहिक महोत्सव करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा तरफ वापिस चले गये । (तएणं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वाइए तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगं-

(२) नन्दि मित्रकुमार, (३) सुमित्रकुमार, (४) बालमित्र कुमार, (५) भानुमित्र कुमार, (६) अमरपति कुमार, (७) अमरसेन कुमार, (८) महासेन कुमार ।

(तएणं से भवणवइ ४ मल्लिस्स अरहओ निक्खमणमहिमं करेति, करिस्ता जेणेव नंदीसरवरं० अट्ठाहियं करेति करिस्ता जाव पडिगया )

भवनपति वगेरे चार आतना देवोओ मल्ली अर्हतना निष्क्रमण मंडोत्सवना भूषण मंडिमा गाये अने त्यापछी तेओ आठमा नंदीश्वर द्वीपमा गया. त्या पडोंगीने तेमणे अष्टाहिक मंडोत्सव उजये. आ मंडोत्सव आठ दिवस सुधी सतत उजवाय छे. अष्टाहिक मंडोत्सव न्यादे पूरे थये त्यादे तेओ जे दिशा तरफथी प्रकट थया छेना ते दिशा तरफ जाता रह्या.

(तएणं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वाइए, तस्सेव दिवसस्स वरण्हकाल समयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स मुहेणं परिणा-

સુત્રાસનવરગતસ્ય શુભેન પરિણામેન 'પસત્યેર્હિ' પ્રશસ્તૈઃ=શ્રેષ્ઠૈઃ-શુભૈઃ, 'અજ્ઞ-  
વસાણે' અધ્યવસાનૈઃ=આત્મપરિણામૈઃ, પ્રશસ્તાભિઃ લેખ્યાભિઃ 'વિસુજ્ઞમાણીર્હિ'  
વિશુદ્ધ્યન્તીભિઃ 'તયાવરણકર્મ્મરયવિકરણકરં' તદાવરણકર્મ્મરજોવિકરણકરં-જ્ઞાના-  
વરણીયાદિકર્મ્મરજોવિક્ષેપકં 'અપુઞ્વકરણં' અપૂર્વકરણમ્=અષ્ટમગુણસ્થાનકમ્ અતુ-  
પ્રવિષ્ટસ્યાનન્તં વિષયાનન્તત્વાત્, યાવત્-અતુત્તરં-સમસ્તજ્ઞાનપ્રધાનં, નિર્વ્યાધાતમ્-  
અપ્રતિહતં, નિરાવરણં=ક્ષાયિકં, કૃત્ત્વં=સર્વાર્થગ્રાહકત્વાત્; પ્રતિપૂર્ણં=સકલાંશયુ-  
ક્તત્વાત્ પૂર્ણચન્દ્રવત્, 'કેવલવરનાણદંસણે' કેવલવરજ્ઞાનદર્શનં સમુત્પન્નમ્॥મૂ૦૩૯॥

• યસ્સ, સુદેહં પરિણામેણં પસત્યેર્હિ અજ્ઞવસાણેર્હિ પસત્યાર્હિ લેસાર્હિ  
વિસુજ્ઞમાણીર્હિ તયાવરણકર્મ્મસ્સ વિકરણકરં અપુઞ્વકરણં અણુ-  
પવિટ્તસ્સ અણંતે જાવ કેવલવરનાણદંસણે સમુપ્પન્ને ) મલ્લી અર્હત  
ને જિસ દિન દીક્ષા ધારણ કી હસી દિન પશ્ચિમ પ્રહર મેં અશોક  
વૃક્ષને નીચે રહે હુપ પૃથિવી શિલાપટ્ટક પર સુત્રાસન સે વિરાજમાન  
હનેં શુભ પરિણામ પ્રશસ્ત અધ્યવસાન-આત્મ પરિણામ-અંવ વિશુદ્ધ  
-પ્રશસ્ત-લેખ્યાઓ કે પ્રભાવસે સમસ્ત જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય  
મોહનીય ઔર અન્તરાય કર્મરૂપ રજકે વિક્ષેપક અનન્ત કેવલજ્ઞાન ઔર  
કેવલદર્શન ઉત્પન્ન હો ગયે.। અર્થાત્ દીક્ષા લેતે હી એક પ્રહરકે બાદ  
કેવલજ્ઞાન પાપ.। ક્ષપક્રએણી પર આરુઢ હુર્હ આત્માઓં કો હી  
યે દોનોં કેવલજ્ઞાન ઔર કેવલદર્શન પ્રાપ્ત હોતે હૈં અન્ય કો નહીં  
-તથા યહ એણી ઈવેં અપૂર્વકરણ ગુણસ્થાન સે હી પ્રારંભ હોતી હૈ  
અન્ય ગુણસ્થાન સે નહીં મલ્લી અર્હત ને સી હસી એણી પર આરોહણ

મેણં પસત્યેર્હિ અજ્ઞવસાણેર્હિ પસત્યાર્હિ લેસાર્હિ વિસુજ્ઞમાણીર્હિ તયાવરણકર્મ્મરય-  
વિકરણકરં અપુઞ્વકરણં અણુપવિટ્તસ્સ અણંતે જાવ કેવલવરનાણદંસણે સમુપ્પન્ને)

• જો દિવસે મહી અહીં તે દીક્ષા ધારણ કરી તે જ દિવસે છેલ્લા પહોરમાં  
અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વી શિલાપટ્ટક ઉપર સુખાસન પૂર્વક બેઠેલા તેઓને  
શુભ પરિણામ પ્રશસ્ત અધ્યવસાન આત્મપરિણામ અને વિશુદ્ધ પ્રશસ્ત લેખ્યાઓના  
પ્રભાવથી સમસ્ત જ્ઞાનાવરણીય દર્શનાવરણીય મોહનીય અને અંતરાય કર્મરૂપ  
રજતું વિક્ષેપક અનન્ત કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન ઉત્પન્ન થયું. ક્ષપક્ર એણી  
ઉપર આરુઢ થયેલા આત્માઓને જ આ કેવળ જ્ઞાન અને કેવળ દર્શન મળે  
છે બીજાઓને નહીં, તેમ જ આ એણી આઠમા અપૂર્વકરણ ગુણ સ્થાનથી જ  
આરોહે છે, બીજા કોઈ પણ ગુણ સ્થાનથી નહીં. મલ્લી અહીં તે પણ આ એણી

મૂલ્મ-તેણં કાલેણં તેણં સમણં સઘ્વદેવાણં આસણાં  
 ચલંતિ સમોસઢા કેવલમહિમં કરેંતિ કરિત્તા જેણેવ નંદીસરં  
 અટ્ઢાહિય મહામહિમં કરેંતિ કરિત્તા જામેવ દિસં પાઠં પરિસા-  
 ણિગ્ગયા કુંભણવિ નિગ્ગચ્છહ્ । તણં તે જિયસત્તૂપાં છપ્પિ-  
 જેટ્ઢપુત્તે રજ્જે ઠાવેત્તા પુરિસસહસ્સવાહિણીઓ સીયાઓ દુરુઢા  
 સઠ્ઠિવઢ્ઢીણ જેણેવ મલ્લી અ જાવ પજ્જુવાસંતિ । તણં મલ્લી  
 અં તીસે મહહ મહાલયાણં કુંભગસ્સ તેસિં ચ જિયસત્તૂ પામુ-  
 વ્ઠાણં ધમ્મં કહેહ્ । પરિસા જામેવ દિસિં પાઠબ્ભૂયા તામેવ  
 દિસિં પઢિગયા । કુંભણ સમણોવાસઘ જાણ । પમાર્હય । તણં  
 જિયસત્તૂપાં છપ્પિરાયા ધમ્મં સોચ્ચા ઇવં વયાસી-આલિત્તેણં

કર દિયા થા તમી જાકર ડનહેં ઇનકીપ્રાપ્તિ હુઈ યહી વાત “અપુવ્વકરન  
 અણુપવિટ્ઢસ્સ ’ ઇન પદોઢારા પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ । “અણંતે જાવ ” યહાં  
 જો “જાવ” પદ રલા ગયા હૈ ડસસે “અનુત્તરં નિર્વ્યાઢાતમ્ નિરાવરણં  
 , કૃત્સ્નં, પ્રતિપૂર્ણ ’ ઇન પદોં કા ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ । યે ઢોનોં અનંત  
 વિષયોં કો જાનતે હૈં ઓર દેખતે હૈં ઇસલિયે યે અનંત હૈં । સમસ્ત  
 જ્ઞાન ઓર દર્શનોં મેં યે પ્રધાન હૈં ઇસલિયે અનુત્તર હૈં । અપ્રતિહત  
 હોને સે યે ઢોનોં નિર્વ્યાઢાત, ક્ષાયિક હોને સે નિરાવરણ સર્વાર્થ ગ્રાહક  
 હોને સે કૃત્સ્ન, સકલાંશ યુક્ત હોને સે પૂર્ણ ચન્દ્ર કી તરહ પ્રતિપૂર્ણ કહે  
 ગયે હૈં ॥ સૂત્ર ૩૯ ॥

ઉપર આરોહણ કરી ઢીધું હેતુ ત્યારે જ તેમને ઓમની પ્રાપ્તિ થઈ હતી. ઓ જ  
 વાત-“અપુવ્વકરણં અણુપવિટ્ઢસ્સ ” આ પદોવડે દર્શાવવામાં આવી છે. “અણંતે  
 જાવ ” અહીં જે ‘જાવ’ પદ છે તેનાથી “અનુત્તરં નિર્વ્યાઢાતં નિરાવરણં,  
 કૃત્સ્નં, પ્રતિપૂર્ણ, આ પદો ગ્રહણ કરવામાં આવ્યાં છે. આ બંને અનંત વિષ-  
 યોને જાણે છે અને જુએ છે એટલા માટે તેઓ અનંત છે. સમસ્ત જ્ઞાન અને  
 દર્શનોમાં તેઓ પ્રધાન છે એટલા માટે અનુત્તર છે. અપ્રતિહત હોવા બદલ  
 આ બંને નિર્વ્યાઢાત, ક્ષાયિક હોવાથી નિરાવરણ, સર્વાર્થ ગ્રાહક હોવાથી કૃત્સ્ન,  
 સકલાંશયુક્ત હોવાથી પૂર્ણ ચન્દ્રની જેમ પ્રતિપૂર્ણ કહેવામાં આવ્યા છે. ૩૯

भंते ! लोए पलिच्छेणं भंते लोए जाव पव्वइया, चोइसपुव्विणो अणंते केवले० सिद्धा ।

तएणं मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमइ, निक्ख-  
मिन्ता बहिया जणवयविहारं विहरह । मलिस्सणं भिसगपामो-  
क्खा अट्ठावीसं गणा, अट्ठावीसगणहरा होत्था । मल्लिस्सणं  
अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसेणं, बधुमइपामो-  
क्खाओ पणपण्णं अज्जिया साहस्सीओ उक्को०, सावयाणं एगा  
सायसाहस्सी, चुलसीइं सहस्सा सावियाणं तिन्नि सयसाहसीओ  
पण्णट्ठिं च सहस्सा, छस्सया चोइसपुव्वीणं, वीससया ओहि-  
नाणीणं, बत्तीसं सया केवलणाणीणं, पणतीणं सया वेउव्वियाणं,  
अट्ठसयामणपज्जवणाणीणं, चोइससया वाईणं, वीसं सया अणुत्तरो-  
ववाइणं । मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी होत्था तं जहा  
—जुयंतकरभूमी, परियायंतकरभूमी य । जाव वीसइमाओ पुरिसं-  
जुगाओ जुयंतकरभूमी । दुवासपरियाए अंतमकासी । मल्लीणं  
अरहा पणुवीसं धणूइ मुइं उच्चत्तेणं । वण्णेणं पियंगुसमे. सम-  
चउरससंठाणे, वज्जरिसिभणारायसंघयणे, मज्झदेसे सुहं सुहेणं  
विहरित्ता जेणेव सम्मए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
संमेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे । मल्लीणं अरहा एगं वाससयं  
अगारवासमज्झे वसित्ता पणपण्णं वाससहस्साइं वाससयऊणाइं  
केवलि परियागं पाउणित्ता पणपण्णं वाससहस्साइंसव्वो उयं पाल-  
इत्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्तसुद्धे, तस्स णं

चेत्तसुद्धस्त चउत्थीए भरणीए णक्खत्तेणं अद्धरत्तकालसमयंसि  
पंचहिं अज्जियासएहिं अब्भितरियाए परिसाए, पंचहिं अणगार  
सएहिं बाहिरियाए परिसाए, मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं  
वग्घारियपाणी खीणे वयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे। एवं  
परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबुद्वीवे पण्णत्तीए नंदी-  
सरे अट्टाहिया महिमा जाव पडिगया। एवं खल्लं जंबू ! सम-  
णेणं भगवया महावीरेणं अट्टमस्स नामज्जेयणस्स अयमट्ठे  
पण्णत्ते त्तिवेमि ॥ सू० ४० ॥

टीका—‘ तेणं कालेणं ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सर्वदेवनां=  
शक्रस्य देवेन्द्रस्य तथाऽन्येषां सर्वेषामिन्द्राणां च, आसनानि चलन्ति स्म । तदा  
ऽवधिं प्रयुज्य मल्लया अर्हतः केवलोत्पत्तिं ज्ञात्वा यत्रैव मल्ली अर्हन् तत्रैव ‘ समो-

‘ तेणं कालेणं तेन समएणं ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—( तेणं कालेणं तेणं समएणं ) उस काल और उस समय  
में ( सबदेवणां आसणाईं चलन्ति, समोसदा केवल महिमं करेति )  
करिन्ता जेणेव नंदीसरे० अट्टाहिय महामहिमं करेति, करिन्ता जामेव  
दिसंपाउ० परिसा णिग्गया कुंभएवि निग्गच्छइ ) समस्त देवों के शक्र  
देवेन्द्र के तथा अन्य समस्त इन्द्रों के आसन कंपायमान हुए ।  
आसनोके कंपित होने का क्या कारण है इस प्रकार जब जाननेको उन्होंने  
ने इच्छा की तो उसी समय उन्होंने ने अपने ३ अवधिज्ञान से देखा

‘ तेणं कालेणं तेणं समएणं ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—तेणं कालेणं तेणं समएणं ते काले अने ते समये

( सबदेवणां आसणाईं चलन्ति, समोसदा केवलमहिमं करेति करिन्ता जेणेव  
नंदी सरे० अट्टाहिय महामहिमं करेति, करिन्ता जामेव दिसं पाउ० परिसाणिग्गया  
कुंभए वि निग्गच्छइ )

अथ देवताओंना, शक्र देवेन्द्रना तेमज्ज जीअ अथा इन्द्रोना आसने  
डोलवा भांडयां। तेमनां आसनेना शा कारखुधी उभमत्रवा भांडया छे ? आ नतनी  
अथारे-तेमना भनभां जिज्ञासा उत्पत्त थई त्थारे तरतज्ज तेमखे पोतपोताहुं

સદા ' સમવસતા: = આગતા: , : આગત્ય ' કેવલમહિમં ' કેવલજ્ઞાનોત્સવં કુર્વન્તિ; કૃત્વા યત્રૈવ નન્દીશ્વરો દ્વીપસ્તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ; ઉપાગત્ય ' અદ્વાદિમં ' અષ્ટાદિકાં મહિમાનં અષ્ટદિવસસાધ્યમુત્સવં કુર્વન્તિ, કૃત્વા યસ્યા એવ દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતાસ્તામેવં દિશં પ્રતિંગતાઃ । તદનન્તરં પરિષત્-મિથિલારાજધાન્યા જનસમૂહઃ મલ્લ્યા અર્હતો વેન્દનાર્થ નિર્ગતા-મિથિલારાજધાનીર્તો નિઃસૃતા । કુમ્ભકોઽપિ નિર્ગચ્છતિ સ્મ ।

તતઃ રુદ્ર તે જિતજન્મપ્રમુલાઃ પિંડપ રાજાનઃ સ્વં સ્વં જ્યેષ્ઠપુત્રં રાજ્યે સ્થાપયિત્વા પુરુષસહસ્રવાહિનીઃ શિબિકા! સમારૂઢાઃ સર્વશ્રદ્ધયા સર્વશ્રયેણ સકલ-વર્ણેન સહિતા ચત્રૈવ મલ્લી અર્હત તત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય યાવત્-પર્યુપાસતે ।

શ્રી મલ્લી અર્હત કો કેવલ જ્ઞાન શ્રી ઉત્પત્તિ હૃદૈ હૈ । સો જહાં મલ્લી અર્હત એ વે સષ વહાં પર આયે-આકર ઉન્હો ને કેવલજ્ઞાન કી મહિમા કો ઉત્સવ કિયા ઉત્સવ કર જહાં નંદીશ્વર દ્વીપ યા ફિર વે વહાં આયે વહાં આકર ઉન્હો ને રૂગાંતાર આઠ દિન તક ઉત્સવ કિયા । ઉત્સવ કર કે ફિર વે જિસ દિશા સે પ્રકટ હુએ વે હસી દિશા કી તરફ ચલે ગયે । હસ કે બાદ મિથિલા રાજધાનીસે જન સમુદાય મલ્લી અર્હત કો વેન્દના કરને કે લિયે નિકલા । કુમ્ભક રાજા મી નિકલે । ( તદાં તે જિયસન્-ત્તૂપાં છપિ જેદ્રુપુસે રજ્જે ઠાવેત્તા પુરિસસહસ્રવાહિણીઓ સીયાઓ આરૂઢા સન્વિહૃદીય જેણેવ મલ્લી અં જાવ પજ્જુવાસંતિ ) હસકે અનંતર વે જિતશસ્ત્ર પ્રમુલ છહો રાજા અપને ૨ જ્યેષ્ઠ પુત્રકો રાજ્યપદમે સ્થાપિત્ત કર પુરુષ સહસ્ર વાહિની શિબિકાપર આરૂઢ હો સર્વ શ્રદ્ધિ એવં સકલવર્ણ

અવધિજ્ઞાન બેઠ્યું. અવધિજ્ઞાનથી તેઓએ બધું કે મલ્લી અર્હતમાં કેવળ જ્ઞાનની ઉત્પત્તિ થઈ છે. તેઓ બધા બધાં મલ્લી અર્હત હતાં ત્યાં આવ્યાં ત્યાં પહોંચીને તેઓએ કેવળજ્ઞાનના મહિમાનો ઉત્સવ ઉજવ્યો. ઉત્સવ ઉજવ્યા પછી તેઓ નંદીશ્વર દ્વીપમાં ગયા, ત્યાં બધને તેઓએ સતત આઠ દિવસ સુધી ઉત્સવો ઉજવ્યા. ઉત્સવની સમાપ્તિ પછી તેઓ બે દિશા તરફથી પ્રગટ થયું હતા તે દિશા તરફ જતા રહ્યા. ત્યારબાદ મિથિલા રાજધાનીથી મલ્લી અર્હતનાં વંદન માટે જનસમુદાય નીકળ્યો. કુમ્ભક રાજા પણ નીકળ્યો.

( તદાં તે જિયસન્તૂપાં છપિ જેદ્રે પુત્તે ઠાવેત્તા પુરિસસહસ્રવાહિણીઓ સીયાઓ દુરૂઢા સન્વિહૃદીય જેણેવ મલ્લી અં જાવ પજ્જુવાસંતિ )

ત્યારપછી છત્રશત્રુ પ્રમુખ છએ રાજાઓ પોતપોતાના મોટા પુત્રને રાજ-ગાદીએ બેસાડીને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓમાં બેસીને સર્વશ્રદ્ધિ અને

ततः खलु मल्ली अर्हन् तस्या महाति महालयायाः—अतिविस्तीर्णायाः पर्यदोऽग्रे कुम्भकस्य राज्ञस्तथा तेषां च जितशत्रुप्रमुखाणां राज्ञां धर्मं=कथयति, परिषद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूताः, तामेव दिशं प्रतिगता। कुम्भकः श्रमणोपासको जातः, देशविरतिरूपं धर्मं स्वीकृतवान्, प्रतिगतः। प्रभावती च श्रमणोपासिका जाता, प्रतिगता प्रभावती कुम्भकौ स्वस्थानं गतवन्तौ। ततः खलु जितशत्रुप्रमुखाः पटपि राजानो धर्मं श्रुत्वा, प्रतिबुद्धा एवमवादिषुः ‘आलिच्छेणं मंते लोए पलिच्छेणं मंते

के साथ जहाँ मल्ली अर्हन्ति विराजमान थे वहाँ आये वहाँ आकर उन सघने मल्ली अर्हन्त की अच्छी तरह उपासना की। (तएणं मल्ली तीसे मह इमहालयाए ०००० धम्मं कहइ) इसके बाद मल्ली अर्हन्त ने उस अति विस्तीर्ण जनमेदिनी के समक्ष कुम्भक राजा तथा जितशत्रु प्रमुख उन छहों राजाओं के समक्ष श्रुतचारित्र रूप धर्मका उपदेश दिया। (परिसा जामेव दिसि पा० तामे दि० पडि०) उपदेश सुनकर वह जनमेदिनीरूप परिषदा जिस दिशासे आई थी उसी दिशा तरफ वह वापिस चली गई। (कुम्भए समणोवासए जाए) कुम्भक राजा श्रमणोपासक बन गये। अर्थात् देशविरतिरूप धर्म उन्होंने स्वीकार कर लिया। (प्रभावईय) प्रभावती भी श्रमणोपासिका बन गई।

(तएणं जियससूप्पा० छप्पिराया धम्म सोच्चा एवं वयासी) इसके बाद उस जितशत्रु प्रमुख छहों राजाओं धर्म का उपदेश सुनकर प्रतिबुद्ध हो इस प्रकार कहा—(अलिच्छेणं मंते ! लोए पलित्सेणं

सकण भणनी साथे ज्थां भद्वी अर्हन्त विराजमान हुता त्यां पडोव्था. त्यां पडोव्थीने तेज्जा भधाज्जे भद्वी अर्हन्तनी सारी पेठे उपासना करी

(तएणं मल्ली अ० तीसे महइ महालयाए०.....धम्मं कहइ) त्थार पडी भद्वी अर्हन्ते ते विशाण जन समुदाय, तेमज्ज कुलक राज्ञे अने जितशत्रु प्रमुख ते छजे राज्ञेज्जानी साथे श्रुत चारित्र रूप धर्मनो उपदेश आय्थे, (परिसा जामेव दिसि पा. तामेव दिसि पडि०) उपदेश सांलणीने जनसमुदाय जे दिशा तरक्थी आय्थे हुते ते दिशा तरक् थोछे जेतो रह्यो. (कुम्भए समणोवासए जाए) कुलक राज्ञे श्रमणोपासक थछ गथा हुता. जेटले के देश विरतिरूप धर्मनो तेज्जाज्जे स्वीकार क्यो हुते. (प्रभावईय) प्रभावती पण्य श्रमणोपासिका थछ गया.

(तएणं जियससूप्पा. छप्पिराया धम्म सोच्चा एवं वयासी) त्थार पडी उत्तशत्रु प्रमुख छजे राज्ञेज्जो जे धर्मना उपदेशथी प्रतिबुद्ध थछने आ प्रभाज्जे कहु के—

(आलिच्छेणं मंते ! लोए पलित्सेणं मंते ! लोए जाव पटवइया, चोदस पुण्वि

લોપ' હિતિ હે મદન્તે । મગવન્ । 'અલીતે' આદીપ્તઃ=આ=સમન્તાત્ દીપ્તઃ=જ્વલિતઃ સ્વલ્પયં લોકઃ, તથા હે મદન્ત ! 'પલિતે' પ્રદીપ્તઃ=પ્રકર્ષેણ જ્વલિતઃ=સ્વદિર કાર્પાસકાષ્ટાગ્નિજ્વાલયેવ તીવ્રજ્વાલયા યુક્તઃ સ્વલ્પયં લોકઃ, જન્મજરા-મરણાદિદુઃખાનિ વદ્ધસ્તીવ્રજ્વાલા ઇવાસ્મિન્ લોકે જીવાન્ મદદન્તીત્યર્થઃ । યાવત્-પ્રવ્રજિતાઃ=યંથા કશ્ચિદાદીપ્તે ગૃહે પ્રમુક્તે નરં બોધયેત્ તથા હે મગવન્-આદીપ્તે લોકે મોહનિદ્રાવશગતાનસ્માન્ પ્રતિબોધ્ય યુષ્મામિઃ શ્રેયસ્કરો મોક્ષમાર્ગ પ્રદર્શિતઃ તસ્માદ્ ભવતામન્તિકે પ્રવ્રજિષ્યામઃ' હ્યુત્કથા તે વદપિ રાજાનઃ પ્રવ્રજિતાદીપ્તાં ગૃહીતવન્તઃ । તતશ્ચતુર્દશપૂર્વિણઃ=ચતુર્દશપૂર્વધારિણો ભૂત્વાનુક્ર-

મ્તે લોપ જાવ પંચવ્રજ્યા ચોદસપુલ્લિંગો અર્ણતે કેવલે સિદ્ધી ) હે મદન્ત ! યહ ચતુર્ગતિ રૂપે લોક ઓ = સમન્તાત્ - જ્વલિત્ હો રહ્યા હૈ । હે મદન્ત ! યહ લોક અત્યંત જ્વલિત્ હો રહ્યા હૈ । કાર્પાસ કાષ્ઠ કી અગ્નિજ્વાલાકે સમાન તીવ્ર જ્વાલાસે યહ લોક ગ્યાપ્ત હો રહ્યા હૈ અગ્નિ કી તીવ્ર જ્વાલા જૈસે જન્મ, જરા પંચ મરણ ઓદિ કે દુઃખ જીવોકો સંદા ડસે લોકે મૈ જલાતે રહતે હૈ । હે મગવન્ ! જૈસે કોઈ વ્યક્તિ ઘર મૈ ઓગ લગ જાને પર ડસમેં સુપ્ત હુએ વ્યક્તિ કો સંચેત્ કર દેતા હૈ-હસી તરહ ઓદીસ હુએ હસ લોકે મૈ મોહ-નિદ્રાધીન બને હુએ હમ લોગો કો પ્રતિબોધિત કર ઓપને શ્રેયસ્કર મોક્ષમાર્ગ પ્રદર્શિત કિયા હૈ-હસલિયે હમ ઓપકે પાસ દીક્ષા અંગીકાર કરેંગે । હસ પ્રકાર કંહ કર ડન જિતશંખુ પ્રમુખ છંહો રાજાઓ ને મલ્લી અર્હત કે સમીપ દીક્ષા ધારણ કરલી । ચોદહે પૂર્વ કે પાઠી હોકર ડન્હો ને નિરતિચાર

ગો અર્ણતે કેવલે ૦ સિદ્ધા )

હે મદન્ત ! આસમન્તાત્ ( ચોમેર ) આ ચતુર્ગતિરૂપ લોક સળગી રહ્યો છે. હે મદન્ત ! આ લોક અત્યંત જ્વલિત થઇ રહ્યો છે. ૩ અને લાકડાંની અગ્નિ જ્વાળાઓની પેઠે તીવ્ર જ્વાળાઓથી આ લોક વ્યાપ્ત થઇ રહ્યો છે. અગ્નિની તીવ્ર જ્વાળાઓની જેમ હંમેશા જન્મ, જરા ( ઘડપણ ) મરણ વગેરેના દુઃખો આ લોકને સર્ગમાવતા રહે છે. હે મગવન્ ! જેમ કોઇ માણસના ઘરમાં અગ્નિ સળગી ઉઠે ત્યારે સૂતેલા માણસને ખોલે કોઇ બચત કરે છે તે પ્રમાણે જ પ્રજ્વલિત થતા આ લોકમાં મોહ નિદ્રાવશ થયેલા અમારા જેવા લોકોને યોધ આપીને તમે શ્રેયસ્કર મોક્ષ માર્ગ બતાવ્યા છે તેથી અમે હવે તમારી પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરીશું. આ પ્રમાણે વિનંતિ કરીને છતશંખુ પ્રમુખ છબ્બે રાજાઓએ મલ્લી અર્હતની પાસેથી દીક્ષા સ્વીકારી લીધી. ચોદ પૂર્વના પાઠી થઇને તેમણે નિરતિચાર ચારિત્ર્ય પાલન કર્યું. અમે આ પ્રમાણે ધીમે ધીમે અનુક્રમે



मेण निरतिचारं चारित्रं पालयित्वाऽनन्तं केवलं=केवलवरज्ञानदर्शनं यावत्-सिद्धाः सिद्धिस्थानं गताः ।

ततस्तदनन्तरं खलु मल्ली अहं सहस्राश्रवणाद् निष्क्रामति=निर्गच्छति, निष्क्रम्य वहिर्जनपदविहारं विहरति । मल्ल्याः-खलु भिषगप्रमुखाः अष्टाविंशति-गणाः, अष्टाविंशतिगणधरा अभवत् । मल्ल्याः खलु अहंतत्त्वार्तिश्रुत् श्रमणसहस्राणि 'उक्कोसेणं' उत्कर्षेण उत्कृष्टा श्रमणसंपदभवत् । तथा-बन्धुमतिप्रमुखाः पञ्च-

चारित्र का पालन किया । और इस तरह घीरेर क्रमशः वे छहोंके छहों केवल ज्ञान और केवल दर्शनके अधिकारि बन गये और अन्तमें सिद्धस्थान पर पहुँच गये । -(तएणं मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खरइ) मल्ली अहंत उस सहस्राश्र वनसे बाहर निकले (निक्खमिस्सा बहिया जणवयविहारं विहरइ) निकलकर उन्होंने बाहरके जनपदों में तीर्थंकर परम्पराके अनुसार विहार करना प्रारंभ कर दिया । (मल्लिस्सणं मिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा, अट्ठावीसं गणहरा, होत्था मल्लिस्सणं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसेणं बंधुमइपामोक्खाओ पणपणमज्जिया साहस्सीओ उक्कोसेणं सावयाणं एगासाय साहस्सी चुलसीइं सहस्सा सावियाणं तिन्निमयसायसीओ पण्णइं च सहस्सा) इन मल्ली अहंत के भिषग प्रमुख २८, गण (गच्छ) थे और २८, गणधर थे । उत्कृष्ट से इन मल्ली अरहंत प्रभु की श्रमण संपत्ति ४० हजार क्री थी । तथा उत्कृष्ट की अपेक्षा बंधुमनी

तेजो छजे छ राज्ञो डेवगज्ञान अने डेवगदर्शन भाटे अधिकारी थई गथा अने छेवटे सिद्धस्थाने पहुँची गथा. (तएणं मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमइ) भट्टी अहंत ते सहस्राभवनथी गडार नीडगथा. (निक्खमिस्सा बहिया जणवय विहारं विहरइ) नीडणीने गडारना जनपदोभां तेमछे तथईर परंपरा सुअभ विहार करेवा थइ छथी.

(मल्लिस्सणं मिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा, अट्ठावीसं गणहरा, होत्था मल्लिस्सणं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ० उक्कोसेणं बंधुमइ पामोक्खाओ पणपण मज्जियासाहस्सीओ उक्कोसेणं सावयाणं एगा साय साहस्सी, चुल सीइं सहस्सा सावियाणं एगा साय साहस्सी चुलसीइं सहस्सा सावियाणं तिन्निमय सायसीओ पण्णइं च सहस्सा)

भट्टी अहंतने भिषग् प्रमुख अट्ठावीश (२८) गछु (गच्छ) इत्ता अने अट्ठावीशे (२८) गछुधर इत्ता. उत्कृष्टथी भट्टी अहंत प्रभुनी श्रमण संपत्ति आणीअ हज्जर इत्ती तेमअ उत्कृष्टनी अपेक्षाओ अधुमती अनुअ ५५

પશ્ચાશ્વ અર્થિકાસહસ્રાણિ ઉત્કર્ષેણ, ઉત્કૃષ્ટા સાધ્વીસમ્પત્ પશ્ચપશ્ચાશ્વસહસ્રપરિ-  
મિતા જાતેત્યર્થઃ, તથા-આવકાણામેકશતસહસ્રાણિ=૯૬૦ લક્ષમ્, 'ચુલસીર્તિ'   
ચતુરશીર્તિઃ સહસ્રાણિ, શ્રમણોપાસકસંપદયૂત્ । તથા-આવિકાણાં ત્રીણિશતસહ-  
સ્રાણિ=ત્રીણિ લક્ષાણિ, પશ્ચષ્ટિસહસ્રાણિ ઉત્કર્ષેણ, તથા-ષટ્શતાનિ ચતુર્દશ  
પૂર્વિણાં-ચતુર્દશ પૂર્વધારિણાં, તથા-વિંશતિશતાનિ અવધિજ્ઞાનિનાં, તથા-પશ્ચત્રિ-  
શત્-શતાનિ 'વેડવિયાણં' વૈકૃવિકાણાં=વૈક્રિયલઙ્ઘિધારિણાં, તથા-અષ્ટશતાનિ  
-મનઃ પર્યવજ્ઞાનિનાં, તથા-ચતુર્દશશતાનિ વાદિનાં, તથા-વિંશતિશતાનિ અનુત્ત-  
ત્તરોપપાતિકાનામ્ । મલ્લ્યા અર્હતઃ 'અંતગઢભૂમી' અન્તકૃદ્ભૂમિઃ=અન્તકૃતઃ-

આદિ ૬૫ હજાર આર્થિકાઈ થી । इनके आवकों की संख्या १ लाख ८४  
हजार थी । आविकाएँ इनकी ३, लाख ६५, हजार थी । (छस्सया चोद्दस  
पुव्वीणं, बीससया ओहिनाणीणं बत्तीसं सया केवलणाणीणं पणतीणं  
सया वेडवियाणं, अद्दसया मणपज्जवणाणीणं चोद्दस सयावाईणं बीसं  
सया अणुत्तरोववाइणं ( ६००, चतुर्दश पूर्व के घारी मुनि गण थे ।  
बीस सौ अर्थात् २०००, अवधिज्ञानीं थे । ३२ सौ अर्थात् ३, हजार  
दो सौ केवल ज्ञानी थे ३५ सौ वैक्रिय लङ्घि के घारी थे । ८००, सौ मन  
पर्यव ज्ञानी थे । चौदह सौ वादी थे । बीस सौ अनुत्तरोपपानिक थे ।  
( मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगढभूमी य जाव बीसइमाओ पुरिस  
जुगाओ जुयंतकर भूमी ) इन मल्लीअर्हत की अतः कृद्भूमि-उसी भव  
से मोक्ष जानेवालों का काल-दो प्रकारकी थी-( १ ) युगान्तकर भूमि

હબર આર્થિકાઓ હતી. તેમના આવકોની સંખ્યા એક લાખ ચોરાશી હબર  
હતી. અને ત્રણ લાખ પાંસઠ હબર તેમની આવિકાઓ હતી.

( છસ્સયા ચોદ્દસ પુવ્વીણં વીસસયા ઓહિનાણીણં બત્તીસં સયા કેવલણાણીણં  
પણતીણં સયા વેડવિયાણં અદ્દ સયા મણ પજ્જવણાણીણં, ચોદ્દસ સયા વાઈ ણં  
વીસં સયા અણુત્તરોવવાઈયાણં )

છસો ચતુર્દશ પૂર્વનાધારી મુનિગણો હતા. ૨૦ સો એટલે કે બે હબર  
અવધિજ્ઞાની હતા. ૩૨ સો એટલે કે ત્રણ હબર ઇસો કેવળજ્ઞાની હતા. ૩૫  
સો વૈક્રિય લઙ્ઘિનાધારી હતા. આઠસો મનઃપર્યાવજ્ઞાની હતા. ૧૪ સો વાદી  
હતા. ૨૦ સો અનુત્તરોપપાતિક હતા.

( મલ્લિસ્સ અરહઓ દુવિહા અંતગઢભૂમી ય જાવ વીસઈમાઓ પુરિસજુગાઓ  
જુયંતકરભૂમી )

મલ્લી અહંતથી અંતઃકૃદ્ભૂમિ-તે ભવમાં જ મોક્ષ મેળવનારાઓનો  
કાળ-બે પ્રકારની હતી. (૧) યુગાન્તકર ભૂમિ (૨) પર્યાયાન્તકર ભૂમિ. ભૂમિ

ભવાન્તકારિણઃ તસ્મિન્નેવ જન્મનિ શુક્તિગામિનઃ, તેષાં ભૂમિઃ-કાલઃ, કાલસ્ય ચાધારત્વેન કારણત્વાદ્ ભૂમિત્વેન વ્યપદેશઃ । દ્વિવિધા-દ્વિપ્રકારા, અભવત્, તદ્ યથા-યુગાન્તકરભૂમિઃ, પર્યાન્તકરભૂમિશ્ચ । યાવદ્-વિંશતિતમાત્ પુરુષયુગાદ્ યુગાન્તકરભૂમિઃ-અત્ર દ્વિતીયાર્થે પશ્ચમી યાવદ્ વિંશતિતમં પુરુષયુગં-વિંશતિતમં શિષ્યં યાવદિત્યર્થઃ । યુગાનિ-કાલમાનવિશેષાઃ, તાનિ ક્રમાનુસારિણિ, યુગાનીવ યુગાનિ, યુગસાદૃશ્યાદ્ ગુરુશિષ્યપ્રશિષ્યાદિરૂપાઃ પુરુષાઅપિ યુગાનિ વ્યવહ્રિયન્તે, તૈઃ પ્રમિતાયાઽન્તકરભૂમિઃ સ, યુગાન્તકરભૂમિઃ । મહીજિદારમ્ય તત્તીર્થે પટ્ટાનુપટ્ટઃ ક્રમેણ વિંશતિતમં પટ્ટપુરુષં યાવત્ સાધવઃ સિદ્ધા અભૂવન્, તતઃ પરં સિદ્ધિગમન-વ્યવચ્છેદોઽભૂદિતિમાવઃ । પર્યાયાન્તકરભૂમિમાહ-‘દ્વાસપરિયાપ અન્તમકાસી’ इति, દ્વિવર્ષપર્યાયેઽન્તમકાર્પીત્-इति અનેન-વાક્યેન પર્યાયાન્તકરભૂમિઃ પ્રોચ્યતે । પર્યાયસ્તીર્થકરસ્ય કેવલિત્વ કાલસ્તમાશ્રિત્ય યાઽન્તકભૂમિઃ સા પર્યાયાન્તકર-

( ૨ ) પર્યાયાન્તકર ભૂમિ । ભૂમિ શબ્દ સે કાલ તથા યુગ શબ્દ સે ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્યાદિ રૂપ પુરુષોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । અતઃ इन गुरु शिष्य प्रशिक्ष्यादि रूप पुरुषों को आरंभ कर जिस मैं उसी भव से मोक्ष जाने वालोंका प्रमाण प्रमित किया जावे वह युगान्तकर-भूमि है ऐसा युगान्तकर भूमि शब्दका वाच्यार्थ निकलता है मल्ली जिनसे लगाकर इनके तीर्थमें पट्टानुपट्ट क्रमसे विंशतितम पट्टपुरुष तक ( वीसपेढि)साधु सिद्ध हो चुके हैं । उसके बाद सिद्धि में जानेका व्यवच्छेद हो गया । (द्वुवासपरियाप अंतमकासी) इस वाक्यसे पर्यायान्तकर भूमि सूत्रकार ने प्रकट की है ।

તીર્થકર કી કેવલી અવસ્થા કે પર્યાયરૂપ સમય કો લેકર જો અન્ત કર ભૂમિ હોતી હૈ ઉસકા નામ-પર્યાયાન્તકર ભૂમિ હૈ એસા હસ શબ્દકા

શબ્દથી કાળ તેમજ યુગ શબ્દથી ગુરુ-શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરુષોનું શરૂ થયું છે એથી આ બધા ગુરુ શિષ્ય પ્રશિષ્ય વગેરે પુરુષોને આરંભીને જેમાં તે ભવથી જ મોક્ષ મેળવનારાઓનું પ્રમાણ પ્રમિત ( કેટલું છે તેની ગણતરી ) કરનામાં આવે તે યુગાન્તકર ભૂમિ શબ્દનો વાચ્યાર્થ થાય છે. મહીજીનથી માંડીને એમના તીર્થમાં પટ્ટાનુપટ્ટ કેમથી વિંશતિતમપટ્ટ પુરુષ સુધી સાધુઓ સિદ્ધ પદ પામી ચૂક્યા છે. ત્યારપછી સિદ્ધિમાં જવા માટે વ્યવચ્છેદ થઇ ગયો. (દ્વાસ પરિયાપ અંતમકાસી) આ વાક્યથી સૂત્રકારે પર્યાયાન્તકર ભૂમિ પ્રકટ કરી છે.

તીર્થકરની કેવળી અવસ્થાના પર્યાયરૂપ સમયથી લઇને જે અન્તકર ભૂમિ હોય છે, તેનું નામ પર્યાયાન્તકર ભૂમિ છે. આ શબ્દનો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે જ

ભૂમિઃ । મરત્યા અર્હતઃ કેવલજ્ઞાનસ્ય દ્વિવર્ષ-પર્યાયેસતી તત્તીર્થે સાધુઃ અન્તમકાર્પીત-મવાન્તમકરોત્ ન તતઃ પૂર્વં કશ્ચિદપીત્યર્થઃ ।

મહ્લી સ્વલ્હ અર્હન્ પચ્ચવિંશતિર્ધનૂંષિ ઝઘ્ઘ્મ ઉચ્ચત્વેન-મલ્લ્યા અર્હતઃ શરીરમુચ્ચત્વેન પચ્ચવિંશતિર્ધનુઃ પરિમિતમાસીદિત્યર્થઃ । વર્ણેન પ્રિયંકુસમઃ નીલવર્ણઃત્યર્થઃ । સમચતુરસસંસ્થાનઃ, વજ્રક્રુષ્મનારાચસંહમન મધ્યદેશે ગ્રામાનુગ્રામં સુસંસુલ્હેન વિહત્ય યત્રૈવ સમેતઃ પર્વતસ્તત્રૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય, સમેતશૈલશિલ્લરે પાદપોપગમનોપપન્નઃ પાદપોપગમન સંસ્તારકં સ્વીકૃતવાન્ । મલ્લી સ્વલ્હ અર્હન્ એકં વર્ષશતમ્ અગારવાસમધ્યે

વાચ્ચાર્થ નિકલ્લતા હૈ । મલ્લી અર્હત કો કેવલ જ્ઞાન ઉત્પન્ન હુએ જબ દો વર્ષ હો ગયે તબ ઉસકે વાદ હી ઉનકે તીર્થ મેં અપને ભવકો અન્ત કર સાધુજનોં ને સુક્તિ લામ કિયા । હસકે પહિલે કોઈ સાધુ સુક્તિ મેં નહીં ગયા । યહી પર્યાયાન્ત કરભૂમિ હૈ । ( મલ્લી જં અરહા પણુવીસં ઘણૂહ સુહું ઉચ્ચત્તેણં ) હન મલ્લી અરહંત કે શરીરકી ઈંચાઈ ૨૫ ઘનુષ પ્રમાણ થી । ( વળ્ણે જ પિયંશુસમે, સમચડરંસસંઠાળે, વજ્જરિસમણા રાય સંઘયળે ) શરીર કા વર્ણ પ્રિયંશુ કે સમાન નીલ યા । સંસ્થાન સમ ચતુરસ્ર થા । સંહનન વજ્ર ક્રુષ્મ નારાચ થા ( મજ્જા દેસે સુહં સુહેળં વિહરિસ્તા જેળેવ સમ્મેએ પવ્વએ તેળેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિસ્તા સંમેય સેલસિહરે પાઓવગમણુવવળ્ણે ) મધ્ય દેશ મેં સુલ શાન્તિ પૂર્વક વિહાર કર યે પ્રસુ જહાં સમેત પર્વત યા વહાં આયે । આકર ઉસી સમેત શૈલ શિલ્લર પર પાદપોપગમન સંધારા ઉન્હોં ને ધારણ કિયા । ( મલ્લી જં અ

થાય છે. મલ્લી અર્હંતને કેવળજ્ઞાન ઉદ્ભવ્યું, તેના બે વર્ષ પછી જ તેમના તીર્થમાં પોતાના ભવમાં અંતકર સાધુઓએ સુક્તિ લાભ મેળવ્યો. એના પહેલાં કોઇ સાધુએ સુક્તિ મેળવી નથી, એ જ પર્યાયાન્તકર ભૂમિ છે. મહ્લી જં અરહા પણુવીસં ઘણૂહ સુહું ઉચ્ચત્તેણં ) મલ્લી અર્હંતના શરીરની ઈંચાઈ ૨૫ ઘનુષ પ્રમાણ હતી. ( વળ્ણેણં પિયંશુસમે, સમચડરંસસંઠાળે; વજ્જરિસમણારાય-સંઘયળે ) શરીરનો રંગ પ્રિયંશુના જેવો નીલો હતો. સંસ્થાન સમચતુરસ્ર હતું. સંહનન વજ્ર ક્રુષ્મ નારાચ હતું.

( મજ્જાદેસે સુહં સુહેળં વિહરિસ્તા જેળેવ સમ્મેએ પવ્વએ તેળેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિસ્તા સંમેયસેલસિહરે પાઓવગમણુવવળ્ણે )

સુખ શાંતિપૂર્વક મધ્ય દેશમાં વિહાર કરીને મલ્લી પ્રભુ સમેત પર્વત ઉપર પહોંચ્યાં. ત્યાં પહોંચીને તેઓશ્રીએ સમેત શૈલ શિખર ઉપર પાદપોપ-ગમન સંધારો ધારણ કર્યો.

उपिस्त्रा=स्थित्वा पञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि वर्षशतानि यावत्-केवलपर्यायं पालयित्वा, पञ्चपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि सर्वायुष्कं पालयित्वा यः सः ग्रीष्माणां-ग्रीष्मकालानां चैत्रादिमासचतुष्टयरूपाणां प्रथमो मासः द्वितीयः पक्षः चैत्रशुद्धः=चैत्रशुक्लः, तस्य खलु चैत्रशुद्धस्य चतुर्थ्यां भरण्यां नक्षत्रे भरणीनामकं नक्षत्रं खलु चन्द्रयोगश्रुपागते=चन्द्रे भरणी नक्षत्रस्थिते सतीत्यर्थः। अर्धरात्रिकालसमये पञ्चभिरार्यिकाशैराभ्यन्तरिकया परिषदा, पञ्चभिरनगाश्वतैर्वाह्या परिषदा सह, मासिकेन भक्तेन=भक्त-

रहा एगं वाससयं अगारवासमज्झे वसित्ता पग पण्णं वास सहस्साइं वाससय ऊणाइं केवलपरियागं पाउणिता पगपण्णवाससहस्साइं सव्वा उयं पालइत्ता ) ये मल्ली अर्हंत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहे-बाद में दीक्षित होकर सौ वर्ष कर्म ५५ हजार वर्ष तक केवल पर्याय में रहे। इस तरह ५५ हजार वर्ष तक समस्त आयु को भोग कर ( जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्सणं चेत्तसुद्धस्स च अत्थीए भरणीए णक्खत्ते णं अद्धरत्ता कालसमयंसि पंचहिं अज्जिया सएहिं अर्हिमतरियाए परिसाए पंचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे ) उन्होंने ने ग्रीष्म काल के प्रथम मास में द्वितीय पक्षमें अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष में उस में भी चतुर्थी तिथि के दिन जब कि भरणी नक्षत्र का चंद्रमा के साथ योग हो रहा था - अर्द्ध रात्रि के समय में आभ्यन्तर परिषदा थी पांचसौ अनगारो के साथ १ महिने का पानर-

(-मल्ली णं अरहा एगं वाससयं- अगारवासमज्झे वसित्ता पण पण्णं वास सहस्साइं वाससय ऊणाइं केवल परिचागं पाउणिता पणपण्णवाससहस्साइं सव्वा उयं पालइत्ता )

मल्ली अर्हंत प्रभु १ सौ वर्ष घर में रहा। त्या २५५० दीक्षा अर्हण करीने ५५ हजार वर्षों में ओकसे वर्ष ओछा ओटले के ४६०० वर्षों में आयुष्य लोगनीने देवदी पर्याय में रहा आ रीते ५५ पञ्चावन हजार वर्षों में आयुष्य लोगनीने ( जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्त सुद्धे, तस्स णं चेत्त सुद्धस्स च अत्थीए भरणीए णक्खत्ते णं अद्धरत्ता कालसमयंसि पंचहिं अज्जिया सएहिं अर्हिमतरियाए परिसाए पंचहिं अणगारसयेहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारिय पाणी खेणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे )

तेमल्ले ग्रीष्मकालना पडेला मछिनाना पीला पञ्चवासीयां ओटले के चैत्र शुक्ल पक्षमां तेमां पल्लु योधना द्विसे न्यारे लखली नक्षत्रना अर्धनी साथे योग थर्ह रही હતો, अर्द्ध रात्रिना वणते आभ्यन्तर परिषद હતી त्यादै पांचसे आर्यिकाओनी साथे १ मछिनातुं पान रक्षित लक्ष प्रत्याभ्यान करीने

પ્રત્યાશ્વાનેન, અપાનકેન=યાનરહિતેન-ચતુર્વિધાહારપરિત્યાગેનેત્યર્થઃ, વ્યાધારિત-  
પાણિઃ=પ્રલમ્બિતશુજઘ્રયઃ, ક્ષીણે=પ્રણટ્ટે સતિ વેદનીયે આયુષ્કે નામ્નિ ગોત્રે ચ  
કર્મ્મણિ-સિદ્ધઃ=સિદ્ધિ ગતઃ । एवं પરિનિર્વાણમહિમામણિતવ્યા-યયા જમ્બૂદ્વીપ  
પ્રજ્ઞપ્ત્યામ્, યથા ઋષભસ્ય નિર્વાણમહિમા પ્રોક્તસ્તથા મલ્લિજિનસ્યાપિ બોધ્ય-  
ત્યર્થઃ । નન્દીશ્વરે=નન્દીશ્વરદ્વીપે અષ્ટાદિકા મહિમા=અષ્ટાદશાધ્યમહોત્સવઃ દેવૈઃ  
કૃતઃ । કૃત્વા યાવત્-પ્રતિગતાઃ=યસ્યાદિશઃ પ્રાદુર્ભૂતાસ્તાં દિશં પ્રતિગતાઃ=  
પ્રતિનિષ્પ્રુતાઃ ।

હિત ભક્ત પ્રત્યાશ્વાન કરકે દોનોં હાથ ફેલાયે હુએ અવશિષ્ટ વેદનીય  
આયુ નામ એવં ગોત્ર કર્મકે નષ્ટ હોતે હીં સિદ્ધિ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરલી !  
( એવં પરિનિર્વાણમહિમા મણિયવ્વા જહા જંબૂદ્વીપપણ્ણત્તીએ ) જિસ  
પ્રકાર જંબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞસિ મેં ઋષભ દેવ કે નિર્વાણ કા મહિમા પ્રકટ કી  
ગઈ હૈ ઉસી તરહ્ ઇન મલ્લી ભગવાન કે નિર્વાણ કી ખી મહિમા જાન  
નીચાહિયે । ( નંદીસરે અઢાહિયા મહિમા જાવ પઢિગયા ) દેવતાઓં ને  
મલ્લી પ્રજુ કે ઇસ નિર્વાણ કલ્યાણક કી મહિમા નંદીશ્વર દ્વીપ મેં ૮  
દીન તક લગાતાર ઉત્સવ કર કે મનાઈ । બાદમેં વે વહાંસે જિસ દિશાસે  
પ્રકટ હુએ થે ઉસ દિશાકો બાપિસ ચલે ગયે અબ સુધર્મસ્વામી જમ્બૂસ્વામી  
સે કહતે હૈં (એવં સ્વહુ જમ્બૂ ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં અદ્દમસ્સ ના-  
યજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ ) હે જમ્બૂ ! અમણ ભગવાન મહવીર  
ને કિ જો સિદ્ધિસ્થાન કે અધિપતિ બન ચુકે હૈં ઇસ આઠવેં જ્ઞાતાધ્ય-

ખંને હાથો ફેલાવતાં અવશિષ્ટ વેદનીય, આયુ, નામ અને ગોત્ર કર્મનો નાશ  
થતાં જ સિદ્ધિ અવસ્થા મેળવી લીધી.

( એવં પરિનિર્વાણમહિમા મણિયવ્વા જહા જંબૂદ્વીપપણ્ણત્તીએ )

જે પ્રમાણે જંબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞસિમાં ઋષભદેવનો મહિમા આલેખવામાં આવ્યો.  
છે તે પ્રમાણે જ મલ્લી ભગવાનના નિર્વાણનો મહિમા પણ બાણવો બોધ્યો.  
( નંદીસરે અઢાહિયા મહિમા જાવ પઢિગયા ) મલ્લી પ્રજુના આ નિર્વાણના કદયાણુ-  
કારક મહિમાને ઉત્સવ દેવતાઓએ નંદીશ્વર દ્વીપમાં સતત આઠ દિવસો સુધી  
ઉજવ્યો. ત્યારપછી તેઓ ત્યાંથી જે દિશામાંથી પ્રગટ થયા હતા તે દિશા તરફ  
પાછા જતા રહ્યા. હવે સુધર્મસ્વામી જંબૂસ્વામીને કહે છે—

( એવં સ્વહુ જંબૂ ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં અદ્દમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ  
અયમદ્દે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ )

હે જંબૂ ! અમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધિસ્થાનના અધિપતિ

સુધર્માસ્વામી પ્રાહ-‘ एवं खलु जंघू ’ इत्यादि । एवं खलु हे जम्बू ! श्रम-  
णेन भगवता महावीरेण-यावत् सिद्धिर्गतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन, अष्टमस्य  
ज्ञाताध्ययनस्य अथमर्थः उक्तरूपो भावः प्रकृतः कथितः इति ब्रवीमि अस्य  
व्याख्यानं पूर्ववत् ॥ सू० ४० ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचकपण्डितदशभाषाकलितं कलितं-  
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ  
अपतिकोल्हापुरराजपदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-  
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-  
व्रतिविरचितायां ‘ ज्ञाताधर्मकथा ’ सूत्रस्यानगारधर्मास्तव-  
विष्णुव्याख्यायां व्याख्यायां अष्टममध्ययनं संपूर्णम् ॥ ८ ॥

યન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ । અતઃ જૈસા પ્રમુને અપ-  
ને મુસ્તારવિન્દ સે કહા ઓર જૈસા ડનસે મૈને સુના-વૈસા હી યહ તું  
સે કહા હૈ । સૂ० “ ૪૦ ”

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસી લાલજી મહારાજ કૃત “ જ્ઞાતા-  
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર ” કી અનગારધર્માસ્તવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા આઠવા  
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૮ ॥

થઈ ગયેલા છે-આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર લખ્યા મુજબનો અર્થ નિરૂ-  
પિત કર્યો છે. એટલા માટે પ્રભુએ પોતાના મુખારવિદ્યથી જે પ્રમાણે મને  
કહ્યો અને મેં સાંભળ્યો તે પ્રમાણે જ તમને મેં કહ્યો છે. ॥ સૂત્ર ૪૦ ॥

આઠમું અધ્યયન સમાપ્ત.

## ॥ अथ नवमम् अध्ययनम् ॥

गतमष्टममध्ययनं, साम्प्रतं नवमं प्रारभ्यते, अस्य पूर्वेण सहायं सम्बन्धः—  
पूर्वस्मिन् मायावतोऽनर्थः प्रोक्तः, इह च भोगेष्वविरतिमतोऽनर्थो विरतिमतश्चार्थः  
प्रोच्यते, इति सम्बन्धेनाथातस्यास्येदमादिसूत्रम्—‘जड्णं भंते’ इत्यादि ।

मूलम्—जड्णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्टमस्सणाय-  
ज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स  
समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पणत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं  
कालेणं चंपा नामं नयरी पुण्णभदे चेइए तत्थणं माकंदी  
नामं सत्थवाहे परिवसइ, अट्ठे जाव अपरिभूए, तस्स णं भदा

—नववा अध्ययन प्रारंभ—

अष्टम अध्ययन समाप्त हुआ । अब नौवां अध्ययन प्रारंभ होता है इस अध्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस तरहसे संबंध है पूर्व अध्ययन में कहा गया है कि जो साधु मायावी होते हैं वे अनर्थ के पात्र होते हैं अर्थात् यदि उसके महाव्रतों में थोड़ा सा भी माया शल्य है तो वे उसे यथावत् फल जनक नहीं होते हैं—अब सूत्रकार इस अध्ययन द्वारा यह प्रकट करेंगे कि जो साधु भोगों से विरक्त नहीं होता है वह अनर्थका स्थान होता है और जो विरक्त होता है वह अपने प्रयोजनरूप अर्थको प्राप्त कर लेता है । इसी संबंधको लेकर प्रारंभ हुए इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है ( जड्णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं ) इत्यादि ।

## ॥ नवमुं अध्ययन प्रारंभ ॥

આઠમું અધ્યયન પુરું થયું છે. નવમું અધ્યયન હવે આરંભ થાય છે. આઠમા અધ્યયનની સાથે આ અધ્યયનનો સંબંધ આ પ્રમાણે છે કે આઠમા અધ્યયનમાં જો વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે કે જે સાધુઓ માયાવી હોય છે તેઓ અનર્થના પાત્ર હોય છે એટલે કે જો તેના મહાવ્રતોમાં થોડું પણ માયાશલ્ય (માયા રૂપ કટો) હોય ત્યારે તેઓ તેમાં યોગ્ય ફળના અધિકારી થતા નથી. હવે સૂત્રનાર આ અધ્યયનમાં જો વાત સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છે છે કે જે સાધુ ભોગોથી વિરક્ત થતા નથી તે અનર્થનું સ્થાન થઈ પડે છે અને જે વિરક્ત હોય છે તે પેતાના પ્રયોજન રૂપ અર્થને મેળવી લે છે. આ વિષયને લઈને આરંભ થતા નવમા અધ્યયનનું આ પહેલું સૂત્ર છે—



नामं भारिया, तीसेणं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था,  
तं जहा—जिणपालिए य जिणरक्खिए य, ततेणं तेसिं मागं-  
दियंदारंगाणं अन्नया कयाई षंगयओ साहियाणं इमेयारूवे  
मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं  
पोयवहणेणं एक्कारसवारा ओगाढा सव्वत्थ वि थ णं लद्धट्ठा  
कयंकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि निययघरं हव्वमागया तं सेयं  
खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! दुवालसमंपि लवणसमुद्दं पोतवह-  
णेणं ओगाहित्तए—त्तिकंदु अण्णमण्णस्सं एयमट्ठं पडिसुणोति  
पडिसुणित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवाग-  
च्छित्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारस-  
वारा तं चेव जाव निययं घरं हव्वमागया, तं इच्छामो णं  
अम्मयाओ ! तुब्भोहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लव-  
णसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए । तएणं ते मागंदियदारए  
अम्मापियरो एवं वयासी—इमे य ते जाया ! अज्जग जाव  
परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया ! विउले माणुस्सए इट्ठी  
सक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएणं निरालंबणेणं लवणसमु-  
द्दोत्तारेणं ?, एवं खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सावसग्गा यावि  
भवइ, तं माणं तुब्भे दुवे पुत्ता ! दुवालसमंपि लवणं जाव  
ओगाहेह, माहु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ, तएणं मागं-  
दियदारगा अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—एवं खलु  
अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारसवारा लवणं जाव ओगाहित्तए,

તણં તે માર્ગંદીદારણ અમ્માપિયરો જાહે નો સંચાણંતિ બહૂહિં  
આઘવણાહિં પણવણાહિં ય આઘવિત્તણ વા પન્નવિત્તણ વા તાહે  
અકામા ચેવ ઇયમદ્દં અણુજાણિત્થા । તણં તં માર્ગંદિયદારગા  
અમ્માપિઠહિં અબ્ભણુણાયા સમાણા ગણિમં ચ ધરિમં ચ  
મેજ્જં ચ પારિચ્છેજ્જં ચ જહા અરહણગસસ જાવ લવણસમુદ્દં  
બહૂં જોઅણસયાઈ ઓગાઢા ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—શ્રી જંબૂસ્વામી પૃચ્છતિ—યદિ સ્વલુ મદન્ત ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રા-  
પ્તેન—અષ્ટમસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્યાયમર્થઃ પ્રજ્ઞસઃ, નવમસ્ય સ્વલુ મદન્ત ! જ્ઞાતાધ્યય-  
નસ્ય શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞસઃ ? શ્રી સુધર્માસ્વામી પ્રાહ—એવં સ્વલુ  
જંબૂ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ચમ્પાનામનગરી । પૂર્ણમંદ્રં ચૈત્યમ્ । તત્ર  
સ્વલુ માર્કન્દીનામ સાર્થવાહઃ પરિવસતિ ‘અદ્દે’ આદ્યઃ = પ્રમૂતધનધાન્યસંપન્નઃ,  
‘જાવ અપરિમૂદ’ યાવદપરિમૂતઃ કેનાડપ્યપરિમવનીયઃ—સર્વજનમાન્ય इत्यर्थः ।  
તસ્ય સ્વલુ મદ્રાનામ માર્યા । તસ્યાઃ સ્વ માર્યાયા આત્મજૌ દ્વૌ સાર્થવાહદારકૌ

ટીકાર્થ—જંબૂસ્વામી શ્રી સુધર્માસ્વામીસે પૂછતે હૈં કિ (મંતે) મદન્ત !  
(જહ્ણં સમણેણં જાવ સંપત્તેણં અદ્દમસસ ણાયજ્ઞયણસસ અયમદ્દે પણત્તે  
નવમ દસણં કેઅદ્દે પણત્તે) યદિ શ્રમણ મગવાન્ મહાવીરને કિ જો સિદ્ધિ  
સ્થાન કે મોક્ષા બન ચુકે હૈં અષ્ટમ જ્ઞાતાધ્યયન કા ગ્રહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે  
અર્થ પ્રતિપાદિન કિયા હૈ તો હે મદન્ત ! ઉન્હી શ્રમણ મગવાન મહાવીર  
ને કિ જો સિદ્ધિસ્થાન કે અધિપતિ બન ચુકે હૈં નૌવે જ્ઞાતાધ્યયન કા  
કયા માવ અર્થ પ્રતિપાદિન કિયા હૈ ? ( એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં ૨  
ચંપા નમં નયરી, પુણમદ્દે ચેહણ, તત્થણં માર્કંદી નામં સત્થવાહે

ટીકાર્થ—‘જહ્ણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં’ इत्यादि ॥

જંબૂ સ્વામી સુધર્માસ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે (મંતે) હે ભદ્રન્ત !

( જહ્ણં સમણે ણં જાવ સંપત્તેણં અદ્દમસસ અયમદ્દે પણત્તે નવમસસ ણં મંતે !  
નાયજ્ઞયણસસ સમણેણં જાવ સંપત્તેણં કે અદ્દે પણત્તે ? )

એ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર—કે જેઓ સિદ્ધસ્થાનના ઉપભોક્તા થઈ  
ચૂક્યા છે—આઠમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ ઉપર કહ્યા મુજબ નિરૂપિત કર્યો છે  
તો નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ તેઓએ કેવી રીતે પ્રગટ કર્યો છે ?

(એવં સ્વલુ જંબૂ ! તેણં કાલેણં ૨ ચંપા નામં નયરી પુણમદ્દે ચેહણ, તત્થણં

આસ્તામ્, 'તં જહા' તથા=તથાહિ-જિનપાલિતશ્ચ જિનરક્ષિતશ્ચ । તતઃ સ્વલુ તંયોર્માકન્દિકદારકયોરન્યદા કદાચિત્ એકંતઃ સહિતાનામયમેતદ્વ્યો મિથઃ કથા-સમુલ્લાપઃ સમુદપદ્યત-એવં સ્વલુ આવાં લવણસમુદ્રં પોતવહનેન એકાદશવારાન્

પરિવસઈ અહુ જાવ અપરિભૂષ, તસ્સ મહા નામં મારિયા ) હસ પ્રકાર જંબૂ સ્વામી કા પ્રશ્ન સુન કર શ્રી સુધમી સ્વામી અન્હે સમમ્માતે હૈં કિ જંબૂ ! સુનો-તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ તરહ સે હૈં, હસ કાલ ઓર હસ સમય મે ચંપા નામકી નગરી થી । હસમેં પૂર્ણવદ્ર નામકા ઉદ્યાન યા । હસ ચંપા નગરી મેં માકંદી નામકા સાર્થવાહ રહતા થા । યહ ધનધાન્ય સે સ્વૂબ પૂર્ણ થા । અતઃ અપરિ ભવનીય યા । કોઈ મી મનુષ્ય હસકા તિરસ્કાર નહીં કર સકતા થા-સર્વજન માન્ય થા । હનકી માર્યાકા નામ મદ્રા થા । (તીસેણં મહાણ અત્તયા દુવે સત્થવાહ દારયા હોત્યા તં જહા જિણપા લિણ્ય જિણ રક્ષિણ વ) હસ મદ્રા કે દો પુત્ર થે. ૧) જિન પાલિત (૨) જિનરક્ષિત (તત્તેણં તેસિં માર્ગંદિય દારગાણં અન્નયા કયાઈ. ઇગયઓ સહિયાણં હમે-યાલુવે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા ) એક દિન કી વાત હૈં કિ જબ યે દોનો માકંદી સાર્થવાહ કે પુત્ર એક જગહ મિલકર બેઠે હુપ થે-તવ હનમેં પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર કી વાતચીત ચલી-( એવં સ્વલુ અમ્હે

માકંદીનામં સત્થવાહે પરિવસઈ અહુ જાવ અપરિભૂષ, તસ્સણં મહા નામં મરિયા)  
આ રીતે જ'બૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને સમભવતાં કહે છે કે હે જ'બૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે ચંપા નામે નગરી હતી. તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતું. માકંદી નામે એક સાર્થવાહ તે ચંપા નગરીમાં રહેતો હતો. તે ધનધાન્યથી પૂર્ણરૂપે સમૃદ્ધ હતો, એટલા માટે તે અપરિભવનીય હતો. કેઈ પણ માણસની શક્તિ નહોતી કે તેનો તિરસ્કાર કરી શકે. તે સર્વજન માન્ય હતો. તેમનાં પત્નીનું નામ ભદ્રા હતું.

(તીસેણં મહાણ અત્તયા દુવે સત્થવાહ દારયા હોત્યા તં જહા જિણપાલિ-ણ્ય જિણરક્ષિણ વ)

તે ભદ્રાને બે પુત્રો હતા-જિનપાલિત અને જિન રક્ષિત.

(તત્તેણં તેસિં માર્ગંદિયદારગાણં અન્નયા કયાઈ ઇગયઓ સહિયાણં હમેયા રુવે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા)

એક દિવસે માકંદી સાર્થવાહના બંને પુત્રો એક જગ્યાએ બેઠા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાત ચીત કરવા લાગ્યા કે

‘ओगाढा’ अवगाहितवन्तौ=उचीर्णौ, सर्वत्रापि च खलु सर्वयात्रासु आवां  
‘लद्धद्वा’ लब्धार्थैः=प्राप्तमचुरधनौ, ‘कयकज्जा’ कृतकार्यौ=साधितधनोपा-  
र्जनदिसकलकार्यौ, ‘अणहसमग्गा’ अनघसमग्रौ = तस्करादिहेतुकविधातरहित-  
सर्वस्वी सती पुनरपि निजगृहं हव्यमागतौ=सर्वथा सकुशलं समायातौ, तत्=  
तस्मात् ‘सेयं’ भेयः=उचितं खलु आवयोः देवानुमियः ? ‘दुवालसमं पि’  
द्वादशमपि वारं लवणसमुद्रं पोतवहनेनावगाहितुम्, ‘चिकहु’ इति कृत्वा=इति  
विचार्याऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृणुतः = स्वीकुरुतः प्रतिश्रुत्य यत्रैव अम्बापितरौ  
भद्रा माकन्दी च स्तः, तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्यैवमवादिष्टाम्-एवं खलु आवां

लवणसमुद्रं पोयवहणेणं एक्कारसवारां ओगाढा सव्वत्थं वि य णं लद्धद्वा  
‘कयकज्जा’ अणहसमग्गा पुणरवि निययघरं हव्वमागया ) जहाज  
द्वारा हम लोग लवण समुद्र से होकर ११ बार परदेश जा चुके हैं-जब  
२ हम लोग बाहर परदेश गये-तब २ हमने वहाँ पर प्रचुर धन कमाया  
है और कृत कार्य होकर वहाँ से निर्विघ्न रूप में अपने घर पापिस सकु-  
शल आये हैं-( तं सेयं खलु अम्हं देवानुप्पिया । दुवाल समं पि लवण  
समुद्रं पोतवहणेणं ओगाहित्तए ) इसलिये हे देवानुमिय अब १२वीं  
बार भी हम लोग जहाज द्वारा लवण समुद्र से होकर बाहर व्यापार कर-  
ने के लिये चले-तो अच्छा है । ( सिकहुं अणमणस्स एयमहुं पडि-  
सुणेंति ) इस प्रकार का विचार कर उन दोनों ने एक दूसरे की बात को  
मान लिया ( पडिसुणित्ता जेणैव अम्मा पियरो तेणैव उवागच्छइ उवा-  
गच्छित्ता एवं वयासी एवं खलु अम्मयाओ एक्कारस वारा तं चैव जाव

( एवं खलु अम्हं लवणसमुद्रं पोयवहणेणं एक्कारसवारा ओगाढा सव्वत्थं  
वि य णं लद्धद्वा कयकज्जा अणह-समग्गा पुणरवि निययघरं हव्वमागया )

वहाल्लु वडे अमे बोडो ११ वणत देशवर भेडवा नीडल्ल्या डता अने  
आ प्रभाल्ले लांथी पुष्कण धन भेज्जुं छे. अमे पोत्ताना वेपारमां पूण्डिपे  
सकुल थधने सकुशल पाछा वेर क्ख्यां छीओ.

( तं सेयं खलु अम्हं देवानुप्पिया ! दुवालसमं पि लवणसमुद्रं पोतवहणेणं ओगाहित्तए )

ओटला भाटे छे देवाल्लुप्रिय ! १२भी वणत पल्लु आपल्ले वहाल्लुमां जेसीने  
दावल्लु समुद्रमां थधने वेपार करवा देशवर भाटे नीडणी पडीओ तो साइं थ.थ.

चि कहुं अणमणस्स एयमहुं पडिसुणेंति )

आ प्रभाल्ले विचार करीने तेओओ ओके भत थधने आ वात स्वीकरी लीधी.

( पडिसुणित्ता जेणैव अम्मापियरो तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी

हे अम्बतातौ ! एकादशवारान् तदेव यावत् निजकं गृहं हव्यमागतौ, तद् इच्छावः खलु हे अम्बतातौ ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातौ सन्तौ द्वादशं वारं समुद्रं पोतवहनेन- अवगाहितुं=समुत्तुं समुद्रयानां कर्तुमभिलषाव इत्यर्थः ।

ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ एवमवादिष्टाम्-इदं च ते 'जाया' जातौ=हे पुत्री ! 'ते' युवयोः 'अज्जग जाव' आर्यक यावत्, अत्र यावच्छब्देन 'अज्जयपज्जय-पिउपज्जयागए य बहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य विउलधणकणगरयणमणिमोत्तिय संससिलप्पवालरत्तरयणमाइए संतसारसावएज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाठं, पकामं भोत्तुं, पकामं " इति निययं धरं हव्व मागया-तं इच्छामो ण अम्भयाओ तुम्हे हि अम्भणु ण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुदं पोयवहणेण ओगाहितए ) मान कर फिर वे दोनों जहाँ माना पिता थे वहाँ गये वहाँ जाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे मात तात । हम लोग ११ वार पोतवहन द्वारा लवण समुद्र से होकर बाहर परदेश में व्यापार करने के लिये जा चुके हैं वहाँ हमने अच्छी तरह से प्रचुर धन कमाया है और बिना किसी विघ्न बाधा के वहाँ से वापिस घर सकुशल लौट आये हैं अब हमारा विचार १२<sup>वीं</sup> वार भी पोतवहन द्वारा लवण समुद्र को पार कर बाहर परदेश में व्यापार करने के लिये जानेका हो रहा है सो हम आपकी इस विषय में आज्ञा चाहते हैं-(तएणं ते मार्गदियदारए अम्मापियरो एवं वयासी-इमेय ते जाया । अज्जगं जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया । विउले माणुस्सएइड्डीसक्कारसउदए, किं मे सव्वच्चवाएण

एवं खलु अम्भयाओ एकवारसवारा तं चेव जाव निययं धरं हव्वमागया तं इच्छामोणं अम्भयाओ तुम्हेहि अम्भगुणाया समाणा दुवालसमं लवणसमुदं पोयवहणेण ओगाहितए )

એક મત થઇને તેઓ બંને ત્યાંથી માતા પિતાની પાસે ગયા અને તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે માતા પિતા ! અમે અત્યાર સુધીમાં અગિયાર વખત વડાણ વડે લવણ સમુદ્રમાં થઇને બહાર પરદેશમાં વેપાર કરવા ગયા છીએ ત્યાં બંધને અમોએ પુષ્કળ પ્રમાણમાં ધન મેળવ્યું છે અને ત્યાંથી પાછા ક્ષેમ કુશળ નિર્વિઘ્ન રૂપે ઘેર આવી છીએ. હમણા અમારો વિચાર વડાણ વડે જ ૧૨ મી વખત લવણ સમુદ્રને પાર કરીને પરદેશમાં વેપાર કરવા માટે જવાનો થઈ રહ્યો છે. તો એ માટે અમે તમારો આજ્ઞા માંગીએ છીએ.

(તएणं તે मार्गदियदारए अम्मापियरो एवं वयासी इमेय ते जाया ! अज्जगं जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया । विउले माणुस्सएइड्डीसक्कार

સહગ્રહઃ, અસ્ય છાયા—‘આર્યકપ્રાર્યકપિતૃપ્રાર્યકાગતં ચ બહુ હિરણ્યં ચ સુવર્ણં ચ કાંસ્યં ચ દૂધ્યં ચ વિપુલધનકનકરત્નમણિમૌક્તિકશ્ચ શિલામવાલરક્તરત્નાદિકં સત્સારસ્વાપતેયમ્, અલં યાવત્ આસપ્તમાત્ કુલવંશ્યાત્ પ્રકામં દાતું, પ્રકામં મોકતું, પ્રકામં ’’ ઇતિ । ‘અજ્જયપજ્જયપિતૃપજ્જયાગ’ આર્યકપ્રાર્યકપિતૃપ્રાર્યકાગતમ્; આર્યકઃ—પિતામહઃ, પ્રાર્યકઃ=પિતુઃ પિતામહઃ, પિતૃપ્રાર્યકઃ = પિતુઃ પ્રપિતામહઃ, તેભ્યઃ સકાશાદ્ આગતં=વંશપરમ્પરયા પ્રાપ્તં, ‘વહુ’ પ્રમાણતો બહુલં ‘હિરણ્યં’ હિરણ્યં=રજતં, ‘સુવર્ણં’ સુવર્ણં=પ્રતીતં, ‘કસં’ કાંસ્યં=ધાતુવિશેષઃ, ઉપલક્ષણં તામ્રાદીનામ્, ‘દૂસં’ દૂધ્યં=વસ્ત્રં ચીનાંશુકાદિકં ‘વિટલં’ વિપુલં=પ્રચુરં ધનક-  
ળગ ’ ધનં=ગવાદિ, કળકં=ધાન્યં, ‘રયણ’ રત્નાનિ = કર્કેતનાદીનિ, ‘મણિ’ મળયઃ=ચન્દ્રકાન્તાદ્યાઃ, ‘મોત્તિય’ મૌક્તિકાનિ પ્રતીતાનિ, ‘સંસ્તા’ શક્ત્વા=દક્ષિ-  
ણાવર્ત્તાઃ, પ્રસિદ્ધાઃ, ચત્રપ્રમાંવાદ વિઘ્નં નિવૃત્તિઃ કુશલમ્બુત્તિશ્ચ ભવતિ ‘સિલ્પ્ય-  
વાલ’ શિલામવાલાનિ=વિદ્રુમાણિ, ‘રચરયણ’ રક્તરત્નાનિ=પદ્મારાગાઃ, તાન્યાદૌ-  
યસ્ય તત્વાદર્શ ‘સંતસારસાવજ્જે’ સત્સારસ્વાપતેયં, સત્=વિદ્યમાનં સ્વાધીન-  
મિત્યર્થઃ, ‘સારં’=પ્રધાનં સ્વાપતેયં=દ્રવ્યં, ‘અલાહિ’ અલં=પરિપૂર્ણમ્ અસ્તિ  
કિયત્પરિમિતમ્ ? इत्याह—‘જાવ’ इत्यादिना, ‘जाव’ यावत्=यावत्परिमितम्  
‘આસપ્તમાઓ કુલવંશઓ’ આસપ્તમાત્ કુલવંશ્યાત્=અદ્યતનાદારભ્ય મવિવ્યસ્ત-

નિરાલંબણેણ લવણસંમુદોત્તારેણ ) इस प्रकार अपने दोनों पुत्रों के बचन सुनकर उनसे माता पिता ने इस प्रकार कहा—हे पुत्रों अपने यहां आर्यक, प्रार्यक एवं पितृप्रार्यकों से खला आया बहुत सा हिरण्यं सुवर्णं, कांसा तांश आदि तथा चीन आदि के वस्त्र, गाय भैंस आदि धन, गेहूँ आदि धान्य, कर्केतनादि रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणिगण, मौक्तिक, दक्षिणावर्त शंख, मृंगा, पद्माराग आदि उत्तम से उत्तम द्रव्य खूब भरा पड़ा है—इस पर अपने सिवाय किसी और दूसरे का अधिकार नहीं है। वह प्रमाण में इतना अधिक है कि आजकी पीढ़ीसे लेकर

સમુદયં કિં મે સપદ્મવાપણં નિરાલંબણેણ લવણસંમુદોત્તારેણ )

આ પ્રમ ભૂ પોતાના બંને પુત્રોની વત સાંભળીને માતૃપિતાઓએ આ રીતે કહ્યું કે હે પુત્રો ! આપણે ઘેર આર્યક, પ્રાર્યક અને પિતૃ પ્રાર્યકોથી બેકડું કરેલું ખૂબજ સોતું, કાંસુ, તાંબુ વગેરે તેમજ ચીન વગેરે દેશોનાં વસ્ત્રો, ગાય, ભેંસ વગેરે ધન, ઘઉં વગેરે ધાન્ય, કર્કેતના વગેરે રત્નો, ચન્દ્રકાંત વગેરે મણિઓ, મોતીઓ, દક્ષિણાવર્ત શંખ, પદ્મરાગ વગેરે ઉત્ત-  
મોત્તમ દ્રવ્ય પુષ્કળ પ્રમાણમાં ભર્યું છે આ સંપત્તિ ઉપર ખીન કોઇનાં અધિકાર નથી. અને તે પ્રમાણમાં જોટલી બધી છે કે તમારી આજની પેઢીથી

सप्तपुरुषपर्यन्तं 'प्रकामं दातुं' प्रकामं दातुम्=दीनदुःखिभ्योऽत्यर्थं वितरीतुम्, एवं प्रकामं भोक्तुम्=अत्यर्थं स्वस्योपभोगार्थम्, प्रकामम्=अत्यर्थं 'परिभाएत्तए' परिभाजयितुं=दायादादिभ्यो विभागं कर्तुम्, पूर्वपरम्पराप्राप्तमिदं द्रव्यं हे पुत्रौ ! युवयोर्भविष्यत्सप्तपुरुषपर्यन्तं प्रकामदानार्थं पस्पूर्णमस्तीति भावः । 'तं' तत्—तस्माद् युवाम् 'अणुहोह' अनुभवतं 'ताव' तावत्=प्रथमं 'जाया' जातौ=हे पुत्रौ ! विपुलं=प्रचुरं मनुष्यं=मनुष्यसम्बन्धीकम् 'इद्धीसकारसमुदए' ऋद्धिसत्कारसमुदयम्, ऋद्ध्या-वस्त्र सुवर्णादिना, सत्कारः=जनकृतबहुमानस्तस्य समुदयः-बाहुल्यं तम्, मनुष्यसम्बन्धिन ऋद्धिसत्कारसमुदायस्यानुभवं कुरुते युवामिति भावः, अतः 'मे' युवयोः 'सपच्चवाएणं' सप्तत्यपायेन=विघ्नबहुलेन 'निरालंबणेण' निरालम्बनेन=निष्कारणेन, विघ्नबाधोपस्थितौ त्राणार्थमालम्बनीय-

तुम्हारी सात पीढी तक के लोग उसे दीन दुःखियों को दान में देवें बैठे २ इच्छानुसार खावें पीवें हिस्सेदारों में उसका विभाग भी कर देवें तौभी वंश परम्परा से चला आया हुआ यह द्रव्य कभी समाप्त नहीं हो सकता है-हे पुत्र ! तुम्हारी सात पीढी तक के पुरुषों को यह दानादिक में वितरण करने के लिये पर्याप्त हैं । पितामह-दादा का नाम आर्यक है । पिता के पिता के पिता का नाम प्रार्थक है । पिता के प्रपितामह का नाम पितृ प्रार्थक हैं यह सब पाठ "परिभाएत्तए" के पहिले का यावत् शब्द से यहां गृहीत हुआ है । इस दिये हे पुत्रों ! तुम दोनों पहिले मनुष्य भवसम्बन्धी ऋद्धि सत्कार समुदाय का अनुभव करो । विघ्न बहुल तथा विघ्नबाधा के उपस्थित होने पर त्राण के लिये आलम्बनीयवस्तु से वर्जित ऐसे लवण समुद्र के उत्तरण से क्या तात्प

भांड़ीने सात पेढी सुधीना लोक गरीब तेमज दुःखी भाषुसोने दानमां आये, जेसीने धन्य सुज्ज आये, पीवे लेगवे अने लाग पडावनाराओमां पखु तेनी पडेअण्णी करे छतांओ वंशपरंपराथी संप्रदायेसी संपत्ति समाप्त अर्थ ज्वानी नथी । हे पुत्र ! तमारी सात सात पेढी सुधीना पुत्रपोने भाटे आ संपत्ति दान वगेरेना रूपमां वितरखु करवा भाटे पखु पर्याप्त छे । पितामह ओटले के दादाने आर्थक छडे छे । पिताना पिता अने तेना पखु पितातुं नाम प्रार्थक छे । पिताना प्रपितामहतुं नाम पितृ प्रार्थक छे । आ पाठ अर्द्धा "परिभाएत्तए" ना पडेदानी 'यावत्' शब्द पडे अहंखु करवामां आये । छे ओटला भाटे हे पुत्रो ! तमे अने पडेदां मनुष्य लवना ऋद्धि सत्कार समुदायने अनुभव करै । गहु विघ्नो युक्त तेमज विघ्नो बाधाओ आवी पडे

વસ્તુવર્જિતેન વા 'લવણસમુદ્રોત્તારેણ' લવણસમુદ્રોત્તારેણ = લવણસમુદ્રોત્તરણેન 'કિ' કિં પ્રયોજનમ્ ? ન કિમપીત્યર્થઃ, યુવાભ્યામગૈવસ્થાતવ્યં ન કુત્રાપિ ગન્તવ્યમિતિ ભાવઃ । પુનશ્ચ-एवं खलु 'पुत्ता' हे पुत्रौ । द्वादशी यात्रा 'सोवसग्गा' सोपसर्गा=सोपद्रवा विन्धवहुला चापि भवति 'तं' तत्=तस्मात् मा खलु हे पुत्रौ युवां द्वावपि द्वादशं 'लवणं जाव' लवण यावत्-लवणसमुद्रं पोतवहनेन अवगाहेयाम्, युवाभ्यां द्वादशवारं समुद्रावगाहनं न कर्त्तव्यमित्यर्थः, माहु 'न खलु युवयोः शरीरस्य 'वावत्ती' व्यापत्तिः=विनाशः 'भविस्सइ' भविष्यति, 'युवयोः शरीरे काऽपि व्यापत्तिर्न भवतु' इत्यभिप्रायोऽस्माकमिति भावः ।

ततः खलु माकन्दिकदारकौ अम्बापितरौ द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमवादिष्टाम्-एवं खलु आवां हे अम्बतातौ । एकादशवारान् 'लवण जाव' लवणं र्थ है । कारण इसका यही है कि तुम दोनों यहीं पर रहो कहीं भी मत जाओ । (एवं खलु पुत्ता । दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ तं माणं तुम्हे दुवे पुत्ता दुवालसमंपि लवणं जाव ओगाहेह माहु तुम्हं सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ ) दूसरी बात एक यह भी है कि हे पुत्रौ ! बारहवीं यात्रा सोपसर्ग-विन्धवहुल-भी होती है । इसलिये हे पुत्रौ ! तुम अब १२ वीं बार लवणसमुद्र की पोत बहन से यात्रा मत करो । मत तुम्हारे शरीर पर किसी भी प्रकार की व्यापत्ति आओ । यही हमारी भावना है । (तएणं मार्गदियदारगा अम्मापियरो दोच्चं-पि एवं वयासी ) ऐसा सुनकर उन माकन्दि दोरकों ने अपने उन माता पिता से दुवारा तिबारा भी ऐसा ही कहा- (एवं खलु अम्हे अम्मयाओ

ત્યારે તેમાંથી રક્ષા મેળવી શકાય તેવા આધારોનો પણ જ્યાં સદંતર અભાવ છે એના લવણ સમુદ્રને એળંગીને વેપાર કરવાથી શો લાભ છે ? મતલબ એ છે કે તમે બંને પુત્રો અહીં જ રહો, ક્યાંએ બીજો નહિ.

(एवं खलु पुत्ता । दुवालसमीजत्ता सोवसग्गा यावि भवइ तं माणं तुम्हे दुवे पुत्ता । दुवालसमंपि लवणं जाव ओगाहेह माहु तुम्हं सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ )

અને ખીજું એ કે હે પુત્રો ! ૧૨ મી યાત્રામાં વિન્ધો પણ બહુ જ નડતા રહે છે. એથી હે પુત્રો ! હવે તમે ૧૨મી વખત પોત વહનથી લવણ સમુદ્રની યાત્રાનો વિચાર માંડી વાળો. તમારા શરીર ઉપર કોઈ પણ બીજી આક્રમણ આવે નહિ અમારી એજ ભાવના છે.

( तएणं मार्गदियदारगा अम्मापियरो दोच्चं-पि एवं वयासी )

આ પ્રમાણે સાંભળીને માકન્દી દારકોએ ખીલ અને ત્રીજી વાર પણ પોતાના માતા પિતાને એમ જ કહ્યું કે



यावत्-लवणसमुद्रमवगाहितवन्ती यावत् तच्छ्रेयः खलु आवयोर्द्वादशं वारं पोत-  
बहनेन लवणसमुद्रमवगाहितमिति ॥

ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ अम्मापियरो यदा नो शक्नुतः बह्वीभिः  
'आधवणाहिं' आख्यापनाभिः=सामान्योक्तिभिः, 'पणवणाहिं य' प्रज्ञाप-  
नाभिः=विशेषोक्तिभिश्च 'आधवित्तए वा' आख्यापयितुं सामान्यतः प्रतिबोध-  
यितुं वा 'पणवित्तए वा' प्रज्ञापयितुं=विशेषतः प्रतिबोधयितुं वा लवणसमुद्रो-  
त्तरणतो निवर्त्तयितुं न शक्नुत इत्यर्थः, तदा 'अकामावेव' अकामैव=इच्छारहितैव  
सती एतस्म=उक्तमर्थस्म 'अणुजाणित्था' अनुजानीतः=स्वीकृतवन्ती । ततः खलु

एककारसवारा लवणं जाब ओगाहितए ) कि हे मात तात । जब हम  
लोगों ने लवण समुद्र की ११ बार पोत बहन द्वारा यात्रा करली है-तो  
अब १२ वीं बार उसकी यात्रा करने में क्या भय है । इसलिये १२ वीं  
बार उसकी पोत बहन द्वारा यात्रा करना भी हम लोगों के लिये अय-  
स्कर ही है । आप हमारी कोई चिन्ता न करें । (तएणं ते मगंदीदारए  
अम्मापियरो जाहे नो संचाएं ति बहूहिं आधवणाहिं पणवणाहिं य  
आधवित्तए वा पणवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुजाणित्था)  
इस तरह जब अपने दोनों पुत्रों को वे माता पिता अनेक विध  
आख्यापनाओं से, सामान्य कथन से, प्रज्ञापनाओं से-विशेष कथन से  
संमझाने बुझाने में समर्थ नहीं हो सके लवण समुद्र की यात्राके उनके  
विचार को नहीं बदल सकें तब उन्होंने ने उन्हें इच्छा नहीं होने पर भी  
इस अर्थ की-लवण समुद्र की पोत बहन द्वारा यात्रा करने की स्वीकृती

( एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एककारसवारा लवणं जाब ओगाहितए )

हे माता पिता ! अमे ११ वषत लवण समुद्रनी यात्रा करी आया.  
छीअे तो १२ भी वषत यात्रा करवासां लय शाने होय ? १२ भी वषतनी  
वडाणु वडे यात्रा अभास भाटे तो मंगणकारी न थये. अभासी तमे केड  
पणु जातनी चिंता करता नहिं

( तएणं ते मगंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आध  
वणाहिं पणवणाहिं य आधवित्तए वा पणवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं  
अणुजाणित्था )

आ प्रभाणु पोताना अने पुत्रोने तेओ अनेकविध आख्यापनाओ  
सामान्य कथनथी-अने प्रज्ञापनाओथी-विशेष कथनथी समलववासां असमर्थ  
थई गथां, लवण समुद्रनी यात्रा करवाना तेमना निश्चयने तेओ देवपी शक्या  
नहिं त्याहे तेओओ पोतानी छिंछा न होवा छतां वडाणु वडे लवणसमुद्रनी  
यात्रा करवानी आसा आपी छीधी.

તૌ માકન્દિકદારકૌ અમ્બાપિતૃભ્યામભ્યનુજ્ઞાતૌ સન્તૌ એકદ્વિત્રિચતુરાદિસંખ્યાક્રમેણ ગણયિત્વા દીયમાનં ક્રયાણકં=નાલિકેર પૂખીફલાદિકમ્, 'મેઝ્જં ચ' મેયં ચ=યત્ પલ-સેટિકા-હસ્તાદિના માનં કૃત્વા દીયમાનં વસ્તુજાતં-દુગ્ધઘૃત-તૈલવસ્ત્રાદિકમ્, 'પારિચ્છેઝ્જં' પરિચ્છેઝ્જં ચ=પ્રત્યક્ષતો નિકષાદિ પરીક્ષયા યદી-યમાનં તત્-સુવર્ણમણિમુક્તાદિકં ચ, એતત્સર્વં ગરિમધરિમાદિકં વસ્તુજાતં ગૃહીત્વા 'જહા અરહ્ણગસ્સ' યથા અરહ્ણકસ્ય યથા=યેન પ્રકારેણ અરહ્ણકસ્ય=અસ્યૈ-વાષ્ટમાધ્યયને વર્ણિતસ્ય શ્રાવકસ્ય વર્ણનં તથૈવાત્ર ત્રિજ્ઞેયં, 'જાવ' યાવત્ લવણસ-

દેદી । (તણં તે માર્ગન્દિય દારગા અમ્મા પિઝ્ઞહિં અઘમણુણાયા સમાણા ગણિમં ચ ધરિમં ચ મેઝ્જં ચ પારિચ્છેઝ્જં ચ જહા અરહ્ણગસ્સ જાવ લવણસમુદ્ધં વહુદ્ધં જોયણસયાદં ઓગાઢા) ઇસ તરહ માતા પિતા સે આજ્ઞાપિત હુણ વે દોનોં માકંદી સાર્થવાહ કે પુત્ર, ગણિમ, ધરિમ, મેય ઓર પરિચ્છેય રૂપ ક્રયાણક વસ્તુઓં કો પોતમેં ભરકર અરહ્ણક સાર્થવાહ કી તરહ અનેક યોજનોં તક લવણ સમુદ્રમેં નિકલ ગયે । એક દો તીન ચાર ઇસ રૂપ સે ગિનકર જો વસ્તુ લી જાતી હૈ વહ ગણિમ હૈ જૈસે નારિકેલ, સુપારી આદિ । જો તૌલ કર લી જાય વહ ધરિમ હૈ ઓર નાપકર લી જાતી હૈ વહ મેય-જૈસે દુગ્ધ, ઘૃત, તૈલ, વસ્ત્ર, આદિ । જો પ્રત્યક્ષસે પરીક્ષિત કર યા કસૌદી આદિ પર કસ કર લી જાતી હૈ વહ પરિચ્છેય હૈ-જૈસે સુવર્ણ મણિ મુક્તા આદિ । અરહ્ણક શ્રાવકકા વર્ણન ઇસી જ્ઞાતાધ્યયનંકે અષ્ટમ અધ્યયનમેં કિયા હૈ ॥ સૂ. ૧ ॥

(તણં તે માર્ગન્દિયદારગા અમ્માપિઝ્ઞહિં અઘમણુણાયા સમાણા ગણિમં ચ ધરિમં ચ મેઝ્જં ચ પારિચ્છેઝ્જં ચ જહા અરહ્ણગસ્સ જાવ લવણસમુદ્ધં વહુદ્ધં જોયણસયાદં ઓગાઢા )

આ રીતે અને માકંદી સાર્થવાહના પુત્રો માતાપિતાની આજ્ઞા મેળવીને ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેય રૂપ વેચાણ માટેની વસ્તુઓને વહાણમાં ભરીને અરહ્ણક સાર્થવાહની જેમ ઘણા યોગ્યને સુધી લવણ સમુદ્રમાં પહોંચી ગયા. ગણતરી કરીને જે વસ્તુઓ આપવામાં આવે છે તે 'ગણિમ' છે જેમ કે નારિકેર, સોપારી વગેરે. જે તોલ કરીને અને માપ કરીને આપવામાં આવે છે તે 'ધરિમ' છે, માપ કરીને અપાય તે મેય છે-જેમ કે દૂધ, ઘી, તૈલ, અને વસ્ત્ર વગેરે જે પ્રત્યક્ષ રૂપે પરીક્ષા કરીને કસૌદી વગેરે ઉપર કસીને અપાય છે તે પરિચ્છેય છે-જેમ કે સોનું, મણિ, મોતી, વગેરે. અરહ્ણક શ્રાવકનું વર્ણન જ્ઞાતાધ્યયનના આઠમા અધ્યયનમાં કરવામાં આવ્યું છે. ॥ સૂત્ર ૧ ॥

सुद्रे वहूनि योजनशतानि 'ओगाढा' अवगाढौ=अवगाहितवन्तौ नौकाया तेन  
गतवन्तावित्यर्थः ॥ सू० १ ॥

मूलम्—तएणं तेसिं मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणस-  
याइं ओगाढाणं समणाणं अणेगाइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भू-  
याति, तं जहा—अकाले गज्जियं जाव थणियसदे कालियावाए  
तत्थ समुट्ठिए, तएणं सा णावा तेणं कालियावाएणं आहुणि-  
ज्जमाणी२ संचालिज्जमाणी२ संखोभिज्जमाणी२ सलिलतिक्ख-  
वेगेहिं आयट्ठिज्जमाणी२ कोट्ठिमंसि करयलाहए विव तेदूसए,  
तत्थेव२ ओवयमाणी च उप्पयमाणी य, उप्पयमाणीविव धर-  
णीयलाओ सिद्धविज्जाविज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणीविव गग-  
णतलाओ भट्टविज्जाविज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणीविव महा-  
गरुलवेगवित्तासिया भुयगवरकन्नगा, धावमाणीविवमहाजण-  
रसियसद्वित्ताथा ठाणभट्टा आसकिसोरी, णिगुंजमाणीविव  
गुरुजणदिट्ठा वराहा सुयणकुलकन्नगा, घुम्ममाणीविव वीचोपहार-  
सयतालियां गलियलंवणाविव गगणतलाओ रोयमाणीविव  
सलिलगंदिविप्पइरमाणचोरंसुवाएहिं णववहू उवरमयभत्तया  
विलवमाणीविव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्वदुया  
महापुरवरी झायमाणाविव कवडच्छोभप्पओगजुत्ता जोगपरि-  
व्वाइया णिसासमाणीविव महाकंतारविणिग्गयपरिस्संता  
परिणयवया अम्मया सोयमाणीविव तवचरणखीणपरिभोगा  
चयणकाले देववरवहूसंचुणिणयकट्ठकूवरा भग्गमेढीमो-  
डियसहस्समाला सुलाइयवंकपरिमासा फलहंतरतडतडेंतफुट्टंत-  
संधिवियलंतलोहकीलिया सब्वंगवियांभिया परिसडियरज्जुविसरं-

तसव्वगत्ता आमगमल्लगभूया अकयपुण्णजणमणोरहोविव चिंति-  
ज्जमाणगुरुई हाहाकयकण्णधारणावियवाणियगजणकम्मगारवि-  
लविया णाणाविहरयणपणियसंपुण्णा ववूहिं पुरिससएहिं रोय-  
माणेहिं कंद० सोय० तिप्प० विलवमाणेहिं एगं महं अंतो  
जलगयं गिरिसिहरमासायइत्ता संभग्गकूवतोरणा मोडियझय-  
दंडा वलयसयखांडिया करकरकरस्स तत्थेव विद्वं उवगया,  
तएणं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपणियं  
भंडमायाए अंतोजलंमि णिमज्जावि य होत्था ॥ सू० २ ॥

टीका—ततः खलु तयोर्माकन्दिदारकयोरनेकानि योजनतानि यावल्लवण-  
समुद्रमवगाहितयोः सतोः 'अणेगाइं' अनेकानि=नानाविधानि 'उप्पाइयसयाइं'  
उत्पातश्चतानि=उपद्रवतानि प्रादुर्भूतानि, 'तंजहा' तद्यथा—'अकालेगज्जिए'  
अकाले गर्जितम्=असमये मेघगर्जनम् १, 'जाव' यावत्—'अकाले विज्जुए'  
अकाले विद्युत्=असमये विद्युद्विद्योतनम् २, 'अकाले थणियसदे' अकाले स्तनि-

'तएणं तेसिं मागंदिय दारगाणं' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तेसिं मागंदियदारगाणं) उन माकंदीके  
पुत्रों को जब कि वे (अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समणाणं) लवण  
समुद्र में अनेक योजनों तक निकल चुके थे (अणेगाइं उप्पाइयसयाइं  
पाउब्भूयाइं) अनेक-सैकड़ों उत्पात प्रादुर्भूत हुए (तं जहा) जैसे (अकाले  
गज्जियं जाव थणियसदेकालियावाए तत्थ समुट्टिए) असमय में मेघ-  
गर्जना हुई। यावत्-अकाल में विजली चमकने लगी। बिना समय के

(तएणं तेसिं मागंदियदारगाणं' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्पारपछी (तेसिं मागंदियदारगाणं) माकंदी पुत्रो-  
के ल्यारे तेथो (अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समणाणं लवण समुद्रमां  
धव्वा येअने सोधी इर पडोन्थी गया हत्ता (अणेगाइं उप्पाइयसयाइं  
पउब्भूयाइं) धव्वा से'कडोनी स'ज्यामां उत्पातो थवा मांडथा (तं जहा) जेभ  
के (अकाले गज्जियं जाव थणियसदे कालियावाए तत्थ समुट्टिए) अ'णो  
मेघ गर्जना थवा मांडी, यावत्-अ'णो आ'कशमां वीजणी ज'णूकना मांडी वधो'काल  
हते। नाह छतांये लय'कर गर्जनांयो थवा मांडी, अ'णो ज लय'कर व.वाओ'आथी  
वातावरण आ'कंत थध' ज'णू'.

तशब्दः=असमये निष्ठुरगर्जनम् ३, 'कालियावाण' कालिकावातः=असमये-  
महावातश्च ४, तत्र समुत्थितः । ततः खलु सा 'णावा' नौका=यस्यां माकन्दिक-  
दारकौ स्थितौ, तेन कालिकावातेन 'आहुणिज्जमाणी २' आधूयमाना २ पुनः  
पुनः कम्पमाना 'संचालिज्जमाणी २' सञ्चाल्यमाना २=स्थानात्-स्थानान्तर-  
नयनेन मुहुर्मुहुः प्रचाल्यमाना, 'संखोभिज्जमाणी' सङ्क्षोभ्यमाना=अधोनिप-  
त्यपुनरुद्धैस्तपतनेन पुनः पुनः क्षोभं प्राप्यमाणा 'सलिलतिक्खवेगेहि' सलिलती-  
क्ष्णवेगैः-जलतीव्रतरङ्गवेगैः 'आयट्ठिज्जमाणी २ आयत्त्यमाना २ इतस्ततो वारं-  
वारं चक्राकारेण भ्राम्यमाणा 'कोट्ठिमे' कुट्टिमे=पाषाणवद्धमूमौ 'करयलाहए'  
करतलाहृतः=इस्ततलास्फालितः 'तेदूसए विव' कन्दुकइव 'तत्थेव २' तत्रैव-  
तत्रैव-'ओवयमाणीए' अवपतन्ती = अधः पतन्ती 'उप्पयमाणीय' उत्पतन्ती=

ही घनघोर गर्जना होने लगी । बिना कालके ही भयंकर आंधी आ  
गई । ( तएणं सा णावा तेणंकालियावाएणं आहुणिज्जमाणी २ संचालि-  
ज्जमाणी संचालिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहि  
आयट्ठिज्जमाणी २ कोट्ठिमंसि करयलाहए विव तेदूसए तत्थेव २ ओव-  
यमाणीय उप्पयमाणीय ) इस कारण वह नौका उस अकालिक भयंकर  
आंधी से बार बार कंपित हो उठी बार २ एक स्थान से दूसरे स्थान  
पर डगमगाती हुई आने जाने लगी । बार बार कभी वह नीचे आती  
तो कभी ऊपर उठती ।

जल के तीक्ष्णवेग से वह कभी २ बार २ चक्राकार से इधर उधर  
घूमने लग जाती । जिस प्रकार पाषाणवद्ध भूमि ऊपर गेंद हाथसे आ-  
हत होकर नीचे ऊँचे बार २ उछलती है उसी तरह वह नौका भी कभी

( तएणं सा णावा तेणंकालियावाएणं आहुणिज्जमाणी २ संचालिज्जमाणी  
संचालिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहि आयट्ठिज्जमाणी  
कोट्ठिमंसि करयलाहएविव तेदूसए तत्थेव २ ओवयमाणीय उप्पयमाणीय )

असमयना वावाओडाथी वडाणु सतत उभमगत्ता लाउनु; बार'बार ओक  
अथाओथी असीने गीला स्थाने उभमगत्ता अता लाउनु; सतत उप्पमां डोई  
पथन ते नीचे ते डोई वपत उपर आ रीते नीचे उपर थन मांडयुं.

पाणीना तीन वेगथी क्यारेक ते नाव बार'बार पैडानी जेम आभतेम  
इशवा मांडी. जेम पथरवाणी नकर जमीन उपर डोडा डोड वडे डेडाय अने  
से बार'बार नीचे उपर थाय तेमज नाव पणु नीचे उपर उछलता मांडी.

ऊर्ध्वगच्छन्तीच, तथा सिद्धविद्याविद्याधरकन्यकेव धरणीतलाद् उत्पयमाणी' उत्प-  
न्ती=ऊर्ध्वगच्छन्ती, 'महविज्जा' भ्रष्टविद्या=विस्मृतविद्या विद्याधरकन्यकेव गगन-  
तलाद् 'ओवयमाणी' अवपतन्ती=अधोनिपतन्ती, 'महागरुडवेगवित्तासिया'   
महागरुडवेगवित्रासिता=महागरुडवेगेन भयाक्रान्ता 'भूयगवरकन्नगाविव' भूयग-  
वरकन्यकेव नागकन्येव 'विपलायमाणी' विपलायन्ती, 'महाजणरसियसहवित्त्वा'   
महाजनरसितशब्दवित्रस्ता=जनसमूहकोलाहलशब्देन भीता 'ठाणभट्टा' स्थानभ्रष्टा  
=स्वस्थानच्युता 'आसकिसोरीविव' अश्वकिशोरीव=अश्ववत्सावत् 'धावमाणी'  
धावमाना, गुरुजणदिट्ठावराहा' गुरुजनदृष्टापराधा=गुरुजनैः=मातापितृ-भ्रातरा-

२ बही २ बार २ नीचे ऊँचे उछलने लगती। (सिद्धविज्जाधरणीयला-  
ओ उत्पयमाणी विज्जाहरकन्नगा इव) उस समय वह नौका ऐसी  
ज्ञात होती थी कि मानो सिद्ध विद्यावाली कोई विद्याधर कन्या ही धर-  
णीतल से निकलकर ऊपरको उठ रही है (मह विज्जाहरकन्नगागगनत-  
लाओ ओवयमाणी विव) या जिसकी विद्याभ्रष्ट हो चुकी है जिसे  
विद्या विस्मृत हो गई है-ऐसी कोई विद्याधर कन्या मानों आकाश से  
नीचे उतर रही है-(महागरुडवेगवित्तामिया विपलायमाणी भूयग-  
वरकन्नगाइव) या गरुड के भगेत्पादक वेगसे आक्रान्त हुई मानों कोई  
नागकन्या ही इधर उधर भाग रही है (महाजणरसियसहवित्त्वा ठाण-  
भट्टा धावमाणी आस किसोरी विव) या जनसमूह के कोलाहल से  
भय भीत होकर मानों कोई घोड़ी की बछेरी ही अपने स्थान से भ्रष्ट  
होकर इधर उधर दौड़ती फिर रही है (गुरुजणदिट्ठावराहा गिगुंज माणी

( सिद्धविज्जाधरणीयलाओ उत्पयमाणी विज्जाहरकन्नगा इव ) ते वभते  
भोभांभोभां उछलती ते नाव सिद्ध विद्यावाणी के। विद्याधर कन्या पृथ्वी  
उपरवी नीकणीने उपर उठती होय तेम लागती हती ( मह विज्जा विज्जाहर  
कन्नगा गगनतलाओ ओवयमाणीविव अथवा तो विद्याभ्रष्ट थयेदी, विद्या विस्मृत  
थयेदी ओवी के। विद्याधर कन्या आकाशमांथी नीचे उतरती होय, ( महागरु  
डवेगवित्तासिया विपलायमाणी भूयगवरकन्नगा इव ) अथवा तो गरुडना  
भयेत्पादक वेगशी आकांत थयेदी के। नागकन्या व आभतेम नासभाग  
हस्ती होय, ( महाजणरसियसहवित्त्वा ठाणभट्टा धावमाणी आसकिसोरी  
विव ) अथवा तो भाषुसेना घांघाटथी लयलीत थपने के। घोड़ीनुं वछेइं तणे-  
लामांथी नासीने आभतेम हुंहुं उछलतुं होय, ( गुरुजणदिट्ठा वरहा गिगुंज  
माणी सुयणकुलकन्नगा विव ) अथवा तो कुटुम्बना वडाओ वडाओ भुंहुं

दिमिर्दष्टः=अवलोकितः अपराधः=असत्यवचनादिरूपो यस्याः सा तथोक्ता 'सुय-  
णकुलकनगाविव' सुजनकुलकन्यकेव=कुलवतीकन्येव 'णिगुंजमाणी' विगुञ्जन्ती  
=अव्यक्तशब्दकुर्वती, अधोनमन्ती वा, 'वीचीपहारसयतालियाविव' वीचीपहार-  
शतताडितेव=अनेकशतजलतरङ्गप्रहारैस्ताडितेव 'सुम्ममाणी' घूर्णमाना=थर-  
थरेति कम्पमाना, 'गगणतलाओ' गतनतलात् 'गलियबंधणाविव' गलितबन्ध-  
नेव=त्रुटितबन्धनेव-आकाशात् टित्वा पतितेवदृश्यमानेत्यर्थः, रोयमाणीविव  
सलिलगंठिविष्पहरमाणघोरंसुवाप ई णववहू उवरयमत्तुया 'रुदतीवसलिलग्रन्थि-  
विपकिरद् घोरांश्रुपातैर्नववधूरुपरतमर्तुका, 'उवरयमत्तुया' उपरतमर्तुका=धृतम-  
र्तुका नववधूरिव=नवपरिणीता वनितेव=सलिलमिश्राग्रन्थियः सलिलग्रन्थियः=  
सलिलाद्रग्रन्थयः, तेभ्योविपकिरन्तः=क्षरन्तिः, जलचिन्दवः तएव घोराश्रुपातास्तैः

सुयण कुलकनगाविव) या गुरुजनों द्वारा जिसका असत्य वचनादिरूप अपराध देख लिया गया है ऐसी कोई कुलवती कन्या ही मानों लज्जा-  
वशा नीचे की ओर झुकी जा रही है। (वीचीपहार सयतालीया विव  
सुम्ममाणी) हजारों जलतरंगों के प्रहारों से ताडित होने की वजह से  
ही मानो थर थर कंपती हुई वह नौका (गगणतलाओ गलियबंधणा  
विव) ऐसी दिखलाई दे रही थी कि बन्धन टूट जाने से आकाश से  
गिर सी पड़ी हो।

अर्थात्-जिस प्रकार बंधन टूट जाने से कोई वस्तु ऊपर से नीचे  
गिर पड़ती है-उसी तरह यह नौका भी अपना बंधन टूट जाने से मानों  
आकाश से-ऊपर से-नीचे गिर पड़ी है। (रोयमाणीविव सलिल  
गंठि विष्पहरमाण घोरंसुवापई णववहू उवर यमत्तुया) जिस प्रकार  
अपने पतिदेव के मरजाने पर नवोढा आँसुओं को बहाती हुई रोती है

आलपु' वगेरे अपराधो आलु' गया छ तेवी कोष्ठ आबन्धी ओं नीथु' आलीने  
कुणव'ती कन्या अती डोय, (वीचीपहारसयतालिया विव सुम्ममाणी) हआरे  
आल'आना प्रहारेथी अथआधने थर थर अ'ती ते नाव (गगणतलाओ गलिय  
बंधणा विव) ओवी आगती हती के आल्ले दोरी तूटी अवाथी आकाशमांथी  
नीचे पड़ी गध' डोय.

ओठे के ओम अ'धन तूटी अवाथी कोउ वस्तु उपरथी नीचे आवी पडे  
छ तेवी अ'रीते आल्ले के आ नाव पखु अ'धन तूटी अवाथी आकाशमांथी  
नीचे पड़ी गध' न डोय ?

(रोयमाणीविव सलिल गंठिविष्पहरमाणा घोरंसुवापई णववहू उवरयमत्तुया)

पोताना पतिना मृत्यु पाभ्या आढ ओम कोष्ठ नवोढा-अुवान पत्नी-

रुदतीव, 'विलवमाणी विव परचक्रायाभिरोहियापरममहन्मयाभिदुयामहापुरवरी' विलपन्तीव परचक्रराजाभिरुद्धा परममहाभयाभिद्रुतामहापुरवरी-शत्रुभूतैः परचक्र-  
राजैरमितः सर्वतो रुद्धा परिवेष्टिता, अतएव परममहाभयादभिद्रुता तत्रत्यजनानां-  
भयातानां सर्वदिक्षु कोलाहलपूर्वकं यद् अभिद्रवणं पलायनं तेनाभिद्रुता अतएव  
विलपन्ती जनानां सभयकोलाहलैः त्रिलापं कुर्वतीव यथा महापुरवरी महानगरी

इसी प्रकार उस नौका से भी सलिल से आर्द्र हुई संघियों से जल विन्दु समूह टपटप बरस रहा था—अतः मालूम पड़ता था कि मानों यह आंखों को छोड़ती हुई रोही रही है। ( विलवमाणी बिब परचवक्क रायाभिरोहिया परममहम्भयाभिद्दुया महापुरवरी ) जिस प्रकार शत्रु भूत परचक्र राजाओं से सर्व ओर से घिरी हुई कोई महानगरी बहुत अधिक भयसे अभिद्रुन होती हुई विलाप करती है अर्थात् जब कोई महानगरी शत्रु भूत राजाओं के द्वारा चारों ओर से घेरली जाती है तब वहाँ का प्रत्येक जन भय से आर्न होकर जहाँ जिस से भागते बनता है वह वहाँ रोता विलपना हुआ भाग जाता है—जनता में इस से अधिक अधिक विश्रोभ उत्पन्न होकर हाय २ आदिका शब्द उसके मुख से स्वतः निकलने लगता है अतः वह नगरी जैसे उससे आकुल व्याकुल बनजाती है—उसी प्रकार इस नौका में बैठे हुए यात्रियों के मुख से भी इस आपत्ति के समय में हाय २ आदि शब्दों के कोलाहल से वहाँ का आतावरण आकुल व्याकुल बन रहा था अतः सूत्रकार ने इस नौका के

આખોમાથી શ્રાવણ, હાઠરવાની જેમ આંસુઓની ધારા વહાવતી ઉભી હોય તેમજ તે વહાણ પણ પાણીથી ભીનું થઈને સાંધાઓમાંથી સતત જળપ્રવાહ વહાવી રહ્યું હતું એટલે એમ જણાતું હતું કે તે રહતું જ ન હોય !

( विलम्बमाणीविव परचक्करायामिरोहिया परममहम्मया मिहिया मठापुरवरी )

શત્રુ બની ગયેલા ખીબા બહારના ઘણા રાજગોથી ઘેરાયેલી કોઈ મહા-  
નગરી અત્યંત હયત્રસ્ત થઈને વિલાપ કરવા માંડે છે એટલે કે જ્યારે કોઈ  
મહાનગરી શત્રુ રાજગોથી ચોમેર ઘેરાઈ જાય છે ત્યારે નગરીમાં રહેનારી  
ફરેક વ્યક્તિ જેમ હયલીત થઈને જ્યાં જોને નાસી જવાનું સરગ પડે છે ત્યાં  
તે રહતી વિલાપતી નાસી જાય છે, પ્રજાજનોમાં ઓનાથી જુળ જ ત્રાસ ઉત્પન્ન  
થઈ જાય છે અને તેઓના મોંથી ‘હાય’ ‘હાય’ ના શબ્દો પોતાની મેળે  
નીકળવા માંડે છે. આ પ્રમાણે તે નગરી જેમ બ્યાકુળ થઈ જાય છે તેમ જ  
નાવમાં બેઠેલા યાત્રીઓના મોંથી નીકળતા ‘હાય’, ‘હાય’ ના શબ્દોથી  
ત્યાંનું વાતાવરણ બ્યાકુળ થઈ રહ્યું હતું. સૂત્રકારે આ નાવને અનેક દશમન



भवति, तद्वत्, 'झायमाणीविष कवडच्छोमप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया' कपट-  
छद्मप्रयोगयुक्ता योगपरिव्राजकाध्यायन्तीव कपटध्यानं=कुर्वन्तीव, अतएव-परमकपट-  
प्रयोगयुक्ता योगपरिव्राजिकेव=योगिनीवदृश्यमाना, 'णीसासमाणीविष महाकंतार  
विणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया' निःश्वसतीव महाकान्तारविनिर्गतपरिश्रान्ता  
परिणतवयस्का अम्वा यथा-महाकान्तारविनिर्गतेन=महावनविनिर्गमनेनापरिश्रान्ता=  
विह्वला परिणतवयस्का=वृद्धावस्थापन्ना अम्बेव=पुत्रवती मातेव निःश्वसतीव ऊर्ध्वाधो-

विषय में ऐसी कल्पना की है कि मानों यह नौका परचक्र के राजाओं से सर्व ओर से रोकी हुई महानगरी के समान अत्यन्त भय से अभिभूत बन कर बिलाप ही कर रही है । ( झायमाणी विष कवडच्छोम-  
प्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया ) यह नौका बकवत् कपट ध्यानकरने वाली योग परिव्राजिकाके सम्मान दिखलाई देती थी-जिस प्रकार कपट से ध्यान करने वाली परिव्राजिका क्षण भर के लिये कभी स्थिर हो जाती है और कभी अस्थिर-एक सी वृत्ति उसकी नहीं रहती इसी तरह नरोड़ों से चंचल बना हुई वह नौका भी क्षण भरके लिये स्थिर हो जाती थी और फिर अस्थिर बन जाती थी एक सी वृत्ति उसकी नहीं थी ।

( जीसासमाणी विष महा कंतार विणिग्गय परिस्संता परिणयवया अम्मया ) महा भयंकर जंगल में ऊंची नीची भूमि पर चलने से परिश्रान्त हुई जैसे वृद्धावस्थापन्न पुत्र वती माता दीर्घ निश्वासो को छोड़-

રાબઝોથી આઠાંત થયેલી તેમજ ભયત્રસ્ત થયેલી મહાનગરીની સરખામણી એટલા માટે જ કરી છે.

( જ્ઞાયમાણી વિષ કવડછોમપ્પઓગજુત્તા જોગપરિવ્વાઈયા )

આ નાવ બગલાની જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી યોગ પરિવ્રાજિકાની જેમ લાગતી હતી એટલે કે જેમ કપટ ધ્યાન કરનારી પરિવ્રાજિકા થોડી ક્ષણો માટે સ્થિર થઈ બચ છે અને પછી તરત જ અસ્થિર મનવાળી થઈ જાય છે. તે સ્થિરતાપૂર્વક મનને સ્થિર રાખી શકતી નથી તેમ આ નાવ પણ ચોળાંઝોથી ચંચળ થઇને થોડી ક્ષણો સ્થિર બની જતી અને પાછી તરત જ અસ્થિર થઈ જતી હતી, એક સરખી સ્થિતિમાં રહી શકતી જ નહોતી.

(જીસાસમાણી વિષ મહાકંતારવિણિગ્ગયપરિસ્સંતા પરિણયવયા અમ્મયા)

મહા ભયંકર વનવગડામાં ઉંચી નીચી ધરતી પર ચાલનારી પરિશ્રાન્ત થયેલી, ધરકી થયેલી પુત્રવતી માતા જેમ દીર્ઘ નિશ્વાસો બહાર કાઢતી હથ-

ગમનવતી, 'સોયમાળી વિવ તવ ચરણલીળપરિભોગા ચયણકાલે દેવવરવહૂ' શોચન્તીવ તપશ્ચરણલીળપરિભોગા ચ્યવનકાલે દેવવરવહૂ:-તપશ્ચરણલીળપરિભોગા=શુક્તતપ-શ્ચરણફલા ચ્યવનકાલે=દેવભવસ્થિતિસયસમયે દેવવરવહૂરિવ શોચન્તી=તદ્વસ્થિ-ત્તજનવિષાદયોગાત્ શોકં કુર્વતીવ દ્રશ્યતે । પુનઃ સા નૌકા કીદશી ગાતા इत्याह- 'સંચુણિયકટ્ટકૂચરા' इत्यादि । 'સંચુણિયકટ્ટકૂચરા' સંચૂર્ણિતકાષ્ટકૂચરા સંચૂર્ણિતાનિ=અત્યર્થે ચૂર્ણી ભૂતાનિ કાષ્ઠાનિ કૂચરં ચ=મુલં યસ્યાઃ સા તથા, 'મગ્ગમેઢી' મગ્ગમેધિઃ મગ્ગનઃ= ટિતઃ મેધિઃ=સકલનૌકાધારભૂતઃ સ્તમ્મો યસ્યાઃ સા તથા, 'મોહિયસહસ્સમાલા' મોહિતસહસ્સમાલા-મોટિતઃ=મગ્ગનઃ સહસ્સમાલાઃ=સહસ્સસંખ્યજનાધારભૂતો માલઃ=ઉપરિતનભાગો યસ્યાઃ સા તથા, 'સૂલાહ્યવંકપરિમાસા' શૂલાચિતવક્રપરિમાસા શૂલાવિતહ્વ=શૂલારોપિતહ્વ વક્રઃ=કુન્નઃ પરિમાસઃ

તી હુઈ લઢ્ઢલહાને લગ જાતી હૈ-ઉસી પ્રકાર યહ નૌકા ખી તરંગો સે આહત હોકર માનોં થકાવટ કી વજહ સે હી ચલને મેં લઢ્ઢલહા રહી થી । ( સોયમાળી વિવ તવચરણલીળપરિભોગા ચયણકાલે દેવવરવહૂ ) તપશ્ચરણકા જિસને ફલ ભોગ લિયા હૈ-ઑર અવ જિસકે ચ્યવન કા સમય આ ગયા હૈ એસી દેવાજ્ઞના જિસ પ્રકાર શોક સે વ્યાકુલ-ચંચલ-ચન જાતી હૈ ઉસી પ્રકાર યહ નૌકા ખી બિલકુલ ચંચલ બન ગઈ થી । ( સંચુણિય કટ્ટકૂચરા ) ઉસ સમય ઇસ નૌકા કે કાષ્ટ ઓર કૂચર મુલ-ચૂર્ણી ભૂત બન ચુકે થે । ( મગ્ગમેઢી ) ઇસકા અપના સકલ આધાર ભૂત સ્તંભ ઢૂટ ચુકા થા । ( મોહિય સહસ્સ માલા ) સહસ્સસંખ્યજનોં કા આધાર ભૂત ઉપરિતન ભાગ ઇસકા મગ્ગન હો ચુકા થા । ( સૂલાહ્ય વંક પરિમાસા ) શૂલ પર આરોપિત કિયે હુપ કે સમાન ઇસકા પરિ-

હીયાં ખાવા માંડે છે તેમજ તે નાવ પણ મોભંઓથી અથડાઈને બાણે કે થાડીને લથડીયાં ખાવા ન માડી હોય ।

( સોયમાળી વિવ તવચરણલીળપરિભોગા ચયણકાલે દેવવર વહૂ )

તપસુ ક્ષણ બેણે ભોગવી લીધું છે અને હવે પતન થવાનો સમય આવવાથી દેવાંગના બેમ શોક વ્યાકુળ-ચંચળ થઈ બાથ છે, તે પ્રમાણે જ આ નાવ પણ અચળ બની ગઈ હતી. ( સંચુણિયકટ્ટકૂચરા ) મોભંઓથી અથડાતાં અથડાતાં ત્યાં સુધી નાવના કાષ્ટ અને કૂચર-મુખ નાશ પામ્યાં હતાં. ( મગ્ગમેઢી ) નાવનો આધાર ભૂત સ્તંભ ( થાંભલો ) તૂટી પડ્યો હતો. ( મોહિયસહસ્સમાલા ) હાથે માણસો ન્યાં આશ્રય મેળવી શકે તેવો નાવનો ઉપરનો ભાગ તૂટી ગયો હતો. ( સૂલાહ્યવંકપરિમાસા ) શૂલ ઉપર મૂકવામાં

काष्ठविशेषो यस्याः सा तथा, 'फलहंतरतडतडेंटफुडंतसंधिविगलंतलोहकीलिया' फलवान्तरेषु संयोजितफलकविवरेषु 'तडतडे' ति शब्दं कुर्वन्त्यः, स्फुटन्तो= विघटमानाः सन्धयः, अतएव विगलन्त्यो=निससरन्त्यो लोहकीलिका यस्याः सा तथा, 'सव्वंगवियंमिया' सर्वाङ्ग विजृम्भिता=सर्वाङ्गैः=सर्वाङ्गवैः विजृम्भिता= विद्वत्सुखा जाता या सा तथा, 'पडिम्मडियरज्जू' परिशदितरज्जुः=गलितरज्जु-वती अतएव 'विसरंतसव्वगत्ता' विसरत्सर्वगात्रा=विशीर्यमाणसर्वाङ्गवया, आम-गमल्लगभूया' आमकमल्लभूता=अपक्वशरावसदृशा, 'अकयपुण्णजणमणोरहो विव' अकृतपुण्यजनमनोरथ इव, अकृतपुण्यः=हीनपुण्यो यो जनस्तस्य मनोरथ इव 'चित्ति-ज्जमाणगुरुइ' चिन्त्यमानगुर्वी चिन्त्यमाना- 'कथमेतामापदं तरिप्पामी' ति-विचार्यमाणेव गुर्वी=चिन्तामारेणेव गुरुका, 'हाहाकयकण्णधारणावियवाणिय-

मास काष्ठविशेष देहा हो गया था। ( फलहंतरतडतडेंटफुडंतसंधिवि-गलंतलोहकीलिया) काष्ठके पट्टियोंको परस्पर जोड़नेके लिये जो संधियों में लोहेके बड़े कीले लगे हुए थे वे सब जब उसकी संधिया-जाड़ विघ-टित हो गई तब उनमें बाहर निकल आये थे (सव्वंगवियंमिया) अतः समस्त इसके जुड़े हुए अवयव खुल गये थे। ( परिशदियरज्जू ) जित नी भी इस में रस्सियां लगी हुई थी वे सब की सब गल चुकी थीं। ( विसरंतसव्वगत्ता ) इससे समस्त जोड़ खुल गये थे। ( आम गमल्लक भूया ) यह कच्चे मिट्टी के शरबाके समान हो गई थी। ( अक-य पुण्ण जणमणोरहो विव ) अकृत पुण्य वाले मनुष्य के मनोरथ के समान यह निष्फल बन गई थी। ( चित्तिज्जमाण गुरुइ ) मैं इस आप-त्ति को अब कैसे पार करूंगी इस चिन्ता से ही मानों यह बहुत भारी

आवेदानी जेभ परिभास नाभनुं काष्ठ विशेष-त्रांसु थयं गयुं डंतुं. ( फल हंतर तडतडेंट फुडंत संधि विगलंतलोहकीलिया ) हाउडाना पाटीयाओने ओक भीमनी साथे तेना सांधा भेणववा जे दोअ'डना भोटा भीदाओ काममां देवाय छे'ते भधा पाटीयाओ ब्यारे लुहा लुहा थयं गया त्यारे भडार नीकणी आब्या डता. ( सव्वंग वियमिया ) आ प्रभाणु नावना भधा जेडाओला सांधाओ लुहा थयं गया डता. ( परिशदियरज्जू ) तेनी भधी दोरीओ कडोपाथ थडी डती. ( विसरंतसव्वगत्ता ) तेना भधा सांधाओ छटा पडी गया डता. ( आम गमल्लकभूया ) ते भंटीना काथा केडियांणी जेभ थयं गयं डती. ( अकयपुण्ण जण मणोरहाविव ) ओथं यणु द्विसे जेणु ओकेंय पुण्ययुं काम कयुं नधी ओवा भाणुडना मनोरथनी जेभ ते निष्फल थयं गयं डती. ( चित्तिज्जमाण गुरुइ ) आवी पडेली आइतने सामने हुं केवी रीते करीश ? नाणु के आ

ગજજનકમ્મગારવિલવિઆ ' હાહાકૃતકર્ણધારનાવિકવાણિજકજનકર્મકરવિલપિતા  
હાહાકૃતૈઃ=હાહાકારયુકૈઃ, કર્ણધારૈઃ=નિર્યામકૈઃ, નાવિકૈઃ=પોતવાહકૈઃ, વાણિજક-  
જનૈઃ=વ્યાપારિજનૈઃ, કર્મકરૈઃ=મૃત્યૈઃ વિલપિતા=વિલાપયુક્તા-કર્ણધારાદીનાં હાહા  
કારેણ વિલાપં કુર્વતીત્યેત્યર્થઃ ' ણાણાવિહરયણપણિયસંપુણ્ણા ' નાનાવિષૈઃ રત્નૈઃપણ્યૈશ્ચ=  
વિક્રમ્યવસ્તુજાતૈઃ સમ્પૂણ્ણા=સમ્પૂતા, વહુમિઃ પુરુષશૈઃ રુદ્ધિઃ કુન્દધ્વિઃ શોચધ્વિઃ,  
'તિપ્પમાણેહિં' તેપમાનૈઃ=અશ્રુણિ મુચ્ચધ્વિઃ વિલપધ્વિઃ,=વિલાપં કુર્વધ્વિઃ, એકં મહત્  
' અંતોજલગયં ' અન્તર્જલગતં=જલમધ્યસ્થિતં ગિરિશિખરમાસાય=સંઘટ્ટય ' સંમગ્ગ-  
કૂવતોરણા ' સંમગ્નકૂવતોરણા-સંમગ્નઃ=ત્રુટિતઃ કૂપઃ=કૂપસ્તમ્ભઃ-યત્ર સિતપટો

ધન : ઈ થી ( હા હા કચકળધારણા વિવ વાણિયગજજનકમ્મગાર  
વિલવિયા ) હસ મેં જો કર્ણ ધાર, નાવિક, વ્યાપારિજન એવં નૌકર-  
ચાકર બેઠે હુપ થે વે સબ કે સબ હાહાકાર કરતે હુપ વિલાપ કર રહે  
થે— અતઃ એસાં માલૂમ હોતા થા કિ ઉનકે હાહાકાર વિલાપોં સે યહ  
નૌકો સ્વયં વિલાપ કર રહી હૈ । ( ણાણા વિહરયણપણિય સંપુણ્ણા ) અ-  
નેક પ્રકાર કે રત્નોં સે એવં પણ્ય દ્રવ્યોં સે-વિક્રેય્યવસ્તુઓં સે-યહ  
નૌકા મરી હુઈ થી । ( રોયમાણેહિં કંદં સોય તિપ્પં વિલવમાણેહિં  
બહ્વહિં પુરિસપહિં એગં મહં અંતોજલગયં ગિરિસિહરમાસાયહ્તા ) રુદન  
કરનેવાલે, આક્રન્દન કરનેવાલે, શોક કરનેવાલે, આંસુઓં કો વહાને-  
વાલે એસે સૈકડોં પુરુષોં સે મરી હુઈ યહ નૌકા એક બડે મારી જલકે  
મીતર રહે હુપ ગિરિકે શિખર સે ટકરા ગઈ-ટકરાતે હી ( સંમગ્ગકૂવ-

બતની ચિંતાથી જ તે નાવ ભારે વજનહાર થઈ પડી હતી. ( હા હા કચ  
કળધારણ વિવ વાણિયગજજનકમ્મગારવિલવિયા )

તેમાં બેઠેલા કણુધાર, નાવિક, વેપારીઓ અને બીજા નૌકર ચાકરો હાથ,  
હાથ, કરીને વિલાપ કરી રહ્યા હતા એથી એમ લાગતું હતું કે બાણે તેઓના  
વિલાપથી જ આ નાવ પોતે વિલાપ કરતી ન હોય ! ( ણાણાવિહરયણ પણિય  
સંપુણ્ણા ) ઘણી બતનાં રત્નો અને વેચાણની વસ્તુઓથી આ નાવ પૂરેપૂરી ભરી  
હતી ( રોયમાણેહિં કંદં સોયં તિપ્પં વિલવમાણેહિં બહ્વહિં પુરિસપહિં એગં મહં  
અંતોજલગયં ગિરિસિહરમાસાયહ્તા )

રહેનારા, કરુણ આકંઠ કરનારા, શોકથી પીડાતા, ચોધાર આંસુઓ  
વહેવડાવનારા, વિલાપ કરનારા એવા સેંકડો માણસોથી ચિહ્નાર ભરેલી તે નાવ  
આખરે પાણીની અંદરના જ પર્વત શિખર (ખડક) સાથે અથડાઈ પડી અને  
અથડાતાંની સાથે જ ( સંમગ્ગકૂવતોરણા તેના કૂપસ્તમ્ભો અને તોરણો તરી

बध्यते सः, तथा तोरणानिच त्रुटितानि यस्याः सा तथा—‘मोडियझयदंडा’ मोडि-  
तध्वजदण्डा=त्रुटितध्वजकाष्ठा, ‘बलयसयखंडिया’ बलकशतखण्डिता बलकानां=  
दीर्घदाहणां शतानि खण्डितानि यस्याः सा, ‘करकस्स’ करकरेति शब्दं कुर्वाणा  
तत्रैव समुद्रे ‘विद्वं=विलयम् उपगता=माप्ता जले त्रुडितेत्यर्थः। ततः खलु  
तस्यां नौकायां भिद्यमानायां=त्रुडितायां सत्यां बहवः पुरुषाः ‘विउलपाणियं’ विपु-  
लपणितं=विपुलं=प्रचुरं पणितं=पण्यद्रव्यं विक्रय द्रव्यम् यस्मिन् तत् तादृशं भाण्ड-  
मादाय ‘अंतोजलंसि’ अन्तर्जले=जलमध्ये ‘निमज्जाविय’ निमग्नाः=त्रुडिता अपि  
बभूवन् ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं ते मागंदियदारगा छेया दक्खा पत्तट्टाकुसला  
मेहावी णिउणसिप्पोवगया बहुसु पोतवहणमुंपराएसु कयक-  
रणं लद्धविजयाअमूढा अमूढहत्था एणं महं फलगखंडं आसा-  
देति, जंसि च णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने तंसि च णं  
पदेसंसि एगे महं रयणदीवे णामं दीवे होत्था अणेगाइं जो-  
यणाइं आयामविकलंभेणं अणेगाइं जोअणाइं परिकखेवेणं

तोरेणा) इसके कूपस्तंभ और तोरण भग्न हो गये (मोडियझयदंडा)  
ध्वजा दंड टूट गया (बलयसयखंडिया) बड़े २ लंबे २ सैकड़ों काष्ठखं-  
डित हो गये (करकरस्सतत्येव विद्वं उवगया) और यह कर २ शब्द  
करती हुई वहीं पर डूब गई। (तएणं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे  
पुरिसा विपुलपणियं भंडमायाए अंतोजलंसि निमज्जाविय होत्था) इस  
तरह उस नौका के डूब जाने पर अनेक पुरुष प्रचुरपण्य द्रव्यवाले भाण्ड  
को लेकर जलके बीच में निमग्न हो गये ॥ सूत्र २ ॥

गयां. (मोडियझयदंडा) ध्वज दंड टूटी गये. (बलयसयखंडिया) मोटी  
मोटी विशाल धांभां से कंडा काष्ठ टूटी गयां (करकरस्स तत्येव विद्वं उवगया)  
अने ते नाव ‘कर कर’ शब्द करती त्यां पाणीमां डूबी गई.

(तएणं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपणियं भंडमायाए  
अंतोजलंसि निमज्जाविय होत्था)

आ रीते नाव डूबी जावाथी धव्वा भाबुसे उष्ण प्रभाबुमां द्रव्येथी  
अरेता वासव्वा साथे पाणीमां निमग्न अर्थ गया. ॥ सूत्र “ २ ” ॥

णाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासाइए ४, तस्स णं बहुम-  
 उद्देसभाए तत्थ णं एगे महं पासायवडेंसए होत्था अब्भु-  
 म्गयमूसियए जाव सस्सिरीए सुरूवे पासाईए ४, तत्थणं  
 पासायवडेंसए रयणदीवे देवया नामं देवया परिवसति पावा  
 चंडा रुहा साहासिया, तस्स णं पासायवडिसयस्स चउदिसि  
 चत्तारि वणसंडा किण्हा किण्हाभासा, तएणं ते मार्गदियदारगा  
 तणं फलयखंडेणं उव्वुब्बमानार रयणदीवं तेणं संवूढा यावि  
 होत्था, तएणं ते मार्गदियदारगा थाहं लभंति लभित्ता मुहुत्तं-  
 तरं आससंति आससित्ता फलखंडं विसज्जेति विसज्जित्ता  
 रयणद्वावे उत्तरंति उत्तरित्ता फलाणं मग्गणगवेसणं करेति  
 करित्ता फलाइं गिण्हंति गिण्हित्ता आहारोति आहारित्ता णालि-  
 एराणं मग्गणगवेसणं करेति करित्ता नालिएराइं फोडोति फोडित्ता  
 नालिएरतेल्लेणं अण्णमण्णस्स गत्ताइं अब्भंगोति अब्भंगित्ता  
 पोक्खरणी ओगाहिति ओगाहित्ता जलमज्जणं करेति करित्ता जाव  
 पच्चुत्तरंति पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयंसि निसीयंति निसोइत्ता  
 आसत्था वसित्था सुहासणवरगया चंपानयरिं अम्मापिउ  
 आपुच्छणं च लवणसमुदोत्तारं च कालियवायसमुत्थणं च पोत-  
 वहणविवत्ति च फलयखंडस्स आसायणं च रयणदीवुत्तारं च  
 अणुचितेमाणार ओहयमणसंकप्पा जाव झियावेन्ति, तएणं  
 सा रयणदीवदेवया ते मार्गदियदारए ओहिणा आभोएइ  
 आभोइत्ता असिफलवग्गहत्था सत्तट्टतालप्पमाणं उड्डं वेहासं

उप्पयइ२ ताते उक्किट्ठाए जाव देवगईए वोइवयभाणी२ जेणेव  
 मागंदियदारए तेणेव आगच्छइ आगच्छित्ता आसुरुत्ता ते  
 मागंदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहि एवं वयासी—हं भो  
 मागंदियदारया ! अप्पत्थियपत्थया जइ णं तुब्भे मए सद्धिं  
 विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह तो भे अत्थि जीविअं,  
 अहण्णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा नो  
 विहरह तो भे इमेणं निलुप्पलगवलगुलियअयसिक्कुसुमप्पगा-  
 सेणं असिणा खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउयाहि  
 उवसोहियाइं तालफलाणीव सीसाइं एगंते एडेमि, तएणं ते  
 मागंदियदारगा रयणदीव देवयाए अंतिए सोच्चाभीया करयल०  
 एवं जण्णं देवाणुप्पिया ! वइस्ससि तस्स आणाउववायवयण-  
 निदेसे चिट्ठिस्सामो, तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-  
 दारए गेण्हति२ जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ२  
 असुभपोग्गलावहारं करेइ२ सुभपोग्गलपक्खेवं करेइ करित्ता  
 पच्छा तेहिं सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरति  
 कल्लाकल्लि च अमयफलाइं उवणेइ ॥ सू०३ ॥

टीका—ततः खलु तौ माकन्किदारकौ 'छेया' छेकौ=चतुरौ 'दक्खा'  
 दक्षौ=निपुणौ, 'पत्तट्ठा' प्राप्तार्थौ=प्राप्तः=ज्ञातः अर्थः=भावो याभ्यां तौ 'कुसला'

‘तएणं ते मागंदिय दारगा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते मागंदियदारगा) उनदोनों माकंदि  
 यदारकों ने कि जो (छेया, दक्खा, पत्तट्ठा, कुसला, मेहाबी, निउणसिप्पो-

‘तएणं ते मागंदियदारगा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थार णाह (ते मागंदियदारगा) तेओ अने मागंदिय  
 दारकोओ—के ओओ।

कुशलौ=सकलकलाविज्ञौ 'मेधावी' मेधाविनौ=मुषियो णिउणसिप्पोवगया ' निपुणशिल्पोपगतौ=तरणादिविद्यानिपुणौ बहुषु=अनेकेषु ' पोयवहणसंपरायेषु ' पोतवहनसंपरायेषु = पोतवहनस्य=नौकातरणस्य संपरायेषु = विघ्नेषु समुपस्थितेषु ' कयकरणा ' कृतकरणौ=कृतकार्यौ बहुशोऽनुसृतसंतरणकार्यौ, ' लद्धविजया ' लब्धविजयौ=समुद्रपारगमनेन प्राप्तविजयौ 'अमूढा' अमूढौ=तरणादिक्रिया विवेकसम्पन्नौ ' अमूढहत्या ' अमूढहस्तौ=तरणक्रियाकुशलहस्तौ एकमहत् फलकखण्डं काष्ठमयम् ' आसादेति ' आसादयतः=आलम्बितवन्तौ० । यस्मिंश्च खलु प्रदेशे तत् पोतवहनं=प्रवहणं ' विवन्ने ' विपन्नं=मग्नं तस्मिंश्च खलु तस्मिन्नेव प्रदेशे एको महात् रत्नद्वीपो नाम द्वीपः ' होत्या ' आसीत्, स कीदृशः ? इत्याह-

वगया, बहुषु पोतवहणसंपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा, अमूढहत्या एगं महं फलगखंडं आसादेति ) बडे चतुर थे, दक्ष थे, भावों को जानने वाले थे, सकल कलाओं के ज्ञाना थे, मेधावी थे, तरणादि विद्या में विशिष्ट योग्यता संज्ञ थे, पोत संचालन में उपस्थित हुए विघ्नों को पार करने वाले थे, अर्थात् ऐसी स्थितिमें जिन्होंने संस्तरण कार्य अनेक बार अभ्यस्त कर रखा था, समुद्रपार करने में जिन्हें विजय मिली थी, तरणादि क्रिया का विवेक जिन्हें बहुत अच्छी तरह था, जिनके हाथ तैरने में कमी थकने नहीं थे-जो तरण क्रिया में बडे कुशल थे, एक बडे भारी काष्ठफलक खंड को प्राप्त कर लिया । ( जंसिच णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने तंसिच णं पदेसंसि एगे महं रयणहीवेणामं दीवे होत्या, अणेगाहं जीअणानि आयामचिक्खंभेणं अणेगाहं जोअ-

( छेया, दक्खा पत्तडा, कुसला मेधावी निउण सिप्पोवगया बहुषु पोतवहण संपराएसु कयकरणा, लद्धविजया अमूढा अमूढहत्या एगं महं फलग खंडं आसादेति

पूथ न चतुर होता. दक्ष होता, भावोने जानना होता, अधी कलाओंमें निष्णुत होता, मेधावी होता, तरवा वजेरेनी कणाओंमें निपुण होता, पोत संचालनमें बख्खे आवी पड़ेला विघ्नो दूर करी शक्कानी शक्ति धरायता होता ओटले के ओवी परिस्थितिमें पणु डिभत न हारतांगसे ते रीते तरीने पणु समुद्र पार करवामें शक्तिशाणी होता. तरवानी क्रियामें ओओ विशेष कुशल होता, तरती वभने पणु नेमना हाथो कोर्छ पणु स्थितिमें थाकता न नहि. तरवामें ओओ पूथ न कुशल होता-ओक मोटा लाकडाना पाटियाने पकड़ी लीधुं

( जंसि च णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने तं सि च णं पदेसंसि एगेमहं रयणहीवेणामं दीवे होत्या, अणेगाहं जोअणाहं परिकखेवेणं णाणा दुमसंडमंदि-उवेसे सस्सिरीए पासाइए ४ )



‘अणेगाहं’ इत्यादि-अनेकानि योजनानि आयामविष्कम्भेण=दैर्घ्यपरिणाहेन, अनेकानि योजनानि परिक्षेपेण=परिधिना, नानाद्रुमषण्डमण्डितोद्देशः=अनेकवन-षण्डमण्डितप्रदेशः सश्रीकः=शोभासम्पन्नः, प्रासादीयः=मनः प्रसन्नता हेतुत्वात्, दर्शनीयः=नेत्राढादकत्वात्, अभिरूपः=अपूर्वसौन्दर्यवत्त्वात्, प्रतिरूपः=प्रशस्ताकृति-कत्वात्० । तस्य खलु द्वीपस्य बहुमध्यदेशभागे=मध्यस्थले तत्र खलु एको महान् प्रासादावतंसकःश्रेष्ठप्रासादो आसीत्० । स कीदृशः ? इत्याह-‘अभ्युगय । इत्यादि-‘अभ्युगयं’ अभ्युद्गतः=विशालः ‘ऊसियए’ उच्छ्रितकः=गगनतलस्पर्शी यावत् सश्रीकः=गुरूपः=शोभनाकारः प्रासादीयः ४ । तत्र खलु प्रासादावतंसके रत्न-द्वीपदेवता नाम देवता ‘रयणादेवी’ इति प्रसिद्धा देवी परिवसति=निवासं

णाहं परिक्रमेवेणं णाणादुमसंडमंडिउद्देशे सस्सिरिए पासाहए ४ ) जिस प्रदेश में वह पोतबहन भग्न हुआ था, उसी प्रदेश में एक बड़ा भारी रत्नद्वीप नाम का द्वीप था । इसका आयाम और विष्कम्भ अनेक योजन का था । परिधि भी इसकी अनेक योजन की थी । नाना प्रकार के वृक्षों के समूह से इस का भीतरी बाहिरी प्रदेश हरा भरा बना हुआ था । यह द्वीप बहुत ही शोभासंपन्न था । मन को प्रसन्न करनेवाला था । दर्शनीय था । तथा अपूर्व सौन्दर्य से युक्त था । एवं आकृति में भी यह बड़ा अभिराम था । (तस्स णं बहुमज्झदेसमाए तत्थणं एगे महं पासायवडेंसए होत्था-अभ्युगयमूसियए जाव सस्सिरिए सुरुवे पासाईए ४) इस द्वीप के ठीक मध्य भाग में एक विशाल श्रेष्ठ प्रासाद था । यह बहुत अधिक ऊँचा था । अपनी ऊँचाई से यह आकाश तक को स्पर्श करता था । बहुत सुन्दर था । दर्शनीय आदि विशेषणों वाला था । (तत्थ णं

नाव ज्ज्यां इणी डत्ती तेनी आसपासना प्रदेशमां ओक अहु भोटो रत्नद्वीप नामे द्वीपडत्तो. आ द्वीपनो आयाम अने विष्कंभा वण्णा योज्जेना सुधी विस्तार पाभेत्तेा डत्तो. आ द्वीपनी परिधि पण्ण वण्णा योज्जेना सुधीनी डत्ती. वण्णी जत्तना वृक्षाना समूहोत्थी ते द्वीपनो अंदर अने अहारनो भाग दीप्पो छम डेप्पात्तेा डत्तो. ते द्वीप भूण न् सुंदर डत्तो. मनोहर डत्तो, मनने प्रसन्न करे तेवो डत्तो, दर्शनीय डत्तो. अपूर्व सौंदर्यत्थी ते युक्त डत्तो तेमज्ज आकारमां पण्ण ते अत्यंत सुंदर डत्तो.

( तस्स णं बहुमज्झदेसमाए तत्थणं एगे महं पासायवडेंसए होत्था-अभ्युगय मूसियए जाव सस्सिरिए सुरुवे पासाईए ४ )

ते द्वीपनी वज्जे ओक विशाल उत्तम भडेल डत्तो ते भूण न् छत्थो डत्तो. पोतानी छत्थाडत्थी ते आकाशने पण्ण स्पर्शत्तेा डत्तो ते भूण न् सुंदर डत्तो. दर्शनीय वगेरे विशेषताओत्थी युक्त डत्तो.

करोति । सा कीदृशी ? इत्याह—‘ पावा ’ इत्यादि—‘ पावा ’ पापा=पापकर्मकर्त्री स चण्डा=अत्यन्तकोपशीला, रौद्रा=हिंसादिक्रूरकर्मकारिणी, साहसिका=अविचार्य-कारिणी । तस्य खलु प्रासादावतंसकस्य चतुर्दिक्षु चत्वारो वनषण्डा आसन्, ते कीदृशाः ? इत्याह—‘ किण्हा ’ इत्यादि—कृष्णाः=वृत्तनमेघवर्णाः, कृष्णावभासाः= अतिहरितत्वेनावभासमानकृष्णकान्तयः, इत्यादि । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तेन फलकदण्डेन ‘ उव्वुज्झमाणा २ ’ उदुह्वमानौ २ उपरिजले वहन्तौ २ तरन्तौ २, रत्नद्वीपान्ते खलु=रत्नद्वीपमभीपे ‘ संवुद्धा ’ संव्यूढौ=समागतौ चाध्यास्ताम् ।

ततः खलु तत्र तौ माकन्दिकदारकौ ‘ थाहं ’ रताधं=समुद्रतलं लभेते=पादाभ्यां स्पृष्टवन्तौ लब्ध्वा मुहूर्त्तान्तरम्=अन्तर्मुहूर्त्तम् आश्वस्तः=विश्रामं कुरुतः, आश्वस्य पासायवडेंसए रयणदीवे देवया नामं देवया परिवसति, पावा, चंडा रुद्धा, साहसिया तस्स णं पासायवडेंसयस्स चउदिसि चत्तारिवणसंडा किण्हा, किण्हाभासा, तएणं ते मार्गदियदारगा तेणं फलयखंडेणं उव्वुज्झमाणा २ रयणदीवंतेणं सव्वहा यावि होत्था ) उस श्रेष्ठ प्रासाद में रत्न द्वीप देवता नाम की एक देवी कि जिस का प्रसिद्धनाम ‘रत्नदेवी’ “ऐसा था” रहती थी ॥

यह अत्यंत पापकर्म करती थी, सदा गुस्से में भरी रहती थी, हिंसादिक्रूरकर्म करने में बड़ी निपुणमति थी—जो मन में आता वही कर डालती थी । उस श्रेष्ठ प्रासाद की चारों दिशाओं में चार वनखण्ड थे । वे नवीन मेंघ के वर्ण समान काले थे और सदा हरे भरे रहने के कारण इनकी कान्ति भी काली ही निकलती थी । ये दोनों माकंदी दारक उस फलक खंड की सहायता से जल पर-तैरते हुए—उस रत्नद्वीप के

( तत्पर्यं पासायवडेंसए रयणदीवे देवया नामं देवया परिवसति, पावा चंडा रुद्धा साहसिया तस्सणं पासायवडेंसयस्स चउदिसि चत्तारिवणसंडा, किण्हा किण्हाभासा, तएणं ते मार्गदियदारगा तेणं फलयखंडेणं उव्वुज्झमाणा २ रयणदीवं तेणं संवुद्धा यावि होत्था )

ते श्रेष्ठ भंडेलमां रत्नद्वीप देवता नामनी ओके देवी—के ओ ‘ रयणा देवी ’ नामे प्रतिष्ठि पायेदी हत्ती—रहेती हत्ती. हंभेशा ते अस्सामां ७ रहेती हत्ती. ते हिंसा वगेरे क्रूर कर्मां करवामां भूण ७ अतुर हत्ती. ते धम्मिा सुअण आयरणु करती हत्ती. ते उत्तम भंडेलनी आरे दिशाओ तरक् आर वनभंडे हत्ता. तेओ नवा वाहणना रंगना ओवा श्याम हत्ता अने हंभेशां दीक्षा छम रहेवा गहल तेमनी अति पणु श्याम रंगनी ७ हत्ती. अने माकंदी दारके: लाकडा उपर तरता-तरता रत्न द्वीपनी पासो आनी पडोआ हत्ता.

ફલકલ્પણં 'વિસર્જ્યેતિ' લિસર્જયતઃ=પરિત્યક્તમન્તૌ, વિસૃજ્ય રત્નદ્વીપમ્ ઉત્તરતઃ=માતૌ ઉત્તૈર્ય=માપ્ય ફલાનાં માર્ગણગવેષણં કુરુતઃ=ઇતસ્તતઃ ફલાનિ ગવેષિતવન્તૌ, કૃત્વા ફલાનિ શૃણોતઃ, શૃણૌત્વા આહારતઃ=શુક્તવન્તૌ, તદનુ નાલિકેરાણાં માર્ગ-ગવેષણં કુરુતઃ, કૃત્વા નાલિકેરાણિ સ્ફોટયતઃ, તતઃ નાલિકેરતૈલેન અન્યોન્યસ્ય

પાસ મેં આ પહુંચે। (તણ તે માર્ગદિયદારગા થાહં લમંતિ, લમિત્તા મુહુ-  
ત્તંતરં આસસંતિ, આસસિત્તા ફલગલ્પણં વિસર્જ્યેતિ, વિસર્જિત્તા રયણદીવં  
ઉત્તરંતિ, ઉત્તરિત્તા ફલાણં મગ્ગણગવેષણં કરેંતિ) વહાં આતે હી ઉન્હે  
સ્થળ મિલ ગયો-થાહ મિલતે હી ઉન્હોને વહાં એક મુહુર્ત્ત તક વિશ્રામ  
કિયા, વિશ્રામ કરકે ફિર ઉસ કાષ્ટ લ્પંડ કો છોડ દિયા। છોડ કરકે  
ફિર વે દોનો રત્નદ્વીપ મેં ઉતર-ગયે-વહાં જાકર ઉન્હાંને ફલોં કી ઇધર  
ઉધર માર્ગણગવેષણાં કી-(કરિત્તા ફલાઈં ગિળ્હંતિ, ગિળ્હિત્તા આહાર-  
રેંતિ આહારિત્તા નાલિપરાણમગ્ગણગવેષણં કરેંતિ, કરિત્તા નાલિપરાઈં  
ફોડેંતિ, ફોડિત્તા નાલિપરતેલ્લેણં-અળમળ્લસ ગત્તાઈં અભંગેંતિ, અ-  
ભંગિત્તા પોક્લરણી ઓગાહિંતિ, ઓગાહિત્તા જલમજ્જણં કરેંતિ, કરિત્તા  
જાવ પચ્ચુત્તરંતિ, પચ્ચુત્તરિત્તા પુઢવિસિલાપટ્ટયંસિ નિસીયંતિ નિસીહિત્તા  
આસત્થા વીસત્થા) માર્ગણા ગવેષણા કરને સે ઉન્હે ફલ મિલ ગયે।  
મિલતે હી ઉન્હોને ઉનકા આહાર કિયા। જબ ઉનકા પેટ અછ્છી તરહ  
ખર ચુકા તબ ફિર ઉન્હોને નારિકેલ ફલોં કી-નારિયલોં કી-તલાશ

(તણ તે માર્ગદિયદારગા થાહં લમંતિ, લમિત્તા મુહુત્તંતરં આસસંતિ,  
આસસિત્તા ફલગલ્પણં વિસર્જ્યેતિ, વિસર્જિત્તા રયણદીવં ઉત્તરંતિ ઉત્તરિત્તા ફલાણં  
મગ્ગણગવેષણં કરેંતિ)

ત્યાં પહોંચતાં જ તેઓને સ્થળ મળી ગયું, સ્થળ મળતાં જ તેઓએ  
એક મુહુર્ત્ત ત્યાં વિશ્રામ લીધો અને ત્યાર પછી લાડકાને છોડી દીધું. પાછી  
માઠી તેઓ બંને રત્ન દ્વીપમાં આવ્યા અને આમ તેમ ફળો શોધવા લાગ્યા.

(કરિત્તા ફલાઈં ગિળ્હંતિ, ગિળ્હિત્તા આહારેંતિ આહારિત્તા નાલિપરાણ  
મગ્ગણગવેષણં કરેંતિ કરિત્તા નાલિપરાઈં ફોડેંતિ ફોડિત્તા નાલિપરતેલ્લેણં  
અળમળ્લસ ગત્તાઈં અભંગેંતિ અભંગિત્તા પોક્લરણી ઓગાહિંતિ, ઓગાહિત્તા  
જલમજ્જણં કરેંતિ, કરિત્તા જાવ પચ્ચુત્તરંતિ, પચ્ચુત્તરિત્તા પુઢવિસિલાપટ્ટયંસિ  
નિસીયંતિ, નિસીહિત્તા આસત્થા વીસત્થા)

શોધ કરતાં કરતાં તેમને ફળો મળી ગયાં. તેમણે ફળોને આહાર કર્યો  
અથારે ફળોના આહારથી તેઓ ધરાઈ ગયા ત્યારે નાળિયેરના ફળોની શોધ કરવા  
લાગ્યા. આખરે નાળિયેરનાં ફળો તેઓઓ મેળવ્યાં અને તેને ફેડીને અંદરથી

परस्परस्य 'गत्ताहं' गात्राणि=अङ्गोपाङ्गानि अभ्यञ्जयतः=मर्दयतः, तदनु पुष्करिणीं=वापीं अवगाहेते=अन्तः प्रविशतः, अवगाह्य जलमङ्गजनं=स्नानं कुरुतः, कृत्वा यावत् प्रस्युत्तरतः=वापीतो वह्निर्निस्सृतौ, प्रत्युत्तीर्य=वह्निर्निस्सृत्य पृथिवीशिलापट्टे निषीदतः=उपविष्टौ, निषद्य 'आसत्या' आस्वस्थौ=ईषत्स्वस्थौ 'वीसत्या' विस्वस्थौ रमणीयनिर्मयस्थानं मत्वा विशेषेण विश्रामं प्राप्तां सुखासनवरगतौ=सुखदासने समुपविष्टौ सन्तौ चरपानगरीम्, अम्बापित्रा पृच्छनम्=समुद्रोत्तरणविषये तन्निषेधेऽपि द्वित्रिवारं तदाज्ञायाचनं च, लवणसमुद्रोत्तारं च, कालिकावातसमुत्थानं

की-तलश करने पर वे भी उन्हें मिल गये । मिलते ही उन्होंने उन्हें फोड़ा-फोड़ कर उनमेंसे तेल निकाला-तेलनिकाल कर परस्पर में उन्होंने एक दूसरेके शरीर पर उससे मर्दन कीया-मर्दन करनेके बाद फिरवे पुष्करिणी में प्रविष्ट हुए-प्रविष्ट होकर उसमें उन्होंने ने स्नान किया स्नान करके फिर वे उससे ऊपर आये । ऊपर आकर पृथिवी शिलापट्टक पर बैठ गये । बैठकर वे वहाँ अश्वस्त बने । बाद में (सुहासणवरगया) सुखद आसन से बैठ कर उन दोनों ने (चंपानगरिं अम्मापिउ आपुच्छणं लवणसमुद्रोत्तारणं च कालियवायसमुत्थणं च पोत वह्णविर्वत्ति च फलयखंडस्स आसायणं च रयणदीवुत्तारं च अणुचिते माणा २ ओहयमणसंकप्पा जाव झियार्येति ) चंपानगरी का माता पिता से पूछने का-लवण समुद्र कि यात्रा करने के विषय में पूछने पर और उनके निषेध करने पर पुनः दुबारा तिबारा उनसे आज्ञा प्राप्त करने का-लवण समुद्र में उतरने का कालिका वायु के उत्थान का पोतके डूब जानेका फलक खंड की प्राप्ति

तेल कादीने भ्रम ७ सरस रीते जेक भीजना शरीरे तेल जोगवा लाव्या. अंशभर तेलनी मादिस करीने तेजो पुष्करिणीमां उत्तरां अने उत्तरीने तेजोअने स्नान करुं स्नान करीने तेजो गह्वार आव्या अने जेक शिला उपर गेली गया. त्यां गेलीने तेजो आश्वस्त विश्वस्त भन्था अने त्या २ पक्षी ( सुहासण वर गया ) सुभासन पूर्वक गेलीने तेजो भने

( चंपानगरिं अम्मापिउआपच्छणं लवणसमुद्रोत्तारणं च कालिय वाय समुत्थणं च पोतवह्णविर्वत्ति च फलयखंडस्स आसायणं च रयणदीवुत्तारं च अणुचितेमाणा २ ओहयमणसंकप्पा जाव झियार्येति

चंपा नगरीनो, लवण समुद्रनी यात्रा करवा भाटे मातापिताजे बोकाणी ना कडेवा छतां जे त्रष्ट वपत तेनी तेज वात तेमनी साजे भूमीने आज्ञा भोगवानो, लवण समुद्रमां यात्रा करवानो, अजगणे वावाओसाथी नाव डूभी

च, पोतवहनविपत्तिं च, फलकखण्डस्याऽऽप्तादनं=स्वीकरणं च, रत्नद्वीपोत्तारं च 'अणु-  
चित्तमागा' अनुचिन्तयन्तौ=पुनः पुनः स्मरन्तौ 'ओद्वयमणसंकल्पा' अपहतमनः  
संकल्पौ=आर्त्तध्यानसम्पन्नौ यावत् 'क्षियापंति' ध्यायतः=पूर्ववृत्तान्तं स्मृतवन्तौ।  
ततः खलु तस्मिन् समये सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ 'ओहिणा'  
अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएइ' आभोगयति=पश्यति, आभोगयित्वा=दृष्ट्वा  
'असिफलगवगहत्था' असिफलकण्यग्रहस्ता=असिना=तीक्ष्णखड्गेन फलकेन='ढाल'  
इति प्रसिद्धेन व्यग्रौ = चञ्चलौ हस्तौ यस्याः सा तथा, सत्तट्टतालपमाणं  
सप्ताष्टतालपमाणं, सप्ताष्टताडवृक्षपरिमितम्, 'उड्डुं' ऊर्ध्वम्=ऊर्ध्वभागं 'वेहासं'  
वैहायसं=गगनसम्बन्धिकम्-अत्युच्चैराकाशे 'उप्पयइ' उत्पतति,=उच्छलति, उत्पल्य  
तया=प्रसिद्धया उत्कृष्टया यावद् देवयत्या 'वीडव्यमाणी' व्यतिव्रजन्ती २ =

का और उसके सहारे से रत्न द्वीपमें आकर उतर जानेका बार२ विचार-  
र-स्मरण किया। स्मरण करते २ अपने मनोरथ की पूर्त्ति न होनेके  
कारण वे दोनों आर्त ध्यान में पड़ गये। (तएणं सा रयणदीवदेवया ते  
मागंदिदारए ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता असिफलगवगहत्था  
सत्तट्टतालपमाणं उड्डुं वेहासं उप्पयइ २ ताहे उक्किट्ठाए जाव देव  
गईए वीडव्यमाणी २ जेणेव मागंदियदारए तेणेव आगच्छइ, आग-  
च्छित्ता आसुरुत्ता ते मागंदियदारए खरफरुसनिदुरवयणेहिं एवं वयासी)  
इतने में उस रत्नद्वीप की देवी ने उन दोनों मागंदिदारकों को  
अपने अवधिज्ञान से देखा-देख कर वह तन्वार और ढाल को हाथों  
में लेकर आकाश में सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर तक उछली उछल  
कर फिर वह उस उत्कृष्ट देव संबंधि गति से शीघ्रता पूर्वक चलनी २

ज्यानी, लाड्डुं भेजनीने तेनी सहायथी तरतां तरतां रत्नद्वीपमां आवीने  
उतरवा सुधीने वारवार तेओ विचार करवा लाय्या. आ अधी घटनाओडुं  
तेओ स्मरण करवा लाय्या. आभ स्मरण करतां करतां ज्यारे पोताना मनोरथो  
सकण थता न लेथा त्यारे तेओ आर्त्तध्यानमां पूणी गथा.

( तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिदारए ओहिणा अओए इ, अओइत्ता  
असिफलगवगहत्था सत्तट्टतालपमाणं उड्डुं वेहासं उप्पयइ २ ताहे उक्किट्ठाए  
जाव देवगईए वीडव्यमाणी २ जेणेव मागंदियदारए तेणेव आगच्छइ, आग-  
च्छित्ता आसुरुत्ता ते मागंदियदारए खरफरुस निदुरवयणेहिं एवं वयासी )

ओटलाभां ते रत्न द्वीपनी देवीओ ते जने भाकंदी दारकेने पोताना  
अवधिज्ञानथी लेधं लीधा जने लेधने ते तरवार जने ढाल डथमां लधने  
आकाशमां सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर उछणी जने त्यारणा २ ते

शीघ्रमभिगच्छन्ती यत्रैव माकन्दिकदारकौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'आमु-  
रुना' आशुक्ता=शीघ्रं क्रुद्धा सती तौ माकन्दिकदारकौ स्वरपर्यन्तिरुद्वरुचनैः=  
कर्कशकठोररुक्षवचनैरेवमवादीत्- 'हंभो' इति सर्वमामन्त्रणम्, हंभो माकन्दिक-  
दारकौ । युगम् 'अपत्थियपत्थिया' अपार्थिमार्यकौ=मरणवाञ्छकौ रतः, यदि  
खलु युवां मया सार्द्धं विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादिविषयान् भुञ्जानौ विहरन्तं  
'तो' तदा 'मे' युवयोरुभयोरस्ति जीवितम्०, अथ खलु युवां मया सार्द्धं  
विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जानौ नो विहरन्तं 'तो' तदा 'मे' युवयोर्द्वयोरपि  
अनेन 'नीलुप्पलगवलगुलिय—अयसिकुसुमप्पगासेण' नीलोत्पलगवलगुलिकाऽ-  
तसीकुसुमप्रकाशेन=नीलोत्पलं=नीलकमलं, गवलं=महिषशृङ्गं, गुलिका=नीली  
'गुली' इति प्रसिद्धा, अतसिकुसुमम् - 'अलसी' इति प्रसिद्ध धान्यवि-

जहां वे दोनों मकंदी सार्थवाह के दारक थे वहां आई वहां आकर वह  
क्रोध से क्रोधित हुई और उन माकंदीदारकों से कर्कश-कठोर एवं  
रुक्ष वचन बोलती हुई इस प्रकार कहने लगी- ( हं भो मागंदिदारया ।  
अपत्थिय पत्थिया जईणं तुम्हे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाईं भुंज  
माणा नो विहरह तो मे इमेणं नीलुप्पलगवलगुलियअयसियकुसुम  
प्पगासेणं असिणां खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाईं माउयाहिं  
उवसोहियाईं ताल फलाणीवसी साईं एगंते एडेमि ) अरे ओं मागंदी  
के दारको । मालूम पड़ता है कि तूम दोनों अप्रार्थित-मृत्यु-के प्रार्थक-  
बाळक बन रहे हो- । यदि तुम लोग मेरे साथ विपुल शब्दादि विषयों  
को भोगो तब ही तुम दोनों का जीवन सुरक्षित बच सकता है यदि  
मेरे साथ विपुल शब्दादि विषयोंको नहीं भोग सकते हो तो देखो-नील

उत्कृष्ट देवनी गतिथी अक्षय्यी आसती आसती न्यां तेओ अने माकंदी  
सार्थवाहना पुत्रो उता त्यां आची पछोंची. अने कर्कश-कठोर तेमन रुक्ष  
वचनोने प्रयोग करती माकंदी दारकोने आ प्रभाषे छेवा लागी हे—

( हं भो मागंदिदारया । अपत्थियपत्थिया जईणं तुम्हे मए सद्धिं विउलाइं  
भोगभोगाईं भुंजमाणा नो विहरह तो मे इमेणं नीलुप्पलगवलगुलिय अयसिय  
कुसुमप्पगासेणं असिणा खुरधारेणं असिणा रत्तगंड मंसुयाईं माउयाहिं उवसोहि  
याईं ताल फलाणीव सीसाई एगंते एडेमि )

अरे ओ माकंदी दारको ! अने बाजे छे के तमे अप्रार्थित मृत्युने  
धम्भी रह्या छे. हुवे ओ तमे भारी साथे रहिने पुष्कण प्रभाषुमा शब्दादि  
विषयोने भोगववा माटे तैयार थाओ तो न तमाहुं लुपन गच्छी शके तेम  
छे, ओ तमे भारी साथे शब्द वगेरे विषयोने भोगववामा असमर्थ छे तो

શેષપુષ્પ, તદ્વત્ પ્રકાશઃ=અતિશયામવર્ણો यस્ય સ તથા, તેન 'સુરધારેણ' સુર-  
ધારેણ સુરવત્તીક્ષ્ણધારેણ 'અસિણા' અસિના=લઙ્કેન 'રક્તગંડમંદુયાઈ' રક્તગંઢ-  
મંદુશ્રુકે રક્તૌ=તરુણાવસ્થત્વેન લાલિમાયુક્તૌ ગળ્ઠૌ=કપોલૌ, શ્યામાનિ શ્મશ્રૂણિ ચ  
યયોસ્તે, 'માડયાઈ' માતૃકામ્યાં=સ્વસ્વ માતૃમ્યાં 'ઉવસોહિયાઈ' ઉપશોભિતે  
શ્રુજારાર્થં સમારચિતકેશવેશત્વાદપૂર્વશોભાસમ્પન્ને 'સીસાઈ' શીર્ષે=ઉભયોર્મસ્તકૌ  
'તાલફલાણીવ' તાડફલેઽવ છિત્વા એકાન્તે 'એદેમિ' =પ્રશ્નિપાપિ । તતઃ સ્વહુ  
તૌ માકન્દિકદારકૌ રત્નદ્વીપદેવતયા અન્તિકે એતદ્વચનં શ્રુત્વા મીતૌ કરતલપરિ-

કમલ, મહિષ શૃંગ, નીલી, અલસી પુષ્પ કે સમાન અતિશય શ્યામ  
વર્ણ વાલી હસ તલવાર સે કિ જો છુરા કી ધાર કે સમાન તીક્ષ્ણ ધાર  
વાલી હૈ તુમ દોનોં કે મસ્તકોં કો કિ જો તરુણાઈ સે લાલ હુપ કપોલોં  
સે યુક્ત હૈ, તથા અપની ૨ જનનિયોં-માતાઓં-દ્વારા જિન પર શોભા  
નિમિત્ત સમારચિત કેશવેશ સે અપૂર્વ સૌંદર્ય વાલા હૈ, તાડ ફલ કે  
સમાન કાટકર એકાન્ત સ્થાન મેં પેંકડંગી (તણં તે માર્ગંદિય દારગા  
રયણદીવ દેવયા એંતિ એ સોચ્ચા મીયા કરચલ ૦ એવં જળ્ણં દેવાણુ  
પિપ્યા ! વહસ્સસિ તસ્સ આણા ઉવવાયવયણનિદેસે ચિદ્દિસ્સામો-ત-  
ણં સા રયણદીવદેવયા તે માર્ગંદિયદાર એળહતિ, ૨ જેળેવ પાસાયવ  
હિંસ એ તેળેવ ઉત્ત્રાગચ્છહ ૨ અસુમ પોગ્ગલાવહારં કરેહ ૨ સુમપોગ્ગલ  
પવલેવં કરેહ કરિત્તા પચ્છાતે હિં વિડલાઈ મોગ મોગાઈ મુંજમાણિ વિહરહ  
કલ્લાકલ્લિં ચ અમય ફલાઈ ઉવળેહ ) હસ પ્રકાર વે દોનોં માકંદો દારક

બુઝો નીલકમળ, મહિષશૃંગ, નીલી અળશીના પુષ્પની જેમ ખૂબજ શ્યામ  
રંગવાળી આ તરવારથી-કે જે છરાની ધારના જેવી તીક્ષ્ણ ધારવાળી છે-તમારા  
અંતેના માથાઓ કે જેઓ જરાનીથી લાલ લાલ થયેલા કપોલોવાળા છે,  
કાળી કાઠી અને મૂંછાથી શોભી રહ્યા છે તેમજ પાતપોતાની માતાઓ વડે  
કેશ વિન્યાસ કરવાથી અપૂર્વ સૌંદર્યથી જેઓ દીપી રહ્યા છે તાડફળની જેમ  
કાળીને હું નિર્જન સ્થાન ફેંકી દઉં

(તણં તે માર્ગંદિયદારગા રયણદીવદેવયા એંતિ એ સોચ્ચા મીયા કરચલ.  
એવં જળ્ણં દેવાણુપિપ્યા ! વહસ્સસિ તસ્સ આણા ઉવવાયવયણનિદેસે ચિદ્દિસ્સામો  
તણં સા રયણદીવદેવયા તે માર્ગંદિયદાર એળહતિ ૨ જેળેવ પાસાયવહિંસ એ  
તેળેવ ઉત્ત્રાગચ્છહ ૨ અસુમપોગ્ગલાવહારં કરેહ ૨ સુમપોગ્ગલપવલેવં કરેહ  
કરિત્તા પચ્છાએહિં વિડલાઈ મોગ મોગાઈ મુંજમાણી વિહરહ કલ્લાકલ્લિં ચ  
અમયફલાઈ ઉવળેહ )

गृहीतं शिरावर्चं दशनत्वं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिष्टाम्—एवंच यं खलु कञ्चित्प्रेष्याणामपि प्रेष्यं हे देवानुप्रिये । त्वमस्मदर्थं वदिष्यसि यदुत 'युवयोरय-  
माराध्यः' इति, तदा 'तस्स' तस्यापि 'आणाउववायवयणनिद्देशे' आहोपपा-  
तवचननिर्देशे—आज्ञा=विधेयतयाऽऽदेशः, उपपातः=सेवा, वचनम्=अनियत आदेश-  
एव निर्देशः=नियतार्थमुच्यते, एतेषां समाहारः, तत्र स्थास्यावः=उपस्थास्यावः  
किं पुनर्भवत्याः ? त्वदनुमत्या तव दासानुदासस्यापि दासत्वं स्वीकरिष्याव इति  
भावः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ गहाति, गृहीत्वा  
यत्रैव स्वस्य प्रासादावतंसकः=प्रधानवासमवनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तयोः  
शरीरे अशुभपुद्गलपहारं करोति, कृत्वा शुभ पुद्गलप्रक्षेपं करोति कृत्वा पश्चात् ताभ्यां

रयण देवी ( रत्नद्वीपदेवी ) के वचन सुनकर भयभीत हो गये । पश्चात्  
उन्होंने ने दोनों हाथोंकी अंजलि बनाकर और उसे अपने मस्तक पर रख-  
कर उससे ऐसा कहा—हे देवानुप्रिये । आपका यदि कोई नौकर का भी  
नौकर होगा और आप उसकी सेवा करनेके लिये भी हमसे कहेंगी—तो  
हम उसकी भी आज्ञा सेवा, आदेश और निर्देश करने के लिये कदि-  
बद्ध हैं—तो फिर आपकी सेवा करने आदि की तो बात ही क्या है ।

आपकी आज्ञा से तो हम आपके दासों के भी दासों की दासता  
स्वीकार करने के लिये तैयार हैं । तो फिर आपकी दासता के लिये तो  
कहना ही क्या है । इस प्रकार माकंदी-दारकों की बात सुनकर उस  
रयणादेवी ( रत्न द्वीप देवी ) ने उन्हें अपने साथ लिया और लेकर वह  
अपने श्रेष्ठ प्रासाद में आ गई । वहाँ आकर उसने उन दोनों के शरीर  
में से अशुभ पुद्गलों को दूर किया और शुभ पुद्गलों को डाल दिया ।

रयणादेवीना वचनो सांख्यीने अने माकंदी दारको लयलीत थर्छ गया.  
तेओ अनेओ ढांछेनी अजली जनावी अने तेने मस्तके भूझीने आ प्रभाळु  
कहुं के छे देवानुप्रिये । तभारा नोकर ने पखु कछि नोकर होय अने तभे  
अभने तेनी नोकरी पखु करावशी तो अमे तेनी पखु आज्ञा, आदेश अने  
हुंकर प्रभाळु अनुसरवा तैयार छीअे तो तभारी सेवानी बात न शी कछेवी ।

तभारा हुंकरथी तो अमे तभारा दासोना दासोनी दासता स्वीकारवा  
तैयार छीअे. तो तभारी दासता भाटे छेवे अभासे कछेवानुं नुं रडे ? आ  
प्रभाळु माकंदी दारकोनी बात सांख्यीने रयणा देवी ( रत्न द्वीप देवी ) अे  
तेओने पोतानी साथे लीधा अने लधने ते पोताना अेक सौथी सारा भडेलभां  
अर्थ. त्यां नधने तेळु तेमना शरीरभांथी अशुभ पुद्गलो दूर कर्या अने शुभ .



સાર્થં વિપુલાન્=ભોગભોગાન્=શબ્દાદિવિષયાન્ શુજ્ઞાના વિહરતિ=આસ્તેસ્મ,  
'કલ્પાકલ્પિચ' કલ્યાકલ્પિય=પ્રતિદિનં ચ અમૃતફલાનિ=અમૃતતુલ્યફલાનિ 'ઉવ-  
ળેઃ' ઉપનયતિ=આનીય દદાતિ, તૌ ચ પ્રતિદિનં તાનિ ફલાનિ શુજ્ઞાનો તથા  
સાર્થં કામભોગાન્ સેવમાનો વિષ્ટતઃ इतिभावः ॥ સૂ.૩ ॥

મૂલ્—તથા સા રચણદીવદેવયા સક્કવચણસંદેસણં સુટ્ટિ-  
ણં લવણાહિવજ્ઞા લવણસમુદ્દે તિસત્તખુત્તો અણુપરિચટ્ટિય-  
વ્વેત્તિ જં કિંચિ તત્થ તણં વા પત્તં વા કટ્ટં વા કચવરં વા  
અસુદ્દે પૂતિયં દુરભિગંધમચ્ચોક્ખં તં સવ્વં આહુણિયર તિસત્ત-  
ખુત્તો ઇગંતે ઇદેયવ્વંતિકટ્ટુણિઉત્તા, તથા સા રચણદીવદેવયા  
તે મારગદિયદારણ ઇવં વયાસી—ઇવં સ્વલ્લ અહં દેવાણુપ્પિયા ।  
સક્કં સુટ્ટિણં તં ચેવ જાવ ણિઉત્તા, તં જાવ અહં દેવાં ।  
લવણસમુદ્દે જાવ ઇદેમિ તાવ તુબ્બે ઇહેવ પાસાયવડિંસણ સુહં-  
સુહેણં અભિરમમાણા ચિટ્ઠહ, જહ્ણં તં તુબ્બે ઇયંસિ અંતરંસિ  
ઉઠ્ઠિવગ્ગા વા ઉસ્સુયા વા ઉપ્પુયા વા ભવેજ્ઞાહ તો ણં તુબ્બે  
પુરચ્છિમિલ્લં વણસંદં ગચ્છેજ્ઞાહ, તત્થણં દોઁઁઁ સયા સાહીણા  
તં જહ્ણ-પાડસે ય વાસારત્તેય,—(ગાહા) તત્થ ઉ કંદલસિલિંધદંતો  
ણિરવરપુપ્ફપીવરકરો । કુહયજ્જુણણીવસુરભિદાણો પાડસઉ-

પશ્ચાત્તે ઉન દોનોં કે સાથ વિપુલ ભોગ ભોગોં—શબ્દાદિ વિષયોં કો  
—ભોગને લગી । પ્રતિદિન વહ ઉન્હેં અમૃત ફલોં કો લાકર દેતી ઔર  
વે દોનોં ઉન્હેં લાતે । ઇસ પ્રકાર વે દોનોં સાર્થવાહ દારક ઉસકે સાથ  
વહાં કામભોગોં કો ભોગતે હુણ રહને લગે । “સૂ.૩”

પુદ્ગલોને મૂકી દીધા. ત્યાર પછી રચણા દેવી તેઓ બંનેની સાથે વિપુલ કામ  
લોગો શબ્દ વગેરે વિષયોને ઉપલોગ કરતી રહેવા લાગી. હંમેશા તે તેઓ  
બંનેને અમૃત ક્ષણો લાવીને આપતી અને તેઓ પશુ ક્ષણો ખાતા. આ રીતે  
બંને સાર્થવાહ પુત્રો તેની સાથે કામ લોગો લોગવતાં રહેવા લાગ્યા. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

ऊगयवरो साहिणो ॥१॥ तत्थ य-सुरगोवमणिविचित्तो दद्दुर  
 कुलरसियउज्झररवो । बरहिणविंदपरिणद्धसिहरो वासारत्तो  
 उऊपवतो साहिणो ॥२॥ तत्थणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहुसु  
 वावीसु य जाव सरसरपंतिचासु बहुसु आलीघरणसु धे माली-  
 घरणसु य जाव कुसुमघरणसु य सुहं सुहेणं अभिरममाणा  
 विहरेज्जाह, जइणं तुब्भे एत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा  
 उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिछं वणसंडं गच्छेज्जाह,  
 तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं० सरदो य हेमंतो य, तत्थ उ  
 सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो । सारसचक्क-  
 वायरवितघोसो सरयऊऊगोवती साहीणो ॥१॥ तत्थ य सिय-  
 कुंदधवलजोण्हो कुसुमितलोद्धवणसंडमंडलतलो । तुसारदग-  
 धारपीवरकरो हेमंतऊऊसती सया साहीणा ॥ २ ॥ तत्थणं  
 तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरेज्जाह, जइणं तुब्भे  
 तत्थवि उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे  
 अवरिछं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थणं दो ऊऊ साहीणा, तं जहा  
 वसंते य गिम्हे य, तत्थ उ सहकारचारुहारो किंसुयकणिण-  
 थारासोगमउडो । ऊसिततिलगवउलायवत्तो वसंतउऊणरवती  
 साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य पाडलसिरीससलिलो मालियावासंति-  
 यधवलवेलो । सीयलसुरभि अनिलमगरचरिओ गिम्हऊऊसा-  
 गरो साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह, जइ णं  
 तुब्भे देवा० ! तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुब्भे  
 जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, ममं पडिवालेमा-

णार चिट्टेज्जाह, माणं तुब्भे दक्खिणिहं वणसंडं गच्छेज्जाह,  
तत्थणं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोरविसे महाविसे अइकाय  
महाकाए जहा तेयनिसग्गे मसिमहिसामूसाकालए नयणवि-  
सरोसपुण्णे अंजणपुंजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचल-  
चलंतजीहे धरणियलवेणिभूए उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडवि-  
यडफडाडोवकरणदच्छे लोगाहारधम्ममाणधमधर्मेतघोसे अणा-  
गलियचंडतिव्वरोसे समुहिं तुरियं चवलं धमधमंतदिट्ठीविसे  
सप्पे य परिवसति, माणं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ,  
ते मागंदियदारए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ वइत्ता वेउव्वियसमु-  
ग्धाएणं समोहइ समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए लवणसमुहं  
तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठेयं पयत्ता यावि होत्था ॥ सू०४ ॥

टीका—‘तएणं सा’ इत्यादि । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता=रत्नद्वीपदेवी  
‘सक्कवयणसंदेसेण’ शक्रवचनसंदेसेण=शक्रेन्द्राह्वयो ‘सुट्ठिएणं’ सुस्थितेन=  
सुस्थितनामकदेवेन, ‘लवणाहिवइणा’ लवणाधिपतिना=लवणसमुद्रस्त्राभिना नियु-  
क्तेत्यन्वयः नियोजनमकारमाह—लवणसमुद्रः ‘तिसत्तखुत्तो’ त्रिसप्तकृत्वः—एकविं-  
शतिवारम् ‘अणुपरियट्ठियव्वे’ अनुपर्यटितव्यः समन्तात्परिभ्रमणीयः इति ।

“तएणं सा रयण दीव देवया” इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (सक्कवयणसंदेसेण) देवेन्द्रकी आज्ञासे  
(लवणाहिवइणा) लवणाधिपति (सुट्ठिएणं) सुस्थित देवने (सा-  
रयणदीवदेवया) उस रत्नद्वीप देवता-रयणा देवी को (लवणस-  
मुदे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठिय व्वेत्ति) लवणसमुद्र के तुम २१ बार

(तएणं सा रयणदीव देवया ‘इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) त्थार भाव (सक्कवयणसंदेसेण) देवेन्द्रकी आज्ञाथी (लवणा-  
हिवइणा) लवण समुद्रना अधिपति (सुट्ठिएणं) सुस्थित देवे (सा रयणदीवदेवया)  
ते रत्न द्वीप-देवता-रयणा देवीने लवणसमुदे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठियव्वेत्ति)  
कहुं के लवण समुद्रकी आदे भावुब्बे तगे अकरीथ वप्पत अक्कर लभावो

किमर्थ ? मित्याह—‘जंकिचि’ इत्यादि । यत्किञ्चित् तृणं वा, पत्रं वा, काष्ठं वा, कचवरं वा, अशुचि=विष्टा, पूतिकं=अर्धपक्वशोणितं, दुरभिगंधं=दुर्गन्धयुक्तं वस्तुजातम् ‘अचोक्खं’ अचोक्खम्=अपवित्रं तिष्ठति तत्सर्वम् ‘तिसत्तखुत्तो’ त्रिसप्तकृत्वः=एकत्रिंशतिवारम्० ‘आहुणिय २’ आधूय २ अपनीय २ एकान्ते ‘एडेयव्वं’ त्यक्तव्यम् इति कृत्वा इत्थं कर्तुं ‘णिउत्ता’ नियुक्ता=अधिकृता=आज्ञप्तेत्यर्थः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिदारकौ एवमवादीत्—एवं खलु देवानुप्रियो ! शक्रवचनसंदेशेन सुस्थितेन० तदेव यावत्—अहं नियुक्ता, तद् यावद्दहं देवानुप्रियो ! लवणसमुद्रं ‘जाव’ यावत्—यावच्छब्देन तत्र गत्वा चारों तरफ से चक्कर लगाओं ( जं किंचि तत्थतणंवा पत्तं वा कट्टं वा कचवरं वा असुहं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वंति कहु निउत्ता ) उसमें जो कुछ भी तुम्हें वहां तृण, पत्र, काष्ठ, कूड़ा, विष्टा अर्धपक्व शोणित अथवा दुर्गन्धित वस्तु यदि अपवित्र पदार्थ नजर आवे उन सबको तुम एकधीस बार में वहां से हटा २ कर एकान्त में डाल देना ” इस काम पर नियुक्त किया । (तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वयासी—एवं खलु अहं देवानुप्रिया ! सक्क० सुट्टिएणं तं चेव जाव णिउत्ता) इसके बाद उस रत्न द्वीप देवता—रयणा देवीने उन माकंदी दारकों से ऐसा कहा—देवानु प्रियो ! मैं सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से लवणाधिपति सुस्थित देवके द्वारा २१ बार लवण समुद्र के चारो ओर चक्कर लगाने के लिये आज्ञा की गई है अतः ( तं जाव अहं देवाणु० लवणसमुद्रे

( जं किं चि तत्थ तणंवा पत्तंवा कट्टं वा कचवरं वा असुहं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय ति खुत्तो एगंते एडेयव्वं ति कट्टु निउत्ता )

अने तेमां अने त्यां तुष्ण, पत्र, काष्ठ, कचरा, विष्टा अर्धपक्व शोणित ( दोही ) अथवा तो दुर्गन्धित वस्तु अपवित्र पदार्थ होगा तो तेने तमे ओक्कीश वणत इस्तां इस्तां त्याथी लधने ओकांतमां हर देडी हो. सुस्थित देवे देवन्द्री आज्ञाथी आ काम रयणादेवीने सोथुं.

( तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वयासी एवं खलु अहं देवानुप्रिया सक्क० सुट्टिएणं तं चेव जाव णिउत्ता )

त्यार पछी ते रत्नद्वीप देवता रयणा देवीओ माकंदीदारकाने कहुं के छे देवानुप्रियो ! मने सौधर्मेन्द्रनी आज्ञाथी लवणाधिपति सुस्थित देव वडे लवण समुद्रनी आरे आहुओ ओक्कीशवार चक्कर भारवानी आज्ञा भणी छे. ओटला भाटे

તુળાદિકમપનીય ચૈકાન્તે ત્યજામિ તાવદ્ યુવામ્ હૈવ પ્રાસાદાશ્રતંસકે સુખસુલે-  
નાભિરમમાણૌ તિષ્ઠતમ્, યદિ સ્વલ્પ યુવામ્, એતસ્મિન્નતરે 'ઉચ્ચિગ્માવા' ઉચ્ચિ-  
ગ્માવા=અત્રાવસ્થાનેન સ્થિન્ની, 'ઉસ્સુયા વા=ઉત્કર્ષિતૌ મનોરજ્જનમનસ્કાવિત્યર્થઃ,  
'ઉપ્પુયા વા' ઉત્પ્લુતૌ ક્રીડોત્કર્ષિતમાનસૌ વા 'ભવેજ્જાહ' ભવેતમ્ યદ્યત્રા-  
સ્થાનેન યુવયોર્મનસ્યુદ્વેગ ઉત્કર્ષ ક્રીડનેચ્છા વા ભવેત્ 'તોળં' તદા સ્વલ્પ યુવાં  
'પુરત્થિમિલ્લં' પૌરસ્ત્યં=પૂર્વદિશાસંસ્થિતં વનવણ્ડમ્=ઉદ્યાનં 'ગચ્છેજ્જાહ' ગચ્છતં  
યુવાભ્યાં રમ્યં પૂર્વદિશોદ્યાનં ગન્તવ્યમિત્યર્થઃ, યતોદિ તત્ર સ્વલ્પ દ્વી ઋતુ સદા  
'સાહીળા' સ્વાધીની=વર્તમાનાૌસ્ત, તદ્યથા-'પાડસેય વાસારત્તેય' મદ્વદ્વ  
વર્ષારાત્રશ્ચ । તત્ર પ્રાવૃદ્ધ-અપાઢ શ્રાવણૌ વર્ષારાત્રઃ-માદ્રપદાશ્વિની, તસ્મિન્ વનવણ્ડે

જાવ એદેમિ-તાવ તુભે હૈવ પ્રાસાદાશ્રતંસકે સુહં સુહેળં અભિરમમાણા  
ચિદ્વહ જર્ણં તુભે એયંસિ અંતરંસિ ઉચ્ચિગ્મા વા ઉસ્સુયા વા ઉપ્પુયા વા  
ભવેજ્જાહ તોળં તુભે પુરત્થિમિલ્લં વણસંઢં ગચ્છેજ્જાહ મૈં જબતક ૧૧ શર  
ચક્કર લગાકર વહાંકે તુળ કાષ્ઠ આદિ દૂર ફેંકનેકે કામમેં લગી રહું તત્ત  
તક હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ દોનોં હસી એષ્ઠ પ્રાસાદમેં આનન્દસે રહના । યદિ  
યહાં રહતેર તુમ્હારે ચિત્ત ઉદ્ધિગ્ન હો જાવે અથવા મનોરંજનકે લિયે ઉત્ક-  
ર્ષિત હો જાવે અથવા ક્રીડાકરને કે લિયે લાલાયિત વન જાવે તો તુમ  
દોનોં પૂર્વ દિશા મેં સંસ્થિત ઉદ્યાન મેં ચલે જાના (તત્થળં દો ક ક  
સયા સાહીળા તં જહા પાડસેય વાસારત્તેય) વહાં સદા દો ઋતુએ  
વર્તમાન રહતી હૈં । એકતો પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ દૂસરી વર્ષા રાત-આપાઢ શ્રાવણ  
યે નો મહિને પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ કે હૈં-તથા માદ્રપદ એવં આશ્વિન યે દો માસ

(તં જાવ અહં દેવાણાં લવણસમુદે જાવ એદેમિ-તાવ તુભે હૈવ પ્રાસાદ-  
શ્રતંસકે સુહં સુહેળં અભિરમમાણા ચિદ્વહ જર્ણં તુભે એયંસિ અંતરંસિ ઉચ્ચિગ્માવા  
ઉસ્સુયા વા ઉપ્પુયાવા ભવેજ્જાહ તોળં તુભે પુરત્થિમિલ્લં વણસંઢં ગચ્છેજ્જાહ )

હું જ્યાં સુધી સમુદ્રના એકવીશ ચક્રકર મારીત્યાંના તુલ કાષ્ઠ વગેરેને ફેં  
કેકવાના કામમાં પરાવાઈ રહું ત્યાં સુધી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અને આજ  
એક મહેલમાં સુખેથી રહેજો. અહીં રહેતાં જો તમને કંટાળો આવવા લાગે,  
મન તમારું ઉદ્ધિગ્ન થઈ જાય મનોરંજન કરવાની તમારી ઈચ્છા થાય કે ક્રીડા  
કરવાની ઉત્કટ અભિલાષ તમારામાં ઉત્પન્ન થાય તો જાને પૂર્વ દિશાના  
ઉદ્યાનમાં જતા રહેજો. (તત્થળં દો ક ક સયા સાહીળા તં જહા પાડસેય વાસા  
રત્તેય) તે ઉદ્યાનમાં હરહંમેથા જો ઋતુઓ હાજર રહે છે. એક પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ  
અને બીજી વર્ષા. અપાઢ શ્રાવણ આ જો મહિના પ્રાવૃદ્ધ ઋતુના છે અને  
શાદરેવો અને આસો આ જો મહિના વર્ષા ઋતુના છે.

શ્રાવણાદિ માસચતુષ્ટયસદ્દશો રમણીયઃ સમયઃ સદા વર્તેત્તેતિમાવઃ । અન્ન વનષઢે પ્રાવૃદ્ધઋતુર્ગજરૂપકેણ વર્ણયેતે-તન્નતુ-તસ્મિન્ 'પાઠસઙ્ગઙયવરો' પ્રાવૃદ્ધઋતુગજવરઃ 'સાહીણો' સ્વાધીનઃ અસ્તિસ્ત્વેન સ્વાયત્તઃ સદા વર્તેત્તે । સ કીદશઃ ? इत्याह- 'કંદલસિલિધદંતો' કંદલસિલિન્નદન્તઃ-કન્દલાઃ=તૂતનલતાઃ, તંત્ર-ધાનાઃ સિલિન્નઃ યે પ્રાવૃષિ પુષ્પ્યન્તિ ચેતકુસુમયુક્તાથ અવન્તિ તથેવ ધવલસ્વ-સાધર્મ્યાત્ દન્તા યસ્ય સ તથોક્તા, પુનઃ 'ણિઝરવરપુષ્પપીવરકરો' નિકુરવર-પુષ્પપીવરકરઃ નિકુરઃ=વૃક્ષવિશેષસ્તસ્ય વરપુષ્પાણિ=આયામત્વેન-એકૈકોપરિ નિસ્સુ-તાનિ શુષ્કાકારેણ પરિણતાનિ તાન્યેવ પીવરઃ=સ્થૂલઃ કરઃ=શુષ્કા યસ્ય સ તથોક્તઃ । પુનઃ 'કુહયજ્જુગળીવસુરમિદાણો' કુટલાર્જુનનીપસુરમિદાનેઃ-કુટજાર્જુનનીપવૃક્ષ-પુષ્પાણિ, તેષાં સુરમિઃ=સુગન્ધઃ સ એવદાને=મદજલ્લં યસ્ય સ તથોક્તઃ । एतादृशो वर्षा ऋतु गजराजः सदैव तत्र वर्तते इतिभावः ॥ १ ॥ अथ वर्षाऋतुः पर्वत,

વર્ષા રાત્રી કે હૈં । ( તત્થ-કંદલા સિલિધદંતો ણિઝરવરપુષ્પપીવર કરો, કુહયજ્જુગળીવ સુરમિદાણો પાઠસ ઙ્ગ, ગયવરો સાહીણો " ૧ " )  
 હવે આર મહિનો મેં જૈસા સમય રમણીય રહતા હૈ-વૈસા સમય વહાં સદા રમણીય બના રહતા હૈ । સૂત્રકાર વનષઢ વર્તમાન પ્રાવૃદ્ધ ઋતુ કા ગજ કે રૂપક સે વર્ણન કરતે હુએ કહતે હૈં-કિ કંદલ-નવીન લતાએં ઓર સિલિન્ન-જો વર્ષા મેં ફૂલતે હૈં ઓર ફૂલ જિનકા સફેદ હોતા હૈ -યે દોનોં હી જિસકે દાંત હૈં । નિકુર-વૃક્ષ વિશેષ-કે ઉત્તમ પુષ્પ હી જિસકે પીવર શુષ્કાદંદ હૈં તથા કુટજ અર્જુન એવં નીપ વૃક્ષોંકે પુષ્પોંકી સુગંધિ હી જિસકા મદજલ હૈં એસા વર્ષાઋતુ રૂપ ગજરાજ ઉસ વનમેં સદા વિચરણ કરતા રહતા હૈ । નિકુરવૃક્ષકે પુષ્પ ઇક ઇકકે ઉપર નિકલતે હૈં ।

( તત્થ ઓ કંદલસિલિધદંતો ણિઝરવરપુષ્પપીવરકરો કુહયજ્જુગળીવ સુર-મિદાણો પાઠસ ઙ્ગ ગયવરો સાહીણો ॥ ૧ ॥ )

એ આર મહિનામાં વાતાવરણ બેહુ સોહામણુ રહે છે. તેહુ ત્યાં હરહ મેશા સોહામણુ રહે છે. સૂત્રકાર વનષઢમાં વર્તમાન પ્રાવૃદ્ધ ઋતુનું હાથીના રૂપકથી વર્ણન કરતાં કહે છે કે-કંદલ-નવી લતાઓ-અને સિલિન્ન-કે જે વર્ષા કાળમાં ફૂલે છે અને જેના ફૂલ સફેદ હોય છે-આ અને જ જેનાં દાંતો છે. નિકુર-વૃક્ષ વિશેષ-ના ઉત્તમ પુષ્પો જ જેની સુગંધ સૂંઢ છે. તેમજ કુટજ, અર્જુન અને નીપ વૃક્ષોના પુષ્પોની સુવાસ જ જેનો મદ છે. વર્ષા ઋતુ રૂપી એવો ગજરાજ તે વનમાં હંમેશા વિચરણ કરતો જ રહે છે. નિકુર વૃક્ષના પુષ્પો એક એકના ઉપર નીકળે છે.

રૂપકેણ વર્ણયતે—‘તત્થય’ તત્રચ=તર્જીવ=વનપણ્ડે વર્ષારાત્રઋતુપર્વતઃ સ્વાધીનો વર્ષત્ત્વમ્મિત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ । સધીદ્વિજ્ઞઃ ? હત્યાહ—‘સુરગોવમણિવિચિત્તો’ સુગોપમણિ-વિચિત્રઃ—સુરગોપાઃ=ઇન્દ્રગોપાઃ વર્ષાકાલે સમુત્પદમાના રક્તવર્ણાં જીવ વિશેષાસ્ત-એવ મળયઃ=પદ્મારાગાદયસ્તૈર્વિચિત્રઃ=કર્કુરો યઃ સ તથા । ‘દદુરકુલરસિયહજ્જારરવો’ દદુરકુલરસિતોજ્જારરવઃ=દર્દુરકુલં=મણ્ઢકસમૂહસ્તસ્ય રસિતં=નિરન્તરં શબ્દઃ, તદેવ હજ્જારરવઃ=નિર્જારશબ્દો યત્ર સ તથા । ‘વરહિણવિંદપરિણદ્ધસિહરો’ વરહિવન્દપ-રિણદ્ધશિશ્વરઃ—વરહિવન્દેન=મયૂરસમૂહેન પરિણદ્ધાઃ=યુક્તાઃ વૃષાભ્યએવ શિશ્વરાણિ યત્ર સ તથા । એતાદશો વર્ષારાત્રપર્વતરત્ર સદૈવ વર્ષત્ત્વમ્મિત્યગ્રેણ ॥ ૨ ॥ તત્ર સ્વહ

હસ લિયે બે લંબાઈમેં શુણ્ઢાદંઢ જૈસે પ્રતીત હોતે હૈ । (તત્થ ય -સુરગોવ મણિવિચિત્તો દદુર કુલરસિય હજ્જારરવો । વરહિણવિંદ પરિણદ્ધસિહરો વાસારત્તો હજ્જ પવ્વત્તો સાહીણો) હસ આર્યા દ્વારા સૂત્રકાર વર્ષાઋતુ કા પર્વત કે રૂપક સે વર્ણન કારતે હૈ—બે કહતે હૈ કિ વર્ષા કાલ મેં ઇન્દ્રગોપ નામક કીઢા ઉત્પન્ન હોકર હથર હથર વમક-તે હુપ રાત્રિમેં દિશ્વલાઈ પડતે હૈ । મો યે ઇન્દ્રગોપ કીઢે હી જિસ વર્ષા ઋતુ રૂપ પર્વત મેં પદ્મારાગ આદિ મળિયોં કે સ્થાનાપન હૈ । તથા પર્વત નિર્જરોં (જરના) કે શબ્દોં વાલા હોતા હૈ સો હસ વર્ષા ઋતુ રૂપ પર્વત મેં દર્દુરોં કા જો નિરન્તર શબ્દ હોતા રહતા હૈ વહી માનો નિર્જરોં કા શબ્દ હૈ । વર્ષા ઋતુ મેં મયૂરોં સે વૃક્ષ યુક્ત રહા કરતે હૈ વયોં કિ વૃષ્ટિ હોનેપર બે ડન પર હઢ કર બેઠ જાતે હૈ—સો યે મયૂર યુક્ત વૃક્ષ હી જિસ વર્ષા ઋતુ રૂપ પર્વત કી ચીટિયાં હૈ । એસા વર્ષા રાત્ર રૂપ પર્વત હસ વન મેં સદા કાલ રહતા હૈ । યહ બાત ડન ડોનોં સાર્થવાહ

એટલા માટે નિકુરવૃક્ષના પુષ્પો લાંબાધની હૃદિએ સૂંઢ બેવા લાગે છે.

(તત્થ ય સુરગોવ મણિવિચિત્તો દદુરકુલરસિયહજ્જારરવો । વરહિણ વિંદપરિણદ્ધસિહરો વાસારત્તો હજ્જ પવ્વત્તો સાહીણો)

આ આર્યા વડે સૂત્રકાર વર્ષા ઋતુનું પર્વતના રૂપકથી વર્ણન કરે છે. તેઓ કહે છે કે વર્ષાકાળે ઇન્દ્રગોપ નામે કીઢા ઉત્પન્ન થાય છે અને તે આમ તેમ ચમકતો રાતમાં દેખાય છે. આ ઇન્દ્રગોપ કીઢાઓ જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતમાં પદ્મારાગ વગેરે મણિઓના રૂપમાં છે. પર્વતોમાં નિર્જરો (અરણ્યો) નો ધ્વનિ થતો રહે છે. તો આ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વત ઉપર દેહકાઓના જ નિરન્તર શબ્દ થતો રહે છે તે જ અરણ્યોના શબ્દના રૂપમાં છે. વર્ષાઋતુમાં વૃક્ષો ઉપર મોશી ઉડી ઉડીને બેસી જાય છે તો એ મોશી બેના ઉપર બેઠાલા છે એવા વૃક્ષો જ વર્ષાઋતુ રૂપ પર્વતના શિશ્વરો છે. એવા વર્ષાઋતુ રૂપી પર્વત તે વનમાં હંમેશા નિવાસ કરતો રહેતો હતો. આ વાત તેઓ બંને સાર્થવાહ

ગુવાં દેવાનુપ્રિયૌ : બહીષુ વાપીષુ ચ યાવત્ 'સરસરપંતિયાસુ' સરઃ સરઃ પૃક્તિ-  
કાસુ પરપરં સંછન્નેષુ વહુષુ સરસુ, યત્રૈકસ્માત્સરસોઽન્યસ્મિન્ તસ્માદપરસ્મિન્,  
एवं संचरणपरम्परयोर्देकं संचरति, તાસુ । વહુષુ 'આલિઘરપસુ ય' આલિઘરેષુ  
આલિઃ=રમ્યવનસ્પતિવિશેષસ્તસ્ય ગૃહેષુ 'જાવ' યાવત્-યાવચ્છન્દેન-કદલીગૃ-  
હેષુ ચ લતાગૃહેષુ ચ-અચ્છળગૃહેષુ ચ પ્રેક્ષણગૃહેષુ ચ પ્રસાધનગૃહેષુ ચ મોહનગૃહેષુ  
ચ શાલા ( શાલા ) ગૃહેષુ ચ જાલગૃહેષુ ચ इति संग्रहः, કુસુમગૃહેષુ=પુષ્પગૃહેષુ  
च सुखसुखेन=सुखपूर्वकम् 'અભિરમમાણા' અભિરમમાણૌ=ક્રીડાં કુર્વાણૌ વિહ-  
રતં=તિષ્ઠતમ્ ।

પુત્રોં કો વહ રચનાદેવી સમક્ષા રહી છે । ઓર સાથ મેં યહ બી  
કહ રહી છે કિ ( તત્થળં તુન્મે દેવાણુપિયા ! વહુસુ વાવી સુ ય  
જાવ સરસરપંતિયાસુ વહુસુ આલીઘરપસુ ય માલીઘરપસુ ય જાવ  
'કુસુમઘરપસુ ય સુહં સુહેળં અભિરમમાણા વિહરેજ્ઞાહ ) હે દેવા-  
નુપ્રિયો ! વહાં તુમ અનેક વાપિકાઓં મેં યાવત્ અનેક સર સર પંક્તિયોં  
મેં અલિઘરોં મેં કદલી ગૃહોં મેં લતા ગૃહોં મેં અચ્છળ ગૃહોં મેં પ્રક્ષણ  
ગૃહોં મેં, પ્રસાધન ગૃહોં મેં, મોહન ઘરોં મેં, શાલા ગૃહોં મેં, જાલ ગૃહોં મેં,  
તથા પુષ્પ ગૃહોં મેં, સુખપૂર્વક ક્રીડા કરતે હુએ અપને સંયમ કો વ્યતીત  
કરતે રહના । અનેક તાલાવ જહાં પંક્તિ બદ્ધ શ્રેણીમેં સ્થિત રહતે હૈં ઉસ  
કા નામ સરપંક્તિ છે । ઇન પંક્તિ આકાર સ્થિત તાલાવોં મેં એક  
એક દસરે તાલાવ કા જલ આતા જાતા રહતા છે । રમ્યવનસ્પતિ વિશેષ  
કે જો ગૃહ હોતે હૈં ઉનકા નામ આલિ ગૃહ છે । ( જહ્ણં ) યદિ ( તુન્મે

પુત્રોને રચના દેવી સમક્ષવી રહી હતી-અને આ પ્રમાણે આગળ કહેવા લાગી હતી કે  
( તત્થળં તુન્મે દેવાણુપિયા ! વહુસુ વાવીસુ ય જાવ સરસરપંતિયાસુ વહુસુ આલી-  
ઘરપસુ ય માલીઘરપસુ ય જાવ કુસુમઘરપસુ ય સુહં સુહેળં અભિરમમાણા વિહરેજ્ઞાહ )

હે દેવાનુપ્રિયો ! ત્યાં તમે ઘણી વાપિકાઓ ( વાવો ) માં યાવત્ ઘણી  
સરઃ સરપંક્તિઓ ( સરોવરો ) માં, આલિઘરોમાં, કદલીગૃહોમાં, લતાગૃહોમાં,  
અચ્છળગૃહોમાં, પ્રેક્ષણગૃહોમાં, પ્રસાધનગૃહોમાં, મોહનઘરોમાં, શાલાગૃહોમાં,  
જાલગૃહોમાં તેમજ પુષ્પગૃહોમાં સુખેથી ક્રીડા કરતાં પોતાના સમયને પસાર  
કરો. જ્યાં ઘણાં તળાવો એક પછી એક આમ અનુક્રમે પંક્તિબદ્ધ હોય છે તેનું  
નામ સરઃ સરપંક્તિ છે. આ પંક્તિ આકારમાં સ્થિત તળાવોમાં એક બીજાના  
તળાવનું પાણી આવતું જતું રહે છે રમ્ય વનસ્પતિ વિશેષના જે ગૃહો હોય  
છે તે આલિગૃહ કહેવાય છે. ( જહ્ણં ) એ



યદિ સ્વલ્લ પુનર્યુવામ્ ' તત્થ વિ ' તથાપિ=પૂર્વદિશાવનવળદેડપિ ઉદ્વિગ્નૌ વા, ઉત્સુકૌ વા, ઉત્સુતૌ=ક્રીડાર્થિનૌ વા મવતં તદા સ્વલ્લ યુવાં દ્વાવપિ ' ઉત્તરિલ્લં ' ઉત્તરીયમ્=ઉત્તરદિક્સંસ્થિતં વનવળદં ' ગચ્છેજ્જાહ ' ગચ્છતમ્, યુવાખ્યાં તત્ત્વ ગન્ત-  
વ્યમિત્યર્થઃ તત્ત્વ સ્વલ્લ દ્વૌ ઋતુ સદા સ્વાધીનૌ વર્તેતે, તથા-શરચ્ચ હેમન્તશ્ચ, તત્ત્વ  
શરદ્ઋતુઃ=કાર્તિકમાર્ગશીર્ષરૂપઃ, હેમન્તર્તુશ્ચ=પૌષમાધરૂપ ઇતિ । અથ શરદ્ઋતુ  
વૃષમરૂપકેણ વર્ણયતિ-તત્ત્વ તુ વનવળદે ' સરયત્ત ગોવર્હ ' શરદ્ઋતુગોપતિઃ શરદ્-  
ઋતુરૂપોવૃષમઃ ' સાહિણો ' સ્વાધીનઃ સ્વાયતઃ સદા વર્તેતે, इत्यत्रेण समन्वयः ।  
સ કીદશઃ ? इत्याह—' सणसत्त्ववणकउओ ' सनसप्तपर्णककुद्, सनः=वल्लभ-  
धानो वनेस्पतिविशेषः, सप्तपर्णः=सप्तच्छदामिधवनस्पतिविशेषः तयो पुष्पाण्यपि

एत्थवि उच्चिग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह, तोणं तुब्बे उत्त-  
रिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा, तं सरदो य  
हेमंतो य, तत्थ उ-सणसत्त्ववणकउओ नीलुप्पलपउमनल्लिणसिगो ।  
सारस चक्कवायरवित्तघोसो सरय ऊऊ गोवती साहीणे) तुम दोनोज्ञो  
का पूर्वदिशा के वनवण्ड में मन न लगे, चित्त उद्विग्न बन जाय, मनोरं-  
जन न हो अथवा और अधिक क्रीड़ा करने के लिये मन उत्कंठित बन  
जाय तो तुम वहां से उत्तर दिशा में रहे हुए वनखंड में चले जाना ।  
वहां सदा दोऋतुएं वर्तमान रहती हैं-? शरद ऋतु २. हेमंत ऋतु, का-  
र्तिक और मार्गशीर्ष ये दो महिने शरदऋतु के हैं, पौष और माघ ये  
दो महिने हेमन्तऋतु के हैं । रयणादेवी शरदऋतु का वृषभ के रूपक से  
और हेमन्तऋतु का चन्द्रमा के रूपक से वर्णन करती हुई उन्हें समझाती है

( तुब्બં एत्थपि उच्चिग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णंतुब्બે  
ઉત્તરિલ્લં વળસંડં ગચ્છેજ્જાહ, તત્થ ણં દો ઉઠ્ઠ સયા સાહીણા તં સરદો  
ય હેમંતો ય તત્થ ઉ સણસત્તવળકઉઓ નીલુપ્પલપઉમનલ્લિણસિગો । સારસ  
ચક્કવાયરવિત્ત ઘોસો સરય ઉઠ્ઠ ગોવતી સાહિણો )

પૂર્વ દિશા તરફના વનખંડમાં તમને ગમતું ન હોય, ચિત્ત ઉદ્વિગ્ન થઈ  
જતું લાગતું હોય, ત્યાં તમારું મનોરંજન થતું ન હોય, કે વધારે ક્રીડા કરવા  
માટે મન ઉત્કંઠિત થઈ જતું હોય તો તમે ત્યાંથી ઉત્તર દિશા તરફ આવેલા  
વનખંડમાં જતા રહે બે ત્યાં હર હંમેશા બે ઋતુઓ હાજર રહે છે-(૧) શરદઋતુ  
અને (૨) હેમંતઋતુ કાર્તિક અને માર્ગશીર્ષ આ બે માસ શરદઋતુના છે.  
તેમજ પૌષ અને માઘ આ બે માસ હેમંતઋતુના છે રચણા દેવી તેઓને  
શરદઋતુ વૃષભના રૂપકથી અને હેમંતઋતુ ચન્દ્રમાના રૂપકથી નિરૂપિત કરતાં

સનસપ્તર્ણાનિ, તાન્યેવ ગોલાકારોઘતત્વસાધર્મ્યાત્ કક્કુત્-સ્કન્ધદેશો યસ્ય સ તથોક્તાઃ । પુનઃ ‘ નીલુત્પલપત્મનલિણર્સિંગો ’ નીલોત્પલપત્મનલિનશૃંગઃ-નીલોત્પલપત્મનલિનાનિ=નીલકમલવિશેષાસ્તાન્યેવ તીક્ષ્ણોઘતતયા શૃંગાકારપરિણતત્વાત્ શૃંગે યસ્ય સ તથોક્તઃ । પુનઃ-‘સારસચક્રવાયરવિયઘોસો’ સારસચક્રવાકરુતયોષા-સારસચક્રવાકપક્ષિણાં રુતમેવ=શબ્દ એવ ંચ્ચૈસ્ત્વગામ્મીર્યસાદૃશ્યાદ ઘોષો = ધ્વનિર્યસ્ય સ તથોક્તઃ । એતાદૃશઃ શરદ્ઋતુ વૃષમસ્તત્ર સદૈવ વિઘત ઇતિભાવઃ ॥૧॥

સમ્પતિ હેમન્તઋતુ રાશિરૂપકેણ પ્રાહ-‘તત્થત્’ તત્ર તુ વનવણ્ડે ‘ હેમંત ઝ્રુક્સસી ’ હેમન્તઋતુશશી=હેમન્તર્તુરૂપશ્ચન્દ્ર. સદા સ્વાધીન ઇત્યુત્તરેણ સમ્બન્ધઃ । સ કીદશઃ ? ઇત્યાહ-‘ સિયકુંદધવલ જોળ્હો ’ સિતકુંદધવલજ્યોત્સ્નાઃ-સિતકુંદાનિ=શ્વેતપુષ્પાણિ તાન્યેવ ધવલા=ઉજ્જ્વલ જ્યોત્સ્ના=વન્દ્રિકા યરય સ તથોક્તઃ । પુનઃ-‘ કુસુમિતલોદ્ધવણસંઢમંડલતલો કુસુમિતલોદ્ધવનવણ્ડમળ્ડલતલઃ-કુસુમિતઃ= પુષ્પિતઃ લોદ્ધવનવણ્ડઃ, સ એવ શ્વેતત્વસાધર્મ્યાત્ - મળ્ડલતલં = વિમ્બં યસ્ય સ તથોક્તઃ । ‘ તુપારદઘધારપીવરકરો ’ તુપારદઘધારાપીવરકરઃ - તત્ર તુપારા= હિમકળાઃ, ‘ દઘધારાઃ = જલચિન્દુપ્રવાહાસ્તા એવ દૈર્ઘ્ય શૈત્યસાદૃશ્યાત્ પીવરાઃ= પુષ્પાઃ કરાઃ = કિરણા યસ્ય સ તથોક્તઃ । એવં શૂતો હેમન્તર્તુરૂપશ્ચન્દ્રસ્તત્ર સદૈવ વર્તત ઇત્યર્થઃ ॥ ૨ ॥

કહતી હૈ-કિ દેલ્હો શરદ્ઋતુકો હમને વૃષમકા રૂપ ઇસલિચે દિયા હૈ કિ ઇસ ઋતુમેં સન ઔર સસપર્ણ ફૂલતે હૈં ઇનકે ફૂલ ગોલ આકારકે ઔર કંચે હોતે હૈં । સાંયે પુર હી જિસ ઋતુરૂપ વૃષમકે કક્કુદ (લંદૌલા) હૈ । નીલોત્પલ આદિ કમલ હી જિસ કે શૃંગ હૈં । સારસ ઔર ચક્રવાક પક્ષિયોં કે શબ્દ હી જિસકી ધ્વનિ હૈં એસા શરદ્ઋતુ રૂપ વૃષમ ડસ વન મેં સદા વિચરણ કરતા રહતા હૈ । (તત્થ ય સિય કંદ ધવલજોળ્હો-કુસુમિત લોદ્ધવણસંઢમંડલ તલો .....સાહીળો ) સિતકુંદ-શ્વેતપુષ્પ-હી જિસ કી ધવલજ્યોત્સ્ના (ચાંદની) હૈ, કુસુમિત લોદ્ધવણસંઢી જિસકા મંડલ હૈ, હિમકળ ઔર ચિન્દુ પ્રવાહ હી જિસ કી પુષ્પ કિરણે હૈં એસા

સમજાવે છે કે જુઓ શરદ્ઋતુને અમે વૃષમનું રૂપ એટલા માટે આપ્યું છે કે આ ઋતુમાં શણ અને સપ્તર્ણુ ખીંચે છે. એમના પુષ્પો યોગાકારના તેમજ જોયા હોય છે. તે આ પુષ્પોજ શરદ્ઋતુ રૂપ વૃષમની ખાંધ ( કકુદ ) છે. નીલોત્પલ વગેરે ઠમળો જ જેના સિંગડા છે. સારસ અને ચક્રવાક પક્ષીઓ ના શબ્દો જ જેના ધ્વનિ છે એવો શરદ્ઋતુ રૂપ વૃષમ તે વનમાં હંમેશા મિચરતો જ રહે છે. ( તત્થ ય સિયકંદ ધવલ જોળ્હો કુસુમિતલોદ્ધવણસંઢ મંડલ તલો....સાહીળો ) સિતકુંદ-સફેદ પુષ્પો જ જેની સ્વચ્છ ચન્દ્રિકા ( ચાંદની ) છે, ખીંચેલુ લોધ વનજ જેના મંડળ છે, હિમકણ અને પાણીના વહેતાં ટીપાંઓ

તત્ર સ્વલુ યુવાં હે દેવાનુપ્રિયૌ । વહોષુ વાપીષુ ચ યાવદ્ અભિરમમાણૌ  
વિહરતમ્ = તત્ર ક્રીડાં કુર્વન્તૌ તિષ્ઠતમ્ ।

યદિ સ્વલુ યુવાં તત્રાપિ=ઉત્તરીયવનવણ્ડેઽપિ ઉદ્ધિગ્નૌ વા યાવદ્ ઉત્પ્લુતૌ વા  
મવેતં તવા સ્વલુ યુવામ્ 'અવરિલ્લિં' અપરીયં = પશ્ચિમદિશાસમ્બન્ધિકં વનવણ્ડં  
ગચ્છતમ્, તત્ર સ્વલુ દ્વૌ ઋતૂ સ્વાધીનૌ=સ્વાયત્તૌ સર્વદા વર્તમાનો સ્તઃ, તથા-  
વસન્તશ્ચ ગ્રીષ્મશ્ચ, વસન્તઃ=ફાલ્ગુનચૈત્રલક્ષણઃ, ગ્રીષ્મઃ=વૈશાખજ્યેષ્ઠલક્ષણઃ । પૂર્વ  
વસન્તઋતું નરપતિરૂપકેણ વર્ણયતિ-'તત્થ' તત્ર તુ પશ્ચિમદિગ્ગતીયવનવણ્ડે વસન્તર્તુ-

હેમંતઋતુ રૂપ ચન્દ્રમા ડસવન મેં સદા પ્રકાશિત રહતા હૈ । (તત્થ ણં  
તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા । વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ) હે દેવાનુપ્રિયૌ ! વહાં  
અનેક વાપિકાઈ યાવત્ પુષ્પઘર મી હૈં । સો તુમ ડનમેં મી આનંદ સે  
વિહાર કરના । (જહ્ણં તુભ્મે તત્થ ડવ્વિમ્મા વા જાવ ડસ્સુયા વા મવે-  
જ્જાહ તો ણં તુભ્મે અવિરિલ્લિં વણસંઢં ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણં દો ડઙ  
સાહીણા ) યદિ તુમ દોનોં જનોં કા મન ડત્તરીયવનવંઢ મેં મી ન લગે-  
વહાં વહ ડદ્ધિગ્ન યાવત્ ડત્પ્લુત હો જાવે-તો તુમ દોનોં પશ્ચિમ દિશા  
સમ્બન્ધી વનવંઢમેં વહે જાના । વહાં દો ઋતુઈ સદા વર્તમાન રહતી હૈ  
(તં જહા-વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થ ડ-સહકાર ચારુહારો, કિંસુય કણિયા  
રાસોગમડહો, ડસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસંત ડઙ્ગરવહ સાહીણો )  
વે દો ઋતુઈ ગ્રીષ્મ ઓર વસન્ત હૈં ।

ફાલ્ગુન ચૈત્ર યે દો મહિને વસન્તઋતુ કે હૈં । વૈશાખ ઓર જ્યેષ્ઠ  
યે દો માસ ગ્રીષ્મઋતુ કે હૈં । ડસ પશ્ચિમદિશા સંબન્ધી વનવંઢ મેં વસ-

નેની પુદ્ધ કિરણો છે એવો હેમંતઋતુ રૂપ ચન્દ્ર તે વનમાં હંમેશા પ્રકાશતો  
રહે છે. ( તત્થ ણં તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા । વાવીસુ ય જાવ વિહરેજ્જાહ હે દેવાનુ-  
પ્રિયો ! ત્યાં વહી વાવો યાવત્ પુષ્પગૃહો પણ છે તમે તેઓમાં પણ વિહાર કરજો-

( જહ્ણં તુભ્મે તત્થ ડવ્વિમ્મા વા જાવ ડસ્સુ યા વા મવેજ્જાહ તો ણં તુભ્મે  
અવિરિલ્લિં વણસંઢં ગચ્છેજ્જાહ-તત્થ ણં દો ડઙ સાહીણા )

ઉત્તરના વનખંડમાં પણ બે તમને ઘરોઘર ગમે નહિ, ઉદ્ધિગ્ન થઈ  
યાવત્ ઉત્પ્લુત થઈ બાથ ત્યારે તમે બંને પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમાં જતા  
રહેજો. ત્યાં બે ઋતુઓ સદા મોજુદ રહે છે.

( તં જહા વસન્તે ગિમ્હે ય, તત્થ ડ સહકાર ચારુહારો, કિંસુય કણિયા  
રાસોગમડહોડસિત તિલગ વડલાયવત્તો વસંત ડઙ્ગરવહ સાહીણો )

તે ઋતુઓ ગ્રીષ્મ અને વસંત છે. કામણ અને ચૈત્ર આ બે માસ  
વસંત ઋતુના છે. ત્યારે વૈશાખ અને જ્યેષ્ઠ આ બે માસ ગ્રીષ્મની ઋતુના

નરપતિઃ=વસન્તઋતુરૂપો રાજા સ્વાધીનો વર્તેત્ત્વમ્મન્વઃ । સ કીદશઃ ? ઇત્યાહ-  
 ‘સહકારચારુહારો’ સહકારચારુહારઃ-સહકારાણિ-સહકાર પુષ્પાણિ-આન્નમન્નર્થઃ,  
 તાન્યેવવહુત્વસદ્ભાવેન દારાકાર પરિણતત્વાચારુઃ=સુન્દરો હારો યસ્ય સ તથા । પુનઃ  
 -‘કિંશુકકર્ણિકારાશોકમુકુટઃ’-કિંશુકકર્ણિકારાશોકમુકુટઃ-કિંશુકાનિ=પલા  
 શકુસુમાનિ, કર્ણિકારાણિ=કર્ણિકારપુષ્પાણિ, અશોકાનિ=અશોકપુષ્પાણિ તાન્યેવ  
 મુકુટાકારપરિણતત્વાન્મુકુટઃ=કિરીટં યસ્ય સ તથા । ‘ઝસિયતિલગ્બહુલાયવત્તો’  
 ઝસિયતિલકવકુલાતપત્રઃ-ઝસિયતાનિ=ઝસિયતાનિ તિલકવકુલાનિ=તિલકવકુલ-  
 પુષ્પાણિ, તાન્યેવ આતપં=ઝઝાકારપરિણતત્વેન છત્રં યસ્ય સ તથોક્તઃ । एतादृशो  
 वसन्तर्त्तनरपतिस्तत्र स्वाधीनः सदा वर्त्तते ॥ १ ॥ अयं ग्रीष्मऋतुः सागररूपकेण  
 वर्ण्यते-‘तत्तथ’ તત્તથ તત્ત્ર ચ પશ્ચિમદિગ્બનવંશે ‘ગિમ્હઝઝસાગરો’ ગ્રીષ્મરૂપઃ  
 સાગરઃ=સમુદ્રઃ સ્વાધીનઃ=સ્વાયત્ત્વેનાનવરતં વર્તમાનોઽસ્તિ । સ કીદશઃ ?  
 ઇત્યાહ-‘પાટલસિરીસસલિલો’ પાટલશિરીષસલિલઃ-પાટલશિરીષાણિ=પાટલા  
 શિરીષપુષ્પાણિ, તાન્યેવ જલ સાદૃશ્યાત્સલિલં=જલરાશિરૂપં યસ્ય સ તથા । ‘મલ્લિ  
 યવાસંતિયથવલવેલો’ મલ્લિકાવાસન્તિકાવલવેલઃ-મલ્લિકા વાસન્તિકા ચ લતા-

ન્તઋતુ નરપતિ કે સમાન સદા વિચરણ કરતી રહતી હૈ-સહકાર (આ-  
 ન્ન) કી મંજરિયાં હી ઇસ વસન્તઋતુ રૂપી રાજા કે સુન્દર હાર હૈ । કિં  
 શુક-કર્ણિકાર एवं अशोकके पुष्प ही इस राजा के मुकुट हैं । उन्नतं  
 तिलकं वृक्ष एवं वकुल वृक्ष के पुष्प ही इसके छत्र है । (तत्तथ य-પાટલ  
 સિરીસસલિલો મલ્લિયવાસંતિયથવલવેલો, સીયલસુરમિઅનિલ મગ-  
 રચરિઓ ગિમ્હઝઝ સાગરો સાહીણો) ઉસ પશ્ચિમદિશા સમ્બન્ધી  
 બનવંશ મેં ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્ર કે સામાન સદા પસરા રહતા હૈ-ગુલાબ ઓર  
 શિરીષ પુષ્પ યે ઇસ ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સમુદ્ર કે જલ હૈ । મલ્લિકા एवं वास

છે, આ પશ્ચિમ દિશાના વનમાં વસન્તઋતુ નરપતિ (રાજા) ની જેમ હંમેશા  
 વિચરણ કરતી રહે છે સહકાર ( આંખો ) ની મંજરીઓજ આ વસન્ત ઋતુ  
 રાજાના સુંદર હારો છે. કિંશુક કંઈકાર ( કનેર ) અને અશોકના પુષ્પો જ આ  
 રાજાના મુકુટ છે જ્યાં તિલક વૃક્ષો અને વકુલ વૃક્ષોના પુષ્પોજ એના છત્ર છે.

તત્તથ ય પાટલસિરીસસલિલો મલ્લિયા વાસંતિ ય વલવેલો સીયલસુરમિ  
 અનિલમગરચરિઓ ગિમ્હ ઝઝ સાગરો સાહિણો )

તે પશ્ચિમ દિશાના વનખંડમાં ગ્રીષ્મઋતુ સમુદ્રની જેમ હંમેશા પ્રસરાયેલો  
 રહે છે. ગુલાબ અને શિરીષના પુષ્પોજ આ ગરમીની ઋતુ રૂપ સમુદ્રના પાણી  
 છે. મલ્લિકા અને વાસંતિકા લતા જ જેના કિનારાઓ છે. ઠંડો અને સુવાસિત

વિશેષઃ, તા એવ તરજ્ઞાકારપરિણતત્ત્વાદ્ ધવલો=શુભ્રા વેલા યસ્ય સ તથા । 'સીય-  
લસુરભિ અનિલમગરચરિયો' શીતલસુરમ્યનિલમકરચરિતઃ - શીતલઃ સુરમિશ્વ  
યોઽનિલઃ=વાયુઃ સ એવ ઇતસ્તતોન્નમણસાદૃશ્યાત્ મકરચરિતં=મકરસચ્ચારો યત્ર સ  
તથોક્તઃ । એવંવિધો ગ્રીષ્મઋતુસાગરસ્તત્ર સદૈવ વિદ્યતે ઇતિ ॥ તત્ર સ્વલુ બહીષુ વાપીપુ  
યાવદ્ અભિરમમાણી વિહરતમ્=ક્રીડન્તી તિષ્ઠતમ્ । લોકે તુ માર્ગેશીર્ષાદિક્રમેણ  
દ્વી દ્વો માસૌ હેમન્તશિશિર-વસન્તગ્રીષ્મ-ર્ક્ષા-શરત્સંઘ્નકાઃ પદ્મ ઋતવો ગણ્યન્તે ।  
યદિ સ્વલુ શુભાં દેવાનુમિયૌ ! તત્રાપિ=પાશ્ચિમદિગ્વનપળ્હેઽપિ ઉદ્ધિગ્નૌ ઉત્પ્લુતૌ

ન્તિ કા લતાયે હી જિસ કી વેલાઈ હૈ-તદ હૈ-શીતલ સુરમિ પવન હી  
જિસમેં મગરોં કા સંચાર હૈ । એસા ગ્રીષ્મઋતુ રૂપ સાગર ઉસ વનસંઢ  
મેં સદા વર્તમાન રહતા હૈ । ( તત્થ પં બહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ ) વહીંપર  
અનેક વાપિકાઈ આદિ મી હૈ । સો ડન મેં મી તુમ દોનોં આનન્દ  
કે સાથ વિચરણ કરતે રહના । ( જહણં તુમ્મે દેવો-તત્થ વિ-  
હવ્વિગ્ગા, ઉસ્સુયા મ્હેવ્વજ્જાહ, તત્થો તુમ્મે જેણેવ પાસાયવહિંસણ  
તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમં પહિવાલે માણા ૨ ચિદ્દેજ્જાહ, માણં તુમ્મે  
દક્ખિણિલ્લં વનસંઢં ગચ્છેજ્જાહ તત્થ પં મહં ઇમે ડગ્ગવિસે ચંદવિસે  
ધોરવિસે, મહાવિસે, અહ્કાય મહાકાણ જહા તેય નિસમ્મે મસિમહિ  
સાંમૂસા કાલણ નયણવિસરોસપુળ્લે અંજણપુંજનિયરપ્પગાસે રત્તચ્છે  
જમલજુયલચંચલચલંતજીહે, ધરણિયલવેણિભૂણ, ઉક્કકડપુડકુહિલ  
જહિલકકલ્લહ વિયહફળાહોવ કરણદચ્છે, લોગાહારધમ્મમાણધમ-  
ધર્મેતથોસે અનાગલિયચંદતિવ્વરોસે સમુહિં તુરિયં સ્વલં ધમ

પવન જ જેમાં મગરોંનું સંચરણ છે. એવો ગ્રીષ્મ ઋતુ રૂપ સાગર તે વનપંડમાં  
સદા હોજર રહે છે ( તત્થ પં બહુસુ જાવ વિહરેજ્જાહ ) ત્યાંજ ધણી વાવો  
વગેરે છે. તમે બંને તેઓમાં પણ યુગેથી વિહાર કરતા રહેભે.

( જહણં તુમ્મે દેવા ॥ તત્થ વિ હવ્વિગ્ગા ઉસ્સુયા મ્હેવ્વજ્જાહ તત્થો તુમ્મે  
જેણેવ પાસાય વહિંસણ તેણેવ ઉવાગચ્છેજ્જાહ, મમં પહિવાલે માણા ૨ વિદ્દેજ્જાહ  
માણં તુમ્મે દક્ખિણિલ્લં વનસંઢં ગચ્છેજ્જાહ તત્થ પં મહં ઇમે ડગ્ગવિસે ચંદવિસે  
ધોરવિસે મહાવિસે અહ્કાયમહાકાણ જહા તેય નિસમ્મે મસિ મહિસામૂસાકાલણ  
નયણવિસરોસપુળ્લે અંજણપુંજનિયરપ્પગાસે રત્તચ્છે જમલજુયલચંચલચલંત જી હે,  
ધરણિયલવેણિભૂણ ઉક્કકડ પુડકુહિલ જહિલકકલ્લહ વિયહફળાહોવ કરણ  
દચ્છે લોગાહાર ધમમાણધમ્મધર્મેતથોસે અનાગલિયચંદતિવ્વરોસે સમુહિં તુરિયં  
સ્વલં ધમધર્મંત દિઠ્ઠીવિસે સપ્પે ય પરિવસહ )

હે દેવાનુમિયો ! ત્યાં પણ તમને બે ગમે નહિ તમે આજ ઉત્તમ મહેલમાં

યા મવેતં તદા સ્તુ યુવાં ચત્રૈવ પ્રાસાદાવતંસકઃ=સ્વાવાસમવનં તત્રૈવ ઉપાગચ્છતં  
પુનઃ સ્વપ્રાસાદાવતંસકે સમાગમ્ય સ્થાતુચ્યમિત્યર્થઃ, 'મમં' માં ચ 'પહિવાલે-  
માણા ૨' પ્રતિપાલયન્તૌ ૨=મતીક્ષમાણૌ ૨ તિષ્ઠતં, કિન્તુ મા સ્તુ યુવાં  
'દક્ષિણિહું' દક્ષિણાત્યં=દક્ષિણદિશાસમ્બન્ધિકં વનખંડં ગચ્છતં=યુવાભ્યાં  
દક્ષિણદિગ્વર્તિષ્વનખંડે ન ગન્તુચ્યમિત્યર્થઃ । કસ્માત્ ? इत्याह-તત્ર સ્તુ મહાનેકઃ-  
'ઉગ્રવિસે' ઉગ્રં વિષં યસ્ય સ તથોક્તઃ । વિષસ્ય-ઉગ્રત્વં દુર્જરત્વાત્ । એવમગ્રેऽપિ  
સંયોજ્યમ્ । એવં 'ચંડવિસે' ચંડવિષઃ, ચંડત્વં ઋદિતિ પ્રતિપ્રદેશવ્યાપકત્વાત્ ।  
'ધોરવિસે' ધોરવિષઃ, ધોરત્વં પરમ્પરાતઃ પુરુષસહસ્રત્યાપિ ધાતકત્વાત્ । 'મહા-  
વિસે' મહાવિષઃ, મહત્ત્વં જમ્બૂદ્વીપ પરિમિતશરીરસ્યાપિ વિનાશકત્વાત્ । 'અઙ-  
કાપ' અતિકાષઃ-અન્યસર્પાપેક્ષયા દીર્ઘશરીરત્વાત્, મહાકાષઃ-અન્યસર્પાપેક્ષયા  
સ્થૂલ શરીરત્વાત્ । 'મસિમહિસમૂસાકાલણ' મષીમહિષમૂષાકાલકઃ-મષી=કઙ્ગલ,  
મહિષઃ મસિહઃ, મૂષા=સુવર્ણ દ્રાવણપાત્રવિશેષઃ, एतेषां દ્વન્દ્વે મષીમહિષમૂષા,

घमंतदिष्टीविसे सप्पे य परिवसह ) यदि हे देवानुप्रियो ! तुम्हारा वहाँ  
न लगे-उद्भिग्न एवं उत्सुक बन जावे तो फिर तुम अपने हसी भ्रेष्ठ  
प्रासाद में वापिस आ जाना और यही पर रहते हुए हमारी प्रतीक्षा  
करना । दक्षिण दिशा संबन्धी वनखंड में मत जाना । कारण वहाँ  
एक ऐसा बड़ा भारी सर्प रहता है कि जिस का विष बहुत अधिक  
दुर्जर होने से उग्र है । बहुत गीघ्र प्रति प्रदेशमें फैल जाने से चण्ड है ।  
परम्परा से पुरुष सहस्र का घातक होने से धोर है, जंबूद्वीप के परावर  
शरीर का भी विनाशक होने से महान् हैं । अन्य सर्पों की अपेक्षा  
यह सर्प बहुत लंबा है । तथा बहुत स्थूल है । मषी-कङ्गल-महिष-  
मैसा और मूषा-सुवर्ण के पिघलाने का पात्र विशेष के समान यह  
अत्यन्त इयामवर्ण वाला है । इस की दोनों आँखों में विष रहता है

પાછા આવતા રહેશે અને અહીંજ રહીને મારી રહી શકે છે દક્ષિણ દિશાના  
વનખંડમાં તમે જતા નહિ કેમ કે ત્યાં એક બહુ મોટો સાપ રહે છે. તેણે  
ઝેર ખૂબ જ દુર્ધર હોવા બદલ ઉગ્ર છે. પ્રતિ પ્રદેશમાં તે સત્વરે પ્રસરી જાય  
છે. એટલા માટે તે ચંડ છે. પરંપરાથી જ તે પુરુષ સહસ્રને મારનારો હોવાથી  
ધોર છે. જમ્બૂદ્વીપ એટલા પ્રમાણના શરીરનો પણ તે નાશ કરી શકે તેમ છે  
તેથી તે મહાન છે. ખીબ સાપો કરતાં તે બહુ જ લાંબો તેમજ ખૂબ જ મોટો  
છે. મષી-કાળજી, મહિષ-લેસો, અને મૂષા-સોનાને ઓગળાવવા માટેનું પાત્ર  
વિશેષ-ની જેમ તે ખૂબ જ કાળા રંગ વાળો છે. તેની બંને આંખોમાં પણ

તા. इव कालकः=श्यामवर्णः 'नयणविसरोसपुण्णे' नयनविषरोषपूर्णः - नयनयो  
विष'रोषश्च, ताम्भ्यां पूर्णः 'अंजणपुंज नियरप्पगासे' अञ्जनपुञ्जनिकरप्रकाशः-  
कञ्जलपुञ्जानां निकरः= राशिः तद्वत्प्रकाशः=कान्तिर्यस्य स तथोक्तः-अत्यन्त  
श्याम इत्यर्थः । 'रत्तच्छे' रक्ताक्षः= रक्तनेत्रः । 'जमलजुयलचंचलचलंतजीहे'  
यमलयुगलचञ्चलचलज्जिह्वः-यमले=सहवर्चिनी युगले=उभे चञ्चले=चपले चलन्ती  
पुनःपुनर्वह्निर्निस्सरन्त्यौ जिह्वे यस्य स तथा-। 'धरणीयलवेणिभूए' धरणीतलवेणी  
भूतः अतिदैर्घ्यश्यामत्वादिसादृश्यात् पृथिव्याः- केशपाशसदृशः 'उक्कटफुड  
कुडिलजडिलककलडवियडफडाडोषकरणदच्छे' उत्कटस्फुटकुटिलजटिल कर्कश-  
विकटस्फटाटोपकरणदक्षः - उत्कटः = बलवताऽपि ध्वंसयितुमशक्यः, स्फुटः  
व्यक्तः कुटिलः=वक्रः, जटिलः-सिंहवत् शटायुक्तः, कर्कशः=कठोरः, विकटश्च=  
भयङ्करो यः फटाटोपः=फणाडम्बरः तस्य करणे विस्तारणे दक्षः=निपुणः । लोहा-  
गरधम्ममाणयमधर्मंत घोसे' लोहाकरध्मायमान धमधमायमान घोषः - लोहा-

यह बड़ा गुस्से बाज है । कज्जल पुंज की राशि के समान यह बिलकुल  
काला है । हम के दोनों नेत्र सदा लाल रहते हैं । इस की साथ २ रङ्गी  
हुई दोनों चंचल जिह्वाएँ बार २ बाहर निकलनी रहती हैं । अत्यन्त  
दीर्घ एवं श्याम होने के कारण यह देखने में ऐसा लगता है कि जैसे  
मानो पृथिवी रूप स्त्री की वेणी चोटी ही हो । बलवान् पुरुष भी जिसे  
नष्ट नहीं कर सकता है जो व्यक्त है, कुटिल-वक्र-है, सिंह के समान  
शटो संपन्न है, कर्कश है, और विकट-भयंकर है-ऐसी अपनी फणा  
के फैलाने में यह बड़ा भारी दक्ष है । भट्टी में तपते हुए लोहे का जैसे  
धम धम शब्द होता है उसी प्रकार इस से निकला हुआ शब्द भी धम  
धम ऐसी आवाज करना हुआ ही निकलता है । इस का अत्यन्त जो

ઝેર રહે છે. તે બહુ જ ક્રોધી છે. કાજળના સમૂહની જેમ સાવ કાળો છે. તેના  
બંને નેત્રો હંમેશા રાતાં રહે છે. તેની સાથે રહેનારી બંને છલો ચંચળ  
તેમજ વારંવાર બહાર નીકળતી રહે છે. બહુ લાંબો અને કાળો હોવાથી તે  
ભોવામાં એવો લાગે છે કે બહુ પૃથ્વી રૂપી સ્ત્રીની વેણી ( ચોટી ) જ ન  
હોય. બળવાન પુરુષ પણ જેને નષ્ટ કરી શકતા નથી, જે વ્યક્ત છે, કુટિલ  
વક્ર-છે, સિંહની જેમ શટા સંપન્ન ( કેશવાળી ) છે, કર્કશ છે, અને વિકટ-  
ભયંકર-છે એવી યોતાની રૂણાને ફેલાવવામાં તે ભારે દક્ષ છે. ભઠ્ઠીમાં તપા-  
વવામાં આવેલા લોખંડનો જેમ ' ધમ ધમ ' ધ્વનિ થાય છે તે પ્રમાણે જ  
સેમાંથી નીકળતો ધ્વનિ પણ ' ધમ ધમ ' અવાજ કરતો નીકળે છે. તેને

કરે=લોહતાપનસ્થાને 'મટ્ટી' इति भाषाप्रसिद्धे ध्मायमानः=रिताप्यमानो लोहः  
तद्द् यद् धमधमायमानो=धम-धमेति कुर्वन् धोषः=शब्दो यस्य स तथा ।  
'अणागलियचंडतिक्करोसे' अनाकलितचण्डतीव्रोषः, अनाकलितः=अपरि-  
मितः चण्डतीव्रः= अत्यन्तोग्रो रोषो यस्य स तथा । 'समुहं' संमुखिकां=  
श्वमुखस्येवाऽऽचरणं शुन इव भषणम्, 'तुरियं' त्वरितम्, 'चवलं' चपल यथा  
स्यात्तथा 'धमधमेतदिद्विविसे' धमधमायमानदृष्टिविषः=धमधमायमानं=जाज्व-  
ल्यमानम् दष्टौ विषं यस्य स तथोक्तः, एतादृशः सर्पश्च तत्र परिवसति, तस्माद्  
'माणं' मा खलु युवां तत्र गच्छतमिति सम्बन्धः । अन्यथा-तत्र गमने-युवयोः  
शरीरस्य व्यापत्ति भविष्यति । एवं सा तौ माकन्दिकदारकौ 'दोच्चंपि तच्चंपि'  
द्वितीयमपि तृतीयमपि वारं द्वित्रिवारमित्यर्थः, एवं वदति, एवमुक्त्वा वैक्रिय-  
समुद्घातेन 'समोहणइ' समवहन्ति वैक्रियसमुद्घातं करोतीत्यर्थः, 'समोहणित्ता  
समवहत्य=समुद्घातं कृत्वा तथा=देवप्रसिद्धया उत्कृष्टया गत्या लवणसमुद्रं त्रिस-  
त्तृत्वाः=एकविंशतिवारम् 'अणुपरियट्टेउं' अनुपर्यटितुं परितोऽटितुं मवृत्ता  
चाप्यासीत् ॥ सू० ४ ॥

અગ્રરોષ હૈ વહ અનાકલિત-અગરિમિત-હૈ । કુત્સે કે મોકને કે સમાન  
હસ કી આવાજ નિકલતી હૈ । યહ ત્વરા સંપન્ન ઔર બહુત હી ચપલ  
હૈ । હસ કી દૃષ્ટિ મેં વિષ સદા જાજ્વલ્યમાન રહતા હૈ ( માણં તુઝ્મં  
સરીરગત્સ વાવત્તી ખવિસ્સહ, તે માગંદિયદારણ દોચ્ચંપિ તચ્ચંપિ एवं  
વયહ ૨ વેડઞ્વિયસમુઘાણં સમોહણહ ૨ તાણ ઉચ્ચિકઠ્ઠાણ લવણસમુદ્રં  
ત્રિસત્ત્ત્વુત્તો અણુપરિયટ્ટેયં પવત્તા યાવિ હોત્યા ) હસ લિયે તુમ દોનોં  
વહાં મત જાના । નહીં તો તુમ્હારે શરીરકી કુશલતા નહીં રહેગી । ફસી  
પ્રકાર હસ રચના દેવી ને હન માકંદિ દારકોં કો દુવારા ખી-તિવારા  
ખી-સમઘાણો બુઝાયા ફિર સમઘા બુઝાકર હસ ને વૈક્રિય સમુદ્ઘાત

ઉચ્ચરોષ અનાકલિત-અપરિમિત-છે. કૂતરાની બસવાની જેમ તેનો અવાજ  
નીકળતો રહે છે. આ ત્વરા સંપન્ન અને ખૂબ જ ચપલ છે. એની આંખમાં  
ઝેર હોયેલા જાજ્વલ્યમાન રહે છે.

( માણં તુઝ્મં સરીરગત્સ વાવત્તી ખવિસ્સહ તે માગંદિયદારણ દોચ્ચંપિ તચ્ચંપિ  
एवं वयह २ वेडञ्चियसमुघाणं समोहणति २ ताण उच्चिकट्टाण लवण-  
समुदंति सच खुत्तो अणुपरियट्टेयं पयत्ता यावि होत्या )

એટલા માટે તમે અને ત્યાં જતા નહિ. નહિતર તમારા શરીરનું કુશળ  
રહેશે નહિ. આ પ્રમાણે જ તે રચના દેવીએ માકંદીદારકોને બે વાર ત્રણ  
વાર સમઘાણ્યા અને સમઘાણવાનું કાપ પતાવીને તેણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો.



मूलम्—तएणं ते मागंदियदारिया तओमुहुत्तंतरस्स  
पासायवडिंसए सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अण्णम-  
मण्णं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवया  
अम्हे एवं वयासी--एवं खलु अहं सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं  
लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, तं सेयं खलु अम्हं  
देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिहं वणसंडं गमित्तए, अण्णमण्णस्स  
एयमट्ठं पडिसुणेंति२ जेणेव पुरच्छिमिहं वणसंडे तेणेव उवा-  
गच्छंति२ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघर-  
एसु य जाव विहरंति, ततेणं ते मागंदियदारया तत्थवि सइं  
वा जाव आलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२  
तत्थ णं वावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति, ततेणं  
ते मागंदियदारया तत्थवि सतिं वा जाव अलभ० जेणेव पच्च-  
त्थिमिहं वणसंडे तेणेव उवा०२ जाव विहरति, तएणं ते मा-  
गंदिय० तत्थवि सतिं वा जाव अलभ० अण्णमण्णं एवं वयासी  
--एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी--  
एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं  
लवणाहिवहिणा जाव माणं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति  
तं भवियव्वं एत्थकारणेणं, तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिहं

किया । समुद्धात करके फिर वह उस प्रसिद्ध देवगति से २१ बार लवण  
समुद्र के चारों ओर पर्यटन करने में प्रवृत्त हो गई ॥ सू० ४ ॥

समुद्धात करीने ते चोतानी प्रसिद्ध देव गतिथी ओकथीय वणन लवणसमुद्रणी  
थारे जाणुओ भ्रमण करवाभां प्रवृत्त थई गछि ॥ सूत्र “ ४ ” ॥

वणसंडं गमित्तए त्तिकट्टु अणमणस्स ष्यमट्ठं पडिसुणेति २  
जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं  
गंधे निञ्जाति से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अणिट्ठतराए  
चेव, तएणं ते मागंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया  
समाणा सएहिं२ उत्तरिज्जेहिं आसार्ति पिहेति२ जेणेव दक्खि-  
णिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थणं महं एगं आघायणं  
पासंति अट्ठियरासिसयसंकुलं भीमदरिसणिज्जं एगं च तत्थ  
सूलायतयं पुरिसं कलुणाइं कट्ठाइं विस्सराइं कुज्जमाणं पासंति,  
पासित्ता भीता जाव संजातभया जेणेव सेसूलातियपुरिसे तेणेव  
उवागच्छंति२ ते सूलाइयं एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया !  
कस्साघयणे तुमं च णं के कओ वा इहं हव्वमागए केण वा  
इमेयारूवं आवत्ति पाविण ? , तएणं से सूलाइयए पुरिसे मागं-  
दियदारए एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया ! रयणदीवेदेव-  
याए आघयणे अहणं देवाणुप्पिया ! जंबूद्दीवाओ दीवाओ  
भारहाओ वासाओ कागंदीए आसवाणियए विपुलं पणियभं-  
डमायाए पोतवहणेणं लवणसमुदं ओयाए, तएणं अहं पोय-  
वहणविवत्तीए निब्बुद्धभंडसारे एगं फलगखंडं आसाएमि, तएणं  
अहं उवुज्झमाणे२ रयणदी वंतेणं संवूढे, तएणं सा रयणदीवदे-  
वया ममं ओहिणा पासइ२ ममं गेणहइ२ मए सद्धिं विपुलाइं  
भोगभोगाइं मुंजमाणी विहरति, तएणं सा रयणदीवदेवया  
अणया कयाई अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी  
ममं एयारूवं आवत्ति पावइ, तं ण णज्जति णं देवाणुप्पिया !

तुम्हेंपि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवत्ती भविस्सइ ? तएणं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमत्थं सोच्चा णिसम्म बलियनरं भीया जाव संजायभया सूलाइतयं पुरिसं एवं वयासी—कहणं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवे देवयाए हत्थाओ साहत्थि णित्थरिज्जामो ? तएणं से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदिय० एवं वयासी—एत्तणं देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिहे वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आसरू-  
वधारी जक्खे परिवसति, तएणं से सेलए जक्खे चोदसट्ठमुद्धि-  
ट्ठुपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमये महयार सदेणं एवं वदति कं तारयामि कं पालयामि ? तं गच्छह णं तुब्भे देवा-  
णुप्पिया ! पुरच्छिमिहं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महारिहं पुप्फच्चणियं करेह करित्ता जाणुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहेण से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा—कं तारयामि कं पालयामि ? ताहे तुब्भे वदह—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि, सेलए भे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि णित्थारेज्जा, अण्णहा भे न थाणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ॥सू०५॥

टीका—‘ तएणं ते ’ इत्यादि—ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ ततः=

‘ तएणं ते मागंदिय दारया ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) उस रयणा देवीके चले जाने के बाद (ते मागंदिय

( तएणं ते मागंदिय दारया ’ इत्यादि

टीकार्थ—(नएणं) त्थार पथी (ते मागंदियदारया) अने भाउंकीनः पुत्रोऽप्ये

पश्चात् मुहूर्त्तान्तरात्=त्रटिकाद्वयरूपमुहूर्त्तान्तरमित्यर्थः प्रासादासतंसके 'सहं वा' स्मृति अतिव्याकुलचित्ततया भविष्यत्कालिकसुखबाहुल्यरूपां वा, 'रहं वा' रति=मनोमुदं वा 'चिहं वा' धृति=चित्तस्वास्थ्य वा 'अलममाणा' अलमपानौ सन्तौ अन्योन्यमेवमवादिष्टाम्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! रत्नद्वीपदेवता आत्रामेव-मवादीत्-एवं खलु अहं सक्रवचनसंदेशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावद् व्यापत्तिर्भविष्यति, 'तं' तत्=तस्मात्कारणात् अयः खलु आवयो हे देवानुप्रिय ! पौरस्त्वं=पूर्वस्यां दिशिस्थितं वनषण्डं गन्तुम् । अन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिश्रुणुतः=

द्वारया ) उन दोनों माकंदी के पुत्रों ने ( तभी मुहूर्त्तान्तरस्स पासाय-वडिसए सहं वा रहं वा चिहं वा अलममाणा अणमणं एवं वयासी ) एक मुहूर्त्त भी उस अष्ट प्रासाद में अति व्याकुलित चित्त होने के कारण भविष्यत्कालिक सुख बाहुल्य रूप स्मृति को मनोमुद ( मन को प्रसन्न करने वाला ) रूप रति को और चित्तस्वास्थ्य रूप धृति को नहीं पाते हुए परस्पर में ऐसा विचार किया- ( एवं खलु देवानुप्रिया ! रयणद्वीपदेवया अम्हे एवं वयासी ) हे देवानुप्रिय ! रयणा देवी ने हम लोगों से ऐसा कहा है कि ( एवं खलु अहं सक्रवचनसंदेशेण सृष्टिणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सह-तं सेयं खलु अहं देवानुप्रिया ! पुरच्छिमिलं वणसंडं गमित्तए ) " मुझे शक्रेन्द्र की आज्ञानुसार लवण समुद्राधिपति सुस्थित देव ने ऐसा आदेश दिया है कि मैं २१ बार लवण समुद्र की प्रदक्षिणा करूँ " इत्यादि से लेकर

( तभी मुहूर्त्तान्तरस्स पासायवडिसए सहं वा रहं वा चिहं वा अलममाणा अणमणं एवं वयासी )

ते भेदेभमां ओक मुहूर्त्तं नेटला अभावणा समयमां पणु शांति भेणवी नडि तेओ व्याकुण चित्त होवाथी भविष्यमां प्रास थनारा सुण इप स्मृतिने भनोमुद ( भनने आनंदित करना ) इप रतिने अने चित्त स्वास्थ्य इप धृति प्रास न करतां ओक पीजनी साथे विचार करना लाग्या ( एवं खलु देवानुप्रिया ! रयणद्वीप देवया अम्हे एवं वयासी ) हे देवानुप्रिय ! रयणा देवीओ अभने कहुं छे के

( एवं खलु अहं सक्रवचन संदेशेण सृष्टिणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सह- तं सेयं खलु अहं देवानुप्रिया ! पुरच्छिमिलं वणसंडं गमित्तए )

भने शक्रेन्द्रनी आज्ञाथी प्रेषाधने लवणसमुद्रना अधिपति सुस्थित देवे हुकम कर्था छे के आरे ओकवीश वणत लवण समुद्रनी प्रदक्षिणा करवी वजेदेशी

स्वीकृतः, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यत्रैव पौरुषो वनपण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तत्र खलु बापीषु च यावद् अभिरममाणौ आलिगृहेषु च यावद् विहरतः । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलममानौ यत्रैवोत्तरीयो

शरीर का विध्वंस न हो यहां तक का रयणा देवी का सब कथन यहां इन दोनों की बात चीत में लगा लेना चाहिये । इसलिये हे देवानुमित्र ! हम लोगों को यही अब उचित है कि हम लोग पूर्वदिशा संबन्धी वनखंड में चले । ( अण्ण मण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छि मिल्ले वनसंडं तेणेव उवागच्छंति २ तत्थ णं बावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति ) इस प्रकार परस्पर में किये इस विचार को उन दोनों ने मान लिया और मान कर जहां पूर्वदिशा संबन्धी वनखंड था वहां गये-वहां जाकर उन्होंने ने बाबड़ी आदि में खूब मन-चाहा क्रीडा की बाद में वे रम्य वनस्पति विशेष के घरों आदि में क्रीडा करने लगे । ( तएणं मगदियदारया तत्थ वि सर्तिं वा जाव अलम० जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति तत्थ णं बावीसु य जाव आलिघरएसु य जाव विहरंति ) परन्तु उन माकंदी दारकों को वहां जब भविष्यत्कालीन सुख बाहुल्य रूप स्मृति आदि कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो वे वहां से निकल कर जहां उत्तर दिशा

भांडीने तमाडुं शरीर नष्ट थाय नडि त्यां सुधीनी रयणा देवीनी उपर कक्षा सुज्जणी अधी विगत अर्द्धी समभववी जेउंजे जेथी डे देवानुमित्र ! डेवे अभने जेज्ज येअय देआय छे डे अमे पूर्व दिशाना वनपंडमां जधजे.

( अण्ण मण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वनसंडे तेणेव उवागच्छंति २ तत्थ णं बावीसु य जाव अभिरममाणा आलिघरएसु य जाव विहरंति )

आ प्रभाण्णे भूने जेके भीजना विज रोथी संभत थया अने त्यार पछी न्यां पूर्व दिशाना वनपंड डेने। त्यां गया, त्यां जधने तेज्जेजे वावो वगेरेमां प्रण ज प्रभाण्णमां डीडाज्जे करी अने पछी तेज्जे त्यांना ज रम्य वनस्पति विशेषना गुडे। वगेरेमां डीडा करवा दाव्या.

( तएणं मार्गदियदारया तत्थ वि सर्तिं वा जाव अलम० जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति तत्थ णं बावीसु य जाव आलिघरए सु य जाव विहरंति )

पश्चात् माकंदी दारकों ने त्यां पणु न्याने भविष्यतुं सुख बाहुल्य रूप स्मृति वगेरे कष्ट भण्डुं नडि त्यारे तेज्जे त्यांथी नीकणीने उत्तर दिशाना

वनवण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तत्र खलु वापीयु च यावद् आलिगृहेषु च यावद् विहरतः । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलम-मानौ यज्ञैव पाश्चात्यो वनवण्डस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य यावद् विहरतः । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ तत्रापि स्मृतिं वा यावद् अलममानौ अन्योन्यमेवमवा-दिष्टाम्—एवं खलु हे देवानुमिय ! आवां रत्नद्वीपदेवता—एवमवदत्—एवं खलु अहं देवानुमियौ ! शक्रस्य वचनसन्देशेन सुस्थितेन लवणाधिपतिना यावत् मा खलु युवयोः

संबन्धी वनवण्ड था वहां आये । वहां आकर उन्होंने ने बावडिओं में स्नान किया—यावत् आलिघरों में क्रीडा किया । ( तएणं ते मार्गदियदारगा तत्थ वि सइं वा जाव अलम० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा० २ जाव विहरंति ) परन्तु जब उन्हें वहां भी स्मृति आदि रूप कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ तो वे वहाँ से निकल कर पश्चिम दिशा संबन्धी वनवण्ड था वहां आये ।

वहां आकर उन्होंने ने बावडिओं में स्नान किया और आलिघरों आदि में परिभ्रमण किया । ( तएणं ते मार्गदिय० तत्थ वि सइं वा जाव अलम० अणमण्णं एवं वयासी ) फिर भी उन माकंदी—के उन दोनों पुत्रों को वहां शांति आदि कुछ भी नहीं मिला जब इस प्रकार की परिस्थिति उन्होंने ने देखी तो परस्पर में ऐसा विचार किया ( एवं खलु देवानुमिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी—एवं खलु अहं देवानुमिया ! सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्टएण लवणाहिबइणा जाव माणं

वनवण्डमां पडोव्या...त्यां पडोव्हीने तेज्जोव्हे वावामां स्नानं कथुं' यावत् आदि-  
घरेमां क्रीडाये। करी

( तएणं ते मार्गदियदारगा तत्थ सइं वा जाव अलम० जेणेव पच्चत्थि-  
मिल्ले वणसंडे तेणेव उवा० २ जाव विहरंति )

पञ्च त्वां पञ्च तेभने जग्गारे स्मृतिं वगेरे इप कंथं पञ्च सुभ मन्थुं  
नडि त्वां तेज्जो त्वांथी नीकणीने पश्चिम दिशाना वनवण्डमा पडोव्या,

पश्चिम दिशाना वनवण्डमां जग्गने तेज्जोव्हे वावामां स्नानं कथुं अने  
आदिघरे वगेरेमां विचरइ। कथुं.

( तएणं ते मार्गदिय० तत्थ सइं वा जाव अलम० अणमण्णं एवं वयासी )  
त्वां पञ्च पडोव्हीनी जेमज माकंदी पुत्रोने कंथं पञ्च जातनी शांति वणी  
नडि. आनी परिस्थितिमां तेज्जोव्हे परस्पर भगिने विचार कर्यो के

( एवं खलु देवानुमिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी— एवं खलु  
अहं देवानुमिया ! सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्टएण लवणाहिबइणा जाव माणं

शरीरस्य व्यापत्तिर्भवियति, 'तं' तत्=तस्मात्-कारणाद् भवितव्यमत्र कारणेन, तच्छ्रेयःखलु आश्रयो दाक्षिणात्यं वनपण्डं गन्तुम्, 'इतिकट्टु' इतिकृत्वा इतिविचार्य अन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिश्रूयत', प्रतिश्रुत्य यत्रैव दाक्षिणात्यो वनपण्डरतत्रैव 'पदारेत्य गमणाए' मधारयतो गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तौ प्रस्थितावित्यर्थः । ततः खलु=तदनु

तुभं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमिस्सए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एय-मट्ठं पडिस्सुणेंति ) हे देवानुप्रिय यह तो तुम्हें ज्ञात ही है कि रयणद्वीप देवता-रयणादेवी-ने जो हमलोगों से ऐसा कहा था कि मुझे शक्रेन्द्र की आज्ञा से लवणाधिपति सुस्थित देवने लवणसमुद्र की २१ बार पर्यटना करने के लिये कहा है इत्यादि २ । सो तुम दक्षिणदिशा सम्बन्धी वनपण्ड के सिवाय तीन दिशा सम्बन्धी वनपण्डों में ही चित्त के उद्दिष्ट आदि होने पर जाना वहां की वावड़ियों आदि में भी स्नान आदि कर अपने मन को आनंदित करना दक्षिणदिशा सम्बन्ध वनपण्ड में नहीं जाना वहां एक महाकाय विकराल सर्प रहता है । कहीं ऐसा न हो कि वहां जाने पर उसके द्वारा तुम्हारी मृत्यु हो जाय-सो उसके इस कथन में कोईन कोई कारण अवश्य होना चाहिये । अतः इस कारण की जांच के लिये हमें दक्षिणदिशा सम्बन्धी वनपण्ड में जाना श्रेयस्कर है । ऐसा उन्होंने परस्पर में विचार किया । और इस विचार को

तुभं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमिस्सए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिस्सुणेंति )

हे देवानुप्रिय ! जो बात तमो लक्ष्मण ने कहा है शक्रेन्द्र की आज्ञाधीन प्रेमाधने लक्ष्मण समुद्रना अधिपति सुस्थित देवे ऐकनीश वार समुद्रनी चारे जानु भारे परिश्रम लक्ष्मण कर चुके वगेरे, तो तमो दक्षिण दिशा तरङ्गना वनपण्ड सिवाय आक्षीना त्रये दिशाना वनपण्डोभां चित्त उद्दिष्ट थाय त्थारे जलो त्यांनी वायो वगेरेभां स्नान वगेरे करीने चेताना मनने प्रसन्न करजे, दक्षिण दिशा तरङ्गना वनपण्डोभां तभारे जलु नहीं केम के त्यां जेक भोटो भडाकाण विकराण साप रहके छे, कथं जेवुं थाय नहि के तमे त्यां लज्जे अने तेनी लपेटभां आचीने तभां मृत्यु थई नाथ, तो तेनो आ वातभां कंठक रहस्य जे क्लृप्त होवुं जेछजे, जेटसा भोटो आ रहस्य विशेषे त्यां जधने आपणे कंठक लक्ष्मण तो जेछजे ज. आभ परस्पर विचार करीने तेज्जेजे त्यां जवानो भल्लम विचार पणु करी ज दीधि।

તપ્ર-ગમનમાર્ગે ગન્ધઃ ' ણિદ્ધાઈ ' નિર્ધાયતિ=સાવેગં સમાયાતિ, કીદશો ગન્ધઃ ?  
 હંત્યાઈ- ' સે જહાનામંઈ ' તદ્ યયનામકમ્-તથાહિ- ' અહિમહેઈ વા ' અહિમૃતક  
 હિતિ વા=મૃતસર્પકલેબરમિતિ વા યાવત્ ' एत्तो वि ' તસ્માદપિ મૃતસર્પાદિકલેવ-  
 રાદપિ ' અણિદ્વત્તરાઈ ચેવ ' અનિષ્ટતર ઇવ=યન્નામશ્રવણેઽપિ મનોઽતિવિકૃતં  
 જાયતે । તતઃ સ્વલુ તૌ માકન્દિકદારકૌ તેનાશુમેન ગન્ધેન ' અભિમૂયસમાણા '   
 અભિમૂતૌ=વ્યાકુલૌ સન્તૌ સ્વકેન ઉત્તરીયેણ=ઉત્તરાસજ્જેન ' દુપટ્ટા ' હિતિ પ્રસિદ્ધેન  
 આસ્ય=મુલ્લેકદેશરૂપં સ્વ રવ નાસિકામિત્યર્થઃ ' પિહેતિ ' પિષત્તઃ=સમાન્નદાદયતઃ,  
 પિધાય=નાસિકામાન્નદાય યત્રૈવ દાક્ષિણાસ્યો વનપ્પટ્ટસ્તત્રૈવોપાગમૌ । તત્ર સ્વલુ

હંદ્દોને આપસ મેં નિશ્ચિત ખી કર લિયા । ( પહિસુણિત્તા જેણેવ દક્ષિણ  
 ણિલ્લે વણસંઢે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાઈ-તણં ગંધે નિદ્ધાતિ સે જહા  
 નામઈ અહિમહેઈવા જાવ અણિદ્વત્તરાઈ ચેવ, તણં તે મારંગદિયદારયા તે-  
 ણં અસુમેણં ગંધેણં અભિમૂયા સમાણા મઈહિં ૨ ઉત્તરિજ્જેહિં આસાતિ  
 પિહેતિ ૨ જેણેવ દક્ષિણિલ્લે વણસંઢે તેણેવ ઉવાગયા તત્થણં મહં ઇગં  
 આધાયણં પાસંતિ ) બિચાર નિશ્ચિત કર ફિર વે દોનોં જહાં દક્ષિણદિશા  
 સમ્બન્ધી વનપ્પટ્ટ ધા ઉસ ઓર ચલ દિયા । ચલતે ૨ ઉન્હેં મારંગ મેં બહુત  
 ષઢી દુર્ગન્ધ આઈ । જૈસો દુર્ગંધ મૃત સર્પ આદિ સઢે હુપ કલેબર સે  
 આતી હૈ ઉસસે ખી અધિક અનિષ્ટતર વહ દુર્ગન્ધ થી ।

હસ કે અનન્તર ઉન દોનોં માકન્દિકે દારકોં ને ઉસ અશુભ ગંધસે  
 વ્યાકુલ હોકર અપને અપને મુલ્લ કે એક દેશરૂપ ભાગ નાસિકા કો દુ-  
 પટ્ટે કે ઇવ.દેશ સે ફક લિયા । ફક કર ફિર વે દક્ષિણ દિશા સંબન્ધી

( પહિસુણિત્તા જેણેવ દાક્ષિણિલ્લે વણસંઢે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાઈ-તણં ગંધે,  
 નિદ્ધાતિ સે જહા નામઈ અહિમહેઈવા જાવ અણિદ્વત્તરાઈ ચેવ તણં તે મારંગદિય  
 દારયા તેણં અસુમેણં ગંધેણં અભિમૂયા સમાણા મઈહિં ૨ ઉત્તરિજ્જેહિં આસાતિ પિહેતિ ૨  
 જેણેવ દાક્ષિણિલ્લે વણસંઢે તેણેવ ઉવાગયા તત્થણં મહં ઇગં આધાયણં પાસંતિ )  
 અને ત્યાર પછી તેઓ બંને જે તરફ દક્ષિણ દિશા સંબન્ધી વનપ્પટ્ટ  
 હતો તે તરફ રવાના થયા રસ્તામાં ચાલતાં ચાલતાં તેઓને એકદમ ખરાબ  
 દુર્ગંધ આવી. મરીને સડી અથવા સાપના શરીરની જે જેવી અનિષ્ટતા દુર્ગંધ  
 હોય છે તેવી જે તે દુર્ગંધ પણ હતી. માકન્દી દારકોએ તે અશુભ ગંધથી  
 બ્યાકુલ થઈને પોતાના મોંના એક દેશ રૂપ ભાગ નાકને ખેસના છેડાથી ઢાંકી  
 દીધું. ઢાંકીને તેઓ આગળ દક્ષિણ દિશાના વનપ્પટ્ટમાં ગયા. ત્યાં જતાં જે  
 તેઓએ એક શુભી ચંદાવવાની જગ્યા જોઈ.



महदेकम् 'आघायणं' आघातनम्=आघातस्थानं वधस्थानमित्यर्थः पश्यतः, तत् स्थानं कीदृशम् ? इत्याह—'अद्विपरासिसयसंकुलं' अस्थिराशिगतसङ्कुलम्—अस्थनां राशिः=पुञ्जः, तेषां शतानि, तैः सङ्कुलं=व्याप्तम् 'भीमदरसणिज्जं' भीमदर्शनी यम्—दर्शनमात्रेऽपि भयजनकम् । पुनश्च तत्रैकं 'सूलाइतयं' शूलाचितकं=शूला-रोपितं पुरुषं 'कलुणाइं' करुणानि=करुणाजनकानि 'कट्टाइं' कष्टानि=हृदयदुःखोत्पादकानि 'विस्सराइं' विस्सराणि=विकृतध्वनिकानि वचनानि 'कुज्जमाणं' कूजन्तम्=अव्यक्तरूपेणोच्चरन्तं पश्यतः । दृष्ट्वा च भीतौ 'जाव' यावत्—यावच्छब्देन—व्रतौ त्रसितौ=त्रासं प्राप्नौ उद्विग्नौ इति, 'संजायभया' सञ्जातभयौ=प्रासभयौ तौ यत्रैव स शूलाचितपुरुषस्तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य तं शूलाचितं पुरुष-

उस वनचंड में गये । वहां जाते ही उन्होंने ने एक शूली चढानेका का स्थान देखा । (अद्विपरासिसयसंकुलं भीमदरसणिज्जं एगंच तत्थ सूलाइतयं पुरिसं कलुणाइं कट्टाइं विस्सराइं कुज्जमाणं पासंति पासित्ता भीया जाव संजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उपागच्छंति) जिस में सैकड़ों हड्डियों के ढेर लगे हुए थे । एवं जो देखने में बड़ा भयप्रद था । वहीं पर उन्होंने ने शूली पर चढे हुए एक पुरुष को देखा जो बहुत बुरी तरह चिल्ला चिल्ला रहा था । उसके इस चिल्लाने की आवाज को सुनकर हृदय में दया का प्रवाह बहने लग जाता था । साथ २ में चिन्तमें दुःख भी होने लगता था । उसको देखकर ये दोनों भयभीत हो गये । त्रास एवं उद्वेगसे युक्त बन गये । इसी स्थितिमें ये दोनों जहाँ वह शूलीपर चढा हुआ पुरुष था, वहाँ पहुँचे (उपागच्छित्ता) वहाँ पहुँच कर (तं सूलाइयं एवं वयासी) उन्होंने ने उस शूलारोपित मनुष्य से इस

(अद्विपरासिसयसंकुलं भीमदरसणिज्जं एगं च तत्थ सूलाइतयं पुरिसं कलुणाइं कट्टाइं कुज्जमाणं पामंनि पासित्ता भीया जाव संजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उपागच्छंति)

त्यां सेंकडा ढाडकांओना ढगदा पडथा डता. त्यांजुं दृश्य ओकदम भयप्रद डतुं. तेओओ त्यां शूणी उपर चढेला ओक माणुसने जेथे के के भदुअ भराण रीते करुणु कंदन करी रह्यो डतो. तेनी करुणु लयां अवाजने सांलणीने हृदयमां दथाने प्रवाह वडेवा लागेने डते. अने साथे साथे तेनी ओवी दुईशा जेधने मनमां दुःख पडु थरुं डतुं. तेओ अने तेने जेधने करी गया. त्रास अने उद्वेग युक्त थरुं गया. आ प्रभावे तेओ अने न्यां ते माणुस शूणी उपर बटकी रह्यो डतो त्यां गया. (उपागच्छिता) त्यां जेधने (तं सूलाइय एवं वयासी) तेओओ शूणी उपर बटकता माणुसने आ प्रभावे कहुं के

મેત્રમવાદિષ્ટામ્-एतत्खलु हे देवानुप्रिय ! कस्याघातनं=वधस्थानम् ? त्वं च खलु कोऽपि कुतो वा कस्मात्स्थानात् इह हव्यमागतः समागतः ? केन वा इमामेतद्रूपामापत्तिं प्रापितः ? । ततः खलु स शूलचिचकः=शूलारोपितः पुरुषो माकन्दिक दारकावेवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रियो रत्नद्वीपदेवताया आघातनं=रत्नद्वीप देवतया स्यापितं वधस्थानम्-अहं खलु हे देवानुप्रियो ! जम्बूद्वीपात्=जम्बूद्वीपा-मिथानाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद्=भरतक्षेत्रात् काकन्दीनगर्या ' आसवाणियए ' अश्ववाणिजकः=अश्वव्यापारी विपुलं ' पणियमांडं ' पणितभाण्डं=विक्रेय वस्तु-जातम्, आदाय=गृहीत्वा पोतवहनेन लवणसमुद्रम् ' ओवाए ' अवयातः=अवगा-

प्रकार कहा-(एस णं देवानुप्पिया ! कस्साघयणे तुमं च णं केकओवा इहं हव्वमागए केण वा इमेयारूवं आवत्ति पाविए ? तएणं से सूलाइयए पुरिसे मार्गंदियदारए एवंवयासी-एसणं देवानुप्पिया ! रयणहीव देवयाए आघ-यणे अहणं देवानुप्पिया ! जंबूहीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागं-दीए आसवाणियाए विपुलं पणिय भंडमायाए पोहवहणेणं लवणसमुद्रं ओवाए) हैं देवानुप्रिय ! 'कस्साघयणे' यह शूली स्थान किसका हैं । तुम कौन हो ? यहां कहाँसे आये हो ? और किसने तुम्हें इस आपत्तिमें डाला है । उन की इस बात को सुनकर उस शूलारोपित पुरुष ने उन दोनों माकंदी-दारकों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो ! यह शूली स्थान रयणादेवीका है, मैं हे देवानुप्रियो ! जंबूद्वीप नाम के द्वीपमें वर्तमान भरत क्षेत्रस्थ काकंदी नाम की नगरी का निवासी अश्ववाणिक्-घोड़ों का व्यापारी हूँ । मैं वहां से क्रियवस्तु समूह को लेकर नौकाद्वारा इस

( तएणं देवानुप्पिया ! कस्साघयणे तुमं च णं केकओवा इहं हव्वमागए केणवा इमेयारूवं आवत्ति पाविए ? तएणं से सूलाइयए पुरिसे मार्गंदियदारए एवं वयासी-एसणं देवानुप्पिया ! रयणहीव देवयाए आघयणे अहणं देवानु-प्पिया ! जंबू हीवाओ दीवा-ओ भारहाओ वासाओ कागं, दीए आसवाणियाए विपुलं पाणिय भंडमायाए पोयवहणेणं लवणसमुद्रं ओवाए )

હે દેવાનુપ્રિય ! આ શૂળી સ્થાન કોનું છે ? તમે કોણુ છો ? અહીં તમે ક્યાંથી આવ્યા છો ? અને કોણુ તમારી આવી હાલત કરી છે ? તેઓની વાત સાંભળીને શૂળી ઉપર લટકતા માણસે માકંદીદારકેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! આ શૂળી-સ્થાન રચણા દેરીનું છે. હે દેવાનુપ્રિયો ! હું જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં વિદ્યમાન ભરતક્ષેત્રનો કાકંદા નામની નગરીનો રહીશ છું. હું અશ્વ વણિક-ઘોડાનો વેપારી-છું. ત્યાંથી હું વેચાણની વસ્તુઓ સાથે લઈને નાવવડે આ હવણ સમુદ્રમાં યાત્રા કરતો આવ્યો હતો. ( તएणं अहं पो-

હિત્વાન્ । તતઃ સ્વલ્લુઃઅહં 'પોત્તવહ્નવિવત્તો' પોત્તવહ્નવિવત્તો, નૌકાયાં મગ્નાયાં સત્યાં 'નિબ્બુદ્ધમંડસારે' નિબ્બુદ્ધિતમાખંડસારઃ જલનિમગ્નવસ્તુપારઃ, એકં ફલક-સ્વંખંડમાસાદયામિ । તતઃ સ્વલ્લુઃઅહં 'ઉબ્બુજ્ઞમાણે ૨ ઉદ્બુધ્યમાનઃ ૨ ઉત્તરન્ ૨ રત્નદ્વીપાન્તે=રત્નદ્વીપસમીપે સ્વલ્લુ 'સંવૂઢે' સંવૂઢ=તીરં પ્રાપ્તઃ । તતઃ સ્વલ્લુ સા રત્નદ્વીપદેવતા મામ્ 'ઓહિણા' અવધિના=અવધિજ્ઞાનેન મશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા માં શુદ્ધતિ, શુદ્ધિત્વા મયા સાર્દ્ધં વિપુલાન્ ભોગભોગાન્=શબ્દાદિવિષયાન્ 'શુંજમાણી' મુજ્ઞાના 'વિહરઈ' વિહરતિ=આસ્તેસ્મ । તતઃ સ્વલ્લુ સા રત્નદ્વીપદેવતા, અન્યદા કદાચિત્ 'અહાલહુસર્ગસિ' યથાલઘુસ્વકે યથાપ્રકારકે લઘુસ્વરૂપે સ્તોકમાત્રેઽપરાધે પરિક્ષિપિ-

લવણસમુદ્ર મેં ઉત્તરા (તણં અહં પોયવહ્નવિવત્તો) ભાગ્યવશાત્ મેરી નૌકા હસ સમુદ્ર મેં ટકરા જાને સે દૂધગઈ । (નિબ્બુદ્ધમંડસારે એકં ફલક-સ્વંખંડં આસાએમિ) હસ તરહ જિસકા સમસ્ત વસ્તુસાર જલનિમગ્ન હો જુકા હૈ એસે મુઝે વહીં પર એક કાષ્ઠફલક પ્રાપ્ત હો ગયા । (તણં અહં ઉબ્બુજ્ઞમાણે ૨ રયણદીવં તેણં સંવૂઢે) ઉસકી મહાપતાસે તૈરતાહુઆમૈં હસ રત્નદ્વીપકે પાસ આપહુંચા । (નણં સા રયણદીવદેવયા મમં ઓહિણા પાસઈ) હતને મેં ઉસ રત્નદ્વીપદેવી ને મુઝે અપને અવધિજ્ઞાન સે દેખ લિયા- (પાસિત્તા મમં ગેણહઈ, ગેણિહત્તા મપ્પ સાર્દ્ધં વિપુલાઈં ભોગભોગાઈં શુંજ માણી વિહરઈ તણં સા રયણદીવદેવયા અણગયા કયાઈં અહાલહુસર્ગસિ અવરાઈંસિ પરિક્કુવિયા સમાણી મમં ઇયાલુવં આવત્તિ પાવેઈ તં ન ણજ્ઞજ્ઞાણં દેવાણુપ્પિયા ! તુમ્હંપિ હમેસિ સરીર ગાણં કા મણ્ણે આવત્તી મવિસ્સઈ ?) દેખકર ઉસને મુઝે અપને પાસ રલ્લ લિયા । રલ્લકર મેરે સાથ ઉસને મન ચાહે રલ્લ કાનભોગોંકો ભોગા । કિસી એક

વેર્ણ વિવત્તો ) દુર્ભાગ્યથી મારી નાવ આ સમુદ્રમાં અથડાઈને દૂરી ગઈ. ( નિબ્બુદ્ધમંડસારે એકં ફલક-સ્વંખંડં આસાએમિ ) આ રીતે વેથાણની બધી જ વસ્તુઓ આરે પાણીમાં દૂરી ગઈ ત્યારે પાણીમાંજ એક લાઠડું અને મળી ગયું ( તણં અહં ઉબ્બુજ્ઞમાણે ૨ રયણદીવં તેણં સંવૂઢે ) તેના ઉપર તરતો હું આ રત્નદ્વીપની પાસે આવી પહોંચ્યો. ( તણં સા રયણદીવદેવયા મમં ઓહિણા પાસઈ ) એટલામાં તે રત્નદ્વીપ દેવીએ અને પોતાના અવધિજ્ઞાનથી જોઈ લીધી.

( પાસિત્તા મમં ગેણહઈ, ગેણિહત્તા મપ્પ સાર્દ્ધં વિપુલાઈં ભોગભોગાઈં શુંજમાણી વિહરઈ તણં સા રયણદીવદેવયા અણગયા કયાઈં અહાલહુસર્ગસિ અવરાઈંસિ પરિક્કુવિયા સમાણી મમં ઇયાલુવં આવત્તિ પાવેઈ તં ન ણજ્ઞજ્ઞાણં દેવાણુપ્પિયા ! તુમ્હંપિ હમેસિ સરીરગાણં કામણ્ણે આવત્તી મવિસ્સઈ ? )

જોઈને તેણે અને પોતાની પાસે રાખી લીધી અને રાખીને મારી સાથે

तां सती मायेतद्गुणमापत्तिं प्रापयति तत्र ज्ञायते खलु हे देवानुप्रियो ! युवयोरन्य-  
नयोः शरीरयोः का=कीदृशी आपत्तिर्भाविष्यति ? इति 'ग्रन्थे' ग्रन्थे=चिन्तयामि ।

ततः खलु स शूलाचितपुरुषस्तौ माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्-एष खलु  
हे देवानुप्रियो ! पौरस्त्ये वनवण्डे शैलकस्य यक्षस्य यक्षावतने शैलको नाम अश्व-

समय मेरे द्वारा उसका थोड़ा सा अपराध बन गया सो उस थोड़े  
से अपराध के बन जाने पर वह बहुत अधिक क्रुपित हो गई ।  
क्रुपित होकर उसने दृष्टे फिर इस विपत्ति में डाल दिया है । अतः  
हे देवानुप्रियो ! तुम दोनों के शरीर की भी कैसी दशा होगी यह कौन  
जान सकता है-मैं इसीका विचार कर रहा हूँ । ( तर्पणं ते मार्गं दि-  
दारया तस्स सूलाइयगस्स अंति एयमहुं सोच्चा गिसम्म बलियारं  
भीया जाव संजायमया सूलाइसयं पुरिसं एवं वयासी ) इस तरह उस  
शूलारोपित पुरुष के मुख से इस बात को सुनकर और उसका अच्छी  
तरह हृदय से विचार कर वे दोनों माकंदी-दारक बलिततर- अग्र्यं न-  
भयभीत हो गये यावत् भयत्रस्त होकर उन्होंने फिर उस शूलारोपित  
पुरुष से इस प्रकार कहा ( कहणं देवानुप्पिया ! अम्हे रयणदीव  
देवयाए हत्थाओ साहत्थि गित्थरिज्जामो ? ) हे देवानुप्रिय ! हम लोग  
कैसे इस रयणा देवो के हाथ से शीघ्र साक्षात् छूट सकते हैं- ( तर्पणं  
से सूलाइयए पुरिसे ते मार्गं दि० एवं वयासी एत्तणं देवानु प्पिया ! पुर

तेणे ण्ण्ण भुण्ण काम बोओ बोओव्या । केअं ओक वण्णते भाराथी सडेअ  
भूअ थअं गअं । ते भारी सडेअ भूअथी पण्ण अत्यधिक सुस्से थअं गअं अने  
तेणे त्याए पण्ण भारी आवी हाअत करी छे । ओथी छे देवानुप्रियो ! तभारा  
शरीरणी पण्ण शी दशा थये ! ते केअण्ण जाण्णी शके तेम छे हुं अत्थाए ओअ  
विचार करी रह्यो छुं ।

( तर्पणं ते मार्गं दिदारया तस्स सूलाइयगस्स अंति एयमहुं सोच्चा  
गिसम्म बलितरं भीया जाव संजायमया सूलाइसयं पुरिसं एवं वयासी )

आ शूली छपर छटकता भाणुसना ओंथी आ पथी विगत जाण्णीने  
तेना छपर भूअ अ गंवीरताथी विचार करीने तेओ अने माकंदी दारके  
अथ अ-सयलीत थअ गया । यावत् सयत्रस्त थअने तेओ अनेओ शूली छपर  
छटकता भाणुसने आ प्रभाणे कहुं के

( कहणं देवानुप्पिया ! अम्हे रयणदीव देवयाए हत्थाओ साहत्थि गित्थरिज्जामो )

छे देवानुप्रिय ! रयणा देवीना हाथमांथी अने बंदी केवी रीते मुक्त  
थअं शक्कीये !

रूपधारी यक्षः परिवसति=वर्त्तते । ततः खलु स शैलको यक्षः 'चोदसद्वमुद्दिष्ट-  
पुण्यमासिणीसु' चतुर्दश्यष्टमुद्दिष्टपौर्णमासीषु-चतुर्दश्यामष्टम्याम् 'उद्दिष्ट'  
ति अमात्रास्यायां पूर्णिमायां च त्रियी 'आगयसमए' आगतसमये=आसन्नीभूता-  
वसरे 'पत्तसमए' प्राप्तसमये उपलब्धवसरे साक्षाद्देवावसरे, यथोचितसमयं  
सम्प्राप्येत्यर्थः महता महता शब्देन=उच्चैः स्वरेण एवं वदति- 'कं तारयामि ?  
कं पालयामि=रक्षयामि?, इति, 'तं' तत् तस्मात् गच्छतं खलु युवां हे देवानुप्रिया !  
पौरस्त्यं वनवण्डं, शैलकस्य यक्षस्य 'महरिहं' महार्हां महायोग्यां 'पुष्कच्वणियं'

च्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आ-  
सखधारी जक्खे परिवसह ) उन की इस प्रकार की बात सुनकर उस  
शूलारोपित पुरुष ने उन भाकंदी दारकों से इस प्रकार कहा । हे देवानु-  
प्रियों ! पूर्व दिशा की वनवण्ड में एक शैलकयक्ष का यक्षायतन है ।  
उस में अश्वरूप धारी शैलक नामका यक्ष रहता है । (तएणं से सेलए  
जक्खे चोदसद्वमुद्दिष्टपुण्यमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महयां  
सहेणं एवं वयह, कं तारयामि, कपालयामि ? तं गच्छह णं तुम्हे देवाणु-  
प्पिया ! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुष्कच्वणियं  
करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पंजलिउडा त्रिणएणं पज्जुवासमाणा  
चिद्धह, जाहेणं सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा कं  
तारयामि कं पालयामि ? ताहे तुम्हे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पाल-  
याहि ) वह शैलक यक्ष चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या एवं पूर्णमासी

( तएणं से मूलाइयए पुरिसे ते मागंदियं एवं वयासी एसगं देवाणुप्पिया !  
पुराच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आसख-  
धारी जक्खे परिवसहः )

तेओनी आ प्रभाओनी वात सांखणीने ते शूणी उपर लट्ठता पुरुषे  
भाकंदी दारकोने कहुं के छे देवानुप्रियो ! पूर्व दिशाना वनवण्डां ओक शैलक  
यक्षजं यक्षायतन छे. त्यां अश्वरूपधारी शैलक नामे यक्ष रहे छे.

( तएणं से सेलए जक्खे चोदसद्वमुद्दिष्टपुण्यमासिणीसु आगयसमए पत्त-  
समए महयां २ सहेणं एवं वयह, कं तारयामि कं पालयामि ? तं गच्छह णं  
तुम्हे देवाणुप्पिया ! पुराच्छिमिल्लं वण संडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुष्क-  
च्वणियं करेह, करित्ता जाणुपायवडिया पंजलिउडा त्रिणएणं पज्जुवासमाणा  
चिद्धह, जाहेणं सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा कं तारयामि  
कं पालयामि ? ताहे तुम्हे वयह अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि )

पुष्पार्चनिकां कुरुतं, कृत्वा जानुपादपतितौ=जानुनीपादौ च भूमौ निधाय विनम्री-  
भूतौ पंजलिउडा । माञ्जलिपुटौ-संयोजितकरपुटौ, इस्तौ संयोज्येत्यर्थः 'विणयणं'  
विनयेन=नम्रभावेन 'पञ्जुवासपाणा' पर्वुपासीनौ=तं सेवमानौ तिष्ठतम्, यदा  
खलु स शैलको यक्ष आगतसमये=अवसरे समागते प्राप्तसमये=उपलब्धासवरे एवं  
वदेत्- 'कं तारयामि कं पालयामि ?' इति. तदा युवां वदतम्-हे शैलक यक्ष !  
आत्रां तारय, आत्रां पालय । शैलको 'मे' युवाभ्यामाराधितो यक्षः 'परं'  
समर्थः, स युवां रत्नदीपदेवताया हस्तात् 'साहर्षि' साक्षात् 'णित्यारेज्जा'  
निस्तारयिष्यति=पारं नेष्यति, सङ्कटान्मोचयिष्यतीत्यर्थः, अन्यथा=एवमकरणे मे'  
युवयोः न जानामि अनयोः सरीरयोः का=कीदृशी आपत्तिर्भविष्यति ?, इति  
'मन्ने' मन्ये=अहं चिन्तयामि ॥ सू० ५ ॥

के दिन उचित समय प्राप्त होने पर बड़े जोर से ऐसा कहता है कि  
मैं किसको ताहं किसकी रक्षा करूँ ? इस लिये हे देवानुप्रियो !  
तुम दोनों पूर्वदिशा संघन्धी वनपंड में जाओ और वहां उस शैलक  
यक्ष की आराधना करो । आराधन करके फिर उस के समक्ष दोनों  
घुटनों को और पैरों को टेककर- भूमिपर रखकर- अत्यन्त नम्र हो  
बड़े विनय के साथ दोनों हाथों को जोड़ कर उसकी उपासना करने  
में लग जाओ । जब वह शैलक यक्ष अवसर आने पर वैसा कहे कि मैं  
कैसे ताहं कैसे रक्षित करूँ ? तो तुम दोनों कहना हे शैलक यक्ष !  
हम दोनों को यहां से तारो हमारी रक्षा करो । ( सेलप मे जक्खे  
परं रयण दीव देवयाए हत्थाओ साहर्षि णित्यारेज्जा अण्णहा मे न  
याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवर्इ भविस्सइ ) इस तरह तुम

ते शैलक यक्ष औदश, आठम, अभावस्था अने पूनमना दिवसे उचित  
समय प्राप्त होतां गहुं सोदथी आ प्रभावे कहे छे के कोने हुं पार पडे/आहुं ?  
कोनी हुं रक्षा करे ? ओदथा भाटे छे देवानुप्रियो ! तमे अने पूव दिशाना  
वनपंड में जाओ अने त्यां ते शैलक यक्षनी आराधना करो. आराधना करीने  
तेनी आमे अने घुटणे अने पगे टेकीने घण्टा न अ शब्दोभां विनयनी  
आथे अने हाथ जोडीने तेनी उपासना करवा लागे. आगे ते शैलक-यक्ष  
समय आवतां आ प्रभावे कहेवा लागे के कोने हुं पार उताइ अने कोनी-  
रक्षा करे ? अरे तमे अने विनती करतां कहेले के-हे शैलक यक्ष ! आमे  
अने अहोथी पार उतारे. अभ री रक्षा करो.

सेलप मे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहर्षि णित्यारेज्जा  
अण्णहा मे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवर्इ भविस्सइ )

मूलम्-तएणं ते मागंदिय० तस्स सूलाइयस्स अंतिए  
 ण्यमट्ठं सोच्चा निसम्म सिग्घं चंडं चवलं तुरियं वेइयं  
 जेणेव पुरच्छिमिह्णे वणसंडे जेणेव पोक्खरिणि तेणेव उवा०  
 पोक्खरिणि ओगाहंति२ जलमज्जणं करेति२ जाइं तत्थ  
 उप्पलाइं जाव गेणहंति२ जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खा-  
 ययणे तेणेव उ०२ आलोए पणामं करेति२ महरिहं पुप्फ-  
 च्चणियं करेति२ जाणुपायवडिया सुस्सूसमाणा णमंसमाणा  
 पज्जुवासंति, तएणं से सेलए जक्खे आगतसमये पत्तसं-  
 मए एवं वयासी-कं तारयामि कं पालयामि ?, तएणं ते  
 मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेति उट्ठित्ता करयल० एवं वयासी  
 -एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुव्भं मए सद्धिं लवणसमुद्धं  
 मज्झं२ वीइवयमणाणं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्धा  
 खुद्धा साहसिया बहूहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि  
 य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य  
 उवसगं करेहिइ, तं जइ णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! रयणदी-  
 वदेवयाए ण्यमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अंवयक्खह वा

दोनों के द्वाग आराधित हुआ वह शैलक यक्ष तुम दोनों के रयणा-  
 देवी के हाथ से साक्षात् निस्तारित करवा देगा-अर्थात् उस के संकट  
 से तुम्हें छुडवा देगा-नदी ने कौन कह सकता है कि तुम्हारे शरीर की  
 क्या दशा हो। मैं इसी बात का विचार कर रहा हूँ। सूत्र " ५ "

आ प्रभाषे तमाश वडे आराधायेडा ते शैलक यक्ष २०७५ देवीना लपेट-  
 भांथी साक्षात् त ने जनेने भुज्ज करेथे. ओटके के तेना संकटभांथी तमने  
 ते छोटावथे. नडितर तमाश शरीरनी शी दशा थये ? ते कोणु जाणु शके  
 तेम छे. हुं ओ ज विचार करी रह्यो छुं. ॥ सूत्र " ५ " ॥

तो भे अहं पिट्ठातो विट्ठणामि, अहणं तुब्भे रयणदीवेदेव-  
याए एयमट्ठं णो आढाहं णो परियाणहं णो अवयंक्खहं तो  
भे रयणदीवेदेवया हत्थाओ साहत्थि णित्थारेमि, तएणं ते  
मार्गदियदारया सेलगं जक्खं एवं वयासी-जणं देवाणुप्पिया ।  
वइस्सइ तस्स णं उववायवयणिहेसे चिट्ठिस्सामो, तएणं से  
सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइर वेउठ्ठि-  
यसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता संखेज्जाइ जोयणाइ दंडं  
निस्सरेइ निस्सरित्ता दोच्चं पि वेउठ्ठि वयंसमुं रएणं महं आसरूव  
विउव्वइर ते मार्गदियदारए एवं वयासी-हं भो मार्गदिया !  
आरूह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठसि, तएणं ते मार्गदिय०  
हट्ठं सेलगस्स जक्खस्स पणोमं करेतिर सेलगस्स पिट्ठि  
दुरुद्धा, तएणं से सेलए ते मार्गदिय० दुरुद्धे जाणित्ता सत्त-  
ट्ठालप्पमाणमेत्ताइ उट्ठं वेहासं उप्पयति, उप्पइत्ता य  
त्ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुहं मज्झंमज्झेणं  
जेणेव जंबूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानयरी  
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएणं ते’ इत्यादि । ‘तएणं’ ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ  
तस्य श्लाघितकस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चयं क्षीघ्रं, चण्डे=प्रबले, चपले,

‘तएणं ते मार्गदिय०’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (ते मार्गदिय दारया) वे दोनों माकन्दी  
के दारक ( तस्स श्लाघयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ) उस श्लारोपिते

‘तएणं ते मार्गदिय’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपछी (ते मार्गदियदारया) तेजो भन्ने माकन्दी दारकाज्जे  
( तस्स श्लाघयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ) शृणी छपर वट्ठत्तां पुइयणी वीत्ता  
हा ७८



त्वरितं, 'वेइयं' वेगितं=सवेगं यथास्यात्तथा शीघ्रातिशीघ्रमित्यर्थः यत्रैव पौर-  
स्थं वनपण्डं, यत्रैव पुष्करिणी=वापी तत्रैवोपागच्छतः, उपागत्य पुष्करिणीमवगा-  
हेते=अन्तः प्रविशतः, अवगाह्य जलमज्जनं=जलस्नानं कुरुतः, कृत्वा यानि तत्र  
उत्पलानि वा पद्मानि वा यावद् गृहीतः, गृहीत्वा यत्रैव शैलकस्य यक्षस्य यक्षाप-  
तनं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'आलोए' आलोके यक्षदर्शने सति प्रणामं  
कुरुतः, कृत्वा महाहं=महायोग्यां पुष्पार्चनिकां कुरुतः, कृत्वा जानुपादपतितौ=  
विनम्रकायौ 'मुस्तूसमाणा' शुश्रूषमाणौ=यक्षसेवां कुर्वणौ 'गमंसमाणा' नम-  
स्यन्तौ=नमस्कारं कुर्वणौ 'पञ्जुवासंति' पर्युपासातेस्म, सेवां कृतवन्तौ। ततः  
खलुः स शैलको यक्ष आगतसमये प्राप्तसमये एवमवादीत- 'कं तारयामि कं पाला-

पुरुष के मुख से इस बात को सुनकर (निसम्म) और उसे अपने  
चित्त में निश्चित कर (सिग्धं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणेव पुरच्छि-  
मिल्ले वणसडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
पोक्खरिणी ओगाहंति, ओगाहित्ता जलमज्जनं करेति, करित्ता जाइं  
तत्थ-उप्पलाइं जाव गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स ज-  
क्खाययणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेति )  
शीघ्र ही वहां से बहुत जल्दी त्वरायुक्त बन जल्दी २ दौड़ते हुए से  
होकर जहां वह पूर्व दिशा संघन्धी वनपंड-तथा पुष्करिणी थी वहां  
आये। वहां आकर वन्होंने पुष्करिणी में अवगाहन किया फिर स्नान  
किया। फिर उस से कमल ये वहां से लिया और लेकर जहां  
शैलक यक्ष का यक्षायतन था उस ओर चले दिये। वहां पहुँचते ही  
वन्होंने ने यक्ष के दिखलाई पड़ते नमस्कार किया। (करित्ता महरिहं

सांभणीने (निसम्म) अने तेने पोताना मनभां ढसावीने

(सिग्धं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्लो वणसडे जेणेव पोक्ख  
रिणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोक्खरिणी ओगाहंति, ओगाहित्ता जल  
मज्जनं करेति, करित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स  
जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेति )

सत्तरे त्यांथी शीघ्र आक्षथी होइता होइता ज्यां ते पूर्व दिशा संघंधी  
वनपंड तेमज पुष्करिणी इती त्यां पडोन्था. त्यां पडोन्थीने तेज्या पुष्करिणीभां  
उतर्या अने स्नान कर्तुं. पुष्करिणीभां जेट्ठां कमणे। जीदेवां इतां तेज्याने  
वधं दीधां अने त्थार पथी शैलक यक्षना यक्षायतन तरक्ष स्वाना अथा. त्यां  
पडोन्थीने : तेज्याजे : यक्षनी सांभे जतां न मन कर्तुं.

यामि ? ' इति । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ ' उद्गाए ' उत्थया स्वकीयो-  
त्थानकत्त्या ' उद्धेति ' उत्तिष्ठतः, उत्थाय करतलपरिगृहीतं शिरावर्तं दंशुन्खं  
मस्तकेऽङ्गुलिं कृत्वा एवमवादिष्टाम्—' आवां तारयं, आवां पालय ' इति । ततः  
खलु स शैलको यज्ञः तौ माकन्दिकदारकौ एवमवादीत्—एवं खलु हे देवानुप्रियो !  
' युवयो रम्या सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन=अन्तरामार्गेण ' वीङ्गव्यमाणानं ' व्यति-

पुष्पवृक्षणिंयं करेति—करिस्ता जाणु पायवडिया सुस्सुसमाणा णमंसमाणा  
पञ्जुवासंति, तएणं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं  
वयासी—कं तारयामि कं पालयामि तएणं ते मार्गदियदारया उद्गाए  
उद्धेति उद्धिता करयल० एवं वयासी—अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहिं )  
नमस्कार कर फिर उन्होंने ने उस की आराधना—की । आराधन कर के  
फिर वे दोनों अपने छुटने और पैर टेक कर उस के चरणों पर पड़ गये ।  
इस प्रकार बार २ उस की सेवा करते हुए वे वहाँ रहने लगे—जब  
उचित अवसर प्राप्त हुआ और उस शैलकयक्ष ने ऐसा कहा—कि—  
मैं किस को तारू, किस को पार उतारूँ—तो उसी समय उठ कर इन दोनों  
माकंदी दारकों ने उस से दोनों हाथ जोड़ कर ऐसा कहा—आप हमें  
तारिये हमें पार उतारिये—( तएणं से सेलए जक्खे ते मार्गदिय० एवं  
वयासी ) उस दोनों माकंदी—दारकों की इस बात को सुनकर उस  
शैलक यक्ष ने उन से ऐसा कहा—( एवं खलु देवानुप्रिया ! तुभं  
मएसद्धिं लवणसमुद्रं मज्झं २ वीङ्गव्यमाणानं सा रयणदीवदेवया

( करिस्ता महरिपुष्पवृक्षणिंयं करेति—करिस्ता जाणुपायवडिया सुस्सुसमाणा  
णमंसमाणा पञ्जुवासंति, तएणं से सेलए जक्खे आगत समए पत्तसमए एवं वयासी  
कं तारयामि कं पालयामि तएणं ते मार्गदिय दारया उद्गाए उद्धेति उद्धिता  
करयल० एवं वयासी—अम्हे तारयाहिं अम्हे पालयाहिं )

नमन करीने तेओओ तेनी आराधना करी. आराधना करीने तेओ ओने  
अभीन डपर धूँटो टेकीने तेना अरओमां आगोटी गया. आ रीते बार-बार  
तेनी डपासना करतां तेओ ओने त्यां अ रहेना लाओ. अथारे उचित समय  
आओ त्यारे शैलक यक्ष ओम कहुँ—हे ओने हुँ तार् अने ओने पार उतार्इ  
तत अ माकंदी दारको ओला यथा अने ओने हाथ ओकीने यक्षने चिनंती  
करवा लाओ हे तमे अभने तारे अने पार उतारे. ( तएणं से सेलए जक्खे  
ते मार्गदिय० एवं वयासी ) ओने माकंदी दारकोनी चिनंती सांलणीने शैलक  
यक्ष तेओने कहुँ हे—

( एवं खलु देवानुप्रिया तुभं मए सद्धिं लवणसमुद्रं मज्झं २ वीङ्गव्यमाणाना

व्रजतोः=गच्छतो सतोः सा रत्नद्वीपदेवता पापा=पापिष्ठा चण्डा=कोपशीला,  
 रुद्रा=क्रूरा क्षुद्रा=तुच्छस्वभावा साहसिका=अविचारितकारिणी बहुभिः 'खरएहिम्',  
 खरकैः=कठोरैः, 'मउएहि' यदुक्तैः=सुकोमलैः, 'अणुलोमेहि' अणुलोमैः=  
 मनोज्ञकूलैः, 'पडिलोमेहि' प्रतिलोमैः=मनः प्रतिकूलभूतैश्च 'सिंगारेहि' ।  
 शृङ्गारैः=कामरागजनकैः 'कलुणेहि' करुणैः=करणाजनकैश्च 'उवसगेहि' उप-  
 सर्गैः=उपसर्गजनकवचनैः 'उवसगं' उपसर्गम्=उत्पातं 'करेहि' करिष्यति, तद्  
 यदि खल.युवां हे देवानुप्रियो ! रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थम् 'आढाहवा' आदि-

पावा चंडा रुद्रा खुद्रा साहसिया, बडूहि खरएहि य मउएहि य अणु-  
 लोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसगेहि य  
 उवसगं करेहि ) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग मेरे साथ लवण समुद्र में  
 बीचों बीच के मार्ग से होकर खलो-उस समय वह पापिष्ठ, कोपशील,  
 क्रूर, क्षुद्र एवं अविचारित कारिणी रयणा देवी तुम्हारे ऊपर अनेक  
 कठोर, सुकोमल, मनोज्ञकूल, मनः प्रतिकूल कामराग जनक एवं करु-  
 णोत्पादक ऐसे उपसर्ग वचनों द्वारा उवसर्ग-उत्पात-करेगी । ( तं जहणं  
 तुम्हे देवाणुप्पिया ! रयणादीव देवयाए एयमहं आढाह वा परियाणह  
 वा अवयक्खह वा तो मे अहं पिट्ठातो बिहणामि अहणं तुम्हे रयण दीव  
 देवयाए एयमहं णो आढाह णो परियाणह णो अवयक्खह तो मे रयण  
 दीव देवया हत्थाओ-साहत्थि णित्थरेमि ) सो यदि हे देवानुप्रियो !  
 तुम लोग रयणा देवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से

णं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्रा खुद्रा साहसिया, बडूहि खरएहि य  
 मउएहि य अणुलोहि य पडिलोमे हि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसगेहि  
 य उवसगं करेहि )

हे देवानुप्रियो ! भारी साथे लवण समुद्र की वज्रैना मार्गों में यधने  
 लगे आदेशों से वज्रों से पापिष्ठ, कोपशील, क्रूर, क्षुद्र और अविचारितकारिणी  
 रयणा देवी धृष्टा कठोर, सुकोमल, मनमगता, मनने प्रतिकूल, कामरागने उत्पन्न  
 करनाश और करुणोत्पादक उपसर्ग वचनों से उपसर्ग-उत्पात करेगी।

( तं जहणं तुम्हे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमहं आढाहवा परि-  
 याणहवा अवयक्खहवा तो मे अहं पिट्ठातो बिहणामि अहणं तुम्हे रयणदीवदेवयाए  
 एयमहं णो आढाह णो परियाणाह णो अवयक्खह तो मे रयणदीवदेवया  
 हत्थाओ साहत्थि णित्थरेमि )

ये हे देवानुप्रियो ! लगे लोके रयणा देवीना आ उपसर्ग रूप अर्थने  
 सम्माननी दृष्टिसे लेशे लेशे के तेना वजनोने लगे अकारण, स्वीकारण

येये तदादरं करिष्यथः, वा=अथवा 'परियाणह वा' परिजानीयः=स्वीकरिष्यथः  
वा, अथवा 'अथक्खह वा' पश्यथः= अवलोकयिष्यथः, 'तो' तदा 'मे' युवा-  
महं 'पिड्डाओ' पृष्ठठात्=मम पृष्ठभागात् 'विहुणामि' विधुनामि पातयिष्यामि ।  
अथ खलु यदि युवां रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थं नो आद्रियेथे, नो परिजानीयः,  
'नो अथक्खह' तां प्रति नो पश्यतः, तदुपसर्गं सहिष्येथे इत्यर्थः, 'तो' तदा  
'मे' युवां रत्नद्वीपदेवताहस्तात् 'साहत्थि' स्वहस्तेन 'णित्थारेमि' निस्तार-  
यामि=पारं नेष्यामि । ततः खलु तौ माकम्बिहारकौ शैलकं यक्षमेवमवादिष्टास्-  
थ कञ्चन खलु हे देवानुमिय । त्वमाराध्यत्वेन वदिष्यति, यत्खलु 'युवयोरय-  
माराध्यः' इति तस्य खलु=तस्यैव उपपातनिर्देशे=सेवावचनाज्ञार्थां 'चिद्धिस्सामो'  
स्थास्यावः किंपुनर्भवतः १ भवदांज्ञानुसारेणैव वचिष्यावहे इत्यर्थः । ततः खलु स-  
शैलको यक्षः 'उत्तरपुरत्थिमं' उत्तरपौरस्त्यम् ईशानकोणसम्बन्धिनं 'दिसीभागं'  
दिग्भागम् 'अवक्कमह' अपक्रामति=गच्छति अपक्रम्य वैक्रियसमुद्घातेन समव-  
हन्ति, समवहत्य=वैक्रियसमुद्घातं कृत्वा सङ्ख्येयानि योजनानि यावत् सङ्ख्येय-

देखोगे-अर्थात् उन वचनों-का आदर करोगे-उन्हें स्वीकार करोगे, उन  
पर ध्यान दोगे, तो मैं अपने पृष्ठ-भागसे तुम लोगको उतार दूंगा-नीचे  
पटक दूंगा-और यदि तुम लोग उस रयणादेवी के इस उपसर्ग रूप अर्थ  
का आदर नहीं करोगे, उन्हें स्वीकृत नहीं करोगे, उसकी तरफ नहीं देखोगे  
-उसके द्वारा कृत उपसर्गको सहन कर लोगे मैं तुम लोगोंको रयणादेवी  
के हाथ से देखते २ छुड़ा दूंगा । ( तएणं ते भागंदियदारया सेलंगं  
जक्खं एवंवासी-जणं देवाणुप्पिया । बहस्सइ तस्सणं उववायवयणणि-  
हेसे चिद्धिस्सामो, तएणं से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अव-  
क्कमह, अवक्कमिस्सा वेउत्तियसमुद्घाएणं समोदणह २ संखे जाइं जोय-

अने तेना उपर बिचार करेथो तो हुं गेतानी पीठ उपरथी तभने उतादीं  
पाडीय अने नीचे देखीं छथि। अने ले तमे अने रथयु देवीना उपसर्ग रूप  
ते' वथनेने आदर करेथो नहि, स्वीकारेथो नहि, तेनी तरफ लेथो नहि, ते  
ले छंथ पणु उपसर्ग-उत्पाद करे ते तमे अभी देखे तो हुं तभने रथयु  
देवीना हाथमाथी लेतलेतामां मुक्त करावी छथि।

( तएणं ते भागंदियदारया सेलंगं जक्खं एवंवासी-जणं देवाणुप्पिया ।  
बहस्सइ तस्सणं उववायवयणणिहेसे चिद्धिस्सामो, तएणं से सेलए जक्खे उत्तर-  
पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमह अवक्कमिस्सा वेउत्तियसमुद्घाएणं समोदणति २

योजनपरिमितमित्यर्थः दण्ड 'निस्सरेइ' निस्सारयति, निस्सार्य द्वितीयमपि वारं वैक्रियसमुद्घातेन समवदन्ति, समवदत्य=द्वितीयवारं वैक्रियसमुद्घातं कृत्वा एकं महत्-अश्वरूपं विकुर्वति-अश्वरूपस्य विकुर्वणां करोतीत्यर्थः, विकुर्वित्वा अश्वरूपं कृत्वा तौ माकन्दिदं दारकौ एवमवदत्- 'हंभो' हे देवानुप्रियौ माकन्दिदं दारकौ।

णाहं दंड निस्सरेइ, निस्सरित्ता दोच्चपि वेउन्विद्यससु ० २ एगं महं आसरुवं विउव्वइ, २ ते मार्गदिय दारए एवं वयासी ) शैलक यक्षकी इस प्रकार की घात सुनकर उन माकंदी दारकों ने उस शैलक यक्ष से फिर इस प्रकार से कहा-हे देवानुप्रिय ! आप जिसके लिये हमें आराध्यत्वेन कहेंगे-हम लोग उसी की सेवा करने में उसी के वचन मानने में और उसी की आज्ञानुसार वर्तमान करने में लग जावेंगे तो फिर आपकी तो वान ही क्या है ! आप तो हम से जैसे कहेंगे हम लोग सर्वथा उसी के अनुसार चलेंगे । इस के बाद वह शैलक यक्ष ईशान कोण संबन्धी दिग्भाग की ओर गया । वहां जाकर उस ने वैक्रिय समुद्घात से उत्तर वैक्रिय की विकुर्वणा की-विकुर्वणा कर के फिर उस ने अपने आत्मप्रदेशों का संख्यात योजन पर्यंत दण्डाकार रूप में बाहिर निकला-निकाल कर के फिर दुबारा भी वैक्रिय समुद्घात किया और फिर एक बड़े भारी अश्वरूप की उस ने विकुर्वणा की । अश्वरूप बनाकर फिर वह उन माकंदी दारकों से बोला-

संखेजाइं जोयणाइं दंडं निस्सरेइ, निस्सरित्ता दोच्चपि वेउन्विद्यससु ० २ एगं महं आसरुवं विउव्वइ २ ते मार्गदिय दारए एवं वयासी )

शैलक यक्षनी आ प्रभाण्णे वात सांलणीने भाकुंही दारकौअ तेने कहुं हे हेवानुप्रिय ! तमे अमने जे कौणने आराधवाने हुंम करेशो, अमे लोको तेनी सेवा करवामां, तेनी ज आत्ता स्वीकारव मां अने तेनी आत्ता प्रभाण्णे ज आचरण्ण करवामां उत्तर थर्ध जण्णुं । त्थारे तमारी तो वात ज शी कडेवी ? तमे अमने जेम कडेशो तेम अमे संपूण्णपण्णे अनुसरीयु । त्थारभाइ शैलक यक्ष ईशान कोणुना दिग् भाग तरइ जसो । त्थां जण्णे तेण्णे वैक्रिय समुद्घातयो उत्तर वैक्रियानी विकुर्वणा करी-अने विकुर्वणा कर्थां भाइ तेण्णे ये ताना आत्म-प्रदेशोने संख्यात योजन सुभी इडाकार इपे गडार कढया । गडार कढीने तेण्णे जील पार पण्णु वैक्रिय समुद्घात कर्थो अने त्थार पछी तेण्णे ओक गहुं भोटो अश्वइप ( घोडाना इप ) नी विकुर्वणा करी अश्वतुं इपे जनावीने तेण्णे भांडकी भांडकोने कहुं हे-

आरोहतं खलु युवां मम पृष्टे । ततः खलु तौ माकन्दिदारकौ हृत्पुष्टौ शैलकस्य यक्षस्य प्रणामं कुरुतः, कृत्वा शैलकस्य पृष्टं दूरदौ पृष्टं प्रदेशे समारूढौ । ततः खलु स शैलकस्तौ माकन्दिदारकौ दूरदौ=खपृष्टारूढौ ज्ञात्वा 'सत्तद्वृत्तालम्पमाणमेत्ताइं' सप्ताष्टतालप्रमाणमात्रान्=सप्ताष्टतालवृक्षपरिमितान् गगनभागान् यावत् 'उड्डुं वेहासं' ऊर्ध्वविहायसि=उच्चैराकाशे 'उप्पयइ' उत्पतति, उप्पइत्ता, उत्पत्य च तथा प्रसिद्धया उत्कृष्टया त्वरितया देवगत्या लवणसमुद्रं मध्यमध्येन यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीप, यत्रैव भारती वर्षः=भरतक्षेत्रं, यत्रैव चम्पानगरी, तत्रैव प्रधारयति=गन्तुं प्रवृत्तः ॥ सू० ६ ॥

( हं ओ मागंदिया ! आरुह णं देवानुप्पिया । मम पिडुंसि-तएणं ते मागंदिय० इदं० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेति करित्ता सेल-गस्स पिडिं दुरुद्धा, तएणं से सेलए ते मागंदिय० दुरुद्धे जाणित्ता सत्तद्वृत्तालम्पमाणमेत्ताइं उड्डुं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता य ताए-उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्धं मज्झं मज्झेणं जेणेव जम्बूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपा नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ) अरे ओ देवानुप्रिय माकंदी दारको ! तुम दोनों मेरी पीठ पर चढ़ जाओ । इस के बाद वे दोनों माकंदी दारक हर्षित एवं संतुष्ट होते हुए प्रणाम कर उस शैलक यक्ष की पीठ पर आरूढ़ हो गये । जब शैलक यक्ष ने उन्हें अपनी पीठ पर चढ़ा जाना तो जानकर वह सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण बराबर क्षेत्रमें ऊपर आकाश में उछला । उछलकर फिर वह अपनी प्रसिद्ध उत्कृष्ट त्वरायुक्त देवगति से लवणसमुद्र के ठीक बीचों

( हं ओ मागंदिया ! आरुहणं देवानुप्पिया । मम पिडुंसि-तएणं ते मागंदिय० इदं० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेति करित्ता सेलगस्स पिडिं दुरुद्धा, तएणं से सेलए ते मागंदिय दुरुद्धे जाणित्ता सत्तद्वृत्तालम्पमाणमेत्ताइं उड्डुं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवगईए लवणसमुद्धं मज्झमज्झेणं जेणेव जम्बूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव चंपानगरी तेणेव पहारेत्थगमणाए )

अरे ओ देवानुप्रिय माकंदी दारको ! तमो भारी पीठ ऊपर लेसी लओ। त्थार पछी माकंदी दारको हर्षित तेमज्झ संतुष्ट थतां प्रबुध्ता करीने शैलक यक्षनी पीठ ऊपर लेसी गथा। शैलक यक्षे तेओने पोतानी पीठ ऊपर सवार थइ गथेला लओणीने ते सात आठ तालवृक्ष प्रमाण जेटला क्षेत्रमां आकाशमां उछल्यो अने उछणीने ते पोतानी प्रसिद्ध उत्कृष्ट त्वरायुक्त देवगतिथी लवणसमुद्रनी अरेओर

मूढ-तएणं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्रं तिस्र-  
 खुत्तो अणुपरियट्टइ जं तत्थ तणं वा जाव एडेइ, एडित्ता  
 जेणेव पासायवडैसए तेणेव उवागाच्छइ उवागच्छित्ता ते मार्गं  
 दियदारया पासायवडैसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले  
 वणसंडे जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करोतिं तेसिं  
 मार्गंदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइं वा पत्तिं वा अलभमाणी  
 जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्छत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी  
 ओहिं पउंजइ पउंजित्ता ते मार्गंदियदारए सेलएणं सद्धिं लव-  
 णसमुद्रं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे पासइ पासित्ता आसुरुत्तां  
 असिखेडगं गेणहइ गेणित्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयइ उप्पयित्ता  
 ताए उक्किट्ठाए जेणेव मार्गंदियं तेणेव उवां एवं वयासी-हं  
 भो मार्गंदियां अप्पत्थियपत्थया किण्णं तुब्भे जाणंह ममं  
 विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्रं मज्झं मज्झेणं  
 वीइवयमाणां तं एवमवि गए । जइणं तुब्भे ममं अवयक्खंह  
 तो भे अत्थि जीवियं, अहणं णावयक्खह तो भे इमेणं नीलु-  
 प्पलगवल जाव एडेमि, तएणं ते मार्गंदियदारया रयणदीव-  
 देवयाए अंतिए एयमट्ठं सों णिसं अभीया अत्तत्था अणु-  
 ठिवग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो

बीच के मार्ग से चलता हुआ जहाँ जंबूद्वीप नाम का द्वीप और उसमें  
 जहाँ भरत क्षेत्र और उसमें भी जहाँ चंपानगरी थी उस ओर चल  
 दिया ॥ सूत्र ६ ॥

वृत्तेना मार्गमांथी पसार यतो न्यां जंबूद्वीप नामो द्वीप तेभ्य न्यां भरत  
 क्षेत्र अने तेभ्यां पञ्च न्यां चंपा नगरी कृती ते तंश्च रवाना धयो ॥ सूत्र "६" ॥

आहंति नो परि० णो अवयंक्खंति, आणाढायमाणा अपरि०  
अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्धं मज्झमं-  
ज्जेणं वीइवयंति, तत्तेणं सा रयणदीवदेवया ते मार्गदियं०  
जाहे नो संचोएइ बहूहिं पडिलोमेहि य उवसग्गोहि य चालित्तए  
वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तएवा ताहे महुरेहिं  
सिंगारेहि य कल्लणेहि य उवसग्गोहि य उवसग्गेउं पवत्ता यावि  
होत्था, हं भो मार्गदियदारगां ! जइणं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया !  
मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलि-  
याणि य हिंडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वार्तिं  
अमणेमाणा ममं विप्पजंहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्धं मज्झमं-  
मज्जेणं वीइवयह, तएणं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स  
ममं ओहिणा आभोएइ आभोएत्ता एवं वयासी—णिच्चंपिय णं  
अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा५ निच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे  
५ निच्चंपिय णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा५ निच्चंपिय णं मम  
जिणरक्खिए इट्ठे५, जइणं ममं जिणपालिए रोयमाणीं कंदमाणीं  
सोयमाणीं तिप्पमाणीं विलवमाणीं णावयक्खइ किण्णं तुमं  
जिणरक्खिया ! ममं रोयमाणिं जाव णावयक्खसि ?, तएणं—  
सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं ।  
नाऊण वधनिमित्तं उवरि मार्गदियदारगाणं दोणहंपि ॥ १ ॥  
दोसकलिया सलीलयं णाणाविहचुण्णवासमीसं दिव्वं । घाण-  
मण लिब्बुइकरं सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणी ॥ २ ॥  
णाणान्णिकणगरयणघांटियिंखिणिणैऊरसेहलभूसणरवेणं । दि-



साओ विंदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेति सा साकलुसा ॥३॥  
 होल-वसुल-गोल-णाह-दइत-रमण-कंत-सामिय-णिग्घिण  
 णिच्छक्क । थिण्ण णिक्खि अकयण्णुय सिद्धिल भाव निह्खज्ज  
 लुक्ख अकलुण जिणरक्खियं मज्झं हिययरक्खगा ! ॥ ४ ॥ णहु  
 जुज्जसि एक्खियं अणाहं अबंधवं तुज्झचलणओवायकारियं उज्झिउ  
 महण्णं । गुणसंकर ! अहं तुमं बिह्णुणा ण समत्थावि जीविउं  
 खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगझसमगरविविह सावयस-  
 यांडलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झं  
 पुरओ एहि णियत्ताहि जइसिकुविओ खमाहि एक्कावराहं मे  
 ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमंडलागारं सस्सिरीयं  
 सारयनवकमलकुमुयकुवलयविमलदलनिकरसरिसानिभनयणं व-  
 थणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे अवलोपहि ताइओ  
 ममं णाह जो ते पच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एवं सप्पणय  
 सरलमहुराइं पुणो२ कलुणाइं वयणाइं जंपमाणी सा पावा  
 मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥ ८ ॥ तएणं से जिणरक्खिए  
 चलमाणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्प-  
 णयसरलमहुरभणिएहिं संजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए  
 तीसे सुंदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोवण-  
 सिरिं च दिव्वं सरभसउवगूहियाइं विव्वोयविलसियाणि य  
 विहसिय सकडक्खदिट्ठिनिस्ससियमलियउवल्लियठियगमणप-  
 णयखिजियपासाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे

कम्मवसगाए अवयक्खति मग्गतो सविलियं, तएणं जिणर-  
क्खियं समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोहियमइं अबयक्खंतं  
तहेवजक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं उव्विहति नियग-  
पिट्ठाहि विगयसद्धं, तएणं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं  
जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि ओवयंतदास ! मओसित्तिं  
जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेगिहय वाहार्हिं आरसंतं उड्डं  
उव्विहति अंवरतले, ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता  
नीलुप्पलगवलअयसिप्पभासेण असिन्नेरेण खंडाखंडिं करेति  
तत्थ विलवमाणं तस्स य सरसवाहियस्स घेतूण अंगमंगाइं सरु  
हिराइं उक्खित्तबलि चउदिसि करेति सा पंजली पहिट्ठा ॥ सू०७ ॥

टीका—‘तएणं सा’ इत्यादि—ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता लवणसमुद्रं  
त्रिसप्तकृत्वः=एकविंशतिवारम् अनुपर्यटति, अनुपर्यट्य यत्तत्र तृणं वा यावत् सर्वं पत्र  
काष्ठादिकमपनीय—एकान्ते ‘एडेइ’ एडति=प्रक्षिपति, प्रक्षिप्य यत्रैव प्रासादावतं-  
सकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तौ माकन्दिकदारकौ प्रासादावतंसके—अपश्यन्ती

‘तएणं सा रयणदीवदेवया’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (सा रयणदीवदेवया) उस रयणादेवी ने  
(लवण समुद्रं तिसप्तकृत्तो अणुपरियटति) लवण समुद्र की २१ बार  
प्रदक्षिणा की—(जं तत्थं तणं वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव प्रासायवडें  
सए तेणेव उवागच्छति) इस समय में उसे वहाँ पर जो तृणकाष्ठ पत्र  
आदि मिला उस-सबको वहाँ से हटाके दूर जाकर एकान्त स्थान में  
डाल दिया। डालकर फिर वह जहाँ अपना श्रेष्ठ प्रासाद था वहाँ आई-

‘तएणं सा रयणदीव देवया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) त्थाराणां (सा रयणदीव देवया) ते रयणादेवीओ(लवण  
समुद्रं ति सत्तल्लुत्तो अणुपरियटति) लवण समुद्रनी ओकपीश बार प्रदक्षिणा करी.  
(जं तत्थं तणं वा जाव एडेइ एडित्ता जेणेव प्रासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ.)  
प्रदक्षिणा करती वगते रयणा देवीने त्यां तृण, काष्ठ पत्र वगैरे के कंठ  
पणु ओवाभां आण्डुं तेने त्यांथी इर ओकांतभां ईक्षी दीधुं. ईक्षीने ते पोतामा  
उत्तम भेदेसभां व्यापत्ती रही.

यत्रैव पौरस्त्यं वनषण्डं यावत्सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणां करोति सामान्य विशेषतयाऽन्वेपति, कृत्वा तयोर्माकन्दिददारयोः कुत्रापि 'सुइं वा' श्रुतिं वा= चार्त्तां, 'खुइं वा' श्रुतिं=तत्सम्बन्धिनीं छिक्कम्, अव्यक्तभाषणं तच्चिह्नं वा, 'पउत्तिं वा' प्रवृत्तिं=वृत्तान्तं वा 'अलममाणी' अलममाना=अप्राप्नुवन्ती सती यत्रैवोत्तरीये=उत्तरदिग्भवे वनषण्डे एवमेव=पूर्ववदेव पाश्चात्येऽपि यावद् अपश्यन्ती 'ओहिं' अवधिम्=अवधिज्ञानं 'पउंजइ' प्रयुनक्ति=व्यापारयति, प्रयुज्य तौ

(उवागच्छित्ता ते मार्गदियदारया, पासायवडिसए अपासमाणी, जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सच्चओ समंतामग्गणगवेसणं करेइ करित्ता तेसिं मायंदियदारगाणं कत्थइ सुइं खुइं वा पउत्तिं वा अलममाणी जे- भव उत्तरिल्ले वणसंडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ) वहां आकर उसने उसमें माकंदी दारकोंको नहीं देखा-सो इस कारण वह जहां पूर्वदिशा संबन्धी वनषंड था वहां आई वहां आ- कर उसने उनकी सबतरफ चारों ओर तपास की मार्गणा गवेषणा की- परन्तु वहां कहीं पर भी माकंदी दारकों की उसे न कोई बात सुनने में आई और न उनकी चिह्नरूप छींक या अव्यक्त भाषण या कोई विशेष चिह्न ही देखने में आया। और न उनकी वहां उसे कोई खबर ही मिली-इस तरह इन सब बातोंको नहीं प्राप्त करती हुई वह जहां उत्तर दिशा सम्बन्धी वनषंड था वहां इसी तरह जहां पश्चिम दिशा सम्बन्धी वनषंड था वहां आई वहां कहीं पर भी उसे उनकी कोई बात बगैरह सुनने में देखने में जब नहीं आई-तब उसने अपने अवधिज्ञान को

(उवागच्छित्ता ते मार्गदियदारया पासायवडिसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सच्चओ समंतामग्गणगवेसणं करेइ करित्ता तेसिं मायंदियदारगाणं कत्थेइ सुइं खुइं वा पउत्तिं वा अलममाणी जेणेव उत्तरिल्ले वण- संडे एवमेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ )

त्यां आवीने तेष्से माकंदी दारकोने जेया नहिं त्थारे ते पूर्व दिशा तरइ वनषंडमां पडोथी। त्यां तेष्से तेज्जोनी चोभेर तपास करी, मार्गण गवेषणा करी। पण माकंदी दारकोने पत्तो भज्जे नहिं रथणादेवीने माकंदी दारकोनी वातथीत पण सांखणायमां आवी नहिं तेमं तेज्जोनी- डयातीना पण कोथ चिह्णे जेभके छींक अथवा तो धीमेथी वातथीत वगेरे देखाया नहिं। आ रीते ते त्यांथी उत्तर दिशा तरइना वनषंडमां गछ। त्थारपछी पश्चिम दिशाना वन- षंडमां ते गछ त्यां पण रथणा देवीने तेज्जोनी कोथ पण वातथीत वगेरे अंखणाम नहिं त्थारे तेष्से पोताना अपधिज्ञानो उपयेग कर्थे।

माकन्दिकदारकौ शैलकेन सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन 'वीह्वयमाणे' व्यतिव्र-  
जन्तौ=गन्धन्तौ पश्यति, दृष्ट्वा 'आसुरत्ता' अशुरत्ता=शीघ्रकृपिता 'असिखेडगं'  
असिखेटकम्, असिश्चरत्नः खेटकश्च फलकः 'ढाल' इतिशब्दः एतयो समाहारे-  
असिखेटकम् गृह्णाति, गृहीत्वा 'सत्तद्गनाव' सप्ताष्ट यावत्, सप्ताष्टतालप्रमाणान्  
गगनमागान् यावद् ऊर्ध्वं विहायसि उत्पतति, उत्पत्य तया उत्कृष्टया देवगत्या  
यत्रैव माकन्दिकदारकौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यैवमवादीत्-‘हंमो’ हे माकन्दिक  
दारकौ ! 'अप्पत्थियपत्थया' अप्रार्थितप्रार्थकौ=मरणाभिलाषिणौ किं खलु युवां

उपयुक्त किया। (पंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्रं  
मज्झं मज्झेणं वीह्वयमाणे पासइ, पासित्ता आसुरत्ता असिखेडगं गे-  
णइ, गेणित्ता सत्त अट्ठ जाव उप्पयइ उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव  
मागंदिय० तेणेव उवा० २ एवं वयासी-हंमो माकंदिय० अप्पत्थियप-  
त्थिया किण्णं तुम्हे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं. ....एवमविगए )  
उपयुक्त करके उसने उन माकंदीदारकों को शैलक के साथ लवणसमुद्र  
में होकर ठीक बीचों बीच के मार्ग से जाते हुए देखा। देखकर वह क्रोध  
से क्रोधित हो गई। उसने उसी समय अपनी तलवार और ढाल उठा  
ई। उठाकर वह सात आठ ताल वृक्ष प्रमाण ऊपर की ओर आकाश  
में उछली। उछलकर फिर वह उत्कृष्टदेव सम्बन्धी गति से चल कर  
जहाँ वे माकंदी-दारक थे वहाँ आई। वहाँ आकर उसने उनसे इस  
प्रकार कहा। अरे ओ माकंदि-दारक ! मालूम पड़ता है तुम लोग अप्रा-  
र्थित प्रार्थक बन रहे हो-जिसे कोई भी नहीं चाहे वह अप्रार्थित-मृत्यु

(पंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्रं मज्झं मज्झेणं वीह-  
व्यमाणो पासइ, पासित्ता, आसुरत्ता आसिखेडगं गेणइ, गेणित्ता, सत्तअट्ठ जाव  
उप्पयइ उप्पयित्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय तेणेव उवा० २ एवं वयासी  
हंमो माकंदिय० अप्पत्थिय पत्थया किण्णं तुम्हे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं  
एवमविगए )

उपयोग करीने तेहे माकंदी दारकोने शैलक यक्षनी साथे लवण समुद्रनी  
ठीक मज्जेना मार्गथी पसार थातां नोथा. नोतानी साथे न ते शुस्से थर्ध गध.  
तेहे तरतव पोतानी ढाल अने तरवार हाथमां धीधी. लधने ते सात आठ  
तालवृक्ष अट्ठुं आकाशमां जेजे उछणी, उछणीने ते उत्कृष्ट देवसंभंधी गतिथी  
सत्तरे न्यां माकंदी दारको ढाल त्यां पडोंथी गध. त्यां पडोंथीने तेहे  
तेजोने ओम कहुं के अरे ओ ! माकंदी दारको ! अने लाजे छे के तजे अप्रा-  
थित प्रार्थक जनी रक्षा ओ. ओठेहे के मृत्यु न जेवी वस्तु छे के तेने केध

जानीथः—यत् 'मम' मां ' विप्लवहाय ' विप्लवाय=पत्निय्य शैलकेन यक्षेण सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमधेन ' वीईव्यमाणा ' व्यतिव्रजन्तो स्वः तद् एवमपि=अनेन-प्रकारेण यक्षपृष्ठावलम्बनेन ' गए ' आर्वा गनौ=गृहं प्राप्तौ, इति, युवां जानीथः तद् भ्रान्तौस्थः । यदि खलु युवां ' मम ' माम् ' अवयक्त्वह ' पश्यतं ' तो ' तदा ' मे ' युवयोरस्ति जीवितम्, अथ खलु मां न पश्यतं ' तो ' तदा ' मे ' युवयोः अनेन ' नीलुप्पलगावल जाव ' नीलोत्पलगावल यावत् अतिश्याम सुतीक्ष्ण खड्गेन शिरश्छिन्त्वा एकान्ते एडेमि=मक्षिपामि=द्वयोरपि शिरश्छेत्स्यामीत्यर्थः । ततः खलु तौ माकन्दिकदारकौ रत्नद्वीपदेवताया अन्तिगे एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य अभीतौ अत्रग्तौ अनुद्विग्नौ, अश्रुव्यौ असम्भ्रान्तौ सन्तौ रत्नद्वीपदेवताया एतमर्थं

है । उस के भी तु न चाहने वाले हो रहे हो। जो तुमलोग मुझे छोड़कर यक्ष शैलक के साथ लवण समुद्र के बीच से होकर जा रहे हो। तो क्या इस तरह के जाने से तुमलोग हम घर पहुँच गये? यह मान रहे हो सो यह तुम्हारा भ्रम है। ( जइणं तुवमे मम अवयक्त्वह तो मे अ-त्थिजीवियं अहणं णावक्त्वह तो मे इमेणं नीलुप्पलगावलजावएडेमि ) यदि तुम मेरी ओर देखो-मुझे चाहो-तो ही तुम्हारा जीवन बच सकना है-यदि तुम मुझे नहीं चाहते हो-मेरी तरफ नहीं देखते हो-तो-देखो इस नीलकमल तथा महिष के शृंगके जैसे वर्णवाली-अतिश्याम सुतीक्ष्ण तलवार से मैं अभी तुम दोनों के मस्तक को छेदकर उसे ऐसे स्थान में डाल दूंगी कि जहाँ उसका पता भी नहीं लगेगा। ( तएणं ते मार्गदियदारयो रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमहं सो० णीस० अभीया

ध्विच्छु नथी तेनी भु-भु 'अप्रार्थित' ध्यु' अने ते माकंदी द्वारके तने ध्विच्छ-नार थया. डेमके तमे अने छोडीने यक्ष शैलकनी साथे लवण समुद्रनी वच्ये थधने नध रक्षा छे। तमे अत्यारे कोम स्रमल रक्षा हेशे के अमे डेमभेम ( सकुशण ) घाताने घेर पडोन्थी गया छीको तो तमे अभभां छे।

( जइणं तुवमे मम अवयक्त्वह तो मे आत्थि जीवियं अह णं णावयक्त्वह तो मे इमेणं नीलुप्पलगावल जाव एडेमि )

ले तमे अने न थाछे-अने न बुझो-तो तभारा लवननी सक्षमती छे. ले तमे अने ध्विच्छता नथी, भारी तरङ्ग जेता नथी तो बुझो आ निलकमल तेभअ लेखना शिंशडा जेवा रंगनी भूष न श्याम रंगराणी तेन तरवारधी हुं तभारा अनेनां माथां कापीने कोवी नभ्याओ ईंकी इधश के तेनी कोधने अअर पणु पडी शके नछि.

( तएणं ते मार्गदिय दारया रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमहं सो० णीस०

नो आद्रियेते नो परिजानीतः ' नो अवयक्स्वन्ति ' नो पश्यतः, ' अणाढायमाणा ' अनद्रियमानौ=तमर्थं प्रति-आदरं न कुर्वाणौ ' अपरियमाणा ' अपरिजानानौ तमर्थमस्वीकुर्वाणौ ' अगवयक्स्वमाणा ' तत्संमुखमप्यपश्यन्तौ शैलकेन यक्षेण सार्द्धं लवणसमुद्रं मव्यमध्येन ' वीह्वयन्ति ' व्यतिव्रजतः=सुखपूर्वकं गच्छतः । ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता तौ माकन्दिकदारकौ यदा नो शक्नोति बहुभिः ' पडिलोमेहिय ' प्रतिजोमैश्च=प्रतिकूलैरपसर्गैश्चालयितुं वा-लोमयितुं वा ' विपरिणामित्त्वा वा ' विपरिणामयितुं=मनोवृत्तिं परावर्तयितुं ' लोमित्त्वा वा ' लोमयितुं=लुब्धौ कर्तुं वा

अतत्त्वा अणुविवग्गा अक्खुभिया असंमंता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आदंति, णो परिं णो अवयक्स्वन्ति अणाढायमाणा अपरिं अणवयक्स्वमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्रं मज्झं मज्झेणं वीह्वयन्ति ) इस प्रकार वे माकंदी-दारक रयणा देवा के मुख से इस बात को सुन कर और उसे हृदय में अवधृत कर भयभीत नहीं हुए क्रुद्ध नहीं हुए उद्विग्न नहीं हुए क्षुब्ध नहीं हुए, संभ्रान्त नहीं हुए घबड़ाये नहीं-और न उन्होंने ने रयणा देवो के इस अर्थ को आदर की दृष्टि से देखा न उसे स्वीकार किया, और न उस तरफ लक्ष्य ही दिया । इस तरह उस के बचनों का अनदर करते हुए उन्हें स्वीकार नहीं करते हुए तथा उनकी ओर लक्ष्य नहीं देते हुए वे दोनों उस शैलक यक्ष के साथ लवणसमुद्र के बीच में चलते ही गये ।

( तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियं जाहे णो संचारंति, बहुहिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहिं य चालित्त्वा वा खोमित्त्वा वा विपरि-

अमीया अतत्त्वा अणुविवग्गा अक्खुभिया असंमंता रयणदीव देवयाए एयमट्ठं नो आदंति णो परिं णो अवयक्स्वन्ति अणाढायमाणा अपरिं अणवयक्स्वमाणा सेलए जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्रं मज्झं मज्झेणं वीह्वयन्ति )

माकंदी दारकांश्च रयणा देवीनां भुजेभ्यो आ प्रभाषे सांलग्नीने अने तेने हृदयमां धारणु करीने अयं पात्रा नहिं. क्रुद्धं तथा नहिं, उद्विग्नं तथा नहिं क्षुब्धं तथा नहिं संभ्रातं तथा नहिं, गलराया नहिं अने तेज्यांश्च रयणादेवीनां अर्थं न तेनो सम्मानपूर्वकं ज्ञेयां अने न तेनो स्वीकारं कर्थां. ते तदर्थं तेज्यांश्च सद्धं पणुं लक्ष्यं आधुं नहिं. लवणं समुद्रनी वच्चे थयने तेज्यां णंने शैलक यक्षनी साथे पोतानां पथं आपतां अ गथा.

( तएणं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियं जाहे णो संचारंति, बहुहिं पडिलोमेहिं य उवसग्गेहिं य चालित्त्वा वा खोमित्त्वा वा विपरिणामित्त्वा वा लोमित्त्वा वा

તદા મધુરૈઃ ' સિંગારેહિય ' મૃદ્ધારૈઃ કામરાગોત્પાદકૈઃ ' કલુષેહિય ' કરુણૈઃ કરુણરસજનકૈશ્વોપસર્ગૈઃ ' ઉપસર્ગેઝં ' ઉપસર્ગયિતુમ્ = ઉત્પાતયિતુમ્ મૃદુતા ચાસ્વાસીત્ - હંમો દેવાનુપ્રિયૌ માકન્દિકદારકૌ ! યદિ સ્વલ્પ યુવાઘ્ન્યાં મયા સાર્દ્ધં ' હસિયાણિય ' હસિતાની ચ ' રમિયાણિય ' રતાનિ=રમણાનિ અક્ષાદિભિ-  
ઘ્નુતાદિસ્થેલનાનિ, ' લલિયાણિય ' લલિતાનિ ચ-ઈષિતાનિ લીલ્યા મોજનાદિ-  
રૂપાણિ ' કીલિયાણિય ' ક્રીડિનાનિ=જલાવગાહનાદિરૂપક્રીડનાનિ ' હિંદિયાણિય '

રિણામિત્તપ્ વા લોમિત્તપ્ વા તાહે મહુરેહિં સિંગારેહિં, કલુષેહિં ય ઉવસર્ગેહિં ય ઉવસર્ગેઝં પવત્તા યાવિ હોત્યા ) હસ તરહ જવ વહ રચણા દેવી ડન માકંદી દારકોં કો પ્રતિકૂલ અનેક ઉપસર્ગોં દ્વારા ચલો-  
ચમાન કરને કે લિયે શુભિત કરને કેં લિયે સમર્થ નહીં હો સકી તવ ઉસને કામ રાગોત્પાદક, તથા કરુણરસ જનક ઉત્પાતોં દ્વારા ઉપદ્રવ કરના પ્રારંભ કર દિયા । ( હંમો માર્ગદિયદારગા ! જહણં તુઝમે હિં દેવાણુપ્પિયા ! મપ્ સાર્દ્ધિં હસિયાણિ ય રમિયાણિ ય લલિયાણિ ય કીલિયાણિ ય, હિંદિયાણિ ય, મોહયાણિ ય તાહે ણં તુઝમે સન્વાતિ અગણેમાણા મમં વિપ્પજહાય સેલણં સાર્દ્ધિં લવણસમુદં મજ્જં મજ્જે ણં વીહવયહ તણં સા રચણદીવદેવયા જિણરક્ષિયસ્સ મમં ઓહિણા આમોપ્પદ, આમોપ્પત્તા એવં વયાસી ) વહ કહને લગી અરે ઓ દેવાનુપ્રિય ! માકંદી દારકોં । યદિ તુમ દોનોં ને મેરે સાથ હૈંસી મજાક કિયા હૈ, કામ સુખોં કો મોગા હૈ, અથવા અક્ષાદિકોં દ્વારા ઘૂનાદિ ક્રીડાયેંકી હૈ, સાથ ૨ વૈઠકર ઇન્છાનુસાર વિવિધ પ્રકાર કી મોજનાદિ કરને રૂપ

તાહે મહુરેહિં સિંગારેહિં કલુષેહિં ય ઉવસર્ગેહિં ય ઉવસર્ગેઝં પવત્તા યાવિ હોત્યા )

રચણા દેવી માકંદી દારકોને આ ભતના ધણા પ્રતિકૂળ ઉપસર્ગોંની વિચ-  
ક્ષિત કરવામાં કે શુભિત કરવામાં સમર્થ થઈ શકી નહીં ત્યારે તેણે કામરાગો-  
ત્પાદક તેમજ કરુણરસ જનક ઉત્પાતો વડે ઉપદ્રવો શરૂ કર્યા.

( હંમો માર્ગદિયદારગા ! જહણં તુઝમે હિં દેવાણુપ્પિયા ! મપ્ સાર્દ્ધિં હસિયાણિય રમિયા-  
ણિય લલિયાણી ય કીલિયાણિ ય હિંદિયાણિ ય મોહયાણિ ય તાહે ણં તુઝમે સન્વાતિ અગણેમાણા મમં વિપ્પજહાય સેલણં સાર્દ્ધિં લવણસમુદં મજ્જં મજ્જે ણં વીહવયહ તણં સા રચણદીવદેવયા જિણરાક્ષેયસ્સ મમં ઓહિણા આમોપ્પદ, આમોપ્પત્તા એવં વયાસી )

તે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! માકંદી દારકોં । જો તમે બને મારી સાથે હંસી મમક કરી છે, કામ સુખો લોગળ્યા છે, અક્ષાદિકો વડે યુગાર વગેરે ક્રીડાઓ કરી છે, સાથે સાથે બેસીને મનગમતી અનેક ભતના આહારો

હિંદિતાનિચ=ઉદ્યાનાદિષુ ભ્રમણાનિ 'મોહિયાણિય' મોહિતાનિ ચ=મોહનાનિ  
કામરાગજનકહાવભાવાદીનિ કૃતાનિ 'તાહે' તદા-તાદૃશે સમયે ઇતાદૃશ સુખા-  
નુભવાવસ્થાયાં સ્વલ્લુ યુવાં સર્વોપિ=મયા સાર્દ્ધે હસિતાદીનિ 'અણેગમાણા'  
અગણયન્તો=અનાદિયમાણો 'મમં' માં નિરાધારાં 'વિપ્પજહાંય' વિપ્રહાય=પરિત્યજ્ય  
શૈલકેન સાર્દ્ધે લવણસમુદ્રં મધ્યમધ્યેન વ્યતિવ્રજયઃ=ગચ્છથઃ । તતઃ સ્વલ્લુ પુનઃ સા  
રત્નદ્વીપદેવતા જિનરક્ષિતસ્ય લઘુભ્રાતુઃ 'મણે' મનઃ=અન્તઃ કરણમ્ 'ઓહિણા'  
અવધિના અવધિજ્ઞાનેન 'આમોપ્પહ' આમોગપતિ=પશ્યતિ આમોગયિત્વા=દૃષ્ટ્વા-  
પ્રવમવદત્-નિત્યમપિ ચ=પૂર્વમપિ સદૈવ ચ અહં જિનપાલિતસ્ય-તવજ્યેષ્ઠભ્રાતુઃ  
અનિદ્દા, અક્રાન્તા, અપ્રિયા અમનોજ્ઞા, અમનોમા=મનઃ પ્રતિકૂલાડમ્ભમ્, નિત્યં  
ચ મમ જિનપાલિતઃ-અનિદ્દા, અક્રાન્તા, અપ્રિયઃ, અમનોજ્ઞા, અમનોડમઃ=મનઃ-  
સ્નેહજનક આસીત્ । નિત્યમપિ ચ સ્વલ્લુ અહં જિનરક્ષિતસ્ય તથા ઇદ્દા યાવદ્ મનો-  
ડમા, નિત્યનપિ ચ સ્વલ્લુ મમ જિનરક્ષિતસ્ત્વમ્ ઇદ્દો યાવદ્ મનોડમા, યદિ સ્વલ્લુ  
યયા માં જિનપાલિતો રુદતી, ક્રન્દન્તી=શોકં કુર્વાણી, 'તિપ્પમાર્ણી' તેપમાનામ્=

લીલાઈં કી હૈં, જલાવગાહનાદિ રૂપ જાના પ્રકાર કી ચેષ્ટાઈ કી હૈં,  
ઉદ્યાન આદિકોં મેં સાથ ૨ ભ્રમણ કિયા હૈં, તથા કામ રાગ જનક હાવ  
ભાવ આદિ ક્રિયાઈં કી હૈં તો ફિર ક્યોં અબ ડન સબ હસિતાદિ ચેષ્ટા-  
ઓં કી ઉપેક્ષા કરકે તુમ દોનોં મુશ્કે નિરાધાર છોડકર શૈલક કે સાથ  
લવણ સમુદ્ર કે બીચ સે હોકર ચલે જા રહે હો । હસ પ્રકાર કહ કર ડસ  
ચણા દેવી ને જિન રક્ષિત કે અન્તઃ કરણ કોં અપને અવધિ જ્ઞાન કે  
દ્વારા દેખા-દેખ કર વહ ફિર હસ તરહ કહને લગી-( ગિચ્ચંપિ ય ણં  
અહં જિનપાલિયસ્સ અણિદ્દા ૫, ગિચ્ચં મમ જિનપાલિય અણિદ્દે-નિચ્ચંપિ  
ય ણં અહં જિનરક્ષિયસ્સ ઇદ્દા, નિચ્ચંપિ ણં અહં જિનરક્ષિય ઇદ્દે ૫,  
જહ્ણં મમ્મં જિનપાલિય રોયમાણી, કંદહાણી, સોયમાણી તિપ્પમાણી વિલ-  
લમાણી ણોચ્ચક્કલ્હ, કિણ્ણં તુમં જિનરક્ષિયા ! મમ્મં રોયમાણિ જાવ

વગેરે રૂપ લીલાઓ કરી છે, જલાવગાહન વગેરેની ધણી જાતની ચેષ્ટાઓ કરી  
છે. સાથે સાથે ઉદ્યાન વગેરેમાં ક્યાં છે તેમજ કામરાગજનક હાવભાવ વગેરેની  
ક્રિયાઓ કરી છે ત્યારે હવે શું કામ તે બધી હસિતાદિ ચેષ્ટાઓની ઉપેક્ષા  
કરીને મને એકલી નિરાધાર બનાવીને શૈલક યજ્ઞની સાથે લવણસમુદ્રની  
વચ્ચે થઇને બંધ રહ્યા છે. આ પ્રમાણે કહીને તે રથજ્ઞા દેવીએ જિનરક્ષિતના  
અનને પોતાના અવધિજ્ઞાન વડે જોયું અને જોઇને તે ફરી કહેવા લાગી કે-

( ગિચ્ચંપિ ય ણં અહં જિનપાલિયસ્સ અણિદ્દા ૫ ગિચ્ચં મમ જિનપાલિય  
અણિદ્દે નિચ્ચંપિ ય ણં અહં જિનરક્ષિયસ્સ ઇદ્દા નિચ્ચંપિ ય ણં મમ જિનરક્ષિય



વિરહજનિતાર્તઘ્યાનં કુર્વાણાં, વિલપન્તીં=વિલાપં કુર્વાણાં 'ળાવયક્વહ્' ન પશ્યતિ તથા કિં खलु त्वमपि हे जिनरक्षित ! मां रुदतीं यावद् विलपन्तीं 'ળાવયક્વહ્સિ' ન પશ્યસિ ? एवं सा रत्नद्वीपदेवता सोपालम्भं वदति स्मेति ।

તતઃ खलु तदनन्तरम्—अथ प्रचलितमानसं जिनरक्षितं विज्ञाय सा यद्वदति तद् गाथाएकेनाह—

ળાવયક્વહ્સિ ) यह तो निश्चित है कि मैं पहिले से जिनपालित के लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एवं अमनोम-मनः प्रतिकूलवह रही हूं और जिनपालित भी मेरे लिये सदा अनिष्ट' अकान्त आदि रूप बना रहा है, मैं तो जिन रक्षित के लिये ही सदा इष्ट आदि रूप रही हूं और जिनरक्षित मेरे लिये इष्ट आदि रूप सदा रहा है तो हे जिन रक्षित ! यदि मुझ रोती हुई आक्रन्दन करती हुई, शोक करती हुई विरह जनित आर्तध्यान करती हुई और विलाप करती हुई की और जिन पालित नहीं देखता है तो क्या तुम भी मुझ रोती हुई यावत् विलाप करती हुई की ओर नहीं देखते हो ( तएणं सा पवररयण-दीवस्स देवया ओहिणा जिणरक्खियस्स मणं नाऊणं वधनिमित्तं उवरिं मागंदिय दारमाणं दोण्हंपि ॥ १ ॥ ) इस तरह उस રચનાદેવી ને તાને મારતે હુણ જવ કહ્યા તવ જિનરક્ષિત કા મન ચલાયમાન હો ગયા । इस स्थिति में जो कुछ उस ने कहा वह सूत्रकार आठ गाथाओं

इष्टे ५, जइणं ममं जिणपालिए रोयमाणो, कंदमाणो, सोयमाणो तिप्पमाणो, विलवमाणो, णावयक्वह, किण्णं तुमं जिणराक्खिया । मम रोयमणिं जाव णावयक्वहसि )

એ વાત તો ચોક્કસ પછે કહી શકાય કે હું, શરૂઆતથી જ જનપાલિતને માટે હંમેશા અનિષ્ટ, અકાંત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ, અને અમનોમ-મનને પ્રતિકૂળ જ બની રહું છું અને જનપાલિત પણ મારા માટે હંમેશાં અનિષ્ટ, અકાંત વગેરે જ રહ્યા છે. હું તો જનરક્ષિતને મટે હંમેશાં ઈષ્ટ વગેરે રૂપમાં રહી છું અને જનરક્ષિત મારે માટે ઈષ્ટ વગેરે રૂપમાં સદા રહી છે ત્યારે હે જનરક્ષિત ! મને જો રહતી, આકંઠ કરતી, શોક કરતી, વિરહમાં આર્તધ્યાન કરતી અને આ રીતે વિલાપ કરતી કે જનપાલિત મારી સાચું જોતા નથી તો શું તમે પણ મને રહતી યાવત્ વિલાપ કરતી જોતા નથી.

( तएणं सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा ३ जिणरक्खियमणं ना ऊण वधनिमित्तं उवरिं मागंदिय दारमाणं दोण्हंपि “ १ ” ॥ )

રચણા દેવીએ એ પ્રમાણે કટાક્ષ યુક્ત વચ્ચનો કહ્યો ત્યારે જનરક્ષિતહું મન ડગમગવા લાગ્યું. આવી પરિસ્થિતિમાં જો કંઈ તેણે કહ્યું તે સૂત્રકાર આઠ

सा प्रवर रत्नद्वीपस्य देवताऽवधिना तु जिनरक्षितस्य मनः । हात्वा वधनि-  
मित्तम्=मारणार्थम् उपरि भाकन्दिकदारकयो द्विथोरपि ॥ १ ॥ ' दोसकलिया '  
द्वेषकलिता=द्वेषयुक्ता ' सलीलयं ' सलीलं=सक्रोडं ' नानाविहचुण्णवासमीसं '  
नानाविधचूर्णवासमिश्रं नानाविधाः चूर्णवासाः=चूर्णगन्धाः-पिष्टगन्धद्रव्याणि,  
तैर्मिश्रा=युक्ता दिव्याम् । घ्राणमनोनिर्वृतिकरां=घ्राणमनसोस्तृप्तिकरां तादृशीं  
सर्वकुसुरमिक्तुसुमवृष्टिं=सर्वकृतसमुत्पन्नसुगन्धितपुष्पवृष्टिं ' पसुंचमाणी ' मधुश्रन्ती  
॥ २ ॥ नानामणिक्कनकरत्नघण्टिकाकिङ्किणीनूपुरमेखलाभूषणरवेण, तत्र-  
नानाविधमणिक्कनकरत्नानां घण्टिकाः, किङ्किण्यः=शुद्धघण्टिकाः । नूपुरं=चरण-  
भूषणम्, मेखलाभूषणं=कटिशूषणम्, तेषां रवेण=शब्देन मञ्जुलध्वनिना दिशो  
विदिशश्च पूरयन्ती=सशब्दं कुर्वन्ती वचनमिदं=दक्ष्यमाणं ब्रवीति सा सकलुपा=

द्वारा कहते हैं-वह प्रवर रत्न द्वीप की देवता अवधिज्ञान से जिन रक्षित  
के मन को जान कर मारने के लिये उन दोनों भाकंदी दारकों के ऊपर  
( दोस कलिया ) विद्वेषवती बन गई ( सलीलयं नाणाविहचुण्णवास  
मीसं दिव्वं ! घ्राणमणनिव्वुइकरं सव्वोउयसुरमिक्तुसुमवुष्टिंपसुंच  
माणी २ ) फिर उस ने उन के ऊपर बड़ी भारी लीला के साथ नाना  
विधचूर्णवास मिश्रित एवं घ्राण और मन को तृप्ति कारक ऐसी दिव्य  
सर्वकृत संघन्धी सुरभित कुसुमों की वृष्टि की । ( नाणा मणिक्कणगर-  
यण घटियखिखिणिजेऊर मेहलमूसणरवेणं ' दिसाओ विदिशाओ  
पूरयन्ती वयणमिणं वेति सा साकलुसाहं ) इस के बाद नाना प्रकार के  
मणियोंकी, सुवर्णकी एवं रत्नोंकी घण्टिकाओंके झुड़ घण्टिकाओंके नूपुरों  
के कटिशूषण के शब्द से-मञ्जुल आवाज से दिशाओं एवं विदिशाओं

गाथाओ पडे कडे छे-ते प्रवर रत्नद्वीपनी देवता अवधिज्ञानथी जिनरक्षितना  
मननी पात समजने भारी नाणवाना विचारथी तेओ अने भाकंदी दारको  
ऊपर ( दोसकलिया ) द्वेष धरावती थई गई । ( सलील यं नाणाविहचुण्णवास-  
दिव्वं ! घ्राणमणनिव्वुइकरं सव्वोउय सुरमिक्तुसुमवुष्टिं पसुंचमाणी २ ) त्पार पछी  
तेबे तेओना ऊपर अरे वीलाओनी साथे घण्टी नतना सुगन्धित बुझ्झिअने नाक  
तेमज मनने पृष्ट करे तेवा द्रव्ये अने गंधी नकुओना सुगन्धित पुष्पानी वर्षा करी ।

( नाणामणिक्कणगरयणघटियखिखिणिजेऊरमेहलमूसणरवेणं । दिसाओ विदि-  
साओ पूरयन्ती वयणमिणं वेति सा साकलुसाहं )

त्पार गाढ़ घण्टी नतना मञ्जुओनी, सोनानी अने रत्नानी घण्टीओना,  
पथरीओना, अंजरेना, कंदोराणा शब्दथी मञ्जुल आवाजथी दिशाओ तेमज

सपापा ॥ ३ ॥ तथाहि-होल ! = हे मुग्ध !, वसुल = हे सुकुमार ! गोल = हे कठोर !  
 हे नाथ ! दयित ! = हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कान्त ! हे स्वामिन् ! हे  
 निर्वृण ! हे स्नेहरहित !, निच्छक ! = हे अवसरज्ञानशून्य ! ' थिण ! ' हे स्थान =  
 हे निर्दयहृदय ! ' णिक्किव ' निक्कुर ! = हे निष्करुण ! ' अकयणणुय ' अकृतज्ञ !  
 हे कृतोपकारानभिज्ञ ! हे कृतघ्न ! इत्यर्थः ' सिद्धिलभाव ' शिथिलभाव ! = हे मन्द-  
 भाव ! ' निल्लज्ज ' हे निर्लज्ज ! ' लुक्ख ' रुक्ष ! = हे प्रेमशून्य ! ' अकलुण '   
 अकरुण ! = हे निर्दय ! जिनरक्षित ! मम ' हिययरक्खगा ' हृदयरक्षक ! = हे प्राण-  
 रक्षक ! ॥ ४ ॥ ' न हु जुज्जसि ' नैव युज्यसे नैवार्हसि न योग्योऽसि त्वम् एक-  
 काम्-अनाथां=निराधाराम्, अवान्धवाम्=अप्रहारां तव ' चलण ओवायकारियं '   
 चरणावपातकारिकां=चरणसेविकां=माम् ' उज्झिउं = त्यक्तुम्, कथम्भूताम् ? ' अहण्णं '

को वाचालित करती हुई उस पापिनी ने इस प्रकार कहा- ( होल वसुल-  
 गोलणाह, दइत, पिय, रमण, कंत सामिय, णिग्घण णिच्छक, थिण  
 णिक्किव अकयणणुयसिद्धिलभाव निल्लज्ज-लुक्ख, अकलुण जिणक्खिय  
 मज्झ हिययरक्खगा ४ ) होल हे मुग्ध ! वसुल-हे सुकुमार ! गोल-हे  
 कठोर ! हे नाथ ! दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण, हे कान्त ! हे  
 स्वामिन् ! हे निर्वृण-स्नेहरहित ! हे निच्छक-अवसरज्ञान शून्य ! थिण  
 हे निर्दयहृदय ! हे निष्कृप ! हे अकृतज्ञ कृतोपकारानभिज्ञ कृतघ्न-हे  
 शिथिलभाव ! हे निर्लज्ज ! हे रुक्ष-प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! जिन-  
 रक्षित ! तुम ही मेरे प्राण रक्षक हो अतः- ( नहुज्जसि एकियं अणाहं  
 अबंधवं तुज्झ चलण ओवाय कारियं उज्झिउ अहण्णं गुणसंकर ! अहं  
 तुमे विह्वणा ण समत्था वि जीविउं खणं पि ५ ) तुम्हें मुझ चरण सेविका

विदिशाओने मुप्ररित करती ते पापीणीओ आ प्रभाओे कहुं—

(होल वसुलगोलणाहदइतपिय, रयत, कंत, सामिय, णिग्घण णिच्छक ! थिण णिक्किव  
 अकयणणुय सिद्धिलभाव निल्लज्ज लुक्ख अकलुण जिणक्खिय मज्झ हिययरक्खगा ४)

होल-हे मुग्ध !, वसुल-हे सुकुमार !, गोल-हे कठोर !, हे नाथ !,  
 दयित-हे दयालो ! हे प्रिय ! हे रमण ! हे कंत ! हे स्वामीन् ! हे निर्वृण !  
 स्नेहरहित ! हे निच्छक-अवसर ज्ञान शून्य ! थिण-हे निर्दय हृदय ! हे  
 निष्कृप ! हे अकृतज्ञ, कथंवा उपकारिने नहि माननारा, कृतघ्न-हे शिथिल-  
 भाव ! हे निर्लज्ज ! हे रुक्ष ! हे प्रेमशून्य, हे अकरुण-निर्दय ! जिनरक्षित !  
 भाशे प्राण रक्षक तमे न ओ. ओटला भाटे—

( न हुज्जसि एकियं अणाहं अबंधवं तुज्झ चलणओवायकारियं उज्झिउ  
 अहण्णं गुणसंकर ! अहं तुमे विह्वणा ण समत्था वि जीविउं खणं पिय )

અપન્યામ્=અપૂર્ણમનોરથામ્ । ‘શુણસંકર’ શુણસઙ્કાર=હે શુણસાગર ! અહં ‘તુમે ત્રિહ્વણા’ ત્વયોત્રિહ્વીના=ત્વદ્વિયુક્તા ન સમર્થાઽપિ જીવિતું ક્ષણમપિ-ત્વાં વિના ક્ષણમપિ ન જીવિષ્યામોત્યર્થઃ ॥ ૫ ॥ પરંતુ, અધુનૈવ અહમ્ ‘ઇમસ્સ ડ’ અસ્ય તુ ‘અણેગક્ષસમગરત્રિવિહસાવયસયાકુલગિહસ્સ’ અનેકક્ષવમકરત્રિવિધશ્વાપદશવા કુલગૃહસ્ય અનેકે શ્વભાઃ=મત્સ્યાઃ, મકરાઃ=ગ્રાહાઃ, વિવિધશ્વાપદાઃ=નાનાવિધ-હિંસકજલચરજન્તવઃ, તેષાં શ્વતાનિ, તૈઃ આકુલં=વ્યાસં ગૃહમ્=અન્તર્ભાગો યસ્ય સ તસ્ય રત્નાકરસ્ય=લઘ્વણસમુદ્રસ્ય મધ્યે આત્માનં ‘વહેમિ’ હન્મિ=નાશયમામિ તવ પુરતઃ, અતઃ હે જિનરક્ષિત ! ત્વમ્ એહિ=આગચ્છ ‘ણિયત્તાહિ’ નિવર્તસ્વ પુરતો-ગમનાત્, યદ્યસિ ત્વં કેનાપિકારણેન ક્રુપિતઃ, તર્હિ ‘લ્લમાહિ’ ક્ષમસ્વ ‘एका-वराहं’ एकापराधम्-અજ્ઞાનવશાત્સજ્ઞાતમેકમપરંધંમે=મમ ॥ ૬ ॥ ‘તુજ્ઞય’ તવ

કો અસહાય નિરાધાર અકેલી છોડના યોગ્ય નહીં છે । મેરે અમીતક કોઈ ભી મનોરથ પૂર્ણ નહીં હુએ છે । હે શુણસાગર ! મੈ તુમ્હારે વિના ૧ એક ક્ષણ ભી જીવિત નહીં રહ સકતી છું । ( ઇમસ્સ ૩ અણેગક્ષસમગર ત્રિવિહ સોવય સયાકુલચરસ્સ । રયણાગરસ્સ મજ્ઞે અપ્પાણં વહેમિ તુજ્ઞ પુરોએહિ નિયત્તાહિ જહસિ કુવિઓ લ્લમાહિ એકાવરાહંમે ૬ ) દેખો મੈં હસી સમય અનેક પ્રકાર કી-સૈકદોં બહુલિયોં સે મગરોં સે વિવિધ હિંસક જલચર જન્તુઓં સે વ્યાસ હુએ અન્તર્ભાગ વાલે હસ સમુદ્રકે બીચ મੈં તુમ્હારે દેખતે ૨ અપને આપકો કાલ દેતોં છું-અતઃ હે જિનરક્ષિત તુમ આઓ-આગે મત બઢો, તુમ યદિ કિસી કારણ વશ મેરે ઉપર ક્રુપિત હો ગયે હો-તો મેરે અજ્ઞાનવશ હુએ ડસ અપરાધકો ક્ષમા કરો । (તુજ્ઞ

મારા જેવી ચરણોની દાસીને અસહાય, નિરાધાર અને એકલી મૂકીને જતા રહેલું તમારા જેવાને માટે યોગ્ય કહી શકાય નહિ હજી મારી એક પણ ઈચ્છા પૂરી થઈ નથી. હે શુણસાગર ! તમારા વગર એક ક્ષણ પણ હું જીવી શકું તેમ નથી

( ઇમસ્સ ડ અણેગક્ષસમગરત્રિવિહમાવયસયાકુલચરસ્સ ! રયણાગરસ્સ મજ્ઞે અપ્પાણં વહેમિ તુજ્ઞ પુરોએહિ નિયત્તાહિ જહસિ કુવિઓ લ્લમાહિ એકાવરાહંમે ૬ )

ભુઓ, હું અત્યારે જ ઘણી જાતની સેંકડો માછલીઓ, મગરો, ઘણી જાતના હિંમક જળચર પ્રાણીઓથી યુક્ત આ સમુદ્રની વચ્ચે તમારી સાથે જ રૂંધી મંદ છું. માટે હે જિનરક્ષિત તમે આવો, આગળ જશે નહિ. ગમે તે કારણથી બે તમે મારા ઉપર નારાજ થઈ ગયા હો તો મારા અજ્ઞાનથી થયેલી ભૂલોને તમે માફ કરો.

ચ 'વિગયઘગવિમલસસિમંડલાગારં' વિગયઘનવિમલશશિમંડલાકારમ્-વિગત-  
 ઘન=મેઘરહિતમ્ અતएव વિમલં=નિર્મલં શશિમંડલં=ચન્દ્રમંડલં, તસ્યેવાકારઃ=  
 આકૃતિર્વ્યસ્ય તત્તથોક્તમ્, સસ્તિરીયં' સશ્રીકં=શોભાસમ્પન્નમ્, 'સારયનવકમલ-  
 કુમુય કુવલયવિમલદલનિગરસરિસનિમનયણં' શારદનવકમલકુમુદકુવલય વિમલદલ  
 નિકરસદશનિમનમનમ્ તત્ર શારદં=શરતકાલસમુત્પન્નં યન્નવં નૂતનં કમલં=સૂર્ય-  
 વિકાશિપદ્મં કુવલય=ચન્દ્રવિકાશિપદ્મં, તેષાં વિમલદલનિકરઃ = નિર્મલદલસમૂહઃ,  
 તત્સદૃશે=તત્તુલ્યે નિમે-નિતરાં દીપ્તિયુક્તે ચ નયને=નેત્રે યસ્મિન્ તત્ તથોક્તમ્,  
 एताદૃશશોભાસમ્પન્નં 'વયણં' વદનં=મુખમ્, 'પિવાસાગયાए' પિવાસાગતાયાઃ=  
 દર્શનૌત્તમુચ્યેન સમાગતાયાઃ શ્રદ્ધા=વાઙ્મય મે=મમ 'પેચ્છિઝં' પ્રેક્ષિતું=વિલો-  
 કિતું વર્ષતે 'જે' યસ્માત્ 'અવલોહિ' અવલોકય=પશ્ય 'તા' તાવત્ 'હો  
 મમ' इतो मम=ममाभिमुख 'णाह' हे नाथ ! 'जा' यावत्=यावत्કાલં તે=તવ  
 'પેચ્છામિ' પ્રેક્ષે=પશ્યામિ 'વયણકમલં' વદનકમલં=મુખકમલમ્, ॥ ૭ ॥

ય વિગય-ઘન-વિમલ-સસિમંડલાગારં સસ્તિરીયં સારય નવકમલ કુમુ-  
 યકુવલય-વિમલદલ-નિકરસરિસ-નિમનયણં વયણં પિવાસાગયાए  
 સદ્ધા મેં પેચ્છિઝં જે અવલોएहि તાહો મમં ણાહ જા તે પેચ્છામિ વયણ  
 કમલં ૭) દર્શન કી ઉત્તુકતા સે આઈ હુઈ મેરીઙ્છા તુમ્હારે મુલ કો  
 દેખ્વને કે લિયે હો રહી હૈ । તુમ્હારા વહ મુલ મેઘ રહિત નિર્મલ ચન્દ્રમં-  
 ઢલ કે સમાન આકૃતિ વાલા ઇવં વિશિષ્ટ શોભા સંપન્ન હૈ । ઇસકે દોનોં  
 નેત્ર શારદકાલીન નવીન કમલ, કુમુદ, ઇવં કુવલય કે દલનિકર કે  
 સમાન અત્યન્ત દીપ્તિ શાલી હૈ । સૂર્યવિકાશીપદ્મ કા નામ કમલ, ચન્દ્ર  
 વિકાશી પદ્મ કા નામ કુવલય હૈ । ઇસલિયે હે નાથ ! ઇસ તરફ તુમ  
 મેરી ઓર દેખો જબતક તુમ મેરી ઓર દેખતે રહોગે-તજનક મેં તુમ્હારે

( તુજ્ઞ ય વિગય ઘગવિમલસસિમંડલાગાર સસ્તિરીયં સારય નવ કમલ  
 કુમુય-કુવલય-વિમલદલ-નિકર-સરિસ-નિમનયણં વયણં પિવાસા ગયાए સદ્ધાએ  
 પેચ્છિઝં જે અવલોएहि તાહો મમં ણાહ તે પેચ્છામિ વયણકમલં ૭ )

દર્શનના ઉમગકાથો પ્રેરાધને આવેલી મારી ઇચ્છા તમારા મુખને જોવાની  
 થઈ રહી છે તમારું મુખ મેઘ રહિત નિર્મળ ચન્દ્રમંડળની જેમ આકારવાળું  
 અને સન્નિશેષ સૌંદર્ય યુક્ત છે. અને નેત્રો શારદ-ચંદ્રના નવીન કમળ, કુમુદ  
 અને કુવલયના દલનિકરની જેમ ઘણા સુતિમાન છે. સૂર્ય વિકાશી પદ્મનું નામ  
 કમળ, ચન્દ્ર વિકાશી પદ્મનું નામ કુવલય છે. એટલા માટે હે નાથ ! તમે મારી  
 તરફ જુઓ. જ્યાં મુખી તમે મારી તરફ જોતા રહેશો ત્યાં મુખી હું પણ  
 તમારું મુખકમળ જોઈ શકશો.

एवम्=अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण 'सप्पणयसरलमहुराई' सप्पणयसरलमधुराणि-स्नेह-  
सहित सुखार्थबोधकानि मधुराणि च पुनः पुनः 'कलुगाई' 'करुगानि'=करुणरस-  
जनकानि 'वयणाई' वचनानि 'जंपमाणी' जल्पन्ती सा पापा 'मागओ'  
मार्गतः मार्गे इत्यर्थः 'समण्णेइ' समन्वेति=आह्वयच्छति 'पावहियया' पाप-  
हृदया=कुटिलान्त करणा का रत्नद्वीपदेवता ॥ ७ ॥

ततः रलु स जिनरक्षितश्चलमनास्तेनैव भूषणरवेण कर्ममुखदेन मनोहरेण, तथा  
तैश्चैव सप्पणयसरसमधुरमणितैः सञ्जाताद्विगुणरागः=कामरागाकृष्टः सन् रत्नद्वीप-  
स्या देवतायास्तस्याः सुन्दरस्तनजघनवदनकरचरणनयनलावण्यरूपयौवनभ्रियं  
च दिव्याम्, तथा 'सरमसउवगूहियाई' सरमसोपगूहितानि=ससम्प्रमकृताञ्जि-  
नानि, यानि च 'विब्बोयविल्लियणि' विब्बोक विलसितानि=विब्बोकाः=

मुखकमल को देखलूंगी (एवं सप्पणयसरलमहुराई पुणो २ कलुगाई  
वयणाई जंपमाणी सा पावमगओ समण्णेइ, पावहियया ८) इस प्रकार  
-कुटिलान्तकरणवाली वह रत्नद्वीपदेवता वार २ स्नेह सहित, सुखार्थ  
बोधक, मधुर एवं करुणारसजनक वचनों को बोलती हुई मार्ग में उस्-  
के पीछे २ चलने लगी । (तएणं से जिणरक्खिण चलमणे तेणेव भूष  
णरवेणं कण्णमुहमणोहरेणं तेहि य सप्पणयसरलमहुरमणिएहिं  
संजाय विणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुन्दरथणजहणवयण कर  
चरणनयणलावण्यरूपजोव्वणसिरिं च दिव्व सरमसउवगूहियाई विब्बो  
य विल्लियणि० य विहसिय सकडक्खदिट्ठि निस्ससिय मल्लिय उवल्लिय  
ठियगमण पणयत्थिज्जिय पासाइयाणि य, सरमाणे रागमोहियमई अवसे  
कम्मवसगए अवयक्खत्ति मग्गतो सविलियं) इसके बाद कर्णेन्द्रिय को

( एवं सप्पणयसरलमहुराई पुणो २ कलुगाई वयणाई जंपमाणी सा पाव-  
मगओ समण्णेइ पावहियया ८ )

आ रीते कुटिल हृदयवाणी ते रत्नद्वीप देवता वारंवार स्नेहसहित,  
सुखार्थ बोधक मधुर अने कइछा-रसजनक वचने। कहेती मार्गभां तेने अनु-  
सरती आलवा लागी.

( तएणं से जिणरक्खिण चलमणे तेणेव भूषणरवेणं कण्णमुहमणोहरेणं  
तेहि य सप्पणयसरलमहुरमणिएहिं संजायविणराए रयणदीवस्स देवयाए  
तीसे सुन्दरथणजहण वयणकर-चरण-नयण-लावण्यरूप जाव्व णसिरिं च दिव्वं  
सरमसउवगूहियाई विब्बोय विल्लियणि० य विहसिय सकडक्ख दिट्ठि निस्स-  
सिय मल्लिय उवल्लिय ठियगमण पणयत्थिज्जिय पासाइयाणि य सरमाणे  
रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खत्ति मग्गतो सविलियं )

स्त्रीचेष्टा विशेषाः, विलसितानि=नेत्रविकारादि लक्षणानि च 'विहसिय सकडक्ल-  
दिट्टिनिस्ससियमलिय उवल्लियठियगमणपणयखिज्जियपासाइयाणि य' विहसित  
सकटाक्षदृष्टिनिः श्वसितमलिते पल्लितस्थितगमनप्रणयखिसित प्रसादितानि च-  
विहसितानि=हास्यानि, सकटाक्षदृष्टयः=सत्रिकारविलोकनानि, निः श्वसितं=  
निः श्वासमोचनम्, मलितं=पुरुषाभिलषितमर्दनम्, उपल्लितानि=क्रीडाविशेष-  
रूपाणि, स्थितम्=भवननिबसनादिकम्, गमनं=हंसगत्यासञ्चरणम्, प्रणयः=स्नेह,  
वचनम्, खिसनं=कामकलहः, प्रसादितं=प्रसन्नतारूपम्, एतानि सर्वाणि च 'सर-  
माणे' स्मरन्=पुनः पुनः स्मृतिपथमानयन् 'रायमोहियमई' रागमोहितमतिः=  
कामरागमूर्च्छितमतिः, 'अवसे' अवशः=विवशः कामपराधीनः 'कम्मवसणं'  
कर्मवशगतः=कर्मगतिपरवशः रान् असौ जिनरक्षितस्तां 'अवयक्खइ' पश्यति  
'मग्गओ' मार्गेतः पृष्टतः 'सवलिय' सत्रीहंसलज्जं दृष्टवानित्यर्थः ।

सुख देने वाले और मन को हरण करने वाले उन्हीं भूषणों के शब्दों से  
तथा उन्हीं सप्रणय सरल मधुर भाषणों से जिसका रागभाव वीणुणित  
हो गया है ऐसा वह जिनरक्षित चंचल मनवाला बन गया। सो उस  
रंयणादेवी के दोनों सुन्दरस्तनों की दोनों जघनों की, वदन की दोनों  
करोँ की दोनों चरणों की, लावण्य की, रूप एवं यौवन की दिव्य श्री  
का तथा उसके ससंभ्रमकृत आलिङ्गनों का, विषोक तथा बिलासों का,  
हास्य का, कटाक्षयुक्तदृष्टि विक्षेप का श्वासमोचन का, पुरुषाभिलषित-  
मर्दन का, क्रीडा विशेषरूप उपल्लितों का भवनादिकों में निवास करने  
आदि का उसकी हंसकी चालके समान गति का, उसके प्रणयवचनों  
का, काम कलह का, उसकी प्रसन्नता का बार २ स्मरण करता हुआ वह  
काम राग से मोहित मतिवाला बन गया। इस तरह काम से पराधीन

त्यार पछी कानेने जमता अने मनने आकर्षणास बरेछांओना शब्दोथी  
तेमज प्रयुथना सरण मधुर वचनोथी ओना रागभाव जमछो पछी गथो छे  
ओवे ते जनरक्षित रंयण भनवाणो थछ गथो। ते रथछा देवीनां जने सुंदर  
स्तनोतुं, जघनोतुं, वदनतुं जने छायोतुं, जने अ.छोतुं, लावण्यतुं, रूप तेमज  
यौवनतुं, विषयश्रीतुं, तेना ससंभ्रमकृत आलिङ्गनोतुं, विषोकोतुं, बिलसोतुं,  
हास्यतुं, कटाक्षयुक्त दृष्टि विक्षेपतुं, श्वास मोचनतुं, पुरुषाभिलषित मर्दनतुं,  
क्रीडा विशेष रूप उपल्लितोतुं बननो वगेरेमां रहवा करवातुं, तेनी हंस ओवी  
गतिंतुं, तेना प्रयुथपूषु वचनोतुं कामकलहंतुं, तेनी प्रसन्नतातुं बारबार स्मरण  
करतो कामरागथी मोहित मतीवाणो थछ गथो। आ ईतो कामवश थरेको

ततः खलु जिनरक्षितं समुत्पन्नकलुणभावं तां प्रति संजातदयार्द्रहृदयम्, अत एव 'मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं' मृत्युगलत्थल्लानोदितमतिः, मृत्युना=मृत्युराक्ष-  
सेन 'गलत्थल्ला' = कण्ठग्रहणरूपा, तथा नोदिता=स्वदेशगगननवैमुख्यतया मृत्यु-  
मुखप्रवेशसंमुखीकृता मतिर्यस्य स तथा तम् 'अवयक्खंतं' तां रत्नद्वीपदेवतां  
पश्यन्तं तथैव=तयारूपेणैव यक्षश्च शैलकः 'जाणिऊण' ज्ञात्वा 'सणियं' २ 'शनैः  
शनैः' 'उन्विहइ' उद्विजहाति=उच्छालयति- 'नियगपिट्ठाहि' निजकपृष्ठाद्  
'विगयसद्धं' विगतश्रद्धं विगता=नष्टा श्रद्धा विवासो यक्षवचने यस्य स तम्,  
स यक्षस्तं स्वपृष्ठात्पातयामासेत्यर्थः ।

ततः खलु सा रत्नद्वीपदेवता 'निस्संसा' नृशंसा=निर्दया 'कलुणं'  
करुणं=दयनीयं जिनरक्षितं 'सकलुसा' सकलुषा=रुद्धपितृहृदया शैलकपृष्ठात्

बना वह विचारा जिनरक्षित अशुभकर्म के चक्कर में पड़कर मार्ग में  
चलते २ उसकी ओर बार २ लज्जा सहित देखने लग गया । ( तएण  
जिनरक्षितयं समुत्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खंतं  
तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं २ उन्विहति नियग पिट्ठाहि विगय  
सद्धं ) उत्पन्न हुआ है रयणा देवी के प्रति दया भाव जिसको ऐसे उस  
जिनरक्षित को कि जिस की मति कंठ पकड़ कर मृत्यु रूपी राक्षस ने  
अपने मुख में प्रवेश के सम्मुख कर ली है रयणा देवी की ओर बार २  
निहारता हुआ देखकर-जानकर धीरे २ अपनी पीठ पर से अपने वच-  
नों में श्रद्धा विहीन जान उछाल दिया । पटक दिया ( तएण सा रयण-  
दीवदेवया निस्संसा कलुणं जिनरक्षितयं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि

विचारो अनरक्षित अशुभ कर्मनी लपेटभा आवीने भागंभां य लतो आक्षेप  
तेनी साथे बार-बार लल्लयुक्ता थधने जेवा लाये।

( तएणं जिनरक्षितयं समुत्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खंतं  
तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊ ण सणियं २ उन्विहति नियग पिट्ठाहि विगयसद्धं )

रयणा देवीना भाटे जेना मनभां हया साथ जन्थे छे जेवा ते अन-  
रक्षितने-के जेनी मतिनुं गणुं हणावीने मृत्युपी राक्षसे गणी जेवा भाटे  
पोताना भेनी साथे करी लीधी छे-रयणादेवीनी तरङ्ग बार-बार जेता लल्लुने,  
तेना ( यक्षना ) पयनोभां अश्रद्धाशु थध गयेवा समलने धीमे धीमे अन-  
रक्षितने यक्षे पोतानी पीठ उपरथी ड्रेडी दीधा पट्टी दीधा।

( तएणं सा रयणादीवदेवया निस्संसा कलुणं जिनरक्षितयं सकलुसा सेलग-  
पिट्ठाहि ओवयंतं दास ! मओसित्ति जंपमाणी अप्पत्तं सागरसल्लिहं रेण्हिय वाहाहिं  
का ८१



‘ओवयं तं’ अवपतन्तम्=समुद्रे पतन्तम्, ‘दास’ हे दास ! हे नीच ! ‘मओसि’ मृतोऽसि त्वम्, इति जल्पन्ती सती ‘अप्पत्तं सागरसलिलं’ अपातं सागरसलिलं समुद्रनीरमप्राप्तेव मध्य एव ‘गेण्हिय बाहार्हि’ गृहीत्वा बाहुभ्याम् । आससन्तं=सकलं रुदन्तं=वीक्षुर्वन्तमित्यर्थः ऊर्ध्वम् ‘उव्विहइ’ उव्विजहाति=उच्छालयति अम्बरतले=गगनतले, ‘ओवयंमाणं च’ अवपतन्तं च पश्चादधः पतन्तं च ‘मंडल-गणेण’ मण्डलाग्रेण=खड्गेण ‘पडिच्छिता’ प्रतिच्छिद्य=छित्त्वा नीलोत्पल गवलांसी-प्रकाशेन=अतिशयामेन असिवरेण=सुतीक्ष्णखड्गेण खण्डाखण्डि=खण्डं-खण्डं करोति

ओवयंतं दास ! मओसिति जपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बाहार्हि आरसंतं उड्डं उव्विहति अंबरतले, ओवयमाणं च मंडलगणेण पडिच्छिता नीलुत्पलगवलअयसिप्पगासेण असिवरेण खंडाखंडि करेइ तथा विलवमाणं तस्स य सरस वहियस्स वेत्तूणअंग मंगातिं सरुहिराइ उव्वित्त बलिं चउडिसिं करेइ सा पंजली पहिडा ) इसके बाद नृशंस-हत्यारी-तथा कलुषित हृदयवाली उस रयणादेवीने शैलक यक्ष की पीठ से समुद्र में गिरते हुए जिनरक्षित को जब तक वह समुद्र में नहीं गिर पाया तब तक बीचमें ही अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और कहने लगी हे नीच अब तुं मर गया । इस प्रकार सुनकर सकल विलाप-चित्कार-करते हुए उस जिनरक्षित को उसने ऊपर उछाल दिया पश्चात् निचे गिरते समय उसने अपनी तलवार से दो टुकड़े कर दिये । दो टुकड़े करके फिर उसने नीलोत्पल, गवल एवं अतसी के पुष्प के जैसी वर्णवाली तीक्ष्ण तलवार से उसके खंड २ कर दिये । इस तरह

आरसंतं उड्डं उव्विहति अंबरतले, ओवयमाणं च मंडलगणेण पडिच्छिता नीलुत्पल गवल अयसिप्पगासेण असिवरेण खंडाखंडि करेइ हत्य विलवमाणं तस्स य सरस वहियस्स वेत्तूण अंगमंगातिं सरुहिराइ उव्वित्त बलिं चउडिसिं करेइ पंजली पहिडा )

त्यारपणी नृशंस-हत्यारी-तेमज कलुषित हृदयवाणी रयणा देवीजे वेदक यक्षनी पीठ उपरथी भरतीने समुद्रमां पडतां जेथो त्यारे ते समुद्रमां पडे नहि ते पडेदां तेष्से पोताना जने डाओथी तेने पकडी वीथो, जने ते कडेवा लागी के डे नीथ । डवे तु भरथो ज समज. रयणा देवीनी वात सांभणीने अनरक्षित कडेषु विलाप करवा लाग्यो. ते देवीजे ते स्थितिमां ज तेने उपर उछाल्यो. जने त्यारपणी नीथे पडता अनरक्षितना तेष्से पोतानी तलवारथी जे ककडा करी नाज्या. जे ककडा कर्या भाड पणु तेने नीक्षीत्पल, गवल. जने अवलीना पुश्य जेवी रंजवाणी तीक्ष्ण तलवारथी तेना शरीरना कडे ककडा

तत्र 'विलवमाणं' विलपन्तं=विलापं कुर्वन्तमित्यर्थः । तस्य च 'सरसवहियस्स' सर-  
सवधितस्य साभिमानं वधं प्रापितस्य 'घेतूण' गृहीत्वा 'अंगमंगाई' अङ्गाङ्गानि  
अङ्गोपाङ्गानि=करचरणमस्तकादीनि सरुधिराणि=धिरलिप्तानि 'उक्खित्तवलिं'  
उत्क्षिप्तवलिम्=आकाशप्रक्षेपणरूपं वायसवलि-मिववलिं 'चउदिसिं' चतुर्दिक्षु  
करोति सा 'पंजली' प्राञ्जलिः=संयोजित करपुटा 'पहिट्ठा' ग्रहृष्टा=हर्षितमनस्का  
सती घातरूपं स्वाभिलषित कार्यं कृतवतीत्यर्थः ॥ सू० ७ ॥

मूलम्—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निगंथो वा  
निगंथो वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे  
पुणरवि नाणुस्सए कामभोगे आसायइ पत्थयइ पीहेइ  
अभिलसइ से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं४ जाव सं-  
सार० अणुपरियट्ठिस्सति, जहा वा से जिणरक्खिए—छलिओ  
अवयक्खंतो निरावयक्खो गओ अविग्घेणं । तम्हा पवय-  
णसारे निरावयक्खेण भवियव्वं ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खंता  
पडंति संसारसायरे घोरे । भोगेहि निरावयक्खा तरंति  
संसारकंतारं ॥ २ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'एवामेव' एवमेव=पूर्वोक्तदृष्टान्तेनैव 'समणाउसो ।' हे श्रमणा  
अपने घातरूप अभिलषित कार्य को संपन्न करती हुई वह बहुत अधिक  
हर्षित हुई । उस रयणादेवी ने साभिमान वध को प्राप्त हुए उस जिन  
रक्षित के रुधिर लिप्त अंग उपर्यागों की चारों दिशाओं में वायस बलि के  
जैसी बलिकी और दोनों हाथों को जोड़कर फिर बड़ी आनन्द मग्न  
हुई । ॥सू०७॥

'एवामेव समणाउसो' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एवामेव) इसी तरह (समणाउसो) हे आशुभन्त श्रमणा !

करी नाप्था. आ रीते पोतानी घातकी छच्छा पूरी करतां ते अत्यधिक प्रसन्न  
थई. ते रयणा देवीणि दोहोधीं पराकायेला कडे कडा थयेला अनरक्षितनां  
अंगो. उपागोने सगर्व आर दिशाओमां कागडा वगेरेने भाटे गलि ३५भां  
ईकी छिछो. अने पछी जने हाथोने-नोडीने ते आनन्दमग्न थई गई. सूत्र "जा"

( एवामेव समणाउसो " इत्यादि ॥

टीकार्थ—( एवामेव ) आ प्रभाषे ( समणाउसो ) हे आशुभन्त श्रमणा !

આયુષ્મન્તઃ ! યોઽસ્માકં નિર્ગ્ન્યો વા નિર્ગ્ન્યી વા આચાર્યોપાધ્યાયાનામન્તિકે પ્રવ્રજિતઃ સન્ પુનરપિ માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્=પૂર્વત્યક્તાન્ ' આસાયઃ ' આસા-  
દયતિ=સ્વીકરોતિ, ' પથ્યયઃ ' પ્રાર્થયતે=અપ્રાપ્તાન્ યાચતે, ' પીહેહ ' સ્પૃહયતિ-  
' અયાચિતં-एवायं મહં ભોગાન્ દદાતિ તદા સમીचीनं સ્યાત્ ' इत्यादि રૂપાં  
સ્પૃહાં કરોતિ ' અમિલસઃ ' અમિલપતિ=દૃષ્ટાદૃષ્ટશબ્દાદિ-વિષયેષુ વાઙ્છાં કરોતિ,  
સ સ્વલ્પુ ઇહ ભવ એવં વહૂનાં શ્રમણાનાં, વહ્નીનાં શ્રમણીનાં, વહૂનાં શ્રાવકાણાં  
વહ્નીનાં શ્રાવિકાણાં મધ્યે ' જાવ ' યાવત્-યાવચ્છબ્દેનેદં દૃશ્યમ્ - હીલનીયઃ,  
નિન્દનીયઃ, સ્તિસનીયઃ=મર્ત્સનીયઃ, ગર્હણીયઃ, પરિમવનીયઃ=તિરસ્કરણીયો ભવતિ,  
પરલોકેઽપિ ચ સ્વલ્પુ આગમિષ્યતિ કાલે વહ્નિનિ દળ્હાનિ=કર્ણનાસાચ્છેદનરૂપાણિ  
પ્રાપ્નોતિ યાવત્-અનાદિકમ્-અનન્દગ્રમ્=અનન્તં, દીર્ઘાધ્વાનં=દીર્ઘપાર્શ્વં, દીર્ઘાદં  
વા દીર્ઘકાલિકં ચાતુર્ગતસંસારકાન્તારં=ચાતુર્ગતિકસંસારાટ્ક્રીમ્ ' અણુપરિયદ્વિ-  
સ્સઃ ' અણુપર્યટિષ્ઠતિ=પુનઃ પુનઃપ્રમિષ્યતિ, યથા વા સ જિનરસિતઃ । અત્રાયે  
દૃષ્ટાન્તયોજનાગાથાદ્વયેનાહ—

( જો અમ્હં નિર્ગ્ન્યો વા નિર્ગ્ન્યી વા આચરિયડબ્જ્ઞાયાણં અંતિપ પવ્વહૂ ) જો હમારા નિર્ગ્ન્ય અથવા નિર્ગ્ન્યી જન આચાર્ય તથા ઉપા-  
ધ્યાય કે પાસ પ્રવ્રજિત્ત હોતા હુઆ ( પુનરવિ માણુસણ કામભોગે  
આસાયઃ પથ્યયઃ, પીહેહ, અમિલસઃ ) પુનઃ મનુષ્ય ભવ સંચન્ધી કામ  
'ભોગો-પૂર્વત્યક્ત વૈષયિક સુખોં કો-સ્વીકાર કર લેતા હૈં ઉત્તકી ચાહના  
કરતા હૈં " વિના યાચના કિયે હી યહ મેરે ક્ષિયે 'ભોગોં કો દેદેવે તો  
અચ્છા હૈં " ઇસ પ્રકારં કી જો સ્પૃહા ઇચ્છા કરતા હૈં, યા દૃષ્ટાદૃષ્ટ  
શબ્દાદિ વિષયોં મેં વાઙ્છા કરતા હૈં ( સે ણં ઇહ મવે ચેવ વહૂણં સમણા-  
ણં ૪ જાવ સંસાર ૦ અણુ પરિયદ્વિસ્સઃ જહાવ સે જિનરસિલ્લપ છલિઓ

( જો અમ્હં નિર્ગ્ન્યો વા નિર્ગ્ન્યી વા આચરિય ઉબ્બજ્ઞાયાણં અંતિપ પવ્વહૂ )  
જો અમારો નિર્ગ્ન્ય કે નિર્ગ્ન્યી જન આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજીત થઇને  
( પુનરવિ માણુસણ કામભોગે આસાયઃ પથ્યયઃ, પીહેહ, અમિલસઃ )

ફરી તે મનુષ્યભવના કામભોગો-પ્રવ્રજીત થતી વખતે છોડેલા મનુષ્યભવના  
વિષમ સુખો-ને સ્વીકારે છે, તે સુખોની ઇચ્છા કરે છે. " હું વિષમ સુખની  
એની પસંદગી માંગણી કર નહિ ને એની ભોગે તે મને વિષમ સુખો આપે  
તો કેટલું સાદું થાય ? આ રીતે જે સ્પૃહા કરે છે, અથવા તો દૃષ્ટાદૃષ્ટ શબ્દ  
વગેરે વિષયોની ઇચ્છા કરે છે.

( સે ણં ઇહ મવે ચેવ વહૂણં સમણાણં ૪ જાવ સંસાર ૦ અણુપરિયદ્વિસ્સઃ

“છલિઓ અવયક્ષંતો, નિરાવયક્ષો ગઓ અવિગ્ધેળં ।

તમ્હા પવયણસારે, નિરાવયક્ષેળ મવિયવ્વં ॥ ૧ ॥

મોગે અવયક્ષંતા, પઢંતિ સંસારસાયરે શ્રોરે ।

મોગેહિં નિરવયક્ષા, તરંતિ સંસારકંતારં ॥ ૨ ॥” હિતિ ॥

અસ્ય વ્યાख्या—છલિતઃ=વશ્ચિતઃ, કઃ ? અવયક્ષંતો ’ પશ્યન્ રત્નદ્વીપ-  
દેવતામ્—અવલોકયન્ જિનરક્ષિતો વિપ્રતારિતઃ । યઃ ‘નિરાવયક્ષો ’ અપશ્યકઃ—  
તસ્યા દેવતાયા અર્ધાકઃ તાં ન દૃષ્ટ્વન્નિત્યર્થઃ, સ જિનપાલિતઃ ગતઃ=ગૃહં પ્રાપ્તઃ  
‘ અવિગ્ધેળં ’ અવિગ્ધનેન=નિર્વિગ્ધનતયા, યુક્તયુક્તેન સ્વસ્થાનં પ્રાપ્ત વાનિત્યર્થઃ ।  
અથોપદેશમાહ—તસ્માત્ કારણાત્ પ્રવચનસારે=ચારિત્રેલ્લધે સતી ‘નિરાવયક્ષેળ’

અવયક્ષંતો નિરાવયક્ષો ગઓ અવિગ્ધેળં । તમ્હા પવયણસારે નિરા  
વયક્ષેળ મવિયવ્વં ) વહ્નિસ ભવ મેં હી અનેક અપણો અનેકઅમણિ  
યોં અનેક આચકોં एवं અનેક આવિકાઓં કે વીચ મેં હોલનીય હોતાહૈ,  
નિવ્દનીય હોતા હૈ, વિસનોય હોતા હૈ, તથા પરમ્ભવ મેં મી અનેક કર્ણ-  
નાસિકાચ્છેદન ઓદિ રૂપ દંડોં કો મોગતા હૈ ઈસા જીવ અનાદિ  
અનન્ત રૂપ હસ દીર્ઘ માર્ગ યા કાલ વાલે ચતુર્ગતિક સંસાર કાન્તાર  
મેં પુનઃ પુનઃ ભ્રમણ કરેગા । જિન રક્ષિત કા જો હસ વિષય મેં દૃષ્ટાન્ત  
દિયા ગયા હૈ ઉસકી યોજના હસ પ્રકાર હૈ—જૈસે રચના દેવી કો તરફ  
દેખતા હુઆ જિનરક્ષિત ઠગા ગયા—ઔર ઉસકી તરફ નહીં દેખતા  
જિનપાલિત શીઘ્ર અપને ઘર પહુંચ ગયા—હસી તરફ ચારિત્ર કે પ્રાપ્ત  
કરલેને પર જો વ્યક્તિ શબ્દોદિ વિષયોં કી વાચ્છા સે રહિત હોના હૈ

જહાવ સે જિનરક્ષિત્વ છલિઓ અવયક્ષંતો નિરાવયક્ષો ગઓ અવિગ્ધેળં ! તમ્હા  
પવયણસારે નિરાવયક્ષેળ મવિયવ્વં )

તે આ ભવમાં જ ધણા શ્રમણો અને શ્રમણીઓ તેમજ ધણા શ્રાવકો  
અને શ્રાવિકાઓની સાથે હીવનીય હોય છે, નિવ્દનીય હોય છે, ખિસનીય હોય  
છે. ( ભત્સનીય હોય છે. ) તિરસ્કાર કરવા યોગ્ય હોય છે, તથા ખીબ જન્મમાં  
પણ ધણા કાન, નાક કપાવવા વગેરે રૂપ સબને લોગવતો રહે છે. આ જાતનો  
જીવ અનાદિ અનંતરૂપ આ હીર્વ માર્ગ અથવા કાળવાળા ચતુર્ગતિક સંસાર  
કાંતારમાં વારંવાર ભ્રમણ કરશે. અહીં જીનરક્ષિત વિશે જે દૃષ્ટાન્ત આપવામાં  
આવ્યું છે તેને આ પ્રમાણે સમજવું જોઈએ જેમ રચણા દેવીની તરફ જોતાં  
જીનરક્ષિત ઠગાયો અને તેની તરફ ન જોતાં જીનપાલિત એકદમ પોતાને ઘેર  
પહોંચી ગયો તેમજ ચારિત્ર મેળવવા ગાદ જે માણસ શબ્દાદિ લોગોની ઈચ્છા

અપશ્યકેન=પ્રાપ્તાપ્રાપ્ત-દૃષ્ટાદૃષ્ટશબ્દાદિ વિષયાણામદર્શકેણ શબ્દાદિવિષયવાચ્છા-  
રહિતેનેત્યર્થઃ ભવિતવ્યમ્ , ચારિત્રં ગૃહીત્વા વિષયવાસનામ્ ભ્રેષ્ઠોઽપિ મુનિના  
મૂર્છાં ન વિધાતવ્યેતિ ભાવઃ ॥ ૧ ॥ અતएव મોગે ' મોગાન્=શબ્દાદિકાન્  
'અવયવત્વંતાં ' પશ્યન્તઃ=વાચ્છન્તો જીવાઃ પતન્તિ સંસારસાગરે ઘોરે । ये मोगेषु  
निरवयवत्वाः' અપશ્યકાઃ=વાચ્છારહિતાઃ સન્તિ તે તરન્તિ પારયન્તિ સંસારકાન્તારં  
=મવાટવીમ્ ॥ ૨ ॥ સૂ. ૮ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સા રયણદ્દીવદેવયા જેણેવ જિણપાલિણ  
તેણેવ ઉવાઁ બહૂહિં અણુલોમેહિ ય પઢિલોમેહિ ય સ્વરમ-  
હુરસિંગારેહિં કલ્હણેહિ ય ઉવસગ્ગેહિ ય જાહે નો સંચાણ્ણ  
ચાલિત્તણ્ણ વા સ્વોભિં વિપ્પં તાહે સંતા તંતા પરિતંતા  
નિબ્બિવણ્ણા સમાણા જામેવ દિસિ પાઉબ્ભૂયા તામેવ દિસં  
પઢિગયા, તણ્ણં સે સેલણ્ણ જક્ખે જિણપાલિણ્ણ સાદ્ધ લ-  
વણસમુદ્ધં મજ્ઞાંમજ્જેણં વીયવય્ણ્ણ ૨ જેણેવ ચંપાનયરી તેણેવ  
ઉવાગચ્છઙ્ગ ઉવાગચ્છિત્તા ચંપાણ્ણ નયરીણ્ણ અગ્ગુજ્ઞાણંસિ  
જિણપાલિયં પિટ્ઠાતો ઓયારેઙ્ગ ઓયારિત્તા ઇવં  
વયાસી-ણ્ણં દેવાનુપ્પિયા ! ચંપાનયરી દીસઙ્ગ ત્તિક્કહુ  
જિણપાલિયં આપુચ્છઙ્ગ આપુચ્છિત્તા જામેવ દિસિં પાઉબ્ભુણ્ણ  
તામેવ દિસિં પઢિગણ્ણ ॥ સૂ. ૧ ॥

વહુ હસ સંસાર રૂપ અટવી સે પાર હો જાતા હૈં ઓર જો હસ અવસ્થા  
મેં શબ્દાદિ વિષય ભોગોંકી વાચ્છા કરતા હૈં વહુ સંસાર રૂપ અટવી મેં  
હૂબતા રહતા હૈં-પડતા રહતા હૈં । સૂત્ર “ ૮ ”

રાખતો નથી તે આ સંસાર રૂપી અટવીની પાર પહોંચી બાંધ છે અને જે  
શબ્દ વગેરે વિષય-ભોગોની ઇચ્છા કરે છે તે સંસાર રૂપી અટવીમાં ફસાઇને  
તેમાં જ રૂખતો રહે છે. ॥ સૂત્ર “ ૮ ” ॥

टीका—‘तपणं सा’ इत्यादि । ततः खलु तदनन्तरं जिनरक्षितवधानन्तरं सा रत्नद्वीपदेवता यत्रैव जिनपालितस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य बहुभिः—अनुलोमैः=अनुकूलैश्च, प्रतिलोमैः=प्रतिकूलैश्च ‘खरमहुरसिंगारेहिं’ खरमधुरशृङ्गारैः खरैः=कर्कशैः, मधुरैः=मिष्टैः कर्णसुखदैरित्यर्थः, शृङ्गारैः=शृङ्गाररसोत्पादकैः, करुणैश्च=करुणाजनकैः उपसर्गैरनुकूलरूपैश्च यदा तं नो शक्नोति ‘चालित्वा वा’ चालयितुम्=अधीरतामृत्यादयितुम्, ‘खोमित्वा वा’ क्षोभयितुं=क्षुब्धं कर्तुम्, विपरिणामित्वां विपरिणामयितुम्=मनः परिणामं परावर्तयितुं न समर्थाऽभूत् तदा सा ‘संता’ शान्ता=शिथिला हतोत्साहा, श्रान्ता वा=परिश्रमिता तान्ता=खिन्ना, परितान्ता=सर्वथा खेदप्रापन्ना ‘निर्विण्णा’ निर्विण्णा=विमनस्का सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता=समागता तामेव दिशं प्रतिगता=प्रतिनिवृत्ता ।

तपणं सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवा वच्छइ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तपणं) इसके बाद (सारयणदीवदेवया) वह रयणा देवी (जेणेव जिणपालिए) जहां जिन पालित था (तेणेव उवागच्छइ) वहां आई (बहूहि अणुलोमेहिं पडिलोमेहिं खरमहुरसिंगारेहिं कलुणेहिं य उवसग्गेहिं य जाहेनो संचाएहिं चालित्वा वा खोमि ० विप्प ० ताहे संतातंत्ता परितंता निव्विणा समाणा जामेव दिसि पाउ ० तामेव दिसं पडिगया ) वहां आकर उन से अनेक अनुकूल प्रतिकूल, कर्कश, मधुर—कर्णसुखद—शृङ्गार रसोत्पादक, एवं करुणारस जनक उपसर्ग वचनों द्वारा उसे चलायमान करने का क्षुभित करने का और हमकी मोनवृत्ति को बदल देने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु जब वह उसे चलायमान करने के लिये, क्षुभित करने के लिये एवं उस की मनोवृत्ति बदलने के लिये समर्थ नहीं हो सकी तब हतोत्साह परिश्रमित

तपणं सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तपणं) त्पारपणी (सा रयणदीवदेवया) ते रयणा देवी (जेणेव जिणपालिए) जहां जिन पालित हुआ (तेणेव उवागच्छइ) यहां आयी.

(बहूहि अणुलोमेहिं कलुणेहिं य उवसग्गे हिं य जाहे नो संचाएहिं चालित्वा वा खोमि ० विप्प ताहे संतातंत्ता परितंता निव्विणा समाणा जामेव दिसि पाउ ० तामेव दिसं पडिगया )

यहां आयीने धृष्टा अनुकूल, प्रतिकूल, कर्कश, मधुर, कर्णसुखद शृङ्गार रसोत्पादक, अने कर्षणा रसजनक उपसर्ग वचनो वडे तेने चेताना निश्चयशी अधिक करवाना क्षुभित करवाना अने तेनी मनोवृत्तिने डेरवी नाथवाना प्रयत्न

ततः खलु स शैलको यज्ञो जिनपालितेन सार्द्धं लवणसमुद्रं मध्यमध्येन  
 'वीह्वयइ व्यतिव्रजति=गच्छति, व्यतिव्रज्य यत्रैव चम्पानगरी तत्रैवोपागच्छति,  
 उपागत्य चम्पाया नगर्या 'अग्गुज्जाणंसि' अग्रोद्याने=मुख्योद्याने जिनपालितं  
 पृष्ठात् अवतारयति, अवतार्य-एवमवदत्-एषा=पुरोवर्तिनी खलु हे देवानुप्रिय !  
 चम्पानगरी दृश्यते, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा जिनपालितम् 'आपुच्छइ' आपृच्छति=  
 तदनुज्ञां गृह्णाति, आपृच्छय यस्या एव दिशः मादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । सू० ९॥

खिन्न, परितान्त एवं विभनस्क होता हुई वह जिस दिशा से आई थी  
 उसी दिशा की तरफ चली गई । ( तएणं से सेलए जक्खे जिणपालिएण  
 सद्धिं लवणसमुद्धं मज्झं मज्झेणं वीह्वयइ २ जेणेव चंपा नयरी तेणेव  
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं  
 पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया । दीसइ  
 त्ति कइहु जिनपालियं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिंसि पाउब्भूए  
 तामेव दिंसि पडिगए ) इस के बाद वह शैलक यक्ष लवण समुद्र के  
 बीच में चलने लगा और चल कर जहां चंपा नगरी थी-वहां आ पहुँचा  
 आकर के उसने चंपा नगरी के प्रधान बगीचे में जिन पालित को अपनी  
 पीठ पर से उतार दिया । उतार करके फिर उसने उस से इस प्रकार  
 कहा-हे देवानुप्रिय ! यह चंपा नगरी दिखलाई देती है । ऐसा कह कर  
 फिर उसने जिनपालित से पूछा-और पूछ कर वह जिस दिशा से  
 प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वहां से चला गया । सूत्र ॥ ९ ॥

प्रयत्नो कथां पणु ते त्यां क्षवी नडि. छेवटे ते हताश, थाकेदी, भिन्न, परि-  
 तांत अने विभनस्क थधने ते ने दिशा तरक्षी आवी હતી તે જ દિશા તરફ  
 પાછી જતી રહી.

( તएણં સે સેલए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्धं मज्झं मज्जेणं वीह-  
 वयइ २ जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गु-  
 ज्जाणंसि जिणपालियं पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयरित्ता एवं वयासी एसणं देवाणु-  
 प्पिया ! चंपानयरी दीसइ त्ति कइहु जिनपालियं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जामेव दिंसि  
 पाउब्भूए तामेव दिंसि पडिगए )

ત્યાર બાદ તે શૈલક યક્ષ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઇને આગળ વધતો જ  
 રહ્યો. અને અ તે જ્યાં ચંપા નગરી હતી ત્યાં પહોંચ્યો. ત્યાં પહોંચીને ચંપા  
 નગરીના પ્રધાન ઉદ્યાનમાં જનપાલિતને પોતાની પીઠ ઉપરથી નીચે ઉતારી  
 દીધો, ઉતારીને તેણે જનપાલિતને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સામે  
 ચંપા નગરી દેખાય છે. ત્યારબાદ યક્ષ જનપાલિતને જવા માટે પૂછ્યું અને  
 પૂછીને તે ને દિશા તરક્ષી આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો. ॥સૂ. ૦૯॥

मूलम्—तएणं से जिणपालिए चंपं अणुपविसइ, अणुप-  
विसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा-  
गच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विल-  
वमाणे जिणरक्खियवावर्त्ति निवेदेइ, तएणं जिणपालिए  
अम्मापियरो मित्तणाइं जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणा  
बहुइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति करित्ता कालेणं विगय-  
सोया जाया, तएणं जिणपालियं अन्नया कयाइं सुहासण-  
वरगतं अम्मापियरो एवं वयासी—कहणं पुत्ता ! जिणर-  
क्खिए कालगए ?, तएणं से जिणपालिए अम्मापिऊणं  
लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमुत्थणं पोतवहणविवर्त्ति  
च फलहखंडआसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवया  
गिणहणं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवयाए आघायणं च  
सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहणं च रयणदी-  
वदेवया उवत्तगं च जिणरक्खियविवर्त्ति च लवणसमुद्द-  
त्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूय-  
मवित्तहमसंदिद्धं परिकहेइ, तएणं से जिणपालिए जाव  
अप्पसोगे जाव विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।  
तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे० समोसढे, धम्मं सोच्चा  
पव्वइंए एक्कारसंगवी मासिकयाएणं गोहम्मे कप्पे दो  
सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झिहिइ । एवामेव समणाउसो !  
जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरविआसायइ से णं जाव  
वीइवइस्सइ जहा दा से जिणपालिए । एवं खण्डु जंवू !



समणेणं भगवया सहावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अय-  
मट्ठे पणत्ते त्तिवेमि ॥ सू० ९ ॥

॥ नवमं अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—‘तएणं जिणपालिए’ इत्यादि । ततः खलु जिनपालितश्चम्पामनु-  
प्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव अन्वापितरौ तत्रैवोपागच्छति,  
उपागत्य अन्वापित्रोः समीपे रुदन् यावद् विन्यपन्=विलापं कुर्वन् जिणरक्षितव्या-  
पत्तिं=जिणरक्षितमरणं निवेदयति=कथयति, ततः खलु स जिनपालिताम्भा  
पितरौ च मित्रज्ञातियावत्परिजनेन सार्द्धं रुदन्तः सर्वे बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि

‘तएणं से जिन पल्लिए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से जिनपालिए चंपं अणुपविसइ) वह  
जिन पालित चंपा नगरी में अनुप्रविष्ट हुआ । (अणुपविसित्ता जेणेव  
सए गेहे जेणेव अम्मा पियरो तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट होकर वह जहाँ  
अपना घर और उस में भी जहाँ अपने माता पिता थे वहाँ गया ।  
(उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खिय  
बावत्ति निवेदेइ, तएणं जिणपालिए अम्मापिउरो मित्तणाइ जाव परि-  
यणेणं सद्धि रोयमाणा बहूहिं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति) वह जाकर  
उस ने रोते हुए यावत् विलाप करते हुए माता पिता से जिणरक्षित  
की मृत्यु हो जानेके समाचार कहे । इस के बाद रोते हुए उस जिनपा-

‘तएणं से जिनपालिए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थारभाइ (से जिनपालिए चंपं अणुपविसइ) अन-  
पालित चंपा नगरीमां गये।

(अणुपविसित्ता जेणेव सए गेहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ)

त्थां जधने ज्थां तेनुं धर अने तेमां पखु ज्थां तेना भातापिता डता  
त्थां पडेअये।

(उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियबावत्ति  
निवेदेइ, तएणं जिणपालिए अम्मापिउरो मित्तणाइ जाव परियणेणं सद्धि रोयमाणा  
बहूहिं लोइयाइं मम किच्चाइं करेति)

त्थां तेण्हे रडतां यावत् विलाप कतां पोताना भातापिताने अनरक्षितना  
मृत्युना समाचार कइया. त्थारपछी अनपालित अने भातापिताओओ रडतां  
मित्रज्ञाति यावत् परिजनेने बेगा करीने भरखु पछीनी पछी विधिओ पूरी

कुर्वन्ति, कृत्वा कालेन=कतिथय दिवसानन्तरेण विगतशोकाः=शोकरहिता जाताः । ततः खलु जिनपालितम् अन्यदा कदाचित् सुखासनवरगतं=मुखोपविष्टम् अम्बा-पितरौ एवमवादिष्टाम्-कथं=केन प्रकारेण खलु हे पुत्र ! जिनरक्षितः कालगतः=मृतः १, ततः खलु स जिनपालिताम्बापित्रोः-लवणसमुद्रोत्तारं च, कालिकवात-समुत्थानं, पोतवहनव्यापत्तिं=नौकामग्नं च, फलकखण्डासादनं=फलकखण्डावलम्बनं च, रत्नद्वीपोत्तारं च, रत्नद्वीपदेवताग्रहणं च, भोगविभूतिं=भोगसम्पत्तिं च, रत्न-द्वीपदेवतायाः 'आघायणं' आघातनं=वधस्थानं च, शूलाचित्पुरुषदर्शनं च, शैलकयसारोहणं च, रत्नद्वीपदेवतोपसर्गं च जिनरक्षितविपत्तिं=जिनरक्षितमरणं लित, और उनके माता पिता ने मित्र ज्ञाति याबन् परिजनों के साथ समस्त अनेक लौकिक मृतक कृत्य किये । ( करिस्ता कालेण विगय सोया जाया ) बाद में जैसे २ समय व्यतीत होता गया वैसे २ ये सब शोक रहित बन गये और फिर बिलकुल शोक शून्य भी हो गये । ( तएणं जिन पालियं अन्नया कयाहं सुहालणवरगयं अम्मा पियरो एवं वयासीं कहणं पुत्ता जिणरक्खिए कालगए ) एक दिन की बात है कि जब जिनपालित आनन्द से बैठा हुआ था तब माता पिता ने उस से पूछा पुत्र ! जिनरक्षित किस प्रकार से काल कवलित हुआ ? ( तएणं जिनपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्रोत्तारं च कालियवायसमु-त्थणं पोतवहणविवत्तिं च फलहखंडआसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवया गिणहणं च भोगविभूहं च रयण दीवदेवयाएआघा-यणं च शूलाइय पुरिसदरिसणं सेलगजक्ख आरुहणं च रयण-

धरी. ( करिस्ता कालेण विगय सोया-जाया ) त्यारणाह तेम तेम अमथ पसार थतो गथे तेम तेम तेज्जे पोतानुं दुःण पणु भुलता गथा अने छेवटे' एन-रक्षित विशेषं दुःण तेज्जेना हृदय पटल उपरथी साव बुसाधं गथुं.

( तएणं जिनपालियं अन्नया कयाहं सुहासणवरगयं अम्मापियरो एवं वयासीं कहणं पुत्ता जिणरक्खिए कालगए )

अन्यारे अेक दिवसे एनपाजित आनंदपूर्वकं बैठे हुते त्यारे माता-पिताअेअे तेने पूछथुं' के डे पुत्र ! एनरक्षित कथं रीते मरखु पाभ्ये छे ?

( तएणं से जिनपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्रोत्तारं च कालियवायसमु-त्थणं पोतवहणविवत्तिं च फलहखंडं आसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीव देवयागिणहणं च भोगविभूहं च रयणदीवदेवयाए आघायणं च शूलाइय पुरिसदरिसणं सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवया उवसर्गं च जिणरक्खिय-

ચ, સ્વસ્ય લવણસમુદોત્તરણં ચ, ચંપાગમનં પરાવૃત્તચમ્પાનગરી સમાગમનં ચ, શૈલ-  
કચક્ષાપૃચ્છનં=શૈલકચક્ષસ્ય જિનપાલિતં પ્રતિ સ્વસ્થાનગમનનિવેદનં ચ, एतत्सर्वं  
वृत्तान्तं 'जहाभूयं' यथाभूतं=यथाजातम्, 'अवितहं' अवितथं=सत्यम्, 'असं-  
दिद्धं' असंदिग्धं=संदेहरहितं परिकथयति । ततः खलु स जिनपालितो यावद्  
'अप्पसोए' अल्पशोकः=विगतशोकः यावद् विपुलान् भोगभोगान्=शब्दादि  
विषयान् भुञ्जानो विहरति० ।

दीवદેવયાવસગ્ગં ચ જિણરક્ષિયવિવર્તિ ચ લવણસમુદ ઉત્તરણં  
ચ ચંપાગમણં ચ સેલગજક્ષઆપુચ્છગં ચ જહામૂયમવિતહમસંદિદ્ધં  
પરિકહેહ ) તથ જિનપાલિત ને માતા પિતા સે લવણસમુદ મેં ઉતરને  
સે લેકર અચાનક કાલિક વાયુકા ઉઠના નૌકા કા નષ્ટ હોના કાષ્ટ  
ફલક કા મિલના ઉસકી સહાયતા સે રત્ન દ્વીપ મેં ઉતરના વહાં રયણા  
દેવી કે દ્વારા અપના ગ્રહણ હોના ઉસ કે સાથ ભોગ રૂપ વિમૂત્તિ કા  
ભોગના, ચાદ મેં રયણા દેવી કે વધસ્થાન કા દેખના વહાં શૂલારોપિત  
પુરુષ કો દેખના, શૈલક ચક્ષ કી પીઠ પર ચઢના રયણા દેવી કા ઉપસર્ગ  
કરના, જિન રક્ષિત કા મરણ હોના અપના લવણસમુદ કા પાર કરના  
ચંપા નગરી મેં પીછે આના ઔર શૈલકચક્ષ કા પુછ કર અપને સ્થાન  
વાપિસ ચલે જાના યહાં તક કા સબ વૃત્તાન્ત જૈસા હુઆ થા ઠીક ૨  
વિના કિસી સંદેહ કે ઉસ ને સુના દિયા । (તણે સે જિણપાલિય  
જાવ અપ્પસોગે જાવ વિહાઈ ભોગભોગાઈં ઝુંજમાણે વિહરહ ) હસ કે  
બાદ શોક રહિત બના હુઆ વહ જિનપાલિત વિપુલ શબ્દાદિ વિષયોં  
વિવર્તિ ચ લવણસમુદં ઉત્તરણં ચ ચંપાગમણં ચ - સેલગજક્ષઆપુચ્છગં ચ જહા  
મૂયમવિતહમસંદિદ્ધં પરિકહેહ )

ત્યારે જીનપાલિતે માતાપિતાને લવણ સમુદ્રમાં યાત્રા કરતી વખતે  
ઓર્થિતા પવનની અથડામણથી નાન દૂબી બવાના અકસ્માતથી માડીને લાક-  
ડાની સહાયતાથી રત્નદ્વીપના કિનારા સુધી પહોંચવું, રથણા દેવીની લપેટમાં  
ફસાવવું, તેની સાથે કામ ભોગો ભોગવવા, રથણા દેવીના વધસ્થાનને જોવું,  
શૂળી ઉપર લટકતા માણસને જોવું, શૈલક ચક્ષની પીઠ ઉપર બેસવું, રથણા  
દેવીને ઉત્પાત કરવો, જીનરક્ષિતનું મરણ થવું, સકુશળ પોતાની લવણ સમુદ્ર  
યાત્રા પૂરી કરવી, ચંપા નગરીમાં આવવું અને શૈલક ચક્ષનું તેને પૂછીને ફરી  
રત્નદ્વીપ તરફ રવાના થવું અહીં સુધીની એકે એક વાત તેણે કહી સંભળાવી.  
(તણે સે જિણપાલિય જાવ અપ્પસોગે જાવ વિહાઈ ભોગભોગાઈં ઝુંજમાણે વિહરહ)  
ત્યારબાદ નિશ્ચિંત થયેલો જીનપાલિત શબ્દ વગેરે વિષયોને પુષ્કળ પ્રમા-

तस्मिन् काले तस्मिन् समये भ्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतः=चम्पायां समागतः । जिनपालितो धर्मं श्रुत्वा भव्रजितः एकादशाङ्गवित्=आचाराङ्गादि शस्त्रा ज्ञाननिपुणो जातः । मासिक्या संलेखनया कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे=प्रथमदेवलोके 'दो सागरोवमे' द्विसागरोपमकः=द्विसागरोपमस्थितिकः देवो जातः । महाविदेहे सेत्स्यति=सिद्धो भविष्यति । एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे भ्रमणा आशु-भन्तः ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा यावत् भव्रजितः सन् मानुष्यकान् कामभोगान् परित्यक्तान् नो पुनरपि 'आसायइ' आसादयति=प्राप्नोति नो सेवत इत्यर्थः, स खलु यावद् 'वीइवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=व्यतिक्रमिष्यति संसारस्य पारं गमिष्यतीत्यर्थः यथा वा स जिनपालितः । इत्थमत्र दृष्टान्तयोजना —

को-काम सुखों को भोगता हुआ अपने समय को व्यतीत करने लगा । (तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे० समोसदे, धम्मं सोच्चा पच्चाइए, एक्कारसंगवी मासिकयाएणं सोहम्मं कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झिहिइ-एवामेव समणाउसो । जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायइ, सेणं जाव वीइवइस्सइ, जहा वा से जिणपालिए । एवं खलु जंबू ! समणे णं भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सिबेमि ) उसी काल और उसी समय में भ्रमण भगवान् महावीर चम्पा नगरी में आये । जिन पालित धर्म का उपदेश सुन कर दीक्षित हो गया । ग्यारह अंग का धीरे २ वह ज्ञाता भी बन गया । अन्त में एक मास की संलेखना की संलेखना से ६० साठ भक्तों का छेदन कर जब काल किया-ता प्रथम देवलोक में दो सागरोपम की स्थिति वाली देव में उत्पन्न हुआ । यह महा विदेह में सिद्धी गति को

जुभां बोधवतो सुजेथी पोतानो वणत पत्रार करवा लाव्यो.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे० समोसदे, धम्मं सोच्चा पच्चाइए एक्कारसंगवी मासिकयाएणं सोहम्मं कप्पे दो सागरोवमे महाविदेहे सिज्झिहिइ-एवामेव समणाउसो । जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसायइ, से णं जाव वीइवइस्सइ, जहावा से जिणपालिए ! एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सिबेमि )

ते क्षणे अने ते समये श्रमजु भगवान् महावीर अ'पानगरीभां आव्या. अनपालित तेभने। उपदेश सांख्यीने दीक्षित थछ गथे। धीमे धीमे तेखे अगिथादे अ'गोतुं ज्ञान भेजवी दीधु. छेवटे अेक मासनी तेखे स'देभना करी. स'देभनाथी ६० साठ लक्षोतुं छेदन करीने क्षण कर्यो त्यादे अथम देवलोकभां जे आगशेषभनी स्थितिवाणा देव तरीके ते उत्पन्न थयो. लविज्जभां ते भक्ता.

... યથા લાભાર્થિનો વળિજો તથા શિવસુખાર્થિનો જીવો । યથા સમુદ્રયાત્રા તથા સંસારયાત્રા યથા રત્નદ્વીપદેવતા મહાપાપા તથા અવિરતિ રાપાતસુખા પરિણામદુઃખા ॥ યથા - આઘાતસ્થાનમયં તથા જન્મમરણમયમ્ । યથા રત્નાદેવી ચરિતાનુભવી શૂલારોપિતપુરુષસ્તથા અવિરતિ પરિણામવોધકં મયમ્ । યથા દેવીહસ્તાભિસ્તારકઃ શૈલક્રયક્ષસ્તથા ધર્મોપદેશકોઽશ્રાવિતિપરિણામજનિત

કો પ્રાપ્ત કરેગા । હસ તંહર હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! જો હમોરા નિગ્રંથ શ્રમણ અથવા નિગ્રંથ શ્રમણો જનં યાવત્ પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ પરિત્યક્ત મનુષ્ય ભવ સંવન્ધી કામભોગોં કા પુનઃ સેવન નહીં કરતા હૈ વહ જિનં પાલિત કી તરહ્ હસ સંસાર કે પાર પહુંચેગા । દૃષ્ટાન્ત-કી યોજના યહાં હસ પ્રકાર સે કર લેનીં ચાહિયે જિસ પ્રકાર લાભ કે અર્થો અણિક્ જન હોતે હૈં વસી પ્રકાર શિવ સુખ કે અર્થો જીવ હોતે હૈં । જિસ પ્રકાર સમુદ્ર યાત્રા હૈં ઉસી પ્રકાર સંસાર યાત્રા હૈં । સમુદ્ર યાત્રા મૈં જૈસે પાપિની રચના દેવી કા મિલાપ હુઆ-ઉસી પ્રકાર હસ સંસાર યાત્રા મૈં આપાત સુખ દાયકાં બૈર પરિણામ મૈં દુઃખદાયક અવિરતિ કા જીવોં કો સમાગમ હો રહા હૈં । વહાં જૈસે વધ્યસ્થાન કા મય જિન પાલિત એવં જિન રક્ષિત કો હુઆ, ઉસી તરહ્ હસ સંસાર યાત્રા મૈં બી પ્રત્યેક જીવ કો જન્મ મરણ કા મય લગા હુઆ હૈં । જિસ પ્રકાર રચના દેવી કે ચરિત કાં અનુભવી વહ શૂલારોપિત પુરુષ હમૈં વહાં દિલ્હાઈ દેના હૈં હસી પ્રકાર યહાં બી અવિરતિ કે પરિણામ કા વોધક મય હમૈં સતત સચેત કરતા

વિદેહમાં સિદ્ધિ ગતિ મેળવશે. આ રીતે હે આયુષ્મંત શ્રમણ ! જે અમારા નિગ્રંથ શ્રમણ અથવા નિગ્રંથ શ્રમણીજનો પ્રમશુત થઇને દીક્ષા વખતે ત્યજેલા મનુષ્ય ભવ સંબંધી કામભોગોનું ફરી સેવન કરવો નથી તે અનપાલિતની જેમ આ સંસારને પાર થશે. આ દૃષ્ટાંતને અહીં આ રીતે બેસાડવું બૈદ્યએ હે જેમ વણિકજનો ( વેપારીઓ ) લાભને ઈચ્છનારા હોય છે તેમ શિવસુખને ઈચ્છનારા હોય છે. સમુદ્ર યાત્રાની જેમ જ આ સંસાર યાત્રા પણ છે. સમુદ્ર યાત્રામાં જેમ પાપણી રચણા દેવી મળી તેમ આ સંસાર યાત્રામાં ધર્મ આત્મમાં સુખદાયક અને પરિણામમાં દુઃખદાયક અવિરતિનો સમાગમ આવે થતો રહે છે. વધસ્થાનમાં જેમ અનપાલિત અને અનરક્ષિત ભયતરસ્ત થયા તેમ આ સંસાર યાત્રામાં પણ દરેકે દરેક આવે જન્મ-મરણની બીક રહે છે. જેમ રચણા દેવીના ફૂર વ્યવહારને અનુભવનારો શૂળી ઉપર લટકતો માથુસ તેમજ બેથો તેમ આ સંસારમાં પણ અવિરતિના પરિણામનો બોધક ભય આપણને સતત સાવધ કરતો રહે છે. જેમ દેવીની લપેટમાંથી મુક્ત કરનાર શૈલક્રયક્ષને

દુઃખ નિસ્તારકો ગુરુઃ । યથા દેવીમોહિતજિનરક્ષિતસ્તથા-અવિરતિમોહિતમતિ-  
મુનિઃ । યથા શૈલકરૂપાશ્વદૃષ્ટ્યુતો જિનરક્ષિતસ્તથા ગુરુપદિપ્તજ્ઞાનાદિપશ્ચાંચાર  
બ્રહ્મો મુનિઃ । યથા રત્નાદેવ્યા તીક્ષ્ણકરવાલેન ગગને સ્ખન્દશઃ કૃતં તદ્વજ્રં પરિતઃ  
પ્રક્ષિપ્તં નાનાવિધમકરાદિ શ્વાપદસંકુલે સમુદ્રે પતતિ તથા-અવિરત્યા વિષમપરિણા-  
મેન નરકાવાસે સ્ખન્દશઃ કૃતં શરીરમનુભવન્નસૌ જન્મજરામરણાધનન્તદુઃખસમાકુલે  
સંસારે નિપતતિ । યથા દેવી કૃતોપસર્ગૈરશ્લુઘ્નો જિનપાત્તિઃ સ્વસ્થાનં જીવિત-

રહતા હૈ । जिस प्रकार देवी के हाथ से छुड़ाने वाला वहाँ शैलक यक्ष  
कहा गया है इसी प्रकार यहाँ भी धर्म के उपदेशक एवं अविरति  
परिणाम जनित दुःखसे निस्नारक ये गुरुजन प्रकट किये गये हैं । जिस  
प्रकार जिन रक्षित देवी के द्वारा मोहित किया गया हमें कहा गया है  
वसी प्रकार यहाँ भी अविरति के द्वारा मोहित मुनिजन समझाये  
गये हैं । जिस प्रकार शैलकरूप अश्व की पीठ पर से जिन रक्षित  
च्युत हुआ प्रकट किया गया है उसी प्रकार गुरुपदिष्ट ज्ञानादिक पांच  
आचार से ब्रह्म बना हुआ मुनि यहाँ हमें समझाया गया है । जिस  
प्रकार रत्ना देवी की तलवार से खंड २ किये गये जिन रक्षित के अंग  
उपांग इधर उधर प्रक्षिप्त होकर नाना विषमकरादिश्वापद से संकुल  
हुए समुद्र में गिरे हैं वसी प्रकार अविरति के विषम परिणाम से  
नरकावास में खंड २ किये गये शरीरका अनुभव करता हुआ भी यह  
जीव जन्म, जरा, और मरण, आदि अनन्त दुःखों से व्याप्त हुए संसार  
में प्रतित होता है । जिस प्रकार रयणा देवी कृत उपसर्गों से अश्लुघ्न

આપણે જોયો તેમ અહીં પણ ધર્મના ઉપદેશક અને અવિરતિ પરિણામ જનિત  
દુઃખમાંથી મુક્ત કરનારા ગુરુજનો પ્રગટ કરવામાં આવ્યા છે. જેમ દેવીના  
શોભવાશની લપેટમાં પડેલા અનરક્ષિત છે તેમજ અહીં પણ અવિરતિ વડે  
શોહિત થયેલા મુનિઓ જોવામાં આવે છે જેમ શૈલક યક્ષ રૂપી થોડાની પીઠ  
ઉપરથી ખસી પડેલા અતરક્ષિતનું વલુન ઉપર પ્રગટ કરવામાં આવ્યું છે તેમજ  
આ સંસારમાં પણ ગુરુપદિષ્ટ જ્ઞાન વગેરે પાંચ આચારોથી બ્રહ્મ થયેલા મુનિ  
સમજવો જોઈએ જેમ રત્નાદેવીની તલવારથી કંકડા થયેલા અનરક્ષિતનાં અંગો  
ઉપાંગો ઘણી જાતના મગર વગેરે જીવોથી વ્યાપ્ત સમુદ્રમાં આમતેમ ફેંકવામાં  
આવ્યા છે તેમ જ અવિરતિના વિષમ પરિણામથી નરકનાસમાં શરીરના કંકડાઓ  
કરવામાં આવે છે છતાંએ તે દુઃખને અનુભવતો આ જીવ જન્મ, જરા (ઘડપણ)  
મરણ વગેરે અનન્ત દુઃખોથી વ્યાપ્ત થયેલા આ સંસારમાં ફરી આવી પડે છે.  
જેમ રયણા દેવીના ઉપસર્ગોથી અશ્લુઘ્ન થઈને અનપાલિત પોતાને ઘેર સકુશળ

સુલ્લં ચ પ્રાપ્તઃ સન્ પશ્ચાન્મોક્ષપદગામ્યમત્ , તથા-અવિરતિ કૃતોપસર્ગૌરક્ષુલ્લઃ  
સુસંયમી મુનિર્મોક્ષસ્થાનં શિવસુલ્લં ચ પ્રાપ્સ્યતીતિ ।

एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाताध्ययनस्य  
अयं=पूर्वोक्तः अर्थः=भावः प्रकृतः=रूपितः । 'चित्तेमि' इतिब्रवीमि पूर्ववत् । सू० १९॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-  
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ  
प्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-  
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाङ्ग-  
प्रतिविरचितायां ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्माभूतव-

ર્ષિણ્યાख्याયાં વ્યાખ્યાયાં નવમમધ્યયનં સંપૂર્ણમ્ ॥ ૧ ॥

બના જિન પાલિત અપને સ્થાન પર સકુશલ લૌટ આપા ઔર વહાં ઉસ  
ને અપને જીવન કા સુલ્લ ભોગા-પશ્ચાત્ વહી મોક્ષપદ ગામી મી હુઆ  
उसी तरह अविरति कृत उपसर्गों से अक्षुब्ध बना हुआ सुसंयमी मुनि  
મોક્ષસ્થાન કો પ્રાપ્ત કર શિવ સુલ્લ કો ભોક્તા બનેગા । હસ પ્રકાર હે  
जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने इस नवम ज्ञाताध्ययन का यह-  
पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है । उसी के अनुसार यह मैंने  
तुम्हें समझाया है । सूत्र ॥ १० ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાંસીલાલજી મહારાજ કૃત “ જ્ઞાતા-  
ધર્મકથાસૂત્ર ” કી અનગારધર્માભૂતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા નવર્થા  
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧ ॥

પાછો આગ્યો, ત્યાં તેણે મુખેથી પોતાના દિવસો પસાર કર્યો અને છેવટે મોક્ષ  
મેળવ્યો તેમજ અવિરતિકૃત ઉપસર્ગોથી નિર્ભીક થયેલો સુસંયમી મુનિ મોક્ષ-  
સ્થાનને મેળવીને શિવમુખને ઉપલોગ કર્યો. આ રીતે હે જંબૂ ! શ્રમણ-  
ભગવાન મહાવીરે નવમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે.  
તે મુજબ જ એ તને બધી વિગત સમજાવી છે. ॥ સૂ.૧૦ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાંસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્માભૂતવર્ષિણી  
વ્યાખ્યાનું નવમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૬ ॥

## अथ दशममध्ययनम् प्रारम्भ्यते ।

गतं नवममध्ययनम्, साम्प्रतं दशमप्रारम्भ्यते, तस्य पूर्वैण सहायं सम्बन्धः—  
पूर्वमविरति-विरतिमतोर्हानिलाभौ प्रोक्तौ, अत्रतु प्रमादाप्रमादवतोर्युगहानि-तद्  
वृद्धिरूपावनर्थाथौ वर्णयति, तत्र जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिनं पृच्छति—‘जङ्गं भन्ते’  
इत्यादि ।

मूलम्—जङ्गं भन्ते ! समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स  
अयमट्ठे पण्णत्ते दसमस्स के अट्ठे० ?, एवं खलु जम्बू ! तेणं  
कालेणं तेणं समणं रायगिहे नगरे सामी समोसठे गोयमसामी  
एवं वयासी—कहणं भन्ते ! जीवा वड्ढंति वा हायांति वा ?,  
गो० ! से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिवयाचंदे पुण्णिमा-  
चंदं पणिहाय हीणो वण्णेणं हीणे सोम्मयए हीणे निद्धयाए

### दशम अध्ययनं प्रारंभ ।

नौवां अध्ययन समाप्त हो चुका—अब दशमां अध्ययन प्रारंभ होता है । इस का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार संबंध है—पहिले अविरति वाले को हानि एवं विरति वाले को लाभ की प्राप्ति होना कहा गया है अब इस अध्ययन में यह कहते हैं कि जो प्रमादि होता है उसके गुणों के हानि होती है, और जो अप्रमादी होता है उसके गुणों की वृद्धि होती है । इस तरह गुण हानि और तद् वृद्धि रूप अर्थ अनर्थ का वर्णन सूत्रकार इस अध्ययन में कर रहे हैं । जंबू स्वामी इसी बात को श्री सुधर्मा स्वामी से पूछ रहे हैं ।

### दशमं अध्ययनं प्रारंभ

नवमुं अध्ययनं पुइं थयुं छे अने हवे दशमुं अध्ययनं प्रारंभ करीछे  
छीछे. दशमा अध्ययनने. जेना पड़ेलांना अध्ययन साथे आ प्रमाद्येना  
संबंध छे—पड़ेलांना अध्ययनमा अविरतिवाणाने हानि (नुकसान) अने  
विरतिवाणाने लाभनी प्राप्ति थाय छे तेम दशोपवाभां आबुं छे. हवे आ  
अध्ययनमां जे वात स्पष्ट करवाभां आवशे के जे प्रमादी होय छे तेना शुष्णोने  
हानि पड़ेछि छे अने जे अप्रमादि होय छे तेना शुष्णो वृद्धि पाये छे आ  
रीने सूत्रकार आ अध्ययनमां शुष्णोनी हानि अने शुष्णोनी वृद्धिइप अर्थ अनर्थनुं  
वर्णन करी रह्या छे. जंबू स्वामी सुधर्मास्वामीने जे वात पूछी रह्या छे—



हीणे कंतीए एवं दिक्तीए जुईए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए  
मंडलेणं तयाणंतरं च णं वीयाचंदे पाडिवयं चंदं पणिहाय  
हीणतराय वण्णेणं जाव मंडलेणं तयाणंतरं च णं तइआचंदे  
विइयाचंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, एवं  
खल्ल एएणं कमेणं परिहायमाणे २ जाव अमावस्ताचंदे चाउहंस-  
चंदं पणिहाय नट्टे वण्णेणं जाव नट्टे मंडलेणं, एवामेव सम-  
णाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए  
समाणे हीणे खंतीए एवं मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं  
लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचयणयाए वंभचेरवासेणं  
तयाणंतरं च णं हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए वंभचेर  
वासेणं, एवं खल्ल एएणं कमेणं परिहायमाणे २ णट्टे खंतीए  
जाव णट्टे वंभचेरवासेणं, जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचंदे  
अमावासाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं जाव अहिए मंड-  
लेणं तयाणंतरं च णं विइयाचंदे पडिवयाचंदं पणिहाय अहि-  
ययराए वण्णेणं जाव अहियतराए मंडलेणं एवं खल्ल एएणं  
कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पुण्णिमाचंदे चाउहंसि चंदं पणि-  
हाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं एवामेव सम-  
णाउसो ! जाव पव्वइए समाणे अहिए खंतिए जाव वंभ-  
चेर वासेणं, तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव वंभ-  
चेरवासेणं, एवं खल्ल एएणं कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पडिपुत्ते  
वंभचेरवासेणं, एवं खल्ल जीवा वड्ढंति वा हायंति वा, एवं खल्ल  
जंबू ! समणेणं भगवया नहावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स  
अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि ॥ सू० १ ॥

॥ दसमं णायज्झयणं समत्तं ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायम्=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथितः, स मया श्रुतः, किन्तु दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य कोऽर्थः=को भावः ? प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी प्राह—एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजशृहे नगरे 'सामी' स्वामी=श्रीमहावीरस्वामी 'समोसदे' समवसृतः=समागतः, तदा गौतमस्वामी एवमवादीत—कथं खलु=केन प्रकारेण हे भदन्त ! जीवाः 'वडुंति वा' वर्द्धन्ते=वृद्धिमाप्नुवन्ति वा, 'हायंति वा' हीयन्ते=हानिं प्राप्नुवन्ति वा ? जीवा द्रव्यतोऽनन्तत्वेन, प्रदेशतश्चापि प्रत्येकमसङ्ख्यात प्रदेशत्वेनावस्थितपरिमाणत्वाद् वृद्धिहानीं प्राप्तुं नार्हन्ति, किन्तु सान्त्यादिगुणानां वृद्ध्या वर्द्धन्ते, हान्या तु हीयन्त इति० ।

‘जहणं भंते ! समणेणं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जहणं भंते) यदि हे भदन्त ! (समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त रूप से यह अर्थ प्ररूपित किया है तो (दसमस्स के अट्ठे)० ? दशवें ज्ञाताध्ययन का उन्होंने ने क्या भाव अर्थ कहा है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मास्वामी उन्हें समझाने के अभिप्राय से कहते हैं कि (एवं खलु जंबू ! ) हे जंबू सुनों तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—(तेणं कालेणं तेणं समणं रायगिहे नयरे सामी समोसदे—गोयमसामी एवं वयासी) उस काल में और उस समय में राजशृह नाम के नगर में श्री भगवान् महावीर स्वामी पधारे उस समय गौतम स्वामी ने उन से ऐसा पूछा (कहणं भंते ! जीवा वडुंति, वा हायंति वा ? गो० से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिबया

“जहणं भंते ! समणेणं” इत्यादि ।

टीकार्थ—(जहणं भंते ! ) जे डे भदन्त ! (समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे) श्रमण भगवान् महावीर ने नवम ज्ञाताध्ययनने पूर्वोक्त रूप से अर्थ निरूपित कथो छे तो (दसमस्स के अट्ठे ?) दशम ज्ञाताध्ययनने तेओओ शे। भाव अर्थ निरूपित कथो छे. आ प्रभाओ जंणू स्वामीना प्रश्नने सांखणीने श्री सुधर्मास्वामी तेमने जधी बातनी स्पष्टता करवाना डेतुथो कडे छे डे (एवं खलु जंबू ! ) डे जंणू सांखणो तभारा प्रश्नने जवाब आ प्रभाओ छे डे (तेणं कालेणं तेणं समणं रायगिहे नयरे सामी समोसदे गोयमसामी एवं वयासी) ते काले आने ते समये राजशृह नामे नगरमां श्री भगवान् महावीर स्वामीनी पधरामणी थं. ते समये गौतम स्वामीओ तेमने प्रश्न कथो डे—

(कहणं भंते ! जीवा वडुंति, वा हायंति वा ? गो० से जहानामए बहुल-

અત્રાર્થે ભગવાન પૂર્વહાનિદૃષ્ટાન્તમાહ - હે ગૌતમ ! ' તે જહાનામય' તથથા-નાંમેકમ્-યથા ચ બહુલપક્ષસ્ય = કુષ્ણપક્ષસ્ય ' પાઙ્કિવ્યાચંદે ' પ્રતિપ-પર્વન્દ્રઃ પૂર્ણિમાચન્દ્રઃ પ્રણિધાય-અપેક્ષ્ય, ' પ્રણિધાયે ' તિ ' અપેક્ષ્યે ' ત્યર્થક-મંવ્યયમ્ ' પૂર્ણિમાચન્દ્રાપેક્ષ્યેત્યર્થઃ હીનઃ = ન્યૂનઃ, વર્ણન=શુદ્ધતારૂપેણ, હીનઃ

ચંદે પુણિમા ચંદં પણિહાય હીણો વણ્ણેણ' હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્ધ-યાણ હીણે કંતીણ एवं દિત્તીણ જુઈણ છાયાણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ મંઢલેણ ) હે ભદંત ! જીવ કિસ પ્રકાર સે વદતે હૈં ઓર કિસ પ્રકાર સે ઘટતે હૈં ? જીવ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા અનંત રોને સે ઓર પ્રદેશ કી અપેક્ષા પ્રત્યેક જીવે દ્રવ્ય અસંખ્યાત પ્રદેશ વાલા હોને સે સદા અવસ્થિત પુરિણામ વાલા કહા ગયા હૈ-અતઃ હસ સ્થિતિ મૈં ન તો ડસ કી વૃદ્ધિ હો સકતી હૈ ઓર ન ડસ કી હાની હી । કિન્તુ યહાં જો હસ પ્રકાર કા પ્રદન કિયા ગયા હૈ ડસ કા મંત હસ પ્રકાર હૈ, કિ જબ આત્મા મૈં ક્ષાંત્યાદિ ગુણો કી વૃદ્ધિ હો જાતી હૈ તો ડન કી વૃદ્ધિ સે " જીવ વદતા હૈ " યેસા માન લિયા જાતા હૈ ઓર જબ હનહીં આત્મિક ગુણો કી વૃદ્ધિ આત્મા મૈં નહીં હોતી હૈ-કિન્તુ હાનિ રહતી હૈ તો હસ સે જીવ મૈં હાનિ હો રહી હૈ યેસાં માન લિયા જાતા હૈ । હસી અપેક્ષા કો છેકર યહ પ્રદન કિયા ગયો હૈ । અબ ભગવાન હાનિ કો સ્પષ્ટ કરને કે લિયે પહિલે ડસે હી દૃષ્ટાન્ત દ્વારો સમજાતે હૈં-વે કહતે હૈં-હે ગૌતમ ! જૈસે

પક્વસ્સ પાઙ્કિવ્યા ચંદે પુણિમાચંદં પાણિહાય હીણો વણ્ણેણ' હીણે સોમ્મયાણ હીણે નિદ્ધયાણ હીણે કંતીણ एवं દિત્તીણ જુઈણ છાયાણ પમાણ ઓયાણ લેસ્સાણ મંઢલેણ)

હે ભદંત ! હવે કેવી રીતે વૃદ્ધિ પામે છે અને કેવી રીતે ઓછા થાય છે ? હવે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ અનંત હોવાથી અને પ્રદેશની અપેક્ષાએ દરેક હવે દ્રવ્ય પ્રમદાવાળો હોવાથી હ મેશા અવસ્થિત પરિણામવાળો કહેવામાં આવ્યો છે, ઓછી આવી સ્થિતિમાં તેની વૃદ્ધિ થઈ શકે નહિ અને હાનિ પણ થઈ શકે નહિ. પણ અહીં જે પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે તેનો મતલબ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે આત્મામાં ક્ષાંતિ વગેરે શુદ્ધ વૃદ્ધિ પામે છે ત્યારે તેમની વૃદ્ધિથી " હવે વૃદ્ધિ પામે છે " આમ માનવામાં આવે છે અને જ્યારે ઓજ આત્મિક શુદ્ધીની વૃદ્ધિ આત્મામાં થતી નથી પણ વૃદ્ધિના સ્થાને હાનિ થવા માંડે છે ત્યારે " હવેમાં હાનિ થઈ રહી છે " એવું માનવામાં આવે છે. આ અપેક્ષાથી આ પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે. ભગવાન હવે હાનિને સ્પષ્ટ કરવા માટે સૌ પહેલાં ક્ષાંત વેડે સમજાવતાં કહે છે કે હે ગૌતમ ! જેમ કુષ્ણપક્ષની એકમનો ચંદ્ર

‘સૌમ્યયા’ સૌમ્યતયા=નેત્રાહ્વાદ ક્તયા, હીનઃ ‘નિદ્રયા’ સ્તિંગ્ધતયા=સ્નેહો-  
ત્પોદ્ધકતયા, હીનઃ=ન્યૂનઃ ‘કંતી’ કાન્ત્યા=કમનીયતયા । એવમ્=અનેન પ્રકા-  
રેણ હીનશબ્દઃ સર્વત્ર बोध्यः, यथा-હીનો દીપ્ત્યા=પ્રકાશેન, હીનઃ ‘જુર્ણ’  
ચુત્યા=ચાકચિક્ષેન, હીનઃ છાયયા=શોમયા, હીનઃ પ્રમયા=જ્યોતિષા, હીનઃ  
‘ઓયા’ ઓજસા=દાહશમનરૂપેણ, હીનઃ લેશ્યા=કિરણરૂપયા, હીનો=ન્યૂનો  
મળ્હેન=વૃત્તાડકાતયા, પૂર્ણિમાચન્દ્રાડપેક્ષયા, પ્રતિપત્ત્વન્દ્રઃ સર્વથા ન્યૂનો  
મવતીત્યર્થઃ । તદનન્તરં ચ સ્વલ્પ દ્વિતીયાચન્દ્રઃ પ્રતિપદ્=પ્રતિપત્ત્સ્મ્બન્ધિનં ચન્દ્રં  
‘પણિહાય’ પ્રણિધાય=અપેક્ષ્ય હીનતરો=ન્યૂનતરો વર્ણેન યાવદ્ મળ્હેન મવતિ ० ।  
તદનન્તરં ચ સ્વલ્પ તૃતીયાચન્દ્રો દ્વિતીયાચન્દ્રં પણિધાય હીનતરો વર્ણેન યાવદ્

કૃષ્ણપક્ષ કી પ્રતિપદા કા ચંદ્રમા પૂર્ણિમા કે ચન્દ્રમાકી અપેક્ષા શુક્લતા  
રૂપ વર્ણ સે હીન હોતા હૈ, સૌમ્યતા-નેત્રાહ્વાદકતા-સે હીન હોતા હૈ,  
સ્તિંગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-સે હીન-ન્યૂન-હોતા હૈ, કાન્તિકમનીયતા સે  
હીન હોતા હૈ, હસી તરહ દીપ્તિ સે, -ચુતિ સે-(ચમક સે)-છાયા-શોભા  
સે ) પ્રમા સે-(જ્યોતિ સે) દાહશમન રૂપ ઓજસ સે, કિરણ રૂપ લેશ્યા  
સે, એવં વૃત્તાકારરૂપ અપને પરિમંડલસે હીન રહતા હૈ-(તયાળંતરં ચ ણં  
વીયાચંદે પાઙ્કિચયં ચંદં પણિહાય હીનતરાય વર્ણેણં જાવ મંડલેણં-તયા-  
ળંતરં ચળં તદ્આચંદે વિહયા ચંદં પણિહાય હીનતરાય વર્ણેણં જાવ  
મંડલે ણં એવં સ્વલ્પ ઇર્ણ કમેણં પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્સા ચંદે  
ચાહસં પણિહાય નટ્ટે વર્ણેણં જાવ નટ્ટે મંડલેણં ) હસકે બાદ કૃષ્ણ  
પક્ષ કે પ્રતિપદા કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા દ્વિતીયા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર  
યાવત્ પરિમંડલ તક ઓર અધિક ન્યૂન બન જાતા હૈ-હસકે બાદ  
દ્વિતીયા કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા તૃતીયા કા ચન્દ્રમા વર્ણ સે લેકર પરિ-

પૂનમના ચંદ્રની અપેક્ષા શુક્લતા ૩૫ વર્ણથી હીન હોય છે. સૌમ્યતા-એટલે  
કે નેત્રાહ્વાદકતાના શુભથી હીન હોય છે, સ્તિંગ્ધતા-સ્નેહોત્પાદકતા-થી હીન-  
ન્યૂન-હોય છે, કાન્તિકમનીયતા-થી હીન હોય છે, આ રીતે દીપ્તિથી-ચુતિથી-  
(પ્રકાશથી), છાયા ( શોભા ) પ્રમાથી (જ્યોતિથી) દાહશમન૩૫ ઓજાથી, કિરણ  
૩૫ લેશ્યાથી અને વૃત્તાકાર ( ગોળાકાર ) ૩૫ પોતાના પરિમંડળથી હીન રહે છે.

( તયાળંતરં ચ ણં વીયાચંદે પાઙ્કિચયં ચંદં પણિહાય હીનતરાય વર્ણે ણં  
જાવ મંડલે ણં તયાળંતરં ચ ણં તદ્આચંદે વિહયાચંદં પણિહાય હીનતરાય વર્ણેણં  
જાવ મંડલેણં એવં સ્વલ્પ ઇર્ણ કમેણં પરિહાયમાણે ૨ જાવ અમાવસ્સા ચંદે ચાહસં  
પણિહાય નટ્ટે વર્ણેણં જાવ નટ્ટે મંડલેણં )

ત્યાર પછી કૃષ્ણપક્ષની એકમના ચન્દ્ર કરતાં બીજનો ચન્દ્ર વર્ણપરિમંડળ  
બંધે બધી વિશેષતાઓમાં વધારે ન્યૂન થઈ પડે છે. એ પછી બીજના ચન્દ્ર

મળેલેન । એવં સ્વલ્પ એતેન ક્રમેણ પરિહીયમાનઃ ૨ યાવદ્ અમાવાસ્યાચન્દ્રઃ 'ચાઉ-  
દસિ' ચાતુર્દશં=ચતુર્દશીસમ્બન્ધિનં ચન્દ્રંપ્રાણિધાય=અપેક્ષ્ય 'નદ્દે' નષ્ટઃ=વિલુપ્તઃ  
વર્ણેન યાવત્ નષ્ટો મળ્દલેન=વૃત્તાકારરૂપેણ ।

'એવામેવ'—એવમેવ=અનેનૈવ પ્રકારેણ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ ! ચોડ્માકં  
નિર્ગન્થો વા નિર્ગન્થો વા યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ સન્ હીનઃ 'સ્વંતીએ' જ્ઞાન્ત્યા=જ્ઞમયા,  
એવં હીનઃ 'મુક્તીએ' મુક્ત્યા=નિર્લોભતયા 'મુક્તીએ' મુક્ત્યા=મનોયોગાદીનાં  
કુશલમવૃત્તિલક્ષણયા, યોગનિરોધલક્ષણયા વા, 'અજ્ઞવેણ' આર્જવેન=સ્ફટિકવદ્  
વાજ્યાભ્યન્તરસરલભાવરૂપેણ, 'મદ્દવેણ' માર્દવેન=નિરભિમાનતાલક્ષણેન, 'લાઘ  
વેણ' લાઘવેન=દ્રવ્યભાવલઘુતાસંપન્નેન-તત્ર-દ્રવ્યતોડ્યોપધિકત્વેન ભાવતો રાગ-  
દ્વેષરહિતત્વેન, 'સચ્ચેણ' સત્યેન=અમૃષાભાષણરૂપેણ, 'તવેણ' તપસા=અશ્વનાંદિ

મંડલ તક ઓર અધિકન્યૂન હો જાતાં હૈ । હસ તરહ ક્રમશઃ હીન હી  
હોતા હુઆ અમાવસ્યા કા ચન્દ્રમા ચતુર્દશી કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા  
વિલકુલ વર્ણ આદિ સે લગાકર અપને પરિમંડલ તક વિલુપ્ત બન જાતા  
હૈ । (એવામેવ સમણાડસો । જો અમ્હં નિર્ગંથો વા નિર્ગંથી વા જાવ  
પવ્વહાએ સમાણે હીણે સ્વંતીએ એવં મુક્તીએ અજ્ઞવેણ, મદ્દવેણ, લાઘવેણ  
સચ્ચેણ, તવેણ, ચિયાએ, અર્કિચ્છણયાએ, વંમચેરવાસેણ) હસી તરહ  
હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગન્થ અથવા નિર્ગન્થીજન યાવત્  
પ્રવ્રજિત હોતા હુઆ યદિ ક્ષમા સે હીન હૈ, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા  
મનોયોગાદિકોં કી કુશલ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગનિરોધ રૂપ શુસિ સે  
સ્ફટિત કી તરહ પાહ્ય એવં આભ્યન્તર મેં સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવ  
સે, નિરભિમાનતા રૂપ માર્દવ સે, અલ્પ લપધિ રૂપ દ્રવ્યલઘુતા સે  
રાગ દ્વેષરહિત રૂપ ભાવ લઘુતા સે, અમૃષાભાષણ રૂપ સત્ય સે, અન-

કરતાં ત્રીજનો ચન્દ્ર વર્ણ પરિમંડળ બધી બાજતમાં વધારે ન્યૂન થઈ જાય છે.  
આ રીતે ધીમે ધીમે અતુલ્યે હીન થતાં અમાસનો ચન્દ્ર ચૌદશના ચન્દ્ર કરતાં  
વર્ણ પરિમંડળ વગેરેની દૃષ્ટિએ તદન વિલુપ્ત (અદૃશ્ય) થઈ જાય છે.

(એવામેવ સમણાડસો ! જો અમ્હં નિર્ગંથો વા નિર્ગંથી વા જાવ પવ્વહાએ  
સમાણે હીણે સ્વંતીએ એવં મુક્તીએ મુક્તીએ અજ્ઞવેણ, મદ્દવેણ, લાઘવેણ, સચ્ચેણ  
તવેણ, ચિયાએ, અર્કિચ્છણયાએ, વંમચેરવાસેણ)

આ રીતે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગંથ અથવા નિર્ગંથી  
જન યાવત્ પ્રવ્રજિત થઈને જે ક્ષમારહિત છે, મુક્તિ-નિર્લોભતા અથવા મનોયોગ  
વગેરેની કુશળ પ્રવૃત્તિ રૂપ અથવા યોગ નિરોધ રૂપ શુસિથી, સ્ફટિકની જેમ  
પાકી નેમજ આભ્યંતરમાં સરલ પરિણામ રૂપ આર્જવથી નિરભિમાનતા રૂપ

દ્વાદશચિધેન 'ચિયાણ' ત્યાગેન=મુનિવૈયાદૃત્યકરણલક્ષણેન 'અર્કિચળયાણ' અર્કિશ્ચનતયા નિષ્પરિગ્રહતયા વંમચેરવાસેણ' બ્રહ્મચર્યવાસેન-બ્રહ્મણિ=કામસેવન-પરિત્યાગરૂપે ચરણ=વિચરણ ચર્ય બ્રહ્મચર્ય, તત્ર વાસસ્તેન નવવાટિકા વિશુદ્ધમૈથુન વિરમણરૂપેળ, 'હીનઃ' હિતિ સર્વત્ર સમ્બન્ધઃ જ્ઞાન્ત્યાદિદશવિવશ્રમણધર્મરહિતો ભવતીત્યર્થઃ ।

તદનન્તરં ચ સ્વલ્લુ સ નિર્ગ્રન્થો વા૦ હીનતરઃ જ્ઞાન્ત્યા યાવત્ હીનતો બ્રહ્મચર્યવાસેન । એવં સ્વલ્લુ એતેન ક્રમેણ=ક્રમશઃ પરિહીયમાનઃ ૨ સન્ નષ્ટઃ=સર્વથા રહિતઃ જ્ઞાન્ત્યા, યાવત્ નષ્ટો બ્રહ્મચર્યવાસેનાપિ ભવતિ । જ્ઞાન્ત્યાદિ સર્વગુણરહિતો ભવતીત્યર્થઃ, યથા ચન્દ્રો નિત્યરાહુસંસર્ગેળ કૃષ્ણપ્રતિપદમારભ્ય પ્રતિદિવસં કલાભિઃ ક્ષીયમાણઃ સન્ કૃષ્ણચતુર્દશપેક્ષયાડમાવાસ્યાયાં વર્ણાદિના યાવન્મળહલેન નષ્ટો

જ્ઞાનાદિ રૂપ ૧૨ પ્રકાર કે તપ સે, મુનિજનોં કી વૈયાદૃત્તિ કરને રૂપ ત્યાગ સે નિષ્પરિગ્રહ રૂપ અર્કિશ્ચન્ય ધર્મ સે કામ સેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્ય મેં વાસ કર ને સે-નવ કોટિસે વિશુદ્ધ બને હુણ બ્રહ્મચર્ય કે પાલન સે-હીન હૈં-અર્થાત્ ક્ષાન્તિ આદિ રૂપ દશ પ્રકાર કે યતિ ધર્મ સે રહિત હૈં-(તયાણતરં ચ ણં હીણતરાણ સ્વંતીણ જાવ હીણતરાણ વંમચેરવાસેણ એવં સ્વલ્લુ એણં કમેણં પરિહાયમાણે ૨ ણદ્ધે સ્વંતીણ જાવ ણદ્ધે વંમચેરવાસેણ) અથવા જો સાધુ યા સાધ્વી ક્ષાન્તિ સે લેકર બ્રહ્મચર્ય વે હસ તરહ ક્રમશઃ હીનર હોતે હુણ ક્ષાન્તિ આદિ વાસસે હીનતર હૈં । સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ પર્યંતકે સમસ્ત ગુણોંસે રહિત હો જાતે હૈં । જિસ પ્રકાર નિત્ય રાહુ કે સંસર્ગ સે કૃષ્ણપક્ષકી પ્રતિપદા સે લેકર પ્રતિદિન કલાઓં સે પરિક્ષીણ હોતા હુઆ ચન્દ્ર કૃષ્ણચતુર્દશી કી અપેક્ષા અમા-

માર્ઠવથી, અદ્ય ઉપાધિ રૂપ દ્રવ્ય લઘુતાથી, રાગદ્વેષરહિત રૂપ ભાવલઘુતાથી અમુખા ભાવણ રૂપ સત્યથી, અનશન વગેરે રૂપ ૧૨ પ્રકારના તપથી, મુનિજનોના વૈયાદૃત્તિ કરવા રૂપ તાગથી નિષ્પરીગ્રહ રૂપ અર્કિચન ધર્મથી, કામસેવન પરિત્યાગ રૂપ બ્રહ્મચર્યનું રક્ષણ કરવાથી, નવ કોટિથી વિશુદ્ધ બનેલા બ્રહ્મચર્યના પાલનથી હીન છે, એટલે કે ક્ષાન્તિ વગેરે રૂપ દશ જાતના યતિધર્મથી હીન છે.

(તયાણતરં વર્ણ હીણતરાણ સ્વંતીણ જાવ હીણતરાણ વંમચેરવાસેણ એવં સ્વલ્લુ એણં કમેણ પરિહાયમાણે ૨ ણદ્ધે સ્વંતીણ જાવ ણદ્ધે વંમચેરવાસેણ )

અથવા જે સાધુ કે સાધ્વીઓ ક્ષાન્તિથી માંડીને બ્રહ્મચર્યવાસ મુધીના શુભોથી હીન છે. તેઓ આ ચંદ્રની પેઠેજ અનુક્રમે હીન થતાં ક્ષાન્તિ વગેરેથી માંડીને બ્રહ્મચર્યવાસ મુધીના સર્વે શુભોથી રહિત થઈ જાય છે જેમ હંમેશા રાહુના સંસર્ગથી કૃષ્ણપક્ષની એકમથી માંડીને દરરોજ કળાઓની દૃષ્ટિએ ક્ષીણ થતા ચંદ્ર કૃષ્ણપક્ષની ચૌદશની અપેક્ષા અમાસના દિવસે ત્રણ પરિભ્રમણ વગેરે

भवति, तथैव मुनिः कुगुरुसंसर्गात् अवसन्नपार्श्वस्थादि सङ्गात्, वान्तसम्यक्त्व-  
सम्बन्धात्, प्रमादस्थानसेवनात्, चारित्र्यावरणकर्मोदयाच्च क्रमशः क्षान्त्यादि-  
गुणहानिं प्राप्तः सन् नष्टो भवतीति भावः ।

अथ वृद्धिदृष्टान्तमाह—

यथा वा शुक्लपक्षस्य प्रतिपच्चन्द्रोऽमावास्यायाश्चन्द्रं प्रणिधाय=अपेक्ष्य-  
अमावास्या चन्द्रापेक्षयेत्यर्थः 'अहिए' अधिको वर्णेन यावद् अधिको=वर्द्धमानो  
वस्या के दिन वर्णादि से लेकर परिमंडल तक के अपने समस्त गुणों  
से नष्ट हो जाता है । उसी तरह मुनि कुगुरुके संसर्ग से अथवा अव-  
सन्न पार्श्वस्थादिकी संगति से सम्यक्त्व के छूट जाने के कारण और  
प्रमादस्थानों के सेवन करने के कारण उद्दिष्ट हुए चारित्र्य मोहनीय कर्म  
के प्रभाव से क्रमशः क्षान्त्यादिगुणों की हानि को प्राप्त करता हुआ नष्ट  
हो जाता है । अब सूत्रकार वृद्धि को स्पष्ट करने के लिये उसे दृष्टान्त  
से समझाते हैं—( जहावा सुकपक्वस्स पडिवयाचंदे अमावासाए चंदं  
पणिहाय अहिए वण्णेणं जाव अहिए मंडलेणं तयाणंतरं च णं विइया  
चंदे पडिवयाचंदं पणिहाय अहिययराए वण्णेणं जाव अहिययराए  
मंडलेणं—एवं खलु एएणं कमेणं पडिवुड्डेमाणे २ जाव पुण्णिमा चंदे चाउ-  
हंसि चंदं पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं, एवामेव  
समाणाउसो । जाव पव्वइए समाणे अहिए खंतीए जाव बंमचेरवासेणं  
तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव बंमचेरवासेण एवं खलु  
एएणं कमेणं परिवुड्डे माणे २ ..... बंमचेरवासेणं ) जैसे शुक्ल पक्ष

श्रीताना अधा शुष्माथी रक्षित मनी अथ छे तेमज्ज मुनि पक्ष कुगुरुना संसर्गाथी  
अथवा अवसन्न पार्श्वस्थ वर्गेरेनी संगतिथी सम्यक्त्व रक्षित यधने प्रमाद  
स्थानोना सेवनथी उक्थ पायेला चारित्र्य मोहनीय कर्मना प्रभावथी अमुकंने  
क्षान्ति वर्गेरे शुष्माथी रक्षित यधने नाथ पाये छे । हवे सूत्रकार वृद्धिने स्पष्ट  
करवानी छिछाथी दृष्टांत पूर्वक समझवतां कहे छे—

(जहावा सुकपक्वस्स पडिवयाचंदे अमावासाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं  
जाव अहिए मंडलेणं तयाणंतरं च णं विइयाचंदे पडिवया चंदं पणिहाय अहियय  
राए वण्णेणं जाव अहिययराए मंडलेणं एवं खलु एएणं कमेणं पडिवुड्डे माणे २  
जाव पुण्णिमाचंदे चाउहंसि चंदं पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं,  
एवामेव समाणाउसो । जाव पव्वतिए समाणे अहिए खंतीए जाव बंमचेरवासेणं  
तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव बंमचेरवासे णं एवं खलु एएणं कमेणं  
परिवुड्डेमाणे २ .... बंमचेरवासेणं )

મંડલેન=વૃત્તાકારતયા ભવતિ । તદનન્તરં ચ खलु દ્વિતીયાચન્દ્રઃ પ્રતિપચ્ચન્દ્રં પ્રણિધાય અધિકતરઃ પૂર્વેદિનાપેક્ષયા વર્ણનાત્યધિકો ભવતિ યાવદ્ અધિકતરો મંડલેન ભવતિ । ક્રમશો વૃદ્ધિ પ્રાપ્નોતિ एवं खलु एतेन क्रमेण ‘ પરિચુદ્ધેમાણે ૨ ’ પરિવર્ધમાનઃ ૨ પ્રતિદિનં વૃદ્ધિં લભમાનો ૨ યાવત્ પૂર્ણિમાચન્દ્રઃ ‘ ચાઉર્દસિ ’ ચાતુર્દશં ચતુર્દશી સમ્બન્ધિનં ચન્દ્રં પ્રણિધાય ‘ પદ્મિપુણ્ણે ’ પ્રતિપૂર્ણઃ=સમ્પૂર્ણો વર્ણેન યાવત્ પ્રતિપૂર્ણો મંડલેન-વૃત્તાકારરૂપેણ ભવતિ , પૂર્ણિમાચન્દ્રઃ સકલકલા-કલાપકલિતતયા પરિપૂર્ણ મંડલવાન્ ભવતીત્યર્થઃ ।

‘ एवमेव ’ एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे भ्रमणा आयुष्मन्तः ! ‘ જાવ ’ યાવત્-યોઽસ્માકં નિર્ગ્રન્થો વા ૨ આચાર્યોપાધ્યાયાનામન્તિકે મત્રજિતઃ સન્ અધિકઃ=વૃદ્ધિ સમ્પન્નઃ જ્ઞાન્સ્યા યાવદ્ અધિકો બ્રહ્મચાર્યત્રાસેન । તદનન્તરં ચ खलુ

કી પ્રતિપદા કા ચન્દ્રમા અમાવાસ્યાં કે ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણસે છે-કર મંડલ તક વર્ધમાન હોતા હુઆ અધિક હોતા હૈ, ઓર ઉસકે બાદ દ્વિતીયા કા ચન્દ્રમા કી અપેક્ષા વર્ણ સે છેકર મંડલ તક અધિકતર હો જાતા હૈ-इस तरह के क्रम से जैसे प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त करता हुआ वह चन्द्रमा जब पूर्णिमा तिथि तक पहुँच जाता है तो चतुर्दशी तिथि के चन्द्रमा की अपेक्षा उस दिन वर्ण से लेकर अपने मंडल से परिपूर्ण बन जाता है । उसी तरह हे आयुष्मन्त भ्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु अथवा निर्ग्रन्थी साध्वी आचार्य उपाध्याय से दीक्षित बनकर क्षान्ति गुण से लेकर ब्रह्मचर्यवास तक के गुणों से वृद्धिसंपन्न होता है ।

ઓર હસ તરહ હન સબ સે ધીરે ધીરે વહ પહિછે કી અપેક્ષા ઓર અધિકતર સમ્પન્ન બન જાતા હૈ । હસ પ્રકાર ક્રમશઃ સમ્પન્ન બનતા હુઆ

જેમ શુકલ પક્ષની એકમનો ચંદ્ર અમાસના ચંદ્ર કરતાં વધુ મંડળ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે. અને બીજાનો ચંદ્ર જેમ એકમના ચંદ્ર કરતાં વધુ પરિમંડલ વગેરેની અપેક્ષાએ વૃદ્ધિ પામે છે આ રીતેજ અનુક્રમથી હરેરોજ વૃદ્ધિ પામતો ચંદ્ર જ્યારે પૂનમની તિથિ સુધી પહોંચી જાય છે ત્યારે ચૌદશના ચંદ્રની અપેક્ષાએ તે દિવસ વધુ પરિમંડળ વગેરેથી પરિપૂર્ણતા મેળવે છે. આમ જ હે આયુષ્મન્ત ભ્રમણે ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ કે નિર્ગ્રન્થી સાધ્વી આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસેથી દીક્ષા મેળવીને ક્ષાંતિ શુભથી માંડીને પ્રશસ્ત્યવાસી સુધીના બધા શુભોથી વૃદ્ધિસંપન્ન થઈ જાય છે.

અને આ રીતે આ બધા શુભોથી ધીમે ધીમે તે પહેલાં કરતાં વધુ સંપન્ન થઈ જાય છે આ પ્રમાણે અનુક્રમે શુભ સંપન્ન થતો તે ક્ષાંતિ પ્રશ-



અધિકતરઃ=અત્યધિકઃ જ્ઞાન્ત્યા યાવદ્ અધિકતરો બ્રહ્મચર્યવાસેન । एवं खलु एतेन क्रमेण 'परिवर्द्धमाणै र' परिवर्धमानः २ क्रमशो वृद्धिसम्पन्नो भूत्वा यावत् 'पट्टिपुन्ने' प्रतिपूर्णः=सम्पन्नो ब्रह्मचर्यवासेन, ज्ञान्त्यादिसर्वगुणसम्पन्नो भवतीत्यर्थः ।

यथा चन्द्रो नित्यराहुसंसर्गापगमेन शुक्लप्रतिपदमारभ्य प्रतिदिवसे कलाभिर्वर्धमानः सन् क्रमेण शुक्लचतुर्दश्यपेक्षया पूर्णिमायां वर्णादिना यावन्मण्डलेन परिपूर्णो भवति तथैव मुनिः कुगुरुसंसर्गादिपरित्यागेन चरित्रावरणवर्मक्षयोपशमादिना क्रमशः ज्ञान्त्यादि गुणवृद्धिं प्राप्नुवन् केवलज्ञानकेवलदर्शनादिगुणैः परिपूर्णो भवतीति ।

एवं खलु=जीवा अनेन प्रकारेण જ્ઞાન્ત્યાદિ ગુણવૃદ્ધિયા વર્દન્તે વા તેપાં જ્ઞાન્ત્યા

વહ જ્ઞાન્તિ ગુણ સે લેકર બ્રહ્મચર્યવાસ તક કે સમસ્ત ગુણો સે પરિપૂર્ણ હો જાતા હૈ । જિસ પ્રકાર રાહુ કે સંસર્ગ કે અપનયન સે શુક્લ પક્ષ કી પ્રતિપદા સે લેકર પ્રતિદિન અપની કલાઓ સે અભિવર્ધમાન હોતા હુઆ ચંદ્રમા ક્રમશઃ શુક્લચતુર્દશો કિ અપેક્ષા પૂર્ણિમાસી કે દિન વર્ણાદિ સે લગાકર મણ્ડલ તક કી અપની સમસ્ત કલાઓ સે પરિપૂર્ણ હો જાતી હૈ

इसी तरह मुनि भी कुगुरु आदि के संसर्ग आदि के परित्यागसे तथा चारित्रावरण कर्म के क्षयोपशम आदि से क्रमशः ज्ञान्त्यादि गुणों की वृद्धि करता हुआ केवलज्ञान, केवल दर्शन आदि गुणों से परिपूर्ण हो जाता है । ( एवं खलु जीवा वद्धंति, वा हायंति वा, एवं खलु जंबू समणेणं भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे पण्णत्ते

ચર્યવાસ વગેરે બધા શુભોદી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે. જેમ રાહુના સંસર્ગરહિત થઈને શુક્લ પક્ષની એકમથી માંડીને દરરોજ પોતાની કળાઓની વૃદ્ધિ કરતા ચંદ્ર અનુક્રમે શુક્લ પક્ષની ચૌદશ કરતાં પૂનમના દિવસે વર્ણ પરિપૂર્ણ વગેરેની પોતાની સંપૂર્ણ કળાઓથી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે.

તેમજ મુનિ પણ કુગુરુ વગેરેની સોબત વગેરેને ત્યજીને તેમજ ચારિત્ર-વરણ કર્મના ક્ષયોપશમ વગેરેથી અનુક્રમે પોતાના જ્ઞાતિ વગેરે શુભોદી વૃદ્ધિ કરતા કેવળજ્ઞાન, કેવળ દર્શન વગેરે શુભોદી પરિપૂર્ણ થઈ જાય છે.

( एवं खलु जीवा वद्धंति, वा हायंति वा एवं खलु जंबू । समणेणं भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे पण्णत्ते तिवेभि )

હીયન્તે વા । एवं खलु हे जम्बूः ! अमणेन भगवता महावीरेण दशमस्य ज्ञाता-  
ध्ययनस्य अयं=पूर्वोक्तः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः । ‘त्तिबेमि’ इति ब्रवीमि पूर्ववत् ॥ सू० १॥

इति श्री विश्वविख्यात - जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-  
ललितकलापालापक - प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक  
श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-  
कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री  
घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृ-  
तवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां दशममध्ययनं समाप्तं ॥ १० ॥

त्तिबेमि ) इस प्रकार क्षान्त्यादि गुणों की वृद्धि से जीव बढ़ते हैं और उ-  
नकी हानि से जीव घटते हैं यह कथन बन जाता है इस तरह हे जंबू !  
अमण भगवान् महावीरने दशवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्रज्ञप्त  
किया है । मैंने उन्हीं के मुख से जैसा सुना है वसी के अनुसार  
यह कहा है ॥ सू० १ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराजद्वारा “ ज्ञाता-  
धर्मकथाङ्गसूत्र ” की अनगारधर्माમૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાના દશવાં  
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૦॥

ક્ષાંતિ વગેરે શુષ્ણી વૃદ્ધિથી જીવો વૃદ્ધિ પામે છે અને ક્ષાંતિ વગેરે  
શુષ્ણી હાનિથી જીવો ઘટે છે. આ આ કથનની સાર્થકતા સિદ્ધ થઈ જાય  
છે. આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! અમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા જ્ઞાતાધ્યયનને  
આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. આ અર્થ મેં તેમના સુખેથી જે પ્રમાણે  
સંભળ્યો છે તે જ પ્રમાણે તમારી સામે રજૂ કર્યો છે. ॥ સૂત્ર “ ૧ ” ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહાગજ દ્વારા જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની  
અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું દશમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૦॥

## અંથ એકાદશમધ્યયનં પ્રારમ્ભ્યતે—

ગતં દશમમધ્યયનં, સામ્પતમેકાદશમારમ્ભ્યતે । પૂર્વસ્મિન્નધ્યયને કૃષ્ણશુક્લ-  
પક્ષચન્દ્રદૃષ્ટાન્તેન પ્રમાદામમાદવતોઃ ક્ષાન્ત્યાદિગુણહાનિવૃદ્ધિભ્યામનર્થાથી પ્રતિ-  
પાદિતૌ, इह तु मार्गाराधनविराधनाभ्यामर्थार्थौ मदस्येते, અથ જમ્બૂસ્વામી  
પૂછતિ—‘જઈણં મંતે’ ઇત્યાદિ ।

**મૂલમ્—**જઈણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં દસમસ્સ નાય-  
જ્ઞણસ્સ અયમદ્દે પપ્પણત્તે એકારસમસ્સ ણં મંતે ણાયજ્ઞયણ-  
સ્સ કે અદ્દે પપ્પણત્તે ?, एवं खलु जंबू ! तेषां कालेणं रायगिहे  
गोयमे एवं वयासी—કહણં મંતે ! જીવા આરાહગાવા વિરાહગા  
વા ભવાંતિ ?, गो० ! से जहा णामए एगंसि समुहकुलंसि दाव-  
इवा नामं खखा पपणत्ता किण्हा जाव निउरुंबमूया पत्तिया

દાવ દ્રવ ( વૃક્ષ ) નામક ગ્યારહવાં અધ્યયન પ્રારંભ

દશર્વાં અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા—અથ ગ્યારહવાં અધ્યયન પ્રારંભ  
હોતા હૈ । इस अध्ययनका पूर्व अध्ययनके साथ इस प्रकारसे संबन्ध है  
कि पूर्व अध्ययन में कृष्ण और शुक्ल पक्षके चन्द्रमा के दृष्टान्त से  
प्रमादी और अप्रमादी संयमी के क्षांत्यादि गुणों की हानि एवं वृद्धि  
रूप अनर्थ एवं अर्थ की प्राप्ति होनी प्रतिपादित की गई है । अब इस  
अध्ययन द्वारा यह कहा जा रहा है कि जो संयम मार्ग की आराधना  
तथा विराधना करते हैं वे अर्थ और अनर्थ की प्राप्ति के पात्र होते हैं ।  
जंबू स्वामी श्री सुधर्मासे पूछते हैं कि ‘जइणं मंते । समणेणं’ इत्यादि ।

દાવદ્રવ ( વૃક્ષ ) નામે અગિયારસું અધ્યયન પ્રારંભ.

દશમું અધ્યયન પુરું થઈ ચૂક્યું છે અને હવે અગિયારમું અધ્યયન આરંભ  
થાય છે. આ અધ્યયનનો પહેલાંના અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણેનો સંબંધ છે.  
પહેલાંના અધ્યયનમાં કૃષ્ણ અને શુકલ પક્ષના ચન્દ્રમાના દૃષ્ટાંતથી પ્રમાદી અને  
અપ્રમાદી સંયમીને ક્ષાંતિ વગેરે શુભોની પ્રાપ્તિ થવી, આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ  
કરવામાં આવ્યું છે. હવે આ અધ્યયનમાં બે સંયમ માર્ગની આરાધના તેમજ  
વિરાધના કરે છે તેઓ અર્થ તેમજ અનર્થના પાત્ર ગણાય છે આ વાત સ્પષ્ટ  
કરવામાં આવે છે. જમ્બૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

( જઈણં મંતે ! સમણેણં “ ઇત્યાદિ ॥

पुष्पिया फलिया हरियगरेरिजमाणा सिरीए अतीवर उवसो-  
 भेमाणा चिट्ठंति, जयाणं दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया  
 मंदावाया महावाया वायंति तयाणं बहवे दावदवा रुक्खा पत्तिया  
 जाव चिट्ठंति अप्पेगइया दावदवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिस-  
 डियपंडुपत्तपुष्पफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा२ चिट्ठंति,  
 एवामेव समणोउसो ! जो अम्हं निर्गंथो वा निगंथी वा  
 जाव पव्वइये समाणे बहूणं समणाणं ४ सम्मं सहति जाव  
 अहियासे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं  
 सहइ नो खमइ नो तित्तिक्खइ नो अहियासेइ एस णं मए  
 पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते । समणाउसो ! जया णं सामुदगा-  
 ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायंति तदा णं  
 बहवे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा२ चिट्ठंति,  
 अप्पेगइया दावदवा रुक्खा पत्तिया पुष्पिया जाव उवसोभे-  
 माणा२ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हे निर्गंथो वा  
 निगंथी वा पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं  
 गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ  
 एसणं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते । समणाउसो ! जयाणं नो  
 दीविच्चगा णो सामुदगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव महा-  
 वाया वायंति तयाणं सव्वे दावदवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव  
 मिलायमाणा चिट्ठंति, अप्पेगइया जाव उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति,  
 एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं ४  
 बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्मं सहइ एसणं मए

सव्वविराहए पणत्ते । समणाउसो ! जयाणं दीविच्चगाविसामु-  
 द्दगावि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति तया णं सव्वे  
 दावहव्वा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो  
 जो अम्मं जाव पव्वइए समाणे वड्डणं समणाणं वड्डणं अन्नउ-  
 स्थियगिहत्थाणं सम्मं सहइएसंणं मए पुरिसे सव्वाराहए पणत्ते !  
 एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति,  
 एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया० एकारसस्स अज्झयणस्स  
 अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥ सू० १ ॥

॥ एकारसमं नायज्झयणं समत्तं ॥ ११ ॥

टीका—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिर्गतिं  
 सम्प्राप्तेन दशमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयम्=पूर्वोक्त प्रकारो गुणहानिद्विद्विरूपः अर्थः  
 भावः प्रज्ञप्तः=कथितः, अथ एकादशस्याध्ययनस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः=  
 को भावः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वाधी कथयति—एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले

टीकार्थ—(जइणं भंते ! ) यदि हे भदन्त ! (समणेणं जाव संपत्तेणं दस  
 मस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते एकारसमस्स णं भंते । नायज्झय-  
 णस्सके अट्ठे पणत्ते) श्रमण भगवान् महावीर प्रभुने किं जो मुक्तिको प्राप्त  
 हो चुके हैं, दशवे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादिन  
 किया है—उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु ने ग्यारहवें ज्ञाताध्ययन  
 का क्या अर्थ कहा है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मा  
 स्वामी उनसे कहते हैं कि ( एवं खलु जंबू ! ) सुनो जो उन्होंने ने ग्यारहवें

टीकार्थ—( जइणं भंते ! ) हे भदन्त !

(समणेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते एकारसमस्स  
 णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते )

भुक्ति भोगवेला श्रमण भगवान् महावीरे दशमा ज्ञाताध्ययनना आ  
 पूर्वोक्त रूप अर्थ निरूपित कथो छे तो तेजोश्रीजे अगियारना ज्ञाताध्ययनना  
 को अर्थ प्ररूपित कथो छे ? आ रीते जम्बू स्वामीना प्रश्नने शांताधीने सुधर्मा

તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહે નગરે ગૌતમ એવમવાદીત્-એવમપૃચ્છત્-કથં સ્વલુ મદન્ત !  
 હે મગવાન્ ! જીવા આરાધકાઃ=જ્ઞાનાદિ રત્નત્રયરૂપમોક્ષમાર્ગસાધકાઃ, વિરાધકાઃ=  
 તદ્વિપરીતા ભવન્તિ ? । એતમર્થે મગવાન્ દૃષ્ટાન્તેન વર્ણયતિ-હે ગૌતમ ! તદ્યથા  
 નામકં=યથા દૃષ્ટાન્તય-એકસ્મિન્ સમુદ્રકૂલે=સાગરતટે 'દાવદ્વા' દાવદ્રવાઃ,  
 નામ=એતાન્નામધેયા વૃક્ષાઃ પ્રજ્ઞાતાઃ । કીદૃશાઃ ? કિંઘા-કિંઘા 'કૃષ્ણા'=  
 કૃષ્ણવર્ણા યાવત્ મહામેઘનિકુરન્સ્વભૂતાઃ=જલમ્નૃતમેઘગ્રન્દમદૃશા 'પત્તિયા'

જ્ઞાતાધ્યયન કા અર્થે નિરૂપિત કિયા હૈ વહ્ હસ પ્રકાર હૈ-(તેણં કાલેણં  
 તેણં સમપ્પણં રાયગિહે ગોયમે એવં વયાસી) ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય  
 મેં રાજગૃહનગર મેં શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર પ્રમુ પધારે-ઉનસે ગૌતમ  
 સ્વામી ને હસ પ્રકાર પૂછા-(કહ્ણણં મંતે ! જીવા આરાહગાં વા વિરાહ  
 ગાં વા મંવંતિ ?) હે મદંત ! જીવ જ્ઞાનાદિ રત્નત્રય રૂપ મોક્ષમાર્ગ કે  
 આરાધક સાધક-ઓર વિરાધક કૈસે-કિસ કારણ સે-હોતે હૈ ?  
 (ગોયમા ! સે જહાનામપ્પ એગંસિ સમુદ્ધકૂલંસિ દાવદ્વા નામં સ્વસ્થા  
 પ્પણ્ણત્તા) પ્રમુ ને ઉનકી હસ વાત કા ઉત્તર હસ તરહ કે દૃષ્ટાન્ત  
 સે દિયા-હે ગૌતમ ! સમુદ્ર કે તટપર "દાવદ્રવ" હસ નામકે વહુન  
 સે વૃક્ષ સ્વદે હુપ્પ થે (કિંઘા જાવ નિકુરંબમૂયા પત્તિયા પુષ્કિયા  
 ફલિયા હરિયગરેરિઝ્જમાણા, 'સિરીપ્પ અતીવ ૨ ઉવસોમેમાણા-ચિટ્ઠંતિ)  
 યે સવ જલ સે મરે હુપ્પ મેઘોં કે સમૂહ જૈસે કૃષ્ણ વર્ણ કે યે

સ્વામી તેને કહે છે કે (એવં સ્વલુ જંતુ ! ) હે જંતુ ! સાંભળો, પ્રભુએ અગિ-  
 થારમાં જ્ઞાતાધ્યયનનો અર્થ આ પ્રમાણે નિરૂપિત કર્યો છે.

(તેણં કાલેણં તેણં સમપ્પણં રાયગિહે૦ ગોયમે એવં વયાસી)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર  
 પધાર્યા. ગૌતમ સ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો-(કહ્ણણં મંતે ! જીવા  
 આરાહગાવાં વિરાહગાવાં મંવંતિ ? હે મદંત ! એવ જ્ઞાન વગેરે રત્નત્રય રૂપ  
 મોક્ષ માર્ગના આરાધક-સાધક અને વિરાધક કેવી રીતે-થા કારણથી થાય છે ?

(ગો. ! સે જહાનામપ્પ એગંસિ સમુદ્ધકૂલંસિ દાવદ્વા નામં સ્વસ્થા પ્પણ્ણત્તા)

પ્રભુએ તેમના તે પ્રશ્નનો જવાબ દૃષ્ટાન્તના આધારે આપતાં કહ્યું-હે  
 ગૌતમ ! સમુદ્રને દાવદ્રવ જાતિનાં ઘણાં વૃક્ષો હતાં.

(કિંઘા જાવ નિકુરંબ મૂયા પત્તિયા પુષ્કિયા ફલિયા હરિયગરે રિઝ્જમાણા,  
 સિરીપ્પ અતીવ ૨ ઉવસોમેમાણા ચિટ્ઠંતિ)

એ બધાં વૃક્ષો જળપણું એક સમૂહોની જેમ કાળા રંગનાં હતાં. બધાં  
 વૃક્ષો, પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી સમૃદ્ધ હતાં. લીલા રંગથી એ વૃક્ષો શોભતાં

પત્રિતા = પત્રયુક્તા ' પુષ્પિયા ' પુષ્પિતા = પુષ્પયુક્તા, ' ફલિયા ' ફલિતા = ફલ સમૃદ્ધાઃ, ' હરિયગરેરિજ્જમાણા ' હરિતકારાજ્યમાનાઃ = હરિતકેન = હરિતવર્ણેનાતિશયશોભમાનાઃ ' સિરીષ ' શ્રિયા = પત્રપુષ્પાદિ શોભયા અતી-  
વાતીવ = અત્યંતસ્ ઉપશોભમાનાઃ શોભાસંમન્નઃ, તિષ્ઠન્તિ । યદા સ્વલ્લ = યસ્મિન્  
કાલે ' દીવિચ્ચગા ' દ્વૈપ્યાઃ = દ્વીપસમ્મવાઃ ' ર્ઈસિપુરેવાયા ' ર્ઈષત્પુરોવાતાઃ સ્વલ્પાઃ  
પૂર્વદિગ્વાયવઃ, ' પચ્છાવાયા ' પશ્ચાદ્વાતાઃ = પશ્ચિમદિગ્વાયવઃ ' મંદાવાયા ' મન્દ-  
વાતાઃ = શ્વનૈઃ શ્વનૈઃ સચ્ચારિણો વાયવઃ, ' મહાવાયા ' મહાવાતાઃ = પ્રચ્છન્દવાયવઃ  
' વાયંતિ ' વાન્તિ = ચલન્તિ તદા સ્વલ્લ બહવો દાવદ્રવા વૃક્ષા પત્રિતા યાવત્ શ્રિયા-  
શ્ચીવાતીવોપશોભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ । ' અપ્પેગહ્યા ' અપ્પેગક્રકાઃ = કતિપયાઃ = સ્તોકા

પત્ર યુક્ત થે, પુષ્પ યુક્ત થે ફલોં સે સમૃદ્ધ થે । હરિત વર્ણ સે યે સઘ  
અતિશય શોભાયમાને હો રહે થે । ઇસ તરહ પત્ર પુષ્પાદિ કી શોભા સે  
ઇનકી શોભા અત્યંત નિરાલી બની હુઈ થી । ઇસ કારણ યે વિશિષ્ટ  
શોભા સંપન્ન બને હુઇ થે । ( જયાળં દીવિચ્ચગા ર્ઈસિ પુરેવાયા પચ્છા-  
વાયા મંદાવાયા મહાવાયા વાયંતિ, તયા ણં બહવે દાવદ્રવા રુક્ષા પત્તિયા  
જાવ ચિદ્દંતિ, અપ્પેગહ્યા દાવદ્રવા રુક્ષા જુન્ના ક્ષોઢા પરિસદ્ધિય-  
પંદુપત્ત પુષ્પફલાસુક્કરુક્ષાઓ વિવ મિલાયમાણા ૨ ચિદ્દંતિ )  
જિસ સમય દ્વીપ સે ઉત્પન્ન હુઈ પૂર્વ દિશા સંબન્ધી સ્વલ્પ હવાઈ, પશ્ચિમ  
દિશા સંબન્ધી સ્વલ્પ હવાઈ, ધીરે ૨ ચલને વાલી વાયુઈ તથા પ્રચ્છન્દ  
વાયુઈ ચલને લગતી તો ઉસ સમય અનેક દાવદ્રવ વૃક્ષ પત્ર પુષ્પાદિ કી  
શોભા સે નિરાલે, બને હુઇ જ્યોં કે ત્યોં સ્વદે રહતે યે ઉનમં કુણ્ઠ મી  
વિકાર નહી હોના થા । તાત્પર્ય ઇસકા યહ હૈ કિ જન્મ ટાપૂ સે પૂર્વ દિશા

હતાં. પત્રો અને પુષ્પોથી એમની શોભા અનેરી થઈ પડી હતી. એથી એઓ  
સવિશેષ શોભા-સંપન્ન લાગતાં હતાં.

( જયાળં દીવિચ્ચગા ર્ઈસિ પુરેવાયા પચ્છાવાયા મંદાવાયા મહાવાયા વાયંતિ  
તયા ણં બહવે દાવદ્રવા રુક્ષા પત્તિયા જાવ ચિદ્દંતિ, અપ્પેગહ્યા દાવદ્રવા રુક્ષા  
જુના ક્ષોઢા પરિસદ્ધિય પંદુપત્તપુષ્પફલા સુક્કરુક્ષાઓ વિવ મિલાયમાણા ૨ ચિદ્દંતિ )

જ્યારે દ્વીપો ઉપર વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ દિશાના  
આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહેનારા પવનો તેમજ પ્રચંડ પવનો ફુંકવા લાગતા  
ત્યારે પત્ર-પુષ્પ વગેરેની શોભાથી એનેરાં લાગતાં દાવદ્રવ વૃક્ષો જે સ્થિતિમાં  
જોવાં હતાં તે જ સ્થિતિમાં વિકાર વગરના થઇને સ્થિર થઇને જોવાં જ રહેતા  
હતાં. ઠહેવાની મતલબ એ છે કે જ્યારે દ્વીપના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશાના  
મંદ, મુગંધ અને શીતળ પવનો વહેતા હતા ત્યારે પત્રો-પુષ્પો વગેરેથી સંપન્ન

इत्यर्थः दावद्रवा वृक्षा 'जुक्षा' जीर्णाः=चिरकालीनाः 'झोडा' झोडः=शटनं, तद् योगाद् वृक्षा अपि झोडाः=शटितमूलस्कन्धा इत्यर्थः, 'परिशट्टियपंडुपत्तपुष्प-फला' परिशट्टितपाण्डु पत्रपुष्पफलाः-परिशट्टितानि=जीर्णानि-अतएव पाण्डूनि=ईषत्पीतानि पत्राणि पुष्पाणि फलानि च येषां ते तथोक्ताः, 'सुकारुक्खओविव निलायमाणा' शुष्कवृक्षा इव म्लायन्तः २=शोभारहितास्तिष्ठन्ति । भगवानाह- 'एवामेव' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण 'समणाउसो' हे श्रमणा आयुष्मन्तः । योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत्प्रव्रजितः सन् बहूनां श्रमणानां वहीनां श्रमणीनां बहूनां श्रवकाणां वहीनां श्राविकानां कर्कशकठोरवचनाद्युपसर्गान् 'सम्मं' सम्यक्

पश्चिम दिशा संघन्धी मंद सुगंध शीतल समीर चलने लगता तो उस समय जो पत्र पुष्प आदि से युक्त हुए दावद्रव वृक्ष थे वे उषों के त्यों अधिक शोभा संपन्न बने रहकर हरे भरे ही दिखलाई देते रहते । परन्तु उनमें जो दावद्रव वृक्ष जीर्ण थे पुराने थे, शीर्ण-सड़े हुए थे जिनका मूल और स्तंभ दोनों खोखले हो गये थे और जिनके पीला सफेद होकर पत्र पुष्प एवं फल परिशट्टित हो झड़-झुके थे वे शुष्क वृक्षों के समान म्लान-शोभा रहित ही बने रहते (एवामेव समणा उसो ! जो अम्मं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा पच्चाइए समणे बहूणं अण्ण-उत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं-समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पन्नसे ) इसी तरह हे आयुष्मन्त श्रमणों ! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधु जन अथवा साध्वी जन दीक्षित होता हुआ अनेक श्रमण जनों के अनेक श्रमणियों के, श्रावकों के और श्राविकाओं के कर्कश, कठोर वक्चनावि रूप उपसर्गों को मध्यस्थ भाव

गयेवां दावद्रव वृक्षा के स्थितिमां व सविशेष शोभा युक्त यधने दीर्घांछम हेणातां हतां । पण्ण तेज्जोमां के दावद्रव वृक्षो एण्ण हतां-भूतां हतां-शीलुं-सदी गयेवां हता, नेना भूण अने यधने भाग भोणवेा यध गयेा हते । अने तेज्जोना पीणा अने सहइ यधने पांढसाज्जो, पुण्यो अने इणो परिशट्टित यधने अरी पड्यां हतां ते तो सुकाय गयेवा वृक्षोनी नेम म्लान-शोभा रहित यधने जिवां हतां ।

( एवामेव समणाउसो ! जो अम्मं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा पच्चाइए समणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहइ एसणं मए पुरिसे देसाराहए पन्नचे )

आ प्रभाण्णे व हे आयुष्मन्त श्रमणो ! के अमारा निर्ग्रन्थ साधुजन अथवा साध्वीजन दीक्षित यधने धण्ण श्रमणो अने धण्ण श्रमणीज्जो, धण्ण श्रावको अने धण्ण श्राविकज्जोना कर्कश, कठोर वक्चो वगेरे उपसर्गोने मध्यस्थ



મધ્યસ્થભાવેન 'સહઈ' 'સહતે'=મુલાદ્યવિકારકરણેન મર્ષતિ, 'સ્વમઈ' હમતે ક્રોધાભાવેન, તિતિસ્ત્વઈ, તિતિસ્ત્વતે-અદીનાભાવેન, 'અહિયાસેઈ' અધ્યાસ્તે નિર્જરાભાવનયાન્તઃકરણેન સહતે । અથ ચ વહૂનામ્ અન્યતીર્થિકાનાં વહૂનાં ગૃહસ્થાનામ્ પ્રતિકૂલવચનાનિ નો સમ્પ્રક્-સમ્પ્રગ્માવેન સહતે યાવત્ નો અધ્યાસ્તે, એવં સ્વલુ=એવમ્ભૂતઃ પુરુષઃ 'મય' મયા 'દેશવિરાહય' દેશવિરાધકઃ પ્રજ્ઞસઃ ।

પુનઃત્ર હે શ્રમણાઃ-આયુષ્મન્તઃ ! યદા સ્વલુ 'સામુદગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્ર-સમ્બન્ધિનઃ ઈષ્ટપુરોવાતાઃ સ્ત્રલ્યપૂર્વદિગ્માયતઃ 'પચ્છાવાયા' પચ્છાદ્વાતાઃ=પશ્ચિમ-

સે સહન કરતા હૈં ઉન વચનોં કો સુનકર જિનકે મુલ્હ આદિ મૈં કોઈં વિકાર નહીં ફલકતા હૈં ક્રોધ નહીં ઉત્પન્ન હોતા હૈં, અદીન ભાવસે જો ઉન્હેં સહન કરતા હૈં, નિર્જરા કી ભાવના સે જો ઉન્હેં અપને અન્તઃકરણ સે સહલેતા હૈં-તથા ક્રુતીર્થિકોં કે ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો જો સહન નહીં કરતા હૈં-યાવત્ ઉન્હેં અધ્યાસિત નહીં કરતા હૈં એસા વ્યક્તિ મૈંને દેશ વિરાધક પ્રજ્ઞસ કિયા હૈં । ( સમણાડસો ! જયાળં સામુદગા ઈર્સિ પુરેવાયા પચ્છાવાયા મંદાવાયા મહાવાયા વાયંતિ તયાળં વહવે દાવદવા રુક્લા જુળ્લા જોડા જાવ મિલાપમાળા ૨ ચિદ્વંતિ, અવ્વેં ગઈયા દાવદવા રુક્લા પત્તિયા પુલ્કિયા જાવ ઉવસોમેમાળા ૨ ચિદ્વંતિ એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હં નિગંથો વા નિગંથી વા પવ્વહપ સમાળે વહૂળં અણ્ણડત્થિયાળં વહૂળં ગિહત્થાળં સમ્મં સહઈ વહૂળં સમણાળં ૪ નો સમ્મં સહઈ एसणं मय पुरिसे देसाराहप पण्णत्ते ) પુનઃત્ર-હે આયુ-

ભાવથી સહન કરે છે, તે વચનોને સાંભળીને બેના એ વગેરે અગો ઉપર ક્રોધ પણ વિકાર સરખાએ થતો નથી, ક્રોધ ઉત્પન્ન થતો નથી, અદીન ભાવથી બે તેને ખમતો રહે છે-સહન કરતો રહે છે, નિર્જરાની ભાવનાથી બે તેઓને થોતાના અંતરથી સહન કરી લે છે, તેમજ ક્રુતીર્થિ કેના ગૃહસ્થોને પ્રતિકૂળ વચનોને બે સહન કરી શકતો નથી યાવત્ તેઓને અધ્યાસિત કરતો નથી એવા માણસને એ દેશ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ કયો છે

( સમણાડસો ! જયાળં સામુદગા ઈર્સિ પુરે વાયા પચ્છાવાયા મંદાવાયા મહાવાયા વાયંતિ તયાળં વહવે દાવદવા રુક્લા જુળ્લા જોડા જાવ મિલાપમાળા ૨ ચિદ્વંતિ, અવ્વેં ગઈયા દાવદવા રુક્લા પત્તિયા પુલ્કિયા જાવ ઉવસોમેમાળા ૨ ચિદ્વંતિ એવામેવ સમણાડસો જો અમ્હં નિગંથો વા નિગંથી વા પવ્વહપ સમાળે વહૂળં અણ્ણડત્થિયાળં વહૂળં ગિહત્થાળં સમ્મં સહઈ વહૂળં સમણાળં ૪ નો સમ્મં સહઈ एसणं मय पुरिसे देसाराहप पण्णत्ते )

દિક્ સંમત્રા વાયવઃ મન્દ્રાતા મહાવાતા વાન્તિ=પ્રવચન્તિ તદા સ્વલ્લુ વહવે દાવદ્રવા  
 વૃક્ષા જીર્ણાં શ્લોઢા ચટિમૂલસ્કન્ધાઃ યાવત્ મ્લાયન્ત સ્તિષ્ઠન્તિ । તત્ર 'અપ્પેગહ્યા'  
 અપ્પેકકાઃ=કતિપયાઃ દાવદ્રવા વૃક્ષાઃ પત્રિતા યાવત્ ઉત્તશોમમોનાઃ ૨ સ્તિષ્ઠન્તિ ।  
 એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ યોઽસ્માકં નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા પ્રવ્રજિતઃ સન્  
 વહૂનામ્ અન્યતીર્થિકાનાં વહૂનાં ગૃહસ્થાનાં પ્રતિકૂલવચનાનિ સમ્યક્ સહતે, વહૂનાં  
 શ્રમણાનાં ૪-શ્રમણાદીનાં=ચતુર્વિધસંઘસ્યેત્યર્થઃ વચનાનિ નો સમ્યક્ સહતે એષ  
 સ્વલ્લુ પુરુષો 'મપ્' મયા દેશારાધકઃ પ્રજ્ઞસઃ । હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ । યદા સ્વલ્લુ  
 નો 'દીવિચ્ચગા' દ્વેષ્યાઃ=દ્વોપસમ્બન્ધિનઃ નો 'સામુદ્દગા' સામુદ્રકાઃ=સમુદ્રસમ્બન્ધિન  
 ઈષમ્પુરોચાતાઃ પશ્ચાદ્વાતા યાવત્ મહાવાતા વાન્તિ તદા સ્વલ્લુ સર્વે દ્રોવદ્રવવૃક્ષા જીર્ણાઃ

ખંત શ્રમણો ! જિસ સમય સમુદ્ર સે ઉત્થિત પૂર્વે દિશા સંબંધી વાયુ  
 સ્વલ્પ પશ્ચિમ દિશા સંબંધી વાયુ, મન્દ વાયુ એવં મહા વાયુ ચલતી હૈ  
 ઉસ સમય કિતનેક જીર્ણ-પુરાને-શીર્ણદાવ દ્રવ વૃક્ષ શ્લોઢા-પત્ર પુષ્પાદિ  
 વર્જિત વૃક્ષ તો મ્લાન કે મ્લાન હી-શોભા રહિત હી સ્વદે રહતે હૈં ઔર  
 કિતનેક દાવ દ્રવ વૃક્ષ જો પત્ર પુષ્પો સે યુક્ત હોતે હૈં વે હરેમરે સુન્દર  
 હી પ્રતીત હોતે રહતે હૈં । ઇસી તરહ હે આયુષ્મન્ન શ્રમણો ! જો હમારા  
 નિર્ગ્રન્થ સાધુ એવં સાધ્વી જન પ્રવ્રજિત હોના હુઆ અનેક અન્યતીર્થિકો  
 કે અનેક ગૃહસ્થો કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો તો અચ્છી તરહ સે સહન કર  
 હેતા હૈ પરન્તુ અનેક શ્રમણ આદિકોં કે ચતુર્વિધ સંવ કે-વચનોં કો  
 સહન નહી કરતા હૈ-વહ મેરે દ્વારા દેશારાધક પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈ । ( સમ-  
 ના ઉસો ! જયા ણં નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદ્દગા ઈસિ પુરે વાયા પચ્છા

અને હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! ત્યારે સમુદ્ર ઉપર થઇને વહેતો આછો  
 પૂર્વ દિશાને પવન, મંદ પવન અને પ્રચંદ પવન કૂંકાય છે ત્યારે કેટલાક  
 ઇર્ષ્ય-જૂના, શીર્ષ્ય પાંદડાં અને પુષ્પો રહિત થયેલાં ઢાવદ્રવ વૃક્ષો મ્લાન થઇને  
 શોભાહીન થઇને જ ઊભાં રહે છે અને કેટલાક ઢાવદ્રવ વૃક્ષો જે પાંદડાંઓ  
 પુષ્પોવાળાં છે-લીલાંછમ અને સુંદર જ લાગે છે. આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત  
 શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુ અને સાધ્વીજન પ્રવ્રજીત થઇને ધણા  
 અન્યતીર્થિકોના ધણા ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂળ વચનોને સારી રીતે સમજી લઇને  
 સહન કરી લે છે પણ તેઓમાંથી શ્રમણ વગેરેના ચતુર્વિધ સંવના વચનોને  
 જે સહન કરતો નથી તે મારા વડે દેશારાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ થયો છે.

( સમણાઉસો ! જાયાણં નો દીવિચ્ચગા ણો સામુદ્દગા ઈસિ પુરે વાયા  
 પચ્છાવાયા જાવ મહાવાયા વાયંતિ વયાણં સન્ને દાદગા સ્વવા જુણા શ્લોઢા જાવ

શ્લોઢા યાવદ્ મ્હાન્તસ્તિષ્ઠન્તિ, અપ્યેકકાઃ=કૃતિપયાઃ યાવદ્ ઉપશોમમાનાસ્તિ-  
ષ્ઠન્તિ । એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ ! યાવત્ત પ્રવ્રજિતઃ સન્ત વહૂનાં શ્રમણાનાં ૪  
ચતુર્વિધસંજ્ઞસ્ય, વહૂનામ્ અન્યતીર્થિકચરુદ્ધસ્થાનાં વચનાનિ નો સમ્યક્ સદ્દતે, એ  
સ્વલ્લ પુરુષઃ 'મ' 'મયા' સર્વવિરાધકઃ પ્રજ્ઞત । શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ । યદા સ્વલ્લ  
'દીવિચ્ચગાવિ' દ્વૈષ્યા અપિ 'સામુદ્રગાવિ' સામુદ્રકા અપિ ઇપ્તપુરોવાતાઃ પથાદ્વાતા  
યાવદ્ વાન્તિ તદા સ્વલ્લ સર્વે દ્રાવદ્રવા વૃક્ષા પત્રિના યાવત્ શ્રિયા ઉપશોમમાનાઃ ૨  
તિષ્ઠન્તિ । એવમેવ હે શ્રમણા આયુષ્મન્તઃ ! યોઽસ્માકં યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ સન્ત વહૂનાં  
શ્રમણાનાં ૪=ચતુર્વિધસંજ્ઞસ્ય વહૂનામ્ અન્યતીર્થિકચરુદ્ધસ્થાનાં પ્રતિકૂલ વચનાનિ

વાયા જાવ મહાવાયા વાયન્તિ-તયાણં સર્વે દાવદવા દુક્ષત્રા જુળણા શ્લોઢા  
જાવ મિલાયમાણા ચિદ્દન્તિ, અપ્પેગદયા જાવ ઉવસોમેમાણા ચિદ્દન્તિ,  
એવામેવ સમણાડસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે વહૂણં સમાણાણં ૪ વહૂણં  
અન્નડત્થિયગિહ્થાણં નો સમ્મં સહ્ણ દસણં મ' પુરિસે સર્વ વિરાદિ' પળ્લન્તે ) હે આયુષ્મન્ શ્રમણો જિસ નમય ન તો દ્વોપોત્થ પૂર્વ દિશા  
સંબન્ધી સ્વલ્પ વાયુ'ં, પશ્ચિમ દિશા સંબન્ધી સ્વલ્પ વાયુ'ં, ધીરે ૨ ચલને  
વાલી વાયુ'ં એવં પ્રચંડ વેગ શાલી વાયુ'ં ચલતે હૈં ઓર ન સન્નુદોત્થ  
પૂર્વ દિશા સંબન્ધી સ્વલ્પ વાયુ'ં, પશ્ચિમ દિશા સંબન્ધી સ્વલ્પ વાયુ'ં  
ધીરે ૨ ચલને વાલી વાયુ'ં એવં પ્રચંડ વેગ શાલી વાયુ'ં ચલતે હૈં ડસ  
સમય ખી જીર્ણ શીર્ણ દાવદ્રવ વૃક્ષ મ્હાન હી રહતે હૈં-ઓર જો પત્ર  
પુષ્પાદિકો સે યુક્ત હોતે હૈં વે ખી જૈસે હોતે હૈં વૈસે હી વને રહતે હૈં  
હસી તરહ હે આયુષ્મન્ શ્રમણો ! જો હમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુજન એવં  
નિર્ગ્રન્થ સાધ્વી જન વીક્ષિત હોતા હુઆ ખી ચતુર્વિધ સંઘ કે ઓર

મિલાયમાણા ચિદ્દન્તિ, અપ્પેગદયા જાવ ઉવસોમેમાણા ચિદ્દન્તિ, એવામેવ સમણા-  
ડસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે વહૂણં સમાણાણં ૪ વહૂણં અન્નડત્થિયગિહ્થાણં નો  
સમ્મં સહ્ણ દસ ણં મ' પુરિસે સર્વ વિરાદિ' પળ્લન્તે )

હે આયુષ્મન્ શ્રમણો ! જ્યારે દ્વીપોના પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, પશ્ચિમ  
દિશાના પવનો ધીમે, ધીમે વહેતા પવનો, અને પ્રચંડ વેગથી ફૂંકાતા પવનો વહેતા  
નથી અને સમુદ્ર પર યથાને વહેતા પૂર્વ દિશાના આછા પવનો, ધીમે ધીમે વહે-  
નારા પવનો, અને પ્રચંડ વેગે ફૂંકાતા પવનો વહેતા નથી ત્યારે પથ્થુ છર્જી,  
શીર્ષુ દાવદ્રવ વૃક્ષો તે મ્હાન ( કરમાયેલાં ) રહે છે અને પત્રપુષ્પ વગેરેથી  
સંપન્ન દાવદ્રવ વૃક્ષો પથ્થુ બેવાં છે તેવાં જ રહે છે, આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્  
શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ સાધુઓ અને નિર્ગ્રન્થ સાધ્વીઓ વીક્ષિત થઈને

સમ્યક્ સહતે એવં સ્વભૂતઃ પુરુષ 'મ' મયા સર્વાધકઃ પ્રજ્ઞસઃ, એવં સ્વભૂતઃ=અનેન પ્રકારેણ હે ગૌતમ ! જીવા આરાધકા વા વિરાધકા મવન્તિ । સુધર્મા

અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થોં કે વચનોં કો અચ્છી તરહ સહન આદિ નહીં કરતા હૈ એસા યહ સાધ્વાદિજન મેરે દ્વારા સર્વ વિરાધક પ્રજ્ઞસ કિયા ગયા હૈ । ( સમણા ડસો ! જયાણં દીવિચ્ચગાવિ સામુદ્દગાવિ ર્હિંસિં પુરે વાયા પચ્છા વાયા જાવ વાયંતિ, તયા ણં સવ્વે દાવદ્વા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિદ્દંતિ, એવામેવ સમણા ડસો ! જો અમ્હં જાવ પવ્વત્તિં સમાણે વહૂણં સમણાણં ૪ વહૂણં અજ્ઞઝયણસ્સ ગિહ્થ્યાણં સમ્મં સહ્દ્દ એસણં મ' પુરિસે સવ્વારાહ' પણ્ણત્તે । એવં સ્વભૂત ગોયમા ! જીવા આરાહગા વા વિરાહગા વા મવંતિ, એવં સ્વભૂત જંબૂ ! સમણેણં મગવયા મહાવીરે ણં એકકારસમસ્સ અજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ ) હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જિસ સમય દ્વીપોત્થ મી તથા સમુદ્રોત્થ મી ર્હિષ્ટપુરોવાત પખાદ્વાત યાવત્ વહતે હૈં ડસ સમય પુણ્ણિત પત્તિત આદિ સમસ્સ દાવ-દ્રવ વૃક્ષ શોભા સંપન્ન હી બને રહતે હૈં । ર્હીસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમારા સાધુ સાધ્વીજન દીક્ષિત હોતા હુઆ અનેક શ્રમણાદિકોં કે-ચતુર્વિધ સંઘ કે-તથા અન્યતીર્થિક ગૃહસ્થોં કે પ્રતિકૂલ વચનોં કો અચ્છી તરહ સહન કર લેનો હૈ એસા સાધુ આદિ જન મેરે દ્વારા સર્વાધક

પથુ ચતુર્વિધ સંઘના અને બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના વચનોને સારી પેઠે સહન કરી લે છે. એવા સાધુ વગેરે જનો માત્ર વડે સર્વ-વિરાધક તરીકે પ્રજ્ઞસ કરવામાં આવ્યા છે

( સમણાડસો ! જયાણં દીવિચ્ચગાવિ સામુદ્દગા વિ ર્હિંસિં પુરે વાયા પચ્છા-વાયા જાવ વાયંતિ, તયા ણં સવ્વે દાવદ્વા રુક્ખા પત્તિયા જાવ ચિદ્દંતિ, એવા-મેવ સમણાડસો ! જો અમ્હં જાવ પવ્વત્તિં સમાણે વહૂણં સમણાણં ૪ વહૂણં અજ્ઞ-ઝયણિગિહ્થ્યાણં સમ્મં સહ્દ્દ એસણં મ' પુરિસે સવ્વારાહ' પણ્ણત્તે ! એવં સ્વભૂત ગોયમા ! જીવા આરાહગા વા વિરાહગા વા મવંતિ, એવં સ્વભૂત જંબૂ ! સમણેણં મગવયા મહાવીરેણં એકકારસમસ્સ અજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ )

હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! ન્યારે દ્વીપ અને સમુદ્ર ઉપરના પૂર્વ પશ્ચિમના ધીમા અને પ્રચંડ પવનો ફેંકાય છે ત્યારે પાંદડાં અને પુષ્પોવાળાં બધા દાવ-દ્રવ વૃક્ષો શોભા સંપન્ન થઈને જ જોવા રહે છે. આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા સાધુ અને સાધ્વીજન દીક્ષિત થઈને ઘણા શ્રમણો વગેરેના, ચતુર્વિધ સંઘના તેમજ બીજા તીર્થિક ગૃહસ્થોના પ્રતિકૂલ વચનો સાંભળીને

સ્વામી પ્રાહ-પૂર્વં સ્વહુ=પૂર્વોક્તપ્રકારેણ હે જમ્બુઃ ! અમળેન ભગવતા મહાવીરેણ  
યાત્રમિદ્ધિગતિં સંપ્રાપ્તેન એકાદશસ્થ અર્થ=પૂર્વોક્તપ્રકારઃ અર્થઃ=માત્રઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ।  
'ત્તિવેમિ' હતિ બ્રહ્મોમિ, હતિ પૂર્વવત્ ॥ સૂ. ૧ ॥

હતિ શ્રી-વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્બલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશભાષાકલિતકલિતક-  
લાપાલાપક-પ્રવિષ્ઠદ્વગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક-ત્રાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છ-  
ત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપદત્ત-'જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય' પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ-  
ગુરુ-બાલબ્રહ્મચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી-ધાસીલાલ-  
વ્રતિવિરચિતાયાં 'જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞ' સૂત્રસ્યાનગારધર્મામૃતવ-  
ર્ષિવ્યાખ્યાયાં વ્યાખ્યાયાં એકાદશમધ્યયનં સમાપ્ત ॥૧૧॥

રૂપ સે પ્રજ્ઞસ હુઆ હૈ । હસ પ્રકાર હે ગૌતમ ! જીવ આરાધક ઔર  
વિરાધક હોતે હૈ । સુધર્મા સ્વામી જંબૂસ્વામી સે કહતે હૈ કિ હે જંબૂ !  
હસ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અમળ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ સિદ્ધિ ગતિ કો  
પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈ ગ્યારહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ અર્થ પ્રજ્ઞસ ક્રિયા હૈ ।  
એસા મૈને તુમ સે જૈસા સુના હૈ વૈસા યહ કહા હૈ । હસ મેં નિજ કી  
કુઠ્ઠ મી કલ્પના નહી હૈ । સૂત્ર ॥ ૧ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ધાસીલાલજી મહારાજ કૃત "જ્ઞાતા-  
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર" કી અનગાર ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા કા ગ્યારહવાં  
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૧ ॥

સારી પેઠે સહન કરી હે છે એવા સાધુ જન વગેરે મારા વડે સર્વોપદેશક રૂપે  
પ્રજ્ઞસ થાય છે. આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! જીવો આરાધકો અને વિરાધકો  
હોય છે. સુધર્મા સ્વામી જંબૂ સ્વામીને કહે છે કે હે જંબૂ ! સિદ્ધિગતિ  
પ્રાપ્તેવા ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ અગિયારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર  
સુજીવનો અર્થ પ્રસ્તુત કર્યો છે. મેં જે રીતે સાંભળ્યો છે તે જ રીતે આ અર્થ તમારી  
સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે. એમાં મેં મારી તરફથી કંઈ જ ઉમેરું નથી. ॥ સૂત્ર "૧" ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ધાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગાર  
ધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું અગિયારમું અધ્યયન સમાપ્ત. ॥૧૧॥

## અથ દ્વાદશમધ્યયનં પ્રારમ્ભ્યતે—

ગતમેઠાદશમધ્યયનં, સાપતં દ્વાદશમારમ્ભ્યતે, પૂર્વસ્મિન્નધ્યયને ચારિત્રસ્યા-  
રાધકત્વં તદ્ વિરાધકત્વં ચ પ્રોક્તમ્. હહ તુ ઉદકદૃષ્ટાન્તેન મલીમસપરિણામપરિણ-  
મિતાન્તઃ કરણાનામપિ મળ્યાનાં સુગુરુપરિકર્મ તન્નાવિરાધકત્વં મન્વતીતિ પ્રદર્શ્યતે-  
અન્નૈદમાદિસૂત્રમ્—‘જહ્ણં મંતે’ इत्यादि ।

મૂલમ્—જહ્ણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં ઇકારસમસ્સ  
નાયજ્ઞયણસ્સ અયમં વારસમસ્સ ણં નાયજ્ઞયણસ્સ કે  
અદ્દે પપ્પત્તે ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं चंपा नाम  
नयरी पुण्णभदे चेइए जितसत्तू राया धारिणीदेवी, अदीण-

‘‘વારહર્વાં અધ્યયન પ્રારંભ’’

જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ પ્રધાન કા વર્ણન

ગ્યારહર્વાં અધ્યયન સમાપ્ત હો જુકા અબ વારહર્વાં અધ્યયન પ્રારંભ હોતા  
હૈ । હસ કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સંબંધ હૈ—પૂર્વ અધ્યયન  
મૈં જો જીવ ચારિત્ર કા પાલન કરતા હૈ વહ આરાધક ઔર જો હસસે  
વિપરીત ભાવ ચાલા હોતા હૈ વહ વિરાધક હૈ યહ પ્રકટ કિયા ગયા હૈ ।  
અબ હસ અધ્યયન મૈં ઉદક કે દૃષ્ટાન્ત સે યહ પ્રકટ કિયા જાયગા કિ  
જિન મધ્ય જીવોં કા અન્તઃ કરણ મલીન પરિણામોં સે પરિણત હો રહ્યા  
હૈ—પરન્તુ ડનમૈં યદિ સુગુરુ પરિકર્મના-ગુણ વિશેષ કા ગ્રહણ કરના હૈ  
તો ડસસે વહાં ચારિત્રારાધકતા ઓ જાતી હૈ ‘જહ્ણં મંતે !’ इत्यादि ।

જિતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ પ્રધાનનું બારમું અધ્યયન.

અગિયારમું અધ્યયન સમાપ્ત થઈ ચૂક્યું છે અને હવે બારમું અધ્યયન  
પ્રારંભ થાય છે. આનો પહેલાં અધ્યયનની સાથે આ પ્રમાણે સંબંધ છે કે  
પહેલાંના અધ્યયનમાં જે જીવ ચારિત્રનું પાલન કરે છે તે આરાધક અને જે  
ઓના વિપરીત ભાવનાળો હોય છે તે વિરાધક છે એ વાત સ્પષ્ટ કરવામાં આવી  
છે. આ અધ્યયનમાં ઉદકના દૃષ્ટાંતથી આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ થશે કે જે ભગ્ય  
જીવોનું અન્તઃકરણ ( અંતર ) ખરાબ પરિણામોથી પરિણત થઈ રહ્યું છે, પણ  
તેમનામાં જે સુગુરુ પરિકર્મતા ગુણ વિશેષનું ગ્રહણ કરવું છે તો ત્યાં ચારિત્ર-  
રાધકતા આવી જાય છે. જ હ ણં મંતે इत्यादि

સત્તુ નામં કુમારં જુવરાયા યાવિ હોત્થા, સુબુદ્ધી-અમચ્ચે  
 જાવ રજ્જધુરાચેતણ સમણોવાસણ, તીસેણં ચંપાણ ણયરીણ  
 બહિયા ઉત્તરપુરચ્છિમેણં ણમે પરિહોદણ યાવિ હોત્થા, મેય-  
 વસામંસરુહિરપૂયપડલપોચ્છડે મયગકલેવરસંછણે અમણુણે  
 વણ્ણેણં જાવ ફાસેણં, સે જહા નામણ અહિમડેહ વા જાવ  
 મયકુહિયવિણઢકિમિણવાવણ્ણદુરભિગંધે કિમિજાલાઉલે  
 સંસત્તે અસુહિવિગયવીભત્થદરિસણિજ્જે, ભવેયારૂવે સિયા ?,  
 ણો ઇણઢે સમઢે, ણત્તો અણિઢૂતરાણ ચેવ ફાસેણં વણ્ણત્તે ॥સૂ. ૧॥

ટીકા—જમ્બૂસ્વામીપ્રાઢ-યદિ સ્વલુ મદન્ત ! હે મગવન્ ! શ્રમણેન યાવત્સ-  
 મ્પ્રાપ્તેન એકાદશસ્થ જ્ઞાતાધ્યયનસ્યાયમર્થઃ પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ દ્વાદશસ્થ સ્વલુ  
 જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય કોડર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? શ્રો સુત્રમાસ્વામી કથયતિ—એવં સ્વલુ હે જમ્બૂ !  
 તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ચમ્પા નામ નગરી, પૂર્ણમદ્રં ચૈત્યં, જિતશત્રુરાજા,

જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામી સે પૂઢતે હૈ કિ ( જહ ણં મંતે !  
 સમણેણં જાવ સંપત્તે ણં એકકારસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમં બારસ-  
 મસ્સ ણં ણાયજ્ઞયણસ્સ કે અઢે વણ્ણત્તે ? એવં સ્વલુ જંબૂ ! ) હૈ મદન્ત !  
 યદિ શ્રમણ મગવાન મહાવીર ને કિ જો મિહિ ગતિ નામક સ્થાન કો  
 પ્રાપ્ત હો જુકે હૈં ગ્યારહવેં જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે ભાવ અર્થ  
 નિરૂપિત કિયા હૈ—તો કહિયે ડન્હોં ને બારહવેં જ્ઞાતાધ્યયનકા કયા અર્થ

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રીસુધર્મા સ્વામીને પ્રશ્ન કરે છે કે—

( જહ ણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણં એકકારસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમં  
 બારસમસ્સ ણં ણાયજ્ઞયણસ્સ કે અઢે વણ્ણત્તે ? એવં સ્વલુ જંબૂ ! )

હે મદન્ત ! સિદ્ધગતિ પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અગિયારમાં  
 જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તે તો તેઓશ્રીએ  
 બારમા અધ્યયનનો શો ભાવ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે હે જંબૂ સાંભળો તેઓ  
 શ્રીએ બારમા અધ્યયનનો જે રીતે અર્થ સ્પષ્ટ કર્યો છે તે આ પ્રમાણે છે—

धारिणीदेवी, अदीनशत्रुनाम कुमारः=जितशत्रुराजपुत्रः 'जुवराया' युवराजः= युवराजत्वेऽभिषिक्तश्चाप्यासीत् । सुबुद्धिर्नामाऽमात्यः औत्पत्तिकादिबुद्धि चतुष्टययुक्तः यावद् 'रञ्जधुराचितए' राज्यधुराचिन्तकः=राज्यमारचिन्तकः 'समणोवासए' श्रमणोपासकः=श्रावकोऽभिगतजीवजीवमासीत् । तस्याश्रमपाया नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये एकं 'परिहोदए' परिहोदकं परिखा=दुर्गस्य चतुर्दिक्षु रिपुप्रभृतीनां प्रवेष्टुमशक्या गच्छरूपावेष्टनाकारभूमिः, तत्र सम्मृतमुदकं परिहोदकं 'खाईजल' इतिभाषाप्रसिद्धं चाप्यासीत् । तस्कीदृशम् ? इत्याह—'मेयवसा'

प्ररूपित किया है ? । हे जंबू । सुनो—जो उन्होंने १२वें अध्ययनवा अर्थ निरूपित किया है वह इस प्रकार है—( तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी पुण्णभदे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नामं कुमारे जुवराया यावि होत्था ) उस काल और उस समय में चंपा नाम की नगरी थी । उसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था । उस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था । इस की धारिणी देवी नाम की रानी थी । अदीन शत्रु नाम का इस का पुत्र था । यह युवराज था । ( सुबुद्धी अमच्छे जाव रञ्जधुराचितए समणोवासए ) सुबुद्धि नाम का इस का अमात्य था । यह औत्पत्तिकी आदि चारों प्रकार की बुद्धि से संपन्न था । यावत् यही राज्यमार का चिन्तक था । जीव अजीव आदि तत्त्वों का यह ज्ञाना था और श्रमणोपासक था । ( तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे परिहोदए यावि होत्था ) उस चंपा नगरी के बाहर उत्तरपौरस्त्यदिग्भाग में—ईशानकोण में—परिहोदक—खाईमें जल भरा था । दुर्ग (किल्ला)के चारों ओर बाहरकी तरफ

( तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी पुण्णभदे चेइए जियसत्तू राया धारिणी देवी अदीणसत्तू नामं कुमारे जुवराया यावि होत्था )

ते क्षणे अने ते सभये चंपा नामे नगरी હતી તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતો. તે નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું. ધારિણીદેવી નામે તેની પત્ની હતી. તેના પુત્રનું નામ અદીનશત્રુ હતું. અને તે યુવરાજ હતો. ( સુબુદ્ધિ અમચ્છે જાવ રજ્જધુરા ચિત્તે સમણોવાસે ) સુબુદ્ધિ નામે તેના અમાત્ય ( મંત્રી ) હતો. તે ઔત્પત્તિકી વગેરે ચારે પ્રકારની બુદ્ધિસંપન્ન હતો અને રાજ્યનું શાસન તેના હાથમાં જ હતું. જીવ અજીવ વગેરે તત્ત્વોનું તેને જ્ઞાન હતું અને તે શ્રમણોપાસક હતો.

( ત્રીસેણં ચંપાએ ણયરીએ બહિયા ઉત્તરપુરચ્છિમેણં એગે પરિહોદએ યાવિ હોત્થા )

ચંપા નગરીની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિશામાં—ઇશાન કોણમાં—પરિખોદક ખાઈમાં પાણી ભર્યું હતું. દુર્ગની ચોમેર બહારની બાજુએ કોટની પાસે



इत्यादि, 'मेयवसामंसरुधिरपूयपटलपोच्चढं' मेदोवसामांसरुधिरपूयपटलपोच्चढं ' येदः=शरीरस्थधातुविशेषः, वसा=अस्थिगतस्निग्धधातुविशेषः, 'चर्वी' इति प्रसिद्धः मांसं=प्रसिद्धं रुधिरं=शोणितं, पूयं=विकृतरुधिरम्, तेषां पटलेन=समूहेन पोच्चढं=मिश्रितं सञ्जुद्धुदमित्यर्थः । 'मयगकलेवरसंछन्ने' मृतककलेवर संछन्नं=श्वमार्जारादिमृतकलेवरसंभृतम् । 'अमणुण्णं' अमनोहम्-अरुचिकरं वर्णेन 'जाव' यावत्-गन्धेन रसेन स्पर्शेन च मनोविकृतिजनकमित्यर्थः । तदेव सध्वान्तं प्रश्नोत्तरेण वर्णयति- 'से जहानामए' तद् यथा नामकम्-यथा दृष्टान्तम्-यथा- 'अहिमडेइवा' अहिमृतकमिति वा=सर्पमृतकम्, 'गोमडेइ वा' गोमृतकमिति वा 'जाव' यावत्-एव यावच्छब्देन-श्वमृतकं, मार्जारमृतकं, मनुष्यमृतकं, महिष-

उस से लगा हुआ एक गोलाकार बड़ी भारी खाई थी । इस की बजह से ज़ाब्रु उस दुर्ग-किल्ले में सहसा-एका एक प्रविष्ट नहीं हो सकते । इस में पानी भरा रहता है । इस का नाम खातिकोदक भी है । ( मेयवसामंसरुधिर-पूय-पटल-पोच्चढे मयगकलेवरसंछन्ने अमणुन्ने वण्णेण जाव फासेण-से जहा नामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मयकुहियविण्णहुकिमिणवावण्णहुरभिगंधे, किमिजालाउळे संसत्ते असुइविगयवीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारुवे सिया ? णोइण्ण्डे समडे एतो अणिट्तराए चेव जाव फासेणं पण्णत्ते यह परिखा का पानी, मेदावसा-चर्वी-मांस, रुधिर, पूय-पीव, के समूहसे मिश्रित था । कुत्ते, मार्जार आदि के मृत शरीरों से युक्त था । अरुचिकारक था गन्ध, रस एव स्पर्श से यह मनो विकृति जनक बना ) हुआ था । इसी बात को दृष्टान्त द्वारा प्रकट किया जाता है-जिस प्रकार मर जाने के बाद श्वमृतक-घरे हुए कुत्ते का कलेवर बिल्ली का

गोलाकार एक मोटी आर्ध छती तथी शत्रु कोऊकोऊ सरजताथी दुर्गभां भवे शवानि हिंमत करी शकता नछोता, तेषां पाष्ठी अरेहुं छतुं आनुं णीणुं नाम 'आतिकेदक' पणु छे.

( मेयवसा मंसरुधिरपूयपटलपोच्चढे मयगकलेवरसंछन्ने अमणुन्ने वण्णेण जाव फासेणं से जहानामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मय कुहिय विण्णहु किमिणवावण्णहुरभिगंधे, किमिजालाउळे संसत्ते असुइविगयवीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारुवे सिया ? णो इण्ण्डे समडे, एतो अणिट्तराए चेव जाव फासेणं पण्णत्ते )

आ परिभा-णाछनुं पाष्ठी पुष्कण प्रमाद्युभां मेदा, वसा, चरणी, मांस, रुधिर, दोही, पूय, -परुथी मिश्रीत छतुं कृतरा, गिलाडा वगेरेना मरी गथेला शोधोथी ते सुकृप छतुं. ते अरुचिकारक छतुं अने गंध, रस तथा स्पर्शथी मनोविकृतिजनक छतुं. ओ न वात दृष्टांत वडे अही रजु करवाभां आवे छे. नैम मरी गथा पक्षी श्वमृतक मरी गथेला कृतरानुं कलेवर (शरीर) गिलाडीनुं कलेवर,

મૃતકં, મૃષકમૃતકમ્, અશ્વમૃતકં, હસ્તિમૃતકં, સિંહમૃતકં, વ્યાગ્રમૃતકં, વૃકમૃતકં= વૃકઃ 'મેહિયા' इति પ્રસિદ્ધઃ-શ્વાપદવિશેષસ્તસ્ય મૃતકલેવરમ્, દ્વીપિકમૃતકં= દ્વીપિકઃ=ચિત્રકઃ 'ચીતા' इति પ્રસિદ્ધઃ શ્વાપદવિશેષસ્તસ્ય મૃતશરીરમ્, इति સંગ્રાહમ્, કીદશાવસ્થાપન્નં તદહિમૃતાદિકમ્ ? इत्याह--'મયકુહિયવિળદ્દ કિમિળવાવળ્લદુરભિગંધે' મૃતકુચિતત્રિનિષ્ક્રમિમદ્ વ્યાપન્નદુરભિગન્ધમ્=મૃતં= જીવવિમુક્તમાત્રમેવ કુચિતં પ્રતિતં, વિનષ્ટં=સ્વાકારતો નષ્ટં વાયુજલમરણેન દત્તિ- વત્સ્યુલતાહ્ણપગતમિત્યર્થઃ, ક્રમિવત્=ચિરકાલિકત્વાત્ક્રમિસંકુલમ્, અતएव વ્યાપન્નં= સર્વદિક્ પ્રસૃતં દુરભિગન્ધમ્=અતિશયદુર્ગન્ધયુક્તમ્ । 'કિમિજાલાઝલે' ક્રમિજાલા-

કલેવર, મનુષ્ય કા કલેવર મહિષ મૈસે કા કલેવર, ચુહા કા કલેવર, ઘોડે કા કલેવર, હાથી કા કલેવર, સિંહ કા કલેવર, વ્યાગ્ર કા કલેવર, વૃક કા કલેવર, દ્વીપિક કા કલેવર કુચિત, વિનષ્ટ, ક્રમિમત, વ્યાપન્ન એવં દુરભિગંધ યુક્ત ક્રમિજાલાકુલ-કીડોં સે વ્યાસ તન્મય, અશુચિં, વિકૃત એવં બીભત્સ, દ્રશ્ય રૂપ હો જાતે હૈં-સોં ઇન સબ સે મી અધિક અનિષ્ટતર-અત્યંત ઘૃણા જનક-બહુ સ્વાદ કા જલ થા । મરને કે બાદ શરીર જો સડને લગ જાતા હૈં હસ કા નામ કુચિત હૈં । વાયુ ઓર જલ કે ભર જાને સે જિસ પ્રકાર મશક ફૂલ જાતી હૈં ઉસી પ્રકાર જીવ રહિત હોને કે બાદ જો શરીર ફૂલ જાતો હૈં હસ કા નામ વિનષ્ટ હૈં । હસ સ્થિતિ મેં બહુ પદાર્થ અપને પૂર્વાકાર સે મિત્તાકાર વાલો હો જાતા હૈં । જો શરીર બહુત દિનોં તક જીવ રહિત પડા રહતા હૈં ઉસ મેં સડ જાને કી વજહ સે કીડે પડ જાતે હૈં-હસ કા નામ ક્રમિમત્ હૈં । જિસ મેં સે

માણસનું કલેવર, પાણનું કલેવર, ઉદરનું કલેવર, ઘોડાનું કલેવર, હાથીનું કલેવર, સિંહનું કલેવર, વાઘનું કલેવર, વરુનું કલેવર અને દ્વીપડાનું કલેવર, કુચિત, વિનષ્ટ, કીડાઓવાળું, વ્યાપન્ન અને દુરભિ-ગંધયુક્ત ક્રમિઓથી આક્રાંત કીડાઓથી વ્યાપ્ત-તન્મય, અશુચિ વિકૃત અને બીભત્સ દ્રશ્યવાળું થઈ બાંધ છે તેમ એના કરતાં પણ વધુ અનિષ્ટતર અત્યંત ઘૃણાજનક તે ખાઈનું પાણી હતું. મરણ પછી શરીર સડવા માંડે છે તેને 'કુચિત' કહે છે. જેમ પવન અને પાણીથી ભરાએલી મશક ફૂલીને મોટી થઈ બાંધ છે તેમજ નિર્જીવ થયેલું શરીર પણ કુલાઈને મોટું થઈ બાંધ છે તેનું નામ 'વિનષ્ટ' છે. પદાર્થની વ્યારે આવી સ્થિતિ થાય છે ત્યારે તે પહેલાંના આકાર પ્રકારથી સાવ શિથિ આકાર વાળો થઈ બાંધ છે. શરીર બહુ દિવસો નિર્જીવ થઈને મહાના ફપમાં પડી રહે છે ત્યારે તે સડી બગાડી તેમા કીડાઓ પડી બાંધ છે, અને ક્રમિમત્ કહે છે.

કુલં = કૃમિપુજ્યુત્તં યત્ર તન્નાવયવે પુજ્ઞીભૂતકૃમિવ્યાપ્તમ્, અતएव 'સંસક્તં' સંસક્તં તન્મયમિત્યર્થઃ, 'અમુદ્ વિગયવીમત્યદરિસણિજ્ઞં' અશુચિવિકૃતવીમત્સ-દર્શનીયમ્ અશુચિ=અસ્પૃશ્યત્વાદપવિત્રં, વિકૃત=વિકારયુત્તં, વીમત્સ=ઘૃણિતં દર્શનીયં=દૃશ્યં यस્ય તત્તથોક્તમ્ 'एयારુવેસિયા' एतद्रूपं स्यात्-કિમ્ અદ્વિમૃતાદિ-સદૃશં સ્યાત્-અસ્તિ ?, इति प्रश्नो भवेत् भगवानाह-'नो इण्ढे समद्वे' નાયમર્થઃ સમર્થઃ-નૈતાદૃશં કિન્તુ-' एत्तो ' एतस्मादपि अणिद्धतराए चैव 'अनिष्टतरमेव अत्यन्तघृणाजनकं यावत् स्पर्शेन प्रप्लुप्तम् ॥ सू० १ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સે જિયસત્તુ રાયા અપ્પણયા કયાઈં પહાણ કાયબલિકમ્મે જાવ અપ્પમહગ્ગાભરણાલંકિયસરીરે વહૂહિં રાઈ-સર જાવ સત્થવાહપભિઈહિં સદ્ધિં ભોયણવેલાણ ભોયણમંડવંસિ સુહાસણવરગણ વિપુલં અસણં જાવ વિહરતિ, જિમિયમુત્તુચ-રાગણ આયંતે ચોક્ખે પરમસુદ્ધમૂયે તંસિ વિપુલંસિ અસણં જાવ જાયવિમ્મહણ તે વહવે રૂસર જાવ પમિદ્ધણ એવં વયાસી-અહો ણં દેવાણુપ્પિયા ! इमे मणुण्णे असणं वण्णेणं उववेए जाव फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे विहणिज्जे सव्विदियगायपल्लहाय-णिज्जे, તણ્ણં તે વહવે રૂસર જાવ પમિદ્ધઓ જિયસત્તુ એવં વયાસી-તહેવ ણં સામી ! जणं तुवमे वयइ अहो णं इमे मणुण्णे असणं वण्णेणं उववेए जाव पल्लहायणिज्जे, તણ્ણં

ચારોં ઓર દુર્ગંધ ફેલ રહી હો उस का नाम दुरभिगंध है । सब जोने के बाद जिस के अंग उपांग सब तरफ बिखरे हुए पड़े हों उस का नाम व्यापक हैं । यहां मृतक शब्द से जीव रहित शरीर लिया गया है । सूत्र ॥१॥

જેમાંથી ચોમેર દુર્ગંધ પ્રસરી રહે છે તેને 'દુરભિગંધ' કહે છે. મરદું સડી બાથ છે અને તેનાં બધાં અંગો ઉપાંગો ચોમેર વિખેરાઈ બાથ તેને 'વ્યાપક' કહે છે. અહીં મૃતક શબ્દથી નિર્જીવ શરીર સમજવું બોધાયે. ॥ સૂત્ર "૧" ॥

जितसत्तु सुबुद्धिअमच्चं एवं वयासी-जहा णं सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असणं४ जाव पल्हायणिज्जे, तएणं सुबुद्धी जितसत्तु-स्सेयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं जिय-सत्तु सुबुद्धिं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-अहो णं सुबुद्धी ! इमे मणुत्ते तं चैव जाव पल्हायणिज्जे, तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चंपि तच्चंपि एवंवुत्ते समाणे जितसत्तुं रायं एवं वयासी-नो खल्लु सामी ! अम्हं एयंसि मणुण्णंसि असणं ४ केइ विम्हए, एवं खल्लु सामी ! सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भिसद्दाए परिणमंति दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दाए परिणमंति, सुरूवावि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति दुरूवावि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति सुब्भिगंधावि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति दुब्भिगंधावि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति सुह्मफासावि पोग्गला दुह्मफासत्ताए परिणमंति दुह्मफासावि पोग्गला सुह्मफासत्ताए परिणमंति पओगवीससापरिणयावि य णं सामी ! पोग्गला पणत्ता, तएणं से जितसत्तु सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स४ एयमट्ठं नो अढाइ नो परियाणई तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं से जिय-सत्तु अणगया कयाई ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचरगर आसवाहणियाए निजायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ । तएणं जितसत्तु तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं

नभेणं अभिभूय समाणे सणं उत्तरिज्जणेणं आसगं पिहेइ,  
 एगंतं अवक्कमइ, अवक्कमिच्चा ते बहवे ईसर जाव पभिइओ  
 एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए ! अमणुण्णे  
 वण्णेणं ४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए  
 चेव तएणं ते बहवे राईसरपभिइओ जाव एवं वयासी—तहेव  
 णं तं सामी ! जं णं तुब्भे एवं वयह, अहो णं इमे फरिहोदए  
 अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा णामए अहिमडेइवा जाव  
 अमणामतराए चेव, तएणं ते बहवे राईसर पभिइओ जाव एवं  
 वयासी—तहेव णं तं सामी ! जं णं तुब्भे एवं वयह, अहो णं  
 इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा नामए अहिमडेइ  
 वा जाव अमणामतराए चेव, तएणं से जियसत्तु सुबुद्धिं अमच्चं  
 एवं वयासी—अहो णं सुबुद्धि ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे  
 वण्णेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए,  
 चेव, तएणं सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए संचिइइ, तएणं  
 से जियसत्तु राया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी  
 --अहो णं तं चेव, तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रत्ता  
 दोच्चंपि तच्चंपि एवं बुत्ते समाणे एवं वयासी—नो खलु  
 सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए, एवं खलु  
 सामी ! सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दाए परिणमंति, तं  
 चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य णं सामी ! पोग्गला  
 ण्णत्ता, तएणं जियसत्तु सुबुद्धिं एवं वयासी—मा णं तुमं

देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं वा वट्ठहिं य अस-  
 ब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाप-  
 माणे विहराहि, तएणं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-अहो  
 णं जियसत्तु संते तच्चे ताहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते  
 भावे णो उवलभति, तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं  
 तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं  
 अभिगमणद्वयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्ताए, एवं संपेहेइ, संपे-  
 हित्ता पच्चंतिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडएय  
 गेणहइ, गेणिहत्ता संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि णिसं-  
 णपडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवाग-  
 च्छित्ता तं फरिहोदगं गेणहावेइ गेणहावित्ता नवएसु घडएसु  
 गालावेइ गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ पक्खिवा-  
 वित्ता लंछियमुद्धिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ  
 दोच्चंपि नवएसु घडएसु, गालावेइ गालावित्ता नवएसु घड-  
 एसु पक्खिवावेइ पक्खिवावित्ता सज्जक्खारं पक्खिवावेइ  
 लंछियमुद्धिते करावेइ करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ तच्चंपि  
 णवएसु घडएसु जाव संवसावेइ एवं खलु एएणं उवाएणं  
 अंतरा गालावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतराय विपरि-  
 वसावेमाणे २ सत्तर राईदिया विपरिवसावेइ, तएणं से  
 फरिहोदए सत्तमसत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि  
 होत्था अँच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेणं उववेइ

४ आसायणिज्जे जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्जे, तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवा०२ करयलंसि आसादेइ आसादित्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं४ आसायणिज्जे जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठत्तुं बहूहि उदगसंभारणिज्जेहि संभारेइ संभारित्ता जितसत्तूस्स रण्णो पाणियघरियं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी तुमं च णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं गेणहाहि२ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि, तएणं से पाणियघरिय सुबुद्धियस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता तं उदगरयणं गिणहाइ गिणित्ता जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ, तएणं से जियसत्तू राया तं विपुलं असणं४ आसाएमाणे जाव विहरइ, जिमियभुत्तत्तरागए यावि य णं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरयणे जायविम्हए ते बहवे राईसर जाव एवं वयासी-अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विदियगायपल्हायणिज्जे तएणं बहवे राईसर जाव एवं वयासी-तहेव णं सामी ! जणं तुब्भे वदह जाव एवं चेव पल्हाणिज्जे, तएणं जियसत्तू राया पाणियघरियं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-एस णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसादिते ?, तएणं से पाणियघरिए जियसत्तू एवं वयासी-एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसाइए तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-अहो णं सुबुद्धी केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे५ जेणं तुमं मम कल्लाकल्लि

भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ? तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणं कओ उवलद्धे?, तएणं सुबुद्धी जिय-सत्तुं एवं वयासी-- एसणं सामी ! से फरिहोदए, तएणं से जियसत्तु सुबुद्धि एवं वयासी--केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए?, तएणं सुबुद्धी जियसत्तु एवं वयासी-एवं खलु सामी ! तुम्हे तथा मम एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं नो सदहह तएणं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पजित्था, अहोणं जियसत्त संते जाव भावे नो सदहइ नो पत्तिथइ नो रोएइ तं सेयं खलु ममं जियसत्तूस्स रत्तो संताणं जाव सम्भूयाणं जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए, एवं संपे-हेमि २ तं चेव जाव पाणियघरियं सदावेमि सदावित्ता एवं वयासी--तुमं णं देवाणुप्पिया ! उदगरयणं जियसत्तूस्स रत्तो भोयणवेलाए उवणैहि, तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए । तएणं जियसत्तु राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमा-इक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं नो सदहइ ३ असदहहमाणे ३ अर्बिभतर-द्वणिज्जे पुरिसे सदावेइ २ एवं वयासी--गच्छहणं तुब्भे देवाणु-प्पिया ! अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदग-संभारणिज्जेहिं दउवेहिं संभारेह तेऽवि तहेव संभारेति संभा-रित्ता जियसत्तूस्स उवणैति, उवणित्ता तएणं जियसत्तु राया तं उदगरयणं करयलंसि आसापइ आसायणिज्जं जाव सव्विदियगा-यपल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धि अमच्चं सदावेइ सदावित्ता एवं



वयासी-सुबुद्धी ! एएणं तुमं संता जाव सब्भूया भावा कओ उवलद्धा !, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं वयासी-एएणं सामी ! मए संता जाव सब्भूया भावा जिणवयणाओ उवलद्धा, तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी-तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामेत्तए, तएणं सुबुद्धी जियसत्तूस्स विचित्तं केवलिपन्नत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तमाइक्खइ जहा जीवा वज्झंति जाव पंचअणुव्वयाइं, तएणं जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठं सुबुद्धिअमच्चं एवं वयासी -सदहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पाववणं३ जाव से जहेव जं तुब्भे वयह, तं इच्छामिं णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवा-णुप्पिया ! मा पडिवंधं० तएणं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमब्-स्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडि-वज्जइ, तएणं जियसत्तू समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ, सुबुद्धी धम्मं सोच्चा जं नवरंजियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी-एवं खल्लु सामी ! मए थेराणं अंतिए धम्मं इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अहं सामी संसारभउविग्गे भीए जाव इच्छामिणं तुब्भेहि अब्भणुत्ताए स० जाव पव्वइत्तए, तएणं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी-अच्छासु ताव देवाणु-

पिया ! कइवयाइति वासाइं उरालाइं जाव भुंजमाणा तओ  
 पच्छा एगयओ अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो, तएणं  
 सुबुद्धी जियसत्तुस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, तएणं तस्स जियसत्तुस्स  
 सुबुद्धीणा सज्जिं विपुलाइं माणुस्स० पच्चणुब्भवमाणस्स दुवा-  
 लसवासाइं वीइकंताइं. तेणं कालेणं२ थेरागमणं तएणं जिय-  
 सत्तु धम्मं सोच्चा एवं जं नवरं देवाणुप्पिया ! सुबुद्धिं आमं-  
 तेमि, अहासुहं, तएणं जियस जेणेव सए गिहे तेणेव उवा-  
 गच्छइ उवागच्छित्ता सुबुद्धिं. सहावेइ सहावित्ता एवं वयासी-  
 एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुमं णं  
 किं करेसि ?, तएणं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी-जाव के अन्ने  
 आहारे वा जाव पव्वयामि, तं जइणं देवाणुप्पिया जाव पव्व-  
 यहि तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेइपुत्तं च कुडुंभे ठावेहि  
 ठावित्ता सीयं दुरुहित्ताणं भमं अंतिए पाउब्भवइ, तएणं जिय-  
 सत्तु कोडुंबियपुरिसे सहावेइ सहावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं  
 तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उव-  
 डवेह जाव अभिसिंचंति जाव पव्वइए. तएणं जियसत्तु एक्का-  
 रस अंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे  
 तएणं सुबुद्धी एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि जाव  
 सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया सहावीरेणं बारस-  
 मस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिबेमि ॥ सू० ५ ॥

॥ बारसमं नाअज्झयणं समत्तं ॥

टीका-‘तएणं से’ इत्यादि। ततः खलु स जितशत्रू राजा=चम्पाधिपतिः अन्यदा

कदाचित्=एकदा स्नातः 'कयबलिकम्मे' कृतबलिकम्मे=कृत वायसाधर्म्यमन्नादि विभागः यावद् अल्पमहार्घामरणाकृतशरीरः बहुभिः राजेश्वर यावत् सार्धवाह प्रभृतिभिः सार्धं भोजनवेलायां भोजनमण्डपे सुखासनवरगतो विपुलम् अशनम्=अन्नादिकं, पानं=पानीयमपाणकादिकं, खाद्यं=द्राक्षावाद्यामादिकं स्वाद्यं=लवंगं पूगीफलादिकं चतुर्विधमप्याहारमास्वादयन् 'जाव विहरइ' यावत् विस्वादयन्, परिभोगयन्, परिमाज्यमानः, परिभुञ्जानो विहरति । 'जिमियभुत्तुचरागए'

'तएणं से जियसत्तू राया' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से जियसत्तू राया) वे जितशत्रु राजा (अन्नया कयाइं) किसी एक समय (जहाए कयबलिकम्मे जाव अप्प महग्घा भरणालंक्रियसरीरे बहूहिं राइसर जाव सत्थवाहपभिर्हिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयण मंडवंसि सुहासणवरगए विउलं असणं ४ जाव विहरइ) स्नान करके तथा बलिकर्म—वायस आदि के लिये अन्नादि का विभाग—देन करके अल्प भारवाले बहुसूक्ष्म अलंकारोंको पहिने हुए भोजन करने के समय में भोजन शाला में सुन्दर आसन पर आफग बैठ गये। उस समय उनके साथ में और भी अनेक राजेश्वर आदि सार्धवाह पर्यन्त समस्त जन थे। वहाँ इन सबके साथ वे वहाँ आशनपान आदि चारों प्रकार का आहार करने लगे। अन्नादिक अशन पीने योग्य पदार्थ पान, द्राक्षा वादाम आदि स्वाद्य एवं लवंग सुपारी आदि स्वाद्य है।

'तएणं से जियसत्तू राया' इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपणी (से जियसत्तू राया) ते अतशत्रु राजा (अन्नया कयाइं) केहिं वण्णते -

(जहाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घामरणालंक्रियसरीरे बहूहिं राइसर जाव सत्थवाहपभिर्हिं सद्धिं भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए विउलं असणं ४ जाव विहरइ)

स्नान करीने तेमज्ज अलिकम्मे ओटले के कागडा वगेरे पक्षीआने भाटे अन्न वगेरेने। लाग अपीने वज्जनमां हलका पण्डु किंमतमां बहु लादे ओवा अलंकारे धारण करीने जमवाना समये रसेहिं घरमां आनीने सुंदर आसन उपर भेसी गया। ते वण्णते तेमनी साथे भीज केटलाकं राजेश्वर अने सार्ध-वाडे वगेरे हत्ता। राजा तेओ अधानी साथे भेसीने अशन पान वगेरे चार जातना आडाशे जमवा लाग्या। अन्न वगेरे अशन, पीवा योग्य पदार्थ पान, द्राक्ष, अदाम वगेरे भाद्य अने लविंज—सोपारी वगेरे स्वाद्य छे,

जिमितशुक्लोत्तरागतः—जिमितः=शुक्लवान्, शुक्लोत्तरं= भोजनानन्तरम् आगत = उपवेशनस्थानं प्राप्तः, किम्भूतः सन् ? इत्याह—‘आयंते’ आचान्तः शुद्धोदकेन कृतचुलुकः, ‘चोक्खे’ चोक्षः=सिक्खादिछेपरहितः, अतएव ‘परमसुइभूए’ परमशुविभूतः = परमशुद्धः तस्मिन् त्रिषुछेऽशनपानस्वाद्यस्वाद्ये यावद् ‘जाय-विम्हए’ जातविस्मयः=समुत्पन्नपरमाश्चर्यो जितशत्रू राजा तान् बहून् ईश्वर यावत्-प्रभृतीन्-ईश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिक-श्रेष्ठि सेनापति सार्थवाह प्रभृतीन् एवमवदत्-अहो ! खलु हे देवानुप्रिया ! इदं ‘मणुण्णे’ मनोज्ञं=सर्वथा

(जिमियशुत्तुत्तरागए आयंते चोक्खे परमसुइभूए तंसि विउलंसि असण ४ जाव जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पमिइए एवं वयासी) जब अच्छी तरह भोजन हो चुका-वे सबके सब बैठक में आये। बैठक में आने के पहिले ये हाथ लुँह धोकर बिलकुल साफ हो चुके थे। अन्नादिकके सीत जो इनके हाथ पैरों में कहीं २ पड़ गये थे-उन्हें जल से इन्होंने साफ कर दिया था-धो दिया था। इस तरह परम शुचीभूत होकर राजाने उस विपुल आशन, पान, स्वाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में विस्मित आश्चर्ययुक्त बन कर उन ईश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठी, सेनापति एवं सार्थवाह आदिकों से इस प्रकार कहा—(अहोणं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असणं ४ वण्णेणं उववेए जाव फासे णं उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे, दीवणिज्जे, दप्पणिज्जे मयणिज्जे, विहणिज्जे, सन्विदियगाय पल्हायणिज्जे) देवानु-

(जिमियशुत्तुत्तरागए आयंते चोक्खे परमसुइभूए तंसि विउलंसि असण- ४ जाव जायविम्हए ते बहवे ईसरजाव पमिइए एवं वयासि)

ज्यांरे तेज्जा सरस रीते एस थधने ज्मी रह्वा त्यांरे तेज्जा सवें छेठ-कमां आव्वा छेठकमां आवतां पछेलां तेज्जा ह्वाथ त्वां घोधने स्वच्छ थधं शुक्क्या ह्वा. अन्न वगेरेना डाव्वा तेभना शरीर उपर ज्मती वभते पडी गया ह्वा तेज्जाने पाव्वाथी घोधने साक्षं कर्था. आ रीते जेकहम पवित्र थधने पुच्छण प्रभाणुमां तैयार करवामां आवेला अशन, पान, स्वाद्य अने स्वाद्यरूप आर लतना आहादेशी नवाध पावेला राजजे भील साथे रहेला छ्मिर, तलवर, मांड बिक, कौटुम्बिक, श्रेष्ठ, सेनापति अने सार्थवाह वगेरेने आ प्रभाणु कहुं छे-

(अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असणं ४ वण्णेणं उववेए जाव फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीयणिज्जे, दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे विहणिज्जे सन्विदियगाय पल्हायणिज्जे)

મનસ્વસિકરમ્ અશનં પાનં શ્વાદ્યં સ્વાદ્યં વર્ણેન=શુભવર્ણેન ઉપપેતં યાવત્ સ્પર્શેનોપપે-  
તમ્, ' આસાયણિજ્જે ' આસ્વાદનીયમ્=આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' વિસ્સાયણિજ્જે ' વિસ્વાદનીયં=વિશેષત આસ્વાદનયોગ્યમ્, ' પીણિજ્જે ' પીણનીયં=સમસ્તેન્દ્રિય  
પ્રીતિजनकम्, ' દીવણિજ્જે ' દીપનીયં = જઠરાગ્નિદીપનકં શરીરસૌન્દર્યजनकं वा,  
' દપ્પણિજ્જે ' દર્પનીયં=વલ્લजनकम्, મયણિજ્જે ' મદનીયં=કામોદીપકમ્ ' વિઠ્ઠ-  
ણિજ્જે ' વૃઠ્ઠનીયં=સકલધાતુપચયजनकम्, સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રદાદનીયં=સકલેન્દ્રિય-  
શરીરસુલ્લजनकं वर्तते । તતઃ સ્વલુ તે વઢવઃ ईश्वर યાવત્ સાર્થશાહમ્ભૂતયો જિત-  
શત્રું પ્રત્યેયમવદન્ 'તહેવં' તથૈવ તાદૃશમેવ સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! યત્સ્વલુ વૃયં વઢય,  
અહો ! સ્વલુ इदं मनोज्ञमशनं पानं श्वाद्यं स्वाद्यं चतुर्विधमप्याहारं वर्णेन उपपेतं

પ્રિયો ! મનકો તૃપ્તિ કરને વાળા યદ્ અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર  
કિતને અન્હે શુભવર્ણ સે યુક્ત થા, કિતને અન્હે શુભ સ્પર્શ સે યુક્ત  
થા કિતના અન્હા આસ્વાદનીય એવં વિશેષરૂપ સં સ્વાદનીય થા હસે  
લાકાર સમસ્ત હિન્દ્રિયાં તૃપ્ત હો ગઈ હૈં । યદ્ જઠરાગ્નિ કા દીપક હૈ, અ-  
થવા શારીરિક સૌન્દર્ય કા જનક હૈ । વલવર્ધક હૈ । કામોદીપક હૈ ।  
હસે લાને વાલે કી સમસ્ત ધાતુએ ઉપચિત્ત હો જાતી હૈ । સમસ્ત હિન્દ્રિ-  
યોં એવં શારીર કો હસકે લાને સે આનન્દ પહુંચ રહા હૈ । તાતર્યં યદ્  
ચતુર્વિધ આહાર વઢા હી આશ્ચર્યકારક હૈ ( તણે તે વહેવે હસર જાવ  
પમિદ્હઓ જિયસત્તુ એવં વયાસી ) ઓર અધિક કયા કહૂં યદ્ તો વહુન  
હી અધિક ઉત્તમ થા । રાજા કી હસ પ્રકાર વાત સુનકાર ડન ईश्वर  
આદિ અનેક સાર્થવાહોંને ડન જિતશત્રુ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા (તહે  
વ ણં સામી ! जणं तुम्हे वदह-अहो णं इमे मणुण्णे असणं ४ वर्णेणं

હે દેવાનુપ્રિયો ! મનને તૃપ્ત કરનારો આ અશન વગેરેનો આર ભતનો  
આહાર કેટલો શુભ વર્ણવાળો હતો, કેટલો બધો શુભસ્પર્શવાળો હતો, કેટલો  
સરસ આસ્વાદનીય અને સવિશેષરૂપથી સ્વાદનીય હતો. આ આહારને જમીને  
ધન્દ્રિયો બધી તૃપ્ત થઈ ગઈ છે. આ જઠરાગ્નિને ઉદીપક છે તેમજ શારીરિક  
સૌન્દર્યમાં વૃદ્ધિ કરનાર છે. બળવર્ધક અને કામોદીપક છે. એને જમવાથી  
બધી ધાતુઓ ઉપચિત્ત ( વૃદ્ધિ પામવું ) થઈ જાય છે. આ આહારથી બધી  
ધન્દ્રિયો તેમજ શરીરને આનંદની પ્રાપ્તિ થાય છે. મતલબ એ છે કે આ  
આર ભતના આહારો બહુ જ નવાઈ પમાડે તેવા છે. ( તણે તે હસર જાવ  
પમિદ્હઓ જિયસત્તુ એવં વયાસી ) અને વધારે શું કહી શકીએ. તે બહુ જ  
ઉત્તમ હતો એમાં તો જરાએ શંકા નથી. રાજાની આ વાત સાંભળીને તે  
ઇશ્વર વગેરે ઘણા સાર્થવાહોંએ તે જિતશત્રુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

( તહેવ ણં સામી ! जणं तुम्हे वदह-अहो णं इमे मणुण्णे असणं ४ वर्णेणं

યાવત્ સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીયમસ્તિ । તતઃ સ્વલ્પ સુબુદ્ધિરમાત્યો જિતશત્રોરેત-  
મર્થ નો આદ્રિયતે યાવત્ તૂષ્ણીકઃ=સન્મૌનઃ સંતિષ્ઠતે । તતઃ સ્વલ્પ જિતશત્રુઃ સુબુ-  
દ્ધિમમાત્યં દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિવારમેવમવાદીત્-અહો ! સ્વલ્પ હે સુબુદ્ધે ! इदं  
મનોજ્ઞં તદેવ યાવત્સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીયમ્, તતઃ સ્વલ્પ સ સુબુદ્ધિરમાત્યઃ જિત-  
શત્રુણા દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ વારમેવમુક્તઃ સન્ જિતશત્રુ રાજાનમેવમવાદીત્-નો  
ઉવવેષ્ જાવ પલ્હાયણિજ્જે ) હાં સ્વામિન્ ! જૈસા આપ કહતે હૈં આહાર  
વૈસા હી થા । વહ્ વડો હી મનોજ્ઞ એવં શુભવર્ણ સે યુક્ત થા । યાવત્  
સમસ્ત શરીર એવં ઇન્દ્રિયોં કો આનન્દ પહુંચાને વાલા થા । ( તણ  
જિતસત્ત્વ સુબુદ્ધિં અમચ્ચં એવં વચાસી ) અપની વાત કા હિશ્વર આદિ  
સમસ્ત જનોં દ્વારા સમર્થન પ્રાપ્ત કર રાજા ને અપને અમાત્ય સુબુદ્ધિ સે  
મી યહી વાત કહી કિ ( અહો ણં સુબુદ્ધી-इमे मणुण्णे असणं ४ जाव  
પલ્હાયણિજ્જે ) હે સુબુદ્ધે કહો, મનોજ્ઞ ચતુર્થિવ અશનાદિ રૂપ યહ  
આહાર કિતના અચ્છા શુભ વર્ણોપેત યાવત્ પ્રહ્લાદનીય થા । ( તણ  
સુબુદ્ધી જિયસત્ત્વસ્સેયમટ્ઠં ણો આઢાઙ્, જાવ તુસિણીણ સંચિટ્ઠઈ ) હિસ  
પ્રકાર રાજા દ્વારા આહાર કો પ્રશંસા સુનકર ઉસ સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને  
રાજા કી હિસ વાતકી અનુમોદના નહીં કી-પ્રત્યુત વહ સુનકર સુપચાપ  
હી બેઠા રહા-( તણ જિયસત્ત્વ સુબુદ્ધિં દોચ્ચં પિ તચ્ચં પિ એવં વચાસી

ઉવવેષ્ જાવ પલ્હાયણિજ્જે )

હા સ્વામિન્ ! ખરેખર જેમ તમે કહો છો તેમ આહાર પણ એવો જ  
હતો તે ખૂબ જ મનોજ્ઞ અને શુભવર્ણ વાળો હતો યાવત્ સંપૂર્ણ શરીર અને  
ઇન્દ્રિયોને આનંદ પમાડનાર હતો. ( તણ જિતસત્ત્વ સુબુદ્ધિ અમચ્ચં એવં  
વચાસી ) પોતાના કથન વિશે ઇશ્વર વગેરે બધાઓથી સમર્થન પ્રાપ્ત કરીને  
રાજાએ પોતાના અમાત્ય ( મંત્રી ) સુબુદ્ધિને પણ એજ વાત કહી દે

( અહોણં સુબુદ્ધી इमे मणुण्णे असणं ४ जाव पल्हायणिज्जे )

હે સુબુદ્ધિ ! બતાવો, મનોજ્ઞ ચાર બાતનો અશન વગેરે રૂપ આ આહાર  
કેટલો બધો શુભવર્ણી સુકૃત યાવત્ આનંદ આપનાર હતો.

( તણ સુબુદ્ધી જિયસત્ત્વસ્સેયમટ્ઠં ણો આઢાઙ્, જાવ તુસિણીણ સંચિટ્ઠઈ )

આ રીતે રાજાના મુખેથી આહાર વિશેનાં વખાણ સાંભળીને સુબુદ્ધિ  
અમાત્યે તો તેમની વાત ને ટેકો આપ્યો નહિ પણ તે માત્ર મૂળો થઇને  
બેસી જ રહ્યો

તણ જિયસત્ત્વ સુબુદ્ધિં દોચ્ચં પિ તચ્ચં પિ એવં વચાસી-અહો ણં સુબુદ્ધી ! इमे

खलु हे स्वामिन् ! अस्माकमेतस्मिन् मनोज्ञे-अशनपानखाद्यस्वाद्ये कोऽपि विस्मयः, एवं खलु हे स्वामिन् ! सुम्भिसद्वा सुरमिशब्दाः=प्रशस्तशब्दा अपि पुद्गलाः शुभाः शब्दपुद्गला अपील्यर्थः ' दुग्भिसद्वाए ' दुरमिशब्दतया परिणमन्ति, दुरमिशब्दा अपि पुद्गलाः=अशुभाः शब्दपुद्गला अपि सुरमिशब्दतया=शुभशब्दतया परिणमन्ति ।

-अहो णं सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तू रायं एवं वयासी ) अमात्य सुबुद्धि को चुप चाप बैठा देखकर जितशत्रु राजाने दुबारा एवं तिबारा भी इसी तरह से कहा-हे सुबुद्धे ! यह मनोज्ञ चतुर्विध आहार किनना अच्छा शुभवर्णोपेत यावत् समस्त शरीर एवं इन्द्रियों को आनन्द पहुँचा ने वाला था । इस प्रकार दुबारा तिबारा जितशत्रु राजा द्वारा कहे गये सुबुद्धि अमात्य ने उन जितशत्रु राजा से इस प्रकार कहा-( नो खलु सामी अम्हं एयंसि मणुण्णंसि असणं ४ केइं विम्हए-एवं-खलु सामी सुम्भिसद्वावि पुग्गला दुग्भिसद्वाए परिणमन्ति, दुग्भिसद्वावि पोग्गला सुम्भिसद्वाए परिणमन्ति ) स्वामिन् ! मुझे इस मनोज्ञ अशनादिरूप चतुर्विध आहार में कोई आश्चर्य नहीं हो रहा है । कारण कि जो जो शुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे अशुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं और जो अशुभ शब्द रूप पुद्गल होते हैं वे शुभ शब्द पुद्गल रूप से परिणम जाते हैं ।

मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे-तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तूणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तू रायं एवं वयासी )

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચૂપચાપ બેઠેલા બેઠને જિતશત્રુ રાજાએ બીજી ત્રીજી વાર પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું કે હે સુબુદ્ધે ! આ મનોજ્ઞ ચાર ભતનો આહાર કેટલો બધો સ્વચ્છ શુભવર્ણોપેત યાવત આખા શરીર અને ઇન્દ્રિયોને આનંદ આપનાર છે. આ રીતે બે ત્રણ વાર જિતશત્રુ રાજા વડે પૂછાયેલા સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાને કહ્યું કે

( નો खलु सामी अम्हं एयंसि मणुण्णं सि असणं ४ केइं विम्हए एवं खलु सामी सुम्भिसद्वा वि पुग्गला दुग्भि सद्वत्ताए परिणमन्ति दुग्भि सद्वावि पोग्गला सुम्भि सद्वत्ताए परिणमन्ति )

હે સ્વામિન્ ! આ મનોજ્ઞ અશન વગેરે ચાર ભતના આહાર વિશે મને કંઈ નવાઈ બેવી વાત જણાતી નથી કેમ કે જે શુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે અશુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ જાય છે, અને જે અશુભ શબ્દ રૂપ પુદ્ગલો હોય છે તે શુભ શબ્દ પુદ્ગલ રૂપમાં પરિણમિત થઈ

સુરૂપા અપિ પુદ્ગલાઃ દૂરૂપતયા=કૃત્સિતરૂપતયા પરિણમન્તિ દૂરૂપા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરૂપતયા પરિણમન્તિ । સુભિગંધા અપિ પુદ્ગલાઃ શુભગન્ધવન્તઃ પુદ્ગલા અપિ દુરભિગન્ધતયા પરિણમન્તિ, દુરભિગન્ધા અપિ પુદ્ગલાઃ સુરભિગન્ધતયા=સુગન્ધરૂપેણ પરિણમન્તિ । સુરસા અપિ=શુભરસવન્તોઽપિ પુદ્ગલાઃ દૂરસતયા=અશુભરસતયા=પરિણમન્તિ, દૂરસા અપિ પુદ્ગલા સુરસતયા શુભરસરૂપેણ પરિણમન્તિ । શુભસ્પર્શા અપિ પુદ્ગલાઃ દુસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ, દુસ્પર્શા અપિ પુદ્ગલા શુભસ્પર્શતયા પરિણમન્તિ । 'પઓગ-

હસી તરહ ( સુરૂવા વિ પોગ્ગલા દુરૂવત્તાપ પરિણમંતિ પરિણમંતિ ) જો અશુભ રૂપ વાળે પુદ્ગલ હોતે હૈં વે શુભરૂપ સે પરિણમ જાતે હૈં ઓર જો શુભરૂપ સે પરિણમે હુપ પુદ્ગલ હોતે હૈં વે અશુભ રૂપ સે પરિણમ જાતે હૈં । ( સુભિગંધાવિ પોગ્ગલા દુભિગંધત્તાપ પરિણમંતિ, સુરસાવિ પોગ્ગલા દુરસત્તાપ પરિણમંતિ, દુરસાવિ પોગ્ગલા સુરસત્તાપ પરિણમંતિ, દુહ્વકાસાવિ પોગ્ગલા સુહ્વકાસત્તાપ પરિણમંતિ, પઓગ્ગવીસ-સા પરિણયા વિ ય ણં સામી પોગ્ગલા પળ્ણત્તા ) જો પુદ્ગલ સુરભિ ગંધ રૂપ સે પરિણમે હુપ હોતે હૈં વે હી પુદ્ગલ દુરભિ ગંધ રૂપ સે પરિણમ જાતે હૈં । હસી તરહ જો પુદ્ગલ શુભરસરૂપ સે પરિણમે હુપ હોતે હૈં વે હી પુદ્ગલ કૃત્સિતરૂપ સે પરિણમ જાતે હૈં ઓર જો કૃત્સિત રૂપ વાળે પુદ્ગલ હોતે હૈં વે હી શુભરસ રૂપવાળે પુદ્ગલ બન જાતે હૈં । જો પુદ્ગલ શુભ સ્પર્શ રૂપ સે પરિણમે હુપ હોતે હૈં વે હી પુદ્ગલ અશુભ સ્પર્શ રૂપ સે પરિણમ

નથ છે આ પ્રમાણે ( સુરૂવા વિ પોગ્ગલા દુરૂવત્તાપ પરિણમંતિ... ..... પરિણમંતિ ) જે અશુભ રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ શુભ રૂપમાં પરિણમિત થઈ નથ છે અને જે શુભ રૂપમાં પરિણત થયેલા પુદ્ગલો હોય છે તેઓ અશુભ રૂપમાં પરિણત થઈ નથ છે

( સુભિગંધા વિ પોગ્ગલા દુભિગંધત્તાપ પરિણમંતિ, સુરસાવિ પોગ્ગલા દુરસત્તાપ પરિણમંતિ, દુરસાવિ પોગ્ગલા સુરસત્તાપ પરિણમતિ દુહ્વકાસા વિ પોગ્ગલા સુહ્વકાસત્તાપ પરિણમંતિ, પઓગ્ગવીસસા પરિણયા વિ ય ણં સામી પોગ્ગલા પળ્ણત્તા )

જે પુદ્ગલો સુરભિગંધ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ દુરભિગંધ રૂપમાં પરિણત થઈ નથ છે. આ રીતે જે પુદ્ગલો સુરસ રૂપમાં પરિણત થયેલા છે તે પુદ્ગલો જ કૃત્સિત ( ખરાબ ) રૂપમાં પરિણત થઈ નથ છે. અને જે કૃત્સિત રૂપ વાળા પુદ્ગલો હોય છે તે પુદ્ગલો જ સુરસ રૂપ વાળા પુદ્ગલો થઈ નથ છે જે પુદ્ગલો શુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ અશુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થઈ નથ છે અને જે



વીસસાપરિણ્યાવિ' પ્રયોગવિસસા પરિણતા અપિ, પ્રયોગેણ=પ્રયોગપરિણામેન જીવ-  
કૃતઘ્યાપારેણ વિસસયા=વિસસાપરિણામેન સ્વભાવેનૈવ ચ પરિણતાઃ=એકાવસ્થાયા  
અવસ્થાન્તરં પ્રાપ્તાઃ સુશબ્દાદયઃ પુદ્ગલાઃ દુઃશબ્દાદિત્વેન દુઃશબ્દાદયશ્ચ સુશ-  
બ્દાદિરુપેણ પરિણતા इत्यर्थः પુદ્ગલાઃ સ્વલુ મન્વીતિ દે સ્વામિન્ ! પ્રજ્ઞાઃ=મગ-  
વતા કથિતાઃ । તતઃ સ્વલુ સ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધેરમાત્યસ્ય એવમ્=ઉત્કરુપેણ ' આ-  
સ્ત્રમાણસસ ' આચક્ષાણસ્ય=કથયતઃ, એતમ્=પૂર્વોક્તમ્ અર્થમ્=શબ્દાદિપુદ્ગલાનાં  
શુભાશુભપરિણામરૂપં ભાવં નો આદ્રિયતે=તદ્વાક્યસ્યાऽऽદરંન કરોતિ, નો પરિજ્ઞા

જાતે હૈં ઓર જો પુદ્ગલ અશુભ સ્પર્શ રૂપ મેં પરિણમે હુપ હોતે  
હૈં વે હી પુદ્ગલ શુભસ્પર્શરૂપ મેં પરિણમ જાતે હૈ । હસ પ્રકાર કા  
પરિણમન પુદ્ગલોં મેં જીવકૃત વ્યાપારરૂપ પરિણામ સે ઓર સ્વાભાવિક  
રૂપ સે હોતા રહતા હૈ । એક અવસ્થા સે અવસ્થાન્તર કી પ્રાપ્તિ  
પ્રત્યેક સમય પ્રત્યેક દ્રવ્ય મેં હોતી રહતી હૈ । હસ પરિણમન સે કોઈ  
ભી દ્રવ્ય અછૂતા નહીં હૈ । હસી પરિણામ કા નામ સ્વાભાવિક  
પરિણમનં હૈ । યહ વાત પ્રમુને સ્વયં પ્રતિપાદિત કી હૈ । ( તર્ણ સે  
જિતસત્ સુબુદ્ધિસ્ત અમચ્ચસ્ત એવાસ્ત્રમાણસસ ૪ એમદં નો  
અઢાઈ, નો પરિયાણઈ, તુસિણીપ સંચિદ્દઈ, તર્ણ સે જિયસત્ અળ્ળ  
યા કયાઈ ણ્હાપ આસસ્થંધવરગપ મહયા મહચઢગર આસવાહિનીયાપ  
નિજ્જોયમાણે તસ્સ ફરિહોદગસસ અદૂરસામંતેણં વીહવયઈ ) અમાત્ય  
સુબુદ્ધિ કી હસ વાદ કો સુનકર જિતશત્રુ રાજા ને હસકી હસ  
વાત કા આદર નહી કયા-હસકી વાતકો સ્વીકાર નહી કયા । કેવલ

પુદ્ગલો અશુભ સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થયેલા હોય છે તે પુદ્ગલો જ શુભ  
સ્પર્શ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે આ જાતનું પુદ્ગલોમાં પરિણમન એવકૃત  
વ્યાપાર રૂપ પરિણામથી અને સ્વાભાવિક રૂપમાં થતું રહે છે એક અવસ્થા-  
માંથી અવસ્થાન્તરની પ્રાપ્તિ દરેક સમયે દરેક દ્રવ્યમાં થતી રહે છે આ પરિણમન  
એકે એક દ્રવ્ય માટે ચોક્કસ પણે સમજવું બેઠએ દરેકે દરેક દ્રવ્યમાં આ  
જાતનું પરિણમન થતું જ રહે છે. પ્રભુએ સ્વયં આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે.

( તર્ણ સે જિતસત્ સુબુદ્ધિસ્ત અમચ્ચસ્ત એવાસ્ત્રમાણસસ ૪ એમદં  
નો અઢાઈ નો પરિયાણઈ, તુસિણીપ સંચિદ્દઈ, તર્ણ સે જિયસત્ અળ્ળયા કયાઈ  
ણ્હાપ આસસ્થંધવરગપ મહયા મહચઢગરઆસવાહિનીયાપ નિજ્જોયમાણે તસ્સ  
ફરિહોદગસસ અદૂરસામંતેણં વીહવયઈ )

અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સાંભળીને જીતશત્રુ રાજાએ તેના કથનનો  
આદર કર્યો નહિ, ક્રોધે સાંભળીને તે વ્યથાપ બેસી જ રહ્યો. એક દિવસે

नाति=नाझीकरोति तूष्णीकः संतिष्ठते=मौनमालम्ब्यस्थित इत्यर्थः । ततः खलु स-  
जितशत्रुन्यदा कदाचित्=एकस्मिन् प्रस्तावे स्नातः=कृतस्नातः अश्वस्कन्धवरगतः  
=जात्याश्वष्टपृष्ठारूढः 'महया मडचडगर०' महाभटचडकरपहकरद्वन्दपरिक्षिप्तः  
'आसवाहणियाए' अश्ववाहनिकायाम्=अश्ववाहनक्रीडायां 'निज्जायमाणे' नि-  
र्यान्=निर्गच्छन् तस्य=पूर्वोक्तस्य परिखोदकस्य=परिखाजलस्य अदूर सामन्तेन=  
पार्श्वभागेन व्यतिव्रजति । ततः तदा खलु जितशत्रु राजा परिखोदकस्य=पूर्वोक्त-  
विशेषणविशिष्टस्य अशुभेन गन्धेन 'अभिभूए समाणे' अभिभूतः=व्याकुलित-  
चित्तः सन् स्वकेन=स्वकीयेन उत्तरीयकेण=उत्तरीयवस्त्रेण 'दुपट्टा' इतिप्रसिद्धेन  
आर्य्य=सामीप्यसंयोगात्नासिकां पिदधाति, एकान्तमपक्रामति=दूरतो भूत्वा ग-  
च्छति अपक्राम्य तान् बहून् राजेश्वर यावत् प्रभृतीन्=राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक

सुनकर चुपचाप ही बैठा रहा । एकदिन जितशत्रु राजा रानान से निश्चित  
होकर घोड़े पर बैठकर अश्वक्रीडा करने के निमित्त घर से बाहर  
निकला । उनके साथर महाभटों का समुदाय भी चल रहा था । चलते  
२ वे उसी परिखोदक (खाई)के पाससे होकर निकले । (तएणं जियसस्स  
तस्स फरिहोदगस्स असुमेणं गंधेणं अभिभूए समाणे सएणं उत्तरिज्जेणं  
आसग पिहई, एगंत अवक्कमइ, अवक्कमिप्ता, ते बहवे ईसर जाव  
पमिइओ एवं वयासी-अहोणं देवाणुप्पिया । इमे फरिहोदए अमणुण्णे  
वण्णेणं ४ से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएणं  
ते बहवे राईसर पमिइओ एवं वयासी ) इतने में उन जितशत्रु राजाने  
उस परिखोदक की अशुभ गंध से अभिभूत होकर अपने दुपट्टे से अ-  
पनी नासिका को ढक लिया । और फिर वे ढककर वहां से दूर होकर

एतशत्रु राजा रानान करीने घोडा छपर सवार थया अने अश्वक्रीडा करवा  
भाटे बेरथी छडार नीकल्या. तेभनी साथे साथे भडान छोटोने समुदाय पणु  
आलतो छतो आलता आलतां तेओ ते अ परिजोदक-आध-नी पास थधने नीकल्या

( तएणं जितसच्चू तस्स फरिहोदगस्स असुमेणं गंधेणं अभिभूए समाणे सएणं  
उत्तरिज्जेणं आसग पिहई एगंत अवक्कमइ अवक्कमिप्ता ते बहवे ईसर जाव  
पमिइओ एवं वयासी-अहोणं देवाणुप्पिया । इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं  
४ से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव तएणं ते बहवे राई सर  
पमिइओ एवं वयासी )

एतशत्रु राजाओ परिजोदक-आध-नी अराण गंधथी व्यापुण थधने  
पोताना जेसथी नाकने ढांकी दीधु. अने तयार भाड तेओ आधनी पासथी

કૌટુંબિક-શ્રેષ્ઠી-સેનાપતિ સાર્થવાહાદીન્ એવમાદીત્-અહો ! સ્વલ્પ હે દેવાનુ-  
પ્રિયા : ! ક્રીદ્ય્મ્ इदं પરિચ્છોદકમમનોજ્ઞ વર્ણેન ગન્ધેન રસેન સ્પર્શેન, તદ્ યથાના-  
મકમ્ । તથાહિ-અહિમૃતકમિતિ વા યાવદ્ એતસ્માદપિ અનિષ્ટતરઅમનોજ્ઞતરમન-  
આમતરકમેવાસ્તિ । તતઃ સ્વલ્પ તે દહનો રાજેશ્વરપ્રમૃતયો યાવદેવમવાદિષુઃ-તથૈવ  
સ્વલ્પ તત્ હે સ્વામિન્ ! યત્સ્વલ્પ યુયમેવં વદય-અહો ! સ્વલ્પ इदं પરિચ્છોદકમમનોજ્ઞ  
વર્ણેન રસેન ગન્ધેન સ્પર્શેન, તદ્ યથા નામકમ્-તથાહિ-અહિમૃતકમિતિ વા યાવદ્

ચલને લગે । ચલતે ૨ ઝન્ટોને અપને સાથ રહે હુએ રાજેશ્વર ૨, તલવર,  
માડમ્બિક, કૌટુંબિક, શ્રેષ્ઠી, સેનાપતિ, એવં સાર્થવાહ આદિસે કહા હે  
દેવાનુપ્રિયો ! દેલો-યહ પરિચ્છોદક(સ્વાઈકા જલ)વર્ણસે ગંધસે, રસસે એવં  
સ્પર્શસે કિતના અધિક અમનોજ્ઞ વન રહા હૈ । જૈસે મરે હુએ સર્પ આદિકે  
સઢે વિનષ્ટ આદિ અવસ્થાપન્ન કલેવર કી ડુર્ગંધ આતી હૈ-અસ સે ખી  
અધિક તર અનિષ્ટ ડુર્ગંધ હસ જલ કી આ રહી હૈ । રાજા કી હસ  
પ્રકાર વાત સુનકર ડન રાજેશ્વર આદિ સમસ્ત જનોં ને હસ પ્રકાર  
કહા-( તહેવ ણં સામી ! જં ણં તુઝમે એવં વયહ, અહો ણં હમે ફરિહો-  
દા, અમણુણે વળેણં ૪ સે જહા નામપ અહિનહેઈ વા જાવ અમણામ  
તરાપ ચેવ, તણં સે જિયસત્તુ સુવુદ્ધિ અમચ્ચં એવં વયાસી-તણં  
સુવુદ્ધી અમચ્ચે જાવ તુસિણીં સંચિદ્ધહ ) હે સ્વામિન્ ! આપ જૈસા  
કહતે હૈં યહ પરિચ્છોદક વૈસા હી વર્ણ, રસ, ગંધ, ઔર સ્પર્શ સે અમ-

હર ખસીને ચાલવા લાગ્યા ચાલતાં ચાલતાં તેમણે પોતાની સાથેના રાજેશ્વર,  
તલવર, માડમ્બિક, કૌટુંબિક, શ્રેષ્ઠી સેનાપતિ અને સાર્થવાહ વગેરેને કહ્યું કે  
હે દેવાનુપ્રિયો ! તુઝો આ પરિચ્છોદક-ખાઈ-વજીથી, ગંધથી, રસથી, અને  
સ્પર્શથી કેટલી બધી અમનોજ્ઞ-ખરાબ-લાગે છે. મરેલા સાપ વગેરેના સડી  
ગયેલા વિનષ્ટ વગેરે અવસ્થાપન્ન કલેવર ( શરીર ) ની બેવી ડુર્ગંધ હોય છે  
તેના કરતાં પણ વધારે ખરાબ ગંધ આ પાણીમાંથી આવી રહી છે. રાજાની આ  
પ્રમાણે વાત સાંભળીને રાજેશ્વર વગેરે બધાઓએ આ પ્રમાણે કહ્યું—

( તહેવ, ણં સામી ! લં ણં તુઝમે એવં વયહ અહો ણં હમે ફરિહોદા અમણુણે  
વળેણં ૪ સે જહાનામપ અહિનહેઈ વા જાવ અમણામતરાપ ચેવ, તણં સે જિય-  
સત્તુ સુવુદ્ધિ અમચ્ચં એવં વયાસી-તણં સુવુદ્ધી અમચ્ચે જાવ તુસિણીં સંચિદ્ધહ )

હે સ્વામિન્ ! તમે કહો છો તેવી જ વજી, રસ, ગંધ અને સ્પર્શથી  
અમનોજ્ઞ આ ખાઈ છે. મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના કલેવરોના બેવી

અમનઆમતરકમેવાસ્તિ । તતઃ સ્વલ્લ સ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધિમઆત્યમેવમશ્વાદીત્-અહો ! સ્વલ્લ હે સુબુદ્ધે ! इदं परिखोदकममनोज्ञं वर्णेन ४, कीदृशम् ? इत्याह-‘ से जहा नामए ’ तद् यथा नामकं=यथादृष्टान्तं निरूप्यते-अहिमृतकमिति वा यावद् एतस्मादपि=अहिमृतकादिभ्योऽपि अनिष्टतरम् अमनोज्ञतरम् अमनआमतरमेव वर्त्तते । ततः स्वल्ल स सुबुद्धिरमात्यो यावत् तूष्णीकः संतिष्ठते । ततः स्वल्ल स जितशत्रू राजा सुबुद्धिरमात्यं द्वितीयमपि तृतीयमपि वारमेवमश्वदीत्-अहो ! स्वल्ल ‘ तं चेव ’ तदेव पूर्ववदेव राजा वदति । ततः तदनन्तरं स्वल्ल स सुबुद्धिरमात्यो जितशत्रुणा

નોજ્ઞ હૈ । જેસે મરે હુए सर्पादिक के सड़े आदि अवस्थापन्न कलेवर से दुर्गंध आती है उसी तरह की इस से भी अधिक अनिष्टतर असह्य दुर्गंध इस से आ रही है । इस प्रकार अपनी बात का समर्थन प्राप्तकर जितशत्रु राजा ने अपने सुबुद्धि अमात्य प्रधान से कहा- हे सुबुद्धे ! यह परिखोदक वर्ण, रस, गंध, और स्पर्श से बिलकुल अमनोज्ञ बन रहा है । जिस प्रकार मरे हुए सर्प आदि के सड़े गले आदि अवस्था पन्न कलेवर से अधिक अनिष्ट तर दुर्गंध निकलती है उससे भी अधिक अनिष्टतर दुर्गंध इससे निकल रही है । इस प्रकार अपने राजाकी बात सुनकर सुबुद्धि अमात्य ने उसका आदर नहीं किया-उसे स्वीकार नहीं किया केवल चुपचाप ही रहा । ( तएणं से जियसत्तूराया सुबुद्धि अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-अहोणं तंचेव, तएण से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तू रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एवंवुत्ते समाणे एवं वयासी नो स्वल्ल सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ चिम्हए, एवं

અનિષ્ટતર, અસહ્ય દુર્ગંધ આવે છે તેના કરતાં પણ વધારે ખરાબ આ દુર્ગંધ છે. આ રીતે પોતાની વાતનું સમર્થન પ્રાપ્ત કરીને છત્રશત્રુ રાજાએ પોતાના સુબુદ્ધિ અમાત્ય પ્રધાનને કહ્યું કે હે સુબુદ્ધે ! આ પરિખોદક-આર્ધ-વર્ણ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શમાં એકદમ અમનોજ્ઞ-ખરાબ-ધર્ધ ગંધ છે. મરીને સડી ગયેલા સાપ વગેરેના અવસ્થાપન્ન કલેવરો-શરીરો-થી જેવી અનિષ્ટતર દુર્ગંધ આવે છે તેના કરતાં પણ વધુ અનિષ્ટતર-ખરાબ-દુર્ગંધ આ આર્ધ-માંથી આવી રહી છે. આ રીતે રાજાની વાત સાંભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેનો આદર કર્યો નહિ, તેનો સ્વીકાર કર્યો નહિ પણ ચૂપચાપ થઈને જ ચાલતો રહ્યો.

( તएणं से जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी अहोणं तंचेव तएणं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तूणा रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी नो स्वल्ल सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ चिम्हए,

રાજા દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ વારશ્વ એવશ્યુત્તઃ=સન્ એવમવદત્-નો સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! મમ એતસ્મિન્ પરિશોદકે કોઽપિ વિસ્મયઃ, કથમ્ ? इत्याह-एवं स्वलु हे स्वामिन् ! सुरमिशब्दाः=शुभशब्दा अपि पुद्गलाः शुभा अपि शब्दपुद्गला इत्यर्थः ' दुग्भिसदृत्ताए ' दुरमिशब्दतया=अशुभशब्दतया परिणमन्ति एवं ' तं चेव ' तदेव सर्वं रूपरसगन्धस्पर्शसम्बन्धिनः शुभाः अपि पुद्गला अशुभरूपादितया परिणमन्तीत्यर्थः यावत् प्रयोगवित्तसा परिणता जीवकृतप्रयोगेण स्वभावत एव वा परिवर्त्तनशीलाः अपि च स्वलु हे સ્વામિન્ ! પુદ્ગલાઃ પ્રજ્ઞસાઃ મગવદ્ધિઃ કથિતાઃ ।

સ્વલુ સામી ! સુગ્મિ સદ્વાચિ પોગ્ગલા દુગ્મિ સદ્વાચિ પરિણમંતિ, તંચેવ જાવ પઓગવીસસા પરિણયાચિ ય ણં સામી ! પોગ્ગલા પળ્ળાન્તા ) અમાત્ય કો ચુપચાપ બેઠા હુતા દેવકર જિતશત્રુ રાજા ને ઉસ અમાત્ય સુબુદ્ધિ સે દુબારા ઔર તિબારા મી પહિલે હી જૈસા કહા ઇસ તરહ દુબારા તિબારા જિતશત્રુ રાજા દ્વારા કહે ગયે ઉસ સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને ઈસા કહા કિ સ્વામિન્ । હમે ઇસ પરિશ્વા કે ઉદક મેં કોઈ આશ્ચર્ય નહી હો રહા હૈ કારણ કિ જો પુદ્ગલ પહિલે શુભ શબ્દ રૂપ સે પરિણમે હુએ હોતે હૈં વે હી કાલાન્તર મેં પ્રયોગ ઔર વિત્તસા પરિણામ સે અશુભ શબ્દ રૂપ પરિણમ જાતે હૈં । ઇસ તરહ જૈસા ઉસને મનોજ્ઞ ચતુર્વિધ આહાર કે વિષય મેં પહિલે પ્રતિપાદન કિયા હૈં વૈસા હી યહાં પર મી ઉસને પ્રતિપાદિત કિયા । પુદ્ગલોં કા યહ ઇસ તરહ કો પરિણમન મેં અપની નિજ કલ્પના સે નહી કહ રહા હૂં પ્રત્યુત્ત ઇસ મેં વીતરાગ પ્રમુ કી આજ્ઞા હૈં । ઉન્હોં ને ઇસી તરહ કા પૌદ્ગલિક પરિણ-

एवं स्वलु सामी ! सुग्मि सद्वाचि पोग्गला दुग्मिसदृत्ताए परिणमंति तं चेव जाव पओगवीससा परिणयाचि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता )

અમાત્ય સુબુદ્ધિને ચુપચાપ જોઇને રાજા જીતશત્રુએ બીજી અને ત્રીજી વાર પહેલાંની જેમ જ કહ્યું. પૂછાએલા સુબુદ્ધિ અમાત્યે રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ! આ ખાઇના પાણીમાં અને કંઈ નવાઈ જેવું લાગતું નથી કેમકે જે પુદ્ગલો પહેલાં શુભ શબ્દ રૂપમાં પરિણત થયેલાં હોય છે તે પુદ્ગલો જ કાલાન્તરમાં પ્રયોગ અને વિત્તસા (સ્વાભાવિક રીતના) પરિણામથી અશુદ્ધ શબ્દ રૂપમાં પરિણત થઈ જાય છે. આ રીતે અમાત્યે મનોજ્ઞ આર જાતના આહારો વિશે જે જાતના વિચારો રજૂ કર્યા હતા તે જ જાતના વિચારો આ અશુભ રૂપ ખાઈ જોઈને પણ પ્રકટ કર્યો. અમાત્યે રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે પુદ્ગલોના આ રીતે પરિણમનની વાત મારી પોતાની કલ્પનાથી પણ વીતરાગ પ્રભુની જ એ આજ્ઞા છે. તેઓશ્રીએ પૌદ્ગલિક પરિણમન આ રીતે જ પોતાની દેશના વડે નિરૂપિત કર્યો છે.

ततः खलु जितशत्रु सुबुद्धिम् एवमवादीत्—मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! आत्मानं=स्वकं च परम्=अन्यं च तदुभयं=स्वपररूपं समकमेव वा बहोभिश्च ' असम्भावु-  
म्भावणाहिं ' असद्भावोद्भावनाभिः असत्ताम्=अविद्यमानानां भावानां=वस्तुधर्माणां  
या उद्भावनाः=प्रतिपादनास्ताभिः=वस्तुस्वरूपान्यथा प्रतिपादनरूपाभिः ' मिच्छ-  
त्ताभिणिवेसेण य ' मिथ्यात्वामिनिवेशेन=विपर्यासावशेन च अज्ञानावेशेनेत्यर्थः  
' बुग्गाहेमाणे ' व्युद्ग्राहयन्=विविधप्रकारेणोत्कृष्टतया चान्यं ग्राहयन् ' बुष्पाए-  
माणे ' व्युत्पादयन्=व्युत्पत्तिजनयन् विहर=अशुद्धप्ररूपणां कुर्वन् मा तिष्ठेत्यर्थः ।

मन अपनी देशना द्वारा प्ररूपित किया है । ( तएणं जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासी-माणं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं वा बहूहि य असम्भावुम्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य बुग्गाहेमाणे बुष्पाहेमाणे विहराहि, तएणं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए-अहो णं जियसत्तू संते तच्चे तहिए अवितहे सम्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवल्लभंति ) इस प्रकार सुनकर जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान से इस तरह कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम इस तरह की असद्भावनोद्भावक वचनों से—अविद्यमान वस्तु धर्मों की प्रतिपादनाओं से—वस्तु का जो स्वरूप विद्यमान नहीं है—उस स्वरूप को उस वस्तु में विद्यमानता का प्रतिपादन करने वाली वाणियों से एवं मिथ्यात्वामिनिवेश आग्रह से इस तरह की प्ररूपणा मत करो, न स्वयं को इस प्रकार को प्ररूपणा से वासित करो और न दूसरों को इस तरह की झूठी २ प्ररूपणाओं से अपने फंदे में फसाओ और न अपने को और न दूसरों को एक ही

( तएणं जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासी-माणं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं वा बहूहि य असम्भावुम्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य बुग्गाहेमाणे बुष्पाएमाणे विहराहि तएणं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो णं जियसत्तू संते तच्चे तहिए अवितहे सम्भूए जिणपण्णत्ते भावे णो उवल्लभंति )

एतदशत्रु राजाञ्च आ प्रभाञ्च सांख्यीने अभ्यास्य सुबुद्धिने आ प्रभाञ्च कहुं के हे देवानुप्रिय । तस्मै आ रीते असद्भावना भावक वचनोद्वा-  
धमान वस्तुधर्मोद्वा प्रतिपादनाञ्चोद्वा वस्तुतुं च स्वयं वस्तुमां डाञ्च नथी ते स्वयं वस्तुमां गतावनारी वाञ्छीञ्चोद्वा अने मिथ्यात्वामिनिवेशना आग्र-  
होद्वा आ जातुं निरूप्य करे नहि आनी प्ररूप्योद्वा योतानी जातने अथावता रडे अने जीवञ्चोने पणु आनी अही प्ररूप्योद्वां इसाववाणी येष्टा करे नहि, तस्मै ओकी साथे योतानी जातने के जीव भाञ्चसने आनी प्ररूप्योद्वा लपेटमां देवानी के शिश करे नहि राजनी आ प्रभाञ्च वात सांख्यीने सुबुद्धि प्रधा-

તતઃ=તદનન્તરં રાજા સદ્વાર્તાલાપાનન્તરં સ્વલ્લુ સુબુદ્ધેઃ=સુબુદ્ધિનામામાત્યસ્ય અ-  
યમેતદ્ભૂપઃ=વક્ષ્યમાણપ્રકારઃ આધ્યાત્મિકઃ, ચિન્તિતઃ, પ્રાર્થિતઃ, કલ્પિતઃ, મનોગ.  
તર્સકલ્પશ્ચ નાનારૂપો વિચારઃ સમુદપદ્યત અહો !=આશ્ચર્યમેતદ્ યત્સ્વલ્લુ જિતશત્રુ  
રાજા 'સંતે' સતઃ = વિદ્યમાનાત્ 'તથે' તત્ત્વાનિ = તત્ત્વરૂપાન્ તત્ત્વ-  
વતો વા સ્વત્વપરત્વયુક્તાન્ 'તદ્વિષ્' તથ્યાન્ = સત્યાન્ યદ્વા--'તદિષ્'  
તથા ચ-હવિચ્છાયા, તથેતિ ચિનોતીતિ, અવ્યયમિદમ્-માત્રયાઽપ્યન્યૂનાધિકાન્  
'અવિતહે' અવિતથાન્ = અવિદ્યમાનાસત્યાન્ 'સન્ભૂષ' સદ્ભૂતાન્=સત્તાયુક્તાન્  
'જિણપ્પણત્તે' જિનપ્રજ્ઞસાન્ = જિનમાપિતાન્ ભાવાન્ 'નો ઉવલમહ' નોપ-  
લભતે, તત્=તસ્માત્ કારણાત્ શ્રેયઃ = સમીચીતં સ્વલ્લુ મમ યત્-જિતશત્રોઃ  
રાજા સતાં તત્ત્વાનાં તથ્યાનામ્ અવિતથાનાં સદ્ભૂતાનાં જિનપ્રજ્ઞસાનાં ભાવાનામ્  
'અભિગમણદ્વયાષ્' અભિગમનાર્થતાયૈ=સમ્યગવચ્ચોદાય એતર્થમ્=પુદ્ગલાનામપરા-

સાથે હસ પ્રકાર કી પ્રરૂપણા કે જાલ મેં ન ઢાલો । રાજા કી હસ પ્રકાર વાળી સુનકર સુબુદ્ધિ પ્રધાન કે મન મેં એસા વિવિધ પ્રકાર કા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ -યહાં વિચાર કે હન ઔર વિશેષણોં કા પ્રહણ કર દેનાં ચાહિયે- “ચિન્તિતઃ પ્રાર્થિતઃ કલ્પિતઃ” । યહ બડે આશ્ચર્ય કી બાન હૈ જો જિતશત્રુ રાજા વિદ્યમાન, તત્ત્વરૂપ-અથવા વિવિધ પ્રકાર કી વિવક્ષા સે સ્વત્વ પરત્વ રૂપ સે યુક્ત, તથ્ય-સત્ય, ન ન્યૂન ઔર ન અધિક, અવિતથ, સત્તા યુક્ત એસે જિન પ્રજ્ઞસ, ભાવોં કો નહીં સમજ રહ્યા હૈ-અર્થાત્ જિતશત્રુ રાજા કે ધ્યાન મેં યહ બાન નહીં આ રહી હૈ કિ જિન પ્રજ્ઞસ ( પ્રરૂપિત ) ભાવ સત્ય હોતે હૈ, અવિતથ હોતે હૈ અન્યૂન અનતિરિક્ત હોતે હૈ, અનેક વિવક્ષાઓં કો લેકર હન મેં નાનો ધર્મ વિશિષ્ટતા હોતી હૈ-(તં) હસ લિયે (સેયં સ્વલ્લુ મમ, જિયસત્તુસ રણો સંતાણં તત્ત્વાણં તદિયાણં અવિતઘાણં સન્ભૂતાણં જિણપ્પણત્તાણં ભાવા-

નાના મનમાં અનેક વિચારો ઉદ્ભવ્યા. અહીં વિચાર સંબંધી આ વિશેષણોં અહંણ પશુ કરીલેવું બેધએ કે “ચિન્તિતઃ પ્રાર્થિતઃ કલ્પિતઃ” આ એકદમ નવાઈ બેવું લાગે છે કે જિતશત્રુ રાજા વિદ્યમાન તત્ત્વ રૂપ-અથવા તો વિવિધ પ્રકારની વિવક્ષાથી સ્વત્વ પરત્વ રૂપથી યુક્ત, તથ્ય-સત્ય, ઘણું ઓછું પણ નહિ અને ઘણું વધારે પણ નહિ, અવિતથ સત્તા યુક્ત એવા જિનપ્રજ્ઞસના લાવેને સમજ રહ્યા નથી. એટલે કે જિતશત્રુ રાજા આ વાતને સમજ શક્યા નથી કે જિન પ્રજ્ઞસ વડે નિરૂપિત થયેલા લાવે સત્ય હોય છે, અવિતથ હોય છે, અન્યૂન અનતિરિક્ત હોય છે, અનેક વિવક્ષાઓને લઈને તેમનામાં નાના ધર્મ વિશિષ્ટતા હોય છે.(તં)માટે

(સેયં સ્વલ્લુ મમ જિયસત્તુસ રણો સંતાણં તત્ત્વાણં તદિયાણં અવિતઘાણં

परपरिणमनरूपं भावम् ' उवाङ्णाविचप ' उपादापरिणतुं=ग्राहयितुं मम श्रेयः, इति पूर्वण सम्बन्धः । स सुबुद्धिरमात्यः एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=विचारयति, संप्रेक्ष्य ' पञ्च ति एहिं ' प्रत्यन्तिकैः=समीपस्थैः प्रतिक्षणनिदेशवर्तिभिः पुरुषैः सादृशम् ' अंतरावणाओ ' अन्तरावणात्=हृद्दमागात् ' बाजार ' इति भाषा प्रसिद्धात्, यद्वा-ग्रामान्तरालवर्तिकुम्भकादृहात् नवकान्=नूतनान् घटांश्च गृह्णाति, गृहीत्वा सन्ध्याकालसमये सूर्यास्तकाळे ' पविरलमणुस्संसि ' पविरलमणुष्ये-पविरलाः=स्तोकाः मनुष्या यस्मिन् समये स पविरलमणुष्यस्तस्मिन्=सन्ध्याकाळे हि मनुष्याणां गमनागमनं स्वल्पं भवति तादृशे समय इत्यर्थः, पुनः ' णिसंतपडिणिसंतसि ' निशान्त प्रतिनिशान्ते=मनुष्यसंचागमावसमये यत्रैव परिखोदकं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तत् परिखोदकं ग्राहयति, ग्राहयित्वा नवकेषु=नूतनेषु घटेषु ' गालावेइ ' गालयति, बल्लादिपूतं कारयति, गालयित्वा पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य तान् ' लंछियमुदिप ' लच्छितमुद्रितान्-लच्छितान् लाक्षादिलेपयुक्तान्

णं अभिगमणद्वयाए एयमहं उवाङ्णाविचप एवं संपेहेइ ) मुझे यह उचित है कि मैं जितशत्रु राजा को सत्स्वरूप, भाव युक्त तथ्यरूप, अवितथ, और सद्भूतरूप ऐसे जिन प्रज्ञस भावों का अच्छी तरह बोध कराने के लिये और इस पुद्गलों के-अपरापर परिणमन रूप भाव को ये ऐसे ही हैं, इस तरह मनवाने के लिये उन्हें समझाऊँ । इस प्रकार उस ने विचार किया- ( संपेहिस्ता पच्चंति एहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए, घडए य गेण्हइ, गेणिहस्ता संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि निसंतपडिणिसंतसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं फरिहोदगं गेण्हावेइ गेण्हाविस्ता नवएसु घडएसु गाला-

सब्भूताणं णिणपणत्तार्ण भावाणं अभिगमणद्वयाए एयमहं उवाङ्णाविचप एवं संपेहेइ )

हुवे भादे एतशत्रु राजाने सत् स्वरूप, भावयुक्त तथ्य रूप, अवितथ अने सद्भूत रूप जेवा एतप्रज्ञमना कावोने सारी पेटे समभववा भेधजे तेभए पुद्गलाना अपरापर परिणमन रूप भाव विशेषे पणु " तेओ तो जेवा न छे " आ रीते समभववानी कैशिश करवी भेधजे, अभाये आ प्रभावे विचार करी.

( संपेहिता पच्चंति एहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडए य गेण्हइ, गेणिहस्ता संझाकालसमयंसि पविरल मणुस्संसि निसंत पडिणिसंतसि जेणेव फरिहोदए उवागच्छइ, उवागच्छिता तं फरिहोदगं गेण्हावेइ गेण्हाविस्ता नवएसु घडएसु गालावेइ, गालाविचा नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवाविचा



मुद्रितान्=मुद्राद्यङ्कितान् कारयति, कारयित्वा 'सत्तरत्तं' सप्तरात्रं=सप्तरात्रिन्दिवा पर्यन्तं परिवसावेह' परिवसासयति=स्थापयति, तदनु 'दोच्चं'पि' द्वितीयमपि वारंपुनरपरेषु नवकेषु घटेषु गालयति, गालयित्वा पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य तेषु घटेषु 'सज्जखारं' 'सज्जखारं'= 'सज्जीखार' इति प्रसिद्धम्, सद्यो भस्म वा प्रक्षेपयति, प्रक्षेप्य लाञ्छितमुद्रितान् कारयति, कारयित्वा सप्तरात्रं यावत् परिवसासयति, स्थापयति। एवं 'तच्च'पि' तृतीयमपि वारं पुनरपरेषु नवकेषु घटेषु यावत् संवासयति=सम्यक्स्थापयति। एवं खलु एतेन उपायेन=अनेनैव क्रमेण अन्तरा=मध्येमध्ये गालयन्, अन्तरा=मध्येमध्ये प्रक्षेपयन् अन्तरा च विपरिवसावेमाणे' विपरिवसासयन् २ स्थापयन् २ सप्त सप्त रात्रिन्दिवानि=अहोरात्रिणि विपरिवसासयति। ततः खलु तत्परिखोदकं 'सत्तमसत्तर्यंसि' सप्तम-

वेइ, गलाविस्ता, लंछियमुद्रिते करावेइ, कराविस्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ, दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेइ गालाविस्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवाविस्ता लंछियमुद्रिते करावेइ, कराविस्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेइ, गालाविस्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ) विचार करके फिर उसने अपने समीपस्थ रहे हुए पुरुषों से-सेबकों से बाजार से अथवा ग्रामान्तरवर्ती कुंभकार के हाट से नवीन घडों को मंगवाया। उन्हें लेकर वह सूर्यास्त काल के समय जब कि मनुष्यों का आना जाना स्वल्प हो गया और धीरे २ वह जब बिलकुल बंद हो गया जहाँ परिखोदक था वहाँ पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने उन घडों में पानी छान कर भरवाया। भरवा कर फिर उसे और दूसरे घडों में भरवाया। भरवा कर फिर उन पर उसने लाक्षादिक की मुहर लगवाई। लगवा कर उन्हें सात दिनरात तक एक

लंछियमुद्रिते, करावेइ कराविस्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ, दोच्चंपि नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवाविस्ता लंछियमुद्रिते करावेइ, कराविस्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ, दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेइ, गालाविस्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ)

विचार करीने तेछे:पोताना सेवके पासेथी जलर अथवा जामना नल्ल कुंभारनी हुकानमांथी नवा माटवांओ भंजावडाव्या. माटवांओने लछिने ते न्यादे सूर्य अस्त पाभ्यो अने माछुसोनी अपरपर ओकदम अंध थरं थरं त्यादे ते पाछनी पासे पडोअ्यो. त्यां पडोअ्यीने तेछे माटवांओमां पाछी गाणीने बराव्युं. बरावीने तेछे जीज बडाओमां पछु पछी गाणीने बराव्युं. पाछी बराव्या पछी तेछे माटवांओने बराबर अंध करावडावीने सात दिवस सुधी

सप्तके परिणम्यमानेसति एकोनपञ्चाशद्द्वोरात्रेषु व्यतीतेषु सत्सु तत्परिखोद-  
कम्-उदकरत्नं जातं चाप्यभवत् । कीदृशं जातम् ? इत्याह-‘अच्छे’ अच्छं=स्वच्छं

जगह रखवा दिया । फिर दुबारा भी उसने और दूसरे नवीन घड़ों में पानी छान कर भरवाया । भरवा कर फिर उस जल को उसने और दूसरे घड़ों में भरवाया । ( पक्खिवाविच्चा ) भरवा कर ( सज्जखारं पक्खिवावेह लंछिय मुद्धिते कारवेह ) उन में उसने सज्जीखार डलवा दिया । डलवा कर उन पर लाक्षादिक के लेप की सुहर लगवा दी । ( कारविच्चा सत्तरत्तं परिवसावेह ) लगवा कर उन्हें एक ओर रखवा दिया ( तच्चंपि नवएसु घटएसु जाव संवसावेह; एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गलावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त २ राई दिया विपरिवसावेह ) तीसरी बार भी उसने उपर नवीन घड़ों में छानकर पानी भरवाया-भरवाकर पहिले की तरह ही उसने सब काम करवाया-फिर उन्हे अच्छी तरह एक ओर रखवा दिया । इस तरह के उपाय से उसने बीच २ में उस जल को पुनः २ छानकर उनमें भरवाया और भरवा २ कर सात २ दिन तक उन घड़ों को एक २ ओर रखवा दिया । ( तएणं से फरिहोदए सत्तमसत्तयसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाये ) इस प्रकार करते २ जब ४९ दिन समाप्त हो

એક જગ્યાએ માટલાઓને મૂકાવડાવ્યાં. બીજી વખત તેણે બીજા નવા ઘડાઓમાં પાણી ગાળીને ભરાવડાવ્યું. ભરાવડાવીને તે પાણીને ગાળીને બીજાં માટલાઓમાં ભરાવડાવ્યું ( પક્ખિવાવિચ્છા ) ભરાવડાવીને

( સજ્જખારં પક્ખિવાવેહ લંછિયમુદ્ધિતે કારવેહ )

તેણે માટલાઓમાં સાલખાર નખાવડાવ્યો. સાલ ખાર નખાવડાવીને તેણે માટલાઓને બરાબર બંધ કરાવડાવી ( કારવિચ્છા સત્તરત્તં પરિવસાવેહ ) સીધા કરાવડાવીને માટલાઓને એકબાજુ મૂકી દીધાં.

( તચ્ચંપિ નવएसु घटएसु जाव संवसावेह; एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त २ राई दिया विपरिवसावेह )

ત્રીજી વખત પણ તેણે બીજા નવા માટલાઓમાં પાણી ભરાવડાવ્યું. ભરાવીને પહેલાંની જે નજ બધી વિધિ કરી અને માટલાઓને એક તરફ મૂકાવી દીધાં. આ પ્રમાણે કરતાં તેણે વચ્ચે વચ્ચે કેટલીએ વખત બારબાર ગાળીને માટલાઓમાં પાણી ભરાવ્યું અને ત્યારપછી સાત દિવસ માટે માટલાઓને એક બાજુ મૂકાવી દીધાં.

( तएणं से फरिहोदए सत्तमसत्तयसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाये )

निर्मलत्वात्, 'पत्ये' पथ्यम्=आरोग्यजनकत्वात्, 'जच्चे' जात्यम्=उत्तमगुण-  
वत्त्वात्, 'तणुए' तनुकं=भारेणलघुकं पाचकत्वात्, 'फलिहवण्णामे' स्फटिक-  
वर्णामं=स्फटिकमणिवर्णतुल्यं वर्णेन-उपपेतम् ४ = प्रशस्तवर्णगन्धरसस्पर्शयुक्तम्  
'आसायणिज्जे' आस्वादनीयम्=आस्वादयोग्यं यावत् सर्वेन्द्रिय गात्रप्रहादनीयं  
जातम् । ततः खलु सुबुद्धिरमात्यो यत्रैव तद् उदकरत्नं तत्रैवोपागच्छति, उपा-  
गत्य करतले=हस्ततले गृहीत्वा तद् 'आसाएइ' आस्वादयति आस्वाद्य तद्  
उदकरत्नं वर्णेनोपपेतम् ४ वर्णादुपपेतम् - आस्वादनीयं यावत् सर्वेन्द्रियगात्र  
चुके तब वह परिखोदक उदकरत्न श्रेष्ठजल रूपे परिणमित हो गया ।  
( अच्छे पत्ये जच्चे तणुए फलिहवण्णामे वण्णेणं उववेयं ४ आसायणिज्जे जाव  
सर्व्विदियगायपल्हायणिज्जे ) वह उदकरत्न निर्मल होने से बिल-  
कुल स्वच्छ हो गया आरोग्य जनक होने से पथ्य रूप बन गया उत्तम  
गुणवाला होने से श्रेष्ठ दिखनेलगा शीघ्र पचने के योग्य हो जाने के  
कारण भार में वह बहुत हलका हो गया, और स्फटिकमणि के वर्ण  
समान वर्ण से युक्त हो गया । इसके वर्ण, गंध, रस और स्पर्श सब  
प्रशस्त-श्रेष्ठ बन गये । यह आस्वादनीय हो गया यावत् समस्त इन्द्रि-  
यों को एवं शरीर को तृप्ति करने वाला बन गया । ( तएणं सुबुद्धी  
अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करय-  
लंसि आसादेइ, आसादित्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं ४ आसाय-  
णिज्जे जाव सर्व्विदियगाय पल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्टुट्टे बहूहिं

आ रीते न्याये ४६ द्विवसे पूरा तथा त्पारे ते भाधंतुं उदकरत्न (पाष्ठी)  
उत्तम पाष्ठीना इपमां परिशुत थर्ध गयुं.

(अच्छे पत्ये जच्चे तणुए फलिहवण्णामे वण्णेणं उववेयं ४ आसायणिज्जे जाव  
सर्व्विदियगायपल्हायणिज्जे )

ते उदकरत्न (पाष्ठी) निर्मल होवा अद्वैत ऐक्यम स्वच्छ थर्ध गयुं हंतुं,  
आरोग्यजनक होवाथी पथ्य इप थर्ध गयुं हंतुं, उत्तम गुण-संपन्न होवाथी  
श्रेष्ठ द्रव्यांतुं हंतुं, शीघ्र पाचन थाय तेवुं होवाथी वजनमा ते भूषण हलकं  
थर्ध गयुं हंतुं पाष्ठीना वधुं गंध, रस अने स्पर्श आ अथा गुणो प्रशस्त  
श्रेष्ठ इपमां परिशुत थर्ध गया हता. ते आस्वादनीय थर्ध गयुं हंतुं यावत्  
अधी धन्द्रियेने तेमज शरीर तृप्त करनार अनी गयुं हंतुं

(तएणं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता  
करयलंसि आसादेइ, आसादित्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं ४ आसायणिज्जे  
जाव सर्व्विदियगाय पल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्टुट्टे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहिं

प्रह्लादनीयं ज्ञात्वा हृष्ट-तुष्टः बहुमिः ' उदगसंभारणिज्जेहि ' उदकसंभारणीयैः= जलसुगन्धकरणयोग्यैः केतकीपाटलादिद्रव्यैः ' संभारेइ ' संभारयति = संस्कारयति संभारयित्वा जितशत्रोः राज्ञः ' पाणियघरयं ' पानीयहारकं यस्य हस्ताद्वारा पानीयं पिबति तं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत-त्वं च खलु हे देवानुप्रिय ! इदमुदकरत्नं गृहाण, गृहीत्वा जितशत्रोः राज्ञो भोजनवेलायाम् उपनय । ततः खलु पानीयहारकः सुबुद्धिकस्य = सुबुद्धिनामकामात्यस्य एतमर्थ-राज्ञः पानीय-

उदगसंभारणिज्जेहि संभारेइ संभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुमं च णं देवाणुप्पिया इमं उदरगयणं गेण्हाहि २ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि ) इसके बाद वह सुबुद्धि अमात्य जहाँ वह उदक रत्न था वहाँ गया । वहाँ जाकर उसने उस उदकरत्न को हाथ में लेकर चखा । चख कर जब उसे यह ज्ञात हो चुका कि यह उदक रत्न वर्णादि से युक्त यावत् सर्वेन्द्रिय गात्र प्रह्लादनीय बन गया है तो वह बहुत ही आनन्दित एवं संतुष्ट हुआ बाद में उसने उस जल को सुगंधित करने वाले केतकी पाटल ( गुलाब ) आदि द्रव्य से संस्कारित किया-संस्कारित करके फिर उसने जितशत्रु राजा का जो पानी पिलाने वाला भूत्य था उसे बुलाया बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवाणुप्रिय ! तुम इस उदक रत्न को लो-और लेकर जब जितशत्रु राजा के भोजन करने का समय होवे तब इसे उनके पास ले जाना । ( तएणं से पणियघरियं सुबुद्धिय-संभारेइ संभारित्ता जियसत्तूस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुमं च णं देवाणुप्पिया इमं उदरगयणं गेण्हाहि २ जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि )

त्यारपणी अमात्य सुबुद्धि न्यां उदकरत्न ( पाणी ) इतुं त्यां गथे। त्यां भधने तेखे उदकरत्न ( पाणी ) ने इथेणी डिपर लधने आभ्युं। आभ्या भाइ तेने ज्येभ दाग्युं के भरेभर आ उदकरत्न ( पाणी ) वधुं वगेरे सुखेथी युक्त यावत् भधी छन्दिये अने शरीरने आनंद पमाडे तेतुं थध गथुं छे त्यारे ते भूण न प्रसन्न अने संतुष्ट थथे त्यार पणी तेखे पाणीने सुवासित करनारा केतकी पाटल ( गुलाब ) वगेरे इन्धेथी पाणीने संस्कारित कथुं। पाणीने संस्कारित कथां भाइ अमात्ये लुतशत्रु राजने पाणी पीवडावनार नेडरने भोदाव्ये अने भोदावीने तेने कथुं के छे देवानुप्रिय । राजने नभवाने वभत थाय त्यारे तु आ उदकरत्न ( पाणी ) तेभनी पासे लध नजे।

( तएणं से पणियघरिय सुबुद्धियस्स एयमहं पडिमुणेइ, पडिमुणिता वं

પાનરૂપે ભાવે પ્રતિશ્રુણોતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય તદુદકરત્નં ગૃહ્ણાં, ગૃહીત્વા જિતશત્રોઃ રાજ્ઞો ભોજનવેલાયામ્ ઉપસ્થાપયતિ । સતઃ સહ્ય સ જિતશ રાજા તદ્ વિપુલમ્ અશનપાન-સ્વાર્ધ-સ્વધ્યામ્-આસ્વાદયન્ યાવદ્ વિહરતિ । ‘જિમિયશ્ચતુ-ત્તરાગણ વિ’ જિમિતશ્ચત્તોત્તરાગતોઽપિ ચ સહ્ય-જિમિતમ્=આસ્વાદિતં શક્તમ્ ઉદરપૂરણપૂર્વકમ્, તદુત્તરમ્ આગતઃ=સ્વોપવેશનસ્થાને પ્રાપ્તઃ, કીદૃશઃ સન્ ? इत्याह-यावत्-आचान्तः=कृतञ्चुलकः, अतएव चोक्षः=निलैपः स्वच्छः परमशुचि-

स्स एयमद्वં पडिसुणेइ, पडिसुणिता तं उदगरयणं गिणहाइ, गिण्हित्ता जिनसत्तस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ तएणं से जियसत्तू राया तं विपुलं असणं ४ आसाएमाणे जाव विहरइ ) इस प्रकार उस पानीय हारक ने सुबुद्धि अमात्य की इस बातको मान लिया और मानकर उस उदकरत्न को-श्रेष्ठ निर्मलजल को-ले लिया-लेकर उसने उसे जितशत्रु राजा के भोजन करने के समय उपस्थापित कर दिया-ताकि वे इस जल को पीवें । इसके बाद जितशत्रु राजा का जब भोजन करने का समय आया तब उसने अशनादि रूप ४ चारों प्रकार का आहार खूब इच्छानुसार किया और उस उदकरत्न को पिया । ( जिमिय श्चतुत्तरा-गण यावियणं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरयणे जाव विम्हए ते वहवे राईसर जाव एवं वयासी ) जब जितशत्रु राजा अच्छी तरह खा पी चुके तब वे अपने उपवेशन के स्थान में बैठक में-आये । बैठक में आने के पहिले उन्होंने कुल्ला आदि करके अपने मुख को अच्छी तरह धो लिया था और हाथ वगैरह भी अच्छी तरह प्रक्षालित कर ( धोकर )

उदगरयणं गिणहाइ गिण्हित्ता, जियसत्तूस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ, तएणं से जियसत्तू राया तं विपुलं असणं ४ आसाएमाणे जाव विहरइ )

આ રીતે પાણીવાળા નોકરે સુબુદ્ધિ અમાત્યની વાત સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તે ઉદકરત્ન-શ્રેષ્ઠ નિર્મળ પાણીને-ત્યાંથી લઇને જમવાની વખતે છતશત્રુ રાજાની સામે તેમને પીવા માટે પકોંચાડી દીધું. ત્યાર પછી ત્યારે છતશત્રુ રાજાને જમવાનો વખત થયો ત્યારે રાજા અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતના આહારે ખૂબ તૃપ્ત થઇને ઇચ્છા મુજબ જમ્યા અને તે ઉદકરત્ન ( પાણી ) ને પીધું

( જિમિયશ્ચતુત્તરાગણ યાવિ ય ણં જાવ પરમસુહૂએ તસિ ઉદગરયણે જાવ વિમ્હએ તે વહવે રાઈસર જાવ એવં વયાસી )

રાજા છતશત્રુએ આમ સારી રીતે જમવાનું ચતાવી દીધું ત્યારે તેઓ ત્યાંથી પોતાના ઉપવેશનના સ્થાનમાં એટલે કે બેઠકમાં આવ્યા. બેઠકમાં આવતા પહેલાં તેઓએ ડોગળા વગેરે કરીને થોં અને હાથોને ધોઇને સ્વચ્છ બનાવી

भूतः=परमपवित्रः स राजा तस्मिन् उदकरत्नजातविस्मयः=संजातजलस्वादकी-  
तुकः तान् बहून् राजेश्वर यावत्-राजेश्वर-तलवर - माडम्बिककौटुम्बिकेभ्य-  
श्रेष्ठि सेनापतिसार्थवाहप्रभृतीन् एवमवदत्-अहो ! आश्चर्यमेतत् खलु हे देवानु-  
प्रियाः । इदमुदकरत्नम् अच्छं यावत्-सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयमस्ति । ततः, खलु  
बहवो राजेश्वर यावत्सार्थवह-प्रभृतय एवमवादिषुः-तथैव खलु हे स्वामिन् । यत्  
खलु यूयं वदथ यावद् एवमेव सर्वेन्द्रियात्रप्रह्लादनीयं वर्तते । ततः खलु जितशत्रु

लिये थे । इस परम शुचिभूत बनकर अपनी बैठक पर बैठे हुए उन  
जितशत्रु राजा को उम उदकरत्न के आस्वादन में पड़ा ही आश्चर्य हो  
रहा था । उसी आश्चर्य में डूबे हुए उन राजा ने अपने पास बैठे हुए  
राजेश्वर तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति और  
सार्थवाहक आदि जनों से इस प्रकार का ( अहोणं देवानुप्रिया ! इमे  
उदगरयणे अच्छे जाव सर्व्विदियगाय पल्हायणिज्जे तएणं बहवे राईसर  
जाव एवं बयासी-तहेव णं सामी ! जणं तुम्मे वदह जाव एवं चेव  
पल्हायणिज्जे तएणं जियसत्तूराया पाणियधरियं सहावेइ, सहाविस्ता  
एवं बयासी-एसणं तुम्मे देवानुप्रिया ! उदगरयणे कओ आसाइए ? )  
देवानुप्रियो ! देखो यह उदकरत्न ( श्रेष्ठ जल ) कितना अच्छा निर्मल  
यावत् समस्त इन्द्रियों एवं शरीर को आनन्द देनेवाला है । इस  
प्रकार राजा का कथन सुनकर उन राजेश्वर आदि समस्त जनों ने  
उस राजा से ऐसा कहा-स्वामिन् आप जैसा कहते हैं, यह जल

हीधा इतां. आ प्रभाषे जेकहम पवित्र थधने पोतानी जेकहमां जेठेला राज्ञ  
एतथत्रुने जमती वभते पीधेला उदकरत्नना आस्वादन विंशे भुज न वपाध  
जेदुं लागतुं इतुं. उदकरत्न ( पाणी ) विशेषा नवाधना विचारि करतां राज्ञे  
पोतानी पासो जेठेला राजेश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेना-  
पति अने सार्थवाह वजेरे जनोने आ प्रभाषे कहुं.

( अहोणं देवानुप्रिया ! इमे उदगरयणं अच्छे जाव सर्व्विदियगाय पल्हा-  
णिज्जे तएणं बहवे राईसर जाव एवं बयासी तहेव णं सामी ! जणं तुम्मे वदह  
जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे तएणं जियसत्तू राया पाणियधरियं सहावेइ, सहाविस्ता  
एवं बयासी एसणं तुम्मे देवानुप्रिया ! उदगरयणे कओ आसाइए )

हे देवानुप्रियो ! जमती वभते पीधेत्तुं उदकरत्न ( पाणी ) केटतुं अधु  
निर्माण अने अधी धन्दिथो तेमज शरीरने आनन्द पमादनार छे. आ रीते  
राजनी पात सांभानी राजेश्वर वजेरे अधा उपस्थित होइको राज्ञे आ  
प्रभाषे कहुं के-हे स्वामिन् ! तमारी पात जेकहम यथार्थ छे. पाणी अरेपर

राजा पानीहारकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एतत् खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! उदकरत्नं प्रधानमुदकं कुतः कस्मात्स्थानात् ' आसाहए ' आसादितं=प्राप्तम् ? । ततः खलु स पानीयहारको जितशत्रुमेवमवादीत्-एतत् ख हे स्वामिन् ! मया उदकरत्नं सुबुद्धेरन्तिकादासादितम् । ततः खलु जितशत्रु सुबुद्धिरमात्यं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-अहो ! खलु हे सुबुद्धे ! केन कारणेनाहं तवानिष्टः,

बैसा ही है-बहुत अधिक स्वच्छ एवं समस्त इन्द्रियों को, शरीर को आनंद दायक है इसके बाद जितशत्रु राजाने पानीयहारक को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानु प्रिय । यह उदकरत्न ( श्रेष्ठ जल )- तुमने कहाँ से प्राप्त किया है । ( तएणं से पाणियघरए जियसत्तू एवं बयासी-एसणं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसाहए तएणं जियसत्तू सुबुद्धि अमच्चं सदावेइ सदावित्ता एवं बयासी, अहोणं सुबुद्धी ! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे पजेणं तुमं मम कल्ला कल्लि भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ? तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवल्लद्धे ? ) राजाकी इस बात को सुनकर उस पानीयहारक ने उनसे कहा-हे स्वामिन् ! मैंने यह उदक रत्न सुबुद्धि प्रधान के पास से पाया है । इसके बाद जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि प्रधान को बुलाया-बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-हे सुबुद्धे ! मैं किस कारण से तुम्हारे लिये अनिष्ट, अकान्त,

तेषु' न हंतुं. ते णहुं न निर्माणं अने अधी इन्द्रियोने तथा शरीरने आनंद आपनार हंतुं. त्थारपणी एतथनु राज्ञो पाष्ठीवाणाने गोलाब्धे अने गोला-वीने तेने कहुं-हे हे देवानुप्रिय ! आ उदकरत्न ( श्रेष्ठ पाष्ठी ) तमे कथांथी भेजन्थुं छे ?

( तएणं से पाणियघरए जियसत्तू एवं सुबुद्धिस्स अंतियाओ असाहए तएणं जियसत्तू सुबुद्धि अमच्चं सदावेइ, सदावित्ता एवं बयासी, अहोणं सुबुद्धी ! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे पजेणं तुमं मम कल्लाकल्लि भोयणवेलाए इमं उदगरणं न उवट्ठवेसि ! तं एसणं तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवल्लद्धे ? )

राजानी आ बात सांखणीने पाष्ठीवाणाओ जवाणमां राजने कहुं हे हे स्वामिन् ! आ उदकरत्न ( पाष्ठी ) हुं सुबुद्धि अमात्यनी पासोथी लाओथुं. राज्ञो त्थार आह सुबुद्धि अमात्यने गोलाब्धे अने गोलावीने तेभने आ प्रभाओ कहुं हे हे सुबुद्धि ! शा कारवुथी हुं तमारा भाटे अनिष्ट, अकान्त,

અકાન્તઃ, અપ્રિયઃ, અમનોજ્ઞઃ, અમનઆમોઽસ્મિ એન ત્વં મમ 'કલ્લાકલ્લિ' કલ્યા-  
કલ્પિય=પ્રતિદિનં ભોજનવેલાયામિદમ્બુદકરત્નં નોપસ્થાપયસિ, તદેતત્ સ્વલુ ત્વયા હે  
દેવાનુપ્રિય ! ઉદકરત્નં કુત ઉપલબ્ધમ્ ? । તતઃ સ્વલુ સુબુદ્ધિ જિતશત્રુમેવમવા-  
દીત્-એતત્સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! તત્-યદ્ ભવદ્ભિઃ=પૂર્વદૃષ્ટ મેદોવસાદિદુર્ગન્ધયુક્તં  
તદેવ પરિહોદકં=પરિહાઝલં વર્ષતે । તતઃ સ્વલુ સ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધિમેવમવદત્-  
કેન કારણેન હે સુબુદ્ધે ! એતત્ પરિહોદકમ્ ? । તતઃ સ્વલુ હે સ્વામિન્ ! યુયં  
તદા મમ એવાચક્ષાણસ્ય પ્રજ્ઞાપયતઃ, સંજ્ઞાપયતઃ વિજ્ઞાપયતઃ=વારંવારં પ્રતિપાદયત

અપ્રિય, અમનોજ્ઞ એવં અમન આમ બન રહો છું કિ જિસસે તુમ પ્રતિ  
દિન મેરે લિયે ભોજન વેલા મેં હિસ ઉદક રતન કો ઉપસ્થાપિત નહી  
કરતે હો ? તો કહો હે દેવાનુપ્રિય ! યહ ઉદક રતન તુમને કહાં સે પાંચા  
હે ? ( તણં સુબુદ્ધી જિયસત્ત્વ એવં વચાસી એસણં સામી ! સે ફરિ  
હોદણ, તણં સે જિયસત્ત્વ સુબુદ્ધિ એવં વચાસી-કેણં કારણેણં સુબુદ્ધી !  
એસસે ફરિહોદણ ? તણં સુબુદ્ધી જિયસત્ત્વ એવં વચાસીએવં-સ્વલુ સામી !  
તુમ્હે તયા મમ એવાચક્ષમાણસ ૪ એયમહં નો સદ્દહહ, તણં મમ  
હમેયારુવે અજ્ઞાતિય સમુપ્પજ્જિત્યા ) તથ સુબુદ્ધિ પ્રધાનને જિતશત્રુ  
રજા સે કહા-હે સ્વામિન્ ! યહ ઉદક રતન વહી પરિહોદક હે । જિત-  
શત્રુ ને કહા યહ પરિહોદક કિત કારણ સે એસા ઉદક રતન બન ગયા  
હે । સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને તથ એસા કહા- હે સ્વામિન્ ! જબ મૈને આપસે  
હિસ પ્રકાર કહા થા હિસ પ્રકાર પ્રલુપિત કિયા થા, હિસ પ્રકાર સંજ્ઞાપિત  
કિયા થા, વિજ્ઞાપિત કિયા થા- બાર બાર આપસે પ્રતિપાદિત કિયા થા

અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમન આમ થઈ પડયો છું. કેમ કે હંમેશાં ભ્રમવાના  
વખતે મારા માટે આજના બેડું ઉદક રતન ( સાંઝે પાણી ) તમે ઉપસ્થાપિત  
કરતા નથી-મૂળાવડાવતા નથી. ? હે દેવાનુપ્રિય ! બાલો, આવું ઉદક રતન  
તમારે કયાંથી મેળવ્યું છે ?

( તણં સુબુદ્ધી જિયસત્ત્વ એવં વચાસી એસણં સામી ! સે ફરિહોદણ, તણં  
સે જિયસત્ત્વ સુબુદ્ધિ એવં વચાસી-કેણં કારણેણં સુબુદ્ધી એસ સે ફરિહોદણ ? તણં  
સુબુદ્ધી જિયસત્ત્વ એવં વચાસી-એવં સ્વલુ સામી ! તુમ્હે તયા મમ એવાચક્ષમાણસ  
૪ એયમહં નો સદ્દહહ, તણં મમ હમેયારુવે અજ્ઞાતિય સમુપ્પજ્જિત્યા )

ત્યારે સુબુદ્ધિ પ્રધાને જિતશત્રુ રાજાને કહ્યું કે હે સ્વામી ! આ ઉદકરતન  
( સાંઝે પાણી ) તે જ ખાઈનું પાણી છે. રાજાએ અમાત્યને ફરી પૂછ્યું કે  
ખાઈનું પાણી આવું સરસ કેવી રીતે થઈ ગયું ? ભવાઈમાં સુબુદ્ધિ અમાત્યે  
કહ્યું કે હે સ્વામિન્ ! પહેલાં મેં તમારી સાથે આ પ્રમાણે પ્રવૃત્તિ કર્યું હતું,  
આ પ્રમાણે સંજ્ઞાપિત કર્યું હતું, વિજ્ઞાપિત કર્યું હતું, વારંવાર પ્રતિપાદિત



इत्यर्थः एतस्=पुद्गलानां शुभाशुभरूपेण परिवर्तनलक्षणम् अर्थम्=भावं नो  
 श्रद्धस्थस्म=मद्वाक्योपरिश्रद्धां नो कृतवन्तः, ततः=तदा खलु मम अयमेतद्भूपः=  
 वक्ष्यमाणः-आध्यात्मिकः, चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः  
 नानाविधो मानसिको विकल्पः इत्यर्थः समुदपधन-अहो ! खलु जितशत्रू  
 राजा सतो यावद् भावान् नो श्रद्धाति नो प्रत्येति नो रोचयति तत् श्रेयः खलु  
 मम जितशत्रोः राज्ञः सतां यावत् सद्भूतानां जिनप्रज्ञप्तानां भावानाम् अभिगम  
 नार्थाय=अवबोधाय एतमर्थम् ' उवाङ्णावेत्तए '—उपादाययितुं=ग्राहयितुं श्रेयइति  
 पूर्वेण सम्बन्धः, एवं संप्रेक्षे=अहं पर्यालोचितवान्, संप्रेक्ष्य तदेव यावत् पानीय-

કિ પુદ્ગલોં કા શુભાશુભ રૂપસે પરિણમન હોતા રહતા હૈ- નાના રૂપ  
 સે ઉનકા પરિવર્તન હોતા રહતા હૈ યહ પરિવર્તન હોના ઉનકા સ્વાભા-  
 વિક લક્ષણ હૈ પરંતુ જબ આપને ઉસ ભાવ કો શ્રદ્ધા મેં પરિણત નહીં  
 કિયા-મેરે વચનોં પર આપકો વિશ્વાસ નહીં જમા તથા મુજે હસ પ્રકાર  
 કા આધ્યાત્મિક, ચિન્તિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત, મનોગત નાના પ્રકાર કો  
 વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ ( અહોળં જિયસત્તૂ સંતે જાવ ભાવે નો સદ્દહ, ન-  
 પત્તિયાહ, રોપહ, તં સે યં સ્વલુ મમં જિયસત્તૂસ્સ રણ્ણો સંતાણં જાવ  
 સઙ્ખ્યાણં જિણપન્નત્તાણં ભાવાણં અભિગમણદ્વયાપ્પમહં ઉવાહ  
 ણાવેત્તપ્પ ) દેલો યહ કિતને આશ્ચર્ય કી વાત હૈ કિ જો જિતશત્રુ રાજા  
 સદ્ભૂત વિષયમાન યાવત્ જિન પ્રજ્ઞસ ભાવોં કો અપની શ્રદ્ધા કા વિષય  
 ભૂત નહીં બના રહે હૈં ઉન પર પ્રતીતિ નહીં કર રહે હૈં, ઉન પર અપની  
 રુચિ નહીં જમા રહે હૈં । હસલિયે મુજે યહ ઉચિત હૈ કિ મૈં જિતશત્રુ

કથું હતું કે શુભાશુભ રૂપમાં પુદ્ગલોં પરિણમન થતું જ રહે છે. અનેક  
 રૂપમાં તેઓમાં પરિવર્તન થતું જ રહે છે. આવું પરિવર્તન તેઓંનું એક  
 સ્વાભાવિક લક્ષણ છે. પણ જ્યારે તમે સારી આ વાત શ્રદ્ધાપૂર્વક સાંભળી નહિ,  
 મારા કથન ઉપર વિશ્વાસ કર્યો નહિ, ત્યારે મારા મનમાં આ બતના આધ્યા-  
 ત્મિક, ચિન્તિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત મનોગત ઘણા વિચારો ઉત્પન્ન થયા કે—

( અહોળં જિયસત્તૂ સંતે જાવ માવે નો સદ્દહ, નો પત્તિયાહ, નો રોપહ, તં  
 સેયં સ્વલુ મમં જિયસત્તૂસ્સ રણ્ણો સંતાણં જાવ સઙ્ખ્યાણં જિણપન્નત્તાણં ભાવાણં  
 અભિગમણદ્વયાપ્પમહં ઉવાહાવેત્તપ્પ )

જુઓ આ કેવી આશ્ચર્યની વાત છે કે જિતશત્રુ રાજા સદ્ભૂત વિષયમાન  
 યાવત્ જિનપ્રજ્ઞસના ભાવો ઉપર શ્રદ્ધા ધરાવતા નથી, તેમના ઉપર વિશ્વાસ  
 મૂકતા નથી અને ચોતાની રૂચિ પણ તેમના પ્રત્યે જમાવતા નથી. એટલે મારે  
 હવે જિતશત્રુ રાજાને સદ્ભૂત વિષયમાન યાવત્ જિનપ્રજ્ઞસભાવોનો બોધ આપવા

હારકં શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા एवं वदामि—ત્વં સહ્ય હે દેવાનુમિય ! ઉદકરત્નં જિત-  
શત્રો રાજ્ઞો મોજનવેલાયામ્પનય તદેતેન કારણેન હે સ્વામિન્ ! એતત્તત્—તદેવ યદ્ધ  
વદ્ધિઃ દષ્ટપૂર્વં પરિહોદકમ્ । તતઃ સહ્ય જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધેરમાત્યસ્ય એવમાચ-  
ષાણસ્ય ૪ એતમર્થમ્—‘ હદમેતદેવ પરિહોદકમ્ ’ હત્યેવં રૂપં માવં નો શ્રદ્ધાતિ.

રાજા કો સદ્ભૂત વિચ્છિન્ન— યાવત્ જિન પ્રજ્ઞસ- આવોં કા-બોધ કરાને  
કે લિયે ઓર ડનસે ઇન્હેં યે એસે હોં હૈં, ઇસ રૂપ સે મનવાને કે લિયે  
એસા પ્રયત્ન કરું કિ જિસસે ડનકી શ્રદ્ધા આદિ ડન પર જમ જાવે ઓર  
વે ઇસ જ્ઞાત કો માનને લગ જાવે । ( एवं संपेहेमि २ तं चेव जाव पाणिय  
घरियं सहावेमि सहाविता एवं वयासी तुमंगं देवाणुप्पिया ! उदगरय-  
णं जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि, तं एएणं कारणेणं सा-  
मी ! एस से फरिहोदए । तएणं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स  
एवमाइक्खमाणस्स ४ एवमहं नो सहहइ ३ ) એસા મૈને વિચાર ક્રિયા  
વિચાર કરકે ફિર મૈને પાનીયહારક કો બુલાયા— બુલાકર ડસ સે એસા  
કહા—હે દેવાનુમિય ! તુમ ઇસ ઉદક રત્ન કો જિતશત્રુ રાજા કે  
મોજન કે સમય પર હે જાના । ઇસ કારણ સે હે સ્વામિન્ । જો આપને  
પહિલે પરિહોદક દેખા થા—વહી યહ પરિહોદક હૈ—ઓર ઇસ રૂપ  
મેં પરિણત હો ગયા હૈ । જિતશત્રુ રાજા ને ઇસ પ્રકાર કહને વાલે ૪  
સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે ઇસ અર્થ કો કિ યહ વહી પરિહોદક હૈ અપની  
શ્રદ્ધા કા વિષય નહીં બનાયા પ્રતીતિ કા વિષય નહીં બનાયા, અપની

માટે અને એ બાવો ખરેખર એવા છે, એવું ઠસાવવા માટે પ્રયત્નો કરવા  
બેઠ્યા બેઠી તેઓને આ બાવો ઉપર સંપૂર્ણપણે વિશ્વાસ એસી બાથ અને  
તેઓ આ વાતને સ્વીકાર પણ કરે.

( एवं संपेहेमि २ तं चेव जाव पाणियघरियं सहावेमि सहाविता एवं वयासी  
तुमंगं देवाणुप्पिया ! उदगरयणं जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि तं  
एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए । तएणं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अ-  
मच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एवमहं नो सहहइ ३ )

આ પ્રમાણે મેં વિચાર કર્યો. વિચાર કરીને મેં પાણી લાવનારને બોલાવ્યો  
અને બોલાવીને કહ્યું કે હે દેવાનુમિય ! તમે આ ઉદકરત્ન ( સારા પાણી ) ને  
જિતશત્રુ રાજા જ્યારે જમવા માટે એસે ત્યારે લઈ જાઓ. એટલા માટે હે  
સ્વામી ! તમે પહેલાં ખાઈનું જે પાણી બેઠ્યું છે તે જ આ પાણી છે અને આ  
તો તે પાણીનું જ રૂપાંતર છે. સુબુદ્ધિ અમાત્યની આ વાત પર—કે આ પાણી  
તે જ ખાઈનું છે. રાજા જિતશત્રુને વિશ્વાસ થયો નહિ. રાજાએ અમાત્યની વાત

નો પ્રત્યેતિ, નો રોચયતિ, અશ્રદ્ધાનઃ, અપ્રતિયન્, આરોચમાનઃ, 'અભિંતરઠા-  
ણિજ્ઞે' અભ્યન્તર સ્થાનીયાન્=સ્વસમીપરિથતાન્ પુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા  
एवमवदत्-ગચ્છત સ્વહૂયં હે દેવાનુપ્રિય ! 'અંતરાવણાઓ' અન્તરાવણાત્=  
ગ્રામમધ્યસ્થિત કુમ્ભકારહદાત્ નવઘટકાન્ 'પઢં ય' પટકાંશ્ચ=જલગાલનવસ્ત્ર-  
સ્વળ્હાત્ ગૃહીત યાવદ્ ઉદકસંભારણીયૈઃ ઉદકસંસ્કારયોગ્યૈઃ દ્રવ્યૈઃ સંભારયત=

રુચિકા વિષય નહીં બનાયા (અસદ્દહમાણે ૩) હસ પ્રકાર શ્રદ્ધા રહિત  
રુચિ રહિત, પ્રતીતિ રહિત બને હુણે રાજા જિતશત્રુને (અભિંતરઠાણિજ્ઞે  
પુરિસે સદાવેહ) અપને પાસ મેં સદા રહને વાલે પુરુષોં કો બુલાયા (સ  
હાવિત્તા એવં વયાસી) બુલાકર ઉનસે હસ પ્રકાર કહા—(ગચ્છહર્ણ  
તુભે દેવાણુપ્પિયા ! અંતરાવણાઓ નવઘટક પઢં ય ગેળહહ, જાવ  
ઉદગસંભારણિજ્ઞેહિં દવ્વેહિં સંભારેહ તે વિ તહેવ સંભારેતિ,  
સંભારિત્તા જિયસત્તુસ્સ ઉવળેતિ, ઉવણિત્તા તણં જિયસત્તુ રાયા  
તં ઉદકરયણં કરયલસિ આસાપહ, આસાયણિજ્ઞં જાવ સર્વિદિ-  
યગાય પલ્હાયણિજ્ઞં જાણિત્તા સુબુદ્ધિં અમચ્ચં સદાવેહ, સદા-  
વિત્તા એવં વયાસી) હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ જાઓ ઓર વાજોર  
સે નવીન ઘડોં કો એવં જલ છાન ને કે લિયે વસ્ત્રોં કે સંઘોં કો  
છન્નોં કો—લે આઓ ! યહાં અન્તરાવણ કા અર્થ "ગ્રામ કે મધ્ય મેં  
સ્થિત કુમ્હારોં કા હાટ યા સામાન્ય વાજાર હૈ । એસા હી અર્થ હસ  
શબ્દ કા પહિલે કિયા ગયા હૈ । યાવન્ ઉદક સંસ્કાર યોગ્ય દ્રવ્યોં સે

ઉપર ન તેા પ્રતીતિ પણ થઈ અને ન તે પ્રત્યે પોતાની અભિરુચિ ખતાવી.  
(અસદ્દહમાણે ૩) આ રીતે શ્રદ્ધા, રુચિ અને પ્રતીતિ રહિત થયેલા રાજા  
અતઃશત્રુએ (અભિંતરઠાણિજ્ઞે પુરિસે સદાવેહ) હંમેશા ચોવીસે કલાક પોતાની  
પાસે રહેનારા માણસોને બોલાવ્યા (સદાવિત્તા એવં વયાસી) બોલાવીને  
તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું.

(ગચ્છહર્ણ તુભે દેવાણુપ્પિયા ! અંતરાવણાઓ નવઘટક પઢં ય ગેળહહ જાવ  
ઉદગ સંભારણિજ્ઞેહિં દવ્વેહિં સંભારેહ તે વિ તહેવ સંભારેતિ, સંભારિત્તા જિયસત્તુ-  
સ્સ ઉવળેતિ, ઉવણિત્તા તણં જિયસત્તુ રાયા તં ઉદકરયણં કરયલસી આસાપહ  
આસાયણિજ્ઞં જાવ સર્વિદિયગાયપલ્હાયણિજ્ઞં જાણિત્તા સુબુદ્ધિં અમચ્ચં  
સદાવેહ, સદાવિત્તા એવં વયાસી)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બહારમાં બાંઓ અને ત્યાંથી નવાં માટલાઓ  
તેમજ પાણી ગાળવા માટે વસ્ત્રોના કકડા ખરીદી લાવો. 'અન્તરાયણુ'નો અર્થ  
'ગામની વચ્ચેનું કુંભારોનું બહાર કે સામાન્ય બહાર છે પહેલાં પણ આ શબ્દનો  
અર્થ આ પ્રમાણે જ કરવામાં આવ્યો છે. ત્યારબાદ પાણીને સ્વચ્છ બનાવવા

સંસ્કૃત । તેડપિ તયૈવ સંભારયંતિ, સંમાર્યં જિતશત્રોઃ ' ઉવર્ણેતિ ' ઉપનયન્તિ= સમીપમાનયન્તિ । તતઃ સ્વલ્લુ શિતશત્રુ રાજા તદુદકરત્નં કરતલે આસ્વાદયતિ, આસ્વાદનીયં યાવત્ સર્વેન્દ્રિયગાત્રપ્રહ્લાદનીયં તદુદકં જ્ઞાત્વા સુબુદ્ધિમમાત્યં શબ્દ-યતિ, શબ્દયિત્વા ઇવમવદત્-હે સુબુદ્ધે ! એતે સ્વલ્લુ ત્વયા સન્તઃ=વિધમાનાઃ ' જાવ' યાવત્ સદ્ભૂતાઃ ભાવાઃ કૃત ઉપલબ્ધાઃ ? । તતઃ સ્વલ્લુ સુબુદ્ધિજિતશત્રુમેવમવદત્-એતે સ્વલ્લુ હે સ્વામિન્ । મયા સન્તઃ યાવત્ સદ્ભૂતા ભાવાઃ જિનવચનત ઉપલબ્ધાઃ

ફિર હસે સંસ્કારિત કરો । હસ પાઠ કો સમુચિત રૂપ સે સમન્વિત કરને કે લિયે જૈસા પીછે લિખા ગયા હૈ વૈસા હી સંબન્ધ યહાં જ્ઞાન હેના ચાહિયે । રાજા કી આજ્ઞાનુસાર હન લોગોં ને વૈસા હી કિયા । સંસ્કારિત કરકે ફિર બે લોગ હસે જિતશત્રુ રાજા કે પાસ હે ગયે । જિતશત્રુ રાજા ને હસ સંસ્કારિત હદક કો અપની હથેલી પર રક્ષા-ઔર હસે ચલા-જવ ચલ કર હસે યહ વિશ્વાસ હો ગયા કિ યહ જલ આસ્વાદનીય ઇવં સર્વેન્દ્રિય-ગાત્ર પ્રહ્લાદનીય બન ગયા હૈ તવ હસ ને સુબુદ્ધિ અમાત્ય કો બુલવાયા । બુલવા કર હસ સે ઇસા કહા- ( સુબુદ્ધી ! ઇયણં તુમે સંતા જાવ સંભૂયા ભાવા કઓ હવલદ્ધા તઇણં સુબુદ્ધી જિય-સત્તૂં ઇવં વયાસી-ઇયણં સામી મઇ સંતા જાવ સંભૂયા ભાવા જિન-વયણાઓ હવલદ્ધા, ઇયણં જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ ઇવં વયાસી-તં ઇચ્છામિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! તવ અંતિઇ જિનવયણં નિસામેત્તઇ ) સુબુદ્ધે ! યે વિધમાન યાવત્ સદ્ભૂત ભાવ તુમને કહાં સે ઉપલબ્ધ કિયે હૈ ? તવ સુબુદ્ધિ ને

માટેના બધા ઉપાયો તેમજ દ્રવ્યોથી પાણીને નિર્મળ બનાવેા. પહેલાંની જેમજ અર્ધાં પશુ આગળની બધી વિગત બાણી હેવી જોઇએ. તે હોઠાંએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે જ બધું કામ પૂર કર્યું. પાણી બ્યારે નિર્મળ થઇ ગયું ત્યારે તે હોઠાં પાણીનાં માટલાંઓને રાજાની સાથે લઇ આળ્યા. રાજાએ અનેક સંસ્કારો વડે નિર્મળ બનાવેલા પાણીને હથેળી ઉપર લીધુ અને તેને ચાખ્યું. આજ્યા બાદ રાજાને આ પ્રમાણે વિશ્વાસ થઇ ગયો કે ખરેખરે આ પાણી આસ્વાદનીય અને સર્વેન્દ્રિય-ગાત્ર-પ્રહ્લાદનીય થઇ ગયું છે ત્યારે તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને બોલાવેા. અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું.

સુબુદ્ધી ! ઇયણં તુમે સંતા જાવ સંભૂયા ભાવા કઓ હવલદ્ધા તઇણં સુબુદ્ધી જિયસત્તૂં ઇવં વયાસી ઇયણં સામી મઇ સંતા જાવ સંભૂયા ભાવા જિનવયણાઓ હવલદ્ધા ઇયણં જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ ઇવં વયાસી તં ઇચ્છામિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! તવ અંતિઇ જિનવયણં નિસામેત્તઇ )

હે સુબુદ્ધે ! એ વિધમાન યાવત્ અદ્ભૂત ભાવો તમે કયાંથી મેળવ્યા

તતઃ સ્વલુ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધિમેવમવદત્-તદ્દ્વ ઇચ્છામિ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! તવા-  
ન્તિકે જિનવચનં ' નિસામેત્ત' નિશ્ચામયિતું=શ્રોતુમ્ । તતઃ સ્વલુ સુબુદ્ધિજિત-  
શત્રોર્વિચિત્રં=અદ્વ્યુતં પૂર્વમશ્રુતં કેવલિપ્રજ્ઞસં=જિનમાપિતં ધર્મે=શ્રુતચારિત્રલક્ષણં  
પરિકથયતિ, ' તમાફક્કલ્હ ' તમાહ્વાતિ=તદેવ પ્રતિપાદયતિ-' જહા ' યથા=  
યેન-કર્મસંયોગેન જીવા વધ્યન્તે યેન ચ મુચ્યન્તે યાત્ પશ્ચાણુવ્રતાનિ । તતઃ  
સ્વલુ જિતશત્રુઃ સુબુદ્ધેરન્તિકે ધર્મં શ્રુત્વા નિશ્ચમ્ય=હૃદિસમવધાર્યં હૃદ્વૃદ્ધિચિત્તાન-

જિતશત્રુ રાજાં સે હસ પ્રકાર કહા-હે સ્વામિન્ ! યે વિદ્યમાન યાવત્  
સદ્ભૂત ભાવ મૈને જિન પ્રવચન સે ઉપલબ્ધ કિયે હૈં । જિતશત્રુ ને તથ  
સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! મૈં તુમ્હારે પાસ જિન પ્રવચન  
કો સુનના ચાહતા હૈં । ( તણં સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસસ વિચિત્તં  
કેવલીપજ્ઞત્તં ચાહજ્ઞામં ધમ્મં પરિકહેહ, તમાફક્કલ્હ, જહા જીવા વજ્ઞં  
તિ જાવ પંચ અણુવ્વયાહં, તણં જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિસસ અંતિં ધમ્મં સોચ્ચા  
ણિસમ્મ હહ્મં સુબુદ્ધિ અમચ્ચં એવં વયાસી ) સુબુદ્ધિ પ્રધાન ને તથ  
જિતશત્રુ રાજાં કો પૂર્વ મૈં કમી નહીં સુના ગયા એસા કેવલિ પ્રજ્ઞસ-  
સર્વજ્ઞ જિનેન્દ્રદ્વારા પ્રતિપાદિત ચાતુર્યોમ વાલા શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ સુના-  
યા । ઉસે હી વિસ્તાર રૂપ સે ઉન્હેં સમજાયા । જીવ જિસ પ્રકાર કર્મો  
સે બંધતે હૈં, ઔર જિસ પ્રકાર કર્મો સે મુક્ત હોતે હૈં-છૂટતે હૈં યહ  
સુનાયા સમજાયા યાવત્ શ્રાવક ધર્મરૂપ પંચમ અણુવ્રતોં કો સમજાયા  
હસ તરહ જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિ અમાત્ય કે સુગ્ર સે ધર્મ કા વ્યાખ્યાન

છે ? જવાબમાં સુબુદ્ધિએ રાબને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! એ વિદ્યમાન  
યાવત્ અદ્ભૂત ભાવ મેં જિન પ્રવચન માંથી મેળવ્યા છે. ત્યારે છતશત્રુએ  
સુબુદ્ધિ અમાત્યને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમારી પાસે હું છનપ્રવચન  
સંભળવાની ઇચ્છા રાખું છું.

( તણં સુબુદ્ધી જિયસત્તૂસસ વિચિત્તં કેવલિપજ્ઞત્તં ચાહજ્ઞામં ધમ્મં પરિકહેહ  
તમાફક્કલ્હ, જહા જીવા વજ્ઞંતિ જાવ પંચ અણુવ્વયાહં, તણં જિયસત્તૂ સુબુદ્ધિ-  
સસ અંતિં ધમ્મં સોચ્ચા ણિસમ્મ હહ્મં સુબુદ્ધિ અમચ્ચં એવં વયાસી )

સુબુદ્ધિ પ્રધાને છતશત્રુ રાબને પહેલાં કેાઇપણ વખતે સંભળેલો નહિ  
એવો કેવળી પ્રજ્ઞસ-સર્વજ્ઞ છનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ચતુર્યમવાળો શ્રુત-ચારિત્ર  
રૂપ ધર્મ સંભળાવ્યો. અને સવિસ્તર તેને સમજાવ્યો. એ પ્રમાણે એવ કર્મો  
વડે બંધાય છે અને એ પ્રમાણે કર્મોથી મુક્ત થાય છે તે વિશેની બધી વિગત  
કહી સંભળાવી અને સમજાવી યાવત્ શ્રાવક ધર્મ રૂપ પાંચ અણુવ્રતોને સમ-  
જાવ્યા. આ રીતે છતશત્રુ રાબ સુબુદ્ધિ અમાત્યના સુમેથી ધર્મતું બ્યાખ્યાન

ન્દિતઃ હર્ષવશવિસર્પદ્વ હૃદયઃ સુબુદ્ધિમમાત્યમેવમવાદીત્-અદ્ધામિ સ્વલ્લ હે દેવાનુ-  
પ્રિય ! નૈર્ગ્ન્યં પ્રવચનં 'તથ્યમેતત્' इत्यादि यावत् तद् यथैव यद् यूयं वदय,  
तत्=तस्मात्कारणात् इच्छामि स्वल्ल तवान्तिके पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं यावद्  
एवं द्वादशविधं श्रावकधर्मम् 'उपसंपज्जित्ता' उपसम्पद्य=स्वीकृत्य विहरिषुम् ।  
यथा सुखं हे देवानुप्रिय ! हे राजन् ! यदि रोचते तदा एवमेव कुरु. तत्र माय-

સુનકર ઓર ઉસે હૃદય મેં અવધારિત કર જહુત હી અધિક પ્રસન્ન  
એવં તુષ્ટ હુપ । હર્ષ સે ગદ્ગદ હોકર ઉન્હોને સુબુદ્ધિ અમાત્ય સે હસ  
પ્રકાર કાહા-( સદ્ધામિ ણં દેવાણુપ્પિયા ! નિર્ગ્ગંથં પાવયણં ૩ જાવ સે  
જહેવં જં તુમ્હે વયહ, તં ઇચ્છામિ ણં તવ અંતિપ પંચાણુવ્વહ્યં સત્તસિ-  
ક્કાવહ્યં જાવ ઉવસંપજ્જિત્તાણં વિહરિત્તપ, અદ્ધાસુહં દેવાણુપ્પિયા ! મા  
પહિવંધં૦ તપ્પણં સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિસ્સ અમચ્ચસ્સ અંતિપ પંચાણુવ્વ-  
હ્યં જાવ દુવાલસવિહં સાવયધમ્મં પહિવજ્જહ, તપ્પણં જિયસત્તુ સમણો-  
વાસપ અભિગયજીવાજીવે જાવ પહિલામે માણે વિહરહ ) હે દેવાનુ-  
પ્રિય ! મેં હસ નિર્ગ્ન્ય પ્રવચન પર અદ્ધા કરતા હૂં હસ પર રવિ કરતા  
હૂં યહ નિર્ગ્ન્ય પ્રવચન સર્વથા સત્ય હૈ ઇત્યાદિ યાવત્ જૈસા તુમ કહતે  
હો વહ વૈસા હી હૈ । હસ લિયે મેં તુમ્હારે પાસ પચ્ચ અણુવ્રત સાત શિ-  
ક્ષાવ્રત રૂપ દ્વાદશ વિધ શ્રાવક ધર્મ કો સ્વીકાર કરના ચાહતાહૂં । હસ  
પ્રકાર રાજા કી વાન સુનકર સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને ઉસસે કહા-હે દેવાનુ-  
પ્રિય ! તુમ્હેં જિસ પ્રકાર સુખ હ-વૈસા કરો પ્રમાદ ન કરો શુભ કર્મ મેં

સાંભળીને એને તેને શરીરમાં અવધારિત કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ તુષ્ટ થયો. હર્ષથી ગળગળો થઇને તેણે સુબુદ્ધિ અમાત્યને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

( સદ્ધામિણં દેવાણુપ્પિયા ! નિર્ગ્ગંથં પાવયણં ૩ જાવ સે જહેવં જં તુમ્હે વયહ  
તં ઇચ્છામિ ણં તવ અંતિપ પંચાણુવ્વહ્યં સત્તસિક્કાવહ્યં જાવ ઉવસંપજ્જિત્તાણં  
વિહરિત્તપ અદ્ધાસુહં દેવાણુપ્પિયા ! મા પહિવંધં૦ તપ્પણં સે જિયસત્તુ સુબુદ્ધિસ્સ  
અમચ્ચસ્સ અંતિપ પંચાણુવ્વહ્યં જાવ દુવાલસવિહં સાવયધમ્મં પહિવજ્જહ તપ્પણં  
જિયસત્ત સમણોવાસપ અભિગયજીવાજીવે જાવ પહિલામેમાણે વિહરહ )

હે દેવાનુપ્રિય ! આ નિર્ગ્ન્ય પ્રવચનમાં હું અદ્ધા રાખું છું, આમાં હું  
રુચિ રાખું છું. આ નિર્ગ્ન્ય પ્રવચન ખરેખર સત્ય છે વગેરે બેવું તમે કહો છો.  
તેવું જ આ નિર્ગ્ન્ય પ્રવચન છે. એથી હું તમારી પાસેથી પંચ અણુવ્રત અને  
સાત શિક્ષા વ્રત રૂપ બાર ( ૧૨ ) પ્રકારનો શ્રાવક ધર્મ સ્વીકારવા આહું છું.  
આ રીતે રાબની વાત સાંભળીને સુબુદ્ધિ અમાત્યે તેને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય !  
તમને જેમ ગમે તેમ કરો. પ્રમાદ કરો નહિ, સારા કામમાં મોડું કરવું યોગ્ય

तिबन्धं कुरु=धुमकार्ये विलम्बो न करणीयइत्यर्थः । ततःखलु स जितशत्रुः सुबुद्धे-  
रमात्यस्यान्तिके पञ्चाणुव्रतिकं यावद् द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते । ततः  
खलु जितशत्रुः श्रमणोपासकः 'अभिगयजीवाजीवे' अभिगतजीवाजीवः=रतिज्ञात-  
जीवाजीवस्वरूपः यावत् प्रासुकैषणी यैरशनादिभिः श्रमणनिर्ग्रन्थान् प्रतिलाभयन्  
=आहारादि ददन् विहरति=तिष्ठतिस्म । तस्मिन् काले जितशत्रुराज्यशासनकाले  
तस्मिन् समये=श्रावकधर्मप्रतिपालनसमये 'थेरागमणं' स्थविरागमनं=स्थविरसु-

विलम्ब करना योग्य नहीं है-इस तरह सुबुद्धि अमात्य के मुख से  
सुनकर जितशत्रु राजा ने उस सुबुद्धि अमात्य से पांच अणुव्रत एवं  
सात शिक्षाव्रत रूप द्वादश प्रकार का गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया ।  
इस तरह वे जितशत्रु राजा श्रमणोपासक बन गये । और जीव एवं  
अजीव तत्त्व के स्वरूप ज्ञाता भी हो गये । प्रसुक एषणीय आहारादि  
श्रमण निर्ग्रन्थ साधुओं के लिये प्रदान करने लगे । ( तणं कालेणं तेणं  
समएणं थेरागमणं जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ, सुबुद्धी धम्मं  
सोच्चा जं नवरं जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि, आहामुहं देवा-  
णुप्पिया ! तएणं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छि-  
त्ता, एवं वयासी-एवं खलु सामी ! मए थेराणं अंतिए धम्मं निसंते,  
से वि य, धम्मं इच्छिए पडिच्छिए, अभिरुइए, तएणं अहं सामी ! सं-  
सारभउच्चिग्गे भीए जाव इच्छामिणं तुम्मेहिं अब्भणुजाए स० जाव  
पवइत्तए ) उस काल जितशत्रु राजा के राज्यशासन काल में-उस स-

वेआथ नहि. आ रीते सुबुद्धि अमात्यना सुपेथी वात सांलणीने एतशत्रु  
राजान्ने ते सुबुद्धि अमात्य पासोथी पांथ अलुव्रत अने सात शिक्षाव्रत इप  
आर प्रकारने। गृहस्थ धर्म स्वीकारी लीथो. आ प्रमाणे ते एतशत्रु राजा  
श्रमणोपासक थई गया अने एव तेमज अएव तत्त्वना स्वइयने अभजनाश  
पण थई गया प्रासुक ओषणीय आहार वजेरे श्रमण निर्ग्रन्थ साधुजोने  
आपवा लाग्या

( तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं जियसत्तूराया सुबुद्धी य निग्गच्छइ,  
सुबुद्धी धम्मं सोच्चा जं नवरं जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि अहामुहं देवा-  
णुप्पिया ! तएणं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता एवं  
वयासी एवं खलु, सामी मए थेराणं अंतिए धम्मं निसंते, से वि य धम्मं इच्छिए  
पडिच्छिए, अभिरुइए, तएणं अहं सामी ! संसारभउच्चिग्गे भीए जाव इच्छामि  
णं अब्भणुजाए स० जाव पवइत्तए )

ते काले अने ते समये ओरवे के एतशत्रु राजा आरे शासन करता

નીનાં સમવસરણં જાતમ્ । જિતશત્રુ રાજા સુબુદ્ધિરમાતૃયથ નિર્ગચ્છતિ=ધર્મશ્રવણાર્થ  
ગ્રામાબ્દહિર્નિસ્સરતિ સુબુદ્ધિઃ ધર્મશ્રુત્વા 'અન્યત્સર્વં પૂર્વવત્, નવરં=વિશેષસ્વ-  
યમ્યંતુ જિતશત્રુ રાજાનમાપૃચ્છામિ યાવત્-યુષ્માકં સમીપે પ્રવ્રજામિ દીક્ષાં પ્રથિષ્ઠ્યા-  
મીત્યર્થઃ । સ્થવિરાહુચ્ચુઃ-યથામુખં હે દેવાનુપ્રિય ! મા પ્રતિવન્ધં કુરુ । તતઃ રહ્ય  
સુબુદ્ધિ યૈવ જિતશત્રુતતૈવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય એવમવાદીત્-એવં રહ્ય હે  
સ્વામિન્ ! જિતશત્રો ! મયા સ્થવિરાણામન્તિકે ધર્મઃ નિશાન્તઃ=શ્રુતઃ સોઽપિચ  
ધર્મો મે' ઇચ્છિષ્ય' ઇષ્ટઃ=વાચ્છિતઃ, 'પઠિચ્છિષ્ય' પ્રતીષ્ઠઃ=વિશેષપતો વાચ્છિતઃ,  
'અમિરુષ્ય' અમિરુચિતઃ=આસેવનરૂપેણ સર્વથા વાચ્છિતઃ । તતઃ રહ્ય તસ્માત્  
કારણાત્ અહં હે સ્વામિન્ ! સંસારમહાગ્નિગો' સંસારમયોદ્ગિન્નઃ=સંસારમયત્રસ્તઃ

મય મેં-ઔર उनके आवक धर्म के पालन करने के समय में-स्थविर  
मुनियों का वहाँ आगमन हुआ । जितशत्रु राजा और सुबुद्धि अमात्य  
धर्म श्रवण के लिये अपने अपने २ स्थान से निकल कर उनके समीप  
आये । सुबुद्धि ने धर्म का उपदेश सुनकर स्थविर मुनियों से निवेदन  
किया-भद्रे ! मैं जितशत्रु राजा से पूछकर यावत् आपके पास आकर  
मुनिदीक्षा धारण करना चाहता हूँ । स्थविरों ने सुबुद्धि अमात्य का  
अभिप्राय जानकर उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हे जिससे सुख हो  
वैसा करो-भ्रैयस्कर कार्य में विलम्ब करना हितावह नहीं है । इस तरह  
सुबुद्धि वहाँ से आकर जहाँ जितशत्रु राजा थे वहाँ आया वहाँ आकर  
कहाँ-स्वामिन् । मैंने स्थविर मुनिजनों के मुख से धर्म का उपदेश सुना  
है । वह मुझे बहुत ही रुचा है, मेरी इच्छा का विषय भूत बन गया है,  
मेरी चाहना उस तरफ विशेष रूप से बढ़ गई है । मैं चाहता कि मैं

હતા તે કાળે અને તેઓ બ્યારે આવક ધર્મનું પાલન કરતા હતા તે સમયે-  
ત્યાં સ્થવિર મુનિઓ આવ્યા. જિતશત્રુ રાજા અને સુબુદ્ધિ અમાત્ય ધર્મશ્રવણ  
માટે પોતાપોતાને ત્યાંથી નીકળીને તેમની પાસે પહોંચ્યા. ધર્મનો ઉપદેશ સાંભ-  
ળીને સુબુદ્ધિએ મુનિઓને વિનંતી કરી કે હે ભદ્રે ! જિતશત્રુ રાજાની આજ્ઞા  
મેળવીને તેમજ બીજી પણ ધણી વ્યવસ્થાઓ વગેરે કરીને તમારી પાસે આવીને  
મુનિ દીક્ષા ધારણ કરવા ચાહું છું. સ્થવિરોએ સુબુદ્ધિ અમાત્યના વિચારો  
જાણીને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જ્યાં સુખ મળતું હોય તેમ કરો. સારાં  
કામોમાં મોડું કરવું યોગ્ય કહેવાય નહિ આ રીતે આજ્ઞા મેળવીને સુબુદ્ધિ ત્યાંથી  
આવીને જિતશત્રુ રાજાની પાસે પહોંચ્યો અને તેણે રાજાને વિનંતી કરતાં કહ્યું કે  
હે સ્વામી ! સ્થવિર મુનિઓના મોંથી મેં ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે તે મને  
ખૂબ જ ગમી ગયો છે મારી ઈચ્છા તે તરફ આકર્ષાઈ છે. વિશેષ રૂપમાં હું  
તેને ચાહેવા લાગ્યો છું. મારી ઈચ્છા છે કે સંયમ ધારણ કરીને પોતાનું જીવન



‘भीष’भीतः जन्ममरणादि दुःखेभ्यो भयं प्राप्तः, अतएव यावद् इच्छामि खलु शुष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् यावत् स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुम् । ततः खलु जित-  
शत्रुः सुबुद्धिमेवमवादीत्-‘अच्छामु’ तिष्ठेम वयं तावद् गृहे हे देवानुप्रिय !  
कतिपयानि वर्षाणि, उदारान् यावत्-मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानाः सन्तः,  
ततः पश्चात्=तदनन्तरं शब्दादिविषयोयभोगानन्तरम् ‘एगयओ’ एकतः=सार्द्धम्  
स्थविराणामन्तिके गृहो भूत्वा यावत् प्रव्रजिष्यामः । ततः खलु सुबुद्धिर्नितशत्रो-  
रेतमर्थ=पश्चाद्दीक्षाग्रहरूपं भावं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तस्य जित-  
शत्रोः सुबुद्धिना सार्द्धं विपुलान् मानुष्यकान् भोगभोगान् प्रत्यनुभवतो द्वादश

संयम धारण कर अपने जीवन को सफल बनाऊँ । इस लिये हे स्वा-  
मिन् ! संसार भय से उद्दिग्ध बना हुआ मैं जन्म मरण के दुखों से भय  
भीत होकर चाहता हूँ कि आपसे आज्ञापित हो स्थविरों के पास दीक्षा  
धारण कर लूँ । (तएवं जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासी अच्छामु ताव देवानु-  
कइवयाइंति वासाइं उरालाइं जाव भुंजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराणं  
अंतिए भुंढे भविस्सा जाव पव्वइस्सामो ) अमात्य कि इस बात को  
सुनकर जितशत्रु राजाने उस सुबुद्धि अमात्य से इस प्रकार कहा ।  
देवानुप्रिय ! हम लोग कुछ वर्षों तक मनुष्य भव संवन्धी प्रचुर काम  
भोगों को भोगते हुए अभी घर पर ही रहें । इस के बाद एक साथ  
स्थविरों के पास सुण्डित होकर यात्रा फिर दीक्षित हो जायेंगे ।  
( तएवं सुबुद्धी जियसत्तूस्स, एयमइं पडिमुणेइ, तएणं तस्स जियसत्तू  
स्स, सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइं, माणुस्सं पच्चणुन्नुवमाणस्स दुवाल

सद्धण भवावधुं, भाटे डे स्वाभी ! संसार भयभी उद्दिग्ध तेभं जन्म मरणा  
दुःखोभी भय पावेवो हुं तमारी आज्ञा भेगवीने स्थविराणी पासेवी दीक्षा  
भेगवानी धच्छा राधुं छुं ।

(तएवं जियसत्तू सुबुद्धि एवं वयासी-अच्छामु ताव, देवानुप्रिय ! कइवया-  
इंति वासाइ उरालाइं जाव भुंजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए भुंढे भविस्सा  
जाव पव्वइस्सामो )

अमात्यनी ओ बात सांभलीने एतशत्रु राजाओ ते सुबुद्धि अमात्यने  
आ प्रभाओ कहुं डे डे देवानुप्रिय ! मनुष्यत्वना कामसुखोनी भन माधुवा  
भाटे अमे बीस वर्षो डेल पव्व गृहस्थना ज रूपमां रहीओ तो साइं त्थारपणी ओडी  
आये आंपणे अने स्थविराणी पासे सुंडित अछिने दीक्षा धारण करी लछुं ।

( तएवं सुबुद्धी जियसत्तूस्स एयमइं पडिमुणेइ, तएणं तस्स जियसत्तूस्स सुबु-  
द्धीणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्सं पच्चणुन्नुवमाणस्स दुवालसवासाइं वीइकंताइं,

वर्षाणि व्यतिक्रान्तानि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वादश वर्षव्यतिक्रान्ते सतीत्यर्थः स्थविरागमनं संजातं, तएणं=तदा खलु परिषभिर्गत । जितशत्रुरपि स्थविरान्तिके धर्मं श्रुत्वा ' एवं ' एवमेव पूर्वोक्त सुबुद्धि वदेव सर्वं नवरं=विशेषस्त्वयम्-यत् हे देवानुप्रियाः । सुबुद्धिम् आमन्त्रयामि, ज्येष्ठपुत्रं राज्ये स्थापयामि, ततः खलु=तत्पश्चात् शुष्माकमन्तिके यावत्-गुण्डो भूत्वा आगारात्=अगारभावात् अनंगारितां=साधुतां प्रव्रजामि । स्थविरा उचुः- हे देवानुप्रिय ! यथासुखं=यथा

सवासौ साहं वीक्ष्यकं ताहं तेणं कालेण २ थेरागमणं तएणं जियंसत्तू धम्मं सोच्चा एवं जं नवरं देवानुप्पिया ! सुबुद्धि आमंतेमि, जेह्पुत्तं रज्जे ठावेमि, तएणं तुब्बं अंतिए जाव पव्वयासि ) इस प्रकार सुबुद्धि अमात्य ने जितशत्रु राजा की इस बात को स्वीकार कर लिया । इस तरह सुबुद्धि अमात्य के साथ त्रिपुल मनुष्य भव संयन्धी काम भोगों का अनुभव करते हुए जितशत्रु राजाके १२ वर्ष निकल गये । उसकाल और उस समय में-अर्थात् १२ वर्ष व्यतीत हो जाने के समय में स्थविरोका वहाँ आगमन हुआ । नगर की परिषद स्थविरो का आगमन सुनकर धर्म सुनने की भावना से उन स्थविरो के पास आई । जितशत्रु राजा भी आये उनसे धर्म का उपदेश सुनकर जितशत्रु राजा सचेत हो गये । उन्होंने कहा हे देवानुप्रियो ! मैं आपसे दीक्षा लेना चाहता हूँ अतः पहिले सुबुद्धि अपने अमात्य से पूछूँ-और अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य में स्थापित करूँ-बाद में आप के पास मुंडित होकर अगार भाव से अनंगार अवस्था स्वीकार कर लूँगा । ( अहासुहं,

तेणं कालेण २ थेरागमणं तएणं जियंसत्तू धम्मं सोच्चा एवं जं नवरं देवानुप्पिया सुबुद्धि आमंतेमि जेह्पुत्तं रज्जे ठावेमि तएणं तुब्बं अंतिए जाव पव्वयासि )

आ रीते सुबुद्धि अमात्ये एतशत्रु राजानी वातने भानी वीधी सुबुद्धि अमात्यनी साथे कामभोगो भोगवतां एतशत्रु राजने आभने आम ७ बार वर्ष पसार थर्ध गयां, ते काले अने ते समये ज्येष्ठ के कामसुभो भोगवता एतशत्रु राजने न्यारे बार वर्षो पसार थर्ध गयां त्यारे त्यां स्थविरो आव्या, नगरनी परिषदो स्थविरोनु आगमन सांभणीने धर्म'नो उपदेश सांभणवा भाटे स्थविरोनी पासो पडोन्थी, एतशत्रु राज पणु त्यां गया अने धर्म'नो उपदेश सांभणीने राज सावधान थर्ध गया, तेजोअ स्थविरोने विन'ती करी के हे देवानुप्रियो ! हुं तभारी पासो दीक्षा लेवा आहुं छुं, हुं पडेवां सुबुद्धि अमात्यने पूछी वड अने पछी मारा न्येष्ठ पुत्रने राजन्यसार सोंपी हव, त्यारभा.ह तभारी पासो आवीने मुंडित थर्धश ने अगारभावथी अनंगार अवस्था स्वीकारीश,

તે મનસિ સુત્તં સ્યાત્તથા કુરુવેત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલ્લ જિતશત્રુયૈવે સ્વકં ગૃહં તર્જીવો-  
પાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સુબુદ્ધિ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવદત્-એવં સ્વલ્લ હે  
દેવાનુપ્રિય ! મયા સ્યવિરાણામન્તિકે ધર્મોનિશ્ચન્તઃ, સોઽપિ ચ ધર્મે હૃષ્ટઃ, પ્રતીષ્ઠઃ,  
અભિરુચિતઃ, તસ્માદહં મુણ્ડો ભૂત્વા અગારાદ્ અનગારિતાં પ્રવ્રજામિ, ત્વં ચ સ્વલ્લ  
કિં કરોષિ-તવ કા વાચ્છા વર્તેતે इत्यર્થઃ । તતઃ સ્વલ્લ સુબુદ્ધિર્જિતશત્રુમેવમવાદીત-

તएणं जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता,  
सुबुद्धिं सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी- एवं सल्ल देवाणुप्पिया । मए  
येराणं जाव पवज्जामि, तुमं णं किं करेसि, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं  
वयासी-जाव के अन्ने आहारे वा जाव पवज्जामि, तं जइणं देवाणु-  
प्पिया ! जाव पवज्जहिं तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेहं पुत्तं च कुडुंबे  
ठावेहि ठावित्ता सीयं दुरुहित्ता णं ममं अंतिए पाउम्भवह ) स्थविरो ने  
कहा-हे देवानुप्रिय ! यथा सुतं-तुम्हें जैसे सुत हो वैसा करो-हितावह  
कार्य में बिलंब करना उचित नहीं है । इसके अनंतर वे जितशत्रु राजा  
बहाँ से अपने घर पर आये । वह! आकर उन्होंने अपने अमात्य सुबुद्धि  
को बुलाया बुलाकर उससे इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! मैंने स्थविरो  
से श्रुतचारित्र रूप धर्म का उपदेश सुना है । वह धर्म मुझे बहुत ही  
अधिक हृष्ट, प्रतीच्छित हुआ है । मेरे अन्तः करण में वह समा गया  
है । इस लिये मैं अब मुंडित होकर इस अगार अवस्था का परित्याग

(अहा सुहं, तएणं जियसत्तू जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता  
सुबुद्धिं सदावेह सदावित्ता एवं वयासी एवं सल्ल देवाणुप्पिया ! मए येराणं जाव  
पवज्जामि तुमं णं किं करेसि, तएणं सुबुद्धी जियसत्तू एवं वयासी, जाव के अन्ने  
आहारे वा जाव वज्जामि तं जइणं देवाणुप्पिया । जाव पवज्जहिं तं गच्छहणं देवाणु-  
प्पिया । जेहं पुत्तं च कुडुंबे ठावेहि ठावित्ता सीयं दुरुहित्ता णं ममं अंतिए पाउम्भवह)

સ્થવિરોએ રાજાને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! ‘યથા મુખ’ એટલે કે તમને  
જેમાં મુખ મળતું હોય તેમ કરો. મારા માથામાં મોડું કરવું યોગ્ય નથી. ત્યારપછી  
જીતશત્રુ રાજા પોતાને ઘેર આવ્યા. ત્યાં આવીને તેઓએ પોતાના અમાત્ય  
સુબુદ્ધિને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય !  
મેં સ્થવિરોની પાસેથી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે. તે ધર્મ  
મારા માટે ખૂબ જ હૃષ્ટ અને પ્રતિચ્છિત થઈ ગયો છે. મારા અંતરમાં તે  
ખૂબ જ ઊંડે પહોંચી ગયો છે. એટલે કે આત્માના પ્રતિ પ્રદેશમાં તે વ્યાપ  
થઈ ગયો છે. માટે હું હવે મુંડિત થઈને આ અગાર અવસ્થાને ત્યાંજીને છોડ-

યદિ ભવાન્ પ્રવ્રજતિ તદા મે કોઽન્ય આધારો વા યાવત્-અહમપિ જ્યેષ્ઠપુત્રં કુદુમ્બે સ્થાપયિત્વા ભવતા સાદ્ પ્રવ્રજામિ । જિતશત્રુ પ્રાઢ-તદ્ યદિ સ્વલ્લ હે દેવાનુમિય ! યાવત્ પ્રવ્રજેઃ તદ્ ગચ્છ સ્વલ્લ હે દેવાનુમિય ! જ્યેષ્ઠપુત્રં ચ કુદુમ્બે સ્થાપયન્, સ્થાપયિત્વા શિબિકાં દુરુદ્ધ મમાન્ગિકે પ્રાદુર્ભવ, ઇતિ શ્રુત્વા સ સુબુદ્ધિરમાત્મઃ રાજાજ્ઞાનુસારેણ સર્વં કૃત્વા યાવત્ પ્રાદુર્ભવતિ । તતઃ સ્વલ્લ જિતશત્રુઃ કૌદુમ્બિક પુરુષાન્ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવદત્-ગચ્છત સ્વલ્લ યુયં હે દેવાનુમિયાઃ । અદીનશત્રોઃ કુમારસ્ય રાજ્યાભિષેકમુપસ્થાપયત યાવત્ તે રાજાઞ્ઞાં પ્રાપ્યાદીનશત્રું

કર જિન દીક્ષા ધારણ કરના યાહતા હું । કહો તુમ્હારી કયા રાય હૈ ? જિતશત્રુ રાજા કી હસ બાત કો સુનકર અમાત્ય સુબુદ્ધિ નેં ડનસે કહા—યદિ ઓપ દીક્ષા ધારણ કરના યાહતે હૈં, તો અબ મેરે લિયે આપકે સિવાય ઓર કોન દૂસરા આધાર હો સકતા હૈ । અતઃ મૈં બી અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો કુદુંબ મેં અપને સ્થાન પર સ્થાપિત કર આપકે સાથ હી દીક્ષિત હોના યાહતા હું । અમાત્ય સુબુદ્ધિ કી હસ ભાવના કો સુનકર જિતશત્રુ નેં ડસસે કહા—હે દેવાનુમિય ! યદિ તુમ મેરે સાથ હી દીક્ષિત હોના યાહતે હો તો જાઓ—ઓર અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો કુદુમ્બ મેં સ્થાપિત કરો—સ્થાપિત કર ફિર શિબિકા પર આરુઢ હો મેરે પાસ ઓ જાઓ । (જાવ પાડબ્મવદ્, તપ્પણં જિયસત્તૂ કોહુંબિયપુરિસે સદાવેદ્, સદાવિત્તા એવં વયાસી — ગચ્છહર્ણં તુમ્મે દેવાણુપ્પિયા અદીણસત્તૂસ્સ કુમારસ્સ રાયામિસેયં ઉવઢ્ઢવેહ, જાવ અભિસિંચંતિ, જાવ પવ્વહપ્, તપ્પણં જિયસત્તૂ એકારસઅંગાહં અહિંજ્જહ ) સુબુદ્ધિ અમાત્ય ને રાજા

દીક્ષા ધારણ કરવા ઇચ્છું છું. બોલો તમારો શો વિચાર છે ? જિતશત્રુ રાજાની આ વાત સાંભળીને અમાત્ય સુબુદ્ધિએ તેને કહ્યું કે જો તમે દીક્ષિત થવા ઇચ્છો છો ત્યારે તમારા સિવાય બીજો મારો કોણ આધાર છે અથવા થઈ શકે છે ? એટલા માટે હું પણ મોટા પુત્રને કુદુંબના વડા તરીકે નીમીને તમારી સાથે જ દીક્ષા સ્વીકારી લઉં છું. અમાત્ય સુબુદ્ધિની આ વાત સાંભળીને જિતશત્રુએ તેને કહ્યું કે હે દેવાનુમિય ! જો મારી સાથે જ દીક્ષિત થવાની તમારી ઇચ્છા હોય તો તમે મોટા પુત્રને કુદુંબના વડા તરીકે નીમો અને ત્યારપછી પાદબી હપર સવાર થઈને મારી પાસે આવી બપ.

( જાવ પાડબ્મવદ્, તપ્પણં જીયસત્તૂ કોહુંબિયપુરિસે સદાવેદ્, સદાવિત્તા એવં વયાસી ગચ્છહર્ણં તુમ્મે દેવાણુપ્પિયા અદીણસત્તૂસ્સ કુમારસ્સ રાયામિસેયં ઉવઢ્ઢવેહ જાવ અભિસિંચંતિ જાવ પવ્વહપ્, તપ્પણં જિયસત્તૂ એકારસઅંગાહં અહિંજ્જહ )

રાજ્યેઽભિષિચ્ચતિ યાવત્-જિતશત્રુ રાજા સુબુદિનાઽમાત્યેન સહ પ્રવ્રજિતઃ । તતઃ  
સ્વલુ જિતશત્રુરેકાદશાઙ્ગાનિ અગ્રીતે । વહ્નિનિ વર્ષાણિ પર્યાયઃ=શ્રામણ્યપર્યાયઃ ।  
માસિકયા સંછેત્તનયા સિદ્ધઃ । તતઃ સ્વલુ સુબુદિ રેકાદશાઙ્ગાનિ-અગ્રીતે, વહ્નિ-  
વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાય પાલયિત્વા યાવત્સિદ્ધઃ । સુધર્માસ્વામી કથયતિ-एवम्=

કે કહે અનુસાર સવ કાર્ય વૈસા હી ક્રિયા । વાદ મેં વહ જિતશત્રુ રાજા  
કે પાસ ઓ ગયા । જિતશત્રુ રાજા ને હસ કે અનંતર કૌટુંબિક પુરુષો  
કો બુલાયા-બુલાકર ડનસે ઇસા કહા-દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ જાઓ  
ઔર યુવરાજ અદીન શત્રુ કુમારકા રાજ્યાભિષેક કરો । રાજાકી આજ્ઞા-  
નુસાર ડન લોગોને વૈસા હી ક્રિયા -અદીન શત્રુ રાજા સુબુદિ અમાત્ય  
કે સાથ દીક્ષિત હો ગયે । રાજર્ષી જિતશત્રુને ૧૧ ગ્યારહ અંગોકા અધ્યયન  
ક્રિયા । (વહ્નિનિ વાસાણિ પરિયાઓ માસિયાપ સિદ્ધે, તર્ણ સુબુદી ઇગાર-  
સંગાઈ અહિજ્જહ, વહ્નિનિ વાસાઈ જાવ સિદ્ધે ! ઇવં સ્વલુ જંબૂ ! સમ-  
જેળં મગવયા મહાવોરેળં વારમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ ઇયમદ્દે પળ્લત્તે સિ-  
વેમિ) અનેક વર્ષોતક શ્રામણ્યપર્યાય કા પાલન ક્રિયા । વાદમેં ઇક માસ  
કી સંછેત્તનાસે ૬૦ મત્તોકા અનશન દ્વારાછેદન કર વે સિદ્ધાવસ્થાપન  
હોં ગયે । સુબુદિ મુનિરાજ ને ૧૧ ગ્યારહ અંગો કા અચ્છી તરહ અધ્યયન  
ક્રિયા-ઔર બહુત વર્ષોતક શ્રામણ્ય પર્યાય કા પાલન કર સિદ્ધ અવસ્થા

૧૪-૪ ૩ સુબુદિ અમાત્યે રાજાની આજ્ઞા સુબળ જ બધું કામ પતાવી દીધું. ત્યાર  
પછી તે રાજાની પાસે આવ્યો. જિતશત્રુ રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને  
બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ  
અને યુવરાજ અદીનશત્રુ કુમારને રાજ્યાભિષેક કરો. રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને  
તે લોકોએ બધી ત્રિધિ પૂરી કરી દીધી. આ પ્રમાણે અદીનશત્રુકુમારને રાજ્યા-  
સને બેસાડીને જિતશત્રુ રાજા સુબુદિ અમાત્યની સાથે દીક્ષિત થઈ ગયા.  
રાજાકય જિતશત્રુએ અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું.

( વહ્નિનિ વાસાણિ પરિયાઓ માસિયાપ સિદ્ધે, તર્ણ સુબુદી ઇગારસંગાઈ  
અહિજ્જહ, વહ્નિનિ વાસાઈ જાવ સિદ્ધે ! ઇવં સ્વલુ જંબૂ ! સમજેળં મગવયા મહાવીરે  
ર્જ-વારમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લત્તે સિવેમિ )

તેઓએ ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું. ત્યારપછી એક  
માસની સંઘેત્તનાથી ૬૦ ભક્તોનું અનશન દ્વારા છેદન કર્યું અને ત્યારબાદ  
તેઓ સિદ્ધ થઈ ગયા. મુનિરાજ સુબુદિએ પણ સારી પેઠે અગિયાર  
અંગોનું અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું

પૂર્વોક્તપ્રકારેણ ચત્તુરે જન્મ્ભૂઃ ! શ્રમણેન ભગવતા શ્રીમહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગ-  
તિનામધેયં સ્થાનં સમ્પ્રાપ્તેન દ્વાદશસ્ય ઉદકારુણ્યસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અર્થઃ=પૂર્વોક્ત-  
પ્રકારઃ અર્થઃ=ભાવઃ પ્રજ્ઞસઃ ‘તિવેમિ’ ઇતિ બ્રવીમિ યથા ભગવાન્મુસ્તાચ્છુતં તથૈવ  
તુમ્યં પ્રતિપાદયામિ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

ઇતિ શ્રી-વિશ્વવિખ્યાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશમાષાકલિતલલિતક-  
લાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગણપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક-વાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુચ્છ-  
વ્રપતિકોલ્હાપુરરાજપદ્મ-‘જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય’ પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ-  
ગુરુ-બાલબ્રહ્મચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાંકરપૂજ્યશ્રી-ઘાસીલાલ-  
પ્રતિધિરચિતાયાં ‘જ્ઞાતાધર્મકથાજ્ઞ’ સૂત્રસ્થાનગારધર્મામૃતવ-  
ર્ષિણ્યાલ્યાયાં વ્યાલ્યાયાં દ્વાદશમધ્યયનં સંપૂર્ણમ્ ॥૧૨ ॥

કો પ્રાપ્ત કર લિયા । સુધર્મા સ્વામી જંબૂ સ્વામી સે કહતે હૈં-હે જંબૂ !  
શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને કિ જો સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત  
હો ચુકે હૈં હસ દ્વાદશ ઉદકારુણ્ય જ્ઞાતાધ્યયન કા હસ પ્રકાર સે યહ  
પૂર્વોક્ત રૂપ અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ । સો જૈસા મૈને હન ભગવાન કે  
મુખ સે સુના હૈ વૈસા હી યહ તુમ સે કહા હૈ । અપની તરફ સે હસ મેં  
કુછ ખી મિલાવટ નહીં કી હૈ । સૂત્ર ॥ ૨ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત “જ્ઞાતા-  
ધર્મકથાજ્ઞસૂત્ર” કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાલ્યાયાકા બારહવાં  
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

અને છેવટે સિદ્ધાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી લીધી. મુધર્મા સ્વામી જંબૂ સ્વામીને કહે છે  
કે હે જંબૂ ! સિદ્ધિગતિ મેળવેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દ્વાદશ-ઉદકારુણ્ય  
જ્ઞાતા-ધ્યયનનો ઉપર કહ્યા પ્રમાણે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે. એ ભગવાનના  
શ્રીમુખથી બોલે અર્થ સાંભળ્યો છે તેવો જ તમારી સામે સ્પષ્ટ કર્યો છે. એ  
આમાં પોતાની મેળે કોઈ પણ વાત ઉમેરી નથી. ॥ સૂત્ર “ ૨ ” ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી  
વ્યાખ્યાનું બારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૨ ॥

## અથ ત્રયોદશમમધ્યયનમ્ પ્રારમ્ભયતે ।

ગતં દ્વાદશમમધ્યયનમ્, સમ્પ્રતિ ત્રયોદશમારમ્ભયતે-અસ્યાધ્યયનસ્ય પૂર્વેન સહાડયં સમ્બન્ધઃ-પૂર્વરિમન્ અધ્યયને સંસર્ગવિશેષવશાદ્ ગુણવૃદ્ધિરુક્તા, ઇદં તુ ત્રયોદશેડ્યયને તદ્માવાત્ ગુણહાનિરુચ્યતે હત્યેવં પૂર્વાધ્યયનેન સહ અયમેવ સંબદ્ધઃ તસ્યેદમાદિ સૂત્રમાહ-‘ જઈ ણં મંતે ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-જઈણં મંતે ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સંપત્તેણં વારસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે, તેરસ મસ્સ ણં મંતે ! ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? एवं खलु जंवू ! તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે ણામ નયરે હોત્થા, ગુણસિલપ્પ ચેદ્દપ્પ, સમોસરણં, પરિસા નિગ્ગયા । તેણં કાલેણં તેણં સમણં સોહમ્મે કપ્પે દ્વરવડિંસપ્પ વિમાણે સમાપ્પ સુહમ્માપ્પ, દહુરંસિ સીહાસણંસિ દ્વરે દેવે, ચઉહિં સમાણિયસાહસીહિં ચઉહિં અગ્ગમહિસીહિં સપરિસાહિં एवं जहा सूरियाभो ज़ाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणो विहरइ ॥ सू० १ ॥

-: ણંદ મળિયાર નામ કા તેરહવાં અધ્યયન પ્રારંભ:-

૧૨વારવાં અધ્યયન સમાપ્ત હોયુકા । અબ તેરહવાં અધ્યયન પ્રારંભ હોતા હૈ । હસ કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સંબન્ધ હૈ કિ પૂર્વ અધ્યયન મેં સંસર્ગ ( સત્સંગ ) વિશેષ કે વશ સે ૦ ગુણ વૃદ્ધિ કહી ગઈ હૈ-યહાં હસ તેરહવે અધ્યયન મેં હસ કે અભાવ સે ગુણ હાનિ કહી જાવેગી । ‘ જઈણં મંતે ! સમણેણં ’ ઇત્યાદિ । સૂત્ર ॥ ૧ ॥

સુદ મહિયાર નામે તેરમુ અધ્યયન પ્રારંભ.

પ્રારમ્ભુ અધ્યયન પૂરૂ થઈ ચૂકયું છે. હવે તેરમું અધ્યયન પ્રારંભ થાય છે. આ અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પહેલાંના અધ્યયનમાં સંસર્ગ ( સંગત ) વિશેષથી શુભ વૃદ્ધિ ળતાવવામાં આવી છે. આ તેરમા અધ્યયનમાં સંસર્ગ વિશેષના અભાવથી શુભ-હાનિ નિરૂપવામાં આવશે.

જઈણં મંતે ! સમણેણં ઇત્યાદિ

ટીકા—જમ્બૂ સ્વામી પૃચ્છતિ—યદિ खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महो-  
वीरेण यावत् संप्राप्तेन, सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं गतेन, द्वादशस्य ज्ञाताध्ययनस्य,  
'अयमद्वे' अयमर्थः = संसर्गविशेषवशाद् गुणवृद्धिरूपोऽर्थः 'पण्णत्ते' प्रहस्यः=  
प्ररूपितः, तर्हि तदनन्तरम् त्रयोदशस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य, श्रमणेन,  
भगवता महावीरेण कोऽर्थः प्रहस्यः । सुधर्मा स्वामी कथयति—एवं खलु  
हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत् ।

ટીકાર્થ—(જહ્ણં મંતે) હે ભદન્ત ! યદિ (સમણેન ભગવત્યા મહાવીરેણ)  
શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને ( જાવ સમ્પત્તેણં વારમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ  
અયમદ્વે પણ્ણત્તે તેરમસ્સ ણં મંતે ! ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણં ભગવત્યા  
મહાવીરેણં કે અદ્વે પણ્ણત્તે ) કિ જો સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કે ભાગી  
બન જુકે હૈં વારહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ નિર્દિષ્ટ  
કિયા હૈ—તો હે ભદન્ત ઝ઼઼઼઼઼઼઼઼ ઝ઼઼઼઼઼઼઼ ઝ઼઼઼઼઼઼઼ ઝ઼઼઼઼઼઼઼ ઝ઼઼઼઼઼઼઼ ઝ઼઼઼઼઼઼઼ ઝ઼઼઼઼઼઼઼  
જ્ઞાતાધ્યયન કા ક્યાં ભાવ-અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ ? ( એવં खलु जंबू !  
तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए,  
समोसरणं, परिता निग्गया ) इस प्रकार जंबू स्वामी का प्रश्न सुनकर  
श्री सुधर्म स्वामी उन्हें समझा ने के निमित्त कहते हैं कि जंबू ! सुनो.  
तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है उस काल और उस समय में  
राजगृह नाम का नगर था । उस नगर के बहिर्भाग में गुणशिलक  
नाम का चैत्य था । उस में भगवान् महावीर प्रभु आये । प्रभु के

ટીકાર્થ—( જહ્ણં મંતે ! ) હે ભદન્ત ! એ ( સમણેન ભગવત્યા મહાવીરેણ )  
શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—

( જાવ સમ્પત્તેણં વારમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્વે પણ્ણત્તે તેરમસ્સ ણં મંતે !  
ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણં ભગવત્યા મહાવીરેણં કે અદ્વે પણ્ણત્તે )

કે જંઓ સિદ્ધગતિ મેળવેલા છે—આરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ ઉપર કહ્યા  
સુજ્ઞાન અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે હે ભદન્ત ! તેઓ શ્રમણ ભગવાન મહા-  
વીરે આં તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

( એવં खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नाम नयरे होत्था;  
गुणसिलए चेइए, समोसरणं परिता निग्गया )

આ પ્રમાણે જખૂ સ્વામીનો પ્રશ્ન સાંભળીને સુધર્મા સ્વામી તેમને સમ-  
જાવવા માટે કહેવા લાગ્યા કે હે જખૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ  
પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તે નગરની



તસ્ય નગરસ્ય બહિર્માર્ગે ગુણશિલકં નામ ચૈત્યમાસીત્ । તત્ર યગવતો મહાવીરસ્ય સમવસરણં સંજાતમ્ । મગવદ્ધર્મનાથં પરિષન્નિર્ગતા । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે 'સોદ્ધમેકપ્યે' સૌધર્મે કપ્યે=સૌધર્મનામ્નિ દેવલોકે દર્દુરાવતંસકે વિમાને, સમાયાં સુધર્માયાં દર્દુરે સિંહાસને દર્દુરો દર્દુરનામકો દેવઃ 'ચઙ્ઠિં સામાણિયસાહસ્સીહિં' ચતસ્રભિઃ સામાનિકસાહસ્સીભિઃ ચતુસ્સહસ્રસંખ્યકૈઃ-સામાનિક-દેવૈઃ, તથા 'ચઙ્ઠિં અગમહિસીહિં સપરિસાહિં' ચતસ્રભિરગ્રમહિષીભિઃ સપરિપદ્મિઃ=સ્વસ્ય પરિવસ્તહિતામિશ્વતુઃ સંખ્યકામિઃ પદ્મદેવીભિઃ સંપરિવ્રતઃ, 'એવં જહા સૂરિયામો જાવ દિવ્વાઈ મોગમોગાઈં' શુંજમાણો વિહરહ' એવં યથા સૂર્યામો રાજપ્રશ્નીયસૂત્રે-સૂર્યામદેવસ્ય વર્ણનં પ્રોક્તં તદ્વદ્વાપિ વોદ્યથમ્, યાવત્-દિવ્યાન્ મોગમોગાન્ શુજ્ઞાનો વિહરતિ ॥ સૂ. ૧ ॥

વંદના કરને કે લિયે પરિષદ આવી ઓર દેશના સુનકર ઘાપિસ બલી આવી ( તેણં કાલેણં તેણં સમણં સોદ્ધમે કપ્યે દર્દુરવહિંસપ વિમાણે સમાપ સુદ્ધમાપ, દર્દુરંસિ સીહાસર્ણસિ, દર્દુરે દેવે ચઙ્ઠિં સામાણિય સાહસ્સીહિં ચઙ્ઠિં અગમહિસીહિં સપરિસાહિં એવં જહા સૂરિયામો જાવ દિવ્વાઈ મોગમોગાઈં શુંજમાણો વિહરહ ) ડસી કાલ ઓર ડસી સમય મેં સૌધર્મ નામ કે દેવ લોક મેં દર્દુરાવતંસક વિમાન મેં સુધર્મા સમા મેં દર્દુર સિંહાસન પર દર્દુર નામ કા દેવ ચાર હજાર સામાનિક દેવો કે એવં અપની ૨ પરિષદ સહિત ચાર પદ્મ દેવિયોં કે સાથ સૂર્યામદેવ કી તરહ દિવ્ય કામ મોગોં કા અનુભવન કરતા હુઆ બેઠા થા । રાજ પ્રશ્નીય સૂત્ર મેં સૂર્યામ દેવ કા વર્ણન યહાં પર મી જાનના ચાહિયે । સૂત્ર ॥ ૧ ॥

ખહાર શુભુશીલક નામે ચૈત્ય ( જીન દેરાસર ) હતું. તેમા ભગવાન મહાવીર આવ્યા. પ્રભુને વંદન કરવા માટે નગરની પરિષદ આવી અને દેશના સાંભળીને પાછી જતી રહી.

( તેણં કાલેણં તેણં સમણં સોદ્ધમે કપ્યે દર્દુરવહિંસપ વિમાણે સમાપ સુદ્ધમાપ, દર્દુરંસિ સીહાસર્ણસિ, દર્દુરે દેવે ચઙ્ઠિં સામાણિયસાહસ્સીહિં ચઙ્ઠિં અગમહિસીહિં સપરિસાહિં એવં જહા સૂરિયામો જાવ દિવ્વાઈ મોગમોગાઈં શુંજમાણો વિહરહ )

તે કાળે અને તે સમયે સૌધર્મ નામના દેવલોકમાં દર્દુર સિંહાસન ઉપર દર્દુર નામે દેવ ચાર હજાર સામાનિક દેવોની અને પોતપોતાની પરિષદ સહિત ચાર પદ્મ દેવીઓ ( પટરાણીઓ ) ની સાથે સૂર્યામ દેવની જેમ દિવ્ય કામ સુખોને અનુભવતો બેઠો હતો. “ રાજ પ્રશ્નીય સૂત્ર ” માં સૂર્યામ દેવનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. અહીં પણ તે પ્રમાણે જ વર્ણન બાણી લેવું બોધ્યું છે. ॥ સૂ. “૧” ॥

मूल—इमं च णं केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं विउलेणं ओ-  
हिणा आभोष्माणे२ जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगण्।  
जहा सूरियाभे । भंतेति भगवं गोयमे समणे भगवं महा-  
वीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अहो णं  
भंते ! दहुरेदेवे महड्डिण् महज्जुइए महाबले महाजसे महा-  
सोक्खे महाणुभावे दहुरस्सणं भंते ! देवस्ससा दिव्वा देवड्डी  
देवज्जुई कहिं गया कहिं पविट्ठा गोयमा ! सरीरं गया सरीरं  
अणुप्पविट्ठा, कूडागारदिट्ठंतो। दहुरेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा  
देवड्डी देवज्जुई, किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिस-  
मन्नागया ? एवं खलु गोयमा ! इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे  
वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए, सेणिण् राया । तत्थं  
णं रायगिहे णयरे णंदे णामं मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते० ।  
तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! समोसठे, परिसा  
णिग्गया । सेणिण् राया णिग्गए तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी इ-  
मीसे कहाए लद्धे समणे णहाए० पायचारेणं जाव पज्जुवासइ।  
णंदे धम्मं सोच्चा णिसम्म समणोवासए जाए। तएणं अहं  
रायगिहाओ पडिनिक्खंते वहिया जणवयविहारं विहरामि, तए  
णं से णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया कयाइ असाहुदंसणेण य  
अपज्जुवासणाए य अणुसासणाए य असुस्सूसणाए य  
सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढ-  
माणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था तएणं नंदे

मणियारसेट्टो अन्नया गिम्हकालसमयांसि जेट्टामूलंसि मासंसि  
 अट्टमभत्तं परिगेण्हइ परिगेणिहत्ता पोसहसालाए जाव विह-  
 रइ, तएणं णंदस्स अट्टमभत्तांसि परिणममाणंसि तण्हाए  
 छुहाए ये अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए  
 समुप्पज्जित्था—धन्नाणं ते राईसर जाव सत्थवाहप्पभियओ  
 जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ  
 जाव सरसरपंतियाओ जत्थ, णं बहुजणो ण्हाइ य पियइ य  
 पाणियं च संवहइ, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउ० सेणियं  
 आपुच्छित्ता रायगिहस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए वेभार-  
 पव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइयंसि भूमिभागंसि  
 जाव णंदं पोक्खरणिं खणावेत्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ कल्लं  
 पाउ० जाव पोसहं पारेइ पारित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्तणाइ  
 जाव संपरिवुडे महत्थं जाव रायारिहं पाहुडं गेण्हइ गेणिहत्ता  
 जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव  
 पाहुडं उवट्ठवेइ उवट्ठवित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं सामी!  
 तुब्भेहि अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव  
 खणावेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तएणं णंदे सेणिएणं  
 रत्ता अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ० रायगिहं मज्झं मज्झेणं  
 निग्गच्छइ २ वत्थुपाढयरोइंसि भूमिभागंसि णंदं पोक्खरणिं  
 खणाविउं पयत्ते यावि होत्था, तएणं सा णंदा पोक्खरणी  
 अणुपुव्वेणं खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था

चाउक्कोणा समतीरा अणुपुण्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजला  
संछणपत्ताबिसमुणाला बहुप्पलपउमकुमुयनल्लिणसुभगसो-  
गंधियपुंडरिय महापुंडरीय सयपत्तसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोव-  
वेया परिहत्थभमंतमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणविय-  
रियसदुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘ इमं च णं ’ इत्यादि । स ददुरको देवः इमं च खलु ‘ केवल-  
कप्पं ’ केवलकल्पं = सम्पूर्णं जम्बूद्वीपं द्वीपं विपुलेन ‘ ओहिणा ’ अवधिना  
—अवधिज्ञानेन ‘ आमोएमाणे २ ’ आमोगयन् आमोगयन् = वारंवारमव  
लोकयन् ‘ जाव ’ ‘ नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए ’ यावत्ताटयविधिमुपदर्श्य  
प्रतिगतः ‘ जहा सूरियामे ’ यथा सूर्यामः, सूर्याभदेववत् । तद् गमना-  
नन्तरं भदन्त । इति संबोध्य भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं—  
वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्—अहो ! खलु भदन्त ! ददुरो

‘ इमं च णं केवलकप्पं ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—वह ददुरकदेव (इमं च णं केवलकप्पं जंबूद्वीपं २) इस केवल  
कल्प—संपूर्ण—जंबूद्वीप नाम के द्वीप को ( विउलेण ओहिणा ) अपने  
विपुल अवधिज्ञान से ( आमोए माणे २ ) बार २ देखता हुआ ( जाव  
नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए ) यावत् नाट्य विधि को दिखला कर  
चला गया ( जहा सूरियामे ) सूर्याभदेव की तरह ( भंतेति भगवं  
गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं  
वयासी ) उस के चले जाने के बाद हे भदन्त ! इस प्रकार से संबोधित  
करके भगवति गौतम ने श्रमण भगवान् महावीर प्रभु से इस प्रकार  
पूछा ( अहो णं भंते ! ददुरे देवे महड्डिए महज्जुइए महाबले, महाजसे

‘ इमं च णं केवलकप्पं ’ इत्यादि

ते ददुरे देव ( इमं च णं केवलकप्पं जंबूद्वीपं २ ) आ देवल ४६५-  
संपूर्ण—जंबूद्वीप नामका द्वीपने ( विउलेण ओहिणा ) पोताना अवधिज्ञानथी  
( आमोएमाणं २ ) बार-बार ओते ( जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए ) यावत्  
नाट्य विधितुं प्रदर्शन अतापीने ओते रह्यो. ( जहा सूरियामे ) सूर्याभ देवनी  
ओभ ( भंतेति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता  
णमंसित्ता एवं वयासी ) तेना जवा पछी श्रमण भगवान् महावीर प्रभुना  
थरओभां भगवान् गौतमे ‘ हे भदन्त ! ’ ओवी रीते सजोधीने तेओओ प्रभुने  
आ प्रभाओे कथुं हे—

દેવો મહર્દિકો મહાધુતિકઃ, આશ્ચર્યકારિ મહદ્ધર્્યાદિયુક્તોઽયં વર્તતે દર્દુરસ્ય  
સ્વલ્લ મદન્ત ! દેવસ્ય સા દિવ્યા દેવર્દિર્દેવધુતિઃ કુત્ર ગતા કુત્ર પ્રવિષ્ટા ? યા  
પૂર્વં દૃષ્ટેતિ માબઃ । મગવાનાહ—હે ગૌતમ ! સા દિવ્યા દેવર્દિઃ દેવધુતિશ્ચ તસ્ય  
શરીરં ગતા શરીરમનુપ્રવિષ્ટા । અત્ર ‘કૂઢાગારદિટ્ઠો’ કૂટાગારદૃષ્ટાન્તો બોધ્યઃ ।  
કૂટાગારદૃષ્ટાન્તસમન્વયાય ગૌતમસ્ય મગવતો મહાવીરસ્ય ચ ઉક્તિઃ પ્રયુક્તિ-  
ઘોનિર્દિષ્ટપ્રકારેણ જ્ઞેયા—ગૌતમસ્વામી પૃચ્છતિ હે મદન્ત !—હે મગવન્ ! દર્દુરેણ  
દેવેન સા દિવ્યા દેવર્દિઃ દેવધુતિઃ કથં—કેન પ્રકારેણ લન્ધા=સમુપાર્જિતા માત્તા=  
આયત્તીભૂતા અમિસમન્વાગતા=સમ્યક્સ્વમોગધિષયીકૃતા ? મગવાનાહ—

મહાસોક્ષ્ણે, મહાણુમાવે, દદ્દુરસ્સ ણં મંતે ! દેવસ્સ સાં દિવ્વા દેવિહીં  
દેવજ્જુઈ કહિં ગયા, કહિં પવિટ્ઠા) હે મદન્ત ! અભીરયહ દર્દુર દેવ આશ્ચર્યકારી  
મહદ્ધર્્યાદિ સે યુક્ત થા, સો હસ સમય ઉસ દર્દુર દેવ કી હે મદન્ત ! વહ  
પૂર્વદ્દષ દિવ્ય દેવર્દિ, દેવધુતિ કહાં ગઈ, કહાં પ્રવિષ્ટ હો ગઈ ? ( ગોયમા !  
સરીરં ગયા, સરીરં અણુપ્પવિટ્ઠા ) હસ પ્રકાર ગૌતમ કા પ્રશ્ન સુનકર  
પ્રશ્ન ને ડન સે કહા—હે ગૌતમ ! વહ દિવ્યદેવર્દિ ઓર દિવ્ય દેવધુતિ  
હસ દર્દુર દેવ કે શરીર મેં ચલી ગઈ હૈ, શરીર મેં પ્રવિષ્ટ હો ગઈ હૈ ।  
( કૂઢાગાર દિટ્ઠો ) હસ વિષય મેં કૂટાગાર દૃષ્ટાન્ત પ્રયુક્ત હુઆ હૈ ।  
હસી કૂટાગારદૃષ્ટાન્ત કે સમન્વય કે લિયે મગવાન્ ગૌતમ ઓર મહા-  
વીર પ્રશ્ન કી યહ ઉક્તિ પ્રયુક્તિ અઘોનિર્દિષ્ટ પ્રકાર સે જાનની ચાહિયે  
( દર્દુરે ણં મંતે દેવેણં સાં દિવ્વા દેવિહીં દેવજ્જુઈ કિણ્ણા લદ્ધા કિણ્ણા

( અહોણં મંતે ! દદ્દુરે દેવે મહદ્ધિપ મહજ્જુઈપ, મહાવહે, મહાજસે, મહા  
સૌવક્ષે, મહાણુમાવે દદ્દુરસ્સ ણં મંતે ! દેવસ્સ સાં દિવ્વા દેવિહીં દેવજ્જુઈ કહિં  
ગયા, કહિં પવિટ્ઠા )

હે ભદ્રંત ! હમણું તો આ દર્દુર દેવ આશ્ચર્યકારી મહર્દિ વગેરેથી  
સંપન્ન હોતો આ સમયે દર્દુરક દેવની હે ભદ્રંત ! તે પૂર્વ દૃષ્ટ દિવ્ય દેવર્દિ,  
દેવધુતિ ક્યાં જતી રહી છે ? ક્યાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગઈ છે ? ( ગોયમા ! સરીરં  
ગયા, સરીરં અણુપ્પવિટ્ઠા ) આ રીતે ગૌતમનો પ્રશ્ન સાંભળીને પ્રભુએ તેમને  
કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે દિવ્ય દેવર્દિ અને દિવ્ય દેવધુતિ તે દેવ દર્દુરકના  
શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગઈ છે. શરીરમાં જતી રહી છે ( કૂટાગારદિટ્ઠો ) આ  
વિશેષ કૂટાગાર દૃષ્ટાન્ત આપવામાં આવ્યું છે. આ કૂટાગાર દૃષ્ટાન્તના સમન્વય માટે  
મગવાન ગૌતમ અને મહાવીર પ્રભુની ત્રયોનીએ લખ્યા મુજબ લખ્યો.

(દદ્દુરેણં મંતે ! દેવેણં સાં દિવ્વા દેવિહીં દેવજ્જુઈ કિણ્ણા લદ્ધા કિણ્ણા પત્તા

एवं खलु हे गौतम ! इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृहं नगरं, गुण-  
शिलकं चैत्यं, श्रेणिको राजाऽऽसीत् । तत्र खलु राजगृहे नगरे नन्दनामा मणि-  
कारश्रेष्ठी आढ्यो दीप्तोऽपरिभूतः परिवसति । तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे  
गौतम ! अहं तत्र राजगृहे समवसृतः परिचरिगता श्रेणिको राजा निर्गतः । ततः  
खलु स नन्दो मणिकार श्रेष्ठी अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् स्नातः पादचारेण=  
पादाभ्यामेव न तु रथाश्वादि यानेन ' जाव पज्जुवासइ ' मम वन्दनार्थमागतो  
वन्दित्वा नमस्वित्वा च यथास्थानमुपविश्य पर्युपास्तेस्म । नन्दः नन्द-  
मणिकारश्रेष्ठी धर्म = श्रुतचारित्रलक्षणं श्रुत्वा श्रमणोपासकः = श्रावको  
जातः । ततः खलु अहं ( महावीरस्वामी ) राजगृहात् प्रतिनिष्क्रान्तो बहिर्जनपद-

पत्ता किण्णा अभिसमन्नागया ? एवं खलु गोयमा ! इहैव जम्बूद्वीपे दीपे  
भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया तत्थणं  
रायगिहे नगरे णंदे णामं मणियारसेट्ठी अट्ठे दिसे० ) गौतम स्वामी  
प्रभु से पूछते हैं भदंत ! दुर्दुर देव ने वह दिव्य देवर्द्धि और दिव्य देव-  
श्रुति किस प्रकार से उपार्जितकी, किस प्रकार से अपने आधीन की  
और किस प्रकार उसे अपने भोग के विषय भूत बनाई ? प्रभु ने कहा  
गौतम ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-इसी जम्बूद्वीप नाम के  
द्वीप में, भरत क्षेत्र में, राजगृह नाम के नगर में गुण शिलक नाम का  
चैत्य था । नगर के राजा का नाम श्रेणिक था । उस राजगृह नगर में नन्द  
नामका मणिकार श्रेष्ठी रहता था । यह बहुत ही आढ्य-धन संपन्न-एवं  
अपरिभूत-जनमान्य-था ( तेषं कालेणं तेषं समएणं अहं गोयमा ।  
समोसदे, परिस्ता निग्गया, सेणिए, राया णिग्गए, तएणं से णंदे मणि-

किण्णा अभिसमन्नागया ? एवं खलु गोयमा ! इहैव जम्बूद्वीपे दीपे भारहे वासे  
रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया तत्थणं रायगिहे नगरे णंदे णामं  
मणियारसेट्ठी अट्ठे दिसे० )

गौतम स्वामी प्रभुने पूछे छे के डे बादंत ! दुर्दुर देवे ते दिव्य देवर्द्धि  
अने दिव्यश्रुति केवी रीते भेणत्ती. केवी रीते पोताने आधीन भनावी अने  
केवी रीते तेने पोताना उपलोग योग्य भनावी ? प्रभुने कहुं के डे गौतम !  
तभाश प्रश्नो उत्तर आ प्रभावे छे के ओए जम्बूद्वीप नामना द्वीपमां भरत-  
क्षेत्रमां, राजगृह नामना नगरमां शुश्रुशीलक नामे चैत्य डेतुं. ते नगरना  
राजानुं नाम श्रेष्ठिक डेतुं ते राजगृह नगरमां नन्द नामे मणिकार श्रेष्ठि रहते।  
ते गहुं ओ आढ्य-धनवान-अपरिभूत-जनमान्य ( नगरमां पूछाते ) डेतो.

तेणं कालेणं तेषं समएणं अहं गोयमा ! समोसदे, परिस्ता निग्गया, सेणिए

विहारं विहारामि । ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी अन्यदा कदाचित् 'असाहु-  
दंसणेणय' असाधुदर्शनेन=कुगुरुसंसर्गेण 'अपञ्जुवासणाए' अपर्युपासनया च=  
सुगुरोरनासेवनेन 'अणणुसासणाएय' अननुशासनया च=सुगुरोरुपदेशाभावेन  
'असुसुसणाएय' अशुश्रूषणया च=सुगुरोरन्तिके धर्मश्रवणाभावेन च, तथा  
'सम्पत्तपज्जवेहि' सम्पत्तपर्यवैः 'परिहायमाणेहि' परिहीयमानैः २ क्रमशः  
क्षीयमाणैः 'मिच्छत्तपज्जवेहि' मिथ्यात्वपर्यवैः 'परिवह्णमाणेहि' परिवर्द्धमानैः=  
पुनः पुनः क्रमशो वृद्धिपगतैः सः नन्दमणिकारश्रेष्ठी मिथ्यात्वं मिथ्यात्वभावं  
प्रतिपन्नः=पाप्तः=मिथ्यात्वी जातश्चाप्यभूत् । ततः खलु नन्दोमणिकारश्रेष्ठी

यारसेट्टी इमीसे कहाए लद्धे समणे पहाए० पायचारणं जाव पज्जु-  
वासइ, णंदे धम्मं सोच्चा, णिसम्म समणोवासए जाए ) उसी काल  
में और उसी समय में हे गौतम ! मैं उस राजगृह नगर में विहार करता  
हुआ पहुँचा । वहाँ का समस्त परिषदा बंदना नमस्कार करने के लिये  
शुणशिःक चैत्य में आई । श्रेणिक राजा भी आया । जब उस मणि  
कार श्रेष्ठी नंद को मेरे आने का समाचार मिला तो वह भी स्नान  
आदि से निश्चित होकर पैदल ही मेरी बंदना करने के लिये आया ।  
वहाँ आकर वह बंदना, नमस्कार कर यथा स्थान पर बैठ गया । उसने  
श्रुत चारित्र्य रूप धर्म का व्याख्यान सुनकर गृहस्थ धर्म धारण कर लिया  
अर्थात् वह श्रमणोपासक बन गया । ( तएणं अहं रायगिहाओ पडि  
निक्खंते वहिया जणवयविहारं विहरामि ) इसके बाद मैं वहाँ से  
राजगृह से निकला और निकल कर बाहर जनपदों में विहार करने

राया णिग्गए, तएणं से णंदं मणियारसेट्टी इमीसे कहाए लद्धे समणे पहाए०  
पायचारणं जाव पज्जुवासइ, णंदे धम्मं सोच्चा, णिसम्म समणोवासए जाए )

ते कणे अने ते समये हे गौतम ! हुं विहार करतो करतो राजगृह नगरमां  
पहुँच्यो । नगरनी परिषदा शुणशीलक चैत्यमां बंदना अने नमस्कार करवा माटे  
आवी- श्रेणिक राजा पणु बंदन तेमज नमन करवा माटे आऽव्या होता । भण्डि-  
यार त्रेष्ठि नंदने ब्यादे मारा आववाना समाचारो भल्या त्यादे ते स्नान  
वज्जेथी परिवारीने पगपाणा ज मने बंदन करवा माटे आऽव्यो त्यां आवीने  
बंदन तेमज नमन करीने ते उचित स्थाने जेसी गयो । श्रुतचारित्र्य धर्महुं  
व्याख्यान सांभलीने तेजे गृहस्थ धर्म धारण करी वीधो जेटले हे ते श्रमणो-  
पासक बंध गयो । ( तएणं अहं रायगिहाओ पडिनिक्खंते वहिया जणवयविहारं  
विहरामि ) त्थारपणी हुं त्यथी-राजगृह नगरथी नीकलो अने नीकलीने जहार  
जनपदोमां विहार करवा लाग्यो ।

अन्यदा=एकस्मिन् काले ग्रीष्मकालसमये=ग्रीष्मऋतौ 'जेष्ठा मूलसि माससि' ज्येष्ठामूले मासे-ज्येष्ठाया मूलस्य ना चन्द्रेण सह योगो भवति पौर्णमास्यां यस्मिन् मासे स ज्येष्ठामूलस्तस्मिन्=ज्येष्ठामूले मासे ज्येष्ठमासे इत्यर्थः, 'अट्टमभक्तं' अष्टमभक्तम्-उपवासत्रयरूपं तपः परिगृह्णाति=स्वीकरोति, परिगृह्य पौषधशालायां 'जाव विहरइ' यावत् पौषरिइ =समाश्रितपौषधः विहरति । ततः ख नन्दस्य=नन्दाभिधमणिकारश्रेष्ठिनः अष्टमभक्ते परिणम्यमाने=सम्पूर्णमाये सति तृणया छुषया च अभिभूतस्य=व्याकुलस्य सतः अयम्=वक्ष्यमाणप्रकारः आध्यात्मिकः=

लगा ( तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी, अन्नया कयाइं असाहु दंसणेण य अपज्जुवासणाएय, अण्णुसासणाए य असुस्ससणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था ) मेरे वहां से विहार करने के बाद वह मणिकार श्रेष्ठी नंद किसी एक समय असाधु के दर्शन से कुगुरु के संसर्ग से-सद्गुरुओं की अनासेवना से, सुगुरु के उपदेश की प्राप्ति नहीं होने से सुगुरु के पास धर्म के श्रवण का अभाव होने से, तथा सम्यक्त्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः क्षीयमाण होने से एवं मिथ्यात्वरूप पर्यव-परिणाम क्रमशः वृद्धिगत होते रहने से मिथ्यात्व दशापन्न बन गया=मिथ्यात्वी हो गया । ( तएणं णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकात्समयंसि, जेष्ठा मूलसि, मासंसि अट्टमभक्तं परिणेण्हइ, २ पोसहरालाए जाव विहरइ, तएणं नंदस्स अट्टमभक्तंसि, परिणममाणंसि, तण्हाए छुहाए, य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था ) किसी एकदिन ग्रीष्म काल के समय में

( तएणं से णंदे मणियार सेट्ठी अन्नया कयाइं असाहुदंसणेण य अपज्जु वासणाए य अण्णुसासणाए य असुस्ससणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था )

त्यांथी भारा विहार कथा पछी डोछ वणते असाधुना दर्शनथी, कुगुरुना संसर्ग ( संगत ) थी, सद्गुरुओंकी अनासेवनाथी, सुगुरुना उपदेशने सांख्यवादी तक नहिं भजवाथी, सुगुरुनी पासैथी धर्म नहिं सांख्यवाथी तेसज्ज सम्यक्त्व रूप पर्यव-परिणाम अनुक्रमे क्षीयमाण ( नष्ट ) होवाथी अने मिथ्यात्व रूप पर्यव परिणाम अनुक्रमे वृद्धि पाववाथी मिथ्यात्व दशापन्न थय गयो-मिथ्यात्वी गय गयो. ( तएणं णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि, जे मूलसि, मासंसि अट्टमभक्तं परिणेण्हइ २ पोसइसालाए जाव विहरइ, तएणं नंदस्स अट्टमभक्तंसि परिणममाणंसि, तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था ) डोछ ओक दिनसे उनानाना जेठ भडिनाभां



આત્મગતોવિચાર: સમુદ્વધત । તદેવાહ-‘ ધન્નાર્ણં ’ इत्यादि-धन्याः खलु ते राजेश्वरयावत्साहचर्यवाहप्रभृतयः, येषां खलु राजगृहस्य वहिः वह्यो वाप्यः= सामान्यः पुष्करिण्यः=कमलयुक्तः यावत्-सरः सरः पङ्क्तिकाः=यत्रैकस्मात्सरसोऽस्मिन् सरसि जलं प्रवहति, एवं सरसां जलाशयानां पङ्क्तयः पङ्क्तिभूता जलाशया इत्यर्थः विद्यन्ते, यत्र खलु बहुजनः=जनसमुदायः स्नाति च पिवति च तथा-पानीयं च संवहति=ततो जलं नयति । तत्=तस्मात्श्रेयः=उचितं खलु मम कल्ये=मादुष्प्रमातायां रजन्यां सूर्योदये सतीत्यर्थः, श्रेणिकं राजानमापृच्छय राजगृहस्य

જેઠ માસ મેં મળિકાર શ્રેષ્ઠી નંદ ને અષ્ટમ ભક્ત કિયા તીન ઉપવાસ કિયે— ઔર પૌષધ શાલા મેં રહા— । જવ ડસ્કી યહ તપસ્યા પૂર્ણપ્રાય હો રહી થી તબ ઉસે તૃણા પિપાસા ઔર ક્ષુધા ને વ્યાકુલ કર દિયા । ડસ સમય ડસે હસ પ્રકાર કા વિચાર આયા— ( ધન્નાર્ણં તે રાઈસર જાવ સત્યવાહપમિયઓ જેસિર્ણ રાયગિહસસ બહિયા બહુઓ વાવીઓ પોક્સરણીઓ જાવ સરસરપંતિયાઓ જત્થળં બહુજળો પહાઈ ય, પિયહ ય, પાણિયં ચ સંવહહ તં સેયં મમં કલ્લં પાઠ૦ સેણિયં આપુચ્છિતા રાયગિહસસ બહિયા ઉત્તરપુરતિયમે દિસિમાપ વેમારપવ્વયસસ અદૂરસામંતે વસ્તુપાઢગરોઈયંસિ ભૂમિભાગંસિ જાવ ગંદં પોક્સરણિં લ્હાવેત્ત ઇ સિકદ્દું एवं સંપેહેહ ) રાજેશ્વર સે લેકર સાર્થવાહ પ્રભૃતિ વે જન ધન્યવાદ કે પાત્ર હૈં કિ જિનકી રાજગૃહ નગર કે વાહર અનેક વાવહિયાં હૈં,—પંક્તિ શ્રૂત જલાશય હૈં કિ જિન મેં અનેક જનુપ્ય સ્નાન કરતે હૈં, અનેક જન પાની પીતે હૈં અનેક ડન મેં સે પાની લે જાતે હૈં । તો મુઝે મી

મણિકાર શ્રેષ્ઠી નંદે અષ્ટમ ભક્ત કર્યો—ત્રણ ઉપવાસ કર્યો—અને પૌષધશાળામાં રહ્યો. જ્યારે તેની આ તપસ્યા પૂરી થવાની અણી ઉપર જ હતી ત્યારે તેને તરસ અને ભૂખે વ્યાકુળ બનાવી દીધો. તે સમયે તેણે વિચાર કર્યો કે— ( ધન્નાર્ણં તે રાઈ સર જાવ સત્યવાહપમિયઓ જેસિર્ણ રાયગિહસસ બહિયા બહુઓ વાવીઓ પોક્સરણીઓ જાવ સરસરપંતિયાઓ જત્થળં બહુજળો પહાઈ ય, પિયહ ય, પાણિયં ચ સંવહહ તં સેયં મમં કલ્લં પાઠ૦ સેણિયં આપુચ્છિતા રાયગિહસસ બહિયા ઉત્તરપુરતિયમે દિસિમાપ વેમારપવ્વયસસ અદૂરસામંતે વસ્તુપાઢગરોઈયંસિ ભૂમિભાગંસિ જાવ ગંદં પોક્સરણિં લ્હાવેત્ત ઇ સિકદ્દું एवं સંપેહેહ ) રાજેશ્વરી માંડીને સાર્થવાહ વગેરે તે લોકોને ધન્ય છે કે રાજગૃહ નગરની બહાર જેમની ઘણી વાવો છે, પંક્તિભૂત જળાશયો છે—કે જેમાં ઘણા માણસો સ્નાન કરે છે, ઘણા માણસો પાણી પીએ છે, ઘણા તેઓમાંથી પાણી લઈ લે છે. તો મુજે

बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे पार्श्व-  
भागे इत्यर्थः ' वस्तुपाठगरोऽयंसि ' वस्तुपाठकरुचिते=वस्तुपाठकानां=गृहादि-  
निर्माणशास्त्रनिपुणानां=भूगर्भविद्याविशारदानां रुचितः=रुचिविषयीभूतस्तस्मिन्  
तादृशे भूमिभागे=भूमिदेशे यावत् नन्दां=नन्दाभिधां पुष्करिणीं=वापीं खनयितुम् ।  
इति कृत्वा=इति मनसिनिधाय एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण संप्रेक्ष्यते,=विचारयति, संप्रे-  
क्ष्य कल्पे प्रादुर्गममातायां यावत्-रजन्यां तेजसा ज्वलतिभूर्ये=सूर्योदये सति पौषधं  
पारयति, पारयित्वा स्नातः कृतबलिकर्मा भिन्नज्ञाति यावत्संपरिवृतः महार्थ ' जाव-  
रायारिहं ' महार्थं महार्हं विपुलं राजार्हमाश्रुतं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव श्रेणिको

अब यही उचित है कि मैं भी दूसरे दिन प्रातः काल होते ही श्रेणिक  
राजा से पूछकर राजगृह नगर के बाहिर ईशान कोण की ओर वैभार  
पर्वत की तलहटी- पार्श्वभाग- में जिस स्थान को वास्तुशास्त्र के वेत्ता  
पास करे उस स्थान पर एक नन्दा नामकी बावड़ी को खुदवाऊ । इस  
प्रकार उस ने अपने मन में विचार किया । ( संप्रेक्षिता करलं पा० जाव  
पोसहं पारेह पारेत्ता ग्हाए कयबलिकम्मे मित्तणाह जाव संपरिवुडे  
महत्थं जाव रायारिहं पाहुडं गेण्हह, गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव  
उवा० उवागच्छित्ता जाव पाहुडं उवट्टवेह, उवट्टवेत्ता एवं वयासी-  
इच्छामिणं सामी ! तुवमेहिं अम्मणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया  
जाव खणावेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! ) विचार करके उसने प्रातः  
काल सूर्योदय होने-पर पौषध को पारा ( पाला ) । ( पार कर ) पाल कर  
पौषध को समाप्त कर-फिर उसने स्नान किया । स्नान से निवृत्त कर  
काक आदि पक्षियों को अन्नादि का भाग रूप बलिकर्म किया । बाद में

अने ओत्र येथ्य लागे छे के हुं पशु आवती कावे सवार थतां न श्रेणिक  
राजानी आज्ञा भेजवीने राजगृह नगरनी गडार ध्यान केलासां वैभार पर्वतनी  
तणेदीर्घा वास्तुशास्त्रने बाधुनारा के स्थानने पसहं करे ते स्थान उपर ओक  
नन्दा नामे वाव जोडाहुं. आ रीते तेखे अनयां विचार कर्यो. ( संप्रेक्षिता कळं  
पा० जाव पोसहं पारेह पारेत्ता ग्हाए कयबलिकम्मे मित्तणाह जाव संपरिवुडे  
महत्थं जाव रायारिहं पाहुडं गेण्हह गेण्हित्ता, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा०  
उवागच्छित्ता जाव पाहुडं उवट्टवेह उवट्टवेत्ता एवं वयासी इच्छामि णं सामी !  
तुवमेहिं अम्मणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुहं  
देवाणुप्पिया ! ) विचार करीने तेखे जीव्वा द्विसे सपारे सूर्योदय थतां पौषध  
पाव्यो अने पौषध पालीने तेखे स्नान कर्युं अने त्यारपणी कायका वगेरे

राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावत्प्राप्तमृतम् उपस्थापयति उपस्थाप्या एवमवा-  
दीत्-इच्छामि खलु हे स्वामिन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् राजगृहस्य बहिः  
' जाय खणावेत्तए ' यावत्-उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे वैभारपर्वतस्यादूरसामन्ते  
वास्तु पाठकरुचिते भूमिभागे यावत् नन्दां पुष्करिणीं खनयितुम् । श्रेणिको पाह-  
यथासुखं हे देवानुप्रिय ! इच्छानुसारं कुरु । ततः खलु नन्दः श्रेष्ठी श्रेणिकेन  
राज्ञाऽभ्यनुज्ञातः सन् हृष्टतुष्टः राजगृहस्य मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य वस्तु-  
पाठकरुचिते भूमिभागे नन्दां पुष्करिणीं खनयितुं प्रवृत्तश्चाप्यभवत् । ततः खलु सा  
मिश्रादिजनौ से परिवृत्त होकर उसने महार्थ साधक यावत् बहुत कीमती  
राजा को भेंट करने योग्य पदार्थ लिया । छेकर वह जहाँ श्रेणिक राजा  
था वहाँ गया । वहाँ जाकर उसने राजा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार  
किया और फिर वह भेंट उनके समक्ष रखी । बाद में राजा से उसने  
इस प्रकार कहा हे स्वामिन् मैं आपसे आज्ञा प्राप्त कर राजगृह नगर के  
बाहर ईशान कोण में वैभार गिरि के पार्श्वभाग में एक पुष्करिणी बन-  
वाना चाहता हूँ । राजा ने उस की बात सुनकर उससे कहा हे देवानु-  
प्रिय ! यथासुखम्- तुम्हारी जैसी इच्छा हो उस के अनुसार  
वैसा ही करो । ( तएणं णंदे सेणिएणं रत्ता अम्मणुन्नाए समणे हट्ठं  
रायगिहं मज्झं मज्झेणं निगच्छइ २ वत्थुपाहयरोइंसि भूमिभागसि  
णंदं पोक्खरणिं खणाविउं पयसे यावि होत्था ) इस प्रकार श्रेणिक राजा  
से आज्ञा प्राप्त कर वह मणिकार श्रेष्ठी नंद बहुत ही अधिक आनंदित  
एवं संतुष्ट हुआ । बाद में वहाँ से आकर वह राजगृह नगर के बीच से

पक्षीओने अन्नभाग अभीने अलिकभं कथुं, त्थारभाह पोतानी भित्र-भंशणीने  
साथे लधने अहार्थ साधक यावत् अहुं किमती राब्बने लेट करवा योग्य पदार्थों  
लीधा लधने ते न्यां श्रेष्ठिक राब्ब लता त्यां गये। त्यां पडोन्थीने तेले भने  
हाथ लेडीने राब्बने नमस्कार कर्था अने पछी लेट तेभनी साथे अर्पण करी।  
त्थारभाह राब्बने विनंती करतां तेले कहुं के हे स्वाभी ! तभारी आज्ञा भेण-  
वीने हुं राजगृह नगरनी अहार ध्यान डोणुमां वैलार पर्वतनी तणेरीमां ओह  
पुष्करिणी ( वाव ) पोदाववानी भारे धम्मा छे राब्बने तेनी वात सांलणीने  
तेने कहुं-के हे देवानुप्रिय ! “ यथा सुभम् ” तभारी नेची धम्मा डोय सुशीधी  
तसे ते प्रभाले करे। ( तएणं णंदे सेणिएणं रत्ता अम्मणुन्नाए समणे हट्ठं  
रायगिहं मज्झं मज्झेणं निगच्छइ २ वत्थुपाहयरोइंसि भूमिभागसि णंदं पोक्खरणिं  
खणाविउं पयसे यावि होत्था ) आ रीते श्रेष्ठिक राब्ब पासेथी आज्ञा भेणवीने  
ते भणिकार श्रेष्ठि नंद भूषण आनंदित तेभन संतुष्ट थये। त्थारपछी त्यांधी

नन्दा पुष्करिणी अनुपूर्वेण=क्रमेण खन्यमाना खन्यमाना पुष्करिणी जाता चाप्यासीत्,  
सा कीदृशी जाता ? इत्याह—'चाउकोणा' इत्यादि—'चाउकोणा' चतुष्कोणा=  
समतीरा समम्=उन्नतत्वावनतत्वरहितं तीरं=तटप्रदेशो यस्याः सा तथोक्ता,  
'अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजला' अनुपूर्वे सुजातवमगम्भीरशीतलजला—  
अनुपूर्वेण=क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरादिभावरूपेण सु=सुष्ठु अतिशयेन यो जातः वमः=  
कंदाराकारं जलस्थानं तत्र गम्भीरम्=अगाधं शीतलं च जलं यस्यां सा तथा,  
'संछण्णपत्तविसमुणाला' संछण्णपत्तविसमुणाला=संछन्नानि=जलेनान्तरितानि  
जलमनानोन्यर्थः पत्राणि=क्रमलदलानि विसानि=क्रमलकन्दाः मृणालानि=क्रमल-

होकर निकला। निकलकर फिर वह वास्तु शास्त्र के वेत्ताओं द्वारा नि-  
र्दिष्ट स्थान पर पहुँचा—वहाँ पहुँचकर उसने नंदा नाम की बावड़ी खुद-  
वानी प्रारंभ कर दी। (तएवं सा नंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेण खणमाणा  
२ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउकोणा, समतीरा, अणुपुव्व सुज-  
यावप्पगंभीरसीयलजला, संछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपत्तमकुमुय-  
नल्लिणसुभगसोगंधियपुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिह-  
त्थममन्तमत्तछप्पयअणेगसलणगणमिहुणविहरियसदुअइयमहुरसुरनाइ-  
या पासाईया) क्रमशः खुदती २ वह नंदा पुष्करिणी एक दिन वास्त-  
विक पुष्करिणी के रूप में तैयार हो गई। इसके चारकोने थे।  
तट प्रदेश इसका समान था। ऊँचाई नीचाई से रहित था। इस बावड़ी  
का अगाध शीतल जल से भरा हुआ नीचेका जल स्थान बहुत नीचा  
बहुत गहरा था और क्रम क्रम से निष्पन्न करने में आया था। इस में

आवीने ते शब्बगुहं नगरीनी वच्चे थधने नीक्खये। नीक्खणीने ते वास्तुशास्त्रना  
निष्ठातो वटे अताववाभां आवेदा स्थान उपर पडोव्वे। अने त्यां जधने तेष्से  
नंदा नामनी वाव जोहवपी शङ्करी दीधी। (तएवं सा नंदा पोक्खरणी अणु  
पुव्वेण खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउकोणा, समतीरा, अणुपु-  
व्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजला संछण्णपत्तविसमुणाला, बहुप्पलपत्तमकुमुयनल्लिणसुभ-  
गसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तयफुल्लकेसरोववेया परिहत्थयमन्तमत्त  
छप्पयअणेगसलणगणमिहुणविहरियसदुअइयमहुरसुरनाइया पासाईया) आभ ६२३।  
जोहतां जोहतां छेवटे ओक द्विसे नंदा पुष्करिणी (वाव) व'पूष्'पे जोहतां गध,  
तेने यार पुष्पा हता। किनाराने भाग तेने ओक सरणे हते। ओटवे के जाये नीचे  
नडोते। आ वावतुं अगाध'डा पाष्णीथी शरैतुं नीचेतुं जण स्थान भूण न' ७।

नालानि यस्यां सा तथा । ' बहुप्लपउमकुमुदनलिणसुभगसौगंधियपुंडरीय  
महापुंडरीयसयपत्तसहस्रपत्तपफुल्लकेशरोववेया ' बहुप्लपबकुमुदनलिनसुभगसौग-  
न्धिकपुण्डरीकमहापुण्डरीकशतपत्रसहस्रपत्रपफुल्लकेशरोपपेता-बहूनि = बहूविधानी  
उत्पलानि पद्मानि च=सामान्यकमलानि कुमुदानि=चन्द्रविकासिकमलानि नलि-  
नानि=विशिष्टगन्धयुक्तकमलानि सुभगानि=सुन्दराणि सौगन्धिकानि=सन्ध्यावि-  
कासिकमलानि, पुण्डरीकाणि=श्वेतकमलानि, महापुण्डरीकाणि=महाश्वेतकमलानि,  
शतपत्राणि=शतदलकमलानि सहस्रदलकमलानि, कीदृशानि एतानि ? इत्याह-  
प्रफुल्लकेशराणि=विकसितकेशराणि, तैरुपपेता=व्याप्ता । ' परिहृत्यममंतमत्तच्छ-  
पयअणेगसउणगणमिहुणवियरियसल्लुअइय मधुरसरनाइया ' परिहृत्यभ्रमन्मत्तपद्-  
पदानेकशकुनगगमिथुनशब्दोन्नतिकमधुरस्वरनादिता- ' परिहृत्य ' इतिदेशीशब्दो-  
ऽयम्, परिहृत्या ' =मचुराः, भ्रमन्तः=इतस्ततो विचरन्तः मत्ताः=मकरन्दपानो-  
न्मत्ताः बहूपदा=भ्रमरास्तेषाम्, तथा-अनेकेषां=ननाविधानां शकुनगणानां=  
हंससारसादिपक्षिसमूहानां मिथुनानां=युगलरूपाणां शब्दोन्नतिकाः=उत्कृष्टयुक्ता ये  
मधुरस्वरः तैः नादिता=शब्दायमानेत्यर्थः प्रासादीया, दर्शनीया, अमिरूपा-  
प्रतिरूपा-अत्यन्तरमणीयेत्यर्थः ॥ सू०२ ॥

कमल दल कमल कंद और कमल नाल सदा जल से अन्तरित हो रहे  
थे । यह अनेक प्रकार के विकसित केशरों वाले उत्पलों से, कमलों से,  
चन्द्रविकाशी कुमुदों से, विशिष्ट गंध वाले कमलों से सन्ध्या विकाशी  
सुन्दर सौगंधिकों से श्वेतकमलों से, महा पुण्डरीकों से, शतपत्र वाले  
कमलों से और सहस्र पत्र वाले कमलों से आच्छादित हो रही थी ।  
हृषर भ्रमण करते हुए अनेक भ्रमरों के कि जो मकरंद पान से उन्म-  
त्त बन रहे थे, तथा नाना प्रकार के पक्षिगणों के-हंस, सारस आदि  
पक्षि समूह के-युगलों के उत्कृष्ट शब्द युक्त मधुर स्वरों से वाचालित

હંતુ, ગંભીરહંતુ' અને અનુક્રમે નિબપ્ત કરવામાં આવ્યું' હંતુ' આમાં કમળદલ, કમળ-  
કંદ, અને કમળનાળા હંમેશા પાણીથી ઢંકાયેલાં (અંતરિત) રહેતાં હતાં આ વાવ  
ઘણી બીતના વિકસિત કેશરોવાળા ઉત્પલોથી, કમળોથી, ચંદ્રવિકાસી કુમુદોથી  
વિશિષ્ટ સુગંધવાળા કમળોથી, સંધ્યા વિકાસી સુંદર સૌગંધિકોથી સજ્જ કમ-  
ળોથી, મહા પુંડરીકોથી, શતપત્રવાળા કમળોથી અને સહસ્ર ( હંઝર ) પત્ર-  
વાળા કમળોથી ઢંકાયેલી હતી. આ વાવ મકરંદ ( પુષ્પરસ ) નો સ્વાદ લઇને  
ઉન્મત્ત થઈ ગયેલા આમતેમ ઉડતા ઘણા ભ્રમરાઓના તેમજ ઘણી બીતના  
પક્ષીઓના હંસ, સારસ વગેરે પક્ષી સમૂહોના પક્ષીયુગલોના ઉત્કૃષ્ટ અને મધુર

मूलम्—तएणं से णंदे मणियारसेट्ठी णंदाए पोक्खरणीए  
चउद्दिस्सि चत्तारि वणसंडे रोवावेइ । तएणं ते वणसंडा अणु-  
पुठ्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवट्ठिज्जमाणा य वण-  
संडा जाया किण्हा जाव निकुरंवभूया पत्तिया पुप्फिया जाव  
उवसोभेमाणा२ चिट्ठंति । तएणं नंदे मणियासेट्ठी पुरच्छिमि-  
ल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसमं करावेइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं  
पासाइयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं तत्थ णं बहूणि किण्हाणि  
य जाव सुक्खिलाणि य कट्टकम्माणि य पोत्थकम्माणि चित्तक-  
म्माणि लेप्पकम्माणि गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमाइं उवदांसी-  
ज्जमाणाइं२ चिट्ठंति, तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि  
य अत्थुयपच्चत्थुयाइं चिट्ठंति, तत्थणं बहवे णडा य णट्ठा य  
जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायरकम्मं करेमाणा विहरंति, राय-  
गिहविणिग्गओ य जत्थ बहूजणो तेसु पुठ्वन्नत्थेसु आसण-  
सयणेसु संत्तिसन्नो य संतुयट्ठो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य  
साहमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततः खलु स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी नन्दायाः  
पुष्करिण्याश्चतुर्दिक्षु चतुरो वनषण्डान् रोपयति कारयतीत्यर्थः । ततः खलु

षणी हुई थी । यह बहुत प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एवं प्रनिरूप  
थी—तात्पर्य अत्यंत रमणीय थी ॥ सूत्र २ ॥

‘तएणं से णंदे मणियार सेट्ठी’—इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से णंदे मणियारसेट्ठी) उस मणिकार श्रेष्ठी

स्वरोधी उपरित ( शण्डयुक्त ) अर्ध शही डती आ वाव भूषण प्रासादीय,  
दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप डती ओटवे के ते अत्यंत रमणीय डती. सूत्र २

( तएणं से णंदे मणियार सेट्ठी—इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्याग्याह (से णंदे मणियारसेट्ठी) ते मणिकार श्रेष्ठी नंदे

ते वनषण्डाः 'अणुपुञ्चैण' अनुपूर्वेण = अनुक्रमेण 'सारक्खिज्जमाणा' संरक्ष्यमाणाः = पशुपक्ष्याद्युपद्रवतः 'संगोविज्जमाणा' संगोप्यमाणाः हिमवनदवादिभ्यः, 'संवड्डिज्जमाणा य' संवर्ध्यमानाश्च=जलसेकादिना वृद्धिं प्राप्ता सन्तः वनषण्डाः पूर्णरूपेण परिणता जाताः । कीदृशास्ते जाताः ? इत्याह—'क्किण्हा' इत्यादि 'क्किण्हा' कृष्णाः=हरितत्वातिशयेन कृष्णवर्णा 'जाव' यावत्—'निकुरंभूया' महामेघनिकुरम्बभूताः सजलजलधरनिकुरसदृशाः पत्रिताः पुष्पिताः 'जाव उवसोभेमाणा २' यावत्—श्रिया=वनषण्डश्रिया अतीव उपशोभमानाः २ तिष्ठन्ति । ततः खलु तन्दः मणिकार श्रेष्ठी पौस्त्ये वनषण्डे एकां महतीं चित्रसभां कारयति । कीदृशाम् ? इत्याह—'अणेने' त्यादि—'अणेगखंभ-

नंदने ( णंदोए पोक्खरणीए चउद्धिसिं ) नंदा पुष्करिणी की चारों दिशाओं में ( चत्तारिचणसंडे रोवावेइ ) चार वनषण्ड आरोपित करवाये ( तएणं ते वणसंडा अणुपुञ्चैणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्डिज्जमाणा य वणसंडा जाया क्किण्हा जाव निकुरंभूया पत्तिया पुष्पिया जाव उवसोभेमाणा २ चिद्धंति ) आरोपित किये गये वे चारों वनषण्ड क्रमशः संरक्षित होते हुए—पशु पक्षी आदि के उपद्रव से बचते हुए—एवं हिमवर्षा—दवाग्नि आदि से रहित होते हुए खूब वृद्धिगत हो गये । इन में चारों ओर हरियाली २ छा गई—इस से वे काले काले दिखलाई देने लगे—ऐसे मालूम देते थे मानों जल से भरे हुए मेघहों । पत्र और पुष्पों से युक्त होने के कारण इन की शोभा कुछ निराली ही बन गई थी । ( तएणं णंदे मणियार सेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्स-

( णंदोए पोक्खरणीए चउद्धिसिं ) नंदा पुष्करिणी ( वाव ) नी आरे भावु ( चत्तारि वणसंडे रोवावेइ ) चार वनषण्डा रोपावडाव्यां ( तएणं ते वणसंडा अणुपुञ्चैणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्डिज्जमाणा य वणसंडा जाया क्किण्हा जाव निकुरंभूया पत्तिया पुष्पिया जाव उवसोभेमाणा २ चिद्धंति ) रोपायेला ते आरेआर वनषण्डा अनुक्रमे संरक्षित यता—पशुपक्षी वगेरेना उपद्रवोधी संरक्षा येला अने छिन्न, वनने अग्नि ( दवान्त ) वगेरेथी संरक्षित यधने भूषण वृद्धि पाव्या. तेओमां ओमेर डरीयाणी प्रसरी गर्ध. तेथी तेओ श्याम देभाण दाव्या उता वण्णे के पाछीथी लरेला मेघ छाय. पांडां अने पुष्पोथी युद्धा छेवा अद्व तेओनी शोभा ओक्रम निराणी यधं यध छती. ( तएणं णंदे मणियारसेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्समं करावेइ, अणेगखंभ

सयसंनिविट् ' अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टां=नानाविधमणिमाणिक्यादि निर्मितस्तम्भशतसंनिबद्धां प्रासादीयां दर्शनीयाम्, अभिरूपां, प्रतिरूपाम् । तत्र खलु चित्रसभायां बहूनि=बहुविधानि कृष्णानि च ' जाव ' यावत्-नीलानि च, पीतानि च, रक्तानि च, शुक्लानि च, ' कटुकम्माणिय ' काष्ठकर्माणि च=काष्ठशिल्पानि ' पोत्यकम्माणि ' पुस्तककर्माणि=पुस्तकेषु वस्त्र ताडपत्रकर्गलादिषु कर्माणि=लेखन कर्माणि, चित्रकर्माणि=मित्त्रादिषु चित्ररूपाणि, लेप्यकर्माणि=मृत्तिकासेटिकादिनां वल्क्याधाकाररचनाविशेषरूपाणि ' गंधिमवेदिमपूरिमसंघाहमाहं ' ग्रन्थिम-वेष्टिमपूरिम-संघातिमानि, तत्र ग्रन्थिमानि=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानि, वेष्टिमानि=यानि लतादिवेष्टनतो निष्पादितानितानि. पूरिमाणि यानि छिद्रादिपूरणेन निष्पाद्यन्ते कनकादि पुतलिकावत् तानि, संघातिमानि=यानि-

सभं करावेह, अणैगखंभसयसन्नविट् पासाइयं दरिसणिज्जं अभिरूबं पडिरूबं तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कटुकम्माणि य पोत्यकम्माणि चित्तकम्माणि, लेप्यकम्माणि ' गंधिमवेदिम पूरिम संघाहमाहं उवदंसिज्जमाणाहं २ चिट्ठंति ) उस मणिकार श्रेष्ठी नंद ने पूर्व दिशा संघन्धी वनबंड में एक बड़ी भारी चित्रसभा बनवाई । यह चित्रसभा नाना प्रकार के मणिक्यादि निर्मित हुए सैकड़ों स्तंभों से युक्त थी । प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप एवं प्रतिरूप थी । उस चित्र सभा में उसने अनेकविध कृष्ण, नील, पीत, श्वेत और लाल रंगों से कोष्ठ के ऊपर शिल्प कार्य करवाये, पुस्तक कर्म करवाये-वस्त्र, ताड पत्र, कागज आदिकों में लेख लिखवाये, चित्र कर्म करवाये-मृत्ति आदिकों के ऊपर नाना प्रकार के चित्र अंकित करवाये, लेप्य कर्म करवाये-

सयसंनिविट् पासाइयं दरिसणिज्जं अभिरूबं पडिरूबं तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कटुकम्माणिय पोत्य कम्माणि चित्तकम्माणि लेप्यकम्माणि गंधिम-वेदिम-पूरिमसंघाहमाहं उवदंसिज्जमाणाहं २ चिट्ठंति ) भण्डिकर श्रेष्ठी नंद ने ते पूर्व दिशा तरङ्गना वनबंडमां ओके बहुत बहारे चित्रसभा बनवावाणी. ते चित्रसभा धलुी नतना भण्डिको भाण्डिको वगेरेथी बनारवासां आवेला ओवा से'कडा थांभलाओवाणी हती. ते प्रासादीय दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप हती. ते चित्रसभाभा तेणु धलुी नतना कृष्ण, नील, पीत ( पीणा ), श्वेत ( सईह ) अने दाव रगेथी काष्ठ ( लाकडा ) ना उपर शिल्प-काम करावडाव्यां, पुस्तककर्म करावडाव्यां, वस्त्र, ताडपत्र, कागज वगेरे उपर लेखो लाभावडाव्यां-चित्रो दोरावडाव्यां, सीता वगेरे उपर अनेक-नतना चित्रो दोरावडाव्यां, लेप्य कर्म करावडाव्यां, भाटी दाव भाटी वडे वट्ठी वगेरेनी तेभां



વસ્તુમમૂહેન નિષ્પાદ્યન્તે લોહકાષ્ઠાદિમીઢયાદિવત્, તાનિ, એવાનિ પશુપક્ષ્યા-  
દિરૂપાણિ ' ઉવદંસિજ્ઞમાણાઈ ૨ ' ઉપદૃશ્યમાનાનિ ૨ લોકૈરન્યોન્વં પુનઃ પુનઃ-  
પદ્ધર્મમાનાનિ તિષ્ઠન્તિ=સન્તિ । તત્ર સ્વલુ બહૂનિ ' આસનાણિય ' આસનાનિ=  
વેત્રકાષ્ઠાદિનિર્મિતાનિ ચતુષ્કોણાદિરૂપાણિ શયનાનિ=શયનયોગ્યાનિ સાર્દ્ધતૃતીય-  
હસ્તપરિમિતાનિ ફલકાદીનિ; કોદશાનીત્યાહ-' અત્યુય ' इत्यादि-' અત્યુય  
પચત્યુયાઈ ' આસ્તુતપ્રત્યાસ્તુતાનિ, આસ્તુતાનિ મૃદુલવસ્ત્રાદિનાઽઽચ્છાદિતાનિ, પ્ર-  
ત્યાસ્તુતાનિ = તદુપરિ પુનઃપુનઃકૂલાદિનાઽઽચ્છાદિતાનિ તિષ્ઠન્તિ=વર્તન્તે ।  
પુનઃશ્ચ-તત્ર સ્વલુ બહવો નટાશ્ચ=ગાનનૃત્યકર્તારઃ ' જઠ્ઠા ય ' નૃત્તાઃ કેવલમજ્ઞવિ-  
ક્ષેપમાત્રેણ નર્તનશીલાશ્ચ યાવત્ ' દિલ્લમદ્વમત્તવેયના ' દત્તમૃતિમત્તવેતના:-દત્તા।

મિટ્ટી, સ્થરિયામિટ્ટી સે બહ્મી આદિ કી ડસમેં રચના કરવાઈ । અન્યમ,  
વેષ્ટિમ, પૂરિમ; एवं संधातिम आदि अनेक खेल भी उस में दिखलाए-  
(-तत्स्थणं बहूणि आसनाणि य, सयणाणि य, अत्यु य पचत्त्युयाह चिद्वृत्ति-  
तत्स्थणं बह्वे जडाय जड्वा य, जाव दिल्लमद्वमत्तवेयणा तालायकम्मं  
करेमाणा विहरन्ति ) અનેક આસન, શયન, જો આસ્તુત પ્રત્યાસ્તુત થે-  
વે-મી ડસમેં રચવાયે, વેત્ર અથવા કાષ્ઠ આદિ સે નિર્મિત ચતુષ્કિકાદિ-  
રૂપ-કુર્સી આદિરૂપ જો હોતે હૈં વે આસન હૈં एवं सादे तीन हाथ के  
जो काष्ठ फलक-नखता आदिरूप होते हैं कि जिन पर अच्छी तरह  
सोया जा सकता है वे शयन हैं । इन आसन शयनों के ऊपर मृदुल  
वस्त्रादि, बिछा हुआ था इसलिये ये आस्तुत थे, और उन मृदुल वस्त्रा-  
दिकों के ऊपर और भी दूसरा पलंग पोस बिछा हुआ था इस लिये वे  
प्रत्यस्तुत थे । नंद सेठ ने उस चित्र समा में नटों को नर्तों को-नृत्य-

શયના કરાવડાવી. અંધિમ, વેષ્ટિમ, પૂરિમ અને સંધાતિમ વગેરે ઘણી જાતની  
રમતો પશુ તેમાં ઠેરાવડાવી ( તત્થણં બહૂનિ આસનાણિ ય, સયનાણિ, ય, અત્યુય  
પચત્યુયાઈ-ચિદ્વૃત્તિ, તત્થણં બહવે જડાય જડ્વા ય, જાવ દિલ્લમદ્વમત્તવેયના  
તાલાયકમ્મં-કરેમાણા વિહરન્તિ ) ઘણા આસનો, ઘણી પથારીઓ કે જે આસ્તુત  
પ્રત્યાસ્તુત હતા-પશુ તેમાં મૃદાવડાવી. વેત્ર કે લાકડા વગેરેથી બનાવવામાં  
આવેલી ચતુષ્કિકા વગેરે રૂપ પુરશી રૂપ જે હોય છે તે આસન છે. અને  
સાડા ત્રણ હાથના જે લાકડાના તખતા વગેરે હોય છે કે જેના ઉપર સારી  
રીતે સૂઈ શકાય-તે શયન છે. આ આસનો તેમજ શયનોની ઉપર કોમળ  
વસ્ત્રો વગેરે પાથરેલાં હતાં. જોટલા માટે જ તેઓ આસ્તુત હતા તે કોમળ  
વસ્ત્રો વગેરે ઉપર એક બીજું વસ્ત્ર પાથરેલું હેતુ જોટલા માટે એઓ પ્રત્યા-  
સ્તુત હતા. નંદ શેઠે તે ચિત્રસભામાં નટો, નૃત્તો-નાચનારા માણસો-ભૂતિ,

‘મૃતિ’=ધાન્યાદિરૂપં પારિશ્રમિકમ્, ભક્તમ્=ઓડનાદિરૂપં વેતનં=રૂપ્યકાદિરૂપં  
‘પરિશ્રમિકમ્’, एतेषां द्वन्द्वे श्रुतिभक्तवैतनानि, दत्तानि श्रुतिभक्तवैतनानि येभ्य-  
स्ते तयोक्ता पुरुषाः ‘तालारकर्म’ ‘तालचरकर्म’=નટાદિ સમ્બન્ધી ગીતવા-  
દિત્રાદિકર્મ કુર્વાણાઃ વિહરન્તિ=તિષ્ઠન્તિ સ્મ । અથ ચ-રાજગૃહવિનિર્ગતઃ=વાયુ-  
સેવનાર્થં રાજગૃહનગરાદ્ વહિર્નિઃસૃતશ્ચ बहुजनो=जनसमुदायः ‘જત્ય’ યત્ર ચિત્ર-  
સમાપામાગત્ય તેષુ પૂર્વન્યસ્તેષુ=પૂર્વસ્થાપિતેષુ આસનશયનેષુ કશ્ચિત્ ‘સંનિસ-  
ઞાય’ સંનિષ્ણઃ=उपविष्टः, કશ્ચિત્ ‘સંતુયદ્દો ય’ સંતવગૃત્તશ્ચ શયિતઃ, કશ્ચિત્

કારકોં કો યાવત્ મૃતિ, ભક્ત એવં વેતન દેકર તાલચર કર્મ કરને  
બાલોં કો મી નિયુક્ત કર રહ્યા થા । જો ગાન નૃત્ય કર્મ કરતે હૈં વે નટ  
હૈં । જો કેવલ અંગ વિશ્લેષ માત્ર સે હી નૃત્ય ક્રિયા પ્રદર્શિત કરતે હૈં વે  
નૃત્ત હૈં । ધાન્યાદિ રૂપ પારિશ્રમિકકા નામ મૃતિ, ઓડનાદિરૂપ પારિશ્ર-  
મિક કા નામ ભક્ત એવં નગદી પૈસા રૂપ આદિ રૂપ પરિશ્રમિક કા  
નામ વેતન હૈં । નટાદિ સમ્બન્ધી ગીતનૃત્ય વાદિત્ર આદિ કર્મ કો જો  
કરતે હૈં ઉનકા નામ તાલચર હૈં । તબલે આદિ ષજાને વાલે વ્યક્તિ તા-  
લાચરોં મેં હૈં । (રાયાગિહવિનિર્ગમઓ ય જત્ય बहुजनो તેસુ પુન્નમત્યે  
સુ આસનસયનેસુ સંનિસઞ્નો ય સંતુયદ્દો ય સુળમાણો ય પેન્હમાણો  
ય સાહેમાણો ય સુહં સુહેર્ણ વિહરહ) રાજગૃહ નગર સે વાયુ સેવન-  
ધૂમને-કે લિયે નિકલે હુપ અનેક જન ઉસ ચિત્ર સમા મેં આતે ઉનમેં  
કિતનેક જન વહાં પૂર્વન્યસ્ત ઉન આસન શયનોં પર બેઠ જાતે, ઔર  
કિતનેક જન સો જાતે, કિતનેક જન ગીતવાદિત્રોં કો સુનતે, કિતનેક

ભક્ત અને વેતન (ખગાર) આપીને તેમજ બીજા પણ તાલચર કર્મ કર-  
નારાઓની નીમણુક કરી હતી. જેઓ ગાન-નૃત્ય કર્મ કરે છે તેઓ નટ છે.  
જેઓ શક્ત અંગ વિશ્લેષ માત્રથી જ નૃત્ય કરે છે તેઓ નૃત છે. મહેનતાણુના  
રૂપમાં ધાન્ય વગેરે આપે તે ભૂતિ. મહેનતાણુના રૂપમાં ઓહન (રાંધેલા ચોખા)  
વગેરે આપે. તે ભક્ત અને રોકડા નાણા થાંહી વગેરેના સિકકા મહેનતાણુ  
મદદ આપે તેને વેતન કહે છે. નટ વગેરેની ગીત, નૃત્ય, વાણંત્ર વગેરે કર્મ  
કરનારાઓ ‘તાલચર’ છે. તખલા (નરવા) વગેરે વગાડનારા માણસો તાલ-  
ચરો છે. (રાયગિહ વિનિર્ગમઓ ય જત્ય बहुजनो તેસુ પુન્નમત્યેસુ આસનસય-  
નેસુ સંનિસઞ્નો ય સંતુયદ્દો ય સુળમાણો ય પેન્હમાણો ય સાહેમાણો ય સુહં  
સુહેર્ણ વિહરહ) રાજગૃહ નગરના હરના ફરવા માટે નીકળેલા ઘણા માણસો  
ચિત્રસલામાં આવતા અને તેઓમાથી કેટલાક માણસો તો પૂર્વે મૂકાવડાવેલા  
આસનો શયનો ઉપર બેસી જતા અને કેટલાક સૂઈ જતા, કેટલાક ગીત,

‘સુખમાણો ય’ શૃષ્ટંતથ ગીતવાદિત્રાદિકં કર્ણવિપયી કુર્વન્ કશ્ચિત્ ‘પેચ્છપાણો ય’ પ્રેક્ષમાણશ્ચ=નૃત્યાદિકં પश्यन् ‘સાદેમાણો ય’ કથયંશ્ચ=પરસ્પરં કથાં કુર્વન્-શ્લાઘયન્ વા સુખસુખેન=સુખપૂર્વકં સ્નાનન્દં વિહરતિ=ક્રીડતિસ્મ ॥ સૂ. ૩ ॥

મૂલ્ય—તદ્દર્શનં ગંદે દાહિણિલ્લેવણસંડે દર્શનં મહં મહાણસસાલં કરાવેદ્ અણેગલ્લંભસયસંનિવિટ્ઠં જાવ પડિરૂવં તત્થ ણં બહવે પુરિસા દિન્નમહ્મત્તવેયણા વિપુલં અસણં ૪ ઉવલ્લલ્લેતિ ‘બહૂણં સમણમાહણઅતિહિ કિવણવણીમગાણં પરિભાણમાણા પરિવેસે-માણા વિહરંતિ, તદ્દર્શનં ગંદે મણિયારસેટ્ઠી પચ્ચત્થિમિલ્લે વળ-સંડે દર્શનં મહં તેગિચ્છિયસાલં કરાવેદ્, અણેગલ્લંભસયસંનિવિટ્ઠં જાવ પડિરૂવં, તત્થ ણં બહવે વેજ્ઞા ય વેજ્જપુત્તા ય જાણુયાય જાણુયપુત્તા ય કુસલા ય કુસલપુત્તા ય દિન્નમહ્મત્તવેયણા વહૂણં બાહિયાણ ય ગિલાણાણ ય રોગિયાણ ય દુલ્લલાણ ય તેદ્દચ્છં કરેમાણા ૨ વિહરંતિ, અણે ય ત્થ બહવે પુરિસા દિન્નમહ્મત્તવેયણા તેસિં વહૂણં વાહિયાણ ય રોગિયાણય ગિલાણાણય દુલ્લલાણય ઓસહભેસજ્જમત્તપાણેણં પડિયારકમ્મં કરેમાણા ૨ વિહરંતિ, તદ્દર્શનં ગંદે ઉત્તરિલ્લે વળસંડે દર્શનં મહં અલંકારિયસમં કરાવેદ્ અણેગલ્લંભસયસંનિવિટ્ઠં જાવ પડિરૂવં, તત્થ ણં બહવે અલંકારિયપુરિસા દિન્નમહ્મત્તવેયણા વહૂણં સમણાણ ય માહણાણય અણાહાણ ય ગિલાણાણ ય રોગિયાણય દુલ્લલાણય અલંકારિયકમ્મં કરેમાણા ૨ વિહરંતિ । તદ્દર્શનં તદ્દર્શનં ગંદાણ પોલ્લ-

જન નૃત્યાદિકોં કો દેખતે ઓર કિતનેક જન પરસ્પર, બેઠકર વાતચીત કરતે હુદ્દ બડે આનંદ કે સાથ અપના સમય વ્યતીત કિયા કરતે ॥૨૩॥

વાણિજીને સાંભળતા, કેટલાક નૃત્યો વગેરે જોતા અને કેટલાક પાસે પાસે બેસીને ગપસપ કરતા સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરતા હતા. ॥ સૂત્ર ૩ ॥

रिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य करोडिया य  
कप्पडिया य तणहारा य पत्तहारा य कट्टुहाराय अप्पेगइया  
पहायंति अप्पेगइया पाणियं पियंति, अप्पेगइया पाणियं संव-  
हंति अप्पेगइया विसज्जियसेय जल्लमलपरिस्समनिद्वखुप्पिवासा  
सुहं सुहेणं विहरंति । रायगिहविणिग्गओ वि जत्थ बहुजणो  
किं ते जल्लरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरय  
अणेग सउणगणरुयरिभियसंकुलेसु सुहंसुहेणं अभिरममाणो  
२ विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएणं णंदे’ इत्यादि । ततः खलु नन्दः श्रेष्ठी दाक्षिणात्ये वन-  
षण्डे एकां महतीं महानसशालां=पाकशालां कारयति । कीदृशीम् ? इत्याह—  
‘अणेग’ इत्यादि—अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टां यावत्परितरूपां । तत्र खलु बहवः  
पुरुषा दत्तश्रुतिभक्तवेतनाः=पारिश्रमिकदानेन नियुक्ताः पाककर्मकराः विपुलम्

‘तएणं णंदे दाहिणिल्ले’—इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (णंदे) नंद श्रेष्ठी ने (दाहिणिल्ले) दक्षि-  
णदिशा संबन्धी (वणसंडे) वनषंड में (एणं महं) एक बड़ा भोरी (म-  
हाणसशालं) रसोइघर-भोजन शाला (करावेइ) बनवाया । (अणेग  
खंभसयसंनिविट्ठं जाव पडिख्वं, तत्थणं बहवे पुरिसा दिज्जमइमत्त वेयणा  
विपुलं असणं ४ उवक्खडेंति बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवणवणीप-  
गारणं परिभाएमाणा परिवेसेमाणाविहरंति) यह रसोइघर सैकड़ों खंभो  
के ऊपर खड़ा किया गया था । बड़ा ही रमणीय था । इस में अनेक  
पुरुष रसोई बनाने का काम करने के लिये नियुक्त किये गये थे । उन्हें

‘तएणं णंदे दाहिणिल्ले’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थार पत्नी (णंदे) नंद श्रेष्ठी (दाहिणिल्ले) दक्षिण  
(वणसंडे) वनषंड में (एणं महं) एक बहुत बड़ा (महाणसशालं) रसोइ  
घर—खोखनशाला—(करावेइ) बनावाया । (अणेगखंभसयसंनिविट्ठं जाव पडि  
ख्वं तत्थणं बहवे पुरिसा दिज्जमइमत्तवेयणा विपुलं असणं ४ उवक्खडेंति बहूणं  
समण-माहण-अतिहि-किवणवणीपगारणं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति)  
आ खोखनशाला सेकड़ों थांबलाओंनी હતી. તે ખૂબ જ રમણીય હતી. તેમાં  
રસોઈ તૈયાર કરવા માટે ઘણા માણસો નિયુક્ત કરવામાં આવ્યા હતા. તેઓને

અશનમ્ ૪ ચતુર્વિધમાહારમ્ ઉપસ્કુર્વન્તિ । વહૂનાં શ્રમણબ્રાહ્મણાતિથિકૃપણવનીપ-  
કાનાં-પરિમાજયન્તઃ ૨=વિમાગં કુર્વન્તઃ, પરિવેપયન્તશ્ચ વિહરન્તિ ।

તતઃ સ્વલુ નન્દો મળિકારશ્રેષ્ઠી 'પચ્ચત્થિમલ્લે' પાશ્ચાત્યે=પશ્ચિમદિગ્ભાગસ્થે,  
વનવણ્ણે એકાં મહતીં 'તેગિચ્છિયસાલં' ચિકિત્સાશાલં=રોગાપનયનશાલં 'કસા-  
વેદ્' કારયતિ, કિંમૂતામ્-અનેકસ્તમ્મન્નતસંનિવિટ્ઠં યાવત્-પ્રતિરૂપાં, તત્થ=તસ્યાં

પારિશ્રમિક રૂપ મેં શ્રુતિ, મક્ત ઓર વેતન દિયા જાતા થા । યે ૪ ચારોં  
પ્રકાર કા આશનાદિ રૂપ આહાર ઉસમેં બનાયા કરતે થે । અનેક શ્રમણ  
બ્રાહ્મણ, અતિથિ એવં વનીપકોંકો-યાચકોંકો યહાંસે ભોજન દિયા જાતા  
થા । કોઈ ૨ વહીં જાતે થે ઓર કોઈ કોઈં અપને વિભાગ કો લેજાતે થે ।  
( તણં ણંદે મળિયારસેટ્ટી પચ્ચત્થિમલ્લે વણસંઢે ઇમં મહં તેગિચ્છિય-  
'સાલં' કરાવેદ્, અણેગલ્લંમસયસંનિવિટ્ઠં જાવ પઢિલ્લં, તત્થ ણં વહવે  
વેજ્ઞા ય વેજ્ઞપુત્તા ય જાણુયા ય જાણુ ય પુત્તા ય કુસલા ય કુસલ  
પુત્તા ય દિલ્લમ્મસત્તવેયણા વહૂણં વાહિયાણ ય ગિલાણાણ ય રોગિયાણ  
ય દુવ્વલાણ ય તેજ્ઞચ્છં કરેમાણા ૨ વિહરંતિ, અણ્ણે ય પત્થ વહવે  
પુરિસા દિલ્લમ્મસત્તવેયણા તેસિં વહૂણં વાહિયાણ ય રોગિયાણ ય ગિલા  
ણીણ ય દુવ્વલાણ ય ઓમહમેસજ્ઞમત્તવાણેણં પઢિયારકમ્મં કરેમાણા  
૨ વિહરંતિ ) હસ કે બાદ ઉસ નંદ માળિકાર શ્રેષ્ઠી ને પશ્ચિમ દિશા  
સમ્યન્ધી વનવંદ મેં એક વઢીં મારી ચિકિત્સાશાલ-ઔષધાલય-વન-  
વાઈ । યહ મી સેંકડોં જ્ઞંમોં કે ઉપર જવડીં કી ગઈ થી । વહુત હી સં-

પોતાના મહેનતાણા બદલ શ્રુતિ, ભક્ત અને વેતન ( પગાર ) આપવામાં આવતું  
હતું. આરે જાતના અશન વગેરે આહારો તેમાં બનાવતાં હતા. ઘણા શ્રમણો  
બ્રાહ્મણો, અતિથિઓ અને વનીપકો-યાચનારાઓ-ને ત્યાંથી લોજન આપવામાં  
આવતું હતું. તેઓમાંથી કેટલાક તો ત્યાં જ જમી લેતા હતા અને કેટલાક  
પોતાનું ભાણું લઈ જતા હતા. ( તણં ણંદે મળિયાર સેટ્ટી પચ્ચત્થિમલ્લે વણસંઢે  
ઇમં મહં તેગિચ્છિયસાલં કરાવેદ્, અણેગલ્લંમસયસંનિવિટ્ઠં જાવ પઢિલ્લં, તત્થ ણં  
વહવે વેજ્ઞા ય વેજ્ઞપુત્તા ય જાણુયા ય જાણુપુત્તા ય કુસલા ય કુસલપુત્તા ય દિલ્લમ્મ-  
સત્તવેયણા વહૂણં વાહિયાણ ય ગિલાણાણ ય રોગિયાણ ય દુવ્વલાણ ય તેજ્ઞચ્છં કરે-  
માણા ૨ વિહરંતિ; અણ્ણે ય પત્થ વહવે પુરિસા દિલ્લમ્મસત્તવેયણા તેસિં વહૂણં  
વાહિયાણ ય રોગિયાણ ય ગિલાણાણ ય દુવ્વલાણ ય ઓમહમેસજ્ઞમત્તવાણેણં પઢિયાર  
કમ્મં કરેમાણા ૨ વિહરંતિ ) ત્યારબાદ તે મલ્લિકાર શેઠે પશ્ચિમ દિશાના વનવંદમાં  
એક મહું વિશાળ પાયા ઉપર ચિકિત્સા શાળા ( હવાખાતું ) બનાવડાવી એ  
પણ શેઠે આંભલાઓથી ભરી કરવામાં આવી હતી તેમજ ખૂબ જ રમણીય

ચિકિત્સાશાલાયાં, સ્વલ્લ વહ્નો ચિકિત્સકાશ્ચ વૈદ્યાઃ=વૈદ્યપુત્રાશ્ચ, 'જાણુયા ય' જ્ઞાયકાઃ=ચિકિત્સાગાહ્યમનવીત્યાપિ વૈદ્યપ્રવૃત્તિદર્શનેન વ્યાધિવારણત્રિવિજ્ઞાશ્ચ, જ્ઞાયકપુત્રાશ્ચ=ચિકિત્સાવેદિનાં સુતાશ્ચ, તથાકુશલઃ=સ્વકીયતર્કતથાચિકિત્સાદૌ પ્રવીણાશ્ચ, કુશલપુત્રાઃ=તેષાં પુત્રાશ્ચ દત્તશૃતિમક્તવેતનાઃ વહૂનાં 'વાહિયાણં' વ્યાધિતાનાં વિશિષ્ટદુઃસ્વજનકકુષ્ઠાદિરોગવતાં, 'ગિલાણાગ ય' ગ્લાનાનાં 'રોગિયાણં ય' રોગિકાણાં દુર્બલાનાં=શક્તિહીનાનાં ચ 'તેઙ્છંકરેમાણા' ચિકિત્સાઃ=વ્યાધિપ્રતીકારં, કુર્વન્તઃ, વિદ્ધરાન્તિ । તત્સ્યાં શાલાયાં અન્યે ચાત્ર વહ્વઃ પુરુષાઃ દત્તશૃતિમક્તવેતનાસ્તેષાં વહૂનાં વ્યાધિતાનાં ચ ગ્લાનાનાં ચ રોગિકાનાં ચ દુર્બ-

ન્દર થી । ઇસ-મેં-અનેક વૈદ્ય, વૈદ્યપુત્ર જ્ઞાયક જ્ઞાયકપુત્ર, કુશલ, કુશલ પુત્ર, શૃતિ, મક્ત ઓર વેતન દેકર નિયુક્ત કિયે હુપ થે । યે વહાં-અનેક-વ્યધિયુક્ત મનુષ્યોં કી ગ્લાન મનુષ્યોં કી, રોગી મનુષ્યોં કી; દુર્બલ મનુષ્યોં-કી, ચિકિત્સા કરતે થે । વહાં ઓર સી પરિચારક મનુષ્ય શૃતિ મક્ત ઓર વેતન દેકર નિયુક્ત કિયે હુપ થે-જો હન વ્યાધિત ગ્લાન, રોગી ઓર દુર્બલ મનુષ્યોં કી ઔષધ, ઔષજ્ય, મક્ત ઓર પાન સે સેવા કિયા-કરતે થે । ચિકિત્સા-શાસ્ત્ર કા અધ્યયન કિયે બિના હી જો વૈદ્યોં કી પ્રવૃત્તિ દેખ ૨ કર વ્યાધિ કો દૂર કરને કા અનુભવ પ્રાપ્ત કર છેતે હૈં-એસે-વ્યક્તિ યહાં-“જ્ઞાયક” શબ્દ સે ગૃહીત હુપ હૈં । જો અપની-તર્કણા-કે-બલપર ચિકિત્સા આદિ મેં નિપુણ હોતે હૈં થે યહાં “કુશલ” શબ્દ સે ગૃહીત હુપ હૈં । વિશિષ્ટ દુઃસ્વોત્પાદક કુષ્ઠાદિરોગ સે જો-પીઢિત-હો-રહેહૈં-એસે મનુષ્ય યહાં વ્યાધિત શબ્દ કે વાચ્ય હુપ હૈં । એક-

હતી. તેમાં, ધણુ વૈદ્યો, વૈદ્ય પુત્રો, જ્ઞાયક, જ્ઞાયકપુત્રો, કુશલ, કુશલ પુત્રો, શૃતિ, ભક્ત-અને વેતન આપીને નિયુક્ત કરવામાં આવ્યા હતા. તે બધા ત્યાં ધણુ મોઢા માણસોની, ગ્લાન માણસોની, રોગીઓની, કમજોર માણસોની ચિકિત્સા ( ઇલાજ ) કરતા હતા ત્યાં બીજા પણુ ધણુ પરિચારકજનો શૃતિ, ભક્ત અને વેતન ( પગાર ) આપીને નિયુક્ત કરવામાં આવ્યા હતા. તેઓ મોઢા, ગ્લાન, રોગી અને કમજોર માણસોની ઔષધ, ઔષજ્ય, ભક્ત અને પાનથી સેવા કરતા હતા. ચિકિત્સાશાસ્ત્રના અભ્યાસ ક્યાં વગર જ જે વૈદ્યોની પ્રવૃત્તિ-વૈદ્યો કેવી રીતે બીમારની ચિકિત્સા કરે છે ?-આ બધું જોધને બીમારને મટાડવાનો અનુભવ મેળવે છે તે માણસ અહીં 'જ્ઞાયક' ના રૂપમાં પ્રયુક્ત થયો છે. જે પોતાની તર્કબુદ્ધિશક્તિના આધારે ઇલાજ વગેરેમાં નિપુણ હોય છે તેઓ અહીં 'કુશળ' શબ્દના રૂપમાં ગૃહીત થયા છે. વિશિષ્ટ દુઃખો-ત્યાહક કુષ્ઠ વગેરે રોગથી જે પીડાતા રહે છે એવા માણસો અહીં વ્યાધિત.

લાનાં ચ 'ઓસહમેષ્ઠજમત્તપાણે' ઔષધ મૈરુજ્યમત્તપાનેન=ઔષધમેકદ્રવ્ય-સાધ્યં, મેષ્ઠજં=અનેકદ્રવ્યસંયોગનિષ્પન્નં મત્તપાનમ્-આહારઃ, પાનમ્=પાનીયં, તેન, 'પદ્ધિપારકર્મ' પ્રતિચારકર્મ=સેવારૂપ કર્મ કુર્વન્તો વિહરન્તિ ।

તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ નન્દઃ નન્દનામામણિફારશ્રેષ્ઠી, 'ઉત્તરિલ્લે' ઉત્તરીયે વનષ્ઠે એકાં મહર્તીં 'અલંકારિયસમં' અલંકારિકસમ્ભા=નાપિતકર્મશાલાં કાર-થતિ, કીદૃશીમ્ ? અનેકસ્તમ્મશતસંનિવિષ્ટાં યાવત્-પ્રતિરૂપામ્, તત્ત તત્થાં નાપિતકર્મશાલાયાં વહ્વોડલ્લહ્કારિક પુરુષાઃ=નાપિતાઃ, દત્તમૃતિમત્તવેતનાઃ વહૂનાં

દ્રવ્ય સાધ્ય દ્વાકા નામ ઔષધ હૈ ઓર જો અનેક દ્વાઓકે સંયોગસે દ્વાઈ તૈયાર કી જાતી હૈ વહુ ઐષઙ્ય હૈ (તણં જંદે ઉત્તરિલ્લે વળસંઢે ઇમં મહં અલંકારિયસમં કરાવેઈ અણેગલ્લંમસયસંનિવિઙ્ઠં જાવ પઢિરુલ્લં, તત્થ વહુવે અલંકારિયપુરિસા દિલ્લમહમત્તવેયણા વહૂણં સમણાણ ચ માહ-ણાણ ચ અણાહાણ ચ ગિલાણાણ ચ રોગિયાણ ચ દુલ્લલાણ ચ અલંકારિય કર્મ્મ કરેમાણા ૨ વિહરંતિ તણં તીણ નંદાણ પોક્કલ્લકિણીણ વહુવે સણાહા ચ અણાહા ચ પંથિયા ચ વહિયા ચ કરોડિયા ચ કપ્પહિયા ચ તણહારા ચ પત્તહારા ચ કટ્ઢહારા ચ અપ્પેગહ્યા ણ્હાયંતિ, અપ્પેગહ્યા પાણિયં પિયંતિ, અપ્પેગહ્યા પાણિયં સંવહંતિ, અપ્પેગહ્યા વિસલ્લિજય સે ચ જલ્લમલ પરિસ્સમનિદં સુપ્પિવાસા સુહં સુહેણં વિહરંતિ ) હિસ કે વાદ ઉસ મણિ-કાર શ્રેષ્ઠી નંદ ને ઉત્તર દિશા સંયન્ધી વનષંઢ મેં એક વઢી ભારી નાપિત કર્મ શાલા વનવાઈ । યહ ઓ સૈકઢોં લંભોં સે નિર્મિત્ત કી ગઈ

શબ્દથી ગૃહીત થયેલા છે. એક દ્રવ્ય-સાધ્ય દવાનું નામ 'ઔષધ' છે અને જે અનેક (ધણી) દવાઓના મિશ્રણથી તૈયાર કરવામાં આવે છે તે ઐષઙ્ય છે. (તણં જંદે ઉત્તરિલ્લે વળસંઢે ઇમં મહં અલંકારિયસમં કરાવેઈ અણેગલ્લંમસય-સંનિવિઙ્ઠં જાવ પઢિરુલ્લં, તત્થ વહુવે અલંકારિયપુરિસા દિલ્લમહમત્તવેયણા વહૂણં સમણાણ ચ, માહણાણ ચ, અણાહાણ ચ, ગિલાણાણ ચ, રોગિયાણ ચ, દુલ્લ-લાણ ચ, અલંકારિયકર્મ્મ કરેમાણા ૨ વિહરંતિ તણં તીણ નંદાણ પોક્કલ્લકિણીણ વહુવે સણાહા ચ અણાહા ચ પંથિયા ચ, વહિયા ચ કરોડીયા ચ કપ્પહિયા ચ તણ-હારા ચ, પત્તહારા ચ કટ્ઢહારા ચ અપ્પેગહ્યા ણ્હાયંતિ, અપ્પેગહ્યા પાણિયં પિયંતિ અપ્પેગહ્યા પાણિયં સંવહંતિ, અપ્પેગહ્યા વિસલ્લિજય સે ચ જલ્લમલપરિસ્સમનિદં સુપ્પિવાસા સુહં સુહેણં વિહરંતિ ) ત્યારપછી તે મણિકાર શ્રેષ્ઠી નંદે ઉત્તર દિશાના વનષંઢમાં એક વિશાળ નાપિત કર્મશાળા ( હલ્લમ શાળા ) બનાવડાવી. તે ધણુ સેંકડો ચાંલતાઓ ઉપર બાંધવામાં આવી હતી. એવામાં તે ઔષધ

श्रमणानां च ब्राह्मणानां च सनाथानां च ग्लानानां च रोगिकाणां च दुर्बलानां चालङ्कारिककर्म कुर्वन्तः २ विहरन्ति ।

ततस्तदनन्तरं खलु तस्यां नन्दायां पुष्करिण्यां बहवः सनाथाश्च अनाथाश्च पान्तिकाश्च पथिकाश्च करोटिकाश्च कार्पटिकाश्च तृणहारकाश्च पत्रहारकाश्च काष्ठहारकाश्च 'अप्येकहया' अप्येककाः=३.प्येके-केचन, 'ग्राहयन्ति' स्नान्ति=स्नानं कुर्वन्ति, अप्येककाः=पानीयं पिबन्ति, अप्येककाः=पानीयं संवहन्ति, मरन्ति, अप्येककाः=केचन 'विसज्जियसेयजल्लमलपरिस्समनिदसुप्पिवासा' विजितस्वेदजल्लमल्लपरिश्रमनिद्राश्लुत्पिपासाः विसर्जिता अपनीता दूरीकृताः स्वेदजल्लमल्लरूपाः शरीरमलास्तथापरिश्रमनिद्राबुभुक्षापिपासाश्च यैस्ते तथाविधा मनुष्याः 'सुहं सुहेण' सुखं सुखेन अतिमुखेन विहरन्ति । 'वित्ते' किमधिकं तद्वर्ण्यते-राजगृहविनि

धी । देखने में बड़ी सुहावनी थी । इस में अनेक नापित ( नार्ड ) भूति भक्त एवं वेतन देकर नियुक्त किये गये थे । ये वहाँ अनेक श्रमणों के ब्राह्मणों के, सनाथ अनाथ जनों के, ग्लानों के, रोगियों के एवं दुर्बलों के बाल बनाया करते थे । उस नन्दा पुष्करिणी में कितनेक सनाथ कितनेक पान्तिक, कितनेक पथिक, कितनेक करोटिक, कितनेक कार्पटिक, कितनेक तृण हारक-घास देने वाले कितनेक पत्र हारक, कितनेक कण्ठ हारक-लकड़हारे-स्नान करते पानी पिया करते और कितनेक उस में से पानी भरा करते । कितनेक स्वेद, जल मल रूप शरीर के मैल को उस के जल से दूर करते और कितनेक परिश्रम, निद्रा बुभुक्षा एवं पिपासा को उस वापिका के सहारे से शांत किया करते । इस तरह अनेक जन उस पुष्करिणी से बहुत आनंदित रहते । ( रायगिरि विणि

भनोरम दागती होती । तेमां वधु नापितो ( डलभो ) भूति, भक्त अने वेतन ( पगार ) आपीने नियुक्त करवाभां आब्बां होता । तेज्जो त्यां वधु श्रमणाना, ब्राह्मणाना, सनाथ तेमअ अनाथजनाना, ग्लानाना, रोगीजनाना अने दुर्बल भाषुसोना वण आपता होता । ते नन्दा पुष्करिणी ( वाव ) मां डेटलाक सनाथ, डेटलाक पथिक, डेटलाक पथिक, डेटलाक करोटिक, डेटलाक कार्पटिक, डेटलाक तृणहारक ( आरना साराज्जो उचकनारा ) डेटलाक पत्रहारक, डेटलाक काष्ठहारक, ( लाकडा वगेरे वेचवानो धधो करनारा ) स्नान करता होता, पाणी पीता होता । अने डेटलाक तो तेमाथी पाणी भरता रहेता होता । डेटलाक भाषुसो तो स्वेद, जलमां उपर तरी आवत शरीरना मैल ने पाणीमांथी लहार करेता होता । अने जील डेटलाक भाषुसो परिश्रम, निद्रा, भूष अने तरस ते पाणी पीने मटावेता होता । आ रीते वधु भाषुसो ते पुष्करिणीमां आनंद-



ર્જોતોઽપિ યત્ર બહુજનઃ ' જલરમણવિવિદ્મજ્જનકચલિલયાધરયકુસુમસત્થરયઅણેગ  
સઝગગણરુચરિમિતસંકુલેસુ ' જલરમણવિવિદ્મજ્જન કદલીલતાગૃહકકુસુમશસ્ત-  
રજોઽનેકશકુનગણરુતરિમિતસંકુલેષુ=તત્ર જલરમણે:- જલક્રીડાદિમિઃ, વિવિદ્મ-  
જ્જનૈઃ-વહુદિધૈઃ સ્નાનૈઃ, કદલીનાં લતાનાં ચ ગૃહકૈઃ કુસુમશસ્તરજોમિઃ=કુસુ-  
માનાં પુષ્પાણાં, શસ્તૈઃ=મુગન્ધયુક્તૈઃ, રજોમિઃ=પરાગૈશ્ચ, અનેકશકુનગણરુતૈઃ=  
વહુવિધપક્ષિગણાનાં રુતૈઃ-શબ્દૈશ્ચ, રુતૈઃ ક્રીદૈશ્ચરિત્યાદ-રિમિતૈ સ્વરયુક્તૈઃ-મધુરૈ-  
રિત્યર્થઃ, સંકુલેષુ=યુક્તેષુ વનવૃંદેષુ, મુલ્લં મુલ્લેનાભિરમમાણઃ ૨ વિહરતિ । સૂ.૫॥

મૂલ-તણાં પંદાણ પોક્ષરિણીણ બહુજનો પદાયમાણો  
ય પિયમાણો ય પાણિયં ચ સંવહમાણો ય અન્નમન્નં એવં વયા-  
સી-ધણે પં દેવાણુપ્પિયા ! પંદે મણિયારસેટ્ટી કયત્થે જાવ  
જમ્મજીવિયફલે જસ્સણંદમેયારૂવા પંદા પોક્ષરણી ચાઝકોણા  
જાવ પાંડરૂવા, જિસ્સા પં પુરત્થિમિલ્લે તં ચેવ સઠ્ઠં ચઝસુ વિ  
વણસંડેસુ જાવ રાયગિહે વિણિગ્ગઓ જત્થ બહુજનો આસણેસુ

અર્થો વિ જત્થ બહુજનો કિં તે જલરમણ વિવિદ્મજ્જનકચલિલયા  
ધરય કુસુમ સત્થરય અણેગઅભિરમમાણો ૨ વિહરહ ) ઓર અધિક  
કથા કર્હે-રાજગૃહ નગર સે બાહિર નિકલે હુણ પ્રાયઃ સમી જન વિવિદ્મ  
પ્રકાર કી જલ ક્રીડાઓ સે નાના પ્રકાર કે મજ્જનો સે, કદલી ઓર  
લતાઓ કે ઘરો સે, પુષ્પો કી સુગંધિત રજ સે, ઓર અનેક વિધપક્ષી  
ગણો કે મધુર શબ્દો સે યુક્ત હન વનવૃંદો મેં આનંદ સે ઇઠલોતે હુણ  
વિચરણ કિયાં કરતે ચે । સૂત્ર ॥ ૪ ॥

પૂર્વક પોતાનો વખત ગાળતા હતા. ( રાયગિહવિણિગ્ગઓ વિ જત્થ બહુજનો કિં  
તે જલરમણવિવિદ્મજ્જનકચલિલયા ધરય કુસુમ સત્થરયઅણેગસઝગગણરુચરિમિય  
સંકુલેસુ મુલ્લં મુલ્લેનાં અભિરમમાણો ૨ વિહરહ ) અને બીજું તો વધારે શું કહીએ.  
રાજગૃહ નગરની બહાર આવનારા ઘણા માણસો ઘણી ભતની બળ-કીડાઓ  
અને ઘણી ભતના મજ્જનો ( સ્નાન ) કરીને તેમજ કદલી અને લતાગૃહોથી,  
પુષ્પોની સુગંધિત રજથી અને ઘણા પક્ષીઓના મધુર કલરવથી યુક્ત આ  
વનવૃંદોમાં આનંદથી મસ્ત થઈને લહેર કરતા હતા-વિચરણ કરતા હતા. સૂ. "૪"

ય સયણેસુ ય સન્નિસન્નો ય સંતુયદ્દો ય પેચ્છમાણો ય સાહે-  
માણો ય સુહંસુહેણં વિહરઈ, તં ધન્ને કયત્થે કયપુન્ને કયાણંદે  
લોણે । સુલહે માણુસ્સણે જન્મ-જીવિયફલે નંદસ્સ મણિયા-  
રસ્સ, તણં રાયગિહે સિંઘાડગ જાવ વહુજણો અન્નમન્નસ્સ એવ-  
માઝ્ઝલ્લઈ ૪ ધન્ને ણં દેવાણુપ્પિયા ! ણંદે મણિયારે સો ચેવ  
ગમઓ જાવ સુહંસુહેણં વિહરઈ । તણં સે ણંદે મણિયારે  
વહુજણસ્સ અંતિણે ઇયમદ્દં સોચ્છા ણિસમ્મ હદ્ધતુદ્ધે ધારાહય-  
કલંબગંપિવ સમૂસિયરોમકૂવે પરં સાયાસોક્કલમણુભવમાણે  
વિહરઈ ॥ સૂ. ૫ ॥

ટીકા—‘ તણં ણંદાણે ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु नन्दायां पुष्करिण्यां  
बहुजनः ‘ प्लायमाणो य ’ स्नानं कुर्वन् ‘ पीयमाणो य ’ पिबन् पानीयं च संवह-

‘ તણં ણંદાણે પોક્કલરિણીણે ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—( તણં ) इसके बाद ( णंदाए पोक्कलरिणीए प्लायमाणो य  
पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य बहुजणो अणमणं एवं वयासी-  
धण्णे णं देवाणुप्पिया । णंदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले  
जस्सणं इमेया रूढा णंदा पोक्कलरणी चाउक्कोणा जाव पडि रूढा, जि-  
स्साणं पुरत्थिमिल्ले तं चैव सव्वं चउसु वि वणसंढेसु जाव रायगिह  
विणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेषु य सयणेषु य सन्निसन्नो य  
संतुयदो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुहं सुहेणं विहरइ ) उस नंदा  
पुष्करिणी में स्नान करने वाला पानी पीनेवाला और उस में से पानी

‘ તણં ણંદાણે પોક્કલરિણીણે ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—( તણં ) प्लायमाह ( णंदाए पोक्कलरिणीए प्लायमाणो य, पियमाणो य  
पाणियं च संवहमाणो य बहुजणो अणमणं एवं वयासी धण्णे णं देवाणुप्पिया ।  
णंदे मणियारसेट्ठी कयत्थ जाव जम्मजीवियफले जस्सणं इमेया रूढं णंदा पोक्क-  
रणी चाउक्कोणा जाव पडिरूढा, जिस्साणं पुरत्थिमिल्ले तं चैव सव्वं चउसु वि वण-  
संढेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेषु य सयणेषु य सन्निसन्नो य  
संतुयदो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुहं सुहेणं विहरइ ) ते नंदा पुष्करिणी  
( वाय ) मां स्नान करनार, पाछी पीनार, अने तेमांथी पाछी बननार, इरेके  
इरेके भाषुअ परस्पर आ भ्राषु वातो करवा लाग्या के के साथ ! भक्षियार

માન=ઘટાદિર્મનયન્ ચાન્યોન્યમેવમવાદીત્-ધન્યઃ સ્વલ્પ હે દેવાનુમિયાઃ નન્દો-  
મણિકારશ્રેષ્ઠી કૃતાર્થો યાવત્-સુલબ્ધજન્મજીવિતફલં, યસ્ય સ્વલ્પ હ્યમેતદ્દૂપા  
નન્દા=નન્દાનામ્ની, પુષ્કરિણી ચતુષ્કોણા યાવત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે ' જિસ્સાણં '  
યસ્યાં સ્વલ્પ પુષ્કરિણ્યાઃ પૌસ્ત્યે તદેવ સર્વં ચતુર્ષ્વપિ વનપણ્ડેષુ યાવત્-રાજગૃહ-  
વિનિર્ગતો યત્ર વહુજન આસનેષુ ચ શયનેષુ ચ સંનિવશ્નઃ=સમ્યક્પ્રકારેણોપવિષ્ણ  
' સંતુયદ્ધો ' સંત્વગૃહતઃ=શયિતઃ કૃતપાશ્વર્પરિવર્તનશ્ચ, ' પેચ્છમાણઃ ' પ્રેક્ષમાણઃ  
વનપણ્ડશ્રિયં પશ્યન્ ' સાહેમાણો ' કથયન્=તદ્વિષયકથાં કુર્વન્ શ્લાઘયન્ વા સુલ-  
સુલ્લેન=અતિસુલેન વિહરતિ । તત્-તસ્માદ્ ધન્યઃ કૃતાર્થઃ કૃતપુણ્યઃ કૃતાનન્દો  
નન્દમણિકારશ્રેષ્ઠીલોકે સુલબ્ધ માનુષ્યકજન્મજીવિતફલં યસ્ય નન્દસ્ય મણિકા-

ખરને ચાલા પ્રત્યેક જન આપસ મેં હસ પ્રકાર સે ચાત ચીત કિયા કરતા  
કિ હે માઈ ! મણિકાર શ્રેષ્ઠી નંદ કો ધન્યવાદ હૈ । વહ કૃતાર્થ હો  
ગયા । ડસને અપને જન્મ ઓર જીવનકા ફલ અઠ્છી તહર સે પા લિયા  
કિ જિસમેં યહ ચારકોનોં ચાલી યાવત્ પ્રતિરૂપ નંદા નામ કી સુન્દર  
ચાપિકા બનવાઈ હૈ । ઓર ડસકે ચારોં ઓર ચાર વનખંડ બનવાયે હૈ ।  
પૂર્વ દિશા સંબન્ધી વનખંડ મેં એક વિશાલ ચિત્રસભા બનવાઈ હૈ  
હત્યાદિ રૂપ સે પહિલે કા કહા ગયા સબ સંબન્ધ યહાં સમજા લેના  
ચાહિયે । ઇન ચાર વનખંડોંમેં યાવત્ રાજગૃહ નગરસે નિર્ગત પ્રત્યેક જન  
બિહો હુપ આસનોં પર શયનોં પર બેઠ કર, હેઠ કર, વનખંડ કી શોભા  
કા નિરીક્ષણ કરતા હુઆ, તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-કરતા હુઆ ઘડે  
આનંદ કે સાથ વિચરણ કરતા હૈ । ( તં ધન્ને કયત્યેકયપુન્ને કયાર્ણદે  
લોપ ! સુલલ્લે માણુસ્સપ જન્મજીવિયફલે નંદસ્સ મણિયારસ્સ તપ્પણં

શ્રેષ્ઠી નંદને ધન્યવાદ છે. તે કૃતાર્થ થઈ ગયો છે. તેણે પોતાના જન્મ ૯૫-  
નવું ફળ સારી રીતે મેળવી લીધું છે. કેમકે તેણે આ ચાર/ખૂણાઓવાળી  
પ્રતિરૂપ વગેરે શુભેથી યુક્ત એવી નંદા નામે રમ્ય વાવ બનાવડાવી છે. અને  
વાવને ચારે બાજુએ ચાર વનખંડો બનાવડાવ્યા છે. પૂર્વ દિશા તરફના વન-  
ખંડમાં એક વિશાળ ચિત્રસભા બનાવડાવી છે, વગેરે પહેલાની જેમજ અહીં  
સમજા લેવું જોઈએ. એ ચારે વનખંડોમાં રાજગૃહ નગરથી આવીને માણુસો  
આસનો તેમજ શયનો ઉપર બેસીને, સૂઈને અને વનખંડની શોભાને જોતાં,  
તદ્વિષયક કથા-વાર્તા-( વનખંડ સંબંધી વખાણો ) જોતલે કે ચર્ચાઓ કરતાં  
શુભેથી વિચરણ કરતા રહે છે. ( તં ધન્ને કયત્યેકયપુન્ને કયાર્ણદે લોપ ।  
સુલલ્લે માણુસ્સપ જન્મજીવિયફલે નંદસ્સ મણિયારસ્સ તપ્પણં રાયગિદ્ધે સિંધા-  
રગ જાવ વહુજનો અન્નમન્નસ્ય એવામહસ્સદ ૪ ધન્નેણ દેવાણુમ્પિયા । ગંદે

રસ્ય શ્રેષ્ઠિનઃ, અત્ર સદ્ધન્યસામાન્યે ષષ્ઠી । એવ રાજગૃહવિનિર્ગતોવહુજનરતત્રસ્થિતો  
વદતીત્યર્થઃ । તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ રાજગૃહે નગરે ‘ સિંઘાહગ જાવ બહુજનો ’  
શૃંગાટકાદિયાવન્મહાપયપથેષુ વહુજનઃ, અન્યોન્યસ્ય=પરસ્પરં, એવામાહ્યાતિ, માષતે,  
પ્રજ્ઞાપયતિ, પ્રરૂપયતિ । કિમાહ્યાતીત્યાહ-હે દેવાનુમિય ! ધન્યઃ સ્વલુ નન્દો-  
મણિકારઃ ‘સો ચેવ ગમઓ’ સ એવ ગમકઃ=અત્ર પૂર્વોક્ત એવ પાઠો વાચ્યઃ, કૃતાર્થઃ  
કૃતપુણ્યઃ, યાવત્-સુલભ્વજન્મજીવિતફલં, યસ્ય સ્વલુ હ્યમેતદ્રૂપા નન્દા પુષ્કરિણી  
ચતુષ્કોણા યાવત્ પ્રતિરૂપા વર્તતે, યાવત્-વહુજનઃ-સુલેસુલેન ત્રિહરતિ । તતઃ

રાયગિહે સિંઘાહગ જાવ બહુજનો અન્નમન્નસસ એવામાહ્સ્વહ ૪ ધન્ને નં  
દેવાણુપ્પિયા ! નંદે મણિયારે સો ચેવ ગમઓ જાવ સુહં સુદેળં વિહરહ,  
તપ્પણં સે નંદે મણિયારે બહુજણસ્સ અંતિપ્પ એયમહં સોચ્છા ણિસમ્મ  
હટ્ઠુદટે ધારાહ્યકલંબગં પિવ સમૂસિય રોમકૂવે પરં સાયા સોક્કલમણુમ-  
વમાણે વિહરહ ) હસલિયે નંદ મણિકાર શ્રેષ્ઠી વિશેષ રૂપ સે ધન્ય  
વાદાર્હ છે । વિશિષ્ટ પુણ્યશાલી છે । ઓર વિશિષ્ટ આનંદ કા ભોક્તા છે ।  
હસલોક મેં મનુષ્ય જન્મ ઓર જીવન કા ફલ હસ ને પ્રાપ્ત કર લિયા  
છે । હસી તરફ કી રાજગૃહ નગર કે શૃંગાટક આદિ મહા માર્ગોં પર  
જાહે હોકર અનેક જન પરસ્પર મેં વાત ચીત કિયા કરતે, પરસ્પર મેં  
સંભાષણ કરતે, પ્રજ્ઞાપના કરતે ઓર પ્રરૂપણા કરતે રહતે-વે કહતે-હે  
માર્હ ! નંદ મણિકાર શ્રેષ્ઠી કો ધન્યવાદ હેં, વહ કૃનાર્થ છે, કૃત પુણ્ય  
છે । હસી ને અપને મનુષ્ય ભવસંબંધી જન્મ ઓર જીવન કો પા લિયા  
છે-જિસ ને યહ હતની સુન્દર ચાર કોન વાલી નંદા પુષ્કરિણી બનવાર્હ  
છે । જહાં અનેક જન સુલ પૂર્વક વિચરણ કરતા છે । હસ્યાદિ પહિલે કા

મણિયારે સોચેવ ગમઓ જાવ સુહં સુદેળ વિહરહ, તપ્પણં સે નંદે મણિયારે  
બહુજણસ્સ અંતિપ્પ એયમહં સોચ્છા ણિસમ્મ હટ્ઠુદટે ધારાહ્યકલંબગં પિવ  
સમૂસિય રોમકૂવે પરં સાયા સોક્કલમણુમવમાણે વિહરહ ) એથી નંદ  
મણિયાર અરેઅર અવિશેષ ધન્યવાદને ચોખ્ય છે તે વિશિષ્ટ પુણ્યશાળી છે અને  
વિશિષ્ટ આનંદને ભોક્તાગ કરનાર છે. આ લોકમાં મનુષ્ય જન્મ અને જીવ-  
નનું ફળ તેણે સંપૂર્ણપણે મેળવી લીધું છે. આ રીતે જ રાજગૃહ નગરના  
શૃંગાટક વગેરે રાજમાર્ગોં ઉપર ઊભા રહીને ઘણા માણસો પરસ્પર વાતો કરતા  
હતા. સંભાષણ કરતા હતા, પ્રજ્ઞાપના કરતા હતા અને પ્રરૂપણા કર્યા કરતા  
હતા. તેઓ કહેતા કે હે ભાઈ ! નંદ મણિકાર શેઠને ધન્ય છે, તે અરેઅર  
કૃતાર્થ મનુષ્યભવ સંબંધી જન્મ અને જીવનને સફળ બનાવ્યાં છે. તેણે કેટલી  
સરસ નંદા નામે ચાર ખૂણવાળી વાવ બંધાવી છે. ત્યાં ઘણા માણસો સુખેથી

खेले स नन्दो मणिकारश्रेष्ठी बहुजनस्यान्तिके एनमर्थश्रुत्वा हृष्टतुष्टः ' धाराहय-  
फलवर्गपिव ' धाराहतकदम्बकमिव=मेघवाराभिराहतं यत्कदम्बकुसुमं तद्वत्-  
' समृसियरोरूवे ' समुच्छित्तरोमकूपः समुल्लसितरोमरन्ध्रः संजातरोमाश्च इत्यर्थः,  
परम=उत्कृष्टं ' सायासोक्खमणुभवमाणे ' शातसौख्यमनुभवन्=बहुजनकृत-  
स्वात्मप्रशंसाश्रवणजनित शातगौरवोदयेनामन्दमानानन्दोल्लसितचित्तः सन् विह-  
रति=आस्तेस्म ॥ सू० ५ ॥

मूलम्-तएणं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नयाकयाई  
सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउव्मूया तं जहा-“ सासे १,  
कासे २, जरे ३, दाहे ४, कुच्छिसूले ५, भगंदरे ६। अरिसा ७,  
अजीरए ८, दिट्ठिसुद्धसूले ९-१० अरोअए ११” ॥१॥ अच्छिवेयणा  
१२, कन्नवेयणा १३, कंडू १४, दउदरे १५, कोढे १६। तएणं  
से णंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिमूए समणे  
कोंडुंबियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं  
तुव्वमे देवाणुप्पिया ! रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु महयार  
संदेणं उग्घोसेमाणां एवं वदह-एवं खल्ल देवाणुप्पिया ! णंदस्स

सब वक्तव्य यहां लगा लेना चाहिये । मणिकार श्रेष्ठी नंद अनेक जनों  
के मुख से इस अपनी प्रशंसा रूप अर्थ को सुनता तो सुन कर बहुत  
अधिक आनंदित एवं संतुष्ट बन जाता । मेघ की धारा से आहन  
कंदव पुष्प के समान उस के शरीर भर में रोमांच हो आते । इस तरह  
अनेक जन कृत अपनी प्रशंसा के श्रवण से जनिन शातगौरवोदय से  
अनन्द आनंद उल्लसित बना रहता । सूत्र ॥ ५ ॥

विशेष करे छे-वगेरे अर्द्धी पणु पूर्ववत् पणुन समञ्ज लेवुं नेधंओ. भण्डिकार  
अध्वि नंद धणु भाणुसेना मोथी पोताना वणाणु सांलणतो त्थारे बहु न  
आनंदित अने संतुष्ट थधं नतो डतो. मेघनी धाराओथी आडत कड न पुण्यनी  
नेम तेवुं शरीर रोमांचित थधं नतुं डतुं आ रीते धणु भाणुसेना भुजेथी  
पोताना वणाणु सांलणीने ते शत गौरवोदयथी भूत न आनंदमां भन  
रहेते डतो. ॥ सूत्र “ ५ ” ॥

मणियारसेट्टिस्स सरीरंगंसि सोलसुरोगायंका पाउब्भूया तं जहा-  
 'सासे जाव कोढे' तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्ज-  
 पुत्तो वा जाणओ वा२ कुसलो वा२ नंदस्स मणियारस्स तेसिं  
 च णं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामेत्तए  
 तस्स णं देवाणुप्पिया ! मणियारे विउलं अत्थसंपयंणं दलयइ  
 त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह घोसित्ता एयमाणत्तियं  
 पच्चप्पिणह, तेहिं तहेव पच्चप्पिणंति, तएणं रायगिहे इमेयारूवं  
 घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुस-  
 लपुत्ता य सुत्थकोसहत्थगया य कोसगपायहत्थगया य सिलि-  
 याहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसहभेसज्जहत्थगया य  
 सएहिं२ गिहेहिंतो निक्खमांति निक्खमिच्चा रायगिहं नयरं  
 मज्झं मज्झेणं जेणेव णंदस्स मणियारसेट्टिस्स गिहे तेणेव उवा-  
 गच्छंति उवागच्छित्ता णंदस्स सरीरं पासंति, तेसिं रोगायंकाणं  
 णियाणं पुच्छंति णंदस्स मणियारसेट्टिस्स बहूहिं उव्वलणेहि य  
 उवट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहिय विरेयणेहि य सेयणेहिय  
 अवदहणेहि य अवणहाणेहि य अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि  
 य निरुहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य  
 सिरावेहेहि य तप्पणाहि य पुडपाणेहि य छल्लीहि य वल्लीहि य  
 मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य  
 सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं  
 सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामिच्चा, नो चेव णं  
 संचापंति उवसामेत्तए, तएणं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो  
 संचापंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एवमवि रोगायंकं उव-

સામિત્તણ તાહે સંતા તંતા જાવ પડિગયા । તણં નંદે તેહિં  
સોલસેહિં રોગાયંકેહિં અભિભૂણ સમાણે ણંદા પોઝ્ઝરણીણ  
મુચ્છીણ ગિદ્ધે ગઢિણ અઝ્ઝોવવણે તિરિઝ્ઝજોણીણિં નિવ-  
ઢ્ઢાઉણ વઢ્ઢપણસિણ અઢ્ઢહુહઢ્ઢવસટ્ટે કાલમાસેકાલં કિચ્છા નંદાણ  
પોઝ્ઝરણીણ દહુરીણ કુચ્છિસિ દહુરત્તાણ ઉવવન્ને ॥સૂ.૬॥

ટીકા—‘તણં તસ્સ’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु नन्दस्य मणिकार-  
श्रेष्ठिनः, अन्यदा कदाचित्-प्रवलतरशातगौरवजनितकर्मोदयेन शरीरे पोडश  
रोगातङ्काः तत्र रोगाः=स्वल्पकालस्थायिनो ज्वरादयः, आतङ्काः=चिरस्थायिनः  
कुष्ठादयः, मादुर्भूताः, तद् यथा—

સાસે ૧ કાસે ૨ જરે ૩ દાહે ૪ કુચ્છિમુલે ૫ મગંદરે ૬ ।

અરિસા ૭ અજીરણ ૮ દિઢિમુદ્દ ૯-૧૦ મૂલે અરોઝણ ૧૧ ॥ ૧૧

અચ્છિવેયણા ૧૨ કઞ્ઞવેયણા ૧૩ કંદૂ ૧૪ ડડરે ૧૫ કોદે ૧૬ ॥

(૧) શ્વાસઃ=ઊર્ધ્વશ્વાસઃ, (૨) કાસ=શ્લેષ્મવિકારઃ, (૩) જ્વરસ્તાપઃ, (૪)

‘તણં તસ્સ નંદસ્સ’ इत्यादि ॥

ટીકાર્થ—(તણં) हमके बाद (तस्स नंदस्स मणिघारसेद्धिस्स  
अनया कयाई सरीरंगंसि सोलसोगायंका पाडम्भूया तंजहा-उस  
मणिकार श्रेष्ठी के शरीर में किसी एक समय ये प्रवलतर  
शात गौरव जनित कर्म के उदय से १६ रोग और आतङ्क  
प्रकट हुए-स्वल्प कालतक जो बिमारी शरीर में रहती है-जैसे ज्वर  
आदि-वे रोग, और जो बीमारी शरीर में चिरस्थायी होकर रहती  
है जैसे कुष्ठादि-वे आतंक कहलाते हैं । वे सोलह ये हैं-१ श्वास  
-उर्ध्वश्वास, २ कास-खांसी, ३ ज्वर-ताप, ४ दाह-दाहज्वर, ५ कुक्षि-

‘તણં તસ્સ નંદસ્સ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—(તણં) (ત્યારપછી) (તસ્સ નંદસ્સ મણિઘાર સેદ્ધિસ્સ અનયા કયાઈ સરી-  
રાંગસિ સોલસ રોગાયંકા પાઢમ્ભૂયા-તં જહા તે મણિકાર શ્રેષ્ઠિના શરીરમાં કોઈ એક :  
વખતે પ્રબળતર શાંત ગૌ-વ જનિત કર્મના ઉદયથી ૧૬ રોગો અને આંતકો પ્રગટયા.  
શોડા વખત સુધી શરીરમાં જે માંદગી રહે છે જેમ કે તાવ વગેરે તે રોગ અને જે  
માંદગી શરીરમાં કાયમ માટે રહે છે જેમકે કોહ વગેરે તે આંતક કહેવાય છે. તે  
સોળ ના નામ આ પ્રમાણે છે—(૧)શ્વાસ-ઉર્ધ્વ શ્વાસ, (૨)કાસ-ઉધરસ (૩)જ્વર-

दाहः=दाहज्वरः, (५) कुक्षिशूलः, (६) भगंदरः, (७) अर्शः=गुदाङ्कुररोगः, (८) अजीर्णः=आहारस्यापरिणतिः, (९) दृष्टिशूलः=नेत्रशूलम् (१०) मूधशूलं=मस्तकशूलम्, (११) " अरोच्य " अरोचकः=भोजनादावरुचिः, (१२) अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना, (१४) कण्ठः=सर्जः, (१५) दफोदरं=जलोदरं (१६) कुष्ठः।

ततः खलु स नन्दो मणिकारः पोडशभीरोगातङ्कुरमिभूतः सन् कौटुम्बिक-  
पुंरूपान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-हे देवानुमियाः ! गच्छत खलु श्रूयं  
राजशुहे शङ्काटक यावद्-महापथपथेषु महता महता शब्देनोद्धोषयन्तः २ एवं-  
हे देवानुमिया ! एवं खलु नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनः शरीरके पोडशरोगा-  
तङ्काः प्रादुर्भूताः, तद् यथा स्वासो यावत् कुण्डः । तत्-तस्माद् यः खलु इच्छति  
हे देवानुमियाः ! वैद्यो वा, वैद्यपुत्रो वा, ज्ञायको वा, ज्ञायकपुत्रो वा कुशलो वा,  
कुशपुत्रो वा, नन्दस्य मणिकारस्य तेषां च खलु पोडशानां रोगातङ्कानामेकमपि  
शूल, ६ भगंदर, ७ अर्श-ववासीर ८ अजीर्ण, ९ दृष्टिशूल, १० मस्तक  
शूल ११ अरोचक-भोजनादि में रुचि का अभाव, १२ अक्षिवेदना १३  
कर्णवेदना १४ खाज १५ जलोदर १६ कुष्ठ ( तपणं मणियारसेट्टी नंदे  
सोलसहिं रोगायकैहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सहावेइ, सहा-  
वित्ता एव वयासी गच्छह णं तुवमे देवानुमिया ! रायगिहे सिघाडग  
जाव पहेसु महया २ सहेणं उगघोसेमाणा २ एवं वयह-एवं खलु  
देवानुमिया ! नंदस्स मणियारसेट्टिस्स सरीरगंसि सोलसरोगायंका  
पाठवमूया-तं जहा-सासे जाव कोडे " तं जो णं इच्छइ देवानुमिया !  
वेडजो वा वेडजपुत्तो वा जाणओ वा २ कुसलो वा २ नंदस्स मणिस्स-  
रस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगम वि रोगायंकं उवसामेत्तए

ताप, (४) दाह-दाहज्वर, (५) कुक्षिशूल, (६) भगंदर, (७) अर्श-हृदय, (८)  
अजीर्ण-अपरिणति (९) दृष्टिशूल (१०) मस्तकशूल (११) अरोचक-लोभन-वगेरे  
तिरक्ष अक्षुगमे थलु. (१२) अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना, (१४) आज-अजोषु,  
(१५) जलोदर (१६) कुष्ठ ( तपणं मणियारसेट्टी से नंदे सोलसहिं रोगायकैहिं  
अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे महावेइ, सहावित्ता, एवं वयासी, गच्छह णं  
तुवमे देवानुमिया ! रायगिहे. सिघाडग जाव पहेसु महया २ सहेणं उगघोसेमाणा  
२ एवं वयह एवं खलु देवानुमिया ! नंदस्स मणियारसेट्टिस्स सरीरगंसि सोलस  
रोगायंका पाठवमूया-तं जहा-सासे जाव कोडे तं जो णं इच्छइ देवानुमिया !  
वेडजो वा वेडजपुत्तो वा जाणओ वा २ कुसलो वा २ नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं  
सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमविरोगायंकं उवसामेत्तए तस्स णं देवानुमियाः ।



रोगातङ्कमुपशमयितुम् इच्छतीतिपूर्वेण सम्बन्धः, तस्य खलु हे देवानुप्रियाः ! नन्दो-  
मणिकारश्रेष्ठी विपुलां=बहुलाम्, “ अत्यसंपदं ” अर्थसंपदं खलु ददाति=  
दास्यति, इतिकृत्वा=एवमुक्त्वा द्वितीयवारमपि तृतीयवारमपि घोषणां घोषयत ।  
घोषयित्वा एताममाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत, तथैव प्रत्यर्पयन्ति=यथा नन्दमणिकार-  
श्रेष्ठिना कौटुम्बिकपुरुषा आदिष्टास्तथैव ते कृत्वा निवेदयन्ति स्मेत्यर्थः ।

तस्स णं देवानुप्पिया ! मणियारे विउलं अत्थसंपदं दलयइ त्ति कइहु  
दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह ) इन १६ प्रकार के रोगांतकों से  
व्यथित हुए उस मणिकार श्रेष्ठी नंद ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया  
बुलाकर उसने उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों ! तुम जाओ-और  
राजगृह नगर के श्रृंगाटक आदि बड़े २ मार्गों में जोड़ जोड़ से इस  
प्रकार की घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रियों ! मणिकार  
श्रेष्ठी नंद के शरीर में सोलह रोगांतक उत्पन्न हुए हैं-वे श्वास से लगा  
कर कुष्ठ तक हैं-इस लिये हे देवानुप्रियों ! सुनो-चाहे वैद्य हो या वैद्य  
पुत्र हो ज्ञायक हो या ज्ञायक पुत्र हों कुशल हो चाहे कुशल पुत्र हो  
कोई भी क्यों न हो-जो इन १६ प्रकार के रोगांतकों में से एक भी  
रोगांतक उपशमित कर देगा-हे देवानुप्रियों उसके लिये मणिकार  
श्रेष्ठी नंद, विपुल मात्रा में अर्थ संपदा प्रदान करेगा । इस प्रकार की  
घोषणा को तुम लोग २-३ बार घोषित करना । ( घोसित्ता एयमा-  
णत्तिथं पच्चप्पिणह, ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ) घोषित कर फिर  
हमें इस की खबर देना । इस प्रकार नंद की आज्ञा प्राप्त कर उन

मणियारे विउलं अत्थसंपदं दलयइ त्ति कइहु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह )  
सोण जातना रोग आने आतंकाथी पीडाओला भण्डिकार श्रेष्ठी नंदे कौटुम्बिक  
पुरुषोंने बोलाओया आने बोलावीने तेबो तेमने कहुं के हे देवानुप्रियो ! तमे  
जाओ आने राजगृह नगरना श्रृंगाटक वगेरे राजमार्गों उपर आ प्रभाबु  
भोटेथी घोषणा करीने कहे के हे देवानुप्रियो ! भण्डिकार श्रेष्ठी नंदना शरीरमां  
सोण रोगातंका उत्पन्न थाय छे. तेओ श्वासथी भांडीने कुछ सुधी सोण रोग  
आने आतंकापथ्यन्तछे. भाटे हे देवानुप्रियो ! सांलगो, वैद्य होय के वैद्यपुत्र होय,  
ज्ञायक होय के ज्ञायकपुत्र होय, कुशल होय के कुशलपुत्र होय, गमे ते होय,  
ओ आ भण्डिकार श्रेष्ठिना सोण रोग आने आतंकाभांथी ओक रोग अथवा तो  
ओक आतंक पणु भटाडी शकथे. हे देवानुप्रियो ! भण्डिकार श्रेष्ठि नंद तेने पुष्कल  
प्रभाबुमां धन संपत्ति आपथे. आ प्रभाबुनी घोषणा तमे बारंवार ओ त्रयु  
वअत घोषित करे. ( घोसित्ता एयमाणत्तिथं पच्चप्पिणह, ते हि तहेव पच्चप्पिणंति )  
घोषणा करीने तमे अभने जणर आपो. आ रीते नंदनी आज्ञा भेजवीने ते

ततस्तदनन्तरं खलु राजगृहे नगरे इमाभेत्तद्रूपां घोषणां श्रुत्वा निश्चम्य बहवो  
 यथा यावत् कुशलपुत्रा 'सत्यकोसहस्यगया य' शस्त्रकोशहस्तगताश्च हस्ते क्षुरादि-  
 शस्त्रभाजनधारकाः, 'कोसगपायहस्यगया य' कोशकपात्रहस्तगताः चर्ममयोप-  
 करणधारिणः, 'सिलियाहस्यगया य' शिलिकाहस्तगताः=किराततिक्ताऔषध-  
 धारिणः 'गुलियाहस्यगया य' गुलिकाहस्तगताश्च हस्ते द्रव्यसंयोगनिर्मितवटिका-  
 धारिणः, औषधमैपल्यहस्तगताश्च स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो निष्कामन्ति=निर्गच्छन्ति,  
 निष्कम्य राजगृहं मध्यमध्येन यत्रैव नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठितो गृह तत्रैवोपागच्छन्ति,

कौटुम्बिक लोगों ने उसी के अनुसार वैसी ही घोषणा कर दी-और  
 बाद में आकर नंद को इसकी खबर दे दी । ( तपणं रायगिहे इमेयारुवं  
 घोसणं सोच्चा गिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता  
 य सत्यको सहस्य गया य कोसगपायहस्य गया य सिलियाहस्य गया य  
 गुलिया हस्य गया य ओसह मेसज्ज हस्य गया य सएहिं रगिहेहिं तो निक्ख-  
 मंति, निक्खमिन्ता रायगिहं नयरं मज्झं मज्झे ण जेणेव नंदस्स मणि-  
 यारसेट्टिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति ) इस प्रकार की घोषणा सुन कर  
 और उसको विचार कर राजगृह नगर में अनेक वैद्य, वैद्य पुत्र यावत्  
 कुशल कुशल पुत्र, अपने २ हाथों में क्षुरादिशस्त्र एवं भाजनों को,  
 चर्ममय उपकरणों को किरात तिक्त औषध को गोलियों/टुको, औषध  
 मैषव्य को ले लेकर अपने २ घरों से निकले । और निकल कर राजगृह  
 नगर के बीच से चल कर जहाँ मणिकार श्रेष्ठी नंद का घर था वहाँ

कौटुम्बिक ढोढोको शेडनी आजा प्रभावे ज घोषणा ( दंडरे ) करी अने तथा  
 पछी नंदने तेनी अजर आपी. ( तपणं रायगिहे इमेयारुवं घोसणं सोचा  
 गिसम्म बहवे वेज्जाय, वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्यकोसहस्य-  
 गया य कोसगपायहस्यगया य सिलियाहस्यगया य गुलियाहस्यगया य ओसह-  
 मेसज्जहस्यगया य सएहिं २ गिहेहिं तो निक्खमंति, निक्खमिन्ता रायगिहं  
 नयरं मज्झं मज्जेण जेणेव नंदस्स मणियार सेट्टिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति )  
 आ रीते घोषणा सांक्षणीने अने तेना विशेषे विचार करीने राजगृह नगरभांथी  
 धला वैधी, वैद्यपुत्रो, यावत् कुशलौ अने कुशलपुत्रो पोतपोताना डाशेभां  
 क्षुरा वगेरे शस्त्रो अने साजनो, चर्ममय उपकरणो ओटवे डे आभडाना  
 साधने, किरातक ( करियातुं ) औषधाने, गोणीजोने, औषध वैषम्यने लक्ष-  
 पोतपोताना धराथी अहोर नीकल्या अने नीकणीने राजगृह नगरनी वर-  
 थधने जथां भण्डिकार अछि नंदं धर छंतुं त्यां पडोव्या. ( उवागच्छिता नंद

उपागत्य नन्दस्य शरीरं पश्यन्ति, दृष्ट्वा ते तेषां रोगातङ्कानां 'गियाणं' निदानय-  
उत्पत्तिकारणं पृच्छन्ति, नन्दस्य मणिकारश्रेष्ठिनस्ते वैद्या बहुभिः=बहुविधैः  
'उव्वलणेहि य' उव्वलनैश्च=देहोपलेपनविशेषैश्च, 'उव्वट्टणेहि य' उव्वट्टनैश्च=  
मलापकर्षकद्रव्यसंयोगविशेषेण शरीरोपमर्दनैश्च, 'सिणेहपाणेहि य' स्नेहपानैश्च=  
औषधपरिपक्वतादिपानैश्च, व्रमनैश्च, विरेचनैश्च सेचनैश्च=उष्णजलाभिषेकैः 'अव-

पहूँचे । ( उवागच्छित्ता नन्दस्स शरीरं पासंति, तेसिं रोयायंकाणं गिया-  
णं पुच्छंति णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं 'उव्वलणेहिं य उव्वट्टणेहिं  
य 'सिणेहपाणेहिं य वमणेहिं य, विरेयणेहिं य सेयणेहिं य अवदंसणेहिं  
य अवणहाणेहिं य अणुवासणेहिं य वत्थिकम्मेहिं य निरुहेहिं य सिरा-  
वेहेहिं य तच्छणाहिं य, पच्छणाहिं य, सिरावेहेहिं य तप्पणाहिं य,  
पुढपागेहिं य, छल्लीहिं य वल्लीहिं य मूलेहिं य, कंदेहिं य पत्तेहिं य  
पुप्फेहिं य, फळेहिं य, वीएहिं य, सिलियाहिं य, गुलियाहिं य, ओस-  
हेहिं य, 'मेसज्जेहिं य, इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि  
रोगायंकं उवसामित्तए नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए ) वहां पहूँच  
कर-उन्होंने नन्द सेठ के शरीर को देखा देख कर उन रोगांतकों के  
निदान को-मूल कारण को-पूछा । बाद में उस मणिकार श्रेष्ठी नन्द का  
वन वैद्यो ने अनेकविध उव्वलनों से देहोपलेपन विशेष से, स्नेहपानों  
से-औषधियों में पकाये गये घृतादिके पिलाने से, वमन कराने से,

शरीरं पासंति तेसिं रोयायंकाणं गियाणं पुच्छंति, णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं  
'उव्वलणेहिं य, वमणेहिं य, विरेयणेहिं य, सेयणेहिं य, अवदंसणेहिं य, अवणहाणेहिं य,  
अणुवासणेहिं य वत्थिकम्मेहिं य निरुहेहिं य, सिरावेहेहिं य, तच्छणाहिं य, पच्छणाहिं य,  
सिरावेहेहिं य, तप्पणाहिं य, पुढपागेहिं य, छल्लीहिं य, वल्लीहिं य, मूलेहिं य, कंदेहिं  
य, पत्तेहिं य, पुप्फेहिं य, फळेहिं य, वीएहिं य, सिलियाहिं य, गुलियाहिं य, ओसहेहिं  
य, 'मेसज्जेहिं य, इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसा  
मित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए ) त्यां जडने तेओओ नंद श्रेष्ठिना  
शरीरने तपास्यु, तपासीने ते रोग अने आतङ्काना निदान ( रोगतुं भूण  
कारण ) विशेष पूछपरछ करी. त्यारभाद वैद्योओ मळिकार श्रेष्ठिनी धणी नतना  
उव्वलणेनाथी-शरीरना लेप विशेषाथी, उव्वट्टनाथी-मलापकर्षक द्रव्य संयोग  
विशेषने-शरीर उपर ओणवाथी, स्नेहपानाथी-औषधीओमां परिपक्व अथेला  
धी मजेरे ते पीवडाववाथी, वमन ( वलटी ) कराववाथी विरेचन कराववाथी,

दृष्टोहि य' अवदहनैः दम्भनैः—तप्तलोहकोशादिना शरीरावयवविशेषे दाहकर-  
णैश्च 'अवण्ठाणेहि य' अवस्नानैः—शरीरे कण्डूयनादिवारणार्थं तदनुकूलद्रव्यमिश्रि-  
तजलस्नानैश्च, 'अणुवासणेहि य' अनुवासनैः—विरेचनविशेषैः—यन्त्रद्वारेणापान-  
मार्गेण तैलादीनामुदरे प्रवेशनरूपैश्च, 'वस्तिक्कम्मेहि य' वस्तिक्कर्मभिः—मलनिर्ग-  
मार्थं गुदे वर्त्यादिप्रक्षेपैः, 'निरुहेहि य' 'निरुहैः'—द्रव्यपक्वतैलप्रयोगेण विरेचन-  
विशेषैश्च 'सिरावेहिहि य' शिरावेधैः—विकृतखुरिनिस्सारणार्थं नाडीवेधैश्च,  
'तच्छणाहि य' तक्षणैः—क्षुरादिना त्वक् छेदनैश्च, 'पच्छणाहि य' प्रतक्षणैः—  
क्षुरादिनाहस्तलाघवेन त्वचः प्रतनूकरणैश्च, 'सिरावेदेहि य' 'सिरावेदैः'—नाडी-  
वेष्टनैश्च, तप्पणाहि य' तर्पणैश्च—स्निग्धद्रव्येण शरीरसंवाहनैश्च, 'पुटपागेहि य'  
'पुटपाकैः'—पाकविशेषनिष्पन्नौषधविशेषैश्च, 'छल्लीहि य' छल्लीभिश्च—निवादित्वभिः,

विरेचन कराने से, उष्णजल से स्नान कराने से तत्कृआ आदि को  
अग्नि में तपा कर उसका शरीर के किसी अवयव विशेष में डाम देने  
से अवस्नानों से—स्नाज—आदि मिटाने के लिये शरीर पर तदनुकूल  
द्रव्य मिश्रित जल से बार २ स्नान कराने से अनुवासनों से—यन्त्र द्वारा  
अपान मार्ग से उदर में तैलादिकों के पहुँचाने से, वस्तिक्कर्मों से—मल  
को निकालने के लिये गुदा में वर्त्यादि के प्रवेश कराने से, निरुहों से  
द्रव्य पक्वतैल के प्रयोग से विरेचन करवाने से, शिरावेध से—विकृत  
खून को निकालने के लिये शिरा—नस के काट देने से—नाडीवेध से—  
तक्षण से क्षुरा आदि द्वारा चमड़ी के काट देने से, प्रतक्षण से क्षुरा  
आदि द्वारा हस्तलाघव पूर्वक चमड़ी के छील देने से, शिरावेष्ट—नाडी  
वेष्टन से, स्निग्ध द्वारा शरीर की मालिश कराने से, पुटपाक से—  
पाक विशेष से तैयार की गई औषधियों से, छालों से—निम्ब आदि की

गरभ पाष्णीको स्नान कराववाथी, लोण्ड वगेरेने अग्निभां तपावीने शरीरना  
होर्ध विशेष अवयवने डामवाथी अवस्नानोथी—अरज्जु वगेरे भटाडवा माटे  
शरीर उपर तदनुकूल द्रव्यमिश्रित पाष्णीभां बारवार स्नान कराववाथी, अनु-  
वासनोथी—यन्त्र वटे शुद्धा—भाग्थी पेटभां तेल वगेरे पडोआडवाथी, वस्ति-  
क्कोथी—भणने भण्डार काडवा माटे शुद्धाभां वर्त्यादिने प्रविष्ट कराववाथी निरु-  
होथी—द्रव्यभां परिपक्व थयेला तेलना प्रयोगथी, विरेचन कराववाथी, शिरावेधथी  
भराण लोहीने भण्डार काडवा माटे शिरा—नसने कापवाथी—नाडीवेधथी, प्रतक्षणथी  
छरा वगेरेथी अहु ७ कुराणताथी आभडीने छेडवाथी, शिरावेष्टथी—नाडी  
वेष्टनथी, स्निग्ध पदार्थ वटे शरीरना उपर मालिश करवाथी, पुटपाकथी—पाक  
विशेषथी तैयार करवाभां आवेदी औषधीआथी, छालो (छोडां) थी—निम्ब

‘વલ્લીહિ ય’ વલ્લીમીશ્વ=ગઙ્ગાદિ-લતામિશ્વ, તથા-મૂલૈશ્વ, કન્દૈશ્વ પર્જૈશ્વ, પુષ્પૈશ્વ ફલૈશ્વ, વીજૈશ્વ, શિલિકામિશ્વ=કિરાતતિકૃતૈઃચિરાયતા ઇતિપ્રસિદ્ધૈરોષધિ-વિશેષઃ ગુલિકામિશ્વ ઔષધૈશ્વ મૈષ્ણૈશ્વ ઇચ્છન્તિ તેષાં પોઢશાનાં રોગાત્ક્રા-ન્તામેકમપિ રોગાત્ક્રમ્યુપશમયિતું, કિન્તુ નો ચૈવ શક્તુવન્ત્યુપશમયિતુમ્ । તતઃ સ્વલ્લુ તે વદ્ધવો વૈદ્યાશ્ચ ‘જાહે’ યદા નો શક્તુવન્તિ તેષાં પોઢશાનાં રોગાત-ક્રાન્તામેકમપિ રોગાત્ક્રમ્યુપશમયિતુમ્, તદા શ્રાન્તાઃ=શ્રમાતુરાઃ, તાન્તાઃ=સ્ત્રિન્નાઃ= પરિતાન્તાઃ=સર્વથાસ્ત્રિન્નાઃ રોગાત્ક્રમપનેતુમસમર્થો હત્યર્થઃ યાવત્-પ્રતિગતાઃ= સ્વસ્વ સ્થાનં ગતવન્તઃ ।

તતઃ સ્વલ્લુ નન્દસ્તૈઃ પોઢશમીરોગતક્રૈશ્વામિશ્રૂતઃ સન્ નન્દા પુષ્કરિણ્યાં ‘મુચ્છિષ્ય’ મુચ્છિષ્ય=મૂર્છાં પ્રાપ્તઃ આસક્તઃ પ્રથિતઃ=વદ્ધાત્મપરિણામઃ, ‘અજ્ઞોવ-વન્ને’ અજ્ઞુપપન્નઃ=સર્વથા નિરન્તરં તદ્ભાવતયા તન્મંયાત્મપરિણામવાન તિર્યગ્ અન્તર છાલસે, શુદ્ધુ જ્યાદિ-ગિલોચ આદિ લતાઓ સે, તથા મૂલ, કન્દ, પ્રજ, પુષ્પ, ફલ, વીજ, શિલિકા-ચિરાયતા, ગોલિયોં, ઔષધ, મૈષ્ણય સે ડન સોલહ રોગાતંકોં મેં સેં એક મી રોગ કો શાંત કરને કી ચિકિત્સા કી । પરન્તુ વે ઉસકે એક મી રોગાતંકકો ઉપશમિત નહીં કર સકે । ( તર્ણ તે વદ્ધવે વેજ્ઞા ય ૬ જાહે નો સંચાપેંતિ તે સિં સોલ-સળ્હ રોગાયંકાણં એગમવિ રોગાયંકં ઉવસામિત્તર્ણ, તાહે સંતા તંતા જાવ પઢિ ગયા ) જય વે સમસ્ત વૈદ્યાદિજન ૬, ડન ૧૬ સોલહ રોગાતંકોં મેં સેં એક મી રોગાતંક કો શમિત કર ને મેં ( શક્ય નહીં ) સમર્થ નહીં હોં સકે તવ શ્રાન્ત એવં તાન્ત હોકર અપને ૨ ઘર ચલે આવે । ( તર્ણ નંદે તેહિં સોલસેહિં રોગાયંકેહિં અમિશ્રૂપ સમાણે નંદા પોક્સરણિય મુચ્છિષ્ય ગિદ્ધે ગઢિય અજ્ઞોવવળ્ણે તિરિક્ત્વ જોણિયેહિં નિચદ્વાડપ વદ્ધ-

વગેરેની છાલોથી, શુદ્ધુ જ્યાદિ-ગળો વગેરે લતાઓથી તેમજ મૂળ, કંદો, પ્રજ, પુષ્પ, ફળ, વી, શિલિકા-ચિરાયતા, ગોળીઓ, ઔષધ, લૈપલ્યથી તે સોળ રોગ અને આતંકોમાંથી એક રોગ અને એક આતંકને મટાડવા માટે ચિકિત્સા ( ઇલાજ ) કરી પણ તે લોકો તેના એકે થ રોગ અને એક થ આતંકને પણ મટાડવામાં શક્તિમાન થઈ શક્યા નહિ, ( તર્ણ તે વદ્ધવે વેજ્ઞા ય ૬ જાહે નો સંચાપેંતિ તેસિં સોલસળ્હ રોગાયંકાણં એગમવિ રોગાયંકં ઉવસામિત્તર્ણ, તાહે સંતા જાવ પઢિગયા ) જ્યારે બધા વૈદ્યો ૬, તે સોળ રોગાતંકોમાંથી એકેય રોગ અને આતંકને પણ મટાડવામાં સમર્થ થઈ શક્યા નહિ ત્યારે શ્રાંત અને તાંત થઈને ચેતપોતાને ઘેર પાછાજતા રહ્યા. ( તર્ણ નંદે તેહિં સોલસેહિં રોગાયંકેહિં અમિશ્રૂપ સમાણે નંદા પોક્સરણિય મુચ્છિષ્ય ગિદ્ધે ગઢિય અજ્ઞોવવળ્ણે તિરિક્ત્વજોણિ

योनिषु निवद्वायुष्कः वद्धप्रदेशिकः प्रदेशवन्धापेक्षया, 'अदृदृदृदृदृदृ' आर्त-  
दुःखार्तिवशात्तः=आर्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्तः=देहेन, वशात्तः=पुष्करिणीसमा-  
सक्तेन्द्रियवशेन तत्सुखवियोगसम्भावना पीडितः=एतेषां कर्मधारये आर्तदुःखार्-  
तवशात्तः=आर्तध्यानोपगतइत्यर्थः कालमासे कालं कृत्वा नन्दायां पुष्करिणीं  
'दददुरीए कुच्छिसि' ददुर्याः कुक्षौ=मण्डूकीगर्भे 'दददुरताए' ददुरतया मण्डूकतया,  
उपपन्नः संजातः ॥ सू० ६ ॥

मूलम्—तएणं णंदे ददुरे गब्भाओ विणिम्मक्के समाणे  
उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नन्दाए  
पोक्खरणीए अभिरममाणे विहरइ, तएणं नन्दाए पोक्खरणीए  
बहूजणे पहायमाणो य पियइय पाणिंयं च संवहमाणो अन्न-

पएसिए अदृदृ हृद वसट्टे काल मासे कालं किच्चा नन्दाए पोक्खरणीए  
दददुरीए कुच्छिसि दददुरताए उववन्ने) उन सोलहू, रोगातंकोसे अत्यन्त  
व्यथित हुआ वह नन्द नन्दा पुष्करिणी में मूर्च्छितमति एवं अत्यन्त  
आसक्त मन होता हुआ तन्मय आत्मपरिणामवाला बन गया—सो इस  
कारण उसने प्रदेश बंध की अपेक्षा से तिर्यञ्च आयु का बंध कर लिया ।  
मन से दुःखित देह से, व्यथित एवं पुष्करिणी में समा सक्त अन्तः  
करण से उसके सुखके वियोग की संभावना करके अत्यन्त पीडित  
बने हुए अर्थात् आर्तध्यान के वशवर्ती हुए उसने मृत्यु के समय देह  
का परित्याग किया सो मर कर वह उस नन्दा पुष्करिणी में एक मेंढकी  
के गर्भ में मेंढकी की पर्याय से उत्पन्न हो गया । सूत्र ॥ ६ ॥

एहिं, निवद्वाउए वद्धपएसिए अदृदृ हृद वसट्टे कालमासे कालं किच्चा नन्दाए  
पोक्खरणीए दददुरीए कुच्छिसि दददुरताए उववन्ने) सोण रोग अने आत-  
ठेथी भूम ७ कंठेणेवे। ते नंद अेष्ठि नंदा वापभां : भूर्छित मति अेट्ठे के  
अत्यंत आसक्त मनथी तन्मय आत्मपरिणाम युक्त थध गये। अेथी तेथे  
प्रदेशबंधनी अपेक्षाअे तिर्यञ्च आयुनो बंध करी वीधो। मनथी दुःखी,  
शरीरथी व्यथित अने पुष्करिणी ( वाप ) भां आसक्त अन्तःकरणथी अेट्ठे  
के तेना सुभना वियोगनी संभावना करीने भूम ७ पीडित थधने—आतध्यानं  
कस्तां तेथे मृत्युना समये देह छोड्यो। देह छोडीने नंद अेष्ठि ते नंदा पुष्क-  
रिणीभां ७ अेठे देहकीना गर्भां देहकीना पर्यायथी उत्पन्न थध गये। सूत्र ६

मन्नेस्स एवमाइक्खइ४ धन्नेणं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे  
जस्स णंदे मणियारे जस्स णं इमेयारूवे णंदा पुक्खरणी चाउ-  
क्कोणा जाव पडिख्वा । जस्स णं पुरत्थिमिच्छे वणसंडे चित्तसभा  
अणेगखंभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले, तएणं  
तस्स दहुरस्स तं अभिक्खणं अभिक्खणं बह्जणस्स अतिए  
एयमद्वं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए५—से कहिं मन्ने  
मैए इमेयारूवे सहे णिसंतपुंवे त्तिकहुं सुमेणं परिणामेणं जाव  
जाइंसरणे समुप्पन्ने, पुवंजाइं सम्मं समागच्छइ, तएणं तस्स  
दहुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एवं खलु अहं इहेव रायं-  
गिहे नयरे णंदे णांमं मणियारे अद्वे० जाव अपरिभूए । तेणं  
क्रालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, तएणं  
समणस्सं भगवओ महावीरस्स अतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसि-  
क्खावइयं जाव पडिवन्ने, तएणं अहं अन्नया कयाइं असाहु-  
दंसणेणं यं जावे निच्छत्तं विपडिवन्ने, तएणं अहं  
अन्नया कयाइं गिम्हकालसमयंसि जाव उपसंपज्जित्ताणं  
विहरामि, एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदा पुक्खरिणी वण-  
संडा सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए पुक्खरिणीए दहुरत्ताए  
उववन्ने, तं अहो णं अहं अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निगं-  
याओ पावयणाओ नट्टे भट्टे परिब्भट्टे तं सेयं खलु ममं सयमेवं  
पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं उवसंपज्जित्ताणं  
विहरित्तए, एवं संपेहेइ संपेहित्ता पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं  
सत्तसिक्खावयाइं आरुहेइ आरुहित्ता इमेयारूवं अभिगंइ

अभिगिण्हइ—कप्पइ मे जावजीवं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं  
तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं  
पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए परिपेरंतसु फासुएणं  
ण्हाणोदएणं उम्मदणोछोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विह-  
रित्तए, इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठं-  
छट्ठेणं जाव विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तएणं नंदे’ इत्यादि, ततः खलु नन्दो दूर्दुरी गर्भाद्=गर्भवासाद्  
विनिर्मुक्तः=निर्गतः सन् उन्मुक्तबालभावः=व्यतीत बाल्यवयस्कः, ‘विज्ञाय-  
परिणयमित्ते’ विज्ञातपरिणतमात्रः दूर्दुरजातीयकूर्दनादिविज्ञानसमम्पन्नः, नन्दायां-  
पुष्करिण्याम् अभिरममाणः २=क्रीडन् २ सुखमुखेन विहरति=कालं यापयतिस्म ।

ततस्तदनन्तरं खलु नन्दायां पुष्करिण्यां राजगृहविनिर्गतो बहुजनः स्नानं  
कुर्वन्, जलपिवन्, पानीयं च संवहमानः, अन्योन्यं=परस्परम्, आख्याति-

‘तएणं णंदे ददुदुरे गम्भाओ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (णंदे ददुदुरे) वह नंद सेठका जीब दूर्दुर  
(गम्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उन्मुक्कबालभावे विज्ञायपरिणयमित्ते  
जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ ) गर्भा-  
वास से बाहिर निकल कर जब बालभाव से रहित हो गया और उसे  
दूर्दुर जानि को कूर्दना आदि आ गया—तब वह यौवन अवस्था संपन्न  
होकर नंदा पुष्करिणी में बार २ क्रीडा करता हुआ सुख पूर्वक अपने  
समय को व्यतीत करने लगा । (तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहुजणे

‘तएणं णंदे ददुदुरे गम्भाओ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्थारपथी (णंदे ददुदुरे) नंद सेठका जीब ददुदुरे (गम्भाओ  
विणिम्मुक्के समाणे उन्मुक्कबालभावे विज्ञायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए  
पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरइ ) गर्भाभांथी बहुर आवीने ब्यारे  
भोटो थधं गये ओटथे के अथपथ वटावीने गुवान थधं गये अने पीला  
देडकांणी जेभ इहवानुं, वगेरे आवडी गथुं त्थारे ते गुवान थधने नंदा पुष्क-  
रिणीभां जे वारवार डोडा करतां सुजेथी चोतानो वधत्त पसार करवा लाग्यो।  
(तएणं णंदाए पोक्खरणीए बहुजणे ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवह-



ભાષતે પ્રજ્ઞાપયતિ પ્રરૂપયતિ-ધન્યઃ સ્વલ્લે હે દેવાનુપ્રિય ! નન્દો મણિકારશ્રેણી  
યસ્ય સ્વલ્લે ઇયમેતદ્રૂપા નન્દાપુષ્કરિણી ચતુઃકોણા સમતીરા યાવત્ પરિરૂપા વર્તતે,  
યસ્યાઃ સ્વલ્લે નન્દાયાઃ પુષ્કરિણ્યાઃ પૌરસ્ત્યે વનપથે ચિત્રસમા અનેકસ્તમ્મશતસંનિ-  
વિષ્ટા તથૈવ ચતુર્થે વનપથેષુ ચતસ્રઃ સમા અનેકસ્તમ્મશતસંનિવિષ્ટાઃ સન્તિ,  
યાવત્ તસ્ય નન્દમણિકારશ્રેષ્ઠિનઃ સુલલ્લે માનુષ્યકં જન્મજીવિતફલમ્ ।

ળહાયમાળો ય પિયહ ય પાણિયં ચ સંવહમાળો અન્નમન્નસ્સ એવમાહ-  
ક્વહ ૪ ) ઉસ નંદા પુષ્કરિણી મેં જહ રાજગૃહ નગર કે લોગ આકર  
સ્નાન કરતે, પાની પીતે, ઉસમેં સે પાની ભરતે તો ઉસ સમય વે  
પરસ્પર મેં હસ પ્રકાર સે બાત ચીતં કરતે, ભાષણ કરતે પ્રજ્ઞાપના  
એવં પ્રરૂપણા કરતે કિ ( ધન્નેણં દેવાણુપ્પિયા ! ણંદે મણિયારે  
જસ્સં ણં હમેયાલુવા ણંદા પુષ્કરણી ચાઉક્કોણા જાવ પહિલુવા )  
હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર શ્રેણી નંદ કો ધન્યવાદ હૈ કિ જિસ કી યહ  
ચતુષ્કોણ વાલી તથા સમતીર વાલી નંદા પુષ્કરિણી બહુત હી સુરમ્ય  
બની હૈ । ( જસ્સં ણં પુરસ્થિમિલ્લે વણસંઢે ચિત્તસમા અણેગલ્લંમં  
તહેવ ચત્તારિ સહાઓ જાવ જમ્મજી વિયં ફલે-તણં તસ્સ દ્વંદુરસ્સં તં  
અભિકલ્લણં ૨ બહુજણસ્સ અંતિયે એયમટ્ટં સોઠ્ઠા ણિસમ્મ હમેયાલુવે  
અલ્લંમથિયે ૬ ) જિસ કે પૂર્વ દિશા સંબન્ધી વનવંડ મેં અનેક સૈકડો  
લ્લંમો સે ચિરાજિત ચિત્ર સમા બની હુઈ હૈ । હસી તરહ કી ચારોં  
વનવંડોં મેં ચારોં સમાઈ હૈ । યાવત્ ઉસ મણિકાર નંદ શ્રેણી કે મનુષ્ય

માળો અન્નમન્નસ્સ એવમાહક્વહ ૪ ) નંદા વાવમાં બધારે રાજગૃહ નગરના  
લોકો આવીને સ્નાન કરતા, પાણી પીતા, તેમાંથી પાણી ભરતા ત્યારે તેઓ  
પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરવા માંડતા, સંભાષણો કરવા માંડતા, પ્રજ્ઞાપના  
અને પ્રરૂપણા કરવા માંડતા કે ( ધન્નેણં દેવાણુપ્પિયા ! ણંદે મણિયારે જસ્સં  
હમેયાલુવા ણંદી પુષ્કરણી ચારકોણા જાવ પહિલુવા ) હે દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર  
શ્રેણી નંદને ધન્યવાદ છે. કારણ કે આ ચાર પાણીવાળી તેમજ સરખા કિનારા-  
વાળી નંદા વાવ બહુ જ રમ્ય બંધાવી છે. ( જસ્સં પુરસ્થિમિલ્લે વણસંઢે  
ચિત્તસમાણેગ લ્લંમં તહેવ ચિત્તારિ સહાઓ જાવ જમ્મજીવિયફલે-તણં  
તસ્સ દ્વંદુરસ્સ તં અભિકલ્લણં ૨ બહુજણસ્સ અંતિયે એયમટ્ટં સોઠ્ઠા ણિસમ્મ  
હમેયાલુવે અલ્લંમથિયે ૬ ) વાવના પૂર્વ દિશાના વનવંડમાં સેડો થાંભલાઓથી  
સંભળતી ચિત્રસભા બનાવી છે, આ પ્રમાણે ચારે ચાર વનવંડોમાં ચાર સભાઓ  
તૈયાર કરાવેલી છે, ખરેખર તે મણિકાર નંદ શેઠનો મનુષ્ય જન્મ અને જીવન

તતઃ તલુ તસ્ય દર્દુરસ્ય તદમીક્ષ્ણ=પૌનઃ પુન્યેન, વહુજનસ્યાન્તિકે, ષ્પતમર્થ  
 શ્રુત્વા નિશ્ચય, અયમેતદ્વૂપઃ=વક્ષ્યમાણસ્વરૂપઃ આધ્યાત્મિકઃ આત્મગતોવિચારઃ,  
 યાવન્મનોગતઃ સંકલ્પઃ સમુદ્પલ્લતઃ । કિં સ્વરૂપઃ ? इत्याह-‘ से कहिं मन्ने ’  
 इत्यादि । ननुहं मन्ये-कुत्रापि मया अयमेतद्वूपाः शब्दः ‘णिसंतपुव्वे’ निशान्तपूर्वः  
 अन्तपूर्वः । पूर्वकाले श्रुतआसीत्, इति कृत्वा शुभेन परिणामेन=विशुद्धाध्यवसायेन  
 यावत्-जातिस्मरणं समुत्पन्नम्, स दर्दुरः ‘पुव्वजाहं’=पूर्वजन्मवृत्तान्तं सम्यक्  
 समागच्छति = स्मरति । ततः खलु तस्य दर्दुरस्यायमेतद्वूपाः=वक्ष्यमाणस्वरूप.  
 ‘अव्झत्थिए’ आध्यात्मिकः यावन्मनोगतः संकल्पः = स्मरणरूपः ‘समुप्प-  
 जित्तया’ समुदपल्लत-सजातः, तद् यथा-एवं खलु अहं इहेव राजगृहे नगरे नन्दो

जन्म और जीवन दोनों ही सफल हैं । उस ने अपने मनुष्य जन्म और  
 जीवन का फल अच्छी तरह पा लिया है । इस प्रकार अनेक जनों के  
 मुख से चार २ अपनी प्रशंसा सूचक शब्दों को सुनकर और उन्हें  
 हृदय में अवष्टुत कर उस दर्दुर को यह इस प्रकार का आध्यात्मिक  
 विचार यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ- ( से कहिं मन्ने मए इमे-  
 यारूवे सहे णिसंतपुव्वे त्ति कइहु सुमेणं परिणामेणं जाव जाइसरणे  
 समुप्पन्ने, पुव्वजाहं सम्मं समागच्छह तएणं तस्स ददुुरस्स इमेयारूवे  
 अव्झत्थिए ५ ) मैं मानता हूँ कि मैंने इस प्रकार का यह शब्द पहिले  
 सुना है- इस प्रकार के विचार से उसे विशुद्ध अध्यवसाय के वश से  
 जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । इससे उसने अपने पूर्व जन्म के  
 वृत्तान्त को अच्छी तरह जान लिया । इस के बाद उस दर्दुर को इस  
 प्रकार-वक्ष्यमाण रूप संकल्प उत्पन्न हुआ । ( एवं खलु अहं इहेव

અને સક્ષણ થઈ ગયાં છે. તેણે પોતાના મનુષ્ય જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી  
 રીતે મેળવી લીધું છે. આ રીતે ઘણા માણસોના મુખેથી વારંવાર પોતાનાં  
 વખાણ સાંભળીને અને હૃદયમાં અવધત કરીને દેડકાને આ પ્રમાણેનો આકથા-  
 ‘ત્તિમ્કે વિચારે યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે- ( સે કહિં મન્ને મણ-ઈમેયા-  
 રૂવે સહે-ણિસંતપુવ્વે ત્તિકઈહુ સુમેણં પરિણામેણં જાવ જાહસરણે સમુપ્પન્ને,  
 પુવ્વજાહં-સમ્મં સમાગચ્છહ તણં તસ્સ દદુરસ્સ ઈમેયારૂવે અવ્ઝત્થિય ) મને  
 એમ થાય છે કે આ શબ્દો પહેલાં મેં સાંભળ્યા છે. આ બાતતા વિચારેથી  
 તેને વિશુદ્ધ અધ્યવસાયને લીધે જાતિસ્મરણ-જ્ઞાન ઉત્પન્ન થઈ ગયું. એથી તેણે  
 પોતાના પૂર્વ જન્મની બધી વિગત બાણી લીધી. ત્યારબાદ તે દેડકાને આ-રીતે  
 વક્ષ્યમાણ રૂપથી આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ્મરણરૂપ સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે  
 ( એવં-ખલુ-અહં-ઇહેવ રાયગિહે નગરે પદે ણમં મણિયારે અહિહે જાવ અપરિ-

नाम मणिकारः आह्वयो यावदपरिभूत आसम् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतः, ततः खलु श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं द्वादशविधं गृहधर्मं प्रतिपन्नः, ततः खल्वहमन्यदा कदाचिद् असाधुदर्शनेन च यावत्-मिथ्यात्वं विप्रतिपन्नः, ततः खल्वहमन्यदा कदाचिद् ग्रीष्मकालसमये यावत्-पौषत्रशालायां पौषघमुपगुपय खलु विहरामि, 'एवं यथैवचिन्ता, आपृच्छना, नन्दापुष्करिणी, वनषण्डा, सभाः तदेव सर्वम्' तथैवचिन्तादिकं दर्दुरेण पूर्वभूवे कृतं तथैव तत् सर्वं स्मृतं, तद् यथा-मम तत्राष्टमभक्ते

रायगिहे नगरे णंदे णामं मणियारे अट्टे जाव अपरिभूए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसठे, तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव पडिबन्ने ) मैं इसी राजगृह नगरमें नंद नाम का मणिकार श्रेष्ठी था । विशेष रूपसे धन धान्यादि संपत्ति शाली एवं जन मान्य था । उस काल और उस समय में श्रमण भगवान् महावीर वहां आये-सो मैंने उनसे पांच अणुव्रत एवं सात शिक्षाव्रत रूप आवश्यक धर्म अंगीकार करलिया था । ( तएणं अहं अन्नया कयाई असाहुदंसणेणय जाव मिच्छत्तं विपडिबन्ने ) किसी एक समय असाधु के दर्शन से तथा और भी कई निमित्तो से मैं मिथ्यात्व भाव रूप से परिणत हो गया-( तएणं अहं अन्नयाकयाई गिम्ह कालसमयंसि जाव उवसंपडिजत्ताणं विहरामि, एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदापुक्खरिणी वनसंढा, सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए पुक्खरिणीए ददुदुरत्ताए उववन्ने, तं अहोणं अहं अहन्ने, अपुन्ने, अक-

भूए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसठे, तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव पडिबन्ने ) हुं पढेलां आ राजगृह नगरमां न नंद नामे भण्डिकार श्रेष्ठि डेतो. हुं विशेष रूपथी धन-धान्य वगैरैथी समृद्ध तेमज्जनमान्य ( लोकमां प्रशंसते ) डेतो. ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीर त्यां पधार्था डेता. मैं तेओश्री पासेथी पांच अणुव्रतो अने सात शिक्षाव्रतो इप आवश्यक धर्म स्वीकारी लीधो डेतो. ( तएणं अहं अन्नया कयाईं असाहु दंसणेण य जाव मिच्छत्तं विपडिबन्ने ) कैह ओक वण्णते असाधुना दर्शनथी तेमज्ज जीव्णं पणु धत्तां कारणोथी हुं मिथ्यात्वभाव रूपमां परिणत थण्ण अयो. ( तएणं अहं अन्नया कयाईं गिम्हकालसमयंसि जाव उवसंपडिजत्ता णं विहरामि, एवं जहेव चिंता आपुच्छणं नंदा पुक्खरिणी वनसंढा, सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए पुक्खरिणीए ददुदुरत्ताए उववन्ने, तं अहोणं, अहं अहन्ने, अपुन्ने, अकयपुन्ने

પરિણમ્યમાને પિપાસયા ક્ષુધયા ચામિશૂતસ્પેત્યં ચિન્તા સંજાતા “ધન્યાઃ સ્વલુ તે લોકા યેષાં જલાશયા વિધન્તે, તસ્માત્ વલ્યે શ્રેણિકં રાજાનમાપૃચ્છય રાજગૃહસ્ય વહ્નિરુત્તરપૌરસ્ત્યે દિગ્માગે નન્દાનામ્નીં પુષ્કરિણીં સ્વનયિતું શ્રેયઃ ઇતિ ” । અથૈવં વિચિન્ત્ય શ્રેણિકં મત્યાપૃચ્છનાં કૃત્વા તદાપ્જયા મયા નન્દાપુષ્કરિણી કારિતાં,

ચપુન્ને નિર્ગઠાઓ પાવયળાઓ નદે મદે પરિભ્રમેદે તં સેયં સ્વલુ મમં સયમેવ પુલ્વપલ્લિવજ્રાઈં પંચાણુલ્લવાઈં સત્તસિક્ષાવયાઈં સ્વસંપલ્લિજ્જતા ણં વિહરિત્તિ ) કિસી સમય મેં ગ્રીષ્મકાલ મેં યાવત્ પૌષધશાલા મેં પૌષધ ધારણ કર બેઠા હુઆ થા-ઇસ પ્રકાર મુજે વહાં એસી ચિન્તા હુઈ આપૃચ્છના હુઈ, નંદા પુષ્કરિણી કરાને કા વિચાર હુઆ, વનખંડોં, સમાઓં કે વનાને કા વિચાર હુઆ-યહ સવ વિષય પૂર્વમ્બ કા ઉસે સ્મૃત હો આયા-અર્થાત્ ઉસે યહ વાત યાદ આઈ-કિ જબ મેં અષ્ટમ-મ્બક કી તપસ્યા કા નિયમ ધારણ કર પૌષધ શાલા મેં બેઠા હુઆ થા તબ મેરી વહ તપસ્યા પૂર્ણપ્રાપ્ત હો રહી થી-ઉસ સમય મુજે પિપાસા ઔર ક્ષુધા કી વાધા ને આકુલિત પરિણામ વાલા બના દિયા । સો મુજે ઇસ પ્રકાર કા વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ-કિ વે લોગ ધન્યવાદ કે પાત્ર હૈં કિ જિન્હોં કે વનવાયે હુય જલાશય વિચ્યમાન હૈં । ઇસલિયે મેં મી પ્રાતઃ કાલ હોતે હી શ્રેણિક રાજા સે પૂછકર રાજગૃહ કે બાહિર ઈશાન કોણ મેં નંદા નામ કી એક વાવડી સુદવાઝગા । ઇસ પ્રકાર વિચાર કર ફિર મેં શ્રેણિક રાજા સે પૂછા તો ઁન્હોં ને મુજે ઇસ કી આજ્ઞા દેદી મેં

નિર્ગઠાઓ પાવયળાઓ નદે મદે પરિભ્રમેદે તં સેયં સ્વલુ મમં સયમેવ પુલ્વ પલ્લિવજ્રાઈં પંચાણુલ્લવાઈં સત્તસિક્ષાવયાઈં સ્વસંપલ્લિજ્જતા ણં વિહરિત્તિ ) કેઠાં એક વખતે ઉનાળામાં યાવત્ પૌષધશાળામાં પૌષધ ધારણ કરીને બેઠો હતો ત્યારે મારા મનમાં એવો વિચાર ઉદ્ભવ્યો એવી આપૃચ્છના થઈ, નંદા પુષ્કરિણી તૈયાર કરાવવાનો વિચાર થયો, વનખંડો તેમજ સલાઓને બનાવવાનો વિચાર થયો, એ રીતે પહેલાંના જન્મની બધી વાત યાદ આવી એટલે કે તેને આ બતતું સ્મરણ થયું કે બ્યારે હું અષ્ટમ ભક્તની તપસ્યાનું મત લઈને પૌષધશાળામાં બેઠો હતો. મારી અષ્ટમ ભક્તની તપસ્યા પૂરી થવાની હતી તે વખતે તરસ અને ભૂખની પીડાએ મને વ્યાકુળ બનાવી દીધો. ત્યારે મને વિચાર આવ્યો કે તે લોકો ધન્યવાદને લાયક છે કે જેમના વડે બધાયેલા જળાશયો અત્યારે પણ હયાત છે. એથી હું પણ સવાર થતાં જ શ્રેણિક રાજાની આજ્ઞા મેળવીને રાજગૃહ નગરની બહાર ઇશાન કોણમાં નંદા નામે વાવ બધાવડાવું. આ રીતે વિચાર કરીને શેં શ્રેણિક રાજાને બ્યારે પૂછ્યું ત્યારે તેમણે મને તેની આજ્ઞા

તતસ્તત્સ્થાઃ પુષ્કરિણ્યાશ્રતુર્દિષ્ણુ વનપંડા આરોપિતાઃ સંરક્ષિતાઃ સર્વર્મિતાઃ, તત્-  
સ્તેષુ વનપંડેષુ પૌરસ્ત્યે ચિત્રસભા, દાક્ષિણાત્યે મહાનસશીલા, પાશ્ચાત્યે ચિકિત્સા  
શાલા, ઔદીચ્યે વનપંડેઽલંકારિકસભા મયા કારિતા, इति । ' यावत्-नन्दायां  
पुष्करिण्यां दर्दुरतयोपपन्नः ' ततो राजगृहविनिर्गतो बहुजनस्तत्र पुष्करिण्यां स्नानं  
कुर्वन् जलं पिबन् पानीयं घटादिभिर्नयन् परस्परमेवमवादीत्-भो देवानुप्रियाः ।  
धन्यः कृतार्थः खलु नन्दो मणिकारश्रेष्ठो यस्य खलु इयमेतद्द्रुपा नन्दापुष्करिणी-  
त्यादि, तत् प्रशंसावचनमहं बहुजनस्यान्तिके श्रुत्वा इष्टतुष्टः सातगौरवमुत्तममुभवन्  
आसम् । ततः खलु मम मणिकारश्रेष्ठिभवे प्रबलतरशातगौरवजनितकर्मोद्भवेना-

નંદા નામની પુષ્કરિણી ઉઠ્ઠી કી આજ્ઞા સે વન વાઈ । ડસ કી ચારો  
દિશાઓ મેં ચાર વનપંડ લગવાયે વે સંરક્ષિત હોકર સ્વૃષ અચ્છી શુદ્ધિ-  
ગત હુએ ડન વનપંડો મેં સે જો પૂર્વ દિશા સંબન્ધી વનપંડ થા ડસમેં  
મેંને એક ચિત્ર સભા વનવાઈ દક્ષિણ દિશા સંબન્ધી વનપંડ મેં એકમહા-  
નસ શાલા, પશ્ચિમદિશા સંબન્ધી વનપંડ મેં ચિકિત્સા શાલા ઓર ડસર  
દિશા સંબન્ધી વનપંડ મેં અલંકારિક સભા વનવાઈ । રાજગૃહનગર-સે  
નિર્ગત અનેક જન ડસ પુષ્કરિણી મેં સ્નાન કરતે-પાની પીતે ઓર ડસ  
મેં સે પાની ભી ખરતે-તવ પરસ્પર મિલકર વે ઇંસ પ્રકાર સે વાત ચીત  
કરતે કિ ભો દેવાનુપ્રિય ! મણિકાર નંદ શ્રેષ્ઠી ધન્યવાદ કા પાત્ર  
હૈ, કૃતાર્થ હૈ-જિસને ઇતની અચ્છી ઇસ નંદા પુષ્કરિણી કો વન-  
વાયા હૈ । ઇસ તરહ કે પ્રશંસાત્મક વચન સુનકર મેં હર્ષોત્ફુલ્લ ગાત્ર  
હો જાતા, મેરા ચિત્ત સંતુષ્ટ હો જાતા । મેં ડસ સમય શાંત ગૌરવ-કે

આપી હીધી. તેમની આજ્ઞાથી જ મેં નંદા નામે પુષ્કરિણી ખંધાવી છે. તેની  
ચારે દિશાઓમાં ચાર વનપંડો રાખાવ્યા સુરક્ષિત થયેલાં વનપંડો પૂજા જ  
શુદ્ધિ પામ્યા પૂર્વ દિશા તરફના વનપંડમાં મેં એક ચિત્રસભા બનાવડાવી હતી  
દક્ષિણ દિશાના વનપંડમાં એક વિશાળ મહાનસ શાળા ( રસોઈ ઘર ), પશ્ચિમ  
દિશાના વનપંડમાં ચિકિત્સાલય ( દવાખાતું ) અને ઉત્તર દિશાના વનપંડમાં  
અલંકારિક સભા બનાવડાવી. રાજગૃહ નગરના ઘણા સાધુસે પુષ્કરિણીમાં સ્નાન  
કરતા, પાણી પીતા અને તેમાંથી પાણી ભરતા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર વાત-  
ચીત થઈ કરવા માંડતા કે હે દેવાનુપ્રિય ! સચ્ચિકાર શ્રેષ્ઠ ધન્યવાદને લાયક છે.  
કૃતાર્થ છે, કેમકે તેણે કેવી સરસ નંદા પુષ્કરિણી બનાવડાવી છે. આ રીતે  
પોતામાં જ વખાણ સાંભળીને હું ખુશ ખુશ ( હર્ષોત્ફુલ્લ ) થઈ જતો અને  
પ્રમદ હેતુ સંતુષ્ટ થઈ જતું હતું. હું તે વખતે શાંત ગૌરવના ઉદયથી પ્રભા

न्यदा कदाचित्-बोडशरीरातङ्काः प्रादुर्भूताः। बहवो वैद्यारतत्रागताः परंत्वेकमपि रोगातङ्कपशमयितुमसमर्था सन्तः प्रतिगताः। ततस्तैरोगातङ्कैरभिभूतः खलु नन्दापुष्करिण्यां मूर्च्छितोऽहं तत्सुखवियोगसंभावनायाऽऽर्तध्यानोपगतः सन् काल-मासे कालं कृत्वा अत्रैव नन्दापुष्करिण्यां दूर्दुरतया संजातोऽस्मि। इत्थं जातिस्मरणं प्राप्य स दूर्दुरः स्वात्मनि विचारयति-‘तं अहोणं अहं अहन्ने’ इत्यादि, तत्=तस्माद् अहो ! इति खेदे खलु अहमधन्यः, अपुण्यः, अकृतपुण्यः, नैर्ग्रन्थ्यात् प्रवचनाद् नष्टो भ्रष्टश्चास्मि, तत्=तस्माद्-श्रेयः खलु मम स्वयमेव पूर्वमतिपन्नानि=पूर्व-मवाङ्गीकृतानि, पञ्चाणुव्रतानि सप्तशिक्षाव्रतान्युपसंपद्य विद्वद्भ्यः इत्येवं संश्लेषते=

उदय से अतिशय आनंद का अनुभव करने लग जाता। किसी एक समय मुझे मणिकार श्रेष्ठी के भव में उस प्रबलतर शात गौरवजनित कर्म के उदय से १६ रोगातंक शरीर में प्रकट हुए। अनेक वैद्य आये, परन्तु वे मेरे एक भी रोगातंक को शमित करने में समर्थ नहीं हो सके। सो वापिस चले गये। इस तरह उन रोगातंकों से अभिभूत हुआ मैं नन्दा पुष्करिणी में मूर्च्छित होकर उसके सुख के वियोग की संभावना से आर्तध्यान में पड़कर मृत्यु के अवसर में मरा सो इसी नन्दा पुष्करिणी में इस दूर्दुर की पर्याय से उत्पन्न हुआ हूँ। इस तरह जातिस्मरण ज्ञान को प्राप्त कर उस दूर्दुर ने अपने मन में विचार किया देखो यह कितने खेद की बात है-मैं कितना अधन्य हूँ कितना पापी हूँ कितना अकृत पुण्य हूँ जो मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन से नष्ट भूट हुआ इस-लिये मुझे यही कल्याणास्पद है कि मैं स्वयं अब पूर्व भव में अंगीकृत किये गये पांच अणुव्रतोंको सात शिक्षाव्रतोंको स्वीकार-धारण-कर लूँ।

आनंदमां मम अर्थ जेतो। कोर्थ जेक सभये मणिकार शेडना लवमां भार। शरीरमां प्रणततर शात गौरव जनित कर्मना उदयथी सोण रोग अने आंतक प्रकट थया। धण्डा वैद्यो आत्मा पखु तेजो भारो जेक रोग पखु मटाडी शकथा नहिं। वैद्यो पखु निराश अर्थने पाछा जता रह्या छता। आ रीते रोग अने आतकोथी पीडित अर्थने हुं नंदा वापमां जेमान अर्थने सुभना विशेषनी संभावनाथी ज आर्तध्यान करतो छेवटे मृत्युना सभये मरखु पाभ्यो। मृत्यु भाव हुं जे नंदा वापमां ज हेडकाना पर्यायथी उत्पन्न थयो छुं। आ रीते जतिस्मरण ज्ञान प्राप्त थतां ते हेडकाये पोताना मनमां विचार कथो के-अरे ! अरे ! हुं केटलो भधा अधन्य छुं पापी छुं अने अकृतपुण्य छुं निर्ग्रन्थ प्रवचनथी भ्रष्ट अर्थने ज भारी आवी दशा अर्थ हे, जेथी छेवे हुं पूर्वलवमां स्वीकारेला पांच अलुमतो, अने शिक्षाव्रतोने स्वीकारी लई। ( एवं संपेदेह संवे

વિચારયતિ, સંપ્રેક્ષ્ય પૂર્વપ્રતિપન્નાનિ પચ્ચાણુવ્રતાનિ સસશિક્ષાવ્રતાનિ આરોહતિ= ધારયતિ સ્વીકરોતીત્યર્થઃ । આરુહ્ય=દ્વાદશવ્રતાન્યક્તીકૃત્ય, ઇમમેતદ્રૂપં=વક્ષ્યમાણ-સ્વરૂપમ્, અભિગ્રહમભિગૃહ્ણાતિ-કલ્પને મે યાવજ્જીવં ‘ છટ્ઠંછટ્ટેણ ’ પઠ્યપઠ્યમક્ષતેન, ‘ અણિવિલ્લેષેણ ’ અનિલ્લિપ્તેન-અન્તરરહિતેન અવિશ્રાન્તેનેત્યર્થઃ તપઃ કર્મેણાઽઽ ત્માનં માવયતઃ=આત્મનઃ શુભપરિણામં વર્ધયતઃ, વિહર્તુ કલ્પતે इति પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ । અપિચ-પઠ્ઠસ્યાપિ—પઠ્ઠમક્તસ્યાપિ ચ પારણકે કલ્પતે મે નન્દાયાઃ પુષ્કરિણ્યાઃ ‘ પરિપેરંતેસુ ’ પરિપર્યન્તેષુ=તટેષુ=પ્રામુકેન=અચિત્તેન, સ્નાનોદકેન ‘ ઝમ્મહ્ણો-છોલિયાહિ ય ’ ઝમ્મર્દનોછોલિતામિઃ=ઝટ્ઠર્તનાદુર્ઘરિતામિઃ લોકૈર્દોહોઘર્તને કૃતે સતિ શેષભૂતા ઇત્યતઃ પતિતા યા યવચૂર્ણાદિનિર્મિતપિષ્ટિકાસ્તામિરિત્યર્થઃ, વૃત્તિ કલ્પયતઃ શરોરયાત્રાનિર્ગાઠં કુવંતઃ વિહર્તુ કલ્પતે इति પૂર્વેણાન્વયઃ । ઇમમેત-

( एवं संपेवेइ, संपेहिता पुण्वपडिवज्झाहं पंचाणुव्वयाहं सत्त सि-  
क्खवावयाहं आरुहेइ, आरुहिता इमेयाख्वं अभिगगहं अभिगिण्हइ-कप्पं  
मे जाव जीवं छट्ठं छट्टेणं अणिविल्लेपेणं तवो कम्मणेणं अप्पाणं भावेमा-  
णस्स विहरित्तए ) इस प्रकार उसने विचार किया । विचार करके पूर्व  
प्रतिपन्न पंच अनुव्रतों को सान शिक्षाव्रतों को उसने स्वयं धारण कर  
लिया । धारण करके फिर उसने इस प्रकार का नियम ले लिया कि मैं  
अब जीवन पर्यंत अन्तर रहित पठ पठ भक्त की नपत्या से अपने  
आत्मपरिणामोंको बढ़ाना रहूंगा । ( छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ  
मे णंदाए पोक्खवरणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मह्णो-  
छोलियाहि य वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयाख्वं अभिगगहं अ-  
भिगिण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठं छट्टेणं जाव विहरइ ) और छट्ठ भक्त की

हिता पुण्व पडिवज्झાહં પચ્ચાણુવ્વયાહં સત્તસિલ્લાવયાહં આરુહેइ, આરુહિતા  
इमेयाख्वं अभिगगहं अभिगिण्हइ, कप्पं मे जाव जीवं छट्ठं छट्टेणं अणिविल्लेपेणं  
तवो कम्मणेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए ) આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો. વિચાર  
કરીને પૂર્વ ભવમાં સ્વીકારેલાં પાંચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતોને તેણે  
ચોતે જ ધારણ કરી લીધા. ધારણ કરીને તેણે એ બાતને નિયમ લીધા કે  
હવે જીવનની છેલ્લી પણ સુધી અન્તર રહિત પઠ પઠ ભક્તાની તપસ્યા વડે  
મારા આત્મ પરિણામોની વૃદ્ધિ કરતો જ રહીશ. ( છટ્ઠસ્સ વિ ય ણં પારણગંસિ  
કપ્પइ मे णंदाए पोक्खवरणीए, परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मह्णो-  
छोलियाहिय वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयाख्वं अभिगगहं अभिगिण्हइ, जाव  
ज्जीवाए छट्ठं छट्टेणं जाव विहरइ ). અને છઠ્ઠ ભક્તાની પારણાના દિવસે નંદા

द्रूपमभिगृह्णाति, अभिगृह्ण यावज्जीवं षष्ठपष्ठेन=पठपष्ठसकतेन यावत्-स ददुरोऽ-  
भिग्रहग्रहणपूर्वकं स्वीकृतेन तपः कर्मणाऽऽत्मानं भावयन् विहरति=आस्तेरमा सु० ७॥

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समणं अहं गोयमा ! गुण-  
सिलए चेइए समोसढे वरिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्ख-  
रिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अन्नमन्नं एवं वयासी-  
देवाणुप्पिया ! समणो ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं  
गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो  
जाव पज्जुवासामो एयं मे इहभवे परभवे य हियाए जाव  
अणुगामियत्ताए भविस्सइ, तएणं तस्स द्दुहरस्स बहुजणस्स  
अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अऽज्ञत्थिए ५  
समुप्पज्जित्था-एवं खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसि-  
लए चेइए समोसढे, तं गच्छामि णं समणं ३ वंदामि जाव  
पज्जुवासामि एवं संपेहेइ संपेहित्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ  
सणियं २ उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ  
उवागच्छित्ता ताए उकिट्ठाए द्दुहरगईए वीइवयमाणे जेणेव ममं  
अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, इमं च णं सेणिए राया

पारणाके दिन में नंदा पुष्करिणी के तट पर के अचित्त स्नानोदक से  
तथा लोकों के द्वारा दोहोद्वर्तन करने पर शेषभूत इधर उधर प्रवृत्त  
यव चूर्णादि निर्मल पिष्टिका से अपने शरीर की यात्रा का निर्वाह  
करेगा, इस प्रकार का अभिग्रह उसने ग्रहण कर लिया । इस करह  
अभिग्रह ग्रहण पूर्वक वह ददुर घृत षष्ठ षष्ठ भक्त की तपस्या से  
आत्मशुद्धि करने में लग गया ॥ सूत्र ७ ॥

वाचना क्रियान्ती आरे गालुना अचित्त स्नानोदकथी तेमज्ज होडो वडे देडोइ  
वर्तन कथो पछी वधेवा अने अ भतेम वेशधने पडेवा ज्वना होट वगेरथी  
पोताना पिडने शरीरने निर्वाह करीश आ रीते तेहे अलिश्रद्ध लक्ष् बीधा.  
आम अलिश्रद्ध धारणु करीने देडो ५४ लक्ष्मनी तपस्या करीने आत्मशुद्धि  
करवाभां तस्वीन शर्ध जयो. सूत्र " ७ "



भंभसारे ण्हाए कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सन्वालेकारविभू-  
 सिए हत्तिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जिमाणेणं  
 सेयवरचामराहिं उद्धुंभवमाणाहिं ह्यगयरहमहया भडचडगर-  
 कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए  
 हव्वमागच्छइ, तएणं दहुरे सेणियस्स रत्तो एगेणं आसकिसो-  
 रएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्धाइए कएयाविहोत्था,  
 तएणं से दहुरे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे  
 आधारणिज्जमित्तिकट्टु एगंतमवक्कमइ अवक्कमित्ता करयल-  
 परिग्गहियं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोऽत्थु णं  
 मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउकासस्स पुठ्ठिं पि य णं मए  
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवायं पच्च-  
 क्खाए, जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, तं इयानिं पि तस्सेव  
 अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्च-  
 क्खामि जावजीवं, सव्वं असणं ४ पच्चक्खामि जावजीवं  
 जंपि य णं इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव मा फुसंतु एयंपि णं चरि-  
 मेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु, वोसिरइ तएणं दहुरे कालमासे  
 कालं किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दहुरवडिंसए विमाणे उववा-  
 यसभाए दहुरेदेवत्ताए उववन्ने, एवं खलु गोयमा ! दहुरेणं सा  
 दिव्वा देविड्डी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया। दहुरस्स णं भंते !  
 देवस्स केवइयकालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलि  
 ओवमाइं ठिई पण्णत्ता, से णं भंते ! दहुरे देवे ताओ देवलो-

गाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं  
गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ गोयमा ! महाविदेहेवासे  
सिज्जिहिइ बुज्जिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं  
अंतं करेहिइ य । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं  
तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि ॥ सू०८ ॥

॥ तेरससं गायज्झयणं समत्तं ॥ १३ ॥

टीका—भगवान् महावीरः स्वामी कथयति—‘तेणं कालेणं’ इत्यादि ।  
तस्मिन् काले तस्मिन् समये=यदा स ददुरः पष्ठमक्त तपः कर्मणाऽऽत्मानं भाव-  
यन् विहरतिस्म, तस्मिन् काले तस्मिन् समये हे गौतम ! अहं गुणशिलके चैत्ये=  
गुणशिलकनामकोद्याने समवस्यतः=प्राप्तः । परिपद=राजशृङ्गनगरनिवासिनां जनानां  
समूहः, निर्गता=मां द्रष्टुं वन्दितुं नगराब्दभिर्निःसृता । ततः खलु नन्दायां  
पुष्करिण्यां बहुजनः स्नानं कुर्वन् जलं पिबन् पनीयं च संवहन् अन्योन्यमेवमवा-  
दीत्—ओ देवानुप्रियाः ! श्रमणो भगवान् महावीरः स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये  
समवस्यतः, तत्=तस्माद् गच्छामः खलु हे देवानुप्रियाः ! श्रमणं भगवन्तं महा-  
वीरस्वामिनं वन्दामहे नमस्यामः वन्दित्वा नत्वा यावन्-पर्युपास्महे=सेवां कुर्मः,  
अस्माकमेतद् इहमवे परमवे च हिताय यावत्-सुखाय, क्षेमाय, निःश्रेयसे, ‘अणु-

‘तेणं काले णं तेणं समएणं’ इत्यादि ।

टीकाथ—(तेणं काले णं तेणं समएणं) उस काल और उस समयमें  
(अहं गोयमा । गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए  
पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य ३ अजमन्नं एवं वयासी-देवानु-  
प्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामो णं  
देवानुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो, एयं  
मे इहमवे परमवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ ) हे

‘तेणं कालेणं तेणं समएणं’ इत्यादि—

टीकाथ—तेणं कालेणं तेणं समएणं; ते काले अने ते समये (अहं गोयमा !  
गुणसिलए चेइए समोसढे परिसा निग्गया, तएणं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो  
ण्हायमाणो य ३ अजमन्नं एवं वयासी-देवानुप्पिया ! समणे ३ इहेव गुणसिलए  
चेइए समोसढे, तं गच्छामो णं देवानुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव  
पज्जुवासामो, एयं मे इहमवे परमवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ )

‘गामियत्ताए’ अनुगामिकतायै परमवेऽनुगमनार्थं भविष्यति, इति परस्परमवदत् ।

ततः खलु तस्य ददुरस्स बहुजनस्यान्तिकाद् एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य अय-  
मेतद्रूप आध्यात्मिको विचारः समुदपद्यत-एवं खलु श्रमणो भगवान् महावीरः

गौतम ! मैं मैं बिहार करता हुआ गुणशिलक नाम के उद्यान आया ।  
राजगृह नगर निवासी मनुष्यों का समूह मेरी बंदना करने के लिये  
तथा मेरे दर्शन के लिये अपने २ स्थान से आये-उस समय नंदा  
पुष्करिणी में अनेक मनुष्य स्नान करते हुए जल पीते हुए और पानी  
भरते हुए परस्पर मैं इस प्रकार से बात-चीत कर रहे थे-भो देवानु-  
प्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर यहीं पर गुण शिलक चैत्य में पधारे  
हुए हैं-इसलिये हे देवानुप्रियो ! चलो-आओ चलो श्रमण भगवान्  
महावीर को बंदना करें नमस्कार करें । बंदना नमस्कार कर फिर उन  
की पर्युपासना-सेवा करें । यही बात इस भव में, परभव में हमारे  
लिये हितकारक होगी, यावत् सुखविधायक होगी, क्षेमकारक, निश्रेय-  
सकारक एवं अन्यभव में साथ जाने वाली होगी । (तएण तस्स ददुरस्स  
बहुजणस्स अंतिए एयमहुं सोच्चा, निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए प  
समुप्पज्जित्था ) तो इस प्रकार की बात चीत जब उस ददुर ने उन  
अनेक मनुष्यों के मुख से सुनी-तो सुनकर और उसे हृदय में धारण  
कर उसके मन में इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ-( एवं खलु समणे

हे गौतम ! शुशुशिलक नामना उद्यानमां हुं विहार करो। करो आन्या।  
राजगृह नगरना नागरिकाना समूहो मने वंदन करवा तेमज् दर्शन करवा  
भाटे पातपाताने बेरथी भारी पासे आन्या। ते समये नंदा वावमां बध्नां  
भाषुसे स्नान करता, पाषी पीतां आने पाषी भरतां आ प्रभाषे वातो करवा  
आन्या हे हे देवानुप्रियो ! अहाँ शुशुशिलक चैत्यमां ज भगवान् महावीर स्वाभी  
पधारेवा छे, जेवा भाटे हे देवानुप्रियो ! आलो आपण्णे श्रमण भगवान्  
महावीरने वंदन तेमज् नमस्कार करीने तेमनी पर्युपासना-सेवा-करीजे, आ  
सव तेमज् परलवमां जे वात ज् अमारा भाटे श्रेयइय थरे यावत् सुभ  
विधायक थरे। अरेपर जे वात ज् क्षेमकारक निश्रेयसकर आने जील लवमां  
पण् साथे रहैथे। ( तएण तस्स ददुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमहुं सोच्चा,  
निसम्म, अयमेयारूवे अज्झत्थिए प समुप्पज्जित्था ) ते भाषुसेनी जे वातो  
देखैथे जे पण् सांलप्री आने तेने धारण करी लीपी। त्थारपणी तेनां मनमां आ  
चित्तने विचार खुर्थे हे ( एवं खलु समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए  
समोसडे, वं गच्छामि णं समणं ३ वदामि, जाव प्रज्जुवासामि एवं संवेदेइ

स्वामी इहैव गुणशिलके चैत्ये समबद्धतोऽस्ति । तत्-तस्माद् अहमपि गच्छामि  
खलु श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दे नमस्यामि, एवं संपेक्षते=विचारयति, संपेक्ष्य  
नन्दायाः पुष्करिणीतः शूनैः शूनैरुत्तरति=बाहिर्निः सरती, उत्तीर्य यत्रैव राजमार्ग-  
स्तत्रैवोपागच्छति, उपागच्छ तया (१) 'उत्किट्टाप' उत्कृष्टया, अत्रेदं बोध्यम्-  
(२) "तुरियाप (३) चवलाप, (४) चंडाप, (५) सिग्धाप, (६) उद्धुयाप, (७)  
जयणाप, (८) छेयाप," इति । तत्र-उत्कृष्टया-दर्दुराणां गतौ य उत्कर्षस्तेन-  
युक्तागतिरुत्कृष्टा त्रयेत्यर्थः । त्वरितया-मनस औत्सुक्येन युक्ता त्वरिता तया,

भगवं महावीरे इहैव गुणशिले चैहए समोसंढे, तं गच्छामि-णं सम-  
णं ३ चंदाभि जाव पज्जुवोसामि एवं संपेहेह, संपेहिस्ता णंदाओ  
पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ ) अमण भगवान् महावीर प्रभु यहाँ  
गुण शिलक उद्यान में आवे हुए हैं तो चले श्रमण भगवान् महावीर को  
चंदना कहें यावत् उनकी पर्युपासना करें । ऐसा उसने विचार किया-  
विचार कर के फिर वह उस नंदा पुष्करिणी से घीरे २ बाहिर निकला-  
( उत्तरिस्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिस्ता ताए  
उत्किट्टाप द्दुदुर गइए वीइवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ  
गमणाए ) बाहिर निकल कर फिर वह जहाँ राजमार्ग था, उस ओर  
चल दिया । वहाँ पहुँच कर फिर वह उस उत्कृष्ट दर्दुर गति से चलता  
हुआ मेरी ओर बढ़ा । यहाँ " तुरियाप, चवलाप, चंडाप, सिग्धाप,  
उद्धुयाप, जयणाप, छेयाप " इन पदों का भी संग्रह कर लेना चाहिये  
उस दर्दुर की गति को उत्कृष्ट इसलिये कहा है कि दर्दुरो की गति में

संपेहिस्ता णंदाओ पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ ) अमण भगवान् महावीर प्रभु  
अही गुणशिलक उद्यानमां पधारेहा छे. त्यारे हुं पणु अमण भगवान् महा-  
वीरने वंदन यावत् तेमनी पर्युपासना-सेवा उई. आ जातने सेणु विचार  
कथो, विचार कथां पछी ते नंदा वावमाथी धीमे धीमे णंदार नीकत्थो.  
( उत्तरिस्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिस्ता ताए उत्किट्टाप द्दुदुर  
गइए वीइवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ) णंदार नीकणीने  
ते ने तरइ राजमार्ग हुतो ते तरइ आइवा मांडथो. त्यारपछी ते गेतानी  
'उत्कृष्ट' ( शीघ्र ) डेडानी गतिथी आइतो आइतो भारी तरइ आओ. अही  
( तुरियाप, चवलाप, चंडाप, सिग्धाप, उद्धुयाप, जयणाप, छेयाप ) आ पढोने  
पणु संअइ करवे ओइओ. ते डेडानी गति उत्कृष्ट ओइहा भाटे वणुववामां  
आवी छे के डेडानी गतिमां ने उत्कर्ष होय छे ते गति सेनाथी युक्ता

चपलया-शरीरचापल्येन युक्तया, चण्डया-तीव्रया, अतएव शीघ्रया, उद्धुतया-  
अशेष शरीरावयवकम्पवत्तया, जयिन्या अन्यददुर्गतिजेत्या, छेकया-अपायपरि-  
हारे निपुणया, ददुर्गत्या-मण्डूकगत्या 'वीक्ष्यमाणे' व्यतिव्रजन् २-महा-  
वेगेन गच्छन् २, यत्रैव ममान्तिकं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः ।  
अस्मिन्नेव समये उद्यानरक्षकमुखान्ममागमनं श्रुत्वा श्रेणिको राजा भंभसारः =  
भंभसारापरनामकः, स्नातः कृतकौतुकमङ्गलपायश्चितः सर्वालंकारविभूषितः,

जो उत्कर्ष होता है वह उस उत्कर्ष से युक्त थी । उस मेंढक के मन में,  
बड़ी भारी उत्सुकता थी-सो उस उत्सुकता से वह गति भरी हुई  
थी-इस कारण वह उस की गति त्वरित थी । शरीर की चपलता से  
युक्त होने के कारण, तीव्र होने के कारण, शीघ्रता से युक्त होने के  
कारण, समस्त शारीरिक अवयवों के कंपन से युक्त होने के कारण  
अन्य साधारण दड्डरों की गति की अपेक्षा विशिष्ट होने के कारण,  
और अपायों को बचा २ कर चलने के कारण वह गति क्रमशः चपल  
चण्ड, शीघ्र उद्धुत, जयनी, और छेक इन विशेषणों वाली थी । इमं  
च णं सेणिए राया भंभसारे ण्हाए कयकौउयमंगलपायच्छित्ते सव्वा-  
लंकारविभूसिए, हत्थि खंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्ज  
माणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणहिं हयगयरहमहया मडचड-  
गरकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपड्डिबुडे मम पायबंदए  
हव्वमागच्छइ ) इसी समय उद्यान रक्षक के मुख से मेरा आगमन  
सुनकर " भंभसार " इस अपर नाम वाले श्रेणिक राजा मेरी वंदना

हती. ते देड्डकाना भनभां लारे उत्सुकता हती तेनी गतिभां उत्सुकताने लीधेअ  
त्तरा आवी अर्ध हती. शरीरनी अपणताथी युक्ता होवा भइल, तीव्र होवा  
भइल, शीघ्रता युक्ता होवा भइल, शरीरना अथा अवयवोना कंपनथी युक्ता  
होवा भइल, भील साधारण देड्डकाओ गति करतां विशिष्टता युक्ता होवा भइल  
अने अपायो- ( आक्षतो ) थी सावध यधने आलवा भइल ते गति क्रमशः  
अपण, अंड, शीघ्र, उद्धुत, जयनी अने छेक आ विशेषणोवाणी हती.  
( इमं चणं सेणिएराया भंभसारे ण्हाए कयकौउयमंगलपायच्छित्ते सव्वा-  
लंकारविभूसिए, हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेणं सेयवर  
चामराहिं उद्धुव्वमाणहिं हयगयरहमहया मडचडगरकलियाए चाउरंगिणीए  
सेणाए सद्धिं संपड्डिबुडे मम पायबंदए हव्वमागच्छइ ) ते वधने उद्यान रक्षकना  
अपुथी भारा आगमननी बात सांझणीने ' भंभसार ' ओ भील नामवाणी

हस्तिस्कन्धवरगतः=गजोपरिसमारूढः, सकोरण्टमाल्यदाभ्ना-कोरण्टकुसुममालयां,  
छत्रेण प्रियमाणेन=स्वभृत्यहस्तधृतेन, श्वेतवरचामरेरुद्धयमानैः=स्वभृत्यैर्वीजितैः,  
हयगजरथमहामटचटकरकलितया=अश्वगजस्थमहामटानां चटकरः समूहस्तेन कलि-  
तया-युक्तया, चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं संपरिवृतो मम पादवन्दको हव्यं-शीघ्रम्,  
आगच्छति, ततः खलु स ददुरः श्रेणिकस्य राज्ञ एकेन 'आसकिसोरणं'  
अश्वकिशोरकेन वामपादेन 'अकंते समाणे' आक्रान्तः=अभिभूतः देशोपरिपाद-  
निपाताऽऽघातं प्राप्तः सन् 'अंतनिग्वाइए' अन्वनिर्घातितः=अन्वस्य 'अत'।

करने के लिये तैयार हुआ स्नान से निवृत्त कर और कौतुक, मंगल एवं प्रायश्चित्त विधि समाप्त कर गज पर चढ़े हुए जल्दी २ आ रहे थे। उस समय वे समस्त अलंकारों से विभूषित थे। उन के ऊपर कोरंट पुष्पों की माला से शोभित छत्र छत्रधारी ने लगा रखा था। चमर धारण करने वाले भृत्य जन उन पर शुभ्र उत्तम चमर ढोल रहे थे, हय, गज, रथ, एवं महामटों के समूह से युक्त चतुरंगिणी सेना से वे घिरे हुए थे। (तएणं से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आस किसोरणं वाम पाएणं अवकंते समाणे अंत निग्वाइएकए यावि होत्था तएणं से ददुरे अत्थामे अबले अकीरिए अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमिस्सि कट्ठु एगंतमवक्कमइ, अवक्कमिस्सा करयलपरिग्गहिंयं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं वयोसि) फुदक २ अपनी चाल से चलता-हुआ वह मेढक श्रेणिक राजा के किसी एक घोड़े के बन्धे के वाम पैर से आक्रान्त हो गया-अर्थात् उस का वाम चरण उस के ऊपर पड़ गया। सो उसी

अश्विक राजा अपने बंदन करवा भाटे तैयार था। तेजो स्नानधी परचारने कौतुक, मंगल और प्रायश्चित्त विधि पूरी करी और हाथी ऊपर सवार थपने उड़पथी आवी रह्या होता। ते वभते तेजो भधी जलना अलंकारोधी विभूषित होता। तेभना ऊपर कोरंट पुष्पोनी भाणाथी शोभतुं छत्र छत्रधारीओओ तावेवुं हेतुं, चमर ढोलनार नोकरे तेभना ऊपर शुभ्र उत्तम चमरे ढोली रह्या होता। हय ( घोडा ) गज, रथ और महुआटोना सन्नुद्धी युक्त चतुरंगिणी सेनाथी तेजो वीटणाथेला होता (तएणं से ददुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आसकिमो-रणं वामपाएणं अकंते समाणे अंतनिग्वाइएकए याविहोत्था तएणं से ददुरे अत्थामे अबले अकीरिए अपुरिसकारपरक्कमे आधारणिज्जमिस्सि कट्ठु एगंतमवक्कमइ, अवक्कमिस्सा करयलपरिग्गहिंयं मत्थए अंजलिं कट्ठु एवं वयोसी) कृष्ण भारता ते हेडके अश्विक राजानां केडि ओके घोडाना टट्टेना डाना पगथी आक्रान्तं थप गथे ओटवे के तेना डाना पग तेना ऊपर पडी गथे। तेथी

इति प्रसिद्धस्य, निर्घातः—अन्वनिर्घातः, स संजाओऽस्येति अन्वनिर्घातितः—  
त्रुटितान्त्रः कृतश्चाप्यभवत् ।

ततः खलु स ददुरः ‘अत्यामे’ अस्थामा=हीनपराक्रमः गमनशक्तिरहित  
इत्यर्थः अवलः=मनोबलरहितः—खिन्न इत्यर्थः अवीर्यः—हतोत्साहः, ‘अपुरिसकार-  
परक्रमे’ अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषकारः पराक्रमश्च न विद्येते यस्य सोऽपुरुषकार  
पराक्रमः । पुरुषार्थहीनइत्यर्थः । ‘अधारगिज्जमिनिक्कु’ अधारणीयमिति कृत्वा=  
अधारणीयमिदं शरीरमिति विचार्य, एकान्तमवक्रामति=एकान्तं—जनसंचाररहित-  
स्थानं मार्गस्य प्रान्तभागं कथंचिद् गच्छति, अवक्रम्य. करतलपरिमृहीतं मस्तकेऽ-  
ञ्जलिं कृत्वा, एवमवादीत्—एवं वक्ष्यमाणस्वरूपेण स्वमनस्युक्तवान् ‘नमोऽत्थुणं जाव  
संपत्ताणं’ नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत्—सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं  
संप्राप्तेभ्यः, ‘नमोऽत्थुणं मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउकामस्स’ नमोऽस्तु

समय उस की आंते टूट गईं । आंतों के टूटते ही वह दुर्दुर गमन शक्ति  
से रहित हो गया, मानसिक बल उस का जाता रहा—उत्साह उस का  
इकदम खिन्न भिन्न हो गया, पुरुषार्थ और पराक्रम मानों उस में हैं ही  
नहीं ऐसा वह हो गया । जब उसने यह देखा कि यह शरीर अब टिक  
नहीं सकता तब वह बड़ी कठिनताइसे जन संचाररहित एकान्त स्थान  
में चला गया । वहां जाकर उसने अपने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर  
और उसे मस्तक पर रखकर इस प्रकार मन ही मन में कहा ( नमो-  
त्थुणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउ-  
कामस्स पुत्तिं पियणं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं

દેહકાના આંતરડાં તૂટી ગયાં. આંતરડાં તૂટતાં જ તે દેહકે હાથના આલવામાં  
અસમર્થ થઈ ગયો. તેનું આત્મબળ નષ્ટ થઈ ગયું. તેનો ઉત્સાહ મંદ થઈ  
ગયો. તે પુરુષાર્થ તેમજ પરાક્રમ રહિત થઈ ગયો. બ્યારે તેને એમ લાગ્યું  
કે હવે એ શરીર ટકવું મુશ્કેલ છે, ત્યારે તે બહુ જ પ્રયત્નથી એક તરફ બ્યાં  
માણસોની અવર જવર હતી નહિ ત્યાં જતો રહ્યો. ત્યાં જઈને તેણે ભોતાના  
બંને હાથોની અંજળિ બનાવી અને તેને મસ્તકે મૂકીને મનમાં જ તેણે આ  
પ્રમાણે કહ્યું—( નમોત્થુણં જાવ સંપત્તાણં નમોત્થુણ મમ ધમ્માયરિયસ્સ જાવ સંપા-  
વિઝકામસ્સ પુત્તિં પિયણં મએ સમણસ્સ ભગવઓ મહાવીરસ્સ અંતિએ સવ્વં પાણા-  
દ્ધાયં પક્કલ્લામિ જાવ સવ્વં પરિગઘ પક્કલ્લામિ જાવ જીવં, સવ્વં અસણં )

खलु मम धर्माचार्याय श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं  
संप्राप्तुकामाय, पूर्वमपि=पूर्वभवेऽपि च खलु मया श्रमणस्य भगवतो महावीर-  
स्यान्तिके स्थूलः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः, यावत्-स्थूलः परिग्रहः प्रत्याख्यातः,  
यावत्करणात्-स्थूलः मृषावादस्थूलादत्तादान-स्थूल-मैथुन-प्रत्याख्यानं बोध्यम्,  
तदुद्दानीमपि=अस्मिन् भवेऽपि तस्यैवान्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि  
यावत् सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामि यावज्जीवम्, यदपि च खलु इदं शरीरमिष्टं  
कान्तं यावत् मा स्पृशन्तु रोगातङ्काः, एतदपि शरीरं खलु 'चरिमेहि' चरमैः=  
अन्तिमैः 'ऊसासेहि' ऊच्छ्वसैः=प्राणनिर्गमैः 'वोसिरामितिकहु' व्युत्सृजामिति-

प्राणाद्व्यायं पचचक्खामि जाव सव्वं परिगग्हं पचचक्खामि जाव जीवं  
सव्वं असणं ४ पचचक्खामि जाव जीवं जं पि य णं इमं सरीरं इदं कंतं  
जाव मा फुसंतु एयं पि णं चरिमेहि ऊसासेहि वोसिरामि त्ति कइहु  
वोसिरइ ) यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए अर्हत भग-  
वतों को मेरा नमस्कार हो, यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त  
करने की कामना वाले मेरे धर्माचार्य, श्रमण भगवान् महावीर को  
मेरा नमस्कार हो । पूर्वभब में भी मैंने स्थूल रूप से प्राणातिपात का  
परित्याग श्रमण भगवान् महावीर के समीप किया था । इसी तरह  
स्थूल मृषावाद का स्थूल अदत्तादान का स्थूल मैथुन को, एवं स्थूल  
परिग्रह को भी प्रत्याख्यान किया था । ये स्थूल मृषावाद आदि यावत्  
शब्द से यहाँ गृहीत हुए हैं तो अब इस भब में भी उन्हीं के समीप  
सर्वं प्राणिनिपात यावत् सर्वं परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता  
हूँ । तथा अज्ञान, पान, स्वाद्य एवं स्वाद्य रूप से चतुर्विध आहार का भी  
जीवन पर्यन्त परित्याग करता हूँ । तथा जो इष्ट, कान्त यह मेरा शरीर

पचचक्खामि जावजीवं जं पि य णं इमंसरीरं इदं कंतं जाव मा फुसंतु एयं पि णं  
चरिमेहि वोसिरामि त्ति कइहु वोसिरइ ) यावत् सिद्धिगति नामक स्थानने प्राप्त  
करेता अर्हत भगवतने भारा नमस्कार छे, यावत् सिद्धि गति नामक स्थानने  
भगवतानी धृच्छा करनारा भारा धर्माचार्य श्रमण भगवान् महावीरने भारा  
नमस्कार छे. पढेतांना भवमां पखु ये स्थूल इपथी श्रमण भगवान् महावीरनी  
नल्लक प्राणातिपातने परित्याग कर्यो हुतो. आ रीते ज स्थूल मृषावाद्दुं, स्थूल  
अदत्तादानं, स्थूल मैथुनं, अने स्थूल परिग्रहं पखु ये प्रत्याख्यान कयुं  
हुतुं. स्थूल मृषावाद वगेरे अही 'यावत्' शब्द वडे संगृहीत थया छे त्यारे  
हुने हुं आ भवमां पखु तेमनी नल्लक सर्वं प्राणातिपात यावत् सर्वं परि-  
ग्रहं मृत्यु सुधी प्रत्याख्यान कइ छुं. तेमज्जे जे धृष्ट, कान्त आ भाइ शरीर  
छे-के जेना भाटे भारा भनमां आ जतना विचारो हुता के जेने कोइ पखु



કૃત્વા=શરીરં વ્યુત્સૃજતિ-પરિત્યજતિ, ભગવાનાદ્-હે ગૌતમ ! તતસ્તદનન્તરં સ્વલુ સ  
દર્દુરઃ-કાલમાસે કાલં કૃત્વા યાત્રત્-સૌધર્મે કલ્પે 'દદ્દુર વર્હિસપ વિમાણે' દર્દુરા-  
વતંસકે વિમાણે=દર્દુરદેવતયા 'ઉવવન્ને' ઉપપન્નઃ-ઉપપાતં-જન્મ પ્રાપ્ત ઇત્યર્થઃ ।

દર્દુરચરિતમુત્ત્વા-ભગવાન્ મહાવીરઃ સ્વામી પ્રાદ્- 'એવં સ્વલુ ગોયમા ।'  
ઇત્યાદિ । હે ગૌતમ ! એવં સ્વલુ દર્દુરેણ સા દિવ્યા દેવર્દ્ધિર્લંબ્યા ઉપાર્જિતા પ્રાપ્તા  
સ્વયત્તીકૃતાઽમિસમન્વાગતા-સમ્યક્ સેવિતા । ગૌતમઃ પૃચ્છતિ-'દદુરસ્સ'  
ઇત્યાદિ । દર્દુરસ્ય સ્વલુ દેવસ્ય હે મદન્ત ! ક્રિયત્કાલપર્યન્તં સ્થિતિઃ પ્રશ્નઃ ?

હૈ કિ જિસ કે પ્રતિ મેરી યહ ધારણા રહતી થી, કિ હસે કોઈં ખી રોગા-  
તંકં સ્પર્શ ન કરેં ઉસકો ખી મૈં અન્તિમ શ્વાસોં તક મમત્વ ભાવસે રહિત  
હોકર છોડતા હૂં । હસ પ્રકાર કરકે ઉસને સ્વ કા પરિત્યાગ કર  
દિયા । ( તપ્ણં સે દદ્દુરે કાલમાસે કાલં કિચ્ચા જાવ સોહમ્મે કપ્પે  
દદ્દુરવર્હિસપ વિમાણે ઉવવાયસમાપ દદ્દુરદેવત્તાપ ઉવવન્ને-એવં  
સ્વલુ ગોયમા । દદ્દુરેણં સા દિવ્વા, દેવિઢ્ઠી, લદ્દા, પત્તાઅમિસમન્વા  
ગયા ) હસકે બાદ વહ દર્દુર- કાલ અવસર કાલ કરકે યાવત્ સૌધર્મ  
કલ્પ મેં દર્દુરાવતંસક વિમાન મેં ઉપપોત સમા મેં દર્દુર દેવતા ક્રી  
પર્યાય સે ઉત્પન્ન હો ગયા । હસ પ્રકાર દર્દુર કા ચરિત્ર કહકર 'ભગવાન્  
મહાવીર સ્વામી ને ગૌતમ સે કહા-કિ હે ગૌતમ ! હસ પ્રકાર  
સે હસ દર્દુર દેવ ને વહ દિવ્ય દેવર્દ્ધિ ઉપાર્જિત કી હૈ, અપને આધીન  
કી હૈ ઓર હસે અપને ભોગકે યોગ્ય બનાઈ હૈ । અબ ગૌતમ અમળ  
ભગવાન્ મહાવીર સ્વામી સે પુનઃ પૂછતે હૈં કિ-'દદુરસ્સ ણં મંતે ! દેવ-  
સ્સ કેવહ્યકાલં ઠિઈપ્પણત્તા ? ગોયમા ! ચત્તારિ પલિઓવમાઈ ઠિઈ

શોગ અને આતંક સ્પર્શ કરે નહિ-તેને પણ હું મમત્વ વગર થઇને છેલ્લી  
પ્રાણ સુધી ત્યજું છું. આ રીતે વિચાર કરીને તેણે અધી વસ્તુઓને ત્યજી દીધી.  
( તપ્ણં સે દદ્દુરે કાલમાસે કાલં કિચ્ચા જાવ સોહમ્મે કપ્પે દદ્દુરવર્હિસપ વિમાણે  
ઉવવાયસમાપ દદ્દુરદેવત્તાપ, ઉવવન્ને એવં સ્વલુ ગોયમા । દદ્દુરેણં સા દિવ્વા,  
દેવિઢ્ઠી, લદ્દા, પત્તા અમિસમન્વાગયા ) ત્યારબાદ તે દેહકો કાળના સમયે કાળ  
કરીને યાવત્ સૌધર્મકલ્પમાં દર્દુરાવતંસક વિમાનમાં ઉપપાત સમામાં દર્દુર  
દેવતાના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો. આ રીતે દેહકાના ચરિત્ર વિશે વર્ણન કરીને  
ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ ગૌતમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! આ રીતે તે દર્દુર  
દેવે તે દિવ્યદેવર્ધિ મેળવી છે, તેને સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતે ભોગ-  
વપાને લાયક બનાવી છે. હવે અમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમ કરી પૂછે  
છે કે : 'દદ્દુરસ્સ ણં મંતે ! દેવસ્સ કેવહ્યકાલં ઠિઈ પ્પણત્તા ? ગોયમા ! ચત્તારિ

भगवानाह—हे गौतम ! ददुर्देवस्य खलु देवस्य चत्वारि पर्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता । पुनर्गौतमः पृच्छति—‘सेणं’ इत्यादि स खलु हे भदन्त ! ददुर्देवो देवतस्माद् देवलोकाद् आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण चयं त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति ? कुत्र उत्पत्स्यते=उपपातं—जन्म प्राप्स्यति ? । भगवान् कथयति—‘गोयमा !’ इत्यादि । हे गौतम ! स खलु ददुर्देवः आयुः क्षयेण भवक्षयेण स्थिति क्षयेण देवलोकाच्च्युतः सन् महाविदेहे वर्षे जन्म प्राप्य सेत्स्यति भोत्स्यति भोक्ष्यति परिनिर्वाप्त्यति सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति च ।

पण्णत्ता, से णं भंते । ददुदुरे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? ) हे भदन्त ! ददुर्देव की वहां कितनी स्थिति हुई है ? प्रभु कहते हैं कि हे गौतम । चार पर्योपम की स्थिति उसकी वहां हुई है । पुनः गौतम उनसे पूछते हैं कि हे भदन्त ! वह ददुर्देव वहां से—उस देवलोक से—आयु के क्षय भवके क्षय एवं स्थिति के क्षय हो जाने पर शरीर का—देव संबन्धी शरीर का—परित्याग कर कहां जावेगा ( कहिं उववज्जिहिइ ) कहां पर जन्म धारण करेगा ? इस प्रश्न का उत्तर भगवान् ने उन्हें इस प्रकार दिया—( गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिइय ) गौतम ! वह ददुर्देव आयु के क्षय से, भव के क्षय से एवं स्थिति के क्षय से देवलोक से उवकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म प्रासकर वहां से सिद्ध होगा, विमल केवल लोक से सकल लोकालोक का ज्ञान होगा, समस्त कर्मों से मुक्त

पल्लोवमाइं ठिई पण्णत्ता से णं भंते ! ददुदुरे देवे ताओ देव लोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? ) हे भदन्त ! त्वां ददुर्देवती केटली स्थिति थछ छे ? प्रभु कहे छे के के गौतम ! तेनी आउपयोपम केटली स्थिति थछ छे । गौतम इरी तेओअरीने पूछे छे के के भदन्त ! ते ददुर्देव देव त्यांथी—ते देवलोकांथी—आयुअना क्षय, भवना क्षय, तेअर स्थितिना क्षय थया आइ शरीरने—देवसंभंधी शरीरने त्यज्जने कथां अशे ? ( कहिं उववज्जिहिइ ) कथां जन्म प्राप् करशे ? भगवाने आ प्रश्नने जवाब आ प्रभावे आये के ( गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वहिइ, सव्व दुक्खाणं अंतं करेहिइ य ) हे गौतम ! ते ददुर्देव देव आयुअने क्षय थया आइ, भवने क्षय थया आइ, अने स्थितिने क्षय थया आइ देवलोकांथी अवीने भद्धा-विदेह क्षेत्रमां जन्म प्राप् करने त्यांथी ज-सिद्ध अशे । विमल—केवल लोकालो-

‘ સુધર્માસ્વામી જમ્બૂસ્વામીનં પ્રાદ-’ એવં સ્વલુ સમણેન ’ ઇત્યાદિ, હે જમ્બૂ !  
 એવં સ્વલુ શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ ત્રયોદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય, અયમ્=ઉક્ત-  
 સ્વરૂપઃ, અર્થ પ્રજ્ઞાતઃ, ‘ ઇતિ બ્રૂમિ ’-અસ્ય વ્યાખ્યા પૂર્વવત્ ॥૬૦ ॥ ૮ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-  
 लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ  
 प्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-  
 गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-

व्रतिविरचितायां ‘ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्मावृत्त-  
 विण्णयाख्यायां व्याख्यायां त्रयोदशमध्ययनं संपूर्णम् ॥ १३ ॥

હોગા, સમસ્ત કર્મકૃત વિકાર સે રહિત હોને કે કારણ સ્વસ્થ હોગા  
 ઓર હમ પ્રકાર સમસ્ત દુઃખોં કા વહ અન્ત કાંને વાલા હો જાવેગા ।  
 ( એવં સ્વલુ જંબૂ ! સમણેન ભગવયા મહાવીરેણ તેરસમસ્ત નાયજ્ઞયણ-  
 સ્સ અયમદ્દે પળણસે સ્તિવેમિ ) હસ પ્રકાર જંબૂ સ્વામી કો સમજાકર  
 અથ ગૌતમ ડન સે કહતે હૈં હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને હસ  
 તેરહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા ઉક્ત રૂપ મે અર્થ પ્રરૂપિત ક્રિયા હૈ । મૈને જેસા  
 ડનકે સુખ સે હસે સુના વૈસા હી યહ તુમસે કહા હૈ । અપની ઓરસે  
 મિલાકર હસમે કુછ નહીં કહા હૈ ॥ સૂત્ર ૮ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत  
 “ ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र ” की अनगारधर्मावृत्तवर्षिणी व्याख्याका  
 तेरहवां अध्ययन समाप्त ॥ १२ ॥

તે સકલ લોકાલોકને બાબુનાર થશે, સમસ્ત ( બધા ) કર્મોથી મુક્ત થશે, સમસ્ત  
 કર્મકૃત વિકાર વગર થયા બદલ તે સ્વસ્થ થશે અને આ રીતે બધા દુઃખોનો  
 તે અન્તકરનાર થઈ જશે ( એવં સ્વલુ જંબૂ ! સમણેન ભગવયા મહાવીરેણ તેરસમ-  
 નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળણસે સ્તિ વેમિ ) આ રીતે જંબૂ સ્વામીને સમજાવીને  
 ગૌતમ તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ તેરમા  
 જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂવોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. મેં જેવો તેમના મુખથી  
 સાંભળ્યો છે તેવો જ તમને કહ્યો છે. મેં આમાં પોતાની મેળે ઉમેરીને કંઈજ  
 કશું નથી ॥ સૂત્ર “ ૮ ” ॥

श्री जैनाचार्य घासीलालजी महाराज कृत ज्ञातासूत्रकी अनगारधर्मावृत्तवर्षिणी  
 व्याख्याका तेरहवां अध्ययन समाप्त ॥ १३ ॥

